☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

अठ्ठवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती–सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
०१ पोह २०१५ बिक्रमी	अठाठ दिन दे दौरे बाअद दरबार विच जेठूवाल			००१
०२ पोह २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	०२३
२६ पोह २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	०३८
२८ पोह २०१५ बिक्रमी	जसबीर सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदासपुर	०८६
२६ पोह २०१५ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदासपुर	०६६
२६ पोह २०१५ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	कलार	गुरदासपुर	१०१
२६ पोह २०१५ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	बल	गुरदासपुर	१०३
२६ पोह २०१५ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे नवित	बल	गुरदासपुर	११२
३० पोह २०१५ बिक्रमी	बख्शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	११५
०१ माघ २०१५ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	टांगरा	अमृतसर	११७
२१ माघ २०१५ बिक्रमी	जागीर सिँघ दे गृह	सोहल	गुरदासपुर	१२४
२१ माघ २०१५ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	महराजपुर	गुरदासपुर	१२६
२२ माघ २०१५ बिक्रमी	राज सिँघ दे गृह	महराजपुर	गुरदासपुर	१३६
२२ माघ २०१५ बिक्रमी	महिंगा सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाला	गुरदासपुर	१४२
२२ माघ २०१५ बिक्रमी	अतर सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१४३
२३ माघ २०१५ बिक्रमी	लक्खा सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१५१
२४ माघ २०१५ बिक्रमी	मुनशा सिँघ दे गृह	नौशहरा	गुरदासपुर	१५५
२४ माघ २०१५ बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	सुल्तानी	गुरदासपुर	१६१
२४ माघ २०१५ बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	वज़ीरपुर	गुरदासपुर	१६३
२५ माघ २०१५ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	दुरांगला	गुरदासपुर	१६६

1
०८

२५	माघ	२०१५	बिक्रमी	बचन सिँघ दे गृह	काणा कौटा	गुरदासपुर	१७२
२६	माघ	२०१५	बिक्रमी	संत सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	१७७
२६	माघ	२०१५	बिक्रमी	जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिण्डी	गुरदासपुर	१८३
२७	माघ	२०१५	बिक्रमी	जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिण्डी	गुरदासपुर	१६०
२८	माघ	२०१५	बिक्रमी	—	तारा चक्क	गुरदासपुर	२०३
२६	माघ	२०१५	बिक्रमी	कप्तान बंता सिँघ दे गृह	पंज गराई	गुरदासपुर	२०८
२६	माघ	२०१५	बिक्रमी	अमीर चंद गुलाटी दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	२१०
२६	माघ	२०१५	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	२१६
०१	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२२४
०१	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२२६
०२	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	हरबंस सिँघ बलवंत सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	२३७
०३	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	बलदेव सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	२४६
०३	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	बेला सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	२५५
०३	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	अवतार सिँघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	२५७
१४	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	दिल्ली सिँघासण पर	दिल्ली	दिल्ली	२६४
१४	फग्गण	२०१५	बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	२७६
०१	चेत	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२७८
१२	चेत	२०१६	बिक्रमी	मोहण सिँघ दे गृह	सकिआं वाली	अमृतसर	२६५
१३	चेत	२०१६	बिक्रमी	—	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	३०६
१५	चेत	२०१६	बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	३०६
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	सुखदेव राज दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३१५
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	अरूड़ सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२५

2
०८

2
०८

१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२८
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	कुंदन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२८
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२८
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२६
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२६
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३२६
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३३०
१७	चेत	२०१६	बिक्रमी	नरायण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	३३०
१८	चेत	२०१६	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	३३४
१८	चेत	२०१६	बिक्रमी	कुंदन सिँघ दे गृह	मालचक्क	अमृतसर	३३६
१८	चेत	२०१६	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३३८
१८	चेत	२०१६	बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह चंबल	उसमा	अमृतसर	३५५
१८	चेत	२०१६	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३६२
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	चंनण सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३६५
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३६७
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	कुलवंत सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३६७
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	मोहण सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	३६८
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	दीदार सिँघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	३६६
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	निरंजण सिँघ करतार सिँघ दे गृह चंबल		अमृतसर	३७०
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	तारा सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	३७१
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	हीरा नंद दे गृह	चंबल	अमृतसर	३७३
१६	चेत	२०१६	बिक्रमी	केसो राम दे गृह	सरहाली जंडो के	अमृतसर	३७४

3

3

२० चेत २०१६ बिक्रमी	सज्जण सिँघ दे गृह		सरहाली जंडो के	अमृतसर	३८१
२० चेत २०१६ बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह		गग्गो बूआ	अमृतसर	३८५
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	गुरबख्श सिँघ दे गृह		गग्गो बूआ	अमृतसर	३६३
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	जागीर सिँघ दे गृह		गग्गो बूआ	अमृतसर	३६३
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	सोहल	गग्गो बूआ	अमृतसर	३६४
२१ चेत २०१६ बिक्रमी	सुरजन सिँघ दे गृह		भुच्चर	अमृतसर	३६७
२२ चेत २०१६ बिक्रमी	मनी राम दे गृह		सिधवा	अमृतसर	४०५
२२ चेत २०१६ बिक्रमी	—		माड़ी मेघा	अमृतसर	४०६
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	—		नारला	अमृतसर	४२०
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह		तरनतारन	अमृतसर	४२३
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	—		सफी पुर	अमृतसर	४३०
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	इन्द्र सिँघ दे गृह		बंडाला	अमृतसर	४३४
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	इन्द्र सिँघ दे गृह		बंडाला	अमृतसर	४३६
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	—		बंडाला	अमृतसर	४४२
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह		बंडाला	अमृतसर	४४३
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह		जंडिआला गुरू	अमृतसर	४४३
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह		जंडिआला गुरू	अमृतसर	४४७
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	टेक चंद दे गृह		जंडिआला गुरू	अमृतसर	४५०
०१ विसाख २०१६ बिक्रमी	दरबार विच		जेठूवाल	अमृतसर	४५०
०१ जेठ २०१६ बिक्रमी	दरबार विच		जेठूवाल	अमृतसर	४५६
०१ जेठ २०१६ बिक्रमी	महाराजा संगरूर राजबीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया				४८१
०२ जेठ २०१६ बिक्रमी	बंता सिँघ दे गृह		निजर	अमृतसर	४८३

०५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	४९१
१४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	५०५
२१	जेठ	२०१६	बिक्रमी	चेला सिँघ दे गृह	वजारत रोड	जम्मू	५०९
२२	जेठ	२०१६	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेखसर	जम्मू	५२६
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	राम लाल दे गृह	सरदारी	जम्मू	५३६
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	सेखसर	जम्मू	५४६
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेखसर	जम्मू	५४७
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	गूड़ा राम दे गृह	सेखसर	जम्मू	५५६
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	तेज भान दे गृह	सेखसर	जम्मू	५६२
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	देवा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५६२
२५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	संसार सिँघ दे गृह	छम्ब	जम्मू	५७९
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	गुरदवारे विच	छम्ब	जम्मू	५८९
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	गुरदवारे विच	छम्ब	जम्मू	५९०
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	शंकर दास दे गृह	झंडे	जम्मू	५९२
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	झंडे	जम्मू	५९६
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	पूरन चंद दे गृह	झंडे	जम्मू	५९६
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	सांई दास दे गृह	झंडे	जम्मू	५९७
२६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	बीबी	छम्ब	जम्मू	५९७
२७	जेठ	२०१६	बिक्रमी	भोला राम दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	६०६
२७	जेठ	२०१६	बिक्रमी	प्रकाश चंद दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	६०७
२८	जेठ	२०१६	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	६१६
०१	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६१८

5

०८

5

०८

११	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६३४
१२	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	वैरोवाल	अमृतसर	६५२
१२	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	अमरजीत सिँघ दे अनंद कारज पिच्छों			६६०
१२	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६६१
१६	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६६६
१७	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६७२
२८	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	७२३
२८	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	दिल्ली सिँघासण दरबार विच	दिल्ली	दिल्ली	७२६
२८	हाढ़	२०१६	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह वैसट ईसट	एरीआ	दिल्ली	७२६
०१	सावण	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७३३
०२	सावण	२०१६	बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	रजीवाला	फिरोजपुर	७४१
०२	सावण	२०१६	बिक्रमी	मल सिँघ दे गृह	रजीवाला	फिरोजपुर	७४४
०३	सावण	२०१६	बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	अजितवाल	फिरोजपुर	७४६
०४	सावण	२०१६	बिक्रमी	मिहर सिँघ दे गृह	जगराउँ शहर	फिरोजपुर	७६०
०४	सावण	२०१६	बिक्रमी	गुरचरन सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाला	फिरोजपुर	७६४
०५	सावण	२०१६	बिक्रमी	जोरा सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाल	फिरोजपुर	७७०
०५	सावण	२०१६	बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोजपुर	७७४
०५	सावण	२०१६	बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोजपुर	७७६
०६	सावण	२०१६	बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोजपुर	७८२
०६	सावण	२०१६	बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे घर	नाथेवाल	फ़िरोज़पुर	७८७
०७	सावण	२०१६	बिक्रमी	मुकंद सिँघ दे गृह	महराज	फिरोजपुर	७६१
०८	सावण	२०१६	बिक्रमी	वधावा सिँघ दे गृह	महराज	फिरोजपुर	७६६

6
०८

6
०८

7 ०८

०६	सावण	२०१६	बिक्रमी	अजैब सिँघ दे गृह	अरनी वाला	मलोट मण्डी	८१०
१०	सावण	२०१६	बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	अबोहर शहर	फिरोजपुर	८१५
११	सावण	२०१६	बिक्रमी		भुंडर	फिरोजपुर	८२६
११	सावण	२०१६	बिक्रमी	बीबी प्रीतो दे गृह	मदरसा	फिरोजपुर	८२८
१२	सावण	२०१६	बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह	सादक	फिरोजपुर	८२६
१३	सावण	२०१६	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोजपुर	८३८
१४	सावण	२०१६	बिक्रमी	—		फिरोजपुर	८४६
१४	सावण	२०१६	बिक्रमी	धरम सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोजपुर	८५०
१४	सावण	२०१६	बिक्रमी	सुचा सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोजपुर	८५४
१५	सावण	२०१६	बिक्रमी	अरजन सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोजपुर	८६०
१५	सावण	२०१६	बिक्रमी	—	गोलेवाल	फिरोजपुर	८६५
१५	सावण	२०१६	बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	फिरोजपुर छाउणी	फिरोजपुर	८६८
१६	सावण	२०१६	बिक्रमी	गुरचरन कौर दे गृह	फिरोजपुर	फिरोजपुर	८७८
१७	सावण	२०१६	बिक्रमी	सुलक्खण सिँघ दे गृह	रुगना मूंगला	फिरोजपुर	८६४
१७	सावण	२०१६	बिक्रमी	जरनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोजपुर	८६५
१८	सावण	२०१६	बिक्रमी	गुरदास सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	८६६
१८	सावण	२०१६	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	मनावां	फिरोज़पुर	६०३
१६	सावण	२०१६	बिक्रमी	बली सिँघ दे गृह	कैरों	अमृतसर	६१०
०१	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६१८
०२	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६३०
०२	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	हजारा सिँघ दे गृह	छीने	अमृतसर	६३१
०३	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी		मानावाला	अमृतसर	६४२

7 ०८

०४	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	तारा सिंघ दे गृह	माना वाला	अमृतसर	९४६
०४	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	सुरिंदर सिंघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	९५४
०५	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	मंगल सिंघ दे गृह	सारिंगड़ा	अमृतसर	९७७
०६	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	अवतार सिंघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	९८७
०६	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	हज़ारा सिंघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	९९६
०६	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	हरबंस सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	९९८
०७	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	बलदेव सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	१००८
०७	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	सवरन सिंघ दे गृह	गुमान पुर	अमृतसर	१०१२
०७	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	नरायण सिंघ दे घर	गुमान पुर	अमृतसर	१०१४
०७	भाद्रों	२०१६	बिक्रमी	—	वेरका	अमृतसर	१०२०
०१	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०३१
०२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	केसर सिंघ दे गृह	डल्ले वाला	जलंधर	१०४७
०३	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	महाराज राजबीर सिंघ	मुबारककोठी	संगरूर	१०५३
०४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	निरंजण सिंघ दे गृह	उची बसती	लुधिआणा	१०५४
०५	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	सरदारा सिंघ दे गृह	पखोवाल	लुधिआणा	१०६१
०६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	सुरजण सिंघ दे गृह	पखोवाल	लुधिआणा	१०७२
०६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	बिशन दास दे गृह	ढिकी चक्कीआं	जलंधर	१०७३
२४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	बिशन सिंघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	१०७७
२४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	मसतूआणे दे संतां नूं	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	१०८१
२६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	चंनन सिंघ दे गृह	दिल्ली छाउणी	दिल्ली	१०८३
२६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	प्रीतम सिंघ दे गृह	करोल बाग	दिल्ली	१०८५
२६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	दिल्ली	दिल्ली	१०९१

8 ०८

०१ कत्तक २०१६ बिक्रमी	१५ कत्तक नवित दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०६८
१५ कत्तक २०१६ बिक्रमी		मसतूआणा		११२१
१६ कत्तक २०१६ बिक्रमी	तरलोक सिँघ दे गृह	सनाम शहिर		११४६
१७ कत्तक २०१६ बिक्रमी	संत तेजा सिँघ नाल	चीमे	संगरूर	११५८
१७ कत्तक २०१६ बिक्रमी	सरदूल सिँघ दे गृह	कहेरू	संगरूर	११५६
१८ कत्तक २०१६ बिक्रमी	बग्गा सिँघ दे घर	नत्त	लुधिआणा	११७५
१६ कत्तक २०१६ बिक्रमी	गज्जण सिँघ दे गृह	रुढ़का कलां	जलंधर	११८१
२० कत्तक २०१६ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	झंडेर	जलंधर	११६५
२१ कत्तक २०१६ बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	दुशांझ खुरद	जलंधर	१२०२
२२ कत्तक २०१६ बिक्रमी	मल सिँघ दे गृह	लल्लीआं कलां	जलंधर	१२०६
२२ कत्तक २०१६ बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह	लल्लीआं कलां	जलंधर	१२१७
२३ कत्तक २०१६ बिक्रमी	नसीब सिँघ दे गृह	बोपा राए	जलंधर	१२२३
२४ कत्तक २०१६ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	१२२८
२५ कत्तक २०१६ बिक्रमी	रतन सिँघ दे गृह	नूर पुर	जलंधर	१२३५
२६ कत्तक २०१६ बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	करतारपुर	जलंधर	१२४१
०१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१२४६
२१ मग्घर २०१६ बिक्रमी	जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिण्डी	गुरदासपुर	१२६२
२२ मग्घर २०१६ बिक्रमी	नाज़र सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१२७३
२३ मग्घर २०१६ बिक्रमी	लंगर वास्ते लोह पुट्टण समें	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१२८३
२३ मग्घर २०१६ बिक्रमी	लंगर वरतौण समें	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१२८८

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✪ पहली पोह २०१५ बिक्रमी नूं अठाहठ दिन दौरे तों बाद आए जेठूवाल दरबार विच संगत समेत ✪

निहकलंक हरि अवतार, आपणी कल वरतांयदा। आपणा पर्दा दए उतार, आपणा नूर दरसांयदा। आपणा महल्ल लए उसार, आपे आसण लांयदा। पुरख निरँजण अगम्म अपार, लोकमात अलख जगांयदा। होए प्रतक्ख विच संसार, आप आपणा रूप वटांयदा। जल थल पावणहारा सार, सारंगधर आप हो जांयदा। खेले खेल नारी नर, नर नरायण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आप चलांयदा। निरगुण धार आपे धर, आपे बणत बणाईआ। जोती नूर जोत कर, हरि जोत करे रुशनाईआ। आप चुकाया दो जहान डर, पर्दा उहला रहे ना राईआ। आपे वस्सया साचे घर, हरि दाता बेपरवाहीआ। आपणी तरनी आपे रिहा तर, तारनहार आप हो जाईआ। आपे देवणहारा साचा वर, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जुगा जुगन्तर खेल कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे भन्न वखाईआ। आपणे आसण आपे चढ़, आपे करे रुशनाईआ। आपणा खण्डा आपे फड़, आपे रिहा चमकाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सिँघ शेर नज़र ना आईआ। कलिजुग अग्नी गया सड़, निरगुण जोत जगाईआ। दस्म दुआरी बैठा अग्गे खड़, गुरमुखां आप जगाईआ । गुरसिख नौ दुआर पंच विकार ना सके अड़, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। आपे तोड़ हँकारी गढ़, आपणी आसा पूर कराईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, महल्ल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आप चलाईआ। निहकलंक हरि बलवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। उठे जोद्धा सूरबीर बली बलवान, आप आपणा बल धराईआ। नाम खण्डा रसना तीर कमान, सो पुरख निरँजण इक्क उठाईआ। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। कलिजुग मन्दिर इक्क महान, नौ खण्ड पृथमी रिहा बणाईआ। नौ खण्ड वेख वखाण, आपणी कल वरताईआ। नौ दर दर परवान, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दुरकाए पंज शैतान, सतिगुर

पूरे हथ्थ वड्याईआ। देवणहारा साचा माण, जुग करता आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी आण, ना कोई होर संग रखाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, लोकमात करे रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न सारे गाण, अट्ठे पहर एका लिव लाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजाण, मेल मिलावा धुरदरगाहीआ। सम्मत वीह सौ पन्दरां इक्क निशान, सच सुच्च रिहा झुलाईआ। तीर्थ तट्टां वेख दुकान, आपणा फेरा पाईआ। आप आपणी कर पछाण, आप आपणे रंग समाईआ। ना कोई पवण पाणी मसाण, जल बिम्ब ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा बेपरवाहीआ। आपे बेपरवाह जगत मलाह, आदि पुरख निरँजण आप अख्वाया। कलिजुग अन्तिम इक्क सलाह, साचा मता पकाया। भेख पखण्डा मेटे राह, अठसठ डेरा ढाया। गुरमुखां पकड़े आपे बांह, आपणा लड़ आप फड़ाया। पाए सार थाउँ थाँ, निथाव्याँ माण दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी किरत कमाया। जुग जुग खेल अपार, जोत अकाल जगाईआ। एका डंका अपर अपार, आपणा नाम वजाईआ। वेखणहारा साध सन्त गुर पीर अवतार, खाणी बाणी डेरा लाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, आप आपणी वस्त टिकाईआ। आपे कढ्ढणहारा बाहर, औदां जांदा दिस ना आईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जामा भेख न्यार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सिँघ शेर ना कोई धार, सिँघ शेर सरूप ना कोई दरसाईआ। वजाए मृदंग साची किंग अपर अपार, सच सितार नाउँ रखाईआ। गुरमुख बणाए आपणी बिन्द, पूत सपूते आपे जाईआ। लहिणा देण चुकाए सर्ब संसार, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। शिव शंकर दाता दानी आप बख्शिंद, लहिणा झोली पाईआ। ब्रह्मा वेखे गुणी गहिंद, गहर गम्भीर हरि रघुराईआ। आपे मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोई वखाईआ। हरिसंगत आपे हो बख्शिंद, आप आपणा बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। उठया शेर शेर दलेर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। सृष्ट सबाई रिहा घेर, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां वसे नेरन नेर, निज घर आत्म डेरा लांयदा। करे खेल पहली वेर, आप आपणी बणत बणांयदा। आप भुलाए कर कर हेर फेर, अछल अछल्ल आप हो जांयदा। तारनहारा कर कर आपणी मेहर, मेहरवान नाउँ रखांयदा। आपे वसे अंडज जेर, उत्भुज सेत्ज डेरा लांयदा। आप मिटावणहारा त्रिलोकी ढेर, चौदां हट्टां वेख वखांयदा। आपे देवणहारा गेड़, गेड़ा आपे आप भवांयदा। आपणी छेड़ां रिहा छेड़, आपे वेख वखांयदा। सिँघ शेर करे भेड़, निहकलंक नाउँ रखांयदा। दो जहानां करे सैर, धरत धवल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खण्डा विच ब्रह्मण्डां आप चमकांयदा। शब्द

३ ०८

खण्डा हरि दातार, एका एक उठाईआ। करे खेल अपर अपार, आदि जुगादि वड वड्याईआ। नाउँ नरायण निरगुण धार, निरवैर आप समाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, सति सतिवादी आप कराईआ। बोध अगाधी शब्द धुन्कार, अनादी नाद वजाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, सगला संग निभाईआ। आत्म अन्तर इक्क प्यार, एका ब्रह्म जणाईआ। पंज दस खेल न्यार, पन्दरां मोख रखाईआ। पन्दरां अन्दर आपे वाड़, आपे वेख वखाईआ। दस नौ बन्ने धार, नौ दस वज्जे वधाईआ। खेले खेल नाड़ नाड़, रत्ती रत्त आप समाईआ। पंज दस वेख उजाड़, पंज दस जंगल जूह समाईआ। दस पंज चबाए आपणी दाढ़, दस पंज करे वड्याईआ। दस पंज सतारा हाढ़, दस पंज होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंज दस आप समाईआ। इक्क अकल्ला कर आकार, एकँकार अख्वांयदा। सृष्ट सबाई कर पसार, दूजा नाउँ धरांयदा। तीजा नेत्र इक्क विचार, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। चौथे पद मेल भतार, साची सेजा इक्क हंढांयदा। पंचम मेला मीत मुरार, नर नरायण आप करांयदा। छेवे छप्पर छन्न ना कोई मुनार, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, सति सतिवादी वेख वखांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, जुग करता आप करांयदा। अट्ठां तत्तां होया बाहर, आप आपणा वेस वटांयदा। नौ दुआरे बन्द जगत किवाड़, आपणा मुख छुपांयदा। दसवें जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क जगांयदा। कमलापाती मीत मुरार, कँवल नैणां वेख वखांयदा। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर धारा मुख चुआंयदा। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, आप आपणा दरस दिखांयदा। फुल फुलवाड़ी लाई सतारा हाढ़, आप आपणा बीज बिजांयदा। एका एक देवे वाड़, सच साची दया कमाया। इक्क दस लगा अखाड़, दो दस बारां करे रुशनाया। तेरां तेरां इक्क अखाड़, शब्दी आपणा डंक वजाया। चौदां चौदां मेट मिटाए झूठी धाड़, एका इक्की बंधन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंज दस दस पंज आपणा लहिणा आपणी झोली पाया। पंज दस लहिणा देणा रिहा चुक्क, हरि साचा आप चुकांयदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, जुग जुग आप वरतांयदा। तीर्थ तट्टां सरोवर रिहा सुक्क, अमृत जल ना कोई भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा मेल आपणे विच करांयदा। पंज दस जगत पसारा, हरि हरि वेख वखाईआ। सतिजुग साचा तट किनारा, त्रेता आप समाईआ। द्वापर वेखे जल धारा, साचा सीर चुआईआ। कलिजुग खेल अगम्म अपारा, अचरज बणत बणाईआ। जोती जामा भेख न्यारा, निरगुण वड वड्याईआ। सरगुण साचा कर पसारा, सति सति करे रुशनाईआ । संग रखाया सिक्ख दुलारा, साची सेव कमाईआ। एका इक्की कर प्यारा, इक्की कुलां रिहा

तराईआ। साची सिक्खी वेखणहारा, धारों तिक्खी आप रखाईआ। वालों निक्की ना कोई पावे सारा, नेत्र नैण दिस ना आईआ। आपणे नेत्र आपे पेख हरि गिरधारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। तीर्थ तट्टां पावे सारा, जल धारा चरन छुहाईआ। इक्क दृष्ट इक्क इष्ट इक्क सृष्ट एका घर एका रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। तीर्थ तट्टां फेरा पा, गुरमुख साचे आप जगांयदा। कलिजुग लहिणा दए चुका, नेत्र नैणां आप दरसांयदा। गुरमुखां गहिणा देवे पा, साचा कंगन इक्क लटकांयदा। गंगा गोदावरी रही शरमा, मुख घूँगट कोई ना लांहयदा। गुरमुख सगन रहे मना, साचा गाना हथ्थ बंधांयदा। दोहां विचोला बेपरवाह, दिस किसे ना आंयदा। वेखणहारा थाउँ थाँ, जुग जुग आप चुकांयदा। आप जपाया आपणा नाँ, आपणे मार्ग आपे लांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, चरन धूढ़ अशनान करांयदा। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। आपणी हथ्थीं पकड़े बांह, नौ दुआरे पार करांयदा। अजूनी रहित बणया माँ, पंज तत्त दिस ना आंयदा। करनहारा सच न्याँ, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पन्दरां साल ना मुख वखांयदा। पंज तत्त तेरा नाता, हरि साचे आप बंधाया। आपे होया पुरख बिधाता, पारब्रह्म रूप समाया। उत्तम रक्खी आपणी ज़ाता, वरन गोत ना कोई रखाया। आपणे भगतां देवण आया साची दातां, आप आपणी वंड वंडाया। कलिजुग वेख अन्धेरी राता, आपणा मुख छुपाया। साध सन्त मन्दिर अन्दर बहि बहि करन बातां, हरि का शब्द किसे ना पाया। डूँघी कन्दर मारे झाता, आपणा मुख छुपाया। बैठा रहे इक्क अकांता, सच सिँघासण इक्क विछाया। शाह सुल्तान नां किसे पछाता, पन्दरां साल आप लँघाया। गुप्ती गुप्त जणाए आपणी गाथा, सोहँ शब्द पढ़ाया। किसे दरस ना पाया मस्तक माथा, बिधना लेख ना कोई मिटाया। नज़र ना आया सगला साथा, आपणा आप गंवाया। सर्ब कला आपे समराथा, आपणा वेला लए सुहाया। लहिण देण चुकाए तीर्थ ताटा, गुर दर मन्दिर मस्जिद वेख वखाया। साधां सन्तां खाली करया काया बाटा, सुरती शब्द ना कोई मिलाया। पंज दस तेरा कलिजुग घाटा, पूरा ना कोई कराया। खेलण आया जगत तमाशा, जोती जामा भेख वटाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई हवन वखाया। ना कोई माला फेरे अठोतरी आठा, दिवस रैण ना कोई जगाया। ना कोई तन जलाए अग्नी काठा, जल धार ना कोई रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा बिरध रखाया। आपणा बिरध आपे रक्ख, आपे वेख वखाईआ। आपे प्रगट हो प्रतक्ख, आपे पर्दा लाहीआ। आपे भाण्डे करे सक्ख, आपे गुरसिखां रिहा भराईआ। आपे करनहारा वक्ख, आपे मेल मिलाईआ। आपे एथे ओथे लए रक्ख, आपे पर्दा मुख तों लाहीआ।

सर्ब कलां आपे समरथ, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। हरि का मन्दिर ना जाए ढठ्ठ, हरि साचे बणत बणाईआ। हरिसंगत साची कर अकट्ठ, नौ दुआरे शब्द जगाईआ। गुरसिख ना जाए तीर्थ तट्ट, दूजा दर ना कोई रखाईआ। इक्क रखाया साचा हट्ट, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। दिस ना आए बूंद रक्त, सिँघ शेर रूप वटाईआ। जोती जगे लट लट, कलिजुग आप जगाईआ। गुरमुखां तन पहनाए शब्द पट, दिवस रैण ताणा पेटा आप चलाईआ। आपणी माला आपे रट, मन का मणका आप भवाईआ। गुरमुख लाहा लैण खट, जो जन नेत्र दर्शन पाईआ। अमृत आत्म देवे झट्ट, सर सरोवर इक्क वखाईआ। खेले खेल नठ्ठ नठ्ठ, पंज दस रचन रचाईआ। शब्द नगारे मार सट्ट, सृष्ट सबाई आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा हट्ट खोल्ह दुआर, हरि हरि आसण लांयदा। हरि अबिनाशा सुहाए सचखण्ड घर बार, आपणा दर सुहांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। आदिन अन्ता कर पसार, आपे वेख वखांयदा। भगतन मीता भगत प्यार, भगत भगवन्त डेरा लांयदा। ठांडा सीता ओंकार, सरगुण रूप वटांयदा। सदा अतीता कर पसार, दर साचा इक्क सुहांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीता, आप आपणी रचन रचांयदा। ना कोई गुर ना अवतार, मन्दिर मस्जिद मढ्ढ गुरदुआर ना कोई वखांयदा। करे कराए पतित पुनीता, नौ दर पार करांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। मीठा करे कौड़ा रीठा, रसना सोहँ जो जन गांयदा। वसणहारा सदा चीता, घर घर विच आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा सगन मनांयदा। आपणा सगन आप मना, आपे ख़ुशी करांयदा। आपणा अंगन आप सुहा, आपे वेख वखांयदा। आपणी रंगण आप चढ़ा, आपे रंग रंगांयदा। आपणा मंगल आपे गा, आपे राग अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटांयदा। नर रूप आपणा धार, आपणी खेल खिलाईआ। अन्तिम तजना जगत संसार, अग्नी अग्ग समाईआ। जोती जोत हो उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। वरन गोती वस्सया बाहर, आप आपणी दए वड वड्याईआ। शब्द सुरती फड़ करतार, लए इक्क अंगड़ाईआ। चढ़या चोटी धुर दरबार, उच्च महल्ल अटल सुहाईआ। पंज तत्त मीता कर प्यार, साचा धाम सुहाईआ। सम्बल नगरी हो उज्यार, बैठा आसण लाईआ। शब्द डंका अपर अपार, आप आपणा रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वसणहारा साचे घर, आपणा मुख आपणी कुक्ख आपे रिहा सुहाईआ। आपे सुहाए आपणी कुक्ख, आप आपणा मुख छुपाईआ। आप उठाए आपणा दु:ख, दु:खी दर्द आप हो जाईआ। आपे

लटके उलटा रुक्ख, आपे सीर रिहा चुंघाईआ। आपे मानस आप मनुख, जूनी जून आप फिराईआ। आपे तृष्ना आपे भुक्ख, सांतक सति आप वरताईआ। आपे सीस निवाए झुक झुक, जगदीस आप अख्वाईआ। आपे बैठा आपणे मन्दिर लुक, आपे पर्दा लाहीआ। सिँघ शेर दलेर प्या बुक्क, दस पंज मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नेत्र आप खुलाईआ। आपणा नेत्र आपे खोल, हरिसंगत वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी आपे बोल, पंज शब्द नाउँ रखांयदा। नाम मृदंगा वज्जे ढोल, सच नगारा इक्क वजांयदा। तोलणहारा साचा तोल, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां आपणे हथ्थ उठांयदा। आपे खेले होली होल, जगत तृष्ना ना कोई वखांयदा। आपणी शक्ती आपे मवल, आपणी भगती आपे पूर करांयदा। आपणा अमृत भरया आपे कँवल, आपे बन्द करांयदा। आपे बैठा रहे अडोल, दो जहानां ना कोई डुलांयदा। करनहारा पूरा कौल, गोबिन्द तेरा दर सुहांयदा। आप तकाई धरनी धौल, धरत धवल ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। नेत्र खोल सतिगुर पूरा, आपणा दरस दिखाईआ। नाता तोड़न आया कूड़ो कूड़ा, सच सुच्च वरताईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, आप आपणे रंग रंगाईआ। नौ दुआरे अन्दर जो जन लाए चरन धूढ़ा, सच दरस वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, लक्ख चुरासी सुरत कुँवारी नज़री आईआ। सुरत सवाणी कन्या, दिवस रैण करे पुकार। साचा सन्त ना कोई जणया, नौ दर होए ख्वार। पंच विकारा देवे डन्नया, चढ़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार। ना वस्त ना सच्चा सच धनिआ, झूठी माया मोह प्यार। जोत निरँजण ना चढ़या चन्नया, दिवस रैण अन्ध अँध्यार। अनहद राग ना सुणे कन्नया, गा गा थक्के जगत मलार। भाण्डा गढ़ किसे ना भन्नया, मिल्या मेल ना सच भतार। राह दिस ना आए अन्तिम अन्नया, चारों कुन्ट होए खुआर। कलिजुग सुत्त दुलारा हरि हरि एका जणया, लक्ख चुरासी मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा सर्ब संसार। सुरत सवाणी रही रो, नेत्र नीर वहाईआ। दुरमति मैल ना सके कोई धो, साधां सन्तां साची वस्त ना कोई रखाईआ। आत्म हल ना सके कोई जो, नाम बीज ना कोई बिजाईआ। शब्द सुनेहड़ा ना देवे कोई ढो, ढोलक छैणे रिहा वजाईआ। दरस ना पाया अग्गे हो, कलिजुग शब्दी रैण वहाईआ। नाता बद्धा मावां पुत्तरां मोह, जगत मोह ना कोई चुकाईआ। गुर का शब्द ना गया छोह, घर सच ना होई कुड़माईआ। मानस जन्म रहे खो, कलिजुग डौरु इक्क वजाईआ। करे कराए सो, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंज दस खेल खिलाईआ। सुरत सवाणी अन्तिम नाअरा, एका एक

लगाया। ना कोई दिसे पती प्यारा, साचा कन्त ना नज़री आया। साध सन्त बैठे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, तन श्रृंगार ना कोई वखाया। मन्दिर ना वस्सया किसे झाड़ा, महल्ल अटल ना कोई सुहाया। दीपक जोत ना कोए उज्यारा, अज्ञान अन्धेर ना कोई मिटाया। साचा राग ना कोई धुन्कारा, धुनी नाद ना कोई सुणाया। ना कोई मीत मुरार, ना कोई अंक रखाया। ना कोई सन्त कन्त भतार, साची सेज ना कोई हंढाया। कलिजुग अन्तिम झूठी धार, सृष्ट सबाई वेख वखाया। सन्त ना दिसे तट किनार, खाली हट्ट कराया। लक्ख चुरासी करे पुकार, तुध बिन कोई ना नज़री आया। सृष्ट सबाई कन्त भतार, लोकमात जोत करे रुशनाया। हरिसंगत वखाए इक्क अखाड़, नौ दुआरे पार कराया। दसवें मेल अगम्म अपार, आपणा रूप दरसाया। अपणा पर्दा लाहे भार, पन्दरां साल जो मुख रखाया। छब्बी पोह बोल जैकार, गुरसिखां अन्दर मन्दिर देवे डेरा लाया। कोटन कोटि साध सन्त जीव जन्त कढ्ढुण हाढ़, निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा आप लगाए सचखण्ड अखाड़, गुरसिख गोपी काहन आप नचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उज्जल मुख गुरमुखां सुख मेटे दु:ख सुफल कुक्ख, आवण जावण पतित पावण भेख बावन कलिजुग वरनां मेट मिटाया। सखी सुल्तान हरि मेहरवान, हरिजन मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा पुरख सुल्तान, शाहो भूप अख्वाईआ। इक्क उठाए हथ्थ निशान, आपे रिहा झुलाईआ। आपे देवणहारा दान, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। आपे वसणहारा सच मकान, काया गढ़ आप सुहाईआ। अन्तिम कलिजुग जम्मया घर तर्खाण, सृष्ट सबाई तुछ मुछ आप कराईआ। नाम रंदा लाहे घाण, झूठी खल्ल रहे ना राईआ। गुरमुख साचे कर पछान, सिर आपणे छत्र टिकाईआ। सेवक सेवा लाए श्री भगवान, नौ दुआरे मोह चुकाईआ। दस्म दुआरी दरस दिखाए दर घर आण, बैठा धुरदरगाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ ना कोई तेरी मकाण, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। सत्त रंग झुलाए इक्क निशान, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। शेर सिँघ करन आया तेरी कल्याण, करता पुरख आप अख्वाईआ। पन्दरां साला बाल अञ्याण, बाली बुध रखाईआ। सम्मत सोलां हो बलवान, आपणी खेल खिलाईआ। नाता जोड़े राज राजान, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेव अभेदा अछल अछेदा वेद कतेबां दिस ना आईआ।

आपणा घाड़ण आपे घड़, पंज तत्त मेल मिलाया। हड्ड मास नाड़ी जोड़ जड़, रक्त बूंद सुहाया। आपे सीस आपे धड़, जगत जगदीस आप अख्वाया। आपे सम्बल नगरी बैठा वड़, गोबिन्द रूप वटाया। आपे करे हरि प्रकाश बहत्तर नड़,

जोती नूरो नूर जगाया। आपणी अग्नी आपे सड़, ख़ाकी ख़ाक आप हो जाया। आपणी लाए आपे जड़, दस्म दुआरी इक्क सुहाया। आपे फड़ाए आपणा लड़, घर साचे डेरा लाया। लहिण देणा चुकाए नौ दर, जीव जन्त फेरा पाया। ना जन्मे ना जाए मर, आप आपणा वेस वटाया। आपणी करनी आपे कर, करनहार आप अख्वाया। आपणी जोती धरनी धर, धरत धवल सुहाया। साढे तिन्न हथ्थ तेरा चुक्के डर, सिँघ मनजीता राह चलाया। जगत जगदीसा वेखे घर, नौ दुआर पन्ध मुकाया। हरिसंगत तेरे कुकर्मां गया सड़, हरि साचे हवन वखाया। छत्ती फुट उप्पर चढ़, छत्ती जुगां राह तकाया। आप फड़ाए आपणा लड़, आप आपणा मुख छुपाया। सिँघ पूरन अन्दर बैठा वड़, औंदा जांदा दिस ना आया। ना कोई चोटी ना कोई जड़, सीस धड़ ना कोई रखाया। सृष्ट सबाई रिहा फड़, शब्द डोरी इक्क खुलाया। कोई ना सके अग्गे खड़, एका खण्डा रिहा चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा धुर फ़रमाना, हरि हरि आप सुणाईआ। दर घर साचे सच टिकाणा, गुरसिखां धाम रखाईआ। एका नाम आप जपाणा, एक करे पढ़ाईआ। एका जाम आप प्याणा, आप आपणा मुख छुपाईआ। इक्क सुणाए साचा गाणा, एका राग अलाईआ। एका तख्त ताज सुहाणा, राजन राज इक्क अख्वाईआ। देस माझन खेल खिलाणा, खेलणहारा हरि रघुराईआ। शब्द अवाज़ गुरसिक्ख उठाणा, सगला संग तजाईआ। चरन दुआरे देवे माणा, आप आपणी सरन रखाईआ। आपणा वरतणहारा भाणा, आपे वेख वखाईआ। आपणा बदलया चोला आपे पहने आपणा बाणा, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर हरिसंगत वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ।

सति पुरख निरँजण खेल अपार, आपणी आप कराईआ। आपणे घर कर पसार, आपे बैठा आसण लाईआ। आपणी जोती कर उज्यार, निरगुण नूर समाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आपणी किरपा आपे धार, आप आपणा रूप दरसाईआ। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआर साची धार, हरि हरि जोत जगांयदा। अबिनाशी करता एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। आपे पाए आपणी सार, आपणा दर सुहांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, जुग जुग रचन रचांयदा। खेले खेल खेलणहार, सतिजुग सच सच वरतांयदा। त्रेता तेरा रूप न्यार, नारी कन्त वेस वटांयदा। द्वापर तेरा पार किनार, नाम बंसरी इक्क रखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, चौथा जुग वेख वखांयदा। चारे कुन्टां

हो उज्यार, दहि दिशा फेरी पांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलार, लोआं पुरीआं आप सुहांयदा। वंडे वंड आप करतार, आप आपणी वंड वंडांयदा। जेरज अंड कर त्यार, उत्भुज सेत्ज डेरा लांयदा। ब्रह्मा मीता सुत्त दुलार, आप आपणा अंग कटांयदा। विष्नूं वंसी लेख न्यार, बाशक सेजा आप हंढांयदा। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा मेल मिलांयदा। पंज तत्त खेल अपार, खेलणहार खेल खिलांयदा। आदि निरँजण हो त्यार, जोत निरँजण वेख वखांयदा। जोत निरँजण करे ख़बरदार, साचा हुक्म सुणांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, तख्त ताज इक्क वखांयदा। आप आपणी जाणे कार, करता पुरख वड वड्यांअदा। पुरख अगम्मा अगम्म अपार, अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। आपणा बंधन आपे पा, पुरख अबिनाश खेल खिलांयदा। आपणे तन्दन आप बन्ना, आपे अन्त खुल्लांयदा। आपणे परमानंदन आप समा, आपे वेख वखांयदा। आपणा चन्दन टिक्का आपे ला, आपे मुख सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वेख वखांयदा। आदि अनादी एका धार, आपणी आप बंधाईआ। त्रै त्रै करे सच प्यार, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। पंचम पंचम पंच जैकार, पंचम पंच समाईआ। पंचम धुन नाद जैकार, पंचम नाहरा लाईआ। पंचम भरे हरि भण्डार, पंचम दए वरताईआ। पंचम करे पंच श्रृंगार, पंचम वेख वखाईआ। पंचम वेखे एका घर बार, पंचम धारा इक्क सुहाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम पाया हरि हरि माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंचम तत्त रखाईआ। पंचम त्रैगुण नाता जोड़, साचा खेल खिलांयदा। आपे चढ़या साचे घोड़, आपे वेख वखांयदा। जुग जुग आवे जावे आपे दौड़, आप आपणा मता पकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी धरनी धर, आपणा आप टिकाईआ। आपणी वरनी आपे वर, आपे संग रखाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख आप हो जाईआ। आपणी सरनी आपे पड़, आपे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाईआ। कलिजुग पंज तत्त कर परवान, पंचम मेल मिलाईआ। दाता दानी हरि भगवान, साची वस्त झोली पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क पछाण, एका अंग कटाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका रिहा वसाईआ। एका नेत्र एका कान, एका ज्ञान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी खेल आपे रिहा खिलाईआ। आप उपाए आप उठाए, आदि अन्त एकँकारया। जुग जुग आपणा वेस वटाए, खेले खेल अगम्म अपारया। नर नरेश आप हो जाए, नर नरेश रूप करतारया। ब्रह्मा विष्न गणेश महेष दर दरवेश बहाए, कोटन कोटि करन निमस्कारया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंज तत्त पावणहारा सारया। पंज तत्त तेरा साचा रूप, हरि हरि बणत बणाईआ। आपे वस्सया हरि हरि भूप, आप आपणा आसण लाईआ। आपे वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। आपणा हुलारा आपे रिहा झूट, आपे रिहा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी साचा पंज तत्त देवे वर, नौ दुआर आप खुल्हाईआ। एका एक ग़रीब निवाजा, आपणी कल वरताईआ। अस्व घोड़ा रक्खे ताजा, दो जहानां आप दौड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए देस माझा, लोकमात वज्जी वधाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। एका होए शाह नवाबा, नबी रसूल आप हो जाईआ। आपे मेल मिलावा दो दो आबा, आप आपणा रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ दुआर वेखे सर्ब लोकाईआ। नौ दुआर हरि हरि खोल्ह, आपणा खेल खिलांयदा। आपणी धारा आपे बोल, आपे आप सुणांयदा। आपे वसे काया चोल, आपे वेस वटांयदा। आप वजावणहारा ढोल, एका मृदंग आप उठांयदा। सृष्ट सबाई प्या घोल, लेखा लेख ना कोई चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धार इक्क बंधांयदा। नौ दुआरे हरि धड़वाई, एका तक्कड़ हथ्थ रखाया। निरगुण जोती कर रुशनाई, अन्ध अन्धेर मिटाया। गुरमुख साचे कर कुड़माई, आपणा सगन मनाया। सचखण्ड वज्जे वधाई, ब्रह्मा शिव नेत्र नैण रहे उठाया। अबिनाशी करता दाया दाई, आप उपाए आपे लए मिटाया। आदि जुगादी रचन रचाई, वेद पुराणा भेव ना पाया। खाणी बाणी रही गाई, नेत्र नैण ना कोई दिसाया। कलिजुग वेखे थाउँ थाँई, थिर घर बैठा बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धार इक्क बंधाया। चार जुग तेरा जुग जुग जाप, हरि आपे आप जपाईआ। आपे करे वड प्रताप, आपे मेट मिटाईआ। आपे वेखे पुन्न पाप, पुन्न सवाब आप हो जाईआ। आपे मेटे तीनो ताप, त्रैगुण आपे संग निभाईआ। आपे माई आपे बाप, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाईआ। आपे जप तप हठ, आपे पूज करांयदा। आपे पूजा आपे पाठ, आपे हवन करांयदा। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, तट किनारा आप वखांयदा। आपे खोल्हणहारा हाट, चौदां लोकां वेख वखांयदा। आपे वेखणहारा आपणा घाट, आप आपणा कन्ढा पार करांयदा। आपे जोत जगावणहारा लिलाट, जोत लिलाटी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपे वेद पाठ पुराणा, आपे करे जणाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न खेल महाना, शिव शंकर आप उपाईआ। आपे लक्ख चुरासी हो प्रधाना, पंज तत्त

मेल मिलाईआ। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे खेल खिलाईआ। आपे मर्द आप मरदाना, जोद्धा सूरबीर आप हो जाईआ। आपे पुरख आप सुल्ताना, शाहो भूप नाउँ रखाईआ। आपे अञ्जील आप कुराना, पीर दस्तगीर आप सिखाईआ। आपे ख़लक ख़ुदाई नौजवाना, आपे खालक रूप वटाईआ। आपे खेले खेल दो जहानां, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे राग आप तराना, आपे नाद वजाईआ। आपे पवण आप मसाणा, आपे पाणी विच टिकाईआ। आपे खाणी आपे बाणी आपे लावणहारा बाणा, आप आपणा तीर चलाईआ। आपे वरते आपे भाणा, आपणे भाणे विच समाईआ। आपे चतुर सुघड़ स्याणा, मूर्ख मूढ़ आप हो जाईआ। आपे होए गुण निधाना, गुणवन्ता नाउँ रखाईआ। आपे जाप जप अजपा जाप हो जाणा, जागरत जोत आप आप अख्वाईआ। आपे वसे महल्ल अटल उच्च मकाना, थिर घर आपे डेरा लाईआ। आप उडाए सति बिबाना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, आप आपणी खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी बद्धा गाना, एका दिवस सुहाईआ। गुरमुख साचे कर परवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। दरगाह साची देवे माणा, बंक दुआरी वेख वखाईआ। दीपक जोती इक्क जगाना, लोकमात ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी क्रिया रिहा मिटाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ा नाता, हरि हरि तोड़ तुड़ांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द चढ़ांयदा। प्रगट होए पुरख बिधाता, पारब्रह्म वेस वटांयदा। बैठा रहे इक्क अकांता, सच सिँघासण आसण लांयदा। दो जहानां मारे ध्याना, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। जन भगतां देवे एका दाना, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम पुच्छण आया वातां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ दर साचा वेख वखांयदा। नौ दर तेरा हट्ट पसारा, हरि हरि आप कराया। चार जुग जीव जन्त कर वणजारा, साध सन्त वेख वखाया। नाल रलाया तीर्थ तट किनारा, जल धारा नीर समाया। धरनी खेल अपर अपारा, गुर दर मन्दिर मस्जिद आप सुहाया। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, भेव किसे ना पाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, पंचम तत्त दृढ़ाया। आसा तृष्ना कर श्रृंगारा, साचे घर बहाया। हउमे हँगता भर भण्डारा, जगत दुआर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, डेरा आपे ढाया। कलिजुग खेड़ा रिहा ढठ्ठ, हरि साचे खेल खिलाईआ। चरन दुआरे ल्याए तीर्थ तट्ट, अठसठ जुग चौथे चौथे विच समाईआ। चौदां लोक खाली हट्ट, लक्ख चुरासी वेख सर्ब लोकाईआ। सचखण्ड दुआरे इक्क अकट्ट, जोती नूरो नूर रुशनाईआ। वसणहारा घट घट, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साचे वेख वखाईआ। साचा घर सच दुआरा, हरि साची रचन

११
०८

रचाईआ। साचा सज्जण मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। साची रंगत रंगे करतारा, उतर कदे ना जाईआ। साचा वर पाया भतार, घर साचे मेल मिलाईआ। सोभावन्ती साची नार, घर साचे सगन मनाईआ। सच महल्ले दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाता राह तकाईआ। कमलापाती खेल अपार, आपणी ल्ए आप अंगड़ाईआ। मारे झाती दस्म दुआर, दर दुआरा आप सुहाईआ। अग्गे ताकी बन्द किवाड़, नौ दुआर मुख छुपाईआ। पंचम रक्खे पहरेदार, झूठी धाड़ बंधाईआ। जगत तृष्ना रही साड़, अग्नी अग्ग ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साची नारी कर शृंगार, आपणा आप शृंगारया। नेत्र नैणां कज्जल धार, एका रूप अपारया। साचा सज्जण मीत मुरार, घर आए बंक दुआरया। चरन कँवल रक्खे इक्क प्यार, आप अपणा उत्तों वारया। आपे ढहि ढहि मंगे मंग भिखार, आपणी झोली आप भराया। साचा मीता हरि निरँकार, आप आपणा खेल खिलाया। इक्क अतीता हो त्यार, निरगुण जोती जोत जगाया। ठांडा सीता सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण वेख वखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पारब्रह्म प्रभ पाए सार, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुख साचे वेख वखाया। चौथे जुग चौथी धार, चौथे पद दसाईआ। चौथे घर कर विचार, चौथा राह मिटाईआ। चौथे दर हरि उज्यार, चौथा पद रखाईआ। चार जुगां एका धार, जुगा जुगन्त आप वरताईआ। कलिजुग अन्तिम मारे मार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। सन्त सुहेले सच दुलार, घर साचे ल्ए बुलाईआ। पंचम मीता ख़बरदार, पंचम मेल मिलाईआ। साचा दीवा बाती कर उज्यार, घृती घृत समाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, नौ दुआर पई लड़ाईआ। गुरसिख बोलण इक्क जैकार, मिल्या मेल साचे माहीआ। पाया वर हरि भतार, विछड़ कदे ना जाईआ। करनहारा सच प्यार, साची करनी किरत कमाईआ। वेखणहारा नौ दुआर, नौ दरवाजे फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लेखे लाईआ।

पहले दर निरगुण धार, नर नरायण चलाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, साचे दर सुहाईआ। जोत निरँजण कर त्यार, गगन मण्डल आप टिकाईआ। सुखमन तेरी डूँघी गार, राह विच ना कोई अटकाईआ। शब्दी गुर हो त्यार, लहिणा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा वर, नूरो नूर समाईआ। जोती नूर शब्दी बाणा, हरि हरि तन सजाया। धुरदरगाही साचा राणा, लोकमात वेख वखाया। जन भगतां करे आप पछाना, जुग विछड़े मेल मिलाया। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे विच रखाया। आपे पाए आपणी आणा, आपणा हुक्म चलाया। आपे

होया जाणी जाणा, हर घट बैठा आसण लाया। आपे देवणहारा माणा, ग़रीब निमाणे गले लगाया। आपे गाए साचा गाना, धुन अनादी राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, एकँकारा रूप वटाया। दूजे दर तेरा रंग, हरि साचा आप रंगाईआ। शब्द सिँघासण बैठ पलँघ, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणी मंगी मंग, चार जुग जोड़ जुड़ाईआ। आप वहाई धार गंग, तीर्थ तट आप सुहाईआ। आपे करके आया नंग, पर्दा उप्पर ना कोई पाईआ। साचे अस्व कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण पाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा मंग, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम तेरी वंड, गुरमुखां आप वंडाईआ। पावणहारा साची ठंड, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणी हथ्थीं बन्ने नाम गंढ, पूजा पाठ ना कोई वखाईआ। सुरत सवाणी ना होए रंड, कन्त सुहागी मेल मिलाईआ। लेखे लाए जेरज अंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर गुरमुख वसे साचे घर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। साचा बस्त्र हरि हरि बाणा, आपणे तन छुहांयदा। खेले खेल दो जहानां, जुग जुग वेस वटांयदा। आपणा रंग आपे माणा, आपे वेख वखांयदा। आपणा तणया आपे ताणा, आपे वट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दोए दोए वेख वखांयदा। तीजा दर तीजा नैण, हरि हरि आप खुलाईआ। गुरमुखां मिल्या साक सज्जण सैण, वड दाता बेपरवाहीआ। आप चुकाए लहिण देण, पिछला मूल चुकाईआ। गुरसिख धाम अकट्ठे बहिण, एका दर वसाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, त्रै त्रै लोकां वेख वखाईआ। सुरपति तेरी धार, हरि हरि वेख वखांयदा। आदि जुगादी जगत शृंगार, रूप अनूप वटांयदा। त्रैगुण अतीता इक्क विहार, आपणा आप करांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, आपे वेख वखांयदा। एका रंग हस्त कीटा, नेत्र ज्ञान इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीजे दर साचा वर, गुरमुखां चुकाए जगत डर, एका ब्रह्म नज़री आंयदा। चौथा दर आपे खोल्ह आपणी रचन रचाईआ। धुन अनादी आपे बोल, शब्दी गीत सुणाईआ। आपणी काया आपे मौल, आप आपणा वेस वटाईआ। लहिणा देणा चुक्के धरत धवल, खाकी खाक ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर चौथा इक्क सुहाईआ। चौथे पद साचा नद, हरि हरि आप वजांयदा। कलिजुग अन्तिम तेरी हद्द, आपे वेख वखांयदा। सन्त सुहेले साचे सद, साचा रंग चढ़ांयदा। आप बणाए आपणी यद्द, आपे बंस रखांयदा। आप प्याए आपणी मद, अमृत मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क दरसांयदा। सच दुआरा कमलापाती, निरगुण रूप समाया। गुरमुख

जोत एका बाती, एका वेख वखाया। मिटी रैण अन्धेरी राती, साचा चन्द चढ़ाया। देवणहारा साची दाती दाता दानी आप अख्वाया। अट्ठे पहर रक्खे प्रभाती, अमृत वेला इक्क सुहाया। देवणहारा बूंद स्वांती, कँवल नाभ आप उलटाया। गुरमुख तेरी उत्तम जाती, आवण जावण विच ना आया। चौथे घर सच बराती, सन्त सुहेले मेल मिलाया। चरन कँवल बंधाए एका नाती, ना कोई तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा वेख वखाया। चौथे दर बस्त्र भूषन वेख, आपणी खेल खिलाईआ। आपे धरया आपणा भेख, आपणा चोला आप बदलाईआ। लोकमात ना दिसे रेख, पंज तत्त ना वज्जे वधाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए नज़र ना आईआ। चौथे घर आप आपणा वेख, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। लिखणहारा साचे लेख, वड दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम लाए आपणी मेख, ना सके कोई उखड़ाईआ। पुरख अगम्मा दर दरवेश, पंचम देस डेरा लाईआ। सच दुआरे नर नरेश, निरगुण रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जाति जोत इक्क जगाईआ। जोत जाती जागरत वेख, आपणा वेख वखाया। कर कर आप अवल्ला वेस, वेस अनेका रूप वटाया। देवणहारा सच संदेस, सच सुनेहड़ा इक्क घलाया। जोती जोत जोत प्रवेश, जोती जोत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे दर, दर साचा इक्क सुहाया। पंचम घर पंच परवाना, पंचम वेख वखाईआ। पंचम राग पंचम तराना, पंचम इष्ट जणाईआ। पंचम पंचम हो प्रधाना, पंचम वेख वखाईआ। पंचम बन्नृणहारा गाना, पंचम सगन मनाईआ। पंचम खेले खेल महाना, पंचम पंच वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंचम मेला सहिज सबाईआ। पंचम बस्त्र भूषन आपे तज, आपणी जोत जगाईआ। सच सिँघासण चढ़या भज्ज, निरगुण वड वड्याईआ। गुरमुखां पड़दे रिहा कज, नाम दोशाला हत्थ उठाईआ। सच दुआरे बैठा सज्ज, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। पंचम दर सच दरवाजा, हरि हरि आप खुलृांयदा। साचा मार्ग ग़रीब निवाजा, एका एक वखांयदा। एका मारनहारा वाजा, एका एक उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा वेख वखांयदा। थिर घर हरि भगवाना, आपणा खेल खिलाईआ। इक्क वखाए सच निशाना, एका रिहा झुलाईआ। छेवे दर हो मेहरवाना, आप आपणा मुख दिखाईआ। छप्पर छन्न ना कोई मकाना, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। दीवा बाती इक्क महाना, आपे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा वेख वखाया। पंचम घर हरि भगवान, आपणा खेल खिलाया। इक्क वखाए सच निशान, आपे

रिहा झुलाईआ। छेवे दर हो मेहरवान, आपणी कल वरताईआ। छप्पर छन्न ना कोई मकान, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। दीवा बाती इक्क महान, आपे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। छप्पर छन्न ना कोई मकाना, हरि हरि बणत बणाईआ। जोती नूर नूर महाना, जोती जोत करे रुशनाईआ। नारी नार इक्क तराना, एका रिहा गाईआ। बस्त्र तन ना कोई छुहाना, ना कोई सांग वखाईआ। गुरमुख साचे कर प्रधाना, आप आपणा दर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, सच दुआरे फेरा पाईआ। सच दुआरा हरि निरँकार, आपे आप सुहांयदा। सति पुरख निरँजण साची धार, सत्तवां दर खुल्हांयदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, रूप ना कोई वखांयदा। रवि ससि ना कोई सितार, गगन मण्डल ना कोई रखांयदा। धरत धवल ना कोई आकार, जल बिम्ब ना कोई टिकांयदा। पवणी पवण ना कोई हुलार, ना कोई वेख वखांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, निरगुण जोती इक्क जगांयदा। सति सरूप साची धार, आपणी आप बंधांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरिजन साचे वेख वखांयदा। लोकमात लै अवतारा, आप आपणा कर्म कमांयदा। संगत तेरा आपणे सिर चुकया भारा, आपणे कंठ लगांयदा। खेले खेल अपर अपारा, आपणी कल वरतांयदा। जागरत जोत हो उज्यारा, निज घर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तवें दर देवे वर, दर साचा इक्क सुहांयदा। सति दर दर दरवेश, निरगुण आप अख्वाईआ। आपे करे अवल्लड़ा वेस, आदि जुगादी वेस वटाईआ। जोती जामा धरया भेस, कलिजुग वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बस्त्र आपणा चोला आपे छड्ड, आपणा आप कीता अड्ड, ना कोई मास नाड़ी दिसे हड्ड, एका एक नूर रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी, एका एकँकारया। खेले खेल आदि जुगादी, जुग जुग लए अवतारया। पावे सार ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म वेस वटा रिहा। आपे माधा होए माधी, आपे मेट मिटा रिहा। आपणी वस्त आपे लाधी, आपणी झोली आपे पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीवा बाती एका धर, लक्ख चुरासी डेरा ला रिहा। एका जोती जोत उज्यार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। जोत निरँजण सेवादार, लोकमात करे रुशनाईआ। दोहां विचोला आप करतार, शब्दी रूप वटाईआ। साचा ढोला इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका बोला हरि गिरधार, आपणा आप सुणाईआ। एका तोला विच संसार, शब्द कंडा हथ्थ उठाईआ। सति पुरख निरँजण कर पसार, लोकमात वेख वखाईआ। जुग जुग विछड़े साचे यार, पंचम मेल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दए आधार, कलिजुग लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सप्तम दुआर छड्डया

घर, आप आपणी खेल खिलाईआ। सति दरबार आपे छड्ड, आपणी रचन रचांयदा। आपणी जोती आपे कढ्ढ, लोकमात डेरा लांयदा। आपणा मुका आपे पन्ध, आपे वेख वखांयदा। आपणा गा आपे छन्द, आपे राग अलांयदा। आपे जाणे आपणा अनन्द, परमानंद विच समांयदा। आपणा होया आप बख्शिंद, बख्शणहार वेस वटांयदा। नौ दुआरे अट्ठ तत्त, हरि हरि रचन रचाईआ। ग़रीब निवाजे, एका ब्रह्म पढ़ाईआ। एका धीरज एका सति, सति सन्तोख इक्क अख्वाईआ। एका नाम एका जाप, एका रिहा चलाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका रिहा सुणाईआ। एका तीर्थ एका ताट, एका घाट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अट्ठां तत्तां विच ना आईआ। अट्ठ तत्त नाता तोड़, आपणा मोह चुकाईआ। आप आपणी वागा मोड़, आपे फेरा पाईआ। धुरदरगाही आया दौड़, आपे फेरा पाईआ। आदि जुगादी आया दौड़, आप आपणी कल वरताईआ। सच महल्ले लाया पौड़, चढ़या उप्पर बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, रसना रस इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण बाती कमलापाती आपणी आप जगाईआ। अट्ठ तत्त ना कोई पसारा, निरगुण जोत जगांयदा। आपे सभ तों वस्सया बाहरा, भेद अभेदा भेव चुकांयदा। आप आपणा बोल जैकारा, आपणा नाअरा लांयदा। गुरमुखां कढ्ढी जाए मन मति विकारा, तन विकारा जन विकारा आपणे कंध उठांयदा। आप उठाया आपणा भारा, आपे सीस टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अट्ठ अट्ठ अट्ठ वेख वखांयदा। अट्ठ अट्ठ तेरी धार, अट्ठ अट्ठ समाईआ। अट्ठ अट्ठ हो उज्यार, अट्ठ अट्ठ वेख वखाईआ। अट्ठ अट्ठ पार किनार, अट्ठ अट्ठ धीर ना कोई धराईआ। अट्ठ अट्ठ वेख अखाड़, अट्ठ अट्ठ करे लड़ाईआ। अट्ठ अट्ठ एका धाड़, एका वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा दर सुहाईआ। आपणा दर आपे जाण, आपणी रचन रचांयदा। नौ खण्ड हो मेहरवान, नौ निधा मेट मिटांयदा। नौ नौ देवणहारा ज्ञान, नौ नौ बूझ बुझांयदा। नौ नौ बैठा इक्क बलवान, नौ नौ मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा वर, नौ नौ लेख चुकांयदा। नौ दुआर जगत कुड़माई, सति पुरख आप करवाईआ। दिवस रैण रहे लड़ाई, पंचम पंचम हल्काईआ। साची वज्जे ना कोई वधाई, साचा मंगल ना कोई गाईआ। निरगुण जोत ना कोई रुशनाई, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। कलिजुग लेखा पूर कराई, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। साचा नाद तूर वजाई, अनहद आप अलाईआ। आसा मनसा पूर आप हो जाई, परम पुरख बेपरवाहीआ। हाज़र हज़ूर जोत जगाई, घर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। नौ दर तेरा तुट्टा नाता,

हरि हरि आप तुड़ांयदा। गुरमुख साजण आप पछाता, आपे वेख वखांयदा। आप जणाई आपणी गाथा, आपे शब्द अलांयदा। आपे वेखे मस्तक माथा, लहिणा देणा आप चुकांयदा। आपे चढ़या आपणे राथा, रथ रथवाही आप हो जांयदा। आप रखाए सगला साथा, सगला संग आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे मेल मिलांयदा। नौ दुआरे हरिजन तज, हरि हरि दया कमाईआ। साची सेज चढ़ना भज्ज, मेल मिलावा साचे माहीआ। आपणा पर्दा आपे कज्ज, आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, घर साचे डेरा लाईआ। नौ दुआरे तेरा राज, जगत मूल चुकाया। पुरख अबिनाशी रचया काज, लोकमात वेख वखाया। सो पुरख निरँजण मेला जग, नाम नामा आप धराया। सेवक सेव लाए देस माझ, देस दसन्तर फेरा पाया। गुरमुख रक्खण आया लाज, वेला अन्तिम इक्क सुहाया। आप सुणाई आपणी आवाज़, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। साचे नगर आउणा भाज, सम्बल नगरी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीवा बाती आप जगाया। दीवा बाती कर उज्यार, निरगुण नूर समाया। पुच्छे वाती विच संसार, कलिजुग अन्तिम आया। देवे दाती नाम भण्डार, धुरदरगाही आप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, नौ दर लेखा आप चुकाया। नौ दुआरे पार कर, गुरमुख लेख लिखांयदा। जोती नूर आप कर, आपे डगमगांयदा। आपणे बस्त्र आपणे हथ्थ फड़, आपे तन छुहांयदा। आप बंधाए आपणे लड़, आपणे पल्लू आप उडांयदा। नौ दुआरे अग्गे खड़, गुरमुख साचे पार करांयदा। पहले पौड़े जाए चढ़, दूजा राह तकांयदा। तीजा नैण खेले दर चौथे पद समांयदा। पंचम देवणहारा वर, माया मोह चुकांयदा। छेवें वेखे छे घर, लेखा अपणे हथ्थ रखांयदा। सति पुरख निरँजण साची करनी कर, कारज करता आप करांयदा। अट्ठां तत्तां आपे लड़, अट्ठ दर वेख वखांयदा। नौ दुआरे तोड़ गढ़, गुरमुख साचे पार लँघांयदा। दीवा बाती आपे फड़, आपे अन्धेर मिटांयदा। गुरमुखां कर्मा आपे सड़, आपणा तन जलांयदा। शब्दी शब्द सुरती लए फड़, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा नौ दर, जगत दुआरा आप सुहांयदा। नौ दुआरे हरि हरि, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। लक्ख चुरासी चुक्के डर, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना लए वर, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। चरन कँवल चरन जोड़ा, हरि हरि आप रखाईआ। गुरुमुखां दित्ता साचा घोड़ा, आपे रिहा चढ़ाईआ। पुरख निरँजण आपे बौहड़ा, अलख निरँजण वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी फल वेखे मिट्ठा कौड़ा, शब्द डाहणी आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरिजन साचे लए वर, नौ दर मूल चुकाईआ। नौ दर लेखा जाए मुक्क, हरि साचा आप मुकांयदा। उज्जल करे मात मुख, साचा सुख दरसांयदा। सुफल कराए मात कुक्ख, मात गर्भ फंद कटांयदा। लेखे लग्गे उलटा रुक्ख, आपणा लेखा आप गणांयदा। चौथा जुग सुखणा रिहा सुख कलिजुग अन्तिम मूल चुकांयदा। हरिसंगत तेरी तृष्ना भुक्ख, आपणी झोली पांयदा। ना मानस ना मानुख, निरगुण धार आप वहांयदा। आप आपणी वड़या कुक्ख, पिता मात ना कोए बणांयदा। आपणे अन्दर आपे लुक, आपणा मूंह वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा पर्दा आपे चुक्क, नौ दुआरे जोत जगांयदा। आपणी करे निमस्कार झुक, गुरसिखां चरनां राह तकांयदा। वेखणहारा चौदां लोक, लोक परलोक डेरा लांयदा। देवणहारा साची मोख, जीवण मुक्त आप करांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता दुःख ना कोई वखांयदा। आप चुगाए आपणी चोग, आपणा नाम मुख लगांयदा। आप आपणा करया भोग, आप आपणा रस वखांयदा। आप आपणा करया जोग, आप आपणा हड्ड निभांयदा। आप आपणा देवणहारा दरस अमोघ, दस्म दुआरी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निरगुण आप हो जांयदा। दस्म दुआरी सच सिँघासण, हरि हरि सेज वछाईआ। उप्पर बैठ पुरख अबिनाशन, गुरमुखां राह तकाईआ। साचे मण्डल पाई रासन, साचे दीपक कर रुशनाईआ। वेखणहारा पृथ्मी आकाशन, गगन पतालां फोल फोलाईआ। चौथे जुग जन भगतां पूरी करे आसण, आस निरास ना कोई वखाईआ। जो जन तजाए मदिरा मासन, नौ दुआरे पार कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाए स्वास स्वासन, सचखण्ड दुआरे आप बिठाईआ। सच घर आत्म रक्खे वासन, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा वर, नौ दर बन्द कराईआ। नौ दर बन्द दरवाजा, हरि हरि आप करांयदा। खेले खेल ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे दया कमांयदा। सतिजुग तेरा रचया काजा, साची धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, वसणहारा साचे घर, नौ दर डेरा ढांयदा। नौ दर डेरा जाए ढठ्ठ, हरि साचा आपे ढाईआ। त्रैगुण तेरा बुझे मट्ठ, अग्नी अग्ग ना कोई जलाईआ। इक्क वखाए तीर्थ तट्ट, तट किनारा इक्क सुहाईआ। इक्क खुल्हाए साचा हट्ट, हट्ट हटवाणा आप खुल्हाईआ। जोत जगाए लट लट, घर साचे करे रुशनाईआ। मारे शब्द साची सट्ट, तन नगारा आप वजाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा हरिसंगत लाहा लए खट्ट, दर आए वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि हरि जोत जगाईआ।

सतिजुग साची बन्ने धार, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। नाम विचोला अपर अपार, आपणा रूप आप बणाईआ। साचा तोला तोलणहार, सृष्ट सबाई रिहा तुलाईआ। गुरमुख साजन सन्त दुलार, आपे वेख वखाईआ। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, हरि का भेव ना कोई पाईआ। माया रुले गढ़ हँकार, ममता मोह रखाईआ। अन्तिम वेखे विच संसार, फल फुल ना कोई लगाईआ। गुरमुख अनमुल्ले लाल दुलार, हरि साचा आप जगाईआ । जुगां जुगां दा चुक्कया भार, आपे दए लाहीआ। नाम भगती कर्ज उतार, आपणी ख़ुशी मनाईआ। साचा फर्ज हरि गिरधार, आपणा आप निभाईआ । एका तज़ नाम जैकार, एका ढोला गाईआ। रंगे रंग अपर अपार, रंग रंगीला मोहण माधव माहीआ। छैल छबीला हो त्यार, भगत कबीला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, हरि हरि मेट मिटाईआ। सतिजुग साचा कर प्यारा, लोकमात तराईआ। गुरमुख सज्जण मीत मुरारा, आपणा मेल मिलाईआ। नौ दुआरे पार किनारा, हरि साचा आप कराईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, निरगुण नूर रुशनाईआ। शब्द लगाए सच्ची धुन्कारा, अगाध बोध जणाईआ। साजण मीता मीत मुरारा, सति सति करे कुड़माईआ। बैठ अतीत हरि दुआरा, हर घट वेख वखाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपारा, जोती नूर रुशनाईआ। दस्म दुआरी दर दरबारा, आपे रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, घर साचा इक्क खुल्हाईआ। साचा घर गया खुल्ह, हरि साचा आप खुलांयदा। कोई ना लाए भगती मुल्ल, आप आपणी दया कमांयदा। सो पुरख निरँजण गायण साचे बुल, रसना जिह्वा आप चलांयदा। गुरसिख धरनी धरत धवल जल कँवल फुल, लोकमात आप तरांयदा। दर दुआर जो जन आए भुल्ल, हरिसंगत संग तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह वखांयदा। सतिजुग साचा हरि हरि राह, आपणा आप चलाईआ। सतिगुर पूरा बण मलाह, बेड़ा आप उठाईआ। देवणहारा सिफ्त सलाह, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। एका नईआ दए चला, एका चप्पू नाम लगाईआ। भैणां भईआ मेल मिला, साचा सईआ वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुक्कया बेपरवाह, जुग जुग वेस वटाईआ। एका ढईआ लेख लिखा, आपे दए ढाहीआ। नौ दुआरे भेट चढ़ा, आपणा मूल चुकाईआ। खेवट खेट आप अख्वा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाईआ। दीवा बाती आपे बाल, आपे वेख वखाईआ। आप रखाए काया धर्म सच्ची धर्मसाल, दर दरवारा इक्क सुहाईआ। आपे चले आपणी चाल, जग अवल्लड़ी चाल रखाईआ। आप आपणे आपे भाल, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। आपणा दीपक आपे बाल, आपे करे रुशनाईआ। नौ दुआरे साचे लाल,

करता कीमत आपे पाईआ। जुगा जुगन्तर घाली घाल, अन्तिम अन्त मुकाईआ। करे कराए सदा प्रितपाल, पितपालक वड वड्याईआ। देवणहारा नाम सच्चा धन माल, सच ख़जीना इक्क वरताईआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, जगत जंजाला दए तुड़ाईआ। आपे शाह आपे कंगाल, शाह कंगाला रूप वटाईआ। भगतन मीता बण दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। इक्क वखाए साचा ताल, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहारा साचा घर, दर साचा इक्क सुहाईआ। हरिसंगत हरि साचा पाया, भावी मेट मिटाईआ। अलख निरँजण एका पाया, पुरख अबिनाशी इक्क मनाईआ । साचा सज्जण नेड़े आया, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। काया खेड़ा डेरा लाया, साचा धाम सुहाईआ। झूठा झेड़ा रिहा मुकाया, सच सुच्च वरताईआ। हक्क निबेड़ा आप कराया, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा नव दर, नौ नौ फेरा पाईआ। नव रंग नव राता, नौ नौ खेल खिलाईआ। नव रंग नव जाता, नौ नौ जोत जगाईआ। नव संग नव सगला साथा, नौ नौ वेख वखाईआ। नव मृदंग नव गाथा, नौ नौ करे पढ़ाईआ। नव शब्द नव राथा, नव पूर रिहा चलाईआ। नौ नौ सर्ब कल आपे समराथा, नौ खण्ड वेख वखाईआ। महिमा जगत अकथनी अकाथा, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए उपाईआ। उपज्या पूत सुत्त दुलार, घर साचे वज्जी वधाईआ। नाता तुट्टा जगत संसार, जग जीवण दाता मेल मिलाईआ। मन जीतया तुट्टा हँकारा, साचा धाम सुहाईआ। अटल अचल्ल इक्क मुनारा, आप आपणा बंक रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा अन्त किनारा, लहिणा मूल चुकाईआ। नौ दुआरे खोलू किवाड़ा, दर दरबार इक्क सुहाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़ा, घर बैठा सेज विछाईआ। गुरमुखां करे सति प्यारा, सांतक सति वरताईआ। मेल मिलाए विच संसारा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। आपणे रंग रवे करतारा, हरि करता वेस वटाईआ। गुरसिख सज्जण पार कराए नौ दुआरा, आप आपणा दरस दिखाईआ। आपे दीपक जोती कर उज्यारा, आप आपणे विच लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंज दस दस पंज लेख रेख भेख आपणे हथ्थ रखाईआ।

आपणी जोत आप जगा, आपणे विच समाईआ। आपणी जोत आप टिका, आपे वेख वखाईआ। आपणी जोती आप बला, आपे करे रुशनाईआ । अन्तिम आपणी गोदी लए सवा, गुरसिखां वड वड्याईआ। कामी क्रोधी नेड़ ना सके आ,

शब्द खण्डा रिहा डराईआ। आत्म सोधी बेपरवाह, जो जन चरन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर एका दीप रखाईआ। आपणा आप कर प्रकाश, आपे वेख वखांयदा। आदि निरँजण पुरख अबिनाश, आपणा खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर ना होए विनास, आप आपणा वेस वटांयदा। सच वस्त रक्खी गुर सतिगुर पास, आपे आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां पूरन करनहारा आस, जगत प्यास आप बुझांयदा।

एका जोती जोत उजाला, नूरो नूर आप अख्वाईआ। आपे गुर आपे गोपाला, आपे गोबिन्द नाउँ धराईआ। आपे वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, आप आपणा डेरा लाईआ। आपे खेले खेल निराला, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे करे गुरसिख सदा प्रितपाला, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेख वखाईआ।

२१ जोती नूर हरि निरँकार, एका नूर रखाईआ। आदि अन्त इक्क अवतार, एका रूप समाईआ। एका शब्द इक्क प्यार, २१

०८ एका बूझ बुझाईआ। एका वणज इक्क वापार, एका हट्ट खुलाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, आप आपणा दर सुहाईआ। ०८

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचे मेल मिलाईआ। हरि हरि जोती साचा चानन, हरि हरि आप उपांयदा। आपे देवणहारा दानन, आपे वेख वखांयदा। आपे होए साचा काहनन, आपे रास रचांयदा। आपे भेखा धारी बावन, बल छल आप वखांयदा। आपे धुरदरगाही साचा ज़ामन, आप आपणा कर्म करांयदा। आपे फड़े आपणा दामन, गुरमुख साचे संग रलांयदा। आप जपाए आपणा नामन, नाम नामा झोली पांयदा। पूरन करनहारा कामन, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, दीवा बाती इक्क रखांयदा। हरि जोत हरि चमत्कार, हरि हरि आप कराईआ। गुरसिख उतारे साचे घाट, जगत किनारा पार वखाईआ। इक्क वखाए तीर्थ ताट, अठसठ लेख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। दीवा बाती इक्क चिराग, गुर पूरा आप जगांयदा। धोवणहारा झूठे दाग़, आपणा कर्म कमांयदा। दरगाह साची पकड़े वाग, साचा राह वखांयदा। आदि जुगादी रिहा जाग, गुरसिख साचे आप उठांयदा। धन्न वड्याई वड वड भाग, जो जो हरि हरि दर्शन पांयदा। पंच विकारा नौ दर त्रैगुण लग्गी बुझे आग, साचा तत्त वखांयदा। चरन

प्रीती इक्क वैराग, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। मेल मिलावा कन्त सुहाग, साची सेजा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , वेखणहारा जगत दर, दर दुआरा वेख वखांयदा। आपे दीवा आपे बाती, आपे करे रुशनाईआ। आपे कमल कमलापाती, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपे लहिणा देवणहारा बाकी, जुग जुग मूल चुकाईआ। आपे बणया साचा साकी, अमृत जाम प्याला इक्क प्याईआ। आपे खोल्हणहारा बन्द ताकी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे पंज तत्त होए खाकी, खाकी खाक आप समाईआ। आपे चढ़े अस्व घोड़े साचे राकी, शब्दी शब्द आप दौड़ाईआ। आपे रक्खे चाल बांकी, आप आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क दरसाईआ। नौ दर दीवा होया गुल, हरि हरि आप बुझांयदा। हरिसंगत तेरा पाया मुल्ल, जग कीमत ना कोई चुकांयदा। लोकमात ना जाणा रुल्ल, मानस जन्म लेखे लांयदा। तारनहारा इक्की कुल, इक्की सिक्खी सेवा लांयदा। गुरमुख बणाए साचे फुल, फुल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। निरगुण बूटा ना जाए हुल, निरगुण अमृत सिंच क्यारी हरी आप करांयदा। अन्तिम तोले पूरे तोल, तोलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ दुआरे अन्दर वड़, गुरसिख साचे ल्ए फड़, साचा मार्ग इक्क जणांयदा। साचा मार्ग आपे दस, आप आपणी बूझ बुझाईआ। हरिसंगत हरि हिरदे वस, हरी हरि रूप दरसाईआ। प्रेम निराला तीर मारे कस, तिक्खी धार इक्क वखाईआ। जगत रंडेपा जाए नस्स, सुहाग इक्क हंढाईआ। माया मोहणी ना जाए डस्स, अग्नी अग्ग ना कोई जलाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरसिख जगाए नस्स नस्स, कलिजुग तेरा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ दर दुआरा अलख जगाईआ। अलख निरँजण अलख जगा, अलख अलख अल्हांयदा। जोती नूर प्रतक्ख करा, हाज़र हज़ूर अख्वांयदा। भरे भाण्डे सक्ख करा, सक्खणे आप भरांयदा। हरिसंगत साची वक्ख करा, साचे मार्ग लांयदा। एका वस्त झोली पा, इक्क भण्डार वरतांयदा। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। नौ दुआरे डेरा ढाह, आप आपणा घर वसांयदा। लक्ख चुरासी कट्टे फाह, धर्म राए मुख शरमांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, चरन दुआर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सौ पन्दरां बिक्रमी चुकाए डर, मात गर्भ गुरसिख ना कोई आंयदा। जगत भूषन जगत श्रृंगार, हरि हरि आप कराया। पंज तत्त कर प्यार, काया चोला इक्क हंढाया। वासना रही नौ दुआर, पुत्तर धीआं साक सैण वेख वखाया। अन्तिम नाता तुट्टा विच संसार, जूठा झूठा मोह चुकाया। इक्क सुहाया सच दरबार,

थिर घर साचे डेरा लाया। आपणी जोती कर उज्यार, आपणा खेल खिलाया। लोकमात हरि हो त्यार, घर साचा वेख वखाया। गोबिन्द मीता मीत मुरार, सम्बल नगरी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर घर साचा हरि हरि पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरा खोल्ह दर, दर दरबाना सेव कमाया।

✪ २ पोह २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका एकँकारया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आदि अन्त अवतारया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती नूर उज्यारया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अकल कला अख्वा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आदि पुरख निरँजण नाउँ रखा ल्या। सतिगुर पूरा हरि भगवान, करनी करता कर्म कमा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अकाल मूर्त वेस वटा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आदि शक्ति वेख वखा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, नूर ख़ुदाई इक्क चमका रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप आपणा वेस धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सतिगुर नाम अख्वा ल्या। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आदि जुगादि समाया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, साचा साकी जाम प्याया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणी ताकी शब्द खुल्हाया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, लहिणा देणा बाकी आप चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा नाउँ धराया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका बंक सुहाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, घर बैठा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, पुरख अलख अलख अलख आप हो जाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणा आप उपांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप आपणा आप दरसांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणी भिच्छया आपे मंग मंगांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणी इच्छया आप करांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे पाए आपणे हिस्सया, आपे वंड वंडांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणे नेत्र आपे पेख्या, आपे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे लिखणहारा लेखया, आपे मेट मिटांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे नर आप नरेस्सया, नर नरेश आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा हरि

भगवान, हरि जोती जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, निरगुण धार इक्क बंधाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एकँकारा रूप समाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, सच भण्डार इक्क वखाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा बैठा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका एक ग़रीब निवाज्जया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, शाहो भूप वड राजन राज्जया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप रचाए आपणा काज्जया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे रक्खणहारा आपणी लाज्जया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चलाए आपणा आप जहाज्जया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एक धार बहाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका राम अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका नाम जपाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका काम कराईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका नगर ग्राम वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अभेद अभेव अभेदिआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अछल अछल्ल अछेदिआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणा लेखा आपे लेखया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, ना कोई मुछ दाढ़ी ना केस्सया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी लेखा वेख्या। सतिगुर पूरा हरि भगवान, सच्चो सच निशानया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जीआं जन्तां देवे माणया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आदि अन्त इक्क वखानया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे चले आपणे भाणया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करे आप पछानया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका खेल खिलाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप आपणा सगन मनाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणी लग्न आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर टिकाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जगन्नाथ अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, सगला संग निभांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अंग संग समांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, भुक्ख नंग ना कोई रखांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, धार गंग ना कोई वहांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जगत मृदंग ना कोई वजांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, सूरा सरबंग आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपे बैठा सच पलँघ सच सिँघासण आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आपणा दर आपे लँघ, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप दरसांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, सज्जण मीत मुरारया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, अचरज रीती आप चला रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हस्त कीटी मेल

मिला रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अनडीठी खेल खिला रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आपणी प्रीती आपे आप सिखा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा वेख वखा रिहा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका हथ्थ वखाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, एका तट नुहाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, घट घट डेरा लाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अठसठ वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, लोआं पुरीआं आप समाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी अलख जगाईआ। सतिगुर पूरा हरि करतार, अगम्म अगम्म अगम्म अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, अलख अलख हो जांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, प्रतक्ख प्रतक्ख रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, वसणहारा वक्ख हर घट आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, भगवान रूप वटाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हरि सन्तन वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, जीआं जन्ता आप तराईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, गुणी गहिंद गहर गम्भीर समाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, धन्न धन्नवन्त वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, बेअन्त बेअन्त भेव कोए ना पाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, साचे तख्त आप सुहञ्जणा बैठा आसण लाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, जुग जुग जन भगत दुआरे होए मंगता, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। चरन धूढ़ वेखे साची संगता, निर्मल निर्मल निर्मल प्रकाश कराईआ। दर दुआर मूल ना संगदा, लोक लज्जया आप तजाईआ। दर दुआरे अन्दर लँघदा, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। आपणी चोली आपे रंगदा, गुरसिख प्रीत रंगण नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, शब्दी शब्द निशानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका धुन तरानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका राग सुणानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका देवे जीआ दानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका ब्रह्म पछानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, तोड़े माण अभिमानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, मेल मिलाए श्री भगवानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आवण जावण चुकाए काणया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आप रखाए आपणे भाणया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, घर साचे देवे माणया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, राउ रंकां इक्क पछानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणा भेख वटानया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, वरन गोत ना कोई रखाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, कोटी कोटि जीव तराईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, तन नगारे चोट इक्क लगाईआ। सतिगुर

२५ ०८

पूरा हरि मेहरवान, काया कढ्ढे खोट हउमे मैल धुवाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आलणिउँ डिग्गे बोट, जीव जन्त लए उठाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, धर्मी धर्म जैकारया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, निहकर्मी कर्म कमा रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, वरन अवरनी डेरा ला रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, साची तरनी गुरसिख आप तरा रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हरनी फरनी नैण खुल्हा रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, करता करनी कर्म कमा रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हरिसंगत हरि जोती आप टिका रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आवण जावण मरनी मरन चुका रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभा रिहा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, साख्यात जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, गुरसिख बाल अञ्याणे पारज़ात आप बणांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, दिवस रैण एका रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, पिता मात आप हो जांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, देवे नाम साची दात, हरिसंगत झोली पांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, ज़ात पात ऊँच नीच ना कोई वखांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, इक्क इकांत रूप दरसांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हर घट अन्दर मारे झात आपणी ताकी मुख खुल्हांयदा। कलिजुग अन्तिम नाल रखाई सच बरात, साचा लाड़ा वेस वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी चार कुन्ट दहि दिशा मार झात लगाई इक्क किनात, गगन मण्डल वेख वखांयदा। खेल खेल सात सात, चौदां चौदां भेव चुकांयदा। इक्की सिक्ख चढ़ी बरात, साचा सगन मनांयदा। आपे चढ़या आपणे घाट, कलिजुग तीर्थ तट वखांयदा। आपे खिचणहारा जोत लिलाट, आपे विच टिकांयदा। आप उपजाए पूजा पाठ, आपे मेट मिटांयदा। आप कराए आपणा जाप, जप तप हठ आपे वेख वखांयदा। आप विकाए जगत घाट, आपे कीमत पांयदा। आपे जोती आदि शक्ति लिलाट, नूरो नूर वखांयदा। आपे आपणा पर्दा जाए पाट, आपे मुख छुपांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आन बाट विच ना आंयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम मार ध्यान, निहकलंका नाउँ रखांयदा। कवण कूट गोपीआं काहन बहि बहि गान, दिवस रैण सीस झुकांयदा। कोटन कोटि राम राम रहे वखान, दसरथ बेटा संग रखांयदा। कोटन कोटि मुहम्मद पए पछतान, हरि का भेव कोई ना पांयदा। कोटन कोटि पढ़ पढ़ थक्के वेद विदान, वेद विदांती दिस ना आंयदा। कोटन कोटि वेद व्यासा लिख लिख थक्के पुराण, भेव अभेवा अभेद कोई ना पांयदा। नानक मंगे दर दरबान हरि मेहरवान, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। आपणा आप आप पछाण, आपणा मूल चुकांयदा । बेअन्त बेअन्त बेअन्त श्री भगवान, रसना

जिह्वा आपे गांयदा। शाहो भूप पुरख सुल्तान, आदि जुगादि अख्वांयदा। खेले खेल दो जहान, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिगुर सूरबीर बलवान, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। अट्ठे पहर मंगे चरन ध्यान, दिवस रैण राह तकांयदा। पारब्रह्म प्रभ कर पछाण, आप आपणा रंग रंगांयदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड सच निशान, आपणा आप उठांयदा। आपणा मन्दिर वेख मकान, आपे कुण्डा लांहयदा। आपे जोत सरूप श्री भगवान, निरगुण नाउँ रखांयदा। आपे सति पुरख नौजवान, नव जोबन आप हंढांयदा। आपे आपणा देवे दान, दाता दानी नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा मेहरवान, मेहरवान आप हो जांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवाना, हरि हरि खेल खिलाईआ। आदि जुगादी इक्क तराना, एका राग अलाईआ। छत्ती राग ना करन पछाणा, नार सुरस्ती रही गाईआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साचे दर मंगल एका गाणा, एका सुर रखाईआ। गण गंधर्ब देवत सुर होए हैराना, यक्ष गंधर्ब रहे मुख शरमाईआ। करोड़ तेतीसा बाल निधाना, आपणी सूझ ना आईआ। शिव शंकर वेखे इक्क ज्ञाना, एका इष्ट मनाईआ। विष्नूं वंसी हो प्रधाना, आपणा रूप दरसाईआ। ब्रह्मा वेता लेख लिखाना, आपणा लेखा मूल ना आईआ। भरम भुलेखा आपे रक्खे श्री भगवाना, चले ना किसे चतुराईआ। आप उपजाए आपे मेट मिटाना, आपे वेख वखाईआ। चौथे जुग बद्धा गाना, साचा सगन मनाईआ। खेले खेल दो जहानां, अलख निरँजण वड वड्याईआ। गुरसिख साचे कर प्रधाना, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती नूर करे रुशनाईआ। आपे धरत धवल आकाश, आपे करे पसारया। आपे रवि ससि प्रकाश, आपे अन्ध अन्धेर अँध्यारया। मण्डल मण्डप पावे रास, आपे सूरज चन्न सितारया। आपे खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन पतालां आपे डेरा ला रिहा। लोआं पुरीआं खेल तमाश, हरि साचा आप करा रिहा। लक्ख चुरासी आपे वास, वस वस मेला आप मिला ल्या। आपे पूरी करनहारा आस, आपे डेरा ढाह ल्या। आपे वसे सदा पास, आपणा विछोड़ा आप वखा ल्या। आपे देवे सास ग्रास, आपे मुक्त करा ल्या। आपे निज घर रक्खे वास, आपे मुख छुपा ल्या। आपे बख्शे चरन भरवास, आपे दर दरका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा संग निभा ल्या। सगला संग संग निभा, आपणी दया कमाईआ। गुरमुख साचे आप जणा, आपणी बूझ बुझाईआ। सच दुआरे आप मिला, साची करे पढ़ाईआ। सच सिँघासण आप विछा, आपे रिहा सुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिला, आपे कल वरताईआ। दर घर साचे तेल चढ़ा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। आपणा हुक्म दए सुणा, हुक्मे

आप समाईआ। कलिजुग करे शब्द न्याँ, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मा वेता पकड़या बांह, अपणे दर बहाईआ। गोबिन्द साचा देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचे संग सच प्रीत, हरि हरि आप निभाईआ। काया रक्खी ठंडी सीत, चरन धारा इक्क वहाईआ। एका बैठा हरि अतीत, आदि अन्त अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी रीत, आपणी बणत बणाईआ। इक्क सुणाया सुहागी गीत, सोहँ रसना गाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत गुरुदुआर, ना कोई जणाईआ। हरिजन हरि हरि रक्खे चीत, चित वित ठगौरी कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा हो मेहरवान, एकँकार आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, पुरख अगम्म अख्वांयदा। आदि जुगादी इक्क निशान, एका धर्म धरांयदा। एक दानी देवणहारा जीआ दान, एका झोली पांयदा। एका खेले खेल दो जहान, सगला संग वेख वखांयदा। एका देवणहारा माण, माण निमाणयां आप हो जांयदा। ब्रह्मा वेता कर पछाण, अन्तिम मूल चुकांयदा। जोती जोत खिच्चे भगवान, जोती जोत समांयदा। गुरमुख साचा नौजवान, साचे रंग रंगांयदा। शाहो भूप सखी सुल्तान, घर साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरी ब्रह्म सुहांयदा। पुरी ब्रह्म पारब्रह्म, परम पुरख वखाईआ। लिखणहारा साचा कर्म, निहकर्मी नाउँ रखाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले, साचे तरनी तरन, तारनहार हरि वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे धाम सुहाईआ। सिँघ पाल हरि कृपाल, दीन दयाल अख्वाया। आप उठाया आपणा लाल, आपणी बूझ बुझाया। लोकमात कर रखवाल, साचा समां सुहाया। अन्तिम फल लग्गा साचे डाल्ह, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। ब्रह्म ब्रह्म लए समाल, पारब्रह्म सच्ची सरनाया। गुरमुख साचा दए बहाल, साचा दर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण हेठ विछाया। सच सिँघासण हरि दातार, आपणा आप रखाईआ। गोबिन्द साजन कर प्यार, उप्पर आप बिठाईआ। ब्रह्म पुरी कर विचार, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, उच्च महल्ले बैठा डेरा लाईआ। आपे बख्शे अमृत धार, चरन चरन वहाईआ। सीस जगदीस इक्क प्यार, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। साचे घर सुत्त दुलारा, हरि हरि आप सुहाया। नाता तुट्टया पंज तत्त आकारा, तत्व तत्त ना कोई बणाया। शब्दी शब्द शब्द वरतारा, शब्दी शब्द खेल खिलाया। जोती जोत जोत उज्यारा, जोती जोत जगाया। नाम नाम नाम भण्डारा, नाम नाम नाम आप वरताया। चरन कँवल बख्शे इक्क प्यारा, एका घर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, वेखणहारा साचा दर, दर दर साचा इक्क खुल्हाया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, लोआं पुरीआं आप समाईआ। जुग जुग खेले खेल महान, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। विष्नूं वंसी भेव चुकान, आप आपणा वेख वखाईआ। शिव शंकर लेखा बाल निधान, जगत जगदीसा पन्ध चुकाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। परम पुरख हरि सुल्तान, घर बैठा आसण लाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, कल्की कलि नाम रखाईआ। निहकलंक बली बलवान, जोद्धा सूरबीर आप हो जाईआ। सत्त रंग झुलाए इक्क निशान, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरी चुक्के कान, धरनी धरत वंड वंडाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, एका शब्द पढ़ाईआ। बाल अञ्याणा बली दान, सिँघ मनजीता आप कराईआ। अग्गे खड़ श्री भगवान, आपणी गोद उठाईआ। करोड़ तेतीसा मारे बाण, सुरपति राजा इन्द रहिण ना पाईआ। दर दुआरे देवे माण, वज्जदी रहे वधाईआ। दिवस रैण सारे गाण, गावत गावत सहिज सुख पाईआ। इक्क वखाया पद निरबान, परम पुरख वड्याईआ। धर्म झुलाए सच निशान, आपणे हथ्थ उठाईआ। बाल निधाना कर परवान, सत तिन्न वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, मेहरवान आप हो जाईआ। धर्मी धर्म धर्म जैकार, धर्मी धर्म वेख वखांयदा। सच सपुत्र सुत्त दुलार, आपे लेखे लांयदा। बाल निधाना धू प्यार, एका ब्रह्म जणांयदा। दर्शन देवे अगम्म अपार, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। मंगे मंग मंग दुआर, चरन धूढ़ी मस्तक लांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे मूल चुकांयदा। दर घर आपे आप , आपे आप बूझ बुझाईआ। आप लगाया आपणा नेंह, आपे तोड़ तुड़ाईआ। आपे बरखणहारा अमृत मींह, आपे तृखा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। धू धर धू धर, धर धरनी आप सुहाया। करता करनी आपे कर, आपे वेख वखाया। आप चुकावणहारा डर, आप आपणा मेल मिलाया। लोकमात खेल कर, गुरमुख साचे लए रखाया। गुरू गुर चेला आप हरि, हरिजन साचे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सवरना वेस वटाया। सति सतिवाद आदि जुगादि, एका एक अख्वाईआ। एका शब्द वजाए नाद, सृष्ट सबाई आप जगाईआ। मात जणाई बोध अगाध, आपणा भेव खुल्हाईआ। खेले खेल ब्रह्मादि, पारब्रह्म रूप वटाईआ। सन्त सुहेले आपे लाध, साचा मेल मिलाईआ। दिवस रैण जो रहे अगाध, आपे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवाना, एका रूप समाईआ। भगत सुहेला पैज रखाना, शब्द करे कुड़माईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाना, एका एक वेख वखाईआ।

आपणा दीपक आप जगाना, जगत करे रुशनाईआ। आपे राग आप तराना, एका ताल वजाईआ। एका अमृत पीणा खाणा, एका धीर बंधाईआ। मरना जीणा इक्क कराना, भय भयानक ना कोई जणाईआ। लोकां तीनां पार कराना, त्रैगुण तन जलाईआ। पंजां तत्तां वेख वखाना, पंझी संग छुडाईआ। दस पंज कर कुरबाना, आपणा भेट चढ़ाईआ। बीस बीसा हरि भगवाना, एका दूआ रिहा बणाईआ। दूआ वेखे दो जहानां, तिन्न त्रै तिन्ने लोक मिटाईआ। प्रगट होया श्री भगवाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जन भगतां देवे साचा दाना, आत्म ब्रह्म वखाईआ। छत्ती जुग ना किसे पछाना, सारे गा गा बैठे राह तकाईआ। गुर पीर अवतार होए महाना, हरि भाणे विच समाईआ। पुरख अगम्मा बैठा शाह सुल्ताना, एका रिहा फिराईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया गहर गम्भीर गुण निधाना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चरन कँवल ध्यान इक्क रखाना, एका राह वखाईआ। राए धर्म दर दुरकाना, गुरसिख तेरी पाहनी सीस लगाईआ। नौ दुआरे जोत जगाना, आपणा जोड़ा विच वखाईआ। नौ दरवाजे दिसे श्री भगवाना, गुरसिख चिन्दा आप मिटाईआ। चिट्टे बस्त्र पहरया बाणा, नौ दर अग्गे खड़ा बेपरवाहीआ। नौ निधा मेट मिटाना, नौआं सिक्खां हथ्थ रुशनाईआ। नौआं बस्त्र हथ्थ फड़ाना, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। अठारां सिद्धा मार मुकाणा, गुरसिख तेरी चरन ख़ाक रुलाईआ। तेरे सीस जगदीस शब्द ताज इक्क पहनाना, गुर गोबिन्द बैठा आप बणाईआ। कल्गी तोड़ा इक्क वखाना, सोहँ सस्से उप्पर होड़ा एका लाईआ। दोवें मुख आप खुलाना, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। शाहो भूप सच सुल्ताना, लोकमात बैठा डेरा लाईआ। गुरमुखां हथ्थीं बन्नृण आया गाना, फूलणहार हथ्थ चमकाईआ। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार बेपरवाहीआ। दरगाह साची सच टिकाना, घर साचा आप सुहाईआ। दर्शन लोचे राजा राणा, हरि दिस किसे ना आईआ। साधां सन्तां काया तन होया वैराना, घर मन्दिर ना कोई सुहाईआ। रागी नादी गौंदे गाणा, दिवस रैण ताल वजाईआ। हरि का रूप ना करे पछाना, गुर दर मन्दिर मस्जिद बैठे डेरे लाईआ। अन्तिम सहिणा पैणा भाणा, ना सके कोई बचाईआ। प्रभ आपणा तणदा आया ताणा, इक्की सिक्खां सेवा लाईआ। पहला तीर्थ तट्टां चुकाया माणा, गंगा गोदावरी सुरस्ती आपणे विच समाईआ। जगन्नाथ खेल महाना, कृष्न राम वड्डी वड्याईआ। शाहो भूप आया हरि भगवाना, लोकमात खेल खिलाईआ। कलिजुग तेरा पीणा खाणा, अन्तिम रिहा चुकाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, घर साचे लए बुलाईआ। दर दरवाजा लेख लिखाना, ग़रीब निवाजा सेव कमाईआ। सम्बल नगरी सच टिकाणा, माझा देस रुशनाईआ। हरिसंगत करे दर परवाना, लेखा लेखे लाईआ। शब्द गोबिन्द उठे बलवाना, चिल्ला तीर चलाईआ। जोती नूर श्री भगवाना, नूरो नूर रुशनाईआ। तीर्थ तट्टां तुट्टां माणा, सति सीर ना नीर वहाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर वज्जे वधाईआ। आपणा तन आपे साड़, हरिसंगत भेट करांयदा। आपणी जोत आपणे मन्दिर आपे वाड़, आपे बाहर कढांयदा। आपे वेखणहारा गुरमुख साचे लाड़, साचा लेख लिखांयदा। बाल अञ्याणे लेखे लाए नाड़ नाड़, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। नौ दुआरे जगत अखाड़, जगत जगदीसा दर सुहांयदा। सत्त रंग निशाना आपे चाढ़, गुरसिख साचे आप झुलांयदा। आपे घड़या आपणा घाड़, आपे भन्न वखांयदा। हरिसंगत लेखा लिख्या सतारा हाढ़, ना कोई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, तन मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। आपणा आप करया भेटा, एका खेल खिलाईआ। दूजे गुरसिख चढ़या भेटा, साचे घर वज्जी वधाईआ। तीजा लाल आप लपेटा, त्रै त्रै वेख वखाईआ। चौथा बणया खेवट खेटा, हरि साचा शब्द चलाईआ। लहिणा देणा चुकाया आपणे तन पंचम जेठा, हाढ़ सतारा सगन मनाईआ। हरिसंगत रक्खे साया हेठां, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। मेट मिटाए वड वड सेठा, राजे राणया ख़ाक मिलाईआ। कलिजुग कूड़ा होया रेठा, अन्तिम भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दर सुहाईआ। तीर्थ तट्टां पार किनारा, पारब्रह्म करांयदा। भगत वछल आप गिरधारा, एका राह चलांयदा। एका नाम सति जैकारा, सति पुरख निरँजण आप लगांयदा। काया वत सिंच कयारा, साचा फुल उगांयदा। फुल फुलवाड़ी भरे भण्डारा, अमृत फल खवांयदा। सतिजुग साचे कर विचारा, साचा मार्ग लांयदा। एका रंग रंगे नारी नारा, नर नरायण आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए वर, सति सज्जण मीत अख्वांयदा। हरि सज्जण मीत मुरारड़ा, बेअन्त परवरदगारया। करे खेल निरालड़ा, खलक खुदाई वेख वखा रिहा। सथ्थर वेखे चंगे यारड़ा, गुरसिखां देहां सेज विछा रिहा। आपे वसे धाम न्यारड़ा, आपे मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क सुहा रिहा। साचा दर हरि निरँकार, एका एक खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क प्यार, एका राह वखाईआ। इक्क कन्त इक्क भतार, एका सेज सुहाईआ। एका दर बंक दुआर, दर दरबान इक्क हो जाईआ। एका मंग इक्क भिखार, एका झोली पाईआ। एका अंग अंगीकार, एका अंगन बैठा माहीआ। एका पलँघ एका सेज इक्क दुआर, एका रिहा विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले आप उठाईआ। गुरसिख सुत्ता हरि हरि जागे, सेवक सेव कमांयदा। आपे फिरे पिच्छे आगे, खेड़ा राह ना कोई वखांयदा। आपे चरन रक्खे नांगे, गुरसिख चरन आपणे कंध उठांयदा। चरन प्रीती जो जन मांगे, घर जा जा भिच्छया पांयदा। आपणा वरते आपे सांगे, आपे खेल

खिलांयदा। गुरसिख तेरी आत्म वैरागे, आपणा नीर वहांयदा। आपे धोवणहारा दागे, आपे मैल मिटांयदा। आपे हँस बणाए कागे, सोहँ मोती चोग चुगांयदा। हरि हरि हरि घर वड वड भागे, हरिसंगत दर्शन पांयदा। एका धूढ़ मजन माघे, सति सन्तोख रखांयदा। सति पुरख निरँजण सरन सरनाई जो जन लागे, आप आपणा मेल मिलांयदा। मिले मेल हरि कन्त सुहागे, साची सखीआं सगन मनांयदा। सतिगुर पूरा आपे जागे, गुरसिख गूढ़ी नींद सवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण फिरे भागे, दर दर अलख जगांयदा। गुरसिख सोया सुत्त दुलारा, हरि हरि आप सवाईआ। अन्दर मन्दिर करे प्यारा, आप आपणा दरस दिखाईआ। सुखमन ना दीसे डूँघी गारा, टेडी बंक ना किसे फिराईआ। नौ दुआरे पार किनारा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। चिट्टे बस्त्र गिरधारा, आपणा शब्द वखाईआ। गुरसिखी खिच्ची जाए वारो वारा, तन्दन तन्द बंधाईआ। शब्दी शब्द सच्ची धुन्कारा, अनहद राग सुणाईआ। आपे बोल करे प्यारा, आपे करे जणाईआ। आपे हुक्म सुणाए पावे सारा, आपे वेख वखाईआ। आपे अमृत बख्शे ठंडी ठारा, सांतक सति कराईआ। आपणा पर्दा आपे पाड़ा, आपे मुख वखाईआ। आपे मेले साचा लाड़ा, दस्म दुआरी आप सुहाईआ। गुरसिख साचा चरन कँवल प्रीती कढ्ढे हाढ़ा, दूजी वस्त ना कोई मंगाईआ। सचखण्ड वखाए सच अखाड़ा, साचे घर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण ल्या तराईआ। अन्दर मन्दिर हरि हरि दरस, गुरमुखां आप वखांयदा। ग़रीब निमाणयां करया तरस, जप तप ना कोई करांयदा। आपणा अमृत आपे बरख, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, एका रंग रंगांयदा। आपणे आप आपे लए परख, आपणी घसवटी आप उठांयदा। जूठे झूठे आप चढ़ाए कलिजुग चरख, आपणा गेड़ा आप दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरसिख सोया कर ध्यान, चरन कँवल ध्यानया। सतिगुर पूरा जाणी जाण, देवे माण निमाणया। आए घर पुरख सुल्तान, दरस दिखाए श्री भगवानया। चिन्ता सोग रोग सर्ब मिट जाण, पाया परम पुरख सुल्तानया। नेत्र नैण जगत शरमाण, आत्म उपजे इक्क तरानया। नारी पुरख इक्क ज्ञान, एका रंग रंगानया। एका सतिगुर साचा काहन, साची सखीआं वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे करे परवानया। साचा घर दर परवान, गुरसिख गुर प्यारया। देवणहारा धुर फ़रमान, गुरमुख साचे आप सुणा रिहा। हरिसंगत मेला दो जहान, गुर चेला आप अख्वा रिहा। देवण आया साचा दान, देवत सुर इष्ट ना कोई वखा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव संगत तेरी सेव कमान, हरि साचा संग रखा ल्या। राम रमईआ बली बलवान, तीर कमान हथ्थ उठा ल्या। कान्हा कृष्ना चरन ध्यान, चरन कँवल इक्क सुहा ल्या। ईसा मूसा

फड़ निशान, अग्गे राहे पा ल्या। संग मुहम्मद दर दरबान, राह विच आप अटका ल्या। नानक देवणहारा धुर फ़रमान, लोकमात जीव जन्त आप जगा रिहा। गोबिन्द मंगे साचा दान, प्रभ अग्गे झोली डाह ल्या। झूठा मिटे कलि निशान, कलिजुग करनी आप करा ल्या। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आपणा शब्द सुणा ल्या। अन्तिम प्रगट होवे एका सूरबीर बली बलवान, पंज तत्त ना कोई रखा ल्या। गोबिन्द मंगे साचा दान, कवण धाम डेरा ला ल्या। शब्दी शब्द इक्क ज्ञान, गुर गोबिन्द आप सुणा रिहा। सम्बल नगरी सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ आप बणा ल्या। गोबिन्द तेरी कर पछान, तेरा दर सुहा ल्या। शब्द धुन सच्ची धुनकान, ब्रह्मण्डां खण्डां आप उपा रिहा। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ खण्डा ब्रह्मण्डां खण्डां आप उपा रिहा। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठा रिहा। जोती नूर श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। धर्म झुलाउँणा इक्क निशान, आपे बणत बणा रिहा। मेट मिटाए राज राजान, ग़रीब निमाणे गले लगा रिहा। गुरसिख साचे बाल निधान, आप आपणी गोद उठा रिहा। देवणहारा धुर फ़रमान, सतिजुग साचा जाप जपा रिहा। गुरसिख आपणी करन आप पछाण, दूजा गुरु ना कोई मना ल्या। पुरख अकाल गुण निधान, एका हरि वखा रिहा। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिखां उत्तों आपणा आप दित्ता वार, आपणी भेटा आप चढ़ा रिहा। आपणा आप आपे वार, गुरमुखां सेव कमाईआ। जोती जोत कर उज्यार, जागरत जोत जगाईआ। शब्दी शब्द शब्द भण्डार, गुर शब्दी आप वरताईआ। करनी करता करनेहार, करता पुरख नाउँ रखाईआ। निरगुण सरगुण वेख विचार, आप आपणी अलख जगाईआ। हरि सज्जण हरिजन मीत मुरार, हरि मन्दिर वेख वखाईआ। डूँघी कन्दर पार किनार, नौ दर ना कोई हल्काईआ। आपणे अन्दर आपे वाड़, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। गुरमुखां करे तन शृंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। आपणी हथ्थीं पाए फूलणहार, बिरध बाल ना कोई जणाईआ। जो जन नेत्र लोचण दर्शन करे आन, जम का डण्ड रहे ना राईआ। दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड दुआरे बैठा बेपरवाहीआ। भगत सुहेले जुग जुग लए पछाण, आपणी करवट आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका इक्की साची सिक्खी धारों तिक्खी वालों निकी गोबिन्द वेख वखाईआ। साची सिक्खी साचे पौड़े, आपे आप चढ़ांयदा। आप बुझाए लग्गी औड़े, अमृत मेघ बरसांयदा। आपे करे रीठे मिट्ठे कौड़े, अमृत मुख चुआंयदा। धुर दरगाही आपे बौहड़े, साची भगती इक्क रखांयदा। चरन कँवल जो जन आए दौड़े, मानस जन्म लेखे लांयदा। हरि का शब्द कोए ना मोड़े, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। गुरसिखां भार उठाए दिन रहि गए थोड़े, लहिणा लहिणा झोली पांयदा।

कलिजुग सतिजुग उपजे जोड़े, आपे मेटे आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहारा वर, हरि हरि सेव कमांयदा। हरि सेवक सतिगुर मेहरवान, गुरमुखां आप कराईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका इष्ट मनाईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका गुर समझाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एक मेल मिलाईआ। अठसठ तीर्थ चुक्के कान, गुरसिख कोए ना नहावण जाईआ। जो जन मंगे जीआ दान, रसना सोहँ गाईआ। दरस दिखाए प्रगट हो श्री भगवान, आप आपणा रूप वटाईआ। आई संगत कर परवान, दरगाह साची लेखे लाईआ। शब्द सुणाया साचे कान, दस्म दुआरी आप वखाईआ। नेत्र दर्शन पद निरबान, जोती जोत जगाईआ। जोती जोत श्री भगवान, जोत रूप आप हो जाईआ। तीर्थ तट्टां कर पछान, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। हरिसंगत कोलों मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। हरिसंगत करनी आप परवान, तेरी वड वड्याईआ। सच प्रीती सच निशान, साचा धाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला साचे घर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वीह सद पन्दरां बिक्रमी लहिणा देणा मिटाए आपणी दया कमाईआ। गुरसिख काया गढ़, फूलण बरखा आपे लाईआ। साचा अक्खर आपे पढ़, जगत विद्या मूल चुकाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण नूरो नूर रुशनाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, आपणी भेटा हरिसंगत तेरे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, दस्म दुआरी ग़रीब निमाणे अट्ठे पहर बहाईआ।

साची सिख्या सिक्ख विचार, सतिगुर साची बूझ बुझाईआ। लेखा लिख्या धुर दरबार, लोकमात पूर कराईआ। गोबिन्द मंगी भिच्छया विच संसार, प्रभ साचा झोली पाईआ। एका इक्की कर प्यार, एका संग निभाईआ। लिख्त लेख आपे लिखी, आपे पूर कराईआ। रक्खे लाज मुच्छ दाढ़ी केसी, मूंड मुंडाए आप तराईआ। सगला साथी दस दस्मेसी, दर दर अलख जगाईआ। नाल रलाए ब्रह्मा विष्न महेषी, आपणा लड़ फड़ाईआ। आपणा कीता आपे वेखी, आपे फेरा पाईआ। तीर्थ तट्टां नर नरेशी, साचा चरन छुहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम पेशी, इक्की सिक्ख गवाह रखाईआ। नानक हथ्थ खूंडी मोढे भूरी खेसी, सेली टोपी सीस बंधाईआ। छत्ती बरस बण परदेसी, छत्ती जुगां राह तकाईआ। मूर्त अकाल नर नरेसी, अन्तिम लेखा लाईआ। जोती जामा धरया वेसी, वेस अवल्ला आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख भुल्ले मार्ग लाईआ। भुल्ले मार्ग आपणे ला, आपणी दया कमांयदा। खुल्ल्हे भण्डारे आपणे आप वरता, नाम

नामा झोली पांयदा। आपणी सेवा आप कमा, गुरसिख इष्ट आपणा आप मनांयदा। अलख अभेव वेख वखा, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। रसना जिह्वा गुण साचा गा, गुरसिखां बणत बणांयदा। भारत खण्ड वंड वंडा, अठसठ झोली पांयदा। अन्तिम पल्ले गंढु दए बन्ना, ना कोई खोल्ह खुल्हांयदा। भेख पखण्डा गुरसिख ना सके कोई भरमा, भरमी गढ़ तुड़ांयदा। एका हिरदे नाम वसा, साचा मार्ग लांयदा। शब्द सरूपी फड़ फड़ बांह, आपणे नाल मिलांयदा। करनहारा सच न्याँ, गोपी काहन आप हो जांयदा। त्रिबैणी तेरा दर सुहा, इक्की सिक्खां वेख वखांयदा। अमृत धार आप चुआ, आपणे विच टिकांयदा। बुध बुध वेख वखा, फलगू डेरा लांयदा। गोतम बैठा गया लिखा, अन्तिम वेख वखांयदा। पंडत पांधे रिहा भुला, काशी मूल चुकांयदा। पटने वाला बेपरवाह, बाला बाल रूप वटांयदा। शब्द लाल आप उठा, आपे फेरा पांयदा। आपे चरन रक्खे टिका, सिँघ बिशन सेव कमांयदा। बोध गआ वेख वखा, बोध धरांयदा। काली काला वेस वटा, कलू काल खपांयदा। कल्की कल आप अख्वा, कलकत्ता चरन छुहांयदा। जगन्नाथ हरि डेरा ला, हरी हरि वखांयदा। कृष्ना सुभद्रा मेल मिला, साचा जोड़ जुड़ांयदा। आपणी भिच्छया आपे पा, आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणी वस्त आप टिका, आपे लेख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। राम रमेश्वर राम ईश्वर धार, आपणी आप चलाईआ। लंका तुट्टा गढ़ हँकार, घर साचे वज्जी वधाईआ। सीता सुरत सवाणी कर प्यार, साची सखीआं मेल मिलाईआ। आत्म अमृत इक्क आधार, एका रूप दरसाईआ। जुग जुग पावणहारा सार, आपे वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, आपणा चरन छुहाईआ। लहिणा देणा चुक्के भबीखण यार, पिछला मूल रहे ना राईआ। धनुश कोडी ख़बरदार, नाम धनुश इक्क उठाईआ। चढ़या चोटी आप करतार, ना सके कोई लाहीआ। वासना खोटी सर्ब संसार, हरि साचा आप कढाईआ। हरिसंगत साची कर प्यार, पूने चरन छुहाईआ। सतिजुग बणाए सच दुआर, साचे धाम दए वड्याईआ। आपणी किरपा आपे धार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सच सपुत्री कर प्यार, बम्बई चरन छुहाईआ। नासिक तेरा पार किनार, राम रामा डेरा ढाहीआ। गंगा गोदावरी गई हार, प्रभ दीद अन्त चुकाईआ। हाज़र हज़ूर हो त्यार, नदेड़ वेख वखाईआ। सचखण्ड पावे सार, गोबिन्द रूप वटाईआ। ग्रन्थी पन्थी करे ख़बरदार, सेवक सेवा आप कराईआ। साधां सन्तां दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणा खेल कर त्यार, आपे रिहा छुपाईआ। ग़रीब निमाणे पावे सार, मनवाड़ डेरा लाईआ। चल्ले चाल आपणी धार, हरिसंगत संग रखाईआ। गुरसिख साचे लाए पार, इटारसी वेख वखाईआ। हरि गोबिन्द तेरा प्यार, पुरख अबिनाशी भुल्ल ना जाईआ। जोती जामा भेख न्यार, किले कोट वेख वखाईआ। गवालियर अन्दर हो उज्जार, बवन्जा

देसां करे जणाईआ। बवन्जा कलीआं कर प्यार, बवन्जा धार आप बंधाईआ। बवन्जा अक्खर बावन नर निरँकार, आपे वेख वखाईआ। दयाल बाग कर ख्वार, अन्तिम देवे डेरा ढाहीआ। मुख छुपाया आप करतार, नेत्र नैण दिस ना आईआ। मथरा गोकल पावे सार, बिन्दराबन लेख खुल्हाईआ। यज्ञ हवन धूप दीप फूलन धार, जगत सुगंधी वेख वखाईआ। आत्म ब्रह्म ना किसे विचार, अग्नी तत्त ना कोई बुझाईआ। काया मन्दिर धूंआँधार, जगत चानण करे रुशनाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, सच समग्री वेख वखाईआ। सच वस्त ना कोई त्यार, नाम घृत ना कोई पाईआ। कमलापाती ना मीत मुरार, कान्हा कृष्ना नज़र ना आईआ। गोकल बन बिन्दरा बंसरी धार, साची सखीआं ना कोई नचाईआ। साँवल सुन्दर ना मीत मुरार, कलिजुग नैण ना कोई वखाईआ। कँवल नैण ना कोई उज्यार, साचा धाम ना कोई सुहाईआ। प्रभ पावणहारा सार, हर घट वेख वखाईआ। आपणी बन्ने आपे धार, गुरमुख साचे लए तराईआ। आप सुहाए दिल्ली दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणे लावे पार, गुरमुखां देवे वड वड्याईआ। मेरठ तेरी एका धार, एका रंग समाईआ। हरिसंगत तेरा सच विहार, आपे रिहा कराईआ। हरि जोती जोत कर उज्यार, हरिदुआर डेरा लाईआ। गंगा माता ढहि ढहि पए चरन दुआर, प्रभ अद्धा चरन छुहाईआ। अंगूठा चुम्मे मुख रस अपार, छड्ड ना सके बेपरवाहीआ। आपे विच्चों खिच्ची बाहर, आपे आप लटकाईआ। बहि बहि नाल करे प्यार, विष्नूं संग रलाईआ। हरि की पौड़ी आपे चाढ़, आपणे चरन बहाईआ। नाल रलाया रविदास चम्यार, पिछला कंगण हथ्थों लाहीआ। गुरमुख तेरा सच प्यार, गंगा माई वेख वखाईआ। तेरा कसीरा हो उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। रिखी केश हरि निरँकार, साध सन्त करे जणाईआ। शब्द डंका अपर अपार, आप आपणा रिहा वजाईआ। वासी पुरी घनका खेल अपार, आप आपणा आप वखाईआ। प्रगट जोत अनक बार, अनक कला नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिँघ हरबंस तराईआ। गुरसिख साचा आपे तार, आपणी दया कमांयदा। कुरू कुशेतर तेरी नईआ मँझधार वखांयदा। युधिष्टर युद्ध अपर अपार, आपणा आप करांयदा। रथ रथवाही ना किसे बहे कुद्द, तीर कमान ना कोई उठांयदा। ना कोई रहिण देवे साची बुध, गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पिछला लहिणा मूल चुकांयदा। पिछला लहिणा आप चुकाए, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पिछला लेखा आप लिखा, आपे पूर कराईआ। साचा डेरा आप वसा, आपे मेट मिटाईआ। हरिसंगत साची संग रखा, हरि साचा वेख वखाईआ। एका रंगण नाम रंगा, एका भिच्छया झोली पाईआ। एका आपणा वेस वटा, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। गुरसिख साचे आप तरा, अम्बाला शहर पार कराईआ।

नाभे बैठा डेरा ला, ओम प्रकाश घर वज्जी वधाईआ। बाल निमाणा गले लगा, सिँघ बख़्शीश रिहा तराईआ। सच सुनेहड़ा इक्क सुणा, सनाम रिहा तराईआ। सिँघ त्रिलोक आप उठा, आपे अंक लगाईआ। लुध्याणे फेरा पा, निरँजण अंजन एका पाईआ। ग़रीब निमाणे लए तरा, दर दरवेशा वेख वखाईआ। धन्ने धन्न दए जणा, धन्न धन्न वड्डी वड्याईआ। शब्द गहिणा तन छुहा, आपे वेख वखाईआ। साचे नगर खेड़ा आप वसा, बड़हेड़ी फेरा पाईआ। सिँघ नथ्था लए उठा, आपणी बूझ बुझाईआ। पिछला भरम भुलेखा लए कढा, सिँघ बिशन फेर उठाईआ। चेला गुर दए बणा, बिशन बिशन वड वड्याईआ। साची सिख्या दए समझा, सिँघ मनी रूप वटाईआ। आप आपणा दरस दिखा, पिछला मूल चुकाईआ। जोती जोत भेख वटा, भेखा धारी भेव ना राईआ। गुरमुख साचे मेल मिला, सिँघ मेहर अंक समाईआ। दो दोसांझ वेख वखा, गुरदेव इष्ट रखाईआ। महिंगा धन्न आप लुटा, सिँघ महिंगा हट्ट विकाईआ। सिँघ लाल लाल गुलाला रंग आप चढ़ा, आपणी सुध भुलाईआ। दीन दयाला फेरा पा, नगर मुध सिँघ सरूप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर सिँघ तारू जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, आपणी दया कमांयदा। ग़रीब निमाणे कर ध्यान, बाल अञ्याणे गले लगांयदा। मांगा सराए कर प्रधान, सारी संगत मेल मिलांयदा। लेखे लाए बिरध बाल जवान, जिस जन चरन छुहांयदा। अन्तिम देवणहारा धुर फ़रमान, दर दरवेश आप अख्वांयदा। दर वेरका कर परवान, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। सिँघ पशौरा गुण निधान, गुणवन्ता झोली पांयदा। गुरनाम गुर चरन ध्यान, गुर गुर वेख वखांयदा। अठाठ दिन तेरा जगत निशान, प्रभ आपणा आप झुलांयदा। अठसठ वेख सर्ब अस्थान, गुर दर मन्दिर फेरा पांयदा। जन्म भूमका खेल महान, अन्तिम गढ़ सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां तेरा वर, तेरी झोली पांयदा। पहली चेत्र कर त्यारी, सम्मत पन्दरां जोत जगाईआ। सचखण्ड खेल अपारी, ब्रह्म लोक वेख वखाईआ। शिव लोक हरि निरँकारी, पुरी इन्द्र डेरा लाईआ। चौदां लोकां खेल खिलारी, आपे वेख वखाईआ। नौ खण्ड इक्क उडारी, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। तीर्थ तट्टां पावे सारी, बवन्जा दिवस वंड वंडाईआ। सोलां दिवस हरि निरँकारी, गुरमुखां आप तराईआ। सोलां करे तन शृंगारी, देवे वड वड्याईआ। उँणंती मग्घर कर खुआरी, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। पहली पोह निरगुण नूर निरँकारी, जोती नूर करे रुशनाईआ। पन्दरां साल पर्दा रिहा भारी, आप आपणा आपे लाहीआ। गुरमुखां सुरती रही कुँवारी, अन्त लए प्रनाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया धर्म राए दी धी मुटयारी, देवे दर दुरकाईआ। गुर संगत करे चरन पनिहारी, आप आपणी सेव वखाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तारी, जुग विछड़े जग मेल मिलाईआ। दिवस रैण फिरे पिच्छे

अगाड़ी, आलस निन्दरा विच ना आईआ। बीज बीज्जया सतारां हाढ़ी, फल मेवा आप लगाईआ। रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, जो जन दर्शन पाईआ। दर ना आए मौत लाड़ी, कज्जल नैण ना कोई मटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहारा वर, पहली पोह जगत नाता तुटे मोह, करे कराए सोई हो, आत्म बीज देवे बो, सो पुरख निरँजण अग्गे हो, हरि का भेव ना जाणे को, पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुल्लां शेख़ मुसायक पीर रहे रो, गुरमुख गुरमुख हरिजन हरि संगत आपणी दुरमति मैल रहे धो, निर्मल नीर गुर चरन दुआर सच सरोवर आत्म अन्तर इक्क अशनान कराईआ। सर्ब जीआं दा दाता श्री भगवान, एका पुरख अख्वाईआ। रल मिल सखीआं मंगल गाण, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपणा दर आपे लैण पछाण, शब्द निशान इक्क वखाईआ। नानक गोबिन्द बहि बहि गाण, सीता राम कृष्न आप ध्याईआ। गुरसिखां देवे पद निरबान, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। अट्ठे पहर निगहबान, विसर कदे ना जाईआ । कलिजुग अन्तिम गुरसिखां केसी आपे छत्र झुलान, गोबिन्द गुर लिख्या लेखा साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे सुत्ता जंगल जूह उजाड़ पहाड़ सुंञ मसाण गुरसिख काया घर साचा खेड़ा आपे रिहा वसाईआ।

✪ २६ पोह २०१५ बिक्रमी दरबार विच लिख्त होई जेठूवाल ✪

निरगुण हरि निरगुण धार, निरगुण आप चलाईआ। निरगुण रूप आप करतार, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी कर पसारा, जुग जुग वेख वखांयदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, भेव कोई ना पांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, आपणी करनी करता किरत कमांयदा। ना कोई दूसर संग मीत मुरारा, सगला संग ना कोई वखांयदा। गगन मण्डल ना कोई सितारा, आकाश प्रकाश ना कोई जणांयदा। आकाश प्रकाश ना कोई उज्यारा, रवि ससि मण्डल मण्डप ना कोई वखांयदा। गुर पीर ना कोई अवतारा, साध सन्त ना कोई उपांयदा। लोआं पुरीआं ना पसर पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर ना रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई धारा, त्रैगुण मेल ना कोई मिलांयदा। पंज तत्त ना कर प्यारा, अप तेज वाए पृथमी आकाश ना कोई सुहांयदा । हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई महल्ल उसारा, नौ दर ना कोई खुल्हांयदा। मनुआ

३६
०८

जोत ना होए उज्यारा, अन्धेर प्रकाश ना कोई वखांयदा। बुध मत्त ना खेल खिलारा, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। वेद कतेब ना कोई लिखारा, ज्ञान ध्यान ना कोई दृढ़ांयदा। अक्खर वक्खर हरि निरँकारा, एका आपणा आप रखांयदा। इक्क अकल्ला कर पसारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणा दीवा बाती कर उज्यारा, आप आपणा दर सुहांयदा। ना कोई मन्दिर मस्जिद चार दिवारा, गगन गगनंतर ना कोई रचांयदा। जगत बसन्तर ना कोई जल धारा, तत्व तत्त ना कोई रखांयदा। अबिनाशी करता खेल अपारा, आप आपणा आप रचांयदा। आपणे दरसी आपे कर विचारा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आपे हक्क हकीकत वेखे बेऐब परवरदिगारा, नूर अलाही आप हो जांयदा। आपे राम रूप धर संसारा, कृष्न मुरारा आपणा मेल मिलांयदा। आप सुहाए आपणा बंक दुआरा, थिर घर नाम रखांयदा। आदि जुगादी कर पसारा, जागरत जोत इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वस्सया एका घर, घर सुहञ्जणा आप सुहांयदा। नर नरायण हरि करतारा, एका एक एकँकारया। खेले खेल दर दुआरा, आप आपणी कल धारया। लोआं पुरीआं बन्ह्हे धारा, आप आपणी रचन रचा ल्या। थिर घर बैठ सच सुल्ताना, शाहो भूप खेल खिला रिहा। रूप रंग ना कोई मकाना, दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हा रिहा। आपणा देवणहारा धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म चला रिहा। आप आपणी पाए आणा, आप आपणा सिर निवा रिहा। आप आपणा कर परवाना, आप आपणी बणत बणा रिहा। थिर घर बैठ श्री भगवाना, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह वेस वटा रिहा। लक्ख चुरासी जीव जन्त कोई जाणे ना, हरि का भेव कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल कर, घर साचे वेस वटा रिहा। सच महल्ला हरि अटारी, थिर घर आप वसाया। इक्क अकल्ला बैठा नर निरँकारी, निरगुण नूर करे रुशनाया। ना कोई वेद विदांता ब्रह्मा वेता लिखे लिखारी, जगत गीता ना कोए मनाया। आप आपणा कर उज्यारी, आप आपणा लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, इक्क अकल्ला एकँकार अजूनी रहित वसे निराधार, अनभव प्रकाश समाया। अनभव प्रकाश हरि निरँकारा, अजूनी रहित मूर्त अकालया। भय भंजन सर्ब संसारा, आदि निरँजण नाउँ रखा ल्या। जुग जुग खेले खेल खेलणहारा, अकल कलधारी आप अख्वा रिहा। सुहाए दर दर बंक दुआरा, निरगुण नूर इक्क उपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज लोआं पुरीआं अवण गवण त्रैभवण धरत धवल रिहा मवल, जल बिम्ब फुल कँवल आकाश प्रकाश निरगुण धार रसन स्वास मन मति बुध कर उज्यार, पंज तत्त हड्ड मास नाड़ी रत्त निरगुण वस्त एका घत्त, लक्ख चुरासी रथ चला रिहा। सर्ब कला आपे समरथ, आदि जुगादी

३६
०८

शब्द डोरी पाए नथ्थ, जन भगतां देवणहारा साची वथ्थ, छब्बी पोह कर भगतन मोह, आपणा मूल कन्त कन्तूहल निरगुण धार गुरमुखां झोली पा रिहा।

निरगुण धार सर्ब गुणवन्ता, आदि पुरख निरँजणा। जोत प्रकाश इक्क रखंता, पारब्रह्म दर्द दु:ख भय भंजना। आदि जुगादि खेल खिलंता, अबिनाशी करता साचा सज्जणा। तोड़नहारा गढ़ हउमे हँगता, बख्शणहार चरन धूढ़ साचा मजना। लेखे लाए भुक्खा नंगता, लक्ख चुरासी पर्दा कज्जणा। काया चोली नाम रंगता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर दुआर आपे भजना। आदि पुरख हरि निरँकारा, एका जोत जगाईआ। जुग जुग मात लए अवतारा, आप आपणा खेल खिलाईआ। भगतन मीता वड संसारा, सारंगधर आप हो जाईआ। शब्दी डंक अपर अपारा, लोआं पुरीआं आप वजाईआ। थिर घर बैठ दुआरा, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, आदि अनादि इक्क अख्वाईआ। खोजत खोज खोज ब्रह्मादि, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखाईआ । जुग करता करनेहारा, एका रूप समाया। आदि जुगादी करनी करतारा, एका कर्म कमाया। निरगुण खेले खेल न्यारा, एका लेखा कलिजुग विच ना आया। इक्क सुहाए सच दुआरा, थिर घर बैठा बेपरवाहया। शब्द शब्दी बोल जैकारा, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, लक्ख चुरासी लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस आदि निरँजण, हरि हरि वेस वटांयदा। गगन पताला साचा सज्जण, लोकमात राह तकांयदा। जगत नगारे दो जहानी वज्जण, साचा ताल आप रखांयदा। आप चलाए आपणा जहाजन, आप आपणा राह तकांयदा। आपे मारे शब्द अगम्मी अवाजन, सन्त सुहेले आप उठांयदा। आपे चरन घोड़े अस्व चरन दे रकाबन, शाह अस्वार आप हो जांयदा। आपे बेऐब परवरदिगार होए हाजी हाजन, साचा हज्ज आप करांयदा। आपे शाह आप नवाबन, पुन्न सवाब वेख वखांयदा। आपे मेल मिलाए वड वड राजन, आपे जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। अकल कला हरि हरि धार, आपणा वेस वटाया। इक्क अकल्ला कर पसार, लक्ख चुरासी डेरा लाया। कलिजुग अन्तिम पावे सार, आप आपणा रूप वटाया। ब्रह्मा वेता लिख लिख गया हार, चार वेदां रसन अल्लाया। पुराण अठारां कर विचार, वेद व्यासा मुख छुपाया। ऐनलहक्क दए सहार, हरि का भेव किसे ना पाया। आदि निरँजण जोत उज्यार, निरगुण नूर समाया। खेले खेल दर दुआर, आप

आपणी कार कराया। कलिजुग तेरा वेख दुआर, दर दरवेशा नाउँ धराया। ईसा मूसा पावे सार, चार यारी फोल फुलाया। हक्क मुहम्मद तेरा नाअरा, अल्ला राणी दए उठाया। नानक गुर खोल्ह किवाड़, आप आपणी बूझ बुझाया। गोबिन्द मिटाई झूठी धाड़, साचा मार्ग लाया। नौ खण्ड वेखे इक्क अखाड़, लोआं पुरीआं गगन मण्डल आकाश प्रकाश फेरा पाया। त्रैगुण माया देवे साड़, पंज तत्त रहिण ना पाया। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी दए जलाया। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर फोल फोलाया। लेखा गिणे लिखणहारा आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, आप आपणी धार बंधाया। एकँकारा इक्क अनादि, धुन अनादी आप सुणाया। पारब्रह्म माधव माध, मोहण मोहणी रूप वटाया। आप आपणे लए लाध, आप आपणा मेल मिलाया। आपे सन्त आपे साध, आपे सतिगुर नाम धराया। आपे वेखे वाद विवाद, हउमे हँगता आप वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी धार आप बंधाया। आपणी धार आपे बन्न्ह, आपे हुक्म चलाईआ। लहिणा देणा चुक्के रवि ससि सूरज चन्न, तारा मण्डल वेख वखाईआ। ब्रह्मा सुणे आपणा राग आपणे कन्न, हरि साचा दए सुणाईआ। शिव शंकर वेखे छंपर छन्न, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। करोड़ तेतीसा देवणहारा डन्न, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाईआ। लोकमात हरिभगत जननी जणया साचा जन, हरि साचा मेल मिलाईआ देवे वस्त नाम सच्चा माल धन, सच खज़ाना इक्क भराईआ। पंज विकारा कढ्ढे तन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरा खेल न्यारा, हरि साचे खेल खिलाईआ। ऐड़ा अथर्बण कर प्यारा, एका अक्ख खुल्हाईआ। वरनां बरनां वस्सया बाहरा, चार अठारां ना भेव खुल्हाईआ। नौ नौ खोल्ह किवाड़ा, नौ निध वेख वखाईआ। सति सति करे पसारा, सति सति वज्जे वधाईआ। ब्रह्मत वेख उत्पत, सतिजुग रचन रचाईआ। डाल्ही पत्त पत्त करे विचारा, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आप जणाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त पंज तत्त लाया गारा, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणया सच मुनारा, चार दुआरी इक्क वखाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, त्रैगुण बंधन पाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, अन्दर मन्दिर आप टिकाईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द धुन सच्ची जैकारा, शब्द ताल वजाईआ। छत्ती राग ना पायण सारा, अभेव भेव छुपाईआ। मुन रिख ना वेखे कोई दुआरा, अकाल मूर्त नज़र ना आईआ। आप आपणे सुत्ता पैर पसारा, आप आपणा मुख छुपाईआ। हक्क हकीकत कर त्यारा, खलक खुदाई आप अख्वाईआ। नूरो नूर नूर उज्यारा, नूरी बिस्मिल आप हो जाईआ। सति सति सति कर वरतारा, सति पुरख नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम खेल

न्यारा, नानक शब्द जणाईआ। गोबिन्द मंगे बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। अकाल पुरख अबिनाशी करता पारब्रह्म दातारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि जुगादी ल्ए अवतारा, जुग करता नाउँ रखाईआ। पृथ्मी आकाश दए हुलारा, गगन मण्डल आप हिलाईआ। जागरत जोत कर उज्यारा, निरगुण वेस वटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सारा, जेरज अंड फोल फोलाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। चारों कुन्ट कराए धूंआँधारा, दहि दिशा फेरी पाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना करे ख़बरदारा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। दो जहान ना दिसे कोई दुआरा, दर दुआर ना कोई जणाईआ। उच्च महल्ल ना दिसे पसर पसारा, राज बणतर ना कोई वखाईआ। अन्तिम तोड़े गढ़ हँकारा, आप आपणी कल वरताईआ। सति पुरख निरँजण हो त्यारा, आप आपणा बल वखाईआ। वीह सद बिक्रमी तेरा प्यारा, भुल्ल कोई ना जाईआ। इक्क अकल्ला भुजां पसारा, चौथे जुग फेरी पाईआ। वज्जया डंक शब्द नगारा, रणजीत आप वजाईआ। त्रैगुण लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। चौथे युग इक्क वजाए आपणा नद, जन भगतां अग्गे मंगे मंग अग्गे आपणी झोली डाहीआ। वीह सद पंज लहिणा देणा चुक्के कारू गंज, माया धार दिस ना आईआ। छेवे छप्पर छन्न इक्क चढ़ाए आप चन्न, साची कर रुशनाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण वेखे घर साचे जाए मन्न, निरगुण निरगुण नूर समाईआ। अट्ठां तत्तां बेड़ा देवे बन्न्ह, दस अट्ठ कर कुड़माईआ। बीस नौ कढ्ढे जन, नौ दुआरे फोल फोलाईआ। वीह सौ दस बिक्रमी धन्न धन्न, लोआं पुरीआं ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर जै जैकार कराईआ। साचे बाले राग सुणाया कन्न, धुन अनादी इक्क वजाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं दित्ता डन्न, रविदास चम्यारा लेखे लाईआ। साचे लेखे लगा तन, कलिजुग मुल चुकाईआ। काया भाण्डा देवे भन्न, दर दुआर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। कलिजुग तेरा सच हुलारा, हरि साचा आप दवांयदा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा, चारों कुन्ट भवांयदा। ना कोई दिसे मीत मुरारा, साक सैण ना कोई बचांयदा। ना कोई नारी कन्त करे प्यारा, नार भतार ना कोई मिलांयदा। ना कोई दारा सुत्त होए उज्यारा, ना कोई सगला संग निभांयदा। ना कोई खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, तीर कमान ना कोई उठांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान हरि निरँकारा, आप आपणा कर्म कमांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, एका नाअरा लांयदा। ऊँचां नीचां कर प्यारा, आप आपणा दर सुहांयदा। वीह सद बारां हो उज्यारा, हाढ़ सतारां वेख वखांयदा। हरिसंगत मेला विच संसारा, सांतक सति सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी बणत आपणी जुगत आपे आप जणांयदा। सम्मत तेरा साचा राह, नानक एका गाईआ।

शब्द तोला बण मलाह, हरिजन वेख वखाईआ। एका ढोला रिहा गा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। चौदां विद्या रिहा भुला, चौदां हट्टां खोज खोजाईआ। चौदां लोक बेपरवाह, चरनां हेठ दबाईआ। ब्रह्मा रोवे मारे धा, अट्ठे नेत्र नीर वहाईआ। शिव शंकर सीस रिहा निवा, बाशक तशका गलों लाहीआ। इन्द इन्द्रासन दए तजा, हरिजन साचे वड वड्याईआ। करोड़ तेतीसा लोकमात दए उपजा, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। सन्त सुहेले लए जगा, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। आपणा मेला लए मिला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुर चेला एक धाम बहा, एका रंग रंगाईआ। थिर घर बैठा सगन मना, जोती ख़ुशी मनाईआ। शब्द सुत्त तेरा साचा साह, साचा दिवस सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, वीह सद तेरां वड वड्याईआ। जगत सन्तां दए भुलां, मन मति कर कुड़माईआ। भरम भुलेखा आपे पा, आपणा आप छुपाईआ। जगत भगती तेरा लहिणा दए चुका, अभ्यास जोग पन्ध दए मुकाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान रहे गा, हरि का रूप दिस ना आईआ। सारंग ढोलक जो जन रहे वजा, अनहद राग ना सुणने पाईआ। निउँ निउँ सजदा जो रहे कमा, साचा सीस ना भेट चढ़ाईआ। अहिमद मुहम्मद रहे गा, सच मुहम्मद दिस ना आईआ। जगत सतारा रहे वजा, तन सितार ना कोई वजाईआ। छत्ती रागां रहे गा, गावणहारा दिस ना आईआ। गुर दर मन्दिर बैठे डेरा ला, मन का डेरा कोई ना ढाहीआ। तन बिभूती मल सुआह, बैठे ख़ाक रलाईआ। आपणा आप ना मिलाया बेपरवाह, जगत विछोड़ा ना कोई कटाईआ। कलिजुग अन्तिम निथाव्याँ देवणहारा साचा थाँ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां पकड़े आपे बांह, दर दर घर घर अलख जगाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, अमृत आत्म जाम प्याईआ। आपे पिता आपे माँ, हरिजन साचे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सद तेरां तेरा रंग तेरे तन चढ़ाईआ। चढ़या रंग हरि चलूल, हरि नामे आप चढ़ाया। नानक गुर ना गया भूल, घर साचे मंग मंगाया। आत्म अन्तर आपे बोल, आदि निरँजण सेवा लाया। शब्द पंघूड़ा आपे झूल, सच सिँघासण इक्क विछाया। ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाया। आपे जाणे आपणा मूल, आदि अन्त आप हो जाया। आपे नारी कन्त कन्तूहल, सच सुहञ्जणी सेज आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा सगन मनाया। दर घर साचे सच वसेरा, हरि साचा आप कराया। आपे करे हक्क निबेड़ा, आदि अन्त वेख वखाया। आपे देवणहारा उलटा गेड़ा, लक्ख चुरासी आप भवाया। आपे वेखे पंचां झेड़ा, आपे पंचम शब्द सुणाया। आपे करनहारा खुल्हा वेहड़ा, आपे धरनी धवल डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अमृत आत्म नाभी

कँवल दए भराया। नाभ कँवल अमृत धार, हरि हरि आप लगाईआ। सर सरोवर कर त्यार, मन्दिर अन्दर आप समाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, एका एक करे रुशनाईआ। एका शब्द सच्ची धुन्कार, एका रिहा सुणाईआ। एका मंगल गाए वारो वार, एका मेला सहिज सुभाईआ। एका मेल मिलावा मीत मुरार, मीत मुरारा विछड़ ना जाईआ। जुग जुग लहिणा देणा मूल चुकाए देवणहार, दाता दानी आप हो जाईआ। जुग जुग लाए पार किनार, जुग जुग नींह रखाईआ। जोती जामा भेख न्यार, आप आपणी कल वरताईआ। बस्त्र तन कर शृंगार, पंज तत्त हंढाईआ। मन मति बुध दर दर सेवक सेवादार, आपणी आप कार कराईआ। पंज विकारा ढहि ढहि दुआर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सम्मत चौदां वीह सद हो ख़बरदार, आप आपणी खेल खिलाईआ। एका इक्की कर त्यार, एकँकारा विच समाईआ। सति नाम दए अधार, अकाल मूर्त इक्क दरसाईआ। अजूनी रहित होया ख़बरदार, दिस किसे ना आईआ। गुरसिख साचे कर प्यार, घर घर ल्ए जगाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, शूद्र ब्रह्मण क्षत्री वैश ना कोई रखाईआ। कक्खां कुली सुत्ता पैर पसार, शाह सुल्ताना दर दुरकाईआ। राज राजाना करया ख़बरदार, कलिजुग नींद ना कोई खुलाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकया वारो वार, सीस ताज ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। सम्मत सम्मती हरि हरि फेरा, हरि हरि वेस वटांयदा। आपे वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा आप हो जांयदा। वेखणहारा काया खेड़ा, जीउ पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की जगत निराली धार रक्खी, दूजी धार ना कोई वखांयदा। दो जहानां हरि अभेदा, एका एकँकारया। लेखा लिख लिख थक्के चारे वेदा, पार किनारा ना कोई दिसा रिहा। जगत बाणी पढ़ पढ़ थक्के कतेबा, दुआर बंक ना कोई सुहा रिहा। कोटन कोटि गा गा थक्के रसना जेहवा, जीव जागरत जोत ना कोई मिला ल्या। आदि जुगादी अगम्म अगोचर बेपरवाह, शब्द मलाह आपणा राह आप चला ल्या। गुरमुखां पकड़नहारा बांह, निहकलंक कूड़ो कूड़ा नाता तोड़ तुड़ा ल्या। सच सुच्च करे सच न्याँ, साख्यात रूप वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा डंक वजा ल्या। शब्द डंका अपर अपार, आपणा आप वजांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, लोआं पुरीआं आप उठांयदा। शाह सुल्ताना दए हुलार, पीर फकीरा शाह हकीरा वेख वखांयदा। साधां सन्तां नेत्र दए उग्घाड़, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। मनमुख जीव चबाए आपणी दाढ़, आपणे भाणे आप रहांयदा। एका थित वखाए सतारां हाढ़, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। नगर शहर उजाड़ पहाड़, एका धार वहांयदा। जन भगतां हरि सन्तां गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़, आप आपणी सेवा लांयदा।

सचखण्ड दुआरे साचे देवे वाड़, धर्म राए मुख शरमांयदा। लाड़ी मौत धी मुटयार, गुरसिख ना कोई प्रनांयदा। चित्र गुप्त लेखा देवे पाड़, जो जन सरनाई सीस झुकांयदा। दरगाह साची साचा लाड़, साचा बंक रखांयदा। शब्द घोड़े देवे चाढ़, वागां आपणे हथ्थ रखांयदा। त्रिलोकी पैरां हेठ लताड़, सच दुआरा आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां चौदां धार, चौदां लोक कर विचार, चौदां तबकां वेख विचार, चौदां अल्ला राणी अल्ला हू हू नाअरा लांयदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क अकल्ला, परवरदिगार नाउँ रखाया। वसणहारा जलां थलां, पुरीआं लोआं डेरा लाया। जुग जुग वेखणहारा तेरा सल्ला, सालस शब्द इक्क बणाया। सच दुआरा आपे मल्ला, सच सिँघासण इक्क सुहाया। आपणी जोती आपे रला, दिस किसे ना आया। आपणे दीपक आपे बला, आप आपणा करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां दित्ता वर, गुरमुख साचे लए तराया। गुरमुख साचे साची इक्की, एका धार बंधाईआ। शब्द खंडिओ रक्खी तिक्खी, ना कोई मेट मिटाईआ। पारब्रह्म प्रभ लेखा रिहा लिखी, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आपणे नेत्र आपे पेखी, आप आपणा नैण खुलाईआ। आपे फिरे देस परदेसी, दर तेरा ना कोई वखाईआ। आपे नानक जोत दस दस्मेसी, निरगुण नाउँ धराईआ। आप राम कृष्न करे वेसी, वेस अवल्ला आप अख्वाईआ। आपे ईसा मूसा संग मुहम्मद नर नरेशी, आपे आपणा नाअरा लाईआ। आपे लाज रखाए मुच्छ दाढ़ी केसी, मूंड मुंडाए आपे लए तराईआ। जो जन नेत्र लोचण नैण दर दुआरे आए रहे वेखी, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। नर नरायण वड मृगेशी, मकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वाईआ। आपे पीर दस्तगीर मूलां मुलाना शेखी, शाह हकीर आप हो जाईआ। आपणी तकदीर आपे लिखी रेखी, आपे मेट मिटाईआ। आपणे दर लक्ख चुरासी तेरी मंगे आपे पेशी, सच अदालत इक्क वखाईआ। सूफी पंडत आत्म ब्रह्म ज्ञानी आपे रहे वेखी, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद चौदां वड वड्याईआ। चौदां लोक चोदां हट्ट, हरि हरि हट्ट खुल्हाया। गुरसिख विरला लाहा रिहा खट्ट, लक्ख चुरासी दिस ना आया। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी स्वांग रचाया। वसणहारा घट घट, अन्तरजामी नाउँ धराया। दीपक जोती लट लट, इक्क प्रकाश कराया। शब्द नगारे मारे सट्ट, अनहद सेवा लाया। मन का बुरज जाए ढठ्ठ, मति बुध रही शरमाया। गुरसिख तन लपेटे आपणे पट, शब्दी पर्दा पाया। भरम भुलेखा कढ्ढे वट्ट, दूई द्वैती रहिण ना पाया। लहिणा देणा चुक्के आन बाट, मात गर्भ फेर ना आया। नूरो नूर नूर लिलाट, मस्तक लेखा लेख चुकाया। आप चढ़ाए औखे घाट, जिस जन दर दुआरे दर्शन पाया। दुरमति मैल देवे काट, निर्मल अमृत आत्म जाम प्याया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। सम्मत चौदां चौदां लोक, हरि साचे रचन रचाईआ। सोहँ शब्द सच सलोक, एका आप अल्लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर संग मुहम्मद चार यार ना सके कोई रोक, अध विच बैठे राह तकाईआ। गुरसिख ना मंगे कोई मोख, सतिगुर पूरा करे पढ़ाईआ। आवण जावण चुक्के दोख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। सचखण्ड दुआरे पार कराए तीनो लोक, त्रैगुण नेड़ ना आईआ। आप संवारे लोक परलोक, जो जन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि चमत्कार, एका रूप वटाया। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, शब्दी नाउँ रखाया। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार, भेव कोई ना पाया। गुरमुखां करे मात प्यार, मनमुखां दए सजाया। नूरो नूर कर उज्यार, नूरो नूर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै त्रै त्रै वेस वटाया। त्रै त्रै वेस हरि करतार, आपणा आप कराईआ। सत सत सत हो उज्यार, सत सत वेख वखाईआ। नौ नौ खोल्ह किवाड़, नौ नौ अलख जगाईआ। बवन्जा बवन्जा तेरी धार, बवन्जा अक्खर वेख वखाईआ। पैंतीस अक्खर हो उज्यार, बाणी बोध नाम धराईआ। सत सतारां पार किनार, दस सत दिस ना आईआ। गुर पीर ना पावे कोई सार, बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो विच संसार, आपणा लेखा दए मिटाईआ। सम्मत वीह सद पन्दरां खेल करतार, तीर्थ तट्टां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप शाहो भूप सति सरूप वेख वखाईआ। सति सरूप सर्ब सुख दाता, एक रंग करतारया। वेखणहारा गोदावरी गंगा जगत माता, अठसठ तीर्थ पावे सारया। कलिजुग अन्तिम तोड़े नाता, ना कोई मेल मिला रिहा। लहिणा देण चुकाया हथ्थो हाथा, आप आपणा चरन छुहा ल्या। आप सुणाई आपणी गाथा, अन्तर मन्त्र इक्क वसा ल्या। तीर्थ तट चढ़ाए कलिजुग राथा, पिच्छों धक्का एका ला रिहा। ना कोई किनारा ना कोई ताटा, सर सरोवर ना कोई जणा रिहा। कलिजुग जीवां प्या घाटा, पूरा दाम ना कोई वटा रिहा। वेखणहारा चौदां हाटा, लोकमात फेरा पा रिहा। आदि शक्ति खिच लिलाटा, जोत ज्वाला संग रला ल्या। वीह सद पन्दरां तेरी वाटा, तेरा पन्ध मुका ल्या। सतिजुग त्रेता द्वापर सुआया आपणी खाटा, राम कृष्न सेवा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ पन्दरां वेख वखा रिहा। वीह सौ पन्दरां अन्दर वड़, हरि साचे खेल खिलाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, जगत नेत्र दिस ना आया। साध सन्त ना सके फड़, वेद कतेब भेव ना पाया। गुरसिख मन्दिर डूँघी कन्दर आपणे पौड़े आपे जाए चढ़, आप आपणी दया कमाया। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, खाली हथ्थ वखाया। ना कोई किला ना कोई कोट बणाया गढ़, लशकर फौज

ना कोई वखाया। राज राजानां शाह सुल्तानां उखेड़े लग्गी जड़, लोकमात ना कोई लगाया। ना कोई रसना पीवे हुक्का नड़, मदिरा पान ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां लेख लिखाया। वीह सौ पन्दरां डूँघी कन्दर, हरि जोती जोत जगाईआ। आपे वेखणहारा मन्दिर, आप आपणी कल वरताईआ। आपे तोड़नहारा जन्दर, आपे दए लगाईआ। आपे टिल्ले उच्चे वस्सया गोरख मच्छन्दर, आपे ढेरीआं ढाहीआ। आपे दर दर घर घर लक्ख चुरासी नचाए बन्दर, नौ दुआरे आप भवाईआ। जन भगतां आदि जुगादि सदा बख्शिंद, बख्शणहार वड वड्याईआ। पार उतारे भागां मन्द, जो चल आए सरनाईआ। आप उठाए आपणे कंध, भव सागर आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सद पन्दरां वेख वखाईआ। वीह सद पन्दरां तेरी धार, हरि साचे सच वरताया। लंका गढ़ तोड़ हँकार, कलिजुग वेख पार किनार, अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाया। राह तकाए मुहम्मदी यार, आपणा नैण खुल्हाया। दर दुआर ना देवे कोई प्यार, बैठे मुख भवाया। अठसठ करया ख़बरदार, हरि साचा वेख वखाया। गुरसिख साचे कर उज्यार, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां वेख वखाया। वीह सद पन्दरां तेरा रंग, सृष्ट सबाई आप चढ़ानया। शाह सुल्तान फिरन नंग, दर दर घर घर भन्नया। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, लेखा जाणे दो जहानया। नौ खण्ड सत्त दीप आपे लँघ, आपणा ताल सुणाए आपणे कन्नया। आपे होए बाल भुयंग, जोद्धा सूरबीर बलवान आप अख्वानया। आपे होए शाह फरंग, ईसा मूसा आपे मन्नया। आपे वेखणहारा कलिजुग नंग, आपे रूसा चीना चाढ़े चन्नया। सम्मत पन्दरां शब्द सिँघासण बैठ पलँघ, प्रभ देवणहारा डन्नया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुर मन्दिर अन्दर नौ दुआरे आप लँघ, मन मनुआ एका मन्नया। सदा सुहेला वसे संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलन्नया। वीह सद पन्दरां पैंडा रिहा मुक्क, हरि साचा आप मुकाईआ। सर सरोवर अमृत रिहा सुक्क, साचा जल ना कोई भराईआ। जूठयां झूठयां साधां सन्तां मुख प्या थुक्क, थुक्कीं मुख भराईआ। मन मती सुफल ना होई मात कुक्ख, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। हउमे हँगता उलटा रुक्ख, आपे आप रखाईआ। ना ओह मानस ना मनुख, जो हरि हरि गए भुलाईआ। कलिजुग अन्तिम देवणहारा दु:ख, घर घर दए सजाईआ। राए धर्म सुखणा रिहा सुख, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। लाड़ी मौत मुख घूँगट चुक्क वेखे लुक लुक, दूर दुराडी दर्शन पाईआ। चित्रगुप्त लैणा देणा वखाए झुक, आप आपणा फोल वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता गुरमुखां गुरसिखां हरिजन हरिभगतां आपणी गोदी लए चुक्क,

जुग जुग वड्डी वड्याईआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वीह सद पन्दरां वेखणहारा उच्चे मन्दिरां, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। वीह सद पन्दरां अन्त कराया, हरि पूरे वड वड्याईआ। कलिजुग लहिणा झोली पाया, मोह रहे ना राईआ। शब्द पघूँड़ा इक्क ल्याया, दर आपणे आप रखाईआ। हरिसंगत साचा मेल मिलाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। अबिनाशी करता खेल खिलाया, सचखण्ड रंग रंगाईआ। विष्नूं वंसी वेखण आया, पहले दर सीस झुकाईआ। ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकाया, दूजे दर ख़ुशी मनाईआ। शिव शंकर हथ्थ त्रिसूल सुटाया, दर तीजे मिल्या बेपरवाहीआ। सुरपति राजा इन्द रो रो नीर वहाया, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। चौथा दर आप खुलाया, हरि साचे वड वड्याईआ। पंचम वेखणहारा वेख वखाया, दिस किसे ना आईआ। करोड़ तेतीसा गल विच पल्ला पाया, लोकमात राह तकाईआ। छेवें दर खेल खिलाया, शब्दी धुन रखाईआ। सति पुरख निरँजण सत्तवां दर रिहा सुहाया, ना कोई दूसर संग रलाईआ। अट्ठां तत्तां मेल मिलाया, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध संग निभाईआ। अठवें दर डेरा ढाहया , गुरमुख मिले वधाईआ। नौ दुआरे निरगुण जोत कर रुशनाया, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क बणाया, शब्दी साचा चन्न चढ़ाईआ। मण्डल मण्डप इक्क बणाया, गगन गगनंतर जुगत रखाईआ। साचा चन्दन आप सुहाया, अकाल मूर्त सेवा लाईआ। जोती धार नूर प्रगटाया, शब्दी डंक सुणाईआ। शब्द दुलारा वेख वखाया, वड दाता बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ इक्क सिँघासण आप रखाया, कलिजुग सीआं वंड वंडाईआ। चवर सीस आप झुलाया, जगदीस खेल खिलाईआ। गुर पीर साध सन्त नहीं नाम धराया, पारब्रह्म वड वड्याईआ। अकाल पुरख प्रभ कल विच आया, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सोहँ डंका इक्क वजाया, गुरमुखां विच समाईआ। गुरसिख भगत जनका इक्क तराया, कोटन कोटि नाल तराईआ। बार अनका वेस वटाया, निहकलंका नूर रुशनाईआ। वासी पुरी घनका नाउँ रखाया, गुर गोबिन्द सेवा लाईआ। मन का मणका दए भवाया, मन ममता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा नौ दर, दर दरवाज़े वेख वखाईआ। नौ दर छुट्टा नाता, हरिजन हरि हरि मूल चकाया। दसवें घर पुरख बिधाता, शब्द सिँघासण डेरा लाया। ना कोई जात ना कोई पाता, ऊँच नीच ना कोई रखाया। ना कोई शरअ ना हजामता, रोज़ा बाग ना कोई जणाया। वेखणहारा सृष्ट सबाई कायनाता, खाकी खाक डेरा लाया। हर घट अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे झाता, नूर अलाही नूर समाया। मेटणहारा अन्धेरी राता, आप आपणा चन्न चढ़ाया। इक्क चलाए साची गाथा, सतिजुग साचा राह वखाया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, अकाल पुरख आपणा नाउँ धराया। आपे सम्मत पन्दरां तेरा लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, साधां सन्तां वेख वखाया।

लेखे लग्गे ना किसे पूजा पाठा, जिस जन हरि हरि ना दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, सम्मत पन्दरां तेरां पन्ध आपे चुकाया। सम्मत पन्दरां पन्ध मुकावणा, ब्रह्मण्ड खण्ड वधाई। नौ नौ सत्त सत्त फेरा पावणा, त्रै त्रै वंड वंडाई। जेरज अंड वेख वखावणा, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाई। भेख पखण्डा सृष्ट सबाई आप मिटावणा, एका रंग रंगाई। आत्म ब्रह्म सर्ब जनावणा, निज आत्म डेरा लाई। अमृत आत्म आप प्यावणा, काया भरी सच सुराही। शब्द अनादी आप सुणावणा, आपे रिहा गाई। हरिसंगत साची सगन मनावणा, हरि साचा वेख वखाई। आपणी हथ्थीं गाना आप बंधावणा, हरि कन्त लए प्रनाई। साची सेजा मेल मिलावणा, घर मेला बेपरवाहीआ। त्रेता तेरा मूल चुकावणा, तेरी पूज कराई। द्वापर साची ख़ुशी मनावणा, प्रभ साचा होए सहाई। सतिजुग तेरा रंग रंगावणा, तेरी वंड वंडाई। कलिजुग कूड़ कुड़यारा गलों लाहवणा, दुरमति मैल धुआई। वीह सद पन्दरां तेरी अन्तिम धार हरि हरि साचे दिवस सुहावणा, हरि साचा खेल खिलाई। छब्बी पोह हो उज्यार, सम्मत सोला कर प्यार, छैल छबीला चढ़नेहार घोड़े नीला, आप आपणा मेल मिलाईआ। तन छुहाए बस्त्र पीला, पीली धार पार कराईआ। पहली रात हरिसंगत आपणा करना हीला, लक्ख चुरासी फंद कटावण आया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग लए वर, दर्शन देवे घर घर, दूर दुराडा ना कोई रखाईआ। साचा तन्दन बद्धा तन्द, हरि साचा सगन मनावना। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, पंज दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावणा। निरगुण जोत चढ़ाए साचा चन्द, सूरज चन्न मुख शरमावणा। एका राग सुणाए कन्न, रागी नादी किसे ना गावना। भाण्डा गढ़ हँकारी देवे भन्न, दर आया पूर कराए भावना। लेखे लग्गे जननी जन, छब्बी पोह जिस जन दर्शन पावना। आपे बन्नृणहारा मन का मन, मन मती मेट मिटावाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सचखण्ड दुआरे घर हरि साचे आप वसावना। साचे हथ्थ बन्ने डोर, हरि साचे वड वड्याईआ। पार कराए अन्ध घोर, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मेट मिटाए पंज चोर, पंज चोर रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा आप मुकाईआ। हरि बिन अवर ना दिसे कोई होर, हरि साचा मार्ग लाईआ। चरन कँवल प्रीती लए जोड़, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द चढ़ाए साचे घोड़, हँ हँगता वाग भवाईआ। वर पाए जेहा मन लोड़, जो जन रहे सरनाईआ। एथे उथे जाए बौहड़, कोटन कोटि योजन पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां आत्म अन्तर लग्गी औड़, देवे प्यास बुझाईआ। प्रगट होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, बरन शंकर रहे ना राईआ। सच्ची दरगाह लाए आपणा पौड़, आपे वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध

सन्त परखणहारा मिट्ठे कौड़, ना कोई सके भेव छुपाईआ। गुरमुखां गुरसिखां आपे रिहा होड़, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा लहिणा देणा जगत चुकाए दर, दोए जोड़ मूल चुकाईआ। शब्द गाना हरि समरथ, तन्दन जगत बंधांयदा। रक्खणहारा दे कर हथ्थ, आपणे मार्ग लांयदा। सोहँ शब्द साची वथ्थ, साढे दस झोली पांयदा। अगम्म अथाह बेपरवाह आया नठ्ठ, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। हरिसंगत हरि घर कर अकट्ठ, साचा दर सुहांयदा। देवणहारा साची वथ्थ, पर्दा उहला आप चुकांयदा। सोलां सोलां सोलां चलाए जगत रथ, रथ रथवाही फेरा पांयदा। जगत स्यासत होई भट्ठ, बिन हरि कोई ना पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण नर हरि हरी हरि एका घर सुहांयदा।

हरि प्रकाश सर्ब घट अन्तर, हरि हरि जोत जगाईआ। हरि हरि खेल जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेस वटाईआ। हरि हरि वेख मनू मनवन्तर, हरि हरि दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर इक्क अख्वाईआ। निरगुण रूप हरि पसारा, निरगुण धार चलाईआ। निरगुण शाहो भूप वड सिक्दारा, सच सुल्तान अख्वाईआ। निरगुण नाउँ एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण अगम्म अगम्म पुरख अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। निरगुण अलख निरँजण खेल न्यारा, अलख ना लखया जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि उजाला, अनभव प्रकाश कराया। निरगुण धार सर्ब प्रितपाला, प्रितपालक आप अख्वाया। निरगुण वस्सया धाम निराला, धाम अवल्लड़ा इक्क वखाया। निर्मल निरगुण जोत जोत इक्क अकाला, पुरख अकाल मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। निरगुण वेस हरि अवल्ला, आदि जुगादि करांयदा। निरगुण बैठा इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रखांयदा। निरगुण वस्सया सच महल्ला, सच सिँघासण लांयदा। निरगुण जोती आपणी आपे बला, आप आपणा जौहर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अबिनाशी करता नाउँ रखांयदा। अबिनाशी करता हरि करतार, एका जोत जगाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेख वखाईआ। आप आपणा मीत मुरार, आप आपणा संग निभाईआ। आपे खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना पाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खिलाईआ। पवण स्वासी ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप मिटाए आपणा तम, तृष्ना भुक्ख ना कोई वधाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे

रिहा चलाईआ। आपणी जणी आपे जणे आपणा जन, पिता मात आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंक समाईआ। आप आपणा आपे रंक, आपे आप रखांयदा। आप सुहाए आपणा दुआर बंक, दर दुआरा वेख वखांयदा। आपे खेल खेल बार अनक, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता नाउँ रखांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, एका पुरख अबिनाशया। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका खेल तमाशया। एका महल्ल अटल उच्च मुनारा, एका रक्खणहारा वास्सया। एका दीपक सच उज्यारा, एका एक प्रकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण दर्द दुःख भय भंजन, हरि साजण मीत इक्क अतीत नाउँ धरांयदा। इक्क अतीता हरि निरँकार, एका जोत जगाईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोई दुआर, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। साध सन्त ना कोई दुलार, गुर पीर ना कोई अख्वाईआ। शब्द धुन ना कोई जैकार, अनहद राग ना कोई सुणाईआ। ताल तलवाड़ा ना कोई सतार, ज़िमी अस्मान, दिस ना आईआ। गगन गगनंतर ना कोई विचार, नाम मन्त्र ना कोई सुणाईआ। जंगल जूह ना कोई पहाड़, जल धारा ना कोई वहाईआ। नौ खण्ड ना कोई अखाड़, सत्त दीप ना रचन रचाईआ। वा ना कोई तत्ती हाढ़, रुत्त मास ना वेख वखाईआ। पंज तत्त ना कोई हड्ड मास, रक्त बूंद ना कोई उपाईआ। ना कोई लाड़ी ना कोई लाड़, ना कोई सगन मनाईआ। ना कोई अन्दर मन्दिर देवे वाड़, ना कोई साची सेज हंढाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूर अलाही आप अख्वाईआ। आप आपणी पावे सार, ना कोई कलमा रिहा अलाईआ। ना कोई तबक दए हुलार, ना कोई आपणा तेज़ चलाईआ। जल्वा जलाल ना कोई प्यार, हक्क हकूक ना कोई रखाईआ। ऐनलहक्क ना कोई नाअर, मुकामे हक्क ना कोई पुजाईआ। अहिबाब रबाब ना वजाए कोई सतार, आब हयात ना कोई प्याईआ। कायनात ना रिहा महल्ल उसार, नबी रसूल ना कोई वखाईआ। शाह सुल्तान ना कोई सिक्दार, ना कोई हुक्म चलाईआ। ना कोई दिसे बंक दुआर, दर दरवेश ना अलख जगाईआ। नूरो नूर नूर हो उज्यार, नूरो नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणे अंक समाईआ। निरगुण रंग हरि रंग राता, एका रंग रंगाया। वरन बरन ना कोई दरसाया , रूप रेख ना कोई जणाया। ना कोई मात ना कोई बालक गोद उठाया भाई भैण ना कोई नाता, साक सज्जण ना कोई रखाया। ना कोई सुणे सुणाए गाथा, गावत गुण ना कोई जणाया। ना कोई पवण ना कोई राथा, रथ रथवाही ना कोई रखाया। ना कोई मस्तक ना कोई माथा, ना कोई जोत लिलाट जगाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया।

५१
०८

ना कोई गगन मण्डल पृथ्मी आकाशा, अप तेज़ वाए ना कोई सुहाया। मन मति बुध ना कोई प्रकाशा, दीवा बत्ती ना कोई जगाया। ना कोई रोणा ना कोई हासा, मण्डल रास ना कोई रचाया। ना कोई वस्सया आस पासा, दूर नेड़ ना बंधन पाया। ना कोई थाली ना कोई कासा, ना कोई अलख जगाया। ना कोई मदिरा ना कोई मासा, भुन्न कबाब कोई ना खाया। ना कोई महल्ल अटल रक्खे वासा, सूलां सेज ना कोई हंढाया। इक्क अकल्ला पुरख अबिनाशा, थिर घर बैठा डेरा लाया। जुग जुग खेले खेल तमाशा, निरगुण भेव किसे ना पाया। आप आपणा होए दासी दासा, आप आपणी सेव कमाया। आप आपणी करे पूरी आसा, आसा पूरन नाम धराया। आपणे घर करया वासा, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क अकल्ला एका घर, एका दर रिहा वखाया। इक्क अकल्ला हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। जोती नूर कर उज्यार, नूरो नूर समाईआ। सच महल्ले सच प्यार, घर साचे बैठा बेपरवाहीआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। ना कोई वेद कतेब रिहा विचार, ना कोई रिहा मुख खुल्हाईआ। ना कोई विष्नूं वंसी करे आकार, ना कोई दूसर सेज हंढाईआ। सांगोपांग ना कोई प्यार, आलस निन्दरा ना कोई वखाईआ। बस्त्र भूषन ना कोई त्यार, लाल रंग ना कोई चढ़ाईआ। ना कोई लछमी ख़बरदार, चरन दुआर ना सोभा पाईआ। ना कोई दिसे धूंआँधार, धुँधूकार रंग समाईआ। शिव शंकर ना कोई प्यार, जटा जूट ना कोई वखाईआ। ना कोई त्रिसूल तिक्खी धार, ना कुंडल रिहा पाईआ। ना कोई मुखी मारे मार, ममता भुक्खी ना कोई तिंसाईआ। ना कोई कुक्खी बणाया घर बार, मात गर्भ ना कोई वड्याईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, घर बैठा बेपरवाहीआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। आदि जुगादी खेल न्यार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। पुरख निरँजण हो त्यार, आप आपणी रचन रचाईआ। ना कोई देवत सुर सोहे दुआर, ना कोई मंगल गाईआ। ना कोई गण गंधर्ब गाए धुन्कार, मंगलाचार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण बैठा हर घट थाँईआ। निरगुण पुरख हरि करतारा, एका धार चलाईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। आपणा सुहाए आप दुआरा, दर दरवाज़े सोभा पाईआ। ना कोई दिसे चार दिवारा, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। ना कोई लाए इट्टां गारा, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। दीवा बाती ना कोई उज्यारा, घृत समग्री ना कोई रखाईआ। निरगुण जोती कर उज्यारा, आप आपणा डगमगाईआ। रवि ससि ना कोई सितारा, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। अनहद ताल ना कोई तलवाड़ा, बहत्तर नाड़ ना कोई कुड़माईआ। पंच विकार ना पंचम धाड़ा, पंज पंजी ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, आप आपणी खेल

खिलाईआ। खेले खेल पुरख अलख, लेखा लेख ना जाणया। आदि जुगादि हो प्रतक्ख, खेले खेल दो जहानया। आप आपणा कर वक्ख, आप आपणा अंग कटानया। आप आपणा करे सक्ख, आप आपणा घर भरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, निरगुण खेले खेल महानया। निरगुण खेल हरि महान, आदि पुरख वड्याईआ। रूप रंग ना कोई निशान, नेत्र नैण ना कोई वखाईआ। गायत्री मन्त्र ना कोई ज्ञान, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। सर सरोवर ना कोई अशनान, तीर्थ तट ना कोई नहाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, मण्डल रास ना कोई रचाईआ। ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई लंका गढ़ तुड़ाईआ। ना कोई पवण पाणी मसाण, अग्नी तत्त ना कोई जणाईआ। ना कोई पीण ना कोई खाण, ना कोई तृष्न हलकाईआ। हथ्थ मूंह नक्क ना दिसे कान, गुदा लिंग ना कोई जणाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, अकल्ला इक्क बैठा बेपरवाहीआ। आप झुलाए आपणा सच निशान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे देवे आपणा दान, आप आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपणा रक्खे आपे माण, माण निमाणा आप हो जाईआ। आपे जाणे जणाए धुर फ़रमान, धुर दाता बेपरवाहीआ। आपे सुत्ता सुंञ मसाण, आप आपणा जल्वा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नर हरि हरि मीता, हरि हरि आप अख्वांयदा। हरी हरि ठांडा सीता, एक सति रखांयदा। आपे जाणे आपणा कीता, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। ना कोई हस्त ना कोई कीटा, ऊँच नीच ना कोई जणांयदा। ना कोई मिठ्ठा ना कोई कौड़ा रीठा, अमृत फल ना कोई चखांयदा। ना कोई त्रैगुण माया पीसण पीसा, जूठ झूठ ना संग रलांयदा। इक्क अकल्ला बैठा हरि अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणांयदा। आपणी बणत आप बणा, आपणी कल हरि धारया। आपणी सेज आप हंढा, आप आपणा मेल मिलाया। आपणी नारी आप अख्वा, आप आपणा कन्त मना रिहा। आप आपणे विच आप टिक्का, आप आपणा वेख वखा रिहा। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा, लोआं पुरीआं वेख वखा रिहा। ब्रह्मा वेता लए उपा, कँवल नाभी फुल्ल खिला ल्या। अमृत जाम लए पिला, निझर धार मुख चुआ ल्या। शब्द जणाई दए जणा, दूई द्वैती पर्दा लाह ल्या। एका ब्रह्म दए वखा, पारब्रह्म अंग कटा ल्या। निरगुण सरगुण जोत जगा, जागरत दिशा बणा रिहा। आप आपणा भेव खुल्हा, आपणा मार्ग आपे ला रिहा। लक्ख चुरासी बणत बणा, पंज तत्त डेरा ढाह रिहा। आपणी कथा आपे सुणा, आपे मुख सला ल्या। आपणे रथ आप चढ़ा, दहि दिशा आप फिरा ल्या। साचा संग आप निभा, साचे राहे पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। रचन

रचाई हरि करतार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। आप उपाए आप खपाए आप आपणी बन्ने धार, आपे देवे रिज़क सबाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। निरगुण तेरा सच प्यार, साची कल वरताईआ। वंडे वंड अपर अपार, वंडणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताईआ। वंडी वंड पुरख अकाल, जिन एह खेल खिलाया। जुग जुग चली अवल्लड़ी चाल, भेव किसे ना पाया। शब्द सुत्त कर दलाल, लोकमात वेख वखाया। नाल रखाया काल महांकाल, काल नगारा इक्क वजाया। आपे होया दीन दयाल, दया निध नाम धराया। सन्त सुहेले लए भाल, आप आपणा नाम जपाया। आपणी गोद उठाए बाल, बाल निधाना गले लगाया। वेखे परखे अनमुल्लड़े लाल, करता कीमत आप गणाया। तोड़णहारा जगत जंजाल, जुग आपणा वेस वटाया। भाग लगाए माटी खाल, आप आपणी बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनहार हरि समरथ, जुग जुग महिमा अकथना अकथ, रसना कथ ना सके राया। हरि का भेव सदा अकथ, भेव कोई ना पानया। दाता दानी हरि समरथ, खेले खेल दो जहानया। आदि जुगादि चलाए रथ, रथ रथवाही श्री भगवानया। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुन्ट भवानया। हरिभगतन मेला दर घर साचे कर अकट्ठ, देवे नाम सच्चा धन मालया। आपे देवे धीरज हठ, सति सन्तोख ब्रह्म ज्ञानया। दरस दिखाए नट्ठ नट्ठ, भेखाधारी भेख वटानया। ना कोई गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदवाला ना कोई उपानया। ना कोई तीर्थ अट्ठ सट्ठ, सर सरोवर ना कोई बणानया। वसणहारा घट घट, शाहो भूप पुरख सुल्तानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखणहारा घर, घर साचा खेल खिलानया। जुग करता हरि निरँकार, निरगुण नाउँ धराया। सतिजुग साचे कर प्यार, आप आपणा वेस वटाया। इक्क अकल्ला खेल अपार, दूई कुदरत मेल मिलाया। तीजे नेत्र हो उज्यार, आपणी बूझ बुझाया। चौथे पद सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाया। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम दर सुहाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई सहार, घर शब्दी जोत जगाया। सत्तवें सति सति कर पसार, सति सति समाया। अट्ठ तत्त नाता तुट्टा यार, दर साचा इक्क सुहाया। नौ दर कीते बन्द किवाड़, आप आपणी दया कमाया। दस्म दुआरी देवे वाड़, पहले पौड़े आप चढ़ाया। दरस दिखाए आप करतार, निरगुण नूर कर रुशनाया। सन्त सुहेले इक्क प्यार, आपणी गोद बिठाया। दस्म दुआरी होवे बाहर, सुन अगम्मी डेरा लाया। सुन अगम्मी तेरी धार, साचे सन्तां संग निभाया। सतिगुर रूप आप करतार, साचे राहे लए पाया। सो पुरख निरँजण कर विचार, हँ ब्रह्म इक्क रघुराया। सचखण्ड दुआरा सुहाए आप करतार, बैठा आसण लाया। अलख अगोचर भेव न्यार, लेखा लिख्त विच ना आया। अगम्म अगम्मड़ा करे आपणी

कार, सति पुरख निरँजण मेल मिलाया। सतिजुग तेरा सच प्यार, हरि साचा पूर कराया। त्रेता तेरा नाम जैकार, रारा राम ध्याया। एका दूजा भउ निवार, दर तीजा वेख वखाया। चौथे सोहे बंक दुआर, घर घर मंगल गाया। धुन अनादी अपर अपार, शब्द ब्रह्मादी आप वजाया। आदि जुगादी साची कार, करता पुरख आप कमाया। त्रीया त्रेता उतरया पार, त्रैगुण मूल चुकाया। द्वापर साजण वेख विचार, साचा बंक सुहाया। वेद व्यासा निराकार, एका इष्ट मनाया। नारद मुन पावे सार, ब्रह्मा सलोक जणाया। बारां अक्खर एका धार, सगला संग निभाया। कान्हा कृष्ना मीत मुरार, गीता ज्ञान दृढ़ाया। ग़रीब निमाणे पावे सार, राज राजाना मेट मिटाया। शब्द निशाना तीर न्यार, तीर निशाना इक्क चलाया। रथ रथवाही विच संसार, सगला रथ चलाया। सृष्ट सबाई वेख करे खुआर, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे सच महल्ला घर साचा इक्क वसाया। सच महल्ला हरि हरि खेल, हरि हरि बणत बणाईआ। आदि निरँजण चाढ़े तेल, जोत निरँजण खुशी मनाईआ। पुरख अगम्मा सज्जण सुहेल, घर बैठा बेपरवाहीआ। आपे गुरू गुरु गुर चेल, गुरू रूप समाईआ। आपे वस्सया रंग नवेल, धाम अवल्लड़ा इक्क वखाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेल, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा आपणा दर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग आपणा नाम धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, आपे वेख वखाईआ। आप सुहाए साचा दर, जिस दर डेरा लाईआ। निरगुण जोती वेस कर, सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखणहारा घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। घर सुहञ्जणा पुरख अकाल, आपणा आप उपाया। आपणी खेल आपे जाण, वेद कतेब किसे भेव ना पाया। लक्ख चुरासी बण दलाल, आप आपणा मता पकाया। आपे जाणे जल्वा जलाल, नूरो नूर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाया। ईसा मूसा वंडी वंड, वंडणहार करतारा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड कर पसारा। आपे जाणे भेख पखण्ड, आपे तोड़ । आपे नार दुहागण रंड, आपे मेला कन्त भतारा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा। आपे होए तेज़ चण्ड प्रचण्ड, आपे नाम खण्डा दो धारा। आपे वढ्ढणहारा कंड, आपे देवे शब्द हुलारा। आपे पावणहारा ठंड, आपे अग्नी लाए अन्यारा। आपे वसणहारा जेरज अंड, आपे उत्भुज सेत्ज करे प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम आप निभाए साचा संग, मुहम्मद चार यारा। चार यारी कर त्यार, हरि हरि मता पकाया। आप आपणा कर उज्यार, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा घाड़न घड़, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अल्फी आप रंगाया। आपणी अल्फी आपे रंग, आपणे तन सजाईआ। आप आपणा शाह मलँघ, दर दर घर घर फेरी पाईआ। आपणी मंगी आपे मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। करे खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी नाउँ धराईआ। आपे जूठ झूठ मिटाए भेख पखण्ड, आपे सगला संग रखाईआ। आपे करनहारा खण्ड खण्ड, हरि बैठा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। नूरो नूर हरि करतार, एका एक अख्वाया। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण खेल खिलाया। नानक मीत हरि गिरधार, घर साचा वेख वखाया। आप सुहाए थिर घर दुआर, उच्च मुनार आप सुहाया। आसण लाया गुर गोबिन्द मीत मुरार, आपे वेख वखाया। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाया। वेद पुराण शास्त्र सिमरत ना पायण सार, अञ्जील कुरान ना लेख लिखाया। शब्द शब्दी शब्द जैकार, एका नाअरा लाया। एका पुरख अकाल कर प्यार, एका इष्ट वखाया। एका एक बण लिखार, एका भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग वेस हरि करनेहारा, आदि पुरख अख्वांयदा। खेले खेल विच संसारा, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती नूर हो उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। आप आपणी बन्हे धारा, आप आपणी रचन रचांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, रक्त बूंद समांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, दस दस मास लेख लिखांयदा। पिता पूत कर प्यारा, माता गोद सुहांयदा। आपे होए सुत्त दुलारा, जीअ जगत आप अख्वांयदा। एका एक विचारा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आत्म ब्रह्म पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा आप प्रगटांयदा। शब्द शब्दी शब्द कटारा, साचे दर वखांयदा। अमृत जल ठंडा ठारा, एका मुख लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जगत हरि हरि वेस वटा, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी रचन रचा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणा लेखा आप लिखा, आपे गणत गणांयदा। आपणी मेख आप लगा, आपे वेख वखांयदा। दो जहानां फेरी पा, नौ खण्ड आप जगांयदा। सत्तां दीपां आप जगा, एका नाअरा लांयदा। पुरीआं लोआं दए हिला, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सोया कोई रहिण ना पांयदा। लक्ख चुरासी बेपरवाह, एका धक्का लांयदा। हरिजन साचे मेल मिला, आपणी बूझ बुझांयदा। कँवल नैण दरस दिखा, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हांयदा। साचा सईआ रूप वटा, नाम नईआ आप चढ़ांयदा। भैणा भईआ नाता दए तुड़ा, एका दर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मुख वखांयदा। वरते कल हरि करतार, करता पुरख वड वड्याईआ। सगल समग्री कर त्यार, आपणी खेल खिलाईआ। जोत उजग्री इक्क

उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। सच सौदागरी वणज वापार, लक्ख चुरासी आप कराईआ। लक्ख चुरासी वणज वापार, एका आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाईआ। पंज तत्त कर प्रधान, हरि साचे नाउँ रखाया। अन्तिम मेट जगत निशान, ख़ाकी ख़ाक समाया। साचे घर साचे दर साचे हरि बद्धा गाना, साचा सगन मनाया। पुरख अकाल गाए तराना, आदि शक्ति सीस झुकाया। पारब्रह्म होया दर दरबाना, आप आपणा दर सुहाया। अजूनी रहित हरि मेहरवाना, एका एक एक वड्याआ। आपे मर्द मर्द मरदाना, आप आपणा खेल खिलाया। आपे शाहो भूप सुल्ताना, राउ रंक आप हो जाया। आपे देवणहारा धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म चलाया। आपे बिरध बाल जवाना, आदि अन्त रूप वटाया। आपे धुन सुन्न मुन्न तराना, अनडिठ धाम इक्क सुहाया। आपे गुण अवगुण कर पछाना, निरगुण सरगुण वेख वखाया। सन्त सुहेले जुग जुग जन देवे नाम निधाना, काया मन्दिर दए भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाए पुरख अकाला, परम पुरख सुल्तानया। आप सुहाए सच्ची धर्मसाला, दर मन्दिर इक्क पछानया। वेखणहारा अग्नी जोत ज्वाला, चारों कुंट होए प्रधानया। लक्ख चुरासी दीपक बाला, आपे होए अन्ध अँध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करे आप पछानया। आपणी करे आप पछाण, हरि साचे हथ्थ वड वड्याईआ। शास्त्र सिमरत सारे गान, अञ्जील, कुरान दए वधाईआ। खाणी बाणी हो प्रधान, एका राह तकाईआ। शाहो भूप वड सुल्तान, वड दाता बेपरवाहीआ। ज्ञान ध्यान ना सके जाण, जोग अभ्यास ना वड वड्याईआ। रिखी मुनी जपी तपी हठी सती राह तकान, दिवस रैण धूंणीआँ ताईआ। सन्यासी वैरागी त्यागी सारे गाण, वड्याई कोई ना पाईआ। कागी हँस सर्ब कुरलान, माणक मोती चोग ना कोई चुगाईआ। काया दागी सर्ब शरमाण, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। मदिरा मास पीण खाण, दर दुआर दिस ना आईआ। राम कृष्न ना करे परवान, सिगरट पान जो मुख रखाईआ। संग मुहम्मद ना कोई मिलान, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। शरअ शरीअत होई निधान, कलमा अमाम ना कोई सिखाईआ। सच मुहम्मद ना मिल्या निगहबान, काया काअबा ना कोई वखाईआ। निउँ निउँ सीस सर्ब झुकान, जगत मसल्ला हेठ विछाईआ। इक्क अकल्ला वेखे मार ध्यान, घर बैठा बेपरवाहीआ। रागी नादी सारे गाण, आत्म राग ना कोई जणाईआ। गुर दर मन्दिर मठ पछान, साचा मन्दिर ना कोई वसाईआ। नौ दुआर सर्ब पछतान, काम क्रोध लोभ मोह आसा तृष्ना रही हलकाईआ। सतिगुर पूरा जाणी जाण, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। लोकमात हो प्रधान, आप आपणी कार कमाईआ। आपे होए

बुध बिबेकी इक्क ज्ञान, एका मति बुझाईआ। आप मति मतवाली करे पछान, आप आपणी सरन लगाईआ। आपे मनुआ मन बांधे हो मेहरवान, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। साचा मन्दिर इक्क मकान, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। उच्चा नगर निगहबान, दस्म दुआरी बैठा डेरा लाईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, मेल मिलावा साचे माहीआ। सुरती नारी बाल निधान, बैठी राह तकाईआ। छैल छबीला नौजवान, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। साचा चिल्ला तीर कमान, आपणा आप उठाईआ। बूरा कक्का बिल्ला होए हैरान, ईसा मूसा वेख वखाईआ। रूसा चीना हो प्रधान, आप आपणा रंग रंगाईआ। भारत खण्ड इक्क ज्ञान, आपणा आप जणाईआ। लक्ख चुरासी लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड कर पुण छाण, आपणी सेवा आप कमाईआ। कलिजुग अन्तिम आप झुलाए सच निशान, धर्म निशाना इक्क वखाईआ। चार वरनां एका माण, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। राउ रंक सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरताईआ। कुलवन्ता हरि भगवन्ता, एका रूप समाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। आपे नारी आपे कन्ता, कन्त कन्तूहल आप हो जाया। आप काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, आपे फूलन बरखा लाया। आपे तोड़णहारा गढ़ हउमे हँगता, आपे माया मोह वधाया। आपे भुक्खा आपे नंगता, आपे गुरसिखां दर दुआरे मंगण आया। आपणा दर आपे लँघदा, दर दरवाजा खोल्ह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साचा सगन मनाया। साचा सगन श्री भगवाना, आपणा आप मनाया। वेखणहारा ज़िमी अस्माना, गगन पताला फेरा पाया। वरते वरतावे आपणा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। शाहो भूप वड राज राजाना, एका एक नाउँ धराया। आपणे दर हो प्रधाना, आप आपणा मार्ग लाया। जुग जुग खेले खेल महाना, कलिजुग कूड़ा वेस वटाया। सति पुरख निरँजण करे कल्याणा, दूसर कोए ना संग रलाया। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवाना, लोकमात फेरा पाया। वीह सद बिक्रमी नौजवाना, आप आपणा रूप वटाया। एका दूजा खेल महाना, तीजा चौथा संग रलाया। पंचम छेवां छल छलाना, सत्तवां अट्ठवां जोड़ जुड़ाया। नौवें वेख वखाना, घर साचा इक्क बणाया। ग्यारां बारां तेल चढ़ाना, साढे तिन्न हथ्थ नौ दर जोड़ जुड़ाया। तेरां चौदां पुरख सुल्ताना, एका इक्की वेख वखाया। पन्दरां पन्दरां हो प्रधाना, परम पुरख पुरख नाउँ धराया। शब्द उठाए तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। दहि दिशा वेखे मार ध्याना, आप आपणा नैण उठाया। लक्ख चुरासी बाल निधाना, भेव कोई ना पाया। ब्रह्मा रोवे नीर वहाए धीरन धीर ना कोई धराना, वेला अन्तिम आया। आपे जाणे आपणा पद निरबाना, निर्भय रूप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा आदि निरँजण, जुग जुग वेस अवल्ला। एकँकार सैण सज्जण, आपे करे कराए वल छला। आपे आए पड़दे कज्जण, आपे फड़या हथ्थ विच भल्ला। आपे चरन धूढ़ कराए मजन, आपे वस्सया नेहचल धाम अटला। चारे कुंट काल नगारे वज्जण, वजावणहारा इक्क अकल्ला। जो घड़े सो अन्तिम भज्जन, लुकया रहे ना जलां थलां। राज राजान शाह सुल्तान दर दरबार आपणा तजन, सौणा मिले ना विच महल्ला। सच घोड़े तंग ना मिले कसण, ना कोई सहाई घड़ी पला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल इक्क अवल्ला। खेल अवल्ला पुरख अबिनाशी, आपणा आप कराया। आपे गगन गगनंतर मण्डल मण्डप पावे रासी, आकाश प्रकाश आप टिकाया। आपे घट घट रक्खणहारा वासी, निरगुण नाउँ धराया। आपे जोती नूर उज्यार इक्क प्रकासी, आप आपणा वेख वखाया। आपे दिवस रैण बरस मासी, जुग जोग आप कमाया। आपे वेद आप विदांती, पुराण आपणा आप जिस आपे गाया। आपे अञ्जील कुरान खेले खेल तमाशी, आपे तीस बतीस हदीस आप पढ़ाया। आपे पंडत होए काशी, गीता ज्ञान आप जणाया। आपे होए चम्यार रविदासी, गंगा भेट वेख वखाया। जल धारा आपे जोत प्रकाशी, कबीर जुलाहा तराया। आदि अन्त इक्क अबिनाशी, करता पुरख नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस करां, आपणी कल वरताईआ। शेर सिँघ हरि नाम धरा, पंज तत्त उपजाईआ। सन्त मनी सिँघ शब्द जणा, शब्द करी कुड़माईआ। जोती जोत दए जगा, पूरे हथ्थ वड्याईआ। सति लंगोटी तेड़ बंधा, धीरज धीर रखाईआ। साची चोटी आप चढ़ा, आपणा दरस दिखाईआ। वासना खोटी दए कढा, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत लेखे ला, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। कोटन कोटि रहे गा, दिवस रैण घाल घोली घोल घुमाईआ। साचे सन्तां आपणा मेल मेला लए मिला, वड दाता बेपरवाहीआ। काल महांकाल दर दुआरे सीस रहे झुका, चरन धूढ़ मस्तक लायण छाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव रहे राह तका, नेत्र आपणे आप उठाईआ। करोड़ तेतीस फुल रिहा बरखा, फूलन खारी सीस उठाईआ। सन्तन मीता बेपरवाह, लेखा लिख्त विच ना आईआ। कलिजुग अन्तिम लए मिला, गुरमुखां मेल मिलाईआ। सो पुरख निरँजण देवे सच सलाह, साची भिच्छया झोली पाईआ। अन्दर मन्दिर औझड़ राह, बिन गुर पूरे ना कोई लँघाईआ। थाँ थाँ बैठे वंडां पा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसण लाईआ। आसा तृष्ना रही भरमा, आपणा रूप दरसाईआ। नौ अठारां रही गा, आपणी घुमर पाईआ। साध सन्त लए बुला, आपणी उंगल लाईआ। सतिगुर पूरा बण मलाह, आपणा पल्लू दए फड़ाईआ। शब्द खण्डे दए डरा, मुखड़ा मुख छुपाईआ। ब्रह्मण्ड

५६ ०८

खोज आप खुजा, साचे डण्डे हथ्थ फड़ाईआ। पार कन्ढे दए लगा, अद्धविचकार ना कोई रुढ़ाईआ। भेख पखण्डा दए मिटा, सच सुच्च करे कुड़माईआ। नार दुहागण रंडी दिसे ना किसे थाँ, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। साची वंडी दए वंडा, सन्त मनी सिँघ लेख लिखाईआ। जोती जामा कर रुशना, आप आपणी करे रुशनाईआ। दो जहानां लए जगा, तिन्नां लोकां पैरां हेठ दबाईआ। चौदां तबकां कुण्डे दए खुल्हा, चौदां हट्ट हिलाईआ। साधां सन्तां गुरुआं पीरां दर दुआरे लए बुला, जोती जोत वेख वखाईआ। गुरमुख साचे लए जगा, आपणी आप आपे बूझ बुझाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची बणत बणाईआ। निहकलंक नाउँ रखा, शब्द डंका दए वजाईआ। पुरी घनका भेव छुपा, बवन्जा साल भेव छुपाईआ । सन्त सनक सनंदन सेवा ला, सनातन संग रलाईआ। आपणा कलमा दए पढ़ा, एका नबी रसूल अख्वाईआ। इक्क जैकारा दए लगा, एका नाम तराईआ। जोत आकारा आप करा, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्द मेल मिला, सगली चिन्दा दए गंवाईआ। गुणी गहिंदा आप अख्वा, गहर गम्भीर नाउँ धराईआ। गुरमुख साचे मार्ग पा, माया मोह तुड़ाईआ। सन्त मनी सिँघ संग रला, साचा नाम जपाईआ। साचे सुख वखाए एका राह, एका घर सुहाईआ। उच्चे पौड़े दए चढ़ा, आपणे कंध आप उठाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी सथ्थर दए विछा, धरत मात झोली अग्गे डाहीआ। गुरमुख साचे लए मिला, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम फूलण बरखा आपे ला, घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल दीन दयाल, करे कराए सर्ब प्रितपाल, तोड़नहारा जगत जंजाल, गुरमुख साचे लए तराईआ। निहकलंक धरया नाउँ, हरि साचे जोत जगाईआ। ना कोई नगर ना कोई ग्राउँ, ना कोई शहर वखाईआ। ना कोई पिता ना कोई माउँ, दाई दाया ना कोई बणाईआ। हथ्थ मूंह नक्क ना दिसे पाउँ, ना कोई तन उपाईआ। ना कोई उंगली फड़े बांहों, गली कूचे ना कोई फिराईआ। आपणा करनहारा आप न्याउँ, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका आपणा खेल खिलाईआ। निहकलंक हरि नरायण नर, हरि रूप समाया। हरि हरि हरि सारे कहिण, हरि हरि दिस किसे ना आया। आप चुकाए लहिण देण, जुग जुग वेस वटाया। सखा सहाई साक सज्जण सैण, नित नवित्त फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी खेल आपे कर, आप आपणा पर्दा लाहया। पहले साल जोत अकाली, निरगुण धार चलाईआ। दूजा रंग अग्न ज्वाली, आदि शक्ति अख्वाईआ। तीजे खेले खेल निराली,

ञीया वेस वटाईआ। चौथे बणया साचा माली, चातृक तृखा बुझाईआ। पंचम मीता पंचम पाली, पंचम वेख वखाईआ।
छेवें विच खड़ा सुआली, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। सत्तवें सति पुरख सदा कृपाली, निर्धन सरधन रिहा तराईआ। अट्ठ
अट्ठ तेरा बणया माली, सोहँ नाम जपाईआ। नौ दुआरे कीते खाली, गुरमुखां पन्ध मुकाईआ। दसवें जोती इक्क अकाली,
अकल कला वरताईआ। धुरदरगाही साचा माली, सन्त सुहेले बूटे रिहा उगाईआ। वेखे फल पत्त पत्त डाल्ही, लुकया कोई
रहिण ना पाईआ। चार जुग जिस घालन घाली, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। आपे बणया सच दलाली, आप आपणा
वेस वटाईआ। जोत निरँजण आपे भाली, आदि निरँजण सेव कमाईआ। साचे मन्दिर बणया हाली, आपणा हल चलाईआ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा दसवां इक्क वखाईआ। दसवां दर दर दरवाजा, हरि हरि
आप खुल्हाया। कलिजुग रचया आपणा काजा, भेव किसे ना पाया। प्रगट होया देस माझा, गुर गोबिन्द लेख लिखाया।
सम्बल नगरी मारे वाजा, एका बंक सुहाया। शब्द घोड़ा रक्खे ताजा, नीला नीली धारों पार कराया। दो जहानां रचया
काजा, कादर करता वेख वखाया। शाहो भूप वड राजन राजा, राउ रंक आप हो जाया। जन भगतां रक्खणहारा लाजा,
ध्रू प्रहलाद तराया। ग़रीब निमाणयां मारे वाजा, राती सुत्या आप उठाया। दिवस रैण फिरे भाजा, आलस निन्दरा विच
ना आया। इक्क चलाया सच जहाजा, चारे वरनां लए चढ़ाया। खेले खेल कल के आजा, आपणी कल वरताया। मनमुख
जीवां बन्न्हे दाजा, जूठ झूठ बंध बंधाया। अन्तिम कोई ना रक्खे लाजा, पतिपरमेश्वर दिस ना आया। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दस्म दुआरी दर सुहाया। दस्म दुआरी आपे खोल्ह, आपे रंग
रंगाईआ। शब्द निष्अक्खर आपे बोल, आपे रिहा सुणाईआ। आप वजाए मृदंगा ढोल, अनहद आप अलाहीआ। आपे वस्सया
गुरमुखां कोल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, ढूँडण कोई ना जाईआ। हर घट मन्दिर पर्दा रिहा फोल, जो आए चल सरनाईआ।
जूठ झूठ मच्चया घोल, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। साचे कंडे ना कोई तोले तोल, जगत तक्कड़ रिहा तुलाईआ। तेरां
तेरां तेरा ना कोई देवे बोल, नानक गया समझाईआ। हरि का रूप जगत मखौल, दिस किसे ना आईआ। अन्तिम कढ्ढणहारा
पोल, लक्ख चुरासी दए सजाईआ। खेलणहारा होली होल, मनमति होली दए जलाईआ। पूरन करन आया कौल, कीता
कौल आप निभाईआ। आदि अन्त सदा अडोल, ना डोले डोल डुलाईआ। सृष्ट सबाई सुत्ती अनभोल, गुर गोबिन्द फेरा
पाईआ। जन भगतां करे उलटा नाभ कँवल, अमृत आत्म मुख चुआईआ। देवे वड्याई उप्पर धौल, धरत धवल सुहाईआ।
जो जन मंगे दरस कान्हा कृष्ना सँवल, राम रूप आप हो जाईआ। हर घट आपे रिहा मवल, मौला नूर आप ख़ुदाईआ।

६१
०८

आपे ख़लक ख़ुदाई होया बवल, महिबान बीदो बी खैर या अल्ला नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दस्म दुआरी वेख वखाईआ। दस्म दुआरी सच सिँघासण, हरि हरि आप रखाया। आपे वेखे सच तमाशन, निरगुण धार इक्क चलाया। निज घर आत्म रक्खे वासन, निज घर बैठा डेरा लाया। सच मन्दिर पावे रासन, मण्डल मण्डप इक्क सुहाया। दाता दानी ग़रीब निवाजन, साचा साजन आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देस माझन साचा धाम सुहाया। देस माझन सच दुआरा, हरि हरि जोत जगाईआ। नौ दुआरे कर पसारा, सगली सृष्ट भुलाईआ। साधां सन्तां मारे मारा, जो भेख पखण्ड वखाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, घर बैठा आसण लाईआ। जो जन लँघे नौ दुआरा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। इक्क वखाए सच दरबारा, घर बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण जोती नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, शब्दी डंक सुणाईआ। मोहण माधव मीत मुरारा, मानस मानुख ना कोई अख्वाईआ। पंज तत्त जगत पसारा, सृष्ट सबाई आप भुलाईआ। आपे वस्सया सद न्यारा, अजूनी रहित आप अख्वाईआ। आपे भरया सच भण्डारा, आपे रिहा वरताईआ। आपे लए आपणा अवतारा, आपे खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका आप अख्वाईआ। निहकलंका पुरख अगम्म, एका एक अख्वांयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। ना कोई जननी लए जन, ना कोई गोद उठांयदा। पंज तत्त ना दिसे तन, रक्त बूंद ना मेल मिलांयदा। नौ दुआरे कोई ना देवे डन्न, ना कोई दर्द वखांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे वेख वखांयदा। आपणा भाणा आपे मन्न, आपणे भाणे विच समांयदा। जुग जुग चढ़ाए साचा चन्न, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जगत विकारा करे खंन खंन, नाम खण्डा इक्क उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया हरि निरँकारा, सच धारा इक्क चलाईआ। सृष्ट सबाई पावे सारा, घर घर वेख वखाईआ। हरिजन मेला मीत मुरारा, हरी हरि राग सुणाईआ। पिया पिया कर प्यारा, प्यारा प्रीतम ना कोई व्याहीआ। सुरती नार नार मुटयारा, वेस आपणा रही कराईआ। मिले मेल विच संसारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपे सेजा कन्त भतारा, अट्ठे पहर राह तकाईआ। नेत्र नैण कज्जल पाया अपर अपारा, नाम धारा इक्क बंधाईआ। बस्त्र भूषन कर त्यारा, गुर का शब्द हंढाईआ। उच्च महल्ले बैठ मुनारा, आपणी लए अंगड़ाईआ। गीत सुहागी गाए वारो वारा, पंचम सखीआं संग रखाईआ। मिले मेल हरि मीत मुरारा, जगत विछोड़ा रिहा सताईआ। सतिगुर पूरा पावे सारा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। चतुर्भुज हो त्यारा, आवे

वाहो दाहीआ। आपणीआं भुजां आप पसारा, आपे लए उठाईआ। मेल मिलावा सच दुआरा, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। निरगुण जोती निरगुण धारा, निरगुण नारी निरगुण कन्त भतारा, निरगुण निरगुण विच समाईआ। करया खेल अगम्म अपारा, अगाध बोध वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, दस्म दुआरा इक्क वखाईआ। दस्म दुआरा हरि सुहाया, हरि हरि रचन रचाईआ। गुरमुख साचे लए मिलाया, धुर दरगाही आया बेपरवाहीआ। आपे पूजा पाठ कराया, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण वेख वखाया, हँ हँगता दए गंवाईआ। जिउँ नानक अंगद अंग लगाया, जोती जोत टिकाईआ। साधां सन्तां दुआरे मंगदा जो सच दुआरे आया, प्रभ झोली दए भराईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला इक्क अकेला काया चोली रंगदा आया, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। अस्व घोड़े साचे ताजी धुर दरगाही हाजी साचा तंग कसदा आया, शाह अस्वार फेरा पाईआ। पुरीआं लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां आपे लँघदा आया, लोकमात वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरीआं वंडां वंडदा आया, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिँघासण हरि निरँकार, आप आपणा कर पसार, वेखणहारा दस्म दुआर, नौ दुआरे डेरा ढाईआ। नौ दुआरे डेरा ढाए, ढावणहारा करतारा। गीत सुहागी एका गाए, गावणहार मीत मुरारा। धुन अनादी नाद वजाए, आप सुणाए धुनी धुन्कारा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाए, पारब्रह्म गुर अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क वखाए दर दुआरा। एका दर एका अक्खर, एका करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई नालों कीता वक्खर, आप आपणी रचन रचाईआ। जन भगतां तोड़े बजर कपाटी पत्थर, शब्द निशाना तीर लगाईआ। नेत्र नीर वरोले अथ्थर, नैणां धार ना कोई चलाईआ। पंच विकारा करे सथ्थर, ढहि ढहि पए सरनाईआ। नाम निधाना बन्ने गड्ड, एका गंढु बंधाईआ। आया दर ना जाए सक्खण, खाली रिहा भराईआ। लक्ख चुरासी छाछ वरोले मक्खण, गुरसिख साचे लए मिलाईआ। अन्तिम लज्जया आया रक्खण, हरि साहिब वड्डी वड्याईआ। जगत अँगयारे चारों कुन्ट भखण, धूंआँधार समाईआ। शाह सुल्ताना राज राजाना जगत भण्डारे होण सक्खण, ना सके कोई भराईआ। अन्त मुल्ल ना प्या कौडी लक्खण, लक्खो कक्ख बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दस्म दुआरी इक्क सुहाईआ। दस्म दुआरी ताल सुहावा, हरि हरि आप सुहाया। साचे तीर्थ आप नुहावा, आप आपणी मैल गंवाया। साचे मन्दिर साचा दाअवा, हरि साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दस्म दुआरी कर त्यार, लोकमात इक्क पसार,

साचा थान वखाया। साचा थान हरि सुहञ्जणा, हरि हरि खेल खिलाया। जगी जोत आदि निरँजणा, आदि पुरख वेस वटाया। शब्द सिँघासण एका मल्लणा, पुरख अबिनाशन वेख वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी अन्तिम हिलणा, हरि साचा दए हिलाया। तीर कमान रसना चिल्ले चढ़े चिलना, इक्क निशान लगाया। भैणां भईआ मिले ना मिलणा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। लहिणा चुक्के सती सिला सिलना, दर साचे वेख वखाया। ना कोई कोट किला किलना, चार दिवार ना कोई बणाया। ना कोई उच्चा पर्बत टिलना, डूँघी गार ना डेरा लाया। गगन पाताल सारा हिलणा, हरि साचा रिहा हिलाया। गुरसिख साचे फुल साचा दर घर साचे खुल्हणा, हरि साचा रिहा खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द धार रिहा चलाया। शब्द धार साचा जोग, हरि हरि आप जणांयदा। आत्म रस साचा भोग, रसना रस तजांयदा। जगत तृष्ना मिटे विजोग, माया मोह गवांयदा। दूई द्वैती कट्टे रोग, साचा संग रखांयदा। आप कराए सच संजोग, घर साचे मेल मिलांयदा। आत्म दरस आत्म सेजा एका भोग, एका एक जणांयदा। इक्क जणाई तिन्नां लोक, त्रै त्रै वेख वखांयदा। एका शब्द इक्क सलोक, एक राग अल्हांयदा। एका मार्ग एका मोख, एका दर सुहांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, जो प्रभ सरनाई आंयदा। सोहँ चुगे साची चोग, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। आप सुणाए आपणी कूक, आपणा नाम अल्हांयदा। लक्ख चुरासी देवे फूक, ना कोई मात बचांयदा। गुरसिख सुरती जात मलूक, नाम मशूक इक्क रखांयदा। अन्तिम आपणा लैणा सच हकूक, पिछला कीता झोली पांयदा। ना कोई खण्डा तलवार तबक ना कोई बन्दूक, तीर निशान ना कोई लगांयदा। शब्द नगारा एका नाअरा एका कूक, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। प्रगट होया सच महबूब, मेहरवान दया कमांयदा। लक्ख चुरासी आप उडाए ना कोई रक्खे बरूद, जगत पलीता ना कोई लगांयदा। मनमुख गूढ़ी नींदे सुत्ते घूक, कलिजुग आपणा पर्दा पांयदा। आपणी धूणी जाए फूक, ना कोई मेल मिलांयदा। झूठा कंगन हथ्थ खाली भूक, अन्तिम भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म दुआरी बैठा वड़, सच सिँघासण इक्क विछांयदा। विछी सेज सच सुल्तान, हरि साचे आसण लाया। आपे होया बेपहचान, गुरसिख अग्गे डाहया। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाया। जुग जुग खेले खेल महान, खेल खिलारी आप अख्वाया। वीह सद बिक्रमी कर प्रधान, आपणा आप लए उपाया। वीह सद पन्दरां कर पछाण, तीर्थ तट्टां मूल चुकाया। साधां सन्तां वेख ज्ञान, ज्ञान गुरू ना भेट चढ़ाया। ना कोई मूंह दिसे कान, उच्ची बांग सदा ना कोई अल्हाया। ना कोई स्वांगी रचे स्वांग, ना कोई नेत्र नैण बन्द वखाया। ना कोई पक्के भोजन पकवान, जंगल जूह ना कोई फिराया। आपणा घर आपे कर पछान, आपणा मूल रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद पन्दरां होए सहाया। पंज दस हो उज्यारा, हरि हरि बणत बणाईआ। एथे उथे इक्क सहारा, एका मेल मिलाईआ। आर पार वेख किनारा, निझर धारा फेरा पाईआ। आपे देवणहारा सच सहारा, साची नईआ रिहा चलाईआ। नाम कराए वणज वपारा, एका वस्त रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सतिजुग विछोड़ा आप कराया, आपे बणत बणांयदा। त्रेता देहुरा आप फिराया, आपणी धार चलांयदा। द्वापर गेड़ा आप दवाया, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग खेड़ा वेख वखाया, जोत सरूपी जोत डगमगांयदा। अन्तिम निबेड़ा हक्क कराया, हक्क बहक्क आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वसणहारा साचे घर, सम्मत पन्दरां देवे वर, अन्तिम मूल चुकाया। सम्मत पन्दरां तेरा मुल्ल, हरि हरि आपे पांयदा। गुरमुख वेखे साची कुल, आपणा संग रखांयदा। दर दुआरे जो आया भुल्ल, लेखा लेखे लांयदा। मानस बूटा ना जाए हुल, सच फल खुवांयदा। सोहँ कंडे जाए तुल, हरि तोला आप तुलांयदा। पाणी ना पए काया चुल्ह, अग्नी तत्त ना कोई बुझांयदा। चरन प्रीत जो गया घुल, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। सच दुआर गया खुल्ह, चार वरनां आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी गाए मुक्ख, निहकलंक डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच दिहाड़ा इक्क सुहांयदा। साचा दिवस छब्बी पोह, हरि हरि रचन रचाईआ। नाता तोड़े जगत मोह, तन ख़ाकी ख़ाक समाईआ। आपणे नाल कर आप धरो, आप आपणा दए खपाईआ। आपे जोत रलया पुरख निरँजण सो, पुरख निरँजण आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचे दिवस दए वड्याईआ। साचा दिवस जगत उजागर, हरि हरि आप कराया। गुरमुख विरला बणे सौदागर, मनमुखां हथ्थ ना आया। नाम अनमुल्ला काया गागर, रत्न अमोलक दए धराया। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन दर दुआरे फेरा पाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त आप रंगाया। बैठा रहे इक्क एकागर, एका रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाया। वेखणहारा हरि समरथ, आपणा दर दुआरया। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, वेद कतेब भेव ना पा रिहा। आप चलाए आपणा रथ, चारे कुन्टां आप फिरा रिहा। वेखणहारा मन्दिर मस्जिद मट्ठ, तीर्थ तट तट किनारया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणा मेल मिला रिहा। देवणहारा साची वथ्थ, सोहँ भरे आप भण्डारया। आत्म सेजा चढ़े नठ्ठ, खोल्हे बन्द किवाड़या। त्रैगुण अग्नी लाए मट्ठ, मिटे पंचम धाड़या। अमृत आत्म माण चुकाए तीर्थ

अठसठ, अमृत प्याए ठंडी ठारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मेल मिला रिहा। मेल मिलावा हरि हरि दुआरा, बन्द दुआर सुहाईआ। साचे सुत्त कर प्यारा, सच सुच्च वज्जे वधाईआ। वेखणहारा एकँकारा, आपणी कल वरताईआ। बोध अगाधी शब्द जैकारा, शब्दी धुन सुणाईआ। डंक वजाए नाम नगारा, नाम नामा आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। सम्मत पन्दरां पर्दा लाह, आपणी खेल खिलांयदा। जन भगतां जाणे जगत मलाह, जागरत जोत जगांयदा। मनमुखां ख़ाक दए रला, साचे हट्ट ना कोई विकांयदा। दोहां विचोला आप अख्वा, भेव अभेद छुपांयदा। हरि सज्जण साचे वेख वखा, दर दुआरे आप बहांयदा। हरिसंगत साचा संग रला, साचा सगन मनांयदा। साचा गाना दए बन्ना, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। नाम निधाना जाम पला, इक्क ख़ुमार रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां सोलां कल वरतांयदा। सोलां श्रृंगार सोलां प्यार, सोलां धार बंधाईआ। सोलां सोलां हो उज्यार, एका सोहला दए सुणाईआ। सोलां सोलां कर खुआर, सोलां सोलां करे हलकाईआ। सोलां सोलां मीत मुरार, सुरती सुरत उठाईआ। अकाल मूर्ति खेल न्यार, कलिजुग अन्तिम वेखण आईआ। साचा सगन धुर दरबार, थिर घर आपे रिहा पाईआ। गुरसिख नार होई मुटयार, वेखण आया बेपरवाहीआ। शब्द विचोला फेरे मारे वारो वार, घर घर सुत्ते रिहा उठाईआ। खिच ल्याया सच दुआर, एका बंक सुहाईआ। साची थित साची वार, साची दए सलाहीआ। मिले वर पुरख भतार, साचा कन्त इक्क मनाईआ। साचे घर घर होए जै जैकार, मंगलाचार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां देवे वर, गुरमुख साचे आप उठाईआ। गुरसिख साचा उठया जाग, हरि साचे आप जगाया। पंज तत्त लग्गा भाग, घर साचा वेख वखाया। सुनावणहारा एका राग, एका रिहा अलाया। हँस बणाए फड़ फड़ काग, कागों हँस बणाया। आपणी हथ्थीं बन्ने साचा ताग, साचा सगन मनाया। दिवस रैण रहे वैराग, एका लिव रखाया। चरन धूढ़ी साचा मजन माघ, सतिगुर पूरा आप कराया। जो जन सरन सरनाई गए लाग, आवण जावण दए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां राह तकाया। सम्मत सोलां हरि बलवाना, एक एक अख्वांयदा। जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना, आप आपणा नाउँ धरांयदा। साचा चिल्ला तीर कमाना, आपणा आप उठांयदा। चारे कुन्ट वेखे मार ध्याना, दहि दिशा फोल फोलांयदा। गुरमुखां बन्नण आया गाना, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। अन्तिम चुक्के पीणा खाणा, मानस जन्म लेखे लांयदा। साचे धाम आप बहाणा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा।

किसे हथ्थ ना आए राजे राणा, शाह सुल्तान ना कोई रखांयदा। आपे बख्शणहारा पद निरबाना, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म ब्रह्म इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग वटांयदा। सतिगुर पूरे बदलया चोला, हरि साची बणत बणाईआ। सम्मत सोलां रहिण ना देवे पर्दा उहला, निहकलंक वज्जे वधाईआ। गुरमुखां पर्दा आपे खोल्हा, आपणी हथ्थीं पट्टी आपे लाहीआ। आपे गावणहारा ढोला, आपे रिहा सुणाईआ। आपे बणया लोकमात विचोला, ग़रीब निवाजा सेव कमाईआ। आपणा पर्दा आपे फोला, दूसर दिस किसे ना आईआ। करे खेल हौला हौला, गुर गोबिन्द आप समझाईआ। नानक रलया नाल तोला, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। सोहँ शब्द एका बोला, सति पुरख निरँजण आप सुणाईआ। आपे धारे भेख मौला, आप आपणा रूप वटाईआ। सम्मत सोलां सृष्ट सबाई पए रौला, निहकलंक दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा मुख आपे रिहा उठाईआ। आपणा पर्दा आपे लाह, आपणा नूर दरसाया। आपणी जोती आप जगा, आपे डगमगाया। घर घर दीवे दए जगा, गुरमुख साचे कर रुशनाया। साचा घृत आपे पा, आपे बत्ती दए लगाया। निरत सुरत आपे वेख वखा, अकाल मूर्त इक्क मिलाया। नाद तूरत आपणा आप वजा, आपे दए सुणाया। आपणी लाज आप रखा, आपणा पर्दा देवे पाया। आपणे सीस ताज आप टिका, राज राजानां देवे ख़ाक मिलाया। आपणा जहाज साचा आप चला, कलिजुग कूड़ा दए रुढ़ाया। माझे देस जोत जगा, सम्बल नगरी डेरा लाया। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ रिहा उठा, सोया सिँघ रहे ना राया। शेर दलेरा आप हो जा, नेरन नेर रूप वटाया। नौ खण्ड पृथ्मी घेरा लए पा, शब्द डोरी इक्क बंधाया। चिट्टा अस्व घोड़ा रिहा दौड़ा, सोलां कलीआं आसण लाया। सोलां इच्छया पूर करा, साची भिच्छया झोली पाया। दहि दिशा हरि फेरी पा, गुरसिख आपणा लए जगाया। साची सिख्या इक्क समझा, चार वरनां दर बुलाया। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई ना कोई रिहा जणा, जात पाती निजात दवाया। कमलापाती इक्क मिला, अमृत बूंद दए प्याया। आत्म ताकी आप खुल्हा, लहिणा देणा बाकी लए चुकाया। साचा साकी बेपरवाह, अमृत जाम दए प्याया। बांकी चाल इक्क रखा, धुरदरगाही डेरा लाया। ख़ाकी ख़ाक रिहा समा, पाकी पाक आप ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोलां सोलां रंग रंगाया। सोलां रंग सूरा सरबंग, आपणा आप चढ़ांयदा। सोलां इच्छया करे भंग, मनमुखां वेख वखांयदा। सोलां होए दर दर मलँघ, दर दरवेश अख्वांयदा। सोलां चाढ़े आपणी गंग, आपणी धार वहांयदा। सोलां गुरमुख लाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, आप आपणा दर सुहांयदा। आपणा दर सुहाए हरि अबिनाशा, रूप रंग ना रेखया। वेखण आया जगत तमाशा, धारे जोती भेस मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस्सया। वेस वटाया दस दस्मेसा, मूंड मुंडाया रक्खे लेखा, आपणे नेत्र आपे पेख्या। आपे जाणे शिव शंकर गणपति गणेशा, ब्रह्मा वेता वेख वखाया। आप उपजाए देवी देवतया, सुर नर आप अख्वाया। लक्ख चुरासी आपे पाए आपणा केतया, आप आपणा रंग रंगाया। आप उठाई सति चेतया, चेतन रूप आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मेल मिलाया। मेल मिलावणहार निरँजण, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। भगत सुहेला साचा सज्जण, लोकमात आया बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले मंग एका मंगण, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। काया चोली चाढ़े रंगण, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। डूँघी कन्दर मिले सज्जण, सुखमन मुख भवाईआ। धुन अनादी ताल वज्जण, साचा सगन मनाईआ। सर सरोवर मिले मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। बजर कपाटी भाण्डे भज्जण, भव सागर आप तराईआ। आपणी सेजा बहि बहि सजण, मेल मिलावा साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, फड़न आया आपे बांहीआ। गुरमुख सज्जण लए फड़, आपणी दया कमांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, दिस किसे ना आंयदा। अन्दरे अन्दर जाए चढ़, दर मन्दिर आप खुल्हांयदा। तोड़नहारा हँकारी गढ़, सस्सा किला इक्क वखांयदा। उत्ते होड़ा देवे धर, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। हँ ब्रह्म जाए मर, सोहँ सो सच अल्हांयदा। ओअँ रूप आप हरि, एकँकारा नाम धरांयदा। इक्क अकल्ला देवे वर, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी पाए डर, सुत्ते आप उठांयदा। ब्रह्मा वेता अग्गे खड़, आपणा लेख मुकांयदा। विष्नूं फिरे दर दर, घर घर भिच्छया झोली पांयदा। शिव शंकर अन्तिम लए फड़, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। धर्म राए लेखा मंगे अग्गे खड़, अग्गे लँघ ना कोई जांयदा। लाड़ी मौत मंगे वर, आप आपणा सगन मनांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आपणी धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। ब्रह्मा रिहा जगत उपा, हरि साचे वड वड्याईआ। विष्नूं वंसी सेवा ला, साचा रिज़क सबाईआ। शिव शंकर अन्तिम दए मिटा, लेखा लेख मुकाईआ। एका माली जगत उपा, त्रैगुण रचन रचाईआ। सचखण्ड निवासी फेरा पा, सतिजुग आपणा वेस वटाईआ। हेरा फेरा जगत भुला, भरम भुलाए सर्ब लोकाईआ। गुरमुख साजन लए उठा, सन्त सुहेले वेख वखाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म दए जणा, एका रूप दरसाईआ। साचे मन्दिर आप वसा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां वेखे घर घर, घर साचा

बेपरवाहीआ। घर साचा हरि वेखण आया लोकमात उज्यारा। औलीआ पीर शेख़ मुसायक गौंस मेटण आया, ऐली अल्ह एका नाअरा। साची मेखा मेख आपे लावण आया, सति पुरख निरँजण मीत मुरारा। दर दरवेशा फेरा फेरी पावण आया, एका शब्द सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत देवे साचा वर, देवण आए चल दुआरा। आए दर चरन भिखार, हरि साचा बंक सुहाया। देवणहारा नाम भण्डार, दाता दानी आप वरताया। साचा करे सच श्रृंगार, सच श्रृंगार इक्क कराया। बन्ने गाना हरि मेहरवाना विच संसार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। छब्बी पोह साचा मोह, हरिजन हरि मीत मुरार आपणा मेल मिलाया। शब्द जणाया सोहँ सो, भुल्ल रहे ना राया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साजन साचे आपणी कुल उपजाया।

सति पुरख निरँजण साचा चानन, हरि हरि आप कराया। भगतन मीत आया भगतां पछानन, आप आपणा वेस वटाया। शब्द सरूपी पकड़े दामन, दामनगीर नाम धराया। मेट मिटाए कामनी कामन, काम क्रोध ना होए हल्काया। दरगाह साची बणया जामन, दो जहानां वेख वखाया। मिटे रैण अन्धेरी शामन, साचा चन्द चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन वेख वखाया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका एक एकँकारया। सन्त सुहेले कर पछान, घर साचे मेल मिला रिहा। काया मन्दिर बैठ मकान, घर घर विच आसण ला रिहा। दीवा बाती इक्क महान, जोत निरँजण सेवा ला रिहा। धुनी नाद अनादी गान आपे गाण, श्री भगवान ताल तलवाड़ा आप वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती वेख वखा रिहा। सम्मत सम्मती हरि साख्यात, निरगुण जोत जगाईआ। अकल कला कल कमलापात, गुण अवगुण ना कोई वखाईआ। आदि जुगादी सगला साथ, साचा संग निभाईआ। जुग जुग चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द जणाए गाथ, सो पुरख एका गाईआ। कलिजुग लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, हरिजन सेव कमाईआ। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूरन लहिणा झोली पाईआ। लहिणा देणा चुक्कया पूजा पाठ, एका आपणा दरस दिखाईआ। सच सरोवर मारे ठाठ, आत्म अमृत आप नुहाईआ। पल्ले बन्ने नाम गाठ, एका वस्त आप वखाईआ। पंज तत्त जले काया काठ, अग्नी अग्ग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरसिख साजण हरि हरि पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। आत्म अन्तर इक्क लिव लाया, एका बूझ बुझाईआ। पुरख अबिनाशी एका गाया, घट घट वेख वखाईआ। जोत प्रकाश नज़री आया, सच सिँघासण डेरा लाईआ। दासन दासी सेव कमाया, आप आपणा खेल खिलाईआ। रसन स्वासी लए तराया, जो जन

रहे गाईआ। मदिरा मासी लए खपाया, खण्डा हथ्थ उठाईआ। घनकपुर वासी सम्बल नगरी डेरा लाया, देस परदेसा फेरा पाईआ। नर नरेशा नाउँ धराया, दस दस्मेशा मेल मिलाईआ। गणपति गणेशा ना कोई मनाया, सीस जगदीस ना कोई झुकाईआ। आपणा वेसा आप वटाया, वेस अवल्ला इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोला राह तकाईआ। सम्मत सोलां गया चढ़, हरि साचे आप चढ़ाया। दूए अग्गे बिन्दी धर, बीस बीसा खेल कराया। इक्क अकल्ला वेखे खड़, छे घर रूप दरसाया। लक्ख चुरासी आपे लड़, आपे हुक्म सुणाया। सन्त सुहेले लए फड़, जुग विछड़े मेल मिलाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी भेव मिटाया। साचे मन्दिर जाए चढ़, सच दुआरी कुंडा लाहया। ना कोई सीस ना कोई धड़, औदा जांदा दिस ना आया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अज्ञान अन्धेर मिटाया। मेट मिटाए पंचम धाड़, साचा राह वखाया। लेखा जाणे सतारां हाढ़, हरि हरि रूप समाया। सन्त साजण साचे लाड़, मुख साचा सगन लगाया। त्रैगुण माया देवे साड़, पंज तत्त अग्नी तत्त जलाया। दर घर साचे देवे वाड़, नौ दुआरे बन्द रखाया। आपे परखे चंगे माढ़, परखणहारा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां नींह रखाया। सम्मत सोलां नींह रक्ख, निरगुण नूर करे रुशनाया। सृष्ट सबाई प्रतक्ख, शब्द नगारा दए वजाया। लक्ख चुरासी उडने कक्ख, ना कोई धीर धराया। साधां सन्तां भाण्डे सक्ख, नाम भण्डारा दए वरताया। वेखणहारा किसना सुखला पक्ख, पर्दा उहला आप चुकाया। काम क्रोध अँगयारे रहे भख, अमृत जल ना कोई प्याया। फेरा पाए उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्ख, दहि दिशा फेरा पाया। सिँघ शेर लुकया लोकमात ढक, चोर यार मुख छुपाया। ना कोई दिसे झूठा ठग्ग, ठग्ग ठगौरी ना कोई वखाया। पकड़नहारा उप्पर शाह रग, दिस किसे ना आया। जन भगतां बन्ने साचा तग, जुग जुग माण रखाया। बणाए हँस फड़ कग्ग, रूप अनूप वटाया। सच सरनाई आपे लग्ग, गुरमुख साचे सेव कमाया। आपणे सीस गुरमुख तेरी साची पग, साचा ताज आप सुहाया। अन्तिम प्रगट होवे विच जग, सतिजुग साचा मार्ग लाया। कलिजुग कूड़ा रिहा भज्ज, नेत्र रो रो नीर वहाया। लौण ना देवे कोई अज पज, वेखणहारा थाउँ थाया। जो घड़या सो रिहा भज्ज, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख अख्वाया। शब्द जैकारे रिहा गज्ज, आप आपणा नाअरा लाया। गुरमुखां कराए साचा हज्ज, काया काअबा खोल्ह वखाया। नौ दुआरे बैठा तज, दस्म दुआरी डेरा लाया। हरिसंगत मेला रज्ज रज्ज, मनमुख दए दुरकाया। अन्तिम रक्खणहारा लज, नाम पर्दा देवे पाया। प्रगट होया देस मझ, सम्बल नगरी धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोला धार बंधाया।

सोलां धार हरि निरँकार अपर अपार, आपणी आप चलांयदा। संगत मीता कर प्यार, धुरदरगाही हो त्यार, हरिजन पावे सार, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। शब्दी धुन सच्ची धुन्कार, अनहद लाए सेवादार, सुणे सुणाए सुनणेहार, आप आपणा कर्म कमांयदा। वेखणहारा डूँघी गार, जोत सरूपी कर उज्यार, निरगुण वेख सरगुण प्यार, सतिगुर साचा राह चलांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, आदि जुगादी कर पसार, शब्द ब्रह्मादी एका धार, एका नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपणा पर्दा मुख नक़ाब, हरि साचे आप चुकाईआ। आपे प्रगट होया हक्क जनाब, मुकामे हक्क वखाए ख़ुदाईआ। सृष्ट सबाई नकेल पाए नाक, चारों कुन्ट नचाईआ। पूरन करन आया आपणे वाक्, गुर गोबिन्द गया लिखाईआ। पुरख अबिनाशी बणया साचा सज्जण साक, वड दाता बेपरवाहीआ। अग्गे कोई ना दिसे आकी आक, लोआं पुरीआं पैरां हेठ दबाईआ। गुरमुख विरला पाकी पाक, पतित पावन जिस कराईआ। आपे वेखे मार झाक, सच दुआरे डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण खोल्हे ताक, दर दुआरा आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा सगन मनाईआ। साचा सगन हरि मनाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती शब्दी जोड़ जुड़ाया, साचा मंगल गाईआ। एका घोड़ी आप चढ़ाया, साचा सीस गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सखीआं संग निभाईआ। साची सखीआं लाया मेला, हरि हरि वेख वखांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर गुरसिख विच समांयदा। आपे खेल खेले आपे वसे रंग नवेला, आपे निज घर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां वेखे खड़, गढ़ हँकारी रहिण ना पांयदा। सम्मत सोलां सच सिँघासण, हरि साची सेज विछाईआ। धुरदरगाही पुरख अबिनाशन, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मनमती जीव करन हासन, गुरमुख साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा रिहा मुकाईआ। आपणा लहिणा आप मुकाया, हरि साचा खेल खिलांयदा। पंज तत्त हरि डेरा ढाया, ना कोई बणत बणांयदा। पन्दरां साल मुख छुपाया, मुख आपणा बन्द करांयदा। जगत सिँघासण डेरा लाया, सिँघ शेर नाउँ उपांयदा। सम्मत पन्दरां पूरा कराया, आप आपणा दर सुहांयदा। नौ दुआरे जगत तजाया, दसवां घर वसांयदा। दसवें घर पंज तत्त कोई दिस ना आया, ना कोए मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप मुकांयदा। सम्मत पन्दरां मुक्कया लेखा, हरि साचे आप मुकाया। आपणा दर दुआर आपे वेखा, आपे बणत बणाया। आपे पावणहारा भरम भुलेखा, आपे पर्दा देवे लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा

खेल खिलाया। सम्मत सोला चढ़या चन्न, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरमुखां देवे परमानंद, निजा नंद आप समाईआ। बजर कपाटी तोड़े जंद, त्रै धातू वेख वखाईआ। दूई द्वैती ढाही कंध, भरम गढ़ रहिण ना पाईआ। धुन अनादी सुणाए साचा छन्द, अनहद धुन सुणाईआ। सर्ब जीआं दाता बख्शंद, बख्शणहार वड वड्याईआ। जो जन तजाए मदिरा मास रसना गन्द, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंच प्यारे रिहा उठाईआ। पंचम मीता साचा संग, हरि साचा आप रखांयदा। गुरु गुर मंगी मंग, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। कलिजुग अन्तिम चढ़े रंग, साची चोली आप रंगांयदा। जगत दुआरा आपे लँघ, सतिगुर पूरा वेख वखांयदा। लहिणा देण चुकाए गोदावरी गंग, गुरमुख धारा आप चलांयदा। सच सिंघासण बैठ पलँघ, पुरख अबिनाशी डेरा लांयदा। कलिजुग मंगी एका मंग, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। लक्ख चुरासी भुक्ख नंग, नाम भण्डार ना कोई वरतांयदा। माया ममता लग्गा जंग, दिवस रैण लड़ांयदा। साधां सन्तां आत्म रंड, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। वरनां बरनां होया घमंड, सच रूप ना कोई दरसांयदा। कलिजुग ठग्गण भेख पखण्ड, काम क्रोध सतांयदा। हउमे हँगता पावे दंड, ना कोई बन्नृ वखांयदा। सतिगुर पूरा सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरला खोजे विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मीता पंचम मंग मंगांयदा। पंचम मीता पंच प्यारा, साचा संग रखाईआ। हरिसंगत साची कर उज्यारा, पोह छब्बी रुत्त सुहाईआ। सम्मत पन्दरां तेरा पार किनारा, सम्मत सोला राह तकाईआ। सम्मत सोलां खेल न्यारा, हरि आपणा आप जणाईआ। हरिसंगत तेरे अग्गे बण भिखारा, आपणी झोली डाहीआ। तेरा दुआरा अपर अपारा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। सोहँ शब्द सच वणजारा, एका वणज वखाईआ। नानक गाया हरि प्यारा, हरि हरि विच समाईआ। ना कोई दिसे होर किनारा, ना कोई दर सुहाईआ। एका इक्की खेल अपारा, खालक विच ख़ुदाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी धारा, आपे रिहा चलाईआ। हड्ड मास नाड़ी पिंजर किया पार किनारा, गुरसिखां उत्तों भेंट चढ़ाईआ। सृष्ट सबाई धुँधूकारा, प्रभ साची जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। हरि हरि साचा घर बुझावना, घर साचे जोत जगांयदा। भेव अभेद भेव खुल्लावना, आप आपणा शब्द अलांयदा। एका मार्ग साचा लावना, सच सुच्च वरतांयदा। कलिजुग कूड़ा मेट मिटावना, शौह दरया रुढ़ांयदा। सति सन्तोखी साचा धाम सुहावणा, वरन बरन ना कोई उपांयदा। इक्क महल्ले डेरा लावणा, एका घर वसांयदा। इक्क अकल्ले खेल रचावणा, लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा। शब्द नगारा इक्क वजावणा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। गुरमुख सोया आप उठावणा, शब्द हलूणा इक्क

लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा जगत भुलेखा भरमी भरम भुलांयदा। भरमी निवारे गढ़ हँकार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। चण्डी चमके तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड वखाईआ। खण्ड खण्ड करे संसार, खड़ग खण्डा वखाईआ। ब्रह्मण्ड खेले खेल अपार, जेरज अंड फोल फुलाईआ। देवे दंड कूड़ पसार, जूठ झूठ वेख वखाईआ। गुरमुख साचे करे प्यार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। अन्तर मन्त्र इक्क अधार, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मीत मुरार, जुग जुग मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आपे रिहा बुझाईआ। चढ़या जोद्धा शब्द जवानी, हरि साची लए अंगड़ाईआ। सोहँ चिल्ला तीर कमानी, आपे रिहा उठाईआ। वेखणहारा दो जहानी, दाता दानी बेपरवाहीआ। मारनहारा एका कानी, लोआं पुरीआं दए हिलाईआ। लक्ख चुरासी तेरा बानी, प्रगट होया बेपरवाहीआ। धुरदरगाही साची बाणी, पुरख अकाला आप सुणाईआ। इक्क वखाए पद निरबानी, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। आपे होया जाण जाणी, जानणहार वड वड्याईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, भर प्याला आप प्याईआ। सतिगुर पूरा साचा हाणी, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख साचे हरि हरि पेखन, हरि हरि रूप समाया। आपे लिखणहारा लेखण, आपे लेखा लेख वखाया। आपे नर नरायण नर नरेशन, आपे निरगुण धार चलाया। जुग जुग करे अवल्लड़ा वेसन, नित नवित्त खेल खिलाया। आपे करनहारा साचा हेतन, मीत मुरारा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, छब्बी पोह पुरख अबिनाशी प्रगट हो, सम्मत सोलां वेख वखाया। सम्मत सोला शाह भूप, शब्दी शब्द अख्वाया। ना कोई रंग ना कोई रूप, ना कोई बणत बणाया। वेखणहारा जूठ झूठ, कलिजुग क्रिया बंधन पाया। गुरसिखां आपे गया तुठ, आप आपणे घर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत रिहा समझाया। सम्मत सोला हरि समझावना, हरिसंगत दए सलाहीआ। पंज तत्त ना किसे सीस निवावना, गुर पीर ना कोई अख्वाईआ। ब्रह्म ब्रह्म सभ नज़री आवना, पारब्रह्म इक्क हो जाईआ। खाली भाण्डे डंक वजावना, आप आपणी अवाज़ सुणाईआ। गुरमुख सुरती जनक सपुत्री आप प्रनावना, सीता सुरती लए उपाईआ। साची सखीआं मंगल गावना, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटावना, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। पंज तत्त ना तख्त बहावना, ना कोई पूज पुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। पंज तत्त छड्डुया नाता, दस पंज वेख वखाया। प्रगट होया पुरख बिधाता, सोलां सोलां धार बंधाया। आपे गाए आपणी गाथा, एका शब्द सुणाया। बिना हरि शब्द ना टेको माथा, चार वरन एका मार्ग

लाया। साधा सन्तां आया घाटा, आपणा घाटा ना पूर कराया। प्रभ खाली कीता काया बाटा, छब्बी पोह दिवस सुहाया। ना कोई सहाई तीर्थ ताटा, अठसठ मूल चुकाया। हरिजन साचे आत्म रस चाटा, निझर धार वहाया। मस्तक जोत जगाए लिलाटा, अन्ध अन्धेर मिटाया। निरगुण सरगुण पूजा पाठा, सोहँ नाम धराया। अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, चौथे दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका पौड़े रिहा चढ़ाया। एका पौड़ा एकँकारा, आपणे घर लगाईआ। सति पुरख निरँजण कर प्यारा, साची सेव कमाईआ। अलख अगोचर खेल न्यारा, एकँकार अलख कराईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआरा, वड दाता बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले लाए पार, गुरमुख चेले लए तराईआ। ना कोई वसे अन्ध अँध्यार, सुन्न समाध ना कोई वखाईआ। कलिजुग नाता दस्म दुआर, दर दरवाज़ा इक्क सुहाईआ। पंज तत्त घरों होया बाहर, सिँघ शेर मूल चुकाईआ। काया नाता छुट्टा संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम नामा हथ्थ उठाईआ। राज राजाना दए हुलार, शाह सुल्ताना आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिँघासण निरगुण धार, पुरख अबिनाशी कर उज्यार, आप आपणा रूप दरसाईआ। रूप अनूप हरि हरि रंगा, हरि हरि रूप समाया। आपे खड़ग आपे खण्डा, तीर कमान आप हो जाया। आपे चण्ड प्रचण्ड पाए वंड, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाया। आपे तोड़णहारा जगत घमंड, अंडज जेरज फोल फोलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, दर घर साचे मेल मिलाया।

अबिनाशी करता एकँकार, आदि जुगादि समाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपार, परवरदिगार खेल खिलाया। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। अकल कला कल आपे धार, अकल कलधारी खेल खिलाया। अलख अगोचर अगम्म अपार, आदि निरँजण भेव ना राया। पुरख परखोतम खेल न्यार, भेव अभेद छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उपाया। जोती नूर पुरख अकाल, एका रूप समाईआ। आपे नूर जल्वा जलाल, आपे वेख वखाईआ। आपे होए दीन दयाल, दया निध वेस वटाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। आपे वसे आपणी धर्मसाल, आप आपणा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। अबिनाशी करता हरि निरँकारा, आदि जुगादि एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका नाउँ प्रगटांयदा। आपे बन्नृणहारा धारा, आपे बणत बणांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसारा, गगन पताला वेख वखांयदा। मण्डल मण्डप दए सहारा, रवि ससि प्रकाश रखांयदा। गगन गगनंतर हो उज्यारा, आप आपणा संग निभांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटांयदा। आदि निरँजण हरि भगवाना, एका जोत जगाईआ। खेले खेल दो जहाना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। इक्क वखाए सच निशाना, दर साचे आप झुलाईआ। एका राग इक्क तराना, एका रिहा गाईआ। एका जोद्धा सूरबीर बलवाना, बल धारी इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क अख्वाईआ। आदिन अन्ता एका हरि, हरी हरि रूप समाया। आपणी करनी आपे कर, करनी करता आप हो जाया। आपे खोल्हे आपणे दर, दर दरवाज़ा वेख वखाया। आप चुकाए आपणा डर, निरभउ नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा ल्ए उपाया। जोती नूर इक्क अकल्ला, हरि हरि वेस वटांयदा। वसणहारा सच महल्ला, थिर घर डेरा लांयदा। एका रक्खे नेहचल धाम अटला, एका अगम्म अथाह बेपरवाह वेख वखांयदा। आपे जाणे आपणे ना, नाउँ निरँकार आप अख्वांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, साक सैण ना कोई जणांयदा। ना कोई पकड़णहारा बांह, ना कोई गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप अनेका हरि करतार, आपणी बणत बणाईआ। अछल अछल्ल खेल न्यार, आप आपणा रिहा कराईआ। जोती नूर अगम्म अपार, उच्च महल्ल अटार आप रखाईआ। साचे दर हो उज्यार, एका डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म अकाल मूर्त, हरि हरि आप अख्वांयदा। ना कोई रंग ना कोई सूरत, ना कोई मूल वखांयदा। ना कोई नाद ना कोई तूरत, ना कोई राग अल्हांयदा। ना कोई सच ना कोई कूड़त, ना कोई मन्दिर बणत बणांयदा। ना कोई मूर्ख ना कोई मूढ़त, ना कोई ज्ञान दृढ़ांयदा। ना कोई चरन ना कोई धूढ़त, ना कोई मस्तक लांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, आप आपणा कर पसार, आपे चाढ़े रंग गूढ़त, उतर कदी ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एकँकार खेल न्यारा, आदि जुगादी बन्न्हे धार, आप आपणा दर सुहांयदा। साचा हरि हरि दर दरवाज़ा, आपणा आप सुहाया। आपे आप वस्सया ग़रीब निवाजा, ना कोई दूसर संग रखाया। आपणा रचया आपे काजा, आपे वेखण आया। आप आपणी मारे वाजा, आप आपणे कन्न सुणाया। आप आपणी रक्खे लाजा, लाजावन्त नाम धराया। आपे रक्खे आपणा ताजा, आपणा अस्व आप दौड़ाया। खेले खेल ग़रीब निवाजा, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेख वखाया। वेखणहारा हरि समरथ, एका एकँकारया। आपणी महिमा जाणे अकथ, ना कोई लेखा लेख विचारया। आपणी गाए आपे गाथ, आप आपणा नाउँ उपा रिहा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। आपणे मन्दिर कर अकट्ठ, आपणा मता पकाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण भेव खुलाया। निरगुण निरगुण साचा खेला, हरि हरि खेल खिलांयदा। आप आपणा करया मेला, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे वरसया रंग नवेला, आप आपणी बणत बणांयदा। आप आपणा चाढ़े तेला, आप आपणा सगन मनांयदा। आप आपणा सज्जण सुहेला, मीत मुरारा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नारी पुरख आप अख्वांयदा। नारी पुरख पुरख सुल्तान, हरि हरि आप अख्वाया। जोती नूर श्री भगवान, एका एक डगमगाया। आपे दाता दानी दान, आपणी झोली रिहा भराया। आपे देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा हुक्म सुणाया। आपे वेखे ज़िमी अस्मान, गगन गगनंतर वेख वखाया। लोआं पुरीआं कर ध्यान, शब्द डोरी बंध बंधाया। धरत धवल हो प्रधान, जल बिम्ब आप टिकाया। त्रैगुण तेरी कर कल्याण, तेरा रूप वटाया। त्रै त्रै देवे इक्क ज्ञान, एका शब्द जणाया। एका बाणी सारे गान, एका नज़री आया। एका निगहबान, एका वेख वखाया। एका धुन अनादी खेल महान, आदि जुगादी आप सुणाया। शब्द ब्रह्मादी नौजवान, दहि दिशा चारे कूटां फेरा पाया। पारब्रह्म सच सुल्तान, घर साचे बैठा आसण लाया। थिर घर आदेसा इक्क मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण धार बंधाया। थिर घर साचा सच दुआर, हरि हरि आप बणांयदा। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा। ना कोई दीवा बाती किया उज्यार, ना कोई वेख वखांयदा। ना कोई नारी कन्त भतार, ना कोई सेज हंढांयदा। ना कोई साजन मीत मुरार, सगला संग ना कोई वखांयदा। ना कोई गीत सुहागी गाए वारो वार, ताल तलवाड़ा ना कोई वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा बंक सुहांयदा। थिर घर साचा हरि हरि बंक, हरि हरि आप सुहांयदा। आपे खेले खेल आदि अन्त, आप आपणी खेल खिलांयदा। आप बणाए आपणी बणत, आपणी धार विच बंधांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर ना कोई अख्वांयदा। ना कोई जीव ना कोई जन्त, ना कोई राह तकांयदा। ना कोई मणीआ ना कोई मणत, ना कोई नाम दृढ़ांयदा। ना कोई नारी ना कोई कन्त, ना कोई सेज हंढांयदा। ना कोई चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठी ना कोई वखांयदा। इक्क अकल्ला श्री भगवन्त, थिर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर हरि उजाला, आपणा आप करे पसारया। आपे सतिगुर रूप गोपाला, आपे खेले खेल अपारया। आपे जाणे आपणी चाला, आपणा अस्व आप दौड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वसे साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क वखाया। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, हरि साचे जोत जगाईआ। अकाल पुरख आदि निरँजणा, बैठा डेरा लाईआ। दर्द दु:ख

हरि भय भंजना, आप आपणा वेस वटाईआ। आदि जुगादी एका हज्जना, एका अलख जगाईआ। अगम्म अगम्मड़े धाम बहि बहि सजणा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण धार हरि करतार, आपणी आप बणाईआ। निरगुण रूप अपर अपार, शाहो भूप आप अख्वाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, इक्क अकल्ला खेल खिलाईआ। निरगुण निरगुण कर विचार, निरगुण निरगुण बूझ बुझाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, निरगुण निरगुण डेरा लाईआ। निरगुण होया ख़बरदार, निरगुण मीत मुरार, निरगुण नारी कन्त भतार, निरगुण सेजा रिहा हंढाईआ। निरगुण सुत्त निरगुण दुलार, निरगुण करे सच प्यार, निरगुण बैठा किरपा धार, निरगुण वड वड्डी वड्याईआ। निरगुण सांझा दिसे यार, निरगुण खेल अगम्म अपार, निरगुण अलख निरँजण एका लाए नाअर, निरगुण एका नाम उपाईआ। निरगुण राजा बंक दुआर, निरगुण आपणे दर भिखार, निरगुण मंगे वारो वार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। निरगुण रूप एकँकार, निरगुण करे सगल पसार, निरगुण होया निराकार, निरगुण निर्धन आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। निरगुण मीता निरगुण ढांडा निरगुण सीता, निरगुण बैठा रहे अतीता, निरगुण आपणी चलत चलाईआ। निरगुण मरया निरगुण जीता, निरगुण नाम निधाना पीता, निरगुण रूप निरगुण कीता, निरगुण निरगुण आप उपाईआ। निरगुण हस्त निरगुण कीटा, निरगुण वस्सया धाम अनडीठा, निरगुण आपणा पीसण पीठा, आपणी चक्की आप चलाईआ। निरगुण धार निरगुण रीता, ना कोई मन्दिर देहुरा मसीता, गुर दुआर ना रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। निरगुण धार निरगुण रंग, निरगुण विच समांयदा। निरगुण मंगे आपणी मंग, निरगुण झोली डांहयदा। निरगुण दर दुआरा वेखे लँघ, निरगुण मुख दिखांयदा। थिर घर रखाया इक्क पलँघ, पावा चूल ना कोई रखांयदा। आदि जुगादि ना होए भंग, आदि जुगादि ना मेट मिटांयदा। आपणे दर ना रिहा संग, आप आपणा हुक्म चलांयदा। ना कोई दिसे बनेरा कंध, इट्ट गारा ना कोई लगांयदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, गगन मण्डल ना कोई वखांयदा। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, ना कोई बणत बणांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे आप चलांयदा। ना कोई जननी जणे जन, ना कोई पूत गोद उठांयदा। ना कोई माल ना कोई धन, ना कोई ख़ज़ाना कोई कढांयदा। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई धुन उपजांयदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, ना कोई डेरा लांयदा। ना कोई बुद्धी ना कोई मति ना कोई मन, ना कोई त्रैगुण बंधन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा उच्च मिनार, हरि

साची जोत जगाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, बैठा बेपरवाहीआ। आदि जुगादी खेल न्यार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। पारब्रह्म पुरख भतार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे होए आपणी जोत उज्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। जोद्धा सूरबीर बलकार, आपणी कल वरताईआ। ना कोई खण्डा तेज़ कटार, ना कोई गात्रा रिहा लटकाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी केस दिसे दस्तार, ना कोई मूंड मुंडाईआ। ना कोई रसना जेहवा लाए नाअर, बत्ती दन्द ना कोई गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर साचा बेपरवाह, आपणा आसण लांयदा। आप आपणा बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आपे जाणे आपणा राह, आपे मार्ग पांयदा। आपे वसे साचे थाँ, थान थनंतर वेख वखांयदा। आपे करे सच न्याँ, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणी आपे पकड़नहारा बांह, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण जोत हो प्रतक्ख, लोकमात वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर शिव शंकर राह रिहा तक्क, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। साध सन्त गए अक्क, दिवस रैण नाम ध्याईआ। वरभण्डी वेखे एका ढक, ब्रह्मण्डी खोज खुजाईआ। जेरज अंडी झट, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। शब्द नकेल पाए नक्क, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। आपणी धार आपे रक्ख, आपे करे रुशनाईआ। आपे होया सभ तों वक्ख, आपे हर घट बैठा आसण लाईआ। आपे आपणी कीमत पाए लक्ख, आपे कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। आप छाछ वरोले मक्ख, साचा सीर आप समाईआ। आपे प्रगट होया मात प्रतक्ख, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणे ल्ए रक्ख, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता लोकमाती कर उज्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर डगमगा, आपणा कर्म कमांयदा। आदि जुगादी वेस वटा, जुग जुग फेरी पांयदा। लहिणा देणा लेखा रिहा आप चुका, आपणा मूल वखांयदा। बस्त्र शस्त्र गहिण एका पा, हरिजन मेल मिलांयदा। नेत्र नैणां दरस दिखा, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। भाणा सहिणा हुक्म सुणा, आप आपणी चलत चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। बंधनहारा हरि भगवन्ता, आपणी धार बंधाईआ। पुरख पुरखोतम नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल आप हो जाईआ। आपे जोग जुगीशर होए जुगा जुगन्ता, मुनीशर तपीशर आप कराईआ। आपे हउमे आपे हँगता, आपे गढ़ तुड़ाईआ। आपे भुक्खा आपे नंगता, आपे दर दर अलख जगाईआ। आपे मंगणहार मंगता, आपे भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वड्ड वड्डी वड्याईआ। निरगुण सच्ची धार, हरि साचा आप चलांयदा। प्रगट होए

विच संसार, जुग जुग नाउँ धरांयदा। सतिजुग साचा मीत मुरार, अट्ठ दस वेख वखांयदा। त्रेता तेरा रूप अपार, दो
दो रंग चढ़ांयदा। द्वापर तेरा सांझा यार, एका दूजा वेख वखांयदा। पंचां मीता इक्क अखाड़, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। साचे
दर आपे वाड़, आपणा मूल चुकांयदा। वेखणहारा जगत अखाड़, आपणा डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। आपणा वेस आप धराया, हरि साचे वड वड्याईआ। जुग जुग आपणा
खेल खिलाया, जुग जुग वेख वखाईआ। जुग जुग करते कर्म कमाया, करनी करता आप हो जाईआ। जुग जुग धरनी
धरत धवल सुहाया, जुग जुग बंधन पाईआ। जुग जुग जन भगतां अमृत आत्म कँवल चुआया, उलटी नाभ कराईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी छाहीआ। कलिजुग कूड़ा सच्चा शाह, हरि हरि आप उपाया।
जूठ झूठ दए सलाह, माया ममता मता पकाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार वेखे साचा थाँ, सगला संग निभाया। आसा
तृष्ना पकड़े बांह, दर साचा इक्क सुहाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, काग कागी आप उडाया। ईसा मूसा शब्द जणा,
संग मुहम्मद आप रलाया। चार यारी देवे सुणा, राणी अल्ला नाअरा लाया। ऐनलहक्क इक्क जणा, मुकामे हक्क वेख
७६ वखाया। ख़ुदी ख़ुदाई दए वसा, परवरदिगार भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख ७६
८० अबिनाशी करता लोकमाती दीवा बाती आप जगाया। दीवा बाती कर उज्यार, हरि आपणी कल चलाईआ। वेखणहारा संग ८०
मुहम्मद चार यार, खेले खेल नूर अलाहीआ। दो दो आया कर पसार, दोए दोए धार बंधाईआ। अहिबाब रबाब वजाए
सितार, सच सारंगा आप उठाईआ। कलमा नबी कर त्यार, एका मुख सलाहीआ। शाह नवाबा ख़बरदार, आप आपणा
हुक्म चलाईआ। चरन रकाबा दे होए अस्वार, एका अस्व रिहा दौड़ाईआ। दए अज़ाबा अन्तिम वार, आपणी खेल खिलाईआ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क अख्वाईआ। आदि अन्त कर पसारा, आपे वेख वखांयदा।
अलख अगोचर अगम्म अपारा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सुन्न अगम्मी पार किनारा, आप आपणा राह तकांयदा।
ब्रह्मा वेता कर प्यारा, एका शब्द जणांयदा। चारे वेदा बण लिखारा, लोकमात आप धरांयदा। विष्नूं वंसी हो उज्यारा, साची
सेव कमांयदा। शिव शंकर सिर चुक्के भारा, लक्ख चुरासी पंड उठांयदा। सुरपति रोवे आपणी वारा, नेत्र नैणां नीर वहांयदा।
करोड़ तेतीसा कर प्यारा, एका धाम बहांयदा। लोकमात खेल न्यारा, आपणा आप करांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा,
हरि साचा वेख वखांयदा। हक्क हकीकत वेखे नाअरा, सच दुआरे आपे लांयदा। शरअ शरीअत पार किनारा, बंधन आपणा
आपे पांयदा। लाशरीक इक्क ख़ुदाए परवरदिगारा, एका नाम अल्लांयदा। खेले खेल आपणी वारा, आप आपणा वेस वटांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला हरि करतार, आपणा आप कराया। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, आपे वेखण आया। नन्ना निरगुण कर उज्यार, नन्ना निरगुण मेल मिलाया। कक्का कर्मा पावे सार, कच्चा घड़ा आप उठाया। आपे बन्ने लाए पृथ्मी आकाश हो उज्यार, रक्त बूंद मास नाड़ी रत्त आपणे लेखे लाया। जोती जोत कर उज्यार, कमलापाती खेल खिलाया। नानक साचा नाम रक्ख, साचा रथ चलाया। शब्द जणाई अकथना अकथ, आपणा भेव खुल्हाया। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी बूझ बुझाया। सर्ब कला आपे समरथ, नानक विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। नानक जोत हरि जगा, आपणा नूर दरसाया। आपणा दरस आप दिखा, आप आपणा खेल खिलाया। एका दूजा भउ चुका, दोए दोए मेट मिटाया। तीजा नैण इक्क खुल्हा, एका राह चलाया। चौथे पद रिहा समा, भुल्ल रहे ना राया। पंचम मेला सहिज सभा, घर साचे दए कराया। छप्पर छन्न ना ल्या रखा, महल्ल अटल ना कोई बणाया। थिर घर बैठा बेपरवाह, निरगुण जोत कर रुशनाया। नानक दर्शन साचा पा, निउँ निउँ सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ पकड़नहारा बांह, आप आपणे गले लगाया। मेरा तेरा इक्क न्याँ, भुल्ल रहे ना राया। नानक सतिगुर चढ़या चा, साचा मंगल गाया। सोहँ नाअरा दित्ता ला, घर साचे वेस वटाया। हँ ब्रह्म ना कोई जणा, पारब्रह्म नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, नाम सति झोली पाया। नाम सति कर प्रकाश, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी होया दास, नानक गया समाईआ। पूरी करन आया आस, जो जन बैठे राह तकाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, पुरीआं लोआं फेरा पाईआ। घट घट आपे रक्खे वास, घट घट आपे रिहा उठाईआ। पावणहारा साची रास, देवे शब्द सलाहीआ। लक्ख चुरासी करे बन्द खुलास, जो जन दर्शन पाईआ। लहिणा चुक्के हड्ड नाड़ी मास, पंज तत्त विच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्दी शब्द पढ़ाईआ। शब्द ढोला हरि निरँकार, आपणा आप लगाया। नानक चोला कर प्यार, पंज तत्त समाया। पर्दा उहला विच संसार, दिस किसे ना आया। आप वजाए सच सितार, मर्द मरदाना सेवा लाया। गाए गीत वारो वार, हरि साचा रिहा सुणाया। इक्क अतीता पावे सार, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या रिहा सिक्खाया। नानक सतिगुर साची सिख्या, आपणी आप सुणाईआ। धुरदरगाही पाई भिच्छया, आपे निरगुण आपे सरगुण आपे आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपणा लेखा आपे लिख्या, आपे पूर कराईआ। लक्ख चुरासी दिसे मिथ्या, थिर कोई रहिण ना पाईआ। आपे सुत्ता दे कर पीठा, आप आपणा

मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धार बंधाईआ। साची धार बन्ने करतार, एका शब्द सुणांयदा। सति नाम कर प्यार, सस्सा सतिगुर रूप वटांयदा। तत्ता तत्त ना होए ख्वार, नन्ना निरगुण मेल मिलांयदा। मम्मा मोह चुक्के संसार, जो जन नानक दर्शन पांयदा। आत्म अन्तर इक्क विचार, एका ब्रह्म जणांयदा। जगत बसन्तर होए ख्वार, तत्त विकारा नेड़ ना आंयदा। नाम मन्त्र इक्क जैकार, अनहद धुन सुणांयदा। रागी नादी ना पावे सार, ब्रह्मादी वेख वखांयदा। आदि जुगादी एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। बोध अगाधी शब्द भण्डार, नानक हथ्थ फड़ांयदा। नानक सतिगुर हो त्यार, लोकमात वरतांयदा। चार वरनां इक्क प्यार, एका धाम सुहांयदा। राउ रंक ना कोई विचार, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। अन्तर आत्म ठंडी ठार, साचा जल प्यांअदा। हउमे हँगता कर खुआर, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। ग़रीब निमाणे लए उभार, आप आपणे गल लगांयदा। धुर फ़रमाना सुणाए वारो वार, पंज तत्त रसना गांयदा। मिल्या मेल पुरख भतार, नारी रूप आप हो जांयदा। एका सेजा सुत्ता पैर पसार, लोकमात ना कोई उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। शब्दी धार नाम जैकार, गुर सतिगुर आप अल्लाया। एका रूप दस अवतार, एका वेख वखाया। पुरख अकाल कर प्यार, अकाल मूर्त नज़री आया। अजूनी रहित सच सच्यारा, साचा दर रिहा सुहाया। सति नाम वंड भण्डारा, लक्ख चुरासी दए तराया। करता पुरख खेल अपारा, आप आपणा रिहा कराया। सतिगुर नानक वड सिक्दारा, सच सुल्तान बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा रथ चलाया। सच रथवाही चलाए रथ, कलिजुग आप चलांयदा। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुन्ट फिरांयदा। वरनां बरनां देवे मथ, वरनी बरनी लेख लिखांयदा। जगत निराला कमलापति, कन्त कन्तूहल नाउँ धरांयदा। आपे धीरज जत सति सन्तोख सति, सति सांतक सति समांयदा। आपे ब्रह्म होए उत्पत, ब्रह्म ब्रह्म आप हो जांयदा। आपे ब्रह्म जाणे मित गति, जुग जुग नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क सलांहयदा। सलाही सलाह सिफ्त सलाह, सतिगुर नाउँ धराईआ। निथाव्यां देवे साचा थाँ, फड़ फड़ बांहों पार कराईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, अमृत जाम प्याईआ। देवणहारा ठंडी छाँ, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आप बुझाईआ। नानक सतिगुर शब्द जणा, चार कुन्ट उठ धाया। आपणी सेवा आप कमा, आपे मूल चुकाया। आपणा लेखा आप चुका, आपे वेख वखाया। आपणी वंड आप वंडा, आपे भेख वटाया। अंगद अंगीकार करा, आपणे रंग रंगाया। निरगुण बाती

जोती दए जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। शब्द सोटी दए फड़ा, जगत सहारा इक्क कराया। साची चोटी दए चढ़ा, बन्द किवाड़ा आप खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार कर प्यार, झूठा नाता तोड़ तुड़ाया। पंज तत्त होया पार, साचा संग ना कोई निभांयदा। शब्दी जोती जुड़या नाता, हरि साचा आप जुड़ांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, आप आपणा खेल खिलांयदा। अंगद अंगी इक्क पछाता, एका अंग लगांयदा। देवणहारा साची दाता, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। वसणहारा इक्क इकांता, आपणी कल वरतांयदा। बिरध अवस्था शब्द सुत्त जम्मया ना कोई पिता ना कोई माता, अंगद गोदी आप टिकांयदा। गुरसिख कीनी उत्तम ज़ाता, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आप जणाई साची गाथा, हरि हरि रसना गांयदा। पंज तत्त नानक साची जोत गुर अंगद टेके आपे माथा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। सृष्ट सबाई सगल विसूरा लाथा, पंज तत्त गुरु ना कोई अख्वांयदा। हरि का शब्द साची पूजा पाठा, हरि हरि मन्त्र सुणांयदा। हरि का नाम सच सरोवर तीर्थ ताटा, दुरमति मैल गंवांयदा। भरया प्याला काया बाटा, गुरसिखां आप प्यांअदा। अमरु निथावां आपे नाठा, जल धारा सेव कमांयदा। अंगद खोल्या साचा हाटा, चौदां लोक चरनां हेठ दबांयदा। नानक शब्द पूरा करन आया घाटा, चौथे जुग वेख वखांयदा। जोत सरूपी सेवा करे आदि शक्ति लिलाटा, अट्ठे पहर डगमगांयदा। गगन पताला पर्दा पाटा, तीर निराला इक्क लगांयदा। आपे सुत्ता आपणी सेजा साची खाटा, सच सिंघासण इक्क विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर सरोवर देवे भर, अमृत आत्म सुहांयदा। अमृत आत्म साचा ताल, गुर सतिगुर आप भरांयदा। अमरदास गुर आपे भाल, अमरा पद रखांयदा। तोड़नहारा जगत जंजाल, जागरत जोत जगांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, आपे मंगण मंग मंगांयदा। आपे जगत धूंआँ होए ज्वाल, नाम लाल आप उपांयदा। आपे निरगुण सरगुण जोती बाल, ब्रह्म पारब्रह्म टिकांयदा। आपे सिँघ शेर बण दलाल, जगत विचोला नाउँ रखांयदा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, बाल निधाना वेख वखांयदा। दास राम आपे भाल, आपणे दर सुहांयदा। सर सरोवर सुहाया ताल, हरि मन्दिर डेरा लांयदा। गुर अर्जन मीता एका भाल, अबिनाशी पुरख मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलांयदा। बोध अगाधा शब्द ज्ञाना, अर्जन हरि जणाईआ। मिल्या मेल श्री भगवाना, गुर सतिगुर घर में पाईआ। नाता तोड़ जगत जहानां, घर साचा वेख वखाईआ। उपजे धुन सच तराना, साचा राग अलाईआ। आदि निरँजण बन्ने गाना, जोत निरँजण आप प्रनाईआ। मिल्या मेल मर्द मरदाना, घर साचे वज्जी वधाईआ। उठे जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। वेद पुराणा फोल फुलाना, हरि का भेव कोई ना पाईआ। नानक सतिगुर शब्द इक्क

ध्याना, एका दर सुहाईआ। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका बणत बणाईआ। दर दुआरे कोटन कोटि गोपी कान्हा, मण्डल रास रहे पाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव चरन कँवल करन ध्याना, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। नानक अंगद एका धार, एका जोत जगांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। एका गुर इक्क अवतार, पारब्रह्म इक्क अख्वांयदा । एका ब्रह्म पाए सार, एका रूप वटांयदा। सन्तन मीता सुत्त दुलार, साचा संग रखांयदा। आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग वेख वखांयदा। साचा दर कर त्यार, घर साचे मंगल गांयदा। त्रैगुण तेरा इक्क प्यार, रजो तमो सतो मेल मिलांयदा। पंचम मोह वेख विचार, पंचम रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुरू बणांयदा। एका शब्द गुर एका इष्ट गुरू ग्रन्थ मनाईआ। अकाल पुरख खोल्हे दृष्ट, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। धुरदरगाही वस्सया सृष्ट, हर घट बैठा बेपरवाहीआ। आपे रामा गुर वशिष्ट, आपे मन्त्र नाम पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती नूर करे रुशनाईआ। एका जोती दोए धार, शब्दी गुर अख्वाया। गुरू ग्रन्थ कर त्यार, हरि गोबिन्द डेरा लाया। जोद्धा सूर बली बलकार, खड़ग खण्डा हथ्थ उठाया। आपे आपणी करे कार, भेव किसे ना पाया। निवण सो अक्खर मिल्या मीत मुरार, साची नारी कन्त उपाया। एका जोद्धा एका बलकार, आप आपणा बल वखाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दूजा लेख लिखाया। नाम खण्डा कर प्यार, गोबिन्द हथ्थ फड़ाया। खेले खेल अगम्म अपार, हरि हरि वेख वखाया। हरिराए कर सुत्त दुलार, दे मति आप समझाया। बाल अवस्था कर प्यार, दर सुहञ्जणा मेल मिलाया। नौवे दर कर खुआर, सृष्ट सबाई आप भुलाया। तेग बहादर सांझा यार, काया नाता आप तुड़ाया। पाया वर हरि कन्त भतार, विछड़ कदे ना जाया। लहिणा चुक्के विच संसार, नौवा गुर वेख वखाया। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, तेरा लहिणा रिहा चुकाया। लग्गे अग्ग सृष्ट सबाई तत्ती हाढ़, अर्जन तवीआं हेठ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती नूर कर, नूरो नूर रुशनाया। जोती नूर शब्द वणजारा, हरि हरि आप अख्वांयदा। पारब्रह्म गुर लए अवतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। गुर गोबिन्द कर प्यारा, साचा सुत्त उपजांयदा। दुष्ट दमन दए हुलारा, टिल्ले पर्बत वेख वखांयदा। लोकमात पावे सारा, आप आपणा राह चलांयदा। देवे खण्डा तेज कटारा, नैणां देवी मेल मिलांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा दरस दिखांयदा। पंचम मीता हो त्यारा, पंचम संग रलांयदा। बंक बंक दर दर पावे सार, घर घर साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोती एका घर, एका शब्द सुणांयदा। पंचम

मीता पंचम प्यार, पंचम जोत जगांयदा। पंचम देवे सच भण्डार, आत्म ताल भरांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठार, साचा नाम विच टिकांयदा। खण्डा फड़े वारो वार, चारों कुन्ट भवांयदा। शब्द चढ़े शब्द जैकार, एकँकार सेवा लांयदा। साचा कर जगत विहार, आपे वेख वखांयदा। अन्तिम जोती कर उज्यार, आपे डगमगांयदा। आपे ढहि प्या दुआर, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। पहलों बन्नी आपणी धार, दो धार रखांयदा। बंस सरबंस साचा वर, दर आपणा बेड़ा आप डुबांयदा। साचा बेड़ा कर त्यार, गुरमुख आप चढ़ांयदा। सेवक सेवा करे अपार, दिवस रैण सेव कमांयदा। वेखे राह मीत मुरार, पुरख अकाला इक्क मनांयदा। सूलां सथ्थर सेजा सुत्ता पैर पसार, आप आपणा दुःख गवांयदा। शब्द सुनेहड़ा देवे वारो वार, ना कोई संग रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, दो जहानां वेख वखांयदा। गुर गोबिन्द तेरा भण्डार, सिँघ रूप आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, दर साचे पूर करांयदा। गुर गोबिन्द सिँघ, सिँघ एका नाउँ धराया। काल काली पर्बत हिंग, हिंग लाज आप हो जाया। तेरे नाम मृदंगे किंगरे किंगरे वज्जे मृदंग, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। लेखे लग्गे साची बिन्द, पूत सपूता लेखे लाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाया। सदा सुहेला इक्क बख्शिंद, एका रूप वटाया। मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता चिखा दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा देवे शब्द जणाया। शब्द सलाह हरि मलाह, गुर सतिगुर आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, तेरा तेरा लए वड्याईआ। साचे सिक्ख रिहा जगा, जागरत जोत इक्क जगाईआ। गुरसिख तेरा सोहे खेड़ा नगर ग्रां, सम्बल नगरी नाउँ रखाईआ। गोबिन्द शब्द दए जणा, आप आपणा मृदंग वजाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे मलाह, हरि आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कथा आपे रिहा सुणाईआ। सतिगुर पूरा गुर गोबिन्द, पारब्रह्म समांयदा। कवण नाम गुणी गहिंद, कवण रूप वटांयदा। कवण मेटे सगली चिन्द, कवण अंक समांयदा। कवण लाए सृष्टी निन्द, कवण मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आवना, हरि साचे शब्द जणाईआ। निहकलंका नाउँ रखावना, जोती नूर करे रुशनाईआ। तेरा डंक शब्द वजावणा, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। सम्बल नगरी डेरा लावणा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। मन्दिर मस्जिद उच्चे डूँघी कन्दर किसे हथ्थ ना आवणा, अठसठ तीर्थ फोल फुलाईआ। गुर गुरमुख विरले लोकमात पावणा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। तेरा घाटा पूर करावणा, जो सरसे गया रुढ़ाईआ। कलिजुग नींह आप उखड़ावणा, छोटे बालां भेट चढ़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा मूल चुकावणा, सिँघ फतिह

डंका लाईआ। राज राजाना शाह सुल्तानां ना किसे ज़ोर लगावना, ज़ोरावर नीआं हेठ दबाईआ। गुर तेग बहादर तेरी निशानी नौ दुआर दर दरबार सुहावणा, सृष्ट सबाई लए जगाईआ। गुर गोबिन्द नीली धारों नीला घोड़ा पार करावणा, शब्दी शब्द करे चढ़ाईआ। अनहद नगारा इक्क वजावणा, पुरी अनन्द परमानंद अख्वाईआ। पंचम मीता पंचम संग रलावणा, पंचम शब्द धुन एका रिहा सुणाईआ। सम्बल नगरी वेस वटावणा, सच सिँघासण आसण लाईआ। वीह सौ बिक्रमी खेल खिलावणा, पंज तत्त गुरु ना कोई अख्वाईआ। गुरू ग्रन्थ इष्ट इक्क मनावणा, एका बूझ बुझाईआ। अकाल पुरख लोकमात अन्तिम फेरा पावणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। ब्रह्मा शिव मेट मिटावना, सुरपति राजा इन्द हिलाईआ । धू्र प्रहलाद लेख चुकावणा, कलिजुग अन्तिम वजे वधाईआ। धरत मात दर भार मिटावणा, जूठ झूठ रही दबाईआ। धर्म राए दर लेखा पूर करावणा, जिउँ जनका रिहा जणाईआ। चित्रगुप्त दर वेख वखावणा, आप आपणा रहे ना राईआ। लाड़ी मौत सगन मनावणा, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगाईआ। कलिजुग कूड़ा खेल मिटावणा, कूड़ी धार चलाईआ। भूषन बस्त्र इक्क सुहावणा, माया ममता नाल रलाईआ। जगत दूशन आपे लावणा, दूती दुष्ट आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वीह सद बिक्रमी जोती उजाली, हरि साचे नूर कराया। आपणे मन्दिर आपे भाली, आपे वेख वखाया। सतिजुग साचे चढ़े लाली, कलिजुग अन्धेर मिटाया। चारों कुन्टां करे खाली, लोआं पुरीआं फेरा पाया। प्रगट होया साचा माली, धुर दा लेखा रिहा जणाया। वरनां बरनां बणया हाली, साचा हल चलाया। निरगुण जोती इक्क अकाली, अकल कला अख्वाया। हक्क खुदाए हक्क हलाली, हक्क हकीकत मेल मिलाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका डंक वजाया। वीह सद पन्दरां हरि हरि डंक, जोती शब्द वजांयदा । प्रगट होया वासी पुरी घनक, आपणी कल रखांयदा। सृष्ट सबाई लाए तनक, त्रै त्रै लोकां डेरा डांहयदा। चौथे पद सन्त सुहेले साचे जनक, आप आपणा मेल मिलांयदा। पंचम मीता खेले खेल बार अनक, अनक कला अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छे सत्त अठ्ठ नौं, लक्ख चुरासी अन्दर मन्दिर रिहा सौं, दिस किसे ना आंयदा। दस्म दुआरी हरि करतारा, वीह दस वेख वखांयदा। आप आपणा कर प्यारा, गुरसिख साचे आप जगांयदा। देवे दरस दर दुआरा, घर घर अलख जगांयदा। वीह सौ ग्यारां, हो न्यारां आपणा थान सुहांयदा । साढे तिन्न हथ्थ बुरज मुनारा, कलिजुग नींह रखांयदा। सतारां हाढ़ी खेल अपारा, आपणा बंधन पांयदा। वीह सद बारां कर पसारा, नौ दुआर वेख वखांयदा। हाढ़ सतारां हो उज्यारा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। वीह सद तेरां वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा।

राज राजाना पाए घेरा, साधां सन्तां आप हिलांयदा। चौदां चौदां हट्ट पसारा, चौदां लोका आप खलांयदा। गुरमुख साचे कर उज्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका इक्की बन्ने धारा, गोबिन्द सिक्खी आप तरांयदा। वालों निक्की धारों तिक्खी वेखे विच संसारा, आप आपणी अक्ख खुल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद चौदां चौदां लोक इक्क सुणाए शब्द सलोक, एका नाअरा लांयदा। शब्द नाअरा सच जैकारा, हरि हरि आप लगांयदा। आपे होए वड भण्डारा, आपणा आपे आप वरतांयदा। आपणा देवणहार सहारा, आपणा लड़ फड़ांयदा। आपे करे पार किनारा, मंझ धार आप रुढ़ांयदा। वीह सद पन्दरां खेल न्यारा, तीर्थ तट्टां फेरा पांयदा। साधां सन्तां वेखे काया मन्दिर दुआरा, कवण दुआरे आसण लांयदा। कवण सुत्ता पैर पसारा, कवण जाग खुल्लांयदा। कवण गुरसिख करे प्यारा, कवण मुख भुवांयदा। कवण गीत सुहागी गाए एका नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, अठसठ तीर्थ वेख वखांयदा। अठसठ तीर्थ जल जल धार, हरि साचा वेख वखाईआ। तट किनारा आर पार, मँझधार बेपरवाहीआ। समुंद सागर पाए सार, धरत धवल वेख वखांयदा। काया गागर हो उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द शब्दी कर विचार, शब्द शब्दी बूझ बुझाईआ। शब्द गुर मीत मुरार, गुर नानक आप समझाईआ। सृष्ट सबाई होए ख्वार, गुर गोबिन्द मूल मुकाईआ। प्रगट होए आप करतार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, शब्द शब्दी आप चलाईआ। पन्दरां पन्दरां मारे मार, पंज दस वेख वखाईआ। पंज दस होए पनहार, सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद सोलां वेख वखाईआ। वीह सद सोलां रंग करतारा, गुरमुखां आप चढ़ांयदा। नाम बन्ने सीस दस्तारा, साचा सगन मनांयदा। सुहाए बंक बंक दआरा, बंक दुआरी वेख वखांयदा। मंगल गाया वारो वारा, एका मेल मिलांयदा। जूठा झूठा नाता छुट्टे सर्ब संसारा, साचा संग निभांयदा। लक्ख चुरासी उतरे पारा, जो जन दर्शन पांयदा। छब्बी पोह सच दिहाड़ा, आपे लिखे लेखे आपे खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचे हरि हरि मेला, हरि हरि आप करांयदा। गुरू गुर गुरू गुर चेला, गुर चेला नाउँ धरांयदा। आपे साजन सज्जण सुहेला, घर साचे डेरा लांयदा। आपे कट्टे धर्म राए दी जेला, आप आपणे लेखा लांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला, वेद कतेब ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा चोज करांयदा। हरि सज्जण हरि चोजी चोज, आपणा आप कराईआ। गुरमुख विरला खोजी खोज, गुर

गोबिन्द संग गया बणाईआ। अन्दर मन्दिर वेखे लग्गी मौज, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पूरी आस कराईआ। गुरसिख तेरी पूरन आस, सतिगुर पूरा आप करांयदा। सरसे कलिजुग लग्गी प्यास, गुरसिख भेट चढ़ांयदा। गुरसिख ना होए कदे निरास, हरि शब्द सेव कमांयदा। सदा सुहेला वसे पास, जल धारा ना कोई रुढ़ांयदा। आत्म शब्दी करया वास, लोकमात मेल मिलांयदा। गुरसिखां करे बन्द खुलास, इक्की कुलां नाल तरांयदा। निज आत्म निज घर रक्खे वास, ना कोई बाहर कढांयदा। हरिसंगत तेरा दासी दास, हरि साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां वेख वखांयदा। सम्मत सोलां गुरसिख जागे, हरि साचा आप जगांयदा। धुर मस्तक भाग वड वड भागे, वड भागी वेख वखांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ कागे, माणक मोती नाम चोग चुगांयदा। अन्तर आत्म उपजे इक्क वैरागे, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। हरि सरनाई जो जन लागे, नानक गोबिन्द दरस दिखांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघे, आपणे दरस सरोवर आप नुहांयदा। जगत विकारा बुझे आगे, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पांयदा। आपणे हथ्थ सृष्ट सबाई पुरख अबिनाशी रक्खी वागे, जुग जुग आप भुवांयदा। गुरमुख नारी मिल्या कन्त सुहागे, छब्बी पोह दिवस सुहांयदा। हथ्थीं बन्हे नाम तागे, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। हरिसंगत बणाई भैण भाई सतिगुर पूरा बणया पिता माते, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत मिटे अन्धेरी राते, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। गुरसिख नारी पुरष पुरष नार किसे वल ना झाके, प्रभ साचा दए सजाईआ। पूरन करन आया भविख्त वाके, जो गोबिन्द गया लिखाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाकी पाके, एका नाम ख़ुदाईआ। चढ़के आया साचे राके, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। लोआं पुरीआं नौ खण्ड सत्त दीप फिर सर्ब इलाके, ना कोई रोके रोक रुकाईआ। अग्गे दिसे ना कोई आके, साचा खण्डा हथ्थ उठाईआ। सम्मत सोलां सोलां कलीआं आसण पाया पहली चढ़या मार पलाके, चरन रकाब आप टिकाईआ। आपणी चाल रक्खे बांके, दो जहानां वेख वखाईआ। गुरसिखां काया अन्दर मन्दिर बहि बहि झाके, दिवस रैण वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पर्दा ढाके, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां लेखे लग्गे घर, नौ दुआरे चुकाए डर, दसवें मेला मेल मिलाईआ। मिल्या मेल हरि भगवान, आपणी दया कमाईआ। गुरसिख तेरा धर्म निशान, सतिगुर पूरा दए झुलाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, नौआं सत्तां कर रुशनाईआ। सत्त रंग कर प्रधान, साढे तिन्न हथ्थ सीं रखाईआ। चवी हथ्थ उच्च निशान, चवीआं अवतार रिहा चढ़ाईआ। भरम भुल्ले ना कोई जीव निधान, प्रगट होया साचा माहीआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद सारे गाण,

८८

०८

वेद व्यासा लेख लिखाईआ। नानक गोबिन्द लेखा कर परवान, लोकमात आया वाहो दाहीआ। सतिजुग खोल्हे सच दुकान, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। ऊँच नीच सर्ब मिट जाण, हरि साचा मेट मिटाईआ। इक्क सुहाए भूमका अस्थान, एका राम ख़ुदाईआ। एका अक्खर सारे गान, वाहिगुरू वाह वाह गुर वड्याईआ। नाम मन्त्र शब्द प्रधान, लक्ख चुरासी दए सुणाईआ। सांतक सति सर्ब ज्ञान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सर सरोवर अमृत पीण खाण, निजानंद आप दरसाईआ। काया मन्दिर सच मकान, घर घर विच दए दिखाईआ। अनहद धुन सच्ची धुनकान, साचा राग अल्हाईआ। पंचम मीता हो मेहरवान, पंचम सखीआं लए मिलाईआ। देवे दरस श्री भगवान, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। गुरसिख गुरसिख आपणा पर्दा आपे लाहण, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। सोहँ ढोला सतिगुर नानक तेरा बोला सारे गाण, लोकमात वज्जे वधाईआ। काया बदलया हरि हरि चोला, पर्दा उहला ना कोई रखाईआ। पन्दरां साल बणया रिहा भाला भोला, आप आपणा मुख लोकाईआ। सम्मत सोलां साल सोलवें बणया तोला, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। आदि अन्त कदे ना डोला, सृष्ट सबाई रिहा डुलाईआ। खेलण आया कलिजुग होला, लक्ख चुरासी रंग चढ़ाईआ। देवणहारा शब्द झकोला, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। जूठया झूठया कढ्ढे पोला, बांहों फड़ उठाईआ। भेख पखण्डा प्या रौला, प्रभ साचा करे सफाईआ। आपणा बदलया आपे चोला, रूप अनूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणी लए उभार, सृष्ट सबाई पाए सार, नौ खण्ड पृथ्मी एका धार, एका वेख वखाईआ। सम्मत सोलां हरि हरि साचा, सच सच वरताया। जीउ पिण्ड तन वेखे काचा, लक्ख चुरासी डेरा ढाहया। नौ दुआरे मनमुख नाचा, मन का मणका ना कोई भवाया। नानक शब्द ना हिरदे वाचा, हरि का रूप दिस ना आया। अग्नी अग्ग लाए तमाचा, तन ख़ाकी ख़ाक मिलाया। क्रोध हँकार दर दुआरे नाचा, ना कोई मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया। हरिसंगत हरिजन हरि देवणहारा साचा वर, जुग जुग दया कमाया। जगत भण्डारे आपे भर, नाम भण्डारी वेख वखाया। लेखे लाए जो आए दर, शब्द गहिणा तन पहनाया। गुरमुखां अन्दर जाए वड़, औदां जांदा दिस ना आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, सृष्ट सबाई नाल रिहा लड़, हथ्थ खण्डा ना कोई उठाया। जगत विद्या ना कोई गया पढ़, आदि जुगादी एका शब्द रिहा चलाया। अग्नी हवन ना गया सड़, सृष्ट सबाई अग्न जलाया। गुरसिखां गुरमुखां दरस दिखाए दया कमाए घर घर, राती सुत्तयां आप उठाया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, सागर नदी नाले दरया पार कर, आप आपणा पन्ध मुकाया।

अन्दरे अन्दर जाए चढ़, दस्म दुआरी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत साची कर प्रधान, परमानंद आप समाया।

✪ २८ पोह २०१५ बिक्रमी जसबीर सिँघ दे घर पिण्ड भोलेके ज़िला गुरदास पुर ✪

हरि जोत हरि प्रकाश, हरि हरि आप कराईआ। हरि पुरख इक्क अबिनाश, एकँकारा नाउँ धराईआ। हर घट अन्दर रक्खणहारा वास, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरि मण्डल मण्डप पावे रास, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। हरि पृथ्मी हरि आकाश, गगन मण्डल हरि सुहाईआ। हरि पवण हरि स्वास, हरि शब्दी शब्द चलाईआ। हरि सेवक हरि दासी दास, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। हरि पूरन करनहारा आस, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरि वेखणहारा इक्क तमाश, जुग करता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोत नूर रुशनाईआ । हरि जोत हरि पुरख अकाल, एका रंग समाया। हरि सतिगुर हरि दीन दयाल, हरि गुरू गुर वेस वटाया। हरि नाम धन सच्चा धन माल, हरि खज़ाना इक्क भराया। हरि हरि मन्दिर हरि हरि गुरू दुआर, हरि धर्मसाल, थिर घर साचा हरि सुहाया। हरि दीपक हरि हरि जोती हरि जोत देवे बाल, हरि निरगुण डगमगाया। हरि अमृत हरि सुहाए ताल, हरि साचे आप भराया। हरी हरि करन आया सर्ब प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ धराया। आपे शाह आपे कंगाल, आपे लेखा मंग मंगाया। आपे बणया जगत दलाल, जगत विचोला नाम धराया । आपे चले अवल्लड़ी चाल, हरि हरि भेव किसे ना पाया। हरिजन तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाया। हरि हरि वेखे अनमुल्लड़े लाल, हरि सज्जण मेल मिलाया। हरि आप आपणे लए भाल, सन्त सुहेले अंग लगाया। हरि मारनहारा सच उछाल, माणक मोती बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती खेल खिलाया। हरि जोत अनभव प्रकाश, हरि साचे वड वड्याईआ। आदि अन्त ना जाए विनास, जुग जुग खेल खिलाया। आपे पावणहारा रास, आपे वेख वखाईआ। आप उपाए बरख दिवस मास, घड़ी पल आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि आपणा खेल खिलाईआ। हरि साचा खेल खिलंदड़ा, आदिन अन्ता एका एकँकार। हरि आपणा भेख वटंदड़ा, निरगुण जोती कर उज्यार। हरि साचा शब्द चलंदड़ा, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। हरि साचा धाम सुहंदड़ा, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। हरि साचा सच सिँघासण आप वखंदड़ा, शाहो भूप सच्ची सरकार। हरि साचा हुक्म चलंदड़ा, शब्द शब्दी सेवादार। हरि साचा दर खुलंदड़ा, एका दो पुरख करतार। हरि

दाता गुणी गहिंदड़ा, गुणवन्ता बेशुमार। हरि दाता सद बख्शिंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख खेल कर, जोती जोत करे उज्यार। हरि जोत उजाल बैठी जग अन्दर, आदि जुगादि समाईआ। आपे वसे साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर, नौ दर आपे रिहा खुल्हाईआ। आपे धूंआँधार अन्धेरी कन्दर, सुन्न समाध आप हो जाईआ। आपे चेतन आपे अन्धड़, आपे बैठा सथ्थर वछाईआ। आपे वासना आपे गन्दड़, आपे रिहा महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेख घर, हरि साची खेल खिलाईआ। हरि साचा प्रभ एक है, एका रूप समाए। हरि साचा साची एक है, सतिगुर नाम धराए। हरि साचा बुध बिबेक है, मूर्ख आप हो जाए। हरि साचा लिखे लेख है, लेखा लिखणहार आप हो जाए। हरि साचा नर नरेश है, निरगुण भूप नाम धराए। हरि साचा हर घट रिहा वेख है, आप आपणा मुख छुपाए। हरि साचा ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस है, पंज तत्त ना कोई जाए। हरि साचा दर दरवेश है, अलख अलखणा अलख जगाए। हरि साचा अगम्मड़ा वेस है, धाम अगम्मड़े डेरा लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकार, आदि जुगादी कर प्यार, हरि जोत करे रुशनाए। हरि जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि डगमगाईआ। हरि हरि खेले खेल निराला, लेखा लिख्त ना कोई लिखाईआ। हरि हरि चले अवल्लड़ी चाला, हरिजन संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया आपणे नगर नगर सुहञ्जणा, जगे जोत आदि निरँजणा, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण नूर साचा हरि, एका जोत जगांयदा। ना जम्मे ना जाए मर, मात गर्भ ना कोई टिकांयदा। ना कोई गोत ना कोई वरन, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। ना कोई धरनी ना कोई धरन, धरत धवल ना कोई जणांयदा। ना कोई सरनी ना कोई सरन, ना कोई सीस झुकांयदा। ना कोई हरनी ना कोई फरनी ना कोई खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण ना कोई खुल्हांयदा। आपणी करनी करता आपे करन, करनहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण एका वेस वटांयदा। निरगुण रूप हरि हरि दाता, समरथ पुरख अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, जुग जुग आप चलांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही फेरा पांयदा। आपे जाणे पूजा पाठा, आपे नाम दृढ़ांयदा। आपे मारे सरोवर ठाठा, अमृत जल आप भरांयदा। आपे तीर्थ होए अठ्ठ साठा, आपे दुरमति मैल मिटांयदा। आपे दो जहाना फिरे नाठा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। आपे लक्ख चुरासी आए आन बाटा, आपे दस दस वेख वखांयदा। आपे बैठा चौदां हाटा, चौदां तबकां डेरा लांयदा। आपे खेले खेल नटूआ नाटा, सवागी स्वांग रचांयदा। आपे आदि शक्ति जोत लिलाटा, आपे नूरो नूर उपांयदा। आपे ब्रह्मण्डां खण्डां कट्टे वाटा, आपे आपणा पन्ध मुकांयदा। आपे आपणा पूरन करनहारा

९०
०८

घाटा, आपणे कंडे आप तुलांयदा। आपे जागरत जोत आप आपणा आपे जाता, जोती जोत आप जगांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथा, आप आपणा कर्म कमांयदा। आपे बणे सगला साथा, सगला संग निभांयदा। आपे लहिण देणा चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, सच महल्ला उच्च मिनार। इक्क अकल्ला कर पसार, एका एकँकारा जोती धार जोती नूर रखांयदा। जोती नूर बेपरवाह, पारब्रह्म अख्वांयदा। आपे जाणे सिफ्त सलाह, आपे हुक्म चलांयदा। आपे बणे जगत मलाह, आपे चप्पू लांयदा । आपे बेड़े दए चढ़ा, आपे पार करांयदा। आपे नेत्र नाम दए दृढ़ा, हरि आपणी जेहवा आप हिलांयदा। आपे आपणी विद्या लए पढ़ा, आप आपणी दया कमांयदा। आप आपणे पौड़े लए चढ़ा, साचा पौड़ा इक्क वखांयदा। आपे कौड़े मिट्ठे लए बणा, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे वसाए अनडिठे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। आपे पिता आपे माँ, लक्ख चुरासी आपणी गोद उठांयदा। आपे पकड़नहारा बांह, आपे सतिगुर नाउँ उपांयदा। आपे देवणहार ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे हँस बणाए काँ, आपे मोती चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, दर दरवाजा इक्क सुहांयदा। निरगुण तेरा सच दरवाजा, साची बणत बणाईआ। एका वस्सया ग़रीब निवाजा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। एका रचया आपणा काजा, एका वेख वखाईआ। एका रक्खणहारा लाजा, एका नाम ख़ुदाईआ। इक्क वजाए साचा वाजा, अनहद नाउँ धराईआ। एका चढ़या अस्व ताजा, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। आप चलाए सच जहाजा, जुग जुग बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, हरि मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। हरि मन्दिर हरि बणत बणा, आपणा दर सुहाईआ। आपणी गणत आप गणा, आपे लेखा रिहा चुकाईआ। आपणे अंग आप करा, आपे लए उपजाईआ। आपणी बणत आप बणा, आपे पूज पुजाईआ। आपणी वंड आप वंडा, आपे रक्खे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता एकँकार, अकाल मूर्त भेव न्यार, पवण रहित वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित पुरख अकाला, एका रूप समांयदा। आपे काल आपे महांकाला, आपे आपणी रचन रचांयदा। आपे दीन आपे दयाला, आपे दोए सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा एका घर, सच महल्ला उच्च अटला एका एक सुहांयदा। सच महल्ला उच्च अटल मिनार, हरि साचा आप उपाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण बाती कर उज्यार, कमलापाती आप कराईआ। ना कोई ताकी ना किवाड़, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। ना कोई दिसे चार दिवार, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। अकाल मूर्त भेव न्यार, अनभव प्रकाश वखाईआ।

जोती जोत जगे अपार, अलख अगोचर अगम्म वड वड्याईआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई सईआं मंगल गाईआ। ना कोई शब्द धुनी धुन्कार, धुन अनाद ना कोए सुणाईआ। इक्क अकल्ला एका धार, एका रिहा चलाईआ। जलां थलां रिहा पसार, आप आपणा विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका रंग रंगाईआ। हरि भगवन्ता हरि हरि मीत, एका नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी आपणी रीत, आपे आप चलांयदा। बैठा रहे इक्क अतीत, ममता मोह ना कोई रखांयदा। ना ठंडा होए सीत, अग्नी तत्त ना कोई रखांयदा। ना कोई हस्त ना कोई कीट, एका रूप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरी हरि हरि आप अख्वांयदा। हरी हरि हरि नरायण, एका जोत जगाईआ। एका बैन एका नैन, एका सैन अख्वाईआ। एका बस्त्र एका बैन, एका तन छुहाईआ। एका चुकाए लहिण देण, एका एक वड्डी वड्याईआ। एका एक आदि जुगादी सारे कहिण, अकल कला इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि रंग हरि रतड़ा, हरि मेला बेपरवाहीआ। हरि रंग हरि चलूल, हरि आपणा आप रंगांयदा। आपे नारी आपे कन्त कन्तूहल, आपे आपणी सेज हंढांयदा। सच सिँघासण ना कोई पावा ना कोई चूल, थिर घर साचे आपे डांहयदा। निरगुण शब्द हुलारे रिहा झूल, सच हुलारा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुते प्रकाश आप करांयदा। सुते प्रकाश हरि हरि होया, आपणी धार बंधाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे कोआ, ना कोई लेख लिखाईआ। ना मरया ना जम्मया मोआ, मात गर्भ ना कोई टिकाईआ। आलस निन्दरा विच ना सोया, ना कोई खाट हेठ रखाईआ। आदि जुगादी नवां नरोआ, एका एक अख्वाईआ। आप ल्याए आपणा ढोआ, दर आपणे सोभा पाईआ। एका अमृत आपे चोआ, आपे मुख भराईआ। आपे करे आपणी लोआ, आप आपणा अन्धेर गंवाईआ। आप आपणा बीज आपे बोया, आपणी गोदी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साचे वड वड्याईआ। हरि वड्डा सच्यार, एका नूर अकालया। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव निरालया। आदि जुगादी बन्ने धार, करे कराए सच्ची प्रितपालया। एका एक हो उज्यार, एका आपणा मार्ग ला ल्या। शब्दी शब्द अपर अपार, एका सुत्त रखा ल्या। सच शब्द सच्ची सरकार, घर साचे आप जणा ल्या। ठांडा वेख इक्क दरबार, सांतक सति करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण मेला ना कोई गुरु ना कोई चेला, ना कोई वेख वखा रिहा। आपे गुरू आपे चेला, आपणी बणत बणांयदा। आपे सज्जण आपे सुहेला, आपे मेल मिलांयदा। आपे वस्सया सदा अकेला, आपे आपणे रंग रंगांयदा। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोई रखांयदा। अचरज खेल

पारब्रह्म कल खेला, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगा जुगन्ता वेख वखांयदा। आदिन अन्ता एका काहन, एका रूप समाईआ। एका वेखे मार ध्यान, एका नैण उठाईआ। एका करनहार पछान, भुल्ल रहे ना राईआ। एका देवणहारा दान, जीआ दान झोली पाईआ। एका निरगुण सच मकान, थिर घर साचा आसण लाईआ। एका तख्त इक्क सुल्तान, शाहो भूप इक्क हो जाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमान, एका रिहा सुणाईआ। एका जोद्धा सूरबीर बली बलवान, एका डंक वजाईआ। एका एक इक्क राजान, एका रईयत विच समाईआ। एका तीर इक्क कमान, एका चिल्ला रिहा चढ़ाईआ। एका घर इक्क मकान, चौदां हट्टां इक्क वखाईआ। एका नेत्र इक्क ज्ञान, एका शब्द पढ़ाईआ। एका रवि ससि उपाए कोटन भान, कोटी कोटि करे रुशनाईआ। एका होया जाणी जाण, एका एक वड्डी वड्याईआ। एका लेखा लिखे महान, लिखणहार भुल्ल ना राईआ। निरगुण जोत श्री भगवान, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी मंग मंगाईआ। आपणी मंग आपे मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपणा लाया आपे रंग, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। आपणा दरवाजा आपे लँघ, आपे मेल मिलाईआ। आप आपणे चढ़या पलँघ, आप आपणी सेज सुहाईआ। आप वजाया आपणा मृदंग, आपे रिहा सुणाईआ। आपे दाता दानी सूर सरबंग, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। आपे धार वहाए अमृत गंग, सर सरोवर आप उपाईआ। आपे भुक्ख आपे नंग, आपे राज जोग समाईआ। आपे होया परमानंद, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे वसणहारा बन्द बन्द, आप आपणी ख़ुशी कराईआ। आपे सूरज आपे चन्द, आपे करे रुशनाईआ। आपे दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता एका एक अख्वाईआ। हरि वेला हरि जाणया, आदि अन्त उज्यार। प्रभ आपणा आप पछाणया, आपे वेखे करे विचार। आपे चले आपणे भाणया, भाणा भावी दर दुआर। रंग आपणा आपे माणया, घर साचे कर प्यार। आपे होया बाल अञ्याणया, आपे आपणा दए सहार। आपे देवणहारा माणया, आप आपणा चुक्के भार। आपे गाए आपणा गाणया, सुणाए धुन अपर अपार। आपे पवण पाणी पवण मसाणया, आपे होया धूंआँधार। आपे अन्ध अन्धेर वखाणया, आपे बैठा विच उज्यार। आपे पीणा आपे खाणया, आपे भरनहार भण्डार। आपे अन्न आपे दाणया, आपे देवणहार सहार। आदि पुरख आप अख्वानया, हरि साचा मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, घर साचे इक्क प्यार। सच प्यारा हरि दुआरा, हरि हरि जोत जगांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आपे वेख वखांयदा। आदि जुगादी एकँकारा, एका किरत कमांयदा। शब्द ब्रह्मादी खेल न्यारा,

ब्रह्म ब्रह्मण्ड टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। हरि निरँकार वेस अवल्ला, आपणा आप कराईआ। आपणे दर आपे खला, आपे वेख वखाईआ। नेहचल धाम वेखे उच्च अटला, आपे ल्या उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई पुरख समरथ, सर्ब कला भरपूरया। हरि का मन्दिर ना जाए ढठ्ठ, ना दूर ना नेड़या। इट्ट गारा ना लाई काठ, खेले खेल हाजर हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी देवे वर, जुग जुग लोकमात खेल अपारा, हरि हरि आप करांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतार, सतिगुर रूप दरसांयदा। जोती जोत जोत उज्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण भरे शब्द भण्डारा, निरगुण आप वरतांयदा। सरगुण चोला कर प्यारा, आप आपणा विच छुपांयदा। सरगुण रसना बोल जैकारा, निरगुण शब्द सुणांयदा। सरगुण तेरा नौ दुआरा, निरगुण नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता हरि करनेहारा करनहार अख्वांयदा। निरगुण सरगुण बन्ने धार, साख्यात रूप वटाया। शब्द डंक अपर अपार, लोकमात वजाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर कर त्यार, आप आपणी सेवा लाया। त्रैगुण माया तेरा सच विहार, पंज तत्त नाल रलाया। निरगुण निरगुण आपणी धार, मन मति बुध दए दरसाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेल मिलाया। हउमे हँगता गढ़ त्यार, रक्त बूंद आप मिटाया। घर विच घर हरि उसार, आप आपणा आसण लाया। आपे करे बन्द किवाड़, ना कोई खोल्हे खोल्ह खुल्हाया। दस्म दुआरी बैठा जन्दर मार, बजर कपाटी अग्गे डाहया। करे वसेरा बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ हाडी जोड़ जुड़ाया। आपणा घड़न आपे घाड़, घड़णहार वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करता निरगुण सरगुण वेख वखाया। निरगुण सरगुण साचा मीता, साची बणत बणाईआ। आप चलाए आपणी रीता, आप आपणी वंड वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि आपे जीता, आप आपणा नाउँ चलाईआ। हँ ब्रह्म आप अनडीठा, सोहँ रूप आप हो जाईआ। गुर इष्ट देव आपे नीकन नीका, सर्ब सृष्ट रिहा समाईआ। आपे भेव जाणे जीव जीअ का, हर घट वेखे बेपरवाहीआ। आपे राम नाम किया मीठा, आपे करे पढ़ाईआ। आपे मेला सुरत सुवाणी साची सीता, साचे दर मिलाईआ। आपे काहन कृष्न चलाई रीता, सखीआं मंगल मेल मिलाईआ। आपे कलिजुग वस्सया चीता, आप आपणी धार बंधाईआ। आप उपाए मन्दिर मसीता, आप आपणी चलत चलाईआ। ईसा मूसा आपे जीता, संग महंमद चार यार करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग निरगुण सरगुण विच समाईआ। निरगुण सरगुण एका धार, एका रंग रंगाया। नानक नाम हो उज्यार, लोकमात

६४ ०८

फेरा पाया। मिल्या मेल सच दरबार, विछड़ कदे ना जाया। आप सुहाए बंक दुआर, साचे मन्दिर डेरा लाया। एका शब्द सच्ची धुन्कार, एका राग अलाया। मिल्या मीत हरि निरँकार, साचा दर सुहाया। वज्जी वधाई अपर अपार, मंगलाचार गाया। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हरि हरि आप हो जाया। एका ब्रह्म हो उज्यार, पारब्रह्म मात अख्वाया। नन्ना निरगुण एका कार, एका रिहा जणाया। नर नरायण पावे सार, महल्ल अटल डेरा लाया। कलिजुग करे पार, आप आपणा रंग रंगाया। मुक्ता स्सयारी औंकड़ तेरी धार, एका नानक नाम रखाया। एका जोती हो उज्यार, दस दस वेस वटाया। काया नाता तोड़ संसार, जोती जोत जगाया। साचा गुरू कर त्यार, एका शब्द धराया। पंचम लाए सच आवाज़, साची नींह रखाया। आपे सुत्ता पैर पसार, दिस किसे ना आया। खेले खेल अगम्म अपार, कलिजुग अन्तिम डेरा ढाहया। प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ आप बणाया। ना कोई दिसे ठग्ग चोर यार, काम क्रोध मोह ना कोई हल्काया। साचा मन्दिर कर त्यार, हरि साचा वेख वखाया। हरि मन्दिर तेरा खेल अपार, हरि जू आपे मेल मिलाया। आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। सतिगुर पूरा पुरख करतार, करता पुरख नाउँ रखाया। अकाल मूर्त भेव न्यार, वेद कतेब ना किसे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित्त जन भगतां वेस वटाया। भगतन मीता एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। आदि जुगादि पावे सार, जुग जुग नाउँ रखांयदा। मेटणहारा कूड़ पसार, साचा मार्ग लांयदा। कलिजुग वेखे धूंआँधार, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। जीव जन्त आप आपणा गए हार, ना कोई धीर धरांयदा। पिता पूत ना कोई प्यार, भैण भाई ना कोई अख्वांयदा। जति सति छुट्टा संसार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाए करांयदा। मिल्या मेल ना मीत मुरार, मन्दिर मसीत गुरदुआर ना कोई जणांयदा। गा गा राग गए हार, अनहद राग ना कोई अलांयदा। रसना ला ला थक्के स्वाद, आत्म रस ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा वेख पसारा, हरि हरि जोत जगाईआ। राजा राणा ना कोई सिक्दारा, साची सिख्या ना कोई सिखाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद होए विभचारा, नार वेसवा रहे हंढाईआ। संख बांग धुन ना कोई जैकारा, पुरख अकाल ना कोई मनाईआ। माया ममता भुल्ला सर्ब संसारा, नानक सिख्या हथ्थ ना आईआ। गुर गोबिन्द जैकार ना करया कोई प्यारा, पंज कक्के ना कोई समाईआ। मुस्लिम सुन्नी ऐनलहक्क ना लाया नाअरा, मुकामे हक्क ना मेला ख़ुदाईआ। पंडत पांधे गए हारा, जूठा झूठा तिलक लगाईआ। कोई ना खोल्हे बन्द किवाड़ा, राम कृष्न ना कोई मिलाईआ। नाता तुट्टा संग मुहम्मद चार यारा, उम्मत नबी रसूल रही

कुरलाईआ। हक्क हकीकत पावे सारा, बेऐब परवरदिगार वड्डी वड्याईआ। गुर गोबिन्द तेरा सच ना दिसे कोई दुलारा, नाम खण्डा जो चमकाईआ। भेख पखण्डा सर्ब संसारा, निरगुण नूर दिस ना आईआ। राम दास तेरा अमृत भण्डारा, कलिजुग जीव ना मुख चुआईआ। धीआं भैणां करन प्यारा, हरि मन्दिर फेरा पाईआ। नानक निरगुण वेखणहारा, भुल्ल रहे ना राईआ। आदि जुगादी कर पसारा, जुग जुग धार बंधाईआ। गुर गोबिन्द तेरा सच दुआरा, हरि साचा रिहा समाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड रखाईआ। सृष्ट सबाई मारे वारो वारा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। सत्तां दीपां दए हुलारा, लक्ख चुरासी आप उठाईआ। ब्रह्मा वेता रोवे ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूके दए दुहाईआ। विष्नूं तेरा एका नाअरा, एका दए सुणाईआ। शिव शंकर तेरा खाली करे चुबारा, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। सुरपति राजा इन्द ढहि पए दुआरा, साची भुल्ल ना कोई बख्शाईआ। करोड़ तेतीसा हाहाकारा, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ सहारा, चारों कुन्ट डंक वजाईआ। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नानक गोबिन्द गया लिखाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यारा, शब्दी नाउँ रखाईआ। सम्बल नगरी वस्सया धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। गुरसिख वेखे मीत मुरारा, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सिँघ जसबीर सच दुलारा, प्रभ आपणी गोद उठाईआ। भरया रहे नाम भण्डारा, अतोट अतुट रखाईआ। देवे दरस वारो वारा, दिवस रैण ना कोई जणाईआ। खिड़या रहे काया मन्दिर अन्दर डूँघी गारा, फड़ बांहों आप उठाईआ। पंच विकारा करे ख्वारा, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। काली नीली पार कराए धारा, पीली विच समाईआ। चिट्टी मेला दस्म दुआरा, कंचन विच समाईआ। सूहा वेस अगम्म अपारा, कंचन रंग रंगाईआ। लाल गुलाल दीन दयाला, आप आपणे विच टिकाईआ। लक्खण पुष्कर करोच आप वखाए धर्मसाला, धर्म धर्मी धर्म कमाईआ। सलमल सान होए पारा, कुशा डेरा ढाहीआ। सतिगुर पूरा सदा रखवाला, गुरमुख साचे सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाला, आवण जावण फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि जोत ना कोई वरन ना कोई गोत एका रंग समाईआ।

✪ २६ पोह २०१५ बिक्रमी सोहण सिँघ दे घर पिण्ड भोलेके ज़िला गुरदास पुर ✪

आदि पुरख नाउँ निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेद समाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार, एक एकँकारा इक्क ख़ुदाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर समाईआ। निरगुण निरगुण कर

त्यार, निरगुण निरगुण विच समाईआ। अकाल पुरख एका धार, एका रंग रंगाईआ। अजूनी रहित सर्ब सुख सार, सति सति समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप हो जाईआ। अबिनाशी करता हरि नरायण, एका एकँकारया। आपे जाणे आपणा लहिण देण, आप आपणा संग रखा ल्या। आपे वेखे आपणा आपणे नैण, दूजा नैण ना कोई रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या। अबिनाशी करता हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेख वखाया। जागरत जोत जगे अपार, रूप रंग ना कोई वखाया। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सुल्ताना नाउँ धराया। दाता दानी मेहरवान, आप आपणी झोली आप भराया। आप आपणा होए निगहबान, आप आपणी सेव कमाया। आप आपणा जाणी जाण, जानणहार समरथ पुरख वड्याआ। आपे वस्सया सच मकान, साचा मन्दिर आप सुहाया। उच्च महल्ल अटल दो जहान, ना कोई बाढी बणत बणाया। इक्क अकल्ला बैठ श्री भगवान, आप आपणा दर सुहाया। जोती जगे इक्क महान, अन्ध अन्धेर ना कोई वखाया। सच सिँघासण लाए आसण, पावा चूल ना कोई धराया। मण्डल आपणे पावे रासन, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। वेखणहारा हरि करतारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी लै अवतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। शब्द शब्दी कर उज्यारा, शब्द डंक वजांयदा। लोआं पुरीआं एका नाअरा, एका राग सुणांयदा। देवत सुर करे ख्वारा, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा। लोकमात हो उज्यारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, वेद कतेब ना कोई गिणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण खेल सरगुण धार, हरि हरि जोत जगांयदा। एकँकारा कर आकार, निराकारा साकार रूप अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, भेद अभेदा भेव खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी वस्सया बाहर, घट घट आपे डेरा लांयदा। आप उपाए आपे ल्ए मार, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे शब्द गुर पीर अवतार, आपे आपणा नाउँ धरांयदा। आपे नारी प्रभ कन्त भतार, आपे आपणी सेज हंढांयदा। आपे पंज तत्त नौ दुआर, आपे काया रचन रचांयदा। आपे महल्ल अन्दर महल्ल उसार, आपे मुख छुपांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लांहयदा। आपे वस्सया दस्म दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। आपे अमृत ठंडा ठार, आपे जल वहांयदा। आपे अनहद धुन सच्ची धुन्कार, धुन अनादी आप वजांयदा। आपे सतिगुर मीत मुरार, जुग जुग साचा राह चलांयदा। साची सिख्या इक्क विचार, गुर मती एह समझांयदा। नाम धुन कराए वणज वपार, सच ख़ज़ाना आप भरांयदा। दाता दानी विच संसार, दीनां नाथा दर दवांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार,

सरगुण डगमगांयदा। सरगुण पावे साची सार, निरगुण बूझ बुझांयदा। निरगुण शब्दी डंक अपार, सरगुण मुख सलांहयदा। सच विचोला आप करतार, आपणा मेल मिलांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे कलिजुग सतिजुग त्रेता पाए सार, आपे द्वापर वेख वखांयदा। आपे ढहि ढहि पए दुआर, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे छत्र ताज दए हुलार, आपे तख्त ताज सुहांयदा। आपे राज जोग अपार, आपे ख़ाकी ख़ाक समांयदा। आपे कागी काग होए उडार, आपे आपणी चोग चुगांयदा। आपे पारब्रह्म गुर अवतार, आपे विष्नूं रूप वटांयदा। आपे शंकर दए हुलार, आपे सरन बणांयदा। आपे ब्रह्म कर उज्यार, पारब्रह्म नाउँ रखांयदा। आपे कर्म आपे धर्म आपे जरम, आपे वरन उपांयदा। आपे होया करनी करन, करता कादर नाउँ रखांयदा। आपे निरभउ आपे डरनी डरन, भय भयानक आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता एकँकार, आदि जुगादी कर पसार, जुग जुग आपणी बन्ने धार, भेव कोई ना पांयदा। हरि का भेव हरि अवल्ला, आपणा आप रखाईआ। वस्सया नेहचल धाम अटला, दिस किसे ना आईआ। शब्दी जोती आपे रल्ला, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाईआ। सच सिँघासण साचा मल्ला, जल थल रिहा समाईआ। खेले खेल इक्क अकल्ला, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। आपे पंच विकारा करे हल्ला, आपे शब्द खण्डा चमकाईआ। आपे वसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, उच्चे पर्बत आपे डेरा लाईआ। आपे हरिजन हरिभगत गुरमुख सन्त दुआरे खला, आप आपणा रूप वटाईआ। वेस वटाया हरि निरँकार, एका गुर दरसाया। सतिजुग सति सति कर वरतार, अन्तिम लेख चुकाया। त्रेता बन्नी आपणी धार, त्रै त्रै मेल मिलाया। द्वापर वेखे अद्धविचकार, प्रभ आपणा खेल खिलाया। कलिजुग डिगा मूंह दे भार, जूठ झूठ रिहा कुरलाया। चारों कुन्ट वेख विचार, चार यार संग मुहम्मद नाल रलाया। अल्ला राणी मारे नाअर, हू हू एका नाअरा लाया। नानक सतिगुर कर प्यार, सतिनाम मन्त्र दृढ़ाया। चार वरनां सांझा यार, लोकमात फेरा पाया। ग़रीब निमाणयां पावे सार, ऊँचां नीचां मेल मिलाया। इक्क वखाए धुर दरबार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। राउ रंक करे ख़बरदार, चारों कुन्ट फेरा पाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धार, एका रंग रंगाया। आपे लिखे बण लिखार, सेली टोपी सीस बंधाया। नाउँ गाए निरँकार निरँकार, निरगुण धार इक्क चलाया। सृष्ट सबाई कर उज्यार, एका मार्ग रिहा लगाया। एक जोती दस अवतार, एका रूप समाया। गोबिन्द मंगे बण भिखार, प्रभ अबिनाशी अग्गे झोली डाहया। कलिजुग उतरे कवण किनार, कवण बेड़ा रिहा चलाया। पुरख अकाल जोत आपणी धार, आप आपणा शब्द सुणाया। मरे ना जम्मे आवे वारो वार, जुग जुग वेस वटाया। कलिजुग कूड़ा होए कुड़यार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। ना कोई

नारी ना भतार, विभचार सृष्ट सबाया। माता पूत करे प्यार, आप आपणा कर्म गंवाया। राज राजाना करे ख़बरदार, शाह सुल्तान ना कोई अख्वाया। मन्दिर मस्जिद होए ख्वार, धीआं भैणां रहे तकाया। जूठा झूठा वणज वापार, साधां सन्तां हट्ट खुल्हाया। एका भुल्लया एका एकँकार, आपणा आपे मार्ग लाया। पावणहारा साची सार, आदि जुगादि समाया। अन्तिम प्रगट होए विच संसार, आप आपणा रूप वटाया। मात पित ना कोई प्यार, ना कोई गोद उठाया। ना कोई दाई दाया दिसे दुआर, ना कोई नुहावण नहाया। ना कोई थित ना कोई वार, दिवस मास ना कोई जणाया। नित नवित्त साची कार, जुग करता आप कराया। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। भगतां सन्तां आत्म रही पुकार, दिवस रैण राह तकाया। मनमुख जीव करन हँकार, माया ममता मोह वधाया। काम क्रोध कर प्यार, आसा तृष्ना नाल रलाया। भेख पखण्डा चार दीवार, काया मन्दिर आप टिकाया। मनुआ ठग्ग चोर यार, सृष्ट सबाई वेख वखाया। पावणहार साची सार, आप आपणा लेख लिखाया। हथ्थ शब्द खण्डा दो धार, लोकमात फेरी पाया। साचे अस्व होए अस्वार, लोआं पुरीआं पार कराया। नीला नीली धारों कढ्ढे बाहर, चौथा पौड़ा इक्क उठाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा कर आकार, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाया। धुर दरगाही आया दौड़ हरि निरँकार, आप आपणा तेज दए वधाया। शब्द डंका वजाए इक्क नगार, लक्ख चुरासी दए उठाया। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप भवाया। जेरज अंडां लए उभार, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाया। कलिजुग तेरा वेखे पार कन्ढा, निरगुण निरगुण जोत जगाया। मनमुख जीवां वढ्ढे कंडां, गुरमुख साचे लए तराया। सति रंग निशाना झुलाए नौ खण्ड रखाए एक डण्डा, एका हथ्थ उठाया। तोड़नहार मान अभिमान घमंडा, राज रजान आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ निरँकार आपणा रक्ख, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। शब्दी जोत हो प्रतक्ख, नूरो नूर करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी वेखे भाण्डे सक्ख, पंज तत्त घर घर फेरी पाईआ। सन्त सुहेले करे वक्ख, जो जन रसना रहे गाईआ। जगत अन्यारे जाण भख, मनमति करे पढ़ाईआ। एका राह आपे दस्स, झूठे धन्दे सृष्ट लगाईआ। गुरमुख विरले देवे नाम वथ्थ, आत्म अन्तर झोली भराईआ। जगत जहाना होए सत्थ, धरत मात सथ्थर रही विछाईआ। जगत भण्डारा होए भट्ठ, साचा नाम ना कोई वरताईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ तट्ट, अठसठ मुख छुपाईआ। वेखणहारा मन्दिर मस्जिद गुरदुआर मट्ठ, शिवदवाला फोल फोलाईआ। ठग्गां चोरां होया अकट्ठ, साधां सन्तां पए लड़ाईआ। प्रगट होए हरि समरथ, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। आप चलाए साचा रथ, चार वरनां लए चढ़ाईआ। दूई द्वैती मन्दिर जाए ढठ्ठ, हउमे गढ़ रहिण ना पाईआ। गेड़नहारा उलटी लट्ठ, आपे

रिहा भवाईआ। वीह सद बिक्रमी करे चट्ट, वीह सद बीस वज्जे वधाईआ। खेले खेल नठ्ठ नठ्ठ, नटूआ सांग वरताईआ। जन भगतां अमृत आत्म प्याए घुट्ट, निझर धार वहाईआ। चौदां लोकां खोले हट्ट, चौदां तबकां वेख वखाईआ। सच नगारे वज्जे सट्ट, रणजीत नगारा इक्क बणाईआ। गुरमुखां गुरसिखां हरि शब्द वखाए साचा पट्ट, सच संजोआ इक्क बणाईआ। तीर कमान बणाए साच भथ्थ, एका शब्द रसना गाईआ। जगत विकारा पाए नथ्थ, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, साची करे पढ़ाईआ। वेखणहारा रवि ससि, मण्डल मण्डप फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिखां देवे नाम वर, काया कन्दर खोज खुजाईआ। काया कन्दर डूँघी गार, हरि साचा वेख वखांयदा। शब्दी गुर हो त्यार, आपणा राह चलांयदा। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटांयदा। नानक सतिगुर कर प्यार, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। गुरमुख मिल्या मीत मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सांतक सति वरतांयदा। केस कंघा अपर अपार, सीस जगदीस हंढांयदा। नाम कड़ा कर त्यार, हथ्थीं कंगन बन्न्हांयदा। धीरज जत अपर अपार, सति सन्तोखी कच्छ रखांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर होया ख़बरदार, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। पंचम मीता पंच अधार, पंचम मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका वर, एका आप दवांयदा। आपे वर दाता भण्डारी, आपे भिच्छया पांयदा। आपे निरगुण जोत निरँकारी, आपे सरगुण मेल मिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारी, आपे देवत सुर सेवा लांयदा। आपे लक्ख चुरासी खेल खिलारी, आपे मेट मिटांयदा। आपे पारब्रह्म आपे ब्रह्म होए हँकारी, आप आपणा सगन मनांयदा। आपे पंज पंजी सेवादारी, दस पंज आप रखांयदा। आपे त्रैगुण तेरा कर्म कारी, रजो तमो सतो आप हो जांयदा। आपे बणे ब्रह्म ब्रह्मचारी, आपे निरगुण सरगुण धार बंधांयदा। आपे रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी, आपे तत्त सुहांयदा। आपे खोले नौ दुआरी, आपे दसवें डेरा लांयदा। आपे साध सन्त गुर पीर अवतारी, जुग जुग नाउँ रखांयदा। आपे आदि निरँजण जोत निरँकारी, करता पुरख आप अख्वांयदा। आपे अकाल पुरख करे सच्ची सिक्दारी, साचा तख्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग करता हरि भगवान, आदि जुगादि समाईआ। धुरदरगाही देवणहारा धुर फ़रमान, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। गुरमुख विरला पावे मान, जिस जन आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। धर्म वखाए सच निशान, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। पार वखाए ज़िमी अस्मान, रवि ससि ना कोई रुशनाईआ। उच्च महल्ल अटल मकान, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। लोकमात आवे जावे वाली दो जहान, नानक सतिगुर एह बुझाईआ। गुर गोबिन्द मेल मिलान, पूत सपूता

आप जणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। बन्ने धार पुरख बिधाता, आप आपणे रंग रतड़ा। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, ऊँच नीच ना कोई वखंदड़ा। ना कोई दिवस ना कोई राता, बाल बिरध ना वखंदड़ा। ना कोई पिता ना कोई माता, ना कोई गोद उठंदड़ा। आपणा बन्ने आपे नाता, आपे मेल मिलंदड़ा। आपे नारी आपे कमलापाता, आप आपणी सेज हढंदड़ा। आपे बैठा रहे इक्क इकांता, आपे घट घट वेस वटंदड़ा। आपे जुग जुग रथ रथवाई चलाए राथा, आप आपणी सेव कमन्दड़ा। आपे आप होए त्रिलोकी नाथा, सचखण्ड दुआरा आप सुहंदड़ा। आपे नानक गोबिन्द वेखे माथा, आपे मस्तक लहिणा देण चुकंदड़ा। आपे पुरख अगम्म सर्ब कला समराथा, घर साचे आप वसंदड़ा। आपे गल लगाए ग़रीब निमाणे अनाथ अनाथा, जुग जुग नाउँ धरंदड़ा। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलाए गाथा, आप आपणा भेव खुलंदड़ा। आपे पूजा आपे पाठा, आपे मन्त्र ज्ञान दृढ़दंड़ा। आपे तीर्थ आपे ताटा, सर सरोवर आप अख्वंदड़ा। आपे करनहारा पूरा घाटा, गुरमुख साचे मेल मिलंदड़ा। आपे होए आन बाटा, दस दस मास डेरा लगन्दड़ा। आपे दो जहाना कट्टे वाटा, आपे पान्धी पन्ध वखंदड़ा। आपे नानक जोत घर घर जगे लिलाटा, आपे गोबिन्द खंडा नाम चमकंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द वेखे साचा घर, नानक चुकाए जगत डर, आप सुहाए बंक दुआरा, सम्बल नगरी जोत इकग्री शब्द समग्री इक्क रखंदड़ा।

१०१
०८

✪ २६ पोह २०१५ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर पिण्ड कलार ✪

भगतन हरि भगवान, आदि जुगादि समाया। खेले खेल दो जहान, जुग जुग वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम मार ध्यान, आप आपणी कल वरताया। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, रूप अनूप आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाया। जोती नूर पुरख करतारा, पारब्रह्म अख्वाया। खेले खेल अगम्म अपारा, लेखा लेख ना कोई जणाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाया। एका लाए साचा नाअरा, सो पुरख निरँजण गाया। हँ हँगता पार किनारा, हँ ब्रह्म समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकार, खेले खेल अपर अपार, हरि का भेव किसे ना पाया। आदि जुगादी अछल अछेदा, आपे वरते आपणे भाणया। पढ़ पढ़ थक्के वेद कतेबा, हरि का रूप किसे ना जाणया। गा गा थक्के रसना जेहवा, अन्दर मन्दिर ना किसे वखानया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि हरिजन साचे मेल मिलानया। हरिजन साचा मेल मिलंना, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। इक्क चढ़ाए साचा चन्ना, दिवस रैण करे रुशनाईआ। राग सुणाए अनहद कन्ना, धुन अनादी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि करतारा, आपणा आप उपजांयदा। वेखे खेल सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। भगतन मीता अन्दर मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, ढूँघी कन्दर आसण लांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जलां थलां फोल फोलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा वेखे अन्त अखाड़ा, आप आपणी कल वरतांयदा। धुर दरगाही साचा लाड़ा, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। जीआं जन्तां साधां सन्तां लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेखे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। घर सुहञ्जणा आत्म ब्रह्म, हरि हरि आप जणाईआ। आपे जाणे आपणा कर्म, जुग जुग वेख वखाईआ। आपे वेखे साचा धर्म, धर्म दुआरा इक्क सुहाईआ। ना कोई गोती ना कोई वरन, ऊँच नीच ना कोई बणाईआ। पारब्रह्म तेरी साची सरन, गुरमुख विरले मात तकाईआ। आपे खोल्हे हरन फरन, नेत्र लोचण आप खुल्हाईआ। कलिजुग जीव माया तरनी झूठी तरन, भव सागर रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग वेस कर, हरि सन्तन लए तराईआ। सन्तन मीता इक्क अकल्ला, एका एक एकँकारया। वसणहारा सच महल्ला, थिर घर महल्ल अटल उच्च मुनारया। घट घट अन्दर आपे रला, जोती नूर डगमगा रिहा। शब्द सुनेहड़ा जुग जुग आपणा घला, आपणा मार्ग ला रिहा। मेटणहारा आपे सल्ला, आपे सन्त भगत जोग जुगत जगत आपे वेख वखा रिहा। जागरत जोत हरिजन जगा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। अन्ध अन्धेर दए मिटा, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत जाम दए पिला, निझर रस चुआईआ। दुरमति मैल गंवा, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। कागों हँस दए बणा, जो जन आए सरनाईआ। मानस देही लेखे ला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। चरन दासी आप बणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निज घर वासी निज आत्म डेरा ला, परमानंद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण शाहो भूप वड राज राजन, आप संवारे जुग जुग काजन, प्रगटे जोत देस माझन, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। कलिजुग तेरी साची रुत्त, हरि साचा आप सुहांयदा। प्रगट होए अबिनाशी अचुत, एका मंगल गांयदा। वसणहारा काया बुत्त, दिस किसे ना आंयदा। पंज तत्त अन्दर बैठा लुक, निरगुण धार चलांयदा। गुरमुख विरला वेखे झुक, जिस जन हउमे गढ़ तुड़ांयदा। कलिजुग पैंडा रिहा मुक, नेड़े राह रखांयदा। जूठा झूठा बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोई करांयदा।

चार कुन्टां दहि दिशा लक्ख चुरासी पई लुट, माया ममता मोह हल्कांयदा। दर दवारिउँ बैठे रुठ, साचा इष्ट देव गुरू ना कोई मनांयदा। खाली दिसे भाण्डे ठुठ, नाम वस्त ना कोई टिकांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, मन्दिर अन्दर तट किनार लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, हरि साचा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेलणहारा साचे घर, गुरमुख साजन ल्ए वर, हउमे रोग चुकाए डर, आप आपणे दर बहांयदा। चरन सरन सरन चरन जन जाए पढ़, जागरत जोत इक्क जोत जगांयदा। एकँकारा एका अक्खर रिहा पढ़, सृष्ट सबाई वक्खर नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग रंगांयदा ।

✪ २६ पोह २०१५ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे घर बल पिण्ड गुरदासपुर ✪

हरि पुरख सुल्तान, आदि जुगादिआ। हरि पुरख मेहरवान, खेले खेल ब्रह्मादिआ। हरि देवणहारा हरि हरि दान, दाता दानी आदि जुगादिआ। हरि वसे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप वजाए आपणा नादिआ। शब्द नादि साची तूर, हरि हरि आप वजांयदा। सर्ब कला आपे भरपूर, एका एक अख्वांयदा। आपे नेड़े आपे दूर, हर घट आप समांयदा। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, एका रूप वटांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, जुग जुग खेल खिलांयदा। हरि सन्तन देवे साची धूढ़, सतिगुर नाउँ उपांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटांयदा। आदि निरँजण सर्ब सुख दाता, एका एक अख्वा रिहा। खेले खेल पुरख बिधाता, लोकमात लै अवतारया। जन भगतां चरन प्रीती निभे नाता, मेल मिलाए विच संसारया। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, काया करे ठंडी ठारया। मिटे रैण अन्धेरी राता, निरगुण जोती इक्क जगा रिहा। बैठा रहे इक्क अकांता, एका दर सुहा रिहा। घट घट अन्दर मारे झाता, आप आपणा मुख छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धरा रिहा। आदि जुगादी हरि हरि मीता, पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, आपे मार्ग लांयदा। आपे परखणहारा नीता, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपे हस्त आपे कीटा, आपे ख़ाकी ख़ाक समांयदा। आपे वस्सया धाम अनडीठा, नेहचल धाम इक्क सुहांयदा। आप तपाए त्रैगुण अंगीठा, पंज तत्त आप जलांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा मीठा, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। धार अवल्ली हरि निरँकार, आदि जुगादि चलाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार,

एक अनेका वेस वटाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, धुन अनादी नाअरा लाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सुन्न समाधी कर उज्यार, धूंआँधार मिटाईआ। रवि ससि सेवादार, सेवक सेव लगाईआ। ब्रह्मा विष्न ख़बरदार, शिव शंकर बूझ बुझाईआ। करोड़ तेतीसा दर भिखार, सुरपति राजा इन्द मंग मंगाईआ। लोआं पुरीआं दए सहार, नाम डोरी बंधन पाईआ। गगन पतालां खेल अपार, धरत धवल सुहाईआ। आकाश प्रकाश वेखे चन्द सतार, मण्डल मण्डप डेरा लाईआ। लक्ख चुरासी करे आपे दास, घर घर विच आप टिकाईआ। आपे पवण आपे स्वास, आपे रसन चलाईआ। आपे करे बन्द खलास, बन्दीखाने आपे पाईआ। आदि पुरख इक्क अबिनाश, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। जुग जुग वेखे खेल तमाश, जुग करता खेल खिलाईआ। आप उपजाए आपे करे नास, ना कोई दूसर संग रलाईआ। गुणवन्ता सर्ब गुणतास, गुण निधाना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता एकँकारा नाउँ धराईआ। एकँकारा हरि भगवाना, एका जोत जगांयदा। एका राग इक्क तराना, एका शब्द अलांयदा। एका शाह भूप सुल्ताना, एका तख्त सुहांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका आसण लांयदा। एका सूरबीर नौजवाना, एका हुक्म चलांयदा। एका खेले खेल दो जहाना, दिस किसे ना आंयदा। एका रसना चिल्ला तीर कमाना, एका हथ्थ उठांयदा। एका लक्ख चुरासी बन्ने गाना, एका सगन मनांयदा। एका जेरज अंड भवाना, उत्भुज सेत्ज इक्क फिरांयदा। एका वरन बरन बनाणा, ऊँच नीच इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। धार अगम्मी हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। खेले खेल विच संसार, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग तेरा भेव न्यार, भेव कोए ना पाईआ। लक्ख चुरासी गई हार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। हरि हरि नूर जोत उजाला, हरि हरि आप करांयदा। प्रगट होया दीन दयाला, दया निध आप अख्वांयदा। वसणहारा सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। भगतन मीता सति रखवाला, नित नवित्त वेस वटांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, एका एक अवतारया। जोती जामा भेख न्यारा, दिस किसे ना आ रिहा। डंक वजाए शब्द अपारा, सच नगारा, इक्क सुणा रिहा। ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदारा, लोआं पुरीआं आप जगा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा, सत्तां दीपां आप उठा रिहा। साधां सन्तां कर प्यारा, आत्म ब्रह्म जणा रिहा। मेट मिटाए धुँधूकारा, सच ज्ञान दृढ़ा रिहा। दीपक जोती कर उज्यारा, जोत निरँजण सेवा ला रिहा। अनहद

शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, काया मन्दिर ताल वजा रिहा। अमृत आत्म देवे ठंडी ठारा, नाम प्याला भर प्या रिहा। मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, शब्द खण्डा आप उठा रिहा। खोल्लणहारा बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी आप तुड़ा रिहा। आत्म सेजा कर प्यारा, हरिजन साचे आप जगा रिहा। साची सेजा पैर पसारा, निरगुण निरगुण डेरा ला रिहा। एका दर एका घर एका हरि मिले मेल कन्त भतारा, घर साचे मंगल गा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका आपणा नाउँ धरा ल्या। नाउँ अवल्ला हरि निरँकार, आदि जुगादि रखांयदा। वल छल सर्ब संसार, वेद कतेब ना कोई लिखांयदा। इक्क अकल्ला खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जलां थलां पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फोलांयदा। सच महल्ला कर त्यार, निरगुण दीवा बत्ती इक्क टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंका हरि समरथ, अकल कला अख्वाईआ। शब्द जणाई महिमा अकथ, भेव कोई ना पाईआ। आप चलाए आपणा रथ, वड दाता बेपरवाहीआ। जगत विकारा पाए नथ्थ, माया ममता मोह तजाईआ। देवणहारा साची वथ्थ, सच भण्डारा इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां करे जणाईआ। साचा नाम शब्द भण्डारा, हरि सतिगुर आप वरतांयदा। चारे कुन्टां पावे सारा, दहि दिशा वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी दए अधारा, एका नाम धरांयदा। साचे कंडे तोले तोलणहारा, तेरां तेरी धार चलांयदा। गुर नानक बोले बोलणहारा, एका बोला रसन अल्लांयदा। काया चोला ना कोई प्यारा, जोती शब्दी मेल मिलांयदा। सोहँ ढोला बोल जैकारा, निरगुण निरगुण दर्शन पांयदा। आपे बैठा सच दुआरा, अबिनाशी करता पुरख मनांयदा। देवे दरस अगम्म अपारा, अलख अलखना दरस दिखांयदा। मेल मिलाए मीत मुरारा, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर बैठ सच्ची सरकारा, साचा धाम सुहांयदा। नानक सतिगुर कर प्यारा, एका वस्त झोली पांयदा। नाम सति भर भण्डारा, आपणी दया कमांयदा। चार वरन बण वरतारा, ऊँचां नीचां झोली पांयदा। चाढ़े रंग अपर अपारा, जो जन रसना गांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ पसारा, अन्तिम आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग बण भिखारा, दर अग्गे सीस झुकांयदा। चौथे जुग होया ज़ाहरा, चौदां चौदां वेख वखांयदा। चौदां तबकां इक्क प्यारा, एका आसण लांयदा। चौदां सद मेल भतारा, साचा राह तकांयदा। अन्तिम छड्डणा पए संसारा, थिर कोई कहिण ना पांयदा। आपे डिग्गा चरन दुआरा, रो रो नीर वहांयदा। सतिगुर नानक कर प्यारा, आपणी गोद उठांयदा। एका जोती दस अवतारा, तेरा मूल चुकांयदा। राणी अल्ला लाए नाअरा, हू हू वेख वखांयदा। ऐनलहक्क हो खुआरा, हक्क हकीकत धक्का लांयदा।

बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, शरअ शरीअत आप जणांयदा। लाशरीक वेख संसारा, साचा खेल खिलांयदा। नबी रसूलां पार किनारा, कुतब गौंस ना कोई सदांयदा। मुल्लां शेख़ करन हाहाकारा, बगल कुरान उठांयदा। तीस बतीस ना करे प्यारा, सच मुसल्ला ना कोई विछांयदा। रोज़ा बांग हाहाकारा, घर घर आप करांयदा। उम्मत उम्मती होए खुआरा, ना कोई धीर धरांयदा। मक्का काअबा पावे सारा, दो दो आबा वेख वखांयदा। हक्क जनाबा खेल न्यारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। पंडत पांधे मारे मारा, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। वेद व्यासा बण लिखारा, हरि का भेव खुल्हांयदा। प्रगट होवे विच संसारा, पूत सपूता नाउँ रखांयदा। गौड़ ब्रह्मण मीत मुरारा, उच्चे टिल्ले नाअरा लांयदा। दीवा बाती कर उज्यारा, एका जोती डगमगांयदा। साचे अस्व हो अस्वारा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, सच सिँघासण डेरा लांयदा। सर्ब गुण तास मीत मुरारा, आदि पुरख अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। जुग जुग जाणे आपणी कारा, आपणा कर्म कमांयदा। वेद कतेब ना पावण सारा, ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ सीस झुकांयदा। कोटन कोटि मंगण दर दुआरा, हरि साचा भिच्छया पांयदा। आपे सतिगुर गुर अवतारा, पारब्रह्म ना कोई अख्वांयदा। आपे नर नरायण हो उज्यारा, आप आपणी किरत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत आप जगा, आपणी दया कमाईआ। पंज तत्त साचा मेल मिला, नानक निरगुण विच समाईआ। एका वस्सया साचे थाँ, थान थनंतर डेरा लाईआ। शब्द अनादी एका गा, इक्क सितार हिलाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्हा, लक्ख चुरासी रिहा समझाईआ। मोहण माधव माधी मेल मिला, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेख वखाईआ। वेखणहारा निरगुण धार, एका पुरख अकाल। साचे सन्तां करे प्यार, दीनां बंधप दीन दयाल। एका बख्शे अमृत धार, नेड़ ना आए काल महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तोड़नहारा जगत जंजाल। कलिजुग तेरा जगत जंजाला, त्रैगुण बंधन पाया। सृष्ट सबाई होए बेहाला, पंज तत्त विकारा छाया। ना कोई शाह ना कंगाला, धर्म हट्ट ना कोई खुल्हाया। ना कोई जोती अग्नी शक्ति ज्वाला, ना कोई रूप वटाया। ना कोई मेल मिलाए हरि गोपाला, हरि हरि दर्शन किसे ना पाया। गल अठोत्तरी एका माला, अट्ठ तत्त ना कोई प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर तेरा वेखण आया। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चार कुन्ट दुहाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। हरि का शब्द ना किसे विचारा, फोकट सभ पढ़ाईआ। धुनी नाद ना सुणे अनहद धारा, ढोलक छैणे रहे वजाईआ। अमृत मिल्या ना

ठंडी ठारा, सर सरोवर रिहा नुहाईआ। दुरमति मैल ना कोई उतारा, मनमति होई हल्काईआ। नेत्र लोचण नैण दरस ना पाया पुरख करतारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपणा रंग आपे रंग, आपे वेख वखाया। गुरमुखां होए सदा संग, सगला संग निभांयदा। दो जहानां चुक्के पन्ध, साचे दर बहांयदा। मीतन मीत सदा बख़्शिंद, बख़्शणहार दया कमांयदा। लेखे लाए रसना जिह्वा बत्ती दन्द, जो जन हरि हरि रसन ध्यांअदा। जगत तजाए मदिरा मास गन्द, घर साचा सोभा पांयदा। आप उपजाए परमानंद, निजानंद समांयदा। सतिगुर साचा प्रकाश करे एका चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, पंज तत्त लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोती नूरो नूर दिवस रैण डगमगाया। जोती शब्द कर उजागर, हरि हरि कर्म कमाया। गुरमुख विरले बणे सौदागर, मनमुख जीवां दिस ना आया। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन आपणा मेल मिलाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, काया चोली रंग चढ़ाया। करे प्रकाश काया गागर, महल्ल अटल इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए उठाया। गुरमुख साचे हरि हरि मेला, गुर सतिगुर आप कराया। आपे गुर आपे चेला, साचे धाम आप सुहाया। अचरज खेल पारब्रह्म खेला, भेव कोई ना पाया। दो जहानां सज्जण सुहेला, लोकमात वेख वखाया। कट्टणहारा लक्ख चुरासी धर्म राए दी जेला, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाया। गुरमुख साजण सच दुआर, एका मंगल गाईआ। मनमुख जीव दुष्ट दुराचार, जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। हरिजन मेला इक्क करतार, एका वेख वखाईआ। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, हउमे हँगता रोग सताईआ। गुरमुख साजण कर उज्यार, जुग जुग देवे माण वड्याईआ। मनमुख जीवां देवे मार, राए धर्म दए सजाईआ। गुरमुख साजण करया ख़बरदार, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। गुरमुखां मेला सच दरबार, सच्चखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। मनमुखां धक्का देवे मार, शौह दरयाए आप डुबाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, साचा चलत चलाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखार, लेखा गए लिखाईआ। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। हरि मन्दिर जोती कर उज्यार, अन्दरे अन्दर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। चार वरनां सांझा यार, एकँकारा रूप वटाईआ। बेऐब ख़ुदा परवरदिगार, नूरो नूर नूर उपजाईआ। राम रूप आप करतार, कान्हा कृष्ना आप अख्वाईआ। ईसा मूसा एका धार, एका अंक जणाईआ। वेखणहारा संग मुहम्मद चार

यार, साची यारी पूर कराईआ। राणी अल्ला लाए नाअर, महिबान बीदो नाम ख़ुदाईआ। नानक निरगुण शब्द जैकार, इक्क सतार हिलाईआ। गोबिन्द खण्डा कर त्यार, लोकमात गया चमकाईआ। कलिजुग वंडा पाए हरि गिरधार, चारे कुन्ट फेरी पाईआ। भेख पखण्डा बणे भिखार, घर घर अलख जगाईआ। कलिजुग अन्तिम कन्ढा वेख किनार, जोती नूर करे रुशनाईआ। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, लोकमात आए कर कर धाईआ। जेरज अंडां वस्सया बाहर, उत्भुज सेत्ज भेव ना राईआ। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहर, हाज़र हज़ूर आप हो जाईआ। शब्द अनादी एका कार, धुन अनादि रखाईआ। बोध अगाधी तेरी धार, अर्जन बूझ बुझाईआ। गुर का रूप शब्द अपार, गुरू ग्रन्थ समझाईआ। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, घर साचे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रूप आप वटाईआ। रूप वटाया पुरख अबिनाशी, आपणी कल वरतांयदा। खेले खेल घनकपुर वासी, भेव कोई ना पांयदा। पंज तत्त कर उदासी, शब्द उडारी इक्क लगांयदा। सचखण्ड साचे कर निवासी, आप आपणा राह तकांयदा। आपे पार पृथ्मी आकाशी, गगन पताला आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, पारब्रह्म बेअन्तया। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, खेले खेल श्री भगवन्तया। नाम डंका इक्क नगारा, लोआं पुरीआं आप सुणन्तया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहन्तया। विष्नूं ढहि ढहि पए दुआरा, प्रभ साचा खेल खिलन्तया। शिव शंकर मंगे बण भिखारा, बाशक तशका गलों लहन्तया। करोड़ तेतीसा मंगे मंग दुआरा, राजा इन्द वेस वटन्तया। गण गंधर्ब होए ख्वारा, साचा राग ना कोई सुणन्तया। ना कोई अपच्छरां गाए विच दुआरा, ना कोई धाम सुहन्तया। किन्नर यच्छप ना पायण सारा, अन्तिम मुख छुपन्तया। रवि ससि निउँ निउँ करन निमस्कारा, दोए जोड़ सीस झुकन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा तेज़ वखन्तया। जोती तेज़ शब्द बलवान, हरि साचा आप उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ नौजवान, जोद्धा सूरबीर आप अख्वाईआ। आदि निरँजण इक्क निशान, एका इष्ट वखाईआ। हरी हरि खेल महान, खेलणहार भेव ना राईआ। बैठा इक्क सच मकान, थिर घर बंक सुहाईआ। ना कोई रंक ना राजान, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। जुग जुग देवणहारा दान, जुग जुग झोली रिहा भराईआ। जुग जुग तोड़े मान अभिमान, दयावान जुग जुग अख्वाईआ। जुग जुग खेले खेल गोपी काहन, जुग जुग मण्डल मण्डप रास रचाईआ। जुग जुग सीता सीता राम, साचे घर वज्जे वधाईआ। जुग जुग गीता ज्ञान, जुग जुग ब्रह्म बणाईआ। जुग जुग अक्खर वक्खर कर पछान, जुग जुग निष्अक्खर आप समाईआ। जुग जुग वेखे सुंझ मसाण, जुग जुग लक्ख चुरासी आप उपाईआ।

जुग जुग पवण पाणी बंध बंधान, जुग जुग धरनी धवल आप टिकाईआ। जुग जुग जल बिम्ब हो मेहरवान, आप आपणा बंधन पाईआ। सृष्ट सबाई हरि हरि खेला, हरि हरि खेल खिलांयदा। जूठा झूठा लग्गा मेला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचांयदा। ताल वजाए गुरू गुर चेला, आसा तृष्ना मेल मिलांयदा। कूड़ कुड़यारा होया वेला, अन्ध अन्धेर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ी धार, चार कुन्ट हल्काईआ। जूठ झूठ होए सिक्दार, सच सुच्च ना कोई वड्याईआ। सृष्ट सबाई नार विभचार, हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। माया ममता कर प्यार, हउमे तन जलाईआ। सृष्ट सबाई दब्बी भार, दिवस रैण रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गे बणे भिखार, झोली आपणी डाहीआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, खुल्ह्ड़े केस वखाईआ। गोबिन्द तेरी तेज़ कटार, दर दसवें हउँ छुपाईआ। तेरा तेरी करे खुआर, ना दीसे कोई सहाईआ। मन मति होई मुटयार, आपणा जोबन रही हंढाईआ। गुरमति भुल्ले जीव गंवार, गुर नानक गया समझाईआ। फले फुले अन्तिम होए उजाड़, पत्त डाल्ही रहिण ना पाईआ। लग्गी अग्ग तत्ती हाढ़, सीतल धार ना कोई वहाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, दिवस रैण रही तपाईआ। कलिजुग तेरा वेख अखाड़, चारों कुन्ट पई दुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, लोकमात वज्जी वधाईआ। साधां सन्तां करे प्यार, जो अन्दर मन्दिर अन्तर बैठे लिव लाईआ। मनमुख जीवां करे खुआर, चारों कुन्ट भवाईआ। वेखणहारा नारी नार, बिरध बाल जवाना फेरी पाईआ। सुत्ता रहे ना कोई जीव गंवार, वेखणहारा हरि रघुराईआ। लेखा मंगे दर दुआर, धर्म राए सेव कमाईआ। चित्रगुप्त लेख लिखार, दिवस रैण कलम चलाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, कलिजुग अन्तिम सगन मनाईआ। हथ्थीं मैहन्दी कजला धार, नैण रही मटकाईआ । दहि दिशा उठ उठ वेखे कन्त भतार, लक्ख चुरासी राह तकाईआ। साची सखीआं कर त्यार, गीत आपणा रही गाईआ। मनमुख जीव दिसन कुँवार, साची वंड वंडाईआ। दोहां मेला धर्म दुआर, राए धर्म मेल मिलाईआ। झूठ जूठ पाणी उत्तों देवे वार, धरत मात ना लए अंगड़ाईआ। अठारां कुण्ड सेजा सुत्ता बण कन्त भतार, अठाई कुण्डां आप फिराईआ। छैल छबीला मुंडा जीव गंवार, लक्ख चुरासी आप प्रनाईआ। लाड़ी मौत करे प्यार, आपणीआं भुजां आप उठाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खेल खेलणहार, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। गुर गुर चेले पावे सार, जो बैठे राम भुलाईआ । सन्त सुहेले सुत्त दुलार, आप आपणे लए जगाईआ। एका देवे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेला आपे कर मेल मिलावा साचे घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचा घर सचखण्ड दुआरा, हरि हरि आप सुहांयदा।

१०६ ०८

हरिजन विरला पावे सारा, जिस जन बूझ बुझांयदा। कोटन कोटि फिरन अवारा, साचा राह ना कोई चलांयदा। कोटन कोटि गढ़ हँकारा, मण्डल मण्डप वखांयदा। कोटन कोटि निउँ निउँ करन निमस्कारा, कोटन कोटि रसना जिह्वा गांयदा। कोटन कोटि मन मति लग्गा अखाड़ा, दिवस रैण नचांयदा। कोटन कोटि मेला पंचम धाड़ा, कोटन कोटि मुख शरमांयदा। गुरमुख विरला चढ़या चोटी मिल्या मेल हरि पुरख भतारा, साचा लाड़ा आप अख्वांयदा। साढे तिन्न हथ्थ दिसे सच मुनारा, जो जन दर्शन पांयदा। आवण जावण पार किनारा, मात गर्भ फंद कटांयदा। लहिणा देणा चुक्के नौ दुआरा, दस्म दुआरी मेल मिलांयदा। निरगुण दीवा कर उज्यारा, नाम बाती विच रखांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, साचा सगन मनांयदा। खोल्ले ताकी बन्द किवाड़ा, आपणा मुख वखांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, पंचम शब्द जणांयदा। गावणहारा वारो वारा, साचा ताल वजांयदा। अनहद सेवक सेवादारा, साची सेव कमांयदा। ढोल मृदंगा इक्क नगारा, बहत्तर नाड़ तलवाड़ रखांयदा। साचा मन्दिर गुरुदुआरा, घर घर विच बणांयदा। नानक मेला सच चुबारा, गुर अंगद वेख वखांयदा। गुर अमरदास अमृत पीवे ठंडी ठारा, काया अमृत ताल सुहांयदा। रामदास भर भण्डारा, लोकमात आप टिकांयदा। सर सरोवर कर त्यारा, हरि मन्दिर विच समांयदा। गुरु अर्जन गुर गुर बण लिखारा, बोध अगाध जणांयदा। सन्तां भगतां इक्क दुआरा, गुर मति सुर मेल मिलांयदा। आपे शब्द खण्डां तेज़ कटारा, पारब्रह्म वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण दोवे धारां, भेव कोई ना पांयदा। सरगुण गुर गुर गोबिन्द हरि गोबिन्द उज्यारा, हरि साचा माण रखांयदा। निरगुण गुर गुरू ग्रन्थ उज्यारा, शब्दी शब्द टिकांयदा। दोवे रक्खे तिक्खीआं धारा, मीरी अमीरी फकीरी आप हंढांयदा। जीव जन्त ना पाए सारा, देह जोत रंग रंगांयदा। शब्द गुर कर त्यारा, गुरू ग्रन्थ बणांयदा। दोहां देवे आप सहारा, पुरख अकाल नाउँ रखांयदा। जुग जुग बणे मात वणजारा, जन भगतां वणज करांयदा। साचा खोल्ले हट्ट पसारा, एका हट्ट वखांयदा। चार वरनां करे प्यारा, साचा नाम दृढ़ांयदा। जो जन आए चल दुआरा, खाली कोई ना जांयदा। सुलक्खणी लेखा लिखणहार, आपणा हथ्थ उठांयदा। गुरू ग्रन्थ सच जैकार, धुर दा शब्द अल्लांयदा। बिन सतिगुर कोई ना पाए सारा, ना कोई बूझ बुझांयदा। देह जोत इक्क प्यारा, शब्दी संग निभांयदा। हरि गोबिन्द ना रसन शब्द उचारा, गुरू ग्रन्थ वखांयदा । हरिराए कर प्यारा, आपणी गोद उठांयदा। बाल अवस्था खेल न्यारा, हरि कृष्ना वेस वटांयदा। तेग बहादर तेरी धारा, तेरा रूप समांयदा। तेरा तन कीता बन्द किवाड़ा, फेर आपणा शब्द सुणांयदा। सिक्ख गुर ना कोई सुहेला सखा यारा, सगला संग तजांयदा। दिल्ली बैठा कर पसारा, एका पुरख अकाल मनांयदा। मन पाए तैनूं धृग धृगकारा, तेरा कोई ना बेली अन्त अख्वांयदा। बिन हरि कोई ना पावे सारा,

११० ०८

झूठा नाता जगत वखांयदा। गुरू ग्रन्थ तेरा वेख्या पार किनारा, गुर तेग़ बहादर आपणा सीस तेरी शब्द भेट चढ़ांयदा। प्रगट होया साचा सुत्त दुलारा, प्रभ आपणा वेस वटांयदा। गुर गोबिन्द कर प्यारा, सिँघ रूप आप वखांयदा। नाम खण्डा सच कटारा, तन गात्रे आप लटकांयदा। अमृत जल ठंडी ठारा, घर साचा आप प्यांअदा। मुच्छ दाढ़ी केस रक्ख दस्मेस दरस दिखाए हरि निरँकारा, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपणी हथ्थीं बन्नृ दस्तारा, कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, बिन सतिगुर दिस किसे ना आंयदा। आपे वेखे सच दिहाड़ा, साचा सगन मनांयदा। सतिगुर पूरा साचा लाड़ा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आप लगाया धर्म अखाड़ा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। बोले शब्द सच जैकारा, एका एक सुणांयदा। कवण सिक्ख गुरसिख प्यारा, जो गुर चरनी सीस भेट चढ़ांयदा। हथ्थ खण्डा तेज कटारा, अकाल पुरख जो हथ्थ उठांयदा। उठया सुत सुत दुलारा, दया दया रूप समांयदा। मेली जाए वारो वारा, पंचम मुख सलांहयदा। गुरमुख तेरा प्यार तिक्खी धार, प्रेम रंगण लाल रंगांयदा। मनमति दित्ती मार, गुरमति आप उपजांयदा। जीवत मरे विच संसार, जीवण मुक्त नाम रखांयदा। साची शक्ती भर अमृत भण्डार, साचा खण्डा विच फिरांयदा। चार वरनां मिट्ठा कर त्यार, साचे बाटे आपे पांयदा। अर्जन शब्द बन्ने धार, नानक संग रलांयदा। गुरू ग्रन्थ होया सेवादार, गुरमुखां सेव कमांयदा। आपणे मुख सलाहे वारो वार, धन्न गुर नानक जो साचा बीज बिजांयदा। सच क्यारी आप करतार, आपणा बूटा आप लगांयदा। पंचम मीता पंचम कर त्यार, पंचम आपणा आप सुणांयदा। पंचम तन कर श्रृंगार, पंचम वेख वखांयदा। पंचम शब्द सच्ची धुन्कार, घर घर ताल वजांयदा। गुरमुख साचे कर प्यार, वाहिगुरू वाह वाह गुरू आप अख्वांयदा। हरि का पन्थ कर त्यार, हरि हरि विच टिकांयदा। गुरू ग्रन्थ साचा यार, शब्दी गुर अख्वांयदा। ना मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण ना कोई रखांयदा। राग रागनी रहे उचार, एका राग अलांयदा। इकवंजा बवन्जा एका धार, एका अंग समांयदा। इक्क चार खेल अपार, तीस बतीस सलांहयदा। चौदां सदीआं होण खुआर, तीस बतीस सपारा रहिण ना पांयदा। उप्पर मोहर लाई करतार, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका गुर अख्वांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई दिसे नौ दुआर, हथ्थ मूंह नक्क ना कोई उपांयदा। निरगुण आपणा खेल खिलार, निरगुण शब्द चलांयदा। बीस दस पंज कर त्यार, पैंतीस अक्खर जोड़ जुड़ांयदा। दस पंज कर त्यार, बीस बीसा वेख वखांयदा। लेखा गिण ना सके विच कोई संसार, अगणत अगणत आप अख्वांयदा। मेटणहारा कूड़ पसार, कूड़ कूड़ा नेंह तुड़ांयदा। नानक गोबिन्द सच प्यार, सगला संग रखांयदा। नानक शब्दी वाजां रिहा मार, गोबिन्द दिवस रैण ध्यांअदा। पारब्रह्म

प्रभ लए अवतार, आपणा मेल मिलांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, साचा दर सुहांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यार, जोती जोत जोत डगमगांयदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, शब्दी शब्द उठांयदा। ब्रह्मण्ड ब्रह्मण्ड पावे सार, ब्रह्मण्डी खोज खुजांयदा। सतिजुग साची बन्ने धार, सति सरूप समांयदा। एका बोले शब्द जैकार, सो पुरख निरँजण आप लगांयदा। हँ हँगता देवे मार, हाहाकार ना कोई करांयदा। मंगता दर बण भिखार, हरिजन साचे वेख वखांयदा। भुक्खा नंगता नर निरँकार, निरगुण खाली हथ्थ रखांयदा। काया चोली लोकमात जन भगतां रंगदा, जन आपणी किरपा धार। साचे मन्दिर अन्दर आपे लँघदा, आपे सुत्ता पैर पसार। औदां जांदा मूल ना संगदा, अजूनी रहित नर निरँकार। जुग जुग खेल सूरे सरबंग दा, खेले खेल परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे लए वर, आप बहाए आपणे दर, देवे दरस अगम्म अपार।

मस्सा सिँघ दे नवित्त

कल्लर बूटा नाम जड़, सचखण्ड रखाईआ। माली बणया साचा हरि, साचे दर चलाईआ। कर्म धर्म लए फड़, एका दूजा जोड़ जुड़ाईआ। आपे वेखे अग्गे पिछे खड़, आपे रिहा लोकाईआ। ढाउँदा जाए किले गढ़, चारों कुन्ट फिराईआ। आपे बुक्के अक्खर एका खड़, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। चारों कुन्ट किते ना लुके, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। सो पुरख निरँजण सतिगुर पूरा मुख चाढ़े छिके, हँ हँ बन्द कराईआ। आपणा पैंडा आपे लिखे, दिवस रैण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच पंजाली इक्क उठाईआ। कर्म धर्म दोए रक्ख, हरि साचा हल चलांयदा। खेले खेल हो प्रतक्ख, भेव कोई ना पांयदा। कूड़ी क्रिया करदा जाए वक्ख, डूँघी धार आप रखांयदा। लोआं पुरीआं भाण्डे करी जाए सक्ख, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। आप उग्घाड़ी आपणी अक्ख, आपे राह तकांयदा। एका रास फड़ी नथ्थ, आपे आपणी तनक लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वेला आप सुहांयदा। कर्म विचारा रिहा रो, अन्तिम पन्ध मुकाया। धर्म वेखे दूर दुराडा खलो, साचा घर ना कोई जणाया। कूड़ी क्रिया जगत होया मोह, साचा बीज ना कोई बिजाया। साचा जल अंमित किसे ना दित्ता चो, साचा फल ना कोई वखाया। अग्गे आवण वाला दर ना दिसे को, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, साचा हाली आप अख्वाया। साचा हाली हरि किरसान, आपणा बीज बिजांयदा। आपे राखी करे दो जहान, आपे वेखे वेख वखांयदा। आपे पवण पाणी कर प्रधान, आपे मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी

धारा आप बंधांयदा। सच किरसाणे हल चलाया, दिवस रैण प्रभाती। साची जोती सेव कमाया, आत्म हरि हरि पछाती। निरगुण धारा आपे जागी आपे सुत्ती, आपे दिवस आपे राती आपे मता पकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा लाया। जोती मात बणाए भत्ता, आपणी सेव लगाईआ। ना कोई ठंडा तत्ता, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। आपणे प्यार आपे मरता, ना दूसर वस्त वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। साचा भत्ता सिर रक्ख, उठी जोत सवाणीआ। साचा राह रही तक्क, किथ्थे गया वड किरसाणीआ। पुरख अगम्मा उत्तों आया नठ्ठ, मिल्या मेल साचा माहीआ। सचखण्ड दुआरे साचा उठ, वेख वखाणे दो जहानीआ। निउँ निउँ सीस निवाए कमलापत, होई सुघड़ स्याणीआ। आपणा पकया दए अग्गे रक्ख, खोली गंढु वखानीआ। पुरख अबिनाशी लए चुक्क, आप आपणा मुख छुपाणीआ। मंगे जल पुरख समरथ, एक एकँकारा ठंडा पाणीआ। जोती नार जोड़े हथ्थ तेरे दर, तेरे घर साचा खूहा इक्क वखाणीआ। महिमा कोई ना सके कत्थ, हरि वेखे गुण निधानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाए शब्द इक्क नौजवानीआ। सच किरसान नौजवान, एका शब्द अलांयदा। सुण सुवाणी कर ध्यान, साचा बचन सुणांयदा। तेरा मेरा इक्क ज्ञान, दूजी धार ना कोई वखांयदा। तेरा दरस मेरी प्रीत, मेरा दरस तेरी तृखा बुझांयदा। दोहां विचोला अमृत मेघ देवे बरस, सति सरूप अख्वांयदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, तेरा भत्ता तेरा शाहो तेरे रंग रता, आपणे मुख लगांयदा। बीज बीज्जया आपणे वत्ता, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। आदि निरँजण वड किरसाना, आपणी किरत कमाईआ। जोती शक्ती हरि गिरधारा, साची सेव कमाईआ। सुघड़ सुआनी घर संभाले बाला, शब्द सुत्त झोली पाईआ। सतिगुर पूरा आपे देवे पीणा खाणा, आपे रिज़क सबाईआ। सच घर बैठ एका वेखण धुर टिकाना, साचे घर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा बीज उगाईआ। साचा बीज गया फुल, हरि साचा आप उपजाया। आपे तोड़े तोड़ तुड़ाए कमलापाती पावे मुल, जोती नारी मालन नाल रलाया। दोहां रक्खी इक्को कुल, एका सगन मनाया। उत्ते अमृत आपे डोल, सच सुगंधी आप भराया। विच्चों प्रगट्या कँवल फुल, सच प्यारा मेल मिलाया। पारब्रह्म अपणी जोती आपे भुल्ल, आप आपणा बीज बिजाया। आपे तुल्या आपणे तुल, आपणा कंडा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत नारी वेखे घर, हरि साचा कन्त सुहाया। नारी कन्ता इक्क प्यार, एका घर सुहांयदा। करता पुरख खेल अपार, निरगुण नूर वटांयदा। साची सेजा हरि उज्यार, साचा सगन मनांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, आप आपणा मेल

मिलांयदा। साची नारी कर श्रृंगार, फूलन कलीआं हार गुंदांयदा। आपे गुंदे वारो वार, दिस कोई ना आंयदा। कँवल फुल्ल आप आपणा लए उभार, आप आपणा रंग चमकांयदा। अबिनाशी करता हो त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवेसा कर करतार, विष्नूं नाउँ धरांयदा। अमृत भरया ठंडी ठार, कँवला कँवल टिकांयदा। साचा बीज कर त्यार, आपे बाहर कढांयदा। खिड़े फुल्ल सच्ची गुलज़ार, हरि साचा माली आप लगांयदा। आपे वेखणहार बहार, चारों कुंट फेरी पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म उत्पत कर आप आपणा दए सहार, रक्त बूंद आप आपणी वखांयदा। एका शब्द दए हुलार, एका बूझ बुझांयदा। ब्रह्म सरूप ढहि पए दुआर, पारब्रह्म सीस टिकांयदा। लोकमात रहिणा ख़बरदार, हरि साचा सेवा लांयदा। ब्रह्म रोवे ज़ारो ज़ार, दोए दोए जोड़ सीस झुकांयदा। तेरा लग्गे सच दरबार, दूजा दर ना कोई वखांयदा। पुरख अबिनाशी बन्ने धार, दे हुक्म जनाब तेरा बीज बीजे सर्ब संसार, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। वसणहार घर तीजे, चौथा दर खुलांयदा। चौथे जुग आप पतीजे, आप आपणा वेख वखांयदा। ब्रह्मा तेरी फेर करे रीझे, तेरा विछोड़ा आप कटांयदा। गुरसिखां गुरमुखां अन्दर सोहँ नाम बीजे, आप आपणा तेरी झोली पांयदा। जन भगतां करे अन्तिम हथ्थीं रीझे, तन श्रृंगार आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार साचा दर, फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। फुल फुलवाड़ी आपे लाए, हरि वाली दो जहानीआ। एका साचा बीज बिजाए, खेले खेल पुरख सुल्तानीआ। हाल बेहाली खेल खिलाए, भेव अभेदा भेव छुपानीआ। वड किरसाणी वंड वंडाए, वंडे वंड कर मेहरवानीआ। लक्ख चुरासी फल लगाए, आपे होया जाणी जाणीआ। तिक्खी दातर रिहा कराए, सोहँ शब्द चाढ़े पाणीआ। करता कादर खेल रचाए, आदि जुगादी खेल महानीआ। एको वक्त एका वेला एका पुरख एका वड वखाए, सुंञा करे जगत जीव निधानीआ। साची हाढ़ी सतारां हाढ़ी लेखे लाए, जुग करता आप भगवानीआ। धर्म राए दे हट्ट विकाए, कंडा रक्खे बेईमानीआ। गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले साची गंढु बंधाए, बीज रक्खे आप आपणे घर छुपानीआ। सतिजुग साचे हो प्रतक्खे, धरत देवे सच निशानीआ। नौ खण्ड पृथ्मी गुरमुख गुरसिख हरि सन्त बीज साचा रक्खे एका गाए शब्द साची बाणीआ। इक्क दूजे वल कोई ना तक्के, ना कोई मारे बिरहों तीर कानीआ। एका आपणी छत्र छाया हेठ रक्खे, एका होए प्रतक्ख मेहरवानीआ। एका कीमत पाए अलक्खणा अलक्खे, लक्ख करोड़ी कोई ना दीसे बाणीआ। गुरमुखां राह आपे तक्के, ना भुल्ले दो जहानीआ। चरन कँवल वखाए मदीने मक्के, साचे मन्दिर गुरुदुआर एका एक निगहबानीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणाए भैण भाई सके, एका नार बणाए, सच सुवाणीआ। लज्ज पति सर्ब दी रक्खे, खाली गोद ना कोई वखाणीआ। सन्त सुहेला जुग जुग पर्दा ढके,

आप आपणी देवे नाम निशानीआ। गुरसिख साचे आपणी गोद आपे रक्खे, देवे पद इक्क निरबानीआ। दूसर दर ना कोई टेकन जाए मथ्थे, एका पुरख मिले पुरख अकाल निगहबानीआ। धरती जल अन्दर मेघ रसना जल कोई ना लक्के, अमृत आत्म देवे ठंडा पाणीआ। जगत मट्ठ ना कोई वजाए ढोल ढमक्के, अन्दर अनहद वज्जे साचा तालीआ। आपणा सीस हरि जगदीस गुरमुखां चरनां अग्गे रक्खे, अग्गे बणे आप सवालीआ। कर्म धर्म शरम वरन बरन खाण धक्के, प्रभ चले चाल निरालीआ। बिन हरि निरँकार दूसर घर ना कोई तक्के, ना कोई पूजे जोत ज्वालीआ। एका मन्दिर एका अन्दर एका गुरुदुआर एका मस्जिद एका मट्ठ एका घर बहिण सभे, एका दरस दिखाए आप आपणा मेल मिलानीआ। पंज तत्त धरनी कोई ना दब्बे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आदि जुगादि बीजणहारा साचा बीज वेख फुल फुलवाड़ी आप आपणा निगहबानीआ।

३० पोह २०१५ बिक्रमी बख्शीश सिंघ दे घर कादराबाद

निरगुण रूप सति, सति समाया। आप आपणा कर उत्पत, आपे वेख वखाया। आपे परम पुरख प्रभ कमलापात, आपे नारी वेस वटाया। आपे आपणा अन्तर बीजे आपणे वत, आपे खेल खिलाया। आपे जाणे आपणी गति मित, आप आपणे भेव समाया। आपे आपणी रक्खे पति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। उत्पत करनेहारा आदि निरँजण, एका एक एकँकारया। आपे साजण आपे सज्जण, हरि आपे मीत मुरारया। आप चलाए आपणा जहाज़न, आपे वेखे पार किनारया। आप संवारे आपणा काजन, आप आपणा कर्म कमा रिहा। आप आपणा राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा रिहा। हरि का रूप अपर अपार, आपे आप उपाईआ। ना कोई पावणहारा सार, ना कोई वेख वखाईआ। ना कोई लेखा लिखे संसार, ना कोई कलम चलाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे उत्पत आपे नाउँ धराईआ। आपणा आप आपे रक्ख, आपणी कल वरतांयदा। अबिनाशी करता हो प्रतक्ख, आपणा दरस दिखांयदा। आप आपणा करे वक्ख, आप आपणी वंड वंडांयदा। सर्ब कला आपे समरथ, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। आपे गाए आपणी कथा अकथ, आपणा शब्द अल्ांयदा। आपे देवे आपणी वथ्थ, आपणा अंग कटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म खोले अक्ख, आप आपणा नूर चमकांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर रक्ख, दिवस रैण डगमगांयदा। आपणे पर्दे

११६ ०८

आपे ढक, आपणा मुख छुपांयदा। खेले खेल अलखणा अलक्ख, भेव कोए ना पांयदा। ब्रह्म विष्न शिव कोई ना चले वस, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग राह रिहा दस्स, आपणा कर्म कमांयदा। लोआ पुरीआं आपे नस्स, ब्रह्मण्ड खण्ड फिरांयदा। आपे जाणे आपणा जस, सिफ्त सलाही आप अख्वांयदा। आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां हिरदे अन्दर वस, आप आपणा भेव खुलांयदा। कोटन कोटि प्रकाश करे रवि ससि, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे उत्पत कमलापत, लक्ख चुरासी आप समांयदा। आदि निरँजण आत्म ब्रह्म, आपणी अंस बणाईआ। आपे देवणहारा जन्म, आपे लए मिलाईआ। आपे संग रलाए कर्म, कर्म कर्मा लेख लिखाईआ। आप जणाए आपणा धर्म, आपे दए वड्याईआ। आपे वेखे वरन बरन, आपे खेल खिलाईआ। आप बुझाए आपणी सरन, जिस जन दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ तरनी तरन, तारनहार आप हो जाईआ। गुरमुख साचे करनी करन, क़िया किरत इक्क वखाईआ। खोल्ह्णहार हरन फरन, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। आप चुकाए मरन डरन, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कराईआ। सन्त सुहेले तेरा रंग, हरि साचा आप रंगाईआ। सच सिँघासण बैठ पलँघ, सचखण्ड दुआरा इक्क वेख वखाईआ। अमृत धारा एका गंग, चरन कँवल हरि वहाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, वड दाता बेपरवाहीआ। भगतन मीता वस्सया संग, विछड़ कदे ना जाईआ। आपणे अस्व कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण पाईआ। शाह अस्वारा हरि मलँघ, दिस किसे ना आईआ। चौदां लोकां रिहा लँघ, त्रिलोकी चरना हेठ दबाईआ। भगत दुआरा रिहा लँघ, हरि वड वड्डा वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिजन साचे लए तराईआ। भगत वछल हरि गिरधारा, आदि जुगादि समाया। नित नवित्त लै अवतारा, हरिजन साचे लए तराया। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, भेव किसे ना पाया। एका एकँकारा खेल न्यारा, आप आपणा रिहा कराया। आपे निरगुण नूर कर उज्यारा, आप आपणा डगमगाया। आपे थिर घर बैठ सच्चे दरबारा, सच सिँघासण आप सुहाया। आपे शाहो भूप सिक्दारा, सच सुल्तान आप अख्वा रिहा। आपे जाणे आपणी धारा, ना कोई संग रला ल्या। इक्क अकल्ला खेल अपारा, अकल कला वरता रिहा। आदि निरँजण हो उज्यारा, अबिनाशी पुरख अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा रिहा। आदि पुरख निरँजण करता अबिनाशी, एका एक अख्वाईआ। जुग जुग खेले खेल तमाशी, सतिगुर नाउँ धराईआ। गगन मण्डल पावे रासी, लोक परलोक वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरे करया वासी, नूर नूर करे रुशनाईआ। पावे सार पृथ्मी आकाशी, आकाश पाताला फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण सर्ब गुण दाता, एका एक अख्वांयदा। पुरख अकाल पुरख बिधाता, एका जोत डगमगांयदा। आपे जाणे आपणी जाता, आपे आपणा धर्म रखांयदा। आपणी कल आप पछाता, कुलवन्ता नाउँ धरांयदा। आपे पिता आपे माता, आपे बालक रूप अख्वांयदा। आपे देवणहारा दातां, आपे झोली अग्गे डांहयदा। आपे बैठा रहे इक्क इकांता, आदि जुगादि रहांयदा। आपे आपणी पुच्छणहारा वाता, हरि आपे आपणी दया कमांयदा। आपे पुरख पुरख समरथा, समरथ पुरख अख्वांयदा। आपे वेख अनाथ अनाथां, नाथ अनाथी आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, जुग जुग आप अलांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथवाही दिस ना आंयदा। आपे होए सगला साथा, साचा संग निभांयदा। आपे होए त्रिलोकी नाथा, त्रै त्रै लोक वेस वटांयदा। आपे फोले चौदां हाटां, चौदां हट्ट मूल चुकांयदा। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाटा, नट नटूआ सांग वरतांयदा। आपे आदि शक्ति जोत लिलाटा, आपे नूरी नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख सुल्ताना, एक एक अख्वाईआ। खेले खेल दो जहाना, भेव कोई ना पाईआ। आप झुलाए सच निशाना, सचखण्ड दुआरा वेख वखाईआ। राग अलाए सच तराना, घर साचे वज्जे वधाईआ।

✪ पहली माघ २०१५ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड टांगरा ज़िला अमृतसर ✪

अदि पुरख हरि भगवन्ता, आदि जुगादि समाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, पुरख अकाल वड वड्याआ। जोती नूर हरि जोत जगंता, भेव कोई ना पाया। सच दुआरे आप रहंता, अगम्म अगम्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण नाउँ धराया। निरगुण नाउँ हरि निरँकार, एका एक एकँकारया। आप आपणा कर आकार, आपे वेखे पसर पसारया। आपे जोत शब्द धार, आप आपणी बणत बणा रिहा। आपे लोआं पुरीआं महल्ल उसार, गगन पतालां आप उपा रिहा। आपे ब्रह्मा शिव विष्न सेवादार, सेवक सेवा आप करा रिहा। आपे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द कर प्यार, आप आपणे रंग रंगा रिहा। आपे रवि ससि चन्न सतार, मण्डल मण्डप आप सुहा रिहा। आपे निरगुण नूर कर उज्यार, आप आपणा डगमगा रिहा। आपे थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण आप सुहा रिहा। आपे शाहो भूप सिक्दार, सच सुल्तान आप अख्वा रिहा। आपे जाणे आपणी धार, ना कोई दूसर संग रला ल्या। इक्क अकल्ला खेल अपार, अकल कला वरता रिहा। आदि निरँजण हो उज्यार, अबिनाशी पुरख आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा रिहा। एका एक आदि निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। दाता दानी दर्द

दुःख भय भंजन, आप आपणा खेल खिलाया। आप आपणा बणया सज्जण, घर साचे मेल मिलाया। अलख अगोचर अगम्म अथाह, आपे करे आपणा मजन, आपे आपणा ताल सुहाईआ। बेऐब परवरदिगार सच मलाह, मुकामे हक्क इक्क ख़ुदाया। नूरी नूर नूर अल्ला, अलाही नूर भेव ना राया। सच हदीस रिहा सुणा, एका नाअरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग एका एक अख्वाया। एकँकार इक्क अकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। आपे वस्सया सच महल्ला, उच्च महल्ल अटल मिनार वड वड्याईआ। आपणी जोती आपे रला, निरगुण निरगुण विच समाईआ। आपणे दीपक आपे बल्ला, आपणी करे आप रुशनाईआ। आपणा मेटे आपे सला, ना कोई दुरमति रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी पुरख वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी पुरख हरि भगवाना, एका रूप समांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग नाउँ धरांयदा। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। आपे मारे सच निशाना, साचा चिल्ला आप उठांयदा। आपे वसे सच मकाना, थिर घर साचे डेरा लांयदा। आप उडाए सच बिबाणा, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे शाहो भूप सुल्ताना, रंक राजान आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वसे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर सुहञ्जणा हरि निरँकार, एका एक उपाईआ। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई वखाईआ। ना कोई बाडी करे त्यार, ना कोई बणत बणाईआ। लोआं पुरीआं वस्सया बाहर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। आपे जाणे आपणी कार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे वस्सया धुँधूकार, दीप उजाला आप कराईआ। आपे पुरख आपे नार, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपे कन्त आपे भतार, सखा सखाई आप हो जाईआ। आपे जाए आपणी धार, आपे धार चलाईआ। एकँकार कर आकार, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण बणत बणाईआ। लोआं पुरीआं दए सहार, ब्रह्मण्डां खण्डां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका खेल करे रघुराईआ। एका खेल हरि भगवान, आपणा आप कराया। आपे होया जाणी जाणा, भेव ना कोई पाया। आपे पीणा आपे खाणा, त्रै त्रै तृप्त कराया। आपे दाना आपे बीना, बीना दाना आप हो जाईआ। आपे वसे लोका तीनां, अवण गवण आप समाया। आपे रंग रक्खे भीन्ना, आप आपणा ल्ए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर एका एक कराया। निरगुण नूर सच सिक्दार, सच तख्त सुल्तानया। सच सिँघासण अपर अपार, हरि बैठा वड मेहरवानया। आपे जाणे आपणी कार, आप आपणा खेल खिलानया। देवे हुक्म अपर अपार, शब्दी शब्द सुणानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जगंत हरि भगवन्त, आप

आपणा वेस वटानया। जुग जुग करता वेस कर, आपणी कार कमांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव शक्ती कर, आपे आसण लांयदा। आपे गणपति गणेश धर, आपे पूज पुजांयदा। आपे नर नरेश दर, नर नरायण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एका घर, घर साचा आप सुहांयदा। घर सुहाया हरि करतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। एका रंग एका रूप अपार, एका रूप समाईआ। एका दर इक्क दुआर, एका घर लगाईआ। ना कोई दूसर दिसे मीत मुरार, ना कोई संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला आप हो जाईआ। आपे जोती जोत उजाला, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आपे पुरख पुरख अकाला, अकाल मूर्त आप अख्वाईआ। आपे दीनां बंधप दीन दयाला, दया निध नाउँ रखाईआ। आपे चले जुग जुग अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पाईआ। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। आपे आपणी घाल रिहा घाला, साची घाल आप घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप कर, दर दरवेश आप अख्वाईआ। पुरख अबिनाश दर दरवेश, एका रूप समाया। आपणे घर करे अदेस, आपे मंगण आया। आपे बणया नर नरेश, आपे हुक्म चलाया। आप आपणा आपे वेख, आप आपणा मेल मिलाया। आपे लिखणहारा लेख, आपे दए मिटाया। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। बाल बिरध जवान ना कोई वरेस, एका रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल अपार, लेखा लिख्त विच ना आया। एकँकारा पुरख अनादी, एका एक अख्वाया। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म अख्वाया। एका रूप आदि जुगादी, आपणा वेस वटाया। एका मोहण माधव माधी, मुकंद मनोहर इक्क अख्वाया। एका कन्त होए सुहागी, एका नार प्रनाया। एका प्रीत एका दर लागी, एका तोड़ निभाया। एका हँस एका कागी, एका चोग चुगाया। एका रक्खणहारा लाजी, लाजावन्त नाम ख़ुदाया। एका साजण रिहा साजी, एका मेट मिटाया। एका खोलणहारा पाजी, एका भेव छुपाया। एका अस्व एका ताजी, शाह अस्वार इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे डेरा लाया। साचा घर हरि सुहाए, हरि साची वड वड्याईआ। वेद कतेब कोई भेव ना पाए, ना कोई लेखा लेख लिखाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा शिव रहे राह तकाए, दिवस रैण नैण उठाईआ। कोटन कोटि गण गंधर्ब रहे अलाए, आप आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घर वस्सया बेपरवाहीआ। बेपरवाही हरि हरि मीत, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीत, आपणी कार कमांयदा। शब्द अनादी साचा गीत, लोकमात आप उपजांयदा। वेखणहारा हस्त कीट, लक्ख चुरासी विच समांयदा। आपे वस्सया

धाम अनडीठ, भेव कोई ना पांयदा। आपे मिट्ठा कौड़ा रीठ, आपे अमृत रस अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा धुर दरबारा, हरि साचा अलक्ख जगांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अगाध बोध अल्लांयदा। नर नरायण भेव न्यारा, निरगुण आपणी धार चलांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे अन्तिम ढांयदा। घड़न भन्नणहार खेल न्यारा, घड़े भन्ने आपणे चोज वखांयदा। आपे सभ तों वसे न्यारा, आप आपणे विच समांयदा। जागरत जोत हो उज्यारा, अन्तिम डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख निरँजण नाउँ रखांयदा। अलख निरँजण हरि भगवन्त, अकल कला कल धारीआ। आपे साध आपे सन्त, गुर रूप आप अख्वा रिहा। आपे जीव आपे जन्त, आपे घट घट डेरा ला रिहा। आपे काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, आपे पंज तत्त लेखा ला रिहा। आपे खेले खेल अगणत, लेखा गणत ना कोई गणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बणा रिहा। जुग जुग धार हरि करतार, आपणी आप चलाईआ। ब्रह्मा वेता कर त्यार, शब्दी शब्द जणाईआ। विष्नूं लाया सेवादार, साची सेव कमाईआ। शिव शंकर रिहा सँघार, आपणी आपणी चाल चलाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता तेरी धार, प्रभ साचे आप चलाईआ। त्रैगुण तेरा करया पार, पारब्रह्म करी कुड़माईआ। साचा मन्दिर इक्क उसार, नौ दर खोल्ह खुल्हाईआ। आपे वस्सया गुप्त ज़ाहर, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। दस्म दुआरी बन्द किवाड़, आपे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखाईआ। जुग करता करनेहारा, पारब्रह्म अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पारा, हरि साचा मूल चुकाया। कलिजुग कूड़ा कर पसारा, कूड़ा डंक वजाया। जूठ झूठ मीत मुरारा, हरि सगला संग निभाया। मेल मिलाए काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तृष्ना लड़ बंधाया। हउमे हँगता भर भण्डारा, सृष्ट सबाई झोली पाया। आपे साध सन्त गुर पीर अवतारा, पीर दस्तगीर शाह हकीर वेस वटाया। आपे मुल्ला शेख़ काज़ी लाए नाअरा, आपे तकदीर तदबीर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी चाल चलाया। चाल अवल्लड़ी हरि आपणी आप चलाईआ। कूड़ी क्रिया कर पसार, चारों कुन्ट तकाईआ। दहि दिशा एका धार, भुल्ल रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रंग तेरे तन आपे रिहा चढ़ाईआ। कलिजुग रंग हरि रंगाया, आपणी दया कमाईआ। काला सूसा तन छुहाया, वेखे सर्ब लोकाईआ। ईसा मूसा मेल मिलाया, एका नाअरा लाईआ। अञ्जील कुराना आप पढ़ाया, तीस बतीस गाईआ। ख़लक

खुदाई वेख वखाया, ख़लक ख़ुदा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज़क रहीम आप हो जाईआ। अज़मतो करमतो भेव ना राया, आप आपणा मुख लगाईआ। मिहबान बीदो बी खैर ख़ुदाया, बी खैर या अल्ला तेरी वड वड्याईआ। सच मुसल्ला नाल रलाया, खाकी खाक टिकाईआ। पीर दस्तगीर वेस वटाया, मुख इक्क चीर उठाईआ। जगत नक़ाब पर्दा पाया, नेत्र नैण छुपाईआ। पुन्न सवाब ना कोई रखाया, हक्क हकीकत दए सलाहीआ। शाह नवाब आप हो जाया, बेऐब परवरदिगार नाम ख़ुदाईआ। एका कलमा रिहा पढ़ाया, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे खलक ख़ुदाईआ। ख़लक ख़ालक आप समा, आपणा सगन विचारया। अल्ला राणी नाल रला, ऐनलहक्क लाए नाअरया। साचा बण आप मलाह, उम्मत उम्मती बेड़ा चला रिहा। वेखणहारा बेपरवाह, संग मुहम्मदी मेल मिला रिहा। चार यारी पकड़े बांह, चारे दर भुला रिहा। अज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफील दर आप बहा, आप आपणा हुक्म सुणा रिहा। सेवक सेवा साची ला, दिवस रैण कर्म कमा रिहा। चौदां तबकां चौदां हट्टा चौदां लोकां फोल फुला, दूई द्वैती पर्दा लाह रिहा। एका नाअरा आपे ला, एका एक सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नूरो नूर नूर उपा ल्या। नूर अलाही सच ख़ुदा, हरि साचे रूप वटाया। निरगुण निरगुण होए जुदा, निरगुण निरगुण विच समाया। निरगुण निरगुण आपे होए फिदा, निरगुण आपणा आप वार वखाया। आपणी रबाब आप वजा, अहिबाब रिहा सुणाया। आबे हयात रहे हथ्थ रखा, एका मुख लगाया। दो दो आबा मेल मिला, वेखणहार आप हो जाया। साचे घोड़े चरन रकाब आप टिका, आपे रिहा दौड़ाया। पाकी पाक वेख ख़ुदा, बिस्मिल रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। परवरदिगारी हरि हरि खेला, आपणा खेल खिलांयदा। खलक ख़ुदाई लग्गा मेला, ना कोई धीर धरांयदा। ना कोई गुरु ना कोई चेला, पीर दस्तगीर ना कोई अख्वांयदा। जीव जन्त पाए आपणी बन्दीखाना जेला, साचा फंद ना कोई कटांयदा। घर घर दीवा बत्ती चिराग पायण तेला, आत्म जोत ना कोई जगांयदा। घर घर भेटा देवण बक्करा छेला, आपणी भेट ना कोई चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, सच सिँघासण आसण लांयदा। सच सिँघासण आसण ला, हरि साचा वेख वखांयदा। वेखणहारा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सारे थाँ, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज फोल फोलांयदा। आदि जुगादी वंडी वंड, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपे मुख भवांयदा। आपे नार दुहागण रंड, आपे कन्त हंढांयदा। आपे देवणहारा दंड, आपे भगत तरांयदा। आपे वढ्ढणहारा कंड,

आपे गले लगांयदा। आपे चण्ड आप प्रचण्ड, आपे शब्द उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग वरते आपणी कल, हरि साचे जोत जगाईआ। निरगुण जोत वल छल, भेव कोए ना पाईआ। वसणहारा जल थल, जल थल रिहा समाईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी आत्म अन्तर सच सिँघासण बैठा मल्ल, दिस किसे ना आईआ। सच सनेहड़ा आपे घल्ल, आपे रिहा सुणाईआ। एका वस्सया धाम अटल, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। खेले खेल अज्ज कि कल, खेलणहार आप अख्वाईआ। आपणी जोती आपे रल, साचा शब्द डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर हरि हरि वेख, आपणी दया कमांयदा। जोती जामा धारे भेख, भेव कोई ना पांयदा। आपे दाता दानी दस दस्मेस, दर दर अलख जगांयदा। आपे नानक निरगुण नर नरेश, आपे नाम सति मन्त्र दृढ़ांयदा। आपे फिरे देस परदेस, आपे साचे धाम सोभा पांयदा। आपे होए रिखी केस, आपे गवर्धन हथ्थ उठांयदा। आपे लावणहारा मेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा आपणे हथ्थ रक्ख, हरि साचा कर्म कमांयदा। आदि जुगादि जुग जुग देवे आपणी वथ्थ, आपणी धार बंधांयदा। लक्ख चुरासी पावे नथ्थ, चारों कुन्ट फिरांयदा। शब्द जणाई अकथना अकथ, एका एक रखांयदा। दो जहानां चलाए रथ, रथ रथवाही वेस वटांयदा। सर्ब कला आपे समरथ, हरि हरि साची धार बंधांयदा। जन भगतां दे कर रक्खे हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जगत विकारा देवे मथ, मन मति दुरकांयदा। इक्क दुआरा तीर्थ अट्ठ सट्ठ, आत्म सर सरोवर आप नुहांयदा। शब्द जणाई पूजा पाठ, अनहद ताल वजांयदा। आत्म अन्दर मारे ठाठ, साचा गुण वखांयदा। निरगुण जोत जगे लिलाट, हरि साची आप जगांयदा। आप उतारे आपणे घाट, पार किनारा आप वखांयदा। लेखे लाए काया माट, आप आपणा पंज तत्त मूल चुकांयदा। लहिणा देण चुकाए आन बाट, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। तन लपेटे शब्द पट, पीत पीतम्बर इक्क सुहांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, आप आपणे रंग रंगांयदा। आप विकाए साचे हट्ट, चौदां हट्टां मुख भवांयदा। गुरमुख विरला अमृत रस ल्ए चट्ट,, मनमुखां हथ्थ ना आंयदा। जुग जुग पूरा करनहारा घाट, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। ज़िमी अस्माना पर्दा रिहा पाट, ना कोई मेट मिटांयदा। कलिजुग सुंञी दिसे खाट, सच विछाउणा ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वेखे वाट, अन्तिम पन्ध मुकांयदा। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। जूठा झूठा मोह चुकाउणा, माया ममता

रहिण ना पाईआ। काम क्रोध रहिण ना पाउणा, पंज तत्त ना करे कुड़माईआ। आसा तृष्ना ना किसे सताउणा, हउमे हँगता ना कोई रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना किसे मनाउणा, ना कोई पूज पुजाईआ। कलमा अमाम ना किसे पढ़ाउणा, कायनात दए जणाईआ। राम नाम ना किसे गाउणा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कान्हा कृष्ना मेल मिलाउणा, आपे रहे विच टिकाईआ। ईसा मूसा लेख चुकाउणा, अल्ला राणी दए दुहाईआ। संग मुहम्मद चार यार वेखे भाणा आपणे नैणां, आपणी मंग मंगाईआ। सदी चौधवी पाए गहिणा, तन शृंगार इक्क वखाईआ। उम्मत उम्मती भाणा सहिणा, देवणहार हरि सजाईआ। अन्तिम मन्नणा पए कहिणा, होणी मात जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत आपे रक्ख, आपणी कल वरताईआ। सर्ब कला हो प्रतक्ख, पंडत पांधे लए समझाईआ। शिव शंकर ना सके कोई रक्ख, बाशक तशका गलों लाहीआ। ब्रह्मा रोवे नेत्र अक्ख, नेत्र नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा भाण्डे सक्ख, प्रभ साचा आप कराईआ। चारों कुन्ट उडने कक्ख, ना सके कोई बचाईआ। सुरपति राजा इन्द होया वक्ख, तख्त ताज रहिण ना पाईआ। शिव शंकर प्रभ कढ्ढे धक्क, ब्रह्मे पर्दा देवे ढक, ध्रू प्रहलाद लाज लए रक्ख, आप आपणी गोद उठाईआ। लक्ख चुरासी नकेल पाए नक्क, लोकमात वेख वखाईआ। चार वरनां मारे धक्क, ना कोई सके बचाईआ। नानक लेखा गया लिख, ना कोई सके मिटाईआ। गुर गोबिन्द बणाए साचे सिक्ख, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आपणे नेत्र आपे पेख, आपे दए वड्याईआ। सच सुल्तान नर नरेश, घर साचे सिफ्त सलाहीआ। लोआं पुरीआं फिरे देस परदेस, दर दर अलख जगाईआ। अन्दर मन्दिर आपे रिहा वेख, आप आपणा मुख छुपाईआ। ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म करे आदेस, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ हँ ब्रह्म एका वेस, एका रंग रंगाईआ। आपे सुत्ता सेजा बाशक सेज, सांगोपांग हंढाईआ। आपे विष्नूं वंसी करे वेस, आपणी कुल तराईआ। आपे पारब्रह्म प्रभ करे आदेस, आदि पुरख वड वड्याईआ। अकाल मूर्त आप आपणी आपे वेख, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा डंक वजाईआ। नाम वज्जे साचा डंका, हरि साचे आप वजावना। आप उठाए राउ रंका, राज राजाना आप हिलावणा। आपे विष्नूं शिव ब्रह्म अन्दर वेखे पुरी घनका, घनक पुर वासी आप अख्वावना। आपे जोती नूर उजाला हरि गोपाला लाए तनका, दहि दिशा आप हिलावणा। आप उठाए जन जन जनका, मन का मनका आप भवावना। आप उपाए ब्रह्मा सुत्त सनक सनातन सन्त कुमार सनका, आपे बराह रिहा वटाया। आपे यज्ञे पुरख हाव गरीव खेल खिलाया। आपे नर नरायण होए बार अनका मारे डंका, आप आपणा ताल वजावना। आपे कपलमुन कढ्ढे शंका,

दत्ता त्रै आप समझावणा। आपे रिखभ देव लाए डंका, आपे पृथू वेख वखावणा। आपे मत्तस मोह मच्छ बणंका, कच्छप रूप आप वटावणा। आप मोहन मोहनी धार खेले आपणी अंका, अन्त किसे ना पावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटावणा। जुग जुग वेस हरि वटावणा, आपणी कल धारीआ। आदि जुगादी इक्क अख्वावणा, इक्क अकल्ला एकँकारीआ। नाम जहाजना इक्क चलावणा, आप आपणी आपे वारीआ। अस्व घोड़ा ताजा इक्क दौड़ावणा, शाहो भूप सच अस्वारीआ। राजन राजा आप हो जावणा, थिर घर बैठ सच्ची सिक्दारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे उज्यारीआ। निरगुण जोत निहकलंक, आपणी आप उपजांयदा। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणे दर सुहांयदा। आपे गाए आपणा छंत, आप आपणा राग अल़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका धाम सुहांयदा। पुरख अबिनाशी धाम न्यारा, एका एक उपाईआ। निरगुण जोत कर उज्यारा, बैठा बेपरवाहीआ। शब्द खण्डा फड़ दो धारा, आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गुर चेले वेख वखाईआ। गुर गुर चेला आपे वेख, आपणी दया कमाया। आपे दाता दस दस्मेस, दहि दिशा फेरी पाया। गुरमुख साजन नेत्र पेख, आपणे संग रलाया। आत्म अन्तर लाए मेख, ना कोई मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। निरगुण नाउँ नर निरँकार, निहकलंक रखाया। जोती जामा भेख अपार, दिस किसे ना आया। हर घट अन्दर कर पसार, बैठा डेरा लाया। जन भगतां देवे नाम अधार, आप आपणी बुझ बुझाया। रसना जेहवा गुण विचार, पवण स्वासी सेवा लाया। मन्दिर अन्दर खोल़ किवाड़, आपे कुण्डा लाहया। मेट मिटाए पंचम धाड़, शब्दी वेख वखाया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, सांतक सति कराया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नूरो नूर रखाया। सच वखाए धर्म अखाड़, अनहद मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ दलीप लए तराया।

✪ २१ माघ २०१५ बिक्रमी जागीर सिँघ दे घर पिण्ड सोहल गुरदासपुर ✪

आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका एकँकारया। आदि जुगादि जुग जुग पावे रासा, जुग जुग खेल अपारया। इक्क अकल्ला एकँकार आपे खेले खेल तमाशा, खेलणहार आप अख्वा रिहा। आदि अन्त ना होए विनासा, आपणी कल आप वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिला रिहा। खेलणहार पुरख अगम्म,

आदि जुगादि समाया। आपे जाणे आपणा कम्म, वेद कतेब ना किसे लिखाया। मात गर्भ ना पए जम्म, पवण स्वासा ना कोए चलाया। आपे जाणे आपणा नाम, आपे लए उपाया। आपे वस्सया साचे धाम, सच सिँघासण आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराया। आदि जुगादी इक्क अकल्ला, एका रूप समांयदा। आपे वसे सच महल्ला, घर साचा आप सुहांयदा। दीपक जोती एका बला, इक्क प्रकाश वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप अपणा मेल मिलांयदा। आपणा मेल हरि हरि मेला, आपे किरत कमाईआ। आपे गुरू गुर चेला, चेला गुर नाम रखाईआ। आपे सज्जण सज्जण सन्त सुहेला, आपे सतिगुर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, अकल कला अख्वाईआ। अकल कल पुरख अकाला, एक एकँकारया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पा रिहा। खेले खेल खेल निराला, खेलणहार आप अख्वा रिहा। जाणे जणाए दो जहानां, दो जहानी वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त एका एक अख्वा रिहा। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका रूप समाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आप उठाए साचे सन्ता, हरि साची बूझ बुझाईआ। आपे नारी आपे कन्ता, आपे सेज हंढाईआ। आप आपणी बणाए बणता, आपे वेख वखाईआ। आप चाढ़े रंग बसन्ता, आपणी चोली आप रंगाईआ। आपे जाणे महिमा अगणता, आपे आप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त वड वड्याईआ। वड वड्याई हरि समरथ, एका एकँकारया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। आपणे भगतां देवे साची वथ्थ, आप आपणा नाम जणा रिहा। सच दुआरे इक्क अकट्ट, सचखण्ड दुआर आप अख्वा रिहा। एका तीर्थ एका तट्ट, तट किनारा आप अख्वा रिहा। चौदां लोक एका हट्ट, हरि साचा आप खुल्हा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा चरन दुआरे रहे ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुका रिहा। आपे गेड़णहारा आपणी लट्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखा रिहा। आपे जाणे पूजा पाठ, अन्तर आत्म आप जणा रिहा। आपे चाढ़े औखे घाट, सच किनारा आप अख्वा रिहा। आपे बजर कपाटी देवे पाड़, दूई द्वैती मेट मिटा रिहा। आपे जोत निरँजण वेख लिलाट, निरगुण निरगुण आप चमका रिहा। आपे शब्द अगम्मी मारे साट, ताल तलवाड़ा आप वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस वटा रिहा। जुग जुग वेस हरि करतार, आपणा आप उपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, कलिजुग वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं पार किनार, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता बेपरवाहीआ।

हरि किरपा हरि जाणया, सतिगुर पुरख करतार। गुर सतिगुर मेल मेलानया, घर मेला हरि निरँकार। आत्म ब्रह्म पछानया, विछड़या संसार। घर मिल्या नाम निधानया, खुल्ह्या बन्द किवाड़। नाता तुट्टा पंज शैतानया, त्रैगुण अग्न ना लग्गे तत्ती हाढ़। सति सन्तोखी बद्धा गानया, बणया साचा लाड़। पाया पद इक्क निरबानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचे देवे वाड़। हरि पुरख सुल्तान शाहो भूप, सतिगुर नाम धराया। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख मेख ना कोई लगाया। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए मिलाया। सतिगुर पुरख दीन दयाल, गुर सतिगुर नाम धराईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, जुग जुग मेल मिलाईआ। शब्द गुर बण दलाल, घर घर अलख जगाईआ। अमृत आत्म नुहाए साचे ताल, दुरमति मैल गंवाईआ। इक्क वखाए बेहंगम चाल, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। फल लगाए काया डाल्ह, साचा मेवा फल लगाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे शाह आपे कंगाल, गुरमुखां नाम खजाना दए वरताईआ। अन्दर मन्दिर वजाए ताल, अनहद सेवा लाईआ। जोत निरँजण दीपक बाल, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शब्दी शब्द आपे भाल, गुर सतिगुर संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाम वड्याईआ।

१२६ जुग करता हरि करनेहारा, आदि पुरख अख्वाया। जन भगतां मेला विच संसारा, जुग जुग करदा आया। निरगुण रूप १२६

०८ लै अवतारा, सरगुण मेल मिलाया। सरगुण बन्ह्ने साची धारा, लोकमात राह चलाया। शब्द विचोला खेल न्यारा, दिस किसे ना आया। अन्दर मन्दिर बैठ महल्ल अटल उच्च मुनारा, घर घर विच डेरा लाया। जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़ा, आप आपणा दरस दिखाया। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ा, दूर नेड़े ना कोई जणाया। धुर दरगाही साचा लाड़ा, थिर घर बैठा बेपरवाहया। वेख वखाए बहत्तर नाड़ा, पंज तत्त फोल फोलाया। मन मति बुध कढ्ढे हाढ़ा, निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साजन लए तराया। हरिजन हरि हरि मीतड़ा, परम पुरख करतार। रंगणहारा काया चीथड़ा, रूप अगम्म अपार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, दिस ना आए विच संसार। मिट्ठा करे कौड़ा काया रीठड़ा, आप आपणी किरपा धार। आपे पतित आप पुनीतड़ा, पतित पापी लए तार। ना कोई मन्दिर ना मसीतड़ा, काया अन्दर गुरुदुआर। जिस जन हरि सतिगुर रक्खया चीतड़ा, सो जन उतरे पार। हरिजन हरि भाणा लग्गे मीठड़ा, मनमुख विख्या रस रहे उचार। मानस जन्म गुरमुख विरले जीतड़ा, लक्ख चुरासी ना होए ख्वार। त्रैगुण तत्त पंज ना तपे अंगीठड़ा, मिल्या मेल एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले गुरु गुर

चेले इक्क सुहाए बंक दुआर। बंक दुआरा हरि सुहञ्जणा, एका जोत नूर रुशनाईआ। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम पाए अंजना, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। चरन धूढ़ कराए मजना, अठसठ मूल चुकाईआ। दो जहानां पर्दा कजना, जो जन रहे सरनाईआ। काया चोला सभ ने तजणा, गुर पीर अवतार थिर कोई रहिण ना पाईआ। साधां सन्तां भाण्डा भज्जणा, तत्व तत्त रहिण ना पाईआ। बिन गुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, अग्गे धर्म राए दए सजाईआ। आपे वेखणहारा मक्का काअबा हाजी हजना, काया महिराब फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका रिहा सुणाईआ। शब्द डंक अपर अपार, हरि हरि साचे आप वजाया। ब्रह्मा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, जल जल धारा धीर ना कोई धराया। शिव शंकर बाशक तशका गलों लाहे हार, वेला अन्तिम आया। करोड़ तेतीसा करे विचार, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाया। वरन बरन ना कोए प्यार, साची सरन ना कोई तकाया। नाता तुट्टा मुहम्मदी यार, अल्ला राणी मुख शरमाया। राम नाम ना कोई प्यार, सीता सुरती राम शब्द ना कोए मिलाया। गीता ज्ञान ना कोए आधार, राधा कृष्न ना वेख वखाया। वेद व्यासा ना कोई धार, पुराण अठारां ना मूल चुकाया। कलिजुग कूड़ा जोद्धा सूर बली बलकार, आप आपणा खेल रिहा खलाया। नानक निरगुण बण लिखार, सरगुण वेख वखाया। गोबिन्द मेला विच संसार, दोहां विचोला आप निरँकार, शब्दी ढोला एका गाया। सति नाम कर उज्यार, चार वरनां आप प्रनाया। एका जोती दस अवतार, दहि दिशा वेख वखाया। वरन गोती वस्सया बाहर, अलख निरँजण वड वड्डी वड्याआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, नाड़ी चमड़ा वेस वटाया। दमड़ी दम ना कोई वणज वपार, सरसे गया रुढ़ाया। हरि सज्जण पाया इक्क हरि करतार, सूलां सथ्थर हेठ विछाया। एका दूजा भउ निवार, नानक निरगुण नज़री आया। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर नूर दरसाया। शब्दी शब्द शब्द जैकार, शब्दी ढोला एका गाया। साचा सुत्त सुत्त दुलार, घर साचा वेख वखाया। अबिनाशी अचुत्त पारब्रह्म आप निरँकार, निज धारा रिहा चलाया। शब्द सुनेहड़ा साचे यार, अन्दर मन्दिर आप गाया। मिल्या माही सांझा यार, सगल सृष्टी पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लहिणा आपे देणा आपे मूल चुकाया। हरि हरि लहिणा हरि हरि देणा, हरि हरि मूल चुकाईआ। हरि हरि वेखे आपणे नैणां, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। हरि हरि धाम अवल्ले आपे बहिणा, थिर घर साचा धाम सुहाईआ। हरि हरि लक्ख चुरासी वहाए आपणे वहिणा, कलिजुग कूड़ी वड वड्याईआ। मनमुखता खाए मौत लाड़ी डायणा, चारों कुन्ट फिरे जगत दुहाईआ। नाता तोड़े भाई भैणां, सगला संग ना कोए निभाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले मात रहिणा, कूड़ी

क्रिया दए मिटाईआ। नानक सतिगुर धन पाया गहिणा, शब्द चोली इक्क रंगाईआ। गोबिन्द गुर मन्नया कहिणा, सच खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी बणत बणाईआ। आपणी बणत आप बणा, आपणी कल वरतांयदा। आपणा लेखा आप लिखा, आपे पूर करांयदा। आपणा भरम भुलेखा आपे पा, आपे भरम गढ़ तुड़ांयदा। आपणा रूप धारी केसा आप वटा, मूंड मुंडाया आप हो जांयदा। दस दस्मेसा निरगुण जोत आप अख्वा, पूत सपूता नाउँ धरांयदा। साची चोटी आप चढ़ा, घर साचे मेल मिलांयदा। जगत वासना खोटी वेख वखा, आपणा भेव खुल्हांयदा। अलख निरँजण ढोला गा, आपणा आप उपांयदा। गोबिन्द गुर दए सलाह, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। अन्तिम प्रगट होवे बेपरवाह, लोकमाती वेस वटांयदा। वसणहारा सच ग्रां, सम्बल नगरी नाउँ रखांयदा। साढे तिन्न हथ्थ बणत बणा, निरगुण सरगुण विच टिकांयदा। जोत सरूपी देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आपे पिता आपे माँ, आपे बाल बिरध हो जांयदा। आपे नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाँ, सत्तां दीपां फोल फोलांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां दस्से सच नयाँ, बीस बीसा आप अख्वांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन सरनाई आंयदा। निथाव्याँ देवणहारा साचा थाँ, सतिगुर पूरा सो अख्वांयदा। वीह सद इक्की नौ खण्ड पृथ्मी जीआं जन्तां आपे पकड़े बांह, जगत जगदीस दया कमांयदा। साधो सन्तो भुल्लो ना, निहकलंक नरायण नर जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा घर घर, घर घर विच फोल फोलांयदा। घर विच घर घर विच ताकी, हरि साचे बणत बणाईआ। घर विच अस्व घर विच राकी, घर विच शाह सवार बैठा डेरा लाईआ। घर विच अमृत घर विच साकी, घर घर विच रिहा प्याईआ। घर विच बैठा देवणहारा बाकी, भुल्ल रहे ना राईआ। घर विच मनूआं होया आकी, साधां सन्तां पत्त गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत निरगुण धार, शब्दी बणत बणांयदा। शब्द गुर लै अवतार, शब्दी शब्द समांयदा। शब्द साध सन्त शब्द पीर दस्तगीर, गुप्त ज़ाहर शाह हकीर शब्द अख्वांयदा। शब्द चोटी चढ़ अख़ीर, शब्द ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। शब्द बस्त्र गहिणा चीर, शब्द सीस ताज पहनांयदा। शब्द कट्टणहारा हउमे पीड़, शब्द दूई द्वैत मेट मिटांयदा। शब्द गुर बन्न्हणहारा बीड़, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी चार वरन अठारां बरन कोई ना देवे किसे धीर, साध सन्त जीव जन्त राज राजान शाहो सुल्तान राउ रंक सर्ब कुरलांयदा। पारब्रह्म पुरख पुरखोतम इक्क निराला मारे तीर, लोआं पुरीआं पार करांयदा। चौदां लोकां होए वहीर, चौदां तबकां आप उठांयदा। किसे हथ्थ

ना आउणा अमृत नीर, अठसठ वेख वखांयदा। आपे लिखणहारा तकदीर, तकसीर ना कोए मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा हरि भगवाना शब्दी देवे धुर फ़रमाना आदि जुगादी खेल महाना, खेले खेल गुण निधाना, गुण वन्ता नाउँ रखांयदा। गुणवन्ता हरि भगवान, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। कलिजुग वेखे कूड़ निशान, चारों कुन्ट फेरी पाईआ। जूठी झूठी जगत दुकान, जूठे झूठे रहे चलाईआ। साचा नाम मिल्या ना पीण खाण, जगत तृष्ना ना कोए गंवाईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द रसना बहि बहि सारे गाण, नेत्र लोचण दरस कोए ना पाईआ। काया मन्दिर अन्दर होया सुंञ मसाण, फुल फलवाड़ी ना कोए महिकाईआ। आपणी आप वजायण तान, धुन अनादी ना कोए सुणाईआ। जगत विद्या सुण सुण थक्के कान, अनहद राग ना कोए अल्लाईआ। जगत महल्ले बैठ मकान, ख़ुशीआं रहे मनाईआ। नौ दुआरे कर ध्यान, जगत तृष्ना रसन हल्काईआ। दस्म दुआरी मेल मिलावा जाणी जाण, जानणहारे वड वड्याईआ। आत्म सेजा कर प्रधान, बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर निरगुण धार, निरगुण आप चलाईआ। निरगुण पुरख पुरख करतार, निरगुण अगम्म अथाह, बेपरवाह आप अख्वाईआ। निरगुण शब्द शब्द कटार, निरगुण निरगुण हथ्थ उठाईआ। निरगुण सर्ब जीआं दा सांझा यार, वरन बरन ना कोए जणाईआ। निरगुण साधां सन्तां कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। रंगे रंग अपर अपार, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साचे घर घर साचे बैठा आसण लाईआ।

१२६ ०८

✪ २१ माघ २०१५ बिक्रमी चरन सिंघ दे घर पिण्ड महराज पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

निरगुण रूप हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। मूर्त अकाल खेल अपार, भेव किसे ना पाया। अलख अगोचर अगम्म अपार, पारब्रह्म अख्वाया। इक्क इकल्ला खेल न्यार, अकल कला वरताया। एका वसे धाम न्यार, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहाया। महल्ल अटल उच्च मुनार, थिर घर आप सुहाया। निरगुण दीपक कर उज्यार, जोती नूर करे रुशनाया। सच तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आप सुहाया। आपे जाणे अपणी कार, करता पुरख आप हो जाया। आप आपणा मीत मुरार, आप आपणा संग निभाया। आपे वसे सच सच्चे घर बार, घर साचा आप सुहाया। आपे पुरख आपे नार, नारी कन्ता आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। अबिनाशी

करता हरि हरि खेल, आपणा आप करांयदा। आप आपणा सज्जण सुहेल, आप आपणा अंक लगांयदा। आप आपणा करे मेल, आप आपणी मंग मंगांयदा। आपे वस्सया रंग नवेल, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर हरि चमत्कारा, आदि पुरख अख्वाया। इक्क इकल्ला एकउँकारा, आप आपणी कल वरताया। आप उपाए सुत्त दुलारा, शब्दी नाउँ रखाया। शब्द शब्दी कर प्यारा, घर साचा मेल मिलाया। बोध अगाध अगाध बोध सच्ची धुन्कारा, आप आपणी रिहा सुणाया। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, पारब्रह्म आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण जोती नूर उजाला, हरि आपणा आप करांयदा। आपे सतिगुर पुरख दीन दयाला, दया निध नाम रखांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, आप आपणी चाल चलांयदा। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण आप अख्वांयदा। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेख वखाईआ। आप आपणी पावे सार, सगला संग आप निभाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सुत्त उपजाईआ। उपज्या सुत्त नाम सहारा, एका नाउँ रखाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा खेल कराया। लोआं पुरीआं कर उसारा, हरि साची सेवा लाया। रवि ससि गगन मण्डल सतारा, आप आपणी रचन रचाया। चौदां लोक खोल्ह दुआरा, साचा हट्ट उपाया। ब्रह्मण्ड खण्ड वेस न्यारा, वेस अनेका आप कराया। त्रैगुण तेरा कन्त भतारा, हरि हरि जी नाउँ धराया। पंचम मीता पंचम प्यारा, पंचम वेख वखाया। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश आपे पाए सारा, आप आपणा संग रखाया। लोकमात लै अवतारा, आप आपणी खेल रचाईआ। साल बसाला खेल करतारा, दिवस रैण कराईआ। हाल बेहाला सर्ब संसारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। अवल्लड़ी चाला राज राजान, शाह सुल्तान भेव ना राईआ। आदि अन्त जीव जन्त सर्ब कुरलान, पुरख अबिनाशी प्रभ साचे खेल वरताईआ। लिख्या लेख लेख महान, वेद व्यासा कलम चलाईआ। ईसा मूसा मार ध्यान, एका राह वखाईआ। नानक निरगुण खेल महान, आपणा भेव खुल्हाईआ। गोबिन्द जोद्धा सूर बली बलवान, लोकमात करे कुड़माईआ। लेखा लिखे श्री भगवान, लिखणहारा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। वीह सद पन्दरां हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारा धूंआँधार, चारों कुन्ट आपणा फेरा पाईआ। ना कोई दीसे सच दुआर, जूठे झूठे रहे अलख जगाईआ। राज राजान होए

१३० ०८

भिखार, आपणी झोली रहे फैलाईआ। ग़रीब निमाणे रोवण ज़ारो ज़ार, साचा दर ना कोए सुहाईआ। गोबिन्द मारी साची मार, लेखा लिख्त गया लिखाईआ। सृष्ट दब्बे आपणे भार, कलिजुग आपणी कल वरताईआ। आदि जुगादी खेल अपार, जुग करता रिहा कराईआ। ब्रह्मा वेता बण लिखार, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। विष्नूं वंसी होया ख़बरदार, देवणहारा रिज़क सबाईआ। शिव शंकर करे आपणा प्यार, आपणी गोद उठाईआ। करोड़ तेतीसा कर पुकार, नेत्र नीर रहे वहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खेल अपार, हरि करता रिहा कराईआ। कूड़ी क़िरिया मेटे आप निरँकार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। तीर्थ तट वेखे जगत किनार, अठसठ फोल फोलाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद वेखे मट्ठ, साची धीरज ना कोए रखाईआ। साधां सन्तां तुट्टा हट्ट, आत्म ब्रह्म ना कोए जणाईआ। वरनी वरनां होया इक्ट्ठ, बरनी बरन लड़ाईआ। आत्म अन्तर वस्सया हर घट घट, भेव कोए ना पाईआ। जगत विकारा रहे चट्ट,, आत्म रस हथ्थ ना आईआ। रसना बोल मारन सट्ट, अनहद ताल ना कोए वजाईआ। प्रगट होए पारब्रह्म अबिनाशी करता कलिजुग तेरा वेखे घाट, आपे चढ़े जगत चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां लक्ख चुरासी वांग बन्दरां रिहा नचाईआ। वीह सद पन्दरां तेरा रंग, कलिजुग आप चढ़ाया। घर घर वेखे झूठ पखण्ड, साचा दर ना कोए सुहाया। सृष्ट सबाई नार दुहागण रंड, साचा हरि कन्त ना कोए हंढाया। पंच विकारा करया खण्ड खण्ड, अंग अंग ना कोए समाया। आपणी आपणी करन वंड, हरि का भेव किसे ना पाया। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, लोकमात वेख वखाया। पाए सार जेरज अंड, उत्भुज सेतज फोल फोलाया। तोड़नहारा जगत घमंड, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। देवणहारा दो जहानी दंड, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग जीवां जगत लहिणा लहिणा झोली पाया। कलिजुग क़िरिया कूड़ कुड़यार, जीव जन्त रहे कमाईआ। साधां सन्तां वगी मार, धीआं भैणां रहे तकाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना कोए प्यार, जगत अखाड़े रहे वखाईआ। हरि का रूप दिस ना आए अपर अपार, पंज तत्त होए हल्काईआ। हउमे हँगता लोभ अपार, जगत तृष्ना रही ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा लहिणा झोली पाईआ। कलिजुग कूड़ा मात सिक्दार, अन्तिम लए अंगड़ाईआ। वीह सद पन्दरां बिक्रमी होया ख़बरदार, प्रभ साचा आप जगाईआ। राम रामा खेल अपार, हँकारी रावन वेख वखाईआ। लंका वेख गढ़ हँकार, आप आपणी रचन रचाईआ। कान्हा कृष्ना हो त्यार, दोए दोए धार बंधाईआ। गोबिन्द मीता हरि निरँकार, शब्द खण्डा रिहा चमकाईआ। रसना चिल्ला अपर अपार, एका तीर रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग जीव झूठा मोह, माया ममता तन वसाया। नौ दुआरे बैठे रहे रो, दस्म दुआरी दिस ना आया। जीवां जन्तां रहे कोह, शाह सुल्ताना वेस वटाया। मांवां पुत्तर संग धरोह, दर घर साचा इक्क भुलाया। पुरख अबिनाशी प्रगट हो, कलिजुग तेरा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा लेख जणाया। नाम भिख जगत भिखारी, सच वस्त हथ्थ ना आईआ। मंगदे फिरदे दर दुआरी, बैठे अलख जगाईआ। मूर्ख मूढ़े सुत्ते पैर पसारी, कलिजुग गूढ़ी नींद सुआईआ। नानक गोबिन्द बण लिखारी, लेखा गए लिखाईआ। अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारी, बीस बीसा वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचाईआ। सम्मत पन्दरां उठ बलवान, इक्क निशान झुलांयदा। अठसठ वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड फेरा पांयदा। सत्तां दीपां जगत दुकान, हरि हरि फोल फोलांयदा। पंज तत्त वेखे तन शैतान, कवण कूटे डेरा लांयदा। कवण गुरसिख रसना गान, कवण भगत भगती वखांयदा। कवण मेला इक्क मकान, कवण राह चलांयदा। प्रगट हो श्री भगवान, आप आपणी किरत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, सम्मत सोलां राह तकांयदा। सम्मत सोलां हरि हरि जागे, जागरत जोत जगाईआ। लग्गे भाग देस माझे, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। गुरमुख हँस बणाए कागे, अमृत आत्म जाम प्याईआ। नौ खण्ड पृथमी बुझे चिरागे, दीवा बत्ती ना कोए वखाईआ। पंज तत्त लग्गे आगे, ना सके कोए बुझाईआ। दर दरवेश फिरन भागे, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां भेव खुल्लाईआ। सम्मत सोलां भेव खुल्लाउणा, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। आप आपणा चरन उठाउणा, चिट्टे अस्व डेरा लाईआ। लोआं पुरीआं आप दुड़ाउणा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। भर के पोट किसे ना सौणा, जिन विसरे हरि रघुराईआ। कलिजुग अन्तिम लोकमात धरत मात दी गोदी बैठा पराउणा, अज कल उठ उठ जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी खेल वरताईआ। खेल वरतंता हरि भगवन्ता, भेव अभेव छुपाया। आपे जाणे आपणी बणता, आपे वेख वखाया। आप उपाए साचे सन्ता, आपे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम भुक्ख जगत दुःख जीवां जन्ता झोली पाया। जगत भुक्ख तृष्ना अग्ग, घर घर रही जलाईआ। एका वा तत्ती रही वग, लोआं पुरीआं आप वगाईआ। खेले खेल सूरा सरबग्ग, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल घर घर सम्मत सोलां राह तकाईआ।

सतिगुर पूरा धन्न है, मन मनुआ बंध बंधाए। निरगुण जोती चाढ़े चन्न है, अन्ध अन्धेर मिटाए। साचा राग सुणाए कन्न है, अनहद ताल वजाए। दो जहानां बेड़ा देवे बन्न्ह है, सिर आपणा हथ्थ रखाए। मन मनुआ जाए मन्न है, दहि दिशा ना उठ उठ धाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डोरी तन्द रखाए। शब्द डोर साचा तागा, हरि आपणे हथ्थ रखाया। जन भगतां मगर पिच्छे भागा, मन मनुआ फड़ फड़ाया। पंच विकारा बुझे आगा, हउमे हँगता ना रोग सताया। माया डस्सणी ना डस्से नागा, काम क्रोध ना होए हल्काया। साचा दीपक जगे चिरागा, नूरो नूर करे रुशनाया। फड़ फड़ हँस बणाए कागा, सर सरोवर इक्क नुहाया। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, गुर पूरा वड वड्याआ। ना सोया ना दिसे जागा, एका रंग वखाया। सुरत सवाणी मारे वाजा, साचा शब्द अल्हाया। शब्द देवे अस्व ताजा, आपे लए चढ़ाया। सच भूप हरि राजन राजा, सच सुल्तान अख्वाया। मन मनुआ दोए जोड़ बैठा रहे दरवाजा, निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर दित्ता साचा वर, मन बंधन नाम बंधाया। हरि रूप अपार, सतिगुर नाम धराया। सतिगुर शब्द अपार, गुर गुर विच समाया। गुर गुर मीत मुरार, गुरसिख मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द अल्हाया। हरि निरँकार पुरख सुल्ताना, सतिगुर नाउँ धरांयदा। सतिगुर गुर गुर मेहरवाना, गुर गुर वेख वखांयदा। गुर गुर देवे एका दाना, गुरसिख झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी शब्दी आपे बूझ बुझांयदा। हरि मेहरवान नर निरँकार, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। सतिगुर जोद्धा सूर बली बलकार, गुर गुर वेख वखांयदा। गुर गुर करे आपणी कार, आपणा राह वखांयदा। गुरमुख साजण कर प्यार, एका दर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। हरि निरँकारा, सतिगुर मीता, गुर गुर आप समाया। आदि निरँजण इक्क अतीता, शब्दी पूत रखाया। जन भगतां नाम सच दृढ़ीता, सच ज्ञान दृढ़ाया। मेल मिलावा इक्क अतीता, निरगुण सरगुण भेव ना राया। हरिसंगत करना सच ध्यान, हरि साचे शब्द जणाईआ। सतिगुर पूरा मेहरवान, पुरख अकाल अख्वाईआ। शब्दी देवे एका दान, एका झोली भराईआ। पुत्त पोता इक्क वखाण, एका ब्रह्म वखाईआ। आत्म अन्तर मार ध्यान, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुख साचे कर परवान, हरिसंगत वड वड्याईआ। ज्ञानी ध्यानी ना करन पछाण, मूर्ख मूढ़े दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द उत्तर शब्द विच सुणाईआ। शब्द उत्तर शब्द संदेस, शब्दी शब्द उपाया। किसे ना चले कोई पेश, मन मति बुध ना कोए दृढ़ाया। शाहो भूप हरि नर नरेश, आपणा भेव आपे रिहा खुल्हाया। आपणा नाम आपे वेख, आपे ज्ञान गोझ जणाया। आपे पुत्त

पोता लिखणहारा लेख, दूसर दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी वेखे साचा दर, शब्द शब्दी मेल मिलाया। शब्द गाउणा शब्द सुनाउणा, नानक वड वड्याईआ। पुरख अगम्मा एका पाउणा, सतिगुर रूप समाईआ। गुर गुर वेस अनेक कराउणा, आपणी कल वरताईआ। पुत्त पोता वेख वखाउणा, पूत सपूता संग निभाईआ। एका दीपक जोती रिदे जगाउणा, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। आपणा ज्ञान आप पुछाउणा, ज्ञान गुर आप अख्वाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मलाउणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। ओत पोत सगला संग निभाउणा, धी दोत नाल रलाईआ। वरन गोत ना कोई रखाउणा, जोती जोत डगमगाईआ। शब्द अगम्मी पुरख अकाल गाउणा, पुरख अकाल भेव खुल्हाईआ। बिन सतिगुर पूरे हरिसंगत दूसर किसे हथ्थ ना आउणा, जगत विद्या जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द देवे वर, शब्द शब्द करे जणाईआ। शब्दी ढोला शब्दी बोला, शब्दी शब्द उपांयदा। शब्दी पवित शब्दी तोला, शब्द शब्दी पूत पूत अख्वांयदा। शब्दी ज्ञान शब्दी गोला, शब्दी मुख भवांयदा। शब्दी पावणहारा मोला, शब्दी बूझ बुझांयदा। शब्द शब्दी पर्दा खोल्हा, शब्द शब्दी बन्द करांयदा। शब्द शब्दी आपे मवला, रूप अनूप आप अख्वांयदा। शब्द शब्दी खेल धवल धवला, आकाश प्रकाश लोआं पुरीआं आप सुहांयदा। शब्द शब्दी करे उलटा नाभ कँवला, अमृत आत्म आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द धार शब्द विच रखांयदा। नाम गंढु हरि हरि खोल्हे, आपे आप दवाईआ। जगत रसन कदे ना बोले, लक्ख चुरासी आप बुलाईआ। आपणे कंडे आपे तोले, तोलणहारा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी वंड शब्दी शब्द कराईआ। शब्दी गंढु खोल्हणहारा, एका एकउँकारया। पुत्त पोता पाई वंड, भेव अभेदा आप छुपा रिहा। आपे पावणहारा ठंड, आपे अग्नी तत्त जला रिहा। आपे वेखणहारा हरि ब्रह्मण्ड, आपे मुख भुआ रिहा। आपे होए ज्ञान प्रचण्ड, ज्ञान गोझ आप जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी मेल मिला रिहा। शब्दी मेला धुर दरगाह, हरि हरि आप कराया। शब्दी देवणहारा सच सलाह, नानक निरगुण सेवा लाया। शब्दी शब्द उपाए नाँ, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया। शब्दी शब्द वेखे थाँ, शब्द अंगी अंग कराया। शब्द शब्द नानक अंगद विच टिका, आपणा रूप दरसाया। शब्द घोड़ा आप दौड़ा, अमरु आप लए चढ़ाया। सरोवर सर सेव कमा, राम दास लेख लिखाया। शब्दी दोहरा आपे गा, गुर अर्जन खेल खिलाया। गुरू ग्रन्थ इक्क बणा, गुर शब्दी मार्ग लाया। दूजा अक्खर ना दित्ता कोई लिखा, जगत विद्या ना कोए पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि बोध अगाध शब्दी शब्द उपाया। हरिसंगत हरि वस्सया, गुर पारब्रह्म करतार। हरिसंगत

राह साचा दस्सया, हरिजन मेला मीत मुरार। हरिसंगत मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, गुरमुख गुरमति करन विचार। हरि हिरदे अन्दर हर घट फिरे नस्सया, आप आपणा कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, जो जन रहे दुआर।

इक्क इकल्ला एकंउँकारा, आदि जुगादि समाया। अलख अगोचर अगम्म अपारा, भेव कोए ना राया। सति पुरख निरँजण सति वरतारा, सति सरूपी सति समाया। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कारा, आप आपणा खेल खिलाया। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूरो नूर कराया। बेऐब ख़ुदा परवरदिगारा, भेव अभेद छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल तमाशा, जुग जुग वेख वखांयदा। साचे मण्डल पावे रासा, दर घर साचा आप रखांयदा। वेखणहारा पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी कल वरतांयदा। पुरख अकाल अकल कल धारी, एका हरि निरंकारया। निरगुण जोती कर उज्यारी, नूरो नूर वेख वखा रिहा। आप आपणी पावे
१३५ सारी, आप आपणा भेव खुल्ह रिहा। आपे सोहे दर दरबारी, धुर दरबारा वेख वखा रिहा। सच सिँघासण खेल न्यारी, १३५
०८ हरि साचा आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण आप उपा रिहा। निरगुण ०८
रूप हरि करतारा, एका एक अख्वाईआ। आपणा करे आप पसारा, आपे वेख वखाईआ। आपणी बन्ह्रे आपे धारा, आपे रिहा चलाईआ। आपणा नाउँ कर उज्यारा, आपे सिफ्त सालाहीआ। आपे वसे सच मुनारा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाहो भूप आप अख्वाईआ। शाहो भूप हरि सुल्तान, हरि साचे तख्त बराज्जया। आपे होए निगहबान, आपे करे कराए आपणा काज्जया। आपे वेखे सच निशान, आपे रक्खणहारा लाज्जया। आपे गाए आपणा गाण, आपे मारे आपणी वाज्जया। आपे देवणहार फ़रमान, आपे फिरे भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप वड शाहो राजन राज्जया। राज राजान हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। सच तख्त सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आप सुहांयदा। निरगुण निरगुण वेस अपारा, निरगुण आपणा आप प्रगटांयदा। निरगुण साजण मीत मुरारा, हरि सज्जण आप अख्वांयदा। निरगुण जाणे आपणी कारा, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण हरि करतारा, साची रचन रचांयदा। आपे बणया कन्त भतारा, आपे नारी रूप वटांयदा। आपणी सेजा कर प्यारा, आपणा

सगन मनांयदा। आप उपजाए सुत्त दुलारा, शब्दी नाउँ रखांयदा। अकाल पुरख खेल न्यारा, अजूनी रहित भेव ना आंयदा। आदि शक्ति दए सहारा, साचा संग निभांयदा। शब्द सुत्त बण वणजारा, साचा वणज करांयदा। आपणा नाउँ आप उचारा, सोहँ नाउँ रखांयदा। सो पुरख अकाल, आपणी दया कमाईआ। सुत्त उठाए बाल निधान, शब्दी ब्रह्म जणाईआ। आपे जाणे आपणी चाल, लेखा लिख्त विच ना आईआ। थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाल, घर बंक रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। शब्दी नाता हरि हरि जोड़, आपणा कर्म कमांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा सगन मनांयदा। शब्दी शब्द रिहा दौड़, साची सेवा लांयदा। शब्द शब्दी आपे बौहड़, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्दी खेल हरि करतारा, आपणा आप करांयदा। आपे बण नाम भण्डारा, आपे हरि वरतांयदा। आपे करे सच प्यारा, आपे संग रखांयदा। साचा सुत्त घर साचे सोहे आपे वखाए एका धारा, एका रंग रंगांयदा। जोती देवे इक्क प्यारा, निरगुण वेख वखांयदा। इक्क अकल्ला खेल न्यारा, निरँकारा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, आपणा वेखे आप तमाशा, दूसर कोई ना संग जणांयदा। शब्द सुत्त कर सच उजागर, आपणी बणत बणाईआ। थिर घर बणया इक्क सौदागर, एका वणज वखाईआ। एका नाम रत्न रत्नागर, एका तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए उपाईआ। निरगुण जोत हरि निरँकार, रूप रंग ना राया। निरगुण शब्द कर त्यार, साचा संग रखाया। निरगुण सेवा सेवादार, सेवा रिहा कमाया। निरगुण लोआं पुरीआं लए उसार, निरगुण शब्दी विच टिकाया। निरगुण रवि ससि लए उभार, तारा मण्डल संग रखाया। निरगुण वेखे सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण आसण लाया। निरगुण होया धूंआँधार, आप आपणा भेख वटाया। निरगुण रूप वेस करतार, वेस अनेका आप वखाया। निरगुण तत्त तत्त विचार, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। एका हरि हरि एका धार, एका कँवल खिलाया। निरगुण निरगुण हो उज्यार, विष्नूं रूप वटाया। खेले खेल अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपाया। आपे जाणे आपणी धार, धार निराली इक्क रखाया। कटया अंग आप करतारा, सूरा सरबंग होए सहाया। ब्रह्म पारब्रह्म एका कार, एका चलत चलाया। चारे मुख दए अधार, चारे कूटां वेख वखाया। दहि दिशा पावे सार, वेखणहारा, आप हो जाया। शब्दी शब्द कर प्यार, शब्द शब्दी मेल मिलाया। शब्द धुन सच्ची धुन्कार, शब्दी रिहा सुणाया। शब्दी गावे अपर अपार, आप आपणा राग अल़ाया। शब्दी खोज खोज करे विचार, खोजी खोज नाम रखाया। ब्रह्मा नेत्र लोचण दए उग्घाड़, आप आपणी अक्ख वखाया। एका अन्दर देवे वाड़, निरगुण

निरगुण विच टिकाया। त्रैगुण तेरी बन्ने धार, त्रै त्रै वेस वटाया। त्रिलोकी वेखे इक्क अखाड़, सच अखाड़ा आप लगाया। चौदां हट्टां खोल किवाड़, चौदां लोकां दए सरनाया। पंज तत्त कर उज्यार, आप आपणा मेल मिलाया। आपणी किरपा आपे धार, निरगुण निरगुण आप अख्वाया। मन मति बुध कर उज्यार, आपणा संग निभाया। नौ दर खोले जगत किवाड़, लक्ख चुरासी वेख वखाया। जेरज अंड पावे सार, उत्भुज सेत्ज रचन रचाया। महल्ल अन्दर आपणा महल्ल उसार, आपे बैठा बेपरवाहया। आपणा रूप आप करतार, आपे रिहा छुपाया। बजर कपाटी लाए ताल, ना कोई सके जगत खुलाया। वसणहारा धर्म सच्ची धर्मसाल, निज घर साचा इक्क सुहाया। जोत निरँजण दीपक बाल, प्रकाश प्रकाश रखाया। अनहद धुन वजाए ताल, राग अनादी एका गाया। अमृत आत्म सुहावा ताल, तीर निराला इक्क रखाया। आत्म सेजा हो उज्यार, बैठा आसण लाया। दिवस रैण एका धार, घड़ी पल ना कोई रखाया। मरे ना जमे विच संसार, आप आपणा वेस कराया। हड्ड मास नाड़ी रत चार दिवार, नाड़ नाड़ जोड़ जुड़ाया। खेले खेल अगम्म अपार, अपर अपारी आप रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, निरगुण रूप एका हरि, घट घट बैठा आसण लाया। घर महल्ला घर मकान, घर बैठा बेपरवाहीआ। घर शब्द घर निशान, घर साचे रिहा झुलाईआ। घर शब्द घर धुंनकान, घर साचे रिहा सुणाईआ। घर पुरख घर सुल्तान, घर बैठा बेपरवाहीआ। घर रंक घर राजान, शाहो भूप घर दिसाईआ। घर घर मेला पंज शैतान, घर घर झूठी वज्जे वधाईआ। घर घर जगत तृष्ना पीण खाण, घर घर काम क्रोध लोभ मोह हल्काईआ। घर विच पंडत घर विच ज्ञान, घर घर विद्या रहे पढ़ाईआ। घर घर पूजा घर घर पाठ घर घर मेल श्री भगवान, घर घर इष्ट देव रहे मनाईआ। घर घर सीता घर घर राम, सीता सुरत ना शब्द प्रनाईआ। घर घर राधा घर घर कृष्ना घर घर काहन, नाम बंसरी ना कोई वजाईआ। घर घर वेद पाठ पुराण, घर घर गायत्री मन्त्र रहे सुणाईआ। घर घर बैठे करन वख्यान, घर घर अलख जगाईआ। घर घर दिसे सुंझ मसाण, घर घर काग रहे कुरलाईआ। घर घर मेला गुण निधान, घर घर साचा आप सुहाईआ। घर विच घर कर परवान, घर बैठा शब्द सलाहीआ। घर विच देवणहारा माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, एका आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी वर घर पाया, देवणहार निरँकारा। ब्रह्मा वेता सेवा लाया, मेल मिलाया सर्ब संसारा। विष्नूं वंसी खेल खिलाया, आत्म अन्तर भर भण्डारा। शिव शंकर हरि हरि वेख वखाया, अन्त अन्त करे सँघारा। आप आपणा बाहर रखाया, होया बन्द ना किसे किवाड़ा। थिर घर बैठा आसण लाया, जंगल जूह ना कोई उजाड़ पहाड़ा। सच सिँघासण इक्क सुहाया, नज़र

आए ना पंचम धाड़ा। निरगुण जोती सेवा लाया, सचखण्ड रचाया इक्क अखाड़ा। आदि जुगादी वेस वटाया, लोकमात लए अवतारा। जुग करता हरि नाम धराया, करे कराए करनेहारा। साधां सन्तां सेवा लाया, आपे जाणे परउपकारा। आप आपणा नाउँ जणाया, देवे सच भण्डारा। लोकमात हरि मार झात नित नवित्त वेखण आया, वेखणहार सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, सरगुण संग निभाया। निरगुण खेल हरि करतार, सरगुण संग रखाईआ। सरगुण मेला विच संसार, निरगुण धार चलाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, सरगुण विच टिकाईआ। सरगुण पाए पुरख अपार, निज घर वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, एका दर सुहाईआ। सोहँ रूप रूप करतार, एका दूजा भउ चुकाईआ। एका नेत्र लए उग्घाड़, दोए लोचण बन्द रखाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, सच सुच्च करे वड्याईआ। एका रूप नज़री आए धुर दरबार, रूप अनूपा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द देवे वर, सो पुरख वड वड्याईआ। सो पुरख हरि सुल्तान, शाहो भूप सिक्दारा। हँ ब्रह्म कर पछान, खेले खेल अपारा। दोहां मेला इक्क मैदान, पंज तत्त उज्यारा। देवणहारा साचा दान, भरे सच भण्डारा। आप सुहाए इक्क मकान, थिर घर महल्ल अटल मुनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण अन्दर निरगुण वड़, आपणी पौड़ी आपे चढ़, आपणे दुआर आपे खड़्, आपे होए उज्यारा। सच दुआर सच महल्ला, हरि हरि आप वसाया। आपे बैठ इक्क अकल्ला, लक्ख चुरासी रिहा चलाया। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर डेरा लाया। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, जुग जुग वेस वटाया। आपे शब्द शब्दी करे हल्ला, आपे वेख वखाया। आपे दूई द्वैती होए सला, आपे दोए दोए रंग रंगाया। आपे शब्द कटार, बणे भल्ला, तीर तुफंग आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे निरगुण घर, नाम मृदंग इक्क वजाया। नाम मृदंग साचा ढोल, हरि सतिगुर आप वजाईआ। जन भगत आत्म अन्तर पर्दा खोल्, आप आपणा दए बुझाईआ। शब्द कंडे सच तराज़ू आपे तोल, करता कीमत दए पाईआ। सच वस्त सद रक्खे कोल, घर आपणे आप रखाईआ। कलिजुग माया जीव जन्त करे अनभोल, नाम गठड़ी ना कोई खुल्हाईआ। झूठी खाक रहे वरोल, सच लाल हथ्थ ना आईआ। हरि का शब्द जगत मखौल, साची भिच्छया कोई ना पाईआ। उलटा करे ना कोई नाभ कँवल, अमृत झिरना ना कोई झिराईआ। पारब्रह्म तेरा कढुदे फिरदे पोल, आपणा पोल ना वेख वखाईआ। हर घट अन्दर रिहा मौल, ना कोई सके भेव छुपाईआ। मन मति रचाया जगत घोल, दिवस रैण रहे कराईआ। गुरमुख सुत्ते सदा अनभोल, सतिगुर

पूरा लए जगाईआ। हौली हौली अन्दर मन्दिर बोल, आपणा राह रिहा वखाईआ। कलिजुग अन्तिम करे चोहल, काया चोला लए बदलाईआ। किसे हथ्थ ना आए पंडत पांधे रौल, ज्ञान ध्यान ना कोई वड्याईआ। जो जन चरन प्रीती रहे घोल, तिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण अन्दर निरगुण धर, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, सतिगुर आप अख्वांयदा। निरगुण बणे जगत मलाह, भव सागर पार तरांयदा। सतिगुर पूरा सिफ्त सलाह, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। जिस जन जपाए आपणा नाँ, सोहँ रूप शब्द जणांयदा। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे आपणी गोद उठांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन चरन ध्यान रखांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप उठांयदा। कलिजुग अन्तिम पकड़न आया बांह, निहकलंका नाउँ रखांयदा। दो जहानी करे सच न्याँ, जगत झगढ़ा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण खेल निरगुण मेल, निरगुण वज्जी वधाईआ। सरगुण चढ़या साचा तेल, जोत निरँजण सेव कमाईआ। निरगुण होया सज्जण सुहेल, घर साचा बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण गुरू गुर चेल, चेला गुर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कार कमाईआ। निरगुण धार जोत निरँजण, आदि निरँजण खेल खिलांयदा। दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर आप तरांयदा। जिस जन नेत्र देवे नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। धुन अनादी शब्द ताल मन्दिर अन्दर काया वज्जण, सुन्न समाध आप खुल्हांयदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जन, भरम गढ़ तुड़ांयदा। जगत विकारा गुरमुख गुरसिख साचे तजन, घर साचा इक्क दरसांयदा। वेले अन्तिम रक्खे लज्जन, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, दर दर घर घर नर हरि कन्त भतार, एका हरि निरँकार, सुरती शब्दी एका धार, आत्म सेजा हो उज्यार, एका पुरख एका नार, दस्म दुआरी दर वखांयदा।

✪ २२ माघ २०१५ बिक्रमी राज सिँघ दे घर पिण्ड महराजपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

सच्च तख्त सुल्तान, हरी हरि सुहाया। भगत वछल भगवान, भगती रूप अख्वाया। सुरती शब्दी शब्द ज्ञान, नाम नामा वणज वखाया। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, एका ब्रह्म रखाया। खेले खेल सर्ब घट जाण, घट घट वासी वेस वटाया। साचा मन्दिर सच मकान, सच सिँघासण इक्क सुहाया। चतुर्भुज खेल महान, चतुर कूट वेख वखाया। अस्ट इष्ट इक्क

दरबान, दृष्ट दरवेश दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सच मार्ग लाया। सच तख्त हरि मेहरवान, शब्दी शब्द बराज्जया। जोद्धा सूरबीर नौजवान, वड वड्डा राजन राज्जया। नाम खण्डा तीर कमान, फड़ शस्त्र गाज्जया। निरगुण बैठ इक्क बबाण, लोआं पुरीआं फिरे भाज्जया। लक्ख चुरासी कर पछाण, हरिजन साचा साजन साज्जया। देवे दरस दर दर आण, मानस जन्म संवारे काज्जया। नाम निधाना पीण खाण, धुर दरगाही देवे दाज्जया। सुरती शब्दी इक्क ज्ञान, एका नाम इक्क आवाज्या। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, आपणे चाढ़े आप जहाज्या। जगत वणजारा झूठ दुकान, अन्तिम कोए ना रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर, शाह संवारा चिट्टे ताज्जया। शाह सवारा सति सरूप, सति पुरख अख्वाईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रूप अनूप आप हो जाईआ। अबिनाशी करता एका भूप, आपणी कल वरताईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। कलिजुग मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया रिहा मिटाईआ। जन भगतां उप्पर आपे तुठ, आप आपणा मेल मिलाईआ। अमृत आत्म नाम देवे घुट, भर प्याला मुख लगाईआ। जगत तृष्ना जाए छुट्ट, हरि हरि रसना जिह्वा गाईआ। भगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, साची सिख्या इक्क समझाईआ। दूई द्वैती निकले फुट्ट, सगला संग रखाईआ। साचा शब्द साची चोट, सच नगारे आप लगाईआ। चरन प्रीती दस्से ओट, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। आपे बन्नॄणहार लंगोट, धीरज जत हथ्थ वड्याईआ। आपे चढ़े आपणी चोट, महल्ल अटल चरन टिकाईआ। आपे वेखणहारा कोटी कोटि, कोटी कोटि भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे दर दर, दर दर अलख जगाईआ। आदि निरँजण इक्क अलक्ख, एका अलक्ख जगाईआ। सतिगुर रूप हो प्रतक्ख, गुर गुर नाउँ धराईआ। सज्जण मीत आपे रक्ख, आपे रिहा तराईआ। करे कराए आपे वक्ख, हरि वक्खरी धार चलाईआ। लक्खों करनहारा कक्ख, कक्खों लक्ख बणाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, दहि दिशा पन्ध चुकाईआ। हरिजन हिरदे जाए वस, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। मेल मिलावा नस्स नस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस्स, रवि ससि करे रुशनाईआ। हरिजन मेला हस्स हस्स, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा दर दर, दर दर खेल खिलाईआ। दर दर खेल हरि भगवाना, भगती भगत दृढ़ांयदा। देवे नाम धुर फ़रमाना, आपणी शक्ती आप भरांयदा। सति सन्तोखी बन्नॄे गाना, सांतक सति वरतांयदा। आपे पाए आपणी आना, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। घट घट अन्दर जाणी जाणा, घट घट डेरा लांयदा। साचा मन्दिर सच मकाना, सच सिँघासण आप सुहांयदा। देवणहारा जीआ दाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार

दर दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। साचा दर हरि दरवाज़ा, जन जन आप खुल्हाईआ। मेल मिलाए ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, लक्ख चुरासी रिहा उठाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, वेखणहार दिस ना आईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजा, हरिभगती भगत उठाईआ। सन्त सुहेला रक्खे लाजा, लाजावन्त वड वड्याईआ। इक्क चलाए सच जहाज़ा, सो पुरख निरँजण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा दर दर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा सच टिकाणा, हरि साचे सच सुहाया। शब्दी गुर गुर बण बबाणा, गुरमुख साचे रिहा चढ़ाया। एका मन्त्र एका गाणा, एका राग सुणाया। एका अमृत पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। एका पद निरबाणा पाणा, दूसर धार ना कोए जणाया। जगत संघम मेट मिटाना, बेहंगम रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार दर दर, दर भिखारी नाम धराया। दर भिखारी दर दरवेश, दर दर फेरा पाईआ। दर दर हरि हरि रिहा वेख, दर दर घर घर फोल फोलाईआ। दर दर फिरे नर नरेश, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। दर दर संग रखाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गुरमुखां दरस कराईआ। तिन्ने बहि बहि करन आदेश, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरमुख औंदे रहिण हमेश, लोकमात वज्जदी रहे वधाईआ। निउँ निउँ चरन चुम्मे बाशक शेष, गुरसिख महिमा गणत गणी ना जाईआ। लछमी नेत्र चुक्क चुक्क रही वेख, आपणा पर्दा घूँगट लाहीआ। हरि जी करया विष्नूं वेस, भेव कोए ना पाईआ। सच तख्त सुल्तानी नर नरेश, लोकमात बैठा बेपरवाहीआ। चरन धूढ़ मंगन गणपति गणेश, हथ्थ किसे ना आईआ। कलिजुग तेरा वेखे भेस, आप आपणी कल वरताईआ। अन्तिम प्रगट होया माझे देस, वेद कतेब लेखा लिख ना सके राईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई सीस मूंड मुंडाईआ। जोती नूर हाज़र हज़ूर कर प्रवेश, गुर गोबिन्द संग रखाईआ। ग़रीब निमाणे जगत निताणे गुरमुख साजण आपणे वेख, घर आपणे आया चाँईं चाँईंआ। त्रिलोकी पैंडा रक्खे चरनां हेठ, ब्रह्मण्ड खण्ड गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाईआ। तेरा राह बेपरवाह आपे रिहा वेख, छत्ती युग राह तकाईआ। रविदासे मंगी मंग प्रभ अबिनाशी मस्तक लिखी रेख, लेखा लिख्या ना कोए मिटाईआ। अन्तिम वेला आपणे नेत्र आपणा रूप आपणे अन्दर लैणा वेख, गुरमुख गुरमुख वड वड्याईआ। बाल्मीक नीकन नीक, एका सिख्या गया सीख, साची सिख्या आप समझाईआ। कलिजुग अन्तिम मेला इक्क तरीक, एका सगन एका साह सुधाईआ। लक्ख चुरासी साध सन्त हरि भगवन्त करन परीख, परीख्या विच किसे ना आईआ। गुरमुखां गुरसिखां दर दर घर घर जाए मंगे भिख, जगत भिखारी आप हो जाईआ। आपणे शब्द लेखा दए लिख, ना सके कोए मिटाईआ। दो जहान मिटाए तृष्ना तृख, भुक्ख रहे ना

राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त साध सन्त गुरमुख गुरसिख गुर गुर धार शब्द प्यार, आपणा आप उत्तों वार, हँ सो सो हँ आप हो जाईआ।

२२ माघ २०१५ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे घर पिण्ड सदा सिँघ वाला गुरदासपुर

हरिजन अमृत धार, प्रेम प्यार वहाईआ। धरती धवल करे पुकार, रो रो नीर वहाईआ। पुरख अगम्मड़ा पावे सार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले कर त्यार, लोकमात जन्म दवाईआ। वेखे विगसे करे विचार, करता करनी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। अमृत मेघ साचा रस, हरी हरि आप चुआंयदा। सन्त सुहेले हस्स हस्स, घर साचे सगन मनांयदा। संगत मेला नस्स नस्स, जगत विछोड़े पन्ध मुकांयदा। चरन दुआरा एका दस्स, साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। हरि सज्जण गुरमुख मेलया गुर पारब्रह्म करतार। घर पाया सज्जण सहेलया, साजन मीत मुरार। जग चुक्कया वक्त दुहेलया, मेल मिलावा एकँकार। एका खेल आपे खेलया, आपे होए खेलणहार। वसणहारा रंग नवेलया, गुरमुखां सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पाए सार। अमृत मेघ हरि वसंदड़ा, दिवस रैण प्रभात। हरिजन साचा वेख वखंदड़ा, बैठा रहे इक्क अकांत। लक्ख चुरासी भरम भुलंदड़ा, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। जन भगतां दुआरा इक्क वखंदड़ा, निरगुण जोती खेल तमाश। सर्ब जीआं आप बख्शंदड़ा, दाता दानी शाहो शाबाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे सर्ब गुण तास। शाहो शाबास हरि भगवाना, हरि हरि खेल खिलाईआ। जोती शब्दी जोत जगानां, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। सन्त सुहेले कर परवाना, परम पुरख गले लगाईआ। देवणहारा जीआ दाना, जीअ दाता आप हो जाईआ। लोकमात देवे माणा, माण निमाणया आप अख्वाईआ। सति सरूपी बन्ने गाना, साचा सगन मनाईआ। लेखा चुक्के आवण जाणा, दो जहाना पन्ध मुकाईआ। हरिसंगत साची मेल मिलाना, दरगाह साची धाम सुहाईआ। सतिगुर पुरख इक्क सुल्ताना, घर बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादि सदा मेहरवाना, कर किरपा रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, घर बाती कर रुशनाईआ। दीआ बाती कर उजाला, आपणा कर्म कमांयदा। सतिगुर पुरख दीन दयाला, गुरमुख साजन आप उठांयदा। आप उठाए आपणे बाला, आप आपणी गोद उठांयदा। सखा सहाई सदा सद करे प्रितपाला, सिर आपणा हथ्थ

टिकांयदा। जुग जुग चले नाल नाला, सगला संग रखांयदा। सुहाए बंक जगत दुआर, भगतन अन्दर भगती प्यार, नाम धन शब्द श्रृंगार, बस्त्र चीर गुणी गहीर काया माटी कच्च एका नाम साचो सच्च, साचा गहिणा नेत्र नैणां, आपे रक्खया आपणा भाणा, पिता पूत पूत पिता आपणे लेखे लांयदा।

✪ २२ माघ २०१५ बिक्रमी अतर सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

आदि पुरख हरि समरथ, एका एक एकँकारया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही खेल न्यारया। शब्दी जणाई महिमा अकथ, भरे नाम भण्डारया। देवणहारा साची वथ्थ, लोआं पुरीआं आप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरता रिहा। पुरख अबिनाशी अकल कल धारी, एका एक अख्वाईआ। आदि जुगादी खेल अपारी, जुग जुग वेस वटाईआ। आदिन अन्ता एका एकँकारी, एका एक अख्वाईआ। नाम डंका शब्द धुन्कारी, साचा शब्द अलाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारी, भेव अभेदा आप अख्वाईआ। शाहो भूप सच्ची सिक्दारी, सच सुल्तान वड वड्याईआ। निरगुण जोत नूर उज्यारी, नूरो नूर समाईआ। इक्क अकल्ला खेल अपारी, दूसर संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण हरि भगवाना, पारब्रह्म अख्वांयदा। शब्द अनादी इक्क तराना, एका राग अलांयदा। एका मन्दिर सच मकाना, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। एका तख्त ताज सुल्ताना, एका सीस टिकांयदा। एका जोद्धा सूरबीर बलवाना, एका आपणा नाउँ उपांयदा। एका खेले खेल दो जहाना, आप आपणा वेस वटांयदा। एका लोआं पुरीआं बन्ने गाना, ब्रह्मा विष्न महेषा सेवा लांयदा। एका नूर हो प्रधाना, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण खेल हरि भगवन्त, आदि पुरख अबिनाशया। आपे नारी आपे कन्त, आपे खेले खेल तमाशया। आपे आदि आपे अन्त, आपे जुग जुग नाम धरास्सया। आपे जीव आपे जन्त, आपे जंगल जूह उजाड़ प्रभास्सया। आपे साध आपे सन्त, आप माया ममता करे निवास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, वेख वखाए पृथ्मी अकाशया। पृथ्मी आकाश साची रास, हरि साचे आप सुहाईआ। निरगुण जोती कर प्रकाश, रवि ससि आप टिकाईआ। मण्डल मण्डप पावे रास, चन्न सतार सुहाईआ। आदि अन्त ना जाए विनास, हरि वड वड्डा वड्याईआ। दाता दानी सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर समाईआ। त्रैगुण मीता वस्सया पास, त्रैगुण अंक समाईआ। आपे पूरी करनहारा आस, आपे इच्छया भिच्छया झोली

पाईआ। आपे आपणा होवे दास, सेवक सेवा कमाईआ। आप आपणा सास ग्रास, आपणा लहिणा आप चुकाईआ। आपे आपणा करे भोग बिलास, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपे करे आपणी बन्द खलास, बन्दी तोड़ नाम अख्वाईआ। निरगुण रूप शाहो शाबाश, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार इक्क समाईआ। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलांयदा। अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कार, भेव कोई ना पांयदा। अलक्ख निरँजण खेल अपार, इक्क अलक्ख जगांयदा। वेखणहारा सच दुआर, थिर घर वासी फोल फोलांयदा। सच सिँघासण सच्ची सरकार, सच सुल्तान आप अख्वांयदा। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं रचन रचांयदा। पंचम पंचम कर त्यार, पंचम विच समांयदा। लक्ख चुरासी कर शृंगार, त्रै त्रै वेख वखांयदा। चौदां लोकां हट्ट पसार, एका घर उपांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेला निरगुण मेला निरगुण निरगुण आप करांयदा। निरगुण रूप आदि निरँजण, एका एक अख्वाईआ। ना कोई दूसर साक सज्जण, ना कोई संग निभाईआ। किसे ना चढ़े कोई जहाजन, ना बेड़ा कोई वखाईआ। ना कोई रक्खणहारा लाजण, ना कोई सीस हथ्थ टिकाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे करे आपणा काजन, आप आपणी बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी साची साजण, साजणहारा भेव ना राईआ। आपणे अस्व चढ़े साचे ताजन, नाम घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। लोकमात आवे जावे राज राजन, आप आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले मारे वाजन, शब्द धुन सुणाईआ। भगत सुहेले उठ भाजन, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। गुरमुख संवारे आपे काजन, गुर पूरे वड वड्याईआ। नाम चढ़ाए सच जहाजन, लोकमात आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर जोत उजाला, अकल कला कल धारीआ। खेले खेल गुर गोपाला, आदि अन्त इक्क अवतारीआ। पारब्रह्म दीन दयाला, लोकमात लए अवतारीआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लिख्त ना कोई लिखा रिहा। आपे जाणे धर्म सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे डेरा ला रिहा। चरन रखाए काल महांकाला, आप आपणी कल वरता रिहा। शब्द अनादी धुर दरगाही वजाए आपणा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस कर, वेस अनेका आप वटा रिहा। वेस अनेका हरि अवल्ला, हरी हरि आप कराईआ। पारब्रह्म बैठा इक्क इकल्ला, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। आदि निरँजण सच सिँघासण एका मल्ला, दिस किसे ना आईआ। श्री भगवान दर दुआरे आपणे आपे खला, घर साचा आप सुहाईआ। नर नरायण वस्सया निहचल धाम अटला, उच्च अथाह बेपरवाहीआ। आपणी जोती शब्दी आपे रला, जोती शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका घर, निरगुण निरगुण रिहा मिलाईआ। निरगुण मिल्या पारब्रह्म, भेव अभेद छुपाया। ना मरे ना पए जम्म, मात, गर्भ ना कोए टिकाया। ना कोई पवण स्वासी दम, नेत्र नीर ना कोए वहाया। आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणा खेल खिलाया। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आपे रिहा चलाया। आप उपाए सूरज चन्न, मण्डल मण्डप आप सुहाया। आपे वस्सया छप्परी छन्न, आपे हर घट डेरा लाया। आपे जगत निराला बाहर तन, पंज तत्त ना कोए रखाया। आपे देवणहारा डन्न, एका डंका नाम वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आदि जुगादी जुग जुग आपणा नाम धराया। जुग जुग वेस पुरख करतारा, आपणा आप कराईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव अभेद खुल्हाईआ। पावणहारा आपणी सारा, आप आपणी रचन रचाईआ। शब्दी शब्द बण सहारा, शब्द शब्दी रिहा तराईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी इक्क किनारा, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। धुंन अनादी एका नाअरा, पुरख अकाला आप लगाईआ। जूनी रहित खेल अपारा, घर साचे बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे साचा घर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। निरगुण मन्दिर शब्द टिकाणा, हरि साची रचन रचांयदा। शाहो भूप सच सुल्ताना, हरि मेहरवाना आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी निगहबाना, देवत सुर वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर ध्याना, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। वसणहारा जीव जहाना, जीवां जन्तां विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, सच महल्ला सच अटारी, निरगुण जोत इक्क निरँकारी, एका नूर दरसांयदा। एका नूर हरि गोबिन्द, हरि हरि रूप वटाया। मेटणहारा सगली चिन्द, आप आपणी दया कमाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आप हो जाया। नाम भण्डारी सागर सिन्ध, घर साचे आसण लाया। भगत सुहेले नादी बिन्द, पूत सपूते आप उपाया। जोद्धा सूर बली मृगिन्द, एका एक एक हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, हरि साचे मेल मिलाया। आदि निरँजण जोती मेला, शब्दी संग रखाईआ। हरि हरि गुर शब्दी चेला, चेला गुर भेव ना राईआ। एकउँकारा सज्जण सुहेला, एका धार बंधाईआ। आपे वस्सया रंग नवेला, निज घर आपणा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल रिहा कर, जुग जुग वेखे मात लोकाईआ। लोकमात हरि अवतारा, हरि हरि रचन रचांयदा। खेले खेल अपर अपरा, पारब्रह्म वड वड्यांअदा। ना जन्मे ना कदे मरा, आवण जावण खेल खिलांयदा। आपणा नाम आपे धरा, जपत जाप आप जपांयदा। आपे ज़ात पात कौम मज़्ब होए शरअ, शरीअत आप वखांयदा। आपे हरि नरायण नारी नरा, बाल बिरध जवान रूप वटांयदा। पंज

तत्त तत्त ब्रह्म आपणा धरा, पारब्रह्म अंग कटांयदा। अमृत जल करे हरा, दिवस रैण छड़कांयदा। घर विच बणाया साचा घर, हरि दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हांयदा। निरगुण रूप आपे खड़, साची सेजा वेख वखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत्त ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात मार झात, आपणा वेस वटांयदा। लोकमात तेरी धार, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग वंडे वंड अपार, आपणी वंडी आप वंडाईआ। ब्रह्मा वेता बणे भिखार, प्रभ साची भिच्छया झोली पाईआ। एका शब्द कर उज्यार, चारे वेदां रिहा पढ़ाईआ। चारे खाणी कर त्यार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज आप टिकाईआ। विष्नूं वंसी सेवा दार, दिवस रैण सेव कमाईआ। शंकर करे अन्त प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। धर्म राए ना करे खुआर, आप आपणी दया कमाईआ। चित्रगुप्त ना दए अधार, लेखा आपणा आप जणाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, घर आए वाहो दाहीआ। जो उपजाए सो लए सँघार, प्रभ साचे वड वड्याईआ। सन्त सुहेले पावे सार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर इक्क अधार, एका नूर करे रुशनाईआ। निरगुण बाणी कर उज्यार, साची बूझ बुझाईआ। धुन अनादी शब्द धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। अमृत आत्म देवे ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। बजर कपाटी पर्दा पाड़, दूई द्वैती दए मिटाईआ। नेड़ ना आए काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपार, आत्म दरस वड वड्याईआ। दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, मेल मिलावा साचे माहीआ। सन्तन मेला एका वार, घर साचे वज्जे वधाईआ। नारी कन्ता मीत भतार, वर घर पाया सहिज सुभाईआ। जन भगतां नाता तुट्टे सर्ब संसार, घर साचा इक्क सुहाईआ। चरन प्रीती इक्क प्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग नित नवित्त सन्तां भगतां आप आपणी करे रुशनाईआ। भगतन मीता हरि निरँकारा, आदि पुरख अख्वांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतारा, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे नाम शब्द जैकारा, आपे रसना गांयदा। आपे वरसया धुँधूकारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आपे खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, तीर कमान आप उठांयदा। आपे होया गढ़ हँकारा, आपे शांतक सति वरतांयदा। आपे वेद कतेब बण लिखारा, आपणा भेव खुलांयदा। आपे वरते वरतावे विच संसारा, दिस किसे ना आंयदा। गुर पीर इक्क अवतारा, एका रूप जणांयदा। सेवक सेवा लाए सेवादारा, साची सेवा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, लोकमात जोत धर, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। सतिगुर नाम निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। दीनां नाथ दर्द दुःख भंजन, भव सागर आप तराया। ग़रीब निमाणयां बणे सज्जण, आप आपणे गले लगाया। चरन धूढ़ी कराए मजन, दुरमति

मैल धुआया। द्वापर त्रेता सतिजुग आया पड़दे कज्जण, रूप अनेका वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आए कर, लोकमात फेरा पाया। लोकमात हरि हरि फेरा, हरि हरि अलक्ख जगांयदा। लक्ख चुरासी वस्सया नेरन नेरा, वरन अवरन आप हो जांयदा। भगत जनां मन चाउ घनेरा, आत्म दरस दिखांयदा। भरमां ढाए झूठा डेरा, साचा संग निभांयदा। इक्क वखाए सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोई रखांयदा। पंच विकारा पाए घेरा, नाम डोरी बंध बंधांयदा। वसणहारा काया खेड़ा, घर घर विच आप सुहांयदा। मेटणहारा पंचम झेड़ा, पंचम मूल चुकांयदा। बन्नूणहारा साचा बेड़ा, सतिगुर नाउँ रखांयदा। जुग जुग धरत मात तेरा करनहारा खुल्ला वेहड़ा, जुग जुग रूप वटांयदा। हरि का भेव जाणे केहड़ा, ब्रह्मा विष्न शिव कोटन कोटि निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आदि जुगादी जुग जुग आपणा जाणे आपे गेड़ा, आपणी लट्ठ आपे आप भुवांयदा। करे कराए हक्क निबेड़ा, भेव अभेदा भेव ना कोई छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका कर, हरी हरि हरि रूप वटांयदा। हरी हरि हरि करतारा, हरि हरि रूप समाया। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका खेल खिलाया। एका पुरख एका नारा, एका संग निभाया। एका घर इक्क दरबारा, एका दर सुहाया। इक्क शाह इक्क सिक्दारा, शाह सुल्तान इक्क अख्वाया। एका इक्क इक्क भिखारा, एका मंगता जुग जुग आया। एका भगत इक्क वणजारा, एका भगती वणज वखाया। इक्क शब्दी इक्क जैकारा, एका नाअरा रिहा सुणाया। इक्क ख़ुदाई बेऐब परवरदिगारा, एका कलमा रिहा पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपणा कर, जगत महल्ला फोल फोलाया। जगत महल्ला नौ खण्ड, नौ दर रचन रचाईआ। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड वेख वखाईआ। जाणे भेव जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप समाईआ। वेखणहारा जगत पखण्ड, खालक खलक आप हो जाईआ। आपे नार दुहागण रंड, कन्त कन्तूहल आप अख्वाईआ। आपणी दात आपे वंड, जुग जुग मूल चुकाईआ। आपे करनहारा खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा आप चमकाईआ। आपे नाम शब्द तेज़ चण्ड प्रचण्ड, श्री भगौती नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस अनेका हरि निरँकारा, आपणा आप करांयदा। भगत वछल मीत मुरारा, घर साचा इक्क सुहांयदा। भगत भगवन्त इक्क दुआरा, एका वेख वखांयदा। सन्त सुहेला हो त्यारा, शब्दी डंक वजांयदा। कलिजुग तेरा रूप अपारा, तेरा संग निभांयदा। मंगी मंग धुर दरबारा, प्रभ साचा झोली पांयदा। जूठ झूठ कर प्यारा, कूड़ कूड़ा नाल रलांयदा। माया ममता हो त्यारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रखांयदा। घट घट अन्दर पावे सारा, पंज तत्त उठांयदा। मनमुख सुत्ते पैर पसारा, भेव कोई ना

पांयदा। गुरमुख विरला सुत्त दुलारा, हरि साचा आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल आपणा खेला, हरि साचे वड वड्याईआ। ईसा मूसा सज्जण सुहेला, कलमा नबी रसूला आप पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणा कबीला, आपे वेख वखाईआ। आपे बणे छैल छबीला, चार यार करे कुड़माईआ। अल्ला राणी कर कर मेला, नेत्र नैण रही खुल्ह़ाईआ। हकीकत हक्क इक्क वसीला, मुकामे हक्क सच ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, प्रगट नूरो नूर अलाहीआ। नूर अलाही कायनात, कलमा अमाम पढ़ांयदा। शरअ शरीअत इक्क हमायत, एका राह वखांयदा। इक्क हदीस एका आयत, एका वेख वखांयदा। एका देवणहारा दात, जुग जुग खेल खिलांयदा। दो जहानां जुग जुग वेखे मार झात, एक रंग समांयदा। आपे पंज तत्त खोल्ह़णहारा ताक, आपे बन्द वखांयदा। आपे चढ़या दुलदुल राक, ऐली अल्ला नाम रखांयदा। आप आपणा हो मुशताक, अहिबाब रबाब आप वजांयदा। आपे होया पाकी पाक, ख़ाकी ख़ाक आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार वेख वखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरि हरि जोत जगांयदा। राणी अल्ला कर प्यारी, संग मुहम्मद वेख वखांयदा। चार यारां सच्ची यारी, चौदां तबकां डेरा लांयदा। एका नेत्र अक्ख उग्घाड़ी, एका दर खुल्ह़ांयदा। इक्क वखाए मात फुलवाड़ी, एका बूटा लांयदा। एका फसल पक्के हाढ़ी, उम्मत उम्मती आप उपांयदा। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, ढूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। चौदां चौदां कर त्यारी, चौदां चौदां रंग रंगांयदा। ऐनलहक्क ख़बरदारी, हू हू आप उठांयदा। खेले खेल अगम्म अपारी, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, निरगुण निरगुण नाउँ रखांयदा। निरगुण नाउँ पंज तत्त, हरि हरि करी कुड़माईआ। नानक नाम ल्या रक्ख, लोआं पुरीआं वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म हो प्रतक्ख, वेख वखाणे सृष्ट सबाईआ। खाली भाण्डे भरे भर भर करे सक्ख, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती एका धर, एका कर्म कमाईआ। निरगुण जोती नाम प्यार, नानक शब्द सलाहीआ। एका शब्द इक्क धुन्कार, एका रिहा सुणाईआ। एका मेला मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। मिल्या सज्जण हरि करतार, घर सज्जण साचा माहीआ। सुहाए सचखण्ड दुआर, घर साचे वज्जी वधाईआ। आप आपणा भर भण्डार, नाम भण्डारा रिहा वरताईआ। सति नाम सति आधार, सति सन्तोखी इक्क जणाईआ। चार वरनां कर प्यार, चारों कुन्ट, फेरा पाईआ। दहि दिशा एका धार, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। राउ रंकां इक्क आधार, साधां सन्तां मेल मिलाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, शब्द खण्डा

इक्क चमकाईआ। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, पंज तत्त बैठा आसण लाईआ। निरगुण रूप आप करतार, नानक ढोला साचा गाईआ। सोहँ शब्द इक्क जैकार, रसना जिह्वा आप सुणाईआ। तोला बणया अपर अपार, तेरां तेरां धार बंधाईआ। होला खेले सर्ब संसार, सतिगुर नानक गया लिखाईआ। अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका अपर अपार, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, गण गंधर्ब यच्छप किन्नर आप उठाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, लोकमात वेख वखाईआ। सत्तां दीपां हो उज्यार, एक शब्द सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चरन दुआर, जगत विकारा चरनां हेठ दबाईआ। तख्त निवासी सच दुआर, सच दुआरका इक्क वखाईआ। वरन बरन प्रभ वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोए बणाईआ। राउ रंक ना कोए दुआर, ऊँच नीच ना वड वड्याईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हरि दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, आप आपणी कल वरताईआ। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द गुर वड्याईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। पंचम मीता पंचम कर त्यार, केस सीस जगदीस रचन रचाईआ। साची बन्ने आपे धार, पंचम वेख वखाईआ। पंचम देवे सच भण्डार, अमृत साचा जाम प्याईआ। पंचम ढहि ढहि पए दुआर, पंचम सीस झुकाईआ। एका दर सच्चा दरबार, एका घर समझाईआ। अकाल पुरख एकउँकार, निरगुण नूर सच ख़ुदाईआ। ज़ाहर ज़हूर बेऐब परवरदिगार, एथे उथे संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला आपे कर, सरगुण साचा मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण साचा संग, जोती शब्द हंढाया। नाम वज्जे इक्क मृदंग, नानक गुर वजाया। अंगद आपणा दर आपे लँघ, गुर सतिगुर वेख वखाया। अमरु मंगी आपणी मंग, अमरा पद पाया। राम दास बैठा सच पलँघ, शब्द सिँघासण इक्क विछाइंआ। गुर अर्जन वजाए धुर मृदंग, अगाध बोध लेख लिखाया। हरि गोबिन्द लग्गा अंग, अंगीकार आप समाया। हरिराए हरि कस्सया तंग, साचे घोड़े आप चढ़ाया। हरिकृष्न लोआं पुरीआं आपे लँघ, बाल बाला विच समाया। तेग बहादर निरगुण संग, आपणा लहिणा मूल चुकाया। गुर गोबिन्द मंगी मंग, आपणी झोली अग्गे डाहया। पुरख अबिनाशी तेरा संग, पुरख अकाल विछड़ ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आप आपणा शब्द सुणाया। शब्द सुनेहड़ा हरि करतार, गुर गोबिन्द आप जणाईआ। पूत सपूता सेवादार, तेरी वड वड्याईआ। तेरा नां मेरा जैकार, लोआं पुरीआं दए सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, वड दाता बेपरवाहीआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, दर तेरा वेख वखाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ आप बणाईआ। सच महल्ला कर त्यार, नौ दुआरे बन्द कराईआ। दसवीं जोती

दस अवतार, घर साचे वज्जी वधाईआ। शब्द अगम्मी आवे धार, सुण अगम्मो पार कराईआ। सचखण्ड सुहाए सच्चा घर बार, हरि साचा वेख वखाईआ। निरगुण जोती नूरो नूर होए उज्यार, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा पावे सार, नौ खण्ड सत्त दीप आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण वेस आपणा कर, जोती जामा भेख धर, भेखा धारी भेख वटाईआ। जोती जामा धरया भेख, हरि साचा वड वड्याआ। नानक गोबिन्द लिख्या लेख, प्रभ साचे आप लिखाया। आपे अन्तिम लए वेख, ना सके कोए मिटाया। लक्ख चुरासी तेरी रेख, तेरा लहिणा रही मुकाया। वेखणहारा धारी केस, मूंड मुंडाया फोल फोलाया। निरगुण जोती दस दस्मेस, सम्बल नगरी इक्क सुहाया। कान्हा कृष्ना गवर्धन धारी रिखी केस, बन बिन्दरा फेरा पाया। राम रामा इक्क नरेश, रावण गढ़ दए तुड़ाया। सहँसर मुख वेखे शेष, दो सहँसर जेहवा आप हिलाया। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए वेख, कलिजुग सोए लए जगाया। फिरनहारा देस परदेस, देस दिसन्तर डेरा लाया। आदि निरँजण अवल्लड़ा भेस, कलिजुग अन्तिम आप वटाया। लहिणा देणा चुक्के ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति लेखा रिहा मुकाया। गुरसिख साचे ग़रीब निमाणे आपे वेख, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए मिलाया। हरिजन हरि हरि पाया, समरथ पुरख करतार। गुर शब्दी मेल मिलाया, भरया नाम भण्डार। जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया, मेट मिटाए लोभ हँकार। साची सिख्या इक्क समझाया, घर मेला आप करतार। दर दरवेशा वेस वटाया, आप आपणी किरपा धार। जगत निमाणे लए तराया, फड़ बांहों लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका कर, एका कार कमाया। साची कार साचे घर, हरि साचा आप करांयदा। गुरमुखां देवे साचा वर, जुग जुग वेख वखांयदा। धरनी धवल अग्गे सीस आपणा धर, धुर दाता पुरख बिधाता सर्ब ज्ञाता सर्ब लेखे लेख वेख वखांयदा। हरिजन तेरा चुक्के डर, राए धर्म ना लए फड़, दर घर साचे जाए वड़, दरगाह साची धाम सुहांयदा। कलिजुग जीव अन्तिम माया रहे सड़, आत्म विद्या ना सके कोई पढ़, ना कोई तोड़े हँकारी गढ़, दरस ना पाए उप्पर चढ़, साध सन्त नौ दुआरे बैठे वड़, माया छाया भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गुर सज्जण हरि पाया, सतिगुर मीत मुरार। आप आपणा भेट चढ़ाया, एका दूजा भउ निवार। खेवट खेट वेख वखाया, अन्तिम भवजल करे पार। मात पित बेटी बेट लेखे लाया, जो जन आए चरन दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे

घर, घर साचा बंक दुआर। घर साचा हरि पाया, परम पुरख भगवन्त। साची सिख्या मंगल गाया, वज्जी वधाई साचे सन्त। जगत संसा रोग गंवाया, मन की मणीआ एका मंत। पंच विकार अन्त जलाया, एका गाया सुहागी छंत। सतिगुर साजन नज़री आया, निरगुण जोत पूरन भगवन्त। पारब्रह्म ब्रह्म समाया, खेले खेल आदि अन्त। निहकर्मी कर्म कमाया, भेव ना जाणे जीव जन्त। जुग जुग विछड़े मेल मिलाया, आप बणाई आपणी बणत। हरिसंगत दर सुहाया, घर साचा हरि हरि कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। काया चोली रंग चलूल, गुर सतिगुर आप चढ़ानया। आदि जुगादि ना जाए भूल, लोकमात खेल खिलानया। हरिजन मेला कन्त कन्तूहल, घर साचा वेख वखानया। आत्म सेजा बरखे फूल, जिस जन हरि हरि भाणा मन्नया। आप चुकाए लहिणा देणा पिछला मूल, जिउँ माल चराए धन्नया। सच सिँघासण हरि बराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई उप्पर छप्पर छन्नया। गुरसिख गुर शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, धुर दरगाही आया भन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, जन जननी साचा जनिआ। जननी जन जनिआ, एका भगत भगवन्त। काया बुध होई बिबेक, पाया हरि हरि कन्त। त्रैगुण माया ना लाए सेक, नाता तुट्टा जीव जन्त। आपणे नेत्र लोचण नैण दर्शन पेख, आपे जाणया आपणा अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जोत मात धर, निरगुण सरगुण अन्दर वड़, भगत सन्त लए फड़, गुरसिख गुरमुख घाड़न घड़, आप बन्हाए आपणे लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अक्खर जगत वक्खर आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ांयदा।

✪ २३ माघ २०१५ बिक्रमी लक्खा सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

एकउँकारा एका नाम, एका रूप समाईआ। आदि अनादी अगम्म अथाह, एका एक अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, बेअन्त रूप समाईआ। आपे वसे आपणे थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। करे कराए सच न्याँ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सतिगुर शब्द बण मलाह, लोकमात फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लए जगा, देवे वड वड्याईआ। अन्दर मन्दिर जोत जगा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। साची रंगण नाम चढ़ा, एका रंग रंगाईआ। अंगीकार आप करा, आपणी गोद उठाईआ। साचा संगी संग निभा, दिवस रैण सेव कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखा, गगन पातालां फोल फोलाईआ। भेव अभेदा भेव खुल्हा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। निरगुण बाती इक्क टिका, सरगुण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। एका नाम इक्क निरँजण, एका पुरख अख्वांयदा। अबिनाशी करता सर्ब घट सज्जण, घट घट डेरा लांयदा। भगतन मीता करे कराए साचा मजन, लोकमात वेख वखांयदा। गुरमुखां आए पड़दे कज्जण, नित नवित्त कार कमांयदा। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना रक्खे लज्जण, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी धार धरांयदा। धार अवल्ली पुरख करतार, खेले खेल निरंकारया। भेव ना पाए कोए संसार, वेद कतेब ना कोए जणा रिहा। इक्क इकल्ला कर पसार, एक अनेका रूप वटा रिहा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, साची चलत चला रिहा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, आप आपणा खेल खिला रिहा। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड टिका रिहा। सेवक सेवा लाए रवि ससि सतार, दिवस रैण आप जणा रिहा। घड़ी पल खेल अपार, वेला वक्त ना किसे उपा ल्या। आपे जाणे सिरजणहार, लेखा आपणे हथ्थ रखा ल्या। जुग जुग खेल करे संसार, जुग करता वेस वटा ल्या। धरनी धरत धवल दए सहार, आकाश प्रकाश डेरा ला ल्या। वेखणहार जंगल जूह उजाड़, प्रभास जलां थलां आप अख्वा ल्या। आदि अन्त ना जाए विनास, हरि हरि आपणा नाम रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती जोत जगा ल्या। एका जोत अलक्ख अभेव, आदि पुरख अख्वांयदा। लक्ख चुरासी करे सेव, आप आपणी किरत कमांयदा। हर घट अन्दर लाई जिह्व, पवन स्वासी आप चलांयदा। जोत निरँजण मस्तक थेव, तिलक ललाटी आप टिकांयदा। जिस जन खुल्लाए आपणा भेव, सो जन दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना रचनहारा, एका एक अख्वाईआ। दो जहानां खेल न्यारा, त्रिलोकी बंधन पाईआ। चौदां लोकां हट्ट पसारा, एका घाट जणाईआ। लक्ख चुरासी कर वणजारा, एका वस्त रिहा वरताईआ। निरगुण रूप अगम्म अपारा, त्रै त्रै वेस वटाईआ। पंचम पंचम मीत मुरारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाईआ। मन मति बुध दए आधारा, पंज तत्त मेल मिलाईआ। अट्ठ तत्त बणाए इक्क मुनारा, नौ दर खोल्ह खुल्हाईआ। आपणा खेल करे अपारा, घर घर विच लए टिकाईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, चार दिवार ना कोए रखाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यारा, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजाईआ। अमृत बरखे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। कँवल कँवला मुख उग्घाड़ा, नाभी नाभ भवाईआ। बजर कपाटी तोड़े ताला, वड दाता बेपरवाहीआ। आत्म सेजा सच अखाड़ा, आपे बैठा लाईआ। होए प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर दिस ना आईआ। शब्द गुर साचा लाड़ा, निज नेत्र बैठा राह तकाईआ। गुरमुख

नारी कर प्यारा, आपणे अंक समाईआ। एका सेजा सुत्ते पैर पसारा, जोती शब्दी करे कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपारा, भेव अभेद आप हो जाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यारा, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। मात पित ना कोए प्यारा, भाई भैण ना कोए दसाईआ। धीआं पुत्तर ना कोए पसारा, नार कन्त ना कोए हंढाईआ। निरगुण मेला निरगुण धारा, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। जोत जगे अगम्म अपारा, काया मन्दिर आप सुहाईआ। सन्त सुहेले कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुख रखाए चरन दुआरा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। सफ़ल कराए कुक्ख विच संसारा, जो जन रहे सरनाईआ। मनमुख लुक लुक वेखण भेव ना पायण हरि करतारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होई हल्काईआ। जगत तृष्ना हाहाकारा, दिवस रैण रही कुरलाईआ। जूठा झूठा लाया नाअरा, चारों कुन्ट सुणाईआ । नाता तुट्टा परवरदिगारा, मिल्या मेल ना साचे माहीआ। विभचार होई नार कमज़ाता, उत्तम ज़ाता ना कोए बणाईआ। पाया दरस ना पुरख बिधाता, मानस मानुख गए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। कार कराए हरि हरि मीता, आदि जुगादि समाया। जुग जुग जाणे आपणी रीता, आप आपणी बणत बणाया। आपे ठांडा आपे सीता, आपे अग्नी तत्त जलाया। आपे मन मति वेखे आपणी रीता, आपे सांतक सति कराया। आपे वेद पुराण शास्त्र गाए गीता, अञ्जील कुरान आप अल्लाया। आपे वस्सया हस्त कीटा, ऊँचां नीचां डेरा लाया। आपे खाणी बाणी वसे हरि हरि मीठा, हरि मीठा नाम उपाया। आपे शब्द अनादी गाए अनडीठा, लिख्त पढ़न विच ना आया। आपे त्रैगुण माया तप्या अंगीठा, लक्ख चुरासी दए जलाया। आपे कौड़ा करे मिट्ठा रीठा, गुरमुख साचे लए तराया। आपे परखणहारा नीता, निज घर बैठा सेज वछाया। आपे पतित आप पुनीता, पतित पापी आप अख्वाया। आपे मन्दिर मस्जिद देहुरा गुरुदुआर मट्ठ मसीता, शिवदवाला आप उपाया। आपे रामा आपे सीता, आपे राधा कृष्न हंढाया। आपे भगत सन्त रहे अतीता, राम नाम आप दृढ़ाया। आपे ईसा मूसा वेस कीता, आप आपणी अलख जगाया। आपे संग मुहम्मद चार यार वस्सया चीता, अल्ला राणी आप प्रनाया। आपे निरगुण नानक खेवट खेटा, पारब्रह्म वेस वटाया। आपे गोबिन्द दस दस मीता, घर साचा इक्क वखाया। वरन बरन आपे जाणे आपणी रीता, जुग जुग आपणी धार चलाया। जन भगतां वस्सया काया मन्दिर तन तन मन मन चीता, तन मन भरम गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण खेल खिलाया। सरगुण मेला हरि करतारा, आदि जुगादि करांयदा। जुग जुग खेले खेल अपारा, आपणी कल वरतांयदा। जोती नूर नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। नाम नाम नाम भण्डारा, हरि नामा आप वरतांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारा,

एका नाअरा लांयदा। गुरू गुरु गुर अवतारा, पारब्रह्म वेस वटांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। ना जन्मे ना मरे आवे जावे वारो वारा, सरगुण निरगुण वेख वखांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म एका धारा, एका रंग रंगांयदा। कूड़ी क्रिया मेट पसारा, सति सति वरतांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम डेरा ढांयदा। चारों कुंट पावे सारा, दहि दिशा फोल फोलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा आप उठांयदा। राज राजान शाह सुल्तान उठाए एका वारा, एका धक्का लांयदा। मक्का काअबा पाए सारा, दो दो आबा वेख वखांयदा। हक्क जनाब परवरदिगारा, ख़लक ख़ुदाई विच समांयदा। ख़ालक ख़लक इक्क प्यारा, एका घर वखांयदा। एका हक्क बहक्क लाए नाअरा, हक्क हकीकत इक्क जणांयदा। लाशरीक इक्क निरँकारा, वाहद ख़ुदा आप अख्वांयदा। राम कृष्न रूप हरि निरँकारा, वेस वेसी आप वटांयदा। देस परदेसा बोल जैकारा, जुग जुग आपणी अलख जगांयदा। अञ्जील कुरान कर त्यारा, तीस बतीस आपे गांयदा। राग छतीस हो उज्यारा, घर घर मंगल सुणांयदा। पुराण अठारां कर त्यारा, वेद व्यासा रंग रंगांयदा। चारे वेदां ख़बरदारा, चारे युग सेव कमांयदा। ब्रह्मा वेता बण वरतारा, जगत भण्डारा हथ्थ रखांयदा। विष्नूं देवे इक्क सहारा, एका कर्म कमांयदा। शंकर तेरा खेल न्यारा, प्रभ साची सेव लांयदा। निरगुण वस्सया सभ तो बाहरा, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, घर घर डंक वजांयदा। साधां सन्तां पावे सारा, आप आपणा दर सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ो कूड़ वेख पसारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। शब्द गुर लए अवतारा, जोत निरँजण सेवा लांयदा। आदि निरँजण पाए सारा, एका दर खुल्हांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठांयदा। हँ हँगता करे ख्वारा, एका ब्रह्म वखांयदा। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, ज़ात पात ना कोई बणांयदा। एका शब्द एका नाअरा, एका कलमा अमाम पढ़ांयदा। एका राम कृष्न कर प्यारा, नानक गोबिन्द वेख वखांयदा। सोहँ शब्द हरि अपारा, आदि जुगादी आप चलांयदा। सतिजुग तेरी बन्न्हे धारा, आप आपणी कल वरतांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क जैकारा, सत्तां दीपां आप जणांयदा। सर्ब जीआं दा इक्क भण्डारा, एका हरि वरतांयदा। बुध बिबेकी कर अधारा, सांतक सति रखांयदा। राजस राज जोग इक्क अधारा, एका मार्ग लांयदा। तामस तृष्ना कर खुआरा, कलिजुग झोली पांयदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। सच सिँघासण बैठ आप करतारा, जरम कर्म धर्म सर्ब वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि दर घर एका एक बुझांयदा।

देवणहारा साची वथ्थ, एका पुरख अकालया। सर्ब कल आपे समरथ, दीन मज़्ब दीन दिआलया। हरिजन चढ़ाए नाम रथ, जुग जुग अवल्लड़ी चालया। शब्द जणाई महिमा अकथ, काया मन्दिर सच्ची धर्मसालया। जगत विकारा पाए नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखा ल्या। लहिणा देणा चुकाए मस्तक मथ्था, पूर्ब झोली आप भरा रिहा। हउमे हँगता बुरज जाए ढठ्ठ, जिस जन रसना सोहँ गा ल्या। लेखा चुक्के तीर्थ अठसठ, चरन धूढ़ जन नुहा ल्या। साची पूजा पाठ, अक्खर वक्खर इक्क सुणा ल्या। मेटे रैण अन्धेरी रात, गुर शब्दी चन्द चढ़ा ल्या। अमृत देवे बूंद स्वांत, नाम प्याला आप प्या ल्या। आप जणाए आपणी गाथ, आपणा मार्ग आप सिक्खा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर इक्क सुहा ल्या। घर मन्दिर सच दुआरा, हरि सज्जण वेख वखाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपारा, आप आपणा रूप वटाईआ। नेत्र जोत कर उज्यारा, दिब नेत्र आप खुलाईआ। शब्दी शब्द शब्द भण्डारा, गुर सतिगुर झोली पाईआ। सन्तन सति सति मीत मुरारा, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। खेले खेल एकँकारा, अकल कल धारी भेव ना राईआ। ज़ात अजाति वस्सया बाहरा, वरन गोत ना कोई बणाईआ। ऊँचां नीचां करे इक्क प्यारा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। साचो सच सच वरतारा, सच सुच्च झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा एका वर, एका घर एका दर एका हरि खुलाईआ।

१५५ ०८

✪ २३ माघ २०१५ बिक्रमी मुनशा सिंघ दे घर पिण्ड नौशहरा गुरदास पुर ✪

सतिगुर पूरा सरबंग पुरख अकाल अख्वा रिहा। निरगुण जोत नूर उजाला, एका एक एकँकारया। प्रगट होए गुर गोपाला, शब्दी डंक वजा रिहा। आदि जुगादी खेल निराला, भेव कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेख वखा रिहा। निरगुण जोत मूर्त अकाल, अजूनी रहित अख्वांयदा। सच घर बैठ सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचे आसण लांयदा। शब्दी शब्द वजाए ताल, नाद अनादी इक्क वजांयदा। आपे चले आपणी चाल, चाल अवल्लड़ी इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। निरगुण रूप शाहो भूप, हरि पुरख सुल्तानया। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलानया। आपणी जोती आपे रिहा फूट, पारब्रह्म श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल दो जहानया। निरगुण खेल पुरख समरथ, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। जगत विकारा देवे मथ्था,

शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जन भगतां देवे नाम वथ्थ, अन्तर मन्त्र इक्क जणाईआ। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस जन दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। जुग जुग धार हरि करतार, आपणी आप बंधाया। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह आप अख्वाया। अकल कल एकँकार, अकल कल समाया। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताया। कल वरतंता हरि भगवन्ता, एका पुरख अकालया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, दीनां बंधप दीन दिआलया। मेल मिलावा साचे सन्ता, घर साचा इक्क सुहा ल्या। आपणी महिमा जाणे अगणता, लेखा लिख्त ना किसे वखा ल्या। आपे नारी आपे कन्ता, पूत सपूता आप अख्वा ल्या। आपे लक्ख चुरासी वस्सया जीआं जन्ता, अजूनी रहित नाम धरा ल्या। आपे रसना जेहवा मणीआ मंता, पवण स्वासी आप चला ल्या। आपे हउमे गढ़ हँगता, आपे माया मोह फसा ल्या। आपे भुक्खा आपे नंगता, आपे दर दर अलख जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धरा ल्या। आपणा जुग जुग खेल आपे कर, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग त्रेता गया हर, द्वापर पार वखांयदा। कलिजुग साजण घाड़न घड़, लोकमात वखांयदा। वरन बरनां वेखे खड़, जीव जन्त कुरलांयदा। अग्नी अग्न रहे सड़, सांतक सति ना कोई करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। प्रगट होया हरि निहकलंक, लोकमात वज्जी वधाईआ। आप उठाए राउ रंक, शाह सुल्तानां आप जगाईआ। नाउँ धराए वासी पुरी घनक, सम्बल डेरा लाईआ। गुरसिख उधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाईआ। जोती शब्दी लाए तनक, एका एक वखाईआ। गुरसिखां सुहाए दुआर बंक, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जिस जन आप फिराए मन का मनक, सो जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण करे रुशनाईआ। निहकलंक जोती जामा, हरि हरि आपे पांयदा। सोहँ वज्जे सच दमामा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। आपे जाणे आपणा कम्मा, करनहार आप अख्वांयदा। आपे कृष्न आपे रामा, रूप राम आप वखांयदा। नानक गोबिन्द हो प्रधाना, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। नाम सति धुर फ़रमाना, जीआं जन्तां आप सुणांयदा। चार वरनां देवे इक्क ज्ञाना, एका बूझ बुझांयदा। सति पुरख निरँजण मेल मिलाना, एका रंग रंगांयदा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज जत धरांयदा। चरन धूढ़ कराए सच अशनाना, सतिगुर नानक दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर नाउँ रखांयदा। सतिगुर नानक निरगुण धार, लोकमात आप चलाईआ। लोकमात

कर उज्यार, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। वरनां बरनां इक्क अधार, एका बूझ बुझाईआ। करे कराए एका कार, एका वेख वखाईआ। जुग जुग बन्ने साची धार, साचे वड वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसार, वेखणहारा सहिज सबाईआ। पंज तत्त कर आकार, मन मति बुध विच टिकाईआ। कलिजुग काया दए अधार, एका गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर एका कर, एका अलख जगाईआ।

निरगुण जोत सच्चे पातशाह, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। हरि शब्द चलाए साचा रथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पुरख अकाल जपाए एका नाँ, ना कोई पूज पुजाईआ। सृष्ट सबाई पिता माँ, एका एक अख्वाईआ। चार वरनां पकड़े बांह, अठारां वरन दए सरनाईआ। नानक निरगुण गया समझा, ऊँच नीच ना कोई दिसाईआ। गुर गोबिन्द अमृत गया प्या, इक्क प्याला भर वखाईआ। गुरू ग्रन्थ विचोला विच धरा, सतिगुर अर्जन लेख लिखाईआ। दूई द्वैती ना वसे किसे थाँ, जो जन शब्दी खोज खोजाईआ। सृष्ट सबाई नाता तुटे भैण भ्रा, एका अक्खर वखाईआ। दुरमति मैल दए गंवा, जो जन नानक मार्ग पाईआ। गुर गोबिन्द दरस दए दिखा, पंचम पंचम मोह चुकाईआ। सृष्ट सबाई हरि का नाम गई भुला, घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आसा तृष्ना लई वधा, सांतक सति ना कोई वसाईआ। अकाल पुरख प्रभ बेपरवाह, आदि जुगादि वेखे वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे आपे जाणे आपणा नाँ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिगुर नानक गोबिन्द जो जो लिख्त गए करा, उस दा पूरना रिहा पाईआ। भरम भुलेखा कोई रक्खे ना, एका जोत आदि जुगादि समाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर इष्ट मना, सृष्ट सबाई रिहा समझाईआ। दूजा पुरख अकाल लैणा मना, जो गोबिन्द लेख लिखाईआ। सुत्त दुलारा आप अख्वा, दुष्ट दमन सेव कमाईआ। तन बस्त्र शृंगार आप करा, कंघा कच्छ कड़ा कृपान सीस जगदीस इक्क सुहाईआ। अमृत धारा मुख चुआ, चार वरनां एका जाम प्याईआ। आपणा अग्गे दित्ता सीस झुका, हरिसंगत वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच न्या, हरि दाता बेपरवाहीआ। गुर गोबिन्द वेखे थाउँ थाँ, निथाव्याँ थान दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेखे घर अन्तिम पूरा दए कर, जो नानक गया लिखाईआ। नानक गोबिन्द लेख लिखाया, भुल्ल रहे ना राईआ। अंगद अंगीकार कराया, एका अंग समाईआ। अमरु अमरा पद बहाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। आत्म अन्तर इक्क नुहाया, अमृत सर वखाईआ। रामदास गुर सेवा लाया, साचा धाम सुहाईआ। गुर अर्जन शब्द बोध अगाध जणाया, गुरू ग्रन्थ उपजाईआ। सन्तां भगतां गुरमुखां

गुरसिखां गुर सतिगुर एका रंग रंगाया, जो खोजे सो पाईआ। हरि मन्दिर अन्दर आप टिकाया, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा खुल्हाईआ। आप आपणा खेल खिलाया, हरि गोबिन्द जोत रुशनाईआ। दोए धारां आप बंधाया, देह जोत करे कुड़माईआ। शब्द गुर वंड वंडाया, गुरू ग्रन्थ सहाईआ। आपणा भेव ना किसे जणाया, हरिराए एह समझाईआ। राम राए अग्नी तत्त जलाया, भुल्ल रहे ना राईआ। हरि कृष्ना एका तत्त वखाया, बाल बाला विच टिकाईआ। आप आपणा भेट चढ़ाया, सिक्खी साची सिफ्त सलाहीआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाया, आप आपणा रंग रंगाईआ। पूत सपूता सुत्त दुलारा नाम धराया, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। सिँघ रूप हो दरस दिखाया, साचा वेस वटाईआ। साचा खण्डा हथ्थ फड़ाया, श्री भगौती आप सहाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाया, गुर गोबिन्द हरि तुध बिन अवर ना दीसे कौण दो जहानां करे रुशनाईआ। केस सीस जगदीस आप उपाया, सच दस्तार आप टिकाईआ। साचा खण्डा इक्क वखाया, तन गात्रे रिहा लटकाईआ।

१५८

हरि शब्दी शब्द बलवाना, गुर सतिगुर नाउँ रखाईआ। पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, सूरबीर वड वड्याईआ। मूर्त अकाल गुण निधाना, गुणवन्ता सहिज सुखदाईआ। आदि निरँजण दो जहानां, हरि साचा खेल खिलाईआ। नाम खण्डा तीर कमाना, घर साचे आप उठाईआ। लोआं पुरीआं इक्क निशाना, ब्रह्मण्ड खण्ड पार कराईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्याना, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। शब्द गुर सच सिक्दारा, साचा कर्म कमांयदा। लक्ख चुरासी बन्हे धारा, मार्ग आपणा लांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, पंज तत्त डेरा लांयदा। दीवा बाती कर उज्यारा, काया गढ़ सुहांयदा। साधां सन्तां कर प्यारा, साची बूझ बुझांयदा। कँवलापत हरि मीत मुरारा, परम पुरख अख्वांयदा। नाम अनादी धुर जैकारा, नर निरँकारा आप लगांयदा। पारब्रह्म गुर लै अवतारा, जुग जुग वेस धरांयदा। वेखणहारा जगत किनारा, आर पारा डेरा लांयदा। भेव ना पाए जीव गंवारा, वेद कतेब ना कोए लखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम लेख लिखांयदा। शब्द गुर सदा मेहरवाना, साचे तख्त सुहाईआ। खेले खेल राज राजाना, त्रैगुण वस्सया सर्ब लोकाईआ। भगतन देवे इक्क ज्ञाना, आत्म ब्रह्म जणाईआ। मन्दिर वसाए इक्क मकाना, घर विच घर रुशनाईआ। सति सन्तोखी बन्हे गाना, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। अनहद सुणाए आपणा गाना, छत्ती राग भेव ना राईआ। शब्दी शब्दी सच तराना, हरि सज्जण आप सुणाईआ। एका रंग रंगे

श्री भगवाना, हरिजन साचे आप रंगाईआ। पुरख अबिनाशी बीना दाना, दाता दाना दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटे कूड़ी शाहीआ। सतिगुर सच्चा शहिनशाह, शब्द गुरू गुर देव। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आदि निरँजण अलख अभेव। कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, हरिजन लाए साची सेव। शब्द सुनेहड़ा दए सुणा, अमृत आत्म साचा मेव। जन जम का जेड़ा दए कटा, जो गाए रसना जिह्व। नगर खेड़ा दए वसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एक अनेक एक निहकेव। शब्द गुर गुर साख्यात, कलिजुग जोत जगाईआ। गुरसिख बणाए पारजात, घर मेला सहिज सुभाईआ। दीनां बंधप दीनां नाथ, होए सहाई अनाथां नाथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सज्जण सुहेला सगला साथ, त्रिलोकी नंदन आप अख्वाईआ। आप सुणाए सतिजुग गाथ, सोहँ शब्द पढ़ाईआ। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ना कोए वखाईआ। दुरमति मैल देवे काट, जो जन आए सरनाईआ। चौदां लोक वखाए एका हाट, प्रभ बैठा आप खुल्हाईआ। कलिजुग खेल बाज़ीगर नटूआ नाट, घर घर बैठा सांग वरताईआ। कोए ना उतरे पूरे घाट, जूठे झूठे रहे कुरलाईआ। गुरमुख विरले बजर कपाटी जाए पाट, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। एका शब्द सिँघासण वेखे खाट, हरि सुत्ता बेपरवाहीआ। निरगुण जोती जगे ललाट, अट्ठे पहर रुशनाईआ। गुरसिखां नेड़ रखाए वाट, जगत जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा रिहा मुकाईआ। कलिजुग लेखा अन्त मुकाउणा, हरि साचा जोत जगांयदा। चार वरन एका मार्ग लाउणा, एका राह वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सेवा लाउणा, सोया कोए रहिण ना पांयदा। जगत अन्धेरा अन्त मिटाउणा, नाम साचा चन्न चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी बस्त्र तन इक्क पहनाउणा, शब्द शब्दी जड़त जड़ांयदा। राजा राणा तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। ज्ञानीआं ध्यानीआं माण गवांउणा, दर दुआरे आप भवांयदा। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर कोई रहिण ना पाउणा, हरि जोती जोत खचांयदा। पंडत पांधे मस्तक तिलक ना किसे लगाउणा, जगत रीती वेख वखांयदा। एका ढोला नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां गाउणा, प्रभ साचा आप सुणांयदा। चरन कँवल सच सरोवर सृष्ट सबाई नहाउणा, अठसठ मूल चुकांयदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क मनाउणा, इष्ट देव आप अख्वांयदा। रामा कृष्न नज़री आउणा, ईसा मूसा संग रखांयदा। नानक गोबिन्द जोत जगाउणा, नूरो नूर समांयदा। कायनात कलमा इक्क पढ़ाउणा, शरअ शरीअत इक्क वखांयदा। ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाउणा, एका मार्ग लांयदा। हट्ठ तप जोग सन्यास बैराग इक्क रखाउणा, एका राह चलांयदा। मन्दिर मसीत गुरदुआरा शिवदवाला मट्ठ आप सुहाउणा, एका रंग रंगांयदा। जीवां जन्तां साधां सन्तां

हँकारी गढ़ भाण्डा भरम आप भन्नाउणा, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। गुरसिख कागों हँस बनाउणा, सोहँ चोग चुगांयदा। ऊँचां नीचां एका धाम बहाउणा, ज़ात पात ना कोए रखांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटाउणा, जगत तृष्ना अग्ग बुझांयदा। जोद्धा सूरबीर हरि आप अख्वाउणा, लोआं पुरीआं फोल फोलांयदा। सच तख्त हरि सुल्तान पुरख अबिनाशी आसण लाउणा, पारब्रह्म वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ कूड़ा मेट मिटांयदा। कलिजुग मेटे कूड़ी शाही, हरि दाता वड मेहरवानया। जन भगतां देवे आप गवाही, शब्द गुर दर दरबानया। मनमुखां अन्तिम पाए फाही, राए धर्म राह तकानया। लाड़ी मौत करे कुड़माई, हथ्थीं बन्ने माया गानया। घर घर काग रही उडाई, मन मति दिसे सुंज मसाणया। गुरमति वेखे थाउँ थाँईं, हरि दाता गुण निधानया। सन्त सुहेला पकड़े बांहीं, आप आपणा रूप पछानया। मनमुखां अन्तिम दए सज़ाईं, शौह दरयाए आप रुढ़ानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे तेरा कूड़ पसारा चारों कुंट जगत हँकारा, सीतल सति ना कोए रखा निआ। कलिजुग कूड़ जगत हँकार, मनमति रही कुरलाईआ। नार दुहागण कर श्रृंगार, मनमति फिरदी वाहो दाहीआ। जूठ झूठ नाल प्यार, आप आपणे लड़ बंधाईआ। जगत तृष्ना होई ख्वार, घर घर अलख जगाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सुआईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, लोकमात जोती जामा भेख वटाईआ। गुरसिख साचे लए उभार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। देवणहारा दरस अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। किसे हथ्थ ना आए हट्ट बाज़ार, कोटी कोटि वेख वखाईआ। कोई फड़ ना सके तट किनार, अठसठ बैठे धूंणीआँ ताईआ। जटा जूट हो ख्वार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बैठे राह तकाईआ। गुरमुखां मेल मिलाए किरपा धार, कलिजुग सोए आप जगाईआ। नीचां अन्दर नीच करे प्यार, नीचो नीच आप अख्वाईआ। सच सुच्च शब्दी धार, तन साचे आप टिकाईआ। कादर करीम करे उदार, देवे रिजक सबाहीआ। ख़ालक ख़लक इक्क आधार, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी रेखा वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी कूड़ी रेखा, कूड़ा कर्म कमाईआ। वरनां बरनां भरम भुलेखा, भरमी भरम लोकाईआ। शाहो भूप हरि नर नरेशा, हर घर मन्दिर अन्दर रिहा समाईआ। गुरसिख विरले नेत्र पेखा, जिस जन माया मोह चुकाईआ। वेखणहारा धारी केसा, मूंड मुंडाए गले लगाईआ। आपे जाणे आपणा लेखा, ब्रह्मा लेखा रिहा समझाईआ। सति पुरख सद आदेसा, सति वजदी रहे वधाईआ। जोती जामा जोत प्रवेशा, लोकमात वेख वखाईआ। बंक दुआरे गणपति गणेशा, शिव विष्न रहे सीस झुकाईआ। निउँ निउँ वेखे ब्रह्मा वेता, हरि साचा कवण कूटे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा कूड़ पसारा, चार कुन्ट उठ धाया। शाह सुल्ताना हाहाकारा, ग़रीब निमाणे ना कोई सहाया। अल्ला राणी एका नाअरा, हू हू राग अल्लाया। खेले खेल मुहम्मदी यारा, चार यारी मता पकाया। ईसा मूसा ख़बरदारा, एका रिहा उठाया। कलिजुग साचा मीत मुरारा, घर आपणा वेखण आया। चौदां तबकां इक्क हुलारा, हरि साचा इक्क हिलाया। मंगी मंग अन्तिम वारा, चौदां सद पूर कराया। नानक गाई तेरां धारा, तेरां तेरी झोली पाईआ। प्रगट होया बेऐब परवरदिगारा, जोती नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। कलिजुग रूप नौ खण्ड, सत्त दीप देवे रुशनाया। जीव जन्त भेख पखण्ड, काला सूसा तन हंढाया। आपणी आपणी करन वंड, हरि का भेव किसे ना पाया। लक्ख चुरासी खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा इक्क चमकाया। पल्ले ना किसे नाम गंढ, चारे कन्नीआं रहे झड़ाया। वेखणहारा जेरज अंड, लोकमात फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम एका अक्खर देवे वंड, नाम नामा झोली पाया। हँ ब्रह्म पावे ठंड, पारब्रह्म मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती नूर करे रुशनाया।

✪ २४ माघ २०१५ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर पिण्ड सुल्तानी ✪

निरगुण रूप हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। इक्क अकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। आदि निरँजण भेव अपार, भेव किसे ना पाया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, हरि आपणी आप कराया। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका एकँकारया। जुग जुग खेले खेल तमाशा, खेलणहार, आप अख्वा रिहा। लोआं पुरीआं मण्डल मण्डप पावे रासा, गगन पताला जोत जगा रिहा। शब्दी शब्द शब्द भरवासा, हरि शब्दी बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा रूप उपा रिहा। निरगुण रूप अपर अपार, रूप रंग ना रेखया। इक्क अकल्ला पावे सार, आप आपणा जाणे भेखया। आपणी कल आपे धार, आपे लिखणहारा लेखया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण आपे वेख्या। निरगुण नूर हरि अकल्ला, एका धाम सुहाईआ। आदि जुगादी अछल अछल्ला, अछल अछल्ल वखाईआ। लक्ख चुरासी हर घट आसण आपे मल्ला, आप आपणा मुख छुपाईआ। वसणहारा जलां थलां, बेअन्त नाम

धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका दर घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर थिर दरबारा, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा । सच सिँघासण अपर अपारा, पावा चूल ना कोई रखांयदा। तख्त ताज सच्चा सिक्दारा, एका एकँकारा नाउँ धरांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड दए सहारा, जेरज अंड आप सुहांयदा। उत्भुज सेत्ज कर प्यारा, आप आपणा बंधन पांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। जुग जुग वेस नूर जोती कर उज्यारा, लोकमात फेरा पांयदा। साधां सन्तां नाम प्यारा, वणज वपारा इक्क वखांयदा। शब्द अनादी धुनी धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिरांयदा। तोड़नहारा बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा। दस्म दुआरा सच्चा घर बारा, हरिजन साचे आप वखांयदा। आत्म सेजा हो उज्यारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। सुरती शब्दी मेल कन्त भतारा, घर साचा बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण मेला विच संसार, हरि साचा आप कराईआ। पारब्रह्म मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। आदि जुगादी गुर अवतार, परम पुरख अख्वाईआ। शब्द डंका इक्क निरँकार, आपणा आप वजाईआ। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, साधां सन्तां आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। जुग जुग धार हरि करतार, आपणी आप चलांयदा। परम पुरख पुरख खेल अपार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। शब्द विचोला विच संसार, जोती जोत डगमगांयदा। वरन बरन इक्क प्यार, साची सरन इक्क रखांयदा। ऊँच नीच राउ रंक इक्क घर बार, साचा धाम आप सुहांयदा। भगत भगवन्त मीत मुरार, साची भगती नाम दृढ़ांयदा। साध सन्त नार कन्त भतार, आप आपणे अंग लगांयदा। गुरमुख गुरसिख कर उज्यार, आप आपणा मार्ग लांयदा। मेल मिलावा इक्क गिरधार, एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण पुरख अबिनाशा घट घट वेखे आप तमाशा, घर घर विच आसण लांयदा। घर मन्दिर उच्च अटारी, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगण जोत कर उज्यारी, हरिजन मेल मिलांयदा। सन्त मिलावा विच संसारी, साचा घर सुहांयदा। एका रंग रंगे करतारी, करता पुरख आप अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल न्यारी, सतिजुग त्रेता द्वापर धार बंधांयदा। राम रूप कृष्न मुरारी, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मूल चुकांयदा।

✪ २४ माघ २०१५ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे घर वज़ीर पुर ✪

सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, पारब्रह्म बेअन्त। खेले खेल दो जहान, महिमा अगणत अगणत। लक्ख चुरासी जाणी जाण, मेल मिलावा साचे सन्त। शब्दी शब्द शब्द निधान, आप चलाए जुगा जुगन्त। थिर घर वासी हरि सुल्तान, परउपकारी जीआ जन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी बणत। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, एका पुरख अकालया। सति सरूप सति वरतार, खेले खेल निरालया। जुगा जुगन्तर बन्ने धार, शब्द शब्दी बंधन पा ल्या। निरगुण निरगुण नूर नूर उज्यार, जोती जोत डगमगा ल्या। ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार, लोआं पुरीआं डेरा ला ल्या। रवि ससि मेल सतार, गगन मण्डल आप बणा ल्या। लक्ख चुरासी कर प्यार, हर घट आसण ला ल्या। नाम नामां अपर अपार, आपणा आप उपा ल्या। धुन अनादि सच्ची धुन्कार, घर साचे आप सुहा ल्या। अगम्म अगम्मड़ा खेल न्यार, अलख निरँजण लेख लिखा ल्या। सचखण्ड दुआरा भर भण्डार, हरि साचा आप सुहा रिहा। सन्त सुहेले पावे सार, लोकमाती मेल मिला ल्या। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। सतिगुर पूरा हरि समरथ, एका एक एकँकारया। जुग जुग देवे नाम वथ्थ, आपणी वस्त झोली पा रिहा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धरा रिहा। शब्द जणाई अकथना अकथ, कथनी कथा ना किसे गा ल्या। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, लक्ख चुरासी बंध बंधा ल्या आप उपाए आपे देवे मथ, दूसर संग ना कोई रखा ल्या। सन्त सुहेले रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी दया कमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। सतिगुर नाउँ हरि निरँकार, एका शब्द जणाईआ। लोआं पुरीआं कर आकार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। करोड़ तेतीसा इक्क अधार, सुरपति राजा इन्द जगाईआ। धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, आपणी कल वरताईआ। आदि निरजंण जोत उज्यार, जोत निरँजण वड वड्याईआ। लोकमात खेल अपार, हरि साचा आप कराईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका गुर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी अलख जगाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म हरि, हरी हरि रूप वटांयदा। आपे करनी आपे कर, आपे वेख वखांयदा। आपणी धरनी आपे धर, आपे धवल सुहांयदा। आपणी तरनी आपे तर, तारनहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणांयदा। सतिगुर पूरा बणत बणाए, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दूसर कोई भेव ना पाए, कोटन कोटि ब्रह्मा बैठे सीस निवाईआ। अलख अलखणा लेख लिखाए, विष्नूं वंसा संग रखाईआ। बाशक

तशका गल लटकाए, शिव शंकर मेल मिलाईआ। थिर घर बैठा बेपरवाहे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वेद कतेब कोई भेव ना पाए, हरि साची वड वड्याईआ। आदि पुरख निरँजण आदि जुगादी खेल खिलाए, आदि शक्ति रंग वटाईआ। रूप रंग ना रेख वखाए, अनभव प्रकाश समाईआ। जूनी रहित आप हो जाए, अकाल मूर्त नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला, एका घर सुहांयदा। थिर घर वेखे सच महल्ला, सच सिँघासण इक्क रखांयदा। निरगुण दीपक जोती एका बल्ला, इक्क प्रकाश करांयदा। शब्द अनादी गाए ढोला, आप आपणा आप सुणांयदा। धुरदरगाही साचा तोला, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। आदि अन्त हरि अडोला, एका धाम वखांयदा। आपणी शक्ती आपे मौला, परवरदिगार नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। सतिगुर पूरा सुहाए दर, दर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर वसेरा एका घर, छप्पर छन्न ना कोए बणाईआ। ना कोई वसे चार दीवार, ना कोई बाढी वेख वखाईआ। ना कोई दिसे नारी नर, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। पारब्रह्म बेपरवाह निरगुण जोती बैठा धर, अट्ठे पहर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता घर साचा इक्क सुहाईआ। सतिगुर पूरा सुहाए दर दरवाज़ा, एका बंक दुआरया। बेपरवाह ग़रीब निवाज़ा, बेऐब ख़ुदा परवरदिगारया। आप आपणा साजण साजा, आप बणया मीत मुरारया। शाहो भूप वड राजन, राजा पारब्रह्म आप अख्वा रिहा। आपे जाणे आपणा काजा, जुग जुग वेस वटा रिहा। लक्ख चुरासी चलाए जहाज़ा, लोकमात आप धरा रिहा। जन भगतां मारे अगम्मी वाजा, शब्द सुनेहड़ा इक्क घला रिहा। अस्व घोड़ा रक्खे ताजा, सोलां कलीआं आसण पा रिहा। लोआं पुरीआं फिरे भाजा, आप आपणी सेव कमा रिहा। गुरसिख रक्खणहारा लाजा, लाजावन्त वेस वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा सच सर, सच सरोवर इक्क सुहा ल्या। सर सरोवर साचा सर, गुर सतिगुर चरन दुआरया। पुरख अबिनाशी भण्डारा दित्ता भर, जुग जुग बणे आप वरतारया। सन्त सुहेले साची तरनी गए तर, मनमुख डुब्बे अद्धविचकारया। आपणी करनी आपे कर, आपे पावे सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा ल्या। सतिगुर पूरा रंगे रंग, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। साचे बैठा इक्क पलँघ, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव रहे मंग, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। भगतन मेला अंगी अंग, अंगी कार आप समाईआ। शब्द डोरी नाम पतंग, हरि सज्जण रिहा उडाईआ। दर दरवाज़ा आपे लँघ, सन्त सुहेला लए उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए काया माटी काची वंग, भाण्डा भरम भन्नाईआ। अनहद शब्द वजाए सच्चा मृदंग, ताल तलवाड़ा आप

खड़काईआ। अमृत आत्म सच सरोवर देवे साची गंग, दुरमति मैल गंवाईआ। सदा सुहेला वसे संग, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, सतिगुर नाम धराया। लोकमात लै अवतारा, आप आपणा बिरध रखाया। जीवां जन्तां दए सहारा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। इक्क वखाए हरि दुआरा, दूजा दर ना कोए सुहाया। सति सन्तोख सच भर भण्डारा, सच समग्री संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल कर, जुग जुग आपणी किरत कराया। जुग जुग कार हरि करंदड़ा, परम पुरख करतार। सतिगुर पूरा आप अख्वंदड़ा, निरगुण सरगुण मेल कन्त भतार। लोकमात वेस वटंदड़ा, पंज तत्त ना कर प्यार। धुरदरगाही शब्द इक्क सुनंदड़ा, आप आपणा कर उज्यार। हरिजन साचे वेख वखंदड़ा, अन्दर मन्दिर खोल्ह किवाड़। आप आपणा भेव खुल्हंदड़ा, लेख चुकाए नौ दुआर। बजर कपाटी तोड़ तुड़ंदड़ा, मार शब्द तेज़ कटार। दस्म दुआरी मेल मलंदड़ा, एका दूजा भउ निवार। तीजा नेत्र इक्क खुल्हंदड़ा, निरगुण नूर करे उज्यार। आत्म सेजा सच सुहंदड़ा, सो पुरख निरँजण कर प्यार। हँ ब्रह्म इक्क वखंदड़ा, पारब्रह्म खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवणहारा वर, जुग जुग भेख वटंदड़ा। भेख वटाए पुरख अबिनाशा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। खेले खेल जगत तमाशा, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, चौदां लोक वेख वखाईआ। चौदां तबकां पूरन आसा, पूरा रिहा कराईआ। वेखणहारा आकाश आकाशा, आकाश भेव ना राईआ। जन भगतां करे पूरी आसा, नित नवित्त वेख वखाईआ। सन्त सुहेला दासी दासा, सेवक सेव कमाईआ। जो जन रहे दरस प्यासा, कर किरपा दरस दिखाईआ। निज घर आत्म रक्खे वासा, आप आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणाईआ। जुग जुग आपणी बणत बणा, आपणा रंग रंगाया। सतिजुग साचा वेख वखा, त्रेता पार कराया। द्वापर तेरे अंक समा, आपणे अंग लगाया। कलिजुग लोकमात धरा, साची सेवा लाया। धुर फ़रमाना आप जणा, आपणे भाणे आप समाया। साचा राणा आप अख्वा, साचा ताज सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाया। कलिजुग कूड़ा बण सिक्दार, लोकमात उठ धाया। मंगे मंग दर भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दर घर दए सुहाया। जूठ झूठ कर त्यार, हउमे हँगता नाल रलाया। माया ममता दए अधार, काम क्रोध लोभ मोह हल्काया। आसा तृष्ना तन श्रृंगार, कूड़ा गहिणा तन पहनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे मेट मिटाया। दर घर साचा हरि दर पा, आपणी अलख जगांयदा। राज राजाना

दए भुला, शाह सुल्तान भरम वखांयदा। आत्म ज्ञान ना सके कोई जणा, आत्म अन्तर बन्द वखांयदा। धुन अनादी ना सके कोई वजा, अठसठ ताल ना कोई रखांयदा। सृष्ट सबाई रिहा भुला, आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वर साचा झोली पांयदा। दर घर साचा हरि अपणा, आपणा कर्म कमांयदा। ईसा मूसा संग रला, आप आपणी रचन रचांयदा। चार यार मुहम्मदी अपणा, आप आपणी चाल चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। चार यारी बद्धा नाता, हरि साची रचन रचाईआ। सतिगुर नानक पुरख बिधाता, आपणा रूप वटाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञाता, एका करे पढ़ाईआ। सति नाम अमृत बूंद स्वांता, हरिजन मुख चुआईआ। दरस दिखाए इक्क इकांता, आप आपणी कल वरताईआ। चारों कुन्ट करे खेल बहु बहु भांता, भेव कोई ना पाईआ। कलिजुग वेखे रैण अन्धेरी राता, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगाईआ। नानक जोत हरि निरँकार, निरगुण वेस वटाया। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा दर सुहाया। आपे पावणहारा सार, आपे बैठा मुख छुपाया। सर्ब जीआं दा साझां यार, लोकमात वेख वखाया। चार वरनां एका धार, ऊँच नीच ना कोई जणाया। राउ रंक सोहिण दरबार, दर दरबारा इक्क बणाया। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द गुर मेल मिलाया। गोबिन्द लेखा अपर अपार, ना कोई सके मेट मिटाया। सुत्त दुलारा ख़बरदार, हरि साचे आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, दर दरवेशा फेरी पाया। दर दरवेशा गुर गोबिन्द, साची अलख जगांयदा। खेले खेल भारत खण्ड, भाण्डा भरम भनांयदा। सर्ब जीआं सदा बख़्शिंद, जीआ दाना नाम धरांयदा। आप उपजाए आपणी बिन्द, आपणा नाउँ रखांयदा। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, भेव कोई ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग कर्म कमांयदा। गोबिन्द सूरा साचा मीता, सर्ब जीआं सुखदाईआ। वरनां बरनां ऊँचां नीचां एका कीता, एका अमृत जाम प्याईआ। आपे होया ठंडा सीता, गुरमुखां सांतक सति वरताईआ। करे खेल पतित पुनीता, पतित पावण भेव ना राईआ। ना मरया ना कदे जीता, जन्म मरन विच ना आईआ। गुर गोबिन्द वस्सया धाम अनडीठा, सचखण्ड दुआर इक्क सुहाईआ। त्रैगुण माया कलिजुग तपदा रहे अंगीठा, पंज तत्त अग्नी लाईआ। गुरमुखां वखाए भाणा मीठा, जो सरसे सेव कमाईआ। आदिन अन्ता वस्सया चीता, विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गोबिन्द गोबिन्द संग अख्वाईआ। गोबिन्द सिँघ सिँघ सूरबीर, हरि साचे आप बणाया। शब्द निराला दित्ता तीर, हथ्थ साचे आप फड़ाया। दो जहाना पैंडा चीर,

एका धार बंधाया। आपे चोटी चढ़या अख़ीर, दिस किसे ना आया। प्रगट जोद्धा पीरन पीर, पीर पीरां होए सहाया। आपे बख्शे आपणा सीर, नीर सीर शब्द समाया। दूई द्वैती पर्दा चीर, गुरसिख एका रंग रंगाया। चरन कँवल दुआरा बख्शी धीर, पुरी अनन्द सुहाया। हउमे हँगता कढ्ढी पीड़, चार वरन भैणां भाई आप जणाया। ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश ना कोए लकीर, एका दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग देवणहारा वर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। गोबिन्द गुर वड बलकारा, नाम कटारा हथ्थ उठांयदा। पंचम मीता पंच प्यारा, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम करे तन श्रृंगारा, पंचम संग रखांयदा। पंचम देवे इक्क अधारा, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। पंचम करे दर भिखारा, पंचम दर दुरकांयदा। पंचम भर नाम भण्डारा, पंचम हरि वरतांयदा। पंचम गुर बण लिखारा, गुरू ग्रन्थ सुहांयदा। एका गुरू जगत ज़ाहरा, दूसर कोए नज़र ना आंयदा। एका जोती दस अवतारा, गुरू ग्रन्थ विच समांयदा। पढ़े शब्द पावे सारा, सो जन मोहे भांयदा। खोजत खोजत करे प्यारा, माया मोह चुकांयदा। बोलत बोलत वधे विकारा, सतिगुर पूरे मूल ना भांयदा। काया गोलक कर त्यारा, नाम ख़जाना विच टिकांयदा। पन्थ अमोलक कर त्यारा, साची सिख्या एह समझांयदा। अकाल पुरख प्रभ भेव न्यारा, भेव कोए ना पांयदा। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कारा, लेखा लिख्त ना कोए लिखांयदा। वसे सदा धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहांयदा। जोती जगे अगम्म अपारा, एक नूर दरसांयदा। पिता पूत पूत पित मेल सच दुआरा, घर साचा मोहे भांयदा। एका रंग रवे निरँकारा, दूसर रंग ना कोए रंगांयदा। आदि जुगादि जुग जुग आपे बन्ने धारा, आपणी धारा आप चलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ांयदा। मन मति बुध दए अधारा, निरगुण तत्त वखांयदा। घर विच घर कर उज्यारा, आप आपणा चलत चलांयदा। ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म भेव रखांयदा। मरे ना पए जम्म, आवण जावण पतित पावन कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरा लेख चुकांयदा। कलिजुग तेरा लेख चुकाउणा, सतिगुर पूरे लेख लिखाया। आदि जुगादी इक्क अख्वाउणा, एका नाम धराया। वेस अनेका आप कराउणा, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाया। डंक अनादी इक्क वजाउणा, नाम तराना इक्क सुणाया। गुर गोबिन्द तेरा भेव खुल्हाउणा, कलिजुग अन्तिम दए सुहाया। सम्बल नगरी डेरा लाउणा, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाया। पूत सपूता आप उठाउणा, ब्रह्मण गौड़ा, वेस वटाया। उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाउणा, डूँघी कन्दर भेव ना राया। जलां थलां आप समाउणा, घट घट आपणा आप वखाया। आपणा कीता आप पाउँणा, ना कोई दूसर वेख वखाया। धू प्रहलाद लेख चुकाउणा, पूर्ब लहिणा झोली पाया। ब्रह्मा वेता जोत समाउणा, जोती जोत टिकाया।

विष्नूं वंसी सेव कमाउणा, आप आपणी सेवा लाया। शिव शंकर तेरा दर सुहाउणा, गुरमुख साजण मेल मिलाया। सुरपति तेरा रंग रंगाउणा, छोटा बाला लए उठाया। सत्त रंग निशाना आप झुलाउणा, सत्तां दीपां वेख वखाउणा, पुष्कर करौच आप उठाउणा, लक्खण वेख वखाईआ। जम्बु दीप खेल खिलाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सलमल तेरा भार वंडाउणा, सान ख़ाकी ख़ाक समाईआ। कुशा तेरा लेख लिख़ाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। गोबिन्द सूरा लोकमात वेख वखाउणा, आप आपणा लए उपजाईआ। नीला नीली धारों पार कराउणा, साचा अस्व रिहा दौड़ाईआ। कल्गी तोड़ा नाम चमकाउणा, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। सच सिँघासण आसण लाउणा, दिस किसे ना आईआ। सम्बल नगरी माण दवाउणा, त्रैलोक वज्जे वधाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाउणा, लोआं पुरीआं आप फिराईआ। लक्ख चुरासी तेरा लहिणा देण चकाउणा, लेखा रहे ना राईआ। राए धर्म सुत्ता आप उठाउणा, शब्द हलूणा आप लगाईआ। लाड़ी मौत घर घर फिराउणा, कलिजुग अन्तिम सगन मनाईआ। लाल मैंहदी रंग रंगाउणा, अठारां अठाई ख़ुशी मनाईआ। मनमुख जीव कन्त सर्ब बणाउणा, एका घर होए कुड़माईआ। गुरमुख विरले शब्द अनादी गाउणा, एका ओट पुरख अकाल रखाईआ। दीन इस्लाम वेख वखाउणा, पीर दस्तगीर शाह हकीर औलीए शेख़ मुसायक पीर भेव ना राईआ। पंडत पांधे भेव खलाउणा, जोत लिलाटी फोल फुलाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाउणा, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। राजयां राणयां तख्तों लाहउँणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिराउणा, दर मंगिआं भिछ ना पाईआ। गुरमुख कागों हँस बणाउणा, सोहँ चोग चुगाईआ। नानक सतिगुर नाम वडिआउणा, जो रसना गया गाईआ। हँ ब्रह्म विच समाउणा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धाम बहाउणा, चार वरन अठारां वरन एका ढोला रहे सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एको रंग रंगाउणा, एका हुक्म जणाईआ। सतिगुर पूरा हरि अख्वाउँणा, स्यासत वरासत ना कोई रखाईआ। अस्तिक नास्तिक एका धाम बहाउणा, एका धीर धराईआ। देव आत्म दरस दिखाउणा, वास्तक वास्तक रूप समाईआ। फतिह डंका इक्क वजाउणा, वाहिगुरू नाम सहाईआ। राम रामा दरस दिखाउणा, सीता सुरती लए प्रनाईआ। कान्हा कृष्ना मोर मुकट सीस टिकाउणा, कँवल नैण लए मटकाईआ। ऐनलहक्क नाअरा एका लाउणा, अल्ला राणी वेख वखाईआ। अन्तिम धाम इक्क सुहाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। निहकलंक प्रभ नाम धराउणा, मानस तत्त ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर हरी हरि, आपणी किरपा देवे कर, सतिगुर पूरा सहिज सुभाईआ।

✪ २५ माघ २०१५ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर दुरांगला ज़िला गुरदासपुर ✪

निरगुण जोत हरि निरँकार, आदि पुरख अबिनाशया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, अलख अलखणा खेल तमाशया। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, पुरख सुल्तान शाहो शाबास्सया। करे कराए आपणी कार, आपणे मण्डल पावे रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल पृथ्मी अकास्सया। निरगुण रूप सर्ब गुणवन्ता, हरि हरि आप अख्वांयदा। पूरन जोत श्री भगवन्ता, आप आपणी कल वरतांयदा। आदि जुगादी वेस वटंता, जुग जुग भेख धरांयदा। लक्ख चुरासी भेव खुल्हंता, हर घट आसण लांयदा। गुरमुख साजण आप उठंता, आपणी दया कमांयदा। मेल मिलाए साचे सन्ता, शब्द अनादी इक्क सुणांयदा। शब्द अनादी बणाए बणता, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, पंच विकार मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल करांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, एका एक एकँकारया। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, देवे नाम भण्डारया। धुर दरगाही साची वथ्थ, हरिजन साची झोली पा रिहा। आप चढ़ाए आपणे रथ, नौ दुआरे पार करा रिहा। पंच विकारा देवे मथ्था, जगत तृष्ना मोह चुका रिहा। माया ममता पाए नथ्थ, साचा मार्ग इक्क चला रिहा। दूई द्वैती करे भट्ठ, जूठ झूठ मेट मिटा रिहा। सन्तन मेला नट्ठ नट्ठ, गुरमति सुर आप करा रिहा। काया मन्दिर सच अकट्ठ, दर दुआर इक्क वखा रिहा। अमृत सर सरोवर नुहाए तीर्थ अठसठ, जल धारा मुख चुआ रिहा। अनहद शब्द नगारे लाए सट्ट, पंचम ताल आप वजा रिहा। सच किवाड़ खोल्हे हट्ट, दर साचा आप खुला रिहा। बजर कपाटी जाए ढठ्ठ, आप आपणा पर्दा लाह रिहा। आत्म सेजा साचा सति, सति सरूपी आप वखा रिहा। मेल मिलाए कमलापत, सुरती शब्दी शब्द मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां संग निभा रिहा। भगतन मीता इक्क अकल्ला, आदि जुगादि समाया। वसणहारा सच महल्ला, नेहचल अटल धाम सुहाया। वेख वखाए जलां थलां, डूँघे सागर फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी किरत कमाया। करे कराए करनेहारा, एका जोत जगाईआ। जुग जुग खेले खेल अपारा, लोकमात वेख वखाईआ। धुर दरगाही शब्द अपारा, आप आपणा नाद वजाईआ। अलक्ख अगोचर खेल न्यारा, भेव अभेद छुपाईआ। हरि सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़ा, आप आपणा दरस दिखाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सच वखाए धर्म अखाड़ा, साची सिख्या मंगल गाईआ। शब्द गुरू गुर साचा लाड़ा, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। आपणे मन्दिर आपे वाड़ा, आपे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, जुग जुग वेखणहारा दर, दर घर घर विच फेरा पाईआ। घर घर गरमुख मेलया, घर घर वज्जी वधाईआ। गुर शब्दी गुरु गुर चेलया, रूप रंग ना कोई जणाईआ। साजण मीत सज्जण सहेलया, निरगुण नूरो नूर समाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेलया, लोकमात सगन मनाईआ। अचरज खेल अबिनाशी करता आपणा आपे खेलया, भेव कोए ना पाईआ। गुरसिखां धर्म राए दी कट्टे जेलया, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल कर, एका घर बहाईआ। साचा घर सच मकान, हरि साचा सच सुहांयदा। गुरमुखां देवे धुर फ़रमान, बोध अगाधी शब्द सुणांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझांयदा। धुनी नाद शब्द धुनकान, राग अनादी आप सुणांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर इक्क वखांयदा। कागी काग हँस बण जाण, दुरमति मैल गंवांयदा। देवणहारा नाम निधान, सन्तन अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साजण वेख्या, गुर सतिगुर किरपा धार। पूर्ब लहिणा जाणे लेखया, मानस जन्मा पावे सार। वेख वखाणे धारी केस्सया, मूंड मुंडाए इक्क ज्ञान। निरगुण जोती हर घट प्रवेशया, वस्सया काया मन्दिर मकान। आपे जाणे आपणा भेखया, भेखाधारी श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, नाम वस्त अन्दर धर, मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुजान। नाम वस्त सच भण्डारा, गुर सतिगुर आप वरताईआ। गुरमुखां लोकमात कर प्यारा, आत्म झोली रिहा भराईआ। तन कराए इक्क शृंगारा, बस्त्र गहिणा शब्द वखाईआ। नेत्र नैणां दरस गिरधारा, लोचण एका एक खुल्हाईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती सगन मनाईआ। सुखमन टेडी पार किनारा, हरि सज्जण आप कराईआ। सतिगुर आए बंक दुआरा, शब्दी लड़ फड़ाईआ। दिस ना आए विच संसारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरिजन विरला पावे सारा, जिस जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर नर नरेश, निरगुण आप अख्वांयदा। सतिगुर गुर शब्द संदेश, जन भगतां आप सुणांयदा। आपणे नेत्र आपे वेख, सोए मात उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि गुर सतिगुर मेला एका घर, शब्द शब्दी आप करांयदा।

हरि शब्द रूप अपार, हरी हरि आप चलाया। भगतन देवे विच संसार, जुग जुग वेस वटाया। अन्तर आत्म इक्क आधार, एका ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म खेल अपार, निरगुण सरगुण लए जगाया। जोत निरँजण कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा

दए मिटाया। शब्दी शब्द धुर फ़रमान, धुनी धुन उपजाया। राग नाद सारे गान, गुर का शब्द शब्द सलाहया। आप वसाए सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ काया बणत बणाया। अमृत सरोवर पीण खाण, कँवल नाभी मुख भवाया। दरस दिखाए जन पछाण, जानणहार भेव ना राया। घट घट अन्दर खेल महान, हर बैठा बेपरवाहया। जिस जन देवे भगती दान, आपणे मार्ग आपे लाया। चरन धूढ़ सच्चा अशनान, सतिगुर पूरा मुख छुहाया। जोत ललाटी सच निशान, आप आपणा दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग लहिणा लहिणा झोली पाया। आत्म अन्तर नेत्र खोल्ह, हरिजन आप जगाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, आप आपणा राग अलाईआ। अनहद वजाए साचा ढोल, ताल तलवाड़ा इक्क वखाईआ। पंच विकार ना करे घोल, जिस सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। आपणे शब्द आपे जाए मौल, जोती नूर करे रुशनाईआ। उलटा करे नाभ कौल, झिरना अमृत बूंद चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, आत्म दरसी दरस दिखाईआ। आत्म दरसी सच मकाना, काया गढ़ सुहाया। हरिजन मारे तीर निशाना, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। दूई द्वैती मेट मिटाना, एका रंग रंगाया। देवे नाम इक्क ज्ञाना, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। पुरख अबिनाशी खेल महाना, हरिजन साचे लए तराया। हथ्थीं बन्न्हे एका गाना, लोकमाती सगन मनाया। लक्ख चुरासी फंद कटाना, दस दस मासा गेड़ रहे ना राया। दरगाह साची मेल मिलाना, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, शब्द बबाणे लए चढ़ाया। किरपा कर कर मेलया, आप आपणी किरपा धार। शब्द गुरू गुरसिख चेलया, दोए सोहण इक्क दुआर। एथे ओथे सज्जण सुहेलया, मेल मिलाए विच संसार। सद वसे रंग नवेलया, जन भगतां करे प्यार। अचरज खेल नित नवित्त खेलया, जीव जन्त ना पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा लाए पार। कर किरपा हरि जाणया, जुग जुग विछड़या जन। आप आपणा मूल पछानया, राम नाम वेख्या साचा धन। एका रीती इक्क ज्ञानया, एका राग एका कन्न। एका दरस श्री भगवानया, दूई द्वैती भाण्डा भन्न। सुणे सुणाए धुर फ़ुरमानया, जोती नूर निरगुण चन्न। जानणहारा अनहद बाणीआ, भाग लगाए काया तन। अमृत देवे ठंडा पाणीआ, आप आपणा आपे जाए मन्न। वड दाता गुण निधानीआ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंचां देवे डन्न। जगत तृष्ना वेख वखानीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेलणहारा साचे दर, दर साचा इक्क वखानीआ। दर घर सच्चा हरि दुआर, हरि साचे आप सुहाया। काया मन्दिर खेल अपार, घर घर विच डेरा लाया। निरगुण जोती कर उज्यार, बैठा दीप जगाया। आत्म सेजा हो त्यार, एका राह दिखाया। शब्द गुर वड बलकार, बजर कपाटी तोड़

तुड़ाया। सुखमन नाड़ी डूँघी गार, आप आपणा वेख वखाया। पिंगला ईड़ा करन निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाया। पंचम विकारा मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाया। सुरत सवाणी कर प्यार, आपणे लड़ बंधाया। नौ दुआरे कढ्ढे बाहर, दसवें मेल मिलाया। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, एका रूप नज़री आया। जन भगतां भरे नाम भण्डार, तोट रहे ना राया। वरते वरतावे विच संसार, सच ख़ज़ाना हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाया।

✪ २५ माघ २०१५ बिक्रमी बचन सिँघ दे घर पिण्ड काणा कौटा ज़िला गुरदास पुर ✪

निरगुण धार शब्द भण्डारा, पुरख अकाल रखांयदा। रूप अनूप हरि करतारा, शाहो भूप अख्वांयदा। साचे तख्त सच सिक्दारा, साचा राज कमांयदा। एका एक एकँकारा, आपणी कल वरतांयदा। नाम अगम्मी सति सतारा, आपणी आप वजांयदा। दीपक दीपक कर उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। शब्द गुर सर्ब जीआ दाता, हरि साचा आप उपाया। आपे पिता आपे माता, बाल बाला रूप वटाया। आपे बन्ने साचे नाता, आपे वेख वखाया। आपे रिहा इक्क इकांता, हर घट आप समाया। आप आपणी अन्धेरी राता, आप आपणा प्रकाश रखाया। आपे जाणे आपणी गाथा, आपे आपणा राग अलाया। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही बेपरवाहया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, आप आपणा खेल खिलाया। आपे खोल्ह चौदां हाटा, आपणा वणज कराया। आपे सर्ब कला पुरख समराथा, पारब्रह्म आप अख्वाया। आप सहाई नाथ अनाथा, नाथ अनाथा गले लगाया। आप निभाए सगला साथा, जुग जुग वेस वटाया। आपे जाणे लहिणा देणा मस्तक माथा, आपे लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खिलाया। शब्द गुर हरि मेहरवाना, शब्दी तीर चलांयदा। एका जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, एका नाम उपांयदा। एका शस्त्र तीर कमाना, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। एका वेखे मार ध्याना, एका खेल खिलांयदा। एका लोआं पुरीआं देवे दाना, एका मूल चुकांयदा। एका लक्ख चुरासी बन्ने गाना, एका सगन मनांयदा। एका होए जाणी जाणा, जानणहार इक्क अख्वांयदा। एका तन दर रहे निमाणा, जुग जुग खेल खिलांयदा। एका तख्त एका राजा एका राणा, शाहो भूप इक्क अख्वांयदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, सिफ्त सलाह इक्क रखांयदा। एका राग एका गाणा, एका ताल वजांयदा। एका पद वखाए निरबाना, थिर घर बैठा आप सुहांयदा। आदि जुगादि जुग जुग खेल महाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण धार चलांयदा। निरगुण

धार हरि करनेहारा, करता पुरख अख्वाया। वरते वरतावे विच संसारा, लोआं पुरीआं मेल मिलाया। मण्डल मण्डप दए सहारा, शब्दी शब्द टिकाया। शब्दी शब्द जै जै जैकारा, शब्दी शब्द उपाया। शब्दी शब्द हरि भण्डारा, शब्दी आप वरताया। शब्दी पुरख शब्दी नारा, नर नरायण शब्द अख्वाया। शब्द गुर शब्द अवतारा, शब्द पंज तत्त उपजाया। शब्द मीत शब्द मुरारा, शब्द विछोड़ा वेख वखाया। शब्द महल्ल शब्द मुनारा, शब्द बैठा आसण लाया। शब्दी शब्द हरि निरँकारा, निरगुण जोत करे रुशनाया। जोती जोत कर पसारा, शब्द शब्दी जोड़ जुड़ाया। आदि निरँजण कर आकारा, जोत निरँजण मूंड मुंडाया। जोत निरँजण सेवादारा, घट घट दीप वखाया। शब्दी शब्द शब्द धुन्कारा, घर मन्दिर आप सुहाया। ताल अनादी अपर अपारा, गुर सतिगुर आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख घर, नूरो नूर करे रुशनाया। नूर रुशनाई लोकमात, जोती जोत जगाईआ। जुग जुग वेखे मार झात, आत्म झोली आप भराईआ। अन्तिम वेले पुच्छे वात, घर लेख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। नाउँ निरँजण हरि निरँकार, अगाध बोध अख्वांयदा। अकल कला कल पसार, आपे वेख वखांयदा। जल थल महीअल डूँघी धार, निझर धार आप चलांयदा। दो जहानां दए सहार, आप आपणा रंग रंगांयदा। गुर गुर वेस अपर अपार, सरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपणा भेव आपे खोल्ह, आपे शब्द जणाईआ। एका अक्खर शब्द बोल, हउमे बूझ बुझाईआ। साचे कंडे आपे तोल, आपे वंड वंडाईआ। सतिजुग वजा साचा ढोल, लोकमात करे जणाईआ। त्रेता त्रीया रिहा मौल, तेरा मेरा रूप वटाईआ। द्वापर खेले एका होल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, हरि साचे पार उतारया। कलिजुग लोकमात लए अवतार, धरनी धरत आप सुहा रिहा। दर दरवेशा मंगे मंग भिखार, घर साचे आप सुहा रिहा। कूड़ा कूड़ा कर पसार, तेरा भार आप उठा ल्या। जूठ झूठ नाल प्यार, माया ममता संग निभा ल्या। हउमे हँगता गढ़ हँकार, माया बुरज बणा रिहा। भुक्खा नंगता दर भिखार, चारों कुन्ट वेस वटा ल्या। तेरी मदद चार यार, संग मुहम्मद इक्क रखा ल्या। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, ख़ुदी ख़ुदाई मेल मिला रिहा। अल्ला राणी कर त्यार, हू हू नाअरा इक्क वखा ल्या। बिस्मिल तेरा रूप अपार, आप आपणे विच समा ल्या। एका कलमा कर त्यार, नबी रसूलां आप पढ़ा ल्या। शरअ शरीअत ख़बरदार, जगत मसल्ला हथ्थ फड़ा ल्या। वुज़ू बांग कर उज्यार, नाअरा ऐनलहक्क वखा ल्या। ख़लक ख़ुदाई वस्सया बाहर, ख़ालक ख़लक भेव ना पा ल्या। दोहां मेला विच संसार, हरि साचे आप करा ल्या।

१७४ ०८

शरअ शरीअत आपणा डंक वजा ल्या। राम नाम कर खुआर, चारों कुन्ट फेरा पा ल्या। ग़रीब निमाणे हाहाकार, जीव जन्त सर्ब कुरला रिहा। कलिजुग कूड़ा ख़बरदार, आप आपणा डंक वजा रिहा। मुहम्मद होया पहरेदार, आपणी सेवा आप कमा रिहा। दो जहानां मेला हरि करतार, हरि साचा एह समझा रिहा। अन्तिम आउणा दर दुआर, आप आपणा हुक्म सुणा ल्या। मुहम्मद मंगे बण भिखार, अग्गे झोली आपणी डाह रिहा। चौदां तबकां इक्क प्यार, एका घर वसा ल्या। चौदां सद कर उज्यार, लोकमात राज कमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप खिला रिहा। चौदां सद वर घर पा, मुहम्मद ख़ुशी मनाईआ। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, जीआं जन्तां वेखे थाउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणे रहे कुरला, दिवस रैण मारे धाईआ। निरगुण जोती नूर आप जगा, आपणी करे आप रुशनाईआ। नानक सतिगुर लोकमात उपा, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सति नाम दए दृढ़ा, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम ना कोई वखा, एका ब्रह्म जणाईआ। दूई द्वैती पर्दा लाह, एका घर बहाईआ। मुला शेख़ पीर दस्तगीर दए समझा, शाह सुल्ताना हुक्म जणाईआ। नूरी जल्वा आप वखा, जल्वा जलाल आप ख़ुदाईआ। एका सजदा दए करा, साचा काअबा वेख वखाईआ। दो दो आब मेल मिला, हक्क जनाबा वड वड्याईआ। सच रबाबा इक्क वजा, निरँकार निरँकार रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जोती नूर कर, नानक निरगुण वेस वटाईआ। नानक सतिगुर एका आया, सृष्ट सबाई करे जणाईआ। एका जोती पूत सपूता हरि आपे जाया, गुर गोबिन्द नाउँ रखाईआ। सिँघ रूप हो सिँघ सजाया, नाम खण्डा तन लटकाईआ। कल्गी तोड़ा सीस टिकाया, पंचम हथ्थ वखाईआ। पंचम मेला आप कराया, पंचम गया आप समाईआ। अन्तिम आपणा खेल खिलाया, आपणी सेवा आप कराईआ। बंस सरबंसा लेखे लाया, पुरख अकाल ख़ुशी मनाईआ। दीन दयाल दया कमाया, आपे सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा साचा घर, हरि साचा वेख वखाईआ। गोबिन्द सिँघ सिँघ बलकारा, हरि हरि आप उपाया। पंचम मीता पंचम कर प्यारा, पंचम एका रंग रंगाया। गुरू ग्रन्थ गुरुदुआरा, गुर गुर आप समझाया। जीव जन्त ना भुल्ले कोई संसारा, साचा मार्ग इक्क वखाया। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। सम्बल नगरी धाम न्यारा, हरि साचा दए वसाया। उच्च अटल अटल मुनारा, निरगुण जोत करे रुशनाया। सृष्ट सबाई पावे सारा, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, सोए आप जगाया। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ चमकाया। राज राजाना करे खुआरा, शाह सुल्तान कोई रहिण ना पाया। एका नाम इक्क जैकारा, एका फतिह डंक वजाया। एका

घर इक्क घर बारा, धुर दरबारा इक्क सुहाया। बीस बीसा होए ख़बरदारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा वेख वखाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, हरि साचा आप चुकाईआ। चार यारी बस्त्र गहिणा, एका एक पहनाईआ। अल्ला राणी नेत्र रोवे नैणां, धीर ना कोई धराईआ। नबी रसूला मिले ना बहिणा, शरअ शरीअत रही तपाईआ। शाह सिक्दार झूठे वहिण वहिणा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। अमाम अमामां नाल खहिणा, खहि खहि अग्न जलाईआ। पुरख अबिनाशी चुकाए लहिणा देणा, चौदां चौदां वेख वखाईआ। नाता तुट्टे भाई भैणा, सगला संग ना कोई निभाईआ। वर मंगे लाड़ी मौत डैणा, लाल मैहन्दी हथ्थीं लाईआ। धर्म राए अग्गे हो हो बहिणा, आप आपणा घर वखाईआ। चित्रगुप्त उच्ची कूक कहिणा, मेरा लेखा जाए मुकाईआ। हरि का भाणा सहिणा पैणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नानक गुर वेखे आपणे नैणां, आपणे नैणां आपे गए लगाईआ। गुरमुख विरले मात रहिणा, जिस सिर हथ्थ समरथ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती हरि हरि जामा, हरि हरि खेल खिलांयदा। आपे राम रमईआ रामा, कान्हा कृष्ना नाम धरांयदा। आपे खेले खेल दो जहानां, जुग जुग धार चलांयदा। आपे ईसा मूसा धुर फ़रमाना, आपणा आप सुणांयदा। आपे मज़्ब दीन होए इस्लामा, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपे निरगुण जोती अन्तरजामा, आपे भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेख वटांयदा। भेख वटाया हरि निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। पंज तत्त ना कोए आकार, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोए दसाईआ। मन मति बुध ना कोए आधार, ब्रह्म ब्रह्म ना नज़री आईआ। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार, एका एक नूर इलाहीआ। गोबिन्द तेरी साची धार, सिँघ रूप आप समाईआ। नानक तेरा सच भण्डार, सोहँ शब्द दए वरताईआ। चार यारी खोल्ह किवाड़, लहिणा दए मुकाईआ। थित सुहाए सतारां हाढ़, प्रभ साचे वड वड्याईआ। लग्गे अग्ग नाड़ नाड़, ना सके कोए बुझाईआ। आपे जाणे आपणी अगम्मड़ी धाड़, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ज़िमी अस्माना पर्दा देवे पाड़, पारब्रह्म भेव ना राईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए इक्क अखाड़, सत्तां दीपां नाल रलाईआ। फिरे दुहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, राज मन्दिर ना कोए सुहाईआ। राजे राणे होण ख्वार, तख्त ताज ना कोए हंढाईआ। सखीआ मंगल ना मंगलाचार, घर घर सगन ना कोए मनाईआ। ना कोई साजण मीत मुरार, सखा सहाई ना कोई अख्वाईआ। पिता पूत ना कोई प्यार, भज्जण वाहो दाहीआ। खेले खेल आप करतार, कलिजुग वेखे झूठी शाहीआ। कूड़ा रूप होया सिक्दार, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। साध सन्त ना कोए प्यार, साचा घर ना कोए सहाईआ।

कलिजुग जीव होए विभचार, हरि का रूप दिस ना आईआ। मनमति होई दुहागण नार, पतित पापी लए प्रनाईआ। सन्त कन्त मीत भतार, गुरमुख विरला नज़री आईआ। गुर नानक मेला इक्क दुआर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। दूसर दिसे ना कोए धार, साची धारा आप बंधाईआ। सतिजुग साचा करे उज्यार, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ। दिल्ली तख्त सुहाए दर दरबार, सीस गंज नाम रखाईआ। गुर तेग़ बहादर तेरी धार, ग़रीब निमाणे लए तराईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, वड दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादी जाणे आपणी कार, बीस बीसा नाउँ धराईआ। जगत जगदीसा भेस न्यार, भेख अवल्ला इक्क वखाईआ। शब्दी डंक डंक संसार, आपणा आप सुणाईआ। निहकलंक हरि लै अवतार, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग लेखा रिहा चुक्क, प्रभ साचा आप चुकाईआ। सम्मत सम्मती पैंडा रिहा मुक्क, नेड़े पन्ध वखाईआ। साल बसाला रिहा ढुक, आपणा राह तकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सन्त सुहेले वेखे झुक, लोकमात रहे कुरलाईआ। कलिजुग शेर रिहा बुक्क, चारों कुन्ट ढक बणाईआ। हरया बूटा रिहा सुक्क, मानस अमृत ना मुख चुआईआ। घर घर बणी अन्तिम फुट्ट, ना कोई मेल मिलाईआ। भाईआं भाई रहे लुट्ट, पिता पूत लड़ाईआ। मदिरा जाम पी पी घुट्ट, हरि का नाम भुलाईआ। नानक गोबिन्द तेरा लड़ ना जाए छुट्ट, शब्द विचोला ढोला गाईआ। हरिजन विरले लाहा रहे लुट्ट, आत्म अन्तर इक्क प्रीत वखाईआ। अमृत प्याए साचा घुट्ट, अग्नी तत्त बुझाईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा जड़ देवे पुट्ट, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग धरत मात आपणी गोदी लए चुक्क, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण जोती बैठा लुक, शब्दी रिहा जगाईआ। पारब्रह्म सतिगुर पूरा ना मानस ना दिसे मानुख, निरगुण सरगुण विच समाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, आस निरास ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा दए चुकाईआ। हरिसंगत हरि रंग है, हरि देवे नाम भण्डार। जो जन मंगे नाम मंग है, आत्म अन्तर देवे धार। मेल मिलाए सूरे सरबंग है, दरस दिखाए नानक गुर अवतार। सच महल्ला वखाए पलँघ है, निरगुण जोत नूर उज्यार। नाम वजाए सच्चा मृदंग है, काया मन्दिर सच्ची धुन्कार। अमृत प्याए धारा गंग है, सर सरोवर इक्क वखाल। कट्टणहारा भुक्ख नंग है, लोकमात गुर शब्द दलाल। नाम डोरी बन्ने पतंग है, सुरती सुरत करे संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

हरिसंगत वसे नाल नाल। हरिसंगत हरि वस्सया, सतिगुर मीत मुरार। राह एका सच्चा दस्सया, नाता छुट्टे नौ दुआर। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, कोटन रवि ससि करे उज्यार। दर घर साचे आए नस्सया, देवे दरस खोल्ह् किवाड़। तीर निराला एका कस्सया, सोहँ मुक्खी अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला साचे घर, सुहाए बंक दुआर। हरिसंगत हरि जाणया, परम पुरख करतार। आप चलाए आपणे भाणया, देवे नाम आधार। चरन प्रीती बख्शे इक्क ध्यानया, एका पैज संवार। शब्द जणाई ब्रह्म ज्ञानया, भाण्डा भरम निवार। दाता दानी देवे दानया, देवणहार सर्ब संसार। सति सन्तोखी बन्ने गानया, गुर मूर्त करे श्रृंगार। जोनी रहित श्री भगवानया, एकउँकारा अकल पसार। कलिजुग अन्तिम वेख वखानया, जोती जामा भेख अपार। चार वरनां देवे धुर फ़रमानया, शब्द सुनेहड़ा मीत मुरार। सतिजुग साची धार बंधानया, बीस बीसा ख़बरदार। सत रंग झुलाए इक्क निशानया, शाहो भूप सच्ची सरकार। नौ खण्ड सखी इक्क वखानया, सत्तां दीपां इक्क प्यार। हरिसंगत तेरा रूप हरि साचा वेख वखानया, जोती नूर आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा नाम वर, जगत भण्डारे देवे भर, जो जन आए दर दुआर। दर दुआर गुर दर्शन पा, आत्म तृखा बुझाईआ। सतिगुर पूरा होए सहा, सगली चिन्त मिटाईआ। निथाव्याँ देवे एका थाँ, साची दरगाह आप बहाईआ। लाड लडाए जिउँ पुत्तरां माँ, आपणी गोद उठाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, साची चोग नाम चुगाईआ। सिर रक्खे हथ्थ दे कर ठंडी छाँ, सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, घर घर वज्जदी रहे वधाईआ।

१७७ ०८

✪ २६ माघ २०१५ बिक्रमी सन्त सिँघ दे घर पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

निरगुण जोत हरि भगवान, पारब्रह्म अवतारया। धर्म झुलाए इक्क निशान, लोआं पुरीआं अगम्म अपारया। सृष्ट सबाई एका ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा। खेले खेल दो जहान, लोकमात वेख वखा ल्या। दाता जोद्धा सूर बली बलवान, आप आपणा वेस वटा ल्या। शब्द अनादी धुर फ़रमान, सच नगारा इक्क वजा ल्या। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, बन खण्ड फेरा आपे पा ल्या। मन्दिर मस्जिद वेख जगत मकान, तीर्थ तट किनारा चरन छुहा ल्या। पूजा पाठ जगत ज्ञान, नेम धर्म फोल फुला रिहा। शब्दी शब्द हो प्रधान, दहि दिशा अलख जगा रिहा। हरिजन वेखे चतर सुजान, सच दुआरे आप सुहा रिहा। भगतन भगती कर परवान, आपणे लेखे आपे ला ल्या। साधां सन्तां हो मेहरवान, सारंगधर मेल मिला

ल्या। सीता सुरती साचा काहन, रामा कृष्ना रंग समा ल्या। नानक निरगुण पद निरबान, सचखण्ड दुआरा इक्क वखा ल्या। गोबिन्द अमृत पीण खाण, नाम प्याला जाम प्या ल्या। पुरख अकाल घट घट जाणी जाण, हर घट आपे वेख वखा ल्या । रागी नाद शब्द धुन कान, पवण पाणी रंग रंगा ल्या। तेज प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर मिटा ल्या। चौदां लोक इक्क दुकान, एका हट्ट वखा ल्या। ब्रह्मा वेता लेख लखान, चारे जोड़ जुड़ा रिहा। वेद व्यासा बण प्रधान, अट्ठ अठारां अंक समा ल्या। अर्जन गीता इक्क ज्ञान, एका घर सुहा ल्या। अञ्जील कुरानां खेल महान, साचा नाअरा इक्क वखा ल्या। नानक देवे धुर फ़रमान, शब्द जणाई हरि जणा रिहा। अर्जन गुर चुकाए माण, बोध अगाध टिका ल्या। इक्क वखाए दर दरबान, दर दरवेशा इक्क बहा ल्या। एका मन्दिर इक्क मकान, एका थान सुहा ल्या। मिल्या मेल श्री भगवान, सर सरोवर साचे नहा ल्या। कलिजुग आए मंगे दान, दोए जोड़ सीस झुका ल्या। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा इक्क निशान, मेरा मेरा हथ्थ उठा ल्या। अर्जन मार निराला बाण, शब्दी शब्द अला ल्या। तेरा अन्तिम मेला होए विच जहान, हरि साचा वेख वखा ल्या। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक बली बलवान, कूड़ी क्रिया लेखे ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या। पारब्रह्म सर्ब जीअ दाता, जागरत जोत जगांयदा। घट घट अन्दर दे ज्ञाता, आपे वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी पिता माता, बाल बाला गोद उठांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल वरतांयदा। थिर घर बैठा मारे झाता, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। कूड़ी क्रिया कूड़ी गाथा, कूड़ा कर्म कमांयदा। बिन हरि कोए ना दिसे सगला साथा, साचा संग ना कोए निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। निरगुण जोती नूर अकाल, अकल कला समाईआ। कलिजुग बण शब्द दलाल, नाम वणजारा इक्क वखाईआ। नव सत अवल्लड़ी चाल, ब्रह्म मति इक्क पढ़ाईआ। एका तत्त दए वखाल, रंगण रंग रंगाईआ। कमलापति दीन दयाल, हरिजन साचे लए उठाईआ। आप आपणा बिरध संभाल, लोकमात लए अंगड़ाईआ। वेख वखाए शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे अंक समाईआ। दहि दिशा चारे कूटां आपे भाल, डोरी नाम तन्द बंधाईआ। जुग जुग जन्म जन्म जो जन घालना रहे घाल, अन्तिम लेखे लाईआ। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म मेवा इक्क खवाईआ। आपे चले नाल नाल, सगला संगी संग रखाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस जन आपणे लड़ बंधाईआ। सर सरोवर दए नुहाल, चरन धूढ़ी मजन माघ आप कराईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, घर बैठा बेपरवाहीआ। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, पारब्रह्म सेव कमाईआ। लोकमात मारे इक्क उछाल,

१७८
०८

कलिजुग डूँघा सागर गुरमुख लाल बाहर कढाईआ। वेखणहारा हक्क हलाल, हक्क हकीकत फोल फोलाईआ। जल्वा नूरी नूर जलाल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। लोआं पुरीआं आप वजाए आपणा ताल, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका आपणी खेल खिलाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि साचा जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई सज्जण सुहेला, मनमति सुरमत वेख वखांयदा। दो जहानां बणया तोला, सोहँ कंडा हथ्थ उठांयदा। सच जैकारा एका बोला, ब्रह्मा आपणा नेत्र शरमांयदा। विष्नूं वंसी बणे विचोला, आपणा राग अलांयदा। शिव शंकर वेखे नाथ भोला, भोले नाथ आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा आपे मौला, सुरपति राजा नाल रलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी डांवां डोला, ना कोई धीर धरांयदा। जीवां जन्तां प्या रौला, दिवस रैण सर्ब कुरलांयदा। नूर इलाही भुल्लया मौला, मौला रूप ना कोए दसांयदा। कूड़ कुड़यारा भार ना चुक्के धरती धौला, धरत मात दुःख ना कोए वंडांयदा। वेख वखाए साँवल सँवला, साँवल सुन्दर रूप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ा भार, धरत रही कुरलाईआ। हरि बिन कोए ना पावे सार, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। पीर फ़कीर गए हार, शाह हकीर ना कोए जणाईआ। नौ नौ नाथ करन विचार, सिद्ध चुरासी देण दुहाईआ। पंडत पांधे हाहाकार, वेद कतेब ना कोए छुडाईआ। अञ्जील कुरान करन विचार, बहि बहि मता पकाईआ। तीस बतीसा एका धार, छतीसा घर रुशनाईआ। जगत अन्धेरा धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए वखाईआ। रवि ससि करन पुकार, नेत्र आपणा नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी करे रुशनाईआ। धरत धवल हाहाकार, नेत्र नीर वहाया। चुक्कया ना जाए धरनी भार, जूठ झूठ सिर टिकाया। नार दुहागण होई विभचार, सृष्ट सबाई सति गंवाया। नाम ना दीसे वणज वपार, नानक गुरमति गए भुलाया। धीआं भैणां करन वपार, गुर गुर हट्टो हट्ट विकाया। किसे तन ना दीसे खड़ग कटार, धीरज जति ना कोए सहाया। मन्त्र वेद रहे उचार, मन का मन्त्र दिस ना आया। कलिजुग कूड़ा हो उज्यार, चारों कुन्ट करे रुशनाया। धरती दब्बी पापां भार, बिन हरि साचे कोए ना भार वंडाया। नानक सतिगुर पावे सार, आपणा लेखा गया लिखाया। गोबिन्द करे इक्क प्यार, वेला अन्त सुहाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्बल नगरी डेरा लाया। कूड़ी क्रिया दए नवार, जूठ झूठ रहिण ना पाया। सच सुच्च करे वरतार, सतिजुग साचा मार्ग लाया। बीस बीसा हरि निरँकार, जगत जगदीसा वेस वटाया। चौदां चौदां ख़बरदार, हरिजन साचे लए उठाया। पन्दरां पन्दरां अन्दर मार, माया ममता मोह चुकाया। निरगुण सरगुण

१७६ ०८

कर प्यार, निरगुण दरस दिखाया। हउमे हँगता तोड़ हँकार, काया गढ़ सुहाया। कन्त मिलावा साची नार, सन्त सुहागी वेख वखाया। नाम भण्डारा बण वरतार, शब्द अतुट्ट वरताया। अस्व घोड़े हो सवार, चिट्टी धारों पार कराया। मेला मिल्या मीत मुरार, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। सोलां कलीआं तन शृंगार, पुरख अबिनाशी आसण लाया। नाम खण्डा फड़ कटार, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्मा किया ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। विष्नूं लछमी दए आधार, लाल भूषन रंग रंगाया। आदि शक्ति रूप अपार, इष्ट देव आप हो जाया। अलक्ख अभेव हरि निरँकार, अगाध बोध सुणाया। शिव शंकर अन्तिम दए आधार, आप आपणे विच टिकाया। साचा तख्त सच सुल्तान, हरि बैठ आप रघुराया। आपणा शब्द धुर फ़रमान, आपे रिहा सुणाया। सो पुरख निरजंण वड बलवान, अबिनाशी करता खेल खिलाया। हँ ब्रह्म एका दान, ब्रह्मे झोली पाया। लक्ख चुरासी कर परवान, पंज तत्त टिकाया। मन मति बुध जगत ज्ञान, विद्या अक्खर इक्क पढ़ाया। पंज रलाए नाल शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वसाया। सुरती सुरत कर प्रधान, निज आत्म डेरा लाया। निरगुण जोत श्री भगवान, सच सिँघासण वेख वखाया। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, मेरा तेरा तेरा मेरा तेरा रूप वटाया। सेवा लाए खेल महान, भेव अभेदा भेव छुपाया। जुगा जुगन्तर कर प्रधान, जुग जुग नाम धराया। आप उपाए आपे मेटे जीव जहान, ना कोई दूसर संग रखाया। कलिजुग अन्तिम मार ध्यान, धरत मात वेख वखाया। जीव जन्त सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराया। भरमे भुल्ले जीव नादान, माया पर्दा एका पाया। राज राजान होए बेईमान, ग़रीब निमाणे ना गले लगाया। प्रगट होए आप भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाया। झूठी छाही मेटे जगत दुकान, कलिजुग कूड़ा रहिण ना पाया। सम्मत पन्दरां नौजवान, अठसठ तीर्थ वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाया। उठया जोद्धा सूर बली बलवाना, एका एकउँकारया। शब्द खण्डा तीर निशाना, लोआं पुरीआं आपे मारया। जन भगतां हथ्थीं बन्न्ह गाना, सम्मत पन्दरां राह विचारया। जोती नूर बख्शे नूर नुराना, काया महल्ल अटल उच्च मनारया। शब्दी राग सच्ची धुनकाना, सो पुरख निरँजण आप सुणा रिहा। एका राग इक्क तराना, एका रसना गा रिहा। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका मेल मिला रिहा। एका राज इक्क राजाना, एका रईयत वेख वखा रिहा। एक पीणा एका खाणा, एका जाम प्या रिहा। एका राजा एका राणा, ग़रीब निमाणा एका धाम बहा रिहा। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इक्क कराना, सम्मत सोलां नींह रखा ल्या। हाढ़ सतारां लेख महाना, आप आपणा शब्द लिखा ल्या। लिखे लेख श्री भगवाना, लेखा लिख्त विच ना आ रिहा। जन भगतां देवे आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, एका जोती दर्शन पा रिहा। मनमुख

वेखे जीव शैताना, कूड़ी क्रिया फोल फुला रिहा। लहिणा देण चुकाए राज राजाना, पूर्ब पूर्ब वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती जामा भेख वटा ल्या। निरगुण जामा हरि हरि रामा, रामा रूप अख्वांयदा। नाम वजाए सच दमामा, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। जगत जपाए हरि हरि नामा, रसना जिह्वा आप हलांयदा। मेटणहार अन्धेरी शामा, जगत अन्धेरा आप चुकांयदा। अमृत आत्म देवे जामा, सांतक सति वरतांयदा। इक्क वखाए साचा धामा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। करे खेल बहु बिध रूप नाना, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। सर्ब जीआं प्रभ अन्तर जामा, घट घट वेख वखांयदा। कारज करता पूरन करे कामा, करता पुरख आप अख्वांयदा। धरनी धरता धरत धवल दए दाना, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। सतिजुग उठाए सुत्त बाल अञ्याणा, आप आपणा कर्म कमांयदा। हथ्थीं बन्न्हे साचा गाना, गुरमुख साचे संग वखांयदा। घर घर वेखे मार ध्याना, लुकया कोए रहिण ना पांयदा। नाम मस्ती शब्द मस्ताना, मदि प्याला इक्क वखांयदा। हक्क हलाल पीणा खाणा, ज़ोरु ज़र ना कोए चुरांयदा। शाहो भूप राज राजाना, शाह सुल्ताना एका एक बणांयदा। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञाना, साचा मार्ग आपे लांयदा। इक्क वखाए हरि निशाना, सत्त रंगा आप चढ़ांयदा। सति पुरख निरँजण खेल महाना, लाल गुलाला आप हो जांयदा। कंचन खेल दो जहानां, सूहा वेस वटांयदा। चिट्टी धार गुण निधाना, आपणा रंग वखांयदा। पीला बस्त्र लोकमात निशाना, आप आपणा वेख वखांयदा। नीला नीली धारों पार कराना, भेव कोए ना पांयदा। काला वेस दर दरवेश वेख वखाना, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश ईसा मूसा चले ना पेश, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि हरि पाया, हरि शब्द वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा वेता सगन मनाया, चारे मुख सलाहीआ। विष्नूं ढोला एका गाया, मैं तेरा तूं मेरा माहीआ। शंकर धूंआँधार मिटाया, बाशक ताशका गल सुहाईआ। करोड़ तेतीसा मंगल गाया, बरखा फूलन लाईआ। सुरपति इन्द सीस झुकाया, दोए जोड़ रहे सरनाईआ। गण गंधर्ब वेख वखाया, आपणा ताण सुणाईआ। नाच अपच्छरां वेस कराया, एक डौरु वाईआ। राए धर्म सीस झुकाया, नेत्र दर्शन पाईआ। चित्रगुप्त कलम सलाहया, लेखा लिखे वड्याईआ। लाड़ी मौत अग्गे रो रो नीर वहाया, बिन तेरे ना कोए सहाईआ। रवि ससि रहे शरमाया, आपणा मुख छुपाईआ। धरत मात रही कुरलाया, खुलड़्हे केस दए दुहाईआ। ईसा मूसा खेल खिलाया, चार यारी वंड वंडाईआ। काला सूसा तन छुहाया, काली नगरी इक्क वसाईआ। कलिजुग कूड़े भरम भुलाया, भुल्ली भरम सर्ब लोकाईआ। पिता पूत कोई नज़र ना आया, भैणां भईया संग निभाईआ। त्रैगुण

माया वेस वटाया, घर घर नाच वखाईआ। होई विभचार मुख तों घूँगट लाहया, लोकलाज तजाईआ। सच सुच्च किसे दिस ना आया, कूड़ अन्धेरा छाईआ। सच तराज़ू ना कोई तोल तुलाया, नाम कंडा ना कोए उठाईआ। हउमे गोला जगत बणाया, झूठा बोल करी कुड़माईआ। आत्म पर्दा किसे ना फोल फोलाया, गुर नानक नाम गए भुलाईआ। नाम सति किसे नज़र ना आया, रसना गा गा होए हल्काईआ। गुर गोबिन्द विचोला दिस ना आया, दो जहानां साचा माहीआ। गोबिन्द अन्तिम लेख लिखाया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तिम तेरा ना होए कोई सहाया, वरनां बरनां पए लड़ाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता घट घट अन्दर जुग जुग वेख वखाया, भुल्ल रहे ना राईआ। सम्बल नगरी देवे धाम सुहाया, नौ खण्ड पृथ्मी हथ्थ ना आईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव रहिण सरनाया, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। निहकलंक प्रभ नाउँ रखाया, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। जिस जन आपणा मेल मिलाया, सो बूझे हरि रघुराईआ। जगत विद्या ना किसे हथ्थ फड़ाया, हरि का रूप दिस ना आईआ। सतिगुर पूरे जिस जन आपणे शब्द घोड़े आप चढ़ाया, वागां आपणे हथ्थ उठाईआ। धुर दरगाही लोकमात कलिजुग अन्तिम फेरा पाया, घर घर पई दुहाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म बूंद स्वांत चुआया, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अकाल पुरख प्रभ तेरे चरन नाता इक्क जुड़ाया, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। उत्तम ज़ाता इक्क वखाया, चार वरनां भैणां भाईआ। सृष्ट सबाई पिता माता आप रघुराया, आप आपणी गोद सुहाईआ । साची गाथा रिहा अलाया, सतिगुर नानक रसना गाईआ। सोहँ साचा शब्द चलाया, सतिजुग साची वज्जे वधाईआ। जिस जन रसना जिह्वा गाया, जन्म मरन विच ना आईआ। सतिगुर पूरे कौस्तक मणीआ मस्तक थेवा आप लगाया, चौदां रत्न रहे शरमाईआ। आदि निरँजण अलख अभेवा घर घर हरि हरि नर नर दर्शन पाया, नर नारी सर्ब तराईआ। काल फास दे विच ना आया, जो जन रहे सरनाईआ। रसन स्वास लेखे लाया, जो जन रहे गाईआ। मदिरा मास जिस रसन तजाया, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जगत संसा रोग मिटाया, मेटी भरम की काईआ। एका गुरू ग्रन्थ गुर इष्ट देव वखाया, अकाल पुरख सच्ची कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां आपे लैण आया, आपणा डोला कंध उठाईआ। भोले भा लए जगाया, कोटन धन्ने लए बणाईआ। कक्खां कुली चरन छुहाया, महल्ल अटल उच्चे मुनारे रिहा ढाहीआ। हरिसंगत तेरा मेल मिलाया, विच विचोला आप अख्वाईआ। तेरा प्यार अमृत नेत्र नीर वहाया, ब्रह्मे वेते हथ्थ ना आईआ। करोड़ तेतीस होया हल्काया, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पाया, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। ज्ञानी ध्यानी किसे दिस ना आया, विद्वानी रहे शरमाईआ। जिस जन आपणा भेव खुल्लाया, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। साची डोरी

१८२
०८

तन्द बन्नाया, एका सगन मनाईआ। छब्बी पोह दिवस सुहाया, पन्दरां पन्दरां अन्दरे अन्दर वेख वखाईआ। किसे हथ्थ ना आया डूँघी कन्दरां, उच्चे टिल्ले बैठे धूंणीआँ ताईआ। गोरख नाथ वेख मच्छन्दरां, ख़ाकी ख़ाक भस्म कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, हरिजन साचे लए वर, दरस दिखाए अग्गे खड़, मन्दिर अन्दर आपे चढ़, चढ़नहार हरि निरँकार जोत निराकार शब्द धार अस्व अस्वार, लोआं पुरीआं वस्सया बाहर, अगम्म अगोचर बेऐब परवरदिगार, ग़रीब निमाणयां जगत निताणयां सांझा यार, ख़लक ख़ुदाई नूर इलाही राम रमईया मीत मुरार, कर प्यार नानक निरँकार, गोबिन्द अमृत ठंडी ठार, निहकलंक चरन प्यार, गुर संगत हरि हरि हरि रूप जाए तार, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ।

✪ २६ माघ २०१५ बिक्रमी जमांदार किशन सिँघ दे घर अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ✪

हरिजन हरि उपन्नया, लोकमात कुड़माई। सतिगुर सच चढ़ाए चन्नया, दिवस रैण करे रुशनाई। भाण्डा भरम हरि हरि भन्नया, आत्म ब्रह्म जणाई। साचा राग सुणाया कन्नया, एका राग इलाही। दर घर साचे बेड़ा बन्नया, एका चप्पू नाम लगाई। सेवक सेवा करे जिउँ माल चराए धन्नया, दिस किसे ना आई। राम रामा आपे मन्नया, मन चिन्दया रहे ना राई। वसणहारा छप्पर छन्नया, छहिबर बरखा रिहा लाई। सांतक सति कराए तनया, तत्व अग्ग बुझाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सिफ्त सलाही। हरिजन साचा हरि हरि मेला, भगती भगत समांयदा। वक्त चुकाए जगत दुहेला, साचा राह वखांयदा। मेल मिलावा गुरू गुर चेला, गुर चेला रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा सज्जण सुहेला, साख्यात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरिजन सच्चा सुच्चा लाल, हरि साचे हट्ट विकांयदा। आपे जौहरी बण दलाल, शब्द दलाल नाल रखांयदा। परखणहारा पुरख अकाल, नाम कसवटी आपे लांयदा। आपणी गठड़ी आपे लए संभाल, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। साजण मीता सुत्त दुलारा, हरि हरि आप उपांयदा। मेल मिलावा विच संसारा, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। नर नरायण कर आकारा, निरगुण वेस वटांयदा। शब्द शब्दी खेल अपारा, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। मंगणहारा भगत दुआरा, जुग जुग अलख जगांयदा। पावे सार नाम भण्डारा, अतोट अतुट्ट रखांयदा। खेले खेल वारो वारा, भेव कोए ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा।

हरिजन सच्चा हरि हरि वेख्या, आप आपणी किरपा धार। आपे बहि बहि लिख्या लेखया, आपे पावणहारा सार। आप जणाए जगत संसारा मिथ्या, इक्क वखाए बंक दुआर। आपे पाए साची भिच्छया, हरि भरया नाम भण्डार। पूरन करदा आया इच्छया, जुग जुग करता आप करतार। आउँदा जांदा किसे ना वेख्या, हरि सज्जण मीत मुरार। किसे ना आए विच परीख्या, परखणहार सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए उभार। हरि सज्जण खोज खोजंदड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। गुरसिख मेल मिलंदड़ा, मेल मिलावा साचा सन्त। घर साचा इक्क सुहंदड़ा, इक्क सुणाए सुहागी छंत। ताल तलवाड़ा इक्क वजंदड़ा, हरि महिमा गणत अगणत। भेखाधारी भेख वटंदड़ा, खेले खेल आदि अन्त। जुग जुग आपणी धार चलंदड़ा, आपे साध आपे सन्त। गुर पीर अवतार आप अख्वंदड़ा, आपे नारी आपे कन्त। साची सेजा आप हढंदड़ा, हरि भोगी भोग भोगंत। निराकार रूप सुहंदड़ा, आपे वस्सया आपणे लोक। दीपक जोती इक्क जगन्दड़ा, निरगुण वसे लोक परलोक। गहर गम्भीर गुणवन्ता आप अख्वंदड़ा, आप चलाए शब्द सलोक। जुग जुग भाणा आपणा आप वरतन्दड़ा, ना सके कोई रोक। गुरमुखां आपे आप सलहंदड़ा, सच सलाही देवणहारा साची मोख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा घोख। हरि सज्जण हरि पाया, सुणया सच संदेश। घर साचा इक्क वसाया, मिल्या नर नरेश। निज आत्म इक्क सुहाया, वेख्या देस परदेस। साचा मन्त्र इक्क जपाया, नाम दृढ़ाया रसना गाया किसे ना शेष। आपणे मार्ग आपे लाया, आपे बुधी करे विशेष। मन मनुआ आप बंधाया, दहि दिशा ना सके वेख। मति मन्त्र इक्क सुणाया, आपणे नेत्र आपे पेख। हरि सतिगुर दरस दिखाया, घर साचे होई आदेश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब लहिणा नानक गहिणा दर्शन नैणां आपणा आप वखाया।

वसणहारा घट घट, नर नरायण निरंकारया। शब्द वणजारा खोल्ह हट्ट, लोकमात जोत जगा रिहा। हरिजन पहनाए तन पट, सच श्रृंगार इक्क वखा रिहा। दुरमति मैल देवे कट्ट, दूई द्वैती पर्दा लाह रिहा। खेले खेल नटूआ नट, स्वांगी स्वांग रचा रिहा। पावे सार तीर्थ तट्ट, अठसठ वेख वखा ल्या। लोआं पुरीआं नठ्ठ नठ्ठ, गगन पाताला पन्ध मुका ल्या। कलिजुग गेड़े उलटी लट्ट, आप आपणा बिरध रखा ल्या। त्रैगुण माया तप्या मठ, पंच विकारा लम्बू ला ल्या। कलिजुग कूड़ कुड़यारी मारे सट्ट, जीव जन्त सर्ब कुरला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वणज

करा ल्या। शब्द वणजारा नाम अनमोला, हरि सतिगुर आप करांयदा। पुरख अगम्मा बणया तोला, दिस किसे ना आंयदा। नौ खण्ड पृथ्मी प्या रौला, सत्तां दीपां आप हिलांयदा। किसे नज़र ना आए हरि हरि मौला, मौला रूप सर्ब समांयदा। कलिजुग अन्तिम बदलया चोला, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द अनादी गाए ढोला, सो पुरख निरँजण आप अलांयदा। गुरमुखां सुणाए होला होला, अन्दर मन्दिर आप जगांयदा। सतिगुर पूरा नाम सति दए झकोला, सच हुलारा आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा वरतारा आप अख्वांयदा। सच वरतार पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वाया। कलिजुग खेल पृथ्मी आकाशा, गगन पाताला फोल फोलाया। लक्ख चुरासी वेखे काया कासा, पंज तत्त डेरा ढाया। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला मेल मिलाए पवण स्वासा, रसना जिह्वा जो जन गाया। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता जुगा जुगन्ता गुरमुखां पूरन करे आसा, जगत निरासा ना कोए वखाया। प्रगट होया सर्ब गुण तासा, मूर्त अकाल दीन दयाल सर्ब प्रितपाल आदि निरँजण वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम भण्डार हरि दातार आपणा आप वरताया। नाम भण्डारा भगवन धारी, हरि हरि आप वरतांयदा। निरगुण नूर जोत उज्यारी, अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। काल महांकाल दर भिखारी, भिच्छया आपणे हथ्थ रखांयदा। वेखे खेल वड संसारी, संसार सागर वेख वखांयदा। फोल फुलाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी लुट्टी जाए दिन दिहाड़ी, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग माया रही साड़ी, राजा राणा सर्ब कुरलांयदा। जीवां जन्ता कर्मां पक्की हाढ़ी, हरि साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच भण्डारा नाम वरतांयदा। नाम भण्डारा आपे खोल्ह, आपे रिहा वरताईआ। शब्द निष्अक्खर आपे बोल, आपणी करे पढ़ाईआ। सदा सुहेला वस्सया कोल, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। रुत्त बसन्ती रिहा मौल, फल फुलवाड़ी आप उपाईआ। नाम मृदंग वजाए ढोल, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। सृष्ट सबाई तोले आपणे तोल, सेर धड़ी ना कोए रखाईआ। भेव ना पाए पांधा रौल, हिसाब किताब ना कोए वखाईआ। गुर गोबिन्द तेरा पूरा करे कोल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। धरत धवली गोद रिहा फोल, पूत सपूते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम भण्डार इक्क रखाईआ। नाम भण्डार हरि वरतंता, पारब्रह्म पुरख सुल्तानया। साचा धाम इक्क सुहंता, दीपक जोत जगे महानया। साचा नाद इक्क वजन्ता, अनहद राग अलानया। मुकामे हक्क इक्क वखंता, जल्वा नूरो नूर नूरानया। राम रामा हरि वेस वटंता, निरगुण खेल श्री भगवानया। कान्हा कृष्ना जोत जगंता, त्रिलोकी नाथ वड बलवानया।

भेखा धारी भेख वटंता, बल बावन रूप पछानया। ईसा मूसा जोड़ जुड़ंता, जोड़ी जोड़ आपा गुण निधानया। चार यारी संग रखंता, संग मुहम्मद नौजवानया। अल्ला राणी मेल मिलंता, घर साचा सगन मनानया। एका ऐनलहक्क अल्ला हू अन्ना हू नाअरा आप लगंता, तबकां तबकां आप सुणानया। साचा संख इक्क वजन्ता, अष्टभुज सेवा लानया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मेट मिटंता, सुंभ नसुंभ आप पछानया। फड़या शब्द तीर कमन्दा, हरि मारे दो जहानया। भगत जनां आप बख्शंदा, वड दाता वड मेहरवानया। गहर गम्भीर सागर सिन्धा, हरि का भेव कोए ना पानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एक शब्द करे प्रधानया। हरि का शब्द शब्द प्रधान, हरि साचे बणत बणाईआ। हथ्थ उठाया इक्क निशान, आपे रिहा झुलाईआ। उत्ते लिख्या लेख महान, कलमी कलम ना कोए सलाहीआ। भेव ना पाए कोई विद्वान, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। चौदां विद्या होण हैरान, सोलां कल ना कल वरताईआ। अनन्त कल श्री भगवान, आपणी खेल रिहा खिलाईआ। शब्द सुनेहड़ा धुर फ़रमान, लोकमात रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, घर एका दए वखाईआ। नानक निरगुण कर परवान, सरगुण वेखे सहिज सभाईआ। गुर गोबिन्द जोद्धा सूरा वड बली बलवान, नाम खण्डा तेज़ प्रचण्डा आपणा हथ्थ उठाईआ। पुरीआं लोआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्डां खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द डंक वजाईआ। शब्द डंक नर निरँकारा, एका एक वजांयदा। करे खेल पुरख करतारा, परम पुरख वेख वखांयदा। लोकमात हो उज्यारा, आप आपणा वेस वटांयदा। शाह सुल्तानां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पांयदा। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, गढ़ हँकारी किला ढांयदा। मेट मिटाए दुष्ट दुराचारा, दूई द्वैती रहिण ना पांयदा। वरन बरन कराए इक्क प्यारा, एका घर वसांयदा। अमृत देवे ठंडी ठारा, जल धारा आप चुआंयदा। राज जोग सच्ची सिक्दारा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन घट घट वासन मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द शब्दी रंग रंगांयदा। शब्द शब्दी रंग चलूल, हरि साचा आप चढ़ाईआ। लालो लहिणा ना गया भूल, गुरु नानक वड वड्याईआ। कोदरा खाए चुकाए मूल, आप आपणा मेल मिलाईआ। फल फुलवाड़ी वेखे फूल, रुत्त बसन्ती इक्क सुहाईआ। सच पंघूड़ा रिहा झूल, प्रभ साचा आप झुलाईआ। मिल्या मेल कन्त कन्तूहल, गुरमुख नारी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। शब्दी नाता हरि हरि जोड़, हरिजन आप तरांयदा। आपे चाढ़े आपणे घोड़, दर दरवाज़ा वेख वखांयदा। वेखणहारा मिट्ठा कौड़, रस आपणे हथ्थ रखांयदा।

धुर दरगाही आया दौड़, लोकमात फेरा पांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गोड़, वेद व्यासा अंक समांयदा। सम्बल नगर ना कोई जाणे लभ्मा चौड़, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। गुर अर्जन लाया एका पौड़, चौथे घर बहांयदा। पुरख अकाल वेखे दौड़ दौड़, रूप रंग ना कोए जणांयदा। गुरमुखां अन्तिम जाए बौहड़, लहिणा देणा झोली पांयदा। चरन प्रीती निभे तोड़, जिस जन आपणी चरनी लांयदा। जुगां जुगां दी मेटे औड़, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। कूड़ी क्रिया रिहा होड़, सच सुच्च रखांयदा। वर पाया गुरमुख जिहा लोड़, घर साचा सगन वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा नाम नाम नामा झोली पांयदा। निरगुण जोती नाम भण्डारन, हरि साचे आप बणाईआ। वेखे कर कर तन शृंगारन, सोलां कलीआं रंग रंगाईआ। एका एक पुरख नारन, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेला आया काज संवारन, हरि दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग सोए आप उठालण, आप आपणी आवाज़ लगाईआ। सो पुरख बणया विच दलालण, हँ ब्रह्म गले लगाईआ। निरगुण जोती साची मालण, हरिजन साचे हार गुंदाईआ। आपणी खारी आप आया उठालण, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जल्वा नूर ख़ुदाई जलालण, बेऐब परवरदिगार बेगुनाहीआ। इक्क बहाए सच्ची धर्मसालण, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। निरगुण जोत जगी अकालण, कलिजुग मेटे काली शाहीआ। गुरसिखा पूरी करे घाली घालण, घाली घाल लेखे लाईआ। आप वजाए आपणा तालण, सृष्ट सबाई रिहा उठाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चालण, वेद कतेब भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी हाल बेहालण, खुल्ह्ड़े केस वखाईआ। ना कोए तोड़े जगत जंजालण, जगत जंजाला बंधन पाईआ। फल ना दिसे किसे डालण, सिंमल रुक्ख रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द करे शनवाईआ। शब्द सनवाई हरि सुणाई, आपणा ताल वजांयदा। जोत निरँजण सेवा लाई, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। पंचम सखीआं मंगल गाई, साचा राग अल्ह्ांयदा। अनहद धुन आप सुणाई, गुरमुख सोए उठांयदा। वेखण आया चाँई चाँई, जोती जामा भेख वटांयदा। गोबिन्द मेल मिलाया छीबे नाई, झीवर जट्ट संग रखांयदा। लालो तेरी कर कुड़माई, सेज सुखदाई वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी देवे शब्दी वर, वर दाता आप अख्वांयदा। वड दाता पुरख अकाल, एका एक एकँकारया। दीना बंधप दीन दयाल, लोकमात लए अवतारया। सम्बल नगरी साची धर्मसाल, गुर गोबिन्द मेल मिला ल्या। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त रंग रंगा ल्या। साढे तिन्न हथ्थ तेरा इक्क उछाल, लोआं पुरीआं पार करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सोए आप उठा ल्या। गुरसिख उठ उठ जाग, हरि साचे जाग खुल्हाईआ।

कलिजुग अन्तिम लग्गा भाग, साची वज्जे वधाईआ। दीपक जगया इक्क चिराग़, एका नूर करे रुशनाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, काया सिंच क्यारी हरी कराईआ। जगत तृष्ना बुझाए आग, जन राखे सरन सरनाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ अजपा जाप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द शब्दी धुन्कार सुणाईआ। धुनी नाद वज्जे ब्रह्मादि, हरि साचा आप वजांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटांयदा। जन भगतां देवणहारा दाद, घर साचे वस्त टिकांयदा। शब्द जणाई बोध अगाध, गुर अर्जन भेव खुल्ह्रांयदा। गुरमुख विरला लए लाध, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। कलिजुग माया भरम भुलाए साध, सन्त हरि का भेव कोई ना पांयदा। निरगुण शब्द निरगुण धार निरगुण रूप जो जन रहे अराध, निरगुण आपणा मेल मिलांयदा। वेख वखाए सुन्न समाध, सुन अगम्मी पार करांयदा। सचखण्ड दुआरा आदि जुगादि, आपणा आप सुहांयदा। अलख अलखणा खेले खेल जुगादि, जुगादि जुग जुग वेस वटांयदा। अगम्म अगम्म आदि अन्त आदि, अन्त आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। शब्द सुनेहड़ा सच जैकारा, हरि साचा आप सुणाईआ। सतिजुग तेरा साचा नाअरा, नर नरायण सुणाईआ। राम राम करे प्यारा, कृष्न कृष्न वड्याईआ। ईसा मूसा इक्क अधारा, मुहम्मद मुहम्मदी मेल मिलाईआ। नानक नानक कर प्यारा, गोबिन्द डंक सुणाईआ। फतहि फतहि वाहिगुरू प्यारा, वाहिगुर फतहि सुहाईआ। वरनां बरनां इक्क अधारा, एका जोत टिकाईआ। एका दर इक्क दरबारा, एका घर सुहाईआ। इक्क सुल्तान इक्क सिक्दारा, एका रईयत रिहा बणाईआ। एका नाम इक्क भण्डारा, एका रिहा वरताईआ। नौ सत्त तपाए इक्क दुआरा, एका वेख वखाईआ। एका धर्म एका धारा, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द जैकारा एका नाअरा सोहँ ढोला गाईआ। सोहँ ढोला हरि समरथ, एका आप उपांयदा। नानक निरगुण दित्ती वथ्थ, घर विच घर टिकांयदा। कलिजुग अन्तिम खोल्ह्रे हट्ट, तेरां तेरां तोल तुलांयदा। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी फोल फुलांयदा। पावे सार मन्दिर मस्जिद मठ, गुरदुआरे हरि हरि वेख वखांयदा। खेले खेल नठ्ठ नठ्ठ, भेव कोई ना पांयदा। अन्तिम करे इक्क अकट्ठ, सगला संग निभांयदा। एका पूजा पाठ, इष्ट देव इक्क वखांयदा। इक्क सरोवर मारे ठाठ, सुहावा ताल इक्क उपांयदा। कलिजुग बेड़ी काया काठ, अन्तिम आप जलांयदा। आप उतारे आपणे घाट, आपणा पन्ध मुकांयदा। सोहँ शब्द विकाए साचे हाट, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। हरिजन हरि हरि रस रिहा चाट, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। आपे जाणे नेड़े दूर वाट, दूर नेड़ा ना कोई रखांयदा।

एका जोती जगे लिलाट, हरिजन साचे वेख वखांयदा। बजर कपाटी पर्दा जाए पाट, जो जन रसना सोहँ गांयदा। सतिजुग तेरा साचा घाट, प्रभ लोकमात वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द सिँघासण इक्क विछांयदा। शब्द सिँघासण साची सेज, हरि साचे आप उपाईआ। जोती नूर कर कर तेज़, दिवस रैण करे रुशनाईआ। सच सुनेहड़ा एका भेज, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। कलिजुग अग्नी वेख शमश तबरेज़, गुरमुख साचे पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द शब्दी संख वजाईआ। शब्दी संख हरि ब्रह्मादि, आपणा आप वजाया। ब्रह्मा विष्न शिव रहे अराध, साचा ढोला आप सुणाया। आपे देवणहारा दाद, आपे अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट जोत देस माझ, सम्बल नगरी डेरा लाया। आप चलाए सतिजुग कलिजुग जगत जहाज़, आप आपणी सेव कमाया। दो जहाना कमाए साचा राज, शहिनशाह शाह भूप अख्वाया। आपे जाणे जगत समाज, जुग रीती वेख वखाया। आपे मक्का काअबा हाजी हाज, आपे दो दो आबा मेल मिलाया। आपे अस्व घोड़े चढ़े साचे ताज, सतिगुर पूरा रिहा दौड़ाया । गुरमुखां रक्खणहारा लाज, लाल दुलारे गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द धार हरि निरँकार शब्दी शब्द समाया। शब्दी धार निरगुण रूप, निरगुण रूप विच समाईआ। पारब्रह्म प्रभ सति सरूप, सति सतिवाद अख्वाईआ। कलिजुग मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। गुरसिखां उप्पर जाए तुठ, देवे नाम वड वड्याईआ। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ, जो विछड़या सो मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। मुक्त जुगत कराई लुट्ट, कलिजुग अचरज रीत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला काया घर, मन्दिर मसीत इक्क वखाईआ। मन्दिर मसीत गुरुदुआर, हरि काया गढ़ बणाया। निरगुण जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क टिकाया। कमलापाती कर श्रृंगार, घर बैठा आसण लाया। गुरमुख नारी नार मुटयार, आप आपणा राह तकाया। शब्द विचोला हो त्यार, लोकमात फेरा पाया। सो पुरख निरजंण ख़बरदार, हँ ब्रह्म लए उठाया। पारब्रह्म मेल करतार, ब्रह्म ब्रह्म विच समाया। सुरत शब्द शब्द सुरत कर प्यार, परमानंद रखाया। एका घर इक्क दुआर, एका सेजा रिहा हंढाया। एका नारी कन्त भतार, एका मेल मिलाया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, प्रभ साचे खेल रचाया। जप तप गए हार, तीर्थ तट ना पार कराया। साधां सन्तां मन मति बुध नार विभचार, सुहागी कन्त ना वेख वखाया। माया भरे ना कोई भण्डार, जीव जन्त होए हल्काया। गुरमुख साजण रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर रहे वहाया। कद होसी प्रभ तेरा दीदार, छिका छिक प्रभ आपणा वक्त लँघाया।

१८६ ०८

खुल्ह्ड़े केस दर दरवेश हाहाकार, नर नरायण रहे मंग मंगाया। कलिजुग कूड़ा रिहा दुरकार, आप आपणा तेज वखाया। मूर्ख मूढ़े कर प्यार, आपणे धन्दे आपे लाया। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोई चढ़ाया। नानक सतिगुर बण भिखार, हरि का लेखा गए लिखाया। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, हरि रूप रंग ना कोई वखाया। साधां सन्तां लए उभार, जिस जन आपणा मेल मिलाया। दीनां अनाथां दए सहार, अनाथ अनाथी वेस वटाया। लक्ख चुरासी तेरा सांझा यार, कादर करता आप अख्वाया। घड़न भन्नणहार करतार, समरथ पुरख आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए रक्ख, लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, माटी भाण्डे भन्न वखाया। घड़े भन्ने हरि हरि कार, आदि जुगादि वड वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसार, सतिजुग साची करे रुशनाईआ। इक्क वखाए सच दरबार, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ। सन्त सुहेला ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। गुरू गुर चेला उधरे पार, जिस जन पुरख अकाल ओट रखाईआ। हरिजन मेला अपर अपार, सतिगुर पूरा आप कराईआ। लालो बेड़ा रिहा तार, कलिजुग अन्त ना कोई डुबाईआ। आपणा पूर आपे चाढ़, जगत मलाह आप अख्वाईआ। धुर दरगाही साचा लाड़, हरि साचा आप हो जाईआ। कलिजुग अन्तिम लहिणा चुक्के सतारां हाढ़, बीस बीसा वेख वखाईआ। इक्क अकेला धर्म अखाड़, जगत जगदीसा दए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मेला सहिज सभाईआ।

१६० ०८

✪ २७ माघ २०१५ बिक्रमी किशन सिंघ दे घर अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ✪

एका एक एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सतिनाम सति वरतार, सति पुरख आप वरताईआ। करता पुरख करनी करे कार, करणहार आप हो जाईआ। अकाल मूर्त अपर अपार, रूप रंग ना कोई जणाईआ। अजूनी रहित हरि निरँकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आदि जुगादी बन्ने धार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आदि निरँजण खेल अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। इक्क पसारा इक्क निरँकारा, एका एक करांयदा। आपे खेले खेल अपारा, खेलणहार दिस ना आंयदा। निरगुण दीपक कर उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतारा, आप आपणा नाउँ रखांयदा। साचा घर सच दरबारा, हरि साचा आप सुहांयदा। आप आपणा दए सहारा, आप आपणा थान सुहांयदा। सच सुल्तान सच सिक्दारा, शाहो भूप आप अख्वांयदा। साजण

मीत मीत मुरारा, हरि आपणा आप उपांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, आपणी रचन रचांयदा। सति सरूपी खेल न्यारा, सति सतिवादी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण धार बंधांयदा। निरगुण धार रूप अगम्म, हरि साचा आप उपाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोई अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, हरि करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म प्रभ आप अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ अबिनाशा, एका रूप समाया। आपणा वेखे आप तमाशा, आपणा खेल आप खिलाया। आपणे मण्डल पावे रासा, हरि साचा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर नूर उजाला, एका एक अख्वांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। आपणे रंग रंग गुलाला, दूसर रंग ना कोई वखांयदा। जोती जोत जोत उजाला, एका एक डगमगांयदा। आप आपणी करे प्रितपाला, प्रितपालक आप अख्वांयदा। आप आपणी वस्सया धर्म सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आपे कर, आपे वेख वखांयदा। निरगुण नूर निराकार, आपणा आप धरांयदा। आपे वेखे पावे सार, दिस किसे ना आंयदा। सच सिँघासण खेल न्यार, आप आपणी चलत चलांयदा। शाह सुहाना इक्क अधार, एका दर सुहांयदा। आपणे दर करे वासी वास, निवासा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। निरगुण रूप हरि हरि रंग, दिस किसे ना आया। थिर घर बैठ सच पलँघ, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। आपणी मंगे आपे मंग, आपणी झोली आप भराया। आपणा रक्खे आपे संग, हरि दाता बेपरवाहया। आपणे मन्दिर आपे लँघ, हरि बैठा जोत जगाया। जोद्धा सूरबीर सरबंग, एका एक एकँकारा नाम धराया। आप वजाए आपणा मृदंग, आपे दर सुहाया। आपे खड़ग खण्डा होए प्रचण्ड, चण्ड प्रचण्ड आप हो जाया। आप उपाए कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मा ना डेरा लाया। आपे जाणे आपणी वंड, हरि का भेव किसे ना पाया। आपे वस्सया आपणे परमानंद, परम पुरख अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, थिर घर बैठा आसण लाया। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि साचा आप उपांयदा। पारब्रह्म प्रभ बैठा इक्क अकल्ला, दूसर कोई दिस ना आंयदा। आपणी जोती आपे रला, आपणा दीपक आप जगांयदा। आपणा घर आपे मल्ला, घर साचा आप सुहांयदा। आपे होए उच्च अटला, दिस किसे ना आंयदा। आपे वस्सया डूँघी डल्ला, भेव कोए ना पांयदा। आपे जाणे आपणा हल्ला, आप आपणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, घर साचा आप सुहांयदा। साचा घर हरि दरवाज़ा, एका रंग रंगांयदा। वेखणहार

ग़रीब निवाजा, आप आपणा राह तकांयदा। आप आपणा साजण साजा, साजणहार दिस ना आंयदा। आप आपणी मारे वाजा, आप आपणा आप उठांयदा। आप आपणा बणया राजा, राज राजान आप अख्वांयदा। आप आपणा रचया काजा, आप आपणा मंगल गांयदा। आप आपणी रक्खे लाजा, आप आपणा सगन मनांयदा। आप आपणे चढ़े अस्व ताजा, आप आपणा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता एकउँकारा हरि निरँकारा जोत सरूप शाहो भूप सति सरूप इक्क वखांयदा। सति सरूप सच्ची सलाह, भेव किसे ना आया। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, घर साचे बैठा आसण लाया। आपणा बणे आप मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाया। आपणी फड़े आपे बांह, आप आपणा नाल रलाया। आपणा पिता बणे आपे माँ, आप आपणा गोद उठाया। आप रखाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाया। आप वसाए साचा ग्रां, थिर घर साचे डेरा लाया। आपे करे सच न्याँ, अदल अदालत इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण नूर रुशनाया। निरगुण जोत आदि निरँजण, आदि पुरख वड्याईआ। आप आपणा बणया सज्जण, साक सैण आप अख्वाईआ। आप आपणी रक्खे लज्जण, लाजावन्त वड वड्याईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त ना कोए लिखाईआ। जोती नूर श्री भगवन्त, सति सति सति सच्ची सरनाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढाईआ। आप बणाए आपणी बणत, हरि दाता बेपरवाहीआ। आप उपजाए आपणा सुत्त शब्द छंत, पूत सपूता नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर उपाईआ। उपजे शब्द सुत्त दुलारा, घर साचा इक्क सुहांयदा। पुरख अकाल कर प्यारा, आपणा मार्ग लांयदा। एका देवे चरन प्यारा, साची ओट वखांयदा। आपणी किरपा भरे भण्डारा, आप आपणा विच टिकांयदा। आपे बणे संग वरतारा, सेवक सेवा साची लांयदा। शब्द सुत्त ढहि प्या दुआरा, प्रभ साचा आप उठांयदा। मेरा तेरा इक्क सहारा, तूं मेरा मैं तोहे भांयदा। सो पुरख हरि खेल न्यारा, हँ शब्द रूप वटांयदा। इक्क अकल्ला कर आकारा, आप आपणी चलत चलांयदा। शब्द सुत्त हो उज्यारा, आपणा कर्म कमांयदा। लोआं पुरीआं कर त्यारा, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। आपे विष्नूं रूप अपारा, हरि साचा आप वटांयदा। अमृत जल भर भण्डारा, कँवली कँवल टिकांयदा। कँवल कँवला कर त्यारा, कमलापाती वेख वखांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, आदि अन्त ना कोए जणांयदा। साचा सुत्त घर घर प्यारा, साची रचन रचांयदा। त्रैगुण माया बन्ह्े धारा, आपणा तत्त टिकांयदा। राजस तामस सांतक दे सहारा, हरि साचा मेल मिलांयदा। आकाश प्रकाश इक्क किनारा, आपणा आप जणांयदा। साचा शब्द सच्ची धुन्कारा, हरि साचा आप अलांयदा। कँवली कँवला कर आधारा, कँवल कँवला

मुख खुल्हांयदा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा पावे सारा, चारे मुख रखांयदा। अट्ठे नेत्र इक्क उग्घाड़ा, ब्रह्मण्ड वंड वंडांयदा। देवणहार हरि भण्डारा, साची कल वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप अपारा, आपणा अंग कटांयदा। विष्नूं सेवक सेवादारा, साची सेव कमांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर त्यारा, पारब्रह्म वेख वखांयदा। गगन मण्डल इक्क उज्यारा, रवि ससि इक्क चढ़ांयदा। आपे देवणहार सहारा, आप आपणा बंधन पांयदा। जल बिम्ब रूप अपारा, हरि साचा संग समांयदा। धरनी धरत धवल कर उज्यारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। भेटा देवे विच संसारा, साची चलत चलांयदा। बाशक तशका कर प्यारा, सांगोपांग हंढांयदा। उत्ते सुत्ता नैण मुँधारा, चतुर्भुज भेव ना आंयदा। आदि शक्ति खेल न्यारा, हरि साचा आप करांयदा। सच ख़ुदा बेऐब परवरदिगारा, आपणा दर हरि साचा आप सुहांयदा। ब्रह्मा वेता नाम आधारा, एका शब्द सुणांयदा। पंज तत्त कर पसारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश नाल रलांयदा। लक्ख चुरासी वणज वणजारा, साचे हट्ट वखांयदा। चौदां चौदां खोल्ह किवाड़ा, एका मुख बणांयदा। ज़िमीं अस्मानां रख्या पाड़ा, ना कोई मेल मिलांयदा। आपे खेल आपे वेखे जगत अखाड़ा, लोकमाती बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी कर प्यारा, मन मति बुध विच रखांयदा। निरगुण खेल अपर अपारा, निराधार आप हो जांयदा। सरगुण मेला कर संसारा, साची रचन रचांयदा। ब्रह्मा सेवक सेवादारा, साची सेव कमांयदा। विष्नूं देवे इक्क आधारा, घर घर रिज़क पुचांयदा। पंज तत्त भर भण्डारा, आपे वेख वखांयदा। घर विच घर करे त्यारा, हरि साची बणत बणांयदा। आपे खोल्हे नौ दुआरा, आपे वेख वखांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनारा, हरि साचा रंग रंगांयदा। दस्म दुआरी धर्म अखाड़ा, घर घर विच आप टिकांयदा। अन्दर बैठा साचा लाड़ा, आप आपणा मुख छुपांयदा। नाता जुड़या बहत्तर नाड़ा, लहू मिझ हड्डी रत्त मेल मिलांयदा। नाल रलाए पंचम धाड़ा, मुक्खी बाहर रखांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, एका तत्त जणांयदा। अन्दर कर नाम वरतारा, पंचम आप उठांयदा। पंच शब्द सच्ची धुन्कारा, दिवस रैण आप अल्हांयदा। अनहद वज्जे साचा ताड़ा, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। आपे रक्खया अन्ध अँध्यारा, डूँघी कन्दर आप वखांयदा। आपे जोत निरँजण कर उज्यारा, साचा चन्द चढ़ांयदा। अमृत रक्खया ठंडी ठारा, कँवल नाभी आप भरांयदा। झिरना झिरे अपर अपारा, हरि साचा आप झिरांयदा। आपे करे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लांयदा। आपे सच सिँघासण वसे धाम न्यारा आत्म सेजा आप सुहांयदा। जोती नूर नूर उज्यारा, शब्द शब्दी रंग रंगांयदा। घर मेला हरि कन्त भतारा, हरि साचा मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसारा, मानस मानुख आप वड्यांअदा। आप आपणा करे खेल न्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द विचोला हरि निरँकारा, आपणा सांग वरतांयदा। आपे लेखा लिखे वेद

चारा, चारे युगां वंड वंडांयदा। आपे भगत भगवन्त होए उज्यारा, साध सन्त आप अख्वांयदा। आपे दूती दुष्ट होए हँकारा, काया गढ़ आप सुहांयदा। वरते वरतावे विच संसारा, अभेद भेव कोए ना पांयदा। सन्त साजन मीत मुरारा, हरि साचा आप अख्वांयदा। आपे होए दुष्ट दुराचारा, आपणी दूशना आपे लांयदा। आपे नित नवित्त जोती नूर करे उज्यारा, गुर अवतार आप अख्वांयदा। सतिजुग साचे पावे सारा, भगत वछल भेव ना आंयदा। त्रेता तेरा रूप न्यारा, त्रीया वेस वटांयदा। राम नाम नाम आधारा, आप आपणा आप सुणांयदा। आदि जुगादी एका कारा, एका कल वरतांयदा। द्वापर तेरा वेख पसारा, पुराण अठारा वेद व्यासा आप लिखांयदा। कान्हा कृष्णा मीत मुरारा, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। अन्तिम करे पार किनारा, हरिजन साचे आप तरांयदा। कलिजुग कूड़ा हो उज्यारा, लोकमात चरन टिकांयदा। जूठा झूठा भर भण्डारा, साचा सगन मनांयदा। चार कुन्ट दहि दिशा बण वरतारा, आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। देवे वर सच्ची सरकारा, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। ना कोई मेटे ना मेटणहारा हरि का भाणा, हरि आपणे भाणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। हरि निरँकारा वेस वटंदड़ा, आदि पुरख अख्वाया। दो जहानी खेल खिलंदड़ा, धुर दी बाण चलाया। भगत भगवन्त मेल मलंदड़ा, भगत भगती लेखे लाया। सन्त दुलारे अंग रखंदड़ा, अंगीकार आप कराया। गुरसिख साचा दर सुहंदड़ा, दर घर फेरा पाया। हरिजन साचे पार करंदड़ा, जो जन हरि हरि रहे ध्याया। कलिजुग कूड़ा वेख वखंदड़ा, नेत्र रो रो नीर वहाया। मैं की करां इक्क अकलड़ा, तेरी धार ना कोई जणाया। प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदड़ा, देवे शब्द सुणाया। ईसा मूसा तेरा संग वखंदड़ा, हरि साचा लए उपाया। संग मुहम्मद रंग रंगदड़ा, चार यारी मता पकाया। अल्ला राणी मेल मिलंदड़ा, एका नाअरा रिहा सुणाया। ऐनलहक्क वेख वखंदड़ा, हक्क हकीकत वेख वखाया। शरअ शरीअत पाए बंधना, बन्दी तोड़ भेव ना राया। कलिजुग तेरा वेखे चांद चन्दना, चन्द नौचन्दी इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर कारन करता आप अख्वाया। कारन करता आप प्रभ, भेव कोए ना पांयदा। आपणा कहिणा जाणे सभ, आपे हुक्म चलांयदा। आपे सच सिँघासण बैठा फब, दरगाह साची डेरा लांयदा। आपे जीव जन्त जगत विकारे लए दब, आपे भार लांहयदा। आपे प्रगट जोत करे झब, निर आकार निरँकार नानक नाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणा वेस वटांयदा। निरगुण नानक जोत जगा, हरि साचा करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगा, एका राह वखाईआ। चार वरन बणाए भैण भ्रा, साचा सगन इक्क मनाईआ। सतिनाम मन्त्र दृढ़ा, साची करे पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां एका धाम

बहा, ज़ात पात रिहा मिटाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इक्क जणा, इक्क वखाए हक्क ख़ुदाईआ। राम रामा राम समा, राम रामा भेव चुकाईआ। कान्हा कृष्ना भरम तुड़ा, भरम गढ़ रहे ना राईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवक सेवादार दए वखा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। फड़ फड़ बांहों राहे दए पा, जो भुल्ले कलिजुग राहीआ। साचा कलमा रिहा पढ़ा, कायनात वेख वखाईआ। मक्का काअबा चरन छुहा, शरअ शरीअत इक्क सफाईआ। मुहम्मदी दीनां दए सुणा, नेत्र नूर नूर अलाहीआ। जगत अधीना आप अख्वा, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। दाना बीना सहिज सुभा, डूँघे सागर रिहा समाईआ। नानक निरगुण नाम धरा, नाना रूप करे रुशनाईआ। साची बख्शे इक्क सरना, पुरख अकाल मनाईआ। सच सितार रिहा वजा, निरँकार एह समझाईआ। गुणवन्ता गुण दए दिखा, गुर पूरे एह वड्याईआ। साधां सन्तां मेल मिला, घर साचा इक्क वखाईआ। चौथे पद दए चढ़ा, एका डण्डा नाम फड़ाईआ। पार कन्ढा आप करा, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। ब्रह्मण्डां ब्रह्म खोज खुजा, नानक हरि हरि अंग समाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे थाउँ थाँ, गोरख मच्छन्दर रहे हिलाईआ। करनहारा सच न्याँ, कलिजुग दाता बेपरवाहीआ। नानक सतिगुर रिहा समझा, भुल्ल रहे ना राईआ। नाम सति रसना गुण हरिजन लए गा, गावत गावत रैण विहाईआ। कलिजुग जीव कोई भुल्ले ना, कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरी छाईआ। नाता तुट्टे पुत्तरा माँ, भैण भाई दिस ना आईआ। राज राजान कोई ना पकड़े बांह, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। ना कोई देवे ठंडी छाँ, कलिजुग अग्नी मठ तपाईआ। जूठ झूठ अन्तिम कर के बहि जाए हां, सच सुच्च नजर ना आईआ। घर घर झूठे उडने काँ, काम क्रोध हँकार हल्काईआ। सुणे फरयाद कोई ना, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। एका जोत दस जामा पा, दस दस्मेसा आप अख्वाईआ। पूत सपूता नाउँ धरा, आप आपणी सेव कमाईआ। लेखा आपणा दए चुका, अगला लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर वेस कर, नूरो नूर डगमगाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, सर्ब कल अख्वाया। नानक सतिगुर बण रखवाला, लोकमात उठ धाया। गोबिन्द नूर करे प्रितपाला, साचा खण्डा हथ्थ उठाया। गुर अर्जन बणया शब्द दलाला, गुरू ग्रन्थ लिखाया। चार वरनां करया मालो माला, जो धन साचा लेवण आया। फल लगाए साचे डाल्ह, खोज खोज शब्द जन पाया। कलिजुग अन्तिम होए बेहाला, नानक गोबिन्द लेख लिखाया। कूड़ कुड़यारा मारे छाला, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। सृष्ट सबाई हाल बेहाला, ना कोई धीर धराया। साध सन्त अवल्लड़ी चाला, घर घर बैठे इष्ट मनाया। एका भुल्ले पुरख अकाला, हरि का रूप दिस ना आया। सर्ब जीआं हरि आप रखवाला, आप आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार

चलाया। नानक गोबिन्द साची धार, चार वरन जणाईआ। हिन्दू सिक्ख ना कोए विचार, मुस्लिम संग रखाईआ। ईसा मूसा इक्क अधार, एका नाम कुड़माईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका ढोला गाईआ। एका राम रूप अवतार, एका कृष्ना रूप वटाईआ। एका अल्ला राणी नूर उज्यार, एका बिस्मिल रूप समाईआ। एक नाम सति करतार, एका वाहिगुरू फतहि गजाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, पारब्रह्म वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, लोकमात डेरा लाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, एका रूप दरसाईआ। सोहँ शब्द नानक गाया निरगुण धार, भेव कोए ना पाईआ। अन्तिम वेखे सम्बल नगरी सच किनार, गुर गोबिन्द साचा माहीआ। गुर चेले होया इक्क प्यार, सोहँ रूप आप हो जाईआ। एका ब्रह्म पारब्रह्म रूप करतार, दूसर कोए दिस ना आईआ। आपणी जोती आपे गया जम्म, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। आपणा करन आया कम्म, वड दाता बेपरवाहीआ। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्म, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। शाह सुल्तान राज राजान, बन्दीखाने ना कोई सके बन्न्, हथ्थ किसे ना आईआ। ना होए वसेरा छप्परी छन्न, थिर घर दाता थिर घर बैठा आसण लाईआ। राह तक्कण सूरज चन्न, आप आपणी धार वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपणा बेड़ा रहे बन्न्, प्रभ साचा हुक्म चलाईआ। लोकमात जननी करे धन्न धन्न, जन भगत जणेंदी माईआ। आदि जुगादि बेड़ा देवे बन्न्, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका राग सुणाए कन्न, हरि शब्द आप अलाईआ। निरगुण जोत उजाली तन, नूरो नूर रुशनाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, झूठा गढ़ मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगतां देवे नाम धन, साची भिच्छया झोली पाईआ। कोई ला ना सके सन्न्, घर लुट ना कोए लै जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। हरि नूर जगत उजाला, प्रभ साचा आप करांयदा। कलिजुग अन्तिम खेले खेल निराला, खेल खिलारी भेव ना पांयदा। लक्ख चुरासी कढ्ढे दीवाला, हिसाब कताब वेख वखांयदा। धर्म राए तेरा तोड़ ताला, अठारां अठाई फोल फोलांयदा। जनक मीता बणया जगत दलाला, त्रै त्रै मूल चुकांयदा। कलिजुग वेखे राह सुखाला, मन मति नाल रलांयदा। आसा तृष्ना होई कंगाला, मन मति नाल रलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी फल ना दिसे किसे डाल्ह, कलिजुग रुत्त बसन्त ना कोई सुहांयदा। गुरमुख विरले हरि मिल्या धाम निराला, आत्म सेजा इक्क मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा संग रखांयदा। सगला संग हरि निरँकार, हरि हरि शब्द उपजाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। लोआं पुरीआं मारे मार, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। नानक गोबिन्द वंडी वंड, कलिजुग अन्तिम वेखण आईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, झूठी क्रिया

रहिण ना पाईआ। माया ममता देवे दंड, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। शब्द चमकाए चण्ड प्रचण्ड, देवे तिक्खी धार बंधाईआ। नार दुहागण मेटे रंड, विभचार ना कोई कराईआ। साचा नाम एका वंड, मेरा तेरा तेरा मेरा इक्क कराईआ। जगत विकारा खण्ड खण्ड, सतिगुर पूरा आप वखाईआ। मनमुखां सिर उठाए पंड, पापां गठड़ी आप चुकाईआ। राए धर्म देवे डन्न, राह विच बैठा राह तकाईआ। चित्रगुप्त लेखा सुणाए कन्न, भरम रहे ना राईआ। सतिगुर पूरा हरिजन बेड़ा जाए बन्न्ह, चार वरन जो जन रहे गाईआ। हरि का भाणा हरिजन मन्न, हर अन्तर हरि लिव लाईआ। दिस ना आए जीव अन्न्ह, कागी काग रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साजन साजण मीत, करे कराए पतित पुनीत, पतित पावन आप अख्वाईआ। पतित पावन सतिगुर दाता, सति पुरख अख्वाया। सर्ब जीआं पिता माता, बाल अञ्याणे गोद उठाया। मेटणहारा अन्धेरी राता, जुग जुग आपणा चन्न चढ़ाया। आप चलाए आपणी गाथा, आपणा नाम दृढ़ाया। आप चलाए साचा राथा, रथ रथवाही वेस वटाया। आपे हो त्रिलोकी नाथा, त्रै त्रै मेल मिलाया। आपे गुरमुखां देवणहारा साची वथ्थ, एका नाम झोली पाया। आपे सर्ब कला समरथ, हरि सज्जण इक्क रघुराया। कलिजुग लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुन्ट फेरा पाया। गुरसिख लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा लेखा लिखण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणा नाम उपाया। नाम उपाए हरि निरँकारा, आपणी बणत बणांयदा। राम राम राम उज्यारा, राम रूप आप अख्वांयदा। कान्हा कृष्ना कृष्न मुरारा, कान्हा गोपीआं आप नचांयदा। अल्ला हू दए सहारा, एका नाअरा आप उपांयदा। तेरां तेरां तोले धारा, तेरा तेरी झोली पांयदा। नानक अंगद कर प्यारा, आपणी बूझ बुझांयदा। अमरु सुत्त सच दुलारा, शब्दी शब्द उपजांयदा। राम दास हो उज्यारा, साचा ताल सुहांयदा। अमृत साचा भर भण्डारा, हरि मन्दिर वेख वखांयदा। गुर अर्जन बणया शब्द लिखारा, अगाध बोध सुणांयदा। गुरू ग्रन्थ कर त्यारा, सन्तां भगतां बंधन पांयदा। छेवां गुरु जोत उज्यारा, गुर गुर रूप वटांयदा। सत्तवें देवे सति वरतारा, साची सतया पांयदा। अठवें अट्ठां तत्तां वस्सया बाहरा, बाल बाला विच टिकांयदा। नावां गुर तेग बहादर लेखा रक्खे यार दुआरा, घर साचा इक्क सुहांयदा। झूठा तन दित्ता वारा, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया मात वरतांयदा। आप उपजाए सुत्त दुलारा, गुर गोबिन्द नाम धरांयदा। दुष्ट दमन कर प्यारा, पूत सपूता लेखे लांयदा। आपे बन्न्ह सीस दस्तारा, कल्गी तोड़ा आप टिकांयदा। आपे खण्डा खिच कटारा, श्री भगवन्त हथ्थ फड़ांयदा। आपे मेला पंज प्यारा, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे आपणा आपे वारा, आप आपणी

सेव कमांयदा। हरिसंगत तेरा रूप अपारा, गुर आपणे विच टिकांयदा। गुर गुर वस्सया दर दर दुआरा, गुरमुख जो जन रसना गांयदा। सच सुनेहड़ा मीत मुरारा, गुर पूरा आप सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, अकाल पुरख वेख वखांयदा। गोबिन्द तेरा मेरा इक्क प्यारा, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम आए दुआरा, गोबिन्द अग्गे सीस निवांयदा। चौदां सद ना पार किनारा, संग मुहम्मद इक्क कुरलांयदा। सतिगुर पूरा दए सहारा, दर आया गले लगांयदा। एका ढईया विच संसारा, सद सद वेख वखांयदा। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, गोबिन्द मेल मिलांयदा। सम्बल नगरी उच्च मनारा, उच्च महल्ला आप सुहांयदा। साढे तिन्न हथ्थ बणाए हरि मनारा, ना कोई बाढी नाल रखांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म एका धारा, एका शब्द समांयदा। जोती जोत कर पसारा, शब्दी डंक वजांयदा। बीस बीसा खेल अपारा, जगत जगदीसा आप करांयदा। गुरसिख साजण मीत मुरारा, फड़ बांहों गले लगांयदा। ग़रीब निमाणया दए सहारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। ऊँचां नीचां इक्क दुआरा, राज राजाना ख़ाक मिलांयदा। एका शब्द सच भण्डारा, सोहँ नाम वरतांयदा। सिँघ किशन तेरा सच दुआरा, हरि साचा आप वसांयदा। लालो लाल वणज किया वपारा, साचे हट्ट विकांयदा। कोधरा खा ना भुल्ले परवरदिगारा, नानक निरगुण मूल चुकांयदा। हरिसंगत तेरा सति प्यारा, सतिगुर पूरे विच समांयदा। आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां दर बणया रहे भिखारा, भेखाधारी भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संगत मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा, जगे जोत आदि निरँजणा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी मेल मिलावा घनकपुर वासी, रसन स्वासी आप तरांयदा।

नीचां अन्दर नीच ज़ात, हरि हरि आप अख्वाईआ। आपे देवे साची दात, सच वस्त झोली पाईआ। ग़रीब निमाणयां पिता मात, बाल अञ्याणा गोद उठाईआ। अमृत बूंद देवे स्वांत, सांतक सति वरताईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, बाली बुध तराईआ। आपे वेखे मार झात, दूसर दिस किसे ना आईआ। नीचों ऊँच करे हरि कमलापात, हरिसंगत संग रलाईआ। आपणा लेखा जाणे वड्डा शाह खाता खात, जुग जुग दाता बेपरवाहीआ। पारब्रह्म तेरी एका ज़ात, आत्म ब्रह्म वखाईआ। कलिजुग कूड़ा फिरे वाद विवाद रिहा झाक, पेश कोई ना जाईआ। निहकलंक लोकमात आपणा खोल्ह्या ताक, निहकलंक करे रुशनाईआ। पतित पापीआं करे पाकी पाक, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आपे बणया सज्जण साक, भैण भाई संग रिहा बणाईआ। जीव जन्त कोई ना सके किसे झाक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मानस जन्म लज्जया ल्ए राख, आप आपणी

दया कमाईआ। पूर्ब लहिणा चुक्कया मस्तक माथ, शब्द गहिणा तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे बन्ह्राए साचे लड़, सदा सुहेला साचा बंक सुहाईआ।

अकाल पुरख अजूनी रहित अख्वाउण वाला, जोती जोत जोत जग आया। आदि जुगादि जुग जुग आपणा रंग रंगौण वाला, आप आपणा वेस वटा आया। खण्ड ब्रह्मण्डां रचन रचौण वाला, नूर नूर ही डगमगा आया। ब्रह्मा विष्न शिव नचाउण वाला, आप आपणा खेल खिला आया। रवि ससि चन्न सतार चढ़ाउण वाला, निरगुण वेस अवल्लड़ा करा आया। चारे विद्या आप पढ़ाउण वाला, वेद विदातां आप लिखा आया । करोड़ तेतीसा सेव लगाउण वाला, सुरपति राजा इन्द आप उठा आया। अमृत मेघ आप बरसाउण वाला, अमृत धार नाल रला आया। जुग चौकड़ीआं आप बनाउण वाला, ब्रह्मा मनवन्तर वेख वखा आया। राम राजक रिज़क वी आप अख्वाउण वाला, नाम भण्डार वी बन्ह्र भार आया। गुर पीर अवतार घलाउण वाला, जोती जामा धार के विच संसार आया। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार बणाउण वाला, बराह रूप वी वेख वखाउण आया। यगै पुरख दा लेख लिखाउण वाला, हाव गरीव वी कर पार आया। नर नरायण प्रभ आप अख्वाउण वाला, कपल मुन ते दत्ता त्रै वी आप उठा आया। रिखव देव दी वंड वंडाउण वाला, पृथू आपणा संग निभा आया। मत्सय कच्छप मिन्द्राचल उठाउण वाला, आप आपणा खेल खिला आया। धनंतर वैद वैद अख्वाउण वाला, मोहणी रूप करके अपर अपार आया। नर सिंघ दर वेस वखाउण वाला, हँस हँसा दी चाल चलाउण आया। भेखाधारी बल बनाउण वाला, आप आपणा रंग रंगाउण आया। हरी हरि नरायण पछाउण वाला, तन्दन तोड़ ते गज उठाउण आया। परसराम ते राम समाउण वाला, रावण गढ़्ह हँकार नूं ढाउहण आया। वेद व्यास दरवेश बणाउण वाला, अठारां पुराण लिखण लिखाउण आया। कान्हा कृष्णा नाम धराउण वाला, त्रिलोकी नाथ बन्ह्र के साचा काहन आया। नाल गोपीआं सगन मनाउण वाला, बिदर सुदामा दा बन्ह्र के प्यार ल्याया। द्रोपद लज्जया लाज रखाउण वाला, गीता ज्ञान अर्जन दृढ़ावण आया। पंचम प्यार ते पंज बणाउण वाला, सृष्ट सबाई करन सँघार आया। ईसा मूसा दा मोह रखाउण वाला, माया तोड़ के मोह जंजाल आया। मुहम्मद अहिमद अंग लगाउण वाला, चौदां तबकां दा खोल्ह्र किवाड़ आया। नूरो नूर जोती डगमगाउण वाला, बेऐब परवरदिगार सच ख़ुदा आपणा नाम धराउण आया। कलमा सच दा सच पढ़ाउण वाला, अल्ला राणी नूं मात प्रनाउण आया। नानक गुर दा रूप वखाउण वाला, निरगुण धार कर प्यार उज्यार नूर नूरो नबी आप टपकाउण आया। नाम सति दा मन्त्र जपाउण

वाला, सति पुरख आप दातार आया। अंगद अंग ला के पार कराउण वाला, अंगीकार साचा हरि यार आया। अमरदास तों अमर कराउण वाला, अमृत भर प्याला त्यार हरि त्यार आया। रामदास सरोवर नहाउण वाला, सर सरोवर आ इक्क वखाउण आया। गुरू अर्जन नूं बोध अगाध जनाउण वाला, शब्द शब्द दी लै के धार आया। हरि गोबिन्द नूं घोड़ी चढ़ाउण वाला, मीरी पीरी दा शाह सवार आया । हरि राए नूं हरि रंग रंगाउण वाला, रागी आपणा राग नाद वजाउण आया। हरिकिशन नूं मेल मिलाउण वाला, मेला दो जहान कराउण आया। तेग़ बहादर नूं तेग दी धार लगाउण वाला, खून रंग के लाल गुलाल आया। गुर गोबिन्द नूं सुत्त उपजाउण वाला, सिँघ रूप हो आप भगवान आया। प्रहलाद की रक्खया कराउण वाला, हरनकसप दा मूल चुकाउण आया। बाले ध्रू नूं गले लगाउण वाला, जंगल जूहां अन्दर फेरी पाउँण आया। बल राजे नूं पार कराउँण वाला, बल धार के आप निरँकार आया। अमरीक दा लहिणा चुकाउण वाला, चक्र सुदर्शन लै विच संसार आया। राजे जनक नूं दरस वखाउण वाला, खाली भरन फेर भण्डार आया। हरी चन्द नूं मेल मिलाउँण वाला, तारा राणी दा कर प्यार आया। बिदर सुदामे नूं आप रखाउण वाला, नाम देव दा कर जैकार आया। सधना र्तलोचण पार लँघोण वाला, राविदास चमार भी नाल तराउँण आया। कबीर साचे घर मिलाउँण वाला, नामे छप्परी आप बनोण आया। सैण भगत भगवन्त अख्वाउँण वाला, खिमां ग़रीबी दा वेस वटा आया। गनका पापन नूं पार कराउँण वाला, पतित पुनीत आप करतार आया। अजामल दा लेख लिखाउँण वाला, अलख निरजंण आप करतार आया। बधक दे फंद कटाउण वाला, जामा धार के कृष्न भगवान आया। बाल्मीक बटवारा समझाउँण वाला, नाल लै के शब्द ज्ञान आया। भगतां संग आ सदा बठाउण वाला, खाली हथ्थ विच संसार वखाउण आया। लक्ख चुरासी दी बणत बनाउण वाला, कर वेस अवल्लड़ा साँवल यार आया। धरत धवल जल आप टिकाउँण वाला, आकाश प्रकाश रखान आया। बाशक सेज ते सेज वखाउण वाला, विष्नूं रूप आ लेख लिखाउँण आया। सहँसर मुख नूं मुख चलाउण वाला, वार सहँसर जेहवा आप हिलाउँण आया। कलिजुग दी बणत बणाउण वाला, लहिणा देण आ अन्त चकाउण आया। गुरमखां दे मुख मिलाउँण वाला, माता कुक्ख तों वखरा आप आया। हरिसंगत दे दुःख मिटाउँण वाला, आप आपणा दुःख गंवा आया। मात कुक्ख नूं सफल कराउँण वाला, दस दस मास अन्दर फेरा पा आया। उलटे रुख नूं वेख वखाउँण वाला, नज़र विच ना किसे संसार आया। बूटे सुकदे हरे कराउँण वाला, अमृत जल लै के धुर दरबार आया। आप आपणे लेखे लाउँण वाला, लेखा लिख के हथ्थ सच्ची सरकार आया। आदि जुगादि दे नाम जपाउण वाला, सोहँ शब्द दा सच भण्डार ल्याया। तीनों ताप दे तप नूं लाउँण वाला, त्रैगुण

दी बन्नू के धार ल्याया। तिन्न ताप दे सार नूं पाउँण वाला, साखियात हो के परवरदिगार आया। आपणे आप नूं आप अख्वाउँण वाला, धुरदरगाही सच्चा सिक्दार आया। राज राजाना नूं राज दवाउँण वाला, राज जोग हरि आप कमाउँण आया। लोक परलोक हरि आप बणाउँण वाला, आपणी बणी नूं आपे ही ढाउँण आया। हरिसंगत नूं सच सलोक सनाउँण वाला, लै के गुण निधान आया। छत्ती रागां दे विच समाउँण वाला, बहत्तर नाड़ ताड़ा वजाउँण आया। कागों हँस बणाउँण वाला, सच सरोवर वेख वखाण आया। गुरसिखां नूं सिख्या दवाउँण वाला, साची सिख्या सिखण आप निरँकार आया। सृष्ट सबाई नूं भिच्छया पाउँण वाला, मंगण भिच्छया सिक्खा दे दुआर आया। खालक खलक दे विच समाउँण वाला, ख़ाकी ख़ाक दर ख़ाक अख्वाउँण आया। सन्तां भगतां नूं दरस कराउँण वाला, हरिसंगत तेरा दरस करन निरगुण धार जामा सरगुण प्यार आया। किला काया दे विच रचाउँण वाला, शब्द घोड़े चढ़ अस्वार आया। कल्गी तोड़ा सीस ते लाउण वाला, नीला नीली धारों कर के पार आया। बवन्जा बवन्जा दी धार चलाउँण वाला, बवन्जा कर आ सड़ उज्यार आया। बवन्जा कलीआं दे नाल निभाउँण वाला, बविंजा अन्दरों बाहर कराउँण आया। बवन्जा साल लोकमात हंढाउँण वाला कलिजुग अन्तिम लुक्क के विच संसार आया। सम्बल नगरी धाम सुहाउँण वाला, रूप रंग ना कोए निखार आया। लोक परलोक डंक वजाउँण वाला, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर कर ख़बरदार आया। सिँघ दीदार नूं दरस वखाउण वाला, प्रगट हो संगत विचकार आया। जगत अलूामे गुरमुखां दे लौहण वाला, पहलों आपणा मूंह फटकार आया। गुरमुखां दे भार उठाउँण वाला, पहलों आपणा भार दबा आया। हरिसंगत दे बच्चे बचाउँण वाला, बच्चे नीआं दे हेठ रखा आया। साढे तिन्न हथ्थ दा मूल चुकाउण वाला, सिँघ मनजीते नूं सेवा ला आया। चिट्टा दाग काले उत्ते पाउँण वाला, चिट्टी कुली नूं डगमगा आया। नौ दुआरे पार कराउँण वाला, नौ दरवाजे दरबार सुहा आया। हरि जगदीस नूं आप मिलाउँण वाला, सिँघ जगदीस ताईं लेखे ला आया। दस्म दुआरी मेल मिलाउँण वाला, सच सिँघासण आसण विछा आया। विछड़े मेल मिलाउँण वाला, धुर दरगाही चल के आप मलाह आया। निथाव्याँ थान दिवाउण वाला, दरगाह साची साचा धाम बणा आया। जोती जोत दे नाल जगाउँण वाला, जोती रूप कर आप निरँकार आया। वरन गोती नूं मेट मिटाउँण वाला, पंज तत्त पिंजरा आपणा साड़ आया। मढ़ी गोर दे विच दबाउँण वाला, चाल वक्खरी होर दी होर कर आया। राम नाम ते कृष्न बणाउँण वाला, सीता राधा वी नाल रला ल्याया। अल्ला नाअरा भी आप अख्वाउँण वाला, ऐली अल्ला भी इक्क सलाह ल्याया। नाम सति दा सति वरताउँण वाला, वाहिगुरू फतिह गजा आया। चार वरनां नूं एका धाम बहाउँण वाला, एका रूप आप अख्वा आया। ब्रह्म पारब्रह्म विच मिलाउँण वाला,

सोहँ शब्द नूं आप पढ़ाउँण आया। हरिजन हरिभगत हरिसन्त गुरसिख गुरमुख गुर मिलाउँण वाला, मनमुखां नूं करन स्वाह आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दरगाह साची दा सच मलाह आया।

हरिसंगत हरि दुआर, भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। रैण भिन्नड़ी बण भिखार, मंगण दुआरे आईआ। धरत मात रही पुकार, गीत सुहागी गाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन जै जैकार, आपणे मुख रहे सलाहीआ। सुरपति बरसे मेघला धार, छहिबर एका लाईआ। सतिगुर पूरा करे प्यार, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। घट घट वज्जे नाम सितार, साची रिहा वजाईआ। सोहँ शब्द सुण जैकार, रवि ससि सीस झुकाईआ। गुर संगत वेखे इक्क प्यार, सांझा नाता भैणा भाईआ। सतिजुग तेरी बन्ने धार, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। आदि शक्ति अमृत पाणी देवे वार, साचा सगन मनाईआ। साची सखीआं मंगलचार, पंचम शब्द सुणाईआ। महल्ल अटल उच्च मनार, घर साचा इक्क वखाईआ। डगमग जोती जगे अपार, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। हरिसंगत तेरा सति दरबार, सति पुरख निरँजण आप लगाईआ। खाली भरे भण्डार, वड भण्डारी आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण बण दातार, सरगुण निरगुण विच टिकाईआ। गुरमुख साचे कर जाए पार, जो जन आए शरनाईआ। आंढ गुआंढ दए आधार, जो नेत्र दर्शन पाईआ। हेमराज ओगरा इक्क प्यार, नव शाह मेल मिलाईआ। वज़ीर अख़ीर एका धार, एका अंक समाईआ। काणा कौंटा जाए तार, बाऊपुर मिले वड्याईआ। अल्लढ़पिण्डी शब्द जैकार, डंका नाम वजाईआ। भुल्ला रहे ना विच संसार, प्रगट होया बेपरवाहीआ। करे कराए ख़बरदार, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। भिन्नड़ी रैण गाए आपणी वार, छत्ती राग भेव ना पाईआ। धुर दा ढोला धुर दा तोला धुर दा बोला आप सुणाए सच्ची सरकार, साची सेवा आप कमाईआ। हरिसंगत तेरा बणया गोला, गुर पारब्रह्म वड्याईआ। तेरा अन्तिम कलिजुग चुक्कण आया डोला, चार कहार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर सज्जण मेल मिलाईआ। चार कहार चार यारी, कलिजुग वंड वंडाईआ। पंचम मीता धुर दरबारी, पंचम वेख वखाईआ। गुरमुखां करे तन शृंगारी, सोलां कलीआं तन बंधाईआ। गहिणा बस्त्र पाए भारी, नैणी कजला धार वखाईआ। सीस गुंदे आप निरँकारी, खुलड़ी गुत्त ना कोए वखाईआ। सदा सुहागण जै जैकारी, जगत रंडेपा दए गंवाईआ। चरन प्रीती आप वखाए आपणी वारो वारी, थित वार ना कोए वखाईआ। करे इच्छया फिरे पिच्छे अगाड़ी, भज्जा फिरदा वाहो दाहीआ। बुझाए अग्नी तत्ती हाढ़ी, हाढ़

सतारां आप सुहाईआ। लेखे लग्गे चरन छुहाई दाढ़ी, दर घर साचा इक्क वखाईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, सतिगुर पूरा दए दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दित्ता वर, गुर संगत मेला एका घर, घर साचा इक्क वखाईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, आई चल दुआर। पारब्रह्म बणया जगत मलाह, गुरसिखां बेड़ा करे पार। चार वरनां जपाए एका नाँ, सोहँ जै जैकार। निथाव्याँ देवे चरन कँवल साचा थाँ, आप आपणी किरपा धार। करे रच्छया ग़रीब गाँ, गऊ ग़रीबां लए उभार। सदा सुहेला रक्खे ठंडी छाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवणहारा वर, देवे वर आप दातार। भिन्नड़ी रैण सगन मनाया, घर घर वज्जे वधाईआ। गुरमुखां सद गुर चरन बहाया, जग नाता आप जुड़ाईआ। पुरख बिधाता सेवा लाया, हरिसंगत तेरी वड वड्याईआ। धुर दी दात धुर दा दाता लै के आया, हरिजन झोली रिहा भराईआ। आपणी गाथा आप सुणाया, गाए ढोला साचा माहीआ। माछूवाड़ा आप तजाया, सच दुआरा इक्क वखाईआ। गुर संगत अखाड़ा आप लगाया, आपे गाए आप सुणाए सुनणेहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला साचे घर, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। भिन्नड़ी रैण गुंद गुंद हार, गुरसिखां तन पहनांयदी। पुरख अबिनाशी तेरा प्यार, हरिसंगत बोल सुणांयदी। जुग जुग वेखे वेखणहार, भुल्ल ना कोए रखांयदी। आदि जुगादि रहे मुटयार, बिरध बाल ना वस्त रखाइन्दी। कर कर बैठी सदा श्रृंगार, कन्त कन्तूहला इक्क हंढांयदी। आपणा झकोला आपे दए हुलार, दो जहानां हुलारा इक्क रखांयदी। कन्त कन्तूहला बणया तोला विच संसार, नाम कंडा हथ्थ फड़ांयदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला देवे कर, भिन्नड़ी रैण मुख सलांहयदी। भिन्नड़ी रैण हरि हरि गाए, पाया हरि गोबिन्द। गुरमुख साचे संग रलाए, मिटी सगली चिन्द। सतिजुग साची वंड वंडाए, घर पाया गुणी गहिंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां मेटण आया चिन्द।

✪ २८ माघ २०१५ बिक्रमी पिण्ड तारा चक्क ✪

निरगुण रूप भगतन मीता, आदि जुगादि समाया। इक्क अकल्ला एकउँकारा बैठा रहे अतीता, आप आपणा धाम सुहाया। जुग जुग चलाए आपणी रीता, आप आपणी धार बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। भगतन मीता हरि निरँकार, एका एकउँकारया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, भेव अभेदा आप रखा ल्या। निरगुण

जोत कर उज्यार, नूरो नूर डगमगा रिहा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, करनी करता आप सुणा रिहा। ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क जैकार, लोआं पुरीआं नाअरा ला ल्या। एका घर सच्चा दरबार, दर घर साचा आप सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ उपा ल्या। निरगुण नाउँ हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। सति सरूप सच्ची सरकारा, घर साचे आप सुहांयदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, अगाध बोध अख्वांयदा। आदि जुगादि अगम्मड़ी कारा, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। शब्दी शब्द भर भण्डारा, हरि साचा आप वरतांयदा। निरगुण रूप मेल संसारा, सरगुण वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आपे कर, आपे वेस वटांयदा। वेस वटाए इक्क अकल्ला, एका एकउँकारया। वसणहारा सच महल्ला, लक्ख चुरासी आप पसारया। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह पहाड़ डूँघी गारया। आपणे दीपक आपे बला, आप आपणा कर उज्यारया। घट घट आसण आपे मल्ला, आप आपणा थान सुहा ल्या । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर उपा ल्या। निरगुण रूप हरि हरि सज्जण, एका एक अख्वांयदा। आप कराए आपणा मजन, हरि सन्तन वेख वखांयदा। शब्द अनादी ताल वज्जण, धुन अनादी इक्क रखांयदा। आदि जुगादी पड़दे कज्जन, आपणा नाउँ उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका दर, एका घर सुहांयदा। सरगुण मेला निरगुण धार, जोती जोत रुशनाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, हरि साचा सच कराईआ। अन्दर मन्दिर खोल्ह किवाड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। धर्म वखाए इक्क अखाड़, घर साचे वज्जे वधाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोत निरँजण सेवा लाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, आप आपणी दया कमाईआ। हरिजन मीता हरि निरँकार, नित नवित्त वेख वखाईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल कर, एका थान सुहाईआ। थान थनंतर हरि हरि वस्सया, आदि पुरख अबिनाशा। जन भगतां मार्ग आपे दस्सया, सृष्ट सबाई वेखे तमाशा। साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, मण्डल मण्डप पावे रासा। आपे होए रैण अन्धेरी मस्सया, आपे निरगुण जोत करे प्रकाशा। हरि घट घट आपे वस्सया, आपे लेखा जाणे दस दस मासा। जन भगतां दुआरे फिरे नस्सया, पार कराए पृथ्मी आकाशा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड चरना हेठ झस्सया, ब्रह्मा शिव दासी दासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला सरगुण घर, हरि साचे अन्दर वस्सया। साचा मन्दिर उच्च अटारी, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगुण जोत जगे निरँकारी, दीवा बाती ना कोई रखांयदा। कमलापाती

मीत मुरारी, आप आपणा वेख वखांयदा। गावत गावत गाए साची नारी, नर नरायण नाम रखांयदा। आदि निरँजण वड बलकारी, आप आपणा बल धरांयदा। शाहो भूप सच्ची सिक्दारी, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल न्यारी, आप आपणी चाल चलांयदा। जन भगतां पैज रिहा संवारी, भगत भगती लेखे लांयदा। दर दरवेशा बणे भिखारी, दर दर अलख जगांयदा। सेवक सेवा करे अपारी, सेवादार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन हरि मेलया, गुर सतिगुर किरपा धार। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेलया, मेल मिलावा मीत मुरार। दर्शन पाया इक्क अकेलया, विछड़या संसार। दर घर साचे चढ़े तेलया, ख़ुशी मनाई आप करतार। अचरज खेल आदि जुगादि जुग जुग पारब्रह्म प्रभ खेलया, लोकमात लए अवतार। आपे वसे रंग नवेलया, सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, करे कराए आपणी कार। कार करंता हरि भगवाना, आदि जुगादि अख्वांयदा। खेले खेल दो जहानां, त्रिलोकी नंदन वेस वटांयदा। एका एक इक्क निशाना, एका तीर चलांयदा। दोए दोए रूप श्री भगवाना, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। तीजा नेत्र इक्क ध्याना, एका रंग रंगांयदा। चौथा पद पद निरबाना, हरि साचा आप सुहांयदा। पंचम पंचम पंच तराना, पंचम राग अल्हांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई मकाना, घर साचे आसण लांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण सद मेहरवाना, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। अठवें अट्ठां तत्तां करे प्रधाना, आप आपणा तत्त जणांयदा। नौ दर खोल्ह जगत मकाना, काया हट्ट चलांयदा। दसवें बैठ साचा कान्हा, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। सेवक सेवा रवि ससि भाना, सूरज चन्न वेख वखांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, आप आपणी कल वरतांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप उपांयदा। खड़ग खण्डा तीर कमाना, शब्दी नाउँ रखांयदा। मारनहारा सच निशाना, एका वार चलांयदा। भगतन मीता गुण निधाना, गुणवन्ता वेख वखांयदा। आप उठाए बाल निधाना, लोकमात आप जगांयदा। दर घर साचे कर परवाना, आप आपणा मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा हो प्रधाना, सदा सुहेला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी जोत जगांयदा। सन्त सुहेले लए वर, आपणे शब्द करे कुड़माईआ। जगत जंजाला चुक्के डर, एका दूजा मेट मिटाईआ। अमृत वेखे साचा सर, सर सरोवर एका नहाईआ। एका अक्खर जाए पढ़, जगत विद्या मूल ना भाईआ। साचे पौड़े जाए चढ़, नाम डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। आपणे अन्दर जाए वड़, घर मेला बेपरवाहीआ। जगत अग्न ना जाए सड़, पंच विकार ना कोई सताईआ। दर्शन देवे अग्गे खड़, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, हर घट बैठा आसण

लाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। हरिजन फड़ाए आपणा लड़, आप आपणे लड़ बंधाईआ। जुग जुग आपणा वेस कर, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे घर सच वधाई, सतिगुर साचा आप वजांयदा। सुरत शब्द करे कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। पंचम सखीआं गायण चाँईं चाँईं, साचा मंगल इक्क अल्लांयदा। आपे पकड़नहारा बाहीं, आप आपणी भुजा उठांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कांई, एका साची चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। मेल मिलावा सज्जण शाह, पाया पुरख अपारया। गुरमुख मिल्या गुर मलाह, देवे नाम सहारया। शब्द जणाई सच सलाह, साचा मार्ग ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, सन्तन मीता इक्क अतीता, पतित पुनीता नाम धरा ल्या। पतित पुनीता आदि निरँजण, एका रूप समाईआ। हस्त कीटां साचा सज्जण, ऊँचां नीचां विच समाईआ। जन भगतां कराए आपणा मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। आपे होए पड़दे कज्जण, नाम दोशाला हथ्थ उठाईआ। अनहद ताल तलवाड़े वज्जण, साचा ढोला साचे माहीआ। हँकारी गढ़ भाण्डे भज्जण, भरम गढ़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस वटंदड़ा पुरख अकाला, अकल कला अख्वाया। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा दीन दयाला, दया निध वेख वखाया। दर घर साचा वेख वखंदड़ा गुरमुख उठाए साचा लाला, आप आपणी गोद उठाया। जगत विछोड़ा आप कटंदड़ा मेल मिलाए सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। राज जोग इक्क वखंदड़ा फल लगाए काया डाल्ला, नाम सतिनाम मन्त्र दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाया। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि हरि वेस, आपणा रूप वटाईआ। शाहो भूप वड नरेश, निरगुण भेव कोई ना पाईआ। आपणी करे आप आदेस, आपे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि दर दरवेश, ब्रह्मा विष्न महेष बैठे आसण लाईआ। आपे वस्सया सेजा शेष, सांगोपांग हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग जोत जगांयदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, अलख अगोचर भेव ना आंयदा। मरे ना जन्मे विच संसार, आवण जावण खेल खिलांयदा। मात पित ना कोई सहार, भैण भाई ना कोए रखांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, एकँकारा आपणी कार कमांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिंघासण आसण लांयदा। दीपक जोत जोत उज्यार, नूरो नूर अख्वांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। लोकमात पावे सार, पंचम

तत्त तत्त वखांयदा। ईसा मूसा नार भतार, आपणा संग रखांयदा। अल्ला राणी कन्या कुँवार, एका हुक्म आप पढ़ांयदा। कायनात कर उज्यार, बिस्मिल रूप समांयदा। संग मुहम्मद हो उज्यार, चार यारी रंग रंगांयदा। निरगुण रूप अपर अपार, नानक जोती आप टिकांयदा। एका जोती दस अवतार, दहि दिशा वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ना कोई भेव छुपांयदा। मिल्या मेल हरि निरँकार, विछड़ कदे ना जांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका एक अख्वांयदा। वरन गोती वस्सया बाहर, जात पात ना कोई रखांयदा। कोटी कोटि मंगण बण भिखार, घट घट भिच्छया आपे पांयदा। चोटी चढ़ गुरमुख विरला पाए सार, सच गेड़ा आप दृढ़ांयदा। नाम सति सति वरतार, कलिजुग आप करांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। वंडणहारा साची वंड, पंचम मेल मिलांयदा। जूठ झूठ मेटे भेख पखण्ड, अमृत धारा मुख चवांयदा। गुरसिख नार ना होए रंड, साचा कन्त सुहागी इक्क वखांयदा। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। सतिगुर पूरा पाए वंड, गुर गोबिन्द नाउँ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम देवे दंड, आपणा लेख लिखांयदा। लक्ख चुरासी खण्ड खण्ड, ना कोई मात बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, सन्तन मीता हरि भगवाना, एका देवे धुर फ़रमाना, शब्द अनादी आप सुणांयदा। शब्द अनादी साचा ढोला, हरिजन आप सुणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे बोला, आपे बूझ बुझाईआ। आपे बणया साचा तोला, नानक निरगुण वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी तत्त वरोला, एका कंडे रिहा पाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले होला, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। मन मति पाए रौला, गुरमति सार ना पाईआ। भार ना चुक्के धरनी धवला, दिवस रैण रही कुरलाईआ। किसे हथ्थ ना आए अमृत आत्म नाभी कँवला, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला एका दर, इक्क अकल्ला रिहा कराईआ। साचा शब्द सच जैकारा, हरि हरि आप लगांयदा। आदि अन्त इक्क अवतारा, एका रूप वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। लेखा लिखे वेद चारा, चार चारां तोल तुलांयदा। चारे कूटां पावे सारा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखांयदा। आपे लाए आपणा नाअरा, आपणा सोहला आपे गांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। सृष्ट सबाई होई विभचारा, धीरज जति ना कोए धरांयदा। भरमे भुल्ले पुरख नारा, नर नरायण दिस ना आंयदा। बणया गढ़ काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, घर घर बुरज सुहांयदा। जूठ झूठ दए ललकारा, सच सुच्च दिस ना पांयदा। आसा तृष्ना करे विचारा, तृखा तृप्त ना कोए वखांयदा। किसे ना दिसे पार किनारा, आर पार ना कोए सुहांयदा। मात पित ना कोए प्यारा, पिता पूत ना मेल मिलांयदा। धीआं भैणां करन वपारा,

कलिजुग कल वरतांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद बण अखाड़ा, माया ममता खेल खिलांयदा। नानक गोबिन्द बण लिखारा, हरि हरि भेव खुल्हांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साचा वेस वटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। जोती जोत जगे पुरख करतारा, परम पुरख वेख वखांयदा। शब्द शब्द शब्द जैकारा, हरि शब्दी नाद वजांयदा। गुरसिखां वेखे दर दुआरा, आप आपणा चरन टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेस धर, हरिजन बांहों लए फड़, आप बंधाए आपणे लड़, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा।

✪ २६ माघ २०१५ बिक्रमी कपतान बंता सिंघ दे घर पंज गराई ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर पूरा हरि मेहरबान, सति सरूप समाया। वसणहारा सच मकान, भेव किसे ना पाया। एकउँकार श्री भगवान, निरगुण जोत नूर रुशनाया। दाता दानी दो जहान, दो जहाना डेरा लाया। आदि शक्ति रूप महान, सुते प्रकाश कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आप अख्वाया। आदि जुगादि हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। सतिगुर पूरा गुण निधाना, आप आपणा नाउँ रखांयदा। आपे देवणहारा दाना, आपणी झोली आप भरांयदा। आपे देवे आपणा माणा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। आप वखाए धुर निशाना, सच निशाना आप झुलांयदा। आपे शाहो भूप सुल्ताना, राज राजान आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। आदि जुगादी एकउँकारा, एका रूप समाईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यारा, सच महल्ल करे रुशनाईआ। थिर घर बैठा इक्क दुआरा, एका घर वसाईआ। सच सिँघासण भेव अपारा, हरि साची बणत बणाईआ। ना कोई दीसे चोबदारा, ना कोई अलख जगाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, सखा सखाई ना कोए वखाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, भैण भाई ना कोए उपजाईआ। मात पित ना सुत्त दुलारा, जननी गोद ना कोए उठाईआ। ना कोई देवे पवण हुलारा, जल धार ना कोए वगाईआ। ना कोई दीसे रवि ससि सतारा, गगन मण्डल ना कोए जणाईआ। ना कोई धरत धवल दए सहारा, ना कोए शेष मुख खुल्हाईआ। ना कोई ब्रह्मा वेद विचारा, ना विष्नूं रिज़क सबाईआ। ना कोई शंकर करे सँघारा, देवत सुर ना कोए गाईआ। ना कोई इन्द्र बरखे धारा, ना कोई छहिबर वेख वखाईआ। गण गंधर्ब ना कोई अखाड़ा, अपच्छरां नाच ना कोए नचाईआ। त्रैगुण माया ना कोए पसारा, राजस तामस सति ना कोए जणाईआ। ना कोई पंचम मोह प्यारा, पंचम जड़त ना कोए जड़ाईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध ना कोए वखाईआ।

ना कोई दीसे नौ दुआरा, दसवें आसण कोए ना लाईआ। ना कोई उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वरतारा, ना कोई खाणी रचन रचाईआ। ना कोई शब्द ना धुन्कारा, ना कोई ताल वजाईआ। ना कोई राम कृष्न अवतारा, ना कोई त्तत्व तत्त समाईआ। ना कोई वेद व्यास बणे लिखारा, आप आपणी कर वड्याईआ। ना कोई गीता ज्ञान उज्यारा, विष्न विराट ना कोए उपाईआ। ईसा मूसा ना कोई सहारा, अहिमद मुहम्मद ना कोए कुड़माईआ। ना कोई निरगुण तत्त करे प्यारा, नानक नाम ना कोए धराईआ। ना कोई गोबिन्द बोल जैकारा, फतहि डंक वजाईआ। लोआं पुरीआं ना कोए मुनारा, नौ खण्ड ना रचन रचाईआ। सत्त दीप ना कोए सहारा, सति सफ़ैद ना कोए रखाईआ। छत्ती राग ना कोए गाणा, गावणहार दिस ना आईआ। ना कोई पवणी पवण मसाणा, आकाश प्रकाश ना कोए टिकाईआ। अवन गवन ना कोए नगारा, ना कोई ताल वजाईआ। चित्रगुप्त ना कोए लिखारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगारा, ना कोई घूँगट मुख ते पाईआ। नर्क सुरग ना कोए विहारा, ना कोई राह वखाईआ। गुर पीर ना कोए अवतारा, साध सन्त ना कोए जणाईआ। अबिनाशी करता इक्क अकल्ला एकउँकारा, आप आपणा रूप उपाईआ। जोती नूर नूर उज्यारा, नूर नूर विच समाईआ। आदि निरँजण खेल अपारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। अलख अगोचर भेव न्यारा, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, परम पुरख अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी कारा, आप आपणी रचन रचाईआ । आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं दए सहारा, लोकमात वंड वंडाईआ। जुग जुग लै आप अवतारा, खेले खेल हरि घट थाँईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। साधां सन्तां कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि वेस कर, जुग जुग आपणा राह तकाईआ। आत्म अन्तर हरि हरि जाण, आपे बूझ बुझांयदा। सुरती अन्दर सुरत ध्यान, सुरती सुरत समांयदा। शब्दी शब्द शब्द निगहबान, शब्दी नाम दृढ़ांयदा। अन्दर मन्दिर मंगे दान, ड़ूँघी कन्दर वेख वखांयदा। सुणे सुणाए आपणे कान, राग अनादी ताल अलांयदा। अनहद सुनेहड़ा सच मकान, आपणा आप जणांयदा। बन्ने बेड़ा विच जहान, साचा खेड़ा आप वसांयदा। दर दुआरे बख्शे माण, आत्म भिच्छया इच्छया झोली पांयदा। साचा लेखा धुर फ़रमान, अगाध बोध वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म अन्तर वसे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। आत्म अन्तर हरिजन आस, आपणी आप उपजाईआ। आप बुझाए जगत प्यास, जगत प्यास आप बुझाईआ। दाता दानी सर्ब गुणतास, दयावान अख्वाईआ। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, काया ड़ूँघी कन्दर फोल फोलाईआ। करे कराए पूरी आस, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। माया ममता मोह दए निवास,

मन डोरी शब्द बन्नाईआ। बुध बिबेकी कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मति मतवाली पावे रास, रस रसीआ वेख वखाईआ। वसणहारा विच स्वास स्वास, पवण पवण रूप हो जाईआ। बाल अञ्याणी जगत निमाणी ना रहे उदास, किरपा करे करनेहार वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोझी पाईआ। घर सुज्झया हरि हरि बुज्झया, आपणा मूल पछान। लहिणा देण चुकाए भेव गुज्झया, गुरमुख सके ना रसना गाण। चरन प्रीती आत्म नीती साची रीती जो जन लुज्झया, अमृत मिले पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे बाल निधान। बाल बाला बाली बुध, रसन कहिण ना जाईआ। अन्दर वसे देवे सुध, आपणी बूझ बुझाईआ। सच सिँघासण आत्म सेजा बहे कुद्द, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। पंच विकारा करे युद्ध, शब्द खण्डे भेट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, जीउ पिण्ड इंड ब्रह्मण्डे खोज खोजाईआ। काया मन्दिर आत्म झाकी, हरि हरि खोलणहारा ताकी, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। पतित पुनीत करे पाकन पाकी, पतित पवण आप अख्वाया। सतिगुर पूरा सज्जण साकी, सगला संग रखाया। एका रक्खे चाल बांकी, बेहंगम रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे आपणा वर, पूरन आसा जगत भरवासा शब्द दिलासा काया मन्दिर साचे अन्दर कर प्यार, हरि निरँकार जन पाए सार, आर पार अद्धविचकार वेख वखाया।

२१० ०८

✪ २६ माघ २०१५ बिक्रमी अमीर चन्द गुलाटी दे घर बटाला ज़िला गुरदासपुर ✪

आदि निरँजण अकल कलधारी, एका एक एकँकारया। निरगुण जोती जोत उज्यारी, रूप अगम्म अपारया। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारी, भेव अभेद खुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वा रिहा। अबिनाशी करता हरि करतार, एका रूप समाईआ। एका नूर कर उज्यार, एका डगमगाईआ। आदिन अन्ता कर पसार, आपे वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, हरि साचे आप कराईआ। आप आपणी पावे सार, घर साचे बेपरवाहीआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग वखाईआ। इक्क अकल्ला एका धार, एका रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्ति रूप वटाईआ। आदि शक्ति हरि भगवाना, हरी हरि हरि आप अख्वांयदा। एका वस्सया सच मकाना, घर साचा आप सुहांयदा। दीपक जोत इक्क वखाना, इक्क प्रकाश करांयदा। दाता दानी गुण निधाना, गहर गम्भीर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क अख्वांयदा। आदि अन्ता हरि

भगवाना, आपणी कल वरताईआ। खेले खेल दो जहाना, शाहो भूप सहिज सुखदाईआ। आपे पाए आपणी आणा, आपणे भाणे आप समाईआ। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त खेल खिलाईआ। खेलणहार हरि समरथ, एका एक अख्वाईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथवाही आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी गाथ, आपे राग अलाईआ। आप निभाए आपणा साथ, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि गोबिन्द, एका रंग रंगाईआ। दाता दानी सागर सिन्ध, घर आसण लाईआ। ना कोई ख़ुशी ना कोई चिन्द, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। ना कोई मात पिता उपजाए बिन्द, ना कोई बालक गोद उठाईआ। आप आपणा बण बख़्शिंद, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। निरगुण रूप पारब्रह्म, आदि पुरख अख्वाया। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना वेस वटाया। आपे जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणा रूप वटाया। निरगुण रूप मूर्त अकाल, एका अंक समाईआ। आपे होए दीन दयाल, दयानिध वड वड्याईआ। आप आपणा बण दलाल, आप आपणा वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता एका एकँकार, एका कर्म कमाईआ। एकँकार पुरख अबिनाशा, आपणी कल वरतांयदा। आपणे मन्दिर करे वासा, आपे बणत बणांयदा। आपे साहो भूप राज राजान शाह शबाशा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपणे मण्डल पावे रासा, थान थनंतर आप सुहांयदा। आपे पृथ्मी आपे आकाशा, गगन गगनंतर आप सुहांयदा। जुग जुग खेले खेल तमाशा, वेखणहार दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस हरि, वेस अनेका आप करांयदा। वेस अनेका हरि हरि जोत, आपणी कल वरताईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। शब्द नगारे लग्गे चोट, एका धुन उपजाईआ। आपे वस्सया कोटी कोटि, कोटन कोटि बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणे रंग समाईआ। अंक समाया इक्क अकल्ला, एका घर सुहांयदा। आपे वस्सया सच महल्ला, घर साचा आप उपांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, आप आपणा आसण लांयदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, आपे हुक्म अलांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, एका डंक वजांयदा। वसणहारा जलां थलां, घट घट डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग आपणी धार चलांयदा। जुग

जुग धार हरि करतार, आपणी आप चलांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, पारब्रह्म प्रभ वेख वखांयदा। आपे निरगुण बन्ने धार, आपे सरगुण सगला संग रखांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, बन्द किवाड़ मुख छुपांयदा। आपे दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती नाउँ रखांयदा। अमृत बूंद स्वांती भर भण्डार, आपे हरि वरतांयदा। इक्क इकांती ख़बरदार, आप आपणी दया कमांयदा। मारे झाकी सर्ब संसार, भुल्लया कोए रहिण ना पांयदा। देवे बाकी अपर अपार, देवणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता आप आपणा खेल खिलांयदा। हरि भगवन्त हरि वड्याई, हरि हरि बूझ बुझांयदा। हरि जोत हरि रुशनाई, हरि हरि वेख वखांयदा। हर घर हरि बैठा आसण लाई, हरि हरि संग रलांयदा। हरि हरि हुक्म रिहा चलाई, हरी हरि हरि सेव कमांयदा। हरि हरि बैठा बेपरवाही, हरि हरि अलख जगांयदा। हरि हरि करे सच निआईं, साचा तख्त सुल्तान सुहांयदा। हरि हरि वस्सया थाउँ थाँईं, हरि हरि मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि पुरख सदा निर्भय, एका रूप समाईआ। धाम अवल्ले एका रहे, थिर घर आसण लाईआ। आप उपाए आपे करे खै, आप आपणा मार्ग लाईआ। आपणा भाणा आपे सहे, आपणे भाणे सर्ब चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त इक्क रघुराईआ। इक्क रघुराई इक्क रघुनाथ, एका रूप समांयदा। इक्क रखाए आपणा साथ, एका संग निभांयदा। इक्क चलाए साचा राथ, एका वेख वखांयदा। इक्क उपजाए आपणी गाथ, एका ढोला गांयदा। एका रूप त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै लोकां मेट मिटांयदा। एका लहिण देण चुकाए मस्तक माथ, जोत ललाटी वेख वखांयदा। एका उतारे आपणे घाट, पार किनारा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा कर पसारा आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, हरि शब्द करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, आपणा नाअरा लाईआ। साचे कंडे आपे तोल, तोलणहार आप अख्वाईआ। आपणी शक्ती आपे मौल, फुल फुलवाड़ी आप उगाईआ। आप उपाए धरनी धौल, धरत धवल आप सुहाईआ। आपे करे पूरा आपणा कौल, भुल्ल कदे ना जाईआ। आपे सुन्दर सांवल खेले खेल अनभोल, भगवन जोती नूर रुशनाईआ। राम रामा सदा अडोल, अडोल अडोल अख्वाईआ। आपे लक्ख चुरासी करे घोल, आपे सुत्ता सेज विछाईआ। आपे घट घट पड़दे रिहा फोल, बन्द किवाड़ा आप कराईआ। आपे जुग जुग वजाए आपणा ढोल, डौरू डंका इक्क वजाईआ। आपे कूड़ कुड़यारा कढ्ढे पोल, अन्दर मन्दिर खोज खोजाईआ। आपे होए कला सोल, आपे निर्धन डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, आपे वेख वखांयदा। शब्द

उपाया साचो सच्च, शब्दी बणत रखांयदा। लोआं पुरीआं आपे नच्च, आपणा राग सुणांयदा। आप उपाए काया माटी भाण्डा कच्च, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। आप त्रैगुण अन्दर गया रच, आप आपणा विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस धरांयदा। वेस अनेका हरि निरँकार, जुग जुग आप करांयदा। ब्रह्मा ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म रूप वटांयदा। विष्नूं वंसी इक्क आधार, एका रंग रंगांयदा। अमृत भरया हरि भण्डार, साचा ताल सुहांयदा। शिव शंकर कर इक्क प्यार, भोले नाथ गले लगांयदा। बाशक तशका पाया हार, हथ्थ त्रिसूल फड़ांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, आप आपणा संग निभांयदा। रूप रंग ना कोए संसार, दिस किसे ना आंयदा। दाता सूरा सरबंग हरि सिरजणहार, समरथ पुरख अख्वांयदा। वेद कतेब ना पायण सार, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। राग नाद ना सके उचार, गा गा सीस झुकांयदा। पारब्रह्म अपरम्पर आप बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूरो नूर समांयदा। नूर उजाला अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक उपाया। जगे जोत आदि पुरख निरँजणा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाया। मीत मुरारा साचा सज्जणा, साचा सतिगुर नाउँ रखाया। आदि जुगादी आपणा आपे पर्दा कजना, आपे दए लाया। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भज्जणा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर रहिण ना पाया। आप आपणा सभ ने तजणा, हरि साचे भेव ना राया। एका शब्द हरि हरि आदि जुगादि गज्जणा, ना मरे ना जाया। दरगाह साची ताला कदे ना वज्जणा, घर बैठा बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आपे कर, आप आपणा वेख वखाया। निरगुण धार जोत निरँकारी, हरि हरि आप उपाईआ। आपे करे हित हितकारी, नित नवित्त मेल मिलाईआ। अबिनाशी अचुत्त पहरेदारी, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। ना कोई पंज तत्त दिसे बुत्त, ना कोई काया गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, जुग करता नाउँ रखाईआ। जुग जुग करता हरि करतारा, करनहार अख्वाया। आप आपणा लै अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाया। शब्दी शब्द भर भण्डारा, लोकमात आप धराया। आपे बणे आप वरतारा, आपे रिहा वरताया। जन भगतां कराए वणज वपारा, आत्म अन्तर आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला सरगुण कर, सरगुण साचा लए उपजाया। निरगुण जोती सरगुण धार, हरि साचे आप टिकाईआ। सरगुण मेला हरि करतार, एका रंग रंगाईआ। शब्द विचोला विच संसार, एका एक उपाईआ। वरनां बरनां वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। हरिजन साचे लए उभार, आप आपणे लए उठाईआ। करे कराए ख़बरदार, जुग जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सरगुण मेला हरि अवतारा, गुर गुर आप अख्वांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, अन्दर मन्दिर ताल वजांयदा। अनहद सेवक सेवादारा, साची सेव कमांयदा। जोत निरँजण कर प्यारा, दीपक इक्क रखांयदा। अमृत देवे ठंडी ठारा, सांतक सति वरतांयदा। सतिगुर पूरा हो त्यारा, साचा वेस वटांयदा। हउमे हँगता तोड़ गढ़ हँकारा, माया ममता मोह चुकांयदा। आसा तृष्ना पार किनारा, साचा हिस्सा नाम वंडांयदा। आपणा नेत्र इक्क उग्घाड़ा, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। साचा वेखे धर्म अखाड़ा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, भेव भेद ना राया। आप उठाए साचे सन्ता, सच रूप दरसाया। मेल मिलावा नारी कन्ता, साची सेज सुहाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। मूल चुकाए हउमे हँगता, नीचो नीच अख्वाया। लेखे लाए भुक्खा नंगता, नाम धन्न ख़ज़ाना झोली दए भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणा वेस कर, दर दरवेश भगत दुआर बण भिखारी आप अख्वाया। जगत भिखारी हरि निरँकारा, आपणा रूप वटांयदा। जन भगत मंगे इक्क दुआरा, आपणी अलख जगांयदा। पार कराए दुष्ट दुराचारा, दूर दुराडा नेड़े आंयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, शब्द शब्दी हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मण्डां पावणहारा सारा, जेरज अंडां फोल फोलांयदा। भेख पखण्डा कर ख्वारा, नाम डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल आपे कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता खेलया खेल, हरि साचा चलत चलांयदा। भगतां सन्तां कर कर मेल, लोकमात राह वखांयदा। दर घर साचे चाढ़े तेल, साचा सगन मनांयदा। मेल मिलावा सज्जण सुहेल, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रंग रंगांयदा। जुग जुग रंग रंगणहारा आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां दर दुआरा, मंगणहारा आपणा फेरा आपे पाईआ। ऊँचां नीचां विच ना संगणहारा, ग़रीब निमाणया वेख वखाईआ। चिट्टे अस्व तंग कसणहारा, शाह अस्वारा वड वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैरां हेठ झस्सनहारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां हिरदे अन्दर मन्दिर बहि बहि हस्सण वाला, साचा सगन मनाईआ। तीर निराला कसण वाला, एका चिल्ला नाम उठाईआ। जुग जुग आपणा राह दस्सणहारा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। हर घट हरि हरि वसण वाला, हरि हरि बैठा सर्ब भुलाईआ। दो जहानां दरगाह साची सुनण वाला, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर सतिजुग त्रेता द्वापर आपणे अंक समाईआ। त्रै त्रै जुग अंग समा, अंगीकार अख्वाया। चौथा चौथा मात

धरा, घर चौथे वेख वखाया। कूड़ कुड़यारा नाल रला, लोकमात मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा कर्म कमाया। कलिजुग कूड़ा जगत बलवान, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणा फड़ हथ्थ निशान, चारों कुन्ट फिरांयदा। किसे दर ना दिसे कोए ज्ञान, ध्यानी ध्यान ना कोए जणांयदा। अन्दर मन्दिर ना कोए धुनकान, साचा राग ना कोई सुणांयदा। दिवस रैण पीण खाण, आत्म तृख ना कोए बुझांयदा। नाद संख सर्ब वजायण, आत्म नाद ना कोए वजांयदा। जगत चलाई सर्ब दुकान, नाम धन ना कोए विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, वेसा धारी भेख वटांयदा। भेख वटंता आदि पुरख अबिनाशा, कलिजुग रूप वटाया। नौ सत्त वेखे नौ नौ तमाशा, नौ नौ रंग रंगाया। सति सति करे भोग बिलासा, भव सागर इक्क वखाया। जूठ झूठ भरया कासा, जगत प्याला हथ्थ फड़ाया। गुरमुख विरला रसना नाम जपे स्वास स्वासा, जिस जन आपणी सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम लेखा लिख, हरि साचा रचन रचांयदा। आपे पावणहारा भिख, आपे मूल चुकांयदा। जगत नेत्र ना रिहा दिस, ज्ञान नेत्र बन्द रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत जोत जगांयदा। एका जोत हरि अवल्लड़ी, एका कल वरताईआ। राम रामा वेस हरी, हरि कृष्ना रूप वटाईआ। खेले खेल अपर अपार आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लेख चुकाउणा, हरि साचा सच वरतांयदा। नाम सति सति वरताउणा, सांतक सति जणांयदा। जूठा झूठा भेख मिटाउणा, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। ऊँचां नीचां अंग लगाउणा, एका धाम सुहांयदा। वरन बरन इक्क कराउणा, एका राग सुणांयदा। राजा राणा तख्तों लौहणा, शाह सुल्तान ना कोए अख्वांयदा। मायाधारी ख़ाक मिलाउणा, कलिजुग पूरा तोल तुलांयदा। गऊ ग़रीबां गले लगाउणा, गुर गोबिन्द वेस वटांयदा। नानक तोला इक्क बणाउणा, तेरां तेरां धार चलांयदा। राम रामा हरि नज़री आउँणा, सीता सुरती आप प्रनांयदा। कान्हा कृष्ना नाम वखाउणा, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। साची सखीआं नाच कराउणा, गुरमुख साचे आप नचांयदा। ऐनलहक्क नाअरा लाउँणा, मुकामे हक्क आप समांयदा। सतिगुर नानक निरगुण रूप जोत जगाउणा, जोती जोत डगमगांयदा। शब्द खण्डा हथ्थ उठाउणा, तिक्खी धार रखांयदा। गोबिन्द सूरा नाल रलाउणा, हरि साची बणत बणांयदा। चार यारी वेख वखाउणा, पंचम रंग रंगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठाउणा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। पंडत पांधे भेव खलाउणा, हरि साचा राह तकांयदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर हिलाउणा, एका

हुक्म जणांयदा। साची सिख्या इक्क समझाउणा, सिक्खी सिख्या विच टिकांयदा। दर घर साचा इक्क सुहाउणा, साचा ताल रखांयदा। शाह सुल्ताना मेल मिलाउणा, राज राजानां वेस वटांयदा। चार वरन अठारां बरनां एका धाम बहाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। प्रभ का हुक्म ना किसे मिटाउणा, लिखणहारा आप अख्वांयदा। शब्द डंका इक्क वजाउणा, एका राग अलांयदा। बीस बीसा हरि अख्वाउँणा, जगत जगदीसा नाउँ धरांयदा। बंस बंसा लेखे लाउँणा, आप आपणा वेख वखांयदा। इक्क इकीसा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। शब्द हदीसा इक्क पढ़ाउणा, एका आयत बणांयदा। वेद कतेबा रंग रंगाउणा, शास्त्र सिमरत फोल फुलांयदा। सभ तों बाहर आप अख्वाउँणा, दिस किसे ना आंयदा। अकाल मूर्त नज़री आउँणा, आप आपणा रूप वटांयदा। जूनी रहित खेल खिलाउँणा, खेलणहार भेव ना पांयदा। नाम सति सति वरताउणा, साची वस्त इक्क वखांयदा। कक्खो कक्ख हरि लक्ख बणाउणा, करौड़ी ख़ाक मिलांयदा। जोगी जतीए हठीए तपीए वेख वखाउणा, वेखणहारा आप हो जांयदा। गंगा गोदावरी अठसठ तीर्थ जल जल धार आपणे विच टिकाउँणा, सर सरोवर आप अख्वांयदा। तिलक राज जोग हरि साचे इक्क बणाउणा, एका हुक्म सुणांयदा। सत्त रंग निशाना आप चढ़ाउँणा, राष्ट्रपति सेवा लांयदा। भरम भुलेखा सर्ब कढाउणा, सम्मत सम्मती आप चलांयदा। हरिजन साचे मेल मिलाउँणा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई वंड वंडांयदा। जो जन रसना हरि हरि रहे गाई, हरि लेखा आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचा वेख वखाईआ। आप उतारे अन्त किनार, एका घर सुहाईआ। सतिजुग साचा कर त्यार, लोकमात करे कुड़माईआ। देवे वस्त इक्क अपार, सच भण्डार शब्द भराईआ। सो पुरख निरँजण आप करतार, कादर करता आप अख्वाईआ। हँ ब्रह्म इक्क विचार, एका रूप रखाईआ। ओअँ सोहँ सोइम रूप निराकार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, सति पुरख वड्डी वड्याईआ।

✪ २६ माघ २०१५ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर दया होई बटाला ज़िला गुरदासपुर ✪

ख़ुदाई नूर अला, नूर इलाहीआ। बेऐब परवरदिगार ख़ुदा, सिफ्त सालाहीआ। पारब्रह्म नूर रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। पुरख अकाल एका नाँ, एका रूप समाईआ। आदि जुगादी वसण एका थाँ, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। साचे घर सच न्याँ, कादर करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर आप समाईआ। नूर अलाही

बेऐब परवरदिगार, पारब्रह्म अख्वाया। एका वसे धाम न्यार, दरगाह साची डेरा लाया। रूप रंग अपर अपार, आप आपणा वेख वखाया। ना कोई दूसर होर आकार, निराकार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगाया। नूरो नूर हरि निरँकार, एका एक अख्वाईआ। एका शब्द इक्क धुन्कार, एका रिहा सुणाईआ। एका हुक्म अपर अपार, आप आपणा आप उपाईआ। सखा सखाई साचा यार, साची वस्त इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक एक वड्याईआ। इक्क अकल्ला हरि ख़ुदा, ख़ुदी विच कदे ना आंयदा। इक्क लगाए आपणी सदा, इक्क अवाज़ सुणांयदा। आदि जुगादि ना होए जुदा, हरि अंग अंग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर नूर डगमगांयदा। नूरो नूर हरि निरँकार, निरगुण आप अख्वाया। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेख वखाया। आपे नाम सच्ची धुन जैकार, आपे नाअरा लाया। आपे मुकामे हक्क मीत मुरार, सचखण्ड दुआर आप सुहाया। हक्क हकीकत आपे पावे सार, दर घर आपे वेख वखाया। लाशरीक मीत मुरार, पुरख करतार आप अख्वाया। एका जाणे आपणी कार, एका वेख वखाया। एका रूप अगम्म अपार, भेव कोए ना आया। रवि ससि कर उज्यार, आप आपणा विच टिकाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, साची गणत गणाया। चौदां तबकां कर उज्यार, आप आपणा बंधन पाया। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। नूरो नूर हरि रहिमान, एका एक अख्वांयदा। वसणहारा ज़मीन अस्मान, आप आपणा खेल खिलांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा शब्द सुणांयदा। आपे होए जाणी जाण, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। आपे वेद पुराणी पावे आण, अञ्जील कुराना आप लिखांयदा। खाणी बाणी हो प्रधान, आप आपणा हुक्म चलांयदा। शरअ शरीअत इक्क वखान, एका कर्म कमांयदा। इक्क हदीस एका आण, कलमा इक्क पढ़ांयदा। इक्क रहीम एका राम, एका कृष्न वेस वटांयदा। एका नानक कर परवान, गोबिन्द संग निभांयदा। ऐथे उथे इक्क मकान, एका नूर वखांयदा। एका चिल्ला इक्क कमान, एका तीर उठांयदा। एका धर्म इक्क निशान, एका मार्ग लांयदा। जुग जुग खेले खेल महान, आप आपणा नाउँ रखांयदा। ईसा मूसा हो प्रधान, आप आपणा वेख वखांयदा। संग मुहम्मद एका जाण, एका अंग लगांयदा। चार यारी कर प्रधान, साचा मेल मिलांयदा। बीस बीसा इक्क विधान, आपणा आप बंधांयदा। जानणहारा गीता ज्ञान, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, नूरो नूर डगमगांयदा। नूर नुरानी सच्चा शाह, एका एकउँकारया। एका ख़ुदा बण मलाह, वेखे सर्ब संसारया। एका राम रिहा समा, दूसर दिस कोए ना आ रिहा। घट घट दीवा आप जगा, आपे वेख वखा रिहा। काया काअबा आप बणा, सच रबाबा आप वजा

रिहा। पुन्न सुआबा आप जणा, आपे वेख वखा रिहा। नूर अलाही सच नवाबा मेल मिला, घर साचा वेख वखा रिहा। दो दो आबा एका थाँ, एका दर सुहा रिहा। आब हयाता मुख चुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महबूब आप अख्वा रिहा। साची सिफ्त सच सलाह, हरि साचा आप वखाईआ। आप आपणा नाम उपा, आपे रिहा जपाईआ। आपे वसे थाँ थाँ, आपे दर दर अलख जगाईआ। गुर पीर अवतार आप अख्वा, साध सन्त करे रुशनाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर आपे लेखे ला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। दर दरवेशा फेरी पा, दर दरबान आप हो जाईआ। कायनात बणत बणा, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका रूप दए दरसा, एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समाईआ। एका अमामा एका दूजा, एका हाजी हज्ज गुज़ारया। ना कोई दीसे होर दूजा, नूरो नूर आप अख्वा रिहा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव लाए पूजा, इष्ट देव आप अख्वा रिहा। आपे भेव खुल्हाए गूझा, नबी रसूल आप उपा रिहा। आपणा दर आपे बूझा, आपे वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर अलाही बेपरवाही आपणी कलाम आप सुणा रिहा। इक्क कलाम इक्क अमाम, हरि ख़ुदा उपांयदा। आप प्याए आपणा जाम, आपणे संग रखांयदा। आपे जाणे आपणा काम, जगत दमामा आप वजांयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई ताम, अग्नी अग्ग ना कोए जलांयदा। ना कोई सुबह ना कोई शाम, रैण अन्धेर ना कोए वखांयदा। ना कोई सूरज ना कोई भान, चन्द सितार ना कोए लटकांयदा। ना कोई नगर ना ग्राम, चार दीवार ना रचन रचांयदा। इक्क अकल्ला एका एक आपे जाणे आपणा काम, करता कारन आप अख्वांयदा। राम रहिमाना इक्क निशाना, हरि हरि आप रखांयदा। हाज़र हज़ूर मेहरवाना, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे चोटी चढ़ कोहतूर सुणाए तराना, जल्वा जलाली आप अख्वांयदा। आप वजाए सच शादिआना, आप आपणी बांग सुणांयदा। आपे सजदा करे बण निमाणा, आपे नेत्र नैण बंक वखांयदा। आपे हथ्थ रक्खे काना, आप आपणी धुन वजांयदा। आपे मक्का काअबा हो प्रधाना, आपणा नूर दरसांयदा। आपे शाहो भूप सुल्ताना, राज जोग आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एका एक एक हो जांयदा। आदि जुगादी इक्क अकल्ला, एक एक अख्वाईआ। दरगाह साची बैठा सच महल्ला, थिर घर साचे आसण लाईआ। वसणहारा जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूँढी कन्दर फेरा पाईआ। आपणे दीपक आपे बला, आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपणी मेटे आपे सला, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा नूर धर, नूरो नूर डगमगाईआ। नूरो नूर जल्वा जलाल, जागरत जोत जगांयदा। वेखणहारा हक्क हलाल, हक्क हकीकत फोल फोलांयदा। शरअ शरीअत इक्क

२१८
०८

कमाल, लाशरीक आप अख्वांयदा। सच तौफीक इक्क ख़ुदा, नबी रसूला आप उपांयदा। सच सुनेहड़ा दए सुणा, इक्क अवाज़ लगांयदा। आपणा मार्ग आपे दए वखा, साचा राह चलांयदा। साची सिख्या इक्क समझा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। राज़क रहीम बेपरवाह, घट घट रिज़क पुचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि दस्तगीर आप हो आंयदा। पीर दस्तगीर शाह हकीर, आपे आप अख्वाईआ। आपे दाता गुणी गंहीर, गहर गम्भीर आप सहाईआ। आपे देवे अमृत नीर, आबे हयात आप प्याईआ। आपे दूई पर्दा देवे चीर, आपे एका एक वखाईआ। आपे ऐली अल्ला होए फकीर, अल्ला रूप आप दरसाईआ। आपे बन्ने जगत छल्ला, दर दर फिरे अलख जगाईआ। आपणी जोती आपे रल्ला, नूर नूर विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। वेखणहारा एका अंग, एकर्मएक अख्वांयदा। सदा सुहेला साचा संग, आप आपणा संग निभांयदा। सच सिंघासण बैठ पलँघ, दरगाह साची धाम सुहांयदा। सृष्ट सबाई रही मंग, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आपे आपणा आपे कस तंग, चिट्टा अस्व आपणा आप दौड़ांयदा। आपे लोक परलोक वंडे वंड, त्रै लोक वेख वखांयदा। आपे दोज़ख़ बहिश्त देवे वंड, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे टुट्टी लए गंढ, जो रसना कलमा अमाम सुणांयदा। मेटणहारा भेख पाखण्ड, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। साचा खण्डा चण्ड प्रचण्ड, एका नाम हथ्थ उठांयदा। गढ़ हँकारी देवे भन्न, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम तेरा भेस, हरि साचा वेख वखांयदा। राज राजान शाह सुल्तान ना कोए दिसे नर नरेश, सच सुच्च ना कोए वरतांयदा। सृष्ट सबाई माया ममता भेख, साची रेख ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल आप वरता, आपणी खेल खिलाईआ। ईसा मूसा आप अख्वा, आपणी पट्टी आप पढ़ाईआ। कुरान हदीसा आप लिखा, आपे लेखा रिहा चुकाईआ। तीस बतीसा आपे गा, आपे सिफ्त सलाहीआ। आपे बणे जगत मलाह, जगत नौका आप चलाईआ। चौदां चौदां वेख वखा, चौदां चौदा फेरा पाईआ। इक्को नूर नूर ख़ुदा, आपणा नूर करे रुशनाईआ। दीन इस्लाम आप बणा, दीना नाथ वेख वखाईआ। अमाम मैंहदी नाम धरा, इक्क इमाम आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। अहिमद मदि आप प्या, एका रंग रंगाया। घर घर सदा दए सुणा, धुर दरगाही दाता वेख वखाया। हरि का बद्धा ना सके कोई छुडा, कादर कुदरत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सूरत इक्क वखाया। साची सूरत सच धार, हरि साच आप उपांयदा। निरगुण रूप अपर अपार,

निरगुण वेख वखांयदा। सतिगुर साचा हो उज्यार, दर घर साचा वेख वखांयदा। नबी रसूलां इक्क प्यार, एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा लेख धर धर भेख, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई साचा मौला, मौला रूप आप अख्वांयदा। धरे जोत उप्पर धवला, धरत धवल सुहांयदा। आपे होए कान्हा कृष्ना कला सोला, राम नाम आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपांयदा। राम कृष्न हरि अवतारा, ईसा मूसा जोत जगाईआ। मेल मिलावा मुहम्मदी यारा, चार यारी संग निभाईआ। चौदां सदीआं चौदां लोक चौदां हट्ट चोदां तबक खोल्ह् किवाड़ा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका कलमा कर उज्यारा, एका रिहा सुणाईआ। पूजा बुत्त ना कोई जगत दुआरा, मेल मिलावा सच ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपे वेखे वेखणहार, दूसर दिस किसे ना आईआ। नानक गोबिन्द आपे धार, आपणी चलत चलांयदा। आपे पावणहारा सार, जुग जुग नाउँ उपांयदा। आपे खाणी बाणी हो उज्यार, आपणा लेखा आप गणांयदा। आपे शब्द शब्दी पावे सार, शब्द शब्दी रचन रचांयदा। आपे गुरू गुरू करतार, गुर करता राम अख्वांयदा। आपे राम राम रूप अवतार, लंका गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे कान्हा कृष्ना होए ख़बरदार, दूती दुष्ट मेट मिटांयदा। आपे कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। पंज तत्त ना कोई आकार, मानस मानुख नज़र ना आंयदा। रूह बुत्त ना कोई प्यार, साचा सुत्त शब्द अख्वांयदा। सृष्ट सबाई हाहाकार, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना कोई प्यार, एका रंग ना कोए सुहांयदा। कूड़ी क्रिया कर पसार, कूड़ कुड़यारा वेख वखांयदा। भरया जोबन काम क्रोध लोभ मोह हँकार, चारों कुन्ट डंक वजांयदा। वरनां बरनां हाहाकार, हरि का रूप दिस ना आंयदा। मुस्लिम सुन्नी ना कोए प्यार, सिक्ख सिँघ ना मेल मिलांयदा। हिन्दू ईसाई ना सुणन गुफ्तार, घर घर आपणा मता पकांयदा। मनमति दुहागण होई नार, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। पंडत पांधे रहे पुकार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक कोई ना बन्न्हे धार, शरअ शरीअत इक्क जणाईआ। ग्रन्थी पन्थी हाहाकार, आप आपणा बल वखाईआ। हरि का भेव ना पाए संसार, सर्ब जीआं दा दाता इक्क अख्वाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, ख़ुदी ख़ुदा मूल ना भाईआ। अन्तिम प्रगट होवे बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर आप अख्वाईआ । कायनात देवे इक्क आधार, एका कलमा आप पढ़ाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका ढोला दए सुणाईआ। एका दर इक्क दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी आप अख्वाईआ। ऊँच नीच ना कोई राज राजान, शाह सुल्तान एका धाम बहाईआ। चार वरन अठारां

बरन इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। जूठ झूठ सर्ब शरमान, लोकमात रहिण ना पाईआ। कूड़ कुड़यारी मेटे दुकान, सच वस्त इक्क रखाईआ। आपे होए मेहरवान, मेहरवान आप अख्वाईआ। आत्म ब्रह्म पाए झोली दान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख दर, नूर इलाही करे रुशनाईआ। नूर इलाही हरि महिवान, मेहरवान अख्वाया। बी ख़ैर या अल्ला इक्क ज्ञान, एका दए सुणाया। एका बख्शे हरि ध्यान, दूजे भउ चुकाया। तीजे नेत्र हो प्रधान, एका रूप दरसाया। चौथा पद हरि भगवान, आप आपणा वेख वखाया। पंचम मेला दो जहान, छेवें छप्पर छन्न ना कोए जणाया। सत्त ज़िमी सत्त अस्मान, चौदां तबकां सति पुरख आप समाया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त हरि गुण निधान, अट्ठां तत्तां गुण ना गाया। नौ दर वेखे जगत दुकान, जगत तृष्ना विच फसाया। काया अन्दर सच मकान, घर घर विच आप टिकाया। आपे बैठा सद निगहबान, साजण मीत आप अख्वाया। दए प्याला नाम निधान, अमृत जाम मुख चवाया। हँस काग सर्ब बण जाण, सर सरोवर जो जन नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर हाज़र हज़ूर ज़ाहर ज़हूर आप अख्वाया। हाज़र हज़ूरा सर्ब कल भरपूरा, एका नाम रखाया। आपे वस्सया नेड़े दूरा, दूर नेड़ आप जणाया। आपे होए चरन धूढ़ा, ख़ाकी ख़ाक आप रमाया। आपे होए मूर्ख मूढ़ा, ज्ञान ध्यान आप दृढ़ाया। आपे नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सच ज्ञान आप अख्वाया। आपे होए सति सरूरा, नाम जाम मुख लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल कर, आप आपणा खेल खिलाया। हरि हरि नूर निहकलंक, एका एक अख्वाईआ। शब्दी शब्द वज्जे डंक, घर साचे आप लगाईआ। सृष्ट सबाई कढ्ढे शंक, जगत संसा मूल चुकाईआ। नौ खण्ड बणाए एका बंक, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धाम बहाईआ। एका अक्ख हो प्रतक्ख वेखे राउ रंक, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, लोकमात एका एक करे पढ़ाईआ। एका एक अमाम मैहन्दी, हरि हरि आप अख्वांयदा। आपे वेखे दिशा लहिंदी, चारे दिशा फोल फोलांयदा। शरअ शरीअत साची कहिंदी, लाशरीक इक्क अख्वांयदा। उम्मत रसूल भाणा रसूल सहिंदी, रसूलल्ला वेख वखांयदा। बिस्मिल हो के कोई बैहन्दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर आप आपणा घर सुहांयदा। राम राम राम अवतारा, घर घर रहे गाईआ। घर घर रसना रसन जैकारा, घर घर वज्जे वधाईआ। घर घर मेला मीत मुरारा, घर घर वेख वखाईआ। कलिजुग ढाए झूठा बुरज मुनारा, वेला अन्तिम आईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, ब्रह्मण्डां फोल फोलाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, आपणे हत्थ रिहा चमकाईआ। मेटणहारा कूड़ पसारा, एका एक अख्वाईआ। निहकलंक

नरायण नर अवतारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, आपणी गणत गणांयदा। कलिजुग अन्तिम होए धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा। मस्सया रैण अन्धेरी भारी, साचा संग ना कोए निभांयदा। वेद पुराणा कोए ना पाए सारी, घर घर आपणी अलख जगांयदा। पंडत पांधे गए हारी, हरि का रूप दिस ना आंयदा। माया ममता भर भण्डारी, माया जाल वछांयदा। धीआं भैणां करन वपारी, कुँवार कन्या सति ना कोए वखांयदा। वेखणहारा हरि निरँकारी, जुग जुग वेख वखांयदा। अन्तिम प्रगट होवे वड बलकारी, आपणा बल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटांयदा। आपे ईसा मूसा सच लिखारा, साचा लेख लिखाया। बीस बीसा होए अन्ध अँध्यारा, दिस कोए ना पाया। चौदां चौदां हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराया। सृष्ट सबाई होए ख्वारा, मेली मेल ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। नानक गुर सच सिक्दार, आपणा भेव खुल्हांयदा। सति नाम कर प्यार, सृष्ट सबाई आप वरतांयदा। चार वरनां इक्क अधार, एका बूझ बुझांयदा। इक्क सुहाए बंक दुआर, एका घर वखांयदा। मक्का काअबा कर उज्यार, आप आपणी फेरी पांयदा। हेठ मसल्ला नमाज़ गुज़ार, साचा सजदा आप वखांयदा। हक्क मुकाम साचा यार, घर साचे मेल मिलांयदा। उच्च महिराबे कर प्यार, आप आपणा मुख सलांहयदा। एका मेला परवरदिगार, बेपरवाह विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक निरगुण नाउँ रखांयदा। निरगुण नानक शब्द डंका, आपणा आप सुणाया। आप उठाए राउ रंका, ग़रीब निमाणया गले लगाया। गुरमुख मेला जिउँ जन जनका, जन जननी ल्ए तराया। जोती शब्दी एका तनका, एका राह चलाया। पारब्रह्म प्रभ वेस वटाए वार अनका, अकल कला अख्वाया। आपे फेरनहारा मन का मनका, मन ममता दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। नानक निरगुण शब्द जैकारा, एका एक सुणांयदा। हिन्दू मुस्लिम इक्क प्यारा, एका मेल मिलांयदा। साचा घर सचा दुआरा, दर साचा वेख वखांयदा। निउँ निउँ चले विच संसारा, हँकारीआं हँकार गवांयदा। अन्तिम बणया लेख लिखारा, आपणा लेख लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम होए धूंआँधारा, धुदूंकार ना कोए मिटांयदा। मात पित ना कोए प्यारा, पिता पूत ना संग रखांयदा। नारी कन्त ना कोए आधारा, ज़ोरु ज़र सर्ब कुरलांयदा। चारों कुन्ट झूठी धाड़ा, साचा दर ना कोए वखांयदा। प्रगट होए हरि निरँकारा, आप आपणा वेस वटांयदा। निहकलंका डंक अपारा, शब्दी शब्द वजांयदा। सृष्ट सबाई बन्ने धारा, साचा मार्ग लांयदा। सच सुच्च करे वरतारा, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती वेस कर, घर साचे मेल मिलांयदा।

दसवां घर दसवीं जोत, हरि साचे आप जगाईआ। लहिणा देण चुकाया वरन गोत, एका अमृत जाम प्याईआ। सच नगारे लाई चोट, नाम धौंसा इक्क वजाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, साची करे सति पढ़ाईआ। माया ममता कोई ना भरे पोट, आपणी सरसे गया रुढ़ाईआ। अकाल पुरख हरि एका ओट, दूजी सरन ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखाईआ। गोबिन्द गुर जगत मलाह, एका फेरा पाया। चार वरनां देवे सच सलाह, ऊँचां नीचां मेल मिलाया। हिन्दू मुस्लिम कोई जाणे ना, सिक्ख ईसाई ना भेव धराया। मज़्ब शरअ ना बंधन दित्ता पा, हउमे गढ़ ना कोए उपाया। ज़ोर ज़ुल्म हटाउणा खण्डा हथ्थ फड़ा, दे मति समझाया। सभ दी रच्छया करनी गया सिखा, साचा रच्छक आप आया। कलिजुग अन्तिम सिख्या दए भुला, दर घर साचा सच कर पाया। गुर गोबिन्द लेखा रिहा लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे बेपरवाह, निहकलंका नाउँ रखाया। अमाम मैहन्दी आप अख्वा, इक्क अमाम बणाया। अहिमद रूप नूर ख़ुदा, नूरो नूर डगमगाया। शब्द सजदा इक्क वखा, साख्यात रूप दसाया। आपणी आयत इक्क सुणा, इक्क सदा लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आपे धर, आप आपणा खेल कराया। कलिजुग कूड़ा कूड़ मिटाउणा, हरि साचे सच वड्याईआ। ख़लक ख़ुदाई मेल मिलाउणा, ख़ालक ख़लक आप अख्वाईआ। राज़क रहीम रहम कमाउणा, हरि रहिमत वड शरनाईआ। अज़मतो कस्मतो अजिबवा अतिलहे आप आपणा संग रखाउणा, सगला संग निभाईआ। इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील सेव कमाउणा, साची सेव कमाईआ। मढ़ी गौर वेख वखाउणा, सोए आप उठाईआ। आबे हयात प्याला इक्क प्याउणा, हथ्थ फड़े सच सुराहीआ। अल्ला हू अल्ला हू अन्ना हू नाअरा लाउणा, आप आपणी अलख जगाईआ। राम रूप प्रतक्ख वखाउणा, धनुश बाण हथ्थ उठाईआ। कान्हा कृष्ना वेस वटाउणा, रथ रथवाही रथ चलाईआ। यसू मसीह वेख वखाउणा, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। सच मुहम्मद संग निभाउणा, साची दए सलाहीआ। नानक निरगुण मेल मिलाउणा, गुर गोबिन्द वज्जे वधाईआ। पिछला लहिणा मूल चुकाउणा, हरि साचा भेव ना गाईआ। अग्गे एका मार्ग लाउणा, एका राह वखाईआ। साचा नाम आप सुनाउणा, सो पुरख निरजंण वड वड्याईआ। अमल अमाम इक्क वखाउणा, आपे कार कराईआ। मौला मौला मौलया नज़री आउणा, दूसर दूई द्वैत रहे ना राईआ। वरन बरन नाता भैण भाई बणाउणा, ख़ुदावंद करीम इक्क सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे वस्सया घर, सृष्ट सबाई देवणहारा वर, जुग जुग रक्खे सिर हथ्थ समरथ वड वड्याईआ। सांझा कलमा सांझी धार, सांझी वाल चलांयदा। सांझा सज्जण सांझा मीत मुरार, सांझा हुक्म सुणांयदा। सांझा करे ख़बरदार,

सांझा सांझी वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा लेखा आपे लिख लिख, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। सांझा कलमा सच ज़बान, हरि साचा आप लिखाईआ। साची शरअ सच अमाम, शरीअत सच जणाईआ। साचा रूप श्री भगवान, एका एक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कलमा आपे कलपत रिहा कराईआ। कलमा सो जो हरि हरि भाए, हरि साचा आप उपांयदा। हँ ब्रह्म इक्क अख्वाए, एका रूप दरसांयदा। महाराज ताज सीस टिकाए, नबी रसूल आप हो जांयदा। शेर शेर विच संसार नज़री आए, सिँघ सिँघ भेख वटांयदा। विष्नूं आकार इक्क जणाए, सृष्ट सबाई रिज़क सबांयदा। भगवन जोत जोत डगमगाए, वरन गोत ना कोए रखांयदा। जन्म मरन दे विच ना आए, मात गर्भ ना आसण लांयदा। मात पिता ना कोई गोद उठाए, भैण भाई ना मेल मिलांयदा। खाण पीण ना कोए रखाए, जगत तृष्ना विच ना आंयदा। सच सदा इक्क ख़ुदा आप अल्ह़ाए, सो कलमा नबी अख्वांयदा। बीस बीसा कर रुशनाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नां रखांयदा। सृष्ट सबाई एका बोल, एका दए कराईआ। पहलों पाए जगत घोल, चारों कुन्ट होए लड़ाईआ। कौमां मज़्ह़बां दीन इस्लामा वज्जे ढोल, नौ खण्ड खेल खिलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां उच्चे मन्दिर लए फोल, तख्त ताज रहिण ना पाईआ। अन्तिम दीनां मज़्ह़बां कढ्डे पोल, आप आपणा रूप प्रगटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द राम कृष्न ब्रह्मा पूरे करे कौल, कीता कौल आप निभाईआ। एका मार्ग धरे उप्पर धौल, एका करे पढ़ाईआ। जीव जन्त जैकारा एका लैण बोल, एका विद्या दए सिखाईआ। ख़ुदावंद करीम हरि निरँकार राम रूप खेल अपार एका कंडे तोले तोल, तोलणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगला लेखा आपणे रक्खे हथ्थ, समरथ वेख वखाईआ।

✪ पहली फग्गण २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

हरिजन हरि हरि पाया, सतिगुर पुरख अपार। गुर सतिगुर मेल मिलाया, आप आपणी किरपा धार। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, काया काअबा कर विचार। निरगुण जोत करे रुशनाया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। अमृत आत्म ताल सुहाया, देवणहारा ठंडी ठार। बजर कपाटी कुण्डा लाहया, दूई द्वैती दए उतार। शरअ शरीअत इक्क वखाया, नाम नामा कर प्यार। अनहद साचा ताल वजाया, धुनी तार अगम्म अपार। पंचम सखीआं मंगल गाया, आप सुहाया सच्चा घर बार। ताल अनादी इक्क वजाया, दिस ना आए विच संसार। नेत्र लोचण इक्क खुल्ह़ाया, आप आपणा कर उज्यार। जोत निरँजण

सेव कमाया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। बंक दुआरे बन्द रखाया, मेट मिटाए पंचम धाड़। काम क्रोध ना नेड़े आया, तृष्ना तृखा देवे मार। पार कराए सुखमन नाड़ी डूँघी गार। त्रै त्रै आपणा वेस वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन हरि हरि पुरख मेला, हरि साचा मेल मिलांयदा। दो जहानां सज्जण सुहेला, एका राह वखांयदा। अबिनाशी करता इक्क अकेला, एकउँकारा नाउँ रखांयदा। आदि जुगादी जुग जुग जाणे आपणा वेला, नित नवित्त खेल खिलांयदा। जन भगतां चाढ़े साचा तेला, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन हरि हरि पाया, मिल्या पुरख करतार। हउमे रोग गंवाया, टुट्टा गढ़ हँकार। काया खेड़ा कूड़ तजाया, सच सुच्च भरे भण्डार। एका मन्त्र नाम वखाया, रसना जेहवा इक्क आधार। पवण स्वासी आप वसाया, आप चलाए आपणी धार। रंग महल्ल आप उपाया, घर घर विच कर उज्यार। दीवा बाती इक्क टिकाया, आपे जाणे आपणी कार। कमलापाती वेख वखाया, कमल नैण नैण मुँधार। आत्म ताकी आप खुल्लाया, आपे बन्द किवाड़। आपणी छाती आपे लाया, घर साचे करे प्यार। हरिजन अमृत बूंद स्वांती आप प्याया, निझर बरखे ठंडी ठार। कागों हँस बणाया, सच सरोवर देवे तार। सुरती शब्दी मेल मिलाया, आत्म ब्रह्म विचार। आत्म सेजा सच सुहाया, घर मेला मीत मुरार। इक्क अतीता नज़री आया, पतित पुनीता आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन हरि हरि मीतड़ा, परम पुरख सुल्तान। काया चोली रंगे चीथड़ा, एका देवे शब्द ज्ञान। इक्क वखाए साचा गुरुदुआर मन्दिर मसीतड़ा, घर मेल श्री भगवान। जुग जुग आपे जाणे आपणी रीतड़ा, वेद कतेब भेव ना पाण। भगतन मीता भगती बीठला, मेल मिलावा दो जहान। आदि जुगादी ठंडा सीतला, सति सरूप सति निशान। एका रंग रंगाए हस्त कीटला, ऊँचो ऊँच नीचां नीच आप मेहरवान। जन भगतां वस्सया चीतला, दिवस रैण इक्क ध्यान। आपे पतित आप पुनीतला, पतित पावन रूप महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क प्रधान। हरिजन हरि हरि पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। हरि लिखणहारा लेखया, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़। आपे फिरे देस परदेस्सया, लोआं पुरीआं इक्क अखाड़। शाहो भूप वड नर नरेशया, धुर दरगाही साचा लाड़। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेषया, करे कराए सच्ची सिक्दार। शिव शंकर सच अदेस्सया, आप आपणे करे जैकार। सच सिँघासण आपे बैठया, थिर घर बैठ सच दरबार। पारब्रह्म दो जहानां खेवट खेटयां, आप उठाए सगला भार। हरिजन शब्द दोसाल लपेटयां, आप आपणी किरपा धार। मात पित आपे होए आपे चुक्के आपणे बेटयां, आपे चले

नाल नाल। वेखणहारा काया खेतया, पंज तत्त रूप वसाल। आपे होए सति चेतया, चेतन रूप दीन दयाल। आपे दिसे नेतन नेतया, आपे वेखे काल महांकाल। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि साचे आपे वेख्या, आप आपणे लए भाल। आपे वसे सौहरे पेकया, नारी कन्ता रूप कमाल। ना कोई जाणे धारी केस्सया, मूंड मुंडाए लए संभाल। जिस जन हरि हरि चेतया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, एका नाम सच्चा धन माल। साची वस्त हरि धन माल, हरिजन झोली पाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। सन्त सुहेले आपे भाल, आप आपणा दरस वखाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द गुर बणाए सच दलाल, पुरख अकाल वेख वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर धर्म सच्ची धर्मसाल, घर बैठा बेपरवाहीआ। सर सरोवर इक्क उछाल, लाल अनमुल्ले बाहर कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, हरि सज्जण मेल मिलाईआ। सज्जण हरि अनडिठड़ा, रूप रंग ना रेख। घट घट सुत्ता दे कर पीठड़ा, ना सके कोई वेख। शब्द गुर गहर गम्भीर गुणी गहिंदड़ा बख्शिंदड़ा, आपे लिखणहारा लेख। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल कर, आपे करे बुध बिबेक। बुध बिबेक आत्म जाती, हरि हरि आप कराईआ। दिवस रैण पुच्छे वाती, सञ्झ सवेर ना कोए रखाईआ। दरस वखाए इक्क अकांती, इक्क अकल्ला वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग देवणहारा बाकी, आप आपणा वेस वटाईआ। अमृत जाम प्याए बण बण साकी, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। गुर का शब्द भविख्त वाकी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द घोड़े हरिजन चढ़े मार पलाकी, लोआं पुरीआं पार कराईआ। भेव ना जाणे बन्दा ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक रिहा उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला उच्च महल्ल, हरि साचा आप करांयदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुख विरले बूटे लाए फल, सिम्मल रुख सर्ब हलांयदा। खेले खेल जल थल, मईअल आप समांयदा। आपणी जोती आपे गया बल, दीपक ज्ञान इक्क जगांयदा। आपणे शब्द आपे गया रल, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। आपणी मेटे आपे सल, आपणी सिख्या आप सुणांयदा। आपणा चलाए आपे हल, आपणा बीज आप बजांयदा। आपणी वड़या आपे झल्ल, आर पार ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, साचा घर इक्क सुहांयदा। साचा घर उच्च मुनारा, हरि साचे आप उपाया। निरगुण जोती कर उज्यारा, बैठा आसण लाया। आदि निरँजण खेल अपारा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाया। आदि शक्ति कन्त भतारा, साचा

संग रखाया। दीवा बाती इक्क उज्यारा, कमलापाती आप कराया। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, एका रिहा सुणाया। सच सिँघासण हरि निरँकारा, थिर घर बैठा आसण लाया। लोआं पुरीआं मारे मारा, चौदां लोकां वेख वखाया। त्रिलोकी नंदन आपे जाणे आपणी कारा, जगत बंधन तोड़ तुड़ाया। गुरमुख मेला परमानंदन, परमानंद आप समाया। हरिजन वेखे चन्द चन्दन, रैण अन्धेरा मेट मिटाया। सर्ब जीआं आपे बख्शंदन, भवसागर पार कराया। वड दाता दानी गुणी गहिंदन, गुर सतिगुर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क वखाया। सच घर दर दरबारा, इक्क अलख जगांयदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, अगाध बोध उपांयदा। नाद अनादी धुन जैकारा, शब्द ब्रह्मादी आप अलांयदा। विस्मादी विस्माद खेल न्यारा, भेव कोए ना पांयदा। मेल मिलावा सन्तन साधी, सन्त साध वेख वखांयदा। जो जन रसना रहे अराधी, घर घर फेरी पांयदा। मेल मिलावा मोहण माधव माधी, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप हो आंयदा। आपे जाण बाण धुरां दी, धुर दाता भेख वटांयदा। वेखणहारा , आप आपणी अक्ख खुल्हांयदा। जुग जुग देवणहारा दादी, साची वस्त आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, कन्त कन्तूहल आप अख्वांयदा। कन्त कन्तूहल नर नरायण, एका एकउँकारया। हरिजन चुकाए लहिण देण, पार कराए जगत कनारया। दरस वखाए एका नैण, लोचण नेत्र आप खुल्हा रिहा। सखा सखाई मात पित भाई भैण, साक सज्जण सगला संग निभा रिहा। लाड़ी मौत ना खाए डाइन, वेला अन्तिम आपणे हथ्थ रखा रिहा। चित्रगुप्त ना हिसाब कताब जन भगतां अन्तिम आए लैण, जिउँ बालक माता गोद उठा रिहा। धाम अवल्ले साचे बहिण, सचखण्ड दुआरा आप उपा ल्या। जोती जोत सर्ब रल जाण, जोती उपजे जोती बिनसे जोती विच टिका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल दर, दर घर साचा आप सुहा ल्या। हरिजन मिल्या हरि सज्जण शाह, एका दूजा भउ निवारया। जोती जोत गए समा, दिस ना आए विच संसारया। लक्ख चुरासी गेड़ चुका, आपणे अंग लगा ल्या। दरगाह साची खुल्हा वेहड़ा आप रखा, सन्त सुहेले फुल फुलवाड़ी आप लगा रिहा। जुग जुग बेड़ा रिहा चला, लोकमात फेरा पा ल्या। हरिजन हरि सन्त काया खेड़ा दए वसा, जिस जन आपणा शब्द सुणा ल्या। जगत विद्या दए भुला, आत्म विद्या मेल मिला ल्या। हँगता गढ़ दए तुड़ा, हँ ब्रह्म इक्क अख्वा ल्या। सो पुरख निरँजण दया कमा, सोहँ रूप आप वटा ल्या। राम रामा नज़री आ, कृष्ना कृष्न वखा ल्या। नूर अलाही नूर रुशना, पंज तत्त ना कोए मना ल्या। नानक गोबिन्द दरस वखा, निरगुण आपणे विच समा ल्या। भगत भगवन्त लोकमात धरा, जुग जुग आपणा नाम दृढ़ा ल्या। सन्त

सुहेले वेख वखा, साचा मार्ग इक्क रखा ल्या। जोती जोत जोत टिका, गुर सतिगुर वेस वटा ल्या। वरन गोत ना कोई रिहा रखा, निरगुण नाउँ निरँकार धरा ल्या। शब्द सोटी हथ्थ फड़ा, गुर पीर लोकमात आप फिरा रिहा। चोटी चढ़ बैठा बेपरवाह, जन्म मरन ना कोए रखा ल्या। कोटन कोटि रहे ध्या, ध्यान विच ना कोए लगा रिहा। बोटी बोटी रहे कटा, मन का टुकड़ा ना कोए रखा रिहा। तन लगोटी रहे बन्ना, धीरज जत ना कोए करा रिहा। वासना खोटी रहे कढा, वासदेव दिस ना आ रिहा। आदि शक्ति रहे मना, आदि भवानी ना नाता जोड़ जुड़ा रिहा। ब्रह्मा ब्रह्म रहे सुणा, ब्रह्म ब्रह्म भेव ना पा ल्या। विष्न विष्न रहे गा, शेष नाग आसण दिस ना आ रिहा। शंकर शंकर अलख जगा, मन का शंका ना कोए गंवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, भगत सुहेले ल्ए वर, हरिजन साचे संग रखा ल्या। हरिजन तेरा सगला साथ, एका पुरख अबिनाशया। जुग जुग चलाए आपणा राथ, खेले खेल पृथ्मी अकास्सया। आप जणाए आपणी गाथ, साचा शब्द विच भरवास्सया। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन हिरदे हरि हरि वास्सया। आप चढ़ाए आपणे राथ, धुर दाता देवे धुर भरवास्सया। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, लक्ख चुरासी फंद कटास्सया। लेखे लाए पूजा पाठ, जो जन गाए रसना जिह्व स्वास्सया। लहिणा देणा चुक्के अट्ठ साठ, जिस जन पाया शाहो शाबास्सया। सतिगुर पूरा करनेहारा घाट, फ़र्क रहे ना रत्ती मास्सया। लेख चुकाए दस दस मास, पार कराए गर्भ वास्सया। हरिजन हरि हरि पूरी करे आस, देवणहारा नाम दिलास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साजण वेखे घर आदि जुगादि ना कदे विनास्सया। नाम वस्त सच भण्डार, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। देवणहारा विच संसार, दाता दानी आप अख्वाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यार, आप आपणी बुझ बुझाईआ। जगत तृष्ना देवे मार, जूठा झूठा मोह चुकाईआ। पंचम नाता तोड़ हँकार, पंचम पंच करे कुड़माईआ। साची सिख्या गुर वीचार, कलिजुग बेड़ा पार कराईआ। लेखा लिख्या धुर दरबार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एथे ओथे होए सहार, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। मानस नईआ ना डुब्बे अद्धविचकार, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। साचा सईया मीत मुरार, एकउँकार आप अख्वाईआ। राए धर्म ना कढ्ढे वहीआ, ना कोई लेख चुकाईआ। ना कोई दिसे भैणां भईया, मात पित ना संग रखाईआ। गुर का शब्द सदा संग रहीआ, सगला संग रखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाअरा इक्क लगईआ, पंजे शब्द रहे गाईआ। राम कृष्ना मेल मिलईआ, नानक गोबिन्द विच समाईआ। आदि निरँजण इक्क अख्वईआ, अन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, लक्ख चुरासी बेड़ा पार कराईआ।

नाम भण्डार शब्द अखुट, हरि सतिगुर आप वरतांयदा। जगत विकारा देवे पुट्ट, जिस जन दया कमांयदा। अमृत आत्म प्याए घुट्ट, सीतल धार वहांयदा। काया तन नगारे लाए चोट, अनहद ताल वजांयदा। हउमे हँगता कढ्ढे खोट, साचा शब्द सुणांयदा। सच दर ना रहे कोई तोट, दूजा दर ना मंगण जांयदा। लहिणा देणा चुकाए पूर्ब जन्म कोटी कोटि, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, सो पुरख निरँजण झोली पांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवान, एका एक अख्वाईआ। हँ ब्रह्म कर प्रधान, पंज तत्त वटाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दिसे ना कोई निशान, जगत नेत्र सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जिस जन देवे आत्म ज्ञान, तिस जन बूझ बुझाईआ। शब्द जणाई धुर फ़रमान, सतिजुग साचा राह वखाईआ। नानक निरगुण गाया जगत ज़बान, सोहँ ढोला इक्क इलाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेल श्री भगवान, चार वरनां करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी झुलणा इक्क निशान, प्रभ साचा आप झुलाईआ। उप्पर लेख लिख्या सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं जै जैकार आप कराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सारे गाण, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव ना राईआ। राम कृष्न इक्क विधान, एका मार्ग लाईआ। मुस्लिम सुन्नी कर परवान, साचा नबी आप हो जाईआ। नानक गोबिन्द कर पछान, जोती नूर करे रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा जाणी जाण, इक्क अकल्ला बेपरवाहीआ। जुग जुग आप सुणाए आपणा धुर फ़रमान, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। भेव ना पाए कोई विद्वान, पंडत पांधा ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, सच भण्डार देवे भर, सति सरूप शाहो भूप अनरंग रूप इष्ट दृष्ट इक्क वखाईआ। नाम भण्डार जगत वरतंत, हरी हरि आप वरताया। ग़रीब निमाणयां बणाए बणत, शब्द गुर सगला संग रखाया। साचा मेला नारी कन्त, सुरत सवाणी विछड़ी कन्त मिलाया। आपे पाए माया बेअन्त, आपे पर्दा परे हटाया। आदि जुगादी महिमा गणत, अगणत लेखा लिख्त विच ना आया। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम मजीठी रंग रंगाया। आपे वसे मणीआ मंत, मन मनका दए फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, नाम ख़ज़ाना इक्क रखाया।

✪ पहली फग्गण २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

पूरन सतिगुर पूरा, पारब्रह्म वड्याईआ। आदि जुगादि हाज़र हज़ूरा, निरगुण नूर रुशनाईआ। शब्द वजाए साची तूरा, एका ताल रखाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, घर साचा मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरे बख्शी आपणी धूढ़ा, धूढ़ी धूढ़

समाईआ। साची नारी एका नाम रंगण साचा चाढ़े चूड़ा, लाल मैंहदी हथ्थ रंगाईआ। मेल मिलावा कन्त सति सरूरा, सांतक सति आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन पूरा आप कराईआ। पूरन पूरा हरि समरथ, आदि जुगादि अख्वाया। पूरन रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। पूरन पाई आपणी नथ्थ, शब्द डोरी आप बंधाया। पूरन चलाए हरि हरि रथ, रथ रथवाही वेस वटाया। पूरन अबिनाशी करता रूप दसाया। पूरन लहिणा चुकया साढे तिन्न तिन्न हाथा, महल्ल अटल इक्क वखाया। पूरन जणाई आपणी गाथा, लेखा लिख्त विच ना आया। पूरन होया हरि हरि दासी दासा, सेवक सेवा रिहा कमाया। पूरन पार किनारा पूजा पाठा, त्रैलोकी विच ना आया। पूरन ना कोई पवण ना स्वासा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। पूरन खेल पुरख अबिनाशा, घट घट आपे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन पूरे विच समाया। पूरन पूरा आप करतार, एका एकउँकारया। भरया नाम शब्द भण्डार, सतिगुर पूरा नाउँ धरा रिहा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, साचा नाअरा अलख लगा ल्या। सच महल्ला उच्च मुनार, पुरख अबिनाशी आप सुहा ल्या। पूरन पूरा कर त्यार, आदि निरजंण उप्पर बहा ल्या। निरगुण जोत जगे अगम्म अपार, नूरो नूर डगमगा ल्या। इक्क अकल्ला करा आकार, निराकार वेस वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन जोत आप उपा ल्या। पूरन जोत पुरख अकाल, एका रूप समाईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। आपे वस्सया धर्म सच्ची धर्मसाल, थिर घर बैठा आसण लाईआ। नूरी जल्वा नूर जलाल, बेऐब आप ख़ुदाईआ। आपे बणे सच दलाल, सच वणजारा आप हो जाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क अख्वाईआ। पूरन करे सर्ब प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। पूरन हरि पुरख अबिनाशा एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादि खेले खेल हरि तमाशा, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणे मण्डल पावे रासा, आपे वेख वखांयदा। आदि अन्त ना कदे विनासा, जुग जुग वेस वटांयदा। पूरन होया दासी दासा, सेवक सेवक नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन जोत आप जगांयदा। पूरन जोत हरि भगवान, एका एक जगाईआ। एका शब्द इक्क निशान, एका वेख वखाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका मेल मिलाईआ। एका राग एका धुन्कान, एका रिहा सुणाईआ। एका जोद्धा सूर बली बलवान, एकउँकारा आप अख्वाईआ। एका खेले खेल दो जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। एका रूप श्री भगवान, दूसर कोए दिस ना आईआ। तिन्नां लोकां एका आण, चौथे पद आप समाईआ। पंचम बैठा हो प्रधान, भेव कोए ना पाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए मकान, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ।

सत्तवें सति पुरख हरि मेहरवान, आप आपणी कल वरताईआ। पूरन देवे पूरा दान, पूरन पारब्रह्म वड्याईआ। पूरन पतिवन्ता हरि निरँकार, एका धाम बहांयदा। एका जोती जोत जुगन्ता, जोती जोत डगमगांयदा। एका नूर नूर वखंता, नूरो नूर आप अख्वांयदा। एका तूर तूर सुनंता, नाद अनादी आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आदि अन्त इक्क अख्वांयदा। आदि अन्त प्रभ एका पूरन, आदि अन्त अख्वाया। आपे वजाए आपणा नाद तूरन, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह वेस वटाया। आपे वसे नेड़े दूरन, दूर नेड़ा आप जणाया। आपे सर्ब कला भरपूरन, समरथ पुरख नाउँ धराया। आपे नाता तोड़े कूड़ कूड़न, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। आपे चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़न, जिस जन दया कमाया। आपे बख्शे चरन धूढ़न, चरन चरनोदक मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन नूरो नूर दरसाया। नूरो नूर नूर उजाला, हरि सतिगुर रूप वटांयदा। पूरन पुरख दीन दयाला, दीन दयाला आप हो जांयदा। पूरन पूरा होए रखवाला, आप आपणी सेव कमांयदा। पूरन वेखे सच सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची धाम सुहांयदा। पूरन पूरन साचा लाला, लाल अनमुल्लड़ा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, पूरन पूरन बूझ बुझांयदा। पूरन बुज्झया नर निरँकार, हरि साचे बूझ बुझाईआ। पूरन छुपया सर्ब संसार, मिल्या मेल साचे माहीआ। पूरन तुट्टा गढ़ हँकार, काम क्रोध लोभ मोह रहे ना राईआ। पूरन लुट्टयां सच्चा घर बार, हरि ख़ज़ाना आप लुटाईआ। पूरन आपणे घर भरया आप भण्डार, नाम वस्त विच टिकाईआ। पूरन गुर हरि किरपा धार, पूर रिहा वखाए सभनी थाँईआ। पूरन बणया साची नार, मिल्या कन्त बेपरवाहीआ। पूरन भगती भगत आधार, पूरन लेखे लए लगाईआ। पूरन साचा सुत्त दुलार, सतिगुर पूरा आप उपजाईआ। पूरन रुत्त बसन्त बहार, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। पूरन अबिनाशी अचुत्त मीत मुरार, दूजा संग ना कोए वखाईआ। पूरन पाया पुरख अपार, विछड़ कदे ना जाईआ। पूरन घर विच घर कर त्यार, घर मेला सहिज सुभाईआ। पूरन सेव लगाई जोत निरँजण सेवादार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। पूरन शब्द सच्ची धुन्कार, पूरन पूरा रिहा सुणाईआ। पूरन तोड़े बन्द किवाड़, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। पूरन नाता तुट्टा पंचम धाड़, आसा तृष्ना रहिण ना पाईआ। आदि पूरन वेखे इक्क अखाड़, घर साचा इक्क सुहाईआ। पूरन साचे पौड़े आपे देवे चाढ़, चाढ़नहारा बेपरवाहीआ। पूरन बणया साचा लाड़, शब्द सेहरा सीस गुंदाईआ। साची सखीआं वेखण आए सतारां हाढ़, भुल्ल रहे ना राईआ। गुरसिखां दरस दिखाए नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। पूरन लाए सच अखाड़, हरिसंगत मेल मिलाईआ। फड़ फड़ बांह अन्दर देवे वाड़, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। वा ना

लग्गे तत्ती हाढ़, अमृत अमृत बरखा एका लाईआ। पूरन घड़नहारा साचे घाड़, आपे घड़े आपे भन्न वखाईआ। पूरन वसणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जलां थलां आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आपे कर, पूरन विच समाईआ। पूरन सतिगुर पूरा पाया, आदि पुरख अबिनाशया। ना मरे ना कदे जाया, मढ़ी गोर ना रक्खे वास्सया। साचे तख्त सच सुल्तान सुहाया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां वेखे खेल तमास्सया। उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज विच कदे ना आया, त्रैगुण बंधन ना बंधास्सया। पंज तत्त ना कोए वखाया, जोती शब्दी मेल मिलास्सया । पिता पूत ना कोए बणाया, मात गोद ना कोए उठास्सया। भैणां भईया ना साक जणाया, ना कोई गेड़ा लक्ख चुरासीआ। पूरन पूरा पूरे नज़री एको आया, थिर घर बैठा शाहो शाबासीआ। करता कादर आपणी करनी करदा आया, आपे जाणे आपणी रासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन मेला साचे घर घर मेला शाहो शाबासीआ। शाहो भूप सच सुल्तान, घर साचे आप सुहांयदा। सति पुरख सदा मेहरवान, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। आप उपाए दया कमाए आप जणाए आपणा धुर फ़रमान, आपे बन्द करासीआ। पूरन पूरा देवे दान, सच भण्डार इक्क वरतासीआ। छत्र झुले दो जहान, निरगुण रूप आप झुलासीआ। एका एक रक्खे आण, दूजा हुक्म ना कोए सुणासीआ। शाह सुल्तानां राज राजानां दो जहानां हरि मेहरवानां एका देवे धुर फ़रमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन पूरी धार आप चलासीआ। पूरन धार विच संसार, हरि जुग जुग आप चलांयदा। पूरन गुर लै अवतार, गुर पूरा वेस वटांयदा। शब्द डंका अपर अपार, नाम जैकारा इक्क सुणांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपति राजा इन्द सोया रहिण ना पांयदा। गण गंधर्ब नेत्र दए उग्घाड़, एका नाद वजांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका नूर कर उज्यार, एका डगमगांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, आप आपणी कल वरतांयदा। जूठ झूठ मारे मार, साध सन्त वेख वखांयदा। गुरमुख साजण मीत मुरार, काया मन्दिर अन्दर फोल फोलांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, डूँघी भँवरी पार करांयदा। नाता छुट्टे नौ दुआर, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिरांयदा। नाभ कँवली ऊधे भार, मुक्खड़ा मुख भवांयदा। जोती नूर नूर उज्यार, एका नूर वखांयदा। बजर कपाटी देवे पाड़, नाम खण्डा एका रूप दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, आप आपणा राह चलांयदा। आत्म सेजा वेख विचार, आप आपणा मेल मिलांयदा। चतुर्भुज हो त्यार, आप आपणी गोद उठांयदा। निरगुण रूप अपर अपार, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। ब्रह्म ब्रह्म इक्क आधार, पारब्रह्म विच समांयदा । सुरती शब्द पुरख नार, साची सेज सुहांयदा।

दोहां सांझा इक्क प्यार, एका सगन मनांयदा। आपे खिच्चे अन्दरों बाहर, आप आपणे अंग लगांयदा। दस्म दुआरी वेख विचार, सुन्न अगम्मों पार करांयदा। सच घर आपे देवे वाड़, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हँ ब्रह्म ना कोए विचार, एका रंग रंगांयदा। सन्त सुहेले कर त्यार, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। गुरू गुर चेले इक्क आधार, एका वेख वखांयदा। अलक्ख निरँजण भेव न्यार, भेव कोए ना पांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आपणी आप कमांयदा। सति पुरख निरँजण सति प्यार, पूरन पूरा विच समांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो आंयदा। आपे जुग जुग पावे सार, जुग करता नाउँ रखांयदा। आपे लोआं पुरीआं महल्ल लए उसार, रवि ससि सतार आप लटकांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड कर उज्यार, शब्द डोरी बंध बंधांयदा। गगन पातालां इक्क आधार, धरत धवल आप सुहांयदा। आकाश प्रकाश खेल अपार, जोती नूर डगमगांयदा। आपे विष्नूं वेस न्यार, बाशक सेजा आप हंढांयदा। आप आपणा कर प्यार, कँवल नाभी खेल खिलांयदा। पूरन जोत अगम्म अपार, भेव कोए ना पांयदा। विष्नूं मेला अपर अपार, साचा फल लगांयदा। फुल फुलवाड़ खिड़ी गुलज़ार, पारब्रह्म आपणा रूप ब्रह्म वखांयदा। ब्रह्मा वेता कर त्यार, चारे मुख सलांहयदा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण इक्क आधार, दहि दिशां फोल फोलांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कार, एका नाद वजांयदा। आपे बख्शे चरन प्यार, आपे मेल मिलांयदा। त्रैगुण माया वस्त अपार, ब्रह्मे झोली पांयदा। पंज तत्त एका धार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश आप बणांयदा। लक्ख चुरासी ख़बरदार, आप आपणी वंड वंडांयदा। त्रै त्रै मीत आप निरँकार, आपणा अंग कटांयदा। मन मति बुध निराकार, निरगुण जोती जोत वखांयदा। अट्ठ तत्त इक्क आधार, नौ दर आप खुल्हांयदा। आपे वस्सया मीत मुरार, घट घट आसण लांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनार, दस्म दुआरी आप सुहांयदा। आपे भरे शब्द भण्डार आपे बन्द रखांयदा। आपे अमृत आत्म सर सरोवर लए नुहाल, आपे बाहर कढांयदा। आपे नाद अनादी वजाए ताल, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे काल महांकाल आपणे दर दुआरे लए बहाल, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे त्रैगुण माया पाया जाल, आपे तोड़ तुड़ांयदा। आपे धर्म राए देवे सुरत संभाल, आपणी सेवा आपे लांयदा। आपे चित्रगुप्त रिहा उठाल, लेखा लिख्या आप समझांयदा। आपे लाड़ी मौत कर श्रृंगार, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। ब्रह्मा सेवक सेवादार, साची सेव कमांयदा। उपजणहारा लक्ख चुरासी दए अधार, अट्ठे नेत्र वेख वखांयदा। विष्नूं वंसी कर प्यार, घर घर रिज़क पुचांयदा। शिव शंकर अन्तिम रिहा सँघार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। लाड़ी मौत नाल करे त्यार, लोकमात वेस वटांयदा। आदि जुगादी अबिनाशी करता खेले खेल अपर अपार, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, पूरन जोती पूरन विच टिकांयदा। पूरन जोत आप जगाई, घट घट वास रखाया। आदि पुरख हरि वड वड्याई, भेव किसे ना पाया। जुग जुग वज्जदी रहे वधाई, घर साचे मंगल गाया। शब्द जोत होए कुड़माई, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। इक्क दूजे नूं वेखण चाँईं चाँईं, एका दूजा मेल मिलाया। निरगुण निरगुण पकड़े बांहीं, रूप रंग ना कोए रखाया। थिर घर बैठा आसण लाई, महल्ल अटल इक्क सुहाया। चार दीवार ना कोए बणाई, छप्पर छन्न ना कोए बणाया। सच सिँघासण एका डाही, पावा चूल ना कोए जणाया। उप्पर बैठा बेपरवाही, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाया। निरगुण जोत कर रुशनाई, नूरो नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, पूरन पूरे विच समाया। पूरन मेला धुर दरगाह, हरि साचे आप कराया। पुरख अकाल बण मलाह, आपणे बेड़े आप चढ़ाया। दूसर किसे नाल ना करी सलाह, साध सन्त भेव ना आया। आदि जुगादि जपाउण वाला आपणा नाँ, पूरन अन्दर डेरा लाया। लक्ख चुरासी पिता माँ, घर साचा रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण रंग रंगाया। निरगुण रंग अगम्म अपार, हरि साचा आप रंगाईआ। ना कोई रंगे विच संसार, जगत ललारी दिस ना आईआ। आप आपणा कर प्यार, सच प्रीती रंग वखाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच समाईआ। नाम मृदंग
२३४ सच जैकार, साचा ढोला एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन मेला साचे घर, जगत तोला २३४
०८ आप अख्वाईआ। पूरन तोला विच संसार, हरि साचा आप उपांयदा। बदलया चोला आप निरँकार, लेखा लिख्त ना कोए ०८
लिखांयदा। साचा ढोला इक्क जैकार, एका पुरख सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण धार बंधांयदा। निरगुण धार हरि निरँकार, जुग जुग आप चलाईआ। सतिजुग खेले खेल अपार, सति सतिवादी नाउँ धराईआ। चारे वेदां दए अधार, एका हरि हरि पढ़ाईआ। वंडे वंड विच संसार, साची सेवा आप लगाईआ। मानस मानुख कर त्यार, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपे बणे गढ़ हँकार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे बुध बिबेकी कर उज्यार, आपे मन मति करे वड्याईआ। आपे मनुआ मन दहि दिशां दए उडार, आपे बंधन पाईआ। आपे शब्दी नाम भर भण्डार, आपे रिहा वरताईआ। आपे साधां सन्तां दए अधार, आप आपणी जोत जगाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, लोकमात वेख वखाईआ। सरगुण रूप करतार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। गुर पीर बण अवतार, भगत भगवन्त वड्डी वड्याईआ। जीआं जन्तां दए अधार, जीवण दाता आप अख्वाईआ। जन्मां कर्मां धर्मां निहकर्मी जाणे सार, कर्म गत आप जणाईआ। वरनां बरनां कर उज्यार, आपे वेख वखाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, आपे वेखणहारा हरि, पूरन जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग तेरा सच दुआर, हरि साचा वेख वखांयदा। नित नवित्त भगत अधार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता तारनहारा, एका पुरख अख्वाया। राम रूप वटावणहारा, त्रै त्रै मेल मिलाया। गढ़ हँकारी तोड़नहारा, आपे वेखे वेख वखाया। द्वापर दोए दोए हो उज्यारा, आप आपणा रंग रंगाया। रथ रथवाही पावे सारा, महांसार्थी नाउँ धराया। कलिजुग कल डंक डंफारा, आपे रिहा वजाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी खेल खिलाया। नानक निरगुण कर प्यारा, पंज तत्त वड्याआ। नाम सति भर भण्डारा, लोकमात वरताया। चार वरनां इक्क दुआरा, एका घर वखाया। एका पुरख सृष्ट सबाई नारा, साची बूझ बुझाया। साचा मेल कन्त भतारा, आत्म सेजा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाया। पूरन जोत गुर अवतार, एका रूप वटांयदा। नानक साजण मीत मुरार, पुरख अकाल अख्वांयदा। सृष्ट सबाई दए अधार, शब्द विचोला इक्क रखांयदा। तोला तोले साची धार, तेरां तेरां नाउँ रखांयदा। एका जोती दस नूर उज्यार, दहि दिशा वेख वखांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आंयदा। पंचम मेला विच संसार, साची रीती आप चलांयदा। जुग जुग खेले खेल करतार, करनी करता नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन इच्छया नाम भिच्छया झोली पांयदा। पूरन भिच्छया भर भण्डार, हरि साचा दर सुहांयदा। करे रच्छया विच संसार, समरथ पुरख अख्वांयदा। इक्क लगाए साचा नाअरा, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण निरगुण हरि हरि मेला, हरि साचा आप कराईआ। एका रूप गुरू गुर चेला, गुर चेला विच समाईआ। एका मीत सज्जण सुहेला, हरि सज्जण आप अख्वाईआ। एका खेल अगम्मी खेला, खेल खिलंता भेव ना राईआ। एका वस्सया रंग नवेला, एका घट घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जाणे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर अलाहया। सृष्ट सबाई सांझा यार, पूरन विच समाया। ख़लक ख़ुदाई करे प्यार, ख़ालक ख़लक विच रमाया। अर्श फर्स कुर्श इक्क आधार, आपे ख़लक होए रुशनाया। आपे रबाब वजाए इक्क सतार, सच झूठ लए वजाया। हक्क जनाब सच्ची सरकार, हक्क हकीकत वेख वखाया। लाशरीक अपर अपार, वाहद ख़ुदा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन देवे पूरा वर, जगत तृष्ना रहे ना राया। पूरन मेला हरि हरि राम, हरि साचे आप कराया। इक्क प्याया साचा जाम, नाम प्याला हथ्थ उठाया। वस्सया खेड़ा नगर ग्राम, जिस

घर बैठा आसण लाया। लहिणा देणा चुकाए हड्ड मास नाड़ी चाम, घर घर विच तख्त सुहाया। शब्द घोड़े सच लगाम, सोलां कलीआं आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन मेला साचे घर, घर साचे होए रुशनाया। पूरन मेला कृष्ना काहन, रूप आप अख्वांयदा। साची गोपी कर परवान, आपणे अंग लगांयदा। अट्ठे पहर वेखे मार ध्यान, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। पूरन पूरा देवे माण, दर घर साचे माण आपणा आप रखांयदा। शब्द जणाई धुर फ़रमान, लोकमात डंक वजांयदा। साध सन्त जीव जन्त पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुल्लां शेख़ मुसायक कोई ना सके पछाण, नेत्र दिस किसे ना आंयदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान पा पा दस्सण कहाण, हथ्थ ना कोए फड़ांयदा। उच्ची कूकण वड विद्वान, हरि का रूप नज़र ना आंयदा। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तिम घटा रही छाण, नाम अनमुल्लड़ा साचा लाल हथ्थ किसे ना आंयदा। जगत प्रीती पीण खाण, आत्म तृप्त ना कोए करांयदा। घर घर मनमति वेसवा नार रकान, कूड़ कुड़यारी सेज हंढांयदा। पीर फकीरां भुल्लया हरि मेहरवान, जगत पनाह ना कोए सुणांयदा। दीन मज़्ब ईमान आपणा आप रहे वखाण, साचा कलमा अमाम ना कोए पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पूरन पूरन मेल मिलांयदा। पूरन मेला सच्चे पातशाह, हरि सतिगुर आप मिलाया। पारब्रह्म बणया विच मलाह, शब्द विचोला विच रलाया। एकउँकारा देवे सच सलाह, नाम सति वड्डी वड्याआ। करता पुरख निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला आपे कर, निरगुण नूर करे रुशनाया। पूरन पाया हरि हरि मीता, हरी हरि विच रूप वटाईआ। एक वस्सया धाम अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। आदि जुगादि पतित पुनीता, पतित पावन वड वड्याईआ। किसे हथ्थ ना आए गुरदुआरे मन्दिर मसीता, काया काअबा सच महिराबा बैठा आसण लाईआ। अमृत मुख चुआए कँवल नाभा, आबे हयात प्याईआ। सतिगुर पूरन हथ्थ वड्याई ना कोई पुन ना सवाबा, नज़र मेहर नाल तराईआ। ना कोई देवे दोज़ख बहिश्त अज़ाबा, अजराईल जबराईल असराफील मेकाईल ना कोई राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन दित्ता आपणा वर, आपणी नक़ाब आपणा पर्दा देवे लाहीआ। आपणी नक़ाब पर्दा खोल्ह, नूरी मुख वखाया। आपणी सदा आपे बोल, आपणा नाअरा लाया। आपे निउँ निउँ सजदा करे अन्दर बैठा कोल, आप आपणा नाअरा लाया। आप वजाए सच मृदंगा एका ढोल, चौदां तबकां दए सुणाया। आपे नबी रसूलां आपणे कंडे रिहा तोल, कलिजुग अन्तिम तोला बण के आया। जूठ झूठ चार कुन्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप कढ्ढे पोल, पर्दा कोए रहिण ना पाया। पूरन वड्याई

कीती पंज तत्त कर मखौल, पूरन पूरे नाल समाया। पूरन पूरा करे कौल, गुर गोबिन्द जो आप कराया। अकाल पुरख निरगुण जोती रिहा मौल, मौला रूप आप वटाया। आपे कान्हा कृष्ना सांवल सौल, राम नाम आप उपाया। आपे जानणहार पंडत पांधे रौल, हिसाब विच किसे ना आया। नानक गोबिन्द तेरा लेखा मिटे ना रत्ती चौल, हरि साचा पूरा दए कराया। सतिगुर पूरा पूरन अन्दर रिहा बोल, शब्द गुर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपे दिस ना आया।

२ फग्गण २०१५ बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवन्त सिँघ दे घर पिण्ड माहल अमृतसर

निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एकउँकारया। अलख अगोचर अगम्म अपार, भेव कोए ना पा रिहा। आदि निरँजण खेल अपार, आपणा आप खिल्ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आप समा रिहा। निरगुण धार आदि निरँजण, हरि आपणी आप चलांयदा। पुरख अबिनाशी साचा सज्जण, साचा मेल मिलांयदा। साचे ताल दर घर साचे वज्जण, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर इक्क रखांयदा। निरगुण नूर हरि भगवाना, एका एक समाईआ। खेले खेल दो जहाना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। थिर घर वसे सच मकाना, घर साचे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर बेपरवाहीआ। निरगुण नूर बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। आपे पिता आपे माँ, आपणी गोद उठांयदा। आप आपणा रक्खे ना, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। आप आपणी रक्खे छाँ, समरथ हथ्थ आप टिकांयदा। आप आपणे वसे थाँ, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहांयदा। आदि जुगादी जुग जुग आपणा करे आप न्याँ, आपे हुक्म चलांयदा। शाह सुल्तान आप अख्वा, राज राजानां नाउँ धरांयदा। सीस जगदीस ताज टिका, तख्त ताज सुहांयदा। आदि पुरख निरँजण आप आपणी अलख जगा, आप आपणी मंग मंगांयदा। आपणी झोली आप भरा, आपे वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण नूर जोत उजाला, हरि साचा आप करांयदा। आप आपणी करे प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ रखांयदा। आपे होए दीन दयाला, दयानिध भेव ना आंयदा। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। निरगुण वेस अकल कलधार, अकल कला अख्वाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, बैठा आसण लाईआ। दीपक जोती कर

उज्यार, आपणी आप करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरार, आपणा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला आपे कर, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण रक्ख, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण रूप हो प्रतक्ख, आप आपणा वेस वटाईआ। निरगुण अलक्ख अलक्खणा अलक्ख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणा आप सुहाईआ। निरगुण साचा घर सुहाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ डेरा लाया, आप आपणा आसण लाईआ। नारी कन्त मेल मिलाया, मेल मिलावा बेपरवाहीआ। दूसर कोई दिस ना आया, ना कोई रचन रचाईआ। आप आपणा सुत्त उपजाया, शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द जैकारा एका लाया, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे माण आप वड्याईआ। शब्द सुत्त कर प्यारा, हरि साची दया कमांयदा। देवे वर धुर दरबारा, धुर लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिगुर रूप रूप करतारा, शब्दी रंग चढ़ांयदा। अगाध बोध खेल न्यारा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत्त देवे साचा वर, साचा हुक्म सुणांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। देवणहार श्री भगवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नादी नाद इक्क तराना, एका रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, घर साचा बंक सुहाईआ। शब्द दर घर साचा पाया, घर घर ख़ुशी मनाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचाया, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाया, त्रैगुण तन्द बंधाईआ। पंचम तत्त जोड़ जुड़ाया, तत्व तत्त आप अख्वाईआ। निरगुण आपणा अंग कटाया, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वाईआ। मन मति डेरा आप लगाया, साची वस्त टिकाईआ। घर विच साचा नगर बणाया, घर बैठा साचा माहीआ। लोकमात हरि खेल खिलाया, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। जीव जन्त जोत जगाया, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। रवि ससि सेव कमाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द गुर साचा मीता, हरि साचा आप उपांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीता, साची बणत बणांयदा। बैठा रहे इक्क अतीता, दर घर इक्क सुहांयदा। वेखणहारा हस्त कीटा, वरनां बरनां फोल फोलांयदा। नाम जणाए इक्क अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। शब्द गुर वड बलवाना, हरि साचा आप उपांयदा। इक्क सुणाए राग तराना, लोआं पुरीआं आप जगांयदा। एका देवे धुर फ़रमाना, गीत सुहागी एका गांयदा। एका मन्दिर इक्क टिकाना, एका घर वखांयदा। दो जहानां इक्क बबाणा, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द

लए वर, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। शब्द गुर सच मलाह, हरि साचा आप उपांयदा। जुग जुग देवे सच सलाह, जन भगतां आप उठांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, नाम निधाना झोली पांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, गुर शब्दी शब्द सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। जुग जुग मेल मिलावा साचे सन्ता, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहंता, घर साचा इक्क वखाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी सेव कमाईआ। गुर शब्दी साचा सेवादार, हरि साचा आप उपांयदा। भगतन मीता ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। राज जोग सच्चा सिक्दार, सच सुल्तान वेख वखांयदा। वरनां बरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां डेरा लांयदा। जूनी रहित आप करतार, अनभव प्रकाश करांयदा। अकाल मूर्त खेल अपार, घट घट वेख वखांयदा। हरिजन साचे लए उभार, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी वेस आपे कर, आपे वेख वखांयदा। जुग जुग खेल हरि अवतारा, आपणी चलत चलांयदा। चले चलाए विच संसारा, सारंगधर आप अख्वांयदा। पुरख पुरखोतम खेल न्यारा, आप आपणी रचन रचांयदा। शब्द गुर गुर जोत सहारा, नूरो नूर डगमगांयदा। निरगुण सरगुण कर प्यारा, घर घर विच मेल मिलांयदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, आप आपणा भेव खुलांयदा। जुग जुग करे पार किनारा, जुग जुग रथ चलांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, एका आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा हरि भगवाना, अन्तिम कलिजुग वेख वखाईआ। शब्दी तीर इक्क निशाना, एका चिल्ला रिहा उठाईआ। जोद्धा सूर मर्द मरदाना, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। वेखणहारा दो जहानां, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे सृष्ट सबाईआ। कलिजुग तेरा वेख पसारा, हरि साची जोत जगांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतारा, रूप अनूप दरसांयदा। जूनी रहित खेल न्यारा, नाम सति डंक वजांयदा। धुर दरगाही साचा लाड़ा, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ांयदा। आपे हो शाहसवारा, सोलां कलीआं आसण पांयदा। लोआं पुरीआं दए हुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क जैकारा, सत्तां दीपां आप सुणांयदा। चार वरनां वणज वपारा, एका नाम वखांयदा। राज राजान शाह सुल्तान राउ रंक बहाए इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। नाम खण्डा खड़क कटारा, तेज़ प्रचण्डा हथ्थ उठांयदा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, गुरमुख मनमुख वेख वखांयदा। राम रूप अपर अपारा, हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, रथ रथवाही आप चलांयदा।

ईसा मूसा ख़बरदारा, संग मुहम्मद मेल मिलांयदा। चौदां तबकां पावे सारा, अल्ला राणी घूँगट लांहयदा। नानक गोबिन्द इक्क आधारा, एका शब्द सलांहयदा। एका वणज इक्क वपारा, एका वस्त झोली पांयदा। चार यारी पार किनारा, हरि साचा आप करांयदा। पंचम मीता हो उज्यारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी दए हुलारा, भेव कोए ना पांयदा। शाह सुल्तानां मारे मारा, तख्त ताज ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप अपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचा वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, भुल्ल रहे ना राईआ। निरगुण जोत नूर आकार, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। शब्द खण्डा गोबिन्द प्यार, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। जेरज अंडा आर पार, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। जुग जुग हरि हरि रंग रंग, साची रंगण आप चढ़ांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, सूरबीर आप हो जांयदा। आपणे अस्व आपे कसे तंग, नीला नीली धारों पार करांयदा। नाम वजाए सच्चा मृदंग, लक्ख चुरासी आप उठांयदा। आपणा दुआरा आपे लँघ, लोकमात वेख वखांयदा। पावे सार गोदावरी गंग, अठसठ फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। नाम खण्डा सच कटार, हरि गोबिन्द हत्थ उठाईआ। पूत सपूता कर प्यार, गौड़ ब्रह्मण वड्डी वड्याईआ। उच्चे टिल्ले मीत मुरार, बैठा आसण लाईआ। दिस ना आए विच संसार, पंडत पांधे रहे कुरलाईआ। आदि जुगादी आपणी कार, आपे रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द शब्दी आप हो जाईआ। शब्द तराना शब्द नाद, हरि साचा आप वजांयदा। शब्द ब्रह्म शब्द ब्रह्मादि, हरि शब्दी वेख वखांयदा। शब्द गुर आदि जुगादि, जुग जुग शब्द वेस वटांयदा। शब्द शब्दी देवे दाद, शब्द शब्दी झोली पांयदा। शब्द मोहण माधव माध, साची सखीआं शब्द मेल मिलांयदा। शब्द शब्दी रिहा अराध, शब्दी शब्द आप सुणांयदा। शब्दी गुर गुर शब्द लाध, गुर गुर मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द गुर वड्यांअदा। शब्द गुर वड बलकारा, एका नाअरा लांयदा। प्रगट हो विच संसारा, कलिजुग ढोल वजांयदा। किसे ना दीसे कोई किनारा, चारों कुन्ट सर्ब कुरलांयदा। कूड़ क्रिया बन्नृ अखाड़ा, मनमति जगत नचांयदा। मगर लगाई पंचम धाड़ा, माया मोह फसांयदा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, ना कोई मात बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपांयदा। हरि हरि नाउँ नर निरँकार, निरगुण नूर रुशनाईआ। शब्दी गुर भर भण्डार, गुर सतिगुर आप वरताईआ।

हरिजन देवे कर प्यार, आत्म झोली आप भराईआ। काया करे सच श्रृंगार, तन बस्त्र इक्क वखाईआ। दुरमति मैल दए उतार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, पारब्रह्म पुरख करतारया। कलिजुग अन्तिम वेखे झूठ दुकान, लोकमात लए अवतारया। लक्ख चुरासी करे पछान, घट घट मन्दिर वेख वखा रिहा। एका देवे धुर फ़रमान, शब्द जणाई आप करा रिहा। सो पुरख निरँजण वड बलवान, हँ हँगता मेट मिटा रिहा। धर्म झुलाए इक्क निशान, साची सिख्या आप जणा रिहा। चार वरनां इक्क ध्यान, एका घर बहा रिहा। ऊँच नीच ना कोए वखान, राउ रंक ना कोए बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पा ल्या। सतिगुर पूरा हरि सुल्ताना, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्याना, मनमुख मूढ़े रहे कुरलाईआ। हरि का रूप ना किसे पछाना, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला पाए पद निरबाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग वेखे इक्क मैदाना, नौ खण्ड राह तकाईआ। मनमति बन्ने हथ्थीं गानां, कूड़ी मैंहदी लाल रंगाईआ। जूठा झूठा पीणा खाणा, झूठी क्रिया रहे कमाईआ। गुर का शब्द ना किसे पछाना, गुर दर ना कोए वड्याईआ। हउमे हँगता गाया गाणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहे सुणाईआ। सच ना मिल्या नाम तराना, अनहद ताल ना कोए जणाईआ। एका रूप श्री भगवाना, राम कृष्न आप अख्वाईआ। ईसा मूसा जोड़ जुड़ाना, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। नानक गोबिन्द गुण निधाना, एका अंक लगाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शाह भूप हरि वड सुल्ताना, सच सिक्दार आप अख्वाईआ। खेले खेल गोपी कान्हा, रास मण्डल आप नचाईआ। जनक सपुत्री कर परवाना, राम रमईया वेस वटाईआ। अल्ला राणी हो प्रधाना, आपणा नाअरा इक सुणाईआ। नानक निरगुण वड बलवाना, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द हरि हरि इक्क पछाना, अकाल पुरख इक्क मनाईआ। सर्ब जीआं प्रभ बीना दाना, एकउँकारा आप अख्वाईआ। प्रगट होए विच जहाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। राम नाम साची डोर, हरि साचे तन्द बंधांयदा। कान्हा कृष्ना मेटे अन्धेरा घोर, ज्ञान प्रकाश इक्क करांयदा। ईसा मूसा आपे होड़, आपणा मार्ग आपे लांयदा। संग मुहम्मद वेखे ज़ोर, चार यारी मेल मिलांयदा। नानक निरगुण आपे बौहड़, आपणा मूल चुकांयदा। गुर गोबिन्द मेला दौड़ दौड़, घर साचा आप सुहांयदा। जन भगतां आत्म बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ बरसांयदा। प्रगट होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लांयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिठ्ठे कौड़, फिका रस रहिण ना पांयदा। सम्बल नगरी लाया पौड़,

चौथा पद इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। राम रूप हरि भगवान, हरि हरि सच्चा अवतारया। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण इक्क निशान, एका नूर डगमगा रिहा। ईसा मूसा कर प्रधान, आप आपणी कारे ला ल्या। संग मुहम्मद नौजवान सोया आप उठा ल्या। नानक निरगुण इक्क वखाण, एका बूझ बुझा ल्या। गोबिन्द सूरा कर परवान, घर साचे मेल मिला ल्या। अन्तिम खेले खेल महान, हरि साचे शब्द जणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा वेस वटा ल्या। राम रूप हरि भगवन्त, अचरज खेल खिलांयदा। एका जोत आदिन अन्त, रथ रथवाही नाउँ धरांयदा। ईसा मूसा चाल चलंत, चाल निराली इक्क रखांयदा। नानक निरगुण ज्ञान दृढ़ंत, सति नाम वरतांयदा। गोबिन्द साचा धाम सुहंत, घर साचा वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलंत, भेव कोए ना पांयदा। आए जाए जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। मेल मिलावा साचे सन्त, सन्त सुहेले वेख वखांयदा। भगत दुआरे होए मंगत, आप आपणी अलख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। राम रूप अपर अपार, कृष्ना नूर रुशनाईआ। ईसा मूसा एका धार, जोती नूर अलाहीआ। नानक गोबिन्द इक्क जैकार, एका डंका रहे वजाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहार, दरगाह बैठा आसण लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं आप उसार, आप आपणा मेल मिलाईआ। रवि ससि सूरज चन्न सतार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। शब्दी भरया रहे भण्डार, हरि साचा आप वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, दहि दिशा फोल फोलाईआ। सृष्ट सबाई हाहाकार, रो रो रही कुरलाईआ। मन मति होई विभचार, नार दुहागण मनमति नेत्र नैण रही कुरलाईआ। कोई ना दिसे किसे यार, घर घर अग्नी तत्त जलाईआ। आपा भुल्ला सर्ब संसार, आप आपणा ना वेख वखाईआ। पेके मिल्या ना मीत मुरार, सौहरे ढोई ना राईआ। दो जहानी रहे हार, आपणी पति गंवाईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकार, चारों कुन्ट रिहा सुणाईआ। धरनी रोवे धाहां मार, धीरज धीर ना कोए कराईआ। लाड़ी मौत करे श्रृंगार, तन बस्त्र इक्क सुहाईआ। धर्म राए वेखे इक्क अखाड़, बन खण्ड फेरा पाईआ। चित्रगुप्त ना करे उधार, लहिणा लहिणा अग्गे डाहीआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। विष्नूं वेता बण भिखार, बंस सरबंस फोल फोलाईआ। शंकर बाहां रिहा हुलार, आपणी त्रिसूल हथ्थ उठाईआ। करोड़ तेतीसा करे पुकार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जरम कर्म धर्म जाणे सर्ब संसार, निहकर्मी वेख वखाईआ। आदि जुगादी आपणी कार, जुग करता आप कराईआ। निर्भय रूप फिरे संसार, मूर्त अकाल वड वड्याईआ। जूनी रहित ना कोए विचार, जून अजूनी वेख वखाईआ।

सृष्ट सबाई सांझा यार, एकउँकारा आप अख्वाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूरो नूर नूर अलाहीआ। राम कृष्ना इक्क अधार, नानक गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। हरि का शब्द करे ख़बरदार, सोई सुरती आप उठाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत ना डुब्बे विच मँझधार, जो जन हरि हरि रसना रहे गाईआ। सवेर सञ्झ ना दिसे कोई विच संसार, रैण अन्धेरी एका छाईआ। इक्क मुहम्मद करे विचार, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। चौदां तबकां पैणी मार, प्रभ मारे बेपरवाहीआ। सदमा झल्ले अल्ला राणी विच संसार, सच सलाह ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। राम रूप आदि निरँजण, आदि जुगादि समाया। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, कान्हा बंसरी नाम वजाया। ईसा मूसा साचा सज्जण, कलिजुग साचा मेल मिलाया। कलिजुग कूड़ नगारे अन्तिम वज्जण, नानक निरगुण वेखण आया। गोबिन्द होया पड़दे कज्जण, प्रभ साची सेवा लाया। चार वरन कराए एका मजन, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोए जणाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भाण्डा भरम दए भन्नाया। शाह सुल्तान राज राजान दर दरबार आपणा तजण, सीस ताज रहिण ना पाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले दर घर साचे बहि बहि गज्जण, नाम जैकारा एका लाया। पारब्रह्म चलाए साचा जहाजन, क्षत्री शूद्र वैस ब्रह्मण हरिजन साचे लए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करते रूप वटाया। राम रूप पुरख सुल्ताना, पारब्रह्म अख्वांयदा। त्रिलोकी नंदन खेल महाना, आप आपणी कल वरतांयदा। ईसा मूसा इक्क फ़रमाना, एका हुक्म जणांयदा। नानक गोबिन्द कर प्रधाना, लोकमात वेख वखांयदा। सति सन्तोखी बद्धा गाना, धीरज जत जणांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। धुन अनादी सच तराना, अनहद राग सुणांयदा। अमृत आत्म पीणा खाणा तृष्ना भुक्ख गवांयदा। दूई द्वैती पर्दा लाहणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। साची हाटी इक्क वखाणा, काया गढ़ सुहांयदा। आत्म सेजा हरि मेहरवाना, सच सिँघासण इक्क वछांयदा। निरगुण जोती दीपक इक्क बलाना, दीवा बाती ना कोए रखांयदा। कमलापाती मेल मिलाना, साची नारी राह तकांयदा। सुरत सवाणी बद्धा गाना, गुर शब्दी सगन मनांयदा। दोहां मेला इक्क मकाना घर घर विच डेरा लांयदा। सति पुरख हरि सद मेहरवाना, सति सरूप रूप अनूप आप रखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्याना, गुरमुख सोए आप जगांयदा। गोबिन्द देवे साचा दाना, नानक नाम भण्डारा आप वरतांयदा। ईसा मूसा शाह सुल्ताना, शाह सवार वेख वखांयदा। कान्हा कृष्ना नौजवाना, सोलां कल धार बंधांयदा। राम रूप वेख महाना, रावण गढ़ तुड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम इक्क निशाना, चौथा जुग वेख वखांयदा। चार

लक्ख हजार बत्ती तेरा मूल चुकाना, तेरी आयू आपणे विच टिकांयदा। सतिजुग साचा कर प्रधाना, हरि साचा आप उठांयदा। कलिजुग तेरा लेखा चुक्के लोकमात जगत जहाना, लहिणा लहिणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द डंका इक्क वजांयदा। शब्द डंक सच घनघोर, हरि साचे आप सुणाईआ। कलिजुग भज्जा जाए चोर, थिर रहिण ना पाईआ। लोकमात ना पकड़े कोई डोर, झूठी दस्सी सर्ब लोकाईआ। पापां चढ़या साचे घोड़, शौह दरया राह तकाईआ। धर्म राए घर लग्गी औड़, लक्ख चुरासी दए बुझाईआ। नीला मारे पहला पौड़, सम्मत सोलां राह तकाईआ। अबिनाशी करता रिहा बौहड़, बेअन्त नाम ख़ुदाईआ। आप विछोड़े आपे लए जोड़, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। कलिजुग कूड़ा करे पुकार, नेत्र नीर वहांयदा। लक्ख चुरासी छुट्टा संसार, सगला संग ना कोए रखांयदा। नाता गया मुहम्मदी यार, चार यारी ना मेल मिलांयदा। ना कोई अमृत देवे ठंडा ठार, गुर गोबिन्द धक्का लांयदा। मदीनां मक्का पावे सार, ऐनलहक्क वेख वखांयदा। मुकामे हक्क ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। बूरा कक्का अक्ख दए उग्घाड़, एका नेत्र नैण उठांयदा। कलिजुग अग्नी तत्ती तपे हाढ़, सांतक सति ना कोए करांयदा। जीव जन्त अग्नी लग्गे नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ वेख वखांयदा। त्रैगुण माया देवे साड़, आप आपणा कर्म कमांयदा। पंज तत्त वेख अखाड़, घट घट डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप दरसांयदा। कलिजुग कूड़ा कर विहार, कूड़ी रास कमाईआ। हरि का नाम ना कोए प्यार, जगत प्यास ना कोए बुझाईआ। मनमति हंढाई दुहागण नार, साची सखी ना मेल मिलाईआ। मिल्या मीत ना कन्त भतार, साचे घर ना वज्जी वधाईआ। उपजी सपुत्री मनमति विभचार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। धरत धवल होई सेवादार, सेवक सेवा रही कमाईआ। चढ़या जोबन नौजवान वेखे मार ध्यान, धर्म राए दी धी मुटयार, वर ढूंडण एका आईआ। लक्ख चुरासी कर प्यार, एका कन्त लए मनाईआ। साधां सन्तां निउँ निउँ करे निमस्कार, गुरमुख राह खैहड़ा दिस ना आईआ। कलिजुग खेड़ा होए उजाड़, ना सके कोए वसाईआ। अबिनाशी करता आप उठाए अगम्मी धाड़, दिस किसे ना आईआ। घड़नहारा आपे घाड़, आपे भन्न वखाईआ। आप चबाए आपणी दाढ़, ना कोई दूसर संग रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, तेरा तेरी झोली पाईआ। सुत्त दुलारा हरि निरँकार, आपणा आप उपांयदा। दुष्ट दमन कर प्यार, आपणा हुक्म मनांयदा। हेम कुण्डों कढु बाहर, गुजरी कुक्ख सुहांयदा। तेग़ बहादर कर उधार,

उरध कँवल वखांयदा। आप खिड़ाए सच्ची गुलज़ार, हरि साचा वेख वखांयदा। मात गर्भ ब्रह्म धार, बाहर कुक्ख पारब्रह्म विच समांयदा। साचे घर गया जम्म, जन जननी वेख वखांयदा। पुरख अकाल आपे जाणे आपणा कम्म, आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नूर उपांयदा। चार पूत सुत दुलारा, पूरन गुर उपाया। आप वसाए विच संसारा, वेखणहार आप हो जाया। साचा मन्दिर इक्क मनारा, हरि साचे डेरा लाया। निरगुण नूर कर उज्यारा, गुजरी कुक्ख सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतार, खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आया। सुत्त दुलारा हरि उपन्नया, आपणी किरपा आपे धार। कलिजुग चढ़या साचा चन्नया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। पंच विकारे देवे डन्नया, फड़ शब्द खण्डा दो धार। चारों कुन्ट फिरे भन्नया, दहि दिशा वेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला सुत्त दुलार। साचा मेला गुरू गुर चेला, हरि गोबिन्द रूप समाया। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, निज घर बैठा आसण लाया। आदि जुगादी इक्क अकेला, कल धारी वेस वटाया। लोकमात साचा मेला, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोत निरँजण चढ़या तेला, आदि निरँजण सगन मनाया। पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल आपे खेला, घर साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द नूर नूर दरसाया। गोबिन्द नूर इलाही अल्ला, आलम उलमा अख्वांयदा। खेले खेल इक्क अकल्ला, तुलबा तालब ना कोए वखांयदा। एका वस्सया सच महल्ला, अनन्द पुरी वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा आप सुहांयदा। ऐड़ा अक्ख इक्क उग्घाड़, अनन रूप दरसाईआ। नन्ना निरगुण खेल करे करतार, जोती जोत डगमगाईआ। दद्दा दो जहानां पावे सार, अनन्द अनन्द अनन्द आप अख्वाईआ। पप्पा पूरन गुर अवतार, लोकमात वज्जे वधाईआ। रारा रेख वेखे सर्ब संसार, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। अनन्द पुर धाम न्यार, दरगाह साची इक्क रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ पहरेदार, दूसर कोए दिस ना आईआ। गोबिन्द सूरा कर विचार, आप आपणी दया कमाईआ। लोकमात महल्ल दए उसार, पुरी अनन्द नाउँ धराईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, सोए सिक्ख रिहा उठाईआ। साचा मीता मीत मुरार, आपणा आप वखाईआ। आप आपणा कर त्यार, हरिजन मेल मिलाईआ। पंचम तन कर श्रृंगार, पंचम दए वड्याईआ। पंचम अमृत ठंडा ठार, गुर शब्दी विच टिकाईआ। शब्द गुर वड मेहरवान, आदि जुगादि अख्वाईआ। त्रैगुण तेरा रूप महान, गुर गोबिन्द लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। त्रैगुण तेरा कलिजुग नाता, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। करे खेल पुरख बिधाता, जीव जन्त भेव कोए ना पांयदा। सृष्ट

सबाई पिता माता, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग देवणहारा दाता, सच भण्डारा इक्क वरतांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, गहर गम्भीर आप अख्वांयदा। आपे लहिणा देणा चुकाए पूर्ब मस्तक माथा, कर्म जरम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वेखे साचा घर, घर साचा आप सुहांयदा। त्रैगुण तेरा रंग चलूल, हरि साचा वेख वखांयदा। आदि अन्त ना जाए भूल, जुग जुग कर्म कमांयदा। आपे जाणे आपणा मूल, आपे मूल चुकांयदा। आपे बरसणहारा फूल, आपे अग्न मेघ वरखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे एका वर, एका चौका रूप वटांयदा। एका गुर इक्क अवतार, जुग चौथे वज्जी वधाईआ। चौथा जुग होए ख़बरदार, गुर गोबिन्द आप कराईआ। सेवा लाए हरि करतार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साची बिन्द कर त्यार, रक्त बूंद समाईआ। सागर सिन्ध खेल न्यार, साची धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका चौका एका दर, एका वेख वखाईआ। इक्क अकल्ला एकउँकार, दूजी शब्द वज्जे वधाईआ। तीजा नेत्र इक्क उग्घाड़, चौथे पद रिहा समाईआ। एका गुर गुर करतार, गोबिन्द नाउँ धराईआ। चौथे युग कर प्यार, चारे सुत्त दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आपे जाणे ना कोई लेख लिखाईआ। चौथे जुग चार दुलारे, गोबिन्द मेल मिलाया। लहिणा देण चुकाए मुहम्मदी यारे, एका चौका चौदां सद वेख वखाया। करे खेल अगम्म अपारे, मति बुध भेव ना राया। वेखणहारा चार मुनारे, चारे कूटां डेरा लाया। सतिजुग त्रेता खेल न्यारे, द्वापर कलिजुग आप सुहाया। अजीत मेला सिँघ जुझारे, साची रीती आप दिखाया। ज़ोरावर सिँघ फतहि नगारे, साचा डंका इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, युग चौथे वेस वटाया। सुत्त दुलारे घर उपजा, गुर गोबिन्द रंग चढ़ाया। आपणा भाणा आप समझा, आपे वेख वखाया। बस्त्र गहिणा तन सजा, सोलां कलीआं श्रृंगार लगाया। नेत्र नैणां कजला पा, नाम धारा इक्क वखाया। साचे सज्जणा मेल मिला, दर घर साचा इक्क सुहाया। नाम खण्डा तन लटका, तन गात्रे आप वखाया। बाली बुध भेव चुका, इकबाली मुखों आप कराया। नाम दलाल विच रखा, सीस दस्तार सजाया। केसर टिक्का तिलक लगा, ब्रह्म आहूती नाल मिलाया। वड्डा निक्का कोई जाणे ना, निक्का वड्डा बण अख्वाया। फिक्का रस कोई माणे ना, झूठा फल ना कोए खवाया। जगत माया कोई पुण छाणे ना, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, दर घर साचा इक्क सुहाया। चार सुत्त चार दीवार, चार कुन्ट उपजाईआ। गुर गोबिन्द होया सेवादार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरसिख रक्खे अद्धविचकार, बाहर रहिण कोए

ना पाईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यार, जूठा झूठा डंक वजाईआ। सतिगुर पूरा कर प्यार, साचे सुत्त करे कुड़माईआ। अबिनाशी अचुत्त जोत उज्यार, साची सखी वेख वखाईआ। साचा सेहरा अपर अपार, निगह मेहर नाल बंधाईआ। आदि निरँजण कर प्यार, आप आपणे घर बुलाईआ। मेल मिलावा अपर अपार, नारी कन्ता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेखे दर, हरि जोत अजीत जुझार लोकमात विआवण आईआ। लोकमात साचे लाड़े, हरि साचा वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम खारे चाढ़े, दर साचा इक्क सुहांयदा। गुरमति उत्तों पाणी वारे, मनमति मुख शरमांयदा। रंग बसन्ती अपर अपारे, फुल फुलवाड़ी गुरसिख आप खिलांयदा। आपणे पौड़े आपे चाढ़े, आप आपणा दर सुहांयदा। दूती दुष्ट ना कोई मारे, ना कोई मार मिटांयदा। आपे रक्खे नीआं अद्धविचकारे, आपे गढ़ी चमकौर सुहांयदा। आपे जाणे तिक्खी धारे, तिक्खी धार आप रखांयदा। कलिजुग तेरे अन्त प्यारे, गुर गोबिन्द संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेखे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। चारे सुत्त सूर बलवान, धर्म निशान हथ्थ उठाया। हरि का भेव जुग जुग महान, वेद कतेब किसे ना गाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, अञ्जील कुरान मता पकाया। शास्त्र सिमरत होण हैरान, मति बुध भेव दिस ना आया। गुर गुर गीता इक्क ज्ञान, अठारां ध्याए अड्ड दस डेरा लाया। खाणी बाणी इक्क ज्ञान, एका मन्त्र वेख वखाया। शब्द गुर गुण निधाण, गुणवन्ता नाउँ रखाया। पंचम पंचम कर परवान, चार यारी मेट मिटाया। चौथे जुग दर दरबान, दर दरवेशा दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां राह चलाया। दो जहानां साचा राह, गुर गोबिन्द इक्क चलांयदा। चार वरनां एका धाम बहा, अमृत जाम इक्क प्यांअदा। सो पुरख निरँजण नाउँ रखा, हँ ब्रह्म इक्क दरसांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, सुत्त दुलारे साचे मार्ग आप रखांयदा। अजीत जुझारे साचा रंग, हरि साचे आप चढ़ाया। आप बहाए सच पलँघ, सच सिँघासण वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम मंगी मंग, देवणहार हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक दूआ दूआ एका रंग रंगाया। रंगया रंग पुरख करतारा, दो सुत्त मिली वड्याईआ। सतिजुग तेरा सच जैकारा, गुर नानक रसना गाईआ। अन्तिम वेले पावे सारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निहकलंक नरायण नर लै अवतारा, सोहँ शब्द आप अलाईआ। अजीत जुझार इक्क प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द खेल करे न्यारा, दिस किसे ना आईआ। छोटा बाला बाल निधान, आपे लेखे लाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, प्रभ अबिनाशी खेल खिलाया। साढे तिन्न हथ्थ बणाए जगत मकान, कलिजुग लहिणा दए चुकाया। किरपा करे आप भगवान, घर साचे मेल मिलाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाया। आपे नीहां हेठ रिहा रक्ख, आप लए उपजाईआ। आपे लोकमात करे प्रतक्ख, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। कलिजुग वंड करी वक्ख, मन जित वज्जी वधाईआ। शब्द शहीद ना लथ्था किसे सत्थ, ना कोई सथ्थर हेठ विछाईआ। गुर गोबिन्द ना नेत्र वगाया अथ्थ, गुर संगत गया समझाईआ। कलिजुग जीव धीर ना सके रक्ख, पुत्त दे रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार, साख्यात खेल खिलाईआ। साची खेल खेलणहारा, कलिजुग अन्तिम रचन रचांयदा। छोटा बाला कर उज्यारा, साची सेव कमांयदा। आपे खिच्चे चरन दुआरा, साध संगत संग रखांयदा। इक्क उपजाए जगत मुनारा, रविदास चमारा नाल रलांयदा। सूरज चन्न करन निमस्कारा, दोए दोए सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द सुत्त दित्ता वर, कलिजुग अन्तिम लेख मुकांयदा। बाल निधाना फतिह डंका एका एक वजाईआ। खेले खेल बार अनका, हरि गोबिन्द वड वड्याईआ। बिन गुर पूरे लक्ख चुरासी तेरा कोई ना कढ्ढे शंका, ज्ञानी ध्यानी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्का निक्की धार रखाईआ। निक्की धार साची सिक्खी, नौ दर पार कराईआ। किसे हथ्थ ना आए मुनी रिखी, जपी तपी हठी सती रहे कुरलाईआ। आपे धार रक्खी तिक्खी, दो धारा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सेवा आप कमाईआ। सेवक सेवादार गोबिन्द, साची सेव कमांयदा। दाता जोद्धा सूर वड मृगिन्द, गहर गम्भीर समांयदा। करे खेल भारत हिन्द, हिन्दवाइन वेख वखांयदा। अथाह डूँघा सागर सिन्ध, बेपरवाह नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत्त दुलारा वेख वखांयदा। सुत्त दुलारा नौजवाना, बाला बाल उपाईआ। कलिजुग अन्तिम रंग सत्त झुलाए इक्क निशाना, नौ खण्ड साया हेठ रखाईआ। नौ दर वेखे जगत मकाना, घर दसवें मेला साचे माहीआ। गुरमुखां बन्न्हे साचा गाना, हरि साचा तन्द उठाईआ। गुर गोबिन्द मर्द मरदाना, एका नेत्र वेख वखाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ दुकाना, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। वाह वाह गुरू गुर आप पछाना, इष्ट देव गुर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे युग तेरा घर, अन्तिम दए मिटाईआ। चार सुत्त चार यारी, चारों कुन्ट ख्वारया। चारे तोड़े गढ़ हँकारी, चारे मारे मारया। एका चौका चौदां हट्ट खलारी, चौदां तबकां फोल फोला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत्त दुलारे लए वर, घर साचे मेल मिलाईआ। हरि शब्द गुर सहारा, सतिगुर नाम धराईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, घर साचे मेल मिलाईआ। आपे बख्शे बख्शणहारा, पिछला लहिणा मूल चुकाईआ। अग्गे देवे नाम अधारा, चरन प्रीती इक्क सखाईआ। साचा वणज

कराए सच वणजारा, नाम अनमुल्ला झोली पाईआ। साचे कंडे तोले तोलणहारा, नानक निरगुण गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहार पुरख समरथ, आदि जुगादि अख्वाया। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, जो जन सरनाई आया। सगल विसूरे जायण लथ्थ, आत्म अन्तर नेत्र दर्शन पाया। हउमे गढ़ जाए ढठ्ठ, साची रीती इक्क वखाया। उलटी गेड़नहारा लट्ठ, लक्ख चुरासी दए कटाया। आप रखाए सर सरोवर एका तट्ट, घाट किनारे मेल मिलाया। दूई द्वैती मेटे फट, अमृत आत्म मुख चवाया। शब्द नगारे लाए सट्ट, अनहद ताल वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे भुल्ले लए तराया। सृष्ट सबाई भुल्लणहारी, अनभुल आप अख्वाए। जो जन मंगे बण भिखारी, साची वस्त झोली पाए। मिले मेल नर निरँकारी, निरगुण निरगुण निरगुण नज़री आए। नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकारी, आसा तृष्ना ना मूल सताए। जन भगतां पैज रिहा संवारी, राए धर्म ना दए सज़ाए। लेखा लिखे ना चित्रगुप्त लिखारी, लाड़ी मौत ना नैण मटकाए। गुरसिख अन्तिम मेले जोत निरँकारी, जोती जोत विच टिकाए। धाम सुहाए बहाए इक्क न्यारी, सचखण्ड दुआरा वेख वखाए। तिन्नां लोकां पार किनारी, जो जन ब्रह्म दर्शन पाए। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा गुरसिख निउँ निउँ करन निमस्कारी, सतिगुर आपणी उंगली आपे लाए। दरगाह साची देवे सच्ची सरदारी, साचे तख्त सुहाए। लोकमात वेखे कलिजुग अन्तिम फुल फुलवाड़ी, गुर गोबिन्द हथ्थीं लाए। फड़ फड़ पौड़े रिहा चाढ़ी, जो जन वर घर साचे साचा साजन वेखण आए। कलिजुग अन्तिम पक्की हाढ़ी, हरि किरसान एक वक्त वढाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे आपणा वर, आवण जावण पतित पावन लक्ख चुरासी जम की फाँसी बंधन बन्दी तोड़ आप कटाए।

✪ ३ फग्गण २०१५ बिक्रमी बलदेव सिँघ दे घर दया होई पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

निरगुण रूप श्री भगवाना, आदि पुरख अख्वांयदा। आदि निरँजण खेल महाना, हरि आपणा आप करांयदा। खेले खेल दो जहानां, आदि जुगादि भेव ना आंयदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, शब्द अनादी इक्क तराना, एका धुन रखांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, सच सिँघासण आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, साचा तख्त ताज सुहांयदा। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाना, आपे हुक्म चलांयदा। रवि ससि जोत महाना, निरगुण आपणी आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। निरगुण धार एकउँकार, आपणी आप चलाईआ। इक्क

अकल्ला भेव अपार, लेखा लिख्त ना कोए लिखाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह आप अख्वाईआ। थिर घर बैठा सच दरबार, सच सिँघासण आसण लाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, इक्क प्रकाश रखाईआ। कमलापाती मीत मुरार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सति सरूपी साची कार, हरि साचा आप कराईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी बेपरवाहीआ। आदि जुगादि हरि भगवन्त, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे महिमा जाणे अगणत, लेखा गणत ना कोए गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण रूप हरि सुल्तान, एका एक मेहरवानया। आपे वेखे सच निशान, आप झुलाए दो जहानया। आप उपाए दया कमाए आपे रक्खे आपणी आण, आपे होए जाणी जाणया। आपे विष्न ब्रह्मा कर प्रधान, सेवक लाए नौजवानया। आपे शंकर शिव देवे दान, रूप अनूप आप दरसानया। आपे गगन मण्डल बैठ मकान, गगन गगनंतर वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल महानया। आदि जुगादि करनेहारा, करता करनी कमाईआ। दूजा ना कोई पावे सारा, दिस किसे ना आईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, प्रभ बैठा आसण लाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यारा, एका एक अख्वाईआ। ना कोई दूसर मीत मुरारा, ना कोई संग रखाईआ। आप आपणा कर पसारा, निराकार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। आदि शक्ति नूर उजाला, हरि नूरो नूर उपांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दीनां नाथ आप अख्वांयदा। करे कराए आप प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ रखांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता सुत्ते प्रकाश, आपणा आप रखाईआ। आपे वेखे खेल तमाश, खेल खिलंता नाउँ धराईआ। मण्डल मण्डप पावे रास, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, जल थल महीअल रूप वटाईआ। आदि अन्त ना होए विनास, ना मरे ना जाईआ। एका हरि शाहो शाबास, शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत हरि हरि नूर, आपणा आप उपाईआ। सर्ब कल आपे भरपूर, अकल कल वड्याईआ। आपे वसे नेड़े दूर, दूर नेड़ा ना कोए जणाईआ। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, हरि दर बैठा अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, स्वच्छ सरूप आप हो जाईआ। पारब्रह्म पुरख आदेसा, एका वेस सुहांयदा। निरगुण जोत जुग जुग वेसा, लोकमात रखांयदा। देवणहारा सच संदेसा, शब्दी डंक वजांयदा। नर नरायण नर नरेशा, निरगुण

आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि पुरख अलख अभेवा, एका एक अख्वाईआ। आपे होए वड देवी देवा, वासदेव वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी सेवा, जुग जुग करता आप कराईआ। आप उपाए आपणा मेवा, अमृत फल आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। रचनहार पुरख समरथ, अकल कला कलधारीआ। आपे जाणे आपणी त्रैगुण वथ्थ, त्रै त्रै मेल अपारीआ। आपे पंज तत्त चलाए रथ, पारब्रह्म सच्चा सिक्दारीआ। आपे जाणे महिमा अकथनी अकथ, लेखा लिखे अपर अपारीआ। आपे जाणे नाम गाथ, देवणहार जगत भण्डारीआ। आपे लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूरन गुर आप अवतारीआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव वसे साथ, गुर किरपा खेल अपारीआ। आपे मन्त्र नाम पूजा पाठ, चारे वेद आप लखारीआ। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, आपे अमृत भरे भण्डारीआ। आपे तीर्थ आपे ताट, तट तीर्थ आप सुहा रिहा। आपे चढ़े औखे घाट, आपे पन्ध मुका रिहा। आपे खेले खेल नटूआ नाट, स्वांगी स्वांग आप रचा रिहा। आपे वेखे चौदां हाट, दर दरबान आप अख्वा रिहा। आपे निरगुण जोती नूर ललाट, जोत निरँजण डगमगा रिहा। आपे नेड़े जाणे आपणी वाट, दूर दुराडा आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस कर, वेस अवल्ला इक्क रखा रिहा। हरि हरि वेस जग अवल्ला, आपणी बणत बणांयदा। धुर दरगाही इक्क अकल्ला, कलधार नाउँ वटांयदा। आप होए अछल अछल्ला, अछल अछल्ल वखांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा डेरा लांयदा। आपणी जोत आपे रला, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण संग रखांयदा। निरगुण शब्द निरगुण रंग, निरगुण संग रखाईआ। सति सरूपी बैठ पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। शब्द नगारा वज्जे सच मृदंग, हरि साचा आप वजाईआ। वसणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपे मुख भुवाईआ। आपे आपणीआं वंडां रिहा वंड, सन्त सुहेले लए उठाईआ। आपे खेले खेल भेख पखण्ड, आपे भगतन मीत हो जाईआ। आपे वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, जीउ पिण्ड आप अख्वाईआ। आपे होए नार सुहागण आपे दीसे रंड, कन्त कन्तूहला आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण जोत हरि मेहरवान, एका एक अख्वाईआ। भगत वछल श्री भगवान, जुग करता वड वड्याईआ। हरिजन देवे भगती दान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। एका ब्रह्म कर पछान, एका विच समाईआ। सुरती शब्द शब्द ज्ञान, हरि शब्द करे पढ़ाईआ। आत्म अन्तर पीण खाण, अमृत आत्म इक्क वखाईआ। नौ दुआरे जगत दकान, जगत वासना विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, जुग जुग मेला साचे हरि, हरि साचा आप कराईआ। साचा मेला साजण मीत, हरि सज्जण आप करांयदा। पारब्रह्म प्रभ पतित पुनीत, पतित पावन नाउँ रखांयदा। शब्द सुणाए सुहागी गीत, नाद अनादी नाअरा एका लांयदा। ना कोई गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, हर घट बैठा डगमगांयदा। आपे जाणे आपणी रीत, हरिजन सोए आप उठांयदा। चेतन वस्सया सदा चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। साची धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतार, वेस अवेसा आप वटाईआ। लोकमात हो उज्यार, निरगुण सरगुण विच टिकाईआ। शब्द विचोला अपर अपार, साचा ढोला गाईआ। सो पुरख निरजंण ख़बरदार, हँ ब्रह्म इक्क अख्वाईआ। आप आपणा करे प्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। दाता दानी सूरा सरबंग, निराकार साकार आप हो जाईआ। आप वसे अंग संग, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग जुग खेल पारब्रह्म, हरि वड वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, जूनी रहित आप अख्वाईआ। अकाल मूर्त ना होए भंग, मात पित ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि सुहाना, साची वज्जी वधाईआ। साचा दीपक इक्क वखाना, निर्मल नूर करे रुशनाईआ। साचा तख्त इक्क सुहाना, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल आदि जुगादि वड वड्याईआ। आदि जुगादी हरि हरि खेला, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। आपे वसे रंग नवेला, आपे घट घट रिहा समाईआ। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर मन्त्र नाम आप दृढ़ाईआ। आपे होए सज्जण सुहेला, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त जुगा जुगन्त आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग करता हरि करनेहारा, सर्ब कला समरथ। आप आपणा कर पसारा, आप चलाए आपणा रथ। आपे जाणे आपणी धारा, आप जणाई शब्द महिमा अकथ। आपे पुरख आपे नारा, आपे देवे आपणी वथ्थ। आपे भगत आप भण्डारा, आपे दे कर रक्खे हथ्थ। आपे वणज आप वणजारा, आपे आपणी करे आप परख। आपे करनी करता बण संसारा, आपे लक्ख चुरासी पाए नथ्थ। आपे जीव जन्त दए आधारा, निरगुण जोती अन्दर रक्ख। आपे ब्रह्मा वेता सेवादारा, सेवा करे आप समरथ। आपे विष्नूं वंसी बण वरतारा, आपे वस्तू वस्त अन्दर देवे घत्त। आपे शंकर शंकर बण सँघारा, आपे बाशक तशका रिहा। आपे सांगोपांग कर प्यारा, सेजा बाशक बैठा खट। आपे लोकमात लै अवतारा, जुग

जुग लए सांग पल्ट। आपे भगतन मीता भगतन करे प्यारा, इक्क वखाए नाम हट्ट। आपे वसे पार किनारा, आपे चौदां लोकां मेटे फट। आपे त्रिलोकी नाथ अनाथ आधारा, आप आपणा लाहा लए खट्ट। आपे नाम नाम हो जैकारा, आपे काया मन्दिर मारे सट्ट। आपे तीर्थ तट बण किनारा, आपे अमृत देवे झट्ट। आपे जंगल जूह बण पहाड़ा, आपे डूँघी कन्दर सथ्थर बैठा घत। आपे रवि ससि सतारा, आपे जोती जगे लट लट। आपे लोआं पुरीआं बण सहारा, आपे भार रिहा चक्क। आपे धरत धवल कर पसारा, जल बिम्ब उप्पर देवे रक्ख। आपे लक्ख चुरासी कर उज्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाए बुध मन मत। आपे खोले नौ दुआरा, आपे दसवें बैठा हरि समरथ। हरिजन मेला विच संसारा, देवे दरस महिमां अकथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग चलाए आपणा रथ। रथ रथवाही पुरख बिधाता, एका एक अख्वाईआ। सृष्ट सबाई पिता माता, एका रंग रंगाईआ। देवणहारा साची दाता, सच वस्त झोली पाईआ। आप उपाए आपणी गाथा, आपे करे पढ़ाईआ। सतिजुग तेरा साचा साथा, सोइम रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। सतिजुग साचा पार उतारा, हरि साचा वेख वखांयदा। दूतां दुष्टां आप सँघारा, हरिजन साचे आप तरांयदा। नाम झूटा आप अपर अपारा, नर निरँकारा आप उपांयदा। ध्रू प्रहलादा दए सहारा, हँकारी दुष्ट खपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण वेस वटाया, लोकमात वज्जे वधाईआ। त्रेता तेरा भेख वटाया, लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। ब्रह्मा वेता सेव कमाया, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। साम रिग खेल खिलाया, रघुवंसा नाउँ रखाईआ। त्रिया त्रेता मेल मिलाया, जनक सपुत्री वड वड्याईआ। लंका गढ़ दए तुड़ाया, रावण हँकारी दिस ना आईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाया, भीलणी मुख सुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस धर, राम राम नाम वड्याईआ। राम नाम सच सुल्ताना, हरि साचे मात धराया। हरिजन मेला गुण निधाना, घर साचा इक्क सुहाया। आप चुकाए आवण जाणा, जिस जन रसना गाया। दरगाह साची साचा माणा, सच दुआरा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण आप उपाईआ। द्वापर तेरी पावे सार, दोए दोए लोचण वेख वखाईआ। वेद व्यासा कर प्यार, एका ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेल अपार, मेल मिलावा साचे माहीआ। नारद मुन खेल संसार, सगला संग निभाईआ। चार सलोक ब्रह्मा दए उचार, बारां अक्खर नाम पढ़ाईआ। पुराण अठारां इक्क आधार, चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक गणाईआ। कान्हा कृष्ना आप करतार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। सखीआं मेला

मीत मुरार, मंगलाचार इक्क वखाईआ। बणया गोला विच संसार, ग्वाला रूप वटाईआ। अन्तिम तोला तोले आपणे कंडे धार, लक्ख चुरासी आप तुलाईआ। भगतन मीता कर प्यार, बिदर सुदामां लए तराईआ। लज्जया रक्खे विच दरबार, द्रोपद सुत्त उठाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, दूती दुष्ट दए मिटाईआ। पंजां बख्शे इक्क प्यार, धर्म सुत्त नार इक्क अख्वाईआ। रथ रथवाही साचा यार, महांसार्थी आप अख्वाईआ। देवे नाम शब्द ज्ञान, गीता गोझ सुणाईआ। अठारां ध्याए कर प्रधान, अठारां अक्षूणीआं मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग लए अंगड़ाईआ। लोकमात कर पसारा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। माया ममता वणज वपारा, चारों कुन्ट फिराईआ। होए दरोही चौंह यारां, चार यारी लए उपाईआ। ईसा मूसा एका नाअरा, एका अल्फ़ सिखाईआ। गल अल्फ़ी पाए परवरदिगारा, काली चोली इक्क सुहाईआ। अल्ला हू हू नाअरा, अल्ला हू हू विच समाईआ। ख़ालक ख़लक हो उज्यारा, आप आपणा रंग वटाईआ। चौदां तबकां दए सहारा, जल्वा नूर इलाहीआ। आपे जाणे आपणी कारा, भेव कोए ना पाईआ। नानक दित्ता नाम भण्डारा, लोकमात वरताईआ। ऊँचां नीचां इक्क दुआरा, राउ रंकां इक्क सरनाईआ। आत्म ब्रह्म करे विचारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म नज़री आईआ। स्वयम रूप हरि निरँकारा, निरगुण जोत इक्क रुशनाईआ । दोइम रूप शब्द भण्डारा, हरि साचा आप वरताईआ। तीजा नैण इक्क उग्घाड़ा, हरि सन्तन मेल मिलाईआ। चौथा घर सच अखाड़ा, हरि साचा रिहा वखाईआ। पंचम मीता हरि निरँकारा, पंचम मोह चुकाईआ। छेवें छन्न ना कोई उसारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण निराकारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अटल महल्ल उच्च मुनारा, चार दीवार ना कोए वखाईआ। एका बैठा एकउँकारा, इक्क अकल्ला सहिज सुखदाईआ। जुग जुग पावे लोकमात सारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवारा, भरमी भरम रखाईआ। मनमति होए नार विभचारा, घर घर वेस कराईआ। गुर का नाम ना रसन उचारा, हरि मन्त्र ना कोए दृढ़ाईआ। घर घर झूठा झूठ पसारा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ । नानक गोबिन्द इक्क जैकारा, एका सिफ्त सलाहीआ। वरन बरन ना कोए विहारा, ना कोई वंड वंडाईआ। साचा मन्दिर गुरुदुआरा, काया काअबा इक्क वखाईआ। निर्मल जोत जगे अपारा, दिवस रैण रहे रुशनाईआ। आत्म धुंन सच्ची धुन्कारा, अनहद रिहा सुणाईआ। पंचम सखीआं गायण वारो वारा, आप आपणा ताल वजाईआ। जन भगतां अमृत देवे ठंडी ठारा, कँवल कँवला मुख चुआईआ। आपे तोड़े बजर किवाड़ा, अग्नी साड़ा दए मिटाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, हरि सज्जण सहिज सुभाईआ। आत्म सेजा साची कर पसारा, चतुर्भुज बैठा राह तकाईआ। सुरती शब्दी मेला कन्त भतारा, नारी नारा विच

समाईआ। नर नरायण इक्क आधारा, एका अंक लगाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन बूझ बुझाईआ। कलिजुग लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारा, हउमे गूढ़ी नींद सवाईआ। ग्रन्थी पन्थी करन विचारा, गा गा थक्के करन पढ़ाईआ। अञ्जील कुरान लाइन नाअरा, ऐनलहक्क ना वेख वखाईआ। पंडत पांधे बोल जैकारा, जीवां जन्तां रहे सुणाईआ। कलिजुग भुल्लया सर्ब संसारा, हरि की गत कोए ना पाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, एका लेखा गया समझाईआ। कलिजुग आयू चार लक्ख बत्ती हज़ारा, बत्ती दन्दी आपे गाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण जोत नूर करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई मारे मारा, कर्म कुकर्मां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता करनहार पुरख समरथ अकल कल धार, नर निरँकार निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका एक आप अख्वाईआ।

३ फग्गण २०१५ बिक्रमी बेला सिँघ दे घर
पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर

२५५

ज़ात पात हरि न्यारा, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। जन भगतां करे जगत प्यारा, निरगुण सरगुण वड वड्याईआ। बख्शणहारा चरन प्यारा, सरनगत इक्क समझाईआ। देवणहारा नाम भण्डारा, नाम वस्त झोली पाईआ। बणया रहे सद वरतारा, आप आपणी सेव कमाईआ। राग नाद ना पायण सारा, भेव अभेदा बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता एकउँकारा, अकल कल अख्वाईआ। मेल मिलावा सन्त दुलारा, सन्तन संग रखाईआ। एका देवे सच हुलारा, सच सुच्च वधाईआ। साचा मन्दिर वेख दुआरा, देवे दर सुहाईआ। दर दरवाज़ा खोल्ह किवाड़ा, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्दी मीता साचा लाड़ा, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा वेख वखाईआ। काया खेड़ा साचा नगर, हरि हरि हट्ट खुल्हाया। निर्मल होए कर्म उजागर, प्रभ नेत्र दर्शन पाया। नाम वणज सच सौदागर, घर वणजारा एका आया। भरे ख़ज़ाना काया गागर, गहर गम्भीर टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे ल्ए तराया। नाम ख़ज़ाना साची वस्त, गुर सतिगुर हट्ट विकाईआ। गुरमुखां देवे दस्त बदस्त, उधार ना कोए कराईआ। दिवस रैण रक्खे मस्त, नाम ख़ुमारी इक्क चढ़ाईआ। एका रंग रंगाए कीट हस्त, आप आपणी दया कमाईआ। तन पहनाए साचा बसत, बस्त्र गहिणा शब्द सुहाईआ। कीमत करते रक्खी सस्त, दोए जोड़ चरन सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। थाउँ टिकाना घर घर मन्दिर, हरि साचे आप

उपाया। आपे बहि बहि वेखे अन्दर, निज घर वासी निज घर रिहा सुहाया। दिस ना आए भागांमन्दड़, गुरमुख साचे मेल मिलाया। माया ममता होई अन्धड़, गुरू ज्ञान ना कोए जणाया। दूई द्वैती झूठा कंधड़, हउमे हँगता पर्दा पाया। मनमुख जीव जूठा झूठा गन्दड़, रसना जिह्वा ना हरि हरि गाया। भगत जनां हरि आप बख्शंदड़, फड़ फड़ गले लगाया। दो जहानां मेटे पन्धड़, पान्धी आपे बण के आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। साचा पान्धी रिहा चल, दिवस रैण प्रभातीआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, कलिजुग मारन आया झातीआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, गुरमुखां चुकाए लहिण देण बाकिया। आपणे दीपक आपणी जोती आपे बल, सच ज्ञान करे प्रकाशया। आपणे शब्द शब्दी आपे रल, आपणा ढोला गाए शाहो शाबास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतां करे बन्द खुल्हासीआ। बन्द खलासी बंधन तोड़, पारब्रह्म अख्वाया। चरन प्रीती निभे तोड़, ना तुट्टे ना कोई तोड़ तुड़ाया। सतिगुर पूरा चढ़या घोड़, शब्द डंका हथ्थ उठाया। गुरसिखां मेल मिलाए दौड़ दौड़, सोए कोए रहिण ना पाया। वेखणहारा फल मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। दरगाह साची लाया एका पौड़, एका डण्डा हथ्थ फड़ाया। सो पुरख निरँजण रिहा बौहड़, आप आपणा कर्म कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेखे लाया। लेखा लेखे जाए लग्ग, गुर सतिगुर आप लगाईआ। दरस वखाए सूरा सरबग्ग, नेत्र लोचण नैण बिगसाईआ। निरगुण जोत दीपक गया जग, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी लग्गी अग्ग, बिन हरि ना कोए बुझाईआ। तन ना दिसे किसे तग, तन तड़ाग ना मात बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेख वखाए सर्ब लोकाईआ। सर्ब लोकाई बैठा लुक, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुखां वखाए आपणा मुख, मुखड़ा अलख सलांहयदा। आवण जावण कट्टे दु:ख, घर साचा इक्क सुहांयदा। ना मानस ना दिसे मानुख, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। सन्त सुहेले आपणी गोदी लए चुक्क, बाल अञ्याण गोद उठांयदा। सतिगुर बूटा ना जाए सुक्क, हरया सिंच अमृत आप करांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण रूप शाहो रूप सिँघ शेर शेर रिहा बुक्क, कलिजुग ढोंग फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए रक्ख, आपे कीमत पाए लक्ख, लक्खों कक्ख आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार तरांयदा। हरिजन उतरे पार किनारा, गुर सतिगुर आप कराईआ। नाम चप्पू सच सहारा, हरि साचा आपे लाईआ। खेवट खेटा कर प्यारा, काया बेड़ा रिहा चलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुत्त दुलारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। दर घर वेखे धाम न्यारा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आर पारा, जन भगतां देवे चरन सहारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ।

✪ ३ फग्गण २०१५ बिक्रमी अवतार सिँघ दे घर पिण्ड काउंके ज़िला अमृतसर ✪

एकउँकार हरि सुल्तान, पारब्रह्म अभेद्या। अलख निरँजण वाली दो जहान, आदि जुगादि अछल अछेद्या। जोती नूर श्री भगवान, भेव ना पायण चारे वेद्या। आदि जुगादी इक्क निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी विद्या। पुरख अबिनाश सर्ब जीअ दाता, एका एकउँकारया। खेले खेल पुरख बिधाता, अलख अगोचर अगम्म भेव न्यारया। जुगा जुगन्तर बन्ने नाता, आप आपणा खेल खिला रिहा। लक्ख चुरासी पिता माता, आप आपणे अंग समा रिहा। बैठा रहे इक्क अकांता, अकल कला वरता रिहा। जगत खेल दिवस राता, दीन दयाल आप करा रिहा। आप जणाए आपणी गाथा, शब्दी शब्द नाउँ धरा रिहा। सति सतिवाद चलाए राथा, रथ रथवाही दिस ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगा रिहा। निरगुण धार पुरख करतारा, करता करता आप अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। शब्द डंका अपर अपारा, हरि हरि का नाउँ वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, आलस निन्दरा सर्ब गवांयदा। रवि ससि सतारा, मण्डल मण्डप फेरा पांयदा। गगन पातालां इक्क हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, आदि जुगादि डगमगांयदा। सच सिँघासण अपर अपारा, थिर घर साचे आप वछांयदा। शाहो भूप सच सिक्दारा, हरि साचा आसण लांयदा। तख्त ताज सुहाए इक्क दुआरा, बंक दुआरी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, निरगुण निरगुण विच समांयदा। निरगुण रूप सच सिक्दार, एका एकउँकारया। खेले खेल आप करतार, आपणी कीमत करता आपे पा रिहा। दर दरवाजा खोल्ह किवाड़, आप आपणा राह चला रिहा। सति सरूपी पहरेदार, बिन रंग रूपी सेव कमा रिहा। इक्क अकल्ला ख़बरदार, सच महल्ला आप सुहा रिहा। उच्च अटल कर त्यार, निज घर आपणा आप उपा ल्या। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण इक्क अख्वा रिहा। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल तमाशा, जागरत जोत इक्क वखांयदा। चौदां लोक मण्डल रासा, आप आपणी रास वखांयदा। लक्ख चुरासी पवण स्वासा, पंज तत्त डेरा लांयदा। घट घट अन्दर रक्खे वासा, दिस किसे

ना आंयदा। शब्द सुहाए पृथ्मी आकासा, नाम डोरी तन्द बंधांयदा। आपणी करे आपे पूरी आसा, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। आपणा रक्ख सच भरवासा, आप आपणा ताल वजांयदा। आपणा आप होए दास दासा, सेवक सेवा आप कमांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जन्म मरन ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा कर पसारा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी काया चोला, त्रैगुण ब्रह्म कुड़माईआ। पंचम वेखे साचा डोला, विष्नूं सेव कमाईआ। अन्तिम खेले आपणा होला, शंकर हत्थ वड्याईआ। अबिनाशी करता एका तोला, साचा कंडा हत्थ उठाईआ। आदि अन्त रहे अडोला, डोल कदे ना जाईआ। आपणा नाम रखाए मौला, परवरदिगार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निरगुण दाता हरि भगवाना, अकल कला कल धारीआ। खेले खेल दो जहाना, जोद्धा सूरबीर बली बलकारीआ। लक्ख चुरासी देवे दाना, पारब्रह्म ब्रह्म उपजा रिहा। सति सरूपी बद्धे गाना, मन मति बुध विच लगा रिहा। सच वखाए सच मकाना, घर साचा आप सुहा रिहा। नौ दर वेखे आप दुकाना, नौ दर मुख खुल्ा ल्या। दस दस मेला गुण निधाना, गर्भवास वेस वटा ल्या। रक्त बूंद लेखे लाणा, लेखा आपणा आप चुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ धरा ल्या। निरगुण नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप उपांयदा। आपे मीता मीत मुरार, मीत मुरारी आप अख्वांयदा। आपे मेल मिलाए दर दरबार, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। आपे बोले नाम जैकार, शब्द जैकारा इक्क अल्ांयदा। आपे भरे सति भण्डार, नाम सति आप अख्वांयदा। आपे बख्शे अमृत ठंडी ठार, सर सरोवर आप अख्वांयदा। आपे निरगुण जोत करे उज्यार, जोत निरँजण रूप वटांयदा। आपे धुन अनादी सच्ची धुन्कार, अनहद राग अल्ांयदा। आपे सुन्न अगम्म रिहा पसार, अन्ध अन्धेर आप वखांयदा। आपे दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखांयदा। आपे सचखण्ड बैठा हो त्यार, सच समग्री इक्क रखांयदा। अलक्ख निरँजण खेल न्यार, अलख अलखणा भेव ना आंयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आप आपणी आप करांयदा। पिता पूत अम्मी अंमड़ा ना कोई प्यार, भैण भाई ना कोई वखांयदा। निरगुण जोती इक्क निरँकार, निरगुण रूप आप अख्वांयदा। निराकार कर आकार, साकार रूप वटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, परम पुरख अख्वांयदा। लोकमात कर विचार, जीवां जन्तां वेख वखांयदा। धरत धवल पावे सार, जल बिम्ब फोल फोलांयदा। कँवल नाभ वेख भण्डार, घर घर अमृत मुख चुआंयदा। झूठी क्रिया वेखे नौ दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलांयदा। सत्ता दीपां साची धार, सति पुरख निरजंण आप जणांयदा। बोध अगाधी खेल अपार, शब्द अनादी इक्क रखांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी दए आधार, आप आपणा विच रखांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा इक्क चलांयदा। निरगुण धार पारब्रह्म, आपणी आप चलाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ फेर ना आईआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। नेत्र नीर ना रोए छम्म छम्म, बत्ती दन्द ना कोए गणाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। आपे रवि ससि सूरज चाढ़े चन्न, आपे लए छुपाईआ। आपे चौदां लोकां देवे डन्न, आपे चौदां हट्ट खुल्हाईआ। आपे लोआं पुरीआं आकाश प्रकाशा बेड़ा देवे बन्न्ह, आपे रिहा रुढ़ाईआ। आपे लक्ख चुरासी जनणी जणे जन, आपे आपणे विच समाईआ। आपे राग अनादि सुणाए कन्न, आपे अन्दर मन्दिर बन्द रखाईआ। आपे त्रैगुण माया पंज तत्त, त्रै वास जाल बंधाईआ। आपे वस्सया छप्पर छन्न, आपे महल्ल अटल सुहाईआ। आपे वस्सया जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे डेरा लाईआ। आपे वस्सया डूँघी डल, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। आपे थिर घर सच सिँघासण बैठा मल्ल, आपे कीटां अन्दर डेरा लाईआ। आपे आपणी जोती दीपक गया बल, अन्ध अन्धेर आप अख्वाईआ। आपे शब्द शब्दी गया रल, आपे शब्दी डंक सुणाईआ। आपे होए अछल अछल्ल, अछल अछेदा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार शब्द जैकार, एका नाअरा लाईआ। शब्द नाअरा सच जैकार, आदि जुगादि लगांयदा। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। लोकमात लै अवतार, आप आपणा नाउँ रखांयदा। त्रै त्रै मेला विच संसार, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपति सोया आप उठांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, हर घट आपे डेरा लांयदा। आपे करे पार किनार, आपे विच रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, ख़ालक ख़लक आप अख्वांयदा। ख़ालक ख़लक हरि मखलूक, एका नाम ख़ुदाईआ। सदा बांग सुणाए आपणी कूक, एका अल्ला अलाहीआ। आपे मारे आपणी फूक, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता पुरख समराथ, पारब्रह्म अख्वाया। आप चलाए आपणा राथ, ना कोई दूसर संग रखाया। आदि जुगादी साची गाथ, साचा नाउँ धराया। आपे जाणे पूजा पाठ, आपे मार्ग लाया। आपे लेखा लाए तीर्थ ताट, तट किनारा आप सुहाया। आपे वसे काया घाट, औखी घाटी आप चढ़ाया। आपे विके हाटो हाट, सतिगुर हट्ट इक्क खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी बणत बणाया। बणत बणा हरि बनवारी, आपणी कल वरतांयदा। पारब्रह्म गुर बण अवतारी, लोकमात वेख वखांयदा। भगत भगवन्त मीत मुरारी, आप आपणा मेल मिलांयदा। साध सन्त सोहिण दुआरी, घर साचा इक्क वखांयदा। देवे दात शब्द

भण्डारी, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। हउमे हँगता कट्ट बीमारी, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। दिवस रैण रहे ख़ुमारी, एका जाम प्यांअदा। बैठा रहे दर दुआरी, दर दरवेश आप अख्वांयदा। जुग जुग जाणे आपणी कारी, सतिजुग त्रेता पार करांयदा। रावण तोड़े गढ़ हँकारी, लंकासा कोट वेख वखांयदा। द्वापर तेरी खेल न्यारी, मोर मुकट सीस टिकांयदा। खाली हथ्थीं पार उतारी, तीर कमान ना कोए रखांयदा। शब्द ज्ञान वड्डा बलकारी, अर्जन हथ्थ फड़ांयदा। रथ रथवाही कर सवारी, महांसार्थी नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस इक्क अकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। लोकमात वेख महल्ला, आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपे जाणे आपणी चाला, चाल निराली इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी बणे दलाला, साधां सन्तां ल्ए मिलाईआ। भगत वछल सदा कृपाला, प्रितपालक नाउँ रखाईआ। गुरमुख फल लगाए डाला, हरिजन ल्ए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराईआ। खेल खिलंता हरि करतारा, जुगां जुगन्त अख्वांयदा। भेख वटंता विच संसारा, भेव कोए ना पांयदा। निरगुण जोती जोत जुगन्ता नूर उज्यारा, दिवस रैण डगमगांयदा। अकल कल धारा श्री भगवन्ता खेल न्यारा, लेखा लिख्त ना कोए लिखांयदा। शब्द अगम्मी भर भण्डारा, हरि वरतंता निराकारा, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप अपरम्पर जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर जागरत धार, जगत जोगीशर आप रखाईआ। मुनी मुनीशर पावे सार, साधक बुध वेख वखाईआ। तपी तपीशर ल्ए अधार, तृखा तिप्त कराईआ। हरी सती कर प्यार, साचा सति इक्क बुझाईआ। वा तत्ती वेखे संसार, जुग जुग बेपरवाहीआ। नाम रत्ती कर वरतार, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। देवे मती हरि गिरधार, मति मतवाली आप समझाईआ। बुध बिबेकी ख़बरदार, आपे रिहा उठाईआ। मनुआ तोड़े फड़ हँकार, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। शब्दी देवे शब्द प्यार, शब्द गुर शब्द पढ़ाईआ। सुरती मेला सुरत दुआर, सुरत सुरत वखाईआ। जूनी रहित किरपा धार, राज जोग इक्क वखाईआ। अकाल मूर्त हो त्यार, लोकमात निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग दाता बेपरवाहीआ। जुग दाता हरि भगवन्तड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। घर आपणा आप सुहंदड़ा, भेव ना पाए साध सन्त। जुग जुग आपणा वेस वटंतड़ा, खेले खेल नारी कन्त। गुर पीर आप अख्वंदड़ा, पंज तत्त काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। निरगुण धारा विच रखंदड़ा, आप बणाए ब्रह्म पारब्रह्म बणत। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, दीपक जोती जोत जगंत। धुन अनादी इक्क वजंदड़ा, शब्द सुहागी सुणाए छंत। कलिजुग कूड़ा वेख वखंदड़ा, महिमा गणत अगणत। ईसा मूसा हुक्म सुनंदड़ा, काला सूसा रंग रंगत। चार यारी जोड़ जुड़ंदड़ा, संग मुहम्मद

वेख वखंत। अल्ला राणी नाल प्रनंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस कर, खेले खेल आदि अन्त। आदि अन्त हरि खेल खिलंदड़ा, भेव अभेद छुपायो। ब्रह्मा वेद ना भेव खुलंदड़ा, चारे मुख रिहो गायो। जोगी जपी ना वेख वखंदड़ा, थिर घर बैठा डेरा लायो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलख अभेव वड देवी देव निहकेव आप अख्वायो। भेव अभेद अकल कल धारा, निरगुण नूर उपांयदा। आदि पुरख अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आपे रचनहार सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। आपे ब्रह्म पारब्रह्म कर उज्यारा, अमृत अमृत मुख चवांयदा। आपे चार वेद बण लिखारा, आपणी वंड वंडांयदा। आपे गुर पीर अवतारा, साध सन्त आप अख्वांयदा। आपे भगत भगती हो उज्यारा, नित नवित्त लज्जया आप रखांयदा। आपे नाम शब्द तेज़ कटारा, साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आपे इष्ट देव हो उज्यारा, आप आपणा इष्ट कमांयदा। आपे अष्टभुज सिँघ अस्वारा, खड़ग खण्डा कटार आप चमकांयदा। खेले खेल पुरख करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपणा कर, निरगुण धारी धार बंधांयदा। धार अवल्ली जोत अकल्ली, आदि जुगादि चलाईआ। सूरा बली वली छली, अछल अछल्ल वखाईआ। निहचल धाम अटली साची गली, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। दीपक जोती बली जल थल महीअल रली, दिस किसे ना आईआ। सचखण्ड दुआरे पली, घर आपणे फली, लोकमात फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, कलिजुग वेस वटाईआ। कलिजुग वेस हरि निरँकार, नानक निरगुण जोत जगाईआ। सति सति भर भण्डार, सति सति विच टिकाईआ। मेल मिलाए सच दुआर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। निरगुण जोत जोत उज्यार, नानक निरगुण वेख वखाईआ। दोहा मेला धाम न्यार, दिस किसे ना आईआ। एकउँकारा मीत मुरार, नानक मिल्या बेपरवाहीआ। चरन कँवल ढहि प्या दुआर, एका मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सो पुरख निरँजण बूझ बुझाईआ। वर घर पाया इक्क करतार, नारी कन्त रूप वटाईआ। पुरख अकाल बणया सच भतार, नानक नार रूप अख्वाईआ। वज्जी वधाई धुर दरबार, ना वेखे जीव लोकाईआ। वेद कतेब ना पायण सार, उच्च अथाह बेपरवाह हरि मलाह, नानक हरि होई कुड़माईआ। सच दुआरे चढ़या चा, पाया पुरख बेपरवाहीआ। एका ढोला ल्या गा, सोहँ शब्द आप अलाईआ। नानक निरगुण निरगुण विच रिहा समा, पारब्रह्म रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण बोला निरगुण तोला निरगुण चोला दए तजाईआ। साचे घर बोल जैकारा, नानक हरि हरि गाया। सोहँ शब्द अपर अपारा, थिर घर मेला बेपरवाहया। एका दूजा पार किनारा, तीजा दर रहिण ना पाया। चौथे पद पुरख अपारा,

घर बैठा राह तकाया। पंचम मिल्या मीत मुरारा, पंचम मोह चुकाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहारा, निरगुण बैठा जोत जगाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण निराकारा, निरगुण निरगुण निरगुण आप अख्वाया। नानक मिल्या इक्क दुआरा, दूसर हथ्थ किसे ना आया। पुरख अबिनाशी पावे सारा, आप आपणी बूझ बुझाया। तिन्नां लोकां वस्सया बाहरा, चौदां चरनां हेठ दबाया। रवि ससि ना कोए सितारा, मण्डल मण्डप ना कोए वखाया। ज़िमी अस्मान ना कोए पाड़ा, ब्रह्मा विष्न शिव ना सेव कमाया। त्रैगुण ना लग्गा कोए अखाड़ा, अवण गवण ना डेरा ढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता एका वर, तेरा मेरा मेरा तेरा एका रूप समाया। सोहँ शब्द सतिगुर नानक गा, सचखण्ड सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, देवे वड वड्याईआ। अन्दर मन्दिर बन्द दए करा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाईआ। निरगुण विचोला आप अख्वा, साची सेव कमाईआ। साचा ढोला दए सुणा, नानक सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। तेरा लहिणा तेरी झोली देवे पा, वार थित आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ बोला निरगुण तोला नानक ढोला, काया चोला ना कोए रखाईआ। सोहँ शब्द बन्द भण्डारा, हरि आपणे हथ्थ उठाया। नानक देवे इक्क सहारा, एका बूझ बुझाया। सति नाम मन्त्र अपारा, लोकमात वेख वखाया। चार वरनां बण वणजारा, जीवां जन्तां दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धर, आप आपणा खेल खिलाया। सोहँ शब्द सच भण्डारा, सति पुरख हथ्थ रखांयदा। नानक देवे इक्क आधारा, एका मन्त्र दृढ़ांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, आपणा भेव खुल्ांयदा। कलिजुग अन्तिम खोल्हे सच दुआरा, सतिजुग साचा राह चलांयदा। तेरा लहिणा दए आधारा, पिछला लेखा आप मुकांयदा। पंज तत्त करे पार किनारा, काया तत्त ना कोए वखांयदा। सरगुण छड्ड विच संसारा, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण निरगुण लए भण्डारा, निरगुण सेव कमांयदा। सोहँ शब्द करे वरतारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। निहकलंक लै अवतारा, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। नाम सति सति वरतारा, नानक नाम जणाया। एका जोती दस अवतारा, लेखा लेख लखाया। अर्जन मीता हरि निरँकारा, बोध ज्ञान वरताया। शब्दी शब्द भर भण्डारा, ग्रन्थ गुरू उपाया। सिख्या देवे सर्ब संसारा, वरन बरन ना कोए रखाया। ऊँचां नीचां इक्क सहारा, जो जन सरनाई आया। खुल्ल्हे ताक बन्द किवाड़ा, जिस जन शब्दी शब्द गुर गाया। मिले मेल प्रभ साचे लाड़ा, दर घर साचा वेख वखाया। कलिजुग काया लग्गी अग्ग तत्ती हाढ़ा, ना कोई सके मात बुझाया। हउमे हँगता बण अखाड़ा, जगत स्यासत वेस वटाया। लुट्टी जाए धर्म दिन दिहाड़ा, जीव जन्त ना सके बचाया। जोती जोत सरूप

२६२ ०८

हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, आप आपणा लेख चुकाया। आपणा लेखा आप चुकाए, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। जीव जन्त कोई भेव ना पाए, साध सन्त रहे सभ गाईआ। वेद पुराण सिमरत शास्त्र ना गणत गणाए, अञ्जील कुरान ना तोल तुलाईआ। खाणी बाणी राह बणाए, अभेव अभेदा भेव ना राईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाए, पंज तत्त करे रुशनाईआ। गोबिन्द लेखा लेख लिखाए, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ी शाही, शाह सुल्ताना दए सज़ाईआ। अन्तिम आए साचा माही, बेपरवाही नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, नूरो नूर डगमगाईआ। नूर उजाला गुर गोपाला, दीन दयाला आप अख्वांयदा। कलिजुग खेले खेल निराला, अवल्लड़ी चाला दिस किसे ना आंयदा। तोड़नहारा जगत जंजाला, शब्द वजाए साचा ताला, राग अनादी इक्क रखांयदा। नाम धन सच्चा धन माला, गुरसिखां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक आप अख्वांयदा। संग रखाए काल महांकाला, आदि जुगादी इक्क दलाला, एका कर्म कमांयदा। लक्ख चुरासी फल वेखे डाल्हा, थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाला, लोआं पुरीआं फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए जोत जगाए, आदि पुरख अबिनाशया। लोआं पुरीआं फेरी पाए, ब्रह्मा विष्न शिव उठाए, खेले खेल पृथ्मी अकाशया। देवत सुर सोया रहिण ना पाए, गण गंधर्ब अक्ख खुल्हाए, प्रगट होए शाहो शाबास्सया। रवि ससि आप चमकाए, मण्डल मण्डप सितार लटकाए, लक्ख चुरासी घट घट रक्खे वास्सया। निरगुण धारा इक्क बंधाए, भेव ना आए पारब्रह्म खेल तमास्सया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, पर्दा लाहे बल धारे आदि पुरख अबिनास्सया। लहिणा देणा मूल चुकाए, पिछला लेखा झोली पाए, अगला मार्ग आप लखास्सया। सतिजुग साचा आप उठाए, धरत मात दी गोद बिठाए, देवणहारा नाम दलास्सया। चार वरनां इक्क कराए, ऊँच नीच कोई रहिण ना पाए, साधां सन्तां करे बन्द खलासीआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाए, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाए, जोद्धा सूरबीर आप अख्वासीआ। तख्त ताज कोई रहिण ना पाए, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाए, आपे जाणे आपणी रासीआ। नौ खण्ड फेरा आपे पाए, सत्तां दीपां चरनां हेठ दबाए, सत्त रंग निशाना इक्क वखासीआ। अकाल मूर्त नज़री आए, निरगुण जोत करे रुशनाए, पुरख अकाल इक्क मनासीआ। ना कोई कासी पंडत जाए, वेद पुराण ना कोई पढ़ाए, अञ्जील कुरान ना कोई अल्हाए, बांग सदा ना कोई अल्हाए, रोज़ा बांग ना कोई अल्हाए, निउँ निउँ सजदा ना कोई कराए, साचा वुज़ू नाम करासीआ। ग्रन्थी पन्थी वेख वखाए, धरत मात सथ्थर वछाए, ब्रह्मा विष्न शिव अथ्थर वहाए, धीरज धीर ना कोए धरासीआ। हरिजन साचे ल्ए तराए, एका बख्शे चरन

सरनाए, फड़ फड़ बांहों गले लगाए, मात पित आप अख्वासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत जोती जोत डगमगाए। जोती जोत डगमगाहट, चार कुन्ट रुशनाईआ। वरनां बरनां प्या घबराट, घर घर पई लड़ाईआ। अल्ला राणी सुत्ती खाट, काला सूसा तन छुहाईआ। धर्म विकया हाटो हाट, धरती धवल कुरलाईआ। दिस ना आया तीर्थ ताट, लजपति रही शरमाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद कोई ना दिसे नेड़े वाट, साचा इष्ट ना कोए वखाईआ। आपो आपणे चढ़े घाट, मनमति नाल रलाईआ। कूड़ विकारा मारे ठाठ, ठौर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ।

✪ १४ फग्गण २०१५ बिक्रमी दिल्ली सिँघासण पर ✪

चार युग सच धार, लोकमात हरि चलाईआ। गुर पीर साध सन्त अवतार, जुग जुग सेवा लाईआ। अगम्म अगोचर भेव न्यार, आप आपणी बणत बणाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण खेल खिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोए प्यार, त्रैगुण तत्त ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाईआ। साची धार जुग निराली, करनी करता आप चलांयदा। निरगुण जोत नूर अकाली, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। गगन मण्डल साची थाली, दीपक रवि ससि तार चमकांयदा। पंज तत्त बण जंजाली, जागरत जोत विच टिकांयदा। वेखे फल पत्त डाली, फुल फुलवाड़ी मात उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। चौथे जुग चौथा दर, चौथा घर हरि हरि, वेख वखांयदा। थिर घर बैठ नरायण नर, जोत निरँजण मेल मिलांयदा। जोत सरूपी वसे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। दो जहानी चुक्के डर, शब्द निशानी हथ्थ फड़ांयदा। अनहद बाणी देवे वर, घर मंगल एका गांयदा। पवण पाणी चँवर कर, सीस ताज सुहांयदा। मेल मिलावा हरी हरि, हरि साचे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया हरि निरँकार, वीह सद बिक्रमी तेरां वड वड्याईआ। चरन छुहाया दिल्ली दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पंचम मुख ताज श्रृंगार, सीस जगदीस आप टिकाईआ। सत्त रंग निशाना इक्क हुलार, सत्तां दीपां रिहा उठाईआ। पंचम निशाना कर प्यार, पंचम मुख सलाहीआ। शब्द डण्डा अपर अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा उठाईआ। चरन जोड़ा चरन प्यार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। अस्सू तिन्न

करया ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां मारे मार, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। दो जहानां हो उज्यार, लोकमात वेख वखाईआ। गोपी कान्हा इक्क प्यार, साची सखीआं मंगल गाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौथा वेख वखाईआ। चौथे जुग जगत विहार, हरि साचा सच करांयदा। वरनां बरनां वसे बाहर, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। तत्व तत्त ना कोई विचार, मन मति बुध ना कोई प्रगटांयदा। वेद कतेब ना पायण सार, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, अगाध बोध बोध अगाध आप अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल न्यार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई बन्ने धार, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। प्रगट होया सांझा यार, सांझीवाल इक्क हो जांयदा। खेल खिलाए नारी नार, नर नरायण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत प्रीती रीत आप चलांयदा। जगत रीत हरि भगवान, शब्दी बन्नू बणाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका मार्ग रिहा लगाईआ। ऊँच नीच ना कोए वखान, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणाईआ। एका वेद इक्क पुराण, एका गीता करे पढ़ाईआ। अञ्जील कुरान इक्क ध्यान, मुस्लिम सुन्नी वेख वखाईआ। नानक गोबिन्द इक्क निशान, गुर बाणी नाम वड्याईआ। प्रगट होया वाली दो जहान, आप आपणी कल वरताईआ। सतिजुग साचा कर प्रधान, लोकमात धरत मात दी गोद बिठाईआ। कलिजुग कूड़ा बेईमान, नौ दरवाज़े बाहर कढाईआ। सच तख्त बैठ सच सुल्तान, साची सखीआं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपे रिहा सिखाईआ। लेखा लिख्या धुर करतार, आपणा आप लिखांयदा। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। खेल खिलाए दया कमाए मेल मिलाए नारी नार, नारी कन्त वेस वटांयदा। सति सतिवन्त घर सच प्यार, शब्द सिँघासण इक्क वखांयदा। रंग बसन्ती विच संसार, साचा रूप आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे दर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर सच दुआर, हरिजन हरि उपाया। रसना सगन नाम अपार, मोख मुक्त इक्क रखाया। मेल मिलावा कन्त भतार, आत्म सेजा दर सुहाया। साची सेजा हो उज्यार, आप आपणा दरस दिखाया। सुरत सवाणी होई मुटयार, दर वेखे लोक सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, दर साचा इक्क खुल्हाया। सुरत सवाणी नौजवान, लोकमात लए अंगड़ाईआ। चार कुन्ट वेखे मार ध्यान, कवण दूल्हा बैठा राह तकाईआ। करनहार श्री भगवान, आप आपणा वेस वटाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। सच सुच्च शब्दी बन्ने गान, नाम सगन इक्क मनाईआ। गीत सुहागी गाए गान,

राग अनादी इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, साचे घर वज्जी वधाईआ। शब्दी शब्द कुड़माया। एका दर धी जवाई, हरि मेला मेल मिलाया। साची रुतड़ी रुत्त सुहाई, रुत बसन्ती वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, फलगुण तेरा चुक्के डर, गुणवन्ता वेख वखाया। गुणवन्ता हरि भगवान, भगती भगत वड्याईआ। वेख वखाए साचा काहन, घर साचे फेरा पाईआ। मोर मुकट सीस ताज महान, आपणी हथ्थीं रिहा टिकाईआ। जीव जन्त ना सके कोई पछान, हरि का भेव ना कोई जणाईआ। सतिजुग साचे देवे माण, पतित पुनीत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे वर, घर घर दर दर मेल मिलाईआ। साचा दर हरि सुहा, साची दया कमांयदा। हरिजन सज्जण मेल मिला, मेल मिलावा इक्क वखांयदा। पड़दे कज्जण आप अख्वा, सच दुशाला उप्पर पांयदा। चरन धूढ़ी मजन आप करा, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विहारा अग्गे धर, दर दुआरा वेख वखांयदा। नाम शब्द सच दस्तार, गुरमुख सीस टिकाईआ। बीस बीसा खेल अपार, साचा सगन रिहा मनाईआ। वेख वखाणे पन्दरां कत्तक दिवस विचार, जोती नूर कर रुशनाईआ। राज राजान ढहि ढहि पैण चरन दुआर, चरन चरनोदक हथ्थ ना आईआ। गुरमुख सज्जण लए उभार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। भरया आपे भगती भगत भण्डार, अतोट अतुट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लछमण सिँघ दित्ता जगत वर, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ।

निरगुण रूप अकल कल धार, एका एकँकारया। आदि जुगादी हरि पसार, भेव कोई ना पा रिहा। इक्क अकल्ला कर आकार, निराकार वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगा रिहा। निरगुण रूप पुरख करतारा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसारा, हरि साचा बणत बणांयदा। मण्डल मण्डप दए सहारा, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर नाउँ धरांयदा। जोती दीपक भेव न्यारा, आदिन अन्त इक्क हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण नूर पुरख अकाल, आदि जुगादि समाया। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध नाम रखाया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाया। थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा

इक्क सुहाया। सति पुरख निरँजण साची धार, आप आपणी वेख वखाया। ना कोई दूसर करे प्यार, दर दुआर ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर समाया। निरगुण नूर आदि निरँजण एका एक अख्वाईआ। आप आपणा बणया सज्जण, घर साचे संग निभाईआ। आप आपणा करया मजन, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। आप आपणा होया पड़दे कज्जण, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप चलाए आपणा सच जहाजन, वड दाता बेपरवाहीआ। आपे शाहो भूप वड राज राजन, सच सुल्तान इक्क अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा काजन, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर धर, नूरो नूर उजाला हरि वड वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख गुर गोपाला, गोबिन्द नाउँ धराईआ। खेले खेल खेल निराला, खेलणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्ति रूप समाईआ। निरगुण रूप सुते प्रकाश, हरि आपणा आप करांयदा। आपणे मन्दिर रक्खे वास, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। आदि अन्त ना होए विनास, ना कोई बणत बणांयदा। लोआं पुरीआं मण्डल मण्डप पावे रास, आपणी रचना आप रचांयदा। आपे वस्सया पृथ्मी आकाश, आकाश प्रकाश आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर नूरो नूर दरसांयदा। निरगुण नूर अपर अपार, हरि आपणा आप उपाया। आप सुहाए आपणा सच दुआर, दर दुआरा इक्क खुल्लाया। इक्क अकल्ला बैठ निरँकार, निरगुण बैठा बेपरवाहया। ना कोई दूसर मीत मुरार, सगला संग ना कोई रखाया। ना कोई छप्पर छन्न मुनार, चार दीवार ना कोई रखाया। थिर घर साचा कर त्यार, थिर घर बैठा बेपरवाहिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, नाउँ निरँजण रूप उपाया। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सर्ब कला आपे समरथ, घर साचे सोभा पाईआ। आपे आपणी बख्शे वथ्थ, आपणी झोली आप भराईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। आप आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। निरगुण दाता सूरबीर, एका एक अख्वाया। आप आपणी बन्ने धीर, आपणा बेड़ा इक्क चलाया। आप आपणा जाणे अख़ीर, आदि आदि आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आपे कर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाए इक्क अकल्ला, एका रंग समाईआ। वसणहारा उच्च महल्ला, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। आपणी जोती आपे बला, आपणा दीपक आप करे रुशनाईआ। आपणा घर सच सिँघासण आपे मला, आपे बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर कर, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। इक्क अकल्ला कर

आकार, आपणी कल वरतांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, एका डगमगांयदा। एका दीपक जगन अपार, एका दर सुहांयदा। एका तख्त ताज सिक्दार, एका तेज़ चलांयदा। एका करया ख़बरदार, एका वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर एका कर, एका एक डगमगांयदा। एका हरि एका दर, एका घर खुल्हाईआ। एका देवणहारा वर, एका मेल मिलाईआ। एका पाए आपणा डर, एका दए चुकाईआ। एका तरनी रिहा तर, तारनहार इक्क अख्वाईआ। आपणी करनी रिहा कर, कारन करता नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर उजाला, पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला, बेअन्त बेपरवाह आप अख्वाईआ। बेअन्त बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आपे जाणे आपणी सिफ्त सलाह, आप आपणा नाम जपांयदा। आपे जाणे आपणा राह, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आपणा जाणे आपे थाँ, साचा धाम इक्क सुहांयदा। आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर सच महल्ला इक्क अकल्ला आप वसांयदा। सच महल्ला उच्च अटारी, हरि साचे आप सुहाईआ। निरगुण जोत जगे निरँकारी, एका दीपक डगमगाईआ। खेले खेल अगम्म अपारी, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। अलख अलख अलखणा आपे बणे लेख लिखारी, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे आपणा वर, निरगुण अन्दर निरगुण धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण धर, निरगुण नूर जगाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई तत्त वखाया। ना कोई किला कोट दिसे गढ़, धुँधूकार ना कोई उपाया। ना कोई वेखे अग्गे खड़, नूरी नूर किसे दिस ना आया। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, ना कोई लेखा लिख्त जणाया। आपणा आप आपणे अन्दर धर, आप आपणा बीज बिजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर उपाया। निरगुण पिता निरगुण माता, निरगुण रूप वटांयदा। निरगुण देवणहारा दाता, निरगुण झोली पांयदा। निरगुण रक्खी उत्तम जाता, जात अजाती इक्क वखांयदा। निरगुण बैठा रहे इकांता, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, आपणी कल वरताया। पूरन जोत श्री भगवन्ता, भेव कोई ना पाया। खेले खेल जुगां जुगन्ता, जुग करता नाउँ रखाया। महिमा जाणे गणत अगणता, वेद कतेब ना भेव खुल्हाया। आपे जाणे आपणी बणता, आप आपणा नाम उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला निरगुण चेला निरगुण गुर निरगुण धुर निरगुण रिहा जुड़, निरगुण निरगुण नाउँ रखाया। निरगुण रंग निरगुण संग, निरगुण रूप वटांयदा। निरगुण बैठ सच पलँघ, निरगुण सेज हंढांयदा।

निरगुण मंगे साची मंग, निरगुण पूर करांयदा। निरगुण रूप निरगुण रंग, निरगुण सरबंग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूरो नूर आप उपांयदा। अपर अपारा हरि भगवान, एका रंग रंगाईआ। खेले खेल खेल महान, खेलणहार वड वड्याईआ। पावे सार दो जहान, दो जहान वज्जे वधाईआ। आपे जाणे आपणा सच निशान, आपे रिहा झुलाईआ। आपे मर्द मरदाना, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आपे जोद्धा सूरबीर सुल्ताना, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आपे किला कोट गढ़ मकाना, मण्डल मण्डप आप छुहाईआ। आपे रवि ससि हो प्रधाना, आपणी आप करे रुशनाईआ। आपे धरत धवल वेखे मार ध्याना, जल बिम्ब आप हो जाईआ। आपे वसे आपणे सच मकाना, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। आप उपाए आपणा धुर फ़रमाना, हरि सन्तन नाउँ धराईआ। शब्दी शब्द शब्द नौजवाना, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। शब्द सुत्त सच दुलारा, निरगुण पूत उपाया। लोआं पुरीआं दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड मेल मिलाया। धुन अनादी इक्क जैकारा, पुरख अकाल सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आपे धर, नूरी नूर नूर रखाया। नूर उपंना साचा पूता, सति सतिवाद समाया। पावे सार चारे कूटा, दहि दिशा डेरा लाया। थिर घर लगाए साचा बूटा, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। आपे देवे आपणा हूटा, सच हुलारा इक्क रखाया। अबिनाशी करता आपे तुठा, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत्त इक्क उपाया। शब्द दुलारा नौजवान, सोहे सच दुआरया। मेल मिलावा श्री भगवान, एका रंग रंगा ल्या। इक्क सुनेहड़ा इक्क धुन्कान, एका राग अल्हा रिहा। इक्क वखाए सच मकान, ब्रह्मण्ड इक्क वखा रिहा। इक्क जणाए सच दुकान, चौदां लोक हट्ट खुल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपा रिहा। हरि हरि नाउँ हरि उपन्नया, पारब्रह्म वड्याईआ। पुरख अबिनाशी एका मन्नया, आपणी करे जोत रुशनाईआ। आपे चाढ़े आपणा चन्नया, रवि ससि सेवा लाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नया, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निरगुण दाता सच्चा शाह, एका एकँकारया। आप उपाए आपणा ना, आपे सुणे पुकारया। आप आपणी पकड़ी बांह, आपे दए सहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या। वेस वटाए पुरख अबिनाशा, आप आपणी कल धारया। आपणा खेले खेल तमाशा, आदि अनादी इक्क अवतारया। आपणे मण्डल पाई रासा, शाहो भूप सच सिक्दारया। आपणी पूरी करे आसा, आपणी इच्छया भिच्छया इक्क वखा रिहा। आप आपणा होया दासी दासा, सेवक सेवा आप कमा रिहा। आप आपणे अन्दर किया

वासा, वास निवासी आप अख्वा रिहा। आप आपणा कर भरवासा, आप आपणा इष्ट मना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण अन्दर निरगुण वड़, निरगुण वेख वखा रिहा। निरगुण रूप अगम्म अथाह, हरि आपणा आप उपाया। आपे बणया पिता माँ, आप आपणा शब्द उपाया। ब्रह्मा शिव विष्न नाउँ धरा, आप आपणा रंग रंगाया। अमृत साचा इक्क वखा, साचा जल सुहाया। नाभी कँवली आप लगा, आपे रूप वखाया। कँवल कँवला लए फला, फल फुलवाड़ी मेवा लाया। एका रूप रूप वटा, पारब्रह्म अंग कटाया। अंगीकार आप अख्वा, साचा संगी सेव कमाया। ब्रह्म ब्रह्म हरि नाउँ धरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी धार चलाया। निरगुण वंडी आपणी वंड, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपणा अंग किया खण्ड, बह्मिमंड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल, खेलणहार दिस ना आईआ। इक्क ब्रह्मा इक्क आकार, एका एक करांयदा। इक्क कँवल इक्क प्यार, एका रंग रंगांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, चारों कुन्ट सुणांयदा। दहि दिशा इक्क आधार, एका वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अंस बंस सरबंस आप आपणा वेख वखांयदा। आपे ब्रह्मा अतीत, हरि आपणा आप कराईआ। आपे ब्रह्मा कमलापत, कन्त कन्तूहल वड वड्याईआ। आपे जोती आपे सति, आपे सति सति टिकाईआ। आपे बूंद आपे रत्त, आपे तत्त बणाईआ। आपे बीज आपे वत, आपे हल चलाईआ। आपे वेखे आपणा खेत, आपे लए उपाईआ। आपे करे आपणा हेत, हरि साचे वड वड्याईआ। आपे वस्सया नेतन नेत, नित नवित्त खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला आपे कर, निरगुण निरगुण संग निभाईआ। निरगुण मेला निरगुण चेला, निरगुण गुर अवतारया। निरगुण साजण सज्जण सुहेला, निरगुण पावे सारया। निरगुण वसे इक्क अकेला, निरगुण विष्नूं रूप वटा ल्या। निरगुण खेल आपणा खेला, हरि पारब्रह्म रूप वटा ल्या। निरगुण चाढ़े आपणा तेला, आदि निरँजण संग रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार आप आपणा कर पसार, अकल कलधारी नाउँ रखा ल्या। निरगुण वलीआ निरगुण छलीआ, निरगुण भेव ना आया। निरगुण वसे उच्च महल्ल अटलीआ, थिर घर साचा इक्क सुहाया। निरगुण जोद्धा सूरबीर वड बलीआ, निरगुण आपणी कार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर रिहा धराया। पारब्रह्म हरि आपणा अंग कटा, आपणे अंग समाया। एका ब्रह्म खोलू हट्टा, ब्रह्मे झोली पाया। साचा शब्द लाए सट्टा, सच नगारा इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा खेल अपारा, आपणी दया कमांयदा। शब्दी शब्द भर भण्डारा,

२७० ०८

ब्रह्मे मुख सलांहयदा। त्रैगुण माया तत्त उज्यारा, कर किरपा आप उठांयदा। मिल्या मेला सच दुआरा, दोहां मेला इक्क वखांयदा। जुड़या जोड़ जोड़ करतारा, साची जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अनादी हरि ब्रह्मादी शब्द जुगादी इक्क वखांयदा। आदि जुगादी साचा ढोला, हरि शब्दी शब्द जणाया। पारब्रह्म ब्रह्म रूप हो बोला, आप आपणा नाउँ अलाया। पुरख अकाल बणया तोला, साचा कंडा हथ्थ उठाया। आपे चुक्कया आपणा डोला, आपे रिहा फिराया। आपणी शक्ती आपे मौला, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आप उपाए आपणी धरती धवल, जल बिम्ब आप तराया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मौला, तत्व तत्त आप रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता नाउँ धराया। वर दाता शब्द भण्डारी, हरि साचा आप अख्वांयदा। सेवक सेवा करे न्यारी, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी कर पसारी, घट घट आसण लांयदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ी, लोकमात राह चलांयदा। मन मति बुध कर श्रृंगारी, निरगुण विच टिकांयदा। घर विच घर घर अटारी, घर साचा आप सुहांयदा। आपे बैठा निराधारी, निरगुण वेस वटांयदा। महल्ल अटल कर त्यारी, आप आपणा आसण लांयदा। पंज तत्त कर आकारा, हरि साची बणत बणाईआ। रक्त बूंद हड्ड मास जो लाया गारा, काया महल्ल इक्क बणाईआ। साचा घर सोहे दुआरा, हरि साची रचन रचाईआ। अमृत भरया अमर भण्डारा, आपणा ताल सुहाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजाईआ। बजर कपाटी लाए ताला, त्रै त्रै लेख लिखाईआ। दस्म दुआरी खेल अपारा, निझर धार आप चलाईआ। साची सेजा मीत मुरारा, बैठा आसण लाईआ। दिवस रैण रहे उज्यारा, अट्ठे पहर डगमगाईआ। जीव जीव पाए सारा, आत्म आत्म संग निभाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म खेल न्यारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्द विचोला कर त्यारा, लोकमात करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण एका एक अख्वाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, एका एक वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी कर त्यार, सच महल्ला इक्क वसांयदा। सत्तां दीपां एका धार, एका रंग रंगांयदा। नौ दस ग्यारां, बीस तीस चार हो उज्यार, लक्ख चुरासी डगमगांयदा। अंडज जेरज ख़बरदार, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण अन्दर निरगुण प्यार, लोकमात वज्जे वधाईआ। मानस मानुख पावे सार, देवे माण वड्डी वड्याईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपणी करे आप रुशनाईआ। आपे जीव आत्म ब्रह्म कर विचार, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आप आपणा लए अवतार, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे मन मति बुध पाए सार, आपे घट घट खोज खोजाईआ। आपे अस्व घोड़े हो अस्वार, लोआं पुरीआं रिहा दौड़ाईआ। आपे

शाहो भूप सुल्तान सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आपे शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार, धुरदरगाही नूर अलाहीआ। आपे सन्त लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। आपे मन मति होए हँकार, पंच विकारा आप अख्वाईआ। आपे अमृत ठंडी ठार, अग्नी तत्त आप हो जाईआ। आपे नाम तेज़ कटार, आपे बैठा मुख भवाईआ। आपे पाए सभ दी सार, आपे सुत्ता बेपरवाहीआ। आपे इक्क अकल्ला एकँकार, आपे लक्ख चुरासी बैठा सेज विछाईआ। आपे जाणे आपणी धार, दूसर भेव कोई ना पाईआ। आदिन अन्ता कर आकार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि करने योग, एका एक अख्वांयदा। आपे रसीआ रस रस भोग, भोगी भोग आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणा जोग, जोग जुगत आप जणांयदा। आपे हरख आपे सोग, आपे साचा मार्ग पांयदा। आपे हउमे आपे रोग, आपे सांतक सति वरतांयदा। आपे देवणहारा दरस अमोघ, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे देवणहारा मोख, आप आपणी दया कमांयदा। आपे शब्द आपे जोग, आपे कागी काग वखांयदा। आपे वसणहारा चौदां लोक, आपे हट्टो हट्ट विकांयदा। आपे देवणहारा मोख, आपे जूनी लक्ख फिरांयदा। आपे सुनावणहारा सच सलोक, शब्द तराना एका गांयदा। आपे लक्ख चुरासी देवे झोक, आपे ब्रह्मा विष्न शिव इष्ट करांयदा। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण खेल खिलांयदा। सरगुण मेला साची कार, हरि साचा आप करांयदा। इक्क अकल्ला पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जीआं जन्तां दए आधार, साधां सन्तां बूझ बुझांयदा। भगत भगती इक्क प्यार, हरि भगवन वेख वखांयदा। जुगा जुगन्ता हो उज्यार, जोती नूर डगमगांयदा। करे कराए ख़बरदार, नाम डंका इक्क वजांयदा। राउ रंकां इक्क विचार, ऊँच नीच ज़ात पात ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी वंड वंडांयदा। निरगुण वंडे वंड विच ब्रह्मण्ड ब्रह्मे ब्रह्म सेव कमाईआ। जुगा जुगन्तर चुक्के पैंडा सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे करे कराए खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा हथ्थ चमकाईआ। आपे लक्ख चुरासी करे वंड, आपे कन्त सुहाग हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका धर, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सरगुण मेला साचे दर, दर साचे आप कराया। ब्रह्मा वेता आपे वर, चारे मुख सलाहया। एका अक्खर रिहा पढ़, एका मंगल गाया। एका अन्दर गया वड़, एका नज़री आया। एका लावणहारा जड़, एका दए उखड़ाया। एका तोड़नहारा गढ़, एका बंक सुहाया। एका फड़ाया साचा लड़, एका पल्लू रिहा फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण देवे आपणा वर, चारे वेदां

वेख वखाया। चारे वेदां साची धार, हरि साचे शब्द सलाहीआ। हँ ब्रह्म ब्रह्म हँ सोइम रूप करतार, पारब्रह्म वेख वखाईआ। दोए दोए कर विचार, त्रै लोकन बूझ बुझाईआ। चौथे पद ख़बरदार, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। पंचम मीता हो त्यार, चौथे बैठा डेरा लाईआ। तिन्नां गुणां वस्सया बाहर, रजो तमो सतो ना कोई प्रनाईआ। दो जहानां पावे सार, दिस किसे ना आईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, आपणी कल रिहा वरताईआ। आपे जाणे आपणा कार, आपणी हिस्सा आप कराईआ। सतिजुग साचे हो उज्यार, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। सोइम रूप निराकार, ओम ओम आप अख्वाईआ। हँ ब्रह्म कर त्यार, आप आपणा रूप दरसाईआ। सति पुरख निरजंण साची धार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। सोहँ शब्द अपर अपार, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सो पुरख निरजंण साचा दाता, एका रंग अख्वांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञाता, एका ज्ञान दृढ़ांयदा। लक्ख चुरासी रचया काजा, दिवस रैण वेख वखांयदा। ना आपणा खोल्हे आपे ताका, ना दूसर कोई खुल्हांयदा। शब्द अगम्मी साचा वाक्, साचा ढोला इक्क सुणांयदा। सति सरूपी एका राका, चिट्टा अस्व आप दौड़ांयदा। लक्ख चुरासी सज्जण साका, घट घट वेख वखांयदा। जुग जुग लहिणा देणा देवे बाका, पिछला हिसाब मुकांयदा। आपे अर्श फर्श ख़ाकी ख़ाका, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवणहारा वर, सरगुण आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण खेल हरि हरि कीना, लेखा लिख्त विच ना आया। आपणे घर दाना बीना, बीना दाना नाउँ धराया। रसना जेहवा जिस जन चीना, कर किरपा पार कराया। भगत भगवन्त ना होए विछोड़ा जिउँ जल मीना, जल जल धारा आप समाया। आपे वस्सया लोक तीना, चौदां लोकां हट्ट वखाया। आपे होए रंग रंगीला मोहण माधव भीन्ना, दर दर बैठा अलक्ख जगाया। आपे मरना आपे जीना, अजूनी रहित नाम धराया। आपे करे ठंडा सीना, आपे अग्नी तत्त जलाया। आपे आप आपणा आप वक्ख कीना, आपे ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म करतार। जोती नूर जोत जगन्दड़ा, लोकमात पावे सार। गुर अवतार आप अख्वंदड़ा, पंज तत्त कर आकार। सच नगारा इक्क वजंदड़ा, साधां सन्तां करे ख़बरदार। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, सचखण्ड बैठा आसण डार। रस आत्म वेख वखंदड़ा, मेट मिटाए धूंआँधार। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, मेल मिलावा दस्म दुआर। आत्म साची सेज सुहंदड़ा, घर बैठा मीत मुरार। अमृत आत्म जाम पिलंदड़ा, देवे सीर ठंडा ठार। हरि साचा राग सुनंदड़ा, गीत सुहागी गाए वारो वार। पंच विकारा मेट मिटंदड़ा, मारे खण्डा नाम कटार। बुध बिबेक आप करंदड़ा, जिस जन बख्शे

आप प्यार। मति मतवाली मोह चुकंदड़ा, मिटे मोह हँकार। मन आपणे शब्द बंधड़ा, बंधन पाए निरगुण धार। दहि दिशा वेख वखंदड़ा, चार कुन्ट ना हाहाकार। गुरमुख सोए आप उठंदड़ा, गुर पूरा इक्क अवतार। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, निरगुण बाती जोत उज्यार। जुग जुग दाता वेस वटंदड़ा, सतिजुग बेड़ा होया पार। त्रेता धरत मात दी गोद बिठंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। त्रीया वेस आप वटंदड़ा, आपे पुरख आपे नार। राम राम आप अख्वंदड़ा, नाम नाम जैकार। लंका गढ़ आप सुहंदड़ा, आपे रावण कर त्यार। आपे तीर कमान उठंदड़ा, आपे शस्त्र बस्त्र तेज़ कटार। जोद्धा सूरबीर आप अख्वंदड़ा, आपे दर दर होए खुआर। आपे ग़रीब निमाणे वेख वखंदड़ा, भगत भगवन्त मीत मुरार। त्रेता तेरा लेख चुकंदड़ा, हरि हरि पावणहारा सार। द्वापर साची सेज सुहंदड़ा, लोकमात करे उज्यार। वेद व्यासा लेख लिखंदड़ा, आपे जाणे आपणी कार। पुराण अठारां लेख लिखंदड़ा, लक्ख चार हज़ार सतार। एका दीपक दीप जगन्दड़ा, जोती नूर नूर उज्यार। मुकंद मनोहर नाम रखंदड़ा, लक्खमी नरायण नाम उज्यार। नाम बंसरी इक्क वजंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जाणे आपणी कार। जुग जुग आपणी कार कमाए, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण नूर डगमगाए, सरगुण कर रुशनाईआ। सरगुण काया रथ चलाए, वड दाता बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई मथ वखाए, एका अर्जन मुख सलाहीआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, आप आपणी कल वरताईआ। कूड़ कुड़यारा संग रलाए, चारों कुन्ट झूठी छाहीआ। ईसा मूसा आप उपाए, आप आपणी करे पढ़ाईआ। नूर अलाही आपणा नाउँ धराए, एका नाअरा लाईआ। संग मुहम्मद चार यार रलाए, अल्ला राणी दए सलाहीआ। हक्क हकीकत वेख वखाए, बेऐब परवरदिगार ख़ुदाईआ। एका कलमा नबी पढ़ाए, एका आयत सुणाईआ। शरअ शरीअत इक्क सुणाए, सच हदीस इक्क वखाईआ। कायनात आप जगाए, काया काअबा खोज खुजाईआ। दो दो आबा मेल मिलाए, दस्तगीर वड वड्याईआ। शाह हकीर फ़कीर वेख वखाए, अहिबाब रबाब वजाईआ। अञ्जील कुराना लेख लिखाए, तीस बतीस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस कराईआ। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलांयदा। पंज तत्त कर प्यार, नानक नाउँ रखांयदा। मिल्या मेल धुर दरबार, दर दुआर इक्क सुहांयदा। एका ब्रह्म प्रभ कर पसार, साचा सगन मनांयदा। पुरख अकाल कन्त भतार, नारी साची सेज हंढांयदा। अंगीकार करे अपार, आप आपणे अंक समांयदा। साची सखीआं मंगलाचार, साचा राग अलांयदा। आप सुहाए सच दरबार, हरि सति पुरख निरँजण वेख वखांयदा। पाया पुरख अगम्म अपार, नानक निरगुण निरगुण विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। नानक मेला धुर

दरगाह, निरगुण निरगुण आप कराया। पुरख अबिनाशी बण मलाह, आपणा मेल मिलाया। साची देवे शब्द सलाह, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया। नाम सति झोली पा, जगत भण्डार भराया। चार वरनां राहे पा, एका मार्ग रिहा वखाया। ऊँचां नीचां मेट मिटा, राउ रंकां एका धाम बहाया। सच सुनेहड़ा रिहा सुणा, रसना ढोला एका गाया। सो पुरख निरँजण दरस पा, आप आपणा मूल चुकाया। नानक मिल्या बेपरवाह, घर साचे वज्जी वधाया। एका अक्खर रिहा गा, एका नाम ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला साचे दर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाया। नानक मेला सच घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। धुर फ़रमाना मिल्या वर, दर साचे सोभा पाईआ। तेरा मेरा नाता नारी नर, नर नरायण आप सुणाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आपणी गोद बिठाईआ। नानक मेला हरी हरि, हरि हरि गुण आपे गाईआ। सोहँ शब्द एका पढ़, तेरा तेरा तेरे विच समाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, अद्धविचकार ना कोई टिकाईआ। एका फड़या तेरा लड़, दूसर दर ना कोई जणाईआ। अबिनाशी करता किरपा कर, आप आपणी दए वड्याईआ। सतिनाम भण्डारा भर, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। लोकमात खुल्हाउणा दर, साचा वणज इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता साचा वर, धरत मात ख़ुशी मनाईआ। धरत धवल ख़ुशी मना, आपणा गीत अल्हांयदा। अल्ला राणी नाअरा ला, ऐनलहक्क सुणांयदा। एका कलमा नबी पढ़ा, हक्क हकीकत वंड वंडांयदा। नानक निरगुण शब्द दृढ़ा, साची सिख्या इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द साचा नाम सति दित्ता धर, सति सति खेल खिलांयदा। नाम सति जगत वणजारा, लोकमाती हट्ट खुल्हाया। नानक बोले तोले तेरां धार, तेरा तेरी झोली पाया। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द नाउँ धराया। गोबिन्द सूरा वड बलकार, साचा खण्डा हथ्थ चमकाया। भेख पखण्डा करे ख्वार ब्रह्मण्डां एका डण्डा हथ्थ फड़ाया। चण्ड प्रचण्ड कर त्यार, तिक्खी धार इक्क जणाया। चार यारी कर खुआर, पंच प्यारा मेल मिलाया। अमृत बख्शे ठंडी ठार, इकीस सीस जगदीस सहाया। पंज तत्त कर प्यार, पंचम रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपे कर, जुग जुग खेल खिलाया। गोबिन्द चेला हरि करतार, साचा सुत्त अख्वांयदा। गुणी गुहेला गहर गम्भीर पावे सार, साची धार वेख वखांयदा। आपे आपा आपे वार, आप आपा मेल मिलांयदा। मंगे मंग धुर दरबार, पुरख अकाला इक्क ध्यांअदा। दीन दयाला ख़बरदार, सच सुनेहड़ा शब्द जणांयदा। जोत उजाला विच संसार, नूरो नूर डगमगांयदा। करे प्रितपाला आप प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द एका घर, एका

दर सुहांयदा। एका घर इक्क दरवाजा, एका धाम सुहाईआ। एका अस्व एका ताजा, एका रिहा दौड़ाईआ। इक्क सुल्तान एका राजा, शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। एका दानी ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। नानक गोबिन्द मारे वाजा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा होया काजा, कूड़ी दिसे छाहीआ। पुरख अकाल तेरा साजण साजा, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। अन्तिम रक्खे कौण लाजा, जन भगतां कवण तराईआ। पारब्रह्म शब्द अनादी मार वाजा, एका शब्द सुनेहड़ा रिहा गाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए देस माझा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ नगरी सच जहाजा, सम्बल मेला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपणा कर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सम्बल नगरी सच टिकाना, हरि साचे सच जणाया। सति सरूपी इक्क बिबाना, हरि आपणा आप उपाया। आपे जाणे आपणे भाणा, आपणे भाणे आप समाया। किसे हथ्थ ना आए राजे राणा, राज राजाना दिस ना आया। लेखा लिख ना सके कोई सुघड़ स्याणा, वेद कतेब भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। सम्बल नगरी सच मकान, साची जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बली बलवान, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, नाउँ निरँकारा इक्क चलाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ । करोड़ तेतीसा बाल निधान, सुरपति राजा इन्द दए हिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख दुकान, सत्तां दीपां खोज खोजाईआ। रवि ससि करे पुण छाण, मण्डल मण्डप फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, घर घर खोजे बेपरवाहीआ। जूठ झूठ वेख निशान, प्रगट होए बेपरवाहीआ। साढे तिंन हथ्थ दिसे सच मकान, सम्बल नगरी नाउँ रखाईआ। पंडत पांधे बहि बहि गाण, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा दिस ना आईआ। किसे हथ्थ ना आए जगत विद्वान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। तीर्थ तट रहे छाण, जल वरोले लाल हथ्थ ना आईआ। दीन दयाल आपणे कंडे आपे तोले, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। मेल मिलाए काया मन्दिर काया माटी चोले, गुरदर मन्दिर मस्जिद वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पर्दा आपे फोले, लहिणा देणा रिहा लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाउँ रखाईआ।

१४ फग्गण २०१५ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ

हरि सज्जण सतिगुर मेहरवान, पारब्रह्म पुरख अबिनाशया। आदि जुगादी खेले खेल दो जहान, वेख वखाए पृथ्मी

अकाशया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड पावे साची रास्सया। लक्ख चुरासी जाणी जाण, घट घट अन्दर रक्खे वास्सया। आदि जुगादी खेल महान, भेव अभेद इक्क वखास्सया। धुरदरगाही इक्क निशान, आप झुलाए साचे तख्त निवास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर इक्क प्रकास्सया। पारब्रह्म आदि ना अन्ता एकँकारा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोत नूरानी शब्द अगम्मी लए अवतारा, आदि पुरख निरँजण अलक्ख अगोचर नाम धराईआ। अथाह बेपरवाह निरगुण धारा, नूरो नूर डगमगाईआ। अकल कला कल खेल न्यारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। वरते वरतावे विच संसारा, सारंगधर भगवान बीठलो लक्खमी नरायण आप अख्वाईआ। जुगां जुगन्तर दए सहारा, धरत धवल सुहाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, पारब्रह्म ब्रह्म डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता खेल खिलाईआ। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका एकँकारया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी धार चला रिहा। पुरख सुल्ताना हरि मेहरवाना, आपे नारी आपे कन्ता, सति सुहञ्जणी सेज आप हंढा रिहा। पुरख अकाल दीन दयाला आप बणाए आपणी बणता, आदि शक्ति सेव कमा रिहा। आपे राम आपे नाम आपे बणया जेहवा मन्नता, रसना गुण आपे गा रिहा। आपे चाढ़नहारा साचा रंग बसन्ता, रंग मजीठी इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता खेल खिला रिहा। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका एकँकारया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी धार चला रिहा। पुरख सुल्ताना हरि गिरधार अकल कला कल धार हरि भगवाना, आदि जुगादि समाया। खेले खेल दो जहाना, जोती नूर नूर रुशनाया। शब्द जणाई धुर फ़रमाना, गुर सतिगुर नाउँ रखाया। आपे जाणे आपणी आणा, आपणे भाणे विच समाया। शाहो भूप वड राजन राणा, दर दरबाना आप अख्वाया। आपे गाए धुन अनादी अगम्म अगम्मड़ा सच तराना, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकार एका खेल खिलाया। एकँकार हरि पसारा, हरि साचे वड वड्याईआ। जोती नूर दीप उज्यारा, आदि जुगादि डगमगाईआ। सेवक सेवा लाए रवि ससि सूरज चन्न सतारा, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। खेले खेल खेल करतारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारा, आप आपणा विच टिकाईआ। आप आपणा तत्त कर न्यारा, तत्व तत्त विच समाईआ। आपे ब्रह्म अतीत हरि करतारा, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार निराकार, निरवैर रूप अख्वाईआ। अजूनी रहित आदि अबिनाशा, एका रंग समांयदा। आपे खेले खेल तमाशा, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे भगत भगवन्त होए दासी दासा, आपे हरिजन सेव कमांयदा। आपे घट घट अन्दर

रक्खे वासा, आपे दिस किसे ना आंयदा। आपे पवण आप स्वासा, आपे रसना जेहवा हिलांयदा। आपे धुर दरगाही सगला साथा, आप आपणा संग निभांयदा। आपे त्रिलोकी नंदन चलाए साचा राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे राम नाम जणाए अपणी गाथा, सच जैकार आपे लांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, वेद विदांता आप अख्वांयदा। आपे तीर्थ आपे ताटा, आपे अठसठ लेखे लांयदा। आपे आदि शक्ती जोत ललाटा, दुर्गा इष्ट आप अख्वांयदा। आपे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सेव कमांयदा। आपे सतिगुर पूरा करे घाटा, आपे हथ्थ रखांयदा। आपे ब्रह्मा वेदा राटा, चारे मुख सलांहयदा। आपे विष्नूं आपे आन बाटा, आपे आपणा रूप वटांयदा। आपे पारब्रह्म अबिनाशी करता खेले खेल बाज़ीगर नाटा, वेद कतेब भेव कोई ना पांयदा। आपे खोल्हे चौदां लोक हाटा, आपे त्रैभवण समांयदा। आपे लोआं पुरीआं फिरे नाठा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपे डेरा लांयदा। आपे अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त नेड़े करे वाटा, मन मति बुध आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। वेखणहारा हरि समराथा, एका रंग समाया। जुग जुग महिमा जगत अकथ, सन्त साध सेवा लाया। आप जणाए आपणी गाथ, भगत भगवन्त भेव चुकाया। आपे जाणे आपणा मस्तक माथ, पूर्ब कर्मां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ धराया।

✪ पहली चेत २०१६ बिक्रमी दरबार विखे जेठूवाल ✪

एका एक एक एकउँकार, इक्क अवतारया। दूजे शब्द नाम जैकार, नाद अनादी आप वजा रिहा। तीजे नैण इक्क उग्घाड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डा वेख वखा रिहा। चौथे चौथे घर हो उज्यार, दीवा बाती कमलापाती इक्क जगा रिहा। पंचम रूप आप करतार, पंचम मेला आप मिला रिहा। छेवे छप्पर छन्न ना कोए उसार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहा रिहा। सत्तवें सति सरूपी साची धार, सरगुण आपणी आप वरता रिहा। अठवें अट्ठ तत्त अधार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आप समझा रिहा। नौवें नौ दर खोल्ह किवाड़, जगत नाता जोड़ जुड़ा रिहा। दसवें बैठ सिरजणहार, सच सिँघासण आप सुहा रिहा। इक्क ज्ञान कर विचार, आपणी कल वरता रिहा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, जगत महल्ल इक्क वखा रिहा। साढे तिन्न हथ्थ कर त्यार, जीवां जन्तां आप समझा रिहा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण पावे सार, दहि दिशा वेख वखा रिहा। रवि ससि करन निमस्कार, मण्डल मण्डप सीस नवा रिहा। करोड़ तेतीसा ढहि ढहि पए दुआर, सुरपति राजा इन्द सीस झुका रिहा। आपे जाणे आपणी कार, आपणी कला आप वरता रिहा। जोती नूर कर उज्यार, नूरो नूर डगमगा

रिहा। वीह सद होया ख़बरदार, काया नाता तोड़ तुड़ा रिहा। भगतन मीता मीत मुरार, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। दूजे खोल्ह दर किवाड़, लोकमात बंक सुहा ल्या। तीजे घोड़े देवे चाढ़, चौथे दर बहा ल्या। पंचम मेला साचे लाड़, जिउँ सखीआं मंगल गा ल्या। सत्तवें सति पुरख निरँजण किरपा धार, अठवें उठ उठ गल लगा ल्या। नौवे नौ नौ खण्ड करे पार, हरिसंगत वेख वखा ल्या। दसवें जोती जगे अपार, निरगुण धारा इक्क चला ल्या। कलिजुग अन्तिम पावे सार, कूड़ कुड़यारा वेख वखा ल्या। मनमति वेखे नार विभचार, मुख घूँगट आपे ला ल्या। खेले खेल खेल अपार, त्रिलोकी नंदन आप करा रिहा। चौदां लोकां हो उज्यार, चौदां लोक आप हिला रिहा। आकाश प्रकाश दए हुलार, धरत धवल वेख वखा रिहा। ब्रह्मा नेत्र दए उग्घाड़, आप आपणी बूझ बुझा ल्या। शिव शंकर वखाए इक्क अखाड़, नाम त्रिसूला हथ्थ चमका ल्या। इन्द इन्द्रासण पावे सार, सच सिँघासण खेल खिला ल्या। शाहो शाबास गुर अवतार, पुरख अबिनाशी वेस वटा ल्या। खड़ग खण्डा फड़ कटार, ब्रह्मण्डां फोल फुला ल्या। जेरज अंडां कर विचार, उत्भुज सेत्ज पार करा ल्या। वेखे कंडा विच संसार, तोलणहार तोल तुला ल्या। बोल बोला अपर अपार, घर साचे ढोला गा ल्या। बदलया चोला सिरजणहार, जगत विचोला ना कोए रखा ल्या। भोला भाला बेऐब परवरदिगार, ख़लक ख़ुदाई वेख वखा ल्या। राम कृष्न पावे सार, ईसा मूसा अंग लगा ल्या। वेद पुराणी मीत मुरार, अञ्जील कुरानी आपे गा ल्या। नानक गोबिन्द एका धार, एका रंग समा ल्या। शब्दी डंक डंक निरँकार, चारों कुन्ट वजा ल्या। सन्त साजण लए उभार, जुग जुग कर्म कमा ल्या। भगत भगती दित्ता अधार, आप आपणा रूप वटा ल्या। सुहाए महल्ल अटल उच्च मुनार, ना कोई बणत बणा ल्या। इक्क अकल्ला कर प्यार, दर साचा इक्क वखा ल्या। कलिजुग करया ख़बरदार, सोया लोकमात उठा ल्या। गुरमुखां करे तन शृंगार, फूलन बरखा आपे ला ल्या। चिट्टा बाणा इक्क अधार, चिट्टी धारी रूप समा ल्या। साचा राणा सिरजणहार, दो जहानां भरम चुका ल्या। देवे माणां चरन दुआर, चरन चरनोदक मुख प्या ल्या। दस्से राह सखाला विच संसार, चार वरनां आप रखा ल्या। वरते भाणा अपर अपार, हरि का भेव किसे ना पा ल्या। राजा राणा होए खुआर, तख़्त ताज़ ना कोए सुहा ल्या। साधां सन्तां आए हार, कूड़ी क्रिया डंक वजा ल्या। माया ममता रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहा ल्या। हउमे हँगता तुटे गढ़ हँकार, शब्दी खण्डा हथ्थ उठा ल्या। आदिन अन्ता पावे सार, जुगां जुगन्ता वेस वटा ल्या। सिँघ शेर शेर हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण ला ल्या। आया चल दर दरबार, गुरमुखां राह तका ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव करन विचार, भेव अभेदा भेव ना पा ल्या। कलिजुग अन्तिम कर प्यार, सोए सुत्त आप उठा ल्या। अबिनाशी अचुत्त

हो उज्यार, करनी करता कर्म कमा ल्या। सुहाए आपणी रुत्त आप करतार, फुल फुलवाड़ी आप महिका ल्या। पंज विकारा कुट्ट कढ्ढे बाहर, अमृत आत्म जाम प्या ल्या। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन आपणा दरस वखा ल्या। पहलों आपणा आप घर ल्या पुट्ट, पंज तत्त ख़ाकी ख़ाक समा ल्या। धुर दरगाह शब्द नगारे लाई चोट, एका डण्डा हथ्थ उठा ल्या। जुग जुग विछड़े गुरसिख उठावण आया आलणिउँ डिगे बोट, चतुर्भुज वेस वटा ल्या। एकउँकारा आदि पुरख अबिनाशी करता आदि जुगादी एका ओट, गुर पीर अवतार साध सन्त सेवा ला ल्या। लक्ख चुरासी तेरे कढ्ढण आया खोट, निरगुण तोला नाम बणा ल्या। इक्क अकल्ला एकउँकारी एका जोत, वरन गोत ना कोए रखा ल्या। गुरसिख बणाए ओत पोत, बंस सरबंसा नाउँ धरा ल्या। दुरमति मैल देवे धोत, निर्मल सीर नीर प्या ल्या। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, हरि का दरस किसे ना पा ल्या। तीर्थ तट्टां बन्न लंगोट, साधां सन्तां डेरा ला ल्या। कोई ना चढ़े उप्पर चोट, जगत अभ्यास बहुत वखा ल्या। कोटी कोटि हिलौदे फिरन होंट, हरि का रूप बत्ती दन्द बन्द ना किसे करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह दस एका खेल खिला रिहा। वीह दस तेरा रंग महल्ला, हरि साचे आप उपाया। खेले खेल इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रलाया। आपे वस्सया जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा आपे लाया। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन सचखण्ड दुआरा आपे मल्ला, थिर घर बैठा जोत जगाया। आपे करे वला छला, अछल अछल्ल आप अख्वाया। शब्दी जोती आपे रल्ला, आपे धूंआँधार वखाया। धाम सुहाए इक्क अटला, उच्च महल्ला डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह दस वेखे साचा घर, हरिजन साचे लए मिलाया। वीह दस तेरा सति प्यारा, हरि साचा सच करांयदा। हरिसंगत कराए वणज वपारा, नाम हाटी इक्क खुलांयदा। तीर्थ ताटी पार किनारा, अठसठ मूल चुकांयदा। अमृत रस ठंडी ठारा, निझर धारा आप वहांयदा। अन्धेरी राती पार किनारा, निर्मल साचा चन्द चढ़ांयदा। आप सुहाए बंक दुआरा, दर दरवाजा खोल खुलांयदा। सतिजुग तेरी बन्ने धारा, साची रचना आप रचांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, कँवल नैण आप मटकांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यारा, एक घर टिकांयदा। मारे झाती विच संसारा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। देवे बाकी गोबिन्द धारा, पिछला मूल चुकांयदा। आपणा किया आप प्यारा, आपे वक्त सुहांयदा। भगत भगती करे पुकारा, दिवस रैण राह तकांयदा। वीह दस दस वीह वीह दस कर विचारा, साचा सगन मनांयदा। छोटा बाला खेल न्यारा, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत तेरा कर प्यारा, आपणी इच्छया भिच्छया मंग मंगांयदा। आपे ढहि ढहि पए दुआरा, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे दर दरवेश बणे

भिखारा, पा अल्फ़ी अलख जगांयदा। आपे बणे भगत भण्डारा, भर प्याला जाम प्यांअदा। आपे खेले खेल विच संसारा, जुग जुग वेस वटांयदा। आदि जुगादी एका धारा, एका रंग रंगांयदा। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव रहिण दुआरा, आदि जुगादी भिच्छया पांयदा। आपे करे पार किनारा, आपणा लेखा आप गणांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। इन्द इन्द्रासन दए हुलारा, शब्द हलूणा इक्क लगांयदा। आपणी जाणे आपे कारा, लोकमात खेल खिलांयदा। गुरमुखां सिर तों लाहे भारा, आप आपणा भार उठांयदा। गोबिन्द गुरू दए सहारा, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। सत्तां लोकां हो उज्यारा, सत्त सत्त बंध बंधांयदा। त्रैगुण तेरा पार किनारा, तेरा मूल चुकांयदा। गुरसिखां देवे सच भण्डारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। सिँघ गुरमुख बणे नाल लिखारा, लेखा आपणा आप जणांयदा। पाल सिँघ दा खोल्ह किवाड़ा, नाम धारा मुख चुआंयदा। अन्दर वस्सया गुप्त ज़ाहरा, दिस किसे ना आंयदा। अष्टभुज आए दुआरा, शस्त्र बस्त्र इक्क चमकांयदा। खेले खेल शाह अस्वारा, शाह सुल्ताना वेस वटांयदा। हरिसंगत तेरा सच प्यारा, सतिगुर पूरा आप करांयदा। साची सखी महल्ल उसारा, डूँघी नींह धरांयदा। गुण अवगुण ना कोए विचारा, गुण करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची नईआ आप चलांयदा। साची नईआ साचा बेड़ा, हरि साचे आप चलाया। आप वसाया साचा खेड़ा, आपे वेख वखाया। आपे करे हक्क निबेड़ा, आपे डोबे लए तराया। आपे करे खुल्ह वेहड़ा, आपे आपणी वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचे सच दुआरा, हरि साचे आप सुहाया। गुरमुख साचे कर शृंगारा, साचा तन सज़ाया। सगन मनाया पहली वारा, लेखा लेख ना कोए लिखाया। शब्द बन्न्ह सीस दस्तारा, साचा लाड़ा आप सजाया। हरिसंगत बन्न्हया इक्क अखाड़ा, सखीआं मंगल एका गाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता बण के मंगता मंगण आया आपणा वाड़ा, आपणी झोली अग्गे डाहया। निउँ निउँ सीस जगदीस गुरसिखां अग्गे कढ्ढे हाढ़ा, तेरा मेरा मेरा तेरा नाता तुट कदे ना जाया। लक्ख चुरासी करे झेड़ा, हरि का भेव किसे ना पाया। प्रभ देवण आया उलटा गेड़ा, कलिजुग उलटी लट्ठ गिढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह दस बिक्रमी देवे वर, घर साचा इक्क सुहाया। साचे घर वड वड्याई, हरिजन साचे आप रखाईआ। आपणी करे आप कुड़माई, आप आपणा सगन मनाईआ । सुरती शब्दी धी जवाई, दोवें वेखे बेपरवाहीआ। जगत विचोला बणया नाई, दो जहानां फेरा पाईआ। लोकमात आया चाँईं चाँईं, पल्ले सोहँ गंढ बंधाईआ। सोलां मग्घर रुत्त सुहाई, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। वीह दस बिक्रमी वज्जी वधाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाईआ। साचा सगन मुख लगाउणा, घर साचे मत्ता पकांयदा। सचखण्ड दुआर इक्क सुहाउणा, साचा सुल्तान डेरा लांयदा। ग़रीब निवाज आप अख्वाउणा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। कलिजुग कूड़ा वेस मिटाउणा, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। वरन बरन ना कोए रखाउणा, चार अठारां मूल चुकांयदा। इष्ट देव गुर इक्क मनाउणा, एका रूप दरसांयदा। शब्द मन्त्र नाम इक्क जपाउणा, रसना जिह्वा इक्क हिलांयदा। एका जोती नूर डगमगाउणा, अकाल पुरख इक्क अख्वांयदा। जूनी रहित नज़री आउणा, मात गर्भ ना कोए धरांयदा। अनभव प्रकाश आप कराउणा, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। सुते प्रकाश हरि खेल खिलाउणा, गुरमुखां सुरती वेख वखांयदा। जप तप हठ सुच्च संजम अभ्यास इक्क वखाउणा, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। काया कवरी डूँघी भँवरी नौ दुआरे पार कराउणा, दर दरवाजा इक्क खुल्हांयदा। पंज तत्त मूल चुकाउणा, रत्ती रत्त रहिण ना पाउणा, गति मित इक्क वखांयदा। ब्रह्म मति ब्रह्म विच समाउणा, मेट मिटाए अवणा गवणा, आवण जावण मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद दस वीह दस दस वीह वेख वखांयदा। दस्म दुआरी दर दरवाजा, हरि आपणा आप खुल्हाया। वीह सौ बिक्रमी ग़रीब निवाजा, आपणा रूप वटाया। वीह दस बिक्रमी चढ़या अस्व ताजा, चिट्टा घोड़ा रिहा दौड़ाया। वीह सौ बिक्रमी राजन राजा, शाहो भूप नाउँ धराया। वीह दस बिक्रमी रचया काजा, हरिसंगत मेल मिलाया। वीह सौ बिक्रमी देस माझा, अन्तिम आपणा लेख चुकाया। वीह दस बिक्रमी चलाए जहाज़ा, भव सागर आप तराया। सोलां मग्घर हरिसंगत मारे आपे वाजा, सुत्तया लए उठाया। दो जहानां दित्ता साचा दाजा, पल्ले गंढु नाम बंधाया। अन्तिम आपे रक्खे लाजा, अन्त कन्त सन्त होए सहाया। धुर दरगाही आया भाजा, वेस अवेसा आप वटाया। कलिजुग कूड़ी क्रिया खोल्हे पाजा, सच सुच्च इक्क वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दित्ता साचा वर, छोटा बाला अग्गे लाया। छोटा बाला शब्द अस्वार, नाम घोड़े हरि चढ़ाया। गुरसिखां कहे जगत वंगार, बाली बुध हो रुशनाया। पाया पुरख हरि निरँकार, साची नारी सगन मनाया। चुक्कया डोला विच संसार, सच कहारा वेस वटाया। गुरसिख ना मरे ना जम्मे विच संसार, हरि साचे सरन लगाया। आप बहाए धुर दरगाही सच दरबार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। कलिजुग तेरा तेरे उत्तों दित्ता वार, तेरा तेरी झोली पाया। साढे तिन्न हथ्थ महल्ल उसार, साढे तिन्न हथ्थ वक्त चुकाया। पहलों मंगी मंग रविदास चमार, अन्तिम गुरमुख लेख लिखाया। भगतां लेखा रक्खे ना कोई उधार, जुग जुग दए चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। साढे तिन्न हथ्थ

हरि जगत मनारा, हरिजन आप उपांयदा। हरिसंगत देवे इक्क सहारा, चरन प्रीती इक्क वखांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़ा, दर दरवेशा फेरी पांयदा। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, यामबीन भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद ग्यारां वेख वखांयदा। वीह सद ग्यारां साचा तोल, हरि साचे आप तुलाया। निष्अक्खर वक्खर नानक बोल, सोहँ बोल अलाया। हरि जोती हरि गया मोल, हरिसंगत फुल फुलवाड़ी लाया। आदि अन्त सदा अडोल, ना डोले ना कोए डोल डुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा वेख वखाया। सतिजुग साची नींह, हरि साचे वंड वंडाईआ। लहिणा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीं, हरिजन साचे लेखे लाईआ। अमृत आत्म बरखे मींह, निझर धारा मुख चुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणा खेल आप खिलाया, हरि वड वड्डी वड्याईआ। वेद कतेब किसे भेव ना पाया, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। हरिजन साचे आपणा मेल मिलाया, लोकमात वेख वखाईआ। जोत निरँजण तेल चढ़ाया, आदि निरँजण सेव कमाईआ। धुन अनादी मंगल गाया, साची सखीआं वेख वखाईआ। बंक दुआरा इक्क सुहाया, दर दरवाजा खोल्ह खुल्हाईआ। नाम मैहन्दी रंगण रंग चढ़ाया, साचा सीस इक्क गुंदाईआ। फूलन सेहरा आप सजाया, घर साचे सोभा पाईआ। साचे घोड़े वाग गुंदाया, त्रैगुण मोती तन्द बंधाईआ। चरन चरनोदक उतो वार वखाया, अमृत जल इक्क प्याईआ। एका घर मेल मिलाया, एका कन्या वेख वखाईआ। हरिजन निरगुण धार जोबन इक्क रखाया, बिरध बाल ना कोए बणाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। साची जोड़ी जोड़ जुड़ाया, विच विचोला बेपरवाहीआ। थोड़ी थोड़ी उत्तों वेल पाया, साचा घूँघट खोल्ह अपणा मुख दूई द्वैती परे हटाईआ। साचा शब्द मुखो बोल सुणाया, हँ ब्रह्म होई कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म साची सेज सुआया, आप आपणे अंग लगाईआ। साचा मन्दिर दर वखाया, हरिजन वेखे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दित्ता साचा वर, नौ दुआरे दए तजाईआ। सिँघ जगदीस वर घर पा, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। एका नारी ल्ए प्रना, साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। दरगाह साची होया व्याह, वाह वा मंगल गांयदा। एका लग्गा साचा थाँ, साचा घर सुहांयदा। नाता तोड़या पिता माँ, भैण भ्रा ना कोए वखांयदा। मिल्या मेल बेपरवाह, गुरमुखां एह समझांयदा। देवणहारा ठंडी छाँ, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। शंकर पकड़ उठाए आपणी बांह, बाल निमाणे माण दवांयदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, पिछला लहिणा मूल चुकांयदा। इक्क जपाउणा हरि हरि नाँ, नेत्र नैणां दरस वखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन चरन धूढ़ी

अशनान करांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहांयदा। सृष्ट सबाई पिता माँ, इक्क अकल्ला आप अख्वांयदा। गुरमुखां हरिभगतां अग्गे करी ना नांह, आप आपणा बिरध धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा आपे कर, आपणा खेल खिलांयदा। नौ दरवाज़े जगत तज, सिँघ जगदीस करे जैकारा। सच सिँघासण चढ़या भज्ज, दोए जोड़ करे निमस्कारा। हरि का शब्द नगारा रिहा वज्ज, चारों कुन्ट करे ख़बरदारा। सतिगुर पूरा पर्दे लए कज्ज, जो जन चल आए दुआरा। आप कराए साचा हज्ज, काया काअबा खोल्ह किवाड़ा। अमृत प्याए रज्ज रज्ज, गुर गोबिन्द मीत मुरारा। लोकमात रक्खे लज, नानक गोबिन्द विच संसारा। अग्नी तत्त ना जाए दझ, मेल मिलावा राम प्यारा। लौण ना देवे अज पज, कान्हा कृष्ना खेल न्यारा। कलिजुग अन्तिम लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां गगन पातालां दो जहानां रिहा भज्ज, निरगुण जोत कर उज्यारा। हरिसंगत विच बहे सज, दिस ना आए जीव गंवारा। जो घड़या सो जाए भज्ज, घड़न भन्नणहार आप करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखे दर सच्चा दरबारा। गुरमुख साचा अग्गे रक्ख, हरि साची बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी हो प्रतक्ख, आप आपणी खेल खिलाईआ। हरिजन कीने आपे वक्ख, आपणा लेखा आप जणाईआ। करता कीमत पाए करोड़ी लक्ख, आपे लक्खो कक्ख विकाईआ। हरिसंगत राह साचा दस्स, जगत जगदीस वड्डी वड्याईआ। छत्ती युग हिरदे वस, गुरमुखां काया फोल फोलाईआ। चौवीआं अवतार नस्स नस्स, नव खण्ड करे रुशनाईआ। शब्द निराला तीर कस, चिल्ले आपणे आप चढ़ाईआ। वेख वखाणे रवि ससि, समुंद सागर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचे घर, घर साचे दए जणाईआ। एका कला एका धार, दस एका आप जणाईआ। साचा कर्म करता करनी करे विचार, कारज करते वड वड्याईआ। धरनी दब्बी धरत भार, धवल रही कुरलाईआ। मंगे मंग बण भिखार, रो रो नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी पाए सार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुरसिख साजण कर त्यार, साची सेवा लाईआ। देस माझन ख़बरदार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। सतिजुग साची नींह दए उसार, गुरमुख नीहां हेठ दबाईआ। हरिसंगत तेरा चुक्कया भार, आप आपणी दया कमाईआ। सिँघ जगदीशा दित्ता वार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। कौर रणजीत दए प्यार, माँ पुत्तर संग रखाईआ। गुर संगत करना इक्क विचार, हरि साचे बणत बणाईआ। मरे पुत्त मात ना रोवे ज़ारो ज़ार, हरि साची सिक्ख मति समझाईआ। सतिजुग वरने विच संसार, गुरसिख बैठा आस लगाईआ। पहलों कीना आपणे उत्ते वार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। हड्डीआं बालन कर त्यार, त्रैगुण अग्नी भेट चढ़ाईआ। सच निशाना कर त्यार, सत्त रंगां वेख वखाईआ। सति पुरख खेल अपर अपार, कलिजुग अन्तिम आप चलाईआ। सोहँ महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लेख आप निरँकार, जै जै जैकार करे सर्ब लोकाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ढहि पैण दुआर, उन्नी उनीसा वेख वखाईआ। उन्नी कत्तक रंग करतार, लाल गुलाला उप्पर दए रंगाईआ। कंचन धार संगत प्यार, हरि साचा संग वखाईआ। सूहा वेस दर दरवेश, लोकमात आए फेरा पाईआ। चिट्टी धार दस्म दुआर, गुरसिखां मेल मिलाईआ। पीला बस्त्र तन शृंगार, गोबिन्द वेस वटाईआ। नीला नीली धारों करे बाहर, आप आपणी खेल खिलाईआ। काली धार कर प्यार, पंचम पोह दिवस विचार, काला सूसा तन छुहाईआ। नौ दर मन्दिर दए उसार, साची बणत बणाईआ। सिँघ लछमण करया ख़बरदार, दिल्ली दुआरा वेख वखाईआ। नौ सत्त इक्क आधार, अट्ठ नौ वज्जे वधाईआ। नौ अट्ठ पार किनार, सत्त नौ वेख वखाईआ। चौथे युग कर प्यार, चारे कूटां मुख सालाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ पलँघ इक्क करतार, चारों कुन्ट लकार खचाईआ। इक्की दिन कर विहार, इक्क इकीसा वेख वखाईआ। नौ दुआरी लँघ दुआर, दसवें आपे डाहीआ। निरगुण जोत कर उज्यार, सरगुण मेल मिलाईआ। गोबिन्द गुर लेखा अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, हरि साचा वेख वखाईआ। शब्दी शब्द बोल जैकार, गोबिन्द नाउँ रखाईआ। जोती जगे अगम्म अपार, निरगुण वेस वटाईआ। हरिसंगत मेला विच संसार, हरि साचा आप कराईआ। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, विछड़ कदे ना जाईआ। अचरज खेल खेला पारब्रह्म नर अवतार, नर नरायण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क एका दए वड्याईआ। इक्की दिवस जगत विहारा, हरि साचे सेव कमाईआ। सिँघ बिशन कर प्यारा, लेखा लेख वखाईआ। हरिसंगत बन्ने सीस दस्तारा, हरि साचे वड वड्याईआ। कलिजुग वहिण डूँघी गारा, लक्ख चुरासी रही रुढ़ाईआ। नेत्र रोवे गंगा धारा, जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। गोदावरी कन्ढे बहि बहि कढे हाढ़ा, गोबिन्द तेरा राह तकाईआ। मन्दिर मस्जिद बणया अखाड़ा, गुर दर वेसवा माया नाच रही नचाईआ। पुरख अकाल ना दिसे साचा लाड़ा, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जलां थलां फोल फोलाईआ। पहली चेत्र दिवस विचारा, लेखा जाणे वीह सौ बारा, गुरमुखां लेख लिखाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, भेव कोए ना पाईआ। आउणा चल चरन दुआरा, मेल मिलावे साचे माहीआ। शब्द जैकारा इक्क बुलाउणा, पूजा पाठ ना कोए वखाईआ। फड़ फड़ बांहों पार लँघाउणा, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। गुरसिखां दे बांह सरहाणे लोकमात सौणा, सतिगुर पूरा सेवा आप कमाईआ। नाम जहाज़ इक्क चलाउणा, आपणा चप्पू ल्या उठाईआ। चौथे जुग वेख वखाउणा, तीस बतीस ना कोए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिख लिख लेखा गुरमुख साचे लए जगाईआ।

पहली चेत्र लेख लिखाया, वीह सद बारां वज्जी वधाईआ। गुरमुख साचा आप जगाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। ज़ात पात ना कोए जणाया, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। आप आपणा तरस कमाया, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। पूर्ब लहिणा झोली पाया, पिछला लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर माण दवाया, कलिजुग अन्तिम होए सहाईआ। साचा बस्त्र तन सजाया, एका भूषन वेख वखाईआ। नेत्र नैणां कज्जल पाया, लोइन अक्ख खुल्हाईआ। दो जहानां सज्जण लोकमात आया, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। चरन धूढ़ करौण मजन आया, दुरमति मैल दए गंवाईआ। अन्तिम पड़दे कज्जण आया, नाम दोशाला हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सौ बारां वेख वखाईआ। वीह सद बारां हरि रंग लाया, गुरमुखां वज्जी वधाईआ। आपणा लेखा आप जणाया, घर दीवा बाती कर रुशनाईआ। अन्ध अन्धेरा जगत मिटाया, नाता तोड़या भैणां भाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क वखाया, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। चन्द नौचन्दी इक्क चढ़ाया, दिवस रैण करे रुशनाईआ। सुहागी छन्दी इक्क सुणाया, अलख अलखणा आपे गाईआ। बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाया, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त दा लेख मुकाया, वही खाता ना कोए फुलाईआ। लाड़ी मौत ना वेस वटाया, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। साचा मार्ग इक्क वखाया, साची बख्शी हरि सरनाईआ। गुरू शब्द इक्क जणाया, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटाया, लक्ख चुरासी तन सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सद बारां देवे वर, वर दाता बेपरवाहीआ। आपे देवे वर, आप वड्याईआ। आपे वेखे घर, आप उपजाईआ। आप उपाए सर, आप तराईआ। आपे घाड़न घड़, आप भन्नाईआ। आपे अक्खर पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपे हर घट अन्दर बैठा वड़, आपे मुख छुपाईआ। आपे गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग लेखा जाणे सतारां हाढ़, हरि साचा लेख लिखाईआ। गुरसिख लेखे लग्गे नाड़ नाड़, तन माटी दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। हाढ़ सतारां दिवस सुहाया, हरिसंगत मेल मलन्नया। आवण जावण पन्ध मुकाया, दिस ना आया आत्म अन्नया। दर घर साचे दरस दिखाया, नौ दर डेरा भन्नया। दसम दुआरी मेल मिलाया, सतिगुर पूरा आपे मन्नया। सो पुरख निरजंण साचा राग सुणाया, छंत सुहागी एका कन्नया, दुरमति मैल दागी धो वखाया, निर्मल करीआं चारे कन्नीआं। धुर दा वागी आपे आया, मेल मिलावा चिरी विछुन्नयाँ। आत्म सोई जागी आप जगाया, जगत विकारा देवे डन्नया। माया त्यागी वेस वटाया, माया ममता खंन खन्नया। लिव लागी जिस दर्शन पाया, मन मनुआ आपे मन्नया। बुध बिबेकी दए वखाया, हरिसंगत

दर सुहन्नया। मति मतवाली रहे सरनाया, हरि का शब्द गुरू कर मन्नया। साचा जोग अभ्यास इक्क वखाया, गुरसिखो दर आओ दर्शन पाओ, निरगुण जोत निरँकार निराकार लोकमात चढ़या साचा चन्नया। चढ़या चन्न होया प्रकाश, हरिसंगत वेख वखाईआ। मिल्या मेल शाहो शाबास, दस्म दुआरा नज़री आईआ। सतिगुर पूरा पुरख अबिनाश, एकउँकारा इक्क अख्वाईआ। जन भगतां करे बन्द ख़लास, नित नवित्त फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम पूरी करन आया आस, हरिसंगत देवे धुर धरवास, साची संगत ध्रू प्रहलाद सर्ब बणाईआ। लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, गर्भ वास ना फेर रखाईआ। पार कराए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रवि ससि चरनां हेठ दबाईआ। गुरसिखां अन्दर करया आपे वास, कवण जेहवा हरि गुण गाईआ। सतिगुर मिल्या पूरा होया अभ्यास, छुट्टी सर्ब लोकाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आदि जुगादी जन भगतां अग्गे दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। गुरसिख तेरी काया गगन आपे पाए रास, राती सुत्तयां दरस दिखाईआ। दीपक जोत जगे होए प्रकाश, जिस घर आवे बेपरवाहीआ। अन्ध अन्धेरा जाए विनास, जोत निरँजण रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद बारां दित्ता वर, हाढ़ सतारां दिवस सुहाईआ। हाढ़ सतारां रंगण रंग, हरिसंगत आपणे रंग रंगाईआ। एका दर प्रभ अबिनाशी ल्या मंग, दूजे दर ना मंगण जाईआ। चरन धूढ़ नुहाए साची गंग, दुरमति मैल गंवाईआ। मिल्या दाता दानी सूरा सरबंग, सर्ब कला आप अख्वाईआ। गुरसिख पहलों तेरे अन्दर विछाई फूलां सेज पलँघ, सच दुशाला फेर उठाईआ। नौ दुआरे आपे गया लँघ, तेरा जगत पैंडा टेडी बंक पार कराईआ। तेरे दर गौंदा जाए वजाए धुन शब्द नाम मृदंग, अनहद राग आप अलाईआ। बजर कपाटी तोड़ जंद, कलिजुग खेड़ा वेख वखाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशां गुरसिखां नेड़े आपे करे पन्ध, आपे जाए कर कर धाईआ। आपे देवे परमानंद, निजानंद आप समाईआ। आप तजाया रसना गन्द, माया मोह आप मिटाईआ। आप लगाया आपणे अंग, अंगीकार करे बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सदा बख्शंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां लेखा रिहा मुकाईआ। जगत पन्ध आप मुकाया, घर घर फेरी पांयदा। गुरसिख सोया आप उठाया, आपणी सेव कमांयदा। गुरसिख तेरा साचा नां हरि साचे गाया, गावणहारा दिस ना आंयदा। शब्द डोरी तन्द बंधाया, मन मनुआ बंध वखांयदा। हौली हौली खिच ल्याया, राह खैहड़ा आप वखांयदा। नौ दुआरे लेख लखाया, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुख साजण मेल मिलाया, घर सच्चा इक्क सुहांयदा। दस्म दुआरी डेरा लाया, जग झेड़ा आप मिटांयदा। अन्तिम बेड़ा बन्नह वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद बारा कर प्यारा, हरिसंगत वेख वखाया। हरिसंगत

फल फुलवाड़ी गई फुल्ल, लोकमात महिकाईआ। आपणे कंडे गई तुल, तोलणहारा तोल तुलाईआ। सच भण्डारा गया खुल्ह, एका नाम रिहा वरताईआ। राज राजानां कोई ना पाए मुल्ल, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी शाहीआ। कलिजुग तेरा वेख पसारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। वीह सद तेरां कर प्यारा, साधां सन्तां वेख वखांयदा। राज राजानां मारे मारा, शब्द नाअरा इक्क लगांयदा। सीस बन्न्हाया जगत दस्तारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। अन्तिम आउणा चरन दुआरा, दर दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद तेरां तेरी धार, दस दस वेखे पावे सार, नारी पुरख ना कोए मनांयदा। वीह सद तेरां उतरया पार, आपणी वंड वंडाईआ। दस चार चौदां हो उज्यार, चौदां तबकां करे रुशनाईआ। चौदां हट्टां वणज वपार, चौदां लोक इक्क जणाईआ। सचखण्ड दए अधार, ब्रह्मलोक लए उठाईआ। शिवलोक वेख पसार, भोले नाथ एह समझाईआ। करोड़ तेतीसा ख़बरदार, सुरपति राजा इन्द हलाईआ। त्रै त्रै इक्क आधार, त्रै त्रै रंग रंगाईआ। सति सति कर पसार, सति सतिवाद हथ्थ वड्याईआ। चौदां चौदां बन्न्हे धार, आप आपणी कल वरताईआ। लोकमात खेल अपार, हरिजन साचे लए उठाईआ। गोबिन्द लहिणा दए उतार, पिछला मूल चुकाईआ। एका इक्की कर त्यार, साची सिक्खी वेख वखाईआ। सिक्खी सिख्या गुर विचार, करनी करता आप कमाईआ। फड़ फड़ बेड़ा करे पार, पार किनारा आप जणाईआ। पहली चेत्र हो उज्यार, वीह सौ चौदां करे जणाईआ। इक्की दिवस बन्न्हे धार, एका एक वड्डी वड्याईआ। लिखी रेख विच संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरिसंगत तेरा सच दुआर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। मेल मिलावा मीत मुरार, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। सच सिंघासण हरि निरँकार, निरगुण बैठा जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। गुरसिखां सच राह वखाया, हरि साचे मेल मिलाया। साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया, भाण्डा भरम भउ भनाया। एका रंगण रंग रंगाया, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। गुरसिखां दुआरे मंगण आपे आया, गुरसिख मंगण किसे घर ना जाया। गुरसिखां नेरन नेर हो दरस दिखाया, कवण कूटे गुरमुख जावण राह तकाया। नाम पघूंड़े साचे झूटे आप झुलाया, सच हुलारा इक्क रखाया। सतिगुर पूरा तुठे बेड़ा जगत तराया, अद्धविचकार ना कोए डुबाया। लुकया रहे ना किसे गुट्ठे, जिस जन सतिजुग त्रेता द्वापर हरि हरि रसना गाया। अन्तिम बद्धा एका मुट्ठे, सोहँ तन्दी तन्द बंधाया। कलिजुग सन्त रहि गए रुठे, माया माण ना मनों गंवाया। पुरख अबिनाशी ख़ाली कीते ठूठे, गुरमुखां घर भराया। अन्तिम आपणी करनी जाण लुट्टे, ठग्ग चोर यार बैठे अन्दर डेरा लाया। जो जन हरि

सरनाई एका ओट रक्खे, वेले अन्तिम होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका सिक्खी दए बणाया। साची सिक्खी साची धार, हरि साचे आप उपाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां इक्क वड्याईआ। एका शब्द इक्क जैकार, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। एका वणज इक्क वपार, इक्क भण्डार रिहा वरताईआ। एका दाता दानी देवणहार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। शब्द निशानी धुर दरबार, गुरमुखां रिहा वखाईआ। वीह सद पन्दरां हो उज्यार, आप आपणी कल वरताईआ। नौ नौ खेल करे करतार, नौ नौ वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार, पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह अख्वाईआ। सचखण्ड ब्रह्म लोक शिव इन्द सुहाया, चौदां चौदां रिहा झोक, चौदां चौदां वेख वखाया। नौ सत्त ना सके कोई रोक, आप आपणी कल वरताया। लोआं पुरीआं सुणाए सच सलोक, साचा ढोला एका गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत पन्दरां वंड वंडाया। सम्मत पन्दरां वंडी वंड, हरि साचे हत्थ वड्याईआ। गुर गोबिन्द तेज़ चण्ड प्रचण्ड, आपणे हत्थ उठाईआ। जगत विकारा वेख ब्रह्मण्ड, जीउँ पिण्ड खोज खोजाईआ। सति सृष्ट सबाई देवणहारा दंड, बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग नार दुहागण होई रंड, सिर पल्लू ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पन्दरां मन्दिरां अन्दर फेरा पाईआ। सम्मत पन्दरां हरि करतार, आपणी खेल खिलाईआ। अठसठ तेरी वेख विचार, आपणी अलख जगाईआ। तीर्थ तट आपे दए आधार, आपे मेट मिटाईआ। गंगा गोदावरी सुरस्ती नार, तिन्ने लए प्रनाईआ। गुरमुख साचे साजण यार, मीत मुरारे संग रलाईआ। अठसठ करे पार किनार, जगत किनारा वेख वखाईआ। गुरमुख साजण लए उभार, हरि दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां वेख वखाईआ। वीह सद पन्दरां तुट्टा नाता, नाता बिधाता आप तुड़ांयदा। सम्मत सोलां वेखे अन्धेरी राता, आपणा मुख छुपांयदा। गुरसिखां सुणाए आपणी गाथा, दूसर कोए ना अंग लगांयदा। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथां माण दवांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही वेस वटांयदा। आपे जाणे आपणा साथा, आपे आपणा संग निभांयदा। गुरसिखां लहिण देण चुकाया पूजा पाठा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। मूल चुकाया मणका इक्क सौ आठा, मन का मणका आप भवांयदा। पूर कराए घाटा तीर्थ अठसाठा, साल अठारवां ख़ुशी मनांयदा। बवन्जा साल पंज तत्त तेरीआं कढ्ढीआं वाटा, कलिजुग चोला आप हंढांयदा। सोलां साल सोलां कली सोलां धार जोती अग्नी जगे ललाटा, लाट ललाटी वेख वखांयदा। गुरसिखां तन सीवे पाटा, आपणी हत्थीं सूई नाम चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा दिवस आप सुहांयदा। सम्मत सोलां पहली चेत्र दिवस सुहाउणा, हरि साची जोत रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ रखाउँणा, भुल्ल रहे ना राईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश एका रंग रंगाउणा, एका रूप दरसाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा उठ उठ फेरा पाउणा, आप आपणी बणत बणाईआ। पंच प्यारे संग रखाउणा, साची धार चलाईआ। नाम लिखारी लेखे लाउणा, नाम नामा झोली पाईआ। आप आपणा वेस वटाउणा, दिस किसे ना आईआ। लशकर शाही ना कोई रखाउणा, खाली हथ्थ वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी डेरा ढाउणा, ढौदिआं डेर ना लाईआ। वाली हिन्द आप जगाउणा, सम्मत सोलां कूके दए दुहाईआ। मुस्लिम सुन्नी आप जगाउणा, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। किले शाही चरन छुहाउणा, झूठी शाही रहिण ना पाईआ। दर दरवाजा बन्द कराउणा, ना सके कोई खुल्हाईआ। लाहौर शहर कहर वरताउणा, गुरू ग्रन्थ वड्याईआ। पन्थ पन्थी मार्ग लाउणा, भरम भुलेखा दए कढाईआ। जगत लेखा आपणे हथ्थ रखाउणा, साध सन्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत विहार हरि निरँकार लोकमात आप कराईआ। जगत विहारा साची धार, हरि साचा आप करांयदा। शाह सुल्ताना आए हार, ना कोई धीर धरांयदा। महल्ल अटल ना कोए मुनार, ना कोई बंक सुहांयदा। जल अन्न ना ठंडी ठार, भर प्याला ना कोए प्यांअदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, हरि प्रभास डेरा लांयदा। नौ खण्ड तेरा इक्क अखाड़, हरि साचा वेख वखांयदा। गुरसिखां पहलों बजर कपाटी दित्ती पाड़, फिर आपणा राह वखांयदा। करया प्रकाश बहत्तर नाड़, अट्ठे पहर ख़ुमार जणांयदा। दर घर साचे दित्ता वाड़, ना कोई बाहर कढांयदा। जगत तृष्ना दित्ती साड़, चरन कँवल प्रीती इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां आप उठांयदा। सम्मत सोलां सोया गया उठ, हरि साचे आप उठाया। साधां सन्तां कोलों सतिगुर पूरा गया रुठ, कलिजुग काला पर्दा पाया। गुरमुखां नाम दित्ता आपणी मुठ, हरि साचे आप वरताया। मेहरवान दाता गया तुठ, तोट रहे ना राया। दस्म दुआरी मेल मिलाया इक्क सुहाया किला कोट, नौ दर बन्द रखाया। रसना गा गा थक्की भरी जगत ना पोट, हरि हिरदे नज़र ना आया। हरिसंगत तेरा आपे कढ्ढे खोट, कंचन नाम सुहागा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दरवेश फेरी पाया। सम्मत सोलां कर कर ओहला, आपणा वक्त लँघावणा। गुरसिखां रंगे काया चोला, रंग मजीठी इक्क चढ़ाउँणा। अन्तिम बणे साचा तोला, पूरे कंडे तोल तुलावणा। शाह सुल्तान खेले आपणा होला, लाल गुलाला रंग चढ़ावणा। वेखण आया ईसा मूसा मौला, मौला रूप वटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

सम्मत सोलां संग निभावणा। सम्मत सोलां रिहा ललकार, पहली चेत दए ललकारा। पुरख अबिनाशी पाए सार, बेऐब परवरदिगारा। अल्ला राणी करे प्यार, वेख वखाए मुहम्मदी यारा। ऐनलहक्क ख़बरदार, मुकामे हक्क एका नाअरा। औलीए पीर गौंस कुतब करे ख़बरदार, दस्तगीर मीत मुरारा। मुल्ला शेख़ा करे विचार, मस्जिद वेखे उच्च मनारा। मक्का काअबा दए अधार, दो दो आबा पावे सारा। हक्क जणाया सांझा यार, लोकमात लै अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका वेख जगत पसारा। ऐनलहक्क हक्क ख़ुदाई, हरि साचा वेख वखांयदा। किला शाही नूर अलाही, जोती जोत डगमगांयदा। बन्दीखाना ना कोए वखाई, हरि बंधन तोड़ तुड़ांयदा। चिट्टे उप्पर काला लेखा रिहा लिखाई, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां राह वखांयदा। सम्मत सोलां राह वखाउणा, हरि साचे कर्म कमाया। पहली चेत्र दिवस सुहाउणा, देव नेत उठ धाया। गहर गम्भीर खेल रचाउणा, गुणी गहीर भेव ना आया। जगत ज़ंजीर इक्क बनाउणा, शरअ शरीअत मेल मिलाया। पीर फकीर वेख वखाउणा, आप आपणा वेस वटाया। तीर निशाना इक्क चलाउणा, ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ाया। जगत वहीर आप कराउणा, ना कोई धीरज धीर धराया। तख्त ताज सृष्ट सबाई लोकमात उठाउणा, राज राजाना दए सज़ाया। आपणा पर्दा आपे लौहणा, मुख नक़ाब रहिण ना पाया। साची रबाब अहिबाब इक्क वजाउणा, सच सतार इक्क हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, तेरा दुःखड़ा मेट मिटाउणा। हरिसंगत तेरी वंड वंडाए, हरि सज्जण दीन दिआलया। कलिजुग भेख पाखण्ड मिटाए, मेटे रैण अन्धेरी घटा कालीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाए, खेले खेल आप निरालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, गुरमुख साजण मेल मिला ल्या। हरिसंगत तेरा सच भण्डारा, घर साचे आप वरतावणा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा, गुरमुखां बणे जामणा। आपे बख्शे चरन प्यारा, आप फड़ाए आपणा दामना। सेवक करे सेवादारा, इक्की सिक्खां नाल रलावणा। पहली पोह किया विहारा, पहली चेत्र तोड़ चढ़ावणा। अठसठ तीर्थ पार किनारा, हरिसंगत वड वड्यावणा। पहली चेत कराए वणज वापारा, धन्न ख़जाना आप लुटावणा। भरमे भुल्ला भरम संसारा, गुरसिख भरमी गढ़ तुड़ावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां साचा खेल खिलावणा। साचा खेल हरि खिलंदड़ा, करन करावण जोग। एका इक्की वेख वखंदड़ा, आत्म रसीआ रस रस भोग। साची सिक्खी चोग चुगन्दड़ा, देवे दरस अमोघ। सच भण्डार आप वरतन्दड़ा, कट्टे हउमे रोग। दर दिसे ना कोए मदिरा मासी गन्दड़ा, होए जगत विजोग। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल मिलावा धुर संजोग। सच भण्डारा आप उपाया, आपे बणत बणाईआ। चौथे जुग चारे सिक्ख सेवा लाया, पंचम सहिज सुखदाईआ। हरिसंगत प्यार साचा घर सति विच टिकाया, निमख निमख गुण गाईआ। रसना पीस पीस पीस वेख वखाया, अमृत जल विच छुहाईआ। सखीआं रल मिल गुन्न् वखाया, एका धार बंधाईआ। साचे चिल्ले हवण कराया, अग्नी तत्त जलाईआ। त्रैगुण माया अन्दर डाहया, सिँघ गिरधारा लम्बू लाईआ। पाल पाथी रिहा उठाया, बख्शीश हथ्थ बख्शश फड़ाईआ। मस मस मस्सा मस वखाया, दूजी धार रहे ना राईआ। हस्स हस्स पकवान पकाया, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। राह तक्क तक्क गुरमुख तेरा वक्त लँघाया, अन्तिम रैण सुहञ्जणी आईआ। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाया, गाए चाँईं चाँईंआ। साचा दर इक्क वखाया, वज्जदी रहे सदा वधाईआ। हिरख सोग विच कदे ना आया, सो मिल्या साचा माहीआ। अन्दर मन्दिर बहि बहि ढोला गाया, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। साचा कीर्तन कीर्तन विच तन सुणाया, तत्व तत्त विच समाईआ। गुरसिख धन्न धन्न जणेंदी माया, जो जन आए सरनाईआ। तीन लोक रहे शरमाया, नेत्र नैण बन्द कराईआ। ब्रह्मा रो रो नीर रिहा वहाया, अट्ठे पहर कुरलाईआ। शिव शंकर हरि हरि भेव ना राया, हरि हरि जू विच टिकाईआ। इन्द्र इन्द्रासण मुख भवाया, आप आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, लोकमात करे रुशनाईआ। निरगुण जोती जामा पाया, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। शब्द अगम्मी गीत अनादी गाया, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। हरि हरि ब्रह्मादी खोज खोजाया, आदि जुगादी इक्क अख्वाईआ। हीरा लाल रत्न अमोलक गुरमुख साची वथ्थ लभाया, लभ्भणहार आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी मथ्था वरोल वखाया, नाम मधाना एका पाईआ। अन्तिम पर्दा गुरसिख काया खोल्ह् वखाया, आप आपणा कुंडा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा ढोला आपे गाया, सोहँ दए सुणाईआ। सोहँ गाया वर घर पाया, पाया पुरख बेअन्ता। एका साची सेज सुहाया, मेल मिलाया नारी कन्ता। नारी कन्त मेल मिलाया, रंग चढ़ाया इक्क बसन्ता। गुरमुख साजण वेखण आया, पहलों तोड़े गढ़् हउमे हँगता। फिर आपणी गोद उठाया, पहलों बणाया दर दर मंगता। भुक्खा नंगता हरि रघुराया, खाली हथ्थ फिरंता। गुरमुखां भण्डारा रिहा भराया, दिस ना आए कलिजुग जणता। जागरत जोत इक्क जगाया, सम्बल नगरी धाम सुहंता। नौ दुआरे पार कराया, दस्म दुआरी वेख वखंता। आत्म सेजा डेरा लाया, वड दाता गुणी गहंता। तेरा मेरा मेरा तेरा दए चुकाया, नाम रंगण एका रगंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साजण साचे दर वरंता। दर गुरमुख वरया कन्त भतारा, साचा दर सुहाईआ। नर नरायण नारी नारा, निज

घर वेख वखाईआ। अमृत बरखे ठंडी ठारा, धारा आप चलाईआ। रंग महल्ल उच्च अटल मुनारा, हरि साचे बणत बणाईआ। एका वस्सया इक्क अकल्ला एकउँकारा, अकाल पुरख अख्वाईआ। जूनी रहित निराधारा, निरवैर आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे कूड़ पसारा, लोकमात वड वड्याईआ। सम्मत सोलां हो उज्यारा, वीह सद बिक्रमी मेल मिलाईआ। घर साचे मन्दिर देवे इक्क भण्डारा, आपे दए वरताईआ। बिरध बाल जवान ना कोई करे विचारा, नारी पुरख ना वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, सगली सृष्ट समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत देवे साचा वर, वर दाता आप हो जाईआ। हरी हरि हरि हरि भेख, हरी हरि वेस वटाईआ। हरी हरि एका रेख, हरी हरि एका रूप जणाईआ। हरी हरि कलमा एक, एका रिहा पढ़ाईआ। हरी हरि एका कुतब गौंस मुल्लां वेखे शेख़, शाह फ़कीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर करे रुशनाईआ। नूर इलाही अल्ला नूर, आलमीन अख्वाया। ख़लक ख़ुदाई हाज़र हज़ूर, तामील तकमील इक्क वखाया। शरअ शरीअत नेड़े दूर, इज़राईल जबराईल मेल मिलाया। सच हदीस वेख कोहतूर मेकाईल असराफ़ील सिफ्त सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नूर डगमगाया। नूरी अल्ला जोत नूरानी, कलमा महबूब जणाईआ। परवरदिगारा इक्क निशानी, सच हदूद वंडाईआ। इक्क अकल्ला निगहबानी, एका सालस राह तकाईआ। एका बख़्शे आब हयात पाणी, एका बख़शिश रिहा कराईआ। एका जाणे आलमे जावदानी, कायनात इक्क समाईआ। एका वखाणे दुनियां फ़ानी, एका वेख वखाईआ। एका नबी रसूल होए दिल जानी, दीदार जल्वा इक्क वखाईआ। एका महिबान होए लासानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर डगमगाईआ। नूरी जोत हरि अल्ला, आलम उलमा अख्वांयदा। बेऐब बेऐबा बण मलाह, सिफ्ती सिफ्त ना कोए जणांयदा। आपे वेखे आपणी ख़ानगाह, चौदां तबकां फेरा पांयदा। आपे आपणा करे निक़ाह, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। आपे आपणा अमाम लए उपा, कलमी कलमा आप अख्वांयदा। आपे आपणा दाम लए फड़ा, दामनगीर दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणा आप सुहांयदा। घर सुहाया दर दरवेश, दर दर फेरा पाईआ। आदि जुगादी रिखी केश, जगत गोवर्धन वेख वखाईआ। अबिनाशी करता नर नरेश, दस दस्मेस मेल मिलाईआ। आपे हथ्थ खूंडी मोढे धरे खेस, आपे हरया भरा कराईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा लिख्या पूर कराईआ। आपे जंगल जूहां कन्दर रिहा वेख, आपे बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। पूरा करे हरि संदेसा, आपणा आप सुणाया। सेवा लाए ब्रह्मा

विष्न महेष गणेशा, एका हुक्म चलाया। चार यारी ना चले पेसा, पंचम मता पकाया। लहिणा देणा चुक्के गणपति गणेशा, आदि शक्ति रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम वेखण आया पारब्रह्म करतारा। मेल मिलाए संग मुहम्मद मुहम्मदी यारा, अल्ला राणी सीस गुंदाया। आप उठाया आपणा खारा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, निरगुण नूर रुशनाईआ। धुरदरगाही सच महल्ला, सच सिँघासण डेरा लाईआ। आपे बणया अछल अछला, वल छल धारी खेल खिलाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा लोआं पुरीआं फिरे इक्क अकल्ला, अकल कला वड्याईआ। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, सोहँ रूप आप समाईआ। हँ ब्रह्म धाम इक्क वखल्ला, एका कूट रुशनाईआ। वेख वखाणे आपणा नूर नूरी अल्ला, अल्ला मलाह आप हो जाईआ। आपणे सांचे आपे ढला, आपे बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणे हथ्थ वड्याई रक्ख, रक्खणहारा नाउँ धराया। कलमी कलमा करे वक्ख, इलम उलमा वेख वखाया। एका अल्फ़ी अल्फ़ करे पक्ख, आलमगीर भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिंदी दिशा फेरा पाया। लहिंदी दिशा हरि बलवान, आपणा चरन टिकांयदा। उठे जोद्धा सूरबीर नौजवान, नौ नौ वेख वखांयदा। मनका तसबी करे मात पछान, परीख्या विच आप ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या आप समझांयदा। सच मुसल्ला इक्क अकल्ला, आपणे हथ्थ उठाईआ। रोज़ा बांग जलां थलां, सच सदा आप सुणाईआ। सच्चा सजदा निहचल धाम अटला, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणी शाहीआ। आपणी शाही वेखणहारा, हरि जू हरि अख्वांयदा। कलिजुग मुहम्मद मीत मुरारा, साचा संग निभांयदा। मेल मिलावा चार यारा, साची यारी तोड़ निभांयदा। कूड़ कुड़यारा, भर भण्डारा, आपणा आप वरतांयदा। उम्मत उम्मती कर पसारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लाए आपणा नाअरा, आपे आपणे विच टिकांयदा। साचा नाअरा हक्क हकीकत बोल, आपणा हक्क जणाईआ। शरअ शरीअत कुण्डा खोल्ह, लोकमात वेख वखाईआ। आपणी आयत आपणा अक्खर आपे बोल, आपणी करे पढ़ाईआ। आपे कायनात गया मौल, मौला रूप वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणी शाहीआ। आपे शाह नवाब, शाहो भूप सुल्तानया। आपे अस्व घोड़े चरन दए रकाब, आपे फिरे दो जहानया। आपे पुन्न आप सवाब, आपे मारनहारा कानया। आपे देवणहार अज़ाब, आपे लेखा जाणे पंच शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, आपणा दर करे परवानया। आपणा दर कर परवान, आप अपणा वेख वखांयदा। चौदां चौदां वेखे मार ध्यान, चौदां चौदां मूल चुकांयदा। चौदां चौदां वेख ईमान, चौदां चौदां मुख अलांयदा। चौदां होया जाणी जाण, आप आपणा भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सम्मत सोलां खेले खेला, खेलणहार ख़ुदाया। विछड़यां प्रभ करे मेला, जगत विछोड़ा दए कटाया। आपे होए सज्जण सुहेला, दर घर साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा काज रचाया। रचया काज हरि निरँकार, सन्त मनी सिँघ हथ्थ वड्याईआ। लिख्या लेख अपर अपार, हरि साचा आप लिखाईआ। फड़या दर जगत सरकार, बैठी बन्द कराईआ। पंचम जेठ करे ख़बरदार, शाह संगरूर आप उठाईआ। आपणा लेखा आपे पाए सार, आपे लए कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्दीख़ाना आपे तोड़ तुड़ाईआ। आपणा बन्दीख़ाना आपे तोड़, सृष्ट सबाई बन्दीख़ाने पांयदा। सस्सा किला उप्पर होड़, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। हँ ब्रह्म नाता जोड़, पारब्रह्म दरसांयदा। अलक्ख निरँजण चढ़े घोड़, साचा अस्व आप दौड़ांयदा। आपणा मारे आपे पहला पौड़, आपणी दिशा वेख वखांयदा। वेखे फल मिट्ठा कौड़, रस रसना कवण रखांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, वेद व्यासा आप उठांयदा। धुरदरगाही आए दौड़, नेड़ा दूर ना कोए जणांयदा। दो जहानी लाए एका पौड़, सोहँ डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ जगत सलांहयदा। पंचम जेठी हरि हरि धार, शाह सुल्ताना लए उठाईआ। सन्त मनी सिँघ लेख प्यार, लेखा लए कढाईआ। आपणा अन्दरों कढ्ढे बाहर, आपणा पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, दूजी धार वहाईआ। तीजा लेखा जाणे सतारां हाढ़, अगला शब्द बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, कलम कलमा कलमी कलम लेख लिखाईआ।

✪ १२ चेत २०१६ बिक्रमी मोहण सिँघ दे घर सक्कांवाली ज़िला अमृतसर ✪

परवरदिगार सर्ब जी दाता, एकंउँकार पुरख अबिनाशया। सृष्ट सबाई पिता माता, नूर नुरानी शाहो शाबाशया। बैठा रहे इक्क अकांता, लक्ख चुरासी खेल तमास्सया। जोती नूर प्रकाश बहु बहु भांता, गगन मण्डल पावे रास्सया। हरिजन चरन कँवल बंधाए साचा नाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल पृथमी अकाशया। पृथमी आकाश हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना राया। वेद कतेब ना पावण सार,

लेखा लिख्त विच ना आया। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर बैठे खड़े दुआर, निउँ निउँ रहे सीस झुकाया। अलख निरँजण भेव न्यार, ज्ञान नेत्र इक्क सुहाया। जुगा जुगन्तर साची कार, करनी करता रिहा कमाया। लोक परलोक पावे सर, त्रिलोकी नंदन वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराया। आदि जुगादी इक्क अकल्ला, हरि हरि इक्क अख्वांयदा। थिर घर वेखे सच महल्ला, सच सिँघासण आपणा मल्ला, दिस किसे ना आंयदा। वसे निहचल धाम अटला, ऊँच अगम्म अथाह बेपरवाह नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा वेस वटांयदा। एकउँकार पुरख अबिनाश, आदि जुगादि समाया। साचे मण्डल पाए रास, भेव अभेदा भेव छुपाया। हरिजन मेला शाहो शाबाश, आत्म अन्तर आत्म हरि ब्रह्म पारब्रह्म समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाया। जुग करता हरि करनेहारा एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत नूर उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। रवि ससि ना कोए सतारा, मण्डल मण्डप ना कोए वखांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, निराकार आप लगांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखांयदा। ब्रह्मा वेता चारे मुख अट्ठे नेत्र नैण उग्घाड़ा, रसना जेहवा आप हिलांयदा। बाशक सेजा सेज न्यारा, सांगोपांग हंढांयदा। सहँसर मुख गाए वारो वारा, सहँसर जेहव हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। घर सुहञ्जणा हरि हरि, दर दर साचा आप सुहाया। आप आपणा देवे वर, वर दाता आप अख्वाया। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख नाउँ धराया। आपणी सुरती आपे फड़, आप आपणा सीस झुकाया। आपणे अन्दर आपे वड़, आपे वेख वखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण जोत नूर रुशनाया। सन्त सुहेले आदि जुगादी लए फड़, मनमुख जीवां दिस ना आया। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना किते दबाया। गुरसिख तेरे सच दुआर, इक्क अकेला आपे वेखे खड़, आप आपणा दर खुल्हाया। करे प्रकाश बहत्तर नड़, अज्ञान अन्धेर मिटाया, सति सतिवादी लाए जड़, लोकमात आप उपजाया। एका अक्खर एका विद्या एका नाउँ जाए पढ़, एका एक मेल मिलाया। हरि का नाम साचा लड़ लए फड़, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगां जुगन्ता वेस वटाया। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, आपणा आप करांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कुन्दर फेरा पांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एक मल्ला, थिर घर साचा आप सुहांयदा। शब्द जोती आप रल्ला, एका धार बंधांयदा। आपे होए अछल अछल्ला, अछल छल धारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, निरगुण नूर जोत डगमगांयदा। निरगुण नूर शब्द जैकारा, हरि हरि आप लगाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अलक्खणा लेख ना कोए लिखाया। आवे जावे वारो वारा, सतिजुग त्रेता वेस वटाया। द्वापर तेरी पावे सारा, दोए दोए रूप समाया । एका नेत्र नैण उग्घाड़ा, एका राह रखाया। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। चारों कुन्ट नार विभचारा, साचा कन्त ना कोए हंढाया। हउमे हँगता गढ़ हँकारा, आपे तोड़ तुड़ाया। भुक्खा नंगता जीव गंवारा, हरि का नाम धन्न पल्ले ना कोए बंधाया। नानक गोबिन्द बण लिखारा, एका लेखा गया लिखाया। लेखा लिखे धुर दरबारा, भेव ना कोई जणाया। शब्दी शब्द शब्द भण्डारा, सतिगुर पूरा दए वरताया। लोआं पुरीआं पावे सारा, धरत धवल दए सुहाया। आकाश प्रकाश कर उज्यारा, मण्डल मण्डप डेरा लाया। ब्रह्मा विष्न शिव पाए सारा, देवत सुर लए हिलाया। जेरज अंडज पार किनारा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। हरिजन बख्शे चरन प्यारा, आत्म दरसी दरस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी कार कराया। करनेहार पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ । कलिजुग कूड़ कुड़यारा चलाए रथ, चारों कुन्ट होए हल्काईआ। लक्ख चुरासी पाई नथ्थ, पंचम पंचम रिहा भुवाईआ। आत्म अन्तर कोए ना हठ, अठसठ तीर्थ रही नुहाईआ। काया मन्दिर गेड़ी उलटी लट्ठ, साचा धाम ना कोए सुहाईआ। मानस मानुख होए भट्ठ, जूनी रहित ना मेल मिलाईआ। दुरमति मैल ना देवे कोई कट्ट, सर सरोवर रहे नुहाईआ। साची वस्त ना मिले किसे हट्ट, चौदां लोकां फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। एका नूर नूर अल्ला, बेऐब आप अख्वाया। दूई द्वैती मेटे सल्ला, सालस सतिगुर बण के आया। पंज विकारा मारे हल्ला, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। एका जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पल्ला, दो जहाना लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहार खेल खिलंदड़ा, भेव कोए ना पांयदा। पुरख अबिनाशी वेस वटंदड़ा, जोती जामा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी जोत जगन्दड़ा, ब्रह्म वेता ब्रह्म सेवा लांयदा। गुरमुख साचे सच दुआर तेरा इक्क सुहंदड़ा, अलख निरँजण आपणी अलख आप जगांयदा। दूई द्वैती तोड़े जिन्दरा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। दीपक ज्ञान इक्क जगन्दड़ा, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शिंदड़ा, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। आपे जाणे परमानंदड़ा, निजानंद आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। आप आपणा वेस कर, हरि साची बणत बणाईआ। चार यारी दर दरवेशा धर, दर दर अलक्ख जगाईआ। नर नरेश लए फड़, दस दस्मेस फेरा पाईआ। तोड़नहारा किला

हँकारी गढ़, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। दहि दिशा चारे कूट गगन मण्डल वेखे चढ़, इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। इक्क अकल्ला लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, दिस किसे ना आईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम नूरो नूर डगमगाईआ। नूर नूरी कर आकार, निराकार उठ धाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, वरन बरन ना कोए रखाया। अठारां बरनां करे प्यार, चार वरनां वेख वखाया। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वार, तख्त ताज कोए रहिण ना पाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले फड़, फड़ बाहों लाए पार, आप आपणा दरस वखाया। धर्म राए दी कट्टे जेले आवण जावण गेड़ नवार, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाया। आदि पुरख एकउँकार, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाईआ। आपे रूप अगम्म अपार, रूप अनूप आप दरसाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। अबिनाशी करता पुरख अकाल, एका रंग समांयदा। आदि जुगादी दीन दयाल, आप आपणी दया कमांयदा। आप आपणी करे प्रितपाल, सेवक सेवादार आप अख्वांयदा। आप आपणा तोड़ जंजाल, आप आपणी कल वरतांयदा। आप आपणी घालन घाल, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा सुहञ्जणा, हरि साचे जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा आदि निरँजणा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, एका एक एक रघुराईआ। आप आपणा बणे सज्जणा, साक सज्जण आप अख्वाईआ। आपे करे कराए साचा मजना, साचा दर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला कल वरताईआ। इक्क अकल्ला कर पसारा, आपणी कल वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, भेव कोए ना पांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनारा, घर आपणा इक्क सुहांयदा। रवि ससि ना कोए सतारा, सूरज चन्न ना कोए दरसांयदा। मण्डल मण्डप ना कोए पसारा, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। धरत धवल ना कोए विचारा, जल बिम्ब ना कोए टिकांयदा। आदि जुगादी इक्क निराकारा, जोती नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर साचा हरि सुहाया, निरगुण नूर रुशनाईआ। आप आपणा वेख वखाया, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। आप आपणा लेख लिखाया, आपे लेखा रिहा गणाईआ। आप आपणा वेस वटाया, आप आपणा रूप दरसाईआ। आप आपणा मंगल गाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर इक्क रखाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, हरि साचे रूप दरसाया। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाया। आप सुहाए आपणा सच्चा घर बारा, घर बारी नाउँ धराया। आप आपणा बणया कन्त भतारा, आपणी नारी आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगाया। आपे नारी आपे कन्त, हरि वड वड्डी वड्याईआ। आपणी महिमा जाणे आप अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपे पारब्रह्म प्रभ बेअन्त बेअन्त बेअन्त, अलक्ख अगोचर अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत आप प्रनाईआ। नारी कन्त वेस वटा, हरि साचा कर्म कमाया। निरगुण निरगुण विच समा, निरगुण जोड़ जुड़ाया। निरगुण निरगुण विच दित्ता टिका, निरगुण निरगुण लए प्रगटाया। निरगुण दर दुआरा बंक दए सुहा, निरगुण बैठा डेरा लाया। निरगुण थिर घर वासी आप अख्वा, पुरख अकाल नाउँ धराया। जूनी रहित बेपरवाह, एका एक आप रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आपणा रंग आपे रंग, आपणी खेल खिलाईआ। नारी कन्त मंगी मंग, सेज सुहञ्जणी इक्क विछाईआ। आपणे अन्दर आपे लँघ, आपे बैठा बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी आप विछाया सच पलँघ, पावा चूल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ । सेज सुहञ्जणी आपे चढ़, आपणा आप मनाया। आपणे अन्दर आपे वड़, आप आपणा रूप वटाया। आपणा लड़ आपे फड़, आपे बंध बंधाया । आप आपणी लाई जड़, ना कोई दूसर संग रखाया। आपे वेखे हरि हरि खड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत इक्क दरसाया। जोती अन्दर जोत समा, जोती जोत करे रुशनाईआ। निरगुण पिता निरगुण माँ, निरगुण धाम सुहाईआ। निरगुण देवे साची छाँ, निरगुण साचा हथ्थ सीस टिकाईआ। निरगुण नगर खेड़ा निरगुण ग्रां, निरगुण वस्सया आप अलाईआ। निरगुण पकड़े आपणी बांह, निरगुण रिहा चलाईआ। निरगुण करे सच न्याँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क बणा, पुरख अगम्मा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। निरगुण रूप पुरख अकाल, निरगुण जोत मात प्रनाईआ। निरगुण वेख सच्ची धर्मसाल, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। निरगुण फल लगाए आपणे डाल़, आप आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण आप आपणा आपणे विच्चों लए भाल, आप आपणा वेख वखाईआ। निरगुण बैठा निरगुण दलाल, दूसर कोए दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप सुहाईआ। साचे घर वज्जी वधाई, हरि साचा सगन मनांयदा। जोती जोत होई कुड़माई, आप अपणा मेल मिलांयदा। आपणा मंगल आपे गाई, आप आपणा राग अल़ांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बीज बिजांयदा। निरगुण धार निरगुण रूप, निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण दाता शाहो भूप, सति सरूप वेख वखाईआ। निरगुण वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। निरगुण आपणे उप्पर जाए तुठ, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। निरगुण निम्मया निरगुण जम्मया, निरगुण नाउँ उपाया। जोती माता सति सरूप पाए मम्मया, शब्द शब्दी सुत्त उठाया। अबिनाशी करते आपे जाणे आपणा कम्मया, चुण चुण आपणी झोली पाया। आपे जाणे गुण अवगुणया, लेखा लेख ना कोए लिखाया। आपणी धुन अनाद आपे सुणया, सुन्न समाध ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दित्ता आपे वर, आप आपणा सुत्त उपजाया। शब्द सुत्त हरि दुलारा, आपणा आप उपांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, साचे धाम सुहांयदा। आदि शक्ती हित न्यारा, निज घर आपणा आप करांयदा। आदि निरँजण वेस अपारा, वेस अवेसा आप वटांयदा। मूर्त अकाल जोत निराकारा, निराकार नाउँ धरांयदा। शब्दी सुत्त शब्द जैकारा, एका नाअरा लांयदा। आपे सुणे सुनणेहारा, आप आपणे मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणा सुत्त कर त्यार, हरि साची सेव करांयदा। शब्दी शब्द कर प्यार, शब्द शब्दी ढोला गांयदा। धुर दा तोला बण वणजार, साचा तोला आप रखांयदा। बदलया चोला आप निरँकार, आपणा डोला आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत्त दित्ता वर, साची सिफ्त सलाह आपणी आप जणांयदा। शब्द सुत्त लै अंगड़ाई, दोए जोड़ करे निमस्कारया। पारब्रह्म तेरी सच सरनाई, तेरा अन्त ना पारावारया। सेवक सेवा बख्शी चाँई चाँई, चक्र चेहन ना कोए जणा रिहा। सदा सुहेला पकड़े बांही, एका ओट तेरी रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत्त आप समझा ल्या। शब्द सुत्त तेरा सच प्यार, हरि साचा आप उपांयदा। आप कराए वणज वापार, तेरा तेरी झोली पांयदा। भरया शब्दी शब्द भण्डार, नाम नामा झोली पांयदा। वस्सया घर सच्चा घर बार, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। सच सिँघासण पुरख करतार, आप आपणा आसण लांयदा। धुर फ़रमान देवे सच्ची सरकार, साची सिफ्त सलाह आप जणांयदा। निराकार कर आकार, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दित्ता साचा वर, घर साचे मूल चुकांयदा। वर घर साचा हरि हरि पाया, वज्जी नाम वधाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क मनाया, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दर दरवाजा आप खुल्हाया, बन्द किवाड़ा रहिण ना पाईआ। आपणी धारा आप चलाया, आपे लए उपाईआ। आप आपणा रूप वटाया, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, आपणी वंड आप वंडाईआ। अपणी वंड आपे वंड, हरि साचा वेख वखांयदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, आप आपणी कल चलांयदा। आप आपणा करे खण्ड खण्ड, आप आपणे अंग कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसांयदा। आपणा वेस आपे धर, आपणी कल वरताईआ। विष्न वराटी आपे हरि, आप आपणी खेल खिलाईआ। निराकार साकार घाड़न घड़, बैठा डेरा लाईआ। आपणे अन्दर आपणी लाई जड़, सर सरोवर ताल भराईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपे रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाईआ। अमृत रस साची धार, आपणी आप चलांयदा। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा दर सुहांयदा। आप आपणा करया बाहर, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे खिड़या फुल सच्ची गुलज़ार, कँवला कँवल नाम धरांयदा। नाभी फुट्टी होई उज्यार, आपणी टुट्टी आपे गंढु वखांयदा। आपणी चोटी आपे चढ़े सिरजणहार, ना कोई दूसर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी चलत चलांयदा। चाल निराली जोत अकाली निरगुण आप चलाईआ। आपे बणया आपणा पाली, आप आपणी सेव कमाईआ। आपे आपणा दर वेखे खाली, आपे रिहा भण्डार भराईआ। आपे आपणा फल लगाए डाली, कँवल फुल आप खलाईआ। आपे शाह आपे कंगाली, शाह सुल्ताना आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंडन आप कराईआ। नाभी कँवली साचा फुल्ल, हरि हरि आप खिलानया। आपणे कंडे आपे तुल, आप आपणा तोल तुलानया। आप उपजाई आपणी कुल, आप आपणा नाउँ रखानया। आपणा पाया आपे मुल, करता कीमत आप चुकानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप करे परवानया। आपणा रस आपणी धार, हरि साचे आप चलाईआ। आपणा रूप आप करतार, आपे लए वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, बेअन्त नाम ख़ुदाईआ। इक्क अकल्ला हो उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कँवली फुल फुल न्यार, पंखड़ीआं आप खुल्लाईआ। किरपा करी करनेहार, करनी करता आप अख्वाईआ। एका रूप सति सरूप आया बाहर, मात पित ना कोए वखाईआ। जननी जन ना करे प्यार, ना कोई गोद उठाईआ। सीर ना रस ठंडी ठार, रसना जिह्वा ना मुख चुआईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, आपणा अंग आप कटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप न्यार, ब्रह्म ब्रह्म दए उपजाईआ। शब्द मृदंगा अपर अपार, एका रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपे झोली रिहा भराईआ। ब्रह्मा वेता ब्रह्म सुत्त, पारब्रह्म उपाया। आपे जाणे आपणी रुत्त, साची सेवा लाया। पुरख अबिनाशी आपे तुठ, त्रैगुण वेस वटाया। रजो तमो सतो आपे सुट्ट, आप आपणे दर बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड भण्डारी नाउँ

धराया। नाम भण्डारा अपर अपारा, पारब्रह्म ब्रह्म वंडाईआ। शब्दी शब्द सच वणज वपारा, आपे रिहा कराईआ। त्रैगुण बन्ने साची धारा, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश कर त्यारा, पंजां तत्तां जोड़ जुड़ाईआ। पंचम पंचम हो उज्यारा, पचीस रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाई भिच्छया आपे दए सलाहीआ। आपणी भिच्छया आपे पा, आपे रंग रंगांयदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म लए उपा, आपे सेव कमांयदा। आपे शब्दी शब्द जणा, धुन अनादी राग अलांयदा। अगाध बोध बोध अगाध आप अख्वा, सुन्न समाध आप अख्वांयदा। आदि जुगादि जुगादि आदि वेस वटा, जुग जुग खेल खिलांयदा। आत्म जीव जीव आत्मा आप बणा, आपणी करनी किरत कमांयदा। आपणे भाणे आप चला, हुक्मी हुक्म चलांयदा। ब्रह्मा विष्न सेवा ला, साची सेवा इक्क जणांयदा। आपे शंकर लए उपा, धूंआँधार रखांयदा। बाशक तशका गल लटका, हत्थ त्रिसूल उठांयदा। एका इष्ट गुरदेव इक्क जणा, इष्ट रूप आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी बणत बणा, त्रैगुण संग रलांयदा। पंज तत्त तेरा जोड़ जुड़ा, रक्त बूंद सुहांयदा। निरगुण निरगुण धारा दए टिका, मन निरगुण आप वखांयदा। मति मतवाली नाल रला, घर साचे आप बहांयदा। बुध बिबेकी वेख वखा, एका रंग रंगांयदा। नौ दुआरे दर खुला, साचा गढ़ सुहांयदा। घर विच घर लए उपा, डूँघी कन्दर वेख वखांयदा। जोत निरँजण सेवा ला, आपणा हुक्म चलांयदा। अमृत जल सच भरा, साचा ताल सुहांयदा। अनहद मृदंगा रिहा वजा, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। बजर कपाटी कुण्डा ला, आप आपणा मुख छुपांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त दस वीह ग्यारां तीस नौ चार जोनी आप फिरांयदा। सन्त सुहेले लए जगा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द अगम्मी आप सुणा, धुन आत्मक राग अलांयदा। आपणा घर आपे दए वखा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। अमृत आत्म जाम प्या, सांतक सति करांयदा। आत्म सेजा इक्क सुहा, डूँघी भँवरी पार करांयदा। सुखमन तेरा टेडा राह, आपे वेख वखांयदा। बेहंगम चाल आप चला, जन भगतां राह वखांयदा। लोकमात वेस वटा, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। गुरसिखां पकड़े आपे बांह, मनमुखां दिस ना आंयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हत्थ टिकांयदा। पुरख अबिनाशी पिता माँ, गुरसिख बाल अञ्याणे आपणी गोद उठांयदा। दो जहानी करे सच न्याँ दर घर साचे वेख वखांयदा। राए धर्म ना दए सज़ा, चित्रगुप्त नेड़ ना आंयदा। लाड़ी मौत ना लए प्रना, मैंहदी रंगण लाल ना रंग चढ़ांयदा। जूनी जून ना लए भवा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी वंड आपे वंड, आपे वेख वखांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आंयदा। आपे नार दुहागण

बणे रंड, सूहा वेस आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलावणहार निरँकारा, सच सच्ची वड्याईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सारा, भगत भगती नाम दृढ़ाईआ। सन्त सिक्ख सच दुलारा, सतिगुर साचा वेख वखाईआ। शब्दी शब्द दए हुलारा, नाम झकोला इक्क लगाईआ। आपे जाणे आर पार किनारा, चौदां लोकां फोल फोलाईआ। गगन मण्डल हट्ट पसारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जीउ पिण्ड जिस जन अपारा, सो पुरख बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म इक्क उज्यारा, एका रूप दरसाईआ। पंज तत्त भाण्डे आपे घड़े आपे लए भन्न, भन्नणहार वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आपे रच, लक्ख चुरासी अन्दर वस, सच सच सच करी कुड़माईआ। आपणी रचन हरि रचाई, आपणा मूल चुकाया। लक्ख चुरासी गेड़ बणाई, कर्म कुकर्मां मेल मिलाया। नाम विचोला इक्क रखाई, लोकमात ढोला गाया। आप आपणा रूप वटाई, गुर अवतार आप अख्वाया। साध सन्त लए उपजाई, साचा मार्ग आप जणाया। आपणा नाम आप जपाई, रसना जेहवा आप हलाया। आपे अन्त सन्त कन्त भगवन्त लए मिलाई, गुर मिल्या विछड़ ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आवण जावण पतित पावन लक्ख चुरासी पारब्रह्म ब्रह्म रूप आप वटाया। सतिगुर पूरा गहर गुण सागर, दीन दयाल अख्वांयदा। गुरसिखां निर्मल कर्म करे उजागर, दे मति आप समझांयदा। वणज कराए नाम सौदागर, साची वस्त झोली पांयदा। भाग लगाए काया गागर, निर्मल दीप जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि साचे जोत जगाईआ। एका गुरू गुरू गुर चेला, गुर चेला नाम रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, घर मेला सहिज सुभाईआ। ना कोई वक्त ना कोई वेला, अट्ठे पहर एका रंग लाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। धर्म राए दी कट्टे जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ रखाईआ। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपे करे भगत वड्याईआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, आदि जुगादि जुग जुग सेव कमाईआ। आपे दरस दिखाए हो प्रतक्ख, स्वच्छ सरूपी आप हो जाईआ। चार वरनां किसे ना करे कोई पक्ख, वरन गोत ना कोए रखाईआ। कलिजुग विकारा देवे मथ्था, पंज तत्त रिहा शरमाईआ। हउमे हँगता करे सत्थ, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। गुरसिखां लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारे वंड वंडाईआ। मनमुखता अन्तिम होई भट्ठ, देवणहारा हरि सज़ाईआ। हरि चरन दुआरे सच इक्क्ठ, हरिसंगत मेल मिलाईआ। जो दीसे सो जाए

ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका नाम रसना जेहवा हरी हरी गुण गाईआ। एका सर सरोवर मारे ठाठ, अमृत धारा इक्क चुआईआ। एका गेड़े उलटी लाठ, चारों कुन्ट दए फराईआ। चौदां तबकां खोल्हे एका हाट, मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर शाह हकीर एका धाम बहाईआ। खेले खेल नटूआ नाट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। ज़िमी अस्मानी पर्दा जाए पाट, अज़मतो कस्मतो वेख वखाईआ। इज़राईल जबराईल चुक्की खाट, मेकाईल असराफील देण सलाहीआ। अल्ला राणी विके हाटो हाट, गल तसबी एका पाईआ। अल्फ़ अल्फ़ी गई पाट, नुक्ता बे ना कोई जणाईआ। जोती नूर ना कोई ललाट, कोहतूर ना कोए रुशनाईआ। अञ्जील कुरान ना उतरी किसे घाट, अध विच बैठी राह तकाईआ। ईसा मूसा तक्के वाट, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। निरगुण बोला निरगुण धार, नानक नाम चलाईआ। सोहँ बोला जगत विचोला आप करतार, कलिजुग अन्तिम दए कराईआ। बणया तोला तोले तेरां धार, तेरां तेरां आप कराईआ। शब्द विचोला बण संसार, गुर गोबिन्द संग रखाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं फोल फोलाईआ। संग मुहम्मद वेखे चार यार, हक्क हककीत दए गवाहीआ। लाशरीक परवरदिगार, जल्वा नूर इक्क अलाहीआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, नाम अमाम इक्क अख्वाईआ। कलमी कलमा पाए सार, कायनात दए पढ़ाईआ। ख़ालक ख़लक ख़लक ख़ालक एका धार, मखलूक रहिनुमाईआ। सालस बणे आप निरँकार, सखी सरवर सेवा लाईआ। ऐनलहक्क दए प्यार, एका हू हू दए सुणाईआ। मुकामे हक्क मीत मुरार, बैठा राह तकाईआ। ख़ाकी ख़ाक पाए सार, एका एक नायक अख्वाईआ। पाकी पाक हो त्यार, दीन अलाही रिहा समाईआ। मक्का काअबा हो उज्यार, दो दो आबा वेख वखाईआ। साचा हाज़ी करे हज्ज अपार, काला सूसा तन छुहाईआ। सम्मत सोलां होया ख़बरदार, सृष्ट सबाई लए उठाईआ। सच मसला कर त्यार, आपे तुरया वड्डा पाहीआ। निउँ निउँ सजदा करे सच दरबार, जगत महिराब वेख वखाईआ। इक्क वजाए नाम सतार, तूही तूं रिहा अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मौलाना मौला रूप आप अख्वाईआ। मौला अमल गुण, गुण करता ना कोए वचारया। लक्ख चुरासी फरयाद रिहा सुण, अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहरया। आप आपणे लए चुण, नौ खण्ड पृथमी पावे सारया। सत्तां दीपां एका धुन, एका राग अल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े मेल मिला ल्या। मेल मिलावा साचे घर, घर घर घर वज्जे वधाईआ। गुरमुख साजण लए वर, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। नाम भण्डारा देवे भर, तोट रहे ना राईआ। दरस वखाए अग्गे खड़, नेत्र लोचन

इक्क खुल्हाईआ। आत्म सेजा आपे चढ़, आप आपणा रूप वटाईआ। सुरत सवाणी लए फड़, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। जगत कहाणी जाए सड़, अकथ कथा आप सुणाईआ। आप फड़ाए आपणा लड़, दस्म दुआरी बाहर कढाईआ। सुन अगम्मी पार कर, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल विछोड़ा शब्दी जोती जोड़ा, पुरख अगम्मी घोड़ा एका रिहा दौड़ाईआ। साचा घोड़ा अस्व हरि अस्वार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारों दिशा फिराईआ। गुरमुख साजण लए उभार, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख विचार, कलिजुग मेला सहिज सभाईआ। गुरमुख पाया वर घर नर हरि कन्त भतार, नर नरायण नज़री आईआ। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, सच सिँघासण दए बठाईआ। देवी देवत करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। गण गंधर्ब हाहाकार, दिवस रैण रहे सुणाईआ। शिव शंकर गलों लाहे हार, बाशक तशका परे सुटाईआ। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़, गुरसिख तेरा राह तकाईआ। विष्नूं करे सच प्यार, देवे रिज़क सबाईआ। सतिगुर पूरा ख़बरदार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। दो जहानां करे पार दरगाह साची साचे धाम बहाईआ। आवण जावण छुटे संसार, मात गर्भ फेर ना आईआ। पाया पुरख पुरख करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। गुरमुख तेरी साची रीत, हरि साचा आप चलांयदा। काया मन्दिर देहुरा गुरदुआर मन्दिर मसीत, शिवदवाला मट्ठ आप करांयदा। आपे करे पतित पुनीत, पतित पावन आप धरांयदा। लेखे लाए हसत कीट, जो जन सरनाई आंयदा। देवे नाम शब्द अनडीठ, सो पुरख निरँजण झोली पांयदा। अन्दर अन्तर सुत्ता दे कर पीठ, आप आपणा मुख भवांयदा। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जो जन रसना सोहँ गांयदा। नानक गाया सुहागी गीत, पारब्रह्म सरनांयदा। मानस देही लए जीत, जन जनणी लेखे लांयदा। चरन कँवल निभे प्रीत, सतिगुर पूरा लग्गी तोड़ निभांयदा। एकउँकारा एका साचा मीत, दूजे शब्दी लड़ फड़ तीजे मन्त्र इक्क काया ठंडी सीत, चौथे चौथे पद समांयदा। पंचम पंचम परखणहारा नीत, दिवस रैण वेख वखांयदा। सदा सुहेला इक्क अतीत, आप आपणा मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम रिहा बीत, चार बत्ती लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर सुहावा सहावी रुत्त, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। सन्त सुहेला साचा सुत्त, सति पुरख निरँजण आप उठाईआ। पंज विकारा कड्ढे कुट, माया मोह ना होए हल्काईआ। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, कोटि कोटी रहे ध्याईआ। तन नगारे किसे ना लग्गे शब्द चोट, बैठे धूंणीआँ ताईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां माया ममता भरी ना पोट, रसना जेहवा होई हल्काईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना कड्ढे खोट, नाम खमारी

ना कोए चढ़ाईआ। कलिजुग जीव आलणिउँ डिगे बोट, ना सके कोई उठाईआ। तीर्थ तट्टा बन्नी फिरदे तन लंगोट, जत सति ना कोए रखाईआ। कोटी कोटि नाम जप जप हिलायण होट, अन्तर मन्त्र नाम ना कोए दृढ़ाईआ। कोटन कोटि राह तक्कन दूध पूत, मन मनुआ ना कोए समझाईआ। कोटन कोटि घर घर चार दीवारी अन्दर जगायण जोत, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत हरि सरनाई रक्खी एका ओट, वेले अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आईआ। आया हरि जगत गुरदेवा, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। गुरसिखां लेखे लाए सेवा, आप आपणे रंग रंगांयदा। अमृत आत्म देवे साचा मेवा, दरगाह साची फल खुवांयदा। कौस्तक मणीआ मस्तक लावे थेवा, रत्न जवाहर माणक मोती गुरसिख हीरे लाल जड़ांयदा। जिस जन रसना गाया हरि हरि जिह्वा, लहिणा लहिणे झोली पांयदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नारी वेख वखांयदा। नर नरायण सर्ब गुणवन्ता, अकल कला अख्वाईआ। मेल मिलावा साचे सन्ता, सहिज सभाईआ। साची सेजा नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल वेख वखाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, निवण सो अक्खर इक्क जणाईआ। जो जन दर दुआरे आए मंगता, देवे सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेला कराईआ। मिल्या मेला सतिगुर पूरे, हरि साची बणत बणाईआ। वाजे वज्जे अनहद तूरे, अनहद मंगल एका गाईआ। नाता तुट्टे जगत कूड़े, कूड़ी क़िया दए मिटाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़े, दुरमति मैल दए कटाईआ। रंगण रंग रंगे गूढ़े, लाल गुलाला आप रंगाईआ। आसा मनसा हरिजन हरि जी आपे पूरे, जो मंगे मंग हरि सरनाईआ। सखा सुहेला हाज़र हज़ूरे, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर ज़ाहर ज़हूर हाज़र हज़ूर आप अख्वाईआ।

✪ १३ चेत २०१६ बिक्रमी पिण्ड भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सद बलिहार दर्द दुःख भय भंजन, हरि सज्जण वड वड्याईआ। नेत्र नाम निधान पाए अंजन, आप आपणी दया कमाईआ। हरिजन हरी हरि मेला साचे सज्जण, सतिगुर पुरख आप कराईआ। चरन धूढ़ सच सरोवर कराए साचा मजन, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी दो जहानी पड़दे कज्जण, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। साचे

दर साचे घर शब्द अनादी ताल वज्जण, पारब्रह्म आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धराईआ। बलिहारी हरि पाया, परम पुरख करतार। नेत्र नैण इक्क खुल्हाया, विछड़या संसार। घर दीपक इक्क जगाया, मिटया अन्ध अँध्यार। दर मंगल साचा गाया, हरि शब्द सच्ची धुन्कार। बंक दुआरा इक्क सुहाया, पाया परम पुरख कन्त भतार। एका दूजा भउ चुकाया, मेल मिलावा मीत मुरार। आप आपणा रूप वटाया, खेले खेल अगम्म अपार। गुरमुख साजण लए जगाया, जुग जुग मेला मेलणहार। तन कप्पड़ वेख वखाया, घर मन्दिर महल्ल अटल उच्च मनार। ढूँघी कन्दर फोल फोलाया, मन मति बुध पावे सार। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया, नाम खण्डा तेज़ कटार। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखाया, जीवां जन्तां रिहा पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दए जीअ आधार। हरि वड्डा वड वड्याई, पुरख अगम्म अथाह। सतिगुर पूरे सच सरनाई, शब्द मिलावा सच मलाह। आदि जुगादी वेख वखानी, शब्द अनादी एका नाउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाँईं थाउँ। बलिहारी घर जाणया, घर घर रूप अपार। सतिगुर पूरा इक्क पछानया, मेल मिलावा हरि निरँकार। भाण्डा भरम भउ भन्नानया, तोड़े गढ़ लंका हँकार। गुरमुख साजण चले चलाए आपणे भाणया, भव सागर उतरे पार। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, ग़रीब निमाणया लए उभार। खेले खेल दो जहानयां, पुरीआं लोआं गगन पातालां पावे सार। शब्द चलाए धुर दी बाणीआं, बाणा निराला तीर मार। आपे जाणे अकथ कथा कहाणीआ, लेखा लिख ना सके वेद चार। गुरमुख साचा चतुर सुघड़ स्याणया, जिस पाया धुर दरबार। चौथा पद इक्क वखाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे उज्यार। वड वड्याई वड्डा शाह सुल्तान, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। आदि जुगादी इक्क निशान, जुग जुग आप झुलांयदा। दरगाह साची सच मकान, थिर घर वासी डेरा लांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, सच सिँघासण इक्क सुहांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा हुक्म चलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रधान, पंज तत्त समांयदा। त्रैगुण देवे आपणा दान, दाता दानी झोली पांयदा। आपे सुरती शब्दी काहन, मण्डल रास आप रचांयदा। आपे बैठे सच बबान, चारों कुन्ट दहि दिशा आप उडांयदा। आपे वेखे मार ध्यान, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर नूर उजाला, हरि हरि आप अख्वांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, दया निध नाउँ धरांयदा। हरिजन मेला सच सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर इक्क वखांयदा। तोड़नहारा जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, सिर समरथ हथ्थ टिकांयदा। शब्द अनादी वज्जे ताला, अनहद सेवा लांयदा।

३०७ ०८

आपे शाह आपे कंगाला, नाम धन ख़ज़ीना आप भरांयदा। आपे फल लगाए काया डाल्हा, फल फुलवाड़ी गुरमुख वेख वखांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना पांयदा। शब्दी शब्द शब्द गुर बण दलाला, लोकमात फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि भगवाना, हरि हरि जोत जगाईआ। खेले खेल दो जहानां, पुरख अकाल भेव ना राईआ। जूनी रहित ना कोई करे पछाना, आवण जावण चलत चलाईआ। गुरमुख साजण कर परवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाईआ। बलिहारी हरि पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। आपे लिखणहारा लेखया, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़। लोकमात करे वेस्सया, वेस अनेका आप करतार। आपे जाणे मुच्छ दाढ़ी केस्सया, मूंड मुंडाए सिरजणहार। शाह सुल्ताना नर नरेशया, निरगुण जोती नूर अपार। आपे होए दस दस्मेस्सया, आपे शब्द खण्डा तेज़ कटार। आपे वेखे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशया, आपणे दर दर बणे भिखार। आपे माणे सेज शेषया, सहँसर मुख आप आपणा रिहा उचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धार। बलिहारी हरि सज्जण मीतड़ा, एका रंग रंगाया। काया चोली रंगे चीथड़ा, नाम मजीठी इक्क चढ़ाया। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लिखण पढ़ण विच ना आया। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म फल खवाया। आपे सुत्ता दे कर पीठड़ा, आपे रिहा मुख भुवाया। जिस जन हरि हरि वस्सया चीतड़ा, चित वित ठगौरी कोए ना पाया। लक्ख चुरासी परखणहारा नीतड़ा, दिवस रैण वेख वखाया। आपे जाणे आपणा कीतड़ा, करनी करता नाउँ धराया। आपणा भाणा रक्खे मीठड़ा, हरि भाणे विच समाया। आपे ठंडा तत्ता सीतड़ा, गुण अवगुण ना कोए जणाया। आपे होए पुराना चीथड़ा, आपे सच दोशाला ओढ़ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। बलिहारी सतिगुर पूरे, पूरन ब्रह्म जणांयदा। आसा मनसा हरिजन पूरे, दूई द्वैती रोग मिटांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़े, कूड़ी क्रिया रहिण ना पांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़े, जो जन सरनाई आंयदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़े, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। शब्द अनादी आत्मक धुन अनहद तूरे, आप आपणी आप उपजांयदा। सतिगुर पूरा सदा हाज़र हज़ूरे, विछड़ कदे ना जांयदा। दाता जोद्धा वड सूरन सूरे, सूरबीर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। बलिहारी घट वस्सया, परम पुरख करतार। जन भगतां मार्ग एका दस्सया, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़। सच दुआरे बहि बहि हस्सया, मेट मिटाए पंचम धाड़। दो जहानी फिरे नस्सया, जन भगतां पिच्छे अगाड़। कलिजुग वेखे रैण अन्धेरी

मस्सया, चारों कुन्ट अग्नी तत्ती हाढ़। मुख शरमायण रवि सस्सया, नेत्र रो रो नीर वहायण सतार। धरत धवल आपणा रो रो हाल दस्सया, कूड़ कूड़ा झल्लया ना जाए भार। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म लोकमात आए नस्सया, आप आपणी किरपा धार। शब्द निराला तीर एका कस्सया, चारे कूटां रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। बलिहारी पुरख अगम्मड़ा, एका एकउँकारया। हड्ड मास ना नाड़ी चम्मड़ा, मात पित ना कोए बणा रिहा। ना मरे ना जम्मड़ा, गोदी गोद ना कोए सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। बलिहारी हरि खेलया, खेलणहार पुरख समरथ। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, आपे लक्ख चुरासी पाए नथ्थ। आपे सतिगुर सज्जण सुहेलया, आपे देवणहारा नाम वथ्थ। आपे वसे इक्क अकेलया, आप चलाए आपणी गथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी महिमा आपे जाणे, आपणी कथनी रिहा कथ। आपणी कथा आपे कथ, अलक्ख अलक्खणा वड वड्याईआ। सति सरूपी चलाए रथ, सति सतिवादी नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारे लेखा लाईआ। जो घड़या सो जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया रजो तमो सतो तेरा आप तपाया मट्ठ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पंचम अग्नी आपे डाहीआ। जोत अकाला आपे गेड़णहारा उलटी लट्ठ, चौथे गेड़ा आप दवाईआ। गुरसिखां मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, जुग विछड़े वेख वखाईआ। हरि चरन दुआरा सच इक्ख, सचखण्ड दुआरा इक्क जणाईआ। कर्म कुकर्मां करे भट्ठ, जो जन नेत्र लोचन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता दानी आप अख्वाईआ।

✪ १५ चेत २०१६ बिक्रमी सोहण सिंघ दे घर पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

आदि पुरख सर्ब जीअ दाता, एका एकउँकारया। खेले खेल खेल तमाशा, भेव अभेदा भेव कोए ना पा रिहा। लक्ख चुरासी पिता माता, इक्क अकेला आप अख्वा रिहा। हरिजन बंधे चरन कँवल नाता, चरन प्रीती इक्क सिखा रिहा। शब्द जणाई साची गाथा, बोध अगाध अलाृ रिहा। जुग जुग चलाए साचा राथा, रथ रथवाही वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कलधारी नाउँ रखा ल्या। अकल कल धार हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका रूप समाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अलक्खणा लेख ना राईआ। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। थिर घर साचे कर पसार, हरि बैठा बेपवाहीआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार,

आप आपणी रिहा वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले आपे लाध, जुग जुग मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर निराकार, एका एक अख्वांयदा। दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर कर त्यार, गण गंधर्ब लेख लिखांयदा। रवि ससि कर प्यार, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। शाहो शाबाश खेल अपार, निरगुण धारा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला आप सुहांयदा। सच महल्ला इक्क अकल्ला, हरि हरि आप सुहांयदा। आपे वेखे जलां थलां, डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। आपणी जोती आपे बला, प्रकाश प्रकाश वखांयदा। शब्द अगम्मी करे हल्ला, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पांयदा। जीव जन्त भुलाए कर कर वल छल्ला, अछल छल धारी भेव ना आंयदा। जन भगत दुआरे आपे खला, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। सच सिँघासण हरि हरि मल्ला, थिर घर साचे डेरा लांयदा। इक्क सुनेहड़ा एका घला, एका राग अल़ांयदा। जोती दीपक एक बल्ला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आपे फुलया आपे फला, फुल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण नूर हरि अकाल, आपणी कल वरताईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, दीनां नाथां वेख वखाईआ। हरिजन वेखे साचे लाल, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। शब्दी शब्द शब्द गुर बण दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, दाता दानी बेपरवाहीआ। इक्क वखाए सच सच्ची धर्मसाल, अनहद राग अनादी गाईआ। अमृत सोहे साचा ताल, त्रिबैणी नैणी इक्क सुहाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता, एका रंग समांयदा। उत्तम रक्खे आपणी जाता, वरन गोत ना कोए बणांयदा। सन्त भगवन्त चरन कँवल बंधाए साचा नाता, चरन चरनोदक मुख चवांयदा। दो जहानी देवे साथा, सगला संग निभांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथा गले लगांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप चलाए आपणी गाथा, गीत सुहागी गांयदा। आपे लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले मेल मिलांयदा। भेव खुल़ाए साढे तिन्न तिन्न हाथा, रविदास चमारा मुख सलांहयदा। कलिजुग अन्तिम हरिजन साचे तेरा करन आया पूरा घाटा, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान शब्दी शब्द जणांयदा। जोत निरँजण जगे ललाटा, आदि निरँजण सेवा लांयदा। आत्म सेजा वेखे साची खाटा, हरि गोबिन्द शब्द मिलांयदा। दर घर साचे साची वाटा, दूर नेड़े ना कोए रखांयदा। अमृत प्या साचे बाटा, काया कासा आप भरांयदा। लहिणा देण चुकाए हाथो हाथा, वणज वणजारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण खेल हरि हरि खेला, हरि साचे वड वड्याईआ। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द रूप समाईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। आपे वसे सद नवेला, हर घट आपे डेरा लाईआ। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेला, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। आपे सच दरबारे सच चढ़ाए तेला, साचा सगन आप मनाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, आपे घड़े आपे भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण वासा पुरख अबिनाशा, खेले खेल नर निरँकारीआ। लक्ख चुरासी वेख तमाशा, जीवां जन्तां पावे सारीआ। जन भगतां देवे चरन कँवल भरवासा, आत्म अन्तर इक्क प्यारीआ। सन्त सुहेला दासी दासा, सेवक सेवा आप कमा रिहा। जाणे जणाए पृथ्मी आकाशा, गगन पातालां फेरा पा रिहा। साचे मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आप नचा रिहा। आपे रसन आप स्वासा, गुरसिख काया गढ़ सुहा रिहा। सतिगुर पूरा शाहो शाबासा, शाह सुल्तान नाम धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दीवा निरगुण बाती आप जगाए कमलापाती उच्च महल्ल अटल मुनार आप टिका ल्या। महल्ल अटल उच्च मुनारा, हरि साचे जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख करतारा, भय भंजन आप अख्वाईआ। जूनी रहित खेल न्यारा, अकल कलधारी वेस वटाईआ। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, सच सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। थिर घर वसे इक्क दुआरा, दर दरवेशा वेख वखाईआ। शब्द शब्दी बोल जैकारा, एका नाअरा लाईआ। अलख अगम्म करे ख़बरदारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सुन्न अगम्म पार किनारा, आप आपणा राह तकाईआ। लोआं पुरीआं दए सहारा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर साची धारा, आप आपणी रिहा चलाईआ। सांतक सति सति सति वरते हरि करतारा, करनी करता आप अख्वाईआ । सच ख़ुदा बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर नूर इलाहीआ। हक्क हकीकत पावे सारा, मुकामे हक्क वेख वखाईआ। लाशरीक लाए एका नाअरा, एका कलमा दए पढ़ाईआ। लोकमात हो उज्यारा, आप आपणा वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी काली धारा, काला सूसा तन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरी अल्ला अल्ला नूर डगमगाईआ। नूरी अल्ला शाह नवाब, परवरदिगार आप अख्वांयदा। हक्क हकीकत वेख ज़नाब, दो दो आब फोल फोलांयदा। आपणा वेख आप आफ्ताब, नूरी नूर आप समांयदा। आपणे हथ्थ रक्खा आब हयात, आपणी उम्मत आप पिलांयदा। आपे आपणा बण आप अहिबाब, आपणी रबाब आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर इलाही आप अख्वांयदा। नूरी अल्ला परवरदिगार, एका एकउँकारया। वास्तक रूप निराधार, निरगुण धार इक्क चला रिहा। कलमी कलमा कर त्यार, कायनात आप पढ़ा रिहा।

चारे वेदां पावे सार, पुराण अठारां फोल फोला रिहा। सिमरत शास्त्र दए आधार, मन मति बुध मेल मिला रिहा। काया काअबा कर त्यार, साचा हाज़ी हज्ज वखा रिहा। अमृत नाभा भर भण्डार, हरिजन साचे आप वरता रिहा। पुन्न सवाबा वस्सया बाहर, आपणी अज़मत आप जमा रिहा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। शब्द डंका अपर अपार, चारे कुन्टां दहि दिशा आप सुणा ल्या। चार यारी करे ख़बरदार, संग मुहम्मद आप उठा ल्या। ईसा मूसा दए हुलार, कलिजुग अन्त हुलारा एका ला ल्या। अञ्जील कुराना पावे सार, तीस बतीसा आपे गा ल्या। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर वेखे शाह अस्वार, नीला नीली धारों पार करा ल्या। दीन इस्लाम हो त्यार, निष्काम आपणा काम करा रिहा। जोती नूर नूर उज्यार, जल्वा नूर आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटा ल्या। काला सूसा काली धार, कलिजुग आप चलाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जेरज अंडज हो उज्यार, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। ब्रह्मे नेत्र दए उग्घाड़, आप आपणे अंग सुहाईआ। शिव शंकर टोहे नाड़ नाड़, भोला नाथ सोया रहिण ना पाईआ। करोड़ तेतीसा वखाए इक्क अखाड़, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। चौदां लोकां वा तत्ती हाढ़, चौदां तबकां रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका कलमा हरि अमाम, आपणा आप उपांयदा। आपे सीता आपे राम, कान्हा बंसरी आप वजांयदा। आपे निरगुण वसे साचे धाम, आप आपणा जाम प्यांअदा। आपे करे आपणा ताम, आपणी तृष्ना भुक्ख आप मिटांयदा। आपे सुबह आपे शाम, रैण अन्धेरी आप रखांयदा। आपे नगर आप गराम, काया खेड़ा आप सुहांयदा। आपे देवे भर भर जाम, साचा साकी दिस ना आंयदा। आपे लेखे लाए काया माटी हड्ड नाड़ी मास चाम, पंज तत्त फोल फोलांयदा। आपे होए जाणी जाण, लक्ख चुरासी वेख वेस वटांयदा। आपे खाणी बाणी कर पछान, निरगुण राणी आप बणांयदा। आपे त्रैगुण माया चोला रिहा ताणी, सोलां कलीआं आप गुंदांयदा। आपे जाणे आपणा पद निरबाणी, थिर घर साचा आप सुहांयदा। आपे गाए आपणी अकथ कहाणी, दूसर कोए ना आख सुणांयदा। आपणे घर आपे बणे सच सवाणी, साचा कन्त आप हंढांयदा। आपे अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, निझर धारा आप चलांयदा। आपे शब्द गुर बण साचा हाणी, नानक सुरती आप प्रनांयदा। दरगाह साची इक्क वखानी, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। एका राग अनहद धुन सच्ची बाणी, धुनी नाद आप वजांयदा। वेख वखाए अल्ला राणी, मुख काला घूँगट लांहयदा। चौदां तबकां बण हटवानी, तेरां तोला धार चलांयदा। कलिजुग अन्तिम लेखे लाए चारे खाणी, चौथे जुग वेस वटांयदा। गुरमुखां मिले शब्द गुर पूरा

साचा हाणी, गुर गोबिन्द विछड़ ना जांयदा। आवण जावण चुक्के काणी, धर्म राए नेड़ ना आंयदा। पारब्रह्म वड दाता दानी, नाम भण्डारा इक्क वरतांयदा। गुरमुखां देवे सच निशानी, जगत निशाना मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कल वरतंता हरि भगवन्ता, भगवन वेस वटाईआ। खेले खेल जुगां जुगन्ता, जुग करते वड वड्याईआ। दरस दिखाए साचे सन्ता, आत्म ब्रह्मा ब्रह्म जणाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, माया ममता रहिण ना पाईआ। हरिजन अंग लगाए जिउँ नानक अंगदा, अंगीकार आप अख्वाईआ। नाम दान जो साचा मंगदा, साची भिच्छया झोली पाईआ। काया चोली गुरसिख रंगदा, नाम मजीठी रंग चढ़ाईआ। औंदा जांदा मूल ना संगदा, लोक लज्जया ना कोए वखाईआ। गुरसिख तेरे नौ दुआरे आपे लँघदा, दसवें मेल मिलाईआ। माणे रस आत्म सेज पलँघ दा, साची सेजा इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि धरया, पुरख अकाल वड्याआ। नर नरायण आपे नरया, नर हरि नाउँ धराया। अगम्म अगम्मड़ी कार करया, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना मेल मिलाया। निरभउ रूप कदे ना डरया, ना मरे ना जाया। जन भगतां दर दुआरे अग्गे खड़या, जुग जुग आपणी दया कमाया। मनमुखता तेरे नाल सद सद लड़या, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। शाह सुल्तान कोए ना अड़या, गढ़ हँकारी रहिण ना पाया। खेले खेल बहत्तर नड़या, नाड़ी नाड़ी वेख वखाया। गुरसिख तेरी काया पौड़े आपे चढ़या, हरि मन्दिर डेरा लाया। ना कोई सीस ना कोई धड़या, पंज तत्त ना कोए जणाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई आपे फड़या, फड़नहार रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा लेख लिखाया। लेखा लिखणहार पुरख समरथ, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपे गाए आपणा गाथ, चार वरनां करे पढ़ाईआ। बरन अठारां एका साथ, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। जगत दाता जगन्नाथ, जगत जुगत इक्क जणाईआ। त्रै त्रै लोकां त्रैलोकी नाथ, त्रै त्रै माया बंधन पाईआ। चौथे जुग चौथे घर साथ, जन भगतां आप रखाईआ। पंचम मेला हरि सज्जण सुहेला लहिणा चुक्के पूजा पाठ, नेत्र लोचन दर्शन पाईआ। छेवे छप्पर छन्न ना कोई ठाठ, महल्ल अटल ना कोए वखाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी जोत निरँकारी एक लाट, नूर नुरानी डगमगाईआ। अठ्ठ तत्त ना तीर्थ अठसठ, जल धारा ना कोए वहाईआ। नौ दुआरे करे भठ्ठ, नौ नौ खण्ड फेरा पाईआ। दस्म दुआरी साचा हट्ट, सतिगुर पूरा आप ख़ुल्हाईआ। गुरमुख विरले लाहा लैण खट्ट, मनमुख गूढ़ी नींद सुवाईआ। कलिजुग सभ दी चोटी रिहा कट्ट, लजपति अन्त रहिण ना पाईआ। खेले खेल नटूआ नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। गुरसिखां तन

पहनाए पट, आपणी अल्फ़ी आपे लाहीआ। अमृत आत्म सच सरोवर काया मन्दिर दए झट्ट, मान सरोवर इक्क सुहाईआ। दूई द्वैती मेटे फट, अमृत आत्म जाम प्याईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, निर्मल निर्मल आप वखाईआ। अनहद नगारे मारे सट्ट, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। हउमे हँगता जाए ढठ्ठ, पंच विकार मुख छुपाईआ। गुरसिखां वसे घट घट, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत जोत कर प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे हक्क ख़ुदाईआ। हक्क ख़ुदामती गनीम, गफ्लत विच कदे ना आंयदा। आपे अल्फ़ डण्डा जाणे नुक्ता मीम, नून आप टिकांयदा। आपे त्रिलोकी तेरे त्रैमुख जाणे सीन, साचा सईआ वेख वखांयदा। आपे चार यार संग मुहम्मद अल्ला राणी हो अधीन, कलमी कलमा इक्क अख्वांयदा। आपे नबी रसूल बाबीण, गुरमतिो कसतमो आपणे तोल तुलांयदा। आपे दाता दानी वड परबीण, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। आपणी वस्त देवे दस्त आपे लए छीण, दूसर कोए ना संग रखांयदा। आपे हरिजन हरि हरि जिउँ जल मीन, जल धारा रूप वटांयदा। आपे वजाए हँकारी बीन, भन्नणहार आप अख्वांयदा। आपे होया मुहम्मदी दीन, आपणा वेस आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अमाम इक्क इक्क सुहांयदा। इक्क अमाम अमाम मैंहदी, एका कल वरतांयदा। खेले खेल दिशा लहिंदी, पहली कूटे फेरा पांयदा। अञ्जील कुरान इक्क दूजे दे नाल खहिंदी, जगत मसल्ला हेठ वछांयदा। अल्ला राणी रो रो कहिंदी, पल्लू ना कोए टिकांयदा। पंज शैतान नदी वहिंदी, बेड़ा पार ना कोए करांयदा। चार यारी पिच्छे हो हो बहिंदी, संग मुहम्मद नैण शरमांयदा। गोबिन्द धारा तिक्खी हो हो तेरा वार सहिंदी, प्रभ साचा हथ्थ उठांयदा। अन्तिम एका गाहे वेखो गहिंदी, पारब्रह्म आपणा खेल खिलांयदा। धरत मात तेरी हथ्थीं लाए मैहन्दी, तेरा साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, काला सूसा वेखे खेल ईसा मूसा शाह अबनूसा संग रलांयदा। धरत मात लाल रंग रंगण आया, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त। लक्ख चुरासी धर्म राए दर टंगण आया, मेल मिलाए साचे सन्त। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघण आया, तोड़े गढ़ हँकारी हँगत। गुरमुखां अग्गे नाम भिच्छया मंगण आया, सतिगुर पूरा आपणी रंगत। ग़रीब निमाणयां गुरमुखां काया चोली रंगण आया। आपे होया भुक्खा नंगत। साचा नाम कंगण तन पहनावण आया, चार वरन बणाए साची संगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे खेल आपणे । आया पुरख पुरख सुल्तान, हरि वड्डा शाहो भूप्या। धर्म उठाए इक्क निशान, ना जणाए रेख रूप्या। सृष्ट सबाई पाए एका आण, वेख वखाए चारे कूटयां। मेट मिटाए राज

राजन, ख़ाक रलाए जूठ झूठया। जन भगतां देवे एका दान, हरि हरि साचा आपे तूठया। आपे वासा रक्खे कब्रिस्तान, दोज़ख बहिश्त आपे नठ्ठ नठ्ठ उठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द नगारे लाए एका चोटयां। शब्द नगारे लाई चोट, हरि साचे आप वजाया। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, कलिजुग वेला अन्तिम आया। साधां सन्तां भरी ना पोट, माया ममता मोह वधाया। तीर्थ तट्टां बन्न्ह लंगोट, जगत वेसवा वेस हंढाया। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, कोटन कोटां दिस ना आया। कोटी कोटि चढ़े पर्बत चोट, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कुंदर कोटी कोटि फिराया। पारब्रह्म अबिनाशी करते जिस जन रक्खी ओट, वेले अन्तिम लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण वेस वटाया।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी सुखदेव राज दे घर दया होई पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

अलख अगम्म अथाह श्री भगवान, एका एकउँकारया। दो जहान खेल महान, पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारया। थिर घर वसे सच मकान, सच सिँघासण आप सुहा ल्या। शाहो भूप पुरख सुल्तान, राज राजान आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खिला रिहा। आदि जुगादी हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, भेव कोए ना पांयदा। थिर घर वेखे सच टिकाना, घर साचा आप सुहांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। रागी नाद अनादी धुन तराना, आप आपणा आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला खेल खिलांयदा। इक्क अकल्ला अकल कलधार, एका रूप समांयदा। आदि जुगादी गुर अवतार, वेस अनेका आप वटांयदा। शब्द शब्दी शब्द जैकार, आप आपणा आप करांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। अबिनाशी करता हरि निरँकारा, एका एक एक अख्वांयदा। जोती जोत जोत उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। आप आपणा कर पसारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा दए अधारा, आप आपणा बल धरांयदा। आप आपणा करे कराए वणज वपारा, आप आपणा हट्ट खुल्हांयदा। आप आपणा बणे सेवादारा, सेवक सेवा सेव कमांयदा। आप आपणी बन्न्हे धारा, आप आपणा राग अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटांयदा। आदि निरँजण हरि हरि करता, करता पुरख आप अख्वांयदा। आपणा कारज आपे करदा, ना कोई दूसर वेख वखांयदा। निरभउ रूप कदे ना डरदा, अनभव

प्रकाश समांयदा। आपणी जोती आपे वरदा, नारी कन्ता नाम रखांयदा। सचखण्ड दुआरे आपे वड़दा, महल्ल अटल आपणा आप सुहांयदा। आपणा रूप आपे घड़दा, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। आपणी सेजे आपे चढ़दा, आप आपणा संग निभांयदा। आपणा लड़ आपे फड़दा, आप आपणी गंढु बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा कर पसारा निराकार वेस वटांयदा। निराकार पुरख अकाल, जोती जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। आपणी करे आप प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी चाल, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसाल, ना मरे ना जाईआ। दो जहानां बण दलाल, आप आपणी करनी रिहा कमाईआ। आपणी घाल आपे घाल, घालणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। आप आपणी दए सलाह, आप आपणा मता पकांयदा। आप आपणा बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आप आपणा उपाए नाँ, नाम नामा आप अख्वांयदा। आप आपणे वस्सया नगर ग्रां, साचा खेड़ा आप सुहांयदा। आप आपणी पकड़े बांह, आप आपणा सिर हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निरगुण रूप आप दरसांयदा। निरगुण सूरबीर बलकारा, हरि साचे वड वड्याईआ। इक्क अकल्ला एकउँकारा, आदि पुरख आप अख्वाईआ। अबिनाशी करता जाणे आपणी धारा, जूनी रहित भेव ना राईआ। आप सुहाए सच दुआरा, सच घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगाईआ। निरगुण नूर इक्क अकल्ला, हरि हरि आप अख्वांयदा। आपे वस्सया सच महल्ला, दिस किसे ना आंयदा। आपणी जोती आपे रला, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण देवे वर, निरगुण अग्गे झोली डांहयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण वंड वंडाईआ। निरगुण बंक निरगुण दुआरी, निरगुण अलक्ख जगाईआ। निरगुण वणज निरगुण वापारी, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। अकल कला कल आपे धार, हरि आपणा खेल खिलन्नया। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतार, जुग जुग वेस वटन्नया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, जनणी जन का किसे जनिआ। मात पित ना कोए आधार, भैण भाई ना कोए वखन्नया। धरत धवल ना कोए उसार, रवि ससि ना सूरज चन्नया। मण्डल मण्डप ना कोए आकार, ना दीसे जल बंब्या। जंगल जूह ना कोए पहाड़, डूँघी गार ना डेरा मल्लया। पंज तत्त ना कोए आकार, त्रैगुण माया ना बद्धा पलया। ब्रह्मा वेता ना कोई नैण रिहा उग्घाड़, खेले खेल श्री भगवन्नया। शिव शंकर ना दिसे लाड़, बाशक तशका

ना गल सुहन्नया। करोड़ तेतीस ना करे पुकार, सुरपति इन्द ना कोए मन्नया। आदि जुगादी खेल अपार, भेव अभेदा आप वखन्नया। शब्द ब्रह्मादी कर त्यार, लोआं पुरीआं बेड़ा बन्नया। सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, आपणा भाणा आपे मन्नया। आपे मन्दिर कर प्यार, आपे वसे छप्पर छन्नया। आपे निरगुण निरगुण विच्चों होया बाहर, आपणा आप आपे जणया। आपे नारी कन्त भतार, सुत्त दुलारा आपे वेख वखन्नया। आपे करे सच शृंगार, आपणा बेड़ा आपे बन्नया। आप आपणा खोल्ह भण्डार, आप आपणा दर सुहन्नया। करया वेस आप निरँकार, निरगुण जोती चढ़े चन्नया। सति सरूप सिरजणहार, खेले खेल दो जहन्नया। त्रै त्रै लोकां इक्क आधार, चौदां चौदां वेख वखन्नया। अवण गवण खेल अपार, पवन पवनी आप वहन्नया। रवि ससि कर उज्यार, तारा मण्डल रंग रगन्नया। शब्द डोरी हथ्थ निरँकार, लोक परलोक आपे बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल श्री भगवन्नया। भगतन मीता इक्क अतीता, एका एक अख्वांयदा। एका वसे धाम अनडीठा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। आदि जुगादी ठंडा सीता, सति पुरख आप अख्वांयदा। आपे पतित आप पुनीता, आप आपणा बल रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि अछल अछल्ल खेल खिलांयदा। अछल अछल्ल हरि गिरधारा, आदि जुगादि सुहांयदा। सचखण्ड साचा खोल्ह दुआरा, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। निरगुण बाती दीपक कर उज्यारा, अट्ठे पहर डगमगांयदा। एका वसे धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा इक्क रखांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, निरँकारा नाअरा एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। आदि जुगादि कर कर वेस, आपणी बणत बणांयदा। शाह भूप हरि नर नरेश, निरगुण धारा आप चलांयदा। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग आप हंढांयदा। आपे अलख निरँजण आपणे दर करे आदेश, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आपे आपणी करनी रिहा वेख, करता पुरख नाउँ उपांयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपणा लेखा आप जणांयदा। आपणी लाए आपे मेख, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे विष्नूं हो प्रवेश, चतुर्भुज खेल खिलांयदा। आदि शक्ति नेत्र रही पेख, नर नरायण नैण खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे साचे घर, घर साचा आप सुहांयदा। साचा घर हरि टिकाणा, हरि साची बणत बणाईआ। इक्क सुल्तान एका राणा, एका तख्त रिहा सुहाईआ। एका गीत एका गाणा, एका राग अलाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बैठा बेपरवाहीआ। एका इष्ट इक्क ध्याना, एका वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म चलाईआ। देवे वर श्री भगवाना, साची सिख्या इक्क समझाईआ। विष्नूं वंसी हो प्रधाना, अमृत धारा

आप वखाईआ। उपज्या कँवल नौजवाना, निझर धारा इक्क चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता पिता माता आप अख्वाईआ। मात पित हरि निरँकार, आपणी कल वरतांयदा। शब्दी शब्द सुत्त दुलार, साची गोद उठांयदा। निराकार कर आकार, साकार रूप वटांयदा। आपणे नेत्र नैण आप उग्घाड़, आपणे लोचण खोल्ह खुल्हांयदा। आपणे अन्दर आपणा आप आपे देवे वाड़, आपे बन्द रखांयदा। ना कोई लेखा लिखे लिखार, लेखा लिख्त ना कोए जणांयदा। इक्क अकल्ला कर पसार, आप आपणी कल वरतांयदा। नाभी फुट्टी होया उज्यार, आकाश प्रकाश समांयदा। साचा सुत्त कर त्यार, पारब्रह्म ख़ुशी मनांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दुलार, दर साचे आप सुहांयदा। दर्शन देवे अगम्म अपार, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए वर, निरगुण निरगुण अग्गे दए धर, पारब्रह्म ब्रह्म अख्वांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आपे जणया, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। मात पित हरि साचा बणया, किसे घर ना धी जवाईआ। आपणा ताणा आपे तणया, ताणा पेटा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस नर नरेश आप आपणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुत्त दुलारा, साचा नाम धराया। दर घर साचे किया प्यारा, हरि साचे मेल मिलाया। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, एका रूप दरसाया। चारे कूटां सच अखाड़ा, हरि हरि नज़री आया। धुर दरगाही साचा लाड़ा, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। ब्रह्मा वेता कढ्ढे हाढ़ा, रो रो नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे सिफ्त सलाहया। सिफ्त सलाह बेऐब परवरदिगार, हरि साचा सच वड्याईआ। आपे पावणहारा सार, आपे मेल मिलाईआ। आपे देवत देण आधार, दाता दानी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाईआ। वंडी वंड हरि भगवान, आपणी दया कमांयदा। देवणहारा साचा दान, दानी दाता झोली पांयदा। शब्द अगम्मी इक्क फ़रमान, आपणा आप सुणांयदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म मकान, हरि साचा वेख वखांयदा। नादी धुन सच्ची धुनकान, साचा शब्द सुणांयदा। एका बख्शे इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझांयदा। एका दर कर परवान, एका घर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म वेस वटांयदा। वेस वटाया हरि रघुराया, आपणी बणत बणाईआ। आपणा भाणा आप जणाया, आपणे भाणे आप समाईआ। आपणा ताणा आप तणाया, आपे वेख वखाईआ। जाणी जाणा भेव ना आया, वड दाता बेपरवाहीआ। साची सिख्या इक्क समझाया, दे मति मुख छुपाईआ। आपणा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाया, सेवक सेवा सच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वेखे सहिज सुभाईआ। ब्रह्मे वेता दर घर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। निउँ निउँ नेत्र

३१८
०८

सीस झुकाया, मंगे हरि सरनाईआ। आपणी झोली अग्गे डाहया, दर भिच्छया इक्क वखाईआ। सच भण्डारा आप वरताया, आपणी दया कमाईआ। तेरा तेरा रूप वटाया, तेरा तेरा दए उपाईआ। तेरा लेखा लिख्त गणाया, अलख निरँजण खेल खिलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा भेव ना आया, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए जणाईआ। मात पित अम्मी अंमड़ा ना कोए बणाया, साक सैण ना कोए रखाईआ। इक्क अकल्लड़ा आप अख्वाया, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणा भेव आप खुल्हा, आपे बूझ बुझांयदा। आपणी रंगण आप चढ़ा, रंग रंगीला माधव आप हो जांयदा। आपणा मृदंगा आप वजा, ढोल अनादी इक्क सुणांयदा। आपणा संग आप निभा, सगला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण जोती बाती धर, एका घर सुहांयदा। निरगुण दीप होया उज्यारा, ब्रह्म ब्रह्म कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल आपारा, खेलणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादी खेले खेल परवरदिगारा, मूर्त अकाल एका नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धूंआँधार आप सहाईआ। धूंआँधार आपे रक्ख, ब्रह्म ब्रह्म समांयदा। आपणी कल कर प्रतक्ख, कल धारी वेस वटांयदा। आपे करे आपणा पक्ख, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
३१६ आपणा करे आप आपा विच्चों वक्ख, आप आपणी चलत चलांयदा। आपणा वक्ख आपे कर, आपणी कल वरताईआ। आपणा ३१६
०८ अक्खर आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपणे अन्दर आपे वड़, आपे बूझ बुझाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व ०८
तत्त ना कोए वखाईआ। ना कोई दीसे किला गढ़, हरि हरि जू बैठा डेरा लाईआ। ब्रह्मा तेरी लाई जड़, विष्नूं वंसी विच टिकाईआ। अन्तिम वेले लए फड़, मनवन्तर मुख भवाईआ। अबिनाशी अबिनाश आपे रिहा लड़, आपणा खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण दित्ता साचा वर, ब्रह्म ब्रह्म ख़ुशी मनाईआ। ब्रह्मा उपज्या साचा सुत्त, साची सेव कमन्नया। मेल मिलावा पुरख अबिनाशी अचुत्त, वेले अन्तिम देवे डन्नया। आप सुहाए आपणी रुत्त, आपे जाणे आपणे भाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, एका धुर फ़रमानया। धुर फ़रमाना हरि, हरि झोली पांयदा। ब्रह्मा वेता ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म ब्रह्म अख्वांयदा। चारे वेदां इक्क ज्ञाना, एका बूझ बुझांयदा। त्रैगुण माया कर प्रधाना, साचा संग निभांयदा। पंचम पंचम खेल खिलाना, आप आपणी किरपा आप अख्वांयदा। आप आपणा बद्धा गाना, निरगुण सगन मनांयदा। मन मति बुध संग रलाना, सगला संग आप रखांयदा। साचा मन्दिर वेख मकाना, साची वस्तू विच टिकांयदा। नौ दर वेखे खोल्ह मकाना, नौ नौ रूप सलांहयदा। महल्ल अटल सच टिकाना,

घर घर विच आप सुहांयदा। अंसा बंसा कर परवाना, जीउ आत्म परमात्म वेख वखांयदा। धुन अनादी सच तराना, घर साचे आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। हरि साची सेवा आप लगाई, साचा कर्म कमांयदा। जुगां जुगन्तर वंड वंडाई, जुग जुग वेख वखांयदा। आदि अन्त ना किसे जणाई, भेव अभेद ना कोए खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी जून उपाई, घट घट डेरा लांयदा। आप आपणी जोत जगाई, निरगुण आपणा मेल मिलांयदा। साचे सन्त लए उठाई, साची सिख्या आप समझांयदा। भगत भगवन्ता एका थाँईं, एका रूप दरसांयदा। करे कराए सच न्याँईं, झूठा वणज ना कोए रखांयदा। हरिजन पकड़ उठाए फड़ फड़ बांही, आप आपणा राह चलांयदा। सन्तन मीता पिता माई, सुत दुलारे गोद उठांयदा। देवणहारा ठंडीआं छाईं, सिर हथ्थ समरथ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद लोकमात वेख वखांयदा। लोकमात बहि बहि डेरा, हरि साची रचन रचाईआ। निरगुण सरगुण कर वसेरा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। पंच विकारा ढाए वसेरा, पहला पौड़ा आप चढ़ाईआ। दूजा देवे इक्क उखेड़ा, हउमे हँगता रहिण ना पाईआ। तीजे नेत्र दीसे एका सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए जणाईआ। चौथे घर चौथे पद करे हक्क नबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। पंचम पंचम मीता हरिजन बन्न्हे बेड़ा, जुग जुग वेस वटाईआ। भाग लगाए काया खेड़ा, अन्दर मन्दिर कर रुशनाईआ। खुल्हा वखाए इक्क वेहड़ा, एका दर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी लहिणा देणा तेरा आप चुकाईआ। लहिणा देणा हरि चुकाउणा, हरि साचे लेख लिखाया। ब्रह्मा वेता सेव कमाउणा, आप आपणा बंस लए सुहाया। विष्नूं वंसी फेरा पाउणा, देवे रिज़क सबाया। शिव शंकर अंकर इक्क वखाउणा, किंगरे किंगरे मृदंग वजाया। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, थिर कोए रहिण ना पाया। लोआं पुरीआं गगन पातालां हरि खेल रचाया, रवि ससि सेवा लाया। करोड़ तेतीसा चले आपणी चाल, सुरपति रोवे दए दुहाया। प्रभ अबिनाशी खेल न्यार काल महांकाल, आपणे दर दुआरे लए बहाया। राए धर्म वेखे तेरी धर्मसाल, अद्धविचकारे डेरा लाया। चित्रगुप्त दए ज्वाल, लेखा कोए ना सके मिटाया। लाड़ी मौत करे कंगाल, शाह सुल्तान रहिण ना पाया। हरि का शब्द इक्क दलाल, हरिजन साचे लए तराया। सो पुरख निरँजण मेहरवान, हँ ब्रह्म वेख वखाया। आप आपणे आपे लए भाल, सतिजुग साचा मार्ग लाया। धुरदरगाही तोड़ जंजाल, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, हरि साचा आप सुहांयदा। आदि निरँजण चाढ़े तेला, जोत निरँजण वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। आपे वस्सया रंग

नवेला, आपे घट घट वेख वखांयदा। कट्टणहारा धर्म राए दी जेला, गुर शब्दी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती सरगुण धर, धर धरनी आप सुहांयदा। धरनी धवल दए सुहा, हरि साचे वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण जाए समा, सच समग्री इक्क वखाईआ। शब्द अनादी धुन चला, सुन्न मुन्न खुलाईआ। आपणा गुण आपे वखा, आपे बूझे दए बुझाईआ। सन्त सुहेले लए जगा, जागरत दिशा इक्क वखाईआ। धाम नवेले लए मला, जगत नेत्र दिस ना आईआ। सतिजुग साची बणत बणा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका शब्द एका रूप वखा, एका विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ओअँ सोहँ भेव ना राईआ। ओअँ करता हरि निरँकारा, निरवैर रूप समाया। सोहँ शब्द भर भण्डारा, लोआं पुरीआं आप वरताया। दोए दोए मेल खेल अपारा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा वेख वखाया। सतिजुग पेख नेत्र नैण, अट्ठ अठारां खेल खिलाईआ। आप चुकाए लहिणा देण, देवणहार आप अख्वाईआ। आप वहाए आपणा वहिण, ना कोए बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग करता हरि करनेहारा, आदि पुरख अबिनाशया। मरे ना जम्मे विच संसारा, खेले खेल जगत तमास्सया। त्रेता त्रीया वेस अपारा, राम रामा रूप शाहो शाबास्सया। तोड़े लंका गढ़ अहँकारा, जन भगतां अन्दर रक्खे वास्सया। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, चरन कँवल दए भरवास्सया। आपे जाणे आर पार किनारा, मँझधार आप रुढ़ास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जाणे आपणी रास्सया। साची रासी गोपी काहन, हरि साचा आप रचाईआ। त्रिलोकी नाथ खेल महान, गवर्धन धारी वेस वटाईआ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण नौजवान, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। अर्जन गीता इक्क ज्ञान, अट्ठ अठारां करे पढ़ाईआ। सुरती शब्द शब्द बलवान, तीर निराला इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाम धराईआ। नाम धरा सदा निरवैरा, निरगुण रूप समाया। जुग जुग चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा रहिण ना पाया। जन भगतां करे हक्क नबेड़ा, थान थनंतर इक्क सुहाया। आपे देवणहारा उलटा गेड़ा, लक्ख चुरासी आप भवाया। आपणी करनी लाए आप उखेड़ा, आपणी जड़ रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रचन रचाया। रची रचना पारब्रह्म, आपणी बणत बणांयदा। गगन पाताल रहाए बिन थम्म, लोआं पुरीआं डेरा लांयदा। मात गर्भ ना पए जम्म, बालक कुक्ख ना कोए वखांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, काम कामनी आप हो जांयदा। आपे खाए आपणा तम, तृष्ना भुक्ख आप मिटांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई गम, सो पुरख निरजंण आप अख्वांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। कलिजुग तेरी साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। मंगी मंग धुर दरबार, धुर लहिणा झोली पाईआ। लेखा लिखे लक्ख चार बत्ती हज़ार, चारे मुख सलाहीआ। साची वस्त अपर अपार, जगत झोली आप भराईआ। जूठ झूठ कर प्यार, हउमे हँगता संग रलाईआ। माया ममता दर दरबार, बैठी धूणी ताईआ। कूड़ कुड़यारा कर पसार, कूड़ा मस्तक टिक्का शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच ख़ज़ीना आप वरताईआ। कलिजुग जगत भण्डारा भर, हरि साचे वक्त सुहाया। आपणी करनी आपे कर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाया। नौ रखाए खुल्ल्हे दर, दसवां बन्द बणाया। अगम्म अगम्मड़ा अन्दर वड़, बैठा कुण्डा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा संग निभाया। साची मंग लए मंग, दोए जोड़ सीस निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी तेरा संग, तेरा मेला विच संसारया। मेरा कर्म ना होवे भंग, मिले मेल साचा यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दर आप खुल्ह्रा रिहा। साचा दर जगत खुलाउणा, कलिजुग वेख वखाईआ। ईसा मूसा नाम धराउणा, ऐड़ा अथरवन दए सलाहीआ। संग मुहम्मद अंग छुहाउणा, चार यारी वेख वखाईआ। अल्ला राणी नाल प्रनाउणा, एका सगन मनाईआ। जल्वा जलाल नूर अलाही आप प्रगटाउणा, नूरी नूर नूर चमकाईआ। दस्तगीर शाह हकीर वेख वखाउणा, कलमा अमाम इक्क जणाईआ। कायनात एका रंग रंगाउणा, काला सूसा तन छुहाईआ। दीन ईमान इक्क बनाउणा, एका अल्फ़ रिहा सिखाईआ। अल्फ़ अल्फ़ी तन लगाउणा, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। कूड़ कुड़यारा कूक सुनाउणा, चारे कूटां दए दुहाईआ। सच सुच्च फूक वखाउणा, त्रैगुण लम्बू एका लाईआ। पंज तत्त हाहाकार कराउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ऐनलहक्क नाअरा इक्क रखाउणा, मुकामे हक्क इक्क ख़ुदाईआ। खालक ख़लक विच समाउणा, आप आपणा रूप वटाईआ। राम नाम मेट मिटाउणा, भरमी भर भर भरम भुलाईआ। धरत धवल ना किसे भार उठाउणा, नेत्र रोवे दए दुहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते तरस कमाउणा, कलिजुग वेखे तेरी शाहीआ। संग मुहम्मद एका धाम सहाउणा, चौदां तबकां फोल फोलाईआ। अजराईल जबराईल सेवा लाउणा, मेकाईल असराफील साचा संग निभाईआ। जीव जन्त सर्ब कुरलाउणा, पंखी पंछी नीर रहे वहाईआ। नर नरायण आपणा वेस वटाउणा, लोकमात वेख वखाईआ। पंज तत्त काया मन्दिर डेरा लाउणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नाना रूप आप वटाउणा, ना भुल्ले आप रघुराईआ। कुकर्मी कुकर्म मेट मिटाउँणा, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। नानक सतिगुर नाम धराउणा, चार वरनां वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी दर घर साचा पाउणा, दर घर साचे मेल मिलाईआ। नारी

कन्ता वेख वखाउणा, घर मंगल एका गाईआ। दर दरवेशा अलख जगाउणा, अलक्ख अलक्खणा लेखा लेख ना कोए लखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेख साचा घर निरगुण मेल मिलाईआ। नानक निरगुण निरगुण मेला, सचखण्ड जोड़ जुड़ाया। आपे गुरू गुरू गुर चेला, गुर गुर आप अख्वाया। आपे होया सज्जण सुहेला, घर साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला एका घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाया। नानक मेला धुर दरगाह, निरगुण वेख वखाईआ। मिल्या मेल बेपरवाह, विछड़ कदे ना जाईआ। सखा सखाई पकड़े बांह, समरथ हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, नाम वस्त साची झोली पाईआ। नाम सति सच भण्डारा, नानक गुर वरतांयदा। लोकमात खेल अपारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। एका जोती दस अवतारा, दहि दिशा फेरा पांयदा। गोबिन्द खण्डा तेज़ कटारा, नाम सति रूप वटांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, चार वरनां रंग रंगांयदा। अमृत आत्म देवे ठंडी ठारा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। ऊँचां नीचां वखाए इक्क दरबारा, दूजा दर ना कोए जणांयदा। साची सिख्या सिक्ख विचारा, साख्यात जोत प्रगटांयदा। मिल्या मेल हरि निरँकारा, सुत्त दुलारा आप सलांहयदा। पुरख अकाल सर्ब प्रितपाला, प्रितपालक इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणा खेल हरि समरथ, आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग चलाए जगत रथ, रथ रथवाही वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पाए नथ्थ, दहि दिशा आप फिरांयदा। जन भगता देवे नाम वथ्थ, आत्म ब्रह्म जणांयदा। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पांयदा। हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। लहिणा देण चुकाए तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी वेख वखांयदा। आपे होए पूजा पाठ, दुर्गा गायत्री मन्त्र आप अख्वांयदा। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, अमृत धारा आप वहांयदा। आपे मस्तक जोती बण ललाट, अट्ठे पहर डगमगांयदा। आपे गुरमुखां पूरा करनहारा घाट, नानक तोला तेरां तोल तुलांयदा। आपे रामा कृष्ना रस लए चाट, सीता सुरती आप प्रनांयदा। आपे वेखे चौदां हाट, चौदां तबकां खोल्ह खुल्हांयदा। खेले खेल त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै बंधन आप तुड़ांयदा। आप निभाए सगला साथ, साचा संग आप वखांयदा। लहिणा देण चुकाए नौ नौ नाथ, सिध्ध चुरासी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धारा इक्क वहांयदा। निरगुण धारा जोत अकाली, हरि साचे आप उपाईआ। सतिजुग मंगे सच दलाली, साची सिख्या इक्क समझाईआ। त्रेते तेरा साचा माली, राम रमईया वेस वटाईआ। कान्हा कृष्ना तोड़ जंजाली, हरिजन साचे

ल्ए तराईआ। संग मुहम्मद जल्वा जलाली, ज़ाहरा ज़हूर आप वखाईआ। नानक निरगुण हथ्थीं फिरे ख़ाली, गुरमुखां भण्डारा नाम भराईआ। गुर गोबिन्द तेग़ इक्क उठाली, नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। चार वरनां सन्त सुहेले रिहा भाली, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां आप करे दलाली, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। कूड़ कूड़ा लहिणा चुकाउणा, हरि साचा सहिज सुखदाया। साचो साचा मार्ग लाउणा, साची सिख्या इक्क समझाया। चार वरनां इक्क बनाउणा, ऊँच नीच रहिण ना पाया। राजा राणा तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकाया। मायाधारी ख़ाक मिलाउणा, ख़ाकी ख़ाक उडाया। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, धुर दा लेख चुकाया। फड़ फड़ कागों हँस बनाउणा, मानक मोती चोग चुगाया। मानस जन्म लेखे लाउणा, लक्ख चुरासी फंद कटाया। राम कृष्न दरस दखाउणा, आप आपणा रूप धराया। नानक गोबिन्द नज़री आउणा, नीला नीली धारों पार कराया। सत्त रंग निशाना इक्क वखाउणा, सत्तां दीपां आप झुलाया। लक्खण करौच पुष्कर फेरा पाउणा, जम्बु दीप होए रुशनाया। सान सलमल डेरा ढाउणा, कुशा रिहा कुरलाया। लाल रंग हरि आप रंगाउणा, आदि शक्ति वेस वटाया। कंचन रूप इक्क सुहाउणा, दीवा बाती इक्क डगमगाया। सूहा वेस नर नरेश आपणा आप कराउणा, साची सखीआं मेल मिलाया। चिट्टी धार कर प्यार, चिट्टा रंग इक्क चढ़ाउणा, दस्म दुआरी कुण्डा लाहया। रंग बसन्ती तन रंगाउणा, फल फलवाड़ी वेख वखाया। नीला बस्त्र गोबिन्द धार हिन्दू मुस्लिम इक्क बणाउणा, साची बणत बणाया। काला सूसा तन छुहाउणा, कलिजुग सथ्थर रिहा वछाया। मुख नक़ाब पर्दा पाउणा, कलिजुग जीवां दिस ना आया। हक्क जनाब फेरा पाउणा, मक्का मदीनां वेख वखाया। नबी रसूलां आप समझाउणा, मुल्लां शेख़ मुसायक भुल्ल रहे ना राया। पंडत पांधा पकड़ उठाउणा, तिलक ललाटी फोल फोलाया। कलिजुग चार वरन आप जगाउणा, सम्मत सोलां नीह धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द डंक इक्क वजाया। शब्द डंक ख़बरदार, हरि साचे सच कराया। चारे कूटां हो उज्यार, बन खण्ड फिर फिर फेरा पाया। एका शब्द शब्द जैकार, नर नरायण नाअरा लाया। रसना बहि बहि सारे कहिण, गोबिन्द दरस किसे ना पाया। मानस वहे ममता वहिण, नानक निरगुण रूप ना कोए दरसाया। घर घर तक्कण साचे नैण, नैण मुँधारी कृष्न मुरारी काया अटारी ना वेख वखाया। राम राम दर दर पैंदे वैण, राम राम ना किसे मनाया। जगत तृष्ना खाए डायण, चिल्ला तीर कमान ना कोए उठाया। ऐनलहक्क ना वेख्या मुखड़ा ऐन, नुक्ता दूई ना कोए गंवाया। सर्ब जीआं दा सांझा साक सज्जण सैण, पुरख अबिनाशी इक्क अख्वाया। कलिजुग

अन्त चुकाए लहिणा देण, भुल्ल रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शाह सुल्तानां राज राजानां आपे दए उठाया। आप उठाए दया कमाए, शब्द हथ्थ कटारीआ। चारों कुन्ट पए दुहाए, ना कोए सहाए नर नारीआ। राज राजान रहे कुरलाए, ख़ाली दिसन मण्डप माढ़ीआ। गुरमुख साचा सगन मनाए, राह तक्के सतारां हाढ़ीआं। जुगां जुगां दा लेखा दए मुकाए, जिस चरन छुहाई दाढ़ीआ। नानक गोबिन्द वेख वखाए, आर पार लेखा विच संसारीआ। धारी केसा सरन लगाए, मूंड मुंडाए सोहे दरबारीआ। ज़ात अज़ात आप मिटाए, पारब्रह्म विचारीआ। ब्रह्मे तेरा लेख चुकाए, साचा सिक्ख सच्ची सिक्दारीआ। निझर झिरना सीर झिराए, अमृत बख़्शे ठंडी ठारीआ। चरन कँवल प्रभ आप धवाए, आपे जाणे आपणी कारीआ। शंकर जोती जोत मिलाए, बाल निधाना कर पसारीआ । जगत जगदीसा वेख वखाए, वड दाता आप निरँकारीआ। इन्द इन्द्रासन आप सुहाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। शब्द शहीदी गाना बन्नृ वखाए, ना कोई मारे खण्डा तेज़ कटारीआ । ध्रू प्रहलाद लेखे लाए, लेखा चुक्के आपणी वारीआ। चौदां तबकां फेरा पाए, कोट ब्रह्मण्ड करे आपणी कारीआ। भेख पखण्डा दए मिटाए, सतिजुग लाए सच्ची फुलवाड़ीआ। गुर गोबिन्द साचा दया कमाए, गुरसिख साजण आप मिलाए, आप आपणा संग रला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द बाण हरि मेहरवान आपणे हथ्थ उठा ल्या। शब्द चिल्ला तीर कमान, शब्दी हथ्थ उठाईआ। शब्द जोद्धा सूर बली बलवान, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। शब्द मारे इक्क निशान, पूरीआं लोआं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां जेरज अंडा आप चमकाईआ। शब्द खण्डा तिक्खी धार, हरि साचा आप उठांयदा। लक्ख चुरासी करे ख्वार, दूती दुष्ट रहिण ना पांयदा। गुरमुखां करे सच प्यार, दूर दुराडे मेल मिलांयदा। जो जन रसना जेहवा रहे उचार, लहिणा लेखा आप चुकांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, जोती जामा भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम करे पार, सतिजुग राह वखांयदा। बीस इकीसा हो त्यार, इक्क हदीसा आप पढ़ांयदा। छत्र सीसा सच्ची सरकार, नव नव आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नरायण नर हरी हरि, गुर अवतार शब्दी शब्द आप धरांयदा।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी अरूड़ सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल एका ओट, हरिजन वड्डी वड्याईआ। नाम भण्डारा दए अतोट, तोट रहे ना राईआ। तन नगारे लाए

चोट, आपणा डौरु आपे वाईआ। जगत तृष्ना कढ्ढे खोट, आत्म अन्तर इक्क बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क रघुराईआ। एका ओट दीन दयाला, हरिजन हरि हरि जणाईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाला, प्रितपालक आप अख्वाईआ। देवे नाम सच्चा धन माला, नाम ख़ज़ीना इक्क वखाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाला, हरिजन साचे लए तराईआ। काया मन्दिर वेख सच्ची धर्मसाला, दर आपणा आप खुल्हाईआ। फल लगाए साचे डाल्हा, अमृत आत्म आप खवाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, हरिजन साचे आप उठाईआ। शब्दी गुर बण दलाला, लोकमात वेख वखाईआ। चरन रखाए काल महांकाला, सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। एका ओट दीनां नाथ, नाथ अनाथां आप तरांयदा। पुरख अकाल अगम्मड़ी गाथ, धुन अनादी शब्द वजांयदा। नाम चढ़ाए साचे राथ, लोआं पुरीआं पार करांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। एका पूजा एका पाठ, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सर सरोवर मारे ठाठ, अमृत धारा जल वहांयदा। एका जप तप रखाए हाठ, चरन ध्यान इक्क जणांयदा। एका तीर्थ एका ताट, एका घाट सुहांयदा। जन भगतां खोल्हे बजर कपाट, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। सच वणजारा वणज कराए साचे हाट, नाम कंडा तोल तुलांयदा। मेल मिलावा काया खाट, आत्म सेजा आप सुहांयदा। खेले खेल बाज़ीगर नाट, नट नटूआ सांग वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। एका ओट पुरख अबिनाशा, हरिभगत भगत वड्याईआ। काया मण्डल साची पावे रासा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। आपे रविआ पवण स्वासा, रसना जेहवा आप चलाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकासा, आप आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख घर साचे दर निज आत्म करे आपे वासा, दिस किसे ना आईआ। पुरख अकाल इक्क भरवासा, एका करे पढ़ाईआ। शाहो भूप हरि शाहो शाबासा, सच सुल्तान बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। एका ओट आदि निरजंण, हरिजन आप रखांयदा । दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, भवसागर पार करांयदा। नेत्र नाम पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। दो जहानी साचा सज्जण, लोकमात वेख वखांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवांयदा। कलिजुग अन्तिम आया पड़दे कज्जण, जोती जामा भेख वटांयदा। गुरमुख अधारे जिउँ नानक ठग्ग सज्जण, साची सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार करांयदा। एका ओट पारब्रह्म, वर घर हरि हरि पाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल रचाया। नाम वड्याई दमां दम, स्वास स्वासी लेखे लाया। कारज करता करे आपणा

कम्म, करनेहारा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए मिलाया। एका ओट अकाल मूर्त, अकल कला कल धारीआ। निरगुण नूर साची सूरत, चक्र चिहन ना कोए रखा रिहा। हरिजन आसा मनसा पूरत, पूरन आसा आप करा रिहा। आपे वसे नेड़े दूरत, दूर नेड़ा पन्ध चुका ल्या। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, साची सिख्या इक्क समझा ल्या। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, जिस जन हरि हरि रसना गा ल्या। काया रंगण रंग चाढ़े गूढ़त, नाम रंगण इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सज्जण वेख वखा ल्या। एका ओट हरि करतार, कादर करता आप अख्वाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। लक्ख चुरासी दए अधार, अनभव प्रकाश कराईआ। आप उपाए आपे लए सँघार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड दए अधार, उत्भुज सेत्ज संग निभाईआ। माया बंधन तोड़ संसार, गुरमुख साजण लए जगाईआ। आत्म धुन सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग सुणाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, घर साचे वज्जी वधाईआ। साची सखीआ मंगलचार, एका गुण हरी हरि गाईआ। दर पाया नर कन्त भतार, साची सेज सुहाईआ। नाता तुट्टा सर्ब संसार, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। थिर घर ठांडा इक्क दरबार, सतिगुर पूरा वेख वखाईआ। कमलापाती जोत उज्यार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादी मीत मुरार, जुग जुग विछड़ ना जाईआ। जन भगतां देवे नाम भण्डार, भगत भगती वेख वखाईआ। बस्त्र गहिणा तन श्रृंगार, नाम अमोला आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रंगे काया चोला रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। एका ओट चरन भरवासा, हरिजन आप रखांयदा। दरगाह साची दए दलासा, थिर घर मेल मिलांयदा। आदि अन्त ना कदे विनासा, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। खेलणहारा खेले खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा लड़ फड़ांयदा। गुरसिख लड़ लैणा फड़, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। डूँघी भँवरी काया कवरी उप्पर जाणा चढ़, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। पंज विकारा जाए सड़, अग्नी तत्त रहिण ना पाईआ। एका अक्खर लैणा पढ़, आपणी अक्ख आप खुल्हाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सर सरोवर नहाउणा वड़, काग हँस वड्याईआ। बजर कपाटी उखेड़ जड़, आपणा थान सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, काया मन्दिर खोल्हे दर, महल्ल अटल उच्च मिनार, निरगुण रूप आप करतार। आत्म सेजा सच सिँघासण हो उज्यार, नारी कन्त कन्त भतार, सन्त भगवन्त इक्क दुआर, दर दरवाजा ग़रीब निवाजा तख्त सुल्तानी राजन राजा, आप आपणा रिहा खुल्हाईआ। जुग विछड़े जग मारे

वाजां, सोई सुरती रही उठाईआ। नाम सति सतिनाम चलाए सच जहाज़ा, वाहिगुरू गुरु गुर फतिह गजाईआ। अन्तिम खेले खेल देस माझा, हरि गोबिन्द लेख चुकाईआ। अस्व घोड़ा एका ताजा, आप आपणा रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आपे कर, कर किरपा मेल मिलाईआ।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

नाम दान सति भण्डारा, सतिगुर हट्ट विकाया। गुरमुखां देवे कर प्यारा, जुग जुग झोली पाया। आवण जावण पार किनारा, बेड़ा बन्ने लाया। ऐथे उथे दए सहारा, दो जहानी वेख वखाया। साजण मीत मीत मुरारा, प्रीतम प्यारा आप अख्वाया। गावत गाए सर्ब संसारा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे मेल मिलाया। मिल्या मेला साचे घर, आत्म घर सुहञ्जणा। आवण जावण चुक्कया डर, पाया पुरख निरँजणा। आपणी किरपा आपे कर, नेत्र पाए ज्ञान अंजना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, धूढ़ी कराए मजना।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

मन रत्ता हरि नाम रंग, निमख निमख गुण गाए। सतिगुर पूरा सदा संग, गहर गम्भीर समाए। दिवस रैण वजाए इक्क मृदंग, एका ढोला रिहा सुणाए। कट्टणहारा भुक्ख नंग, जगत तृष्ना दए मिटाए। अंगीकार लाए अंग, आपणे अंगन लए उठाए। नाम पहनाए साची वंग, भूषन बस्त्र इक्क सजाए। सच सिँघासण बैठ पलँघ, सच सुहावी वेख वखाए। गुरसिख मांगत मांगे एका मंग, एका मंग गुर सतिगुर झोली पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्धन सरधन सरधन निर्धन आप अख्वाए।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

निर्धन सरधन एका धार, सहिज सहिज गुण गाईआ। गुणवन्ता गुर पाए सार, गुर गुर वेस वटाईआ। गुर गुर रूप आप करतार, हरि हरि वज्जी वधाईआ। हरि हरि मीता सर्ब संसार, पतित पुनीता आप अख्वाईआ। ऊँचां नीचां इक्क अधार, एका शब्द जणाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशा घट घट वासा घर मन्दिर मन्दिर घर घर आपणा आप सुहाईआ।

३२६

०८

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

निर्धन रूप रंग अपार, सतिगुर पुरख चढ़ाया। वेखे विगसे करे विचार, चात्रिक रिहा बिल्लाया। बूंद स्वांती ठंडी ठार, अमृत मेघ बरसाया। एका भरे भगत भण्डार, भगत भगती झोली पाया। पूर्ब लहिणा कर्ज उतार, साचा गहिणा तन छुहाया। दर सुहाए बंक दुआर, दर दुआरे फेरी पाया। त्रेता विछड़े कल प्यार, कालख टिक्का दए कटाया। राम नाम इक्क अधार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। पंज बटी पंच आधार, पंचम मोह चुकाया। साची हट्टी सच वपार, आपणा वणज कराया। हरिजन तेरा रक्खे ना कोए अधार, मूल ब्याजी आप चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे सर, सर सरोवर इक्क नुहाया।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

फाही फाथा मच्छली जाल, जगत नीर वछुन्नया। कर किरपा हरि लेवे पाल, जाणे गुण अवगुणया। पावे सार डूँघे ताल, तत्त विकारा छाण पुन्नया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाए साची धुन्नया। मच्छली नीर जगत कुरला, तड़प तड़प मर जाईआ। नानक वेखे सहिज सुभा, संगला दीप वड्याईआ। तट किनारे दर्शन पा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। माहीगीर ना दिसे सच मलाह, जो बेड़ा बन्ने लाईआ। फादी फंदक रिहा पा, बंधन बंध बंधाईआ। सतिगुर पूरा दए सलाह, तेरी चोग रखाईआ। कलिजुग अन्तिम करे न्याँ, तेरी तृष्ना दए बुझाईआ। आपे पकड़े हरि जी बांह, जग सागर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिख्या आपे रिहा चुकाईआ। लेखा लहिणा गया चुक्क, चुकावणहार करतारा। उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, उतरया पार किनारा। जल थल ना तृष्ना भुक्ख, ना कोए दए सहारा। लेखे लाए मानुस मानुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपे जाणे आर पार अद्धविचकार किनारा।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

डूँघे वहिणा जगत खुभया, आर पार ना कोए किनार। जगत विकारा कंडा चुभया, दिवस रैण हाहाकार। हिरस हवासी जाए डुब्या, डूँघे भँवर अँध्यार। सतिगुर पूरे आपे लम्भया, तज लोभ मोह हँकार। शब्द डोरी साची बद्धया, बंधन

बंध इक्क करतार। जगत जंजाला तोड़े झूठे धंदिआ, धर्म वखाए सच्ची धर्मसाल। पार कराए मदिरा मासी गन्दया, जो जन आए चल दुआर। इक्क सुणाए सुहागी छंदिआ, सोहँ शब्द नाम जैकार। दिस ना आए आत्म अँध्या, सतिगुर रूप विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फड़ फड़ आपे रिहा तार।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी सरमुख सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कल्ला ✪

कूड़ा नाता जाए तुट्ट, कूड़ कुड़यारा मेट मिटांयदा। बंस बंसी कढ्ढे कुट्ट, सरबंस वेख वखांयदा। लग्गी जड़ देवे पुट्ट, बोला आपणा आप लगांयदा। अमृत बख्शे साचा घुट्ट, सांतक सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मूर्ख मूढ़े पार करांयदा। जिन्न प्रेत जगत खबीस, साध सन्त वहाया। आपणा पीस गए पीस, अन्त रहिण ना पाया। लेखे लग्गे कलिजुग सीस, लेखा दए मुकाया। एका शब्द सच हदीस, नाम नामा इक्क पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम खण्डा इक्क चमकाया। नाम खण्डा तेज़ कटार, हरि साचा हथ्थ उठांयदा। साधां सन्तां मारे मार, जीवां जन्तां आप समझांयदा। आपे बन्ने आपणी धार, धार निराली इक्क रखांयदा। काया मन्दिर अन्दर खिच्चे इक्क लकार, पिछला लेखा आप चुकांयदा। अगे लेखा धुर दरबार, दरगाह साची इक्क सुहांयदा। फड़ फड़ बांहो रिहा तार, वास निवासा पार करांयदा। फूलन पाए साचा हार, सीस सेहरा इक्क गुंदांयदा। रंगण मैंहदी लाल अपार, रंग रंगीला इक्क वखांयदा। छैल छबीला नौजवान, सतिगुर पूरा फेरा पांयदा। बन्नणहारा सर्ब कबीला, बाहर कोए रहिण ना पांयदा। आपे करे आपणा हीला, आपणी बणत बणांयदा। आपणी अग्नी आपे लाए तीला, आपे त्रीया वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डण्डा वड बलवान, मेट मिटाए जगत शैतान, दाता दानी गुण निधान, एका रंग समांयदा। गुण निधान सर्ब जीअ दाता, एका एक अख्वांयदा। जन्म अजन्मी देवे दाता, जन्म अजन्मी वेख वखांयदा। आपणा चला आपे रथ साचा साथा, सगला संग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द धार हरि निरँकार, मारनहारा साची मार, आप आपणा हथ्थ उठांयदा।

✪ १७ चेत २०१६ बिक्रमी नरायण सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

हरि हरि नाम जगत अनमुल्ला, आदि जुगादि ना कोए तुलाईआ। आपे रक्खे सच कुला, गुरमुख काया बंक सुहाईआ।

साचे तोल आपे तुला, तोलणहार आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर फलया फुला, फुल फुलवाड़ी भगत महिकाईआ। हरिजन आत्म अन्तर घुला, जन घोल घोल घुमाईआ। जगत भण्डारा रहे खुल्ला, आपणा आप वरताईआ। जो जन हरिजू हरि हरि मन्दिर आए भुल्ला, हरि साचा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाम वड्डी वड्याईआ। नाम भण्डारा सच अमोलक, हरि साचा हथ्थ रखांयदा। गुरसिख वेखे काया गोलक, घर साचे आप टिकांयदा। शब्द अगम्मी धुन अनादी आप वजाए आपणी ढोलक, आपणा राग आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नाम खज़ीना इक्क वखांयदा। नाम वस्त साची दात, सतिगुर पूरे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां आत्म अन्दर वेखे मार झात, डूँघी कन्दर फोल फुलाईआ। आपणी हथ्थीं खोल्हे आपणा ताक, आपे बन्द कराईआ। आपे जाणे आपणा वाक, बोध अगाधी आप सुणाईआ। आपणी पति आपे लए राख, पति पतिवन्ता साचा माहीआ। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणी शाख़, साख्यात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। शब्द बीज हरि हरि बोया, आप आपणी किरत कमांयदा। आप आपणे जेहा आपे होया, दूसर कोए ना संग रखांयदा। ना जन्मे ना कदे मोया, मात गर्भ ना वास धरांयदा। दिवस रैण ना कदे सोया, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी नाम उपांयदा। हरि का शब्द सतिगुर धार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर गुर मीता अपर अपार, निरगुण सरगुण विच टिकाईआ। सरगुण साजण हो उज्यार, खेले खेल बेपरवाहीआ। शब्द ढोला इक्क जैकार, गीत सुहागी एका गाईआ। बण विचोला हरि निरँकार, लोकमात वेख वखाईआ। साचा तोला गिरवर गिरधार, गृह गृह फेरा पाईआ। गुरमुख साजण वेख विचार, गुर मती आप समझाईआ। आत्म अन्तर खोल्ह किवाड़, नेत्र नैण इक्क दरसाईआ। मेट मिटाए झूठी धाड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। अग्नी तत्त ना लग्गे तत्ती हाढ़, तत्व तत्त इक्क वखाईआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, चारों कुन्टां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। शब्द साजण साचा मीतड़ा, परम पुरख करतारा। आदि जुगादी जाणे रीतड़ा, इक्क अकल्ला एकउँकारा। आपे गाए आपणा गीतड़ा, पुरीआं लोआं करे ख़बरदारा। आपे होया जगत अनडीठड़ा, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा। आपे आपणा भाणा जाणे मीठड़ा, देवे वर सच्ची सरकारा। आपे मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत फल इक्क विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द गुर अवतारा। हरि अवतार शब्द गुर भूपा, तख्त ताज सुहानया। आदि अनादी सति सरूपा, पारब्रह्म श्री भगवानया। वसणहारा चारे कूटा, वेख वखाए ज़िमी अस्मानया। त्रैगुण माया वेखे ठूठा, फोल फुलाए पंच शैतानया। जुग जुग दाता

आपणी करनी आपे तुठा, करनी करता आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी नौजवानया। हरि शब्द हरि का रूप, हरि हरि आप उपाया। एका तागा एका सूत, एका तन्द बंधाया। एका काया कपड़ कलप करे कलबूत, एका पंज तत्त रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा शब्द धराया। शब्द अनाद हरि ब्रह्मादि, एका एक रखांयदा। गुर गुर देवे साची दाद, सतिगुर पुरख मनांयदा। हरिजन हरि हरि आपे लाध, घर घर मेल मिलांयदा। मेट मिटाए वाद विवाद, वाह वा गुरू समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द शब्द उपजांयदा। हरि शब्द साचा बीज, गुर गुर आप टिकांयदा। आपणी करनी आपे पतीज, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे वेखे वट तीज, त्रै त्रै जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर शब्द वर, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। गुर शब्द गुरू गुर देवा, सतिगुर इष्ट मनाया। सतिगुर पुरख सति साची सेवा, हरि सज्जण आप कराया। हरिजन खवाए अमृत आत्म मेवा, फल मिट्ठा इक्क रखाया। मस्तक कौस्तक लाए थेवा, मन मणीआ आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द शब्द सुहाया। हरि सुहाए शब्द फुलवाड़ी, फल फुल वेख वखाईआ। पाए सार उजाड़ पहाड़ी, ढूँघी गारी वेख वखाईआ। गुरसिख जाणे नाड़ नाड़ी, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द तेरी पक्की हाढ़ी, हरि साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। शब्द गुर समझावण आया, देवे जगत हुलारा। पुरख अकाली वेस वटाया, जोत निराली डगमगाया। चाल अवल्लड़ी चले चाली, वेद कतेब ना कोए लखाया। आपणे हत्थां रक्खे ख़ाली, सृष्ट सबाई डौरु वाया। चारों कुन्ट घटा काली, रैण अन्धेरा छाया। वेख वखाए जोत ज्वाली, लाट ललाटी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नगारा नर निरँकारा एक डंक वजाया। शब्द नगारा साची वंड, धुर धुर आप वंडाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म भेव ना आईआ। नव नव करे खण्ड खण्ड, गृह गृह धक्का लाईआ। हरिजन नाम एका रिहा वंड, एका बूझ बुझाईआ। कलिजुग अन्तिम चुकया पन्ध, चौथा पौड़ा रिहा उठाईआ। कच्ची कल्लर ढहणी कंध, शौह दरयाए नाल रुढ़ाईआ। सति सतिवादी चाढ़े चन्द, जोती नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द मीता हो बख़्शंद, गुर चेला लए तराईआ। गुरसिखां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, निरगुण सरगुण सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दाता आप अख्वाईआ। शब्द दाता वड भण्डारी, भाण्डा भरम भनांयदा। गुरसिखां पैज रिहा संवारी, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। सीस जगदीस आपणा आप उतारी, साचे सीस टिकांयदा। खेले खेल अगम्म अपारी, वेस अनेका वेस वटांयदा। वेखणहारा केस

मुच्छ दाढ़ी, बांका बांकी चाल चलांयदा। गुरसिखां सिर उठा खारी, आप आपणा राह तकांयदा। आपे सुत्ता विच उजाड़ी, आपणा ढोला आपे गांयदा। आपे ताल आपे तलवाड़ी, आप आपणा राग अलांयदा। आपे मीत मुरारा आप निभाए आपणी यारी, यारी सथ्थर हेठ रखांयदा। लेखा चुकाए वारो वारी, लहिणा लहिणेदार मुकांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम पावे सारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर एका घर, एका दर सुहांयदा। शब्द गुर हरि अवतरा, अवर ना कोई दूजा। आपे जाणे आपणा घरा, आपे वेखे नेत्र तीजा। आपणा भण्डारा आपे भरा, चौथे पद आप पतीजा। पंचम मेला हरी हरा, हरि कारज आपे कीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे साचा वर, जन भगतां करे रीझा। गुर शब्द गुर ज्ञान, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर गुर वेखे मार ध्यान, गुर नेत्र इक्क खुल्हाया। गुर जोद्धा सूर बली बलवान, नाम खण्डा इक्क चमकाया। गुर वखाए इक्क निशान, धर्म निशाना इक्क झुलाया। गढ़ी चमकौर कर परवान, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया। होया विचोला श्री भगवान, निहकलंका वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मेला साचे दर, दर दरवेशा वेस वटाया। दर दरवेश गोबिन्द धार, आपणा मूल चुकाईआ। अमुल अमुल अमुल वणज वपार, अतुल अतुल अतुल आप रखाईआ। साची कुल उधरे पार, कुल कुलवन्ता वेख वखाईआ। गोबिन्द बूटा जाए ना हुल, डूँघी नींह धराईआ। जीत जुझार घोली गया घुल, घोलणहारा दिस ना आईआ। फतिह डंका वज्जे ढोल, सिँघ फतिह इक्क गजाईआ। ज़ोरावर करे चोल्ह, सोहणी जिंदड़ी सहिज सुखदाईआ। पंचम मीता कदे ना मारे गरमुखां नाल रोल, आदि जुगादी वेस वटाईआ। जन खोजे हरि वसे कोल, थिर घर वासी डेरा लाईआ। आपणे कंडे आपे तोल, नानक तराज़ू हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले होल, गुरसिख तेरी रत्ती रत्त रंगन रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी गुर आपे बोल, आपणा भेव खुल्हाईआ। शब्द गुर जगत विचोला, हरि हरि आप रखांयदा। आदि जुगादि कदे ना डोला, अडोल अडुल नाम धरांयदा। हरिजन अन्तर आपे मौला, साची रुत्त बसन्त सुहांयदा। अमृत देवे नाभी कँवला, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। रक्खे वड्याई उप्पर धवला, युग छत्ती सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सीस ताज आपणा आप टिकांयदा। सीस ताज आपणा रक्ख, गुर गुर रूप वटाया। दरस वखाए हो प्रतक्ख, कलिजुग कूड़ मिटाया। करनेहारा लक्खों कक्ख, कक्खां कीमत कोए ना पाया। जगत विकार विच्चों कीता वक्ख, आप आपणी बूझ बुझाया। सति सतिवादी करे पक्ख, सति सन्तोखी वेख वखाया। गुरसिख तेरी गोबिन्द हद्द, दूजा दर ना कोए जणाया। भाग लगाए साची यद्द, विष्नूं वंसी रूप वटाया। नाम प्याए एका मदि, नाम

ख़ुमारी रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे लए सद दर दरवेशा फेरी पाया। जगत जंजाल विच्चों लए कढ्ढ, दूई द्वैती मेट मिटाया। लेखे लाए नाड़ी मास हड्ड, आप फड़ाए आपणा लड़, आप आपणी गोद उठाया। हँ हँगता देवे वढ्ढ, साची संगता मेल मिलाया। झूठा घर दुनियां छड्ड, महल्ल अटल सच्चा सच्चे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा देवे दर, दर दर आए दया कमाए वेस वटाए दिस ना आया।

✪ १८ चेत २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

हरि जोत नूर अकाल, निरगुण रूप नर निरंकारया। दीनां बंधप दीन दयाल, अबिनाशी करता खेल खिला रिहा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, करनी करता आप कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह वेस वटा ल्या। जोती जामा हरि भगवाना, निहकलंक अख्वांयदा। जोती नूर नूर महाना, रूप रंग ना कोए रखांयदा। चक्र चिहन ना कोई रखाना, जूनी रहित नाम धरांयदा। थिर घर वसे सच टिकाना, ऊँच महल्ल अटल टिकांयदा। शाह भूप शाह सुल्ताना, राज राजान आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी देवे माणा, हर घट अन्दर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क अख्वांयदा। आदिन अन्ता हरि भगवाना, अकल कला कल धारीआ। जुग जुग मेला साचे सन्ता, सन्त साजण मेल मिला रिहा। पुरख पुरखोतम नारी कन्ता, आप अख्वा रिहा। दर दरवेशा होए मंगता, दो जहानां फेरी पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ रखा ल्या। आदि निरजंण एकउँकारा, अकल कला वरताईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। लोआं पुरीआं दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्नूं देवत सुर कर उज्यारा, आप आपणे विच टिकाईआ। रवि ससि कर उज्यारा, मण्डल मण्डप दए सुहाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, भेव कोए ना पाईआ। जुगा जुगन्तर साची कारा, निरगुण आपणी आप चलाईआ। भगत भगवन्त दए अधारा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। धुन अनाद अनाद अपारा, अनहद ताल वजाईआ। सर सरोवर ठंडी ठारा, आपणा आप भराईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी आप तुड़ाईआ। चौदां हट्टां वणज वापारा, चौदां लोकां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाद अनादी हरि शब्द ब्रह्मादी गुणवन्ता बेपरवाहीआ। गुणवन्ता हरि मीतड़ा, परम पुरख करतार। आदि जुगादी साची रीतड़ा, आप चलावे विच संसार। वसे धाम अनडीठड़ा, दर घर सोहे इक्क दुआर। गुरमुखां काया चोली रंगे चीथड़ा,

आप आपणा बख्श प्यार। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी लाए पार। साचा देहुरा मन्दिर मसीतड़ा, काया वखाए गुरुदुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता हरि निरँकार। निरगुण दाता बेपरवाह, अलख निरँजण आप अख्वांयदा। शब्दी गुर बण मलाह, आपणा नाउँ धरांयदा। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, जुग जुग आप उठांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर हथ्थ समरथ टिकांयदा। करे कराए सच न्याँ, जग झेड़ा आप चुकांयदा। निरगुण खेड़ा इक्क वखाए साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंक वजांयदा। नाम डंक शब्द जैकारा, हरि साचा सच सुणाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, सत्तां दीपां दए हिलाईआ। लक्ख चुरासी इक्क हुलारा, एकउँकारा दए लगाईआ। जन भगतां मेला मीत मुरारा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। नाम कराए वणज वापारा, सच वणजारा सहिज सुभाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। ऊँचां नीचां इक्क दुआरा, राउ रंकां इक्क समझाईआ। शाह सुल्ताना करे ख्वारा, तख्त ताज ना कोए उठाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, गुर गोबिन्द हथ्थ चमकाईआ। तिक्खी रक्खे हरि हरि धारा, दो जहानां वेख वखाईआ । आपणे अस्व हो अस्वारा, शाह सवारा नाउँ धराईआ। कल्गी तोड़ा नाम दस्तारा, सीस जगदीस आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, एका शब्द अलांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल धारी वेख वखांयदा। एका चिल्ला तीर कमाना, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। आपे आए विच मैदाना, त्रैगुण मेल मिलांयदा। चौदां चौदां खोल दुकाना, आपे हट्ट सुहांयदा। आदि जुगादी एका रामा, आप आपणा रूप दरसांयदा। एका बंसरी एका कान्हा, एका सईआ साख्यात हो जांयदा। इक्क मुहम्मद बन्ने गाना, अल्ला राणी सगन मनांयदा। एका कलमा इक्क तराना, एका हू हू नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नूर अलाही आप अख्वांयदा। नूर अलाही इक्क उँकार, आपणी कल वरतांयदा। जल्वा जलाल वेख विचार, हक्क हकीकत फोल फोलांयदा। ख़लक ख़ुदाई पाए सार, ख़ालक आपणा रूप वटांयदा। अमाम मैंहदी तेज़ कटार, नेत्र नैणा आप दरसांयदा। आपे जाणे आपणी धार, लेखा लिख्त ना कोए लिखांयदा। ब्रह्मा वेता गया हार, चारे वेद अलांयदा। पुराण अठारां रहे पुकार, वेद व्यासा गणत गणांयदा। शास्त्र सिमरत हो उज्यार, आप आपणा नाम उपांयदा। गीता ज्ञान कर ध्यान, धरनी धरत धवल सुहांयदा। ईसा मूसा कर प्रनाम, अञ्जील कुराना वेख वखांयदा। दन्द बतीसा कर प्यार, राग छतीसा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर नूर उजाला, हरि साचा सच करांयदा। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, पारब्रह्म वेस वटांयदा। जुग जुग खेले खेल निराला, भेव कोए ना पांयदा। नानक गोबिन्द बण दलाला, एका शब्द चलांयदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, दर मन्दिर आप सुहांयदा। फल लगाए साचे डाल्हा, अमृत मेवा इक्क खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग जन भगतां सेव कमांयदा। सतिगुर पूरा हरि समरथ, आदि पुरख अबिनाशया। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, कलिजुग वेखे अन्तिम तमास्सया। कूड़ कुड़यारा खिच्चे नथ्थ, सन्त सुहेला दासी दास्सया। जगत विकारा देवे मथ, प्रगट हो घनकपुर वास्सया। आपणी चलाए साची गथ, चार वरनां दए भरवास्सया। एका पूजा एका पाठ, इष्ट देव इक्क अबिनाशया। इक्क सरोवर एका घाट, एका करे बन्द खलासीआ। एका सरोवर मारे ठाठ, तृष्ना भुक्ख मिटासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे प्रकास्सया। निरगुण जोत हरि गोबिन्द, हरि हरि आप उपांयदा। मेट मिटावे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा आप गवांयदा। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वांयदा। आप आपणी करे कराए निन्द, निन्दक निन्दया मुख सलांहयदा। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, दर घर साचे आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क अकल्ला सच महल्ला ब्रह्मण्ड खण्ड आप वसांयदा। सच महल्ला उच्च अटारी, हरि साचा आप सुहांयदा। थिर घर जोत जगे निरँकारी, दीपक दीप इक्क सुहांयदा। एका तख्त इक्क सिक्दारी, शाह सुल्तान इक्क अख्वांयदा। एका खड़ग खण्डा तेज़ कटारी, एका एक चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी धार बन्हांयदा। तेरी धार हरि निरँकार, कलिजुग आप चलाईआ। आपे पावणहारा सार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नानक निरगुण लेख अपार, लेखा लिख्त जणाईआ। गोबिन्द खिच्ची इक्क कटार, चारों कुन्ट वाहीआ। दहि दिशां करे ख्वार, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। चार यारी हाहाकार, अल्ला राणी रही कुरलाईआ। प्रगट होए आप निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि हरि नर निरगुण रूप निरगुण जोत निरगुण शब्द साचा धर धर धरनी दए सुहाईआ।

पंज तत्त काया दुःख, दिवस रैण रिहा सताईआ। दर दर सुखना रहे सुख, जगत रोग ना कोए मिटाया। कर्म

धर्म जरम बैठा उठ, लेखा आपणा रिहा वखाया। जिस जन उप्पर सतिगुर पूरा जाए तुठ्ठ, आप आपणी दया कमाया। अमृत आत्म देवे एका घुट्ट, जगत दुःखड़ा रहिण ना पाया। अन्तिम वेले आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल बाली लए तराया। बाल बाली बाली बुध, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। काया काज करे सुध, चिन्ता सोग मिटाईआ। चरन कँवल कँवल चरन जो जन रिहा लुझ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन जननी देवे एका वर, दुःख सुख सुख दुःख एका रंग समाईआ। हक्क हकीकत रिहा फोल, भुल्ल रहे ना राईआ। गुर शब्दी अन्दर मन्दिर आपणे कंडे रिहा तोल, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। गुरसिख साचा कदे ना जाए डोल, गोबिन्द भाणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे हरि हरिभगती आपणी शक्ती देवे आप वड्याईआ। भगत भगती आपे जाण, आपे वेख वखांयदा। कोटन कोटि कोटी कोटि कर प्रधान, हरि ध्यान विच ना आंयदा। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, कर किरपा पार करांयदा। जीआं देवे जीआ दान, धरत धवल सुहांयदा। जो जन मंगे चरन धूढ़ इशनान, दुरमति मैल गंवांयदा। जो जन मंगे दरस गोपी काहन, कान्हा रूप आप वटांयदा। जो जन मंगे निगहबान, नानक निरगुण नज़री आंयदा। जो जन गुर का शब्द करे परवान, गुर गोबिन्द दरस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। बारां बरस बारां रास, बारां बारां आप धराईआ। इक्क ग्यारा खेल तमाश, दस इक्क वेख वखाईआ। दसवें मेला शाहो सबास, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। नौ दुआरे पूरी करे आस, जो जन मन चित रिहा गाईआ। अट्ठां तत्तां करे बन्द खलास, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। सति पुरख निरँजण साचा दास, गुरमुखां सेवा आप कमाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना रक्खे किसे निवास, निरगुण जोती डगमगाईआ। पंचम मीता पूरी करे आस, जो जन पंचम शब्द धुन रहे गाईआ। चौथे पद इक्क निवास, चौथा पद आप समझाईआ। तीजे नेत्र पूरी करे आस, त्रैगुण माया रहिण ना पाईआ। दूजा मेला शाहो सबास, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। इक्क अकल्ला एकउँकारा कर प्रकाश, घर घर बैठा डेरा लाईआ। सच दुआरे कोए ना जाए निरास, मन भिच्छया फल साचा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा अग्गे देवे धर पिछला कर्ज़ा मूल चुकाईआ।

१८ चेत २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर माल चक्क दया होई ज़िला अमृतसर

जगत रूप जगत अन्धेरा, जगत कुण्ड समाईआ। जगत हउमे लग्गा डेरा, भरमी गढ़ वड्याईआ। खेले खेल सञ्झ

सवेरा, सुबह शाम ना कोए जणाईआ। जगत चुकाए हेरा फेरा, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मंगल आपे गाईआ। आपणा मंगल आपे गा, आपणा दर सुहांयदा। इकउँकारा खेल खिला, पूर्ब वेख वखांयदा। मारू सोहले रिहा गा, घर साजन दिस ना आंयदा। पिछला लेखा पूरा दए करा, अग्गे मार्ग लांयदा। कुली कक्खां दए सुहा, कक्खों लक्ख विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा बोला आप प्रनांयदा। बोल्लया बोल रसन जैकार, हरि साचा पूर कराईआ। भुल्ल ना रहे विच संसार, आपणा सोहला आपे गाईआ। गुर गुर बाणी कर विचार, गुर गोझ भेव खुलाईआ। नानक अर्जन इक्क प्यार, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। मारू सोहले हरि हरि गाए, घर साचा हरि सुहञ्जणा। चार दीवार रही कुरलाए, दर आया दर्द दुःख भय भंजना। ख़ाकी ख़ाक नेत्र नीर रही वहाए, हरि पाया नेत्र अंजना। ऊँचा बोला जन जणाए, पूरा करे कराए कर किरपा पर्दा कज्जणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा वर, आप तजाए लोक लज्जणा। लोक लाज तज के आया, निरगुण जोत नूर निरँकार। सोहँ ढोला एका गाया, वाहिगुरू फतिह इक्क जैकार। नानक तोला तोल तुलाया, तोले सर्ब संसार। गोबिन्द डोला आप उठाया, गुरमुख चुक्के भार। हउमे बोला दए तजाया, बख्शे चरन प्यार। दूई द्वैती घरों बाहर कढाया, घर वस्सया निरँकार। जुग विछड़या मेल मिलाया, मिल्या मीत मुरार। नाम कुठाली एका पाया, कुंदन सवरन वेख अपार। सिँघ सरूप गुर दरस वखाया, भय भयानक दए नवार। अचन अचानक फेरा पाया, देवत सुर सेवादार। भेखाधारी वेस वटाया, दरोही फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़। साचा पान्धी आपणा पन्ध रिहा मुकाया, किरपा कर आप निरँकार। मन ममता बांधी रिहा फिराया, गली कूचे दए हुलार। स्वांगी आपणा स्वांग वरताया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे आपणा वर, वेख वखाए एका धार।

✪ १८ चेत २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे घर पिण्ड उस्मा ज़िला अमृतसर ✪

निरगुण जोत अकल कल धार, हरि आपणी खेल खिलांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, जुग जुग वेस वटांयदा। इक्क अकाला इकउँकार, आपणी करनी किरत कमांयदा। जूनी रहित भेव न्यार, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। नूर उजाला हरि गोपाला, एका रंग समाईआ। खेले खेल दीन दयाला, दया निध भेव ना राईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि बेअन्त, आदि पुरख अबिनासया। आदि जुगादी महिमा अगणत, दो जहानां वेखे खेल तमासया। गुरमुख उठाए साचे सन्त, देवे नाम चरन भरवासया। मेल मिलावा नारी कन्त, घर साचा इक्क सुहासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मण्डल पावे रास्सया। मण्डल मण्डप हरि हरि रास, आपणी आप रचांयदा। आपे वसे पृथ्मी आकास, गगन पातालां आप समांयदा। लक्ख चुरासी पवण स्वास, आत्म अन्तर आप टिकांयदा। घट घट अन्दर रक्खे वास, दिस किसे ना आंयदा। हरिजन मेला शाहो शाबास, पुरख अगम्मड़ा आपणा आप करांयदा। सन्त सुहेला दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इकउँकारा नाउँ रखांयदा। एकउँकारा इक्क अकल्ला, आदि निरँजण आप अख्वांयदा। आपे वस्सया सच महल्ला, उच्च अथाह बेपरवाह घर साचा आप सुहांयदा। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फेरा पांयदा। आपणा दीपक आपणी जोती आपे बला, प्रकाश प्रकाश आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँजण डगमगांयदा। जोत निरँजण कर पसारा, लक्ख चुरासी आप टिकांयदा। एकउँकारा कर आकारा, निराकार वेस वटांयदा। दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं फोल फोलांयदा। विष्नूं वंसी हो उज्यारा, आप आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा ब्रह्म दए सहारा, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। शंकर देवे इक्क हुलारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, त्रैगुण बंधन कोए ना पांयदा। शब्दी शब्द शब्द गुर लै अवतारा, गुर गुर नाउँ धरांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, अगाध बोध आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता वेस वटांयदा। अबिनाशी करता पुरख समरथ एका एक अख्वाईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथवाही बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी देवे मथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जगत विकारा पाए नथ्थ, चारों कुन्टां आप भवाईआ। जन भगतां देवे नाम वथ्थ, आत्म अन्तर ब्रह्म जणाईआ। हउमे हँगता गढ़ हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, दर घर साचे एका बूझ बुझाईआ। एका अक्खर रक्खे वक्खर आप जणाए पूजा पाठ, एका करे पढ़ाईआ। इक्क वणजारा खोल्हे साचा हाट, साचा वणज आप कराईआ। इक्क वखाए तीर्थ ताट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। आपे जाणे आदि जुगादी आपणा घाट, वेद कतेब भेव ना राईआ। खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटाईआ। जोती जामा हरि हरि रामा, हरि हरि वेख वखांयदा। आपे वसे निहचल धामा, थान थनंतर इक्क सुहांयदा। करे कराए आपणा कामा, दूसर कोए ना संग रलांयदा। शब्द वजाए सच दमामा, लोआं पुरीआं आप जणांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा । जुग जुग खेल खेलणहारा, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। लोकमात लै अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण पावे निरगुण सारा, निरगुण आपणी बूझ बुझांयदा। निरगुण जोती नूर उज्यारा, सरगुण डगमगांयदा। सरगुण धुन सच्ची धुन्कारा, निरगुण अनहद ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरजंण आप अख्वांयदा। सति पुरख निरँजण साची धार, सति सति सति वरताईआ। ब्रह्म मति कर उज्यार, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। अलक्ख अलखणा खेल अपार, अलख निरँजण एका अलख जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आप आपणी आप चलाईआ। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, पुरख अबिनाशी बणत बणाईआ। सच सिँघासण हरि निरँकार, आप आपणा रिहा सुहाईआ । शाह सुल्तान वड सिक्दार, एका एक रूप वटाईआ। ना कोई दीसे दूसर होर चोबदार, ना कोई सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला सच महल्ला उच्च अटला आपे वस्सया आपणे घर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर साचा सच दरबारा, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगुण रूप एकउँकारा, ओंकारा नाम रखांयदा। आप आपणा कर प्यारा, दर मन्दिर इक्क सुहांयदा। करे कराए वणज वपारा, आपणा हट्ट आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचे हो प्रगट, परम पुरख वेस वटांयदा। थिर घर साचा खोल्ह दरवाजा, हरि साची बणत बणांयदा। पुरख अनादी ग़रीब निवाजा, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी मारे वाजा, आपणा आप आप उठांयदा। आपे वेखे अस्व ताजा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। पारब्रह्म प्रभ शाह नवाबा, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हो उज्यार, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण मेला गुरू गुर चेला, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, अन्तर आत्म इक्क जणाया। वसे धाम सद नवेला, धाम अवल्लड़ा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा खेल खिलारी, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारी, सेवक सेवा रिहा कमाईआ । आदि शक्ति कर प्यारी, आपणे अंग लगाईआ। आपे वेखे कन्त भतारी, साची सेज हंढाईआ। साचा सुत्त सुत्त दुलारी, शब्दी शब्द उपजाईआ। लोआं पुरीआं कर त्यारी, सच महल्ल सुहाईआ। बंधन पाए हरि निरँकारी, त्रैगुण जोड़ जुड़ाईआ। मण्डल मण्डप आप सुहाए रवि ससि चन्न सितारी, जोती नूर जोत रुशनाईआ। धरनी धरत धवल जल बिम्ब उभारी, आप आपणे अंक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा आप सुहाईआ। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक रखांयदा। जगे जोत आदि निरँजणा, दिवस

रैण डगमगांयदा। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भय भञ्जण आप अख्वांयदा। आपे करे कराए आपणा मजना, सर सरोवर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणी भिच्छया आपे झोली पांयदा। आपणी भिच्छया आपे पा, आपणा सगन मनांयदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, विश्व रूप हो जांयदा। आप आपणा नाम धरा, ब्रह्म ब्रह्म समांयदा। त्रैगुण तेरा तत्त रखा, तेरी वंड वंडांयदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश आप बणा, आपणा दर सुहांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, घट घट आसण लांयदा। लोकमात डेरा ला, साचा खेड़ा आप वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप वहांयदा। साची धार हरि निरँकार, निरगुण आप रखाईआ। घट घट अन्दर कर पसार, बैठा आसण लाईआ। आप उपाए दया कमाए आपे दए सँघार, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आप अख्वाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। वंडे वंड सर्ब संसार, आप आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उत्भुज सेत्ज वेखे दर, अंडज जेरज आप समाईआ। चारे खाणी हरि निरँकार, आपणी धार बन्न्हांयदा। दहि दिशा पावे सार, चारे कूटां वेख वखांयदा। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा राग अल्हांयदा। धुन अनादी शब्द जैकार, गीत सुहागी एका गांयदा। पंज तत्त कर प्यार, साचा मेल मिलांयदा। आपे खोल्हे नौ दुआर, नौ नौ रंग रंगांयदा। घर विच घर कर त्यार, आप आपणा आसण लांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, जोत निरँजण इक्क टिकांयदा। अनहद साचा सेवादार, धुन आत्मक आप वजांयदा। सर सरोवर ठंडा ठार, अमृत नीर आप भरांयदा । दस्म दुआरी वेख विचार, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांयदा। आपे होया ख़बरदार, पंचम मीता नाउँ धरांयदा। मन मति बुध कर त्यार, साचे थान बहांयदा। जुगा जुगन्तर आपणी कार, करनी करता आप कमांयदा। सन्त सुहेले कर प्यार, गुरु गुर चेले बूझ बुझांयदा। शब्दी शब्द वणज वपार, साची वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख दर, भगत भगवन्त मेल मिलांयदा। भगत भगवन्त एका दर, दर साचा आप वखांयदा। आपणी करनी आपे कर, आपे लेख लिखांयदा। आपणी सरनी आपे पड़, आपे सीस झुकांयदा। आपणे मन्दिर आपे वड़, हरि आपे वेख वखांयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़, आप आपणा दर सुहांयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अकाला नाउँ धरांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आपणा शब्द अल्हांयदा। जुगा जुगन्तर लाए जड़, अन्तिम आप उखड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे सद समांयदा। हरि भाणा हरि मन्नया, आप आपणी किरपा धार।

३४१ ०८

आपणा आप आपे डन्नया, आपे साध सन्त गुर पीर अवतार। आपणा आप आपे जणया, मात पित ना कोए प्यार। आपणा बेड़ा आपे बन्नया, देवणहारा आप सहार। आदि जुगादी आपे फिरे भन्नया, वेस अनेका कर करतार। किसे दिस ना आए छप्पर छन्नया, महल्ल अटल ना जगत किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग पावे साची सार। जुग जुग साची सार, हरि हरि आपे पाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। त्रेता देवे इक्क अधार, एका नाम दृढ़ाईआ। द्वापर ढहि ढहि करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे इक्क अखाड़, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। लग्गी अग्नी तत्ती हाढ़, पंज तत्त रही जलाईआ। उब्बल रत्त बहत्तर नाड़, ठंडी ठार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, एका रंग समाया। कलिजुग वेखे खेल न्यारा, निरँकारा नाम रखाया। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जामा वेस वटाया। ईसा मूसा करे ख़बरदारा, संग मुहम्मद नाल रलाया। चार यारी दए हुलारा, अल्ला राणी लए उठाया। नाम खण्डा तेज कटारा, आप आपणा रिहा चमकाया। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा लाया। वंडे वंड सर्ब संसारा, नौ खण्ड फेरा पाया। सत्तां दीपां दए हुलारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाया। शिव शंकर बाशक तशका लाहे हारा, हथ्थ त्रिसूल सुटाया। करोड़ तेतीसा करे पुकारा, दिवस रैण कुरलाया। सुरपति राजा इन्द करे निमस्कारा, दूर दुराडा निउँ निउँ सीस झुकाया। राए धर्म दए ललकारा, हरि साचे शब्द जणाया। चित्रगुप्त खोल्ह विहारा, आपणा लेख रखाया। लाड़ी मौत कर शृंगारा, आप आपणा रंग रंगाया। लक्ख चुरासी धूंआँधारा, साचा चन्न ना कोए चढ़ाया। नानक निरगुण हो उज्यारा, एका नूर करे रुशनाया। साचा नाम कर वपारा, एका वणज रखाया। एका जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द जोग कमाया। सुत्त दुलारा कर प्यारा, पुरख अबिनाशी मेल मिलाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, अन्दर बाहर आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। गुर गोबिन्द हरि हरि मीता, हरि हरि मेल मिलाया। बैठा रहे इक्क अतीता, एका दर सुहाया। सृष्ट सबाई आपे जीता, जबरन मुक्त कराया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां मेट मिटाया। धाम वखाए इक्क अनडीठा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत आत्म जल प्याया। दिवस रैण वस्सया चीता, विछड़ कदे ना जाया। साचा देहुरा मन्दिर वखाए जगत मसीता, काया गुरुदुआर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द सिख्या साची भिख्या, धुर दा लेखा आपे लिख्या, ना सके कोए मिटाया। लिखणहार जोत अकाली, अकल कला अख्वाईआ। सतिगुर

शब्द शब्द दलाली, लोकमात आप कमाईआ। हक्क हकीकत जाणे हक्क हलाली, शरअ शरीअत वेख वखाईआ। जल्वा नूर नूर जलाली, आप आपणा रिहा चमकाईआ। आपणा फल लगाए डाली़, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा माली, गोबिन्द बूटा हथ्थीं लाईआ। जीवां जन्तां काया मन्दिर होए खाली, नाम वस्त नज़र ना आईआ। भर भर जाम पीण प्याली, अमृत रस ना मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धराईआ। कलिजुग तेरा वेख किनारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। धरनी करे धवल पुकारा, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। गुरमुख आत्म इक्क प्यारा, एका बूझ बुझांयदा। मन मति नार होई विभचारा, सृष्ट सबाई आप प्रनांयदा। जूठ झूठ वणज वपारा, चार कूट करांयदा। माया ममता मोह कर पसारा, काम क्रोध संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा दर वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, हरि साचे सच चुकावणा। गुर गोबिन्द वेखे आपणे नैणां, नेत्र नैण इक्क खुल्हावणा। नाता तुट्टे साक सज्जण सैणा, जूठ झूठ रहिण ना पावणा। कूड़ी क्रिया पैणे वैणां, धीरज धीर ना कोए धरावणा। अन्तिम भाणा सहिणा पैणा, प्रभ साचे हुक्म चलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगावणा। रंग रंग हरि चलूल, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। वेखे खेल कन्त कन्तूहल, नर नरायण वेस वटाईआ। शब्द पंघूड़ा एका झूल, नाम हुलारा रिहा लगाईआ। लक्ख चुरासी आप चुकाए तेरा मूल, पिछला लेखा रहे ना राईआ। सच दुआरा रहे भूल, सति सतिवाद ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी लए आप अंगड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अंगड़ाई, हरि साचा जोत जगांयदा। शब्दी गुर शब्द कुड़माई, हरि शब्दी सगन मनांयदा। दर घर साचे वज्जे वधाई, साचा मंगल आपे गांयदा। गुरमुख वेखे थाउँ थाँईं, सन्त सुहेले आप उठांयदा। पकड़नहारा निरगुण बांहीं, दिस किसे ना आंयदा। आदि जुगादि जुग जुग करे सच न्याँई, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नूर डगमगांयदा। नूर गोबिन्द हरि करतार, एका रंग समाईआ। शब्द अगम्मी नाम जैकार, परवरदिगार आप सुणाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। बेऐब रखाए नाम परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपणा नूर आप उपा, आपे वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम नाम धरा, नर नरायण वेस वटांयदा। खड़ग खण्डा हथ्थ उठा, नाम कटारा आप चमकांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखा, गगन पातालां फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी

अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग अन्तिम वरते कल, कल काती वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी अछल अछल्ल, अछल अछेद कराईआ। पावे सार जल थल, थल महीअल फोल फुलाईआ। जन भगतां आत्म जोती ब्रह्म सरूप पारब्रह्म रिहा रल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। भाग लगाए काया माटी झूठी खल, घर साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ उपजाईआ। निहकलंक पुरख सुल्तान, पारब्रह्म अख्वांयदा। खेले खेल दो जहान, त्रिलोकी नंदन, हुक्म चलांयदा। आपणी करे आपे पछाण, दूसर मुख ना कोए रखांयदा। लक्ख चुरासी एका ब्रह्म ज्ञान, एका रंग रंगांयदा। एका इष्ट गुर इक्क ध्यान, एका नेत्र आप खुल्हांयदा। लोकमात हो प्रधान, आप आपणा डंक वजांयदा। पावे सार अञ्जील कुरान, वेद पुराणा वेख वखांयदा। दाता दानी गुण निधान, गुण अवगुण ना कोए जणांयदा। रामा कृष्ना हो प्रधान, आप आपणा खेल खिलांयदा। नानक गोबिन्द इक्क निशान, पुरख अबिनाशी आप झुलांयदा। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, साची सिख्या इक्क समझांयदा। चार वरन अठारां बरन बहाए इक्क अस्थान, साची भूमका आप सुहांयदा। तख्त ताज राज राजान सर्ब मिट जाण, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। जोती नूर श्री भगवान, एका एक एक अख्वांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा नाम दर दर घर घर अन्दर सारे गाण, दूजा नाद ना कोए रखांयदा। चरन धूढ़ सतिगुर सच्चा अशनान, अठसठ माण चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा बेड़ा पार करांयदा। कलिजुग बेड़ा पार कराउणा, हरि सच्चे सच वड्याईआ। सतिजुग साचा मात धराउणा, सति पुरख निरँजण वेख वखाईआ। दोहां विचोला शब्द बणाउणा, गुर गुर बूझ बुझाईआ। आपणा मेल आप मलाउणा, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। बीस इकीसा हरि जगदीसा साचा सगन आप मनाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आप समझाउणा, एका सिख्या रिहा समझाईआ। सत्तां दीपां एका मार्ग लाउणा, सत्त रंग निशाना आप झुलाईआ। गुरसिख सन्त सुहेला फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, नाम चोग इक्क चुगाईआ। आवण जावण फंद कटाउणा, लक्ख चुरासी तोड़ तुड़ाईआ। दरगाह साची साचे धाम बहाउणा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। अन्तिम जोती जोत मलाउणा, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। हर घट हरि हरि जाणदा, जोती नूर श्री भगवान। जुग जुग आपणे आप पछाणदा, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। देवे नाम दान धुर फ़रमान दा, करे खेल इक्क महान। लक्ख चुरासी पुण छाणदा, दाता दानी वड निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा माण। हरिजन

हरि वड्याईआ, पाया पुरख अथाह। घर साचे वज्जे वधाईआ, प्रभ मिल्या बेपरवाह। हउमे हँगता रोग मिटाईआ, हिरदे हरि हरि नाम वसा। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ, एका जाप जपा। काया मन्दिर आप सुहाईआ, निरगुण बाती कर रुशना। अनहद साचा ताल वजाईआ, धुन आत्मक आप अला। गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ, गुर शब्दी दए मिला। काया सेजा इक्क हंढाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँ। थान थनंतर हरि सुहाईआ, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि हरि पाया, गुर पूरे वड वड्याईआ। निरगुण नूर करे रुशनाया, पारब्रह्म हरि हरि मेल मिलाईआ। एका दूजा भेव चुकाया, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हाईआ। आप आपणी खेल खिलाया, चौथे पद रिहा सुहाईआ। घर सुहञ्जणा इक्क जणाया, पंचम मीता इक्क अतीता राग अनादी एका गाईआ। घर साचे वज्जे वधाया, पुरख अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। लेखा लेख ना कोए जणाया, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। लोआं पुरीआं फेरा पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए तराईआ। हरि सज्जण हरि पाया, एका रूप करतार। दूई द्वैती रोग मिटाया, विछड़या संसार। नानक निरगुण नज़री आया, इक्क अकल्ला एकउँकार। जूनी रहित दरस दिखाया, आप आपणी किरपा धार। मूर्त अकाल जोत रुशनाया, दिवस रैण रहे उज्यार। अट्ठे पहर डगमगाया, मेट मिटाए धुँदूकार। जुग जुग आपणा नाम धराया, एका गुर इक्क अवतार। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया, देवत सुर दए हुलार। सतिजुग त्रेता पार लँघाया, खेले खेल अगम्म अपार। द्वापर एका डंक वजाया, वजावणहार आप निरँकार। कलिजुग आपणा रूप वटाया, कूड़ी क्रिया कर प्यार। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, आदि निरँजण हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन हरि हरि मीतड़ा, आदि पुरख अबिनाश। जन भगतां काया चोली रंगे चीथड़ा, जुगा जुगन्तर दासी दास। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, हरी हरि ना जाए विनास। गुरमुख फल वेखे मीठड़ा, सदा सुहेला रक्खे आपणे पास। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हिरदे हरिजन रक्खे वास। हिरदे हरि हरि वस्सया, परम पुरख करतार। जन भगतां मार्ग एका दस्सया, आप आपणी किरपा धार। साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, नौ दुआरे कर ख्वार। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि सस्सया, निरगुण जोती कर उज्यार। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, मेट मिटाए धुँदूकार। तीर निराला एका कसया, गोबिन्द तेज़ कटार। दो जहानां फिरे नस्सया, चिट्टे अस्व शाह संवार। लोआं पुरीआं आपणयां चरनां हेठां झस्सया, ब्रह्मण्ड खण्ड आपे रिहा लताड़। त्रैगुण माया आपणा दर दरवाज़ा छड्ड छड्ड नस्सया, चारों कुन्ट करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

३४६

०८

हरिजन साचे लाए पार। हरिजन बेड़ा हरि हरि बन्न्, जुग जुग आप चलांयदा। सति सतिवादी चाढ़े चन्न, सति सरूप अख्वांयदा। गुरसिख तेरी वड्याई धन्न, गुर पूरा मुख सलांहयदा। जननी जणे साचा जन, जन जणेंदी पार करांयदा। लेखे लग्गे माटी तन, पंज तत्त वेख वखांयदा। धुन अनादी राग कन्न, अनहद आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहारा पुरख अकाला, आदि जुगादि समाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना राया। जन भगतां दस्से राह सुखाला, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। तोड़नहारा जगत जंजाला, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर बैठा बेपरवाहया। शब्द अगम्मी वज्जे ताला, ताल तलवाड़ा आप वजाया। सचखण्ड दुआरा इक्क अखाड़ा, सुन्न समाध खुल्हाया। वा ना लगे तत्ती हाढ़ा, जो जन रसना हरि हरि गाया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, एका जोत रुशनाया। तोड़े लंका गढ़ हँकारा, मन रावण रहिण ना पाया। सीता सुरती कर प्यारा, राम रमईया मेल मिलाया। तीर कमान चिल्ला फड़ अपारा, दो धारा वेख वखाया। गुरमुख साचे लाए पारा, मनमुखां दए सज़ाया। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, जुग जुग आपणा नाम धराया। रथ रथवाही खेल न्यारा, सेवक सेवादार सेवा रिहा कमाया। ईसा मूसा कर उज्यारा, एका कलमा आप पढ़ाया। नबी रसूलां कर उज्यारा, लाशरीक वेख वखाया। हक्क ख़ुदाई परवरदिगारा, ऐनलहक्क अल्हाया। चौदां तबकां इक्क उज्यारा, एका नूर दरसाया। कायनात कर पसारा, आप आपणा वेख वखाया। हू हू लाए साचा नाअरा, तूं तूं विच समाया। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, दिस किसे ना आया। आपे जाणे आपणी कारा, जुग करता वेस वटाया। इक्क अकल्ला कर पसारा, लक्ख चुरासी डेरा लाया। निरगुण जोती नूर उज्यारा, नानक तत्त बुझाया। मिल्या मेल धुर दरबारा, विछड़ कदे ना जाया। नाम सति सति भण्डारा, चार वरनां आप वरताया। एका मति ब्रह्म मत, पारब्रह्म समझाया। बीज बीज्जया साचे वत, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। नाम वस्त अमोल रक्खी आपणे हथ्थ, गुरमुखां आप वरताया। तेरां तोले तोल पुरख समरथ, नाम कंडा इक्क उठाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा होणा भट्ठ, मूल रहे ना राया। हरि चरन दुआरा साचा तीर्थ तट्ट, गुर सतिगुर आप समझाया। वसणहारा घट घट, घट भीतर वेख वखाया। स्वांगी स्वांग खेले खेल बाज़ीगर नट, नट नटूआ फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाया। हरि सज्जण हरि पेख्या, सतिगुर शब्द शब्द मेहरवान। आपे लिखणहारा लेखया, आपे देवणहारा ब्रह्म ज्ञान। आप प्रगटाए दया कमाए मुच्छ दाढ़ी केसया, आपे देवे नाम किरपान। आपे नूर हज़ूर दस दस्मेसया, पूत सपूता आप निशान। आपे नर नरायण नर नरेशया, साचे तख्त आप सुल्तान। आपे मृगिन्द वड मृगेस्या,

कलाधारी नौजवान। आपे आपणा पाए हिस्सया, अमृत आत्म पीण खाण। पंचम मीता पंचम दिस्सया, झुलदा रहे निशान। तख्त ताज एका सीसया, एका निगहबान। एका शब्द इक्क हदीसया, लेखा चुक्के अञ्जील कुरान। खेले खेल बीस इकीसया, पावे सार वेद पुराण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जीआ दान। जीआ दाता हरि भगवन्ता, परम पुरख अख्वांयदा। मेल मिलावा साचे सन्ता, दर आपणा आप सुहांयदा। दर घर मेला नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल वेख वखांयदा। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, माया ममता मोह चुकांयदा। जो जन होए भुक्खा नंगता, नाम पर्दा उप्पर पांयदा। नानक निरगुण मेला अंगदा, अंगीकार समांयदा। गुरसिख दुआरे आपे मंगदा, दर दरवेशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर सुहञ्जणा सर्ब घट वासी, अकल कला वरतांयदा। आदि पुरख पुरख अबिनाशी, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप अख्वांयदा। निरगुण जोत इक्क प्रकासी, नानक गोबिन्द लेख लिखांयदा। शाहो भूप हरि शाह शाबासी, सच सुल्तान आप हो जांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड करे निवासी, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी लाहे उदासी, कलिजुग कूड़ा कूके एका कूक सुणांयदा। त्रैगुण माया अन्तिम फूके, पंज तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर आपणा आप खुल्हांयदा। सच दरवाज़ा आपे खोल्ह, हरिजन लए बुलाईआ। ग़रीब निवाज़ा वसे कोल, दूर नेड़ा ना कोए वखाईआ। आदि अन्त रहे अडोल, ना डोले ना डोल डुलाईआ। जुगा जुगन्तर वेखे घोल, लक्ख चुरासी आप लड़ाईआ। तोलणहारा साचे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। कूड़ी क़िरिया कढ्ढे पोल, जूठा झूठा पर्दा लाहीआ। जगत नगारा वज्जे ढोल, चारों कुन्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर दुआरा इक्क अख्वाईआ। दर दुआरा धुर दरबार, थिर घर आप उपाया। साचे तख्त हरि सुल्तान, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। ना कोई मन्दिर मस्जिद दिसे मकान, चार दीवार ना कोए बणाया। रवि ससि ना कोए सितार दिसे निशान, मण्डल मण्डप ना कोए उपाया। इक्क अकल्ला हो प्रधान, सच घर बैठा आसण लाया। जुग जुग वेखे मार ध्यान, सृष्ट सबाई वेख वखाया। कलिजुग तेरा रूप शैतान, तेरे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, चार चार लेख लखाया। चार चार हरि लेख चुकाउणा, चौथे युग वड्याईआ। बतीस बतीस हरि भेव खुलाउणा, बत्ती दन्दी गाईआ। पंचम पंचम मोह चुकाउणा, पंचम दए वड्याईआ। नाम खण्डा इक्क चमकाउणा, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाउणा, आपणी वंड वंडाईआ। सन्त सुहेले

आप उठाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। इक्क अनेक रूप प्रगटाउणा, निरगुण मेला सहिज सभाईआ। गुरमुख साचा वेख वखाउणा, कौण कूटे रिहा ध्याईआ। शब्द विचोला इक्क बणाउणा, गुर नानक मति एह समझाईआ। सृष्ट सबाई वेख वखाउणा, अन्दर मन्दिर ढूँघी कन्दर फेरा पाईआ। बरन अठारां वरन चार भेव खुल्लाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। हरि का शब्द साचा डंक वजाउणा, हरि साचा सिफ्त सलाहीआ। राउ रंकां ऊँचां नीचां एका धाम बहाउणा, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। गोबिन्द अमृत सर्ब प्याउणा, सिँघ सिँघ रूप अख्वाईआ। फड़ फड़ काग हँस वखाउणा, बंस सरबंसा आप अख्वाईआ। चण्ड प्रचण्ड तन लटकाउणा, काया गात्रा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर चेले मेल मिलाईआ। गुर चेला रूप आप करतार, गुरमुख विच समांयदा। गोबिन्द मीता शब्द हदार, साची रीता आप रखांयदा। हस्त कीटा इक्क प्यार, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। नाम निधान अमृत रस जिस जन पीता, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। जगत विकारा ठंडा सीता, निझर धारा मुख चुआंयदा। गुर का शब्द भाणा मीठा, गुरसिख निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आप आपणा आपे जीता, जगजीवण दाता दरस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले एका रंग रंगांयदा। रंगणहार हरि करतारा, एका रंग रंगाईआ। जन भगतां करे मातलोक प्यारा, दूतां दुष्टा करे सँघारा, आप आपणी कल वरताईआ। अगम्म अगम्मड़ा हो उज्यारा, पंज तत्त करे रुशनाईआ। अलख अलखणा इक्क जैकारा, अलख निरँजण आप लगाईआ। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। सुन्न अगम्मी पार किनारा, आप आपणा राह तकाईआ। सन्तन मीता पावे सारा, दस्म दुआरी खोज खुजाईआ। आत्म सेजा हो उज्यारा, बैठा डगमगाईआ। बजर कपाटी लाए पाड़ा, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। सर सरोवर अमृत ठंडी ठारा, हरिजन साचे आप नुहाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, साची सखीआं मंगल गाईआ। जोत निरँजण दए सहारा, एका नूर करे रुशनाईआ। सुखमन टेडी पार किनारा, सतिगुर पूरा दए कराईआ। नौ दुआर छुट्टे संसारा, मेल मिलावा साचे माहीआ। भरया रहे नाम भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। नानक सतिगुर बणया आप वरतारा, नाम सति झोली पाईआ। गुर गोबिन्द बणया गुप्त लिखारा, अनभव आपणी खेल खिलाईआ। आपे रोढ़े सरसे धारा, अन्तिम आपे लए प्रगटाईआ। आपे जाणे आपणी कारा, जीव जन्त भेव ना पाईआ। कोटन कोटी कोटि कर रहे विचारा, चारों कुन्ट नैण उठाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, हरि हरि भेव गया लिखाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा मीत मुरारा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। गोबिन्द लेखा लेख करतारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे

धुँदूकारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। गुरमुखां आत्म करे हाहाकारा, धरत धवल रही कुरलाईआ। मनमुखां वधे जगत विकारा, दे मति ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आदि जुगादी बणत बणाईआ। बणत बणाए हरि भगवान, आपणी रचन रचांयदा। शब्द सरूपी सति निशान, लोकमात झुलांयदा। लोआं पुरीआं एका आण, एका हुक्म सुणांयदा। नौ सत्त मारे एका बाण, एका तीर चलांयदा। एका जोद्धा सूर बली बलवान, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। आप आपणी करे पछाण, दूसर दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणे गले लगांयदा। देवणहारा दानी दाण, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। दो जहानां निगहबान, सेवक सेवा सच कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए हरि अवल्ला, परम पुरख अगम्मड़ा। खेले खेल इक्क अकल्ला, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चमड़ा। वसे निहचल धाम अटला, गुरमुखां करे भारी पलड़ा। दुष्ट दमन सुत्त दुलारा, गोबिन्द हरि हरि आपे घलड़ा। आपे करे वणज वापारा, कलिजुग अन्तिम आपणी जोत आपणे नूर आपणे पलड़ा। भैण भाई ना कोए सहारा, जोत रूप शब्दी रलड़ा। शब्दी डंक विच संसारा, गुरसिखां आत्म दर दुआरे अग्गे खलड़ा। पार कराए नौ दुआरा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा आप आपे मलड़ा। आप सोहे बंक दुआरा, सच संदेश जोत प्रवेश निरगुण धारा एका घलड़ा। एका एक सिरजणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क रखल्लड़ा। सर सरोवर अमृत रस, आत्म हरि भराईआ। हरिजन नुहाए नस्स नस्स, आप आपणी सेव कमाईआ। पर्दे अन्दर आपे वस वस, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जगत विकारा रिहा झस्स, शब्द शब्दी भार रखाईआ। त्रैगुण माया ना जाए डस्स, जो जन गोबिन्द सीस झुकाईआ। सतिगुर पूरा तीर निराला मारे कस, तीर अणयाला इक्क वखाईआ। आर पार जाए धस, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। गुरमुख साजण सन्त सुहेले सतिगुर पूरा गुर संगत तेरे चरनां उप्पर गया ढठ्ठ, आपणी अग्गे झोली डाहीआ। कलिजुग अन्तिम किसे जीव ना आउणा हथ्थ, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। तीर्थ तट्टां होणा भट्ठ, गुरदर मन्दिर वेसवा रूप दरसाईआ। मन मति कथनी रहे कथ, हरि की कथा ना कोए सुणाईआ। कूड़ कुड़यारा चलाया रथ, नानक रथ हथ्थ ना आईआ। गोबिन्द चिल्ला तीर कमाना खण्डा कटार साचे तन ना सके कोई रक्ख, मन इच्छया ना कोए कराईआ। कामी क्रोधी पहनण कच्छ, तेरा जति दिस ना आईआ। केस सीस उप्पर रक्ख, जगदीस गए भुलाईआ। बीस इकीस होए प्रतक्ख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा गोबिन्द धार मनमुख जीवां भाण्डे करे सक्ख, नाम वस्त दिस ना आईआ।

३५०

शाह सुल्तानां राज राजानां दर दरबानां दा घर लूंदे दिसण ला भक्ख, तख्त ताज ना कोए वखाईआ। किसे करोड़ी मुल्ल ना प्या कौडी कक्ख, बिन गुर पूरे ना कोए सहाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा चार वरनां गुरमुख साचे आपणी गोदी लए चुक्क, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। जूठयां झूठिआं मुख पैणा थुक्क, ना सके कोई बचाईआ। कलिजुग बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। भाग लग्गे साची कुक्ख, जो जननी हरिजन जाईआ। लक्ख चुरासी आपणा कीता आप उठाए आपणा दुःख, जो भुल्ले हरि सरनाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आदि जुगादी जुग जुग आपे रिहा तुड्ठ, हरिजन साचे रिहा उपजाईआ। लुकया रहिण ना देवे किसे गुड्ठ, दहि दिशा चार कुन्ट नौ खण्ड फेरा पाईआ। जुगां जुगां दे विछड़े जो बैठे रुड्ठ, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। चार वरनां करे एका मुड्ठ, गुर गोबिन्द तेरी सच सरनाईआ। सृष्ट सबाई जगत विकारा रिहा लुट्ट, पल्ले गंढु नाम ना किसे बंधाईआ। अन्तिम खाली दिसदे काया ठुठ, घड़णहार भन्न वखाईआ। फिरे दुहाई चारे कुन्ट, निहकलंक वज्जी वधाईआ। गुरमुख तेरा आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। अमृत पीता साचा घुट्ट, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। साची दरगाह चढ़णा साची चोट, साचा धाम इक्क वखाईआ। गुर का शब्द सच सुच्च सति सन्तोख लंगोट, जत सति आप रखाईआ। कलिजुग जीवां माया ममता भरी अजे ना पोट, दिवस रैण रहे हल्काईआ। निरगुण रूप निरगुण धार हरि निरँकार लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग शब्द ब्रह्माद भगत भगवन्त सन्त कन्त गुरू गुर चेले सज्जण सुहेले गुरमुख गुरसिख हरी हरि आपणा आपे मेल मिलाईआ। जुग करता हरि समरथ, दीना बंधप दीन दिआलया। आपे जाणे आपणी महिमा अकथ, कथनी कथन ना किसे गा ल्या। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धरा ल्या। जन भगतां दे कर रक्खे हथ्थ, जो जन ध्यान रखा ल्या। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारे लेख लिखा ल्या। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठा ल्या। कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, सच सुच्च मार्ग इक्क वखा ल्या। उलटी गेड़नहारा लट्ठ, एका एक पुरख अकालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटा ल्या। निरगुण दाता हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, भेव कोए ना पांयदा। आपे देवणहारा दाना, दाता दानी आप अख्वांयदा। आपे मेटे अन्त निशाना, घड़न भन्नणहार पुरख नाम धरांयदा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, घर साचे सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणा आप लखांयदा। लेखा लिखणहार, हरि हरि अख्वाया। जुग जुग लोकमात लै अवतार, आप आपणा नाउँ धराया।

सतिजुग सति सरूपी करया पार, अठ्ठ अठारां वेख वखाया। दस दस रूप अपार, दर दरवेशा अलख जगाया। त्रेता तेरा रंग करतार, राम रूप आप रंगाया। दुष्टां दूतां दए सँघार, रावण लंका गढ़ तुड़ाया। ग़रीब निमाणयां पाए सार, जगत भीलणी आप वड्याआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आप अख्वाया। द्वापर तेरी तेरी धार, तेरे संग निभाया। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण रूप करतार, वल छल धारी खेल खिलाया। खेले खेल अपर अपार, तीर कमान ना हथ्थ उठाया। ग़रीब निमाणयां पाए सार, गऊ ग़रीबां गले लगाया। भगत भगवन्त एका धार, एका रूप दरसाया। पंचम मीता कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाया। दुर्योधन देवे इक्क हँकार, साचे तन वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल खेलणहार, खेल खिलंता आप अख्वाया। हरिजन मीता इक्क अतीता, नर हरि आप अख्वाईआ। आपे रामा आपे सीता, आपे कान्हा रूप वटाईआ। आपणा रण आपे जीता, आपे रण भूमी सुत्ता लए अंगड़ाईआ। खेले खेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्ता, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। आपणा युग आपे लुट्टा, आप आपणी दए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल खेलणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। सतिजुग तेरा रंग महल्ला, हरि साचा वेख वखन्नया। त्रेता तेरा रूप अटला, राम नाम अख्वन्नया। द्वापर खेले इक्क अकल्ला, वल छल धारी आप अख्वन्नया। कलिजुग लोकमात आया भन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, शब्द सुनेहड़ा आप घलन्नया। कलिजुग सच्चा मात रक्ख, हरि हरि खेल खिलांयदा। चार लक्ख हज़ार बत्ती आर्यू कीनी वक्ख, कर्म कर्मा वंड वंडांयदा। जूठ झूठ काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मति करे पक्ख, साचा संग निभांयदा। आपणी खोल्ही आपे अक्ख, एकउँकारा आपणा रूप वटांयदा। ऐड़ा अक्खर हो प्रतक्ख, अल्ला नाउँ धरांयदा। उत्तर पूर्ब पच्छिम वेखे दक्खण दक्ख, चारों कुन्ट फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। अल्ला नाम हरि अल्ह, नूर इलाही अख्वाया। आपणी कर आप सलाह, आपणा मता पकाया। आपणी जोती आप जगा, पंज तत्त डेरा लाया। ईसा मूसा नाम धरा, लोकमात वेख वखाया। एका जोती नूर प्रगटा, संग मुहम्मद तोड़ नभाया। चार यारी बण मलाह, बेड़ा रिहा चलाया। दोहां विचोला इक्क ख़ुदा, ख़ुदी तक्बर वेख वखाया। आपे करे आपणी सदा, आपे मंगण आया। आपे मुहम्मद करे हक्क जुदा, चौदां तबकां खोल्ह खुल्हाया। आदि जुगादी रही अदा, आपे मेटे आपे लए उपाया। आप उसारे आपे लए ढाह, घड़न भन्नणहार भेव ना राया। आपणी सिख्या आप समझा, आपणा नाअरा आप सुणाया। आपणी उम्मत आप उपा, नबी रसूल नाम धराया। पंज तत्त कलबूत डेरा ला, पंज तत्त

३५१
०८

मेल मिलाया। गमी ख़ुशी ना कोए वखा, ख़ालक ख़लक विच समाया। एका अक्खर दीआ पढ़ा, अल्फ़ अल्फ़ी गल पहनाया। दूजा नुक्ता दए मिटा, नैण नैण दरसाया। हक्क हकीकत आप अख्वा, हक्क हकूक रखाया। लाशरीक आपणा आप बणा, शरीकत कलिजुग करने आया। आपणा धन्दा आप रखा, आपणे बन्दे आप भुलाया। आपणी धारा आप चला, आपे वंड वंडाया। आपणा खण्डा हथ्थ उठा, आपे ज़िब्ा रिहा कराया। मुस्लिम सुन्नी आप अख्वा, राम रूप रिहा छुपाया। सिर ते चुन्नी इक्क टिका, कलमा इक्क पढ़ाया। कायनात फेरा पा, या महबूब दरस दिखाया। आब हयात आप बणा, आपे मुख चवाया। मक्का काअबा दए सुहा, दो दो आबा वेख वखाया। चरन रकाबा आप टिका, आपे रिहा दौड़ाया। हक्क जनाबा सहिज सुभा, आपणी कीती रिहा उलटाया। कलिजुग तेरा लेखा पहला ल्या गणा, अन्तिम पूरा दए कराया। चार लक्ख चार यारी विच जाए समा, तीस बतीस एका गाया। सच हदीस आप सुणा, आप आपणा अमाम रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी वंड वंडाया। वंडणहार पुरख अकाला, एका एक अख्वांयदा। लोकमात बण दलाला, जुग जुग वेस वटांयदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। चार यारी हो प्रधान, लोकमात उठ धाईआ। अल्ला राणी फड़ निशान, चारे कुन्टां रही फिहराईआ। इक्क मुहम्मद नौजवान, आप आपणी करे कुड़माईआ। ग़रीब निमाणे सर्ब कुरलाण, घर घर पई दुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेहरवान, जुग जुग वेखे बेपरवाहीआ। आप आपणा करया दान, आपणी वस्त झोली पाईआ। मात पित घर सुत्त निधान, नानक नाम धराईआ। नानक पाया पद निरबान, परम पुरख वड्याईआ। एका मेल श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। मन्त्र सति इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। चारे वरनां कर पछान, एका ब्रह्म जणाईआ। नाम खण्डा तेज़ किरपान, आपणे हथ्थ उठाईआ। कोई ना दीसे बेईमान, सच शरीअत इक्क जणाईआ। सच मुसल्ला अञ्जील कुरान, धुनी बांग आप अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी शाहीआ। सतिगुर नानक दया कमा, आपणी धार चलांयदा। अंगद अंगीकार करा, अंगद विच समांयदा। कलिजुग तेरा लेखा शब्द हथ्थ फड़ा, शब्दी वंड वंडांयदा। शब्द गुर होए सहा, गुर गुर नाउँ धरांयदा। अमरदासे फेरा पा, अमृत जाम प्यांअदा। रामदास आप उठा, राम रमईया वेस वटांयदा। सर सरोवर इक्क नुहा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। अमृत आत्म ताल सुहा, ताल सुहावा इक्क जणांयदा। एका रंगण रंग रंगा, एका बूझ बुझांयदा। नाम मृदंगण सच वजा, गुर अर्जन आप उठांयदा। बोध अगाधा शब्द जणा, आपणा भेव खुल्ांयदा। सन्त भगत भगवन्त एका धाम

बहा, गुरू ग्रन्थ वड्यांअदा। एका जोती दोए धार चला, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, हरिराए लेख लिखांयदा। बाल कृष्ना लए उठा, आपणी बूझ बुझांयदा। तेग बहादर सेवा ला, साची तेग इक्क चमकांयदा। आप आपणा भेट चढ़ा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। खेवट खेट आप अख्वा, कलिजुग बेड़ा पार करांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा सुत्त आप उपजा, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। आपणी सिख्या आप समझा, आपे वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा लेखा लिख्या दए मिटा, मेटणहारा आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका नूर रुशनांयदा। गुर गोबिन्द हरि हरि मेला, हरि हरि वज्जी वधाईआ। पाया पुरख सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। घर साचे चढ़या साचा तेला, एका सगन मनाईआ। आपे जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए रखाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहिंदा, गोबिन्द नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड कराईआ। वंडे वंड हरि निरँकार, आदि जुगादि वखन्नया। कलिजुग तेरी पावे सार, साचा भेव आप खुलन्नया। एक जोती दस अवतार, ज्ञान सूरज चन्नया। प्रकाश प्रकाश सर्ब संसार, दिस ना आवे आत्म अन्नया। इक्क अकल्ला एकउँकार, अकल कला आप अख्वन्नया। भगत जन भरे भण्डार, देवे नाम साचा धन्नया। करता पुरख करनेहार, दूसर होर ना कोए मन्नया। निरवैर रूप भेव अपार, देही किसे मात ना डन्नया। मूर्त अकाल हो त्यार, खेल श्री भगवन्नया। जूनी रहित कन्त भतार, किसे वसे ना छप्पर छन्नया। कलिजुग तेरी अन्तिम पावे सार, गुर गोबिन्द भाणा मन्नया। लिख्या लेख अगम्म अपार, हरि हरि मात पित किसे ना जम्मया। उतरे जोद्धा सूर बली बलकार, सम्बल नगरी धाम सुहन्नया। ना कोई दीसे चार दीवार, ना कोई पौड़ी बणत बनन्नया। चारे कूट ना करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल श्री भगवन्नया। खेल खिलारी हरि भगवन्ता, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोग जुगीशर जुगा जुगन्तर, जोग जुगती आपणी आप बणाईआ। गुरमुख वेखे साचे सन्तां, हरिजन साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका करे सच पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द इक्क ज्ञाना, एका रूप दरसाया। चार वरनां इक्क ध्याना, ऊँच नीच ना कोए रखाया। क्षत्री शूद्र ब्रह्मण वैश इक्क मकाना, काया मन्दिर आपे सुहाया। ब्रह्म भोज कर पकवाना, नाम नामा मुख लगाया। तृष्ना भुक्ख आप मिटाणा, नाम अधार जणाया। एक रूप कृष्ना कान्हा, साची बंसरी आप वजाया। सीता सुरती कर परवाना, राम रामा डंक सुणाया। जनक सपुत्री बाल निधाना, गुरमुख सुरती आप बणाया। कलिजुग अन्तिम बन्ने गाना, गोबिन्द साचा सगण मनाया। कंगण कंग हथ्थ निशाना, जगत रच्छया रिहा कराया। नाम खण्डा तेज किरपाना,

सच गात्रे आप लटकाया। अमृत अंमिउँ रस पीणा खाणा, एका रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा आप समझाया। घर साचा उच्च अटल्ला, सति पुरख उपांयदा। खेले खेल इक्क अकल्ला, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग शब्द सुनेहड़ा आपणा घला, भविख्ती भविख्त अलांयदा। पुरख अगम्मड़ा करे हल्ला, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप वटाया हरि बनवारी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोआं पुरीआं सच सिक्दारी, साचा शाह हंढाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारी, जीवां जन्ता वेख वखाईआ। साधां सन्तां मन हँकारी, मन मनका ना कोए फिराईआ। मावां पुत्तरां निहु बाहरी, भैणां भईआ सेज हंढाईआ। कुआर कन्या करे शृंगारी, नर नरायण दिस ना आईआ। हउमे हँगता दिन दिहाड़ी, लुट्टी जाए सृष्ट सबाईआ। जूठा झूठा लगा अखाड़ी, कलिजुग रिहा ताल वजाईआ। चार वरनां लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ी, गुरसिख गुरमुख वेख ना पाईआ। करे शृंगार मौत लाड़ी, कलिजुग दए सलाहीआ। धर्म राए दी पक्की हाढ़ी, अन्तिम वंड वंडाईआ। जन भगतां गुरमुखां सतिगुर पूरा पिच्छे अगाड़ी, जो जन रसना रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग हरि जणाया, चार वरन समझांयदा। राम कृष्न आप अख्वाया, ना कोई दूजा वेस वटांयदा। आदि शक्ति जोत रुशनाया, अष्टभुज समांयदा। चारे मुखड़े सीस टिकाया, अट्ठे नैण खुलांयदा। वेद वेदांता आपे गाया, एका ब्रह्म जणांयदा। एका नूर नूर दरसाया, नूर नुराना डगमगांयदा। एका राम राम ध्याया, नाम नाम आप जपांयदा। एका व्यासा वेद उपाया, पुराण पुराणी लेखे लांयदा। पुराण अठारां बणत बणाया, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गणांयदा। आप आपणा रंग रंगाया, दे अर्जन मति समझांयदा। गीता गोझ ज्ञान खुलाया, अट्ठ अठारां आपे गांयदा। रूप वराटी नज़री आया, चौदां हट्ट दरसांयदा। कलिजुग अन्तिम भेख वटाया, अञ्जील कुराना आपे गांयदा। आदि निरँजण जोत जगाया, जोती नूर डगमगांयदा। सतिगुर पुरख निरँकारा नाउँ धराया, नानक निरगुण वेस वटांयदा। नाना रूप आप कराया, निरवैर आप करांयदा। शब्द अनादी आपे गाया, गुर अर्जन घर वसांयदा। तेग बहादर सेहरा सीस बंधाया, जगदीस ख़ुशी करांयदा। गोबिन्द खण्डा इक्क चमकाया, नाम भगौती आप उठांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर इक्क समझाया, सृष्ट सबाई आप जणांयदा। गुरमति मार्ग साचा लाया, साचा राह प्रनांयदा। दूजा कलिजुग नाल रलाया, एका ढईआ वेख वखांयदा। तीजा नेत्र बन्द कराया, दोए लोचण नैण शरमांयदा। चौथा दर दिस ना आया, चारों कुन्ट कुरलांयदा। पंचम मीता गया मुख छुपाया, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। पारब्रह्म प्रभ फेरा

पाया, पुरख अबिनाशी रचन रचांयदा, साचा डेरा दए सुहाया, धाम अवल्लड़ा इक्क वखांयदा। मेरा रूप शब्द बणाया, गोबिन्द मुख सलांहयदा। पुरख अकाल निरगुण नूर करे रुशनाया, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जन भगतां रक्खे हेठ छाया, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सर्ब जीआं रिहा समझाया, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोए रखांयदा। आपणा इष्ट आपणी दृष्ट आपणी आपे मंग सरनाया, सरन सरनागत आप हो जांयदा। राम नाम जिस रिदे वसाया, रिद्ध सिद्ध धक्का लांयदा। कान्हा कृष्ना जिस जन गाया, गुरमुख गोपी आप प्रनांयदा। ऐनलहक्क नाअरा मुकामे हक्क जिस जन लगाया, ख़ालक आपणे विच समांयदा। नानक निरगुण जिस ध्याया, जन्म मरन विच ना पांयदा। गोबिन्द सूरे लड़ फड़ाया, पंजां जामन आप करांयदा। नीले चढ़ फेरा पाया, काम कामनी मेट मिटांयदा। सतिगुर पूरा ना कोई सीस ना कोई धड़, मात गर्भ ना डेरा लांयदा। हर घट अन्दर जाए वड़, जो जन राह तकांयदा। अग्नी हवन ना जए सड़, मढ़ी गौर ना कोए दबांयदा। गुरसिख हरिजन हरिभगत मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर सूफी एका अक्खर जायण पढ़, एका दर बहांयदा। पंच विकारा छड्डणा लड़, गुर मन्त्र नाम समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अग्नी तत्त, गुरमुखां आप बुझांयदा। त्रैगुण बुझे अग्नी तत्त, जिस जन हरि हरि रसना गाया। एका उपजे ब्रह्म मत, पारब्रह्म सरनाया। साचा बीज साचे वत, अमृत फल लगाया। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, काल जंजाल ना कोए वखाया। चरन कँवल बंधाए साचा नत्त, पुरख अकाल इक्क अख्वाया। गुरसिखां सदा रक्खे दे कर हथ्थ, कलिजुग सतिजुग त्रेता द्वापर एका रंग रंगाया। काया जूठा बुरज जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाया। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ दित्ती एका मति, दूई द्वैती रहिण ना पाया। कलिजुग अन्तिम आपणा सथ्थर बैठा घत, भाई भाईआं नाल रिहा लड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, जन जननी लए तराया।

✪ १८ चेत २०१६ बिक्रमी तेजा सिँघ दे घर दया होई चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

हरि शब्द मेहरवान, सतिगुर अख्वाया। सतिगुर पुरख सुजान, गुर गुर वेस वटाया। गुरु गुर देवे एका दान, गुरमुखां झोली पाया। गुरमुख चतुर सुजान, हिरदे हरि वसाया। मनमुख सुत्ते जीव अञ्याण, माया भरम भुलाया। खेले खेल श्री भगवान, पुरख अकाल कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर धराया। हरि शब्द हरि रूप है, हरि हरि आप उपाए। सतिगुर सच्चा शाहो भूप है, सति पुरख निरँजण आप अख्वाए। गुर गुर वेखे चारे

कूट है, दहि दिश फेरी पाए। गुरमुखां उप्पर जाए तुठ है, नाम निधाना इक्क वखाए। मनमुखां सुत्ता दे कर पिठ है, दिस किसे ना आए। चारों कुन्ट वासना खोट है, मन ममता रही सताए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहचल धाम इक्क सुहाए। हरि शब्द सुत्त उपन्नया, सति पुरख करतार। सतिगुर भाणा आपणा आपे मन्नया, निरगुण नूर जोत उज्यार। गुर गुर चाढ़े साचा चन्नया, लोकमात करे उज्यार। गुरमुखां बेड़ा आपे बन्नया, देवे नाम सहार। मनमुख जीवां दिसे नैण ना अन्नया, रैण होई अँध्यार। जननी जन ना किसे जणया, पारब्रह्म कि गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। हरि शब्द प्रधानया, सज्जण सच्चा शाह। सतिगुर पूरा चतुर सुजानया, दो जहानां इक्क मलाह। गुर गुर पाया पद निरबाणया, एकउँकारा इक्क सलाह। गुरमुखां देवे दर दर माणया, आत्म अन्तर बूझ बुझा। मनमुख जीव ना किसे पछानया, रसना भुल्लया हरि हरि ना। लेख ना जाणे वेद पुराणया, भेव अभेदा रिहा भेव छुपा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे सच निआ। हरि शब्द पुरख सुल्तानणा, अगम्म अगम्मड़ी कार। सतिगुर पूरा आप अख्वानणा, आदि जुगादी एका कार। गुर गुर करता वेस वटानणा, पंज तत्त ना कोए प्यार। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञानणा, निरगुण जोती कर उज्यार। मनमुखां संग रखाए कामनी कामना, लोभ मोह हँकार। धुर दरगाही साचा ज़ामना, खेले खेल सिरजणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग रंगे अपार। हरि शब्द हरि उपन्नया, परम पुरख करतार। सतिगुर भाणा आपणा मन्नया, आप आपणी किरपा धार। गुर गुर जगत विकारा डन्नया, वेख वखाए सर्ब संसार। गुरमुखां राग सुणाए कन्नया, धुनी नाद अपर अपार। मनमुख दर तों जाए भन्नया, मानस जन्म आए हार। खेले खेल श्री भगवन्नया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लहिणा रिहा विचार। हरि शब्द सच साख्यात, साची रचन रचाईआ। सतिगुर पूरा देवे दात, नाम दात इक्क वखाईआ। गुर गुर बन्ने चरन नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुखां दरस दिखाए इक्क इकांत, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। मनमुखां दिसे अन्धेरी रात, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जुगत बणाईआ। हरि शब्द सिक्दार, साचे तख्त सुहानया। सतिगुर पूरा पहरेदार, वेख वखाए दो जहानया। गुर गुर सेवक सेवादार, सेवा करे महानया। गुरमुख साजन लए उभार, वखाए इक्क पद निरबानया। मनमुखां देवे दर दुरकार, संग रलाए माण अभिमानया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, करता पुरख श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीपक जोत इक्क जगानया। हरि शब्द शब्द जैकार, सतिगुर पूरा आप लगांयदा। गुर गुर वेख सर्ब संसार, गुरमुख साजण आप उठांयदा।

मनमती वेख विभचार, नार दुहागण वेस करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। शब्द रंग सतिगुर धार, गुर गुरमुख विच टिकाईआ। अबिनाशी करता खेल अपार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। इक्क अकल्ला कर आकार, निराकार डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि धरया, शब्दी शब्द जैकारा। सतिगुर पूरा ना जन्मे ना मरया, आदि जुगादी इक्क अवतारा। गुर गुर वसे साचे घरया, सचखण्ड सोहे इक्क दुआरा। गुरमुखां आत्म आपे वरया, देवे नाम भण्डारा। मनमुखां नाल मनमती लड़या, ना दिसे पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे उज्यारा। शब्द मीत सतिगुर अतीत, गुर गुर ठांडा सीत, चीत गुरसिख समाया। करे कराए पतित पुनीत, एका रंग रंगाए हस्त कीट, वरन गोत ना कोए जणाया। त्रैगुण तेरा पीसन पीठ, मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, गुरमुख अमृत जाम प्याया। देवे नाम शब्द अनडीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर दरसाया। शब्द उपाए सतिगुर समझाए, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। गुर गुर मन्त्र नाम दृढ़ाए, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। मनमुखां बसन्तर रही जलाए, पंज तत्त अग्न लगाईआ। आत्म अन्तर वेख वखाए, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणी बणतर आप बणाए, ना कोई बाढी संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत आप जगाईआ। हरि शब्द सतिगुर पूरा, गुर गुरमुख वेस वटाया। नाल रलाए अनहद तूरा, हाज़र हज़ूरा वेख वखाया। दाता दानी सूरन सूरा, सूरबीर भेव ना आया। सर्ब कला आपे भरपूरा, कलधारी नाउँ धराया। आदि जुगादी नेरन दूरा, बैठा आपणा धाम सुहाया। आपे तोड़नहारा नाता कूड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़ा, चरन चरनोदक मुख चवाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दाता इक्क उपाया। शब्द दाता सर्ब गुण ठाकुर, हरि साचा आप उपांयदा। सतिगुर पूरा देवे नाम रत्ती रत्नागर, रंगन रंग इक्क चढ़ांयदा। गुर गुर रूप गहर गम्भीर सागर, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुखां भाग लगाए काया गागर, अमृत आत्म जल भरांयदा। निर्मल कर्म करे उजागर, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। साचे नाम वणज कराए इक्क सौदागर, एका वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगीशर आप अख्वांयदा। शब्द सतिगुर साचा जोग, गुर गुर बूझ बुझाया। गुरमुखां करे एका भोग, एका सेजा रिहा हंढाया। मेल मिलावा धुर संजोग, विछड़ कदे ना जाया। दरस दिखाए हरि अमोघ, रूप रंग ना कोए उपाया। कट्टणहारा हउमे रोग, एका अमृत जाम प्याया। हरिजन देवे साची चोग, माणक मोती मुख सलाहया। पार कराए तीनां

लोक, लोक परलोक वेख वखाया। आदि जगादी सच सलोक, हरि आपणा आप उपाया। हरि का शब्द ना सके कोई रोक, कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव सीस रहे झुकाया। जन भगतां देवणहारा मोख, मोख मुक्त चरनां हेठ दबाया। लक्ख चुरासी आपणी करनी करता शब्द भठयाले देवे झोक, भेव किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द हरि वड्याआ। शब्द हरि तीर निशाना, सतिगुर आप चलांयदा। गुर गुर करे इक्क ध्याना, गुरमुखां पार वखांयदा। कूड़ी क़िया बन्ने गाना, माया ममता सगन मनांयदा। जूठ झूठ देवे दाना, हउमे हँगता गढ़ सुहांयदा। वेख वखाए राज राजनां, शाह सुल्तानां आप हलांयदा। कलिजुग तेरी झूठ दुकाना, चौदां हट्ट वखांयदा। चौदां तबक होए हैराना, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्द गुरदेव, सतिगुर पूरा आप रखांयदा। हरि शब्द उच्च अथाह, सतिगुर हथ्थ टिकाया। गुर गुर पूरा बण मलाह, गुरमुख लए तराया। देवणहारा सच सलाह, साची सिख्या इक्क समझाया। कलिजुग बुद्धी होई काँ, काग रिहा कुरलाया। निथाव्यां ना देवे कोई थाँ, ग़रीब निमाणे ना गले लगाया। जूठ झूठ सुत्ता दे कर सरहाणे बांह, सच सुच्च ना सके उठाया। सच अदल ना किसे ग्रां, खेड़ा कोए ना रिहा सुहाया। धर्म कर्म ना पकड़े कोई बांह, घर घर शरअ डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी दित्ता वर, शब्द शब्दी वेस वटाया। शब्द वर शब्द हरि, शब्दी शब्द उपजाईआ। शब्द सतिगुर आपे धर, शब्द करे कुड़माईआ। शब्द रामा नर नरायण वेस कर, शब्दी शब्द वेख वखाईआ। शब्द शब्दी घाड़न घड़, पुरीआं लोआं आप सुहाईआ। शब्द आकाश प्रकाश रिहा दौड़, धूंआँधार शब्द समाईआ। शब्द लावणहारा जड़, शब्द दए उखड़ाईआ। हरि का शब्द ना सके कोई फड़, दिस किसे ना आईआ। हरि का शब्द हरि हरि रचना आपे रिहा लड़, हरि साचा करे लड़ाईआ। हरि का शब्द ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई खण्डा हथ्थ उठाईआ। हरि शब्द लक्ख चुरासी घाड़न आपे घड़, त्रैगुण मेल मिलाईआ। हरि शब्द लगाए इक्क अखाड़, पंज तत्त करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द बलवान इक्क उपाईआ। शब्द बलवान जोद्धा सूर, सूर सूरया आप अख्वांयदा। विष्नूं वंसी रिहा घूर, नेत्र नैण उठांयदा। ब्रह्मा वेता वेला होया पूर, अन्तिम मूल चुकांयदा। शिव शंकर मंगे चरन धूढ़, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। करोड़ तेतीसा अन्तिम आसा पूर, पूरा वक्त वखांयदा। सुरपति राजा इन्द करे चूरो चूर, आप आपणी कल वरतांयदा। लोकमात सर्ब कल भरपूर, निरगुण जोत दीप जगांयदा। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ कुड़यारा मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सतिगुर गुर आप अख्वांयदा। शब्द सतिगुर गुरदेव इष्ट, एका एक उपाया। वेख वखाए

सर्ब सृष्ट, लाशरीक आप ख़ुदाया। रामा गुर शब्द वशिष्ट, मूल मन्त्र इक्क दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप धराया। शब्द गुर सतिगुर पूजा, गुर गुर रसन अल्लांयदा। भेव ना जाणे कोई दूजा, दिस किसे ना आंयदा। जिस जन खोल्ले नेत्र तीजा, सो जन बूझ बुझांयदा। चौथे घर लँघे दहिलीजा, अमरापद वखांयदा। पंचम मीता आपे रीझा, गुरमुखां मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर हरि मेहरवान लोकमात झुलाए सच निशान, सच निशाना एका कीता। सच निशाना चार वरन, शब्दी शब्द लगाईआ। पुरख अकाल साची सरन, एका ओट जणाईआ। लहिणा चुक्के अठारां बरन, करनी करन वेख वखाईआ। पुरख समरथ तरनी तरन, तारनहार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द विचोला एका कर, जुग मेले जुग करे जुदाईआ। जुग साचा हरि मेलणा, जागरत जोत जगा। कलिजुग बेड़ा अन्तिम ठेलणा, शौह दरयाए दए रुढ़ा। सतिगुर साचा सज्जण सुहेलणा, सतिगुर रिहा बणत बणा। कलिजुग कूड़े कूड़ा खेल खेलणा, ना दिसे कोई मलाह। सतिजुग सुहाए साचा वेलणा, वेला वक्त बेपरवाह। अन्तिम कलिजुग आपणी हथ्थीं चाढ़े तेलना, झूठा वटणा देवे लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी बण मलाह। शब्द मलाह हरि हरि आया, सतिजुग वणज करांयदा। कलिजुग तेरा मूल चुकाया, तेरी गंढु बंधांयदा। सतिजुग साचा राह वखाया, चार वरनां इक्क वखांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़े धन्दे लाया, दूई द्वैती विच टिकांयदा। सद बख़्शंदे भेव ना राया, भेव अभेदा आप करांयदा। जगत विचोला आप अख्वाया, कलिजुग सतिजुग वेख वखांयदा। आदि निरँजण आदि पुरख अबिनाशी करता एकउँकारा हरि निरँकारा साचा ढोला एक गाया, सच करे जैकारा। पुरख अगम्मा ना मरया ना कदे जम्मां बणके तोला आपे आया, तोलणहार सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण शब्द भरे भण्डारा। शब्द भण्डारा सदा अतुट्ट, हरि साचा आप वरतांयदा। आदि जुगादि ना जाए निखुट्ट, जुग जुग वेख वखांयदा। जगत विकारा जड़ देवे पुट्ट, तिक्खा तीर चलांयदा। नाम प्याला हरिजन साचे आप प्याए एका घुट्ट, इक्क ख़ुमार वखांयदा। आवण जावण जाए छुट्ट, हरि हरि शब्द जो जन रसना गांयदा। कलिजुग अन्तिम लोकमात कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। सम्मत सम्मती पए लुट्ट, शाह सुल्तान ना कोए बचांयदा। हरि शब्द नगारे लग्गे चोट, रणजीत नगारा इक्क वजांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त आल्लणिउँ डिगे बोट, लोकमात ना कोए उठांयदा। गुरमुखां रक्खी हरि हरि एका ओट, सतिगुर गुर सतिगुर आप बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द नगारा आपणा आप वजांयदा। शब्द नगारा

३५६
०८

अनहद ढोल, घट घट आप वजाईआ। अन्दर मन्दिर आपे बोल, गुरमुखां रिहा उठाईआ। मनमुखां कढ्ढे अन्तिम पोल, नाम कंडे तोल तुलाईआ। जगत विकारे प्या घोल, मन मति बुध करे लड़ाईआ। हरि का शब्द जिस रक्खया कोल, त्रैगुण तत्त नेड़ ना आईआ। सतिगुर शब्द करे कराए सदा चोल, गुरसिख आपणे अंग समाईआ। सुरत सवाणी जाए मौल, उलटा कँवला नाभी मुख भवाईआ। देवे माण वड्याई उप्पर धवल, जो जन हरि हरि रहे सरनाईआ। मेल मिलावा साँवल सँवल, राम नाम आपे गाईआ। नूर इलाही अल्ला अव्वल, एका एक एक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द वेखे साचे घर, घर फेरा पाईआ। शब्द गुर घर घर वड़या, नेत्र नैण छुपांयदा। आपणे अंदर आपे वड़या, बजर कपाटी कुण्डा लांयदा। बिन हरि सन्त किसे ना फड़या, कोटन कोटि गोते रहे खा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर जोत हरि गुरमुखां पकड़े बांह। गुरमुख चतुर सुजान, हरि हरि मेल मिलाया। देवणहारा दाता दान, साची वस्त नाम भराया। साचे मन्दिर सच निशान, डूँघी कन्दर आप झुलाया। दिवस रैण निगहबान, अट्ठे पहर वेख वखाया। कलिजुग कूड़ा वेख तुफ़ान, आप आपणा रूप वटाया। आपे गोपी आपे काहन, आपे बंसरी रिहा वजाया। आपे सुत्ता सुंञ मसाण, जल थल डेरा आप वखाया। आपे वाली दो जहान, आपे रूप रंग ना कोए जणाया। आपे खाणी बाणी हो प्रधान, आपे आपणा डंक वजाया। आपे राग रागनी करे ध्यान, आप आपणी सेवा लाया। आप ना आए किसे पछान, जुग जुग आपणी धार चलाया। कलिजुग अन्तिम जोद्धा सूर बली बलवान, निहकलंका नाउँ रखाया। धर्म झुलाए इक्क निशान, सत्तां दीपां वेख वखाया। लक्ख चुरासी एका आण, पुरख अकाल इक्क मनाया। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका तीर्थ तट कर परवान, सर सरोवर इक्क नुहाया। एका कलमा इक्क ईमान, शरअ शरीअत इक्क वखाया। एका दीन मज़्ब इक्क ईमान, दर एका सीस झुकाया। एका पंडत करे ज्ञान, ज्ञान बोध आप अख्वाया। एका शब्द बाणी मारे बाण, गुर अर्जन तीर चलाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तान, शाह सुल्ताना वेस वटाया। जोती जोत जगे महान, दीपक दीवा इक्क रखाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त ब्रह्मा विष्न शिव हरि का नाम एका गाण, सो पुरख निरँजण आप जणाया। हँ ब्रह्म कर पछान, ओअँ सोहँ रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि शब्दी शब्द टिकाया। शब्द उपज्या हरि ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म वड्याईआ। अलख निरँजण वंडे वंड, आपणा हिस्सा आप कराईआ। पुरख अगम्मा करे खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा तेज़ चमकाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे दंड, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ । सच महल्ले सुत्ता दे कर कंड,

आपणी करवट ना कोए बदलाईआ। कूड़ी औध गई हंढ, ना दीसे कोए सहाईआ। नाता जोड़या भेख पखण्ड, भेखाधारी भेख वटाईआ। झूठा मोह दिसे नार दुहागण रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। लहिणा देणा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मूल चुकाईआ। जन भगतां आपणा नाम आपे वंड, आपणी भिच्छया इच्छया पूर कराईआ। सदा सुहेला रक्खे ठंड, सातक सति आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन एका नात, उत्तम रक्खे हरि हरि ज़ात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। वरन गोती तुट्टा नाता, हरि सच्चे आप तुड़ावणा। नार ना दीसे मनमति कमज़ाता, गुरमति सुर धक्का लावणा। कलिजुग तेरा भरया खाता, शौह दरया रुढ़ावणा। तेरा जोबन मारे ठाठा, अन्तिम ख़ाक मिलावणा। चौदां तबकां वेखे हाटा, मुहम्मद हट्ट विकावणा। अल्ला राणी सालू पाटा, सीस पर्दा ना कोई पावणा। सदी चौधवीं आए घाटा, पूरा घाट ना किसे करावणा। गोबिन्द सूरा आए नाठा, निहकलंकी जामा पावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटावणा। गोबिन्द आए दया कमाए, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। चार यारी मेट मिटाए, पंचम ताज सीस टिकाईआ। ख़ालस ख़ालसा आप उपाए, चार वरन करे कुड़माईआ। हरि का शब्द सालस लोकमात बणाए, आपे वेखे बेपरवाहीआ। नाम करामात इक्क वखाए, वक्खरी धार चलाईआ। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ तेरा लहिणा देण मुकाए, कलिजुग सीआं वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। निरगुण उठया नौजवान, शब्द शस्त्र हथ्थ चमकाया। एका वेखे मार ध्यान, वेखणहारा इक्क अख्वाया। इक्क झुलाए सच निशान, सो पुरख निरँजण लेख लिखाया। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम जणाया। कलिजुग भरमे भुल्ले जीव नादान, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाया। जूठा झूठा पीण खाण, अमृत रस हथ्थ किसे ना आया। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदवाले बहि बहि सारे गाण, गुर पूरा हाज़र हज़ूरा नेत्र लोचन नैण दरस किसे ना पाया। ज्ञानी ध्यानी करन वख्यान, वेखणहारा बैठा मुख छुपाया। पंडत पांधे पढ़न वेद पुराण, वेद पुराणी भेव ना राया। तीस बतीसा गाए अञ्जील कुरान, सच हदीस ना कोए सुणाया। काया काअबा होया वैरान, शाह नवाबा ना मेल मिलाया। तिलक ललाटी ना सके पछाण, पंडत पांधे वेख वखाया। गोबिन्द आए ना किसे ध्यान, पढ़ पढ़ वाद वधाया। नानक देवे धुर फ़रमान, जो जन अन्तर आत्म हरि लिव लाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, शब्द शब्दी नाउँ धराया। पंज तत्त ना कोए निशान, मन मति बुध ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि शब्द सतिगुर धार, गुर गुर पूरा करे विचार, गुरसिख मेल मिलाया।

✪ १८ चेत २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

नाम दान शब्द गुर दीनन, दीन दयाल उपाया। गुरमुख साजन रसना चीनन, हिरदे हरि वसाया। लहिणा चुक्के लोक तीनन, त्रैगुण बंधन तुड़ाया। तुट्टे वछोड़ा जिउँ जल मीनन, आप आपणा मेल मिलाया। सांतक ठांडा करे सीनन, सीतल धारा मुख चुआया। भगतन मीता होए आप अधीनन, दीना नाथ दया कमाया। हरिजन काया चोली चाढ़े रंग भीन्नन, भय भयानक वेख वखाया। भन्नणहार हँकारी बीनन, नाम निरँजण इक्क अलाया। सन्त सुहेले वक्ख कीनन, जुग जुग वक्खरी चाल चलाया। निर्धन निर्धन होए मस्कीनन, आप आपणा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम भण्डारा आप वरताया। नाम भण्डार हरिजन दीआ, देवणहार समरथ। निर्मल करे गुरसिख जिया, जगत विकारा, देवे मथ्था। मेल मिलाए कर कर हीआ, शब्द जणाई अकथना अकथ। सति सन्तोखी बीज बीआ, काया खेड़ा साचे वत। गुरमुख हरया तन मन भया, हरि मिल्या कमलापति। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बंधाए अपणा नत। शब्द नाम सर्ब गुर दीनां, सर्ब सुख हरि पाया। हरि हरि हरिजन आप आपणा कीना, अन्तर मन्त्र इक्क बुझाया। आपे जाणे मरनां जीणा, जीवन मुक्त आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द समाया। शब्द समाए शब्द उपाए, शब्द फल फुलवाड़ीआ। शब्द फूल शब्द महिकाए, शब्द भँवरी भँवर क्यारीआ। शब्द पंखड़ी आप हो जाए, शब्द कंडा पत्त पत्त डाल्हीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्डां शब्द रूप समालीआ। शब्द सुरत शब्द डोर, शब्द तन बंधाईआ। शब्द अकाल मूर्त अन्ध घोर, शब्द सञ्झ सवेर अख्वाईआ। शब्द बणया पंज चोर, पंच शब्द शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक शब्द उपजाईआ। शब्द उपजे शब्द बिनासे, शब्द शब्द शब्द समाया। शब्द पृथ्मी शब्द आकाशे, गगन पाताल शब्द अख्वाया। शब्द ब्रह्मा शब्द विष्न शब्द शंकर करे वासे, शब्द रूप दरसाया। शब्द रवि शब्द ससि शब्द प्रकासे, तारा मण्डल शब्द लटकाया। शब्द बिम्ब शब्द जल धार शब्द सिन्ध, शब्द सागर आप उपाया। शब्द गहर गम्भीर गुणी गहिंद, शब्द भेव कोए ना पाया। शब्द असत्त शब्द निन्द, शब्द शब्दी शब्द सलाहया। शब्द मात शब्द पित शब्द होए बिन्द, पूत सपूता शब्द बणाया। शब्द हरख शब्द सोग शब्द चिन्द, शब्द घर घर ख़ुशी वखाया। शब्द शाह शब्द सुल्तान शब्द नरिंद, निरवैर शब्द हो जाया। शब्द सुर शब्द असुर, सुरपति इन्द शब्द वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द रखाया। शब्द उजाला गोबिन्द करया, शब्द अन्धेर समाईआ। शब्दी मन्दिर शब्द मस्जिद शब्द धर्मसाला, गुरुदुआर शब्द अख्वाईआ।

शब्द शाह शब्द कंगाला, दर दरवेश शब्द अख्वाईआ। शब्द पत शब्द डाल्ह, शब्द शब्दी जड़्ह लगाईआ। शब्द सत्त सरोवर मार उछाला, समुंद सागर आप वखाईआ। शब्द शब्दी बण दलाला, धरनी धरत सुहाईआ। शब्द काल शब्द महांकाला आदि जुगादि शब्द सहाईआ। शब्द अग्नी जोत ज्वाला, अष्टभुज शब्द वड्याईआ। शब्द गुर शब्द जवाना, बलवाना शब्द इक्क हो जाईआ। शब्द राग शब्द तराना, शब्दी आपे गाईआ। शब्द रूप श्री भगवाना, दिस किसे ना आईआ। हरि शब्दी लक्ख चुरासी देवे दाना, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रधाना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द श्रृंगार आप कराईआ। शब्द रूप शब्द रंग, हरि शब्दी शब्द श्रृंगारया। शब्द सेज शब्द पलँघ, शब्द सुत्ता पैर पसारया। शब्द दाता शब्द दानी शब्द रिहा मंग, शब्दी शब्द भरे भण्डारया। शब्द मीता शब्द अतीता शब्द वसे सदा संग, सगला संग निभा रिहा। शब्द ढोल शब्द मृदंग, शब्द नगारा इक्क वजा रिहा। शब्द अंगीकार करे अंग, आप अंगन आपणे वेख वखा रिहा। शब्दी अन्दर शब्द जाए लँघ, शब्दा मेला मेल करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द भुक्ख शब्द नंग, शब्द तृष्ना तृखा बुझा ल्या। शब्द मण्डल शब्द रास, गोपी काहन शब्द अख्वाईआ। शब्द पुरख हरि शाहो शाबाश, राज राजान आप अख्वाईआ। शब्द दाता सर्ब गुणतास, रूप राम शब्द वटाईआ। शब्द नूर इक्क प्रकाश, आप आपणा तेज बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी शब्द समाईआ। लक्ख चुरासी शब्द टिकाणा, सुरती सुरत समा ल्या। पुरख अबिनाशी इक्क बबाणा, हरि आपणा आप उठा ल्या। गुरमुख वेखे सुघड़ स्याणा, कलिजुग अन्तिम मेल मिला ल्या। दर दुरकाए राजा राणा, मंगण भिख्या कोए ना पा रिहा। दरगाह साची देवे माणा, जिस जन आपणा दरस दिखा ल्या। बिरध बाल नौजवान एका रंग रंगाना, एका अक्खर आप पढ़ा ल्या। सतिजुग तेरा साचा गाणा, सोहँ शब्द इक्क सुणा ल्या। लेखा छुट्टे आवण जाणा, घर सज्जण साचा पा ल्या। लेखे लग्गे पीणा खाणा, गुर भण्डार जिस रसना ला ल्या। मेल मिलावा बीना दाना, दाना बीना दरस वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वेस वटा ल्या। वेस वटाया हरि बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ साचा कन्त, गुरमुख नार रिहा प्रनाईआ। लेखा जाणे साध सन्त, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। रसना जेहवा मणीआ मंत, एका गुण वखाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगत, हँ ब्रह्म इक्क वखाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत वेख वखाईआ। कलिजुग माया होई नंगत, ना पर्दा कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख हरि शब्द करे कुड़माईआ। हरि शब्द जुड़या जोड़ा, हरि साचे

आप जुड़ाया। पुरख अगम्मा लै के घोड़ा, लोकमात फेरा पाया। पारब्रह्म प्रभ आया दौड़ा, निरगुण नूर कर रुशनाया। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़ा, गुरमुख बूटा आपणी हथ्थीं लाया। पन्ध मुकाए लम्मा चौड़ा, दो जहानां डेरा ढाया। सचखण्ड लगाया एका पौड़ा, एका चरन रखाया। हरिजन हरि हरि वर पाया जेहा लोड़ा, विछड़ कदे ना जाया। सतिगुर पूरा हरिजन साचे आपे बौहड़ा, आप आपणा मेल मिलाया। कलिजुग अन्तिम रहि गया थोड़ा, नेत्र नैण नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा सगन मनाया। साचा सगन लाल रंगण, हरि मैंहदी नाम रंगाईआ। सन्त सुहेले आया मंगण, अकाल मूर्त लए प्रनाईआ। जोत निरँजण वेखे लग्न, साचा साह सुधाईआ। साचे दीपक घर घर जगण, गुर पूरा करे रुशनाईआ। हथ्थीं बन्ने नाम तगन, सोहँ तागा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग मिथ्या इक्क समझाईआ। साचा सगन हरि मनाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। गुरसिखां वटना आप मलाए, कलिजुग खारे आप चढ़ाए, खेले खेल अगम्म अपारीआ। लाड़ी मौत लए उठाए, करे तन श्रृंगारीआ। सूहा वेस वेस वटाए, रंग रतड़ा अपर अपारीआ। कलिजुग कर्म कलीरे पाए, वेखे आप वड्डा संसारीआ। जूठा झूठा सालू रिहा रंगाए, चारे कुन्टां हो उज्यारीआ। गुरमुख साचे वेख वखाए, आप आपणी किरपा धारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए आपणी वारीआ। गुरमुख साजण साचा लाड़ा, हरि साचे आप श्रृंगारया। सखीआं मंगल गायण लाया इक्क अखाड़ा, एका ढोला मीत मुरारीआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता कलिजुग अन्तिम मंगण आया आपणा , करे असीस जगदीस आपणा शब्द उचारीआ। भिच्छया पौण सतारा हाढ़, साची थित आप उजारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत रक्खी कुँवारीआ। निरगुण जोत कुँवारी कन्या, हरि साचे आप रखाईआ। चौथे जुग गुरमुख साचा एका मन्नया, प्रभ साचा करे कुड़माईआ। वेल वधाए दया कमाए डेरा लाए उच्च महल्लया, अटल अटलया दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाता आप बणाया। नाता जुड़या हरि गोबिन्द, गोबिन्द चिन्त मिटाया। अमृत वारया सागर सिन्ध, धरत मात ख़ुशी मनाया। गगन पातालां मिटी चिन्द, सगला दु:ख गंवाया। वर पाया सद बख्शिंद, गुरमुख सज्जण लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेला रिहा कर, दर घर हरि नर आपणा आप सुहाया। प्रेम भिच्छया रिहा मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। गुरमुख सोया सच पलँघ, सतिगुर आप उठाईआ। गुरमुख नुहाया अमृत गंग, सतिगुर पूरा दुरमति मैल धुवाईआ। सतिगुर पूरा आपणे घोड़े कसे तंग, गुरमुखां उप्पर आप चढ़ाईआ। गुरसिख

३६५

०८

तेरा दुआरा लोकमात लँघ, सचखण्ड दुआरा आपणा फेर सुहाईआ। तेरे पिच्छे तेरे अन्दर दिवस रैण करे जंग, तेरे शत्रू मेट मिटाईआ। आया वार तेरे उत्ते कर खण्ड खण्ड, गुर गोबिन्द नीह रखाईआ। जगत जगदीस तेरी वंडी वंड, तेरी रीझ पूर कराईआ। तेरा भार आपणे सीस चक्क कंड, गुरसिख हौले भार वखाईआ। गुरसिखां मुकाया पन्ध, तेरा लेखा ना कोए वखाईआ। गुरमुख तेरा जगत वकारा जूठ झूठ गन्द, सतिगुर पूरा आपणे पेटे पाईआ। गुरसिख तेरा कट्टे रंडेपा रंड, आपणा तत्त पहलों ख़ाक रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हाढ़ सतारां गुरसिखां एका हिस्सा पाईआ। मंगण आए हरि भिखारी, गुरमुख चरन दुआरया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, खेलया खेल अपर अपारया। वेद पुराण सिमरत शास्त्र खाणी बाणी ना पाए सारी, ब्रह्मा चारे मुख ना कोए सलाह ल्या। इक्क अकल्ला एकउँकारी, जोत निरँकारी, आप आपणा वेस वटा ल्या। सतिजुग तेरी लाई सच्ची फुलवाड़ी, लोकमात अपणी हथ्थीं बूटा ला ल्या। आपणी सिंचे आप क्यारी, गुरसिख तेरा प्रेम तेरा खूआ तेरे तन तेरे मन्दिर आपणा आप गढ़ा ल्या। तेरी प्रीत कर प्यारी, जगत ख्वारी आप वखा रिहा। तेरे तन रक्ख नाम पटारी, सोहँ उप्पर कुण्डा ला ल्या। आपणे हथ्थीं करे श्रृंगारी, बस्त्र भूषन इक्क वखा ल्या। गुरसिख आत्म ना रहे कुँवारी, कन्त कन्तूहल अन्त प्रना ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतारा हाढ़ी दिवस सुहा ल्या। हाढ़ सतारां सति सतिवाद, सति पुरख उपाया। गुरमुखां दित्ती साची दाद, निहकलंका रूप वटाया। रहे नाम आदि जुगादि, कोटन कोटि चौकड़ीआं जुग रहे गाया। ब्रह्मा वेखे ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादि, शंकर शिव ना मेट मिटाया। हरिजन गुरसिख साचे सन्त आपे लए लाध, सन्त सतिगुर एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि किरपा गुर शब्द बुझाया।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे घर चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

जोती नूर जगत गुर चानण, वरभण्डी वंड वंडाईआ। परम पुरख पुरख सुल्तानण, पारब्रह्म वड्याईआ। शब्दी तीर ब्रह्मण्ड निशानण, हरि हरि आप कराईआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञानण, आत्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। चरन कँवल सच ध्यानण, साख्यात जोत रुशनाईआ। साचा शब्द सच्ची धुंनकानण, राग अनाद सुणाईआ। भेखाधारी भेख धरे बल बावण, भेव कोए ना पाईआ। मनमुख झूठी ख़ाक छानण, लाल अमोलक हथ्थ ना आईआ। त्रैगुण माया हड्डीआं बालण, पंज तत्त अग्नी डाहीआ। निकले लाट जोत ज्वालण, धूंआँधार समाईआ। पुरख अबिनाश जोत अकालण, निर्भय रूप वटाईआ। कलिजुग

अन्तिम बण दलालण, लोकमात वेख वखाईआ। अगम्म अगम्मड़ी चली चालण, चाल निराली हरि हरि रघुराईआ। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसालण, धर्मी धर्म कमाईआ। गुरसिखां तोड़नहारा जगत जंजालण, जगत विकारा मेट मिटाईआ। कोटन कोटि जीव जन्त साध सन्त जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भालण, टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। कोटन कोटि जल जल धारा घाल घालण, कोटन बैठे धूंणीआँ ताईआ। कोटन नंगीं पैरीं फिर फिर पायण छालन, कोटन कोटि मृगछाला हेठ वछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत धुर दी मालण, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरि मालण हरि खारीआ, आपणा रूप वटाए। एक जोत नर निरँकारीआ, सेवक सेव कमाए। वेख वखाणे वड संसारीआ, समुंद सागर पार कराए। धरत धवल हो उज्यारीआ, आप आपणा वेस वटाए। लोकमात वेखे तेरी इक्क क्यारीआ, आप आपणा फेरा पाए। गुरमुख खिड़या फुल सच्ची गुलज़ारीआ, दिवस रैण महक महिकाए। भँवरा गूंजे शाह अस्वारीआ, दिवस रैण रिहा उघाए। वाजां मारे आप आपणी वारीआ, आपे सोए रिहा जगाए। साचा तागा सोहँ धारीआ, नाम नामा हथ्थ उठाए। कलिजुग गुंदे हार न्यारीआ, निरगुण बैठा बेपरवाहे। सच सिँघासण अपर अपारीआ, शाहो भूप आप सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची माला आप पहनाए। साची माला फूलन हार, गुरमुख जोड़ जुड़ाया। पाए गल सच्ची सरकार, सोहणा सगन मनाया। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, दर आपणा आप सुहाया। अट्ठे पहर बसन्त बहार, खिज़ां रुत्त ना कोए वखाया। अमृत बरखे किरपा धार, लेख लेखा वेख वखाया। रवि ससि करे प्यार, आपणी किरना चरन छुहाया। राग नाद सुणायण धुन्कार, गण गंधर्ब वेख वखाया। देवत सुर कर श्रृंगार, आपणा ताल रहे वजाया। पुरख अबिनाशी ख़बरदार, आप आपणा खेल खिलाया। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण जामा भेस वटाया। सन्त सुहेले कर उज्यार, गुरू गुर चेले मेल मिलाया। जगत दुहेला धक्का देवे मार, ना सके कोए बचाया। भैण भाई मात पित साक सैणा सका ना रिहा विचार, आप आपणे लए तराया। कुली कक्खां कर प्यार, महल्ल अटल जगत तजाया। लक्खां विच्चों कढ्ढे इक्को बाहर, गोबिन्द तेरा पूरा पूर कराया। भाण्डा सक्ख सर्ब संसार, साचा साकी दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण सीस गुंदाया। सीस गुंदाए हरि मुख वाका्, खेले खेल न्यारा। खोल्हणहारा बन्द बन्द ताका, दीपक जोत करे उज्यारा। कलिजुग जाणे आपे साका, लेखा लिख्त आपारा। पूर कराए आपणा भविख्त वाका्, आपे होए पहरेदारा। हरिसंगत हरि बण बण राखा, बेड़ा चलाए विच संसारा। पूरा करे पिछला लहिणा घाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख सज्जण लेख लिखाया।

३६६ ०८

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे घर दया होई ✪

नाम निधान सर्ब जग मीता, सतिगुर हट्ट विकाया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, जो जन झोली पाया। अमृत रस रस देवे मीठा, जिस जन रसना गाया। दिवस रैण रक्खे ठंडा सीता, हउमे अग्नी दए बुझाया। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावन नाम धराया। दरस वखाए इक्क अतीता, त्रैगुण पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधान इक्क वरताया। नाम निधान सच भण्डारा, गुर सतिगुर आप वरतांयदा। गुरसिख साजन कर प्यारा, साची वस्त फड़ांयदा। साचे मन्दिर एका नाअरा, आप आपणा आप सुणांयदा। खोल्हणहारा जगत किवाड़ा, बन्द किवाड़ी मुख वखांयदा। सति पुरख निरँजण एका लाड़ा, सन्त सुहेला मेल मिलांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, पंचम मोह चुकांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, खड़ग खण्डा नाम चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधाना इक्क उपांयदा। नाम निधान सर्ब घट अन्तर, घट घट आप समाया। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त गंवाया। जुग जुग जपाए आपणा मन्त्र, सो पुरख निरँजण वड वड्याआ। मात सुहाए थान थनंतर, जिस दर चरन छुहाया। आप बणाए आपणी बणतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधाना मेल मिलाया। नाम निधान सर्ब गुणवन्ता, सहिज सहिज सक्खणाया। नाद अनादी जुगा जुगन्ता, जुग जुग सेव कमाया। त्रै काल ना कोए मिटंता, सम वासी रंग समाया। भींग रूप आप रखंता, होए भेख ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधान इक्क प्रगटाया। नाम निधान प्रगटियो गुर सूरा, महांकाल सीस निवांयदा। सति पुरख निरँजण हाज़र हज़ूरा, काल जंजाल वेख वखांयदा। अवण गवण बख्शे धूढ़ा, त्रैभवण फिरांयदा। लोक परलोक एका नूरा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेस वटांयदा। चौदां तबकां हूंझे कूड़ा, चौदां लोकां ख़ाक रमांयदा। रवि ससि वेखण नेरन दूरा, मण्डल मण्डप धरत सुहांयदा। जन भगतां आसा मनसा करे पूरा, पूरी इच्छया आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नाम निधान हरि मेहरवान, भगत वछल श्री भगवान, साजण राजन राजन साजण आप अख्वांयदा।

३६७ ०८

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी कुलवन्त सिँघ दे घर दया होई चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

बस्त्र शस्त्र तन शृंगार, हरि हरि नाउँ कराईआ। डूँघी भँवरी पावे सार, अन्हेरी कुन्दर वेख वखाईआ। जगत जुगती मारे मार, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। साची भगती इक्क प्यार, अक्खर इक्क पढ़ाईआ। बूंद रक्ती वेख विचार, लेखा

लेख चुकाईआ। आत्म शक्ती ब्रह्म विचार, पारब्रह्म सरनाईआ। हस्त घोड़ शाह अस्वार, ख़ाकी ख़ाक इक्क जणाईआ। तख्त ताज सुल्तान, निउँ निउँ वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख झूठ मकान, सतिगुर पूरा रिहा ढाईआ। खेले खेल दो जहान, आदि शक्ति मेल मिलाईआ। रूप अनूप श्री भगवान, नाम भगौती हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आया विच मैदान, जोद्धा बीर सहिज समाईआ। गुरमुख साजण कर पछान, जन्म कर्म वेख वखाईआ। बुध बिबेकी इक्क ज्ञान, आप आपणी मति समझाईआ। मन मनुआ मेटे पंच शैतान, नाम निधाना बंधन पाईआ। दर घर साचे पीण खाण, रसना जेहवा हरि गुण गाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सोहँ अक्खर जो जन गान, जगत तपस्सया मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नारी रिहा तराईआ।

३६८

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी मोहण सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर दुआरा साचा हट्ट, पुरख अकाल खुल्ह्हांयदा। नाम वणजारा लाहा लए खट्ट, दूसर किसे हथ्थ ना आंयदा। तन लपेटे एका पट, सच बस्त्र आप पहनांयदा। अज्ञान अन्धेरा देवे कट्ट, ज्ञान गुर उपजांयदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, माया ममता मोह चुकांयदा। गढ़ हँकारी जाए ढठ्ठ, एका दर वखांयदा। अमृत आत्म देवे झट्ट, सीर नीर प्यांअदा। जगत सागर डूँघा घाट, गुर सतिगुर पार करांयदा। लहिणा देणा चुक्के आन बाट, आवण जावण लेखे लांयदा। पूरी करे चुरासी वाट, स्वासी स्वास तरांयदा। जोत जगाए काया माट, माण मोह मिटांयदा। झूठा बस्त्र जाए पाट, थिर ना कोए दिसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चरन धूढ़ी सच सरोवर इक्क अशनान करांयदा। सतिगुर पूरा सीस ताज, सति सति रखाईआ। भगत भगती करे काज, काज करता आप अख्वाईआ। दरगाह साची देवे एका दाज, नाम पल्ले गंढु बंधाईआ। सति सन्तोखी चलाए जहाज़, सति सतिवादी चप्पू लाईआ। जुगा जुगन्तर रक्खे लाज, जुगत जगत आप जणाईआ। आपे साजण रिहा साज, आपे वेखे बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम भाग लगा देस माझ, देस दसन्तर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मन्दिर डेरा लाईआ। मन्दिर सच सहावा ताल, अमृत रस भराया। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, एका थान बहाया। एका फल लगाए डाल्ह, एका मेवा रिहा खवाया। इक्क सुहाए गगन मस्तक थाल, एका दीप करे रुशनाया। इक्क सरोवर मारे उछाल, एका कौस्तक

बाहर कढाया। एका घालन रिहा घाल, गुरमुख साजन वेख वखाया। शब्द सरूपी बण दलाल, लोकमात फेरा पाया। करे कराए सदा प्रितपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सखा सखाई नाउँ धराया। सखा सखाई हरि गोबिन्द, हरिजन वेख वखांयदा। जगत मिटाए सगली चिन्द, चातृक तृखा बुझांयदा। सतिगुर पूरा गुणी गहिंद, जगत सागर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि नर नर हरि घर दर दर घर दरवेश शेष अलख जगांयदा।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी दीदार सिँघ दे घर पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ✪

नाम रत्न हरि पाया, हरिजन वज्जी वधाईआ। घर मंगल एका गाया, एका राग अलाईआ। दर नहावण साचा नुहाया, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। घर सज्जण सतिगुर पाया, मेल मिलावा हरि शहिनशाहीआ। साकत निन्दक दुरजन परे हटाया, दर दरवाज़े दए दुरकाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाया, कर किरपा मेल मिलाईआ। साजण सच्चा हरि हरि अखवाया, आदि जुगादि नाम धराईआ। चरन धूढ़ी मजन सच कराया, मूर्ख मूढ़ी चतुर बणाईआ। घड़न भन्नणहार पुरख समरथ अखवाया, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत उपाईआ। हरि सज्जण घर बोल्लया, बोले नाम जैकार। गुरमुखां पर्दा खोल्ह्या, सुत्ता सर्ब संसार। नाम तराज़ू आप आपे तोल्लया, शब्द सरूपी दए हुलार। दूर कराए पर्दा ओहलया, नेत्र नैण दए उग्घाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण पाए सार। हरि सज्जण सेज सुहंदड़ा, गुणवन्ता गहर गम्भीर। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, सांतक सति सरीर। निरगुण बाती दीप जगन्दड़ा, आप बंधाए साची धीर। आपणे नेत्र दरस वखंदड़ा, दर चोटी चढ़े अख़ीर। घर मन्दिर इक्क सुहंदड़ा, शाह सुल्ताना पीरन पीर। ग़रीब निवाज़ा खेल खिलंदड़ा, लेखे लाए शाह हकीर। दरगाह साची धाम वखंदड़ा, दो जहानां पैंडा चीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे अमृत सीर। अमृत सीर सच प्याला, गुर गुरसिख आप प्याईआ। जुगा जुगन्तर तोड़ जंजाला, जागरत जोत वखाईआ। नाम रत्न तन पाए माला, अट्ठ अठोतरी आप फराईआ। खेल खिलाए सच्ची धर्मसाला, मन्दिर अन्दर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन राखे देवे ठंडी छाईआ। रक्खे रक्खणहार प्रभ, गुरमुख चतुर सुजान। लक्ख चुरासी विच्चों लभ, देवे नाम निशान। अमृत प्याला कँवल नभ, भरया श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे दान। जीआ

दान जन झोली पा, जुग जुग मेल मिलाईआ। बुध मति सुर आप समझा, मनमति मेट मिटाईआ। साची वस्त इक्क वखा, कीमत करता आपे पाईआ। काया गोलक विच टिका, आपे बन्द कराईआ। शब्द अमोलक दए वसा, दिस किसे ना आईआ। अनहद ढोलक इक्क वजा, गुरमुख सोया आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन आपणा भेव खुल्हाईआ। खुल्हया भेव भगत भगवन्त, भगती नैण शरमाया। मेल मिलावा साचे सन्त, सतिगुर पुरख मनाया। घर सुहाया नारी कन्त, एका रूप वटाया। चोली रंगे रंग बसन्त, आप आपणी रत्त सुहाया। भेव ना पाए जीव जन्त, भेव अभेदा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाया। सहिज सुभा मिल्या, गुर पूर्ब लेख वखानया। जोड़ जुड़ाया लिख्या धुर, लेखा लाए श्री भगवानया। एका ताल एका सुर, एका शब्दी नाद वजानया। एका आसा मनसा करे पूर, परम पुरख खेल महानया। एका जोती बख्शे नूर, नूर नुराना डगमगानया। एका वेखे हाज़र हज़ूर, हरि घट घट आप समानया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च करे प्रधानया। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण आप पछानया। गुरमुख साजण पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। हरि सज्जण लिखे लेखया, लेखा लिखणहार करतार। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़िआ, मुल्लां गौंस कुतब रहे विचार। लक्ख चुरासी पाए भरम भुलेखया, पंडत पांधे रहे हार। जोती नूर दस दस्मेस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगे करतार। रंग रंगाए हरि चलूल, लाल गुलाल रतड़ा। गुरमुख ना जाए मात भूल, हरि शब्दी दे समझावे मतड़ा। फल फुलवाड़ी रही फूल, कलिजुग वगे अन्धेर झक्खड़ा। मनमुखता बूटा जाए हुल्ल, पत्त डाल्ही दिसे सक्खणा। जन भगतां पाए आपे मुल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्क पढ़ाए नाम निधाना अक्खरा।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी निरँजण सिँघ, करतार सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

हरिजन हरि लिव लागीआ, राम नाम उरधार। सुरती सोई जागीआ, गुर मिल्या करतार। होए वड वड भागीआ, पाया कन्त भतार। जगत तृष्ना बुझी आगीआ, सति सति वरते वरतार। बणया हँस कागीआ, मारे हँस उडार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार चरन गुर नाता, चरन कँवल चित लाईआ। चरन सरन पुरख बिधाता, हरिजन इक्क वखाईआ। उत्तम रक्खे लोकमात ज़ाता, वरन बरन मिटाईआ। सतिजुग सुणाए साची

गाथा, सोहँ शब्द पढ़ाईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथा होए सहाईआ। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। सति सतिवादी खोल्ह हाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां रिहा लुटाईआ। गुरमुख साजण लुट्टी लुट्ट, एका हरि हरि नाउँ। जूठ झूठ कढ्ढे कुट्ट, मिल्या सच्चा थाउँ। दूई द्वैती निकले फुट्ट, सतिगुर पूरा पकड़े बांहों। जगत नगारा वज्जे चोट, करे सच न्याउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पिता माउँ। पिता पूत बालक सुत्त, सतिगुर आप अख्वाया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, हरि सज्जण सच उपाया। वसणहारा काया बुत्त, त्रैगुण अतीता वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साची रीत चलाया। सतिजुग रीत डूँघी भँवर, लक्ख चुरासी दए डुबाईआ। मनमति तेरी कढ्ढे कबर, मनमुखता दए दबाईआ। गुरमुखां देवे सबूरी सबर, साबर जाबर आप अख्वाईआ। आपणा भाणा करे तसवर, सालस आपणा आप अख्वाईआ। गुरमुख तेरा बण मुसव्वर, मूर्त तेरी खिच्च वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेख वखाईआ। वेस वटाया गुरसिख धार, धरनी धवल सुहांयदा। अन्दरे अन्दर करे प्यार, डूँघी कन्दर मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी भौदी बन्दर सर्ब संसार, साकत साकी दिस ना आंयदा। हरिजन साचे लए उभार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस जन बख्शे चरन प्यार।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

इक्क राम इक्क नाम, इक्क जाम प्याईआ। इक्क तृष्ना इक्क ताम, इक्क भुक्ख मिटाईआ। इक्क नगर इक्क ग्राम, इक्क खेड़ा रिहा वसाईआ। इक्क माटी इक्क हाडी इक्क चाम, रक्त बूंद इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन मस्कीनन वेख वखाईआ। इक्क आस इक्क प्यास, एका तृप्त करांयदा। इक्क घर इक्क निवास, एका दर सुहांयदा। एका पुरख शाह शाबास, शाह सुल्तान इक्क अख्वांयदा। एका वेख पृथ्मी आकाश, एका गगन मण्डल फरांयदा। एका दानी सर्ब गुणतास, दानव देव वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर एका इक्क सुहांयदा। एका समुंद इक्क सागर, एका लोटा नाम भराईआ। इक्क वपार इक्क सौदागर, एका वणज कराईआ। एका रत्न अमोलक काया गागर, एका गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। एका निर्मल कर्म करे उजागर, एका कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त भेट चढ़ाईआ। एका वस्त एका दस्त, एका हथ्थ फड़ांयदा।

एका कीट एका हस्त, एका रंग रंगांयदा। एका नाम ख़ुमारी रक्खे मस्त, मति मतवाला इक्क अख्वांयदा। एका नाम विकाए आपणा सस्त, करता कीमत कोए ना लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख जणांयदा। एका वड्डा एका छोटा, नीकन नीक एका अख्वाईआ। एका खरा एका खोटा, एका ख़ज़ाने आपणे पाईआ। एका तृप्त एका रहे अतोटा, अतोट अतुट इक्क अख्वाईआ। एका जागा एका सोता, एका सोए रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरी भँवरी मार ग़ोता, तेरा मानक हथ्थ उठाईआ। तेरा माणक तेरा हीरा, तेरी कीमत पांयदा। सीस जगदीस बद्धा चीरा, कल्ग़ी तोड़ा नाम सजांयदा। मेल मिलावा साचे वीरा, हरिसंगत संग बंधांयदा। हथ्थ फड़ाया इक्क कसीरा, रविदासा संग निभांयदा। गंगा घत्ती जाए वहीरा, गंगोतरी मुख सलांहयदा। हउमे लग्गी काया पीड़ा, मन ममता भरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण अवगुण वेख वखांयदा। रविदास चमारे कर प्यार, कसीरा हथ्थ फड़ाया। गंगा वेखी वैंहदी धार, गुरमुख भेट चढ़ाया। जोत शक्ती हो उज्यार, आदि शक्ति रूप वटाया। कंगण देवे हथ्थ उतार, रसना बोल सुणाया। रविदास चमारा साचा यार, एका सेज सुहावी बैठा आसण लाया। मेरी भेटा देणी कर निमस्कार, निउँ निउँ मेरा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। सच कंगण ल्या चुक्क, आपणा मुख भवाईआ। रविदासे कोलों गया लुक, चल्लया वाहो दाहीआ। जगत तृष्ना लग्गी भुक्ख, दिवस रैण सताईआ। अन्तिम वेला गया ढुक, शाह सुल्तानां पाई फाहीआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, आप आपणा रिहा वरताईआ। नेत्र नीर नैणां गया सुक्क, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिध नाता पुरख बिधाता, खेले खेल सहिज सुभाईआ। शाह सुल्ताना ल्या फड़, ना कंगण जोड़ जुड़ाया। लेखे लग्गे ना सीस धड़, जो जन भगती मुख छुपाया। भय भयानक हरि का रूप एका अक्खर ल्या पढ़, एका नज़री आया। रविदास चमारा अग्गे खड़, दर दरबाना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा भेव छपाया। रविदास चमारे दर्शन पा, नेत्र नैण शरमाईआ। शाह सुल्तान दए सुणा, हउँ मूर्ख मूढ़ ना कोए चतुराईआ। मैं भुल्ला तूं भुल्ली ना, एह वस्त दिसे पराईआ। मिले माल धन रविदास चमारे कुली साचे थाँ, थान थनंतर इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिर त्रीया संग रलाईआ। त्रीया पिर कर प्यार, साचा संग रलाया। आया चल रविदास दुआर, निउँ निउँ सीस झुकाया। ग़रीब निमाणा करे सत्कार, आप आपणा कदम उठाया। भगत बोल रसन जैकार, एका बोल सुणाया। साजण मेरे सच्चे यार, मेरा कसीरा केहड़े हथ्थ वटाया। जगत

तृष्ना करे खुआर, बिन हरि नाम ना कोए तराया। मात पित भैण भाई पुत्तर धीआं ना कोई यार, सगला संग ना कोए निभाया। बोल्लया बोल रसन उचार, ना कोई मेटे मेट मिटाया। पान्धी ढहि प्या दुआर, मुक्खों एह सुणाया। कवण घाट उतरे पार, कौण बेड़ा बन्ने लाया। भगत भगवन्त अग्गे करे पुकार, तेरा विचोला राम बणाया। तेरा मेरा रिहा उधार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। तेरा बोल पूरा दए उतार, आपणी हथ्थीं लेख लिखाया। गुरमुख बणया रविदास चमार, तेरा त्रैगुण मूल चुकाया। घर ना दिस्सया कोई सुत्त दुलार, रविदास चमारे मुख सराप दवाया। मंगी मंग दूजी वार, प्रभ बेड़ा दए तराया। पिछला कर्ज़ा दित्ता उतार, बाकी कोई रहिण ना पाया। दूजी गर्ज ना कोई विच संसार, भगतां हित जामा पाया। गुरमुखां अग्गे अर्ज करे आप निरँकार, निउँ निउँ आप सीस झुकाया। अन्तिम करन आया ख़बरदार, भुक्ख रहे ना राया। टुट्टे फल लगाए डाल्ह, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आपणी चली अवल्लड़ी चाल, धुर दी बाण जणाया। गुरसिख तेरी घालणा आपे रिहा घाल, तेरा पूजा पाठ आपणी रसना आपे गाया। तेरा अन्त ना होए ज्वाल, तेरा तेरा दर सुहाया। कीमत पाए अनमुल्लड़े लाल, आपणा कंगन आपणे हथ्थ रखाया। रविदास चमार बण दलाल, लेखा चिट्टे उप्पर काला रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मेल मिलाया।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी हीरा नंद दे घर दया होई पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

बाली बुध बुध बिबेक, ब्रह्म मति जणाईआ। सतिगुर पुरख एका वेख, एका इष्ट मनाईआ। आपणा लहिणा लए लेख, पूर्ब झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म क्रिया मेट मिटाईआ। क्रिया कर्म पार किनारा, धर्मी धर्म धराया। दरस वखाए अगम्म अपारा, साची सरन लगाया। चरन सरन इक्क दुआरा, साचा दर वखाया। दिवस रैण पावे सारा, भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल बाला गोद उठाया। बाल अञ्याण सुरत सवाणी, नेत्र नैण राह तकाईआ। शब्द मिले गुर साचा हाणी, साची बणत बणाईआ। घर अमृत देवे ठंडा पाणी, अग्नी तत्त बुझाईआ। इक्क सुणाए अनहद बाणी, आपणा नाम अलाईआ। लेखा चुक्के चारे खाणी, चौथे युग मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जाणे आपे अकथ कहाणी, रसना कथ ना सके राईआ। बाल जवानी एका रंग, बिरध रूप समाया। सतिगुर पूरा सगला संग, आदि जुगादि निभाया। बिरहों कुठी मंगी मंग, बिरहों

विछोड़ा दए कटाया । मानस जन्म ना होए भंग, मानस लेखे लाया। आप सुहाए सुहावी सेज पलँघ, सच सिँघासण आप वछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आपणे दर, दर दास तरस कमाया।

✪ १६ चेत २०१६ बिक्रमी केसो राम दे घर दया होई पिण्ड सरहाली जंडोके ज़िला अमृतसर ✪

आदि पुरख सर्ब जीआ दाता, एका एकउँकारया। सृष्ट सबाई पिता माता, लक्ख चुरासी पसर पसारया। जन भगतां बन्ने चरन नाता, पुरख बिधाता दया कमा रिहा। शब्द जणाई साची गाथा, आपणा नाम धरा रिहा। जुगा जुगन्तर चलाए राथा, रथ रथवाही वेस वटा रिहा। सर्ब कल आपे समराथा, निरगुण जोत नूर उज्यारया। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, लोआं पुरीआं वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ धरा रिहा। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, अकल कला अख्वाईआ। शाहो भूप हरि शाह शाबाशा, सच सुल्तान तख्त सुहाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल फेरा पाईआ। दो जहानां पावे रासा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला वड वड्याईआ। इक्क अकल्ला अकल कल धार, आपणी कल वरतांयदा। इकउँकारा रूप अपार, दिस किसे ना आंयदा। सति पुरख निरँजण जोत उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आप आपणे अंग समांयदा। अलक्ख निरँजण नाम जैकार, आपणा नाअरा आपे लांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी बण सिक्दार, शाहो भूप वेस वटांयदा। आदि जुगादी बन्ने धार, शब्द ब्रह्मादी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा । निरगुण नूर पुरख अकाल, अकल कला अख्वाईआ। लक्ख चुरासी करे प्रितपाल, विष्नूं वंसी रूप वटाईआ। ब्रह्मा वेता बण दलाल, त्रैगुण जोड़ जुड़ाईआ। शिव शंकर रिहा आप संभाल, आपणी गोदी आप उठाईआ। करोड़ तेतीसा हो उज्यार, निरगुण नूर रुशनाईआ। सुरपति राजा ख़बरदार, इन्द्र इन्द्रासन वेख वखाईआ। रवि ससि पावे सार, जोती जोत डगमगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर विचार, गगन गगनंतर वेस वटाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, आप आपणा थान रखाईआ। धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब रखाईआ। शब्द अनादी हरि करतार, आपणा आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इकउँकारा खेल खिलाईआ। इकउँकारा इक्क अकल्ला, एका एक अख्वांयदा। आदि पुरख निरँजण वसे सच महल्ला, उच्च अटला आप रखांयदा। निरगुण दीपक निरगुण जोत आपे बला, प्रकाश प्रकाश आप उपांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन थिर

घर साचे आपे मल्ला, सच दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपांयदा। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आप लए उपजाईआ। आपणा रूप कर प्रतक्ख, आपे वेख वखाईआ। आपणा आपे करे वक्ख, आपणी वंड वंडाईआ। आपे वसे चुरासी लक्ख, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खिलाईआ। आदि जुगादी हरि हरि खेला, हरि साचा आप खिलांयदा। आप आपणी किरपा कर पंज तत्त मेला, पंचम पंचम जोड़ जुड़ांयदा। खेले खेल गुणी गहिंदा, गहर गम्भीर भेव ना आंयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आप अख्वांयदा। निरगुण धार जोत निरँकार, एका रंग रंगाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपे वेख वखाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे विच समाईआ। आप आपणा दए आधार, आप आपणी रचन रचाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, ब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। ना मरे ना पए जम्म विच संसार, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग करता आप अख्वाईआ। जग करता हरि करनेहारा, करनी किरत कमांयदा। लोकमात लै अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। मन मति बुध वस्सया बाहरा, काम कसाल मोह नेड़ ना आंयदा। आसा तृष्ना पार किनारा, माया ममता मोह चुकांयदा। आपणी वस्त सच भण्डारा, घर साचे आप टिकांयदा। शब्द अनादी सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। सुणे सुणाए सुनणेहारा, दिस किसे ना आंयदा। दिवस रैण ख़बरदारा, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। अमृत भरे ठंडी ठारा, सच सरोवर इक्क जणांयदा। बजर कपाटी लाए पाड़ा, आपणा मुख वखांयदा। साची सेजा हो त्यारा, सच सिँघासण इक्क सुहांयदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। सतिगुर रूप रूप करतारा, गुर गुर गुर आप अख्वांयदा। शब्द अगम्मी साची धारा, आपणी आप चलांयदा। सन्त सुहेले करे ख़बरदारा, सोए मात उठांयदा। जन भगत कराए वणज वणजारा, एका इक्क वखाए घर सच्चा घर बारा, दूजा दर ना कोए जणांयदा। नेत्र लोचन इक्क उग्घाड़ा, एका अक्खर वखांयदा। साची सखीआं लाया अखाड़ा, एका मंगल गांयदा। जगे जोत बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। धुर दरगाही साचा लाड़ा, लोकमात फेरा पांयदा। खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। जलां थलां वेखे डूँघी गारा, समुंद सागर फोल वरोल वखांयदा। जन भगतां करे आप प्यारा, आप आपणी दया कमांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता पार किनारा, दर दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, हरि साची वड वड्याईआ। जुग

जुग हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जगत विकारा देवे मथ, बहि हरि मति इक्क समझाईआ। इक्क वखाए साचा तत्त, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। अमृत आत्म बीज साचा वत्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेले खेल बेपरवाहीआ। पुरख निरँजण बेपरवाह, आदि जुगादि अख्वाया। जुग जुग बणे जगत मलाह, जुग जुग बेड़ा रिहा तराया। जुग जुग देवे नाम सलाह, नाम नामा आप वरताया। जुग जुग जन भगतां पकड़े बांह, भव सागर पार कराया। जुग जुग निथाव्यां देवे था, ग़रीब निमाणा गले लगाया। जुग जुग हँस बणाए काँ, जो जन सरनाई आया। जुग जुग जिस जन बणे पिता माँ, आप आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वल छल धार हरि निरँकार, अछल अछल्ल आप अख्वाया। अछल अछल्ल हरि हरि खेल, जुग जुग आप करांयदा। सन्त सुहेले साजण मेल, आप आपणा भेव चुकांयदा। आपे वसे रंग नवेल, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग नाम हरि निरँकारा, आपणा आप उपजाईआ। ओअँ रूप निराकारा, निरगुण धार चलाईआ। राम नाम सच जैकारा, साचा शब्द अलाईआ। कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, एका बंसरी नाम वजाईआ। ईसा मूसा ख़बरदारा, एका कलमा आप पढ़ाईआ। संग मुहम्मद चार यारा, ऐनलहक्क सुणाईआ। नानक साजण सच वणजारा, नाम सति वंड वंडाईआ। गोबिन्द गुर हो त्यारा, वाहिगुरू फ़तिह गजाईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। चार वरनां इक्क आधारा, एका करे पढ़ाईआ। इक्क वखाए सच दुआरा, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सुहाए बंक दुआरा, बंक दुआरा आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। हरि हरि आपणी धार बन्ह्हाए, हरि साचा सज्जण सुहेलया। जुगा जुगन्तर वेस वटाए, खेले खेल इक्क अकेलया। हरि का भेव कोए ना पाए, लेखा लिखे ना कोए ना कोई जाणे वक्त वेलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सज्जण सुहेलया। हरि का भेव भेव निराला, भेव कोए ना पांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग वेस करांयदा। कलिजुग अन्तिम बण दलाला, गुर शब्दी फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी वेखे काया डाल्ह, कवण फल तन रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नूर आप प्रगटांयदा। आपणा नूर आप उपा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्क अकल्ला फेरी पा, अकल कला वरताईआ। कूड़ी क्रिया दए मिटा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चार वरन बणाए भैण भ्रा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ग़रीब निमाणे बहाए एका थाँ, तख्त ताज ना कोए हंढाईआ।

नौ खण्ड पृथ्मी देवे एका छाँ, एका रंग रंगाईआ। दो जहानां करे सच न्याँ, चौदां तबकां फोल फोलाईआ। चौदां लोकां फेरा पा, एका राग रिहा सुणाईआ। सच सलोका ढोला गा, आपणा चोला आप बदलाईआ। सृष्ट सबाई तेरा तोला आप अख्वा, नाम कंडे तोल तुलाईआ। निरगुण विचोला इक्क अख्वा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, राज राजान ना कोए दसाईआ। ऊँचां नीचां इक्क कराउणा, एका शब्द करे पढ़ाईआ। राग अनादी एका गाउणा, एका मंगल गाईआ। राम कृष्ना रूप वटाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। इष्ट देव गुर आप मनाउणा, नेत्र नैण आप जणाईआ। कलमा अमाम इक्क पढ़ाउणा, कायनात फेरा पाईआ। निरगुण जोती डगमगाउणा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अल्ला राणी विच समाउणा, संग मुहम्मद कर कुड़माईआ। मक्का काअबा वेख वखाउणा, हक्क जनाबा सहिज सुभाईआ। नाम सति तेरा सति वरतार कराउणा, सति सति वज्जे वधाईआ। नानक निरगुण नूर धराउणा, गोबिन्द कर रुशनाईआ। वेद व्यासा भेव खुल्हाउणा, भेव अभेदा आप जणाईआ। पूत सपूता नाम उपजाउणा, ब्रह्मण गौड़ा थान सुहाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाउणा, बजर कपाटी सिला रखाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। सच सिँघासण आसण लाउणा, पावा चूल ना कोए रखाईआ। दीवा बाती इक्क जगाउणा, तेल वट्टी ना कोई पाईआ। कमलापाती मुख वखाउणा, अन्तिम झाकी एका पाईआ। अस्व घोड़ा राकी आप उठाउणा, सोलां कलीआं आसण उप्पर पाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान हरि निरँकार नाउँ रखाउणा, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। खड़ग खण्ड तेज़ प्रचण्ड ब्रह्मण्ड आप खड़काउणा, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वंड वडाउणा, वंडणहार दिस ना आईआ। कलिजुग भेख पखण्ड मुकाउणा, ख़ाली ठूठा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सच धार चलाईआ। कलिजुग तेरा लेख चुकाया, हरि गहर गुणी गहीरा। सृष्ट सबाई रिहा जगाया, मुल्लां शेख़ मुसायक पीरा। एका नाअरा रिहा लगाया, वेख वखाए शाह हकीरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे पीरन पीरा। पीर पैगम्बर औलीआ शेख़, आपे साचा वेख वखांयदा। आपे लावणहारा मेख, आपे जड़ उखड़ांयदा। सदी चौधवी धरया भेस, नूर इलाही मेल मिलांयदा। दर दुआरे होए दर दरवेश, अल्फ़ अल्फ़ी एका पांयदा। पकड़ उठाए नर नरेश, शाह नवाब सर्ब मिटांयदा। लै अंगड़ाई बाशक शेष, सहँसर मुख सालांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम रुत, हरि सज्जण वेख वखांयदा। वेखणहारा पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, आप आपणा रूप प्रगटांयदा।

पंच विकारा रिहा लुट्ट, सति सन्तोख ना कोए वखांयदा। मनमति वासना होई खोट, गुरमति ना कोए जणांयदा। साधां सन्तां भरी ना पोट, माया तृष्ना अग्न वधांयदा। जत सति ना दिसे तेड़ लंगोट, काम क्रोध हलकांयदा। बिन गुरमुख विरले पारब्रह्म तेरी कोए ना रक्खे ओट, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी गई भुल्ल, हरि का भेव कोए ना पांयदा। गुर का शब्द वेचण मुल, करता कीमत कोए ना पांयदा। राम नाम गया रुल, साचा हट्ट ना कोए वखांयदा। वरनां बरनां प्या घोल, जगत अखाड़ा इक्क सुहांयदा। जूठ झूठ रिहा डोल, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। अमृत आत्म साची मिले ना किसे पौहल, अमृत रस ना कोए चवांयदा। सतिगुर पूरा दिसे किसे ना कोल, रसना जेहवा सर्ब जग गांयदा। गुरमुख विरले अन्दर वज्जे अनहद ढोल, जिस जन आपणी दया कमांयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, जन भगतां मेल मिलांयदा। आपे होए कला सोल, ग़रीब निमाणा आप अख्वांयदा। आपे घट घट अन्दर रिहा बोल, आपे मुख छुपांयदा। आपे उलटा करे नाभ कँवल, निझर धारा आप वखांयदा। आपे कान्हा कृष्ना साँवल सँवल, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वांयदा। आपे जोत निरँकारी वसे उप्पर धवल, आपे पंज तत्त नानक डेरा लांयदा। आपे गुर गोबिन्द कीता कौल, कौल कलिजुग अन्तिम पूर करांयदा। गुर का बचन ना मेटे कोई रत्ती चौल, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। हरि हरि नाउँ हरि बनवारी, हरि हरि पैज रखाईआ। हरि जोत निरगुण धारी, निरवैर आप समाईआ। अकाल मूर्त खेल न्यारी, भेव कोए ना पाईआ। जूनी रहित वड सिक्दारी, सच सिक्दार आप अख्वाईआ। आवे जावे वारो वारी, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। हरि का नूर जोत ज्वाला, एका रंग समाया। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, दीनां नाथां ल्ए तराया। चार वरन वखाए इक्क सच्ची धर्मसाला, काया मन्दिर कुण्डा लाहया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाला, काल महांकाला वेख वखाया। नाम पहनाए सच दोशाला, झूठा बस्त्र रहिण ना पाया। फल लगाए एका डाल्ह, एका मुख खवाया। आपे शाह आपे कंगाला, नाम धन ख़ज़ाना आपणे हथ्थ रखाया। आदि जुगादी आपे जाणे आपणी आणा, वेद कतेब भेव ना राया। जुगा जुगन्तर वरते भाणा, हरि भाणे विच समाया। कलिजुग मेटे झूठा राणा, झूठी रईयत वेख वखाया। जन भगतां देवे आत्म अन्तर इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म जणाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोए वखाना, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपजाया। उपज्या नाउँ हरि

गोबिन्द, हरि सतिगुर पुरख सुल्तानया। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, देवे दरस श्री भगवानया। दाता दानी गुणी गहिंद, वेख वखाए दो जहानया। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, जो जन रक्खे चरन ध्यानया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, दरगाह साची ना कोए टिकानया। अबिनाशी करता ना कोई सोग ना कोई चिन्द, एका रंग रंगानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगटे जोद्धा सूरबीर बली बलवानया। जोद्धा सूरबीर हरि निरँकार, जोती नूर अकालया। नाम खण्डा तेज़ कटार, तिक्खी धार आप रखा ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव करे ख़बरदार, वेले अन्त आप उठा ल्या। देवत सुर दए हुलार, गण गंधर्ब सुरत संभालया। लोकमात करे ख़बरदार, नौ खण्ड फेरा पा ल्या। सत्तां दीपां जोत उज्यार, एका नूर डगमगा ल्या। लक्ख चुरासी पावे सार, आपणा रूप आप वटा ल्या। जोती जामा भेख न्यार, पंज तत्त ना कोए उपा ल्या। मन मति बुध ना कोए प्यार, ब्रह्म रूप ना कोए समा ल्या। निरगुण खेले खेल हरि निरँकार, जोत अगम्मी इक्क जवाल्या। आदि शक्ति पहरेदार, साचा मन्दिर इक्क रखा ल्या। चार कुन्ट धूंआँधार, अज्ञान अन्धेरा एका छा रिहा। सृष्ट सबाई हाहाकार, रसना जेहवा सर्ब कुरला रिहा। धरनी धरत करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहा ल्या। चार लक्ख बत्ती हज़ार रोवे वारो वार, कलिजुग तेरा लम्भा पन्ध तेरे पापां अन्त मुका ल्या। धर्म राए मंगे मंग बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाह रिहा। चित्रगुप्त लेख लिखार, आपणा लेखा आप रखा ल्या। लाड़ी मौत कर शृंगार, मुख घूंघट एका पा ल्या। मंगे वर नार भतार, कुँवारी कन्या नैण उठा ल्या। बेमुखां कलिजुग करे प्यार, सम्मत सोलां सगन मना ल्या। हाढ़ सतारां मैंहदी रंगण रंग लाए अपार, लाल गुलाला रंग चढ़ा ल्या। लहिंदी कूटे जाए नार मुटयार, सिर आपणा पल्लू लाह ल्या। उम्मत नबी रसूल बांह हुलार वाजां रही मार, साचा सगन मुख लगा ल्या। पुरख अबिनाशी वेखे खेल वेखणहार, करता करनी आप करा रिहा। मुख छुपायण चार यार, संग मुहम्मद पिठ वखा ल्या। मक्का काअबा पावे सार, परवरदिगार मुख नकाब पर्दा पा ल्या। हाजी हज्ज करे विच संसार, मुल्लां काज़ी दिस ना आ रिहा। सृष्ट साजण साची साजणहार, अन्तिम आपे वेख वखा ल्या। कूड़ कुड़यारे निमाज़ी जाण हार, सच सुच्च नाम निशाना एका ला ल्या। अन्तिम ढहि ढहि होए ख्वार, मूंह दे भार सुटा ल्या। ईसा मूसा उत्तों पाए भार, प्रभ साचे हुक्म जणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका शब्द वजा ल्या। शब्द वजाए साचा डंक, लोआं पुरीआं आप जणाईआ। आप उठाए राउ रंक, राज राजानां आप हिलाईआ। प्रगट होया वासी पुरी घनक, सम्बल नगरी इक्क सहाईआ। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाईआ। शब्द जोती लाए तनक, सुत्ती सुरत

३८०

०८

उठाईआ। जिस जन कढ्ढे आपणा शंक, आप आपणा रूप दरसाईआ। आपे फेरे मनुआ मणक, मन चिन्दया रहे ना राईआ। खेले खेल बार अनक, जुग जग वड वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम करे कुड़माईआ। नाम खण्डा तीर कमाना, हरि चिल्ले आप चढ़ाया। खेले खेल दो जहानां, लोकमात फेरा पाया। जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना, पारब्रह्म आप अख्वाया। जूठा झूठा मेटे निशाना, थिर कोए रहिण ना पाया। रथ रथवाही कृष्ना कान्हा, जन भगतां रथ चलाया। राम रूप हो प्रधाना, रावण लंका गढ़ दए तुड़ाया। नानक नाम सति नौजवाना, ना मरे ना जाया। गुर गोबिन्द बद्धा हथ्थीं गाना, कलिजुग तेरा सगन मनाया। अन्तिम प्रगट होए सूरबीर बली बलवाना, निहकलंका नाउँ रखाया। गुरमुखां देवे पद निरबाणा, चौथे पद आप समाया। एका राग अनहद गाणा, दिवस रैण रिहा सुणाया। सोहँ शब्द कर परवाना, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याआ। सतिजुग तेरा इक्क बबाना, चार वरनां लए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम अन्तिम खेल खिलाया। चार वरनां इक्क बबान, एका शब्द उडाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका नाम पढ़ाईआ। चार वरनां इक्क ईमान, एका कलमा गाईआ। चार वरनां एका राम, एका राम सरनाईआ। चार वरनां एका काहन, एका गोपी सर्ब अख्वाईआ। चार वरनां इक्क सलाम, एका निउँ निउँ सीस झुकाईआ। चार वरनां एका दान, एका झोली रिहा भराईआ। चार वरनां इक्क इशनान, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। चार वरनां एका माण, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। चार वरनां एका पीण खाण, अमृत आत्म आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चार वरनां एका ब्रह्म, एका ब्रह्म वखाईआ। चार वरनां एका धर्म, एका धर्म जणाईआ। चार वरनां एका कर्म, निहकर्मी आप कराईआ। चार वरनां एका सरन, सरनगत इक्क जणाईआ। चार वरनां खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण इक्क वखाईआ। चार वरन चुकाए मरन डरन, जो जन हरि हरि रसना गाईआ। चार वरन दुआरा तरनी तरन, तारनहार हरि रघुराईआ। चार वरनां एका बरन, अठारां बरन रहे शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। चार वरनां एका ओट, एका घर सुहांयदा। चार वरनां एका शब्द नगारे लग्गे चोट, एका राग सुणांयदा। चार वरनां कढ्ढे खोट, दुरमति मैल धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या इक्क दृढ़ा, एका इष्ट वखाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, वाह वाह गुर गुरू वड्डी वड्याईआ। राम नाम होए सहा, सीता सुरती लए प्रनाईआ। कान्हा कृष्ना मोर मुकट सीस सजा, मण्डल रास इक्क रचाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका उपजे नूर अलाहीआ। नूरी अल्ला इक्क अलाह, अलाही नूर अख्वाया। इक्क महल्ला दए वसा, एका दर वखाया। इक्क अकल्ला फेरा पा, परवरदिगार नाउँ धराया। इक्क मसल्ला धरत वछा, उप्पर आसण लाया। कलिजुग वुज़ू रिहा करा, नीर एका हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका ढोला रिहा सुणाया। एका ढोला हरि मृगिन्द, आपणा आप सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेटे चिन्द, बीस इकीसा वड वड्याईआ। नाम धारा सागर सिन्ध, कूड़ कुड़यारा दए रुढ़ाईआ। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण अन्दर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जगत विद्या ना रिहा पढ़, राम नाम इक्क पढ़ाईआ।

३८१
०८

✪ २० चेत २०१६ बिक्रमी सज्जण सिंघ दे घर सरहाली जंडोके ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल एका एक, आदि जुगादि रखाईआ। आदि निरँजण रिहा पेख, जुग जुग वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्खणा अलेख, अलख निरँजण वड वड्याईआ। नर हरि नरायण नरेश, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी एकउँकारा, अकल कला अख्वांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव कोए ना पांयदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूर नूर डगमगांयदा। तत्व तत्त ना दए पसारा, रूप रंग ना कोए जणांयदा। थिर घर सोहे सच दुआरा, सचखण्ड निवासी आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अख्वांयदा। आदि जुगादी पुरख अबिनाशा, एका रंग समाया। एका पावे मण्डल रासा, एका वेख वखाया। एका खेले खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क रघुराया। आदि जुगादी शाहो भूप, सच सुल्तान अख्वांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, चक्र चिन्ह ना कोए वखांयदा। निर्मल रूप सति सरूप, सदा सद डगमगांयदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जोत जगांयदा। आदि जुगादी जोत उजाला, हरि हरि रूप वटाया। खेले खेल खेल निराला, लेखा लेख ना किसे लिखाया। आदि शक्ती रूप ज्वाला, आप आपणा नाउँ धराया। आपे चले आपणी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। वसे धर्म सच्ची धर्मसाला, दर दुआरा इक्क उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटाया।

आदि जुगादी वेस अवल्ला, हरि आपणा आप करांयदा। खेले खेल इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रलांयदा। वसे नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ला आप सुहांयदा। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा संग निभांयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, आप आपणा आसण लांयदा। आपणे दीपक आपे बला, प्रकाश प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जोग कमांयदा। आदि जुगादी हरि हरि जोग, आपणी बणत बणांयदा। आपणा कर आप संजोग, आपणा मेल मिलांयदा। आपे भोगे आपणा भोग, भोग भोगी नाउँ रखांयदा। आपे जाणे आपणा सच सलोक, शब्द अगम्मी आप रखांयदा। आप उपाए लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। आदि जुगादी हरि हरि खेला, आपणी रचन रचांयदा। शब्द गुरू गुरु गुर चेला, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, पारब्रह्म प्रभ साचा संग निभांयदा। एकउँकारा वस्सया रंग नवेला, निराधार आप हो जांयदा। अचरज खेल आपणा खेला, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी नाउँ रक्ख, आपणी जोत प्रगटाईआ। शब्द सरूपी हो प्रतक्ख, एका डंक वजाईआ। आप आपणा कीना वक्ख, विष्नूं रूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। आप आपणा वेस वटंदड़ा, महिमा गणत अगणत। अलक्ख अगम्म अथाह आप अख्वंदड़ा, पुरख अबिनाशी साचा कन्त। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, वसणहारा आदि अन्त। सचखण्ड दुआरा वेख वखंदड़ा, आप बणाए आपणी बणत। सच सिँघासण सेज वछंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आप बणाए आपणी बणत। बणत बणाए हरि बनवारी, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। निरगुण जोत नूर उज्यारी, हरी हरि आप डगमगाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसारी, बैठा आसण लाईआ। शब्दी शब्द वणज वपारी, चौदां हट्ट खुल्हाईआ। चौदां लोकां खेल अपारी, आपणी धार बंधाईआ। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न शिव गुण पुकारी, साची सेव कमाईआ। मण्डल मण्डप दए सहारी, रवि ससि कर रुशनाईआ। करोड़ तेतीसा खेल न्यारी, सुरपति राजा संग रलाईआ। त्रैगुण तेरा मेला सच दुआरी, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण होया ख़बरदारी, मन मति बुध विच रखाईआ। पारब्रह्म जोत निरँकारी, निरगुण वेस वटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर उज्यारी, घट घट आपणा आसण लाईआ। लोकमात वेख विचारी, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, धुन अनाद इक्क सुणाईआ। शब्द अनादी धुन धुन्कार, हरि साचा आप सुणांयदा। करे कराए

ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पांयदा। एका नाम इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। एका साजण मीत मुरार, ना दूसर कोए वखांयदा। जुग जुग खेले खेल आप निरँकार, करता करनी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। आदि जुगादी शब्द तूर, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाईआ। देवत देव सुर आसा मनसा पूर, इष्ट देव आप हो जाईआ। आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, नर नरायण वड वड्याईआ। आपे वसे नेड़े दूर, दूर नेड़ा इक्क जणाईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी एका रंग, हरि साचा आप चढ़ांयदा। आपे सर सरोवर धारा गंग, नीर सीर आप अख्वांयदा। आपे नाम शब्द वज्जे मृदंग, आप आपणा राग अल्लांयदा। आपे बैठा सच पलँघ, साची सेजा आप सुहांयदा। आपे मंगी आपणी मंग, आपणी भिच्छया आपे झोली पांयदा। आपे अस्व घोड़े कसे तंग, सोलां कलीआं आसण लांयदा। आपे लोआं पुरीआं जाए लँघ, आर पार वेख वखांयदा। आदि जुगादी जुग जुग जन भगतां वसे सदा संग, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला वेख वखांयदा। जोत ज्वाला साचा नूर, हरि साचे आप उपाया। आपे बख्शे सति सरूर, सांतक सति वरताया। हरिजन हरि हरि आसा मनसा पूर, हरि गोबिन्द वेख वखाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक्क समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, हरिजन आप दृढ़ांयदा। अट्ठे पहर इक्क ध्यान, एका लिव रखांयदा। राम नाम पीण खाण, काया तृप्त करांयदा। सर सरोवर इक्क अशनान, दुरमति मैल धुवांयदा। डूँघी कवरी वेखे हरि मेहरवान, आप आपणा नैण उठांयदा। देवे शब्द सच बबान, गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। अनहद मंगल सारे गान, गहर गम्भीर आप सुणांयदा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ान, दूई द्वैती कुंडा लांहयदा। आपे मेटे पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। जगत तृष्ना सर्ब मिट जाण, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा। मेल मिलावा साचे काहन, साचा सईया नज़री आंयदा। काया मन्दिर सच मकान, घर घर विच आसण लांयदा। आत्म सेजा हरि भगवान, जोती नूर डगमगांयदा। गुरमुखां करे आप पछान, चतुर्भुज आपणी भुज उठांयदा। देवे दरस दर महान, दर्द दु:ख गवांयदा। दो जहानी निगहबान, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटांयदा। आदि जुगादी वेस वटाया, कलिजुग वज्जी वधाईआ। चारों कुन्टां फेरा पाया, दहि दिशा वेख वखाईआ। मन मति रही कुरलाया, उच्ची कूके दए दुहाईआ। जूठ झूठ मट्ठ तपाया, माया ममता अग्नी डाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार फिरे

हल्काया, घर घर अलक्ख जगाईआ। वरन अवरनां भेड़ भड़ाया, दिवस रैण रहे लड़ाईआ। साधां सन्तां हठ गंवाया, जत सत ना कोए वखाईआ। तीर्थ तट्टां वेसवा घर बणाया, नारी पुरष नंगे रहे तारीआ लाईआ। गुरदुआरे शिवदवाले मन्दिर मट्ठ एका मन ना किसे बंधाया, मन ममता करे चतुराईआ। पंडत पांधे मस्तक तिलक ललाट लगाया, जोत ललाट नज़र ना आईआ। मुल्लां शेख़ बग़ल कुरान उठाया, सच हदीस ना कोए पढ़ाईआ। वेद पुराणां रसना गाया, पारब्रह्म मिली ना सच सरनाईआ। नानक बाणी रसन अलाया, रसना रस ना कोए वखाईआ। पंज तत्त ना अग्नी कोए बुझाया, धूंआँधार सृष्ट सबाईआ। ब्रह्म मति ना कोए समझाया, एका रूप ना कोए दरसाईआ। आत्म साचे वत हरि का नाम बीज ना किसे बिजाया, लक्ख चुरासी जूठ झूठ करे कुड़माईआ। नेत्र तीजा नैण ना किसे खुलाया, दोए लोचण मुख टिकाईआ। चौथे पद ना कोए समाया, घर मिल्या ना साचा माहीआ। पंचम शब्द धुन अनाद काया मन्दिर अन्दर ना किसे वजाया, ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। बजर कपाटी जिंदा ना किसे तुड़ाया, उच्चे मन्दिर रहे ढाहीआ। मन बन्दर बन्नू ना किसे वखाया, गोरख मच्छन्दर रहे ध्याईआ। डूँघी कन्दर हरि का दीप ना किसे जगाया, कलिजुग कूड़ी करी रुशनाईआ। सति सरूप ना दर्शन पाया, मेल मिलावा ना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी धार चलाईआ। आपणी धार आप चलाए, एका एकउँकारया। जुगा जुगन्तर वेस वटाए, खेले खेल अगम्म अपारया। सतिजुग त्रेता पार लँघाए, तोड़नहारा गढ़ हंकारया। द्वापर तेरा लेख चुकाए, रथ रथवाही बण मुरारया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, संग मुहम्मद चार यारया। नानक गोबिन्द लेख लिखाए, लिख्या लेख ना कोए मिटा रिहा। निरगुण नूर नूर डगमगाए, जोती जामा भेस वटा रिहा। शब्द डंका इक्क वजाए, ना दूसर किसे हथ्थ फड़ा रिहा। राउ रंकां आप उठाए, शाह सुल्तानां आप हला रिहा। दो जहानां खेल खिलाए, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। गुरमुख साजण आप जगाए, आप आपणी दया कमा रिहा। कोटां विच्चों कोई प्रगटाए, अलख अलखना नाउँ धरा रिहा। जुग जुग विछड़े मेल मिलाए, जगत विछोड़ा आप कटा रिहा। सस्से उप्पर होड़ा एका लाए, निरगुण सरगुण वेख वखा रिहा। हँ ब्रह्म प्रभ मेल मिलाए, पारब्रह्म प्रभ जोत जगा रिहा। सोहँ रूप प्रभ नज़री आए, ओअँ रूप आप अख्वा रिहा। नाम सति सति आप वरताए, नौ खण्ड एका नाअरा ला रिहा। करता पुरख आपणी करनी कर वखाए, ना कोई मेटे मेट मिटा रिहा। अकाल मूर्त इक्क दरसाए, एका नज़री आ रिहा। जूनी रहित भेव ना राए, वेद कतेब ना कोए जणा रिहा। खाणी बाणी आप उपाए, आपणी शब्दी धार बन्ना रिहा। आपणा लेखा आप जणाए, लेखा लिखणहार आप अख्वा रिहा। दस दस्मेसा नाउँ रखाए, दर दरवेशा

अलख जगा रिहा। धारी केसा आप तराए, मूंड मुंडाए गले लगा रिहा। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई ना कोए जणाए, जो जन रसना गाए, कर किरपा पार करा रिहा। एका इष्ट सर्ब समझाए, राम कृष्न रूप अवतारया। ईसा मूसा नूर उपाए, एक रूप दरसा रिहा। सच मुहम्मद वेस वटाए, हक्क हकीकत मेल मिला रिहा। लाशरीक इक्क खुदाए, महिबान बीदो नाम धरा ल्या। नानक मन्त्र इक्क दृढ़ाए, एका नाम जपा ल्या। गोबिन्द फ़तिह इक्क गजाए, वाह वा गुरू मना ल्या। सभ दा दाता बेपरवाहे, आदि पुरख आप अख्वा ल्या। जुग जुग आपणा वेस वटाए, आप आपणा रूप वटा ल्या। कलिजुग अन्तिम वेस वटाए, निहकलंक हरि अख्वा रिहा। वासी पुरी घनका घर साचे डेरा लाए, लोकमात आप तजा ल्या। पंज तत्त ख़ाकी ख़ाक मिलाए, मनमुखां सिर छार पा ल्या। गुरमुखां ताकी आप खुल्हाए, आपणा पर्दा आप लाह ल्या। सच्चा साकी अमृत जाम प्याए, मदिरा मास गंवा ल्या। बांकी चाल इक्क रखाए, दो जहानां वेख वखा ल्या। कलिजुग अन्तिम आकी कोई रहिण ना पाए, राज राजानां मेट मिटा ल्या। हरिजन तेरा लहिणा देणा बाकी आप चुकाए, जुग जुग धार रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग धरनी धरत धवल सुहा ल्या।

✪ २० चेत २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

निरगुण जोत हरि भगवान, एकउँकार आदि जुगादया। सति सरूप खेल महान, खेले खेल विच ब्रह्मादया। इक्क उपाए सच निशान, नाम वजाए साचा नादया। थिर घर वसे सच मकान, आप आपणा साजण साज्जया। खेले खेल दो जहान, आप रचाए आपणा काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रक्खे आपणी लाज्जया। आदि पुरख हरि निरँकारा, हरी हरि आप अख्वाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। शब्द अगम्मी सच धुन्कारा, धुन अनादी आप उपाईआ। लोआं पुरीआं कर पसारा, शब्द सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा खेल खिलाईआ। एकउँकारा हरि रघुनाथ, अकल कला अख्वांयदा। जुग जुगन्तर आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। हरि नाम चलाए साची गाथ, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप निभाए आपणा साथ, सगला संग आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म, ना मरे ना जाईआ। आपणी अणस एका ब्रह्म, आपे रिहा उपाईआ। आप जणाए आपणा कर्म, करनी करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटाईआ। आदि निरँजण

पुरख बिधाता, एका एक अख्वांयदा। आपणा बन्ने आपे नाता, आपे जोड़ जुड़ांयदा। आपे पिता आपे माता, बाल रूप आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी ज़ाता, वरन गोत ना कोए रखांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, आपणी कल वरतांयदा। आपणा खोल्ह आपे ताका, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। आपे सज्जण आपे साका, साक सैण आप अख्वांयदा। आप आपणा बणे राखा, आपणी सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपांयदा। नूर अकाला जोत अकाली, हरि आपणी आप उपाईआ। आदि जुगादी खेल निराली, जुग करता वेस वटाईआ। जुग जुगन्तर चले चाली, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। दरगाह साची साचा माली, लक्ख चुरासी बूटा लाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव करे सवाली, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। आपे त्रैगुण करा दलाली, पंज तत्त आप विकाईआ। आपे पाए आपणा जंजाली, आपे तोड़ तुड़ाईआ। आपे आपणे हथ्थां रक्खे ख़ाली, नाम धन इक्क छुपाईआ। आपणा अमृत आपे मार उछाली, सर सरोवर आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, एका रूप समांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतारा, लोकमात वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण कर प्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। आप आपणा कर पसारा, हरि आपे वेख वखांयदा। आप आपणी बन्ने धारा, आपे मार्ग लांयदा। आप आपणा करे वणज वपारा, आप आपणा हट्ट खुल्हांयदा। आपे हरि हरि नाम बणे वरतारा, हरि नामा आप वरतांयदा। आपे भगतां मीता मीत मुरारा, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। आपे सन्तन देवे सच हुलारा, शब्द हुलारा इक्क रखांयदा। आपे हरिजन साचा करे प्यारा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा खेल खिलांयदा। एकउँकारा नर नरायण, नर नरायण अख्वाईआ। आपे वेखे आपणे नैण, दूसर दिस किसे ना आईआ। आप चुकाए आपणा लहिण देण, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोत उज्यारी हरि निरँकारी, एका रूप दरसाया। पावे सार रवि ससि सतारी, मण्डल मण्डप वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव नेत्र नैण रिहा उग्घाड़ी, आप आपणी दया कमाया। आपे लक्ख चुरासी कर पसारी, आपे मुख छुपाया। आपे जन भगतां देवे नाम ख़ुमारी, दिवस रैण एका रंग रंगाया। आपे वेखे काया मन्दिर डूँघी कन्दर रैण अँध्यारी, आप आपणा आसण लाया। आपे जोत निरँजण कर उज्यारी, आप आपणा रूप दरसाया। आपे अनहद शब्द सच्ची धुन्कारी, ताल तलवाड़ा आप वजाया। आपे अमृत आत्म सर सरोवर ठंडी ठारी, नाम प्याला आप प्याया। आपे दुरमति मैल रिहा उतारी, एका रंगण रंग रंगाया। आपे गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़ी, जुग जुग सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनेहार आप

अख्वाया। करनेहार हरि भगवन्त, भगवन वड वड्याईआ। जुग जुग मेला साचे सन्त, सन्त साजण आप उठाईआ। मनमुखां माया पाए बेअन्त, गूढ़ी नींद सवाईआ। गुरमुख मेला नारी कन्त, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगत, दूई द्वैती दए मिटाईआ। मनमुख जीव भुक्खे नंगत, दर दर दए दुरकाईआ। पारब्रह्म तेरी साची संगत, तेरे रूप समाईआ। गुरमुख अंग लगाए जिउँ नानक अंगद, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण मेला सरगुण धार, शब्दी शब्द उपाया। निरगुण जोती कर उज्यार, सरगुण दीवा आप जगाया। निरगुण कमलापाती कन्त भतार, सरगुण नारी लए प्रनाया। निरगुण बूंद स्वांती ठंडी ठार, सरगुण कँवला मुख चुआया। निरगुण खोल्हे बन्द ताकी बन्द किवाड़, सरगुण दूई द्वैती पर्दा लाहया। निरगुण जोत प्रकाश करे बहत्तर नाड़, सरगुण अन्ध अन्धेर मिटाया। निरगुण मेट मिटाए पंचम धाड़, सरगुण साची बूझ बुझाया। दोहां विचोला शब्द सिक्दार, लोकमात फेरा पाया। आवे जावे विच संसार, जुग जुग वेस वटाया। ब्रह्मा वेद पाए ना सार, चारे मुख सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाम धराया। जुग जुग आपणा नाम धराए, धरती धवल सुहांयदा। नाम निधाना हरि भगवाना इक्क वखाए, जन भगतां वंड वंडांयदा। धुर फ़रमाना आप सुणाए, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। नाद तराना इक्क वजाए, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। गुरमुख सोए आप उठाए, अनहद सेवा लांयदा। अन्दर मन्दिर मेल मिलाए, डूँघी कुन्दर वेख वखांयदा। मनमुख बन्दर रिहा नचाए, चारों कुन्ट फरांयदा। नौ दुआरे कर हलकाए, घर घर अलक्ख जगांयदा। जन भगतां सच सरनाए, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। पारब्रह्म प्रभ अगम्म अथाहे, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस कर, सति सरूप समाया। सतिजुग लेखा अग्गे धर, आपे वेख वखाया। त्रेता त्रीया गया हर, राम नाम दृढ़ाया। द्वापर तेरा चुक्कया डर, कान्हा कृष्ना वेख वखाया। कलिजुग अग्गे वेखे खड़, आप आपणा रूप वटाया। लक्ख चुरासी चार कुन्ट दहि दिशा जूठ झूठ रही लड़, सच सुच्च ना कोए वखाया। त्रैगुण अग्नी रही सड़, पंज तत्त जलाया। रसना सारे रहे पढ़, हिरदे हरि किसे ना वसाया। उच्चे मन्दिर पौड़ीआं रहे चढ़, काया मन्दिर चढ़ दरस किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि बलकार, आपणा रूप वटांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, निरगुण आप अख्वांयदा। खड़ग खण्डा नाम तेज़ कटार, पारब्रह्म हथ्थ उठांयदा। नाम चिल्ला तीर कमाण, सोहँ भथ्था इक्क वखांयदा।

जोद्धा सूर बली बलवान, चिट्टे आसव तंग कसांयदा। नीली धार कर परवान, आप आपणी चाल चलांयदा। लोकमात वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड फेरा पांयदा। सृष्ट सबाई जीव निधान, हरि का भेव कोए ना पांयदा। जगत विद्या रहे वखाण, आत्म ब्रह्म ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, हरि सच सच्ची वड्याईआ। जोती जामा भेख वटाया, दिस किसे ना आईआ। सोहँ ढोला साचा गाया, हँ ब्रह्म रहिण ना पाईआ। आपणा चोला आप बदलाया, आपणी करनी आप कमाईआ। साचा बोला आप अलाया, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। दो जहानां तोला आप अख्वाया, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा नाउँ धराईआ। कलिजुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप धरांयदा। जोती नूर हो उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, सतिगुर नाअरा एका लाइदा। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप उठांयदा। ऊँचां नीचां इक्क प्यार, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। दूती दुष्ट करे ख्वार, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। इक्क वखाए सच दुआर, दर दरवाजा आप खुलांयदा। चार वरनां दए अधार, एका शब्द सुणांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार आप अख्वांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण जोत जगांयदा। गोबिन्द मेला शब्द प्यार, सम्बल नगरी धाम वखांयदा। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, चेला गुर आप हो जांयदा। ख़ालक ख़लक विच रिहा पसार, घट घट आपणा आसण लांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम रेख काली धार, निरगुण नूर इक्क चमकांयदा। आप आपणा लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि हरि रामा, हरि साची रेख जगाईआ। आप वजाए शब्द दमामा, चोट नगारे इक्क लगाईआ। पूरा करे अन्तिम कामा, आप आपणा कर्म कमाईआ। घट घट मीता अन्तरजामा, गति मित आप जणाईआ। रूप अनूप घनईआ शामा, एक एक दरसाईआ। नानक निरगुण खेल महाना, सरगुण डेरा लाईआ। गोबिन्द मेला दो जहाना, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आप अख्वाईआ। निहकलंक हरि निरँकारा, हरि हरि रूप अख्वांयदा। लोकमात लै अवतारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। संग मुहम्मद चार यार पावे सारा, आप आपणा मूल चुकांयदा। चौदां चौदस खोल्ह किवाड़ा, चौदां चौदां हट्ट विकांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे इक्क अखाड़ा, एका राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेस वटांयदा। निहकलंक सर्ब जग मीता, जागरत जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक्क अतीता,

निरगुण वेस वटाईआ। आदि जुगादी ठंडा सीता, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जुग जुग चलाए आपणी रीता, एका शब्द कर रुशनाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। नाम निधान वखाए इक्क अनडीठा, आप आपणा धाम सुहाईआ। जिस जन वस्सया आपे चीता, चित वित ठगौरी ना पाईआ। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावन बेपरवाहीआ। गुरमुख विरले मानस जन्म लोकमात जीता, लक्ख चुरासी आपणे गेड़ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरनां वेख वखाईआ। वेखणहारा हरि समरथ एक एकउँकारया। जुग जुग चलाए आपणी गाथ, आप आपणा शब्द उचारया। आपे होए त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं दए सहारया। आपे पूजा आपे पाठ, रसना जेहवा आप हिला रिहा। आपे वेद मन्त्र शास्त्र सिमरत मारे ठाठ, गायत्री मन्त्र आप अख्वा रिहा। आपे अञ्जील कुराना हाठ, आयत शरायत जणा ल्या। आपे रस्सया रस अमृत एका रिहा चाट, आपे मुख भुवा ल्या। आपे हर घट सुत्ता आत्म सेजा साची खाट, पावा चूल ना कोए उपा ल्या। आपे विके हाटो हाट, चौदां हट्टां डेरा ला ल्या। आपे आपणे बस्त्र जाए पाट, शब्द दुशाला आप उठा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोत ज्वाला वेख वखा ल्या। कलिजुग तेरा हरि मलाह, अन्तिम आप अख्वाईआ। जूठा झूठा बेड़ा दए डुबा, माया ममता संग रलाईआ। गुरमुख साजण ल्ए जगा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। कमलापाती दरस दिखा, दर्द दुःख मिटाईआ। जम की फाँसी दए कटा, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। रसन स्वासी वेख वखा, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कलिजुग बेड़ा डूँघा सागर, हरि हरि वेख वखांयदा। चार कुन्ट ना दिसे कोए सौदागार, नाम वणजारा ना कोए अख्वांयदा। हउमे हँगता भरी काया गागर, माया ममता मोह रखांयदा। हरिजन विरले कर्म होए उजागर, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। देवे नाम रत्ती रत्नागर, हीरा लाल अमोलक गुरमुख साजन आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरी हरि आप अख्वांयदा। हरी हरि विष्नूं भगवाना, विश्व रूप समाया। चार वरनां देवे इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म बुझाया। चार वरनां देवे एका दाना, एका वस्त झोली पाया। चार वरन बहाए इक्क मकाना, चरन दुआरा इक्क वखाया। चार वरनां बन्ने एका गाना, एका सगन मनाया। चार वरनां रक्खे एका माणा, ऊँच नीच मेट मिटाया। ना कोई दीसे राजा राणा, शाह सुल्तान ना कोए अख्वाया। कलिजुग अन्तिम खेले खेल दो जहाना, लोकमात फेरा पाया। धर्म झुलाए इक्क

निशाना, सत्तां दीपां आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप हो जाया। सत्त रंग निशान आप झुलाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। सत्ता दीपां आप उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाउणा, हरि का लेख ना कोए मिटाईआ। ब्रह्मा वेता अन्त समाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शिव शंकर आपणा मेल मिलाउणा, आप आपणे अंक समाईआ। सुरपति राजा तख्तों लौहणा, तख्त ताज तजाईआ। आप आपणा मार्ग लाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग साचा राह चलाउणा, सच सुच्च कुड़माईआ। हरि जैकारा इक्क सुणाउणा, एका अलख अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। हरि हरि भेव जाए खुल्ह, कलिजुग अन्तिम वारीआ। लक्ख चुरासी जाए रुल, ना देवे कोए सहारीआ। राज राजानां शाह सुल्ताना ना पए कोए मुल्ल, फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ीआ। पत्त डाल्ही ना दिसे फुल्ल, हरी दिसे ना कोए क्यारीआ। कलिजुग दीवा होए गुल, अन्तिम दिसे रैण अँध्यारीआ। किसे ना अग्नी दिसे चुल्ह, अग्नी तत्त ना कोए उपकारीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसंगत विरला नाम कंडे जाए तुल, सतिगुर पूरा करे वणज वपारीआ। गुर गुर चरन प्रीती जाए घुल, गुर गोबिन्द दरस अपारीआ। कलिजुग बूटा रिहा हुल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी वेखे घर, घर घर विच फेरा पा रिहा। हरि फेरा घर पाया, सुत्ती सर्ब लोकाई। पंचां चोरां डेरा लाया, सुरत सवाणी ना लए अंगड़ाई। राम नाम ना रिदे वसाया, सति नाम ना होई कुड़माई। फतिह डंका ना किसे वजाया, वाहिगुरू फतहि ना कोए कराई। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण धार एकउँकार जोत उज्यार दिस किसे ना आया, सृष्ट सबाई होई हलकाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आदि जुगादी जोत धर, जन भगतां मंगे सच सरनाई। सोहण बंक दुआर, घर मन्दिर आप सुहाया। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, सति प्रकाश कराया। अनहद धुन सच्ची धुन्कार, शब्द अनादी राग सुणाया। अमृत आत्म ठंडी ठार, सीतल धार कँवल मुख चवाया। दूई द्वैती पर्दा पाड़, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाया। आत्म अन्तर कर प्यार, हरि सन्तन मेल मिलाया। सन्तन मेला धुर दरबार, एकउँकारा आप कराया। आत्म सेजा हो उज्यार, सच सिँघासण बैठा आसण लाया। शब्द विचोला विच संसार, सति पुरख निरँजण आप रखाया। बदले चोला आप करतार, आप आपणा वेस वटाया। जांञी लाड़ा सोहे कर श्रृंगार, आप आपणा रूप दरसाया। त्रैगुण माया वसे बाहर, पंज तत्त ना रत्त वखाया। नारी कन्त कर प्यार, भगत भगवन्त मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

जुग जुग आपणा वेस धर, नानक ढोला एका गाया। सोहे मन्दिर उच्च महल्ल, बंक दुआरी आप उपाईआ। आपे वरते आपणी कल, भेव कोए ना पाईआ। जुगा जुगन्तर अछल अछल्ल, वल छल खेल खिलाईआ। एका जोती नूर निरगुण आपे रिहा बल, दिवस रैण डगमगाईआ। वसणहारा जल थल, डूँघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ अवण गवण ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज हर घट बैठा आसण लाईआ। एका रक्खे धाम अचल, वेद कतेब लेख ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा इक्क महल्ल, आपणा आप सुहाईआ। बंक दुआर सुहञ्जणा, पारब्रह्म करतार। जोत जगे आदि निरँजणा, रूप अनूप अपार। मेल मिलाए सन्त सुहेले साचे सज्जणा, दूसर दिस ना आए विच संसार। नेत्र पाए नाम निधान ज्ञान एका अंजणा, एका नूर करे उज्यार। जिस जन बख्शे चरन धूढ़ देवे मजणा, दुरमति मैल दए उतार। बंक दुआर हरि निरँकार गुरसिख तेरी आत्म बहि बहि सजणा, नौ दुआरे करे बन्द किवाड़। शब्द नगारा एका वज्जणा, धुन आत्मक सच्ची धुन्कार। घर साचे पर्दा कज्जणा, थिर घर बैठ सच्ची सरकार। जन भगतां लोकमात रक्खे लज्जणा, आदि जुगादी लै अवतार। जो घड़या सो भज्जणा, बिन हरि नामे कोए ना उतरे पार। सतिगुर पूरा चोर यार ठग्ग बणाए सज्जणा, जिउँ नानक किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर मन्दिर बंक अपार। बंक दुआरा पारब्रह्म, परम पुरख उपजाईआ। चार दीवार ना दिसे थम्म, छप्पर छन्न ना कोए उपाईआ। ना कोई बाढी बेड़ा रिहा बन्न्ह, ना कोई दूसर रचन रचाईआ। ना कोई रवि ससि सूरज दिसे चन्न, गगन मण्डल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, बंक दुआरी हरि निरँकारी एकउँकारा, आप आपणा कर पसारा, आपे बैठा बेपरवाहीआ। बंक दुआर अगम्म अथाह, बेअन्त बेअन्त अख्वाया। गुरमुखां वखाए बण मलाह, लोकमात फेरा पाया। एका नाम देवे सच सलाह, साचा मार्ग इक्क वखाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन आपणी दया कमाया। दो जहानां पार कराए फड़ फड़ बांह, समरथ पुरख हथ्थ वड्याआ। गुरमुख मनमुख तेरा करे सच न्याँ, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। काया नगर खेड़ा वसे सच ग्रां, गुरमुख साचे साचे बंक जिस घर हरि हरि साचे डेरा लाया। बंक दुआरा जाणया, हरिजन वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा पुरख पछानया, आत्म वज्जी वधाईआ। पाया पद इक्क निरबानया, अमरापद समाईआ। राग अनादी सुणया गानया, सगली चिन्त मिटाईआ। गुर शब्द मिल्या साचा हाणीआ, जगत विछोड़ा रहिण ना पाईआ। आवण जावण चुक्की काणीआ, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। दरगाह साची इक्क वखाणीआ, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। बंक दुआरे बैठी गुरसिख सच सवाणीआ, कन्त कन्तूहल मेल मिलाए आप

आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, दुआर बंक वेख वखाईआ। बंक दुआरा आपे खोल्ह, गुरमुख वेख वखांयदा। आप सुणाए आपणा बोल, शब्दी राग अल्हांयदा। आपणे कंडे देवे तोल, नाम तोला इक्क वखांयदा। भाग लगाए काया चोल, डूँघी कन्दर वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक दुआरी वेखे मन्दिर, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर हरि मेलया, गुरमुख चतुर सुजान। गुरमुख पाया सज्जण सुहेलया, पारब्रह्म श्री भगवान। आपणा खेल आपे खेलया, खेले खेल दो जहान। आपे वसे रंग नवेलया, लक्ख चुरासी आप प्रधान। आपे चाढ़नहारा तेलया, आप उठाए सच निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा एका घर गुरमुख करे परवान। गुरमुख घर हरि पाया, घर घर विच वज्जी वधाईआ। साची सखीआं मंगल एका गाया, निर्भय रूप समाईआ। अकाल मूर्त सगन मनाया, जूनी रहित वड्डी वड्याईआ। सतिनाम मन्त्र इक्क दृढ़ाया, सति सतिवादी सहिज सुभाईआ। एकउँकारा वेस वटाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सरगुण चेला आप बणाया, गोबिन्द दाता बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाया, दर मन्दिर इक्क वखाईआ। राउ रंक ना कोए जणाया, ऊँचां नीचां एका धार बंधाईआ। शाहो भूप सच सुल्तान साचे तख्त आसण लाया, तख्त निवासी आप अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाया, शाहो शाबाश भेव ना राईआ। जन भगतां पूरन आस आप कराया, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जो जन रसन स्वास स्वास रहे ध्याया, संसा चिन्ता रोग मिटाईआ। जंगल जूह उजाड़ प्रभास होए सहाया, डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर गुरसिख तेरा राह रहे तकाया, जिस पाया बेपरवाहीआ। गगन मण्डल तेरे चरनां हेठ दबाया, तिन्ने लोक रहे शरमाईआ। चौदां हट्टां ना तेरा कोई मुल चुकाया, तेरी कीमत करते पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा साचा घर, बंक दुआरा इक्क उपाईआ। बंक दुआरा आप उपा, आपणा दर सुहांयदा। निरगुण सरगुण विच टिका, सरगुण निरगुण रूप समांयदा। शब्द विचोला आप बणा, दो जहानां फेरा पांयदा। जुग जुग आपणा मेला लए मिला, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा सगन आप मना, साची बणत बणांयदा। आपणी लग्न आपणा साह लए सुधा, गुरमुख नारी कर प्यारी तन शृंगार करांयदा। चढ़ घोड़ शाह सवारी जोत निरँकारी, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। मेल मिलावे महल्ल अटल उच्च मनारी, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा आप सुहांयदा। बंक दुआर करे निवासन, निवास निवासी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, साचा बंक इक्क वखांयदा।

✪ २१ चेत २०१६ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे घर गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ✪

नाम रत्न हरिजन पाया, सतिगुर हट्ट विकाईआ। साचे मन्दिर खोज खोजाया, खेवट खेट मलाहीआ। नेत्र लोचण इक्क खुल्हाया, पर्दा दूई मिटाईआ। आत्म दरसी दरस दिखाया, चातृक तृखा बुझाईआ। सति सरूपी नज़री आया, घर साचे वज्जी वधाईआ। कंचन गढ़ इक्क सुहाया, आप आपणा कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निज घर बैठा आसण लाईआ। निज घर वासा हरि निरँकार, निर्मल बिमल समाईआ। पुरख अबिनाशा कर प्यार, हरिजन सिम्मल आप तराईआ। दाता दानी देवे नाम दान आधार, कौड़ी निम्म आप महिकाईआ। चन्दन बास खेल अपार, सच सुगंधी इक्क वखाईआ। जन भगतां मेला विच संसार, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। काग़ज़ कलम ना पावे सार, मस रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतन लेखा आपे जाणे आपे बूझ बुझाईआ।

✪ २१ चेत २०१६ बिक्रमी जागीर सिँघ दे घर गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ✪

शौह पाया घर वस्सया, आई बसन्त बहार। मार्ग सतिगुर साचा दस्सया, नाम शब्द हिरदे उरधार। साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, घर साचे करे प्यार। आत्म परमात्म आपे वस्सया, निरगुण सरगुण कर प्यार। लोकमात फिरे नस्सया, लोआं पुरीआं पार किनार। जगत विकारा रिहा झस्सया, जगत तृष्ना देवे मार। कलिजुग जीव माया ममता फस्सया, गुर सतिगुर कढ्ढे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला कन्त भतार। नढड़ी शब्द जाणया, पारब्रह्म बेअन्त। घर आपणे रंग माणया, मिल्या मेल हरि कन्त। बहि बहि गाए गाणया, अनहद सुहागी छंत। दर निमाणी देवे माणया, वड दाता पति पतिवन्त। सद चलाए आपणे भाणया, बख्शे नाम सोहँ मंत। आवण जाण चुकाए कानया, मेल मिलाए आदि अन्त। मिल्या दर पुरख सुल्तानया, महिमा गणत अगणत। कमली कोझी करे परवानया, हरिजन उधारे साचे सन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाया साचे घर, घर आई रुत्त बसन्त। खुल्ही मेंहडी यारन आया, नढड़ा रूप करतार। हथ्थी मैंहदी नाम रंगाया, नेत्र नाम शृंगार। हरि दर्शन कज्जला पाया, आपणी अक्ख उग्घाड़। सच कलीरा हथ्थ बंधाया, सगन किया संसार। एका वटना तन मलाया, दुरमति मैल उतार। शब्द विचोला घर घर आया, दए सुनेहड़ा अन्तिम वार। साचा लाड़ा धुर दरगाहया, होया ख़बरदार। जन घोड़ा इक्क सजाया, वाग गुंदे जोत निरँजण कर प्यार। आप आपणा आसण लाया, चारे वागां दए हुलार। चौथे युग वेस वटाया, रूप अनूप सच्ची

३९३
०८

सरकार। सीस दस्तारा इक्क बंधाया, रंग केसरी अपर अपार। जगत थानेसर वेखण आया, जोद्धा सूर बली बलकार। साचा लाड़ा सोभा पाया, शस्त्र बस्त्र तेज़ कटार। गुरमुख नारी ख़ुशी मनाया, घर होया मंगलाचार। साची सखीआं आख सुणाया, पेईए छुट्टे मेला होए कन्त भतार। कन्त सुहागी व्याउँण आया, इच्छया आपणी कर विचार। शब्द दलाला ख़ुशी मनाया, आप सुहाए थित वार। आप आपणा साह सुधाया, लेखा लिख आप करतार। कलिजुग चौथे युग चौथा फेरा एका वार दवाया, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। पिर घर पाया सहिज सभाया, कन्त सभागी होई नार। सतिगुर पुरख अबिनाशी करता एका नज़री आया, विछड़या संसार। साचा डोला आप उठाया, ना लाए चार कुहार। आपणे मन्दिर आप बहाया, आपे पर्दा दए उतार। आपणा मुख आप दिखलाया, नैण नेत्र ना होए शरमसार। एका सेजा बंक सुहाया, सच सुच्च करया सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आपे कर, ग़रीब निमाणे निताणे रिहा उठाल।

✪ २१ चेत २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे घर पिण्ड सोहल अमृतसर ✪

आदि पुरख निरँजण हरि भगवान, इक्क अकल्ला इकउँकारया। खेले खेल दो जहान, पारब्रह्म प्रभ भेव अपारया। पुरख अबिनाशी खेल महान, लेखा लेख ना कोए लिखा रिहा। थिर घर वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ हरि बेअन्त, एका रंग समाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। मेल मिलावा साचे सन्त, हरिजन साचे लए उठाईआ। मनमुखां माया पाए बेअन्त, आत्म ब्रह्म ना कोए जणाईआ। जुग जुग महिमा गणत अगणत, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सृष्ट सबाई नारी कन्त, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। घट घट पसारा जीव जन्त, बेअन्त भेव ना आईआ। हरिजन काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलाईआ। अबिनाशी करता पुरख अथाह, एका एक अख्वांयदा। जन भगतां लोकमात बण मलाह, आप आपणा नाउँ धरांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, शब्द अगम्मी आप अलांयदा। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, थिर घर बैठा वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई पिता माँ, आप आपणा दर सुहांयदा। हरिजन हरि सन्त हरिभगत फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची चोग चुगांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची थान सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा आप अख्वांयदा। एकउँकारा कर पसार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ।

त्रैगुण तेरा तत्त विचार, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म हो त्यार, आप आपणा अंग कटाईआ। स्वच्छ सरूपी साची धार, सति सतिवादी आप चलाईआ। खेले खेल विच संसार, नौ खण्ड फेरा पाईआ। दीपां लोआं हो उज्यार, गगन मण्डल आप सुहाईआ। निरगुण बाणी इक्क अपार, घर घर दीपक रिहा जगाईआ। कमलापाती मीत मुरार, हरि साजण वेख वखाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर धारा आप चुआईआ। चरन प्रीती बख्शे सच प्यार, सच सरोवर इक्क नुहाईआ। अनहद नाद धुनी धुन्कार, काया मन्दिर आप अलाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़, पंचम धाड़ी मेट मिटाईआ। हरिजन साचे कर प्यार, आत्म सेजा रिहा सुहाईआ। सतिगुर साजण मीत मुरार, इक्क अकल्ला होए सहाईआ। दूई द्वैती दए नवार, तीजा लोचण इक्क खुल्हाईआ। चौथे पद ख़बरदार, आप आपणा मुख वखाईआ। पंचम मीता पावे सार, पंचम सख़ीआ मंगल गाईआ। सोहे घर सच्चा दुआर, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। गुरसिख सुलक्खणी होए नार, वर पाया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, एक धार बंधाईआ। शब्द धार हरि निरँकार, आपणी आप चलांयदा। निरगुण नूर हो उज्यार, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण ढोला सच जैकार, आपणा बोला आप अल्हांयदा। तोला बण सिरजणहार, लक्ख चुरासी तोल तुलांयदा । जुग जुग खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अलक्खणा लेख लिखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। चार कुन्ट दहि दिशां धूंआँधार, सच प्रकाश ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी होए ख्वार, पंज तत्त हलकांयदा। बुध मति गई हार, मन मनुआ डौरु वांयदा। कूड़ी क्रिया कर विचार, कूड़ा रंग रंगांयदा। सच सुच्च ना दिसे कोए दुआर, नाम भण्डार ना कोए वरतांयदा। नौ दर झक्ख रहे मार, तृष्ना भुक्ख ना कोए गवांयदा। नाल रलाया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हउमे रोग सतांयदा। हरि शब्द ना करे कोई प्यार, हिरदे हरि ना कोए वसांयदा। भरमे भुल्ला भरम संसार, भाण्डा भरम ना कोए भनांयदा। काया गढ़ होया हँकार, उप्पर चढ़ ना कोए ढांयदा। सुखमन वेखी टेडी गार, पार किनार ना कोए वसांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, मँझधार सर्ब रुढ़ांयदा। आदि जुगादी इकउँकार, अकल कला आप अख्वांयदा । निरगुण सरगुण कर प्यार, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, नाम निधाना हथ्थ उठांयदा। मन मति कलिजुग करे ख्वार, गुरमति एह समझांयदा। चार वरनां इक्क आधार, एका दर बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर इक्क अख्वांयदा। शब्द गुर शाह सुल्तान, हरि साचा आप उपांयदा। आदि जुगादी इक्क निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। लक्ख चुरासी वेख मकान, आप आपणा आसण लांयदा। मुख छुपाए गुण निधान, दिस

किसे ना आंयदा। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, सो जन बूझ बुझांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखांयदा। हउमे रोग सर्ब मिट जाण, सैंहसा सागर ना कोए डुबांयदा। मेल मिलावा श्री भगवान, दूसर दर ना कोए वखांयदा। निरगुण दीप जगे महान, जोत ज्वाला डगमगांयदा। आदि शक्ति एका आण, एका रूप दरसांयदा। आदि निरँजण खेल महान, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। चौदां तबकां करे पछाण, चौदां हट्ट खुल्ांयदा। लोआं पुरीआं इक्क ज्ञान, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ांयदा। इष्ट देव गुर इक्क वखाण, एका बूझ बुझांयदा। एका अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप आप अख्वांयदा। सति सरूप हरि मेहरवाना, अकल कला कल धारीआ। हरिजन देवे जीआं दाना, दाता दानी आप अख्वा रिहा। शब्द चढ़ाए सच बबाणा, साचा अस्व आप दौड़ा रिहा। इक्क वखाए पद निरबाणा, परम पुरख मिला रिहा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, नाम तन्दन हथ्थ उठा रिहा। एका राग सुणाए काना, अनहद राग अल्ा रिहा। देवणहारा धुर फ़रमाना, जुग जुग नाम निधाना झोली पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रूप आप दरसा रिहा। एका रूप हरि भगवन्त, घट घट नज़री आईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, सुत्ती सर्ब लोकाईआ। कलिजुग माया पाए बेअन्त, बेअन्त हथ्थ वड्याईआ। आप भुलाए जीव जन्त, आपणा मार्ग आप सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण मीतड़ा, गुर सतिगुर वेख वखाए। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, निज घर साचे आप वसाए। काया चोली रंगे चीथड़ा, दुरमति मैल धवाए। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पावन दया कमाए। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, जिस जन अमृत जाम प्याए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साजण लए तराए। हरि सज्जण हरि पेख्या, परम पुरख करतार। सतिगुर पूरा नेत्र वेख्या, लोचण नैण इक्क उघाड़। सेव कमाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशया, दर दरवेशा अलक्ख जैकार। निरगुण नूर सर्ब प्रवेशया, दिस ना आए विच संसार। आदि जुगादी करे वेसया, अछल अछल अपर अपार। आपे होए धारी केसया, मूंड मुंडाए आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वरनां बरनां वसे बाहर। गुरमुख सज्जण पाया, सतिगुर साजण मीत। हउमे हँगता रोग गंवाया, होया पतित पुनीत। नेत्र लोचण इक्क खुल्ाया, दर्शन पेख नेतन नीत। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन काया करे ठांडी सीत। काया मन्दिर साचा गढ़, पंज

तत्त आप सुहाईआ। हरिजन वेखे अन्दर वड़, आप आपणा मुख दिखलाईआ। सतिगुर पूरा ना कोई सीस ना कोई धड़, शब्दी शब्द समाईआ। सति सरूपी दरस दिखाए अग्गे खड़, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। एका अक्खर जाए पढ़, विद्या रिहा सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण नूर नूर उजाला, हरी हरि आप करांयदा। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, दया निध नाम धरांयदा। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पांयदा। शब्द गुर बण दलाला, लोकमात फेरा पांयदा। वेखणहारा हक्क हलाला, लाशरीक नाउँ धरांयदा। जल्वा नूर नूर जलाला, बेऐब परवरदिगार फेरा पांयदा। गगन मण्डल वेखे साचा थाला, दीपक जोती कवण दर डगमगांयदा। हरिजन तेरा काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, हरि साजण वेख वखांयदा। बजर कपाटी तोड़े ताला, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। कूड़ी क्रिया मेट जंजाला, सच सुच्च वरतांयदा। एका दस्से राह सुखाला, बेहंगम चाल चलांयदा। गोबिन्द मेला साचे लाला, लाल दुलारा वेख वखांयदा। फल लगाए साचे डाल्हा, अमृत मेवा इक्क खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे दर वखांयदा। गुरसिख साजण हरि घर पाया, घर घर होई रुशनाईआ। साची सखीआं मंगल एका गाया, एका राग अलाईआ। एका मीत नज़री आया, ठांडा सीत सहिज सुभाईआ। वस्सया चीत विसर ना जाया, आत्म सेजा सेज सुहाईआ। हस्त कीट एका रंग रंगाया, जो चल आया सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ।

✪ २१ चेत २०१६ बिक्रमी सुरजन सिंघ दे घर पिण्ड भुचर ज़िला अमृतसर ✪

पारब्रह्म पुरख सुल्तान, एका एक अख्वांयदा। इक्क अकल्ला श्री भगवान, दो जहानां वेख वखांयदा। शब्द झुलाए सच निशान, नाम जैकारा एका लांयदा। महल्ल अटल उच्च मकान, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहांयदा। जोती नूर नूर महान, निरगुण रूप आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम धरांयदा। पुरख सुल्तान हरि मेहरवाना, एका रंग समाईआ। जोती नूर नूर महाना, आदि जुगादि डगमगाईआ। थिर घर वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी आप अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी हरि भगवन्ता, निरगुण हरि रघुराया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। आप बणाए आपणी बणता, दूजा कोए ना संग रखाया। साचा धाम आप सुहंता, आदि निरँजण जोत रुशनाया। आपे नारी आपे कन्ता, परम पुरख आप

अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगाया। जोती नूर निराकार, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाईआ। आपे शब्द धुन जैकार, आपणा राग आप अलाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, आप आपणा आसण लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, आपणा अंग कटाईआ। देवणहारा इक्क सहार, शहिनशाह आप अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी सच सिक्दार, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, धुर दरबारा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप अख्वाईआ। निरगुण रूप हरि मेहरवान, आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा देवे दान, आपणी झोली आप भरांयदा। आप आपणा रक्खे माण, माण निमाणा आप हो आंयदा। आप आपणी करे पछान, आप आपणा रूप वटांयदा। आप आपणा देवे ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जाणी जाण, जानणहार आप अख्वांयदा। जानणहारा हरि भगवाना, सति पुरख अख्वांयदा। जोती नूर इक्क महाना, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। शब्द अनादी इक्क तराना, अलक्ख निरँजण आपे गांयदा। थिर घर बैठा नौजवाना, पुरख अकाल वेस वटांयदा। जूनी रहित हो प्रधाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा आप चलांयदा। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाईआ। गगन मण्डल दए सहार, रवि ससि नूर रुशनाईआ। धरत धवल दए आधार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, पारब्रह्म बेअन्त। आदि जुगादी लै अवतारा, आप बणाए आपणी बणत। शब्द अनादी इक्क जैकारा, लोकमात सुणंत। लक्ख चुरासी कर पसारा, आप आपणा मुख छुपंत। हरिजन विरले पावे सारा, जिस जन बूझ बुझंत। निरगुण जोती हो उज्यारा, मेल मिलाए साचे कन्त। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, निझर धारा इक्क वहंत। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, राग अनादी आप सुणंत। आपे खोल्ह बन्द किवाड़ा, दर दरवेशा होए मंगत। आत्म सेजा हो उज्यारा, आप आपणा धाम सुहंत। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, मेल मिलावा जुगा जुगन्त। निरगुण सरगुण कर पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटंत। निरगुण सरगुण अन्दर रक्ख, हरि शब्द करे कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रतक्ख, लोकमात वेख वखाईआ। सन्त सुहेले साचे रक्ख, आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। हरि की महिमा अकथना अकथ, कोई कथ

३६८ ०८

३६८ ०८

ना सके राईआ। जन भगतां देवे नाम वथ्थ, एका वस्त झोली पाईआ। एका शब्द जणाई पूजा पाठ, एका करे पढ़ाईआ। एका जोत जगाए ललाट, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सर सरोवर वखाए एका घाट, एका ताल सुहाईआ। एका नाम विकाए साचे हाट, चौदां लोकां मुख भवाईआ। जन भगतां करे पूरा घाट, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करनी आप कराईआ। जुग जुग करता करनेहार, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। ईसा मूसा हो उज्यार, काला सूसा तन सुहांयदा। संग मुहम्मद चार यार, राणी अल्ला नाल प्रनांयदा। नूर इलाही हो उज्यार, जल्वा जलाल आप अख्वांयदा। पीर दस्तगीर शाह अस्वार, आप आपणा वेख वखांयदा। काया काअबा साची धार, दो दो आबा मेल मिलांयदा। हक्क जनाबा परवरदिगार, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। नाम रबाबा सच सतार, कलमा अमाम आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगांयदा। नूरो नूर कर उज्यार, नूर नूर विच समाईआ। बेऐब ख़ुदाई सांझा यार, परवरदिगार आप अख्वाईआ। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक वड वड्याईआ। उम्मत उम्मती करे ख़बरदार, एका एक करे पढ़ाईआ। शरअ शरीअत रिहा विचार, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि निरँकार, आपणा आप उपाया। पंज तत्त कर प्यार, घर साचा आप सुहाया। नानक मीता विच संसार, त्रैगुण तोड़ तुड़ाया। नाम सति वणज वापार, एका मार्ग लाया। एका गुर गुर अवतार, दस दस रूप समाया। गुरमुखां करे इक्क प्यार, घर दसवें मेल मिलाया। नौ दुआर ना होए ख्वार, जिस जन सतिगुर पूरा पाया। शब्द गुर पहरेदार, दिवस रैण होए सहाया। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सतिगुर पूरा आप अख्वाया। जो जन मंगे बण भिखार, आपणी भिच्छया झोली पाया। चोली रंगे तन श्रृंगार, बस्त्र भूषन इक्क सुहाया। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे दए लटकाया। अमृत आत्म ठंडी ठार, कँवल नाभी मुख चुआया। पंचम मीता इक्क अतीता आप सुहाए बंक दुआर, निज घर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आप उपाया। निरगुण नूर आप उपा, आपणी दया कमाईआ। जोती जामा भेख वटा, भेखाधारी भेख वटाईआ। सन्त सुहेले ल्ए उठा, काया मन्दिर मेल मिलाईआ। एका नाम दए जपा, एका ताल वजाईआ। दूई द्वैती दए मिटा, दूजा दर ना कोए वखाईआ। तीजा लोचण दए खुल्हा, आप आपणा दरस वखाईआ। चौथे पद दए बहा, हरि हरि पुरख वड्डी वड्याईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना रिहा रखा, निरगुण

बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगा, जागरत जोत इक्क वखाईआ। अट्ठां तत्तां भेव ना रा, मन मति बुध सार ना पाईआ। नौ दुआर जगत भुला, भरम भुलेखा इक्क वखाईआ। घर विच आपणा घर बणा, आपणी रुत्त सुहाईआ। निरगुण दीवा बाती इक्क जगा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। अट्ठे पहर रिहा डगमगा, दिवस रैण ना कोए जणाईआ। सर सरोवर इक्क भरा, अमृत ताल सुहाईआ। गुर शब्द विचोला आप बणा, आपे करे कुड़माईआ। एका ढोला दए सुणा, आपणा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, रचनहार आप अख्वांयदा। आपे सतिगुर साजण सच्च, सति पुरख आप अख्वांयदा। आपे काया माटी भाण्डा कच्च, आपे भन्न वखांयदा। आपे पंज तत्त पुतला गया बज्झ, स्वांगी स्वांगी स्वांग वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए हरि बनवारी, परम पुरख अख्वाया। निरगुण जोत कर उज्यारी, सच सिँघासण वेख वखाया। थिर घर सोहे बंक दुआरी, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। ना कोई दूसर पहरेदारी, चोबदारी दिस ना आया। शाहो भूप वड सिक्दारी, हरि साचा आप अख्वाया। आपणे सीस जगदीस छत्र रिहा झुलारी, तख्त ताज आप उपाया। आपे देवे धुर फ़रमान वड संसारी, आपणा हुक्म आप सुणाया। आपे लोकमात आवे जावे वारो वारी, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आपे खड़ग खण्डा शब्द तेज़ कटारी, तीर कमान आपणा नाउँ धराया। आपे जोद्धा सूर बलकारी, लोआं पुरीआं वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण आप अख्वाया। निहकलंक हरि नरायण, पारब्रह्म अख्वांयदा। मात पित ना कोई भाई भैण, साक सैण ना कोए जणांयदा। आपे जाणे आपणे नैण, नेत्र जगत बन्द रखांयदा। जन भगतां चुकाए लहिण देण, जुग जुग सेव कमांयदा। भगत भगवन्त सन्त कन्त धाम इक्ट्ठे एका बहिण, सच दुआरा इक्क वखांयदा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना डन्न लगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रसना हरि हरि सारे कहिण, हरि का भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर आप अख्वांयदा। निहकलंक कलि जामा पा, शब्दी डंक वजाया। लक्ख चुरासी रिहा सुणा, लोआं पुरीआं आप उठाया। शाह सुल्ताना दए हलार, राज राजानां ख़ाक मिलाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका नाअरा दए सुणा, एका कलमा रिहा पढ़ाया। चार वरन बणाए भैण भ्रा, ऊँचां नीचां मेट मिटाया। मन मति देवे दर दुरका, नार दुहागण वेस वटाया। गुरमति साची लए प्रना, गुरमुख साचे लए तराया। साची सिख्या इक्क समझा, सति सतिवादी मेल मिलाया। धुर लेखा लिख्या अग्गे दए

रखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। सृष्ट सबाई मिथ्या रिहा जणा, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा राग अलाया। राग अलाए हरि गोबिन्द, हरिजन आप सुणाईआ। मेट मिटाए सगली चिन्द, हउमे रोग जलाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, सतिगुर गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, जोती नूर जगाई। औलीए पीर शेख़ मुसायक कुतब गौंस लेखे लिखण आया, कोई भेव ना जाणे राई। पंडत पांधे थक्के मांदे आपणे नेत्र पेखण आया, हरि बणया साचा राही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी वेखे झूठी शाही। कलिजुग तेरा झूठ पसारा, चार कुन्ट ललकारया। कूड़ कुड़यारा हो उज्यारा, एका नाअरा मारया। चौदां तबकां करया ख़बरदारा, नाल रलाया मुहम्मद यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखा रिहा। कलिजुग कूड़ा कूड़ा रंग, हरि आपणा आप रंगांयदा। चारों कुन्ट फिरे मलंग, दहि दिश फेरा पांयदा । नाल रलाई मन मति कर नंग, जीवां जन्तां आप भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम राह, शब्द सरूपी बण मलाह, आपे वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ा डंक, कूड़ी क्रिया रही वजाईआ। भरमे भुल्ला राउ रंक, राम नाम हिरदे ना कोए वसाईआ। खेले खेल वासी पुरी घनक, घनइया शाम रूप वटाईआ। गुरसिखां प्रनाए सीता सपुत्री जनक, सीता सपुत्री आप उठाईआ। खेले खेल बार अनक, जुग जुग रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग कूड़ कुड़ावा हट्ट, नौ खण्ड वेख वखाया। माया ममता तीर्थ तट्ट, बैठी रंग चढ़ाया। पंज तत्त अग्नी निकले लट लट, मन्दिर मस्जिद डेरा लाया। दूई द्वैती लाए सट्ट, हउमे हँगता खण्डा हथ्थ उठाया। झूठा बुरज रिहा ढठ्ठ, कल्लर कंध रहिण ना पाया। हरिजू वसे घट घट, घट अन्दर वेख वखाया। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, जिस जन आपणा दरस दिखाया। खेले खेल बाज़ीगर नट, नट नटूआ स्वांगी आपणा सांग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंकी शब्द निशाना, चिल्ला तीर उठाया। जोद्धा मर्द मर्द मरदाना, पारब्रह्म आप अख्वाया। जूठा झूठा मेटे जगत निशाना, सच सुच्च मार्ग एका लाया। खेले खेल गोपी कान्हा, मण्डल रास आप रचाया। राम नाम हो प्रधाना, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। ऐनलहक्क नाअरा इक्क वखाना, मुकामे हक्क हक्क ख़ुदाया। नाम सति वड बलवाना, आप आपणा रूप वटाया। कलिजुग अन्तिम खेले खेल दो जहाना, हरि का भेव

कोए ना पाया। सृष्ट सबाई वेखे मार ध्याना, लुकया कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात वेखण आया। लोकमात हरि पसारा, युग चौथा वेख वखाईआ। रूप अनूप सच्ची सरकारा, सति सरूप समाईआ। पंज तत्त ना कोए आकारा, मन मति बुध ना कोए रखाईआ। बस्त्र शस्त्र ना कोए कटारा, अस्व घोड़ा ना कोए दौड़ाईआ। लशकर फ़ौज ना शाह दारा, ना कोई रईयत संग रलाईआ। इक्क अकल्ला एकउँकारा, आपणी कल वरताईआ। जल थल महल्ल पाए सारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। जन भगतां मेला हरि सज्जण मीत मुरारा, आप आपणा ल्ए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, आपे अन्दर आपे बाहरा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण चेला गुर, गुर गुर रूप वटाया। लेखा लिख्या हरि हरि धुर, ना कोई मेट मिटाया। जोती शब्दी गया जुड़, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, आप आपणा फेरा पाया। लोआं पुरीआं रिहा दौड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। प्रभ अबिनाशी करता पूत सपूता वेखे ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआरे इक्क वखाए साचा पौड़, सो पुरख निरँजण डण्डा नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। कलिजुग अन्तिम कूड़ मिटाउणा, हरि साचा वेख वखन्नया। सति पुरख निरँजण सतिजुग साचा लाउणा, सति सतिवादी आपे बन्न्हया। शब्द सरूपी खेल खिलाउँणा, जीवां जन्तां आपे डन्नया। चार वरनां एका रंग रंगाउणा, इक्क वसाए छप्पर छन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण नाम धराउणा। पूर्ब लहिणा जाण, हरिजन रिहा जणाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, भुल्ल रहे ना राईआ। सतिजुग वेखे मार ध्यान, सति सतिवादी वड वड्याईआ। भगतन मीता एका राम, एका एक अख्वाईआ। सखा सुहेला करे आपणा काम, करनी करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। जुगां जुगन्तर हरि हरि लहिणा, जुग जुग मूल चुकांयदा। दरस दिखाए तीजे नैणां, आपणी बूझ बुझांयदा। सच वड्याई भाणा सहिणा, सद भाणे आप रहांयदा। लोकमात वहिण ना वहिणा, शौह दरयाए ना आप रुढ़ांयदा। जिस जन बस्त्र पाए नाम गहिणा, तन श्रृंगार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा आप चुकांयदा। पिछला लेखा हरि हरि बोल, हरिजन साचे दए समझाईआ। आदि जुगादी वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। नाम कंडे तोले साचा तोल, तोला रत्ती ना कोए वखाईआ। पिछला पर्दा रिहा फोल, अग्गे मूल चुकाईआ। राम नाम करया साचा घोल, दिवस रैण कर लड़ाईआ। डूँघी कन्दर काया कँवरी वज्जया ढोल, हरि

साचा आप सुणाईआ। आपणे अन्दर आपे पए बोल, आपणी लिव आपे लाईआ। आपणी काया आपे जाए मौल, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा रिहा चुकाईआ। पिछला लहिणा हरि चुकाए, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग साचा नैण खुल्हाए, एका नूर दरसांयदा। कल्लर बूटा आपे लाए, कँवल फुल्ल खिड़ांयदा। आपणी भगती नाम जपाए, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। घर घर शत्रू आप उपाए, पिता पूत लड़ांयदा। गढ़ हँकारी इक्क बणाए, हउमे विच भरांयदा। आपणी करनी रिहा कमाए, भेव कोए ना पांयदा। वर सराप आपणे हथ्थ रखाए, आवण जावण गेड़ चलांयदा। सन्त कुमारा लेख लिखाए, रसना मुख अल्हांयदा। दुआरपाल रहे शरमाए, नेत्र नीर वहांयदा। बाण निराला एका लाए, ना कोई मेट मिटांयदा। लोकमाती जन्म दवाए, हरनाक्ष नाउँ रखांयदा। पूत सपूता साचा जाए, साची चलत चलांयदा। प्रहलाद अहिलाद एका गाए, राम नाम ध्यांअदा। बोध अगाध आप जणाए, अनभव प्रकाश वखांयदा। साधना साध सिदक निभाए, सति सतिवादी मेल मिलांयदा। नाद अनादी नाद वजाए, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजांयदा। साची वाज इक्क सुणाए, नेत्र नैण ना कोए दसांयदा। राम नाम अराध रसना हरि हरि साचा पाए, घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेख वेख वखांयदा। पिछला लेखा आपे जाण, आपे बूझ बुझाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, भेव कोए ना पाईआ। काची माटी कर प्रधान, उप्पर चक्क चढ़ाईआ। चारों कुन्ट भवाए ज़िमीं अस्मान, भेव कोए ना पाईआ। अन्तिम बन्द कीती झूठ मकान, जूठी क़िया नाल बंधाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगतन मीता वड वड्याईआ। बख्शणहारा ब्रह्म ज्ञान, आपणी बूझ बुझाईआ। छोटे बाले बाल निधान, माटी भाण्डे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी चलत चलाईआ। बाल निधाने अन्दर रक्ख, अग्नी तत्त जलाया। आपणा आप कीता वक्ख, हरि साचे मेल मिलाया। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, जो जन ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग आवा रिहा तपाया। जगत आवा तप अँग्यार, एका तत्त वखाईआ। घड़या भाण्डा होया त्यार, आपे बाहर कढाईआ। अद्भविचकार लाया हथ्थ घुमिआर, बाल अञ्याणे वेख वखाईआ। तूं ही तूं रहे पुकार, तूं दाता बेपरवाहीआ। राम नाम इक्क अधार, एका ओट रखाईआ। वेख्या खेल अपर अपार, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा पूर कराईआ। भगत प्रहलाद दर घर आया, वेखे जगत लोकाया। मन्त्र राम नाम हीए हिरदे इक्क वसाया, ना कोई सके बाहर कढाया। साची सिख्या धुर दा लिख्या घर साचे लेखा इक्क वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आप मिलाया। साची सिख्या

बाल निधान, एका रही सुणाईआ। तप्या तत्त इक्क अन्गयार, अग्नी अग्ग समाईआ। बच्चे निकले विच्चों बाहर, राम नाम रहे गाईआ। तेरा राम ना मरे ना जम्मे विच संसार, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। हरनाक्ष तोड़े गढ़ हँकार, अन्तिम मेट मिटाईआ। प्रहलाद करे इक्क प्यार, चार पाए आप उठाईआ। दोहां विचोला बणे करतार, एका ज्ञान दृढ़ाईआ। प्रभ अबिनाशी सुनणेहार, सुण सुण रिहा बोल सुणाईआ। होए मेला दूजी वार, विच संसार करे कुड़माईआ। निरगुण नूर जोत होए उज्यार, वेला वक्त दए सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। वेद कतेब पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान कोए ना पावे सार, हरि का लेखा ना सके कोए गणाईआ। देणा देवणहार श्री भगवान, जुग जुग झोली पाईआ। आपे होया जाणी जाण, दूसर भेव कोए ना राईआ। सतिगुर पूरा कर पछाण, अन्तिम मेल मिलाईआ। सन्त मनी सिँघ देवे दान, नाम ख़ज़ाना इक्क भराईआ। सुरजन सिँघ हो प्रधान, तेजा सिँघ वड्याईआ। बंस बंसा कर परवान, छोटे बाले नाल रलाईआ। परम पुरख हरि मेहरवान, हरिजन साचे लए उठाईआ। चौथे युग लहिणा देणा चुक्के आवण जाण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। धर्म राए नेत्र नैण शरमाण, चित्रगुप्त ना राह तकाईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान, अट्ठे नेत्र आप खुल्हाईआ। शिव शंकर अग्गे मंगे दान, बैठा झोली डाहीआ। करोड़ तेतीसा होए हैरान, नेत्र नीर वहाईआ।
सुरपति राजा इन्द आपणी छड्डे आप दुकान, आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां मेला वाली दो जहान, पुरख अकाल मेल मिलाईआ। आप झुलाए सच निशान, उप्पर आपणा लेख लिखाईआ। साची गोपी मिल्या साचा काहन, घर मण्डल रास रचाईआ। सच दुआरे होई परवान, कन्त कन्तूहला लए प्रनाईआ। शब्द झूला नाम बबाण, लोआं पुरीआं पार कराईआ। दरगाह साची सच मकान, गुरसिख तेरा दर वखाईआ। इक्क अकल्ला श्री भगवान, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। दाता दानी चतुर सुजान, चतुर्भुज वड वड्याईआ। एका बख्शे पीण खाण, तृष्ना तृप्त आप कराईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख अन्तिम जोती जोत मिल जाण, नाता तुटे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पिछला घाटा पूर कराईआ। पिछला घाटा गया मुक्क, हरि साचे आप मुकाया। अग्गे गोदी रिहा चुक्क, बाल अवाणे आप उठाया। पंज तत्त बूटा ना जाए सुक्क, सिंच अमृत हरया आप कराया। भाग लगाए सुलक्खणी कुक्ख, जिस जन जननी हरिजन जाया। उलटा मात गर्भ ना होए रुक्ख, सतिगुर पूरा दया कमाया। लेखे लाए जन्म मानस मानुख, दूजा वक्खर ना कोए वखाया। गुरसिखां अन्दर बैठा लुक, वासी पुरी घणका आपणा डंक वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपे धर, पूर्ब लहिणा लहिणा रिहा मुकाया।

✪ २२ चेत २०१६ बिक्रमी मनी सिँघ दे घर पिण्ड सिद्धवाँ ज़िला अमृतसर ✪

ठाकर अबिनाशी हरि हरि काहन, मोहन माधव अख्वांयदा। निरगुण रूप श्री भगवान, निरगुण दीपक जोत जगांयदा। निरगुण शब्द शब्द निशान, निरगुण दाता आप झुलांयदा। निरगुण खेले खेल महान, सति पुरख वेस वटांयदा। निरगुण वसया सच मकान, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ सच सुल्तान, शाह सुल्ताना नाउँ धरांयदा। लोकमात वेखे मार ध्यान, हरिजन साचे वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर देवे दान, नाम भिच्छया झोली पांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखांयदा। सति सरूप गुण निधान, सति सतिवादी मेल मिलांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन वेख वखांयदा। भगतन हरि हरि रत्तया, रूप रंग अपार। एका देवे साची सतया, सति सन्तोखी धार चरन कँवल बंधाए नतया, नाता जोड़ विच संसार। शब्द जणाए साची कथिआ, कथनी कथा ना पाए सार। सतिगुर चढ़ाए साचे रथिआ, रथ रथवाही आप निरँकार। पार किनारा एका रक्खया, ना डोबे विच मँझधार। राह साचा एका दस्सया, भवजल उतरे पार। पुरख अकाला दीन दयाला, आदि निरँजण गुर गोपाला जन भगत दुआरे फिरे नस्सया, लोकमात लै अवतार। जोत सरूपी शाहो भूपी बिन रंग रूपी हरिजन मन्दिर अन्दर आपे वस्सया, निरगुण जोत कर उज्यार। कोटन कोटि करे कराए प्रकाश रवि सस्सया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। आत्म सेजा बहि बहि हस्सया, करे कराए सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण ल्ए उभार। हरि सज्जण हरि एक है, एका रंग समाए। गुर सतिगुर साची टेक है, बुध बिबेक जणाए। आपणे नेत्र आपे पेख है, गुरमुख साचे ल्ए उठाए। आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद एकउँकारा लिखणहारा लेख है, ब्रह्मा विष्न शिव रहे सेव कमाए। पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा अबिनाशी करता दर दरवेश है, जुगा जुगन्तर फेरा पाए। सच सुल्ताना हरि मेहरवाना दो जहानां नर नरेश है, नर नरायण नाउँ रखाए। लेखा जाणे धारी केस है, मूंड मुंडाए ल्ए तराए। आपणी करनी करता आपे रिहा वेख है, आप आपणी खेल खिलाए। आपे जाणे आपणा भेख है, वेद कतेब भेव ना राए। आपे वस्सया सच महल्ल उच्च अटल साचे देस है, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाए। खेले खेल गवर्धन धारी रिखी केस है, भेव अभेदा भेव छुपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां भगती मेल मिलाए। भगतन भगती मेलया, कर किरपा अपार। जगत विचोला सज्जण सुहेलया, देवे नाम अधार। आपणा नाम हरी हरि खेलया, निरगुण जोती नूर उज्यार। घर बणे सज्जण सुहेलया, दिवस रैण करे प्यार। रंगे रंग गुरू गुर चेलया, रंगणहार आप करतार। आपे वसे रंग नवेलया, घट घट बैठा कर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, हरिजन भगती भरे भण्डार। भगत भण्डारा आपे भर, आपे वस्त टिकाईआ। नाम निधाना अग्गे धर, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द फड़ाए साचा लड़, ना मरे ना जाईआ। काया मन्दिर आपे वड़, हरिजन लए जगाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोए रखाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी आपे पढ़, आपणा ढोला नाम सुणाईआ। जन भगत लगाए साची जड़, अंमित नीर आप चुआईआ। जगत विकारा जाए सड़, जिस जन इच्छया पूर कराईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सभाईआ। हरिजन हरि हरि पाया, आदि जुगादि समाए। जुग जुग विछड़े मेल मिलाया, भाण्डा भरम भनाए। सच निशाना इक्क रखाया, एका रिहा झुलाए। वरन गोत ना कोई जणाया, ऊँच नीच ना कोई वखाए। पारब्रह्म ब्रह्म नज़री आया, स्वय रूप अख्वाए। दोए दोए जहानां वेख वखाया, दो दो धार वखाए। तीजे लोइण इक्क खुल्हाया, ज्ञान नेत्र इक्क वखाए। चौथे पद डेरा लाया, हरिजन साचे लए मिलाए। पंचम धुन शब्द अनादी गाया, आप आपणा राग अल्हाए। साचे मन्दिर इक्क सुहाया, हरिजन वज्जी सच वधाए। पिया प्रीतम साचा पाया, परम पुरख सरनाए। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाया, भुल्ली सर्ब लुकाए। काया चोली रंगण नाम चढ़ाया, उतर कदे ना जाए। कंचन गढ़ सुहाया, महल्ल अटल वेख वखाए। हरिजन विरले उप्पर चढ़ दर्शन पाया, आपणा कुण्डा आप खुल्हाए। बंक दुआरी बैठा आसण लाया, घर घर विच करे रुशनाए। सति सरूप आप समाया, सति सतिवादी आप अख्वाए। आदि जुगादी जन भगतां लए तराया, धुर दी बाण हरि रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला आप कराए। भगती हरिजन जाणया, भगवन रूप करतार। निरगुण सरगुण आप पछानया, कर किरपा विच संसार। खेले खेल श्री भगवानया, जुगां जुगन्तर साची कार। आपे जाणे आपणी अकथ कहाणीआ, ना कोई लेखा लिखे विच संसार। समरथ पुरख हरि सुल्तानया, अगम्म अथाह बेपरवाह बेऐब परवरदिगार। जन भगतां देवे नाम निशानीआ, नाम जैकारा एकउँकार। शाहो भूप वड दाता दानीआ, भगती भरे भण्डार। तोड़े माणा मान अभिमानया, दूई द्वैती करे ख्वार। पंच विकारा मेटे जगत शैतानया, मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जन भगतां देवे अमृत आत्म ठंडा पाणीआ, बूंद स्वांती निझर धार। अनहद शब्द सुणाए साची बाणीआं, शब्द सार कर त्यार। लेखा जाणे आवण जाणया लक्ख चुरासी खेल अपार। हरिजन बणाए चतुर सुघड़ स्याणया, मूर्ख मूढ़े लए उभार। हरिभगत हरिजन गुरमुख गुरसिख प्रभ साचे दी साची राणीआ, थिर घर वसे सच दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भगतन पाए सार। भगतन सार समालदा, एका एकउँकार। जुगा

जुगन्तर खेल पुरख अकाल दा, जूनी रहित करे प्यार। सन्त सुहेले आपे भालदा, सिर हथ्थ रक्ख करतार। होए वाली दो जहान दा, दिवस रैण ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पाए सार। सार समालण आदि निरँजण, गुर एको अवतारया। दीन दयालण दर्द दु:ख भय भञ्जण, नाम बिबेको इक्क उचारया। सर्ब प्रितपालण होए रखवालण, तीन लोक पसर पसारया। तख्त सुल्तानण हरि भगवानण, लोआं पुरीआं दए सहारया। नाम निशानण भगत वखानण, मातलोक करे उज्यारया। ब्रह्म ज्ञानण हरिजन दानण, देवणहार वड भण्डारया। होए जामन मेटे कामन, सच सुच्च करे वरतारया। गोपी कानूण देवे मानण, सखा सखाई मंगल गा रिहा। नाम वखानण राम पछानण, रूप अनूप आप दरसा रिहा। दीन ईमानण शरअ कलामन, शरीअत इक्क समझा रिहा। नाम सति प्रधानण वेख वखानण, गुरसिखां मुख रखा रिहा। वेद कतेब भेव ना जानण, पारब्रह्म पुरख सुल्तानण, अछल अछल्ल छल करा रिहा। जुगा जुगन्तर जोत सरूपी देवे चानण, जोत निरँजण मेल मिला रिहा। गुरमति विरला बणे सवालण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगती देवे साचा वर, भगतन मीता आप अख्वा रिहा। भगतन मीता हरि भगवन्त, भगवन रूप समांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता कार कमांयदा। एका थान थनंतर हरि सुहंत, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखांयदा। आप बणाए आपणी बणत, बन बनवारी वेस वटांयदा। लोकमात जन भगत दुआरे आए मंगत, आप आपणी सेव कमांयदा। आपे होए भुक्खा नंगत, भगत भण्डारा आप भरांयदा। साचे मन्दिर आपे लँघदा, आप आपणा कुण्डा लांयदा। खेले खेल सूरे सरबंग दा, नाम शस्त्र हथ्थ चमकांयदा। माणे रस आप आत्म सेज पलँघ दा, सच सिँघासण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, भगत भगवान वेख वखांयदा। भगत भगवान एका दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। भगत भगवान नारी नर, हरी हरि नाउँ धराईआ। भगत भगवान एका सर, सर सरोवर रहे नहाईआ। भगत भगवान एका विद्या रहे पढ़, एका करे पढ़ाईआ। भगत भगवान अन्दर जाए वड़, अन्दर बाहर आप अख्वाईआ। भगत भगवान अग्नी हवन ना जायण सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। भगत भगवान लाए जड़्ह, ना सके कोई उखड़ाईआ। भगत भगवान जुगा जुगन्तर रहे लड़, शब्दी करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। हरि सज्जण वेखे हरि हरि नैण, नेत्र नैण इक्क उग्घाड़या। आप चुकाए लहिण देण, पिछला लेखा आपे पाड़या। पारब्रह्म प्रभ मात पित भाई भैण, साक सैण आप अख्वा रिहा। नाता तोड़े जूठे झूठे कलिजुग वहिण, कूड़ी क्रिया मूल चुका रिहा। तन बस्त्र पहनाए साचा गहिण, नाम दुशाला सीस टिका रिहा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन बंधन नाम बना ल्या। मन बंधन हरि नाम डोर, सतिगुर आप रखाईआ। गुरमुखां बन्ने पंजे चोर, चोर चोरी आप कमाईआ। आसा तृष्ना कर देवे होड़, जूठ झूठ ना घोड़ दौड़ाईआ। हउमे हँगता देवे होड़, भय भयानक रूप वटाईआ। हरिजन सुरती गुर गुर शब्द देवे जोड़, नर हरि वड्डी वड्याईआ। सच दुआरे जाए बौहड़, आप आपणा रूप वटाईआ। वेखे फल मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। धुर दरगाही आया दौड़, लोकमात करे रुशनाईआ। दो जहानां लाया एका पौड़, सो पुरख निरजंण डण्डा इक्क वखाईआ। गुरमुखां वर पाया जेहा लोड़, अन्तर आत्म हरि लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर वस्सया, सतिगुर दीन दयाल। आदि जुगादी फिरे नस्सया, गोबिन्द गुर गुर गोपाल। आपणे अस्व घोड़े तंग आपे कस्सया, आपे चले आपणी चाल। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठां झस्सया, मेल मिलाए जोत अकाल। शब्द तीर निराला एका कस्सया, आपे घाले आपणी घाल। जिस जन हिरदे अन्दर वस्सया, फल लगाए काया डालृ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग सन्त सुहेले आपे लए भाल। भालणहार पुरख समरथ, अभुल्ल गुर वड्याईआ। हरिजन राखे दे कर हथ्थ, अमुल अमुल आप अख्वाईआ। जगत विकारा करे सथ्थ, सृष्ट सबाई मूल चुकाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, घट घट फोल फुलाईआ। हरिजन देवे आपणा रस, शब्द घोड़ा रिहा दौड़ाईआ। जगत दुआरे आपे टप्प, दसवें मेल मिलाईआ। मेल मिलावा कमलापति, कँवल नैण दरसाईआ। ना कोई हड्ड मास नाड़ी दिसे रत्त, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। जानणहारा गति मित, मीत मुरारा आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी वार थित, जोत्स विद्या ना कोए वड्याईआ। जन भगतां करे हित, नित नवित्त जोग जुगत आप बणाईआ। आपे मात आपे पित, हरिजन साचे गोद उठाईआ। आपणा लेखा देवे लिख, ना सके कोए मिटाईआ। जिस जन चरन प्रीती बख्शे भिख, दूजा दर ना मंगण जाईआ। माण वड्याई मुन रिख, गुरसिख उत्तम आप जणाईआ। साची सिख्या एका सिक्ख, सिक्ख विचार समाईआ। जगत तृष्ना मेटे तृख, तृष्ना आप बुझाईआ। नेत्र लोचण आपणे पेख, नैण नैण बिगसाईआ। जिस जन कढ्ढे भरम भुलेख, भरम गढ़ तुड़ाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए रेख, दिवस रैण करे रुशनाईआ। आपे सोवणहारा बाशक शेज, विष्नूं रूप वटाईआ। अकाल पुरख कर सद आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेल माझे देस, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जामा धरया भेस, निहकलंक वज्जी वधाईआ। बाल बाला अल्लड़ वरेस, जवानी लए अंगड़ाईआ। पकड़ उठाए नर नरेश, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां आपे रिहा वेख, इष्ट दृष्ट इक्क जणाईआ। दाता दानी दस दस्मेश,

दर दर वेख वखाईआ। लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति भुल्ल ना राईआ। करोड़ तेतीसा कर कर आदेश, सुरपति राज इन्द सीस झुकाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण जोत नूर नुराना हो प्रवेश, नर नरायण नाउँ धराईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, सम्बल नगरी आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, घर साचा दए सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप रंग ना कोए वखाईआ।

✪ २२ चेत २०१६ बिक्रमी पिण्ड माढ़ी मेघा ✪

आदि पुरख निरँजण हरि निरँकार, निरगुण नूर आप अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकउँकार, अकल कला अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो उज्यार, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल आप अख्वांयदा। पुरख अकाल हरि समरथ, एका एक अख्वाईआ। आप चलाए आपणा रथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी हरि निरँकारा, एका रूप समांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतारा, जुग जुग वेस वटांयदा। शब्द जणाई साचा नाअरा, आपणा आप लगांयदा। लोआं पुरीआं दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर दरसांयदा। नूर उजाला हरि मेहरवान, आपणी कल वरताईआ। परम पुरख श्री भगवान, एक एक आप अख्वाईआ। शब्द वखाए सच निशान, धुर दरगाही बेपरवाहीआ। इक्क अकल्ला खेले खेल महान, दो जहानां फेरा पाईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर आपणा आसण लाईआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। अबिनाशी करता हरि भगवाना, एक जोत अकालया। खेले खेल श्री भगवाना, दीनां बंधप दीन दिआलया। आदि जुगादि अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटा ल्या। वेस वटाए हरि बनवारी, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारी, घट घट वेख वखाईआ। त्रैगुण माया वस्सया बाहरी, तत्व तत्त ना कोए जणाईआ। शाहो भूप हरि वड सिक्दारी, सच सुल्तान इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर बन्ने धारी, आपणी धारा आप चलाईआ। शब्द सुहेला इक्क कराए वणज वपारी, नाम हट्ट इक्क खुल्हाईआ। चौदां हट्टां वेख पसारी, आप आपणी वस्त विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप अख्वाईआ। निरगुण रूप आपे

कर, हरि आपे वेख वखांयदा। धरनी धरत धवल उप्पर धर, आप आपणा वेस वटांयदा। करता पुरख करनी कर, करनहार आप अख्वांयदा। रूप अनूप नरायण नर, नारी कन्त मेल मिलांयदा। आपणे अन्दर आपे वड़, आप आपणा घर सुहांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रेख ना कोए वखांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणी बणत बणांयदा। आपणे मन्दिर आपे चढ़, आप आपणा दर सुहांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, शब्द नगारा इक्क वजांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव वेखे खड़, करोड़ तेतीसा संग रलांयदा। पुरख अनादी लाए जड़, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा कर पसारा, निरगुण धारा आप चलांयदा। निरगुण धार पुरख अकाला, आपणी आप चलाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। निरगुण जोती दीपक कर उजाला, दिवस रैण डगमगाईआ। बिरध जवान ना कोई बाला, एका रंग समाईआ। आप आपणा बण दलाला, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादि समांयदा। अगम्म अगम्मड़ा वसे अगम्मड़ी थाँ, अलक्ख निरँजण भेव ना आंयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। वञ्झ मुहाणा आपे ला, आपे पार करांयदा। पुरख सुल्ताना आप अख्वा, तख्त ताज सुहांयदा। धुर फ़रमाना दए जणा, एका शब्द अल़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप अख्वांयदा। निरगुण रूप पारब्रह्म, आप आपणा रूप दरसाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए बणाईआ। जुगा जुगन्तर जाणे कम्म, आपणी रचना आप रचाईआ। लक्ख चुरासी देवे तम, विष्नूं वंसी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर दरसाईआ। निरगुण नूर अनुभव प्रकाश, हरि साचा आप करांयदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग भेख वटांयदा। परम पुरख हरि शाहो शाबाश, सति पुरख अख्वांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। मण्डल मण्डप पावे रास, रवि ससि नूर चमकांयदा। दाता दानी सर्ब गुणतास, आप आपणी वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर साचा आप वखांयदा। साचा घर आदि निरँजण, हरि हरि जोत जगाईआ। इक्क अकल्ला साचा सज्जण, बैठा डेरा लाईआ। उच्च महल्ला राग अनादी एका वज्जण, एका छंत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी बणत बणाईआ। शब्द सुत्त सुत्त दुलारा, हरि साचे आप उपाया। एका भरे नाम भण्डारा, जुग जुग आप वरताया। लोआं पुरीआं दए सहारा, आप आपणा खेल रचाया। नौ खण्ड पृथ्मी हो उज्यारा, सत्तां दीपां वेख वखाया। लक्ख चुरासी दए सहारा, आत्म ब्रह्म समाया। पंज तत्त कर उज्यारा, त्रैगुण

जोड़ जुड़ाया। मन मति बुध कर अधारा, एका दर सुहाया। नौ दर खोल्हे जगत किवाड़ा, घर घर विच बन्द कराया। शब्द अगम्मी साचा अखाड़ा, हरि साचे आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द ज्ञान नाम निधान, हरि भगवान आपणा आप उपाया। नाम निधान साचा मन्त्र, हरि साचा आप उपजाईआ। आप चलाए जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेस वटाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, आत्म अन्तर खोज खुजाईआ। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, पंज तत्त मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नाम वड्डी वड्याईआ। नाम वड्याई गुण भरपूर, गुर साचे हट्ट विकांयदा। धुन अनादी एका तूर, एक घर सुणांयदा। अगम्म अगम्मड़ा हाज़र हज़ूर, हर घट डेरा लांयदा। जोत निरँजण बख्शे नूर, नूर नुराना आप अख्वांयदा। आसा मनसा आपे पूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग नाउँ हरि प्रगटाए, आपणी दया कमांयदा। निरगुण सरगुण मेल मिलाए, सतिगुर रूप समांयदा। सन्त सुहेले वेख वखाए, आपणी बूझ बुझांयदा। भगतन भगती इक्क दृढ़ाए, एका रंग रंगांयदा। शब्द विचोला इक्क वखाए, दो जहानां मेल मिलांयदा। साचा सोहिला आप सुणाए, आपणा आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग अपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ धर हरि निरँकार, आपणी खेल खिलाईआ। वरते वरतावे विच संसार, वेद कतेब भेव ना राईआ। आवे जावे वारो वार, नित नवित्त फेरा पाईआ। गुरमुख साजण लाए पार, चेतन चेत सुहाईआ। राम नाम दए अधार, कमल बिगसाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। खोल्हणहारा बन्द किवाड़, दूई द्वैती पर्दा दए मिटाईआ। साचे मन्दिर कर प्यार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। डूँघी कन्दर करे पार, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। जुगा जुगन्तर वेख विचार, लोकमात करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, पिछला लहिणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वडी वड्याईआ। जुग करता हरि करनेहारा, आपणी किरत कमांयदा। आप आपणा कर पसारा, हरि आपे वेख वखांयदा। आपे गुर आप अवतारा, आपे रूप वटांयदा। आपे नाम आप भण्डारा, आपे आप वरतांयदा। आपे शब्द आप जैकारा, आपे आप सुणांयदा। आपे लोआं पुरीआं दए सहारा, गगन मण्डल आप टिकांयदा। आपे रवि ससि चन्न सतारा, आपे आपणा नूर चमकांयदा। आपे धरत धवल रिहा उभारा, जल बिम्ब आप अख्वांयदा। आपे सन्त भगत करे प्यारा, आपे भगती नाम दृढ़ांयदा। आपे वेद पुराण कर उज्यारा, आपे भेव खुल्हांयदा। आपे शास्त्र सिमरत दए आधारा, आपे लेख जणांयदा। आपे राम रूप राम अवतारा, लंका गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे वेद व्यासा बण लिखारा, पुराण अठारां भेव खुल्हांयदा। आपे रूप अनूप सच्ची सरकारा,

मोहन माधव नाम धरांयदा। आपे ज्ञान ध्यान बणे वणजारा, आपे मूल चुकांयदा। आपे बोले एका नाअरा, आपे गीता गोबिन्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद हरि साची रचन रखांयदा। आपे इष्ट आप गुरदेव, आपे सीस झुकाईआ। आपे करे आपणी सेव, आप आपणा संग निभाईआ। आपे दाता दानी अलक्ख अभेव, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। आपे दाता आपे दानी, दयावान आप अख्वांयदा। आपे पुरख शाह सुल्तानी, राज जोग आप कमांयदा। आपे देवे दर घर साचे सच निशानी, नाम निधाना आप उपांयदा। आपे जाणे आपणी बाणी, जुग जुग आप सुणांयदा। आप रखाए आपणी आणी, निर्भय आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्क अख्वांयदा। आपे राजा सच भूप, साचे तख्त बराजया। आपे वसे चारे कूट, खेले खेल ग़रीब निवाजया। आपे निरगुण जोत सति सरूप, आपे शब्द अनादी मारे वाजया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आपणा साजण साजया। आपे शाह दारा सिक्दार, आप आपणी खेल खिलाईआ। इक्क अकल्ला कर आकार, जगत पसार वेख वखाईआ। आदि जुगादि खेले खेल नर निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग कूड़ा वेख पसार, आप आपणी ल्ए अंगड़ाईआ। धरत धवल करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क अलक्ख हो प्रतक्ख, सर्ब कल समरथ, आपणी आप करे जणाईआ। अलक्ख निरँजण इक्क अलक्ख, आपणी आप जगांयदा। पंज तत्त कीता वक्ख, सरगुण निरगुण रूप वटांयदा। माटी भाण्डा कीता सक्ख, साची वस्त साचे घर टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। पंज तत्त तुट्टा नाता, हरि साचे रचन रचाईआ। मेल मिलावा पुरख बिधाता, घर साचे वज्जी वधाईआ। उत्तम होई एका ज़ाता, वरन गोत ना कोए रखाईआ। मिटी रैण अन्धेरी राता, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बैठा रहे इक्क अकांता, अकल कला वरताईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, भैण भाई ना कोए वखाईआ। आपणी जाणे आपे गाथा, आपे रिहा सुणाईआ। कलिजुग वेखे कूड़ा राथा, कूड़ी करे रथवाहीआ। दीनां अनाथां कोई ना देवे साथा, भरमे भुल्ली झूठी शाहीआ। दर दर घर घर पूजा पाठा, पूरन ब्रह्म ना कोए जणाईआ। घर घर अग्नी जगे ललाटा, जोती नूर ना कोए डगमगाईआ। घर घर पीण प्याला अमृत बाटा, आत्म तृष्न ना कोए बुझाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ ताटा, अठसठ फेरा पाईआ। मानस जन्म पूरा करे ना कोई घाटा, जूठे झूठे कंडे तोल तुलाईआ। अग्गे दिसे ना किसे वाटा, भरमे भुल्ले पाधी राहीआ। हरि का शब्द आत्म रस ना किसे चाटा, नारी नर रहे कुरलाईआ। अन्तिम

नेड़े दिसे वाटा, नानक गोबिन्द मिल्या मेल ना साचे माहीआ। काया चोला अन्तिम पाटा, ना सके कोए सिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे खेल खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग कूड़ा डंक पसार, चारों कुन्ट वजांयदा। लेखा लिख्या हरि करतार, ना कोई मेट मिटांयदा। ऐड़ा अथर्बन इक्क प्यार, इलाही नूर वखांयदा। ऐनलहक्क ख़बरदार, हक्क हकूक आप जणांयदा। वेख वखाए चार यार, संग मुहम्मद आप उठांयदा। एका नाअरा साचा मार, नर नरायण अक्ख खुल्हांयदा। सृष्ट सबाई धूंआँधार, सच प्रकाश ना कोए जणांयदा। पंज तत्त तप्या अन्गायार, सांतक सति ना कोए करांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। माया ममता फिरे दर दुआर, दहि दिशा फोल फोलांयदा। आलस निन्दरा सुत्ता सर्ब संसार, राम नाम ना कोए ध्यांअदा। नाम सति ना करया वणज वपार, नानक गुर एका हट्ट खुल्हांयदा। वाहिगुरू फ़तहि ना कोए जैकार, गुर फ़तहि ना कोए करांयदा । जगत तृष्ना कर प्यार, आपणा घर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अंगड़ाई, आपणा रूप वटांयदा। जूठ झूठ कर कुड़माई, लक्ख चुरासी नाल प्रनांयदा। दर दर घर घर वज्जे वधाई, गीत सुहागी साचा मंगल कोए ना गांयदा। ना कोई जाणे पीड़ पराई, हक्क हकीकत ना वेख वखांयदा। नाम गंढु ना पल्ले बन्न्ही राई, राउ रंक मुख भवांयदा। गुरमुख विरले रहे ध्याई, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। वेख वखाए थाउँ थाँईं, आप आपणे आप उठांयदा। पकड़नहारा साची बांहीं, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर देवे ठंडीआं छाँईं, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया पुरख सुल्तान, जोती जोत रुशनाईआ। खेले खेल गोपी काहन, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। वेख वखाणे सीता राम, नईआ नाम राम चलाईआ। पाए सार कलमा अमाम, कायनात फेरा पाईआ। करे प्रधान सति नाम, नाम सति वड्डी वड्याईआ। एका रूप श्री भगवान, सृष्ट सबाई दए जणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका वस्सया बेपरवाहीआ। दरगाह साची सच निशान, हरि साचा आप सुहाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई हरि का नाउँ एका गाण, एका करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण वेखे मार ध्यान, हँ ब्रह्म आप अख्वाईआ । विष्नूं वंसी खेले खेल गुण निधान, भगवन जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखाईआ। जूठी झूठी मेट दुकान, सच सुच्च मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञाना, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। एका ब्रह्म रूप पछाना, पारब्रह्म इक्क वखाईआ। दर दरबार इक्क सुहाना, एका बैठा आसण लाईआ। एक राग शब्द तराना, एका रिहा सुणाईआ। एका

अनहद गाए गाणा, घट घट बैठा बेपरवाहीआ। एक अमृत पीणा खाणा, काया सरोवर ताल भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चार बत्ती हज़ार लेखे लाईआ। चार लक्ख चार यारी, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ । चौदां तबकां वणज वपारी, एका हट्ट विकाईआ। पीर दस्तगीरां वेखे वारो वारी, शाह हकीरां आप उठाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक मारे तीरा, तीर निशाना इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह परवरदिगार, नूरी नूर समांयदा। आपणा बेड़ा करे आपे पार, आपे बन्ने लांयदा। आपे मेल मिलावा मुहम्मदी यार, अल्ला राणी आप प्रनांयदा। आपे मक्का काअबा पावे सार, दो दो आबा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखाउणा, हरि साची जोत जगाईआ। अल्ला राणी तेरा सिर तों पर्दा लौहणा, तेरा नैण खुल्हाईआ। चार यारी तेरा कीता तेरी झोली पाउणा, संग मुहम्मद वेख वखाईआ। अञ्जील कुरान तेरा लेख चुकाउणा, ईसा मूसा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आप अख्वाईआ । कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, हरि साचा वेख वखांयदा। पंडत पांधा कोए ना पावे सारा, शास्त्र सिमरत ना कोए जणांयदा। आत्म अन्दर लोभ हँकारा, काम क्रोध सतांयदा। दिस ना आए राम रूप नर निरँकारा, निज घर ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक डंक वजांयदा। शब्द अक्खर सच ज्ञान, हरिजन इक्क पढ़ाईआ। एका नेत्र लए पछाण, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। एका होए जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ।

इक्क अकल्ला एकउँकार, अकल कला अख्वाईआ। दूजा कर हरि पसार, आपे वेख वखाईआ। तीजे नेत्र दए दीदार, हरि दरस दरस वड्याईआ। चौथे घर देवे वाड़, चौथे पद समाईआ। पंचम मेटे पंचम धाड़, पंचम शब्द शनवाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहार, हरि बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति सतिवादी कर आकार, निराकार जोत रुशनाईआ। अठवें अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, भेव कोए ना पाईआ। नौवें नौ दर खोल्ह जगत किवाड़, काया माटी वेख वखाईआ। दसवें दस घर बैठा कुण्डा मार, घर घर विच मुख छुपाईआ। दस इक्क ग्यारां सुन्न अगम्मो होवे बाहर, आप आपणा रूप वटाईआ। दस दो बारां जोत निरँकारा, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। दस तिन्न तेरां करे निबेड़ा, आप आपणे विच टिकाईआ। दस

चार चौदां वसे खेड़ा, थिर घर साचा आप रखाईआ। दस पंज पन्दरां उच्च अटल महल्ल मन्दिर उप्पर हरि बैठा आसण लाईआ। दस छे सोलां आपणा चुक्के आप डोला, आपणा भार आप उठाईआ। जुगा जुगन्तर बणे तोला, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी रक्खे पर्दा उहला, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा दर आपे खोल्ह, वणज वपारा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका छींका मेल मिलाईआ। एका इक्क इक्क समाया। छे घर रूप वटांयदा। दूजा दर ना कोए वखाया, ना कोई नज़री आंयदा। तीजा लेखा ना किसे चुकाया, लहिण देणा ना कोए चुकांयदा। चौथे घर ना डेरा किसे लाया, घर मन्दिर ना कोए वखांयदा। पंचम सखीआं मिल मिल बहि बहि मंगल किसे ना गाया, राग अनादी ना कोए सुणांयदा। छे दरवेश नर नरेश आप आपणा रूप वटाया, आप आपणी खेल खिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया, साचा हुक्म सुणांयदा। बाशक सेजा आप तजाया, सांगोपांग ना कोए हंढांयदा। लछमी नेत्र नीर वहाया, लाल बस्त्र तन सुहांयदा। ब्रह्मा अठ्ठे नेत्र रिहा खुल्हाया, चारों कुन्टां मुख भवांयदा। शिव शंकर बाशक तशका गलों सुटाया, हत्थ त्रिसूल ना कोए उठांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाया, अमृत धार ना कोए चुआंयदा। सुरपति राजे मुख शरमाया, नेत्र नैण ना कोए बिगसांयदा। गण गंधर्ब हाहाकार कराया, साचा काहन ना कोए गांयदा। धर्म राए बैठा राह तकाया, आप आपणा दर खुल्हांयदा। चित्रगुप्त लेखा खोल्ह वखाया, पिछला मूल चुकांयदा। लाड़ी मौत मुख तों पल्ला लाहया, आप आपणा खेल खिलांयदा। नौ खण्ड तेरा डेरा इक्क वसाया, सत्तां दीपां संग रलांयदा। त्रैगुण साचा मेल मिलाया, पंचम तत्त सुहांयदा। पंचम पंचम हरि जोड़ जुड़ाया, साची चढ़त रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां आप जणांयदा। द्वापर तेरी अन्तिम धार, सोलां कल वड्याईआ। रथ रथवाही कृष्न मुरार, जन भगतां रथ चलाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम होए सहाईआ। ग़रीब निमाणे लाए पार, बिदर सुदामा आप तराईआ। द्रोपद लज्जया रक्खे विच संसार, उप्पर पर्दा नाम पाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, झूठी क्रिया दए मिटाईआ। ना कोई तीर ना कटार, ना चिल्ला हत्थ वखाईआ। मुकंद मनोहर नैण मुँधार, आप आपणी खेल खिलाईआ। दुर्योधन मारे एका मार, आत्म हँकार जणाईआ। सोलां कुलां कर प्यार, सोलां इच्छया वेख वखाईआ। नौ खण्डां पृथ्मी सत्तां दीपां हो उज्यार, नौ सत्त जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां दए वड्याईआ। सोलां सोलां हरि पसारा, आपणा आप करांयदा। लोकमात खेल न्यारा, दिस किसे ना आंयदा। वीह सद बिक्रमी जोती जामा वेस वटांयदा। वीह दस करया ख़बरदारा, जीव जन्त आप उठांयदा। साढे तिन्न हत्थ बणाए इक्क मुनारा, एका दर सुहांयदा।

नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, कलिजुग क्रिया मेट मिटांयदा। हरिसंगत लेखा लिखे सतारा हाढ़ा, साची रुत्त सुहांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। शब्द अगम्मी करे वाड़ा, दिवस रैण सेव कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ साचा लाड़ा, गुरमुख साजण आप प्रनांयदा। मनमुखता तेरा लग्गा अखाड़ा, मनमति सुरमत नाल लड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां राह तकांयदा। सम्मत सोलां सोलां कलीआं आसण, हरि साचा आप वछाईआ। उप्पर बैठ पुरख अबिनाशन, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। शाहो भूप हरि शाहो शाबासन, हर घट वस्सया सृष्ट सबाईआ। जो जन हरि हरि होए दासी दासन, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरत धवल आप सुहाईआ। धरत सुहावीं रुत्त, हरि सतिगुर पुरख मनाया। जिस जन मिल्या मेल पुरख अबिनाशी अचुत्त, संसा रोग रहे ना राया। सतिगुर पूरा हरिजन साचे आप बणाए आपणे सुत्त, सुत्त दुलारा वेख वखाया। कलिजुग अग्नी विच्चों आपणी गोदी लए चुक्क, वरन गोत ना कोए जणाया। हरि का बूटा हरिजन कदे ना जाए सुक्क, अमृत सिंच हरया आप कराया। जूठ झूठ चारों कुन्ट मुख प्या थुक्क, ना सके कोए बचाया। हरि का भाणा ना सके रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाया। राज राजानां शाह सुल्तानां घर पए लुट्ट, महल्ल अटल ना कोए वसाया। मायाधारी दर दर मंगन खाली ठुठ, दर भिच्छया कोए ना पाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आपे रक्खे एका मुट्ठ, आप आपणा मेल मिलाया। राम कृष्न नानक गोबिन्द हरि हरि साचा जिस जन उप्पर जाए तुठ, रोग सोग नेड़ ना आया। माया ममता हउमे हँगता कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथ्मी कढ्ढे कुट्ट, सच सुच्च करे रुशनाया। जन भगतां नाम भण्डार दए अतुट, हरि साचा आप वरताया। सतिजुग पौह रही फुट्ट, कलिजुग अन्धेरा छाया। अन्तिम फल रिहा टुट्ट, डिग्गा फल डाहण ना कोए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए वर, धरनी उप्पर जोत धर जिस जन आपणा दरस वखाया। दरस वखाए नेत्र खोल्ह, एका नैण वखाईआ। सम्मत लेखा सोलां सोल, वाह वाह रूप वटाईआ। बीस बीसा वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। भाग लगाए धरनी धवल, जिस धाम आपणा चरन छुहाईआ। कोई भेव ना जाणे पंडत पांधा रौल, हरि वड वड्डा वड्याईआ। हरि का भाणा ना कोई मेटे राजा राणा रत्ती चौल, आपे पूरा रिहा कराईआ। गुर गोबिन्द कीता साचा कौल, कीता कौल तोड़ निभाईआ। खेलणहारा साची होल, होल लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। शब्दी देवे इक्क झकोल, एका धक्का लाईआ। जीव जन्त साध सन्त डावां डोल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कूड़ कुड़यारा कढ्ढे पोल, डूँघी भँवरी फोल फोलाईआ। जिस जन आत्म अन्तर आपे जाए मौल, आप

आपणा रंग रंगाईआ। शब्द जणाई हौली हौल, गुरमुखां हौला भार कराईआ। हरिजन हरि हरि चरन प्रीती रहे घोली घोल, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। आदि जुगादि जुग जुग बैठा रहे अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलाईआ। कलिजुग जीव सुत्ता रहे ना कोई अनभोल, शब्द डंक आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां राह तकाईआ। सम्मत सोलां गया चढ़, लोकमात वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, दिवस रैण जो रहे ध्याईआ। काया मन्दिर आपे वड़, आपे वेख वखाईआ। मनमुख जीव रहे सड़, अग्नी तत्त जलाईआ। धवल उप्पर आपे खड़, आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां दरस दिखाए घर घर, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। आप तराए नारी नर, बिरध बाल ना कोए वखाईआ। जो जन नेत्र लोचण दर्शन रहे कर, वेले अन्त होए सहाईआ। एथे ओथे रक्खया आपे कर, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सूलीउँ सूल बणाईआ। कलिजुग तेरा झूठा भार, तेरे सिर चुकाईआ। दर घर साचे रुठा संसार, तेरा संग निभाईआ। जिस जन उप्पर तुठा आप निरँकार, आपणा मेल मिलाईआ। रुठा रहे ना कोई दुआर, जो जन आए चल सरनाईआ। नाम अतुट्टा वड भण्डार, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द एका धार, ईसा मूसा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां करे रुशनाईआ। सम्मत सोलां होए उजाला, हरि साची जोत जगांयदा। गुरसिखां काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाला, इष्ट देव इक्क जणांयदा। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाला, माया मोह चुकांयदा। एका देवे नाम सुखाला, सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आदि शक्ती रूप ज्वाला, सोइम रूप आप समांयदा। हँ ब्रह्म बण रखवाला, तीर निराला इक्क चलांयदा। वेख वखाए काल महांकाला, दीन दयाला भेव ना आंयदा। कलिजुग तेरी अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखांयदा। सोलां कलीआं वलीआ छलीआ गुरसिखां पाए नाम गल साची माला, आपणी हथ्थीं आप उठांयदा। भाग लगाए काया माटी झूठी खाला, दीवा बाती इक्क जगांयदा। सन्त सुहेला इक्क अकेला, आप आपणा आपे भाला, आपे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। सम्मत सोलां मन मति धार, चार कुन्ट कुरलाईआ। बुधी देवे अन्तिम हार, संग ना कोए वखाईआ। जगत स्यासत रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। गुरमुख विरला लोकमात करे जै जैकार, जो भाणे विच समाईआ। पुरख अकाला करे सच प्यार, दीन दयाल वेख वखाईआ। होए रखवाला विच संसार, आपणा बेड़ा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दर आए साचे घर, सो दर रिहा सुहाईआ। कलिजुग जीव उठ जाग, हरि साचा आप जगांयदा। माझे देस लग्गा भाग, साचा राह वखांयदा।

फड़ फड़ हँस बणाए काग, जो जन सरनाई आंयदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, अमृत जाम प्यांअदा। चरन धूढ़ी बख्शे मजन माघ, अठसठ मूल चुकांयदा। माया डसनी ना डस्से नाग, जगत तृष्ना मेट मिटांयदा। पंचम बुझे लग्गी आग, सांतक सति वरतांयदा। शब्द बन्ने साचा ताग, जत सति आप वखांयदा। आत्म उपजे इक्क वैराग, हरि हरि नामा रसना गांयदा। मेल मिलावा सज्जण साक, साचा सइया मेल मिलांयदा। पतित पावन पाकी पाक, ख़ाकी ख़ाक आप तरांयदा। आपे जाणे आपणा भविख्त वाक, आपणा ढोला आप सुणांयदा। गुरसिखां खोल्हे बन्द ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। सम्मत सोलां शब्द सरूपी नकेल पाए नाक, नाम डोरी हथ्थ रखांयदा। घट घट अन्दर बैठा रिहा झाक, गुरमुख विरले नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां मुख सलांहयदा। सोलां मुख सहँसर धार, दोए दोए रूप समाईआ। इक्क एका ओंकार, ओंकारा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, सरगुण निरगुण नाल मिलाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाध जणाईआ। कलिजुग अन्तिम करन आया ख़बरदार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलार, सच हुलारा इक्क लगाईआ। साची धरनी कर प्यार, बख्शे चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, दर बैठा अलक्ख जगाईआ। हरिजन मंगे मंग अपार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। अन्त अन्त ना होए ख्वार, ना कोई धक्का लाईआ। दर घर आए दरस दिखाए किरपा धार, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जन्त साध सन्त भगवन्त कन्त लए वर, सम्मत सोलां चुक्के डर, मेल मिलावा हरी हरि, हरि गोबिन्द नज़री आईआ। पुत्तर धीआं हरि हरि दात, मात पित गोद सुहाईआ। पूत सपूता बन्ने नात, जगत नाता जोड़ जुड़ाईआ। पूर्ब कर्म देवे काट, अग्गे लहिणा लहिण चुकाईआ। वेखणहारा काया माट, पंज तत्त फोल फोलाईआ। मात गर्भ आन बाट, उलटा बिरछ सलाहीआ। कूड़ा फल वेखे कूड़े हाट, मुल ना कोए रखाईआ। पार ना उतरे जगत घाट, जगत किनारा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार आप अख्वाईआ। बाल निधाना बाली बुध, तत्व तत्त ना कोए जणाईआ। आपणा आप ना रिहा सुध, सुरती सुरत ना सुरत समाईआ। आपणा किया ना होए कुझ, करनहार इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा लहिणा बुझ, पिंगला पर्बत आप चढ़ाईआ। चरन प्रीती जाणा झुझ, जगत दुःखड़ा दए मिटाईआ। आपणा घर आपे जाए सुझ, आपणा पर्दा परे हटाईआ। पूत सपूता दर दुआरे माणे मौज, मेल मिलावा साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार आप अख्वाईआ। बख्शणहार हरि निरँकारा, जिस जन दया कमांयदा। आपे देवे आपणा आप सहारा, बल धारा आप अख्वांयदा। आपे सुट्टे मूंह दे भारा,

मात पित ना कोए उठांयदा। कर्मी कर्मा पावे सारा, जन्म जन्मां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे सच सहारा, मंगे मंग दर दुआरा, बणया रहे जगत भिखारा, साची भिच्छया आत्म इच्छया पूर करांयदा। तेरा रूप तेरा रंग, तेरे अंक समाईआ। तेरा वसे तेरे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। अमृत नुहाए साची गंग, झूठी मैल रहिण ना पाईआ। आत्म वेखे सच पलँघ, घर साजण सेज वछाईआ। दरस दखाए अन्दर लँघ, नौ दुआरे बन्द कराईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, नाम अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, काया चोली रंग रंगाईआ। काया चोली नाम अनमुल्ला, हरि साचा आप वरतांयदा। कलिजुग अन्तिम बणया तोला, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। सच भण्डारा एका खोल्ला, अतोट अतुट रखांयदा। जो जन चरन दुआरे होए गोला, कर किरपा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, दु:ख भुक्ख जगत रोग चिन्ता सोग आप मिटांयदा।

हरिसंगत हरि रूप है, हरि हरि विच समाए। हरिसंगत सति सरूप है, सति सतिवादी आप बणाए। हरिसंगत मेला शाहो भूप है, दर घर साचे सोभा पाए। हरिसंगत हरि का नाम हरि रस लाहा रही लूट है, बेमुखां हथ्थ ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत एका रंग रंगाए। हरिसंगत हरि रंग रंगया, दिवस रैण प्रभात। नाम निधाना जिस जन मंगया, देवणहारा साची दात। जो दर आए भुक्खा नग्गया, पुच्छणहारा वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला कमलापात। कमलापाती हरि गोबिन्द, हरिसंगत संग रखाईआ। हरिजन मेटे सगली चिन्द, जो जन आए चल सरनाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। सर्ब जीआं आपे बख्शंद, सुक्के रुखड़े हरे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत साचे घर, हरि साचा मेल मिलाईआ। काया रोग मेटे दु:ख, जिस जन दर्शन पाया। सुक्की करे हरी कुक्ख, बाल बाला गोद सुहाया। उज्जल करे मात मुक्ख, जिस जन दर्शन पाया। दरस दिखाए डूँघी कन्दर लुक, आप आपणा पर्दा लाहया। हरिसंगत तेरे अग्गे तेरा रूप सतिगुर पूरा जाए झुक, निउँ निउँ सीस झुकाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरसिख सज्जण आपणी गोद ल्ए चुक्क, दरगाह साची धाम बहाया। सतिजुग त्रेता द्वापर जो जन गए रुट्ठ, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया। जगत विकारा जड़ देवे पुट्ट, सच सुच्च एका बीज बिजाया। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, धर्म राए ना दए सज़ाया। हरिसंगत हरि हरि रक्खी एका ओट,

दूजा इष्ट ना कोए वखाया। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत शब्द नगारे लाए चोट, राम नाम डंका इक्क वजाया।

✪ २३ चेत २०१६ बिक्रमी पिण्ड नारला ✪

हरिजन नाम प्यास, एका एक रखाईआ। गुर गुर पूरी करे आस, हरि गोबिन्द वड वड्याईआ। मानस जन्म करे रास, नाम अमोलक झोली पाईआ। रसना जेहवा स्वास स्वास, दिवस रैण जणाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, हरिजन काया मन्दिर आप सुहाईआ। साचे मण्डल पावे रास, दिवस रैण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तृखा तृष्ना आप बुझाईआ। हरिजन नाम अधार, गुर सतिगुर आप करांयदा। चरन प्रीती बख्श प्यार, एका मार्ग लांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कार, एका अनहद ताल वजांयदा। एका अमृत आत्म ठंडी ठार, भर प्याला आप प्यांअदा। दीन दयाला नर निरँकार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। शब्द विचोला विच संसार, आप आपणी बणत बणांयदा। जुग जुग लै मात अवतार, हरिजन साचे आप तरांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण वेख वखांयदा। हरि सज्जण शाहो भूप, सति पुरख अख्वाईआ। गुरमुख वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। एका देवे नाम अनूठ, रस मिट्ठा इक्क वखाईआ। लहिणा देण चुकाए जूठ झूठ, पंज तत्त ना कोए हल्काईआ। पंज विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जिस जन देवे अमृत आत्म साचा घुट्ट, आसा तृष्ना पूर कराईआ। नाम भण्डारा सदा अखुट्ट, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। तन नगारे लाए चोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान सुहञ्जणा पुरख अथाह, आपे वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, हरिजन साचे आप तरांयदा। आप जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। काया नगर खेड़ा वेखे सच ग्रां, घर घर विच आप सुहांयदा। निरगुण बाती दीपक इक्क टिका, जोती जोत डगमगांयदा। दिवस रैण करे रुशना, अन्ध अन्धेर गवांयदा। आप आपणी बूझ बुझा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। एका दूजा भउ चुका, तीजा लोचण आप खुलांयदा। चौथे घर लए मिला, चौथा पद आप सुहांयदा। पंचम मीता आप अख्वा, पंचम मोह चुकांयदा। हरिजन साचे लए तरा, तारनहार भेव ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटा, लोकमात फेरा पांयदा। शब्द अगम्मी डंक वजा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी रिहा उठा, सोया कोए रहिण ना पांयदा। राज रजानां शाह सुल्तानां

दए हला, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेख वखांयदा। गुरमुख साजण मीतड़ा, हरि हरि नाम रंगाया। रंगणहारा काया चीथड़ा, लोकमात वेख वखाया। सद वसे धाम अनडीठड़ा, अलक्ख अगम्म नाउँ धराया। आदि जुगादी साचा मीतड़ा, पुरख अबिनाशी आप अख्वाया। जुगा जुगन्तर आप सुणाए आपणा गीतड़ा, अक्खर वक्खर नाम दृढ़ाया। साचा देहुरा गुरदुआर मन्दिर मसीतड़ा, गुरसिख तेरी काया हट्ट वखाया। निरगुण बैठा इक्क अतीतड़ा, सच सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। मेल मिलाया शाह शाबाश, आपणी दया कमाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, पूरन ब्रह्म जणाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ प्रभास, जल थल महीअल वेख वखाईआ। लेखे लाए रसन स्वास, जो जन रहे गाईआ। आदि अन्त ना होए विनास, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां होए दासी दास, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी करे बन्द खलास, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। थिर घर साचा कोए ना जाए निरास, पुरख अकाल जिस जन ओट तकाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वड्याईआ। नाम वड्याई शब्द भण्डार, गुर सतिगुर आप वरतांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, गुर गुर नाउँ रखांयदा। साधां सन्तां कर प्यार, आप आपणा रूप दरसांयदा। भगत भगती इक्क अधार, एका मार्ग लांयदा। जोग जुगत हथ्थ करतार, जिउँ भावे तिउँ राह चलांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, घट घट वेख वखांयदा। इक्क अकल्ला एकउँकार, निरगुण सरगुण धार बंधांयदा। शब्द सरूपी सति जैकार, सति सतिवादी आपे लांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए अधार, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, भेव कोए ना पांयदा। भगतन मीता हरि गिरधार, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। रवि ससि करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। धरत धवल हरि हो उज्यार, जोती जामा भेख वटांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप उठांयदा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। गुरमुख विरले लक्ख चुरासी विच्चों लए उभार, जिस जन आपणा रूप दरसांयदा। कन्त कन्तूहला कर प्यार, आत्म सेजा वेख वखांयदा। शब्द झूला अपर अपार, दो जहानां आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पूरी आसा आप करांयदा। आसा मनसा हरि हरि पूर, हरिजन लेख चुकांयदा। दिवस रैण हाज़र हज़ूर, दूर नेड़ ना कोए रखांयदा। शब्द अगम्मी नादी तूर, धुन आत्मक आप वजांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च समांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस सिर आपणा हथ्थ

टिकांयदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दुरमति मैल गंवांयदा। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, जगत ललारी ना कोए रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। सज्जण मीता हरि निरँकार, आदि जुगादि अख्वाया। भगत सुहेले लाए पार, भव सागर पार कराया। भरमे भुल्ला भरम संसार, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाया। वरन बरन रहे हार, हरि का रूप दिस ना आया। नर नारी रोवे ज़ारो ज़ार, नर नरायण मुख छुपाया। नौ खण्ड पृथमी धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए वखाया। शाह सुल्ताना इक्क हँकार, ग़रीब निमाणा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहार पुरख समरथ, नाथ अनाथां आप तराईआ। शब्द जणाई एका अकथ, महिमा कथनी कथ ना सके राईआ। कलिजुग तेरा वेखे कूड़ कुड़यारा रथ, चारों कुन्ट अग्नी लाईआ। लक्ख चुरासी पाई नथ्थ, दहि दिशा रिहा फिराईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, आत्म अन्तर लिव ना कोए लाईआ। नहा नहा थक्के अठसठ, हउमे रोग ना कोए गंवाईआ। सूरज देवता पाणी रहे झट्ट, आत्म तृष्न ना कोए बुझाईआ। हरि का नाम विकाया हट्टो हट्ट, करता कीमत ना कोए रखाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, हरि साचा सच करांयदा। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, आप आपणा रूप वटांयदा। अबिनाशी करता खेल न्यार, भेव कोए ना पांयदा। आदि निरँजण हो त्यार, जोत निरँजण वेख वखांयदा। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ पाए सार, आप आपणा रंग रंगांयदा। मन मति बुध दए अधार, एका रूप दृढ़ांयदा। चौदां हट्टां वेख किवाड़, चौदां तबक फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे दर सुहांयदा। दर दुआरा आप सुहा, हरि सज्जण आप तराईआ। नाम निधाना झोली पा, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। शब्द निशाना इक्क वखा, साचा धाम सुहाईआ। दाता दानी दान झोली पा, सति भण्डारा रिहा भराईआ। गोपी कान्हा वेस वटा, राम रामा रूप समाईआ। नाम सति इक्क दृढ़ा, निरगुण जोत रुशनाईआ। नानक गोबिन्द मेला सहिज सभा, गुरमुखां रिहा कराईआ। कलिजुग माया पर्दा आपे पा, आपे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए उठाईआ। गुरसिख उठाया बाल निधान, गुर पूरा वेख वखांयदा। एका राग सुणाए कान, एका अक्खर आप अलांयदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हँ ब्रह्म आप जणांयदा। दोहां विचोला श्री भगवान, दूसर कोए ना संग रखांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेट मिटांयदा। एका पुरख इक्क सुल्तान, शाहो भूप इक्क अख्वांयदा। एका रूप श्री भगवान, घट घट एका आसण लांयदा। सतिगुर दाता सद मेहरवान, आप आपणी दया कमांयदा।

भगत भगवन्त भगती लए पछाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा।

✪ २३ चेत २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे घर तरन तारन ✪

आदि पुरख श्री भगवान, एका एकउँकारया। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तान, निरगुण नूर जोत उज्यारया। थिर घर वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा आप सुहा रिहा। सच सिँघासण हरि मेहरवान, आप आपणा आसण ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला वेस करा रिहा। इक्क अकल्ला पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार करांयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए रखांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आप उपांयदा। निरगुण नूर पुरख अकाल, एका रंग समाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। आपे वसे सच सच्ची धर्मसाल, दर घर आपणा आप सुहाईआ। आपणी आप करे प्रितपाल, परम पुरख वड वड्याईआ। आपणी घाल आपे रिहा घाल, ना कोई दूसर संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगाईआ। निरगुण धार निरगुण रूप, निरगुण इक्क उपांयदा। निरगुण शाह निरगुण भूप, सच सिक्दार आप अख्वांयदा। निरगुण दाता सति सरूप, रूप रेख ना कोए जणांयदा। निरगुण वसे चारे कूट, दहि दिशा आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ रखांयदा। अबिनाशी करता हरि करतारा, अकल कला अख्वाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाईआ। एका वसे धाम न्यारा, महल्ल अटल उच्च आप सुहाईआ। ना कोई दीसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। गगन मण्डल ना कोए सतारा, रवि ससि ना कोए रुशनाईआ। धरत धवल ना कोए अधारा, जल थल ना कोए वखाईआ। पंज तत्त ना कोए आकारा, त्रैगुण रूप ना कोए वटाईआ। पिता मात ना सुत्त दुलारा, भैण भाई ना कोए बणाईआ। इक्क अकल्ला एकउँकारा, घर साचे बैठा आसण लाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यारा, एका एक नूर रुशनाईआ। एका घड़ण भन्नणहारा, एका बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच घर बैठा डेरा लाईआ। सच घर धुर दरबारा, हरि साची जोत जगाईआ। इक्क अकल्ला कर आकारा, निराकार वेख वखाईआ। ना कोई दूसर जाणे धारा, ना कोई रूप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा रिहा सुहाईआ। थिर घर साचा ठांडा दर, हरि साचा

४२३ ०८

आप सुहांयदा। निरगुण अन्दर बैठा वड़, आप आपणी जोत जगांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत्त ना कोए रखांयदा। ना कोई अक्खर रिहा पढ़, रसना जेहवा ना कोए हलांयदा। ना कोई किला ना कोई गढ़, ना कोई रचन रचांयदा। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई भार उठांयदा। आपणा आप आपे घड़, आपणे दर रखांयदा। सच तख्त हरि सुल्तान निरगुण रूप बैठा चढ़, आप आपणा राज कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर नूर प्रगटांयदा। जोती नूर पुरख सुल्तान, घर मन्दिर आप सुहाया। आपे वस्सया सच मकान, दर दरवाज़ा ना कोए रखाया। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वेस वटाया। आपे जाणे आपणा माण, माण निमाणा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साचा घर सुहाया। घर सुहाया आदि निरँजण, एका वज्जी वधाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, भगवन रूप वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा सज्जण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे करे कुड़माईआ। साचे घर हरि कुड़माई, आपणी आप करांयदा। निरगुण वेखे वज्जे सच वधाई, निरगुण साचा आप वजांयदा। निरगुण धी निरगुण जवाई, निरगुण निरगुण आप प्रनांयदा। निरगुण सेज रिहा वछाई, निरगुण आप हंढांयदा। निरगुण निरगुण विच टिकाई, निरगुण निरगुण आप उपांयदा। सुत्त दुलारा नाउँ रखाई, शब्दी शब्द उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, वर आपणा आप सुहांयदा। शब्द सुत्त सच दुलारा, हरि साचे आप उपन्नया। आपे करे सच प्यारा, आपे बेड़ा रिहा बन्नया। देवे फ़रमान सच्ची सरकारा, लोआं पुरीआं ताणा तणया। ब्रह्मण्डां खण्डां दए सहारा, खेले खेल श्री भगवन्नया। रवि ससि कर सतारा, नूरो नूर आप अख्वन्नया। विष्नूं वंसी खेल न्यारा, आपणा अंग आप कटन्नया। नाभी कँवल कर उज्यारा, पारब्रह्म प्रभ साचा मन्नया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, आप आपणा रंग रगन्नया। त्रैगुण तेरा वणज वपारा, घर साचे आप करन्नया। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां तत्तां दए आधारा, खेले खेल खेल खिलन्नया। मन मति बुध डेरा बन्नया। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, लोकमात चाढ़े चन्नया। घर विच घर आप सुहा, आपणा मन्दिर आपे मल्लया। बन्द किवाड़ी लाया ताला, ना कोई तोड़ तुड़न्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटन्नया। निरगुण खेल हरि करतार, सरगुण विच समाईआ। सरगुण मेला विच संसार, सति पुरख कराईआ। दोहां विचोला शब्दी धार, शब्द अगम्मी आप उपाईआ। काया डूँघी वेखे गार, आप आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण मारे एका धार, अमृत धार चुआईआ। इक्क वजाए साचा ताल, अनहद सेव कमाईआ। जोत निरँजण दीपक बाल, करे सच रुशनाईआ। शब्दी गुर बण दलाल,

सतिगुर रूप वटाईआ। सन्त सुहेले आपे भाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, अतुट भण्डार आप वरताईआ। आपे शाह आपे कंगाल, आपे दर दर अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण साचा रंग, पंज तत्त आप चढन्नया। आत्म बैठा सच पलँघ, साची सेजा थान सुहन्नया। सच प्रीती रिहा मंग, नाम नामा आपे मन्नया। आपे भाग लगाए काची माटी तन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल नौजवानया। नौजवान जोद्धा सूरबीर बली बलकार, एका पुरख अख्वांयदा। लक्ख चुरासी कर पसार, लोकमात वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, पुरीआं लोआं आप सुहांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, भेव कोए ना पांयदा। आपे लेखा बणे लखार, आपे ब्रह्मा मुख सलांहयदा। आपे शब्द नाम जैकार, आपणा ढोला आपे गांयदा। आपे पर्दा ओहला रक्खे मीत मुरार, आपणा मुख छुपांयदा। जन भगतां सोहे बंक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। नित नवित्त साची कार, करनी करता आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस पुरख अबिनाश, आपणा आप करांयदा। आपणे मण्डल पावे रास, साचा मण्डप आप सुहांयदा। जोत नूर पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड डगमगांयदा। हर घट अन्दर रक्खे वास, घट घट वेख वखांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनास, थिर घर साचे डेरा लांयदा। गुरमुख वेखे रसन स्वास, जुग जुग मेल मिलांयदा। सच सुल्तान शाहो शाबाश, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। जुग करता हरि करनी कर, आपणा कर्म कमांयदा। धरनी धवल उप्पर जोत धर, पंज तत्त डेरा लांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म लए वर, एका घर मलांयदा। इक्क रखाए साचा सर, अमृत धार इक्क वहांयदा। एका पुरख ना नारी ना नर, नर हरि नरायण आप अख्वांयदा। आपणा भाणा आपे जर, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे जुगा जुगन्तर वेखे खड़, आप आपणा रूप वटांयदा। आप आपणे नाल रिहा लड़, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे शब्द घोड़े साचे जाए चढ़, ख़ाकी ख़ाक आप समांयदा। आपे शस्त्र खण्डा तेज़ कटार रिहा फड़, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, अकल कला वरताईआ। खेले खेल इक्क अकल्ला, हरि वड वड्डा वड्याईआ। सतिजुग फड़ाए साचा पल्ला, एका नाम वधाईआ। त्रेते करया साचा हल्ला, राम रामा रूप वटाईआ। द्वापर देवे आपे डन्ना, रथ रथवाही सेव कमाईआ। कलिजुग लोकमात आए भन्ना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। किसे ना वस्सया छप्पर छन्ना, मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर ना डेरा लाईआ। हरिजन वेखे तेरा काया तना, घर घर विच आप सुहाईआ। जननी जनिआ साचा जना, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। एका राग सुणाया कन्ना, धुन

अनादी नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, नूर अल्ला नूरो नूर समांयदा। शब्दी शब्द सच सलाह, हरि शब्दी मता पकांयदा। शब्द गुर शब्द मलाह, शब्द बेड़ा आप चलांयदा। शब्द पिता शब्द माँ, शब्द सुत्त दुलारा गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आप आपणा रूप वटांयदा। कलिजुग अन्तिम रूप वटाया, हरि सच वज्जी वधाईआ। शब्द गुर इक्क उठाया, नाम डंका हथ्थ फड़ाईआ। लोआं पुरीआं रिहा हिलाया, नौ खण्ड लए अंगड़ाईआ। सत्तां दीपां फेरा पाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां रिहा जगाया, राउ रंकां वेख वखाईआ। साधां सन्तां शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म बूझ बुझाया, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। तीजा लोइन इक्क खुल्हाया, दोए बन्द रखाईआ। चौथे पद आप समाया, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। पंचम मीता नज़री आया, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। चार वरनां बख्शे इक्क सरनाया, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धाम बहाया, एका करे पढ़ाईआ। कलमा अमाम इक्क सखाया, एका नाअरा लाईआ। जल्वा जलाल नूर उपाया, मुकामे हक्क ख़ुदाईआ। राम रूप आप उपाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। कान्हा कृष्ना रथ चलाया, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। निरगुण नाम निरबान एका लाया, नानक वड वड्याईआ। गोबिन्द डंका इक्क वजाया, गुर फ़तहि आप सुणाईआ। सृष्ट सबाई हरि भुलाया, भुल्ले पान्धी राहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया, आसा तृष्ना रही कुरलाईआ। हउमे हँगता अंग लाया, साचा संग ना कोए निभाईआ। जूठ झूठ मंगता मंगदा कलिजुग आया, काली कफ़नी हथ्थ उठाईआ। मन मति चोली रंगदा आया, ना सके कोए धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचा वेख वखांयदा। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। वरनां बरनां हाहाकार, सति सन्तोख ना कोए वरतांयदा। गुरमति ना कोए प्यार, गुर गुर ना मेल मिलांयदा। नाता छुट्टा धुर दरबार, कलिजुग माया तत्त प्रनांयदा। धरनी धवल करे पुकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सच्चा सच ना दीसे कोई सिक्दार, ग़रीब निमाणयां गले ना कोए लगांयदा। मात पित ना कोए प्यार, पिता पूत ना कोए सुहांयदा। सृष्ट सबाई दुहागण नार, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। गुरसिख विरला नाम वैरागण होया ख़बरदार, जिस जन साचा आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ कुड़यारा मेट मिटांयदा। कूड़ पसारा जाए उठ, हरि साचे जोत जगाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाली ठुठ, दर दर रिहा फिराईआ। कूड़ी क्रिया पई लुट्ट, ना सके कोई बचाईआ। जन

भगतां उप्पर पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे जाए तुठ, आप आपणी दया कमाईआ। अमृत देवे साचा घुट, निझर झिरना आप झिराईआ। दूई द्वैती कढ्ढे कुट, एका दर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां करे कुड़माईआ। चार वरनां इक्क बणाउणा, एका रंग रंगाईआ। इष्ट देव गुर इक्क वखाउणा, एका रूप दरसाईआ। मूल मन्त्र इक्क दृढ़ाउणा, एका नाम जपाईआ। एका मन्दिर आप वसाउणा, एका सेज विछाईआ। एका राग आप अलाउँणा, अनहद साची सेव लगाईआ। फड़ फड़ काग हँस बणाउणा, माणक मोती चोग चुगाईआ। दीपक जोती इक्क जगाउणा, घर घर विच करे रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाउणा, नाम खण्डा एका लाईआ। आत्म सेजा दर सुहाउणा, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। नारी कन्त मेल मिलाउणा, सुरत शब्द लए प्रनाईआ। साची सखीआं मंगल गाउणा, एका राग अल़ाईआ। बंक दुआरा इक्क सुहाउणा, एका वेख वखाईआ। हरि हरि हरि प्रभ नज़री आउणा, दूई दूशमन रहिण ना पाईआ। तीजे नेत्र जोत जगाउणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सगला संग सूरे सर्बंग चार वरन तेरे संग निभाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सच सुच्च विच टिकाईआ। जन भगतां लेखा आप गणाउणा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। धर्म राए दर मुख छुपाउणा, बैठा सीस झुकाईआ। काल जंजाल तोड़ तुड़ाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। अन्तिम जोती जोत मिलाउणा, जोती जोत समाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, घर साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण रिहा तराईआ। हरि सज्जण हरि पाया, गुरमुख चतुर सुजान। आत्म ब्रह्म जणाया, एका शब्द निशान। दूई द्वैती पर्दा लाहया, मिटया माण अभिमान। दर दरवाज़ा इक्क खुल़ाया, आवण जावण चुक्की काण। ग़रीब निवाज़ा नज़री आया, देवणहारा साचा दान। अनहद वाजा इक्क वजाया, सेव कमाए पवण मसाण। राग अनादा इक्क सुणाया, धुनी राग महान। जगत नेत्र दिस ना आया, भुल्ला सर्ब जहान। गुरमुख विरला वेख वखाया, जिस वखाए आप भगवान। गुर पूरा संग रखाया, आदि जुगादी सद मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जीआ दान। हरिजन हरि हरि जाणया, आत्म ब्रह्म विचार। गुर सतिगुर आप पछानया, देवे नाम आधार। दाता दानी गुण निधानया, गुणवन्ता खेल अपार। आत्म सेजा शाह सुल्तानया, सुत्ता पैर पसार। दिवस रैण सुणाए आपणी बाणीआ, आपणा राग उचार। आपे जाणे अकथ कहानीआ, कथनी कोए ना पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए वर, आपे नारी कन्त भतार। गुरमुख नारी कर प्यारी, कन्त कन्तूहल प्रनांयदा। महल्ल अटल उच्च मनारी, दस्म दुआरी आप बहांयदा। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी, दिवस

रैण सेव कमांयदा। लेखे लाए साची लाड़ी, आप आपणा लड़ फड़ांयदा। आपणे मन्दिर आपे वाड़ी, आपे संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गुरमुख नार कन्त भतार, हरि जू हरि हरि पाया। शब्दी शब्द तन शृंगार, सोलां सोलां रूप वटाया। नेत्र नैणां कजला धार, अंजन नाम सुहाया। हथ्थीं मैंहदी लाल अपार, प्रेम रंगीला रंग रंगाया। नेत्र नैण रही उग्घाड़, प्रीआ प्रीतम वेख वखाया। मेट मिटाई पंचम धाड़, झूठा साक ना कोए जणाया। अग्नी अग्ग ना लग्गी नाड़, त्रैगुण मूल चुकाया। धर्म वेखे इक्क अखाड़, अनहद ताल वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग चढ़ाया। चढ़ाए रंग नाम अनमोल गुरमुख रंग रंगाईआ। शब्द अगम्मी कंडे तोल, पूरा तोल वखाईआ। सदा सुहेला वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरु गुर चेला रहे मौल, चेला गुर आप अख्वाईआ। उलटा करे नाभ कौल, कँवली मुख भराईआ। मेल मिलावा साँवल सँवल, मुकंद मनोहर दरसाईआ। एका नूर अल्ला अव्वल, एका एक ख़ुदाईआ। एका अमृत साची पौल, एका मुख लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। सन्त मिलावा साचे दर, गुर सतिगुर आप कराया। आप चुकाए आपणा डर, निर्भय आप अख्वाया। नाम सति भण्डारा भर, आपे रिहा वरताया। करता पुरख करनी कर, करनहार भेव ना आया। जूनी रहित ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण खेल खिलाया। निरभउ रूप अग्गे रिहा खड़, भय भयानक होए सहाया। अकाल मूर्त मूर्त अकाल एका नर, नर नारी आप हो जाया। जुग जुग आपणा भाणा आपे जर, हरि भाणे विच समाया। आपे साध सन्त गुर पीर अवतार, दस्तगीर आप अख्वाया। आपे ऊँच नीच शाह हकीर कर, शाह सुल्तान आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां एका सरना, नेत्र खोल्हे हरना फरना, दूई द्वैती मेट मिटाया। हरन फरन नेत्र खोल्ह, गुरमुखां दए वड्याईआ। काया मन्दिर आपे बोल, आपणा शब्द सुणाईआ। सच नगारा वज्जे ढोल, ताल तलवाड़ा इक्क वखाईआ। दिवस रैण करे चोल्ह, आठ पहर रंग रंगाईआ। शब्द देवे सच झकोल, दो जहानां पार कराईआ। एका कंडे देवे तोल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। हरिजन हर घट हरि हरि वसे कोल, गुर बिन कोए ना बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा दर, बंक दुआरा आप सुहाईआ। बंक दुआरा साची रास, हरि साची वस्त रखांयदा। सतिगुर साजण वसे पास, शब्दी शब्द सुणांयदा। जुगां जुगन्त पूरी करे आस, जो जन ध्यान लगांयदा। निज घर वासी निज घर रक्खे वास, निज नेत्र वेख वखांयदा। हरिजन लेखे लाए

स्वास स्वास, रसना जेहवा जो जन गांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, डूँघी कन्दर आप तरांयदा। हरिजन तेरा नाम ना जाए विनास, पंज तत्त अग्नी तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेखे साचा घर, भगत भगवन्त सन्त कन्त नार भतार एका धार वखांयदा। सन्त नार भतारी साचा मीतड़ा, एका एकउँकार। गुरमुख काया चोली रंगे चीथड़ा, रंगन रंग अपार। रंग चढ़ाए इक्क मजीठड़ा, आप आपणी किरपा धार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा लिख ना सके कोई विच संसार। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, अमृत फल लगाए साचे डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्त आदि अन्त हरि भगवन्त, चले चलाए अवल्लड़ी चाल। चाल निराली जोत अकाली, आपणे आप रखाईआ। दो जहानां साचा पाली, परम पुरख वड्याईआ। शब्द गुर करे दलाली, कलिजुग वणज वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे पत्त पत्त डाल डाली, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। वेख वखाए पंज तत्त मन्दिर खाली, हरि का नाम ख़ज़ाना ना कोए रखाईआ। गुरमुख विरले घाल घाली, जिस जन बूझ बुझाईआ। तोड़नहार जगत जंजाली, लक्ख चुरासी तन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, आस निरास ना कोए वखाईआ। चरन प्रीती देवे जोड़, सुरत शब्द जुड़ाईआ। नाम चढ़ाए साचे घोड़, साचा अस्व इक्क रखाईआ। काया मन्दिर अन्दर लाए एका पौड़, डूँघी भँवरी पार कराईआ। लेखा चुक्के सुखमन नाड़ी सौड़, ईड़ा पिंगल मुख शरमाईआ। एका रस वखाए मिट्ठा कौड़, अमृत मुख चुआईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा साचे मन्दिर जाए बौहड़, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेले बेपरवाहीआ। सुरती शब्द शब्द ज्ञान, नाम दान वड्याईआ। गुर गोबिन्द मेला दो जहान, लोकमात करे कुड़माईआ। सच वखाए सच निशान, सच साचा आप झुलाईआ। इक्क जणाई धुर फ़रमान, बोध अगाधा शब्द सुणाईआ। चरन प्रीती चरन दुआर हरि निरँकार हरिजन देवे एका माण, एका बूझ बुझाईआ। आप वसाए घर सच दर सच हरि सच मकान, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पंच विकार नौ दुआर ना जाए नच्च, पंच शैतान मेट मिटाईआ। हरि हिरदे अन्दर जाए रच, शब्दी शब्द शब्द समाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती साची नीती, काया मन्दिर विच मसीती आपे दए कराईआ। काया मन्दिर मसीत गुरदुआर, मड्ड शिवदवाला आप सुहांयदा। निरगुण बाती कर उज्यार, जोत ललाटी आप जगांयदा। शब्द हाटी कर वणजार, एक वस्त झोली पांयदा। तीर्थ तट सच किनार, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। पिछला पूरा करे घाटी अग्गे भरे भण्डार, नाम भण्डार इक्क रखांयदा। गुरमुख अस्व शाह अस्वार, लोआं पुरीआं पार करांयदा। ब्रह्मा विष्नूं शिव करन निमस्कार, सुरपति निउँ निउँ सीस झुकांयदा ।

जिस जन वखाए आपणा घर बार, चरन कँवल दुआरा इक्क वखांयदा। नर नरेशा एकउँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती देवे वर, चरन चरनोदक इक्क प्यांअदा। चरन प्रीती चरन धूढ़, चरन कँवल चित लाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, कूड़ कूड़ा मेट मिटाया। आवण जावण पतित पावन लक्ख चुरासी जम की फाँसी कट्टे जूड़, आप आपणी गोद उठाया। दिवस रैण आठ पहर हाज़र हज़ूर, सर्ब कल भरपूर विछड़ कदे ना जाया। गुरसिख तेरी आसा मनसा पूर, प्रीती नीती इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत जाती जाती जोत विच समाया।

२३ चेत २०१६ बिक्रमी पिण्ड शफ़ी पुर

हरि शब्द नाम प्रचण्ड, सतिगुर पूरा हथ्थ उठाईआ। पावे सार ब्रह्मण्ड खण्ड, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। भेख पाखण्डा देवे डन्न, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। मनमुखता तेरी वढ्ढे कंड, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगत नाम एका वंड, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, दो दो धार रखांयदा। जुग जुग खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, गुर गुर वेस वटांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, मात पाताल आकाश वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी खेल अपार, अलक्ख अलक्खणा आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम खण्डा इक्क रखांयदा। नाम खण्डा शब्द बलवान, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वेख वखांयदा। कूड़ी क्रिया मेट निशान, सच सुच्च वज्जे वधाईआ। जन भगतां बख्शे चरन ध्यान, मनमुख गूढ़ी नींद सवाईआ। भरमे भुल्ले जीव निधान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, हरि हरि रसना जेहवा गाईआ। नौ खण्ड पृथमी जगत दुकान, नौ दर आप खुल्लाईआ। सति पुरख निरँजण हो प्रधान, सत्तां दीपां वंड वंडाईआ । अकाल पुरख नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जुग जुग खेले खेल महान, करनी करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी धार आप चलाईआ। शब्द धार हरि निरँकार, आदि जुगादि रखांयदा। घट घट अन्दर कर पसार, आप आपणा रूप दरसांयदा। गुरमुख साचे कर उज्यार, गुरमती एह समझांयदा। नाम रत्न इक्क अपार, काया मन्दिर आप टिकांयदा। मनमति करे ख्वार, मूर्ख मूढ़े धन्दे लांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, साचा मोह ना जोड़ जड़ांयदा। एका भुल्लया हरि निरँकार,

माया ममता तन रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द खण्डा इक्क रखांयदा। शब्द खण्डा साचा शस्त्र, गुर सतिगुर आप उठाईआ। आपे पहने आपणे बस्त्र, तन शृंगार आप वखाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्तर, आप आपणी कल वरताईआ। मेटणहारा लग्गी बसन्तर, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाईआ। इक्क जपाए साचा मन्त्र, नाम नामा झोली पाईआ। वेख वखाए गगन गगनंतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। शब्द खण्डा शब्द कटार, शब्द मृदंग वजांयदा। शब्द अस्व शब्द अस्वार, शाह सुल्तान शब्द अख्वांयदा। शब्द नाम शब्द जैकार, शब्द नाअरा आपे लांयदा। शब्द वणज शब्द वापार, शब्द भण्डारा आप वरतांयदा। शब्द कूड़ शब्द कुड़यार, सच सुच्च शब्द अख्वांयदा। शब्द नार शब्द भतार, कन्त कन्तूहल शब्द सुहांयदा। शब्द पसर शब्द पसार, शब्द मेट मिटांयदा। शब्द गुर शब्द अवतार, गुर शब्दी रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी नाद इक्क वखांयदा। शब्द अनादी साचा ढोला, हरि हरि आप सुणांयदा। जुगा जुगन्तर एका बोला, एका मुख सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम नानक गुर बणया तोला, तेरां धार चलांयदा। ग़रीब निमाणयां चुक्क डोला, आपणे कंध उठांयदा। सच भण्डारा एका खोल्हा, एक वणज करांयदा। चौदां लोकां लाहे पर्दा ओहला, चौदां तबकां चरनां हेठ दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द निशाना हरि मेहरवाना लोकमात आप झुलांयदा। शब्द तीर शब्द तुफ़ंग, शब्द कमान उठाईआ। शब्द शब्दी लग्गे अंग, शब्द शब्दी पार कराईआ। शब्द अमृत शब्द गंग, शब्द नीर सीर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द गुर नाम तराना, गुर नानक रसना गाया। सति सति सति खेल महाना, सति सतिवादी पुरख मनाया। ग़रीब निमाणयां बन्न्हे गाना, वरन गोत ना कोए जणाया। दर दरबार इक्क वखाना, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। इक्क वखाए सच बबाणा, गुरमुख साजण लए चढ़ाया। तन रबाब इक्क वजाना, अनहद सितार वजाया। अमृत आत्म पीणा खाणा, ठंडा ठार वखाया। पंच वकारा सथ्थर हेठ वछाना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काया। धुन आत्मक शब्द अनादी एका गाना, एका हरि लिव लाया। दूसर इष्ट ना कोए मनाना, पुरख अकाल इक्क दरसाया। शाहो भूप वड राजन राणा, सच सुल्तान डेरा लाया। थिर घर वस्सया श्री भगवाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। जन भगत देवे पद निरबाना, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द निशाना तीर शाह हकीर इक्क चलाया। शब्द निराला तीर, गुर सतिगुर आप चलाईआ। दो जहानां पैंडा चीर, लोकमात करे रुशनाईआ। गुरसिखां हउमे कढ्ढे पीड़, एका दूजा भउ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

शब्द निधाना आप उपाईआ। शब्द निधाना जोद्धा मरदाना, सतिगुर पुरख उपांयदा। चार वरन इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म जणांयदा। चार वरन इक्क ध्याना, इक्क ध्यान रखांयदा। चार वरन इक्क अशनाना, सर सरोवर इक्क उपांयदा। चार वरन एका दाना, नाम भण्डार इक्क वरतांयदा। चार वरनां एका माणा, एका दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अनाद एका ढोला गांयदा। शब्द अनादी साचा ढोला, हरि हरि आप उपांयदा। गुर सतिगुर बणे साचा तोला, लोकमात वेस वटांयदा। आपे बदले पंज तत्त चोला, जोती शब्द आप रल जांयदा। आपे खेले आपणा होला, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। गुर शब्द बणाए जगत विचोला, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। गुर नानक गाया एका बोला, सोहँ शब्द अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द देवे वर, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। शब्द वर शब्द दाता, शब्द झोली रिहा भराईआ। शब्द पिता शब्द माता, बाल निधाना शब्द अख्वाईआ। शब्द बिरध शब्द बाल शब्द नौजवाना, हरि शब्द मरे ना जाईआ। शब्द सुरत शब्द ज्ञाना, शब्द मेल मिलाईआ। शब्द मन्दिर शब्द मकाना, शब्द बैठा आसण लाईआ। शब्द पवण शब्द मसाणा, शब्द शब्द रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका एक शब्द उपजाईआ। एका शब्द एका धार, एका पुरख चलांयदा। एका एक एकउँकार, अकल कला वरतांयदा। एका रूप अगम्म अपार, लेखा लेख ना कोए लखांयदा। एका अलक्ख निरँजण हो उज्यार, जोत निरँजण डगमगांयदा। एका शब्द नाम जैकार, गीत सुहागी एका गांयदा। एक थापन थाप सर्ब संसार, एका जाप जापण अपर अपार, जपत जपत एक सुख पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द रूप दरसांयदा। शब्द रूप सद अनडिठ, दिस किसे ना आया। घर घर सुत्ता दे कर पिठ्ठ, करवट कोए ना सके बदलाया। जिस जन कर किरपा आप आपणी रक्खे साया हेठ, सो जन बूझ बुझाया। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठ, हरि शब्दी फल खुवाया। अग्नी तत्त ना जाणे महीना जेठ, सांतक सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेवट खेट शब्द गुर अख्वाया। शब्द गुर शब्द मलाह, शब्द बेड़ा रिहा चलाईआ। शब्द मीत शब्द सलाह, शब्द राह वखाईआ। शब्द अतीत बेपरवाह, घर साचे बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट पकड़े बांह, एका रंग शब्द रंगाईआ। एकउँकार सर्ब जीअ दाता, हरि हरि आप अख्वांयदा। सति नाम उत्तम ज़ाता आपणी आप रखांयदा। करता पुरख रूप ना किसे पछाता, जोती जोत डगमगाया। निरभउ बैठा इक्क अकांता दूसर भय ना कोए जणांयदा। निरवैर मारे सदा झाता, निर्धन सरधन मेल मिलांयदा। जूनी रहित सर्ब पित माता, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। अकाल मूर्त साची

सूरत रूप रंग ना किसे जाता, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकउँकार निराकार साकार वेस वटांयदा। एकउँकार इक्क अकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। आपणे वस्सया आप महल्ला, दूसर कोए ना संग जणाईआ। नेहचल धाम उच्च अटला, अगम्म अगम्मड़ा इक्क रखाईआ। पुरख अबिनाश शाहो शाबास आपणा तख्त आपे मल्ला, आपे बैठा सेज विछाईआ। निरगुण दीपक निरगुण बाती निरगुण नूर एका बला, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकार एका एक अख्वाईआ। बंस सरबंसा पूर्ब लहिणा, जुग जुग आप चुकांयदा। आपे जाणे आपणा देणा, देवणहार इक्क अख्वांयदा। दरस दिखाए साचे नैणां, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हांयदा। आपे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैणा, सगल कुटम्ब आप अख्वांयदा। आपे पंज तत्त तन बस्त्र पाए गहिणा, नाम कंगण हथ्थ पहनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध बाल नौजवान आपणे रंग रंगांयदा। बंस लेखा घर परवार, जोग जुगत बणाईआ। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा दिस ना आईआ। आपणा कर्ज़ आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रिहा उतार, हरि सज्जण मेल मिलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, गुरमुख आत्म जोड़ जुड़ाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। शाहो भूपी सच सिक्दार, साचा राज जोग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अंस आपणा बंस गुरमुख साजण आप उपाईआ। अंसा बंसा हरि हरि मीता, गुर शब्दी मेल मिलांयदा। गुरमुख वेखे विच सहँसा, कोटन कोटि फोल फोलांयदा। मन मनुआ मारे जिउँ कान्हा कंसा, हँकारी गढ़ रहिण ना पांयदा। आपे तोड़े मन का संसा, भाण्डा भरम आप भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आपणे दर पूरा पूर करांयदा। जुग लेखा जग चुक्कया, देवणहार निरँकार। गुरसिख लहिणा कदे ना मुक्कया, भरया नाम भण्डार। हरिजन बूटा कदे ना सुक्कया, फले फुले विच संसार। लक्ख चुरासी पैंडा मुकया, राए धर्म ना करे ख्वार। जो बैठा अन्दर लुकया, देवे दरस गुप्त ज़ाहर। सफल कराए मात कुख्खया, जन जननी उतरे पार। लेखे लाए देही मानस मनुखया, आप आपणी किरपा धार। गुरसिख साचा सज्जण मीता सतिगुर पूरे आपणी गोदी आपे चुक्कया, आपणीआं भुजां पसार। जगत विकारा फड़ फड़ कुठया, मारे नाम तेज़ कटार। अमृत देवे एका घुट्टयां, सांतक सति ठांडा ठार। ठग्ग चोर यार किसे ना लुट्टयां, हथ्थ ना आवे जीव गंवार। जन लहिणा लहिणा चुकया, बंस सरबंसा रिहा उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग सन्त सुहेले लाए पार। गुरसिख साजण पाया, परम पुरख करतार। नर निरँकारा वेख वखाया, लोकमात जोत उज्यार। शब्द विचोला इक्क बणाया, फेरे मारे वारो वार। आदि जुगादी भुल्ल कदे

ना जाया, अभुल्ल गुरू करतार। गुरमुखां करना करता कीमत आपे पाया, मुल्ल चुकाए ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा आप आपणा दए उतार।

✪ २३ चेत २०१६ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर पिण्ड बंडाला ✪

हरि सतिगुर सच्चा इक्क अकाल, रूप रंग ना कोए जणाईआ। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाल, पारब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। खेले खेल दीन दयाल, हरि ठाकर वड वड्याईआ। आदि शक्ति नूर जमाल, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। सति पुरख निरँजण हरि बिधाता, परम पुरख सुल्तानया। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कला अख्वानया। आपे आपणा जाणे नाता, जोती नूर श्री भगवानया। आपे आपणी पुच्छे वाता, आपे देवणहारा दरगाह माणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी आप करे पछानया। ठाकर करता हरि हरि मीता, एका एकउँकारया। आदि जुगादी इक्क अतीता, सति सरूप समा रिहा। आपे ठंडा आपे सीता, तत्व तत्त ना कोए वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला आप उपा रिहा। जोत ज्वाला हरि हरि धार, आपणी आप उपांयदा। दीपक बाती इक्क उज्यार, कमलापाती आप टिकांयदा। आपे वेखे मारे झाकी, आपणा दर आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणा लहिणा देणा बाकी, दूसर कोए ना लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा कर पसारा, नर निरँकारा खेल खिलांयदा। नर निरँकारा खेल आदि निरँजण हरि कराईआ। आपे कर कर आपणा मेल, मेल मिलावा आप वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेल, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। सदा सुहेला वस्सया रंग नवेल, घर बंक इक्क वखाईआ। ना कोई गुरू ना कोई चेल, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता एका नूर डगमगाईआ। निरगुण धार पुरख अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार करांयदा। अलक्ख निरँजण खेल खिलंदड़ा, खेलणहारा दिस ना आंयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहंदड़ा, निरगुण जोत इक्क जगांयदा। सच सिँघासण इक्क वछंदड़ा, पुरख अबिनाश डेरा लांयदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटंदड़ा, वेस अनेका आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निज घर आपणा आप सुहांयदा। निज घर आसण पुरख अबिनाशन, आपणा आप लगाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाशन, गगन मण्डल ना कोए वखाईआ। ना कोई मण्डल ना कोई रासन, रवि ससि ना कोए चमकाईआ। जोती नूर इक्क प्रकाशन, प्रकाश

प्रकाश वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोत करे रुशनाईआ। हरि जोत हरि आप उपा, आपणा रूप वटांयदा। आदि निरँजण नाउँ धरा, आपणा दर सुहांयदा। भगवन रूप वेस करा, वेस अवल्ला आप वखांयदा। इक्क अकल्ला जोत जगा, निहचल धाम अटला आप सुहांयदा। दाता दानी बेपरवाह, परवरदिगार आप अख्वांयदा। आपे आपणा बणे मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। देवणहारा सच सलाह, साची सिफ्त सलांहयदा। लेखा कोई जाणे ना, वेद कतेब दिस ना आंयदा। करनहारा सच न्याँ, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। शब्द अगम्मी इक्क उपा, लोआं पुरीआं बणत बणांयदा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड आप उपा, शब्द डोरी आप बंधांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त त्रैगुण माया पंज तत्त सुहा, मन मति बुध निरगुण धार आप रखांयदा। घर विच घर घर रखा, घर साचा शाहो आसण लांयदा। दीवा बाती इक्क जगा, जोत निरँजण सेव कमांयदा। कमलापाती सहिज सुभा, आप आपणा बोल अलांयदा। धुन अनादी एका गा, शब्द जैकारा इक्क सुणांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। आदि जुगादी वेस वटा, जुग जुग नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर फेरी पा, आपणी कल वरतांयदा। सन्त सुहेले आप जगा, जागरत जोत इक्क वखांयदा। गुर गुर चेले मेल मिला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। मनमुख गूढ़ी नींद सवा, माया पर्दा आपे पांयदा। चौदां लोकां वेख वखा, आप आपणा राग सुणांयदा। घट घट अन्तर दए जणा, पूरन ब्रह्म धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप अख्वांयदा। साध सन्त रहे गा, साची सेवा आप लगांयदा। अन्तिम बणे आप मलाह, नाम चप्पू एका लांयदा। नथाविआं देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप सुहांयदा। पकड़नहारा साची बांह, साचा अदल कमांयदा। वेखे नगर खेड़ा सच ग्रां, काया मन्दिर फोल फोलांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस वखांयदा। इक्क जपाए साचा ना, हरी हरि हरि रसना गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव सेवक सेवा साची लांयदा। सेवक सेवा सेवादार, सेवा रहे कमाईआ। करनी करता करता पुरख करे ख़बरदार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। दो जहानां पावे सार, ब्रह्मण्डां खोज खोजाईआ। उत्भुज सेत्ज आप तराईआ। जुगा जुगन्तर आपणी कार, आपे रिहा कमाईआ। लक्ख चुरासी सांझा यार, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। शब्द गुर शब्द अवतार, साध सन्त शब्द समाईआ। शब्द सति शब्द तत्त शब्द रत शब्द मति शब्द होवे पहरेदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। शब्द जोग शब्द भोग शब्द चोग शब्द सिक्दार, शाह सुल्तान शब्द अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार कर प्यार, हरि निरँकार आपणी आपे वेख वखाईआ। निरगुण धार जोत अकाला, आपणी

आप चलांयदा। जुगां जुगन्त अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखांयदा। शब्द गुर बण दलाला, लोकमात फेरा पांयदा। मेल मिलाए काल महांकाला, दीन दयाला दया कमांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। इक्क वखाए धर्म सच्ची धर्मसाला, एका हट्ट खुल्हांयदा। एका अमृत फल लगाए काया डाल्ह, आत्म मेवा इक्क खुवांयदा। एका चले नाल नाला, हरि सगला संग निभांयदा। एका पाए नाम शब्द गल साची माला, तन श्रृंगार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता हरि करनेहारा, आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर अख्वांयदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका रूप वटाईआ। एका शब्द इक्क भण्डारा, एका एक वरताईआ। एका नाम इक्क जैकारा, एका अलख जगाईआ। एका बंक इक्क दुआरा, एका रिहा सुहाईआ। एका मीत इक्क मुरारा, एका मेल मिलाईआ। एका वरन गोत एका करे उज्यारा, पसर पसारा इक्क कराईआ। एका खड़ग इक्क कटारा, एका खण्डा नाम चमकाईआ। एका चिल्ला तीर कमान तोड़े गढ़ हँकारा, एका बाण वखाईआ। एका ढहि ढहि पए चरन दुआरा, एका निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका एक होए सांझा यारा, एका ख़ालक ख़लक विच समाईआ। एका नूर इलाही परवरदिगारा, बेऐब इक्क अख्वाईआ। एका राम नाम सति वरतारा, सति सरूप इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एका हरि, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। गुण अवगुण ना हरि जणाए, भेव कोए ना पांयदा। जुगा जुगन्तर वेस वटाए, रूप अनूप दरसांयदा। गुरमुख साजण आप मिलाए, आप आपणी बूझ बुझांयदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पाए, निहकलंका नाउँ रखांयदा। हेरा फेरा सर्ब चुकाए, ओहला पर्दा ना कोए जणांयदा। भरमां ढेरा आपे ढाए, दूई द्वैती कंध मिटांयदा। सञ्झ सवेरा इक्क वखाए, दिवस रैण ना लेख लिखांयदा। गुरू गुर चेरा एका धाम सुहाए, चेला गुर रूप समांयदा। नानक गोबिन्द खेला आप खलाए, खेलणहार भेव ना आंयदा। साची नगरी साचा धाम साचा डेरा आपे लाए, साचा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। निहकलंक नाउँ रक्ख, हरि आपणी वंड वंडाईआ। जोत सरूपी हो प्रतक्ख, शब्दी डंक वजाईआ। वेख वखाए चुरासी लक्ख, लक्ख लखीना बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले गुरमुख साजण लए रक्ख, आप आपणी दया कमाईआ। मनमुखां नक्क पाए नथ्थ, चारों कुन्ट फिराईआ। जूठ झूठ करे सत्थ, सथ्थर धरत धवल वछाईआ। कलिजुग अन्तिम किसे ना दिसे कोए हट्ट, धीरज जत ना कोए वखाईआ। जाणे भेव पूजा पाठ, गायत्री मन्त्र वेख वखाईआ। वेद पुराणां वेखे हट्ट, अञ्जील कुरानां फोल फोलाईआ। शास्त्र सिमरत आपणी कीमत कोए ना सके वट्ट, जीव जन्त कीमत ना कोए चुकाईआ। भेव खुल्हाए अठसठ, सर सरोवर

फेरा पाईआ। गंगा गोदावरी रही नट्ठ, सुरस्ती नाल रलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर अकट्ठ, सुरपति इन्द लए अंगड़ाईआ। त्रैगुण माया होई भट्ठ, नेत्र रो रो दए दुहाईआ। पंच विकारा बुरज रिहा ढट्ठ, कल्लर कंध रहिण ना पाईआ। कलिजुग उलटी गेड़न आया लट्ठ, पारब्रह्म गुर वड वड्डी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर बूझ बुझाईआ। एका अक्खर हरि पढ़ाउणा, सच साची करे पढ़ाईआ। दूई द्वैती पर्दा लौहणा, दो दो लोचन वेख वखाईआ। तीजा नेत्र आप खुल्हाउणा, नैण नैनण रहे शरमाईआ। चौथे पद मेल मिलाउणा, घर चौथे वज्जे वधाईआ। पंचम मीता नज़री आउणा, पंच शब्द शनवाईआ। छे छे घर रंग रंगाउणा, छप्पर छन्न छुहाईआ। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्मादि एका नज़री आउणा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। अट्ठां तत्तां नाद इक्क वजाउणा, सार शब्द सुणाईआ। नौ दर नव खण्ड लेखा आप चुकाउणा, लोकमात वज्जी वधाईआ। दस दस्मेश नर नरेश वड मृगेश आप आपणा लेख मुकाउणा, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। दस्म दुआरी जोत निरँकारी दीपक जोत इक्क जगाउणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। इक्क अकल्ला सच महल्ला आप वसाउणा, दरगाह साची सच सुहाईआ। जलां थलां डेरा लाउणा, महीअल रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, भेव कोए ना पाईआ। शाह सुल्ताना राज राजाना ख़ाक मिलाउणा, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाईआ। ऊँचां नीचां नीचां ऊँचां

४३७ एका रंग रंगाउणा, ज़ात पात ना कोए बणाईआ। सूचो सूचा एका शब्द उपजाउणा, ब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। क्षत्री ब्रह्मण ४३७

वैश ना किसे अख्वाउणा, ना शूद्र मुख भवाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई तेरा वक्त चुकाउणा, तेरा रूप आप हो जाईआ। कायनात कलमा इक्क पढ़ाउणा, आब हयात मुख चुआईआ। राम नाम जाम इक्क वखाउणा, एका कृष्ना मुख सलाहीआ। सति नाम जैकारा आपे लाउणा, आपे करे पढ़ाईआ। नानक साचा दर सुहाउणा, नेत्र लोचण दरस वखाईआ। गोबिन्द डंका इक्क वजाउणा, वाह वा फ़तहि गुरू वड्याईआ। पंचम मेला मेल मिलाउणा, शब्द बाज़ इक्क उडाईआ। नाम तोड़ा जगदीस सीस टिकाउणा, साची कल्ग़ी कर रुशनाईआ। आपणा अस्व दर दरवाजिउँ बाहर कराउणा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे कुन्ट फेरा पाईआ। शाह अस्वार उप्पर आसण लाउणा, सोलां कलीआं हेठ विछाईआ। नीला नीली धारों पार कराउणा, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। पहलों आपणा लेख मुकाउणा, दूजा राह चलाईआ। चौदां लोक चौदां तबक वीह सद चौदां तेरा रंग रंगाउणा, पंचम जेठ रुत्त सुहाईआ। वीह सद पन्दरां भेव खुल्हाउणा, आपणा तख्त आपे दए उलटाईआ। जगत सिँघासण ख़ाक रलाउणा, पंचम जेठ खेल खिलाईआ। पारब्रह्म तेरा भेव किसे ना पाउणा, वेद कतेब ना कोए जणाईआ। सम्मत सोलां पंचम जेठ आप सुहाउणा, नीले वाला फेरी पाईआ। पन्थ पन्थी पकड़ उठाउणा, दे मति रिहा समझाईआ।

अञ्जील कुराना एका राह वखाउणा, एका करे पढ़ाईआ। पंडत पांधा आप जगाउणा, जोत ललाटी वेख वखाईआ। नाम खण्डा इक्क चमकाउणा, तिक्खी धार कराईआ। ब्रह्मण्डां खण्डा फेरा पाउणा, धरत धवल वड्याईआ। गुरमुख साचे आप जगाउणा, आप आपणी सेव कमाईआ। फड़ फड़ बांहों गले लगाउणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मनमुख जीवां दर दुरकाउणा, राए धर्म दए सज़ाईआ। लक्ख चुरासी आप भवाउणा, आपणे गेड़े रिहा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती नूर आकार, हरि साचे सच कराया। गुरसिखां करे मात प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। उत्तम ज़ात विच संसार, वरन बरन ना कोए रखाया। कमलापाती मीत मुरार, नारी कन्ता वेख वखाया। रुत्त बसन्ता खिड़ी गुलज़ार, पत्त डाल्ही महक महिकाया। जोत अकाली साची मालन वेखणहार, नेत्र नैणां आप खुल्हाया। जगत दलाली करे बण वणजार, नाम वणजारन भेव मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरी हरि आप अख्वाया। हरी हरि हरि गोबिन्दा, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। जन भगतां मेटे सगली चिन्दा, भव सागर पार करांयदा। गुणी गहीर गहर गम्भीर सागर सिन्धा, साख्यात जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम पंचम मुख वखांयदा। पंचम जेठा शब्द जैकारा, आपणा आपे लाईआ। आपणे अस्व हो अस्वारा, बैकुण्ठ निवासी फेरा पाईआ। चाल अवल्लड़ी अवल्लड़ी कारा, जग धारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, कर्म धर्म जरम वेख वखाईआ। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। हरिजन निभाए सगला साथ, साचा संग वखाईआ। नाम जणाई शब्द अकथ, सोहँ करे पढ़ाईआ। कूड़ कुड़यारा कलिजुग देवे मथ्था, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। जो दीसे सो जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। हरि का नाम साचा पूजा पाठ, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। साचा वणज साचे हाट, साचा तोला तोल तुलाईआ। गुरसिख विरला लाहा लए खाट, सुत्ती सर्ब लोकाईआ। खेले खेल नटूआ नाट, स्वांगी स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे दर, दर दरवेश नर नरेश रिखी केश गोवर्धन, धार इक्क अकल्ला एकउँकार, सर्ब जीआं दा सांझा यार, सज्जण साजण मीत आप अख्वाईआ। हरि सज्जण मीत मुरारड़ा, सति सतिवाद जणाए। झूठा सथ्थर चुक्के कलिजुग यारड़ा, सतिगुर साचा शब्द मलाए। धाम वखाए इक्क न्यारड़ा, ना कोई बाढी बणत बणाए। नाम प्याए सच प्यालड़ा, अमृत जाम भराए। राह दस्से इक्क सुखालड़ा, सतिजुग साचा मार्ग लाए।

सोहँ शब्द मात दलालड़ा, चार वरनां पार कराए। तोड़नहारा जगत जंजालड़ा, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप रोज़ी रिज़क रहीम आप अख्वाए। राम रहीम रहिमान, नूरो नूर इलाहीआ। शरअ शरीअत इक्क ईमान, एका रंग रंगाईआ। इक्क हदीस इक्क कुरान, इक्क करे पढ़ाईआ। इक्क अबलीस होए शैतान, या बलीस मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस कराईआ। राम नाम एका गुण, एका गुर वड्याईआ। सर्ब पुकार रिहा सुण, भुल्ल रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी विच्चों चुण, गुरमुख सज्जण ल्ए तराईआ। सृष्ट सबाई छाण पुण, नाम निधाना एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। छाण पुण सर्ब संसार, लक्ख चुरासी वेख वखाया। हरिजन तेरा दर दरबार, सतिगुर साचे एका पाया। ब्रह्मा शिव रहे विचार, नेत्र नैण आप वटाया। लोकमात कवण कूट होया उज्यार, निहकलंक जामा पाया। फड़या खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम प्रचण्डा रिहा चमकाया। पाए वंडां अपर अपार, ब्रह्मण्डां खोज खोजाया। भेख पखण्डा दए नवार, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। ना कोई दिसे नार रंड विभचार, नार दुहागण कोए रहिण ना पाया। शब्द सुहागण कन्त भतार, दर घर साचा इक्क रखाया। गुरमुखां करे आप प्यार, आत्म सेजा मेल मिलाया। देवणहारा नाम अतुट भण्डार, निखुट कदे ना जाया। कल कल्की हरि लै अवतार, कल्गीधर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी हो उज्यार सच सिँघासण आसण लाया।

४३६
०८

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर पिण्ड बंडाला ✪

गुरमुख चातृक रिहा बिल्लाए, दिवस रैण प्रभात। सतिगुर पूरा अमृत मेघ आप बरसाए, देवणहारा देवे बूंद स्वांत। आसा तृष्ना जगत बुझाए दरस दिखाए इक्क इकांत। हउमे संसा रोग मिटाए, चरन कँवल बंधाए नात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा एका नाम दात। गुरसिख चातृक तृप्तासया, गुर पाया ठंडा सीत। दो जहानां बुझी प्यासया, तन होया पतित पुनीत। घर सज्जण करया वासया, इक्क सुणाए सुहागी गीत। लोकमात बन्द ख़लासीआ, परखणहारा परखे साची नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसणहारा चीत। चित वस्सया हरि पारब्रह्म, घर साचे मंगल गाया। लहिणा देणा चुकया जन्म कर्म, कर्म कुकर्मां मेट मिटाया। पुरख अबिनाशी बख्शी साची सरन, सरनगत आप अख्वाया। मूल चुकाए मरन डरन, आवण जावण गेड़ मिटाया। एका नेत्र वसे हरन फरन, लोचण

आपणा आप खुल्हाया। सतिगुर पूरा तरनी तरन, तारनहार सृष्ट सबाया। करता करनी आपणी आपे करे कारन करन, भेव रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाया। चातृक गुरसिख कर पुकार, दिवस रैण बिल्लाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, गुर सतिगुर मेल मिलाया। सतिगुर ठांडा इक्क दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। आदि जुगादी भगत उधार, शब्द अनादी ताल वजाया। मोहण माधव माधी खेल अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम भण्डार इक्क वरताया। नाम भण्डारा अमृत रस, हरि सतिगुर आप वरताईआ। गुर मन्त्र एका सच दस्स, इष्ट इक्क वखाईआ। पुरख अकाला होए वस, दीन दयाला सेव कमाईआ। दरस दिखाए नस्स नस्स, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। कोटन कोटि रवि ससि चरनां हेठ झस्स, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। हरिजन मारे तीर निराला कस, शब्द अगम्मी चिल्ला आप चढ़ाईआ। आर पार जाए धस, बजर कपाटी सिला तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस बेपरवाहीआ। गुरमुख दरस हरि हरि तांघ, आदि जुगादि रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ वरते सांग, स्वांगी आपणा स्वांग रचांयदा। अमृत धार वहाए साची कांग, जगत विकारा आप रुढ़ांयदा। कराए मजन साचा माघ, दुरमति मैल मिटांयदा। पंज त्रै तेरी बुझे आग, नौ दर खोज खोजांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, नाम प्याला जाम प्यांअदा। प्रभ धोवणहारा कूड़ा दाग़, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। हरि सज्जण वड वड होए भाग, गुर साखी मेल मिलांयदा। निर्मल जोती जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन चातृक वेख वखांयदा। चातृक मुख इक्क उग्घाड़, नेत्र नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी बख्शे मेघला धार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। एका एक नज़री आए विच संसार, दूजी टेक ना कोए जणाईआ। बुध बिबेक करे कर प्यार, तत्व तत्त ना कोए सताईआ। लिखे लेख धुर दरबार, हरि का लेख ना कोए मिटाईआ। नेत्र लोचण नैण इक्क प्यार, एका रंग समाईआ। भगत वछल आप गिरधार, भगत भगवन होए सहाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, रूप अनूप आप दरसाईआ। अस्व घोड़े हो अस्वार, आप आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग करया ख़बरदार, खड़ग खण्डा नाम चमकाईआ। तीर कमाना तेज़ कटार, दो जहानां रिहा वखाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल बावन भेख वटाईआ। लंका गढ़ तोड़े मारे रावण हँकार, राम रामा वेस कराईआ। कलिजुग कंसा कर ख्वार, साँवल सुन्दर रूप वटाईआ। जूठ झूठ करे बाहर, नाम सति नानक चक्र इक्क चलाईआ। नाता तोड़े मुहम्मदी यार, गोबिन्द तिक्खी धार रिहा वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, कलिजुग अन्तिम प्रगट होया भेव अभेद कोए ना पाईआ। गुरमुख उठाए सुत्त दुलार, साचे सुत्त लए गल लाईआ। अबिनाशी

अचुत्त भरम निवार, भाण्डा भरम भन्नाईआ। अन्दर मन्दिर इक्क प्यार, ढूँघी कन्दर वेख वखाईआ। चातृक बख्शे अमृत धार, चित वित ठगौरी ना कोए पाईआ। साचा नायक मीत मुरार, नथ्थ हथ्थ ख़सम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साची सच प्यास, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। सदा सुहेला वसे पास, घर आपणा आप उपांयदा। आपणा दीपक कर प्रकास, आपणी जोत टिकांयदा। आपणे मन्दिर कर निवास, आपणा आसण आपे लांयदा। आपे पावे साची रास, साचा मण्डल आप सुहांयदा। आपे होए दासी दास, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे खेले खेल पृथ्मी आकाश, आपे मुख छुपांयदा। गुरमुख सज्जण मीत मुरार, लोकमात ना रहे निरास, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। कट्टणहारा जम की फास, कलि फाँसी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत जाम सच प्याला दीन दयाला जन भगतां आप प्यांअदा। नाम प्याला आपे भर, गुरसिख सज्जण आप प्याईआ। दीन दयाला किरपा कर, आपणयां रिहा तराईआ। सद रखवाला वसे घर, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोत अकाला अग्गे खड़, आप आपणा दरस वखाईआ। सतिगुर बन्नाए आपणे लड़, शब्द गंढु रखाईआ। आपणे मन्दिर आपे जाए चढ़, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख मीत मुरारा एकउँकारा निरगुण सरगुण लए फड़, सरगुण निरगुण बंध बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख चातृक तेरी तृखा तेरे दर बुझाईआ। जगत तृष्ना लग्गी भुक्ख, कूड़ा कूड़ होया प्रधानया। सति धर्म बूटा गया सुक्क, फलया फुल्लया पंज शैतानया। लेखे लग्गा ना उलटा रुख, भुल्लया हरि हरि नाम निधानया। मनमुख सफ़ल ना होई मात कुक्ख, लक्ख चुरासी फेर फिरानया। गुरसिखां करे उज्जल मुक्ख, वड दाता दो जहानया। आपणी गोदी आपे लए चुक, चतुर्भुज आप अख्वानया। कलिजुग अन्तिम ना मानस ना दिसे मनुख, पंज तत्त डेरा लाए श्री भगवानया। ब्रह्म पाया पारब्रह्म आपणी कुक्ख, आप आपणा दर सुहानया। गुर गोबिन्द मेल मिलाया लुक लुक, भेव ना पाया वेद पुराणया। आपे निउँ निउँ अन्दर वड़या झुक, आपे साचे तख्त बैठा सुल्तानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सदा सन्मुख, आपे आपणा मुख भवानया। हरिजन तेरा ढूँघा सागर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। पंज तत्त सुहाया डेरा लाया काया गागर, आप आपणा रूप वटांयदा। एका नाम रत्न रत्नागर, रत्ती रत्त कीमत कोए ना पांयदा। पुरख अकाल बणया आप सौदागर, लोकमात वेखण आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दलाल इक्क उपजांयदा। शब्द दलाला बण विचोला, घर साचे लए अंगड़ाईआ। मारे फेरे गावे ढोला, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। बण सतिगुर बणया तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। गुरसिख अनमुल्ला आप वरोला, चौदां

रत्न रहे शरमाईआ। आपणा दर दरवाज़ा आपे खोल्हा, आपणे अन्दर लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अमृत अमृत धार निझर बरखे ठंडी ठार रस रस रसिक रसिक रस आपणा चुआईआ। आपणा रस आप निचोड़, आपणा वट चढ़ांयदा। आपणा तत्त आप मरोड़, गुरमुख तत्त उपांयदा। आपणा वर आपे लोड़, गुरसिख रचन रचांयदा। आपणा जोड़ आपे जोड़, आपे मेल मिलांयदा। आप चढ़ाए आपणे घोड़, आदि जुगादी आप दौड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी सर्ब कुरलांयदा। नाम निधाना हरि भगवाना धुर की बाणी इक्क लगाए साचा पौड़, सो पुरख निरँजण नाम डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। गुरसिख लग्गी एका औड़, अमृत दरस मेघ बरस हरसी हरस मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कपड़ काया कूड़, आपणी बख्श साची धूढ़, चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, नाम अमोलक काया गोलक शब्द अनादी अनहद ढोलक, हरिजन साचे सतिगुर साचा, जीउ पिण्ड तन साचे राचा, जगत बुझाए लग्गी आंचा, शब्द जणाए साचो साचा, सच सुच्च सुच्च सच वड्डी वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रूप आप अख्वाईआ।

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी बंडाला ✪

बाल सखाई गहर गँवर, गुणी गहीर गोबिन्द। जगत तृष्ना जगत कँवर, माया ममता सगली चिन्द। गुरमुख विरले मानस जन्म जाए संवर, मनमुखां मुख रक्खे निन्द। हरि बिन कोई ना दूजा दिसे अवर, हरि सागर डूँघा सिन्ध। जीव जन्त कलिजुग भँवर, घुम्मण घेर बेअन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना बाल निशाना मन मणीआ जेहवा मंत।

काया कप्पड़ कर्म रंग, कलिजुग पार लगाईआ। जूठ झूठ धारा वहे गंग, वगे धार वाहो दाहीआ। मनमति तट किनार नुहाए गंग, पर्दा कोए ना उप्पर पाईआ। जीव जन्त ना दिसे कोई संग, सगला साथ ना कोए निभाईआ। गुरमुख विरला मंगे नाम मंग, चरन प्रीत सच्ची सरनाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, जिस बख्शे बेपरवाहीआ। अंगीकार लाए अंग, आप आपणी गोद उठाईआ। नाम बिठाए सच पलँघ, साची सेज सुहाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, ग़रीब निमाणे रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण दाता जीवत मुक्त कराईआ।

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे घर बंडाला ✪

मनसा मानस इक्क जन, गुर चरन सच्ची जग प्रीत। सैंहसा रोग निकले तन, सांतक ठांडा सीत। गुर शब्दी भाणा जाए मन्न, रक्खे सद अतीत। शब्द अनादी सुणे कन्न, होए पतित पुनीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वसे आप चीत। चित वसे जिस पारब्रह्म, मिटे दुःख अँध्यार। लेख चुकाए जन्म कर्म, भाण्डा भरम निवार। सति सरनाई साची सरन, सतिगुर पुरख करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे चरन अधार। चरन प्रीती जगत प्रीख्या, आपणी आप रखाईआ। गुरमुखां देवे साची सिख्या, एका इष्ट जणाईआ। दर घर साचा साची मंगणी भिख्या, भिखक भीख नाम झोली पाईआ। गुर सतिगुर जो जन नज़री वेख्या, आपणी दिशा हिस्सा आप वंडाईआ। माया ममता मोह विकार चक्की ना पीसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी कर्म कुकर्मां लेखे लाईआ।

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे घर जंडयाला गुरु ✪

हरि हरि वड्याई धन्न, सतिगुर नाउँ धराया। सतिगुर वड्याई धन्न, गुर गुर शब्द अल़ाया। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख लए जगाया। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिख लए मिलाया। गुरसिख वड्याई धन्न, जो हरि भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत नूर समाया। हरि वड्याई धन्न, सति पुरख अख्वांयदा। सति पुरख वड्याई धन्न, गुर गुर डेरा लांयदा। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिख संग निभांयदा। गुरसिख वड्याई धन्न, भाण्डा भरम भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती नूर नूर रखांयदा। हरि वड्याई धन्न, सतिगुर इष्ट देव अख्वाईआ। सतिगुर वड्याई धन्न, गुर एका एक बुझाईआ। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख जोत निरँजण आप जगाईआ। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिख सज्जण साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। हरि वड्याई धन्न, सतिगुर पूरा अख्वांयदा। सतिगुर वड्याई धन्न, हाज़र हज़ूरा गुर उपांयदा। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुखां राग सुणांयदा। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिख घर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंधन पांयदा। हरि वड्याई धन्न, सतिगुर चन्न चढ़ाया। सतिगुर वड्याई धन्न, गुर जोत नूर रुशनाया। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख शब्द उपाया। गुरमुख

वड्याई धन्न, गुरसिखां आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण रंग रंगाया। सतिगुर धन्न वड्याई, हरि सज्जण सच अख्वांयदा। गुर गुर वेख वखाई, गुर रूप वेस वटांयदा। गुरमुखां मेल मिलाई, मेल मिलावा आप जणांयदा। गुरसिखां वज्जे वधाई, घर साचा मंगल गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका राग अल़ांयदा। गुरसिख वड्याई धन्न, सुणया राग अनादिआ। गुरमुख वड्याई धन्न, मिल्या मेल ब्रह्म ब्रह्मादिआ। गुर वड्याई धन्न, सेवा करे आदि जुगादिआ। सतिगुर वड्याई धन्न, एका एक बोध अगाध्या। हरि हरि वड्याई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी वादिआ। हरि वड्याई धन्न, घर साचे सतिगुर मेलया। सतिगुर वड्याई धन्न, गुर गुर होए गुरु गुर चेलया। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख वेखे रंग नवेलया। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिखां संग खेल साचा खेलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सज्जण सुहेलया। गुरसिख वड्याई धन्न, पाया सज्जण मीत। गुरमुख वड्याई धन्न, होया ठंडा सीत। गुर गुर वड्याई धन्न, बैठा रहे अतीत। सतिगुर वड्याई धन्न, आदि जुगादी पतित पुनीत। हरि हरि वड्याई धन्न, आपे हस्त आपे कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रीत। हरि वड्याई धन्न, सतिगुर गुर सलांहयदा। गुरमुख गुरसिख एका कर, एका दर बहांयदा। गुरसिख गुरमुख फड़या लड़, साची गंढु बंधांयदा। गुर सतिगुर पौड़े जाए चढ़, एका डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। हरि हरि अग्गे वेखे खड़, जोती नूर डगमगांयदा। हरि का रूप अपर अपर, रंग रेख ना कोए रखांयदा। सतिगुर गुर अन्दर वड़, आप आपणा शब्द चलांयदा। गुरमुख गुरसिक्ख आपे फड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरसिख गुरमुख एका अक्खर जायण पढ़, साची विद्या आप पढ़ांयदा। गुर सतिगुर ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई तत्त वखांयदा। हरी हरि आपे लाए आपणी जड़, आपे पुट्ट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। धन्न वड्याई भगत जन, एका ओट रखाईआ। धन्न वड्याई सन्त जन, मुख एका चोग पाईआ। धन्न वड्याई भगत जन, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। धन्न वड्याई सन्त जन, हउमे दूई रोग गंवाईआ। दोहां विचोला आपे बण, शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम वजाए सच्ची वधाईआ। धन्न वड्याई भगत जन, हरि हरि सज्जण पाया। धन्न वड्याई सन्त जन, घर मजन एका नुहाया। धन्न धन्न वड्याई भगत जन, नेत्र कज्जल एका पाया। धन्न धन्न वड्याई सन्त जन, नाम नगारा साचा वंझल इक्क वजाया। दोहां विचोला आप बण, हरि शब्दी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा सगन मनाया।

धन्न वड्याई भगत जन, आत्म अन्तर इक्क प्रकाश। धन्न वड्याई सन्त जन, मिल्या मेल पुरख अबिनाश। धन्न वड्याई भगत जन, पार किनारा पृथ्मी आकाश। धन्न वड्याई सन्त जन, घर साचे पायण रास। दोहां विचोला आप बण, गुर शब्दी वसे पास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग खेले खेल तमास। धन्न वड्याई भगत जन, हरि मेला कमलापातीआ। धन्न वड्याई सन्त जन, मिटी रैण अन्धेरी रातीआ। धन्न वड्याई भगत जन, एका पाया पुरख बिधातीआ। धन्न वड्याई सन्त जन, अमृत पिया बूंद स्वांतीआ। दोहां विचोला आप बण, गुर शब्द पढ़ाए इक्क जमातीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल बौह बिध भांतीआ। धन्न वड्याई भगत जन, हरि हरि नामा गाया। धन्न वड्याई सन्त जन, पूरन कामां आप कराया। धन्न वड्याई भगत जन, नाम दमामा इक्क वजाया। धन्न वड्याई सन्त जन, अन्धेरी शामा मेट मिटाया। दोहां विचोला आप बण, एका कपड़ रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा पर्दा पाया। धन्न वड्याई भगत जन, चुक्कया माया मोह प्यार। धन्न वड्याई सन्त जन, नाता तुट्टा काम क्रोध लोभ मोह हँकार। धन्न वड्याई भगत जन, आसा तृष्ना दित्ती मार। धन्न वड्याई सन्त जन, हउमे तोड़या गढ़ हँकार। दोहां विचोला आप बण, शब्द फड़ाए हथ्थ कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण करे विचार। धन्न वड्याई भगत जन, जगत विकारा कटया। धन्न वड्याई सन्त जन, जगत जहानों बैठा रुट्ठया। धन्न वड्याई भगत जन, घर आपणा आपे लुट्टयां। धन्न वड्याई सन्त जन, कूड़ा कीता मूधा ठूठया। दोहां विचोला आप बण, गुर शब्दी आपे तुठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आप मनावे जुगां जुगन्तर रुट्ठया। धन्न वड्याई सन्त जन, होया ख़ाकी ख़ाक। धन्न वड्याई भगत जन, होया पाकी पाक। धन्न वड्याई सन्त जन, हरि बणया साचा साक। धन्न वड्याई भगत जन, घर वेखे खुल्हया ताक। दोहां विचोला आप बण, गुर शब्द सुणाए आपणा वाक्। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर हरिजन वेखे मार झाक। धन्न वड्याई भगत जन, मिल्या पुरख अगम्म। धन्न वड्याई सन्त जन, घर साचे पए जम्म। धन्न वड्याई भगत जन, अमृत रस चुंघिआ साचा मंम। धन्न वड्याई सन्त जन, मिटी तृष्ना तम। दोहां विचोला आपे बण, गुर शब्दी करे कम्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल श्री भगवान। धन्न वड्याई भगत जन, मिल्या शाह सुल्तान। धन्न वड्याई सन्त जन, जोत जगी महान। धन्न वड्याई भगत जन, घर बैठे मन्दिर इक्क मकान। धन्न वड्याई सन्त जन, झुल्ले इक्क निशान। दोहां विचोला आप बण, पावे रास साचा काहन। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर होए निगहबान। भगत वड्याई धन्न धन्न, हरि हरि नामा पाया। सन्त वड्याई धन्न, अन्तरजामा मेल मिलाया। गुरसिख वड्याई धन्न, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुरमुख वड्याई धन्न, एका इष्ट वखाया। गुर गुर वड्याई धन्न, दृष्टी दृष्ट दए खुल्हाया। सतिगुर वड्याई धन्न, सृष्ट सबाई वेख वखाया। हरि हरि वड्याई धन्न, आदि जुगादी खेल खिलाया। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, जुग जुग आप चलाया। हरि वड्याई धन्न, सतिगुर पुरख उठांयदा। सतिगुर वड्याई धन्न, गुर गुर नाल रलांयदा। गुर गुर वड्याई धन्न, गुरमुख मुख सलांहयदा। गुरमुख वड्याई धन्न, गुरसिख तरांयदा। भगत जन वड्याई धन्न, भगती मार्ग इक्क वखांयदा। सन्त जन वड्याई धन्न, सति सरूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। उठया हरि सच्चा मेहरवान, कलिजुग अन्तिम जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा निगहबान, आप आपणा नैण खुल्हाईआ। गुर गुर देवे साचा दान, एका शब्द पढ़ाईआ। गुरमुख सोहँ शब्द मन्त्र मन मान, मन मनसा मेट मिटाईआ। गुरसिख साचा चतुर सुजान, घर साचे सोभा पाईआ। भगतन मेला विच जहान, आपणा आप रिहा कराईआ। सन्तां देवे धुर फ़रमान, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। दाता दानी हो प्रधान, लोकमात फेरा पाईआ। सतिजुग तेरा साचा बणाए आप विधान, गुरमुख मुखीए आप चुणाईआ। हरिसंगत साची कर परवान, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। भगत सन्त सिक्ख गुरमुख गुर सतिगुर हरि हरी नर नरायण, एकउँकार निराकार एका रंग रंगाईआ। हरिसंगत तेरा उच्च महल्ला, हरि साचे आप वसाया। सतिगुर बैठा इक्क अकल्ला, गुर गुर शब्द सुणाया। गुरमुखां गुरसिखां आप फड़ाया आपणा पल्ला, आपणे लड़ बंधाया। भगतां भगती आपे रल्ला, आप आपणा खेल खिलाया। सन्त दुलार कर प्यार सच सनेहड़ा आपे घल्ला, पिछला मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख आदि अन्त, गुर सतिगुर सोभावन्त, हरि सज्जण दर सुहाया। कलिजुग तेरी वार अन्त, पारब्रह्म प्रभ हरि बेअन्त, हरिसंगत मेला एका कन्त, नार भतार शाह निरँकार सचखण्ड दुआर, धुर दी कार निरवैर निराधार आपणी आप कराया। आदि जुगादी जुग जुग कर पसार, आपे मेट मिटाया। सन्त भगत गुरमुख गुरसिख होए सेवादार, गुर सतिगुर सेव कमाया। शब्द गुर पहरेदार, अट्ठे पहर आलस निन्दरा विच ना आया। नित नवित्त भगतन हित लोकमात करे सैर, दरगाह साची वड़ण ना देवे ऐर ग़ैर, लक्ख चुरासी हेर फेर, मनमुखां मनमुखता लए घेर, सञ्झ सवेर ना कोए रखाया। प्रगट जोद्धा सूरबीर सिँघ शेर शेर दलेर हँ ब्रह्म सोइम रूप विष्नू वंसी भगवन धार जोत निरँकार, पुरख अकाल दीन दयाल ब्रह्मण्ड बणाए इक्क धर्मसाल, कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव आदि जुगादि उपाए अन्त करे ज्वाल, थिर घर वासी पुरख

अबिनाशी एका एक एका टेक एका लेख एका रिहा वेख, दूसर कोए रहिण ना पाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख मेले, गुरसिखां चाढ़े तेले, गुर सतिगुर सज्जण सज्जण सुहेले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत रूप करतार ब्रह्मा वेद ना पाए सार, अन्तिम सभ नूं आए हार, बिन हरि बेड़ा कोई ना करे पार, लक्ख चुरासी खड़ी कन्ढे मँझधार, मन मति एका धक्का देवे मार, मूंह दे भार रुढ़ाईआ। गुरसिख नारी घर पाया, हरि कन्त भतार। भुजा भुजंगम मीत मुरार। चाल बेहंगम विच संसार। जोगी जंगम ना पायण सार। जागरत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आपणे नेत्र फोर ब्रह्मण्ड रक्खे कोटी कोटि। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बणया आदि जुगादी जुग जुग चोर, गुरमुखां देवे नाम धन अन्धेर अन्ध घोर। आउँदा जांदा थक्का मांदा। पान्धी पन्ध मुकाउँदा जांदा। गुरसिखां गीत गाउँदा जांदा। रुठड़े मात मनाउँदा जांदा। फड़ फड़ बांहों गले लगांदा जांदा। पिछला लिख्या लेख मिटाउँदा जांदा। अमृत जाम प्यांदा जांदा। गुर गोबिन्द मिलाउँदा जांदा। नानक निरगुण कोलों बख्शांदा जांदा। संग मुहम्मद कोलों राह विच रवाउँदा जांदा। करोड़ तेतीसा नेत्र धार वहाउँदा जांदा। शंकर बाशक हार गलों सटांदा जांदा। ब्रह्मा मुख चार उग्घाड़, वाह वाह तेरे गीत सुणाउँदा जांदा। विष्नूं वंसी कर प्यार, तेरी डोली आपणे कंध उठाउँदा जांदा। लै के जाए धुर दरबार, पुरख अकाल अग्गे बैठा राह तकाउँदा जांदा। वसे सच्ची धर्मसाल, हरिसंगत सच्ची मेल मिलाउँदा जांदा। नाता तोड़ काल महांकाल, आप आपणे रंग रंगाउँदा जांदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डारे साचे भर, गुरसिखां वखाए आपणा दर, आपणी हथ्थीं आपे विदा कराउँदा जांदा।

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे घर जंडयाला गुरू ✪

हरि शब्द बलवान, कूड़ा बलवा दए मिटाया। हरि शब्द मेहरवान, एका कलमा दए पढ़ाया। गुर शब्द प्रधान, आलम उलमात भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द दए वड्याआ। शब्द गुर शब्द गुर दीना, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। शब्द शब्द गुर दाना बीना, गुर शब्द वज्जी वधाईआ। गुर शब्द लेख चुकाए लोकां तीनां, गुर शब्द दर घर साचे मेल मिलाईआ। गुर शब्द लोकमात गुरमुख विरले चीना, आत्म अन्तर जिस जणाईआ। गुर शब्द तन मन करे भीन्ना, भिन्नड़ी रैण सबाईआ। गुर शब्द गुरमुख मिलाए जिउँ जल मीना, घर सागर इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द दए वड्याईआ। गुर शब्द हरि तराना, सतिगुर पुरख अलांयदा। गुर शब्द

अनहद गाणा, पारब्रह्म सुणांयदा। गुर शब्द साचा राणा, दो जहानां वेख वखांयदा। गुर शब्द देवे माणा, निमाण निमाणयां गले लगांयदा। गुर शब्द चुकाए आवण जाणा, जो जन रसना हरि गुण गांयदा। गुर शब्द देवे पद निरबाणा, परम पुरख आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द निशान झुलांयदा। गुर शब्द सच निशान, हरि साचा आप झुलाईआ। खेले खेल श्री भगवान, जुग करता वड वड्याईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, लोकमात वंड वंडाईआ। वरभण्डी हरि हरि प्रधान, शब्दी शब्द धराईआ। शब्द अनादी इक्क ज्ञान, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। गुरमुख विरले देवे माण, जिस जन बूझ बुझाईआ। अन्तर आत्म आप पछान, अनभव प्रकाश वखाईआ। गुर शब्द वखाए तीर कमान, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी नाउँ उपाईआ। शब्द निराला तीर, गुर गुरसिख आप लगांयदा। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। अमृत आत्म रस देवे ठंडा सीर, निझरधारा आप चुआंयदा। बजर कपाटी पर्दा चीर, चोटी अख़ीर आप बहांयदा। आत्म सेजा पीरन पीर, दस्तगीर मेल मिलांयदा। जगत जंजाला तोड़ ज़ंजीर, घर सच वहीर वखांयदा। आपणे मन्दिर चार दीवारी आपे खिच्ची लकीर, बिन गुर पूरे पार ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अमृत प्याला सीर, हरिजन साचे आप प्यांअदा। अमृत रस साचा सीर, गुरमुखां हरि प्याईआ। देवणहारा साची धीर, धुर भरवासा इक्क जणाईआ। मानस जन्म बन्ने बीड़, बेड़ा आपणा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द वसे साचे घर, काया खेड़ा आप वसाईआ। काया खेड़ा वसे घर, घर मेला सज्जण सुहेलया। जगत तरनी जाए तर, पार किनारा डूँघा सागर वक्त चुकाए दुहेलया। निज घर निज आत्म निज नेत्र दरस कर, आप आपणे रंग रंगे चोलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण अन्दर वड़, शब्द अगम्मी आपे बोलया। शब्द अगम्मा बोल जैकारा, अनहद ताल वजांयदा। सति सरूपी खेल न्यारा, जोत उज्यारा आप करांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, सांतक सति वरतांयदा। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, जिस सिर समरथ हथ्थ टिकांयदा। एका देवे नाम सहारा, पार किनारा आप करांयदा। घड़न भन्नणहारा विच संसारा, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। आपणे रंग रवे करतारा, करनी करता किरत कमांयदा। शब्दी शब्द कर प्यारा, नाम शब्द हट्ट विकांयदा। गुरसिख विरला बणे वणजारा, सृष्ट सबाई आप सदांयदा। खेले खेल नर नरायण नर अवतारा, नूर जहूर इक्क चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अनादी साची तूर, तुरीआ देस सुणांयदा। तुरीआ देस हरि वसेरा, रूप रंग ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ चाउ घनेरा, वज्जदी रहे वधाईआ।

आदि निरँजण लाया डेरा, एका नूर करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी पाया घेरा, आप आपणा बन्द कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा अलक्ख अलक्खणा आपे वसे नेरन नेरा, दूजा संग ना कोए जणाईआ। आपे गुरू आपे गुर चेरा, सतिगुर पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सूरत आप उपाईआ। आपणी सूरत अकाल मूर्त, आपे रचन रचांयदा। ना कोई नेड़ ना कोई दूरत, ना कोई पन्ध मुकांयदा। ना कोई सच ना कोई कूड़त, ना कोई क्रिया वेख वखांयदा। ना कोई चरन ना कोई धूढ़त, ना कोई मस्तक सीस झुकांयदा। ना कोई मूढ़ ना कोई मूढ़त, ना कोई ज्ञान ध्यान दृढ़ांयदा। ना कोई रंगण रंग रंगे गूढ़त, ना कोई वेस अनेक वटांयदा। दर घर साचे आप आपणी आसा पूरत, आप आपणा दर सुहांयदा। तुरीआ नाद एका तूरत, आपणी इच्छया आप सुणांयदा। तुरीआ देस नर नरेश, तूरत नाद वजाईआ। आपणे अन्दर आपणा कर प्रवेश, आपे राग सुणाईआ। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेष, करोड़ तेतीसा ना कोए जणाईआ। ना कोई सुत्ता बाशक शेष, ना कोई लछमी चरन झसाईआ। ना कोई लिखणहारा लेख, वेद कतेब ना कोए उठाईआ। ना कोई पंज तत्त नारी नर करे वेस, रूप रंग ना कोए वखाईआ। ना कोई लिखणहारा लेख, काग़ज़ कलम ना कोए वड्याईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। अबिनाशी करता आपे वस्सया आपणे देस, नाद तूरत तुरीआ आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाईआ। तुरीआ देस सच महल्ला, जोत जगे अकालीआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल इक्क अकल्ला, आपे बूटा आपे बणया मालीआ। आपे अमृत देवे ठंडा जला, आप प्याए भर प्यालीआ। आपे दीपक जोती आपणी बला, दीवा बाती आप वखालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अनाद अनादी तूरत, हरि साचा आप सुणालीआ। शब्द अनादी नाद हरि, निरगुण आप वजांयदा। गुर पीर अवतार सन्त साध लोकमात धर, साची वस्तू झोली पांयदा। प्रसादी प्रसाद देवे दर, निरगुण निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। त्रैगुण तेरा पंज तत्त घाड़न घड़, सरगुण जोड़ जुड़ांयदा। आपे बाहर गुप्त आपे ज़ाहर, आपे अन्दर जाए वड़, आउँदा जांदा दिस ना आंयदा। शब्द अनादी आपणा घाड़न घड़, आपणा ताल वजांयदा। हथ्थो हथ्थी ना सके कोई फड़, बिन गुर पूरे दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, सगला संग रखांयदा। आदि जुगादि जुग जुग आप उखेड़े लग्गी जड़, आपे बाग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द मिलावा साचे घर सुरत सवाणी नाल हाणी महल्ल अटल उच्च मनार, गुर करतार दर दरबार मेल मिलांयदा।

४५०
०८

✪ २४ चेत २०१६ बिक्रमी टेक चन्द दे घर जंडयाला गुरु ✪

हरि त्रिलोकी नाथ, टेक एक अधारया। राम नाम सुणाए साची गाथ, जेहवा हरिजन रसन उचारया। आदि शक्ति लहिणा माथ, मस्तक नूर जोत चमका रिहा। वेद विदांता साचा राथ, वेद पुराणी आप तरा रिहा। संजम सेम गायत्री पाठ, धूप हवन सुगंध समा रिहा। गंगा सुरस्ती तीर्थ ताट, जमना घाट वखा रिहा। शंकर ब्रह्मा एका हाट, एका रूप वखा रिहा। रूप अनूपा कर विराट, आपणा भेव खुल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त वेख वखा रिहा। हरि अबिनाश त्रिलोकी नंदन, नंद लाल नेत नीता। राम नाम चिल्ला तीर कमन्दन, खिच्चे एका इक्क अतीता। शब्द सुहागी बत्ती दन्दन, काया देहुरा मन्दिर इक्क अनडीठा। पंज तत्त अन्दर परमानंदन, हरि आपणे हथ्थ रखीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाथ अनाथा आप सुणाए आपणा सुणाए सुहागी गीता। राम नाम गोपी काहन, सीता सुरत वखाईआ। शब्दी चिल्ला तीर कमान, नैण कमन्द खिचाईआ। आत्म अन्तर मारे बाण, मूरछत ब्रह्म वखाईआ। उत्पत होए श्री भगवान, चतुर्भुज वेस वटाईआ। नाम रखाए सच निशान, निरगुण हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सईआ जगत चलाए आपणी नईआ, भगत बणाए साक सैणा सईआ, सज्जण मीत मुरार इक्क अख्वाईआ।

✪ पहली वसाख २०१६ बिक्रमी दरबार विखे दया होई जेठूवाल ✪

हरि पुरख अगम्मड़ा सच्चा सज्जण, नर नरायण निरंकारया। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, लोकमात लै अवतारया। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, दुरमति मैल पाप उतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ रखा ल्या। पुरख अगम्मड़ा हरि समरथ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, देवे नाम वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्खणा अलक्ख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे करे सक्ख, सच वस्त ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नकेल पाए नक्क, लोआं पुरीआं फोल फोलाईआ। जन भगतां उप्पर जाए तुठ, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। कूड़ कुड़यारा जड़ देवे पुट्ट, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलाईआ। पुरख अगम्मड़ा मर्द मरदाना, एक एकउँकारया। शाहो भूप बण सच हरि सच सुल्ताना, साचे तख्त आप

सुहा रिहा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, पारब्रह्म प्रभ नाउँ धरा रिहा। आदि निरँजण खेल महाना, खेलणहारा दिस ना आ रिहा। नाम खण्डा तीर निशाना, रसना चिल्ले आप चढ़ा ल्या। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्याना, आप आपणा पर्दा ला ल्या। राम रूप श्री भगवाना, निरगुण सरगुण खेल खिला ल्या। कान्हा कृष्ना नौजवाना, आपणी भुजा आप उठा ल्या। चण्ड प्रचण्ड तेज़ कृपाना, शस्त्र बस्त्र आप सजा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मर्द मरदाना आप अख्वा रिहा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी धार, निरगुण जोत जगाईआ। जोती नूर अपर अपार, आप आपणा रिहा प्रगटाईआ। ना कोई दूजा मीत मुरार, सगला संग ना कोए रखाईआ। अकल कला कल आपे धार, आपणी कल वरताईआ। अछल अछल्ल विच संसार, वलीआ छलीआ बेपरवाहीआ। निहकलंका लै अवतार, पुरख अगम्मड़ा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशाना इक्क वखाईआ। पुरख अगम्मड़ा धुर दीबान, धुर दरगाह जणाईआ। शब्द सरूपी सति निशान, हरि साचा वेख वखाईआ। आदि जुगादि निगहबान, दिवस रैण वेख वखाईआ। हर घट होया जाणी जाण, थिर घर बैठा आसण लाईआ। गुरमुख साजण देवे माण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। मेल मिलावा सखीआं काहन, कँवल नैण रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। पुरख अगम्मड़ा अकल कल धार, आपणी कल वरतांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। वेखे विगसे करे विचार, नव सत्त फोल फोलांयदा। पंज तत्त हो उज्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। नाम विहूणा सर्ब संसार, साचा वणज ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख पुरखा वेख वखांयदा। पुरख अगम्मड़ा पुरख अगम्म, अगम्मड़ा थान सुहाया। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए उपाया। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आपे आप उपाए आपणा दम, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मड़ा आप अख्वाया। पूरन देह पूरन प्रकाश, पूरन सतिगुर विच समाईआ। पूरन पृथ्मी पूरन आकाश, गगन पातालां रिहा समाईआ। पूरन मण्डल पूरन रास, पारब्रह्म प्रभ रचन रचाईआ। पूरन घर पूरन निवास, पूरन बैठा आसण लाईआ। पूरन पूरा होया दासी दास, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। गोबिन्द पूरी करी आस, पिछला लहिणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। पूरन वरया पारब्रह्म, घर साचे वज्जी वधाईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन, मरन जन्म विच ना आईआ। सच सरनाई एका सरन, नर नरायण मेल मिलाईआ। कादर करता करनी करन, करनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द

लहिणा रिहा चुकाईआ। पूरन पाया पुरख अबिनाशा, घर सज्जण मीत मुरारा। लोकमात आया वेखण जगत तमासा, रूप वटाया एकउँकारा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, खेले खेल अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द उतरे तेरा उधारा। पूरन हरि हरि मेलया, पारब्रह्म गुर करतार। सतिगुर पूरा सज्जण सहेलया, वेखे विगसे करे विचार। सद वसे रंग नवेलया, इक्क अकेला खेल अपार। आपे होए गुरू गुर चेलया, सुहाया बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला दित्ता करज उतार। पूरन पाया आदि निरँजण, निरगुण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता साचा सज्जण, घर बैठा सच्चा माहीआ। अस्व अस्वार चढ़या ताजन, राज राजन आप अख्वाईआ। करे कराए सच्चा काजन, करणहार भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पूरन पूरन पुरख सुल्तान, परम पुरख अख्वांयदा। मिल्या मेल श्री भगवान, विछड़ कदे ना जांयदा। सच उठाया हथ्थ निशान, दो जहानां आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लेखा लेखे लांयदा। पूरन वर घर हरि हरि पाया, नारी कन्त सुहागीआ। आत्म अन्तर इक्क लिव लाया, नुहावण आया, साचा माघीआ। दीपक जोती इक्क जगाया, होया सच वैरागीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा धोवे दागीआ। पूर्ब लहिणा हरि चुकाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। वार थित किसे भेव ना पाउँणा, लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। भेव अभेदा भेव खुल्हाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द गहिणा तन पहनाउँणा, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पूरन पुरख हरि साची धार, सच सच वरतांयदा। लहिणा देणा कर्ज उतार, लेखा लेख वखांयदा। आदि जुगादी साची कार, पारब्रह्म प्रभ आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणे झोली पांयदा। हरि हरि लहिणा आप चुकाउँणा, हरि सज्जण वड वड्याईआ। कलिजुग तेरा भेव खुल्हाउँणा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। तीजा नेत्र इक्क वखाउँणा, एका नूर रुशनाईआ। चौथे पद डेरा लाउणा, परम पुरख वेख वखाईआ। पंचम मीता मेल मिलाउँणा, मेल मिलावा धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिख्या दए गवाहीआ। साचा लेखा हरि लिखाया, गोबिन्द शब्द जणाईआ। गोबिन्द सेवा सेव कमाया, मंगे हरि सरनाईआ। हरि हरि साची दया कमाया, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द निउँ निउँ सीस झुकाया, पुरख अकाल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वज्जी वधाईआ । पुरख अकाला दीन दयाला, देवे धुर फ़रमानया। आपणे फल लगाए डाल्हा, फल फुलवाड़ी वेख वखानया। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली

इक्क रखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणे भाणया। हरि भाणा करतार, गोबिन्द
मेल मिलाईआ। नाता जोड़ विच संसार, पूत सपूता नाउँ रखाईआ। शब्द अनादी एका धार, तुरीआ तूरत आप वजाईआ।
शब्द अगम्मी साची सूरत, साची सूरत निरगुण वेख वखाईआ। अकाल मूर्त कर प्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा लेख चुकाईआ । गोबिन्द तेरा पूर्ब लेखा, हरि साचा अन्त चुकांयदा।
दर दरबारी दर दरवेशा, दर दर अलख जगांयदा। रूप वटाया धारी केसा, केस गढ़ सुहांयदा। सच सुल्तान नर नरेशा,
निरगुण इष्ट वखांयदा। लहिणा चुक्के गणपति गणेशा, शिव शंकर ना कोए मनांयदा। ब्रह्मा करे ना कोए आदेसा, करोड़
तेतीसा ना सीस झुकांयदा। विष्नूं करे ना कोई वेसा, ना कोई लछमी संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
जोत धर, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। पुरख अकाल हरि भगवाना, जुग जुग खेल खिलाईआ। जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना,
पारब्रह्म आप अख्वाईआ। खेले खेल दो जहाना, जागरत जोत इक्क जगाईआ। त्रिलोकी नाथ गोपी कान्हा, साची सखीआं
मेल मिलाईआ। राम रूप विच सुहाना, सीता सुरती लए प्रनाईआ। नानक गाए एका गाणा, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ।
गोबिन्द बख्शे चरन ध्याना, सच सच्ची सरनाईआ। मंगी मंग दानी दाना, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। करता पुरख जाणी
जाणा, भेव कोए ना राईआ। आदि जुगादी रक्खे माणा, आप आपणा संग निभाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, वेद पुराण
भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। हरि खेल अपर अपारा, भेव
कोए ना पांयदा। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द रूप वटांयदा। पूत सपूता सुत्त दुलारा, दुष्ट दमन अपनांयदा। पुरख
अकाल इक्क जैकारा, रसना नाअरा लांयदा। बख्शणहारा चरन प्यारा, निरगुण धारा मेल मिलांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यारा,
घर साचे आप जगांयदा। शब्द अगम्मी सच्ची धुन्कारा, बोध अगाध जणांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, नाम भगौती
हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप करांयदा। नाम भगौती हथ्थ फड़ा,
हरि साचे शब्द जणाईआ। शब्द अगम्मी घोड़े दए चढ़ा, नेत्र नैण ना कोए दसाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, वाह वा
गुरू वड्डी वड्याईआ। चारों कुन्ट फेरा पा, दहि दिशा वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबा, साचा सगन मनाईआ।
ब्रह्मा विष्न शिव तक्कण राह, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। सचखण्ड दुआरा वेख्या साचा थाँ, गुर गोबिन्द ख़ुशी मनाईआ।
पुरख अबिनाशी पारब्रह्म चढ़या चा, तेरी तेरी ओट तकाईआ। पुरख अगम्मा दए सुणा, एका शब्द अल्लाईआ। जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लेखा वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द जणाया, एका धार बंधाईआ। गोबिन्द

४५३
०८

गुर गुर समझाया, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। नाता बिधाता इक्क जुड़ाया, ज़ात पाता मेट मिटाईआ। कमलापाता नज़री आया, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। धुर दी दाता झोली पाया, अमृत भण्डार इक्क भराईआ। साची गाथा शब्द जणाया, वाहिगुरू फ़तिह गजाईआ। सगला साथा आप निभाया, साचा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधाईआ। शब्द सुनेहड़ा साचे मीत, हरि सतिगुर आप सुणाया। गुर गोबिन्द गाए सुहागी गीत, वाह वा गुरू इक्क मनाया। निरगुण जोत सदा अतीत, निर्भय रूप अख्वाया। नाम सति वस्सया हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा लाया। गोबिन्द मानस देही गया जीत, हरि गोबिन्द सच्चा पाया। अबिनाशी करता आप चलाए आपणी रीत, पतित पुनीत वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा लेख चुकाया। गुर गोबिन्द सच सलाह, हरि साचे सच सुणाईआ। लोकमात बण मलाह, बेड़ा इक्क चलाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठा, चार वरनां वेख वखाईआ। अमृत जाम इक्क प्या, अमरापद समाईआ। साची सिख्या दए समझा, पंचम मोह जणाईआ। पंचम नाता दए तुड़ा, पंचम वज्जे वधाईआ। पंचम सखीआं मंगल गा, घर साचा इक्क सुहाईआ। पंचम रोवण मारन धाह, रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपे रिहा खलाईआ। पंचम प्यारा गोबिन्द धार,
४५४
०८
हरि हरि मेल मिलाया। मेल मिलावा विच संसार, करते खेल खिलाया। करनेहार आप करतार, ना कोई दूसर संग जणाया। आदि जुगादी बन्ह्े धार, जुग जुग वेस वटाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा आप खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा गोबिन्द झोली पाया। गोबिन्द गुर अमृत धार, गुरमुखां मुख चुआईआ। पंचम करया ख़बरदार, सोया तत्त पंज उठाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, जागरत जोत जगाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। आपे होया पहरेदार, सेवक सेव कमाईआ। आपे निउँ निउँ ढहि प्या दुआर, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। आपे बणया दर भिखार, अमृत मंगे चाँईं चाँईंआ। गुर चेला दिसे इक्क प्यार, एका रूप दरसाईआ। दोहां विचोला आप निरँकार, निरगुण रूप दए गवाहीआ। नाम खण्डा सच कटार, साचे शाह हथ्थ चमकाईआ। ब्रह्मण्डां पावे अन्तिम सार, जेरज अंडां फोल फोलाईआ। गुरमुखां कर प्यार, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। गोबिन्द बेड़ा कर त्यार, लोकमात रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। शब्द सुनेहड़ा हरि निरँकार, गरु गोबिन्द आप जणाया। कलिजुग अन्तिम करना पार किनार, लोकमात रहिण ना पाया। गुर गोबिन्द होया ख़बरदार, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप

चुकाया। शब्द सुनेहड़ा हरि हरि सुण, गुर गोबिन्द लए अंगड़ाईआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, तेरी कीमत कोए ना पाईआ। तेरा तेरे लए चुण, तेरा तेरी सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुरमुख साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द साची सेवा ला, हरि हरि खेल खिलाया। दूजी वार वेस वटा, कलिजुग कूड़ा दए उठाया। साची सिख्या इक्क समझा, एका हुक्म जणाया। तेरा लहिणा देणा दए मुका, गुर गोबिन्द फेरा पाया। दाता दानी बेपरवाह, दर आए लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग सोया दए उठाया। कलिजुग उठ करे ध्यान, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। कवण कूट जोद्धा सूरबीर बली बलवान, गोबिन्द बैठा जोत जगाईआ। पंचम प्यारे कर प्रधान, पंचां मेट मिटाईआ। केसरी फड़ हथ्थ निशान, पीले बस्त्र तन छुहाईआ। कलिजुग अन्तिम आया विच मैदान, कलिजुग मेटे जूठी झूठी शाहीआ। मुहम्मद गल्ल सुणाए कान, आप आपणा रूप वटाईआ। तेरी लुट्टी जाए दुकान, चौदां हट्टां दए लुटाईआ। दोहां मेल होया जहान, घर बैठे करन सलाहीआ। मुहम्मद मंगे एका दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कलिजुग कूड़ा बण अञ्याण, बाल बाला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। कलिजुग कूड़ा छोटा बाला, आपणा रूप वटांयदा। गोबिन्द वेखे जगत दलाला, एका दर सुहांयदा। संग रखाए काल महांकाला, महांकाल आप मनांयदा। कलिजुग कूड़ा तोड़े जंजाला, मेरा बेड़ा शौह दरया रुढ़ांयदा। लेखा जाणे जगत धन माला, धीरज धीर ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा चल दुआर, गोबिन्द तक्की इक्क सरनाईआ। गुरसिख सुत्ते पैर पसार, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। रोक ना सक्कया कोई पहरेदार, खड़ग खण्डा ना कोए वखाईआ। आए ढठ्ठा चरन दुआर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। आपणी किरपा आपे धार, दर आया वड गुनाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा खिलाईआ। कलिजुग कूड़ा कर परवाना, गोबिन्द दया कमांयदा। सज्जा चरन दूर रखाना, हरि मन्दिर राह तकांयदा। खब्बा चरन हथ्थ फड़ाना, कलिजुग वंड वंडांयदा। खेल खेल दो जहानां, एका दोआं संग रलांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए मकाना, ओंकारा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वर, तेरा भार उठांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ा पाप, खब्बे चरन हेठ दबाया। नौ खण्ड पृथ्मी गई कांप, धरत धवल ना कोए सहाया। रिखीआं मुनीआं साधां सन्तां जीआं जन्तां छुटयां जाप, बत्ती दन्द ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत गुनाही लए तराया। कलिजुग तेरा जगत

गुनाह, चरन हेठ दबांयदा। दो सौ सद ना देवे कोई थाँ, सठ सठ ना मेल मिलांयदा। वीह सौ सोलां बिक्रमी कर अकट्ठ, सतारां सौ छपंजा मूल चुकांयदा। कलिजुग पापां लाई सट्ट, आप आपणे चरन दबांयदा। पूरन पूरा वसे घट घट, पर्दा ओहला ना कोए रखांयदा। चार वरनां तेरा दूई द्वैती मिटया फट, कलिजुग आपणी हथ्थीं आपणी पट्टी खब्बे चरन बनांयदा। गुरसिखां तन पहनाए साचा पट, सज्जा चरन काया हरि मन्दिर विच रखांयदा। अमृत सरोवर देवे झट्ट, नाम प्याला हथ्थ फड़ांयदा। कलिजुग लहिणा देणा चुकाया पूजा पाठ, नेत्र लोचण दरस दिखांयदा। इक्क खुल्हाया साचा हट्ट, वणज वणजारा वणज करांयदा। निरगुण जोत जगे ललाट, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। गुर गोबिन्द पूरा करन आया घाट, कलिजुग अन्तिम फेरी पांयदा। जन भगतां दुरमति मैल देवे काट, दर आए लेखे लांयदा। ज़िमीं अस्मानां पाड़ा जाए पाट, गुरमुख चरनां हेठ रखांयदा। दो सौ सट्ठ बरस तेरी नेड़े कीती वाट, आपणे अंग आप भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़े लाई सट्ट, अन्तिम रो रो दए दुहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते चार वरनां खोल्हया एका हट्ट, सतिजुग साची बणत बणाईआ। खेले खेल स्वांगी स्वांग नटूआ नट, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। गुरसिख तेरा हरि मन्दिर कदे ना जाए ढट्ठ, चार दीवार ना कोए वखाईआ। तेरा रूप आपणी हथ्थीं आपणे अन्दर लए रक्ख, ना कोई सके बाहर कढाईआ। सम्मत सोलां हो प्रतक्ख, निहकलंका डंका रिहा वजाईआ। लक्खों करनहारा कक्ख, कक्खों लक्ख बणाईआ। शाह सुल्तानां भाण्डे करने सक्ख, गुरमुखां दए भराईआ। बिन गोबिन्द तेरे कोई ना सके रक्ख, हरि सच्चा शब्द गवाहीआ। सरसे अन्दर जो रक्खे ढक, अन्तिम लऐ उपजाईआ। आपणे करे पूरे भविख्त वाक्, ना कोई लेखा दए मिटाईआ। पुरी अनन्द बणाए सज्जण साक, कलिजुग अन्तिम मेला भैण भाईआ। शब्द अगम्मी चढ़या राक, नीले वाला बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी रिहा झाक, चारों कुंटां राह तकाईआ। धरनी धूढ़ मंगे मस्तक माथ, आप आपणा सीस अग्गे डाहीआ। पारब्रह्म प्रभ पाकी पाक, पतित पुनीत रिहा कराईआ। गुरसिखां पर्दा खोल्हे ताकी ताक, बन्द ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तन आपे वेख वखाईआ। पूरन तन हरि रतया, परम पुरख सुल्तान। ना मन मति बुध ना कोई मतया, ना कोई जगत ज्ञान। ना कोए बख्शे साची सतया, ना कोई चरन ध्यान। पंच विकार ना करे हत्या, ना वसे मन्दिर मकान। ना ठंडा ना तत्तया, ना बुड्ढा बिरध बाल जवान। फड़या हथ्थ शब्द साचा भथ्थया, नाम चिल्ला इक्क कमान। साढे तिन्न हथ्थ चलाए रथिआ, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आदि जुगादि जुग जुग लोकमात किसे कोलों ना ढठ्ठया, आपे जाणे आपणी आण। आपे जाणे आपणी समरथया, लेखा लिखे ना वेद

पुराण। गुरमुखां लिखाए साची कथिआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी आण। पूरन तन नाता जोड़, जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचे दर बहांयदा। गोबिन्द लग्गी निभे तोड़, हरि साचा आप निभांयदा। जन भगतां अन्तिम रिहा बौहड़, आप आपणा वेस वटांयदा। मेल मिलाए दौड़ दौड़, शब्द अगम्मी राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध खेल खिलांयदा। हरि वड्डा वड वड्याई, भेव कोए ना पांयदा। लक्ख चुरासी जिस उपाई, घट घट वेख वखांयदा। आदि शक्ति मात बणाई, त्रै त्रै संग निभांयदा। सभना उप्पर साचा साँई, निरगुण नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी करता आप कमांयदा। लक्ख चुरासी जणया सुत्त, वरनी वरन उपाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, घट घट वेखे वेखणहारा सभनी थाँईंआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त माह लए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता आप अख्वाईआ। मात पित पित दातार, एका एकउँकारया। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखा रिहा। आदि जुगादी लै अवतार, नित नवित्त खेल खिला रिहा। भगतन मीता हरि गिरधार, साचा हित इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक अनेक रूप वटा ल्या। इक्क अकल्ला करनेहारा, पारब्रह्म अख्वाईआ। देवणहारा सर्ब सहारा, भुल्ल रहे ना राईआ। जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, हाज़र हज़ूर सहिज सुखदाईआ। निरगुण मेल निरगुण धार, रूप अनूप आप दरसाया। वरते वरतावे विच संसार, सारंगधर भगवान बीठलो आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। जगत माता जगत विहार, जगत रूप लपटाया। जगत माता आलस निन्दरा करे प्यार, आप आपणा दए भुलाया। जगत माता मेला काम क्रोध लोभ मोह हँकार, मन मति खेल खिलाया। जगत माता माया ममता कर विचार, रूप रंग श्रृंगार जणाया। जगत माता आपणा वेखे कन्त भतार, दिवस रैण राह तकाया। जगत माता दिसे विकार, आपणा मन्त्र मूल गंवाया। जगत माता जगत हँकार, जगत तृष्ना रही लपटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जगत बंधन बंध बंधाया। पारब्रह्म हरि एकउँकार, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। दिवस रैण ना कोई विचार, प्रभाती सँधया ना कोए जणाईआ। काम क्रोध ना कोए विकार, तृष्ना भुक्ख ना होए हल्काईआ। बस्त्र शस्त्र ना कोए आधार, नैण कज्जल धार ना कोए बंधाईआ। जगत सेज ना कोए प्यार, रस भोग ना कोए वखाईआ। एका एक जन भगतां करे सद प्यार, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। विसर ना जाए विच संसार, जुग जुग लहिणा मूल चुकाईआ। आप आपणा कर उज्यार, गुरमुख

साचे लए जगाईआ। अट्ठे पहर इक्को प्यार, दूजी धार ना कोए चलाईआ। गुरसिख सुत्ता रहे पैर पसार, गुर पूरा पहरेदार अख्वाईआ। ना पुरख ना दिसे नार, नर नरायण वेस वटाईआ। गुरमुख साचे सुत्त दुलार, आप आपणी गोद उठाईआ। शब्द हलूणा देवे मार, नाम झूला इक्क झुलाईआ। आपे वस्सया सचखण्ड दुआर, गुरमुख सच दुआरे आप बहाईआ। मनमुख सुत्ते जीव गंवार, गूढ़ी नींद ना कोए उठाईआ। मनमति नाल रली नार विभचार, दिवस रैण दए सलाहीआ। सिँघ तारा गुरसिख ना होए कोई ख्वार, सतिगुर पूरा विसर ना जाईआ। जगत विकारे धक्का देवे मार, शौह दरयाए देवे रुढ़ाईआ। भैण भाई सका मीत मुरार, मात पित इक्क रघुराईआ। वड्डा छोटा इक्क प्यार, जो जन आए सरनाईआ। तिन्नां लोकां करे बाहर, चौथे घर बहाईआ। शब्द सलोक इक्क निरँकार, सो पुरख आप सुणाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेखे थाउँ थाँईंआ। कलिजुग धुप्प ना लग्गे कड़ाका, अग्नी तत्त ना कोए जलाए। लाड़ी मौत ना करे स्यापा, गल पल्लू कोए ना पाए। सौहरे पेके इक्को मापा, पारब्रह्म अख्वाए। कलिजुग अन्तिम चुक्के बाका, लहिणा कोई रहिण ना पाए। निहकलंक खोल्हया आपणा ताका, बजर कपाटी कुंडा लाहे। पंच चोर ना मारे डाका, गुरसिख तेरे नेड़ ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपे
४५८ लए वराए। गुरसिख रोया नैण नीर, नेत्र जल वहाया। बिरहों विछोड़ा लग्गी पीड़, बिन गुर पूरे ना कोए कढाया। सतिगुर ४५८
मारे अणयाला तीर, दूई द्वैती देवे ढाया। एका चोटी चाढ़े अखीर, महल्ल अटल इक्क सुहाया। मिल्या मेल वड पीरन पीर, दस्तगीर घर विच पाया। लेखे लाए शाह हकीर, जो जन सरनाई आया। चिट्टे उप्पर खिच्ची जाए लकीर, ना कोई मेटे मेट मिटाया। गुरसिखां बन्नृणहारा बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाया। कलिजुग अन्तिम कट्टे भीड़, भव सागर पार तराया। आपे होए मीर पीर, मीरी पीरी आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए बचाया। गुरसिख ना रोवे मारे धाह, अन्त ना होए जुदाईआ। सतिगुर पूरा पकड़न आया बांह, निरगुण सरगुण डेरा लाईआ। करे कराए सच न्याँ, दर घर साचे सच सलाहीआ। वसणहारा नगर ग्रां, हरिजन खेड़ा वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ साची माँ, गुरसिख भुल्ल कदे ना जाईआ। सखा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सूरज चन्न मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पल्ला रिहा फड़ाईआ। लहिणा देणा हथ्थ करतार, जीव जन्त भेव ना राईआ। कर्म कुकर्मां पावे सार, करनी करता वेख वखाईआ। जगत लहिणा दए उतार, जगत दए वड्याईआ। भगत भगती इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे जोड़े आपे तोड़े,

आपे तोड़ निभांयदा। आप चढ़ाए शब्द घोड़े, आपे ख़ाकी ख़ाक समांयदा। आपे लाए सच महल्ले पौड़े, आपे हथ्थ किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेखा पूर करांयदा।

✪ पहली जेठ २०१६ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

आदि पुरख एकउँकारा, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यारा, एका एक डगमगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपारा, भेव कोए ना पाईआ। अलक्ख निरँजण अलक्ख जैकारा, अलक्खणा अलक्ख आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, गुर गुर रूप समांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप अपार, रूप रंग ना कोए जणांयदा। वसणहारा धाम न्यार, निहचल घर सुहांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, दर दरबारा इक्क रखांयदा। अकाल पुरख ख़बरदार, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित आप अख्वांयदा। जूनी रहित आदि निरँजण, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आपणा आप बणे सज्जण, घर मेला सहिज सुभाईआ। आपणा पर्दा आपे कज्जण, आप आपणी सेव कमाईआ। आप आपणी रक्खे लज्जण, दाता दानी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण खेल इक्क अकल्ला, आपणा आप करांयदा। पुरख अबिनाशी बैठ अकल्ला, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। निहचल धाम उच्च अटला, दिस किसे ना आंयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बनांयदा। आपणी धार निरगुण रूप, हरि साचा आप चलांयदा। सच सुल्ताना शाहो भूप, राज राजान आप अख्वांयदा। आपे वसे चारे कूट, दूसर दिस किसे ना आंयदा। आपणा हुलारा आपे रिहा झूट, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण रूप पुरख अकाल, एका रंग समाया। आप आपणा तोड़ जंजाल, आप आपणा बंधन पाया। आपे बैठा आप आपणी धर्म सच्ची धर्मसाल, चार दीवार ना कोए रखाया। आप आपणे फल लगाए डाल्ह, फल फुलवाड़ी आप उपाया। करे कराए आप प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ रखाया। आदि जुगादि अवल्लड़ी चाल, जुग करता भेव ना राया। धुर दरगाही बण दलाल, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि न अन्ता इक्क अख्वाया। आदि न अन्ता हरि भगवन्त, आपणी कल वरतांयदा। खेले खेल सर्ब गुणवन्त, गहर गम्भीर अख्वांयदा। दर दरवेशा होए मंगत, आपणी झोली आपणे अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण

मेल निरगुण धार, निरगुण संग रखाईआ। निरगुण जोत नूर निराकार, निरगुण निरगुण डगमगाईआ। निरगुण मीता निरगुण करे प्यार, निरगुण सेजा रिहा हंढाईआ। निरगुण वस्सया चीता अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर आप अख्वाईआ। निरगुण ठांडा सीता एका धार, निरगुण तत्त ना कोए जलाईआ। निरगुण रीता अपर अपार, निरगुण विच ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेलणहार पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। आप चलाए आपणा रथ, रथवाही आप अख्वाया। आपे देवे आपणी वथ्थ, आप आपणा दर सुहाया। आपणी कथा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। निरगुण मेल निरगुण धार, निरगुण विच समाईआ। निरगुण कन्त निरगुण भतार, निरगुण नारी नर नरायण हंढाईआ। निरगुण कन्त निराकार, निरगुण आदि अन्त हो जाईआ। निरगुण जुगा जुगन्त खेल अपार, जुग करता भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे रुशनाईआ। एका नूर जोत उजाला, हरि साचा सच करांयदा। दर घर साचे दीन दयाला, दर दरबारा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतारा, रूप अनूप दरसांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, वसणहारा धाम न्यारा, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। निरगुण बाती जोत उज्यारा, कमलापाती आप जगांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणा बण सिक्दारा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण मेला निरगुण रंग, निरगुण आप चढ़ांयदा। निरगुण माणे सेजा सच पलँघ, निरगुण साचा संग निभांयदा। निरगुण अंगीकार लाए अंग, निरगुण आपणे अंक समांयदा। निरगुण दर दरवाज़ा आपणा आपे लँघ, आप आपणा घर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी मंग मंगांयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण बंक निरगुण दुआरी, निरगुण अलख जगांयदा। निरगुण देवणहारा दर दर दुआरी, आप आपणी वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर उपांयदा। दर दरवाज़ा आपणा खोल्ह, हरि साचे रचन रचाईआ। पुरख अगम्मा आपे बोल, आपणी करे सिफ्त सलाहीआ। आप आपणे वसे कोल, दूसर वस कोए ना राईआ। दिवस रैण करे चोल्ह, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आपणे अन्दर आपे मौल, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। निरगुण दुआरा एकउँकारा, आपणी खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत कर पसारा, जोती जोत विच टिकांयदा। मात पित बण प्यारा, आप

आपणा संग रखांयदा। उपजे सुत्त सुत्त दुलारा, शब्द शब्दी नाउँ धरांयदा। वणज कराए इक्क वपारा, एका बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमांयदा। अगम्मड़ी कार पुरख बिधाता, आपणी आप कराईआ। आपे पिता आपे माता, पूत सपूत आप हो जाईआ। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, ज़ात अजाति भेव ना राईआ। आपणी देवे धुर सुगाता, धुर दरगाही वड वड्याईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आप अख्वाईआ। आदि पुरख आदि अवतारा, आदि आदि समाया। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणे अन्दर आसण लाया। हित सुत्त अबिनाशी अचुत्त खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूरो नूर उपाया। जोती नूर हरि उपा, नूरो नूर दरसांयदा। आप आपणा वेस वटा, निराकार साकार हो जांयदा। खेले खेल अगम्म अथाह, बेपरवाह भेव ना आंयदा। नूर नुरानी इक्क ख़ुदा, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणे नालों कर जुदा, आप आपणा अंग कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकार कर पसार, नाम सति सति जैकार, करता पुरख पुरख करतार, निर्भय दए उधार, जूनी रहित खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन आपे पांयदा। आपणा बंधन आपे पा, आपणा रूप वटाया। अबिनाशी करता खेल खिला, खेलणहारा दिस ना आया। आपणी जोती नूर टिका, जोती नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंस चलाया। आपे भगवन जोती धर, आपणा रूप वटांयदा। आपणी किरपा आपे कर, आपे वेख वखांयदा। आपे सोहे आपणे दर, दर दुआरा आप सुहांयदा। आपणी करनी करता रिहा कर, करनहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस अपर अपारा, हरि साचे सच कराया। विष्नूं वंसी हो त्यारा, विश्व रूप समाया। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणा मार्ग लाया। ना कोई दूसर मीत मुरारा, ना कोई संग रखाया। ना कोई गुर पीर अवतारा, इक्क अकल्ला खेल खिलाया। रवि ससि ना कोए सतारा, सूरज चन्न नज़र ना आया। जंगल जूह उजाड़ ना कोए पहाड़ा, डूँघी कुंदर ना कोए वखाया। त्रैगुण ना तेरा कोए उज्यारा, तेरा तत्त ना कोए उपाया। पंज तत्त ना कोए शृंगारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश ना कोए रलाया। मन मति बुध ना कोए जैकारा, ना कोई नाउँ धराया। वेद कतेब ना कोए लिखारा, रसना जेहवा ना कोए हिलाया। गुर पीर ना कोए अवतारा, साध सन्त ना कोए रखाया। लक्ख चुरासी ना कोए पसारा, जीव जन्त ना कोए धराया। आदि जुगादी एकउँकारा, एका घर वसाया। आप आपणा सुहाए बंक दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क रखाया। ग़रीब निवाज़ा हो

उज्यारा, आपणा वाजा आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं वंसी नाम धराया। विष्नूं रूप हरि करतार, आपणा आप करांयदा। आप आपणे विच्चों करया बाहर, मात पित ना कोए रखांयदा। भाई भैण ना कोए प्यार, साक सैण ना कोए जणांयदा। ना कोई नारी कन्त भतार, ना कोई सेज हंढांयदा। ना कोई करे तन शृंगार, बस्त्र भूषन ना कोए सुहांयदा। ना कोई नैण कज्जल धार, बत्ती दन्द ना कोए हसांयदा। ना कोई पाठ वेद मन्त्र रिहा उचार, ना कोई गीत सुणांयदा। इक्क अकल्ला सिरजणहार, नेत्र नैणां नज़री आंयदा। वसणहारा सच सचखण्ड दुआर, थिर घर बैठा सोभा पांयदा। विष्नूं मेला एका कार, एका किरत कमांयदा। तेरा मेरा इक्क प्यार, आदि आदि इक्क अख्वांयदा। तेरे अन्दर तेरा देवे वाड़, तेरी धर्मसाल सुहांयदा। तेरा रूप सच अखाड़, सच दुआरा आप बणांयदा। तेरा रंग साचा लाड़, धुर दरगाही आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेलणहारा हरि समरथ, एका एक अख्वाया। विष्नूं देवे साची वथ्थ, आपणा नाम आपणे विच टिकाया। आपणा कीता आपे वक्ख, आप आपणा मेल मिलाया। आपणा करे आप सक्ख, आपे रिहा ताल भराया। आपणी जोती हो प्रतक्ख, आपणा दीपक आप जगाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पाया। साची वस्त हरि भगवान, विष्नूं झोली पांयदा। देवणहारा आपणा दान, आपणा भेव खुल्लांयदा। जोती जगे इक्क महान, एका एक डगमगांयदा। एका इष्ट इक्क ध्यान, एका लिव रखांयदा। एका अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर वखांयदा। एका देवणहारा माण, धुर फ़रमाना इक्क जणांयदा। एका होए निगहबान, एका हुक्म सुणांयदा। एका होए जाणी जाण, जानणहार इक्क हो जांयदा। एका एक करे पछान, एका दूजा भउ मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। विष्नूं सिख्या हरि भगवन्त, आपणी आप सिखाईआ। आदि जुगादी इक्क बेअन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मेरा रूप तेरा मंत, तेरा मेरा इक्क समाईआ। मेरी जोत जुगा जुगन्त, नूरो नूर करे रुशनाईआ । तूं नारी हउँ साचा कन्त, विष्नूं साचा वंस उपाईआ। तेरी चोली मेरा रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। ना कोई जीव ना जन्त, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। ना कोई नारी ना कोई कन्त, मात पित ना कोए अख्वाईआ। तेरी बणाए तेरा बणत, आप आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि घर पा, विष्नूं सीस झुकांयदा। अबिनाशी करता तूं बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी इक्क मलाह, एका एक अख्वांयदा। तूही पिता तूही माँ, बालक सुत्त तूं उपजांयदा। तूं ही

पकड़णहारा बांह, दूसर ओट ना कोए रखांयदा। तूं ही करें सच न्याँ, सच दुआर इक्क वखांयदा। तूं ही पकड़ें अन्तिम बाह, बिन तेरे कोए दिस ना आंयदा। तूं ही देवणहारा ठंडी छाँ, सिर हथ्थ समरथ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। पुरख अबिनाशी आपे बोल, आपणा हुक्म सुणाया। विष्नूं तेरा तोले तोल, साचा तोला आप रघुराया। आदि जुगादि ना जाए डोल, ना डोले ना किसे डुलाया। तेरा तेरे वसे कोल, विछड़ कदे ना जाया। मेरी जोत तेरी गोत तेरे अन्दर गई मौल, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। तेरे अन्दर धरया, आपणा अमृत कौल, तेरी नाभी दए झिराया। अबिनाशी करता आपणी देवे आपे पौहल, आप आपणा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं लेखा इक्क समझाया। विष्नूं अन्तिम कर निमस्कार, आपणा सीस झुकांयदा। तूं दाता बेऐब परवरदिगार, तेरा लेखा कोए ना आंयदा। कवण रूप वरते विच संसार, कवण रंग रंगांयदा। शब्द सुनेहड़ा इक्क निरँकार, आपणा आप घलांयदा। तेरे अन्दरों आए बाहर, नाभी मुख खुलांयदा। कँवल कँवला कर त्यार, तेरा बीज वखांयदा। तेरा फुल खिड़े गुलज़ार, एका मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं देवे साचा वर, एका मति समझांयदा। हरि हरि देवे साची मत, विष्नूं हरि समझाईआ। तेरी नाभी कमलापत, कँवल फुल सुहाईआ। आपणा रूप करे उत्पत, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा बीज बीजे आपणी रुत्त, रक्त बूंद ना कोए वखाईआ। ना कोई मेला दिसे तत्त, तत्व तत्त ना कोए जणाईआ। सर्ब कल आपे समरथ, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे देवे साची वथ्थ, आप आपणा खेल खिलाईआ। ब्रह्म रूप होए प्रगट, हरि साचे वड वड्याईआ। चारे मुख आपणे कट्ट, आपणा वखाईआ। शब्द नगारा लाए सट्ट, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म, आपणा रूप वटाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल रचाया। पवण स्वासी ना कोए दम, ना कोई रो रो नीर वहाया। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, आप आपणी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। विष्नूं मेला पारब्रह्म, पारब्रह्म वेख वखांयदा। घर साचे सुत्त गया जम्म, ब्रह्मा नाउँ रखांयदा। ब्रह्मा दित्ता एका तम, इक्क ध्यान लगांयदा। आपे घड़े आपे लए भन्न, शिव शंकर वेख वखांयदा। अन्ध अन्धेर चाढ़े चन्न, आकाश प्रकाश वखांयदा। त्रै त्रै नाता आपे बन्न, त्रै त्रै धीर धरांयदा। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, सच सिँघासण डेरा लांयदा। सेवक सेवा लाए रवि ससि सूरज चन्न, आप आपणी किरत कमांयदा। विष्नूं तेरा रूप तेरा तन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि इक्क सुभांयदा। आदिन अन्ता

हरि भगवाना, हरी हरि रूप वटाया। शब्द शब्दी बन्ने गाना, साचा सगण मनाया। निरगुण वेखे मार ध्याना, पंज तत्त ना कोए वसाया। थिर घर वस्सया इक्क मकाना, सचखण्ड दुआरा इक्क जणाया। आपे जोद्धा मर्द मरदाना, ना मरे ना जाया। आपे वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे आप रखाया। आपे दाता गुण निधाना, दीनां बंधप आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि देवे वर, लेखा लेख ना कोए लिखाया। देवणहारा आदी वर, ब्रह्माद वज्जी वधाईआ। विष्नूं मेला नारी नर, नर नरायण वेख वखाईआ। आपणी कारी आपे कर, करनी करता खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि इक्क अख्वाईआ। आदि हरि आदि नर, आदि गुर अवतारया। आदि भण्डारा शब्द जैकारा इक्क दुआरा देवे भर, आदि आदि आप वरता रिहा। आदि पसारा हरि निरँकारा जोत उज्यारा, निरगुण आप करा रिहा। आदि प्यारा विष्नूं दुलारा, ब्रह्मा सति प्यारा, शंकर वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादि एका एक दरसा रिहा। आदि जणाया आदि जणाई, आदि पुरख आदेसया। आदि सगन आदि कुड़माई, आदि मेला विष्न महेषया। आदि घर वज्जी वधाई, आदि निरँजण आपे वेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा लेखया। विष्नूं वंसी हरि उपा, आपणा बिरध जणाया। चार चार तेरे अंग रला, तेरा संग रखाया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म धरा, त्रैगुण झोली पाया। रजो सतो तमो मेल मिला, सति सरूप वटाया। पंचम जोड़ा दए जुड़ा, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाया। शब्दी घोड़ा दए दौड़ा, निरगुण सरगुण विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी बणत बणाया। लक्ख चुरासी मात रक्ख, देवे वड वड्याईआ। चारे वेदां कर प्रतक्ख, चारे जुग करे कुड़माईआ। भेव ना पाए अलक्खणा अलक्ख, अलख निरँजण वड वड्याईआ। आपे भाण्डे भरे आपे करे सक्ख, साख्यात आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी किरपा आपे कर, आपे रचन रचाईआ। विष्नूं वंस सुण शब्द अनादी, एक बचन अलाया। तेरा खेल आदि जुगादी, तूं करता करन आया, धुर दी बाण धुर दी वादी, ना कोई मेटे मेट मिटाया। तूं ही रक्खणहारा लाजी, तेरा तेरी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा कौल आपे रिहा कराया। विष्नूं कौल कौल हरि हरि करया, आपणा बचन सुणाईआ। तेरा तेरा लए वरया, तेरी वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चुक्के डरया, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। रामा कृष्ना घाड़न घड़या, पंज तत्त डेरा लाईआ। पंज तत्त विकारा आपे लड़या, सन्तां भगतां लए जणाईआ। गुरमुख साजण साचे फड़या, जिस जन अन्तर बिरहों लाईआ। महल्ल अटल उच्चे आपे चढ़या, बैठा डेरा लाईआ। ना कोई सीस

ना कोई धड़या, ना कोए आकार जणाईआ। आदि जुगादि कदे ना सड़या, ना मरे ना जाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर वड़या, घट घट बैठा अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग उतरे पार किनारा, हरि साचा आप करांयदा। धरनी धवल दए सहारा, साचा मार्ग लांयदा। त्रेता तेरा रूप अपारा, राम राम रूप हो जांयदा। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, गढ़ हँकारी आप मिटांयदा। भगत भगवन्त इक्क प्यारा, एका मार्ग लांयदा। एका शब्द इक्क जैकारा, एका दर सुहांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, जुग जुग कार कमांयदा। वेद व्यासा सेवादारा, प्राणी प्राण जणांयदा। इक्क अठारां कर प्यारा, चार लक्ख हज़ार सतारां, बारा अक्षर कर कर वक्ख इक्क सलोक बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग आपणा नाम धरा, आपणी कल वरताईआ। कान्हा कृष्ना रूप वटा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। मोर मुकट सीस टिका, साची सखीआं मंगल गाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगा, दूती दुष्ट मुकाईआ। रथ रथवाही रथ चला, द्वापर बेड़ा बन्ने लाईआ। कलिजुग कूड़े चढ़या चा, लोकमात करे रुशनाईआ। कूड़ा डंक दए वजा, सुणे सर्ब लोकाईआ। राज राजानां दए भुला, माया ममता मोह वधाईआ। काम क्रोध संग रला, हउमे हँगता करी कुड़माईआ। जूठ झूठ लई प्रना, दूई द्वैती नारी आप प्रनाईआ। गुरमति कुआरी कन्या मारे धा, मिले मेल ना साचे माहीआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आप आपणी खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी आप उपा, आपे वेख वखाईआ। आप आपणा मन्त्र नाम दृढ़ा, इष्ट देव आप अख्वाईआ। वरन गोत आप जणा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। वासना खोटी आप भरा, मनमति करे हल्काईआ। तन लंगोटी धीरज जत दए तुड़ा, कोटी कोटि रिहा फिराईआ। बोटी बोटी दए तुड़ा, पंज तत्त ना कोए सहाईआ। साची चोटी ना देवे कोई चढ़ा, बिन हरि नामे ना कोए थाँईंआ। बेऐब ख़ुदाई आप ख़ुदा, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। आपणा नाअरा आपे ला, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। लाशरीक सगन मना, साची सिख्या आपणी आप जणाईआ। चौदां लोकां फेरा पा, चौदां तबक सुहाईआ। लोकमात डेरा ला, ईसा मूसा करे कुड़माईआ। उच्च मुनारे मृदंग दए वजा, सच महिराबी बांग सुणाईआ। एका नाअरा दए ला, लाशरीक वड्डी वड्याईआ। मुकामे हक्क रिहा सुहा, साची सदा इक्क अलाईआ। ऐनलहक्क मेल मिला, साची शरअ शरीअत विच टिकाईआ। काया काअबा आप जणा, दो दो आबा मेल मिलाईआ। हक्क जनाबा डेरा ला, बैठा बेपरवाहीआ। नूर अलाही नाम धरा, आपणा रूप वटाईआ। अल्ला राणी संग रला, लोकमात करे रुशनाईआ। विष्न चढ़या साचा चा, घर साचे सगन मनाईआ। मेरा कन्त ना दूसर सके हंढा, ना साची सेज हंढाईआ। कलिजुग तेरा नाता अल्ला राणी रही

जुड़ा, घर सद मंगण आवे कर कर धाईआ। अबिनाशी करता आपणा पल्लू ना रिहा फड़ा, अछल अछल वड्डी वड्याईआ। दे दे लारा हरि निरँकारा लोकमात ल्याया व्याह, जगत सिँघासण दए वखाईआ। मुहम्मद अद्ध विच बैठा तक्के राह, चार यारी मता पकाईआ। दोहां नाता जगत जहां, दो जहानां ना पार कराईआ। कलिजुग तेरी पकड़ी तेरी बांह, तेरा संग निभाईआ। विष्नूं कन्त हरि भगवन्त अन्तिम करे आप न्याँ, खेले खेल बेपरवाहीआ। चौदां तबकां चौदां सदीआं वंड वंडा, चौदां चौदां करे रुशनाईआ। नबी रसूल पीर पैगम्बर औलीआ आप अख्वा, मुल्लां शेख़ मुसायक आप हो जाईआ। कलमा अमाम कायनात आप पढ़ा, साचा सजदा इक्क वखाईआ। आपणा वुज़ू आपे दए करा, आपणा लिंग आपे दए कटा, शिव शंकर कालख टिक्का लाईआ। जनक सपुत्री सीता सुरती आपे लए प्रना, हरि दाता बेपरवाहीआ। दर घर साचे सगन मना, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। आदि निरँजण पुरख अबिनाशी आपणा खेल आप खिला, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वेखे दर, दर दर फेरा पाईआ। अल्ला राणी कर प्यार, हरि साचे रंग चढ़ाया। खेले खेल आप निरँकार, आदि जुगादी वेस वटाया। वरते वरतावे विच संसार, दिस किसे ना आया। आपे जाणे आर पार किनार, मँझधार आप रुढ़ाया। संग मुहम्मद चार यार, एका संग रखाया। चारों कुन्ट हाहाकार, जीव जन्त रहे कुरलाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आप आपणी बणत बणाया। निरगुण जोती कर उज्यार, नानक विच वसाया। पंचम तत्त तत्त कर प्यार, तत्तो तत्त समाया। कन्त भतारी एका नार, एका सेज हंढाया। शब्द सुनेहड़ा मीत मुरार, पुरख अगम्मा आप घलाया। इक्क सुहाए दर दुआर, बंक दुआरी नाउँ रखाया। निरगुण सरगुण इक्क प्यार, सरगुण निरगुण विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा सृष्ट सबाई भरम भुलेखा भरम गढ़ ना कोए तुड़ाया। नानक शब्द हरि जणाई, निरगुण नूर नुरानया। सचखण्ड मेला सहिज सुभाई, मिले मेल श्री भगवानया। दर घर आया चाँईं चाँईं, पाया पुरख सुल्तानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस दर दरबानया। आया दर नानक गुर, गुर करते खेल रचाया। मिल्या मेल लिख्या धुर, धुरदरगाही वेख वखाया। हरि चरन प्रीती गई जुड़, ना कोई तोड़ तुड़ाया। वर पाया जेहा लोड़, घर मन्दिर अन्दर इक्क सुहाया। पुरख अबिनाशी सतिगुर पूरा गया बौहड़, सच्चा सतिगुर आप हो जाया। दो जहानां लाए एका पौड़, एक गढ़ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, एका शब्द सुणाया। साचा शब्द नाम सति, हरि नानक झोली पाया। पारब्रह्म ब्रह्म एका मति, एका पति रखाया। एका बीज एका वत, एका हल चलाया। एका धीरज एका सति, एका हठ रखाया। एका

चरन कमल बंधे नत, नाता बिधाता इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण बाती निरगुण दीवा निरगुण मेला कमलापति, निरगुण उच्चा निरगुण नीवां निरगुण वस्सया साढे तिन्न हथ्थ सीवां निरगुण भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला साचे घर, घर साचे मेल मिलाया। जोत अकाली शब्द भण्डारन, सच भण्डार वरताया। नानक मेला इक्क दुआरन, थिर घर साचा इक्क रखाया। मिल्या मेल पुरख करतारन, एका मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा रूप दरसाया। साचा रूप अबिनाशी करता, आपणा आप दरसांयदा। नानक सतिगुर आपे धरदा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपणी करनी आपे करदा, ना कोई दूसर संग वखांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज लक्ख चुरासी कोलों किसे ना डरदा, ना कोई भय रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ साचा पड़दा, आपणा आप उठांयदा। नानक गुर हरि हरि मन्दिर आपे वड़दा, आपे बाहर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आप अख्वांयदा। सतिगुर नानक दर घर पा, लोकमात करे धाईआ। अग्गे विष्नूं बैठा राह रिहा तका, नेत्र नैण उठाईआ। गुर नानक वेख्या इक्क मलाह, लोकमात बेड़ा बन्ने लाईआ। पुच्छण लग्गा सच सलाह, कवण पिता कवण माईआ। गुर नानक बोल रिहा जणा, अकाल पुरख एका पिता एका माँ, भैण भाई साक सैण इक्क अख्वाईआ। एकउँकारा हरि निरँकारा फड़नहारा साची बांह, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। विष्नूं मंगे सच न्याँ दोवें पए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचे घर, घर बैठा आसण लाईआ। नानक सतिगुर शब्द सुणाया, मिल्या मेल निरँकार। नाम भण्डारा इक्क ल्याया, वरते विच संसार। साचे दर दर्शन पाया, विसरया संसार। एका रूप नज़री आया, पारब्रह्म सच्ची सरकार। एका नैण वेख वखाया, दोए लोचण बन्द किवाड़। एका धुन अनादी गाया, रसना जेहवा ना कोए हलार। ब्रह्मा वेद दिस ना आया, चार मुख ना कोए उचार। बोध अगाधी हरि रघुराया, शब्द अगम्मी बोले इक्क जैकार। हरि का शब्द लिखण पढ़न विच ना आया, लोकमात ना कोई विसथार। आपणी महिमा आप जणाया, जिस जन किरपा करे आप करतार। नानक गोला दर घर वेखण आया, थिर घर बैठा शाह सुल्तान। साचा ढोला एका गाया, मेरा तेरा रूप श्री भगवान। सति पुरख निरँजण बोल सुणाया, एकउँकारा कर प्रनाम। सति नाम मन्त्र दृढ़ाया, पाया धुर हरि धाम। पुरख अबिनाशी चरन चरनोदक इक्क प्याया, मिल्या अमृत जाम। एका दूजा भेव मिटाया, घर साचे मिल्या बिसराम। एका राम नज़री आया, ना कोई दूसर दिसे काहन। कोटि मुहम्मद रहे सीस झुकाया, कोटन गोपीआं करन वख्यान। कोटन कोटि सीता रहे प्रनाया, कोटन ला ला थक्के ध्यान। नानक सतिगुर एका पाया, जोती

नूर जगे महान। विष्नूं तेरा दर वेखण आया, तूं जीआं दाता देवे दान। हरि का रिज़क तेरे भण्डारे आप भराया, तेरा भरया इक्क मकान। तेरे अन्दर साचे मन्दिर पुरख अबिनाशी मेला अमृत कँवल रखाया, ब्रह्मा उत्पत होया नौजवान। चार वेदां चारे मुख सलाहया, हरि का भेव कोए ना पायण। नानक हरि घर साचा एका पाया, मेल मिल्या गुण निधान। दीवा बाती ना कोई जगाया, ना किसे बाढी दित्ता निशान। संग सवाणी ना कोई रखाया, ना कोई कन्या दिसे नौजवान। माँ पुत्तर ना कोई उपाया, धी जवाई ना बंधन बंधाया, सौहरे पेईए एका रंग समाया, सो मिल्या हरि भगवान। नानक ग़रीब दर मंगण आया, किरपा करे हरि मेहरवान। सच भण्डारा इक्क भराया, तोट ना आए दो जहान। एका शब्द हरि सुणाया, एका ब्रह्म ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया जाणी जाण। शब्द धार सच सुनेहड़ा, हरि साचा आप सुणांयदा। कट्टणहारा जम का जेड़ा, लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा। वसणहारा काया खेड़ा, पंज तत्त डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। मिटावणहारा जगत झेड़ा, आदि निरँजण जोत निरँजण मेल मिलांयदा। सतिगुर नानक बन्नृणहारा बेड़ा, चप्पू नाम रखांयदा। लहिणा देणा चुक्के मेरा तेरा, सोहँ रूप आप हो जांयदा। सो पुरख निरँजण वड वडेरा, भेव कोए ना पांयदा। हँ ब्रह्म करे निबेड़ा, पंज तत्त समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ शब्द आप हो जांयदा। सोहँ शब्द सोहँ ढोला, सो पुरख निरँजण गाया। एका अक्खर एका बोला, नानक रसन सलाहया। विष्नूं मंगे साचा तोला, नानक अग्गे सीस झुकाया। कवण चुक्के लक्ख चुरासी डोला, कवण भार उठाया। मार मार थक्का नाथ भोला, भोला नाथ रिहा कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, नानक चोला आप बदलाया। नानक सतिगुर शब्द सुणाए, विष्नूं विष्नूं आदि आदि तेरा रूप धराए, तेरा रंग रंगाया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, आप आपणी कल वरताया। शब्द विचोला इक्क बणाए, दूसर गुर दिस ना आया। नानक लोकमात आप धराए, साचा मार्ग दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर घर साचा आप जणाया। नानक विष्नूं दए दिलासा, एका एक सुणाईआ। हरि चरन हरि भरवासा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आए तमाशा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरी जोत दिसे दस जामे काया कासा, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। पंज तत्त मनारे पाए रासा, अंगद अंग लगाईआ। अमर दास कराए निवासा, राम दास मेल सहिज सुखदाईआ। अर्जन जोत करे प्रकाशा, हरि शब्दी शब्द वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सन्त भगत कन्त भगवन्त एका धाम बहाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, एका गुर सुणांयदा। एका दर इक्क

दरबारा, एका वेख वखांयदा। एका भगत इक्क भण्डारा, एका भगती इक्क वरतांयदा। एका शक्ती हो उज्यारा, आदि शक्ति आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मीर पीर शाह हकीर दर दरवेश वेस वटांयदा। हरिराए हरि गुण गा, हरिकृष्न वड वड्याआ। तेग़ बहादर तेग़ चला, धर्म खण्डा हथ्थ उठाया। अड्डां तत्तां वंड वंडा, ब्रह्मण्ड फोल फोलाया। ब्रह्मा विष्न शिव मंगल रहे गा, करोड़ तेतीसा फूलन बरखा लाया। गण गंधर्ब सोभा रहे पा, किन्नर यच्छप सुर ताल रहे वजाया। साचा दर आप सुहा, दर दुआरा इक्क सलाहया। आपणी भेटा आप चढ़ा, खेवट खेटा बण के आया। पुरख अबिनाशी बेटा आप बणा, गुर गोबिन्द नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सूरबीर आप अख्वाया। गुर गोबिन्द सूरा बलकार, हरि साचा सुत उपजांयदा। आपणी किरपा आपे धार, आपणे रंग रंगांयदा। आपे बख्शे चरन प्यार, आपे मेल मिलांयदा। आपे देवे शब्द जैकार, आपे नाअरा लांयदा। आपे बन्न्हे सीस दस्तार, कल्गी तोड़ा आप सुहांयदा। आपे पंचम पंचम हो उज्यार, आपे पंचम वेख वखांयदा। आपे निरगुण सरगुण इक्क विचार, एका रूप अख्वांयदा। आपे शब्द शस्त्र खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। आपे हवन पवन पावे सार, धूप दीप सोगंध आप हो जांयदा। आपे आदि शक्ति मीत मुरार, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचा इक्क सुहांयदा। साचा सुत्त हरि गोबिन्द, पुरख अकाल उपाया। आपणी उपाई आप बिन्द, आप आपणा नाम धराया। आप मिटाए आपणी चिन्द, चिन्ता सोग ना कोए जणाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाया। अमृत वरोले सागर सिन्ध, सच सरोवर फोल फोलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा साचा वर, जुगा जुगन्तर वेस वटाया। जुगा जुगन्तर करनेहारा, करनी करता कर्म कमांयदा। गुर गोबिन्द कर उज्यारा, सतिगुर रूप वटांयदा। अमृत देवे दर भण्डारा, एका घर सुहांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, साचे हथ्थ फड़ांयदा। वेखे परखे सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। लहिणा देण चुकाए मीत मुरारा, सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े वेख वखांयदा। पंजां बोले इक्क जैकारा, एका नाअरा लांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप अख्वांयदा। आप सुहाए एका सच दुआरा, गढ़ु केस वेख वखांयदा। चण्डी चमके दो दो धारा, भय भयानक नज़री आंयदा। दोए लोचण वेख उग्घाड़ा, जगत नैण तड़फांयदा। गुरसिखां मेला अन्दरे अन्दर करे प्यारा, दया निध दया दया आप कमांयदा। आया दर बण भिखारा, मंगे भेटा खेवट खेटा अकाल पुरख दा इक्को बेटा, एका खेल खिलांयदा। उपज्या सुत्त एका जेठा, साची रुत्त सुहांयदा। आपणे शब्द आप लपेटा, आपणी धार

४६६ ०८

चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला एका घर, काया घर इक्क वखांयदा। खिच कटार शब्द जैकारा, गोबिन्द रसन अलांयदा। गुरमुखां वेखण आया जगत किनारा, वञ्झ मुहाणा इक्क रलांयदा। जगत मलाह दए सहारा, साचा हुक्म सुणांयदा। आओ दर लओ वर जिन लँघणा पारा, सीस भेट चढ़ांयदा। पंजां बख्शे चरन प्यारा, अन्तर मन्त्र इक्क आधारा, एका रूप दरसांयदा। आए दर वारो वारा, आपणा खण्डा आपे वांयदा। रंगे रंग लाल गुलाला, दीन दयाल गुरसिख नेड़ ना आए काल महांकाल तोड़े जगत जंजाल, आप आपणा खेल खिलांयदा। ना कोई फट ना कोई कट्ट जो जन विकया सतिगुर हट्ट, गुर का खण्डा विच ब्रह्मण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज चारे खाणी जगत राणी लक्ख चुरासी आप तरांयदा। पंच प्यारे पाई वंडा, ना कोई बकरा वक्खरा आप झटकांयदा। मनमुख जीव करन पखण्डा, गुर गोबिन्द तेरा भेव कोई ना पांयदा। बिन तेरे कोई ना जाणे सरसा कन्ढा, पुरी अनन्द ना कोए तजांयदा। सृष्ट सबाई जीव जहान फिरे रंडा, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। जिस तन छुहाया तेरा खण्डा, जीवण मुक्त करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। पंच प्यारे पंच प्यार, पंचम मोह जुड़ाया। सतिगुर पूरा हो त्यार, बस्त्र शस्त्र तन सजाया। कल्गी तोड़ा सोहे सीस दस्तार, जोती शब्दी जोड़ा जोड़ जुड़ाया। नीले घोड़े नीले वाला हो अस्वार, नीली छत्तों पार कराया। पहला पौड़ा रखाया विच संसार, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाया। ब्रह्मा विष्न शिव रहे पुकार, रो रो देण दुहाया। सतिगुर पूरा दए हुलार, साचा शब्द अलाया। लेखा चुकाए अन्तिम वार, लोकमात रहिण ना पाया। हउँ सेवक आया सेवादार, सेवा रिहा कमाया। चार वरनां बणाए इक्क प्यार, सुहाए दुआर, ऊँच नीच मेट मिटाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका सोहण सच दुआर, साचा घर इक्क सुहाया। राज राजानां शाह सुल्तानां करौण ख्वार, ग़रीब निमाणे गले लगाया। कलिजुग जड़ दए उखाड़, आपणी रिते कर कर हित कलिजुग नीआं हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। विष्नूं कहे शब्द अला, गोबिन्द सुण जैकारा। तेरा रूप जगत मलाह, मेरा नाम सहारा। दोहां दाता बेपरवाह, आदि अन्त एकउँकारा। जुग जुग जपाए आपणा नाँ, आप आपणा लए अवतारा। जन भगतां देवे ठंडी छाँ, मनमुखां करे पार किनारा। कलिजुग अन्तिम करे कौण न्याँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा सच घर, खेले खेल अगम्म अपारा। गोबिन्द विष्नूं रिहा जणा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। कोटन कोटि विष्नूं लए उपा, कोटन कोटि आपणे विच समाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा लए धरा, कोटन कोटि मनवन्तर सेवा लाईआ। कोटन कोटि शिव सेवा रहे कमा, आदि जुगादि सीस झुकाईआ। कोटन

कोटि करोड़ तेतीसा रहे कुरला, सुरपति राजे इन्द बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि गणपति गणेश रहे मना, कोटन कोटि बाशक तशक सेज वछाईआ। कोटन कोटि लछमी बैठी वेस वटाईआ। कोटन कोटि वेद लेखा रहे लिखा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। हरि का भेव ना सके कोई पा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप अख्वाईआ। मेरा रक्खया हरि जी आपे नाँ, गोबिन्द रूप वटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस वटाईआ। अबिनाशी करते सेवा दित्ती ला, लोकमात वज्जे वधाईआ। एका अमृत जाम हत्थ दए फड़ा, चार वरनां दिआं वरताईआ। एका अक्खर विद्या दिआं पढ़ा, नानक गुरमति इक्क समझाईआ। एका पौड़े दिआं चढ़ा, उच्चा पौड़ा इक्क वखाईआ। वेद व्यासा गया समझा, पुराण अठारां कर जणाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत जावे आ, आप सिँघासण आसण लाईआ। गुर गोबिन्द बणया सच गवाह, विष्नूं रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे दाता बेपरवाह, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम दए सुहा, साढे तिन्न हत्थ रचन रचाईआ। मेरा संग दए निभा, लग्गी तोड़ चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि रक्खी वड्याईआ। विष्नूं सुण करे पुकार, एका नाअरा लाया। चौथा युग उतरे पार, कलिजुग वेस वटाया। कवण रूप होए करतार, कवण खेल खिलाया। कवण वरते वरतावे विच संसार, कवण मेल मिलाया। कवण सोहे बंक दुआर, कवण घर जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाया। गोबिन्द भेव गया खुल्ह, हरि साचे आप खुल्हाया। विष्नूं तेरा अन्तिम पावे मुल्ल, करता कीमत दए चुकाया। नानक तोले तेरां तोल, मोदीख़ाना इक्क वखाया। त्रैगुण माया करे घोल, पंज तत्त झेड़ा लाया। जूठ झूठ वजाए ढोल, मन मति फेरा पाया। गुरुआं पीरां सिक्खां सिदक टुट्टे कौल, शाह सुल्तान ना संग जणाया। पंडत पांधे भुलण रौल, मथ्थो टेक ना कोए सहाया। मेरी छके ना कोई खण्डे पौहल, जगत खण्डा विच फिराया। सुत्ती रहे गुरमति अनभोल, मनमति दए दुहाया। पुत्तर मावां सेज रहे फोल, पिता पुत्तर धीआ ना कोए जणाया। भैणा भईया ना रहे कोल, बैठे मुख भवाया। सच दुआरा ना वेखे कोई खोल्ह, गुरदर मन्दिर मस्जिद वेसवा घर बनाया। गुर अर्जन नाम दए नाम हट्ट देण तोल तोल, कलिजुग भण्डार खुल्हाया। शिव शक्ती ना दिसे कला सोल, राम कृष्न गए भुलाया। अल्ला राणी ना अल्ला रिहा मौल, मौला रूप ना कोए जणाया। चार यारी वजाए ढोल, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार आप हो जाया। विष्नूं रक्ख साची धीर, गुर गोबिन्द जणाईआ। अन्तिम प्रगट होए वड पीरन पीर, तेरी पीड़ दए कढाईआ। कूड़ी क्रिया चोटी चढ़ अख़ीर, साध सन्त ना सकण लाहीआ। तन पाटे कलिजुग झूठे चीर, नाम

बस्त्र ना कोए पहनाईआ। गुरसिख ना पीए कोई अमृत सीर, अमृत जाम ना कोई वखाईआ। गंगा ना दिसे साचा नीर, जमना सुरस्ती मारे धाईआ। गोदावरी हड्डी टुट्टे रीढ़, गुर गोबिन्द भार रखाईआ। कलिजुग अन्तिम ना कट्टे कोई भीड़, पीर दस्तगीर ना कोए सहाईआ। ब्रह्मा नेत्र अट्ठे रोवे नीर, जल जल धारा आप हो जाईआ। शिव शंकर बाशक तशक सुट्टे ज़ंजीर, हथ्थ त्रिसूल ना कोए उठाईआ। ना कोए सहाई ख़वाजा ख़िजर पीर, इन्द इन्द्रासन बैठा आप तजाईआ। चिट्टे उप्पर ना कोए खिच्चे लकीर, काली धार ना कोए मिटाईआ। प्रभ प्रगट होवे शाह सुल्तानां सुल्तान हकीरां हकीर, पंजां पंजां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। विष्नूं उठया उठ बल धार, आपणी लै अंगड़ाईआ। गुर गोबिन्द दस्स सच दुआर, कवण दुआर आवे जावे फेरा पाईआ। कवण रूप वरते विच संसार, कवण कूट करे रुशनाईआ। कवण नारी वासा कन्त भतार, कवण सगन मनाईआ। कवण लाड़ा दूल्हा चढ़ चिट्टे अस्व हो अस्वार, शाह अस्वार कवण अख्वाईआ। कवण लोआं पुरीआं आए लताड़, कवण रवि ससि चरना हेठ झसाईआ। कवण धरनी लाए अखाड़, कवण धरत दए वड्याईआ। कवण घाड़न घड़े घाड़, कवण भन्न वखाईआ। कवण अग्नी हवन देवे साड़, कवण मेल आपणे विच मिलाईआ। कवण जोत करे प्रकाश बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द देवे साचा वर, साची भिच्छया आपे पाईआ। गोबिन्द भेव अभेदा खोल्हा, हरि हरि शब्द सुणाया। कलिजुग अन्तिम पए रौला, घर घर गुरु वखाया। सच वस्त ना किसे कोला, जगत ज्ञान दृढ़ाया। पढ़ पढ़ पुस्तक मारन ढोला, ढोलक छैणे रहे वजाया। मिल्या नाम ना नाम अनमोला, अमोलक हीरा हथ्थ ना आया। नानक सतिगुर ना वस्सया कोला, गा गा रसना होई हल्काया। पंज तत्त ना बदलया चोला, काया चोली ना कोए रंगाया। अन्तिम जीआं जन्तां साधां सन्तां कढ्ढण आवे पोला, निहकलंका नाउँ रखाया। ना कोई पर्दा ना कोई ओहला, गुर गोबिन्द शब्द सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा चोज वरताया। विष्नूं वंसी चढ़या चा, घर साचे वज्जी वधाईआ। गोशब्द तेरी सच सलाह, मेरे अन्तर भाईआ। मेरा मेरी पकड़े बांह, कीता कौल निभाईआ। तेरी नगरी मेरा ग्रां, तेरा पिता मेरी माँ, तेरा सहारा पकड़े बांह, दो जहानां करे न्याँ, अगम्म अथाह आप अख्वाईआ। जोती जोत कर रुशना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं मेला आपणे दर, दर दरवेशा आप कराईआ। गुर गोबिन्द शब्द अनादी, एका एक सुणाया। आपे होए मोहण माधव माधी, आदि जुगादी वेस वटाया। दिवस रैण जो रहे आराधी, हरिजन साचे लए तराया। जुग जुग विछड़े कलिजुग अन्तिम फड़ फड़ बांहों बाहर

लए काढी, मेल मिलाए जो सरसे गया रुढ़ाया। लेखा चुकाए अड्डो आडी, लहिणा देणा रहिण ना पाया। लक्ख चुरासी बणे गाडी, बचया कोए रहिण ना पाया। गुरमुखां लडाए आप लाडी, आप आपणा दर सुहाया। मेरा संग ना जाए छाडी, सगला संग रखाया। मेरा रूप ना दिसे पंज तत्त नाड़ रक्त बूंद हाडी, शब्दी नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम इक्क सुहाया। साचा धाम नगर सम्बल वासा, हरि हरि आप करावणा। जगत मलाह दए धरवासा, तेरा बेड़ा बन्ने लावणा। एका इक्की पूरी करे आसा, आस निरास ना कोए रखावणा। आपे शब्द रसन स्वासा, जेहवा जाप आप जपावणा। आपे वसे काया कासा, कंचन गढ़ आप सुहावणा। आपे वेखण आए तमासा, आपे जगत नाच नचावणा। आपे मण्डल मण्डप पावे रासा, गोपी काहन आप अख्वावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पावणा। विष्नूं नेत्र आपणा खोल्, आपणा घर पछानया। पूरा करनहारा कौल, आदि जुगादि श्री भगवानया। तोलणहारा पूरा तोल, तोले तोल दो जहानया। शब्द अनादी पुरख अगम्मा आपे बोल, आप चलाए आपणी बाणीआं। आपणा भण्डारा आपे खोल्, आपे मेल मिलाए हाणी हाणीआं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
४७३ कलिजुग वेखे अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया इक्क निशानीआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग वेख, हरि हरि भेख वटांयदा। आपे लिखणहारा ४७३
लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे दाता दानी दस दस्मेस, नानक जोती आप टिकांयदा। आपे आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहे हमेश, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता आप अख्वांयदा। आपे जोती नूर दए महेष गणेश, अष्टभुज आप उपजांयदा। आपे होए धारी केस, मूंड मुंडाया आप अख्वांयदा। आपे नर आप नरेश, दर भिखारी फेरा आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे दर, जगत मलाह आप हो जांयदा। जगत मलाह तारे सिक्खी, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आपणी रेख आपे लिखी, आपे दए मिटाईआ। आपे रक्खी धार तिक्खी, वालों निक्की आप जणाईआ। आपणे नेत्र आपे पेखी, दिस किसे ना आईआ। निहकलंक धरया भेखी, गोबिन्द संग रलाईआ। सम्बल नगरी इक्क आदेसी, विष्नूं वंड वंडाईआ। लोकमात पंचम जेठी, साची रुत्त सुहाईआ। आदि निरँजण खेले खेल बहु बहु भेखी, भेखा धारी भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, कलिजुग अन्तिम करे कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम जुड़या जोड़ा, हरि साचे जोड़ जुड़ाया। शब्द अगम्मी एका घोड़ा, गुर गोबिन्द आप चढ़ाया। नाम लगाया साचा तोड़ा, दिस किसे ना आया। गुरमुखां आत्म अन्दर आपे बौहड़ा, आपणा भेव खुल्राया। धुर दरगाहों आया दौड़ा, लोकमात वेख वखाया। दो जहानां पन्ध ना कोई जाणे लम्मां चौड़ा, डग पग ना कोए जणाया। गुर

गोबिन्द अमृत आत्म जाम दए प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिक्खी ल्ए उपाया। साची सिक्खी कर त्यार, चार वरन करे कुड़माईआ। पंज तत्त छड्डुया आप प्यार, काया चोला दए तजाईआ। सरगुण मिल्या निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण रूप आप निरँकार, निरवैर इक्क अख्वाईआ। जूनी रहित वरते वरतावे विच संसार, आप आपणी कल वखाईआ। निहकलंका वेस दातार, आप आपणा रूप वटाईआ। शब्द डंका अपर अपार, एका रिहा खड़काईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। शाह सुल्ताना दए हुलार, साधां सन्तां आप उठाईआ। अञ्जील कुरानां रिहा विचार, बाईबल भेव ना राईआ। वेद पुराणां दए अधार, शास्त्र सिमरत फोल फोलाईआ। अल्ला राणी पाए सार, साची राणी मेल मिलाईआ। जाणी जाण आप करतार, पद निरबाणी इक्क वखाईआ। शब्द निशानी धुर दरबार, लोकमात इक्क उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका सिक्खी रिहा बणाईआ। साची सिक्खी हरि हरि नाता, हरि सज्जण आप कराया। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, ना कोई वरन बरन रखाया। ना कोई पिता ना कोई माता, बाल अञ्याणा ना कोई उपजाया। पुरख अकाल गुर इक्क पछाता, ना मरे ना जाया। जुगा जुगन्तर गुरुआं पीरां साधां सन्तां देवणहारा आपणी दाता, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। सोहँ सुणाए साची गाथा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका कलमा रिहा पढ़ाया। मेल मिलाए त्रिलोकी नाथा, राम रूप नज़री आया। इक्क जणाए पूजा पाठा, इष्ट देव इक्क अख्वाया। एका सर सरोवर मारे ठाठा, अठसठ तीर्थ रहिण ना पाया। कलिजुग तेरी गेड़े उलटी लट्ठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुखां पूरन करन आया घाटा, पिछला लहिणा दए चुकाया। अमृत प्याया एका बाटा, चरन चरनोदक इक्क वखाया। गुरसिख सवाया एका साची खाटा, सचखण्ड दुआरा इक्क आप बणाया। दीपक जोत जगे ललाटा, नानक गोबिन्द दर्शन पाया। राम नाम ना विके किसे हाटा, कान्हा कृष्ना मुल ना किसे रखाया। मन मति नार दुहागण चारों कुन्ट दहि दिशा मीढी खोह खोह खोहया झाटा, ख़ाकी ख़ाक रही उडाया। कलिजुग तेरी नेड़े आई वाटा, कलिजुग भुल्ले जीव माया रुले आत्म ब्रह्म ज्ञान ना कोई दृढ़ाया। गुरसिखां लहिणा देण चुकाए आन बाटा, मात गर्भ फेर ना आया। तन नगारे मारे एका साटा, अनहद ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। गुरसिख तेरा बजर कपाटी पर्दा पाटा, निरगुण रूप शब्दी धार लोकमात नज़री आया। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। त्रैगुण माया तप्या भट्ठा, पंज तत्त लम्बू रिहा लाया। जूठी झूठी कलिजुग सथरी कर रिहा इक्ट्ठा, सम्मत सोलां रिहा जणाया। किसे ना पूज पूजस सिल वटा, गल पाहन लिंग

ना कोए लटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा नाउँ रखाया। निहकलंक रक्खया नाउँ, हरि सतिगुर वड वड्याईआ । गुर गोबिन्द वस्सया नगर ग्राउँ, सम्बल खेड़ा इक्क वसाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा पकड़या बांहों, उच्चे टिल्ले पर्बत बजर कपाटी सिला पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सस्सा किला रिहा बणाईआ। ऊड़ा उँकार, एकउँकारा रूप वटाया। ऐड़ा अक्ख इक्क उग्घाड़, एका दृष्ट खुल्हाया। ईड़ी इष्ट इक्क अपार, नौ खण्ड पृथ्मी दए जणाया। सस्सा किला कर त्यार, चारों कुन्ट घेरा पाया। उप्पर होड़ा कीता ख़बरदार, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। गोबिन्द तेरा तोड़ा सीस दस्तार, साचा होड़ा वेस वटाया। हाहा हरी हरि हो उज्यार, लोकमात वेस वटाया। उत्ते टिप्पी लाई कर प्यार, नारी कन्ता रूप वटाया। सोहँ शब्द बन्न्ही धार, हँ ब्रह्म आप हो जाया। सो पुरख निरँजण एकउँकार, कलिजुग अन्तिम आप आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, जुग जुग साचा वेस वटाया। हरिजन तेरा साचा लहिणा, हरि सतिगुर आप चुकांयदा। तन बस्त्र पाए नाम गहिणा, सोलां श्रृंगार वखांयदा। एका धार कज्जल नैणा, नेत्र नैण इक्क वखांयदा। साची सेजा एका बहिणा, धर्म दुआरा इक्क सुहांयदा। नाता तुटे मात पित भाई भैणा साक सज्जण सैणा, गुर चरन ध्यान इक्क रखांयदा। नेड़ ना आए लाड़ी मौत डैणा, धर्म राए मुख शरमांयदा। चित्रगुप्त अग्गे हो हिसाब किसे ना कहिणा, ब्रह्मा विष्न शिव गुरसिख निउँ निउँ सीस झुकांयदा। दरगाह साची धाम अव्वले सचखण्ड दुआरे एका बहिणा, गुर सतिगुर मेल मिलांयदा। जिस जन मन्नया साचा कहिणा, साची भगती सो सलांहयदा। कलिजुग अन्तिम वहिण एका वहिणा, लक्ख चुरासी आप रुढ़ांयदा। प्रभ का भाणा सहिणा पैणा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। बिन हरि नाम थिर कोई ना रहिणा, गुरमुख साचे आप तरांयदा। एका इक्की वेखे सिक्खी हरि मीता इक्क अतीता पतित पुनीता साची रीता आप चलांयदा। साची रीत हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम आप चलाईआ। प्रगट हो विच संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, महाराज शेर सिँघ आप अख्वाईआ। विष्नूं मीता हो त्यार, भगवान जोत जगाईआ। तिन्नां लोकां वस्सया बाहर, घर चौथा इक्क वड्याईआ। सन्त साजण जाए तार, गुरसिख साजण लए उठाईआ। लेखा लिख्या धुर करतार, कादर करते कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाईआ। आप आपणी बणत बणा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणी गणत गणा, सन्त मनी सिँघ इक्क उठांयदा। धुर दा लेखा दए लिखा, हरि मन्दिर फेरा

पांयदा। अमृतसर सर इक्क जणा, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जूठे झूठे माया लूठे पापी बन्दे, झूठे धन्दे झूठी क्रिया इक्क समझांयदा। अमरदास तेरा ठांडा थाँ, हथ्थ किसे ना आंयदा। ग्रन्थी पन्थी बणे काँ, हँस रूप ना कोई वटांयदा। हरि मन्दिर बैठ करे ना कोई सच न्याँ, साचा धर्म ना कोई वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँ, गुर गोबिन्द संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद बिक्रमी खेल कर, पोह छब्बी रुत्त सुहांयदा। छब्बी पोह नाता तुट्टा, लोकमात तजाया। हरया होया बूटा सुक्का, अमृत जल चुआया। आप मनाया हरि हरि रुठा, आप आपणी दया कमाया। लहिणा देण चुकाए जूठ झूठा, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। राज राजाना हथ्थ फड़ाए खाली ठूठा, सिर ताज रहिण ना पाया। गुरमुखां उप्पर आपे तुठ्ठा, गुर का भेव कोई ना पाया। आवण जावण किसे ना छुट्टा, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। गुरमुखां पीता अमृत आत्म घुट्टा, निझर झिरना इक्क झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जोती किरना किरना विच टिकाया। जोती नूर हरि उजाला, हरि सज्जण मीत मुरारा। दीनां बंधप दीन दयाला, हरिजन देवे नाम सहारा। गोबिन्द रूप गुर गोपाला, निरगुण जोत नूर उज्यारा। वसे सच सच्ची धर्मसाला, काया कपड़ वसे बाहरा। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, आदि जुगादी एका धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां करे शृंगारा। गुरमुखां करे शृंगार, सतिगुर पूरा आप संगारदा। चरन प्रीती इक्क प्यार, एका ब्रह्म विचारदा। साची नीती विच संसार, साचा राह वखालदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, साचा दर । साची सिक्खी कर त्यार, सतिजुग बूटा लाया। पंजां आपे पावे सार, पंचां मेल मिलाया। गोबिन्द गुर कर प्यार, लेखा धुर चुकाया। एका शब्द एका सुर, एका ताल वजाया। एका चेला एका गुर, गुर चेला रूप वटाया। एका चढ़या साचे घोड़े, साचा घोड़ा इक्क दौड़ाया। एका वेखे मिट्ठा कौड़ा, लक्ख चुरासी फोल फोलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे ल्ए तराया। गुरसिख साचे तारन आया, पूर्ब लहिणा झोली पाया। रसना जेहवा जाप ना कोई कराया, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जल धारा ना कोई नहाया, चरन धूढ़ अशनान कराईआ। जोग अभ्यास हठ ना कोई रखाया, एका दृष्टी आपणी पाईआ। अग्नी मठ ना कोई तपाया, जगत धूणी ना कोई वखाईआ। रसना संख ना कोई वजाया, अनहद ताल इक्क सुणाईआ। गुरदर दुआरा मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ डेरा ढाहया, काया हरि मन्दिर इक्क वखाईआ। अठसठ तीर्थ मूल चुकाया, अमृत झिरना दए झिराईआ। सति प्याला नाम प्याया, अजपा जाप

जपाईआ। हथ्थ माला ना कोई फड़ाया, ना कोई गड़वी पोच पुचाईआ। शाह कंगाल ना कोई जणाया, एका रंग रंगाईआ। ढोलक छैणा ना कोई वजाया, गुरसिख तार सतार हिलाया। काया सुरंगी इक्क बणाया, बहत्तर नाड़ी सतार हिलाईआ। निरगुण निरगुण गुरमुख रिहा गाया, तूंही तूं अल्लाईआ। गुर नानक साचा मार्ग लाया, मरदाना संग रखाईआ। कलिजुग खेल सर्ब लोकाया, घर मन्दिर कीर्तन कोए ना सुणने पाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा भौदे बन्दर, धीरज धीर ना कोई धराईआ। उच्चे टिल्ले चढ़े गोरख मच्छन्दर, तन चोटी रहे कटाईआ। मिल्या मेल ना साचे मन्दिर, घर साचा बैठा माहीआ। गुरसिखां कलिजुग अन्तिम तोड़ण आया जन्दर, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। मनमुख होए भागां मन्दड़, हरि का भेव कोए ना पाईआ। मदिरा मासी पापी गन्दड़, गुर अर्जन लेखा गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां देवण आया वड्याईआ। गुरसिख तेरी वड वड्याई, हरि साचे आप जणाईआ। गुर का शब्द करे कुड़माई, दूसर नार ना कोई प्रनाईआ। घर विच धी घर जवाई, घर बैठा आसण लाईआ। घर विच सेज रिहा विछाई, घर फूलन बरखा लाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाई, गुर गोबिन्द संग रलाईआ। सम्बल नगरी कर रुशनाई, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ दुआरे रिहा तजाई, जगत मार्ग पन्ध मुकाईआ। दसवें बैठा साचा माही, आप आपणी सेज सुहाईआ। गुरसिखां पकड़न आया बांहीं, आलणिओ डिगे बोट उठाईआ। कागों हँस रिहा बणाई, सोहँ चोग चुगाईआ। घर घर दरस दिखाए चाँईं चाँईं, दिवस रैण सेव कमाईआ। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। सम्मत सम्मती तक्के राह, कलिजुग पन्ध मुकाया। सतिगुर आवे सच मलाह, हरिजन लए तराया। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, निमाणयां गले लगाया। शाह सुल्ताना देवे ख़ाक मिला, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। एका कलमा अमाम दए पढ़ा, एका नाअरा लाया। एका राम कृष्न दए मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाया। एका नानक गोबिन्द सेजा दए सुहा, गुरमुख साचे संग रलाया। कलिजुग अन्तिम निहकलंकी जामा पा, पूर्ब लहिणा वेख वखाया। साची सिख्या सृष्ट सबाई दए समझा, नौ खण्ड सत्तां दीपां फेरा पाया। भारत खण्ड जोत जगा, विष्नूं वंसी रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। साचा दर सुहञ्जणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। प्रगट होया पुरख निरँजणा, आदि निरँजण वड वड्याईआ। जन भगतां दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। पुरख अबिनाशी धुर दरगाही साचा सज्जणा, लोकमात सेव कमाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ।

लाड़ी मौत लौण देवे ना अज्ज पजणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर समुंद सागर गहर गम्भीर उच्चे टिल्ले फोल फोलाईआ। गुरसिख विरले गुर चरन दुआरे बहि बहि सजणा, तत्ती वा ना लगे राईआ। अन्तिम प्रगट होया देस माझणा, आपणा पर्दा दए उठाईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजणा, आप आपणी दया कमाईआ। शाह सुल्तान वड राजन राजना गुरसिख दुआरे फेरा पाईआ। कलिजुग सतिजुग रचया काजना, विच विचोला आप हो जाईआ। दोहां चलाए आप जहाज़ना, आपे डोबे आपे पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा वर, देवे मात वड्डी वड्याईआ। गुरसिख वड्याई धन्न, गुर सतिगुर सच्चा पाया। गुरमुख वड्याई धन्न, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर गुर वड्याई धन्न, गुर करते मेल मिलाया। सतिगुर वड्याई धन्न, सति पुरख निरँजण खेल खिलाया। आदि जुगादी बेड़ा बन्न्ह, निरगुण आपणा रंग रंगाया। पंचम मीता चढ़या चन्न, गुर पूरे आप चढ़ाया। कलिजुग अन्तिम देवण आया डन्न, ख़ाली हथ्थ रखाया। गुरमुखां राग सुणाए कन्न, धुन अनादी इक्क अलाया। जननी जनिआ साचा जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। गुर गोबिन्द बेड़ा देवे बन्न्ह, जगत मलाह आप अख्वाया। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, मन्दिर गुरू दुआर ना डेरा लाया। जिस जन हिरदा गया मन्न, तिस घर बैठा जोत जगाया। आपणी वरते आपे कल, कलधारी वेस वटाया। करे कराए अछल अछल्ल, अछल अछल्ल आप हो जाया। वसणहारा जल थल, घट घट डेरा लाया। गुरसिख तेरी आत्म सेजा सच सिँघासण बैठा मल, दिस किसे ना आया। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, तीजा नेत्र इक्क खुल्हाया। काया वेखे डूँघी डल, पंचम घेरा पाया। गुरसिखां अन्दरे अन्दर जाए रल, औंदा जांदा दिस ना आया। भाग लगाए काया खल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। वीह सद बिक्रमी हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। जोती नूर कर उज्यार, एकउँकार, वेस वटाईआ। दूजे बन्न्हे साची धार, दो जहानां वेख वखाईआ। तीजे तिन्नां लोकां वस्सया बाहर, चौथे पद समाईआ। पंचम मेला पंच प्यार, पंचम रिहा कराईआ। छेवें घर दर दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण हो त्यार, आप आपणा वेस वटाईआ। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। नौ दुआरे जगत किवाड़, दसवें डेरा लाईआ। वीह दस तेरा भर भण्डार, सोलां मग्घर रुत्त सुहाईआ। छोटा बाला कर त्यार, हरिसंगत भेंट चढ़ाईआ। गुर संगत तेरा चुकया भार, आपणे कंध उठाईआ। गुर गोबिन्द लाल दुलारे नीहां हेठ उसार, कलिजुग जड़ उखड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणे इक्क मुनार, जगत वंड वंडाईआ। इन्द इन्द्रासन करया ख़बरदार, सोया आप उठाईआ। अन्तिम छड्डणा पए दुआर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। मनजीत

सिँघ मन कर प्यार, आपणा आप भेट चढ़ाईआ। गुर संगत तेरा सच प्यार, फूलन बरखा इक्क वखाईआ। फल फलवाड़ी करे त्यार, लोकमात माली बेपरवाहीआ। वीह सौ यारां हाढ़ी ख़बरदार, साचा सगन मनाईआ। जगत दुलारा कर त्यार, अग्गे लाए सहिज सुभाईआ। शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। जगत जगदीस हो त्यार, आप आपणा राह तकाईआ। गुर संगत तेरा लोकमात विहार, नौ दुआरे वेख वखाईआ। दसवें मिले आप करतार, सच सिँघासण इक्क वछाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरी बन्ने धार, नौ दर फोल फोलाईआ। वीह सद बारां मिल्या मेल कन्त भतार, सतारां हाढ़ी ख़ुशी मनाईआ। भरया रहे गुर संगत तेरा सच भण्डार, हरि साचा आप भराईआ। निखुट्ट ना जाए विच संसार, अतोट अतुट्ट वखाईआ। लुट्ट ना जाए कोई ठग्ग चोर यार, हथ्थ किसे ना आईआ। मनमुख बाहर कढ्ढे कुट्ट, दर आए दरस कोए ना पाईआ। गुरसिखां अमृत प्याए आपणे दर आपणा घुट्ट, दूजा दर ना मंगण जाईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा प्यार गुरमुख आधार शब्द जैकार एका नाअरा लाईआ। वीह सद तेरां तेरी धार, गुर नानक आप चलाईआ। तोला तोले सर्ब संसार, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। सोहँ बोला इक्क जैकार, एका रसना गाईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, लोकमात वेख वखाईआ। पहली चेत्र हो त्यार, राज राजाना दए उठाईआ। साधां सन्तां मारे मार, जूठे झूठे बैठे धूंणीआँ ताईआ। हरि कन्त ना सोहे सच दुआर, नार विभचार रही कुरलाईआ। राष्ट्रपति दए हुलार, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाईआ। सम्मत चौदां ख़बरदार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। इक्की इक्की कर त्यार, इक्की कलीआं हार गुंदाईआ। वलीआ छलीआ आप निरँकार, वल छल खेल खिलाईआ। आप आपणे लए उभार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। गुर चेले सोहण इक्क दुआर, एका बंक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद चौदां चौदां लोक इक्क सुणाए शब्द सलोक, चौदां हट्टां देवे झोक, हरि का भाणा ना कोई सके रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वीह सद पन्दरां हरि निरँकार, आपणा खेल खिलांयदा। सचखण्ड कर प्यार, आपणा आसण लांयदा। ब्रह्मा देवे इक्क हुलार, आपणी बूझ बुझांयदा। शिव शंकर पाए सार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। करोड़ तेतीस ख़बरदार, सुरपति राजा इन्द नाल रलांयदा। चौदां लोकां हो उज्यार, सत सत रंग रंगांयदा। सत्तां दीपां खेल न्यार, सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ांयदा। नौ खण्ड खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम नामा आप चमकांयदा। तीर्थ तट्टां पाई वंडा, अट्ठां सट्ठां फोल फोलांयदा। गंगा गोदावरी वेखे कन्ढा, जमना सुरस्ती मेल मिलांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद पाई वंडा, नाम डण्डा ना कोई हथ्थ उठांयदा।

हँकारी फड़या हथ्थ विच खण्डा, सच खण्डा ना कोई चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती जोत जगांयदा। अट्ठां सट्ठां नाता तुटयां, हरि साचे तोड़ तुड़ाया। साधां सन्तां घर गया लुट्टयां, अन्दर चढ़ दरस कोए ना पाया। घर घर पाए आपे फुट्टया, पन्थ पन्थी भेड़ भड़ाया। दिन दिहाड़े कलिजुग जीव गया लुट्टयां, हरि का रूप दिस ना आया। गुरसिख उधारे विच्चों कोटन कोटयां, कोटन कोटी जीव खपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। सम्मत सोलां हरि श्रृंगार, गुरमुखां आप करांयदा। बजर कपाटी लाए पाड़, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। हथ्थ उठाए फूलनहार, साची सेव कमांयदा। गुरसिखां करे तन श्रृंगार, मन मनुआ बंध बंधांयदा। मति मतवाली ना होए ख्वार, एका दर वखांयदा। बुध बिबेकी ना जाए हार, साचे मार्ग लांयदा। कलिजुग अन्तिम उतरना पार, निरगुण जोती मेल मिलांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, पूजा पाठ ना कोए वखांयदा। फड़ फड़ बांहों रिहा तार, जो जन सरनाई आंयदा। पतित पापी जाए उधार, जो मंगण मंग मंगांयदा। कामी क्रोधी तोड़े गढ़ हँकार, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोद्धा जोध बली सूरबीर बलकार, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, आपणी कल वरतांयदा। गुरमुख विरले उतरे पार, जिस जन मेल मिलांयदा। साचा मन्दिर इक्क दुआर, घर साचा इक्क सुहांयदा। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, सच सिँघासण आसण लांयदा। गुरमुखां गल पाए फूलनहार, एका इक्की वंड वंडांयदा। साची सिक्खी कर प्यार, सतिजुग साचा राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख तेरा सच प्यार, पल पल चुकाईआ। सतिगुर पूरा तेरा हार, तेरे तन पहनाईआ। आप आपणा तेरे उत्तों दित्ता वार, अग्गे तेरी झोली डाहीआ। गुर गोबिन्द निउँ निउँ करे निमस्कार, आप आपणा सीस झुकाईआ। अमृत मंगे बण भिखार, अग्गे आपणा हथ्थ उठाईआ। देवे दरस सच्ची सरकार, सतिजुग साची बणत बणाईआ। प्रगट होए निहकलंक अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साची सिख्या दए सर्ब संसार, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फूलनहार तन श्रृंगार गुरमुखां तन पहनाईआ। गुरमुख सज्जण साचा लाड़ा, हरि साचे आप श्रृंगारया। कलिजुग लग्गे इक्क अखाड़ा, वा लग्गे तत्ती हाढ़या। गुरसिख मेला मीत मुरारा, घर पाया गुर करतारया। पंचम जेठा ख़बरदारा, साचा हुक्म सुणा रिहा। शाह सुल्तान दए हुलारा, शाह संगरूर आप उठा ल्या। सन्त मनी सिँघ सुत्त दुलारा, आपणी सेवा आप करा रिहा। लेख लिखाए आप निरँकारा, कलिजुग सतिजुग जोड़ जुड़ा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा पर्दा लाह रिहा। आपणा पर्दा आपे लौहणा, वीह सद सोलां वज्जे वधाईआ। पंचम जेठ शब्द चलाउणा, चले चलाए आप रघुराईआ। मनी सिँघ लेखा आप कढाउणा, जो बैठे बन्द कराईआ। भय भयानक दरस दिखाउणा, आप आपणा रूप वटाईआ। अचन अचानक खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह संगरूर करे जणाईआ।

पहली जेठ २०१६ बिक्रमी महाराज संगरूर राजबीर सिँघ नूं शब्द भेज्जया

शाह संगरूर जगत नादान, बाली बुध रखाईआ। प्रगट होया हरि भगवान, लोकमात करे रुशनाईआ। तेरे दर धुर फ़रमान, सन्त मनी सिँघ गया टिकाईआ। हरि का शब्द सच्चा बाण, शाह सुल्तानां जड़ उखड़ाईआ। ना कोई मन्दिर ना मकान, ना कोई ताज सीस टिकाईआ। काया हट्ट बणी दुकान, मनमति रही विकाईआ। पंचम जेठ लेखा लिखे महान, सम्मत सोलां सोलां करे जणाईआ। अस्सू तिन्न आए चल बलवान, तेरा पर्दा दए उठाईआ। अस्सू चार हो त्यार, शाह पटियाला वेख वखाईआ। शब्द जणाई हरि निरँकार, आप आपणी दए कराईआ। पन्दरां कत्तक इक्क जैकार, मस्तूवाणे दए लगाईआ। राजे राणे करे ख़बरदार, शब्द डण्डा सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ जोती नूर करे रुशनाईआ। सन्त मनी सिँघ लेखा लिख्या, सिँघ शेर लिखाया। शेर सिँघ धर भेखा, भेखाधारी रूप वटाया। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसा, ना कोई मूंड मुंडाया। किसे हथ्थ ना आए नर नरेशा, नेत्र नैण दिस ना पाया। जो जन करे चरन कँवल आदेसा, तिस दर अग्गे बैठा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रूप वटाया। विष्नूं भगवान निहकलंक, महाराज शेर सिँघ इक्क अख्वाईआ। सन्त मनी सिँघ आया दुआरे बंक, बन्दीख़ाने डेरा लाईआ। प्रगट होया वासी पुरी घनक, जगत संक दए मिटाईआ। आपणी जोती लाए तनक, खिच्ची आए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस जोत प्रवेश, सम्बल नगर धाम न्यारा बैठा आसण लाईआ। आए दर हरि बलवान, शब्द खण्डा तेज़ कटारया। अन्तिम मिटदा जाए निशान, राज राजानां करे ख्वारया। देवणहारा साचा दान, ख़ाली भरे भण्डारया। पहला देवे धुर फ़रमान, आप आपणा भेव जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अस्सू तिन्न दर दुआर आए आए दर वेख वखा रिहा।

हरि रोगी रोग कट्टणहारा, मेट मिटाए जगत संताप। नाम दान भण्डारा वंडणहारा, दरस दिखाए आपणा आप। भेख पखण्डा खण्डन करनहारा, हरिभगत जणाए वड प्रताप। हरिजन आपणी वंडा वंडणहारा, सखा सखाई माई बाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत पूरी करे आस। आए दर आत्म भिख, हरिजन मंग मंगाईआ। अगला लेखा देवे लिख, पिछला लेख मिटाईआ। साची सिख्या लैणी सिक्ख, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। अवर ना कोई नेत्र पेख, गुर सतिगुर पैज रखाईआ। सतिगुर पूरा नर नरेश, हरिजन साचे लए तराईआ। सति पुरख गुर सद आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत चिन्ता सोग गंवाईआ। हरिजन साचा दर भिखार, आपणी झोली डांहयदा। जो जन मंगे सुत्त दुलार, सफली कुक्ख करांयदा। जो जन मंगे दरस दीदार, नेत्र लोचण आप खुल्हांयदा। जो जन मंगे जगत विकार, माया ममता विच फसांयदा। साची संगता कर प्यार, नानक अंगदा अंग लगांयदा। जो जन मंगता होए धुर दरबार, ख़ाली हथ्थ ना कोए रखांयदा। काया चोली आपे रंग दा, भगत ललारी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत बेड़ा आप चलांयदा। जगत दुक्खां डेरा जाए ढठ्ठ, जिस जन दया कमाईआ। हरिजन बख्शे धीरज जत, सति सन्तोख इक्क वखाईआ। एका देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। आप चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। सोहँ शब्द अकथना अकथ, कथ कथनी रही गाईआ। सर्ब कल आपे समरथ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। दुःख भुक्ख जगत तृष्ना देवे मथ, आत्म सुख इक्क उपजाईआ। उजल करे दो जहानां मुक्ख, जो जन आए चल सरनाईआ। सफल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाईआ। अन्तिम वेले ना कोए दुःख, जम जंदार नेड़ ना आईआ। लेखे लाए मानस देही मनुख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि चिन्ता दए गंवाईआ। चिन्ता रोग जगत हड्ड बालण, अग्नी तत्त जलांयदा। जगी जोत इक्क अकालण, गुरमुखां दुःख मिटांयदा। हरि का शब्द बणे दलालण, नाम विचोला इक्क वखांयदा। गुरमुखां चढ़या आपे भालण, कलिजुग सोए आप उठांयदा। धुर दरगाही बण के आया साची मालण, साचा सेहरा इक्क गुंदांयदा। गुरसिखां दुआरे बणे सवालण, आप आपणी मंग मंगांयदा। सिक्ख गुर गुरसिख इक्क दूजे दा बचन पालण, वड्डा छोटा ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। दुःख रोग काया गढ़, पंज तत्त वसाया। पुरख अबिनाशी अन्दर वेखे चढ़, आप आपणा फेरा पाया। जगत विकारा लए फड़, नाम डोरी हथ्थ उठाया। जो जन एका विद्या एका अक्खर हरि हरि नाउँ रहे पढ़, रसना जेहवा हरि हरि गाया।

आप फड़ाए आपणा लड़, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम वर, नाम दाता दानी दयावान आप अख्वाया। दयावान दया निध, जन भगतां दया कमांयदा। गुरमुखां करे कारज सिद्ध, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे जाणे आपणी बिध, वेद कतेब भेव ना आंयदा। ग़रीब निमाणयां सेवक सेवा लाए नौ निध, अठारां सिध दर फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगला रोग जगत विजोग गवांयदा।

✪ २ जेठ २०१६ बिक्रमी बंता सिँघ दे घर पिण्ड निजर ✪

निरगुण जोत हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। आदिन अन्ता इक्क अवतार, एका गुर अख्वाया। जुगा जुगन्तर पावे सार, भेव अभेदा भेव ना राया। मरे ना जम्मे हरि निरँकार, आप आपणा मेल मिलाया। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण इक्क सुहाया। निरगुण दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर हरि निरँकार, एका एक करांयदा। पुरख अगम्मा हो उज्यार, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा संग निभांयदा। सगला संगी मीत मुरार, सति सरूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपजांयदा। हरि हरि रूप हरि हरि धार, हरि साचे आप उपाईआ। खेले खेल एकउँकार, अकल कला वरताईआ। आपे नार आपे कन्त भतार, आपे सेज हंढाईआ। आपे सोहे बंक दुआर, घर दुआरा आप उपाईआ। आपे राउ रंक होए सिक्दार, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आपे मंगे मंग भिखार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निरगुण दाता हरि भगवान, एका एक अख्वांयदा। जोती नूर नूर महान, जोती जोत डगमगांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, थान थनंतर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ रखांयदा। अबिनाशी करता पुरख अकाल, एका जोत जगाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। आपे शाह आपे कंगाल, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। आपे बणे सच दलाल, आप आपणा वणज वखाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा वेस वटाईआ। एकउँकारा हरि भगवन्त, भगवन वेस वटांयदा। आप आपणा थान सुहंत, थिर घर साचा इक्क वखांयदा। दूसर ना कोई संग रखंत, सगला संग आप

निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनेहारा करता पुरख करनी किरत आप कमांयदा। आपणी करनी आपे कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी जोत आपे धर, आपे वेख वखाईआ। आपणी वरनी आपे वर, वर दाता भेव ना राईआ। आपणी सरनी आपे पढ़, आप आपणा सीस झुकाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे बैठा आसण लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। उच्च महल्ले बैठा चढ़, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकउँकार, आदि जुगादी कर पसार, आप आपणी रचन रचाईआ। रचन रचाए पारब्रह्म, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए रखाईआ। ना कोए पवण स्वासी दम, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्म, रक्त बूंद ना कोए उपाईआ। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण मेला मेल मिलाईआ। निरगुण मेला निरगुण कर, निरगुण विच टिकाया। निरगुण चेला अग्गे खड़, निरगुण बैठा वेस वटाया। निरगुण अक्खर आपणा पढ़, निरगुण आपे रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहार पुरख समरथ, हरि एका एक अख्वांयदा। आप चलाए आपणा रथ, रथवाही नाउँ रखांयदा। आपे जाणे आपणी वथ्थ, आप आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार निरगुण प्यार, निरगुण कन्त निरगुण नार, निरगुण सेजा आप हंढांयदा। निरगुण सेजा कन्त भतारी, हरि साचे सच सुहाईआ। एका जोत जोत निरँकारी, निराकारी खेल खिलाईआ। आपे जाणे आपणा पसर पसारी, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण खेल न्यारी, भेव कोए ना पाईआ। अगम्म अगम्मड़ा वसे अगम्मड़ी अटारी, चार दीवार ना कोए जणाईआ। अलख निरँजण अलख जैकारी, आपणा नाअरा आपे लाईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआरी, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारी, एका नूरो नूर डगमगाईआ। अकल कला कल आपे धारी, आप आपणी बणत बणाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन जोत उज्यारी, आप आपणी करे रुशनाईआ। सच सुल्तान हरि भगवान शाहो भूप वड सिक्दारी, बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि साचा आप उपांयदा। आपे बैठा इक्क अकल्ला, एकउँकारा जोत जगांयदा। आपणा दीपक आपणी जोत आपे बला, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणे रूप आपणे रंग आपे रला, रेख रूप ना कोए वखांयदा। आपणा दर आपणा दुआर हरि निरँकार आपे मला, घर साचा बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सलांहयदा। सिफ्त

सलाह थिर दरबार, हरि साचे रचन रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव कोए ना पाईआ। खेले खेल गुर करतार गुर करनेहार, सतिगुर रूप वटाईआ। सति सतिवादी एका कार, एका बणत बणाईआ। साचा मन्दिर कर त्यार, अन्दर अन्दर डेरा लाईआ। ना कोई बाढी दिसे दूसर यार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती ना कोए उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कमलापाती निरगुण धार, बैठा सोभा पाईआ। सति सुहञ्जणी सेज मेला मेले नारी कन्त भतार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा सच दरवाज़ा, हरि साचे सच लगाया। पुरख अकाल ग़रीब निवाज़ा, बैठा आसण लाया। दो जहान राजन राजा, हरि साजण आप अखवाया। आपे रचया आपणा काजा, आपे वेख वखाया। आपे मारे आपणी वाजा, शब्द अनादी सुत्त जगाया। जोती माता रक्खे लाजा, साची गोद सुहाया। साचे दर फिरे भाजा, चार कुन्ट दहि दिशा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा ठांडा दर, हरि साचे आप उपाया। आप वसाया आपणा घर, आपे डेरा लाया। आपे देवणहारा वर, आपे झोली अग्गे डाहया। आपणी करनी आपे कर, करनी करता नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख वखाया। थिर घर साचा साचा मन्दिर हरि हरि खोल्ह, आपणी अलक्ख जगांयदा। शब्द अगम्मा एका बोल, आपणे दर सुणांयदा। आप वजाए आपणा ढोल, आप आपणा ताल हलांयदा। आपे वसे आपणे कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। आपणी शक्ति आपे मौल, आप आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख वखांयदा। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, हरि साचे सच उपाया। पुरख अबिनाशी जोत जगाए इक्क निरँजणा, आदि निरँजण वेख वखाया। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, हरि सज्जण आप हो जाया। आपणा पर्दा आपे कज्जणा, दूसर कोए दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा बंक सुहाया। थिर घर साचे सार समाल, हरि साची रचन रचाईआ। शब्दी शब्द करे प्रितपाल, शब्दी शब्द सलाहीआ। शब्दी नाम शब्द धन माल, हरि शब्दी दए वड्याईआ। शब्द शाह शब्द कंगाल, शब्द दर दर अलक्ख जगाईआ। शब्द सुत्त शब्द लाल, हरि शब्दी गोद उठाईआ। शब्दी शब्द करे प्रितपाल, प्रितपालक दिस ना आईआ। निरगुण जोत दीन दयाल, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा आपे भाल, आप आपणा बंक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द सिफ्त सलाहीआ। शब्द दाता गुर करतार, हरि हरि नाम धराया। आप आपणा कर प्यार, साचा मार्ग इक्क वखाया। हुक्मी हुक्म होए सिक्दार, साचा हुक्म सुणाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार,

ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया। गगन पातालां बन्ने धार, मण्डल मण्डप दए सुहाया। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा अंग कटाया। विष्नूं विश्व हो त्यार, आप आपणी अलक्ख जगाया। आप आपणी बन्ने धार, कँवल कँवला नाभ फुलाया। उपजे फूल खिली गुलज़ार, हरि साचे रंग रंगाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, ब्रह्म रूप वटाया। सो पुरख निरँजण हरि निरँकार, हँ ब्रह्म आप हो जाया। एका नूर जोत उज्यार, दोए दोए वेस कराया। सरगुण उपजे निरगुण धार, सरगुण डेरा लाया। शब्द विचोला कर त्यार, हरि साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। विष्न ब्रह्मा कर उज्यारा, आपणी चलत चलांयदा। आपे वसे धुँदूकारा, प्रकाश प्रकाश आप करांयदा। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण आप हो जांयदा। शंकर शंकर कर उज्यारा, शिव शक्ती रूप वटांयदा। त्रै त्रै तेरा भर भण्डारा त्रै त्रै बंधन पांयदा। त्रैगुण तेरा कर पसारा, तेरा रंग रंगांयदा। ब्रह्मा वेता ख़बरदारा, सोया सुत्त उठांयदा। कराए वणज नाम वणजारा, साचा हट्ट खुल्हांयदा। करनी करता करे आपणी कारा, भेव कोए ना पांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका राग सुणांयदा। तत्व तत्त ना कोए विचारा, ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीज बीजे साचे वत, फल साचा इक्क लगांयदा। त्रैगुण माया बीजे बीज, हरि साचे बणत बणाईआ। पंज तत्त करे रीझ, अप तेज़ वाए पृथमी आकाश सुहाईआ। निरगुण करे सरगुण रीझ, आप आपणा अंग कटाईआ। मन मति बुध गई पतीज, तिन्नां मेल सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचना आप रचा, आपे खेल खिलाया। ब्रह्मा वेता सेवा ला, साचा रंग रंगाया। लक्ख चुरासी वेस वटा, निरगुण सरगुण आप अख्वाया। आपणा दीवा आप जगा, आपणी बाती रिहा बुझाया। आपणा रवि आपणा ससि आपणा नूर आप चमका, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाया। आपणा मार्ग हरि हरि ला, एका ब्रह्म जणाईआ। अक्खर वक्खर भेव खुल्हा, शब्दी शब्द कुड़माईआ। साची सिख्या धुर दरगाह, एका करे पढ़ाईआ। आपणा लेखा दए वखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपणी भिच्छया झोली पा, जगत भण्डार आप भराईआ। सृष्ट सबाई मिथ्या दए वखा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। आपणा भेव आपे खोल्ह, आपणा पर्दा लांहयदा। ब्रह्मा वेता रिहा बोल, चारे वेद अल्हांयदा। हरि जी तोले साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। आदि अन्त ना होए अनभोल, आलस निन्दरा कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। लक्ख चुरासी डेरा ला, हरि हरि मुख छुपाया। रक्त बूंद मेल

मिला, पंज तत्त तन वखाया। हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ा, आप आपणा रंग रंगाया। अट्ठां तत्तां मेल मिला, एका दूजा भउ चुकाया। नौ दुआरे आप खुल्हा, नौ नौ वंड वंडाया। दसवें बैठा डेरा ला, घर घर विच आप टिकाया। साचा गगन आप सुहा, रवि ससि रिहा चमकाया। जोत निरँजण डगमगा, अन्ध अन्धेर गंवाया। अनहद ताल इक्क वजा, आपणा राग अल्हाया। पंचम सखीआं मंगल गा, साचा बंक सुहाया। अमृत ताल इक्क भरा, सर सरोवर इक्क नुहाया। हँ ब्रह्म प्रभ आप अख्वा, सो पुरख निरँजण डेरा लाया। जूनी रहित भेव ना रा, आप आपणा वेख वखाया। अकाल मूर्त प्रभ बेपरवाह, दिस किसे ना आया। आपणी सूरत लए वटा, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख वखाया। लक्ख चुरासी शब्द सिँघासण, हरि हरि सेज विछाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अबिनाशण, बैठा डेरा लाईआ। मानुश मानुख दस दस मासन, नौ अठारां वंड वंडाईआ। चौदां लोक पृथ्मी आकासन, चौदां हट्ट खुल्हाईआ। काया गढ़ रसन स्वासन, जेहवा पवण स्वासन जेहवा पवण समाईआ। निज घर आपणा करया वासन, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात करे कुड़माईआ। लोकमात जुड़या नाता, हरि साचे जोड़ जुड़ाया। लक्ख चुरासी वेखे पुरख बिधाता, आप आपणा मेल मिलाया। आपे होए रैण अन्धेरी राता, साचा चन्न आप चढ़ाया। आपे जाणे आपणी गाथा, आपणा शब्द आप सुणाया। आप चलाए आपणी राथा, जुग जुग वेस वटाया। आप निभाए आपणा साथा, सगला संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग रिहा नाउँ धराया। जुग जुग आपणा नाम रक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सरगुण रूप हो प्रतक्ख, गुर अवतार आप हो जाईआ। आपे भाण्डे करे सक्ख, आपे दए भराईआ। आपे आपणा आप करे वक्ख, आपे जोती जोत समाईआ। आपे दरस दिखाए हो प्रतक्ख, निरगुण सरगुण नाम उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग अपणी खेल खिलाईआ। जुग जुग खेला हरिजन मेला, हरि साचा आप करांयदा। दो जहानां सज्जण सुहेला, लोकमात वेख वखांयदा। खेले खेल इक्क अकेला, कलधारी आप हो जांयदा। आपे गुरू आपे गुर चेला, गुर चेला नाउँ रखांयदा। सखा सखाई सज्जण सुहेला, वेला वक्त ना कोए उपांयदा। आपे वस्सया आपणे रंग नवेला, वेद कतेब ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपणी वंड आपे वंड, हरि साचे वंडी पाईआ। खेले खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, पुरख अकाल अख्वाया। सतिजुग साचे कर प्यारा,

लोकमात जन्म दवाया। धरत मात दा सुत्त दुलारा, साची गोद बठाया। कराए वणज नाम वणजारा, एका ब्रह्मा समझाया। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, लेखा लेख ना कोए लिखाया। हरि का रूप अगम्म अपारा, पंज तत्त ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची वंडी वंड, आप आपणा बंधन पाया। बंधन पाए नाम डोर, सतिजुग वज्जी वधाईआ। वेखणहारा पंजे चोर, पंचम शब्द करे कुड़माईआ। करे प्रकाश अन्धेर घोर, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि की गति ना जाणे कोई होर, ना लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग लहिणा नेत्र नैणां आपे पूर कराईआ। सतिजुग साचा उतरया पार, सति सतिवाद समाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, त्रै त्रै लेख लिखाया। त्रेता आया विच संसार, त्रैगुण मेल मिलाया। राम रूप रूप करतार, राम रामा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गढ़ हँकारी वेख वखाया। गढ़ हँकारी देवे तोड़, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। आपे चढ़या साचे घोड़, शाह सवारा फेरी पाईआ। दो जहानी रिहा दौड़, अवण गवण पार कराईआ। सचखण्ड दुआरे लाए एका पौड़, सच महल्ला इक्क सुहाईआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिठ्ठा कौड़, आप आपणा खोज खोजाईआ। जन भगतां हरि जी हरि हरि जाए बौहड़, अन्दर मन्दिर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग त्रेता वेख वखाईआ। जुग त्रेता उतरया आपणे घाट, हरि साचे पार कराया। द्वापर आई नेड़े वाट, आप आपणा खेल खिलाया। खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी स्वांग रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण नाम बंसरी इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। लहिणा देणा गया चुक्क, हरि साचा आप चुकाईआ। कलिजुग सच दुआरे गया झुक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरा बूटा ना जाए सुक, ठांडा ठार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात देवे वर, एका वस्त झोली पाईआ। कलिजुग कूड़ा कर पसारा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। मंगी मंग इक्क दुआरा, तोट रहे ना राईआ। मेल मिलाया काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, मन मति नाल रलाईआ। आसा तृष्ना कर शृंगारा, घर साचे करे कुड़माईआ। हरि जू हरि हरि पाए सारा, देवे वड वड्याईआ। ईसा मूसा कर प्यारा, निरगुण सरगुण जोत जगाईआ। एका कलमा एका नाअरा, एका नबी समझाईआ। हक्क हकीकत दए इशारा, लाशरीक वड्डी वड्याईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, सांझा यार दिस ना आईआ। संग मुहम्मद चार यारा, एका वेख वखाईआ। अल्ला राणी कर प्यारा, एका वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ रखाईआ। जुग जुग आपणा नाम रक्ख, हरि साचा डंक

वजांयदा। निरगुण जोती कर प्रतक्ख, सरगुण रूप वटांयदा। आप आपणा कीता पक्ख, नानक नाउँ धरांयदा। साचा मार्ग एका दस्स, साचा मन्त्र नाम ज्ञान दृढ़ांयदा। हर घट हर हिरदे आपे रिहा वस, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। तीर निराला मारे कस, नाम सति मुखी अग्गे लांयदा। जन भगतां आपे होया वस, आप आपणी सेव कमांयदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्न चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर हाज़र हज़ूर सर्ब कल भरपूर आप आपणा वेस वटांयदा। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द रंग रंगाया। पूत सपूता सुत्त दुलारा, पुरख अकाल बणाया। नाम खण्डा तेज़ कटारा, शस्त्र बस्त्र तन सजाया। कल्ग़ी तोड़ा सीस दस्तारा, जोती जोड़ा मेल मिलाया। साचे अस्व हो सवारा, साचा घोड़ा इक्क दौड़ाया। अमृत आत्म सर सरोवर ठंडी ठारा, इक्क भराया। चार वरनां करे सच प्यारा, ऊँचां नीचां मेल मिलाया। राउ रंकां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाया। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ रखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचे सच वड्याईआ। नानक मेला कर करतार, एका किरत कमाईआ। नाम सति कर प्रधान, इक्क निशान वखाईआ। सतिगुर पूरा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, एका भथ्था रिहा उठाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा हलाईआ। करोड़ तेतीस सर्ब कुरलान, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। कलिजुग अन्त सर्ब पछतान, किसे ना दीसे कोए सहाईआ। नाता तुटे अञ्जील कुरान, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। दीन मज़्हब ना कोए ईमान, कलमा अमाम ना कोए पढ़ाईआ। कायनात होए वैरान, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। चौदां तबकां मिटे निशान, चौदां विद्या होए जुदाईआ। प्रगट होए जोद्धा सूरबीर हरि भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लेख चुकाए वेद पुराण, पुराण अठारां फोल फोलाईआ। शास्त्र सिमरत कर ध्यान, आपे खोजे खोजणहारा दिस ना आईआ। खाणी बाणी वेख निशान, गुर अर्जन सिफ्त सलाहीआ। मिल्या वर धुर फ़रमान, बोध अगाध सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी खेल खिलाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम आउणा, गुर सतिगुर लेख लिखाईआ। चार वरन अठारां बरन सर्ब कुरलाउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर कोई दिस ना आउणा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। अठसठ तीर्थ किसे ना नहाउणा, गंगा गोदावरी मुख शरमाईआ। पंडत पांधे थक्के मांदे जोत ललाटी तिलक ना किसे लगाउणा, जूठा झूठा वेस वटाईआ। नानक गोबिन्द दरस किसे ना पाउणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुर अर्जन तेरा लेखा हथ्थ किसे ना आउणा, हरि का शब्द हिरदे ना कोए वसाईआ। रसना गा गा सर्ब सुनाउणा, रस

आत्म ना कोए जणाईआ। राम दास तेरा सर सरोवर साचे तीर्थ किसे ना नुहाउणा, दुरमति मैल ना कोए कटाईआ। जूठ झूठ माया ममता मोह नाता ना किसे तुड़ाउणा, गुर चरन ध्यान ना कोए लगाईआ। एकउँकार सतिनाम करता पुरख निरभउ निरवैर किसे दरस ना पाउणा, मूर्त अकाल नज़र ना आईआ। धूंआँधार सर्ब संसार वखाउणा, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। मावां पुत्तरां संग रलाउणा, खेले खेल भेव ना राईआ। धरनी धरत धवल नेत्र रो रो नीर वहाउणा, खुलड़े केस गल विच पलड़ा पाईआ। दस दस्मेस नर नरेश दया कमाउणा, शब्द संदेस इक्क सुणाईआ। गणपति गणेस सहाई ना कोए बनाउणा, सगला संग ना कोए निभाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते आप आपणा भेव खुल्हाउणा, निरगुण जोती नूर करे रुशनाईआ। विष्नूं वंसी सेवा लाउणा, साची सेव कमाईआ। ब्रह्मा वेता नैण नैणां आप आपणे विच समाउणा, कलिजुग पन्ध मुकाईआ। शिव शंकर फड़ फड़ तख्तों लौहणा, बाशक तशका हार ना कोए लटकाईआ। सुरपति राजा इन्द नज़र ना आउणा, अन्तिम अन्त आप कराईआ। करोड़ तेतीस हरि जगदीस पीसन पीस पिसाउणा, नाम चक्की इक्क चलाईआ। शाह सुल्तान राज राजान लोकमात सीस ताज ना किसे सुहाउणा, ना कोए चँवर झुलाईआ। दर दरबान ना कोए वखाउणा, ना कोए बंक सुहाईआ। लक्ख चुरासी ख़ाकी ख़ाक मिलाउणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। गुरमुख साचे आप उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाउणा, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। बीस बीसा नाम धराउणा, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। सत्तां दीपां सत्त रंग निशाना इक्क झुलाउणा, चारे कुन्टां फेरा पाईआ। जगत स्यासत पन्ध मुकाउणा, ना कोए वरासत रिहा बणाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार नाम नामा हरि आप चमकाउणा, तिक्खी दोवें धार रखाईआ। भेख पखण्डा मेट मिटाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरसिख साजण मेल मिलाउणा, जो जन रसना रहे ध्याईआ। चार वरन साची सरन एका धाम बहाउणा, ऊँच नीच कोए रहिण ना पाईआ । एका मन्त्र हरि का नाम दृढ़ाउणा, पुरख अकाल इष्ट इक्क वखाईआ। दुर्गा अष्टमी भेव खुल्हौणा, गायत्री मन्त्र ना कोए पढ़ाईआ। राम नाम नाम राम हरि नज़री आउणा, साचा काहन वेस वटाईआ। एका कलमा आप पढ़ाउणा, इक्क शरायत जणाईआ। नाम सति इक्क समझाउणा, अमृत जाम इक्क प्याईआ। वाहिगुरू फ़तहि जैकारा इक्क बुलाउणा, हरि साचा खेल खिलाईआ। सो पुरख निरँजण आप अख्वाउणा, हँ ब्रह्म जीव तराईआ। निहकर्मी निहकर्म कमाउणा, निहकलंक वज्जे वधाईआ। सम्मत सम्मती भेव खुल्हाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। पंचम मीता पंच जगाउणा, पंचम रुत्त सुहाईआ । शब्द अनादी गीत एका गाउणा, एका रसन अल्हाईआ। एका अक्खर आप पढ़ाउणा, एका करे पढ़ाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। सम्मत

४६० ०८

सोलां वीह सद बिक्रमी खेल खिलाउणा, आप आपणी कल वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाउणा, शब्दी डंक वजाईआ। सम्मत सतारां राह भुलाउणा, भरमी भुल्ले पान्धी राहीआ। अट्ठ अठारां धार चलाउणा, धरनी धरत समाईआ। उन्नी उनीसा खेल खिलाउणा, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। बीस बीसे जोत जगाउणा, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। दिल्ली दुआरे चरन छुहाउणा, शाह सुल्तानां फड़ उठाईआ। इक्क इकीसा आप अख्वाउणा, जगत जगदीसा आप हो जाईआ। छत्र सीस हरि आप झुलाउणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नाता इक्क जुड़ाउणा, नव सत्त करे कुड़माईआ। गोबिन्द लेखा पूर कराउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। नर नरायण निराकार, निरगुण जोत जगांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। नाड़ बहत्तर मारे मार, सहँस सहँसर वेख वखांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़, पंचम मोह गवांयदा। जन भगतां वखाए इक्क अखाड़, धर्म दुआरा इक्क सुहांयदा । लोकमात मेल मिलावा सतारां हाढ़, साचा दिवस सुहांयदा। हरिजन नेड़ ना आए मौत लाड़, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। राए धर्म ना मारे मार, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। सतिगुर पूरा आपणी किरपा देवे धार, कर किरपा पार करांयदा। इक्क वखाए ठंडा दरबार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत मेला कन्त भतार, नारी कन्त आप हो जांयदा। साचे सन्त करे प्यार, आवण जावण गेड़ मुकांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त सर्ब संसार, दूई द्वैती पर्दा कोए ना लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा वेस वखांयदा। वेस अवल्ला इक्क अकल्ला, जलां थला समाईआ। वसणहारा उच्च अटला सच सिँघासण एका मल्ला, जोती शब्दी आपे रल्ला, पवणी पवण अख्वाईआ। नाम कटारी करे हल्ला, जोत निरँकारी फड़या भल्ला, शब्द खण्डा रिहा चमकाईआ। कलिजुग जीव भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल्ल आप अख्वाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा पल्ला, देवे दरस सहिज सुभाईआ। सुरत शब्द शब्द सुरत घर आपणा मल्ला, घर घर विच मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, पारब्रह्म ब्रह्म आप अख्वाईआ।

✪ ५ जेठ २०१६ बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड भलाईपुर डोगरां ✪

हरि हरि हरि हरि हरि हरे, हरि हरि नाम धराया। हरि हरि करता पुरख कारज आप करे, करनहार सर्ब सुखदाया। हरि हरि अबिनाशी पुरख जोत आप धरे, निरगुण नूर जोत रुशनाया। हरि हरि पारब्रह्म निरगुण खेल आप करे, खेलणहार

भेव ना राया। हरि हरि आदि निरँजण नर नरे, नर नरायण भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकउँकारा निराकार अख्वाया। निराकार निरँकार, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। अकल कला कल आपे धार, आपणी कल वरतांयदा। आपणा सुहाए सच दुआर, दर दुआरी आप अख्वांयदा। आपणा घर कर त्यार, आपे आसण लांयदा। आपे अन्दरों आए बाहर, दिस किसे ना आंयदा। दूजा खोल्ह बन्द किवाड़, अलक्ख अलक्खणा अलख जगांयदा। वेखणहारा सचखण्ड दुआर, त्रै त्रै लोक ना कोए उपांयदा। चौथे घर ख़बरदार, घर साचा आप सलांहयदा। पंचम पंचम हो उज्यार, पंचम वेस वटांयदा। निरगुण निरगुण निरगुण कार, निरगुण धार बंधांयदा। पुरख अकाल कर उज्यार, आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। इक्क अकल्ला कर पसारा, पंचम रूप समाया। पंचम मेला दर दरबारा, एका दर खुल्हाया। इक्क अकल्ला हरि निरँकारा, दिस किसे ना आया। पंचम मीता कन्त भतारा, घर घर सगन मनाया। इक्क अकल्ला ख़बरदारा, आलस निन्दरा ना कोए जणाया। पंचम मीता सांझा यारा, सच घर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। पंचम आपणा आप निशान, आपे आप झुलांयदा। आपे वसे सच मकान, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। छेवां छप्पर छन्न ना कोए निशान, दिस किसे ना आंयदा। छेवें घर हो प्रधान, घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण खेल इक्क इकांत, आपणी आप कराईआ। छेवें घर मारे झात, वड दाता बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला पिता मात, हरि हरि आप अख्वाईआ। छेवें घर देवे दात, साची वस्त रखाईआ। इक्क अकल्ला उत्तम ज़ात, ज़ात अजाति वेस वटाईआ। छेवें घर साचा नात, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। पंचम मीता लै बरात, साचा सगन मनाईआ। खेले खेल दिवस रात, दाई दाया नाउँ धराईआ। आदि जुगादी वेखे मार झात, नेत्र लोचण नैण ना कोए रखाईआ। आपे होए कमलापात, आपे नारी वेस वटाईआ। आप निभाए आपणा साथ, साचा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकेला खेल खिलाईआ। इक्क अकल्ला जोत रक्ख, जोती जोत जगांयदा। पंचम पंचम हो प्रतक्ख, पंचम वेस वटांयदा। छेवें घर जगाए अलक्ख, आप आपणा नाअरा लांयदा। आपे आपणा आप करे वक्ख, आपे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल एकउँकारा, अकाल मूर्त अजूनीआ। आप आपणा कर पसारा, आपे देवे जोती नूर नुरानीआ। आप आपणा भर भण्डारा, आपे होए शाह सुल्तानीआ। आप आपणा बण वणजारा, करे वणज दो जहानीआ। आप आपणी

बन्ने धारा, त्रै लोकां खेल महानीआ। आप आपणा कर पसारा, चौदां हट्टां खोल्ह दुकानीआ। आप आपणा रंग रंगे करतारा,
रवि ससि सूरज चन्न निशानीआ। आप आपणा दए आधारा, मात पाताल आकाश खेल महानीआ। आप आपणा करे ख़बरदारा,
ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकानीआ। आप आपणा नूरी जोत करे उज्यारा, पंज तत्त होए प्रधानीआ। छेवें घर मीत मुरारा,
देवे दरस हरि भगवानीआ । अकल कला कल आपे धारा, जुग जुग वेस वटानीआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, निहकलंक
बली बलवानीआ। गोबिन्द लेखा लिख लिखारा, साची सेव कमानीआ। नानक मंगी मंग भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकानीआ।
राह तक्कण राम कृष्न अवतारा, एका अक्ख खुल्हानीआ। करोड़ तेतीसा धूढ़ी ख़ाक मंगे ढहि ढहि पए दुआरा, हरि का
रूप दिस ना आनीआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, भेव कोए ना पानीआ। कलिजुग जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, एका
खण्डा हथ्थ उठानीआ। चार वरनां करे ख्वारा, दहि दिशा करे वैरानीआ। घट घट अन्दर हाहाकारा, निर्भय रूप ना कोए
वखानीआ। साध सन्त दर दर ख्वारा, जोत निरँजण आदि निरँजण ना मेल मिलानीआ। पंचम नाता तुट्टा शब्द धुन्कारा,
धुनी नाद ना कोए वजानीआ। जोग अभ्यास ना बन्ने धारा, नेत्र नैन ना कोए खुल्हानीआ। दुरमति मैल ना लाहे जल धारा,
निर्मल नीर ना कोए वखानीआ। वेद कतेब ना पाइन सारा, पढ़ पढ़ थक्के मनमति बाणीआ। गुर पीर ना दए कोई सहारा,
साचा लड़ ना कोए फड़ानीआ। ना कोई मीत राम अवतारा, कान्हा कृष्न ना संग वखानीआ। नानक गोबिन्द ना मिले किसे
दुआरा, नार दुहागण सर्ब कुरलानीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, साची रुत्त सुहानीआ।
जुग जुग देवे नाम भण्डारा, भगत भगती वंड वंडानीआ। सतिजुग त्रेते द्वापर किया आधारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखानीआ।
निरगुण बाती कर उज्यारा, कलिजुग अन्धेरी राती गुरमुखां करे आप पछानीआ। सचखण्ड दुआरे दा सच्चा जमाती, पढ़ौण
आया साची बाणीआ। चरन कँवल बहाए कोटन कोटि त्रिलोकी नाथी, आदि अन्त ना किसे वखानीआ। जुगा जुगन्तर सगला
साथी, गुरसिखां दर दुआरे बणया दर दरबानीआ। हथ्थ लै के आया धुर दरगाह दी साची लाठी, ना कोई बाढी हथ्थ
टिकानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे वड कुरबानीआ। निरगुण शाह शब्द सुल्तान,
सतिगुर तख्त बहाया। हरि का रूप साचा काहन, एका बंसरी नाम वजाया। निरगुण रूप रमईया राम, हर घट आसण
लाया। हरि चरन सरोवर अमृत जाम, जन भगतां जुगा जुगन्तर आप प्याया। आपे पकड़े आपणा दाम, आपणा पल्ला
आप फड़ाया। आपे वसे नगर ग्राम, नगर खेड़ा आप वसाया। आप जपाए आपणा नाम, आपे आपणी भिच्छया पाया।
कलिजुग झेड़ा मुक्के तमाम, हरि साचा मेटन आया। कोई ना दीसे अन्धेरी शाम, गुरसिख साचा चन्न चढ़ाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दीपक इक्क जगाया। निरगुण दीपक कर उज्यार, पंचम मेल मिलाया। पंचम कर पंच त्यार, पंचम आप समाया। पंचम करया अन्ध अँध्यार, पंचम प्रकाश प्रकाश उपाया। पंच डुबाया डूँघी गार, पंच ताज सीस रखाया। पंचम देवे पंच धुन्कार, पंचम वाजा आप वजाया। पंचम मारे साची मार, पंचम खण्डा इक्क चमकाया। पंचम रोवे ज़ारो ज़ार, पंचम घर विच सगन मनाया। पंचम मीता ख़बरदार, छेवां घर वसाया। छेवा दर निरगुण धार, चौथे मूल चुकाया। नैण नेत्र इक्क उग्घाड़, दूजा रंग वटाया। इक्क इकल्ला निराकार, साकार आप अख्वाया। निरगुण जोती कर उुज्यार, सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेले खेल हरि हरि मीता, आपणा खेल खिलांयदा। आप चलाई आपणी रीता, आप आपणा दर सुहांयदा। ना कोई मन्दिर गुरदुआर मसीता, काया खेड़ा इक्क वसांयदा। अन्दर वड़या हरि अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। दस दस मास ना पीसन पीठा, मात गर्भ ना कोए लटकांयदा। जन्मया सुत्त पतित पुनीता, परम पुरख आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। जन्मया पुत्त साचा जेठा, पंचम जोड़ जुड़ाया। मात पित आपे हो आपे जाणे आपणा लेखा, आप आपणी गोद सुहाया। पंज तत्त कर भेखा, हड्ड मास नाड़ी चम्म रंग रंगाया। हरि का रूप ना मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसा, ना कोई चोटी मूंड मुंडाया। भेव ना पाए ब्रह्मा विष्न महेषा, लेखा लेख ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। आपणे घर आपे जम्म, आपणी बणत बणाईआ। आप संवारे आपणा कम्म, ना दूसर संग रखाईआ। आपणी तृष्ना मेटे तम, आप आपणा जोग कमाईआ। आपणे लेखे लाए आपणा चम्म, तत्व तत्त ना कोए जणाईआ। आपे गिणे आपणे दम, आपे बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मातलोक वस्सया घर, आप आपणी खेल खिलाईआ। रक्त बूंद मेल मिलाया, करनी करता आप कमांयदा। मात पित बणत बणाया, भेव कोए ना पांयदा। पंज तत्त अन्दर पंज तत्त उपाया, पंज तत्त विच आप ना आंयदा। पंज तत्त अन्दर ब्रह्म टिकाया, पारब्रह्म मुख छुपांयदा। पंज तत्त निरगुण शब्द इक्क जणाया, आपणे रस आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दसवें मास खेल खिलांयदा। दसवें मास मात प्यारी, सफ़ल कुक्ख कराईआ। जगत पिता ना पाए सारी, भेव कोए ना राईआ। आपे अन्दर आपे बाहरी, गुप्त ज़ाहर आप अख्वाईआ। आपणी कल आपे धारी, आप आपणा नाउँ सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ दए वधाईआ। पंचम जेठ चढ़या चा, लोकमात सगन मनांयदा। पुरख अबिनाशी मिल्या सच मलाह, जन भगतां वेख वखांयदा। जुग

जुग विछड़े लए उठा, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी काया मन्दिर वेखे जगत ग्रां, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। करनहारा सच न्याँ, साचा मार्ग लांयदा। शेर सिँघ हरि नाउँ धरा, सिँघ शेर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ पंचम तत्त उपांयदा। पंचम जेठ हरि वधाई, आपणे घर वजाईआ। जन भगतां करन आया कुड़माई, पूर्ब लहिणा दए चुकाईआ। आपे लागी बणे छींबा नाई, आपे घर घर दए सुणाईआ। आपे पान्धी बणे जाए राही, आपे आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अक्खर रक्खया वक्खर, आपणे नेत्र आपे वेख वखाईआ। आपणा अक्खर शब्द धार, हरि साचे आप उपजाईआ। लेखा लिख ना सके कोई विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। चार युग खेल न्यार, रूप अनूप वटाईआ। कोई ना जाणे बवन्जा धार, बावन अक्खर रहे सलाहीआ। पैंतीस अक्खर कर त्यार, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। सतारां अक्खर हरि निरँकार, आपणे अन्दर बैठा बन्द कराईआ। गुर पीर ना जाणे कोई अवतार, ना सके कोए जणाईआ। गा गा थक्के ऊँच अगम्म अपार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नानक दरस इक्क निरँकार, एका दूजा भउ चुकाईआ। आप ढहि ढहि पए दुआर, आपे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधाईआ। बवन्जा अक्खर तेरी धार, छेवें घर वसाईआ। पंचम गुर पंच शब्द धुन्कार, पंचम रिहा गाईआ। नानक खोल्हे इक्क किवाड़, राम रामा रूप दरसाईआ। अछल अछल्ल खेल करतार, गोपी काहन आप नचाईआ। आपे जोती नूर कर उज्यार, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। आपे सन्त भगत दए आधार, नाम नामा आप अख्वाईआ। आपे आदि शक्ति कर उज्यार, नमो सति आप वड्याईआ। आपे ब्रह्म मति दए आधार, पारब्रह्म भेव ना राईआ। आपे उत्पत करे सर्ब संसार, आपे मेट मिटाईआ। आपे बीज बीजे साचे वत ब्रह्मा विष्न शिव लए उभार, आपे आपणे विच समाईआ। आपे कलिजुग अन्तिम लै अवतार, खेले खेल बेपरवाहीआ। छेवें घर बन्न्ही धार, बवन्जा भेव ना रिहा खुल्हाईआ। बवन्जा कलीआं तन श्रृंगार, बन्दी छोड़ बन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धर, आपणे अक्खर आप दबाए आपणे पत्थर, ना कोई सके भार उठाईआ। पंज तत्त कर उज्यार, पैंती अक्खर करे पढ़ाईआ। सरगुण रूप हो उज्यार, निरगुण पर्दा आपणे उप्पर पाईआ। आपणा खोल्ह आप किवाड़, आपे बैठा बन्द कराईआ। चौथे युग चौथी धार, करे खेल आप निरँकार, ना कोई दूसर बणे लिखार, ना ध्यान कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, हरि जोती जोत जगांयदा। बणवास ना फिरे बण राम अवतारा, तीर कमान ना कोए उठांयदा। रथ रथवाही ना कृष्न मुरारा, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा।

४९६

०८

नानक गुर ना बण भिखारा, चारों कुन्ट फेरी पांयदा। अर्जन गुर ना करे विचारा, अगाध बोध ना कोए दृढ़ांयदा। गुर गोबिन्द ना खण्डा तेज़ कटारा, सीस दस्तार ना कोए बंधांयदा। बस्त्र शस्त्र ना तन शृंगारा, ना कोई अस्व घोड़ा दौड़ांयदा। पैंतीस अक्खर ना कोए प्यारा, ना कोई लेख लिखांयदा। मात पित ना सुत्त दुलारा, भैण भाई ना कोए जणांयदा। बवन्जा अक्खर अन्दर आपणा आप कर बन्द किवाड़ा, बवन्जा साल छुपांयदा। जगत वेखे पंज तत्त हड्ड मास चम्म नाड़ा, हरि का रूप दिस ना आंयदा। पंचम जेठ सभागी दिहाड़ा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। पुरख अकाल सच अखाड़ा, लोकमात लगांयदा। नर निरँकार धुर दरगाही लाड़ा, एकउँकारा आप अख्वांयदा। नाम रत्त लहू रक्खे गाढ़ा, गुरमुख साचे आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवन्जा बवन्जा बवन्जा वेख वखांयदा। बवन्जा अक्खर हरि का लेख, हरि हरि भेव छुपाया। गुर अर्जन आपणे नेत्र पेख, बिन हुक्म लिख ना पाया। आपणी करे आप आदेस, नानक नूर नज़री आया। अगम्म अगम्मड़ा वस्सया अगम्मड़े देस, लोकमात वेखण आया। हथ्थ खूंडी ना भूरी खेस, ख़ाली हथ्थ वखाया। हरि हरि मीता नर नरेश, नर नरायण नाउँ धराया। जुग जुग विछड़े आपे रिहा वेख, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाया। शाह सुल्ताना वड नरेश, मृगेश नाम धराया। किसे ना चले अग्गे कोई पेश, दो जहानां तिन्नां लोकां चौदां हट्टां लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां, उत्भुज सेत्ज खाणी बाणी अल्ला राणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी कोटन ब्रह्मा विष्न महेष, कोटी कोटि बैठे सीस झुकाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि हरि जोत हरि निरँकार, आप आपणा लै अवतार, आप सुहाए बंक दुआर, आपे माता पिता सुत्त दुलार, आपे वरन गोती वस्सया बाहर, अन्दर बाहर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवन्जा अक्खर आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणी वस्त आपणे हथ्थ, हरि साचे आप रखाईआ। सर्ब कला आपे समरथ, अकल कल हो जाईआ। आप चलाया आपणा रथ, आपे रिहा भवाईआ। बवन्जा साल नठ्ठ नठ्ठ, काया चोला इक्क हंढ्ढाईआ। हरिजन साचे दित्ती वथ्थ, सन्त मनी सिँघ इक्क पढ़ाईआ। गुरमुख चरन दुआरे गया ढठ्ठ, पूर्ब लहिणा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साल बवन्जा बावन रूप वटाईआ। साल बवन्जा बावन धार, भेखी भेख वटाया। पंचम मीता पंचम जेठा पंचम होया ख़बरदार, पंचम गया मुख छुपाया। कौड़ा रीठा बण संसार, आपणा रस ना किसे चखाया। गुरमुख विरले लागा मीठा, जिस जन आपणी दया कमाया। आपे ठंडा आपे सीता, अग्नी तत्त आप जलाया। आपे जाणे आपणी रीता, आपणा तन समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। पहला रूप निरँकार निराकार, दूजे सरगुण वेस वटाया ।

४९६

०८

दोहां विच्चों वस्सया बाहर, दोआं लए उपजाया। तिन्ने सिफ़रे कर त्यार, तिन्नां लोकां ख़ाक मिलाया। लोकमात दस दुआर, दस दुआर आपणे हथ्थ रखाया। दोहां जोड़ करे संसार, बीस बीस नाम धराया। बीस सौ हो त्यार, सोहणा रंग रंगाया। बवन्जा धारी चोला पाड़, आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। साल बवन्जा तुट्टा नाता, घर साचे मेल मिलाया। आपे मेला पुरख बिधाता, आपे खेल खिलाया। आपणा खेल आपे जाता, लेखा लेख ना कोए लिखाया। आपणा जाणे आपे बाका, लहिणा देणा रिहा चुकाया। आपणा पर्दा आपे ढाका, आपे मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ दित्ता वर, लोकमात दए वड्याआ। बीस सहँसर हो त्यार, बीस सद जोड़ जुड़ाया। करया खेल पुरख करतार, लोकमात दए तजाया। आपे जाणे आपणा कौल इकरार, आपे पूर कराया। निरगुण जोती हो उज्यार, सरगुण डेरा लाया। ना मरे ना जम्मे विच संसार, हथ्थ किसे ना आया। सुहाए साचा धाम बंक दुआर, घर घर विच आप टिकाया। उप्पर चढ़ सच्ची सरकार, सच तख्त सुल्तान आसण लाया। साचा भूप बणया सच सिक्दार, साचा हुक्म सुणाया। एका बोला इक्क जैकार, एका ढोला गाया। खोल्हे बन्द बन्द किवाड़, सोइम रूप आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द सुणाया। एका शब्द ब्रह्म पारब्रह्म, आपणा आप सुणांयदा। वीह सौ बिक्रमी पुरख अकाल आपणे घर आप प्या जम्म, मात पित ना कोए रखांयदा। आपे घड़े आपे दए भन्न, आपे आप उपजांयदा। आपे बेड़ा रिहा बन्ह, बेड़ा आपणा आप रुढ़ांयदा। आपे भार उठाए कन्ह, आपे पैरां हेठ दबांयदा। आपे जननी जने जन, आपे ज्ञान दृढ़ांयदा। आपे वसे पंज तत्त तन, आपे ख़ाकी ख़ाक रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाम आप दृढ़ांयदा। आपणा नाम आपे धर, आपणी कल वरताईआ। आपणी मरनी आपे मर, आपणे विच गया समाईआ। आपणी अग्नी आपे सड़, आपणा तत्त गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बावन बावन खेल खिलाईआ। पंज तत्त छड्डुया चोला, पारब्रह्म खेल खिलाया। एका गाया साचा ढोला, ढोलक छैणा ना कोए वजाया। एका कंडे तोल्लया तोला, नानक तोला इक्क रखाया। इक्क दुआरे होया गोला, गुरसिख साचा इक्क बणाया। सोहँ शब्द गाए बोला, मैं तूं रहे ना राया। सतिगुर पूरा वस्सया कोला, विछड़ कदे ना जाया। कलिजुग अन्तिम मारया रौला, चारे वरनां दए भुलाया। गोबिन्द तेरा कीता पूरा कौला, सम्बल नगरी डेरा लाया। गुरमुखां अमृत पौहल देवे पौहला, आत्म जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाया। पहले साल वंडी वंड, बीस इक्क वड्याआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, गुरमुख

साजण मेल मिलाया। आपे ढकी नंगी कंड, सति सरूपी पर्दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए रूप आप हो जाया। दूजा तीजा एका रंग, एका नैण दरसाया। चौथे पद मंगी मंग, हरिजन डेरा लाया। पंचम करे खण्ड खण्ड, पंचम दर सुहाया। छेवें घर हरि नर आपे पाए आपणी वंड, आपणा दर सुहाया। सत्तवें सतिवाद हरि ब्रह्मादि, आदि जुगादि सति सरूप समाया। अठवें अड्डां तत्तां वज्जे नाद, एका राग सुणाया। नौ दर फीके होइण विस्माद, नौ दर पन्ध चुकाया। दसवां साजण आपे साज, लोकमात वेख वखाया। इक्क दस यारां करे काज, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाया। नौ दुआर मारे वाज, दसवां दर सुहाया। वीह सद बारां हरि निरँकारा हथ्थ विच लै के साचा ताज, गुरसिखां सीस पहनाया। सतारां हाढ़ी धुर दरगाही दए साचा राज, दरगाह साची धाम सुहाया। साचा करया आपे काज, आप आपणा खेल खिलाया। प्रगट जोत देस माझ, पुरी घनक नाम धराया। सम्मत तेरां खोल्ह्या पाज, साधां सन्तां दए हिलाया। शाह सुल्तानां डुब्बा जहाज़, ना कोई बेड़ा रिहा चलाया। सम्मत चौदां एका इक्की दित्ता दाज, गुरमुख साचे लए प्रनाया। आप तजाई लोक लाज, चारे वरनां मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम जेठ दए वड्याआ। पंचम जेठ सिँघ शेर, शेर सिँघ अख्वांयदा। बवन्जा साल ना बुक्कया रिहा घुप्प घेर, अन्ध अन्धेर मुख छुपांयदा। बावन बावन करया हेर फेर, भेव कोए ना पांयदा। आपे प्रगट्या दूजी वेर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। ना कोई तक्कड़ चढ़ाए वट्टा सेर, गुण अवगुण ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर हरि उज्यारा, आपणा रूप वटाया। नाम खण्डा लै कटारा, लोकमात उठ धाया। आपे वेखे धाम न्यारा, आपे मेल मिलाया। आपे करे प्यार सुत्त दुलारा, गोबिन्द शब्दी वेख वखाया। आपे आपणा कर जैकारा, आपणा नाउँ धराया। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, हँ ब्रह्म पंज तत्त नाउँ धराया। शेर सिँघ शेर मार ललकारा, शाह शेर आप हो आया। विष्नूं रूप कर साकारा, भगवन निरगुण जोत विच जगाया। तिन्नां लोकां वस्सया बाहरा, जै जै जैकार आपणी आपे गाया। ना कोई ओट रक्खी विच संसार, ना इष्ट कोई मनाया। आपे गुरू पीर अवतार, पारब्रह्म आप अख्वाया। आपे निरगुण जोत उज्यार, आपे हर घट जोत निरँजण दीपक रिहा जगाया। आपे शब्द सच्ची धुन्कार, धुन अनाद रिहा वजाया। आपे सर सरोवर अमृत भरे भण्डार, आपे रिहा वरताया। आपे सर्ब बण सिक्दार, आपणा हुक्म चलाया। आपे कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। सन्त भगत जुग जुग विछड़े जाए तार, पिछला कीता पूर कराया। गुरसिख नार नौजवान सदा मुटयार, गुर का जोबन रही हंढाया। सतिगुर पूरा करे शृंगार, सोलां शृंगार इक्क वखाया।

सीस गुंदे पहली वार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नाम पाया कजला धार, निकल कदे ना जाया। हथ्थीं मैंहदी लाल गुलाल, आपणा रंग चढ़ाया। अनहद ढोलक वजाए ताल, साचा ताल सुणाया। साची सखीआं फड़या थाल, गगन मण्डल इक्क वखाया। रवि ससि दीपक बाल, आपणी हथ्थीं टिकाया। आपणे हथ्थ फड़ मसाल, आदि निरँजण लोकमात आप आया। पिछला कौल रिहा पाल, आपणा मेला आप मिलाया। पुरख अकाल मारी आपणी छाल, एका चरन उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां तेरा रंग, दाता दानी सूरा सरबंग, गुरमुखां रिहा चढ़ाया। सम्मत चौदां घर घर फेरा, एका इक्का जोड़ जुड़ाया। पिछला किया हक्क निबेड़ा, अग्गे मार्ग पाया। वसदा रहे काया खेड़ा, जिस जन दर्शन पाया। दो जहानी बन्ने बेड़ा, राए धर्म ना दए सज़ाया। चरन दुआर वखाए खुल्हा वेहड़ा, हरि साचे आप खुल्हाया। गेड़नहारा उलटा गेड़ा, आपणा गेड़ा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नार कर प्यार, घर साचे रिहा सुहाया। गुरमुख नारी सच सवाणी, घर साचे आप सुहाईआ। दर घर बणी साची राणी, साचे शाहो नाल प्रनाईआ। मिल्या मेल हाणीआं हाणी, लोकमात वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी सर्ब कुरलाणी, बिरहों पीड़ लगाईआ। भरमे भुली चारे खाणी, चारे बाणी ना कोए पढ़ाईआ। नाता तुट्टा पद निरबाणी, परम पुरख ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सच्चे लए वर, सोभावन्ती नार इक्क वखाईआ। सोभावन्ती नार सुहागण, हरि हरि कन्त हंढाया। पुरख अबिनाशी बण वैरागण, आपे वेखण आया। गुरमुख विरले सन्त जागण, सृष्ट सबाई रिहा सवाया। ना कोई दिसे नाल लागण, ना कोई रक्खया रही कराया। ना कोई पल्ले बद्धा दाजन, ना कोई भार उठाया। देस माझ मारे वाजण, अंक सहेलड़ीआं लए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण कर प्यार, साचा सगन मनाया। उठ सवाणी जगत अनभोल, हरि सतिगुर आप उठांयदा। कलिजुग लैण आया तैनूं तेरा तेरे कोल, तेरा अंग रखांयदा। त्रिलोकी आपे रिहा फोल, आप आपणा पर्दा लांहयदा। तेरे मन्दिर वजाए ढोल, सोहँ डग्गा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप सुणांयदा। गुरसिख नारी लै अंगड़ाई, रो रो नीर वहाया। इक्की सिक्ख रहे कुरलाई, चरन ध्यान लगाया। कलिजुग अग्नी इक्क तपाई, पंज तत्त लम्बू लाया। ठंडा ठार ना कोए कराई, धीरज धीर ना कोए धराया। माया ममता मोह रहे सताई, काम क्रोध हल्काया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, एका शब्द सुणाया। एका शब्द हरि जणा, आपणी दया कमांयदा। तेरी प्यास दए बुझा, तेरी तृखा मिटांयदा। तेरा रंग दए वखा, तेरे रंग रंगांयदा। तेरा संग दए निभा,

सगला संग तजांयदा। तेरे बस्त्र तन दए सजा, लक्ख चुरासी ख़ाक रुलांयदा। तेरी अल्फ़ी तेरे गल दए पा, एका चोली रंग रंगांयदा। तेरा हल्फ़ आप रिहा उठा, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख नारी बुझाए प्यास, आपे होए दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। गुरसिख तेरी प्यास बुझौणी, हरि साचे रचन रचाईआ। वीह सद पन्दरां खेल खिलौणी, गुरमुखां दए वड्याईआ। निरगुण जोत इक्क जगौणी, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। ब्रह्म पुरी हरि खेल खिलौणी, शिव पुर रचन रचाईआ। करोड़ तेतीस इक्क सुणौणी, सुरपति राजा इन्द जगाईआ। चौदां लोक चोग चुगौणी, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ खण्ड रचन रचौणी, आप आपणी करे किरत कमाईआ। सत्तां दीपां एका धार बन्हौणी, एका शब्द करे कुड़माईआ। दो सत्त छे एका तन्द बंधौणी, वीह सद पन्दरां वड वड्याईआ। इक्की सिक्खां हरि साची जंञ चढ़ौणी, साचा सगन मनाईआ। अट्ठ सट्ठ तीर्थ फेरी पौणी, अठसठ दिवस करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। अठसठ तीर्थ फेरा पाया, अठसठ खेल खिलांयदा। मन्दिर मट्ठ वेख वखाया, गुरदुआरे संग रलांयदा। पिछला लेखा आपणी झोली पाया, लहिणा मूल ना कोई वखांयदा। गंगा जमना सुरस्ती चरनां विच रखाया, आपे आपणी सेवा लांयदा। रविदास चमारा इक्क उठाया, सज्जा हथ्थ उठांयदा। तिन्नां गाना आप बन्न्हाया, आपणा बंधन पांयदा। गुरमुख विचोला इक्क रखाया, दो जहानां फेरी पांयदा। उच्चे घाट सोहला गाया, सोहँ शब्द अल्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नीर जगत सीर आपे खिच वखांयदा। रविदास खिच्ची डोर, गुरमुख वड वड्याईआ। गंगा सुरस्ती जमना तिन्ने अग्गे लईआं तोर, प्रभ चरन दुआर बहाईआ। रो रो नेत्र पायण शोर, दिन दिहाड़े रही कुरलाईआ। इक्की सिक्खां वखाया आपणा ज़ोर, आपणे अंग रहे हलाईआ। चौथे युग जगत राणी फड़ बांहों अग्गे लाई तोर, ना सके कोए छुडाईआ। पुरख अबिनाशी चढ़या साचे घोड़, वाग सिक्खां हथ्थ फड़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी रिहा होड़, एका घोड़ा आप दौड़ाईआ। बिन हरि लग्गी ना निभे किसे तोड़, कलिजुग नाता दए तुड़ाईआ। जूठ झूठ आपे देवे रोड़, गुरमुख रहे धक्का लाईआ। इक्की सिक्खां फड़े अठसठ चोर, तिन्न तिन्न इक्क इक्क हथ्थ फड़ाईआ। पंजां आपे रिहा मरोड़, एका वटणा आपणे हथ्थीं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सद पन्दरां खेल कर, खेलणहार भेव ना आईआ। जमना सुरस्ती इक्क दुआरा, एका दर सुहाया। धुरदरगाही साचा लाड़ा, आपे लै के आया। इक्की सिक्खां ला अखाड़ा, सोहँ मंगल गाया। सगन मनाए रविदास चमारा, गुरमुख वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन मनाया।

साचा हुक्म हरि निरँकार, तिन्नां रिहा सुणाईआ। गंगा आपणी कढ्ढ धार, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। सुरस्ती अन्दरों आउणा बाहर, तेरा पर्दा दए चुकाईआ। जमना खिलाउणा अद्धविचकार, हथ्थ कटोरा इक्क वखाईआ। तिन्नां प्याला भर भण्डार, आपणी मंग मंगाईआ। कलिजुग लहिणा उतरया पार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुरसिख नार रही पुकार, दिवस रैण बिल्लाईआ। जगत तृष्ना करे खुआर, ना सके कोई बुझाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, गंगा जमना सुरस्ती खिच्चे प्यार, गुरमुख तेरे आत्म अन्तर एका रस चुआईआ। गंगा सुरस्ती जमना धार, गुरसिख तेरे हिरदे आप टिकाईआ। लक्ख चुरासी होए खुआर, साचा सीर ना कोए प्याईआ। करनी करता करे विचार, पूर्ब लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोदावरी चरनां हेठ दबाईआ। गोदावरी तेरा सच मलाह, हरि साचा आप अख्वाया। गुरमुखां प्याया एका जाम बेपरवाह, तेरा रूप वटाया। तेरा लहिणा दित्ता चुका, गुरमुखां झोली पाया। अन्तिम कन्ढा वेख्या आ, हरी दुआर चरन छुहाया। हरि दुआर हरि जोत जगा, साची संगत लए तराया। अद्धा चरन विच टिका, अद्धा बाहर रखाया। रविदास चमारा नेत्र नैण दए वखा, जगत कसीरा तन्द बंधाया। मांवां पुत्तरां मेल मिला, लहिणा दए मुकाया। बस्त्र गहिणा तन छुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगती भगत दए वड्याआ। इक्क कसीरा कंगण गहिणा, रविदासे वंड वंडाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे नैणां, वड दाता बेपरवाहीआ। किसे ना रक्खे कोए लहिणा, देवे हरि चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रविदास चमारे मेल मिलाईआ। रविदास चमार गंगा नाता, हरि हरि जोड़ जुड़ाया। चार वरनां एका ज़ाता, एका रूप समाया। एका सेजा एका खाटा, एका आसण रही वछाया। एका अमृत एका बाटा, एका रही प्याया। एका तीर्थ एका ताटा, इक्क किनारा आप उपाया। एका वेखे अठसाठा, आप आपणा चरन छुहाया। आपे लोकमात खोल्हे हाटा, आपे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी धार आप चलाया। गंगा तेरा खिच्चया सीर, नीर रहिण ना पाईआ। शब्द निराला वज्जा तीर, तुरीआ धीर ना कोए धराईआ। गुरमुख तेरी बन्न्हे बीड़, अगला घर खुल्हाईआ। बवन्जा साल पंज तत्त अख़ीर, कलिजुग लेखे लाईआ। पन्दरां साल चोटी चढ़ अख़ीर, आपणा मुख छुपाईआ। इक्की सिक्खां बन्न्हे बीड़, साची सिख्या इक्क समझाईआ। अमृत लिआंदा ठंडा नीर, गुरसिखां अग्ग बुझाईआ। सम्मत सोलां औणी भीड़, हरि आपणा वेस वटाईआ। पहली चेत्र तोड़ ज़ंजीर, एका नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद सोलां खेल खिलाईआ। बवन्जा साल पंज तत्त, काया तत्त हंढाया। सोलां साल एका

तत्त, गुरमुख साजण आप बंधाया। बवन्जा सोलां होए अठसठ, अठसठ पन्ध मुकाया। पंचम जेठ होए भट्ठ, साचा सति ना कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां आपणा चोला आप बदलाया। पंचम जेठी चोला छड्ड, निरगुण जोत जगांयदा। पन्दरां साल आपणे आपे कढ्ढ, आपणा पर्दा आप रखांयदा। साल सोलवें होया वड्डा वड, वड वड्याई आप उपजांयदा। गुरसिख साचे कलिजुग अग्नी विच्चों कढ्ढ, आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटांयदा। हरि जी हरि वेस वटाया, लोकमात रुशनाईआ। आपणा सिँघासण आप तजाया, भेव कोए ना पाईआ। सम्मत चौदां बीस सद पंचम जेठ मनाया, उलटा मुख कराईआ। वीह सद पन्दरां पंचम जेठ हरिसंगत संग रलाया, आपणा सिँघासण लए उठाईआ। घर बार आपणा दए तजाया, आपणी वस्त ना कोए वखाईआ। साल पन्दरां वीह सद गुरसिखां सेवा रिहा कमाया, अठसठ फेरी गया दुहाईआ। वीह सौ सोलां पंचम जेठ दिवस सुहाया, चार युग कोई लेखा ना सके जणाईआ। पहला तत्त आपणा पंज भेट चढ़ाया, दूजी जोत करी रुशनाईआ। तीजे लहिणा देणा जगत चुकाया, चौथे घर मेला बेपरवाहीआ। पंचम मीता नज़री आया, छेवां घर इक्क सलाहीआ। सति सतिवादी खेल खिलाया, अठसठ करे कुड़माईआ। नौ दर नाता दए तुड़ाया, दसवां आप सुहाईआ। इक्क ग्यारां डण्डा आप चढ़ाया, बारां रवि ससि रहे शरमाईआ। तेरां तेरां तोल तुलाया, एका कंडा हत्थ उठाईआ। चौदां चौदां भार उठाया, गुरसिख हौले भार रखाईआ। पन्दरां अन्दरां डूँघी कन्दरां वेख वखाया, अट्ठां सट्ठां वेख वखाईआ। सम्मत सोलां राह तकाया, प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। वड सुभागी पंचम जेठ आया, हरिसंगत दए वधाईआ। उहला पर्दा ना कोए रखाया, ख़ाली हत्थ रिहा वखाईआ। धुर दी वस्त हरिसंगत तेरी झोली पाया, एका सोहँ नाम जपाईआ। जोग अभ्यास ना कोए कराया, ना कोई नैण मुंधाईआ। तन अशनान ना कोई वखाया, चरन धूढ़ इक्क वखाईआ। अमृत साचा जाम प्याया, अठसठ वरोल धराईआ। आपणा तख्त ताज तजाया, ना कोई घोड़ा बाज उडाया, ना कोई राजन राज अख्वाया, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गुरसिखां अग्गे सीस झुकाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, ना दीसे किसे कोए सहाया, शाह सुल्तान ना सके कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंजम जेठ दिवस सुहाईआ। पंचम जेठ ना करनी नांह, हरि साचा सच सुणांयदा। हरिसंगत हरि तेरी फड़नी बांह, तेरा अग्गा पिच्छा आपणा आप रखांयदा। गुरमुख तेरी साची थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा वेस आप वटा, गुरसिखां अग्गे सीस झुकांयदा। आपणा सीस हरि जगदीस आपणी हत्थीं ला, गुर संगत तेरे चरनां विच रखांयदा।

सम्मत सोलां करे सच न्याँ, पिछला लहिणा कोए रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम जेठ रुत्त सुहांयदा। धन्न भाग पंचम जेठ, लोकमात भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। सतिगुर पूरा हरिसंगत तेरी आया साया हेठ, तेरा हथ्थ आपणे सिर टिकाईआ। लक्ख चुरासी रुल्ले वड वड सेठ, किसे अन्न हथ्थ ना आईआ। प्रभ भन्नणहारा कौड़े रेठ, जूठा झूठा भाण्डा कोए रहिण ना पाईआ। आपे जाणे आपणा अगेत पछेत, आपे आपणी खेल खिलाईआ। आप तपाए बालू रेत, जल धारा आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा साचा वर, रविदास चमारा इक्क वड्याईआ। रविदास चमार गुरमुख पछाण, जन्मी जन्म दवाया। लोकमात मिले साचा माण, दरगाह साचा थान सुहाया। सच भूमका सच अस्थान, हरि साचे चरन छुहाया। सतिजुग तेरा सच मकान, सति सतिवादी दए उपाया। सत्त रंग चड़े इक्क निशान, गुरमुखां वड वड्याआ। गुरमुख तेरी चलदी रहे दुकान, नाम साचे हट्ट विकाया। हरि जी दित्ती धुरदी खाण, तोट रहे ना राया। बैठा रहे इक्क बबाण, एका रिहा उडाया। सज्जण मिल्या शाह सुल्तान, घर साचे मेल मिलाया। सतिगुर पूरा हरि प्रधान, भरम गढ़ दए तुड़ाया। गुरमुख देवे चरन ध्यान, सच दुआरे आप चढ़ाया। सिँघ भगवान सुणणा ला कर कान, सम्मत सोलां गुरमुखां रिहा तराया। पूजा पाठ ना कोई देवे ज्ञान, कर किरपा मेल मिलाया। साध सन्त जीव जन्त कलिजुग अन्त सर्ब पछतान, निरगुण रूप दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाई आपणी बणत, वेद पुराण ना किसे गाया। गुरमुख दुआरा धन्न धन्न, धन्न हरि नामा पाया। हरिजन चढ़या साचा चन्न, गुर पूरे आप प्रगटाया। इक्की सिक्खां बेड़ा आपे बन्नू, तीर्थ तट्टां आप फिराया। लिखारी लेखा जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। भाण्डा भरम कलिजुग भन्न, माया ममता मोह तजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां बदलया चोला, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा तज, हरिजन सेजा चढ़या भज्ज, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। हरिसंगत तेरी सच अटारी, हरि साचे आप उपाईआ। आप जगाए जोत निरँकारी, दीवा बत्ती ना कोए रखाईआ। मिटे रैण अन्ध अँध्यारी, नूरो नूर करे रुशनाईआ। होई सुभागण सोभावन्ती नारी, घर मिल्या साचा माहीआ। चरन कँवल कँवल चरन जाए बलिहारी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लेखे लाए केस सीस जगदीस दाढ़ी, जो आए चल सरनाईआ। मूंड मुंडाए जाए तारी, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ना कोए जणाईआ। धन्न सतिगुर धन्न गुर धन्न गुरमुख धन्न गुरसिख जो रसना रहे उचारी, एका एक लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां खेल कर, सम्मत

पन्दरां अन्दर वड़, सम्मत सोलां रूप वटाईआ। दाता देवणहार भण्डार, सम्मत सोलां वड वड्यांअदा। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, पतित पापी आप तरांयदा। कोई ना डुब्बे अद्धविचकार, जो जन दर्शन पांयदा। लक्ख चुरासी गेड़ नवार, आपणा लड़ फड़ांयदा। गुरसिख चारों कुन्ट कहिणा ललकार ललकार ललकार, कल कल्की वाला आंयदा। निहकलंक लै अवतार, डुब्बदे पत्थर पार करांयदा। आपणा आप सिक्खां उत्तों वार, सीस जगदीस भेट चढ़ांयदा। आपणी जोत गुरसिखां अन्दर वाड़, आपणा घर सुहांयदा। गुरसिखां कट्टे अग्नी तत्ती हाढ़, आपणा तन जलांयदा। हरिसंगत दरगाह साची देवे वाड़, दूसर संग ना कोए रखांयदा। गुरसिखां कोलों मंगण मंग बण भिखार, ब्रह्मा विष्न शिव राह विच बैठे ख़ाली झोली सर्ब वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द नाउँ रखांयदा। गोबिन्द गुर सतिगुर पूरा, धुर ज़ामन आप अख्वाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, साचा रंग चढ़ाया। चतुर सुघड़ बणाए सिँघ गिरधारा मूढ़ा, कोटन कोटि ज्ञानी ध्यानी इश्नानी तुल ना कोए तुलाया। सतिजुग तेरी वखाए निशानी, पंचम सीस ताज टिकाया। इक्की सिक्खां मारे कानी, आर पार आप वखाया। होए दाता गुण निधानी, गुण देंदा दिस ना आया। हरि का दिसे ना कोए सानी, ना कोए दूसर रूप वटाया। गुर पीर अवतार साध सन्त लक्ख चुरासी पंज तत्त दिसे ख़ाली, थिर कोए रहिण ना पाया। अकाल मूर्त जोत नूरानी, ना मरे ना जाया। आपे आए आपणे विच मैदानी, आपे बैठा मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां हथ्थीं बद्धे साचे गानी, छब्बी पोह दिवस सुहाया। अठसठ तीर्थ हरि हरि चित, गुरसिखां करी लड़ाईआ। छब्बी पोह वखाई साची थित, साची ख़ुशी मनाईआ। दीन दयाल हरि कृपाल सतिगुर पूरा करे साचा हित, साचा सगन मनाईआ। खेले खेल नित नवित्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरे तन्दन हथ्थ बंधाईआ। एका तन्दन बंध्या तन्द, हरि साचे सगन मनाया। लक्ख चुरासी तुटयां फंद, गुर चरनां जोड़ जुड़ाया। लेखा चुकया गाउणा बत्ती दन्द, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गाया। एथे ओथे दो जहानां आप मुकाए पन्ध, दूर दुराडा नेड़े आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ वीह सद सोलां आपे होए बख्शंद, बख्शणहारा दया कमाया।

पिछली बख्शे कीती भुल्ल, हरिसंगत दया कमांयदा। सतिगुर पूरा पाए मुल्ल, कीमत करता आप चुकांयदा। सतारां हाढ़ सच दरवाज़ा एका जाणा खुल्ह, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ांयदा। गुरसिख ना जाणा डुल, दे मति आप समझांयदा। तोलण

आया पूरा तोल, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी लए फोल, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। सम्मत सोलां सोलां कल गुरसिख तेरे प्रेम अन्दर दए रोल, गुरसिख सोलां कल धारी आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे आप रखांयदा। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां, हरि हरि रंग रंगावणा। गुरमुखां दस्से सच विहारा, सतिजुग साचे मार्ग पावणा। देवे दरस घर घर घर बारा, घर घर विच दीप जगावणा। मदिरा मास चाह जो जन लाए रसन दुआरा, दरगाह धाम ना कोए वखावणा। धृग धृग धृग जीवण संसारा, जिस जन गुर तों मुख भुवावणा। अन्तिम बेड़ा डुब्बे विच मँझधारा, किसे ना पार करावणा। मानस जन्म मिल्या एका वारा, दूजी वार ना किसे वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खण्डा आपणे हथ्थ, शब्द धार हो उज्यार, नर निरँकार लोकमात चमकावणा। मदिरा मास मुख लग्गे चाह, हरिसंगत विच रहिण ना पाईआ। हरिसंगत धक्का देणा ला, मनमुक्ख कोए दिस ना आईआ। इक्की सिक्ख बणे गवाह, ना सके कोए मिटाईआ। सत्त सागर मस बण रहे लिखा, लेखा लिख्त ना कोए मुकाईआ। इक्की खण्डे इक्कीआं हथ्थां विच दए चमका, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। शब्द दीवार दए बणा, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताईआ।

✪ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ ✪

एकँकार सतिनाम करता पुरख, हरि हरि आप अख्वाईआ। निरभउ निरवैर अकाल मूर्त ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। अजूनी रहित आदि जुगादि जुग जुग ना सके कोई परख, मात पित भेव ना राईआ। अबिनाशी करता आदि निरँजण जन भगतां करे आपणा तरस, लोकमात वेख वखाईआ। सति सन्तोख धीरज जत, आत्म अन्तर अमृत मेघ देवे बरस, अमृत झिरना निझर रस काया मन्दिर अन्दर आप झिराईआ। दो जहान चौदां लोक त्रैभवण अवण गवण मेटे हरस, चरन कँवल बख्शे सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार निराकार निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप निर्धन सरधन रूप वटाईआ। निर आकार निरवैर मूर्त अकाल, अकल कला अख्वाईआ। परम पुरख परखोतम दीन दयाल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चतुर्भुज मोर मुकट लाल गुलाल, अनभव प्रकाश रखाईआ। आदि जुगादि अवलड़ी चाल, जुग करता वेस वटाईआ। धुर दरगाही इक्क दलाल, खण्ड ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। रवि

ससि फल लग्गे डाल्, कोटन कोटि रहे लटकाईआ। जोत ज्वाला अग्नी बाल, एका तत्त वखाईआ। जन भगतां मेला हरि गोपाल, हरी हरि आप कराईआ। सुत्त दुलारे साचे लाल, सतिगुर पूरा गोद उठाईआ। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, काल महांकाल सीस झुकाईआ। करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक हथ्थ वड्याईआ। देवणहारा सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना इक्क लुटाईआ। बहाए धर्म सच्ची धर्म साल, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। नाम तलवाड़ा वज्जे ताल, धुन अनादी सहिज सुभाईआ। दीवा बाती एका बाल, सञ्झ सवेर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगाईआ। जागरत जोत हरि नरायण, नर हरि आप जगांयदा। नर हरि आपे वेखे आपणे लोचण नैण, नेत्र आपणा आप खुल्हांयदा। साजण मीत सज्जण सैण, नित नवित्त साचा हित आप कमांयदा। पूर्ब चुकाए लहिणा देण, जरम कर्म धर्म वेख वखांयदा। सखा सखाई मात पित भाई भैण, पिता पूत नाउँ धरांयदा। नार कन्त सन्त भगत भगवन्त, सतिगुर साचा थान सुहांयदा। जीव जन्त महिमा अगणत, आदि अन्त लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। गुरमुख सुभाग सोभावन्त, घर साचे साचा मंगल एका गांयदा। जननी जन बणाए बणत, जन हरि हरि संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग करनी करता आपणी कल वरतांयदा। करनहार पुरख समरथ, आदि जुगादी एकँकारया। शब्द चलाए अनादी रथ, रथ रथवाही दिस ना आ रिहा। नाम अनमुल्ला साची वथ्थ, गुरमुख विरला झोली डाह रिहा। चरन भरवासा धीरज जत सीत हठ, अठसठ मूल चुका रिहा। नाम निधाना पल्ले गट्ठ, शब्दी तन्दन बंधा रिहा। त्रैगुण माया करे अकट्ठ, हरिजन चरनां हेठ दबा रिहा। पुरख अकाला एका पूजा एका पाठ, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ा ल्या। जोत ज्वाला आदि शक्ति लिलाट, साची हाटी हट्ट वखा ल्या। सच सुहजंणी आदि निरँजणी एका खाट, पावा चूल ना कोई बणा ल्या। अंगण बस्त्र ना जाए पाट, सतिगुर पूरे तन पहना ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटा ल्या। वेस अनेक आदि निरँजण, अलख अगोचर भेव कोई ना पांयदा। जीआं दाता दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर वेख वखांयदा। नेत्र ज्ञान नाम निधान अंजन, गुर गुरमुख नेत्र पांयदा। धूढ़ इशनान चरन मजन, माया ममता मोह चुकांयदा। निर्धन मेला साचे सज्जण, सच भूमका अस्थान सुहांयदा। बिरहों तीर निराले अणयाले वज्जण, मुक्खी सुखी सुख उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आप आपणा नूर दरसांयदा। नूर उजाला हरि गोपाला, आपणी दया कमाईआ। आपणा दर आपे भाला, घर आपणा वेख वखाईआ। ना कोई दूसर संग दलाला, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। आपे वस्सया पंज तत्त खाला, तन माटी आपे ख़ाक रलाईआ।

आपे वस्सया हो निराला, हर घट आपे रिहा समाईआ। आपे देवे गुरमुखां आत्म अन्तर प्रेम उछाला, परम पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, परम हँस सहँस सहँसर सीस झुकाईआ। सहँस बंस सीस झुका, नैनण नैण शरमाईआ। गुरसिख तेरा तक्कण राह, कोटन कोटि रहे कुरलाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्म उपा, ब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। शंकर गदा इक्क चला, त्रिसूल रिहा भवाईआ। विष्नूं रिजक दए सबा, देवणहार अख्वाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप उपाए आप आपणे विच लए समा, दिस किसे ना आईआ। सन्त सुहेले आदि जुगादी लए जगा, आपणा लेखा आप मुकाईआ। शब्द अनादी दस्से राह, धुर दी बाणी धीर धराईआ। गुर पीर अवतार आप अख्वा, आपणा मार्ग आप चलाईआ। कोटन कोटि सेवा ला, चाकरी चाक भवाईआ। शब्द अगम्मी हुक्म सुणा, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। मेहरवान भेव ना रा, दया निध आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वर घर आपणे सोभा पाईआ। वर घर साचा सच महल्ला, अकल कला उपाया। पुरख अबिनाशी बैठ अकल्ला, जल थल महीअल वेख वखाया। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा रूप वटाया। सच सिँघासण पुरख अबिनाशी एका मल्ला, थिर घर वेस धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दुआरे आपे फलया आपे फुला, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। गुरमुख सज्जण साचा फुल, गुर सतिगुर आप महिकांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, करता कीमत आपे पांयदा। लक्ख चुरासी रहे अनभोल, भगवन भेव ना कोई रखांयदा। जिस जन रक्खे आप अडोल, जगत जहान ना कोई डुलांयदा। सखी सज्जण वसे कोल, नाम प्याला जाम प्यांअदा। हौली हौली आपे बोल, आपणा शब्द आप सुणांयदा। काया कवरी पर्दा खोल्ह, भरमी भरम तुड़ांयदा। वसणहारा काया चोल, पंज तत्त चोला आप बदलांयदा। धरनी धरत धवल वज्जे ढोल, मृदंग तरंग सूरा सरबंग आप वजांयदा। गुरमुख होए कल सोल, अनक कला आप अख्वांयदा। आपे करे पूरा कौल, आपणा कीता आप निभांयदा। हरि का भाणा ना मिटे रत्ती चौल, लकीर तकदीर तकसीर ना कोई गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि वर घर नर नरायण वेख वखांयदा। नर नरायण हरि नारी कन्ता, निरगुण सरगुण संग निभाया। पुरख अबिनाशी बणाए बणता, रूप रंग रेख ना कोई जणाया। आपे चाढ़े रंग बसन्ता, रंगण रंग एका रंगाया। जगत तोड़े हउमे हँगता, जूठ झूठ गढ़ रहिण ना पाया। दर दरवेश नर नरायण आपे होए मंगता, गुरमुख सज्जण शाह उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मलाह एका बेड़ा रिहा चलाया। एका बेड़ा आपणा बन्ह, आपे रिहा चलाईआ। लोआं पुरीआं कहिण धन्न धन्न, ब्रह्मण्ड

खण्ड नौ सत जेरज अंड वज्जे वधाईआ। मंगण भिच्छया सूरज चन्न, मण्डल मण्डप झोली डाहीआ। करे पुकार छप्परी छन्न, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रहे कुरलाईआ। गण गंधर्ब लायण कन्न, किन्नर यच्छप राग अलाईआ। धरत धवल देवे डन्न, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा जाए मन्न, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। हउमे हँगता कढ्ढे तन, त्रीया मति ना कोई रखाईआ। सति सतिवादी बन्ने गन, साचा सगन इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवत देव सुर नर गण गंधर्ब आपणा दर रहे तजाईआ। आपणा गया हरि पाया, हर घर वज्जी वधाईआ। लहिणा देणा आपणा भर ल्या, लिख्या लेख झोली पाईआ। गोबिन्द तेरा भाणा सहया, हरि गोबिन्द रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण वज्जी वधाईआ। निरगुण नूर हरि निरँकार, सरगुण विच समाया। गुरमुख सज्जण मीत मुरार, कर किरपा मेल मिलाया। अस्व घोड़ा आप श्रृंगार, सोलां कलीआं आसण लाया। चारे रासां हरि करतार, आपणे हत्थ रखाया। चारे दिशा पावे सार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाया। चारे जुग दए हुलार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लेखे लाया। चारे खाणी आए हार, चार चारे फोल फोलाया। चार यारी हाहाकार, चौथे घर ना कोई सुहाया। चार वरन दर दर भिखार, हरि भिच्छया कोई ना पाया। गुरमुखां मेला विच संसार, कलिजुग अन्तिम आप कराया। शाहो भूपी शाह सवार, शाह सुल्ताना फेरा पाया। फड़ फड़ बांहों दए हुलार, हक्क हकीकत दए जणाया। इक्क किनारा दस्से पार, अद्धविचकार ना कोई रुढ़ाया। राए धर्म ना करे खुआर, लक्ख चुरासी फंद कटाया। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, गुरमुख सज्जण लए बहाया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, त्रैगुण मढ्ढ ना कोई तपाया। जूठ झूठ ना कोई अखाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काया। आपे घड़या आपणा घाड़, आप आपणी बणत बणाया। हरिजन साचे अन्दर वाड़, आपणी हत्थीं कुण्डा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, हरिजन हरि रंगांयदा। आत्म परमात्म एका मंग, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। साचे तख्त सच सुल्तान आप सुहाए सच पलँघ, साची सेजा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, खेलणहार खेल खिलांयदा। खेल अखेल हरि हरि मेल, हरि हरि वेख वखाया। गोबिन्द गुर गुरू गुर चेल, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। घर साचे दर साचे चढ़या साचा तेल, सतिगुर पूरे सगन मनाया। आपणी जोती आपे करया मेल, जोती जोत आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व रूप आप समाया।

✪ २१ जेठ २०१६ बिक्रमी ऐम ऐल सी चेला सिँघ दे घर जम्मू शहर वज़ारत रोड ✪

निरगुण जोत हरि निरँकार, एका एक एकँकारया। पुरख अकाल भेव न्यार, लेखा लेख ना कोई लिखा रिहा। आदि जुगादी खेल अपार, जुग जुग वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर उपजा रिहा। निरगुण दाता बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा बण मलाह, आप आपणी धार चलांयदा। आप आपणा जाणे राह, आप आपणा मार्ग लांयदा। आप आपणा जपाए नाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत डगमगांयदा। निरगुण नूर आदि निरँजण, एका एक उपजांयदा। अबिनाशी करता साचा सज्जण, हरि हरि नाउँ धरांयदा। आपणा करे आपे मजण, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वांयदा। निरगुण दाता पुरख अबिनाशी एका एक अख्वाया। साचे मण्डल पावे रासी, दिस किसे ना आया। खेले खेल पृथ्मी आकासी, आप आपणी जोत जगाया। घट घट अन्दर रक्खे वासी, लक्ख चुरासी आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे रुशनाया। एका नूर नूर उजाला, हरि आपणा आप उपांयदा। आपे वसे सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचा इक्क सहांयदा। सदा सहाई सगला संग आपे चले आपणी चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच उपांयदा। निरगुण मेला निरगुण चेला, निरगुण गुर अख्वाया। निरगुण सतिगुर सज्जण सुहेला, निरगुण खेल खिलाया। निरगुण वसे इक्क अकेला, दिस किसे ना आया। निरगुण जाणे आपणा वक्त वेला, वेद कतेब ना कोई लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत रुशनाया। जोती नूर हरि उपा, जोती नूर उपाईआ। आपणा मन्दिर आप सुहा, थिर घर बैठा बेपरवाहीअ। नूरो नूर डगमगा, एका एक खेल खिलाईआ। सति सरूपी सहिज सभा, घर साचे सोभा पाईआ। दूसर कोई दिसे ना थाँ, ना कोई दर वखाईआ। ना कोई नगर ना ग्रां, ना कोई महल्ल वखाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भ्रा ना कोई जणाईआ। ना कोई देवे ठंडी छाँ, सीस हथ्थ ना कोई टिकाईआ। ना कोई करे कराए न्याँ, शाह हकीर ना कोई निआईआ। आपणी बणत आप बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण दाता पुरख अगम्म, आदि जुगादि समाया। ना मरे ना पए जम्मू, पंज तत्त ना कोई रखाया। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, पारब्रह्म वड वड्याआ। गगन पताल रखाए बिन बिन थम्म, आकाश प्रकाश आप समाया। सेव लगाए रवि ससि सूरज चन्न, मण्डल मण्डप बन्न्हण पाया। लोआं पुरीआं बेड़ा बन्न्ह, चौदां लोकां हट्ट खुल्हाया। एका राग सुणाए कन्न, धुन अनादी आप अल्हाया।

ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, थिर घर साचे आसण लाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जननी किसे ना जणया जन, आपणी गोद आप सुहाया। त्रैगुण मेला कोई ना तन, तत्व तत्त ना कोई निभाया। ना घड़े ना देवे भन्न, घड़न भन्नणहार बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धराया। अबिनाशी करता हरि हरि मीता, एका पुरख सलाहीआ। आदि जुगादी रहे अतीता, रूप अनूप वेस वटाईआ। ना ठंडा ना दिसे सीता, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। परम पुरख प्रभ मीतन मीत पतित पुनीता, पतित पावण नाउँ धराईआ। आपे हस्त आपे कीटा, ऊँच नीच आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी रीता, ना कोई दूसर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण रूप हरि करतार, अकल कला अख्वांयदा। खेले खेल अपर अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, थिर घर आसण लांयदा। निरगुण जोत जगे अपार, दीवा बाती ना कोई वखांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह सुल्तान आप हो जांयदा। राज राजान वड सिक्दार, साचा ताज सीस टिकांयदा। ना कोई दिसे दर दरबार, दर दरवेश ना कोई वखांयदा। इक्क अकल्ला कर पसार, एकँकारा खेल खिलांयदा। निरँकारा निरगुण बन्ने धार, सरगुण रूप ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल आप अख्वांयदा। पुरख अकाल अकाल मूर्त, आपणी कल वरताईआ। शब्द अनादी साची तूरत, अगम्म अगम्मड़ी आप उपजाईआ। जोत नुरानी नूरो नूरत, नूर नुरानी डगमगाईआ। आपणी आसा आपे पूरत, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। आपे नेड़े आपे दूरत, आप आपणा घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि साचे आप उपाया। निरगुण बैठा इक्क अकल्ला, जोती नूर डगमगाया। सच सिँघासण आपे मल्ला, आप आपणा वेख वखाया। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा सच दरबारा, हरि साचे बणत बणाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनारा, चार दिवार ना कोई रखाईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर ठांडा सति दुआरा, सति पुरख वज्जे वधाईआ। गावत गाए गावणहारा, आप आपणी सिफ्त सलाहीआ। वज्जे ताल इक्क तलवाड़ा, हरि साचे आप वजाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह लाए अखाड़ा, आप आपणा बंक सुहाईआ। पुरख अबिनाशी सोहे लाड़ा, दर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण पुरख बिधाता, थिर घर डेरा लांयदा। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, वरन गोत ना कोई बणांयदा। ना कोई दिवस

५१०
०८

ना कोई राता, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। ना कोई पिता ना कोई माता, पूत सपूत ना गोद उठांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, इक्क अकल्ला वेस वटांयदा। आपणे मन्दिर आपे मारे झाता, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणी देवणहारा दाता, दाता दानी आप हो जांयदा। आप जणाए आपणी गाथा, आप आपणा शब्द अल़ांयदा। सर्ब कला आपे समराथा, सति पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र आप दृढ़ांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा बंक सुहांयदा। थिर घर साचा साचा बंक, हरि सज्जण आप सुहाया। ना कोई राउ ना कोई रंक, ऊँच नीच ना कोई वखाया। एका शब्द एका जोती एका मारनहारा डंक, एका एक रिहा सुणाया। एका खेले खेल बार अंक, अकल कलधारी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा सच दरवाज़ा, हरि साचा आप खुल़ांयदा। निरगुण नूर ग़रीब निवाज़ा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी मारे आपे अवाज़ा, आप आपणा राग सुणांयदा। आपणा रचया आपे काजा, शब्द सुत्त आप उपजांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां राजन राजा, शाहो भूप वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आप निवाजा, सो पुरख निरँजण भेव ना आंयदा। आपणी रक्खे आपे लाजा, आप आपणा रूप धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव साजण साजा, त्रै त्रै खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर डगमगांयदा। पारब्रह्म प्रभ ब्रह्म उपा, आपणी कल वरताईआ। विष्नूं वंसी वेस वटा, आपणा नाउँ धराईआ। शिव शंकर लेखा लए लिखा, आप आपणी गणत गणाईआ। जोती जोत जोत जगा, दिवस रैण डगमगाईआ। रवि ससि आप उपजा, मण्डल मण्डप होए सहाईआ। चौदां लोकां दर खुल्ा, चौदां हट्टा वेख वखाईआ। त्रैगुण माया बणत बणा, त्रै त्रै धार चलाईआ। पंचम मीता सहिज सभा, पंचम मोह जुड़ाईआ। आप आपणा जोड़ जुड़ा, ब्रह्मा वेता सेवा लाईआ। लक्ख चुरासी बणत बणा, घट घट रिहा समाईआ। लोकमात वेख वखा, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता वड वड्याईआ। निरगुण दाता हरि निरँकार, पारब्रह्म अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी कार, आप आपणा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म कर पसार, ब्रह्म ब्रह्म अख्वांयदा। पंज तत्त दए अधार, त्रैगुण जोड़ जुड़ांयदा। नौ दर खोल्ह किवाड़, हड्ड मास नाड़ी रत जोड़ जुड़ांयदा। जगत तृष्ना भर भण्डार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार साचा संग रलांयदा। आसा तृष्ना ख़बरदार, सवाणी सुरत आप उठांयदा। डूँघी भँवरी वेख किनार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे डेरा लांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। खुल्ह्ले दृष्ट बन्द किवाड़, सच समग्री झोली पांयदा। वेख वखाए बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी वेख वखांयदा। धुरदरगाही

साचा लाड़, एका एक अख्वांयदा। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, दो जहानां वेख वखांयदा। लहिणा देणा चुकाए पुरख नार, नर नरायण मेल मिलांयदा। सति सतिवादी खिच्चे तार, सच सरंगी आप हिलांयदा। अनहद गाए वारो वार, साचा थान सुहांयदा। सखीआं मंगल मंगलाचार, दर एका वेख वखांयदा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़, जूठ झूठ नेड़ ना आंयदा। जगत तृष्ना देवे साड़, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। आत्म सेजा कर प्यार, गुरमुख साचे आप बहांयदा। इक्क कराए वणज वापार, दूजा हट्ट ना कोई वखांयदा। जिस जन देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणा दर सुहांयदा। लक्ख चुरासी उतरे पार, मात गर्भ फेर ना आंयदा। बन्द खुलास विच संसार, आवण जावण मूल चुकांयदा। शब्द स्वासी लए अधार, जो जन रसना गांयदा। दस्म दुआरी दर दरबार, गुरमुख साचे सज्जण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। पंज तत्त कर उज्यारा, आपणी रचन रचाया। मन मति दए सहारा, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाया। रक्त बूंद कर पसारा, ताणा पेटा आप तणाया। आपे गुप्त आपे जाहिरा, अन्दर बाहर आप हो जाया। आपे बणे भगत भण्डारा, आप आपणा नाम वरताया। आपे मूर्ख मूढ़ मुग्ध गंवारा, कूड़े धन्दे आपे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अनादी इक्क ब्रह्मादी एका एक चलाया। शब्द अनादी हरि हरि बोल, आपणा बोल सुणाया। पुरख अबिनाशी आपणे कंडे तोल, पारब्रह्म तोला इक्क बणाया। पुरीआं लोआं आपे फोल, अवण गवण त्रैभवण वेख वखाया। वसणहारा काया चोल, दिस किसे ना आया। जुगा जुगन्त लए वरोल, माणक मोती आपणे हथ्थ रखाया। मनमुख जीव रहे अनभोल, हरि का रूप दिस ना आया। कूड़ कुड़यारा वज्जे ढोल, डौरु डंका इक्क वजाया। आत्म अन्तर कोई ना पर्दा देवे खोल्ह, ना कोई बूझ बुझाया। उलटा करे नाभ कँवल, जुग जुग अमृत आत्म आप भराया। गुरमुख विरले अन्दर आपे गया मवल, मौला रूप आप दरसाया। जिस जन प्याए दया कमाए चरन चरनोदक आपणी पौहल, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। हरि का भेव ना कोई जाणे पंडत पांधा रौल, भेव किसे ना आया। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कीता कौल, भुल्ल कदे ना जाया। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी तेरा पर्दा ना सके कोई फोल, तेरा भेव किसे ना पाया। हरि का भाणा ना मिटे रत्ती चौल, मेटणहार ना कोई अख्वाया। लोकमात वेखे मार झात जुग जुग लक्ख चुरासी तेरा घोल, गुरमति मनमति दए लड़ाया। अन्तिम कढ्ढणहारा पोल, आप आपणा वेस लए वटाया। सतिजुग तोले साचे तोल, वार अठारां वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल खिलाया। जुग करता हरि करनेहारा, करनहार अख्वांयदा। आपे देवणहार सहारा, आपे जोत जगांयदा। आपे

नर आपे नारा, नर नरायण आप अख्वांयदा। आपे मात पित भैण भाई करे प्यारा, साक सज्जण सैण आप हो जांयदा। आपे जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, जुग जुग आपणा मेल मिलांयदा। सतिजुग साचा कर उज्यारा, साचा मार्ग लांयदा। एका खण्डा नाम कटारा, नाम नामा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। चाल निराली हरि करतार, आपणी आप चलाईआ। जोत अकाली ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। धुर दा माली बेऐब परवरदिगार, नूर अलाही आप अख्वाईआ। राम रामा भेव न्यार, रूप अनूप आप दरसाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण पावे सार, आप आपणी दया कमाईआ। भगतन मीता एका आपणा देवणहारा नाम भण्डार, साचा नाम इक्क वड्याईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, शिवदवाला मट्ठ ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती नूर कमलापाती, आपणा रंग रंगाया। हरिजन देवे साची दाती, दाता दानी आप अख्वाया। मेटे रैण अन्धेरी राती, साचा चन्न चढ़ाया। सखा सुहेला पुच्छे वाती, आप आपणा वेस वटाया। खेले खेल बहु बहु भांती, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। सतिजुग तेरी चुक्की वाटी, त्रेता वेख वखाया। त्रेता तेरी औखी घाटी, राम नामा नाम दृढ़ाया। साचा तीर्थ साचा ताटी, सर सरोवर इक्क नुहाया। अमृत प्याला काया बाटी, निझर धारा मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गढ़ हँकारी वेख वखाया। गढ़ हँकारी आपे तोड़, आपे कर्म कमांयदा। आपणे दर आपे जाए बौहड़, आप आपणा वेख वखांयदा। वेखे फल मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। दो जहानां लाए एका पौड़, एका चरन टिकांयदा। हरि का रूप हरि का शब्द कोई ना सके मोड़, निरगुण निरगुण खेल खिलांयदा। जन भगतां लग्गी निभे तोड़, लोकमात ना कोई तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा त्रीया वेस, पारब्रह्म वेखे खेल नर नरेश, नर नारी वेख वखांयदा। नर नरायण हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बन्ने धार, आप आपणा नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंका लए अवतार, लोकमात वज्जे वधाईआ। राम कृष्ना रूप अपारा, जगत जगदीसा इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। चले धार हरि निरँकारा, जुग जुग खेल खिलाया। कान्हा कृष्ना रूप अपारा, साँवल सुन्दर वेख वखाया। दूती दुष्टा तोड़ गढ़ हँकारा, रथ रथवाही रथ चलाया। आपे उतरया पार किनारा, दोए दोए वेस वटाया। वेखणहारा सच दुआरा, भव सागर पार कराया। द्वापर तेरा दए हुलारा, सच हुलारा आप रखाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा, लोकमात धराया। देवे शब्द जगत विकारा, एका वणज कराया। मंगे मंग बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, आदि निरँजण नाउँ धराया। वर दाता हरि भगवान, परम पुरख अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर देवे दान, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जूठ झूठ खोल्ह दुकान, जगत हट्ट खुल्हाया। काम क्रोध होए नौजवान, माया ममता तेल चढ़ाया। हउमे हँगता लग्गे बाण, तीर निराला हथ्थ फड़ाया। सैनापति पंज शैतान, साचा संग निभाया। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, मन मनुआ खेल खिलाया। मति बुध होई नादान, ना सके सीस उठाया। हरि का रूप ना सके कोई पछाण, तेरा पर्दा उप्पर पाया। तेरा कलमा तेरा नाम, तेरा वेख वखाया। तेरा मस्तक तेरी सलाम, तेरा तेरे रंग रंगाया। तेरा अमृत तेरा जाम, तेरे मुख लगाया। तेरी क्रिया तेरा काम, तेरा तेरी रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका दान झोली पाया। कलिजुग वर घर साचा पा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। चारे कूटा गया छा, दहि दिशा फेरी पाईआ। भगत भगती दए गंवा, आपणी भगती देवे लाईआ। सच सुच्च दए गंवा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। माया ममता बण गवाह, साची दए गवाहीआ। वेखणहारा बेपरवाह, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। एका देवे सच सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका दूजा बण मलाह, दोए दोए मेल मिलाईआ। ईसा मूसा आप उपा, आपे सेवा लाईआ। एका कलमा आप पढ़ा, इक्क आयत सुणाईआ। लाशरीक इक्क ख़ुदा, ख़ालक ख़लक विच टिकाईआ। नूरो नूर डगमगा, नूरो नूर आप ख़ुदाईआ। अल्ला राणी नाल रला, एका संग रखाईआ। चार यारी संग रला, साची भुजा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दित्ता साचा वर, जुड़या जोड़ इक्क अलाहीआ। कलिजुग कूड़ वेख पसारा, हरि साचे जोत जगाईआ। नानक निरगुण लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। एका वस्त नाम भण्डारा, सति नाम वरताईआ। चार वरनां इक्क वणजारा, एका वस्त वखाईआ। ऊँचां नीचां पार किनारा, एका रंग रंगाईआ। पुरख अकाल इक्क जैकारा, एका रिहा गाईआ। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द सुत्त दुलारा जोद्धा बीर आप अख्वाईआ। पंचम मीता हरि देवे नाम अधारा, नाम खण्डा तन पहनाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, चार वरनां मुख चुआईआ। लेखा लिखे सर्ब संसारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। गुर गोबिन्द बण लिखार, सिँघ सिँघ अख्वाया। शब्द गुर लए अवतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। जोती नूर हो उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। सम्बल नगरी धार न्यार, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाया। हरि मन्दिर सोहे इक्क दुआर, दर दरवेशा फेरी पाया। जुग जुग जोत जगे अपार, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। शब्द खण्डा तेज़ कटार, लक्ख चुरासी पावे सार, जीवां जन्तां वेख वखाया। साधां सन्तां दए हुलार, सोया कोई रहिण

ना पाया। जोद्धा सूर बली बलकार, बलधारी आप अख्वाया। प्रगट होए विच संसार, मात पित ना कोए बणाया। चार वरनां करे इक्क प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका थान बहाया। ऊँचां नीचां भेव नवार, राउ रंक ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, हरि साचे सच चुकावणा। जन भगतां नेत्र अंजण पाए नैणां, नाम कजला इक्क सुहावणा। मनमुख जीवां जूठे झूठे वहण वैहणा, धीरज धीर ना कोए धरावणा। साक सज्जण सैण ना कोई भाई भैणा, सगला संग ना कोए रखावणा। हरि का भाणा सभ ने सहिणा, गुर का लेख ना किसे मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा। कलिजुग अन्तिम जोत जगा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंकी डंक वजा, चार कुन्ट करे जणाईआ। दुआर बंका इक्क सुहा, सम्बल नगरी वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणत बणा, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। ग़रीब निवाजा आसण ला, साचा सिंघासण रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, हरि साचे सच सुहाया। निरगुण दीपक कर उज्यारा, अन्धेर अन्ध मिटाया। शब्दी शब्द भर भण्डारा, शब्दी शब्द वरताया। सो पुरख निरँजण कर प्यारा, हँ ब्रह्म मिलाया। हँ ब्रह्म एका धारा, सोहँ सोइम रूप हो जाया। ओअँ सोहँ खेल न्यारा, हरि करते खेल खिलाया। नगर धाम खेड़ा वसे इक्क दुआरा, पंचम झेड़ा मोह चुकाया। जन भगतां बन्न्हणहारा बेड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। निहकलंक हरि निरँकार, सतिगुर शब्द अख्वांयदा। घट घट मन्दिर करे सहार, हर घट वेख वखांयदा। सन्त साजण कर प्यार, गुरमुख गुरसिख मेल मिलांयदा। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, चेला गुर आप हो जांयदा। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, आप आपणा सीस झुकांयदा। आपे फड़ फड़ बांहों लाए पार, भवसागर पार करांयदा। आपे डोबणहारा विच मँझधार, शौह दरयाए आप रुढ़ांयदा। आपे खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी आप जगांयदा। शब्द गुर साची सेवा, लोकमात हरि लाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेवा, अलक्ख अलखणा अलख लखाईआ। वड वड्डा वड देवी देवा, देवत सुर रहे सरनाईआ। जन भगतां कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। एका नाम एका राम रसना जेहवा, इष्ट देव गुर इक्क समझाईआ। अमृत आत्म फल साचा मेवा, घर साचे आप खुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, जुग विछड़े

जग मेल मिलाईआ। जुग विछड़े जग मेलया, परम पुरख करतार। सतिगुर पाया सज्जण सुहेलया, विछड़या संसार। गुर रंगे रंग नवेलया, कोई रंगे ना जगत ललार। कट्टणहारा धर्म राए दी जेलया, लक्ख चुरासी करे पार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, कलिजुग अन्तिम लै अवतार। आपे जाणे आपणा वक्त वेलया, लेखा चुकाए चार लक्ख बत्ती हज़ार। गुरमुख सज्जण चाढ़े तेलया, सुहावणहारा दर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल विच संसार। खेलणहारा पुरख समरथ, एका एक अख्वाया। कलिजुग तेरा चलाए रथ, कूड़ कूड़ी सेवा लाया। हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, अन्त रहिण ना पाया। अन्तिम लहिणा चुक्के तीर्थ अठसठ, हरि का नाउँ साचा पूजा पाठ ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। आप उतारे साचे घाट, सचखण्ड दुआरा इक्क वसाया। चरनां हेठ दबाए चौदां लोक, गुरसिख तेरी वड वड्याआ। खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी स्वांग रचाया। दुरमति मैल देवे काट, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान दृढ़ाया। आपे नेड़े वसे वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। आत्म सेजा सुहाए साची खाट, निरगुण रूप आसण लाया। मेल मिलावा काया माट, साचा गढ़ सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुर सज्जण साचे मीत सतिगुर पूरा दए तराया। कलिजुग बेड़ा बन्ने लाया, मिल्या धुरदरगाही इक्क मलाह। चित्रगुप्त ना लेख वखाया, लाड़ी मौत ना करे व्याह। जन सतिगुर पूरा नज़री आया, गुर शब्द मेल मिलावा साचे थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां इक्क समझाया। चार वरनां इक्क बबाणा, एका शब्द चढ़ाईआ। एका धाम सुहाए राजा राणा, शाह सुल्तानां एका दर वखाईआ। एका देवे धुर फ़रमाना, एका जाप जपाईआ। एका देवे पद निरबाणा, निरभउ वड्डी वड्याईआ। अकाल मूर्त मेल मिलाणा, अनभव प्रकाश समाईआ। कूड़ो कूड़ नाता तोड़ तुड़ाना, एका दूजा भउ मिटाईआ। तीजा नेत्र इक्क खुलाउँणा, स्वच्छ सरूपी दरस वखाईआ। चौथे घर मेल मिलाउँणा, साची वज्जे वधाईआ। पंचम मीता पंचम सीस ताज इक्क टिकाणा, पंचम राज जोग वखाईआ। स्यासत वरासत ना किसे बनाणा, अछल अछल्ल हरि कराईआ। साचा मार्ग गुर गोबिन्द इक्क वखाणा, एका करे पढ़ाईआ। अमृत आत्म इक्क पछाणा, भर प्याला जाम प्याईआ। गुरमति विच गुरसिख समाणा, मनमति नार कमज़ात नेड़ ना आईआ। तेरा चिल्ला तेरा तीर कमाणा, तेरी रसना तेरी जेहवा हरी हरि हरि गुण गाईआ। देवे माण चारे खाणी चारे बाणी मर्द मरदाना, मेहरवान मेहरवान मेहरवान वड्डी वड्याईआ। सच्चा नाम धुर फ़रमाना, हरि हिरदे विच टिकाईआ। गुरमुख गुरमुख मन्ने भाणा, गुर पूरन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग जुग

५१६
०८

विछड़े मेल मिलाईआ। जोड़ विछोड़ा हथ्थ निरँकार, आपणा आप कराया। आप उपाए आपे लए सँघार, आवण जावण आप रखाया। आपे हउमे हँगता भरे हँकार, प्रेम प्यार आप टिकाया। आपे साची संगत कर सिंगार, आपे मूर्ख मूढ़ दर दुरकाया। आपे मंगता भगतन दर बणे भिखार, आप आपणी झोली डाहया। आपे अंग लाए अंगीकार, नानक निरगुण सरगुण विच टिकाया। आपे शब्द गुर हो उज्यार, ब्रह्म पारब्रह्म रूप वटाया। आपे चेले करे निमस्कार, गोबिन्द आपणा सीस झुकाया। आपे आपणा आप आपा दित्ता वार, हरिसंगत वड वड्याआ। कलिजुग अन्तिम कर्ज़ा दए उतार, पिछला लहिणा रहिण ना पाया। फड़या खण्डा तेज़ कटार, शब्दी शब्द हथ्थ उठाया। दिस ना आए विच संसार, ज्ञानी ध्यानी वेख वखाया। हरिभगतन बिन कोए ना पाए सार, झूठे धन्दे जगत लुभाया। मनमुखता कलिजुग होई ख्वार, गुरमुख बैठे मुख छुपाया। धन्न गुर धन्न करतार, धन्न गुरसिख गुर करे प्यार, धन्न धन्न जणेंदी माया। हरि का रूप हर घट विचार, हर घट आपे नज़री आया। दूई द्वैती फट लग्गा संसार, गोबिन्द खण्डा एका वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां वखाए एका घर, सर सरोवर इक्क सुहाया। चार वरनां ब्रह्म मति, पारब्रह्म जणाया। सतिगुर पूरा दस्से एका हट्ट, एका रुत्त सुहाया। कूड़ कुड़यारा लथ्थे सत्थ, धरत धवल सथ्थर हेठ विछाया। हरिभगतन मेला कमलापत, घर घर विच ख़ुशी मनाया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका बद्धा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। एका शब्द एका गाथ, एका मन्त्र रिहा सुणाया। कलिजुग लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चमारा लेख लिखाया। सतिजुग चले साचा राथ, सति सतिवादी आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निरवैर अकाल मूर्त अजूनी रहित आप अख्वाया। अजूनी रहित पुरख अकाला, दीन दयाला नाउँ धरांयदा। आपे अग्नी जोत ज्वाला, आपे हवन वखांयदा। आपे काल होए महांकाला, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे लक्ख चुरासी फल लगाए डाल्हा, आपे तोड़ तुड़ांयदा। आपे करे कराए आदि जुगादि सदा प्रितपाला, प्रितपालक आपे नाउँ रखांयदा। आपे खेले खेल निराला, आदि जुगादि जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। आपे शब्द अनादी बोल जैकारा, आप आपणा नाउँ रखांयदा। आपे आपणा भर भण्डारा, आप आपणी सेवा लांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, वरन बरन आप हो जांयदा। आपे अलक्ख निरँजण अलख अपारा, अलक्ख वेस वटांयदा। सचखण्ड सुहाए बंक दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। बाशक सेजा कर प्यारा, सांगोपांग हंढांयदा। आपे सभ तों वस्सया बाहरा, दिस किसे ना आंयदा। ब्रह्मा वेता बण लिखारा, चारे वेद लिखांयदा। चारे युग कर उसारा, आपणी आयू आप मनांयदा। आपे

देवे जगत सहारा, आपे डेरा ढांयदा। आपे मनवन्तर वेखे खेल खिलारा, मन मनुआ आप फिरांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, जुग करता खेल खिलांयदा। कलिजुग तेरी पावे सारा, तेरा लहिणा तेरे दर रखांयदा। सतिजुग साचा कर उज्यारा, सति सतिवादी नाउँ उपांयदा। सम्मत सम्मती मारे मारा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। सम्मत वीह सद सोलां नौ खण्ड पृथ्मी करे ख़बरदारा, शाह सुल्तानां आप जगांयदा। प्रगट होया वड बलकारा, पंच तत्त ना कोए जणांयदा। शब्दी शब्द खेल न्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। सम्मत सतारा दए हुलारा, घर बारा फोल फोलांयदा। नर नारी करे सर्ब ख्वारा, धीरज धीर ना कोए रखांयदा। अट्ठ अठारां एका धारा, एका वहिण वहांयदा। वीह सद उन्नी कढ्ढे हाढ़ा, ईसा मूसा सर्ब कुरलांयदा। जमीन अस्माना तुट्टे पाड़ा, चौदां तबकां वेख वखांयदा। लेखा चुक्के सतारा हाढ़ा, साचा दिवस सुहांयदा। नूर अलाही साचा लाड़ा, इक्क अमाम आप अख्वांयदा। कायनात वेखे जगत अखाड़ा, खालक खलक आप लड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण वेख वखांयदा। सम्मत उन्नी सिफ्त सलाह, हरि साचे वड वड्याईआ। अल्ला राणी मारे धाह, चार यार संग मुहम्मद कोए ना संग रलाईआ। कलमा अमाम कोए ना सके पढ़ा, अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ाईआ। नबी रसूल ना पकड़े कोई बांह, मुल्ला शेख मुसायक पीर मुख छुपाईआ। पीर फकीर दस्तगीर शाह हकीर ना करे कोई हां, ना बेड़ा पार कराईआ। घर कागी काग वसा, नाता तुटे पुत्तरां माँ, बालक गोद ना कोए उठाईआ। ना कोई सुहेला भैण भ्रा, सज्जण मीत ना कोए दसाईआ। इक्क अकेला खेले खेल थाउँ थाँ, नौ सत्त फेरा पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण वैश शूद्र किसे ना देवे कोई ठंडी छाँ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मारे धाह धरत मात गऊ ग्रां, गृह गिरया वेख वखाईआ। जिस जन जप्या तेरा ना, तत्ती वा ना लगे राईआ। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, ध्रू प्रहलाद जिउँ तराईआ। कलिजुग अग्नी मारे भाह, ठंडी ठार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद उन्नी वेख वखाईआ। वीह सद उन्नी हरि उनीसा, आपणी उनती आप करांयदा। सभ दी चोटी जाए मुन्नी ना कोई पढ़े कुरान हदीसा, बाईबल अञ्जील ना कोए सुणांयदा। किसे ताज ना दिसे सीसा, साचा कलमा ना कोए पढ़ांयदा। प्रगट होए बीस बीसा, आप आपणा खेल खिलांयदा। वेद पुराणा ख़ाली खीसा, वेद पुराणी आप जणांयदा। लेखा जाणे राग छतीसा, छत्ती रागां डेरा ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस बीस आप वड्यांअदा। बीस सद बीस धार, बीस बीसा आप चलाईआ। प्रगट हो विच संसार, जमन किनारा इक्क सुहाईआ। साधां सन्तां दए हुलार, आत्म शक्ती शक्त मिलाईआ।

शब्दी नाद सच्ची धुन्कार, घर घर विच दए वजाईआ। उठाए सुत्त सोए संसार, बुध मति कर जणाईआ। अबिनाशी अचुत्त सदा ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। सुहाए रुत्त अपर अपार, अपर अपरम्पर खेल खिलाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, दिल्ली दुआरे फेरा पाईआ। शाह सुल्तानां दए हुलार, आप आपणा तेज़ वखाईआ। राष्ट्रपति मंगे मंग बण भिखार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी गति मित आप जणाईआ। सत्तां दीपां देवे इक्क हुलार, एका बूझ बुझाईआ। सत्त रंग निशाना देवे चाढ़, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। लक्खण करौच पुष्कर दीप ख़बरदार, जम्बु चन्द नूर रुशनाईआ। सलमल सान करे प्यार, कुशा वेख वखाईआ। पंचम सोहे सीस दस्तार, पंचम ताज सुहाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। चरन कँवल हरि चरन प्यार, चरन चरनोदक इक्क मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस बीसा हरि जगदीसा पन्दरां कत्तक देवे वड्याईआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहाउँणा, बीस सौ बीस बिक्रमी लेख लिखाया। राज जोग हरि बणत बणाउणा, सच स्यासत नाल रलाया। जूठ झूठ भेख पखण्ड मिटाउणा, चार वरन एका रंग रंगाउणा, ऊँच नीच ना कोए रखाया। राम कृष्न एका रसना गाउणा, नानक गोबिन्द संग निभाईआ। ईसा मूसा खेल खिलाउणा, मुहम्मद मुहम्मदी लए उपजाया। अञ्जील कुरानां दर सुहाउणा, वेद पुराणां मंगल गाया। खाणी बाणी भेव चुकाउणा, रसन स्वास एका नाम जपाउणा, मण्डल रास रास रचाया। सुरती सीता राम मिलाउणा, सुरत शब्दी वेख वखाया। गोपी कान्हा एका धाम सुहाउणा, नाम बंसरी इक्क वजाया। नानक निरँकार निरगुण एका पाउणा, सति सति नाम दृढ़ाया। गोबिन्द डंका इक्क वजाउणा, फतिह वाहिगुरू दए इक्क गजाया। सभ दा रूप इक्क दरसाउणा, दूसर कोए ना विच रखाया। केसाधारी मूंड मुंडाए एका धाम बहाउणा, साचा धाम इक्क वखाया। पारब्रह्म प्रभ लेख लिखाउणा, पिछला लेखा दए चुकाया। फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, सोहँ साची चोग चुगाया। इकउँकारा नाम धराउणा, सतिनाम नाम आप हो जाया। करता पुरख पुरख मनाउणा, एका इष्ट बणाया। निरवैर रूप हर घट नज़री आउणा, दर दरवाज़ा ना कोए रखाया। निरभउ गुरसिख तेरा स्वांग रचाउणा, भय भयानक होए सहाया। मूर्त अकाल दरस वखाउणा, जोती नूर कर रुशनाया। जूनी रहित हरि आप अख्वाउणा, ना मरे ना जाया। राम नाम एका रंग रंगाउणा, राम राम विच टिकाया। साचे काहन मोर मुकट सीस इक्क टिकाउणा, साची सखीआं मंगल गाया। सचखण्ड दुआरा लोकमात बणाउणा, सतिजुग साचे वेस वटाया। बीस सौ इकीस बिक्रमी इक्क इकीसा हरि भगवन्ता आप अख्वाउणा, साचे सन्तां लए जगाया। नारी कन्ता एका सेज सवाउणा, आत्म सेजा आप वछाया। रंग बसन्ता इक्क चढ़ाउणा, उतर

५२० ८

कदे ना जाया। हउमे हँगता बुरज ढाउणा, ना सके कोए बणाया। चारे वरनां साची संगता इक्क रखाउणा, एका नाम ध्याया। दूजे दर ना मंगण किसे जाणा, बिन हरि भिच्छया कोए ना पाया। भुक्खा नंगता लेखे आपणे लाउणा, जो जन सरनाई आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस इकीस हरि जगदीस छत्र सीस इक्क झुलाया। इक्क अकीसा खेल अवल्ला, हरि साचे सच करावणा। खेले खेल जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फेरा पावणा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशी घट घट वासन एका मल्ला, दर दुआर इक्क सुहावणा। जन भगत सुनेहड़ा एका घल्ला, बोध अगाध जणावणा। जोती शब्दी आपे रल्ला, पवण पवण चलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई एका इष्ट आप समझावणा। सृष्ट सबाई सांझा यार, एका एक अख्वांयदा। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक भेव ना आंयदा। साजण मीता मीत मुरार, मीत मुरारी आप अख्वांयदा। ठांडा सीत धुर दरबार, हस्त कीटा कर पसार, शब्द अनडीठा आप सुणांयदा। वस्सया चीता जिस जन सो उतरे पार, पार किनारा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकीसा वेख वखांयदा। इक्क इकीसा इक्क अकल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। आपे वस्सया सच महल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। आपे फलया आपे फुला, फल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे पावणहारा मुल्ला, आपे हट्ट विकाईआ। आपे आपणे कंडे तोल तुला, आपे पूरा दए कराईआ। आपणे बूटे आपे हुला, आपे देवे जड़ उखड़ाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा कूड़ी क़िया रुल्ला, करता कीमत कोए ना पाईआ। जीव जन्त जगत वकारी फिरे भुल्ला, काया भँवरी ना पार कराईआ। हरिजन प्रीती ना घोल घुल्ला, गुर शब्द ना रसना गाईआ। अमृत आत्म साचे अन्दर डुल्ला, भर जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगत लए मिलाईआ। भगतन मेला गुरू गुर चेला, सिँघ चेला आप कराया। हरि सतिगुर पाया सज्जण सुहेला, घर साचा वेख वखाया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वखाया। घर साचा हरि पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। पिछला चुक्का लेखया, अग्गे दरगाह साची देवे वाड़। भेव जाणे धारी केस्सया, मूंड मुंडाए लाए पार। आपे दाता दस दस्मेस्सया, राम कृष्न आप अवतार। आपे सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशया, दर दरवेश आप निरँकार। आपे सुत्ता बाशक सेज्जया, आपे होया नैण मुँधार। आपे धारे जुग जुग वेस्सया, आदि जुगादी इक्क अवतार। आपे धरे मोढे भूरी खेस्सया, आपे नानक बोले निरँकार। आपे शाह सुल्तान भूप वड नरेस्सया, आपे मंगे बण भिखार। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए उभार। सिँघ चेला हरि जाणया, जानणहार गुरदेव। पूर्ब लहिणा मूल पछानया, अमृत मिल्या साचा मेव। देवे नाम नाम निधानया, चरन प्रीती साची सेव। मारे तीर शब्द निशानया, वड दाता अलख अभेव। हथ्थ बन्ने एका गानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा भेव। गुरमुख साचा दर परवान, दर साचे मिले वड्याईआ। देवणहार श्री भगवान, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। आदि जुगादी नौजवान, बाल बिरध ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। गुरसिख काया मन्दिर अन्दर बैठ मकान, दर तेरे घर तेरा हरि तेरा लेखा लेखे लाईआ। तेरा राग तेरी धुन तेरे काण, अनहद आप सुणाईआ। तेरी सखीआं पंचम मीता पंचम घर बहि बहि गाण, पंचम मुख सलाहीआ। सुरत सवाणी उठ्ठे नौजवान, गुर शब्द वेख वखाईआ। गुर का शब्द हाणी हाण, हरि साचा मेल मिलाईआ। होए विचोला दो जहान, आवे जावे फेरा पाईआ। आत्म सेजा कर परवान, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, नूरो नूर डगमगाईआ। सच महल्ला दस्म दुआर, गुर सतिगुर आप खुल्हाया। अमृत बरखे ठंडी ठार, कँवल मुख रखाया। सुखमन बेनी कर त्यार, निजानंद समाया। परमानंद मीत मुरार, आपणा रस चखाया। सुहागी छन्द गाए करतार, लिखण पढ़न विच ना आया। जिस जन मिल्या मीत मुरार, सोभावन्ती नार सुहाया। कन्त कन्तूहला करे प्यार, चतुर्भुज खेल खिलाया। चारे कुन्टां वेख विचार, दहि दिशा फोल फुलाया। घर विच घर घर विच हरि घर विच नर गुरमुख नारी लए वर, सुरती शब्दी मेल मिलाया। सुरती शब्दी जुड़या जोड़ा, सस्सा किला इक्क वखाईआ। चौथे अक्खर चौथे घर लग्गा पौड़ा, एका होड़ा उप्पर लगाईआ। निरगुण सरगुण आपे बौहड़ा, लोकमात करे कुड़माईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले बजर कपाटी बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, इक्क दुआरा आप वखाईआ। गुरमुख हरि घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। रस रसना एका पाया, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। साची सिख्या इक्क समझाया, साख्यात जोत रुशनाईआ। जगत मिथ्या इक्क वखाया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अनडीठा शब्द चलाया, ना करे कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सुहाए साचा घर, सिँघ चेला चेला गुर इक्क हो जाईआ। गुर चेला मिल्या शब्द धार, शब्दी शब्द समाया। जोती जोत जोत प्यार, जोती जोत जगाया। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, अज्ञान अन्धेर मिटाया। दर घर साचे सोभावन्ती होई नार, कन्त

कन्तूहला एका पाया। नाम नामा चढ़ी ख़ुमार, रस मिट्ठा मुख चुआया। कलिजुग जीव गए हार, हरि का रूप दिस ना आया। जगत लोकाई होई ख्वार, दूई द्वैती संग निभाया। शरअ शरीअत बण कटार, तिक्खी धार रही रखाया। बिन हरि नामे कोए ना उतरे पार, गुण कबीरे एका गाया। रविदास कसीरा डूँघी धार, गंगा हथ्थ फड़ाया। रविदासा लेखा लिखे चमार, कलिजुग मूल चुकाया। भगत वछल भगत गिरधार, भगत भगती दए तराया। आत्म शक्ती इक्क उज्यार, एका दीपक आप जगाया। चार वरनां इक्क प्यार, साची सिख्या दए समझाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोए विचार, साचा सच सच दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेखे खड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, ना किसे दा फड़या लड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, शब्दी शब्द शब्द अख्वाया। शब्द गुर शब्द करतार, शब्द शब्दी सेवा लाईआ। शब्द खण्डा शब्द कटार, शब्द शब्द हथ्थ उठाईआ। शब्द ब्रह्मण्ड शब्द पावे सार, शब्द वेख वखाईआ। शब्द जेरज अंड कर प्यार, शब्द उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। शब्द शब्दी वंडे वंड, वंडणहार शब्द अख्वाईआ। शब्द वढ्ढणहारा सभ दी कंड, सतिजुग त्रेता द्वापर अन्तिम कलिजुग मूंह दे भार सुटाईआ। शब्द लक्ख चुरासी करे रंड, कन्त सुहागी शब्द हंढाईआ। शब्द मेटे भेख पाखण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर इक्क तराईआ। शब्द गुर करने जोग, करता करनी आप अख्वाया। शब्द शब्दी होया संजोग, शब्द शब्दी लए प्रनाया। शब्द शब्दी भोगे भोग, भोग बिलास आपणे विच रखाया। शब्द शब्दी वखाए दरस अमोघ, शब्द शब्दी रूप वटाया। शब्द शब्दी दिसे तीनां लोक, त्रिलोकी नाथ शब्द घलाया। शब्द देवणहारा मोख, शब्द बेड़ा बन्ने लाया। ना कोई हरख ना कोई सोग, जिस जन हरि हरि शब्द गाया। ना कोई दु:ख ना कोई रोग, ना कोई तृष्ना होए हल्काया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मेला धुर संजोग, आप आपणा मेल मिलाया। धुर संजोगी मिल्या मेला, लोकमात वज्जी वधाईआ। हरि मन्दिर वस्सया गुरू गुर चेला, गुरमुख वेखे सहिज सभाईआ। मनमुखां कोलों करया उहला, माया पर्दा एका पाईआ। शब्द अगम्मी साचा ढोला, सति पुरख आपे गाईआ। सन्त साजण वस्सया कोला, घर घर विच वेख वखाईआ। आपे आपणा बदलया चोला, चोजी चोज खेड खडाईआ। कलिजुग अन्तिम खेलण आया होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। गुर नानक बणया साचा तोला, तेरां तेरां धार चलाईआ। लक्ख चुरासी प्या रौला, पूरा कंडा ना कोए रखाईआ। हउमे हँगता होया बोला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पंज तत्त अग्नी तत्त खोला, ना सके कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५२२ ०८

किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां देवे एका घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर शब्द हुलारा, गुर गुरसिख आप लगांयदा। दो जहानां पार किनारा, साचा दर वखांयदा। ना कोई सूरज चन्न सतारा, मण्डल मण्डप ना कोए दसांयदा। लक्ख चुरासी ना कोए पसारा, ना कोई बणत बणांयदा। निरगुण जोती नूर उज्यारा, इक्क अकल्ला डगमगांयदा। थिर घर सुहाए सच घर बारा, सच सिँघासण वेख वखांयदा। निरगुण निरगुण निरगुण धारा, आपणी आप चलांयदा। आदि अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त गुर पीर अवतार साध सन्त सर्ब गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरेश दर दरवेश वेखणहारा रिखी केस गवर्धन धार, कर प्यार नाम खण्डा तेज़ कटार, गोबिन्द जोद्धा सूर बलकार, अर्जन मीता विच संसार, शब्द शब्दी शब्द जैकार, एका सोहला साचा गांयदा। गाया सोहला हरि बनवारी, बावन अक्खर अक्ख खुल्हाईआ। पैंती अक्खर बण लिखारी, गुर अर्जन वड वड्याईआ। सत्त सतारां रूप न्यारी, दस सत ना बूझ बुझाईआ। लेखा लिख्या धुर दरबारी, हरि मन्दिर जोत जगाईआ। कूके सुणाए बंक बंक दुआरी, आप हो जाईआ। कलिजुग अन्तिम करे ख्वारी, जूठी झूठी क्रिया मेट मिटाईआ। सतिजुग साचे आए वारी, सति सतिवाद रखाईआ। बावन अक्खर बणे आप लिखारी, इकावन बावन भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे साचा वर, आपणी जोती अन्दर धर, जगत सैंहसा चुकाए डर, तोड़णहारा हउमे गढ़, साचे मन्दिर आपे चढ़, गुरमुख साजण लए फड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। पुरख अकाल हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग वेख अन्ध अँध्यार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। पंज तत्त कर प्यार, नानक नाउँ रखाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। भरया शब्द नाम भण्डार, आप आपणी वस्त टिकाईआ। मेल मिलावा विच संसार, निरगुण सरगुण आप कराईआ। एका दूजा भेव न्यार, एका रंग रंगाईआ। एका नैण खोल्ह किवाड़, एका रूप दरसाईआ। एका घर देवे वाड़, एका वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार विच संसार, सरगुण आप रखाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकार, नानक रूप वटाया। खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना आया। आपे मंगे मंग भिखार, दर दरवेशा आप अखवाया। आपे भरे सच भण्डार, नाम सति झोली आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखाया। नानक सतिगुर एका धार, हरि हरि आप चलाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा विच टिकाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, बाल बाला आप हो जाईआ। सृष्ट सबाई करया ख़बरदार, जीव जन्त आप उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या एका पढ़, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। हर घट अन्दर आपे वड़, गुर नानक रूप वटाया। गुरमुखां फड़ाया आपणा लड़, आप आपणे अंग लगाया। दूर दुराडे लए फड़, चारों कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला साचे घर, एका शब्द रूप दरसाया। शब्द रूप नानक कीता, पंज तत्त हंढांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, आपे तोड़ निभांयदा। आप चलाए आपणी रीता, साचा मन्दिर इक्क वखांयदा। इक्क रंग रंगाया हस्त कीटा, ऊँचां नीचां एका धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे हरि निरँकार, गुर गुर आप अख्वाईआ। आपे निरगुण जोत उज्यार, दीवा बाती पंज तत्त आप टिकाईआ। आपे शब्दी शब्द भण्डार, लोकमात आप वरताईआ। आपे नानक निरगुण कर आकार, निराकार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द गुर शब्द सुल्तान, शब्द अहिबाब बणाया। शब्द मर्द शब्द मरदाना, शब्द रबाब वजाया। शब्द पीणा शब्द खाणा, शब्द शब्दी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता एका घर, घर साचा इक्क सुहाया। नानक गुर धुर संदेस, चार वरनां आप सुणांयदा। बाल जवानी अल्लड़ वरेस, जगत बुढ़ापा वेख वखांयदा। आपे फिरे देस परदेस, चारे कुन्टां फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साचा मार्ग लांयदा। शब्द गुर नानक धर, साची बणत बणाईआ। सरगुण अन्दर निरगुण वड़, बोले बेपरवाहीआ। जीव जन्त ना सके फड़, दिस किसे ना आईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। ना कोई गोर ना कोई मढ़, ना कोई मड्ड तपाईआ। सतिगुर पूरा ना जाए सड़, दे मति गया समझाईआ। आपणी जोत लहिणे अन्दर धर, अंगद अंगीकार कराईआ। आपणी निमस्कार आपे कर, आपणा सीस झुकाईआ। जन भगतां दित्ता साचा वर, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। गुर किरपा मिले गुरू घर, गुर घर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क दरसाईआ। नानक अंगद जोती रक्ख, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। आपे हो के बैठा वक्ख, गुरसिखां गया समझाईआ। मेरे पल्ले ना कोई कक्ख, अंगद वड वड्याईआ। अबिनाशी करता सिर रक्खे हथ्थ, समरथ पुरख अख्वाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन पाईआ। सतिगुर पूरा पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ फड़ाईआ। गुर नानक महिमा अकथनी अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ । शब्द चलाया साचा रथ, उत्ते अंगद दए चढ़ाईआ। जगत विकारा दित्ता मथ, नाम मधाना एका पाईआ। नाम सति पूजा पाठ, सच ज्ञान दृढ़ाईआ। शब्द नगारे मारे सट्ट, अनहद ताल वजाईआ। दूई द्वैती मिटया फट्ट, गुर पूरे दया कमाईआ। भाग लग्गा

पंज तत्त, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्द वस्त आई हथ्थ, पैंतीस पैंतीस रिहा गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाईआ। अंगद अंगीकार कर, एका रंग रंगाया। साचा नाम भण्डार भर, अतोट अतुट्ट रखाया। गुरमुखां सेवा सेवादार कर, साची सेवा आप लगाया। सरन सरनाई गया पड़, अमरु आपणा आप मिटाया। अंगद फड़या एका लड़, ना सके कोए छुडाया। लेखे लग्गा सीस धड़, जगत भार वंडाया। आत्म नुहाया साचे सर, ताल सुहावा इक्क दरसाया। आपणी क्रिया आपे कर, आपणा मार्ग आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक जोती अंगद रंग अमर दास आप चढ़ाया। अमर दास चढ़या रंग चलूल, गुर नानक जोत जगाईआ। रामदास चुकाया तेरा मूल, बस्त्र गहिणा इक्क पुवाईआ। आपणी हथ्थीं बरखे फूल, फूलन बरखा एका लाईआ। सच सिँघासण आप बैठाया ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, गुर नानक शब्द पढ़ाईआ। आत्म रस सर सरोवर, रामदास गुर पाया। घर विच घर घर उज्यारा, घर विच सज्जण मीत मुरारा, घर घर विच मंगल गाया। घर विच नूर जोत कर पसारा, घर घर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाया। अन्दर मन्दिर हरि दरसा, राम दास बूझ बुझाईआ। बिन गुर पूरे कोई ना सके पा, कलिजुग भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सतिगुर पूरा वेख वखा, आपणी दृष्ट आप खुल्हाईआ। हरि मन्दिर हरि जू दए बणा, आप आपणा मूल चुकाईआ। सर सरवोर इक्क भरा, एका ताल भराईआ। अग्गे लेखा ना सके कोई जणा, बैठा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। रामदास गुर खेल खिलाया, अचरज बणत बणाईआ। सतिगुर शब्द इक्क उपजाया, पंज तत्त ना गुरु अख्वाईआ। साचा शब्द गुर अर्जन विच टिकाया, बिन अर्जन कोई ना गाईआ। चौथे पद चौथा अंक आप मिलाया, पुरख अबिनाशी मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मीता आप अख्वाया, पंचम मेल मिलाईआ। पंचम जोड़ा जोड़ जुड़ाया, पंचम भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन मेला एका कर, नानक नाम ध्याईआ। चार वेद ना पायण सार, भेव ना कोई खुल्हाया। गुर अर्जन मेला धुर दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। देवणहारा सच हुलार, इक्क हुलारा आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगाया। कलिजुग जीव आया परखण, नाम घसवटी एका लाईआ। ना कोई हरख़ ना कोई सोग अमृत मेघ आया एका बरसण, ठांडी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाईआ।

निहकलंक हरि शब्द है, शब्द रूप निरँकार। दूसर ना कोई जगत है, पंज तत्त ना कोई आकार। आदि निरँजण साची शक्त है, जोत निरँजण आप उज्यार। जिस जन बख्शे आपणी भगत है, देवे दरस नानक गुर अवतार। गुरमुख सच्चा जाणे वेला वक्त है, जो मंगे मंग ढहि ढहि चरन दुआर। हरि का भाणा आदि जुगादि बड़ा सख़त है, गुरमुख विरला उतरे पार। लेखे लाए बूंद रक्त है, पंजे चोर देवे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज दस गुरमुख आपणे लेखे लए लिख, जो जन रसना रहे उचार। चरन सरन जो जन सरनाए, सती सति गुर पुरा तुठया। नानक निरगुण जो रहे ध्याए, मेल मिलाए दया कमाए, लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठया। जोत नूर करे रुशनाए, पंच विकारा आपे लुट्टयां। शब्दी धुन धुन उपजाए, तीर निराला एका छुट्टया। मुन सुन्न आप खुल्हाए, फल बूटा एका फुट्टया। जम्मू डाल्ही पत्त वेख वखाए, आपे देवण आया झूटया। गुरमुख सज्जण लए जगाए, जिस हरिजन रसना रस लुट्टया। मनमुख जीवां दिस ना आए, खाली दिसी काया ढूठया। निहकलंक हरि आप अख्वाए, मात गर्भ ना होए पुट्ठया।

✪ २२ जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे घर पिण्ड सेख़सर जम्मू ✪

५२६
०८

सति पुरख निरँजण सति करतार, एका एक एकँकारया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आदि जुगादी खेल खिला रिहा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगार, आप आपणा वेस वटा ल्या। इक्क अकल्ला निराकार, निरगुण आपणा नाम धरा ल्या। सच महल्ला थिर दरबार, थिर घर साचा इक्क उपा ल्या। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई वखा ल्या। रवि ससि ना कोई सतार, मण्डल मण्डप ना कोई बणा ल्या। गगन मण्डल ना कोई धार, धरत धवल ना कोई रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दीपक आप जगा ल्या। दीपक जोत नूर उजाला, हरि हरि आप उपांयदा। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, जोती जोत डगमगांयदा। थिर घर वसे धर्म सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण आसण लांयदा। पुरख पुरखोतम अकाल अकाला, अकल कला धरांयदा। आदि शक्ति जोत ज्वाला, लिलाट लिलाटी इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर बेपरवाह, एका एक एकँकारया। आपे वसे आपणे थाँ, ना कोई दूसर संग रखा ल्या। आपे पिता आपे माँ, आपे बालक गोद सुहा ल्या। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वखा ल्या। आदि

अनादी हरि भगवन्त, एका रूप समाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता वड वड्याईआ। आप आपणी बणाए बणत, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। सति सतिवादी महिमा अगणत, लेखा लेखे विच ना आईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे सेज हंढाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आपे करे आपणी मनत, आप आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। नूर अलाही इक्क अकल्ला, एका रंग समांयदा। वसणहारा सच महल्ला, पुरख अबिनाशी नाउँ धरांयदा। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं दीपक जोती आपे बला, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज डेरा आपे मल्ला, आप आपणा घर उपांयदा। आपणी पवणी आपे रल्ला, सच सुगन्दी आप धरांयदा। आदि जुगादी इक्क अकल्ला, एकँकारा नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सारा, हरि सज्जण वेख वखांयदा। थिर घर सोहे सच दुआरा, हरि साचा आप सुहांयदा। एक बाती दीपक कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकारा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। राउ रंक ना दिसे कोई दर दरबारा, दर दरबान ना कोई रखांयदा। खड़ग खण्डा ना तेज़ कटारा, शस्त्र बस्त्र ना कोई सजांयदा। अस्व घोड़ा ना कोई अस्वारा, आपणी धार ना कोई बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला वसणहारा सच महल्ला, उच्च अटला धाम सुहांयदा। उच्च अटला हरि मुनारा, हरि साचे आप उपाया। निरगुण नूर कर उज्यारा, नर निरँकारा वेख वखाया। सच सिँघासण कर प्यारा, पुरख अबिनाशन आसण लाया। आदि निरंजण बन्ने धारा, आप आपणा खेल खिलाया। आपे पावणहारा सारा, आप आपणा भेव खुलाया। आप सुहाए बंक दुआरा, बंक दुआरी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण एका एक रघुराया। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सरूप समांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग करता नाउँ धरांयदा। आपे सन्त आपे साध, आपे हर घट डेरा लांयदा। आपे शब्द धुन होए नाद, धुन अनादी आप वजांयदा। आपे नाम नामा बोध अगाध, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपे देवणहारा दाद, आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि करतार, आपणा आप वटाया। रूप अनूप शाहो भूप सच्ची सरकार, सति सरूप सद समाया। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाया। दो जहानां पंघूड़ा रिहा झूट, सच हुलारा एका लाया। आपणे उप्पर आपे जाए तुठ, आप आपणी दया कमाया। आपणा जोबन आपे लुट्ट, आप आपणी सेज हंढाया। आपणे अन्दर आपे पए फुट, अमृत धारा आप चलाया। आपणा आप प्याए एका घुट्ट, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा बंक दुआर, जोत जगे

इक्क निरँकार, ना कोई दीसे होर पसार, एका एक रंग रंगाया। एका रंग आपणा रंग, खोल्ह दर दरवाज्जया। आपणी भिच्छया आपे मंग, भिख्या पाए ग़रीब निवाज्जया। आपणा निभाए आपे संग, आपे चढ़े अस्व ताज्जया। आपणा वजाए आप मृदंग, आपणा साजण आपे साज्जया। आपणी नुहाए आपे गंग, आपे रक्खणहारा लाज्जया। आपणी सेजा आपे सुत्ता हरि सच पलँघ, आप आपणी मारे वाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप चलाए आपणा सच जहाज्जया। निरगुण दाता बेपरवाह, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। शब्द अनादी सुत उपा, आपणा नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, ब्रह्म ब्रह्म दरसांयदा। अगम्म अगम्म खेल खिला, अलक्ख अलक्ख वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा आप जणा, आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सगन मनांयदा। सगन मनाए जोत निरँकार, निरगुण रंग रंगाया। कमलापाती मीत मुरार, घर सच्चा सज्जण आया। जोती जगी अपर अपार, तेल बत्ती ना कोई टिकाया। वरन गोती वस्सया बाहर, बरन वरन ना कोई जणाया। इक्क इक्लौती कर त्यार, धुर दी जोती वेख वखाया। उड्डी सोई नार मुटयार, हरि साचा वेख वखाया। दोहां मेला धुर दरबार, सच विचोला इक्क बणाया। चुकया डोला आप करतार, दूसर कहार ना कोई लगाया। साची सेजा कर प्यार, साची सेज हंढाया। आपे अन्दर आपे बाहर, आप आपणा फल लगाया। आप उपजाए सुत्त दुलार, हरि शब्दी नाउँ रखाया। शब्द सुत्त अपर अपार, गुर सतिगुर वेख वखाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाया। विष्नूं वंसी ख़बरदार, निराकार साकार हो आया। कँवल नाभी कर त्यार, एका फुल्ल खिलाया। एका झिरना अपर अपार, हरि साचे आप झिराया। ब्रह्मा मंगे मंग दर भिखार, निउँ निउँ सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी दया कमाया। शब्दी भरया नाम भण्डार, अतोट अतुट रखाया। साचा मार्ग अपर अपार, धुर करते आप जणाया। चारे वेद लेख लिखार, एका लेखा लेख वखाया। पुरख अबिनाशी सभ तों वस्सया बाहर, भेव कोई ना राया। सच संदेसा सर्ब संसार, त्रैगुण जोड़ जुड़ाया। पंजां तत्तां दए अधार, आप आपणा मेल मिलाया। पंज पंझी ख़बरदार, धार बवन्जा आपणी छुपाया। इक्क अकल्ला एक एकँकार, त्रै त्रै देसां वेख वखाया। शंकर करे सच प्यार, अन्ध अन्धेर उपाया। बाशक तशका गल गल हार, हथ्थ त्रिसूल उठाया। संसारी भण्डारी कर त्यार, लए दीबाण लाया। अपरम्पर करता खेल अपार, निराकार भेव ना राया। सति पुरख निरँजण हो उज्यार, सति सतिवादी वेस वटाया। लक्ख चुरासी कर त्यार, लोकमात नाउँ उपाया। वरभण्डी खेले खेल करतार, आपणी डण्डी मार्ग लाया। तेज़ प्रचण्डी शब्द कटार, ब्रह्मण्डी आप चमकाया। पावे वंडी अपर अपार, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाया। पंज

५२८ ०८

तत्त कर प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच समाया। मन मति बुध दए अधार, आसा तृष्ना वेख वखाया। नौ दर खोल्हे आप किवाड़, पंचम धाड़ डेरा लाया। आपे वस्सया डूँघी गार, सुखमन टेडा राह चलाया। संगम बणया अद्धविचकार, दिस किसे ना आया। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, घर साचे मंगल गाया। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर धारा आप चुआया। आपणा पर्दा आपे पाड़, अपणा मार्ग विच रखाया। घर विच घर महल्ल उसार, दस्म दुआरी नाउँ रखाया। जोत निरँजण सेवादार, साची सेव कमाया। सुरत सवाणी रोवे ज़ारो ज़ार, दिवस रैण रही कुरलाया। शब्द गुर हाणी होया ख़बरदार, घर साचे फेरा पाया। एका सेजा करे प्यार, हरिजन साचे वेख वखाया। नाता तुटे सर्ब संसार, जिस जन आपणा दरस दिखाया। भगत भगवन्त साची कार, काया मन्दिर आप चलाया। साधां सन्तां कराए वणज वपार, नाम हट्ट इक्क खुल्हाया। चौदां हट्टां खोल्ह किवाड़, एक तोला वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, पंज तत्त वड्याईआ। पंज तत्त करे उज्यार, सरगुण वज्जे वधाईआ। सरगुण मिटे अन्ध अँध्यार, निरगुण दीपक इक्क जगाईआ। निरगुण दीवा अपर अपार, हरि साचा इक्क रखाईआ। सरगुण देवे इक्क प्यार, लोकमात वड्डी वड्याईआ। डूँघी कुन्दर कर उज्यार, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, भगतन मेला सहिज सभाईआ। सतिजुग तेरा सच वरतार, हरि साचा सच वरताईआ। सोइम रूप आप निरँकार, सो पुरख निरँजण इक्क अख्वाईआ। हँ ब्रह्म कर त्यार, जीव जन्त उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मार्ग लाईआ। आपणा मार्ग आपे ला, आपणी खेल खिलांयदा। चारे वेदा लेख लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिजुग साची रचन रचा, साचा कर्म कमांयदा। सन्त सुहेले गले लगा, दूती दुष्टा मेट मिटांयदा। खेले खेल थाउँ थाँ, नौ खण्ड फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस अनेका आप करांयदा। वेस अनेका करनेहारा, करनी करता आप अख्वाया। जुगां जुगन्तर कर पसारा, निरगुण सरगुण वेखण आया। सरगुण रूप हरि अवतारा, निरगुण नूर डगमगाया। पंज तत्त बन्न्हे धारा, पंचम मोह चुकाया। आपे होए गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मात धर, आपे बेड़ा पार कराया। सतिजुग साचा उतरया पार, त्रेते वज्जी वधाईआ। राम रामा हरि अवतार, राम रूप आप हो जाईआ। तोड़े लंका गढ़ हँकार, सच बबाना हथ्थ उठाईआ। ग़रीब निमाणयां पाए सार, आप आपणे गले लगाईआ। त्रीया वेस अपर अपार, त्रैगुण तत्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता लेखा आप मुकाईआ। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर जोत जगाए। वेद

ब्यासा बण लिखार, पुराण अठारां गणाए। कान्हा कृष्ना गुण निधान, ना कोई चिल्ला तीर कमान, रथ रथवाही रथ चलाए। अर्जन गीता इक्क ध्यान, अठारां बरनां इक्क फ़रमान, एका शब्द सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर लहिणा आप मुकाए। द्वापर लहिणा गया मुक्क, कलिजुग वज्जी वधाईआ। हरया बूटा गया सुक्क, अमृत सिंच ना हरया कोए कराईआ। जूठ झूठ रिहा बुक्क, काम क्रोध लोभ मोह करे लड़ाईआ। सुफल ना दिसे कोई कुक्ख, जननी जन ना कोए जाईआ। साध सन्त बैठे लुक, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि रुशना, एका एक डगमगाया। ईसा मूसा दर खुल्ला, एका नाअरा लाया। एका कलमा आप पढ़ा, संग मुहम्मद चार यारी लए उठाया। ऐनलहक्क वेख वखा, मुकामे हक्क इक्क ख़ुदाया। देवणहारा सिफ्त सलाह, साचा मार्ग रिहा जणाया। कायनात फेरा पा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। अञ्जील कुरानां लेख लिखा, तीस बतीसा आपे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर हरि भगवाना, आदि पुरख अबिनाशया। खेले खेल दो जहानां, मण्डल मण्डप पावे रास्सया। शब्द जणाई इक्क तराना, जुग जुग लोकमात प्रकास्सया। नानक निरगुण इक्क वखाना, खेले खेल पृथ्मी आकास्सया। एका पद पद निरबाणा, घर मेला शाहो शाबासया। हरि सतिगुर पुरख इक्क वखाना, लेखा चुक्के दस दस मास्सया। शब्द अनादी इक्क तराना, रसना जेहवा चले स्वास्सया। पाया हरि बीना दाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण होए शाहो साबास्सया। निरगुण सतिगुर शाह सुल्तान, बेऐब नाम धरांयदा। वसणहारा सच मकान, घर साचा आप उपांयदा। हथ्थ रखाए इक्क निशान, लोआं पुरीआं आप झुलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सारे गाण, सुरपति राजा इन्द सीस झुकांयदा। चौदां लोकां खोल्ल दुकान, चौदां तबकां वेख वखांयदा। आपे कलमा नूर अलाही रिहा वखाण, आपणी रसना आपे गांयदा। आपे देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा शब्द सुणांयदा। आपे निरगुण नानक कर परवान, मन्त्र नाम सति दृढ़ांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगांयदा। राउ रंक ना कोए राजान, ग़रीब निमाणे आप उठांयदा। दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, जग तृष्ना भुक्ख गवांयदा। मेल मिलावा गोपी काहन, सीता सुरती राम मिलांयदा। सर्ब जीआं घट जाणी जाण, जानणहार दिस ना आंयदा। आदि जुगादी जन भगतां करे आप पछाण, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत डगमगांयदा। नानक जोती जोत जगा, हरि नूरो नूर रुशनाया। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, पूत सपूता नाउँ रखाया। सुत्त दुलारा आप उपजा,

आपणा मेल मिलाया। साचा मार्ग इक्क रखा, एका रिहा समझाया। चार वरन बणाए भैण भ्रा, नाता बिधाता आप जुड़ाया। कलिजुग जीव कोई भुल्ले ना, हरि का भेव किसे ना पाया। बिन हरिभगती कोई फले फुले ना, फुल फुलवाड़ी ना कोए महिकाया। जगत माया कोई रुले ना, दे मति आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। गोबिन्द गुर सूरबीर, हरि साचा सच रखांयदा। इक्क कमान एका चिल्ला एका तीर, एका हत्थ उठांयदा। एका बस्त्र एका चीर, एका शस्त्र तन सजांयदा। एका चोटी चढ़े अख़ीर, एका मार्ग लांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखांयदा। गुरमुखां देवे नाम इक्क अनडीठ, जगत नेत्र ना कोए रखांयदा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, ना सोया कोई उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग करता आपणा भेव आप खुल्हांयदा। गोबिन्द मेला हरि निरँकारा, सतिगुर पुरख कराया। शब्द अनादी इक्क जैकारा, वाह वाह गुरू सलाहया। फतिह डंका अपर अपारा, निरगुण जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आप बुझाया। आपणी बूझ शब्द ज्ञान, गोबिन्द रंग रंगांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा भेव खुल्हांयदा। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, वेला अन्तिम आप सहांयदा। प्रगट होए निहकलंक बली बलवान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नाउँ रखांयदा। उच्चा टिल्ला पर्बत इक्क महान, बजर कपाटी सिला लगांयदा। सम्बल नगरी सच मकान, हरि सतिगुर आसण लांयदा। दिस ना आए जीव नादान, कोटन कोटी भरम भुलांयदा। जिस जन उपजे आत्म ज्ञान, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। देवे नाम सच्ची धुनकान, धुन आत्मक आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका विच संसारा, चारों कुन्टां रिहा वजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप उठाईआ। लक्ख चुरासी पार किनारा, अध विचकारा वेख वखाईआ। मनमुख डुब्बे वहिंदी धारा, शौह दरयाए आप रुढ़ाईआ। गुरमुख साजण उतरे पारा, जो जन रसना हरि हरि गाईआ। मिले मेल मीत मुरारा, कान्हा कृष्ना रूप वटाईआ। राम रामा हो उज्यारा, नेत्र लोचण दरस वखाईआ। नानक गोबिन्द ख़बरदारा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। अमृत भरया इक्क भण्डारा, निरगुण आपणा आप प्याईआ। सरगुण करे ठंडा ठारा, तत्व तत्त ना कोए रखाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, सच प्रकाश जणाईआ। निहकलंक नर लै अवतारा, मात पित ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा सर्ब लोकाईआ। सर्ब लोकाई हरि हरि वेख, नौ खण्ड फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेख, घट घट डेरा लांयदा।

आपे लाए आपणी मेख, आपे जड़ उखड़ांयदा। आप उपजाए धारी केस, मूंड मुंडाए आप उपांयदा। आपे होए दस दस्मेस, गोपी काहन आप नचांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शिव शंकर आपणा नाउँ धरांयदा। आपे होए रिखी केस, गवर्धन हथ्थ रखांयदा। आपे मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर रिहा वेख, ऐनलहक्क आपे नाअरा लांयदा। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग हंढांयदा। आपे दाता नर नरेश, दो जहानां आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम करया वेस, निहकलंका नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर जुग विछड़े मेल मिलांयदा। हरि सज्जण सतिगुर पाया, परम पुरख करतार। गुरसिख साचा घर सुहाया, मेल मिलावा मीत मुरार। एका दूजा भउ चुकाया, तीजे नेत्र दरस अपार। चौथे पद डेरा लाया, विसरया घर बार। पंचम मीता नज़री आया, पंचम मेला कन्त भतार। छेवे छप्पर छन्न ना कोए रखाया, निरगुण जोत जगे अपार। सत्तवें सति पुरख निरँजण मेल मिलाया, आप आपणी किरपा धार। अट्ठां तत्तां डेरा ढाया, मन मति ना करे ख्वार। नौ दुआरे बाहर कढाया, दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़। उच्चे मन्दिर आप चढ़ाया, आपणी हथ्थीं देवे वाड़। जोती नूर करे रुशनाया, अग्नी लग्गे ना तत्ती हाढ़। अमृत ठांडा जल प्याया, आप आपणी किरपा धार। सुरती शब्दी मेल मिलाया, सुहाया बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण लाए पार। गुरसिख मीत मुरारड़ा, मेला धुरदरगाह। निरगुण सरगुण सच्चा यारड़ा, शब्द बणाए मलाह। सद वसे धाम न्यारड़ा, अलक्ख अगम्म अथाह। जन भगतां करे प्यारड़ा, आपे पिता आपे माँ। लक्ख चुरासी पार कनारड़ा, जिस जन देवे ठंडी छाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी खेल आपे कर, करे खेल मीत मुरारड़ा। हरिसंगत हरि वस्सया, गुर सतिगुर पुरख करतार। जन भगत दुआरे फिरे नस्सया, आदि जुगादी हरि हरि कार। साचा मार्ग एका दस्सया, मेटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जगत विकारा चरनां हेठां दब्या, जो जन मंगे नाम बण भिखार। तीर निराला सतिगुर पूरे एका कस्सया, आप आपणी किरपा धार। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, जोती नूर करे उज्यार। कोटन कोटि प्रकाश होए रवि सस्सया, दो दस बारां उतरे पार। घर साचे बहि बहि हस्सया, जन मेला मीत मुरार। रस देवे अमृत रस्सया, निझर झिरना खण्ड रखार। कलिजुग माया मूल ना डस्सया, हरिजन देवे दर दुरकार। सगल वसूरा लोकमात लथ्थया, नेत्र लोचण नैण दर्शन गुर करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम भण्डार। हरिसंगत नाम हरि वरतारा, हरी हरि आप अख्वाईआ। आत्म अन्तर भर भण्डारा, एका ब्रह्म जणाईआ। जन्म कर्म ना कोए विचारा, गुण अवगुण ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत ल्ए तराईआ। हरिसंगत हरि हरि भेटया, हरि गोबिन्द मीत मुरार। गुर सतिगुर खेवट खेटया, कलिजुग बेड़ा लाए पार। शब्द दोशाले आप लपेटया, दुरमति मैल उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीती साचा नाता, हरिजन जोड़ जुड़ाईआ। मेल मिलावा पुरख बिधाता, पुरख परखोतम वेख वखाईआ। गुरसिख तेरी उत्तम जाता, वरन गोत ना कोए उपजाईआ। अमृत पीता काया बाटा, सर सरोवर इक्क भराईआ। गंगा जमना सुरस्ती मारे ठाठा, गोदावरी डेरा लाईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अठसाठा, जो जन आए सरनाईआ। एका मन्त्र नाम ज्ञान पूजा पाठा, एका करे पढ़ाईआ। अग्गे रक्खे नेड़े वाटा, पिछला पन्ध चुकाईआ। पूरा करन आया घाटा, साचे कंडे तोल तुलाईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, दीनां नाथां होए सहाईआ। सदा सुहेला सगला साथा, साचा संग निभाईआ। लहिण देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। सोहँ चलाए साचा राथा, आपणी सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत बेड़ा रिहा तराईआ। हरिसंगत हरि बेड़ा बन्न्, आपणे कंध उठाया। गुरसिख चढ़या साचा चन्न, लोकमात करे रुशनाया। भाण्डा भरम आपणा भन्न, हउमे गढ़ तुड़ाया। जगत तृष्ना बुझी तन, सतिगुर पूरा नज़री आया। जननी जणया साचा जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। दिस ना आए कलिजुग जीवां आत्म अन्न्, कलिजुग रैण अन्धेरा छाया। पुरख अकाल दीन दयाल दिन दिहाड़े लाए संन, औंदा जांदा दिस ना आया। लक्ख चुरासी देवण आया डन्न, जो घड़या सो भन्न वखाया। गुरमुख विरला हरि हरि हिरदे जाए मन्न, हरि हिरदे आप टिकाया। शब्द अनादी आदि ब्रह्मादी सुणाए कन्न, आप आपणा राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आकाश प्रकाश इक्क वखाया। इक्क प्रकाश इक्क तेज़, एका ईद चन्न चढ़ाईआ। एका सति साची सेज, एका वेख वखाईआ। एका कट्टणहारा नंग नंगेज़, एका पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, हरि मेला सहिज सुभाईआ। हरि मिल्या जन हरि गुणवन्त, गोबिन्द रूप समाया। पूरन जोत जगी श्री भगवन्त, लोकमात करे रुशनाया। गुरमुख साजण साचा सन्त, सतिगुर पूरे आप उपजाया। आपे जाणे आपणी बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगां जुगन्त, सन्त कन्त भगत भगवन्त, एका सेज एका आसण पुरख अबिनाशन, पृथ्मी आकाशन शाहो शाबाशन, शब्द स्वासन मेल मिलाया। गुरमुख अक्खर एका पढ़या, जगत विद्या दए तजाईआ। आपणे अन्दर आपे चढ़या, जिस जन पूरन बूझ बुझाईआ। जगत तृष्ना विच ना सड़या, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। आपणा तोड़े हँकारी

५३३ ०८

गढ़या, किला कोट डेरा ढाईआ। सतिगुर पूरे लड़ एका फड़या, बेड़ा बन्ने लाईआ। आपणे अन्दर आपे वड़या, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका अक्खर जगत वक्खर राम नाम साची करे पढ़ाईआ। अक्खर एका हरि पढ़ाउणा, चार वरन करे कुड़माईआ। संसा रोग सर्ब गवाउणा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। मन हँकारी डेरा ढाउँणा, खण्डा नाम चमकाईआ। सति सतिवादी फड़ उठाउणा, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। बुध बिबेकी आप कराउणा, नाम निधाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, साची विद्या इक्क पढ़ाईआ। राम नाम सच उपदेश, हरिभगतां आप सुणांयदा। देवणहारा धुर संदेश, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। आदि जुगादी कर कर वेस, आप आपणे वेख वखांयदा। जगत विद्या ना चले कोई पेश, चौदां विद्या मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, राम नाम इक्क दृढ़ांयदा। राम नाम शब्द ज्ञान, रंगण रंग समाया। इष्ट दृष्ट इक्क वखान, सृष्ट मूल चुकाया। अन्दर मन्दिर सच मकान, गुरमुख डेरा लाया। दाता दानी देवे दान, धुरदरगाही लै के आया। एका राग सुणाए कान, आपणा मंगल आपे गाया। नेड़ ना आए पंज शैतान, साचा संगल तन बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा कर परवान, दाता दानी गुण निधान, गुरमुखां देवे धुर फ़रमान, साचा नाम इक्क दृढ़ाया। मन्त्र नाम नाम सति, गुर नानक नाम दृढ़ाया। चार वरनां देवे एका मति, एका ब्रह्म दरसाया। एक वखाए साचा रथ, रथ रथवाही एका नज़री आया। एका पूजा एका पाठ, एका रिहा पढ़ाया। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क उपाया। कलिजुग जीव विके हाटो हाट, गुर का शब्द ना किसे कमाया। बजर कपाटी ना गई पाट, दूई द्वैती ना पर्दा लाहया। खेले खेल नटूआ बाज़ीगर नाट, घर घर बैठा सांग वरताया। नानक सेज गुरमुख कोई सुत्ता साची खाट, दस्म दुआरी आसण लाया। सति नाम ना रक्खी कोई घाट, ना कोई घाटा दए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मन्त्र इक्क दृढ़ाया। सतिनाम कलिजुग धार, गुर नानक मात चलाईआ। कलिजुग अन्तिम उतरे पार, थिर कोई रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे होए उज्यार, प्रभ साची करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द कर त्यार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। पिछला कर्ज़ा आप उतार, नानक तोला इक्क बणाईआ। तेरां तेरां तोल्लया सर्ब संसार, मोदीखाना इक्क चलाईआ। सतिजुग वरते हरि वरतार, साची दए गवाहीआ। एका रंग रंगे करतार, एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगला लेखा आपणा हथ्थ हरि समरथ, आदि जुगादि जुग जुग आपणी कथा आपे रिहा चलाईआ। शब्द खोज गुर जानणा, गोबिन्द भेव अपार। गुरू

ग्रन्थ गुर मानणा, पंज तत्त ना कोई आकार। एका नाम वखानणा, निरगुण रूप निरँकार। हरि का भाणा सदा मानणा, गुरमुखां करे ख़बरदार। कलिजुग अन्तिम जिस जन पछानणा, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। गुरमुखां देवे दानी दानना, साचा शब्द भण्डार। जोद्धा सूरबीर बलकार साचा छत्र इक्क झुलावणा, राज राजाना शाह सुल्तानां करे ख़बरदार। एका डंक वजावणा, साचा धर्म इक्क वखानणा, चार वरनां करे प्यार। सत्तां दीपां फेरा पावणा, नौवां खण्डां दए हुलार। ब्रह्मा विष्न शिव उठावणा, करोड़ तेतीसा दए हुलार। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, आप आपणी किरपा धार। पुरख अकाल इक्क मनावणा, धुन अनादि सच्ची धुन्कार। गुर चेला एका धाम बहावणा, ना कोई दूसर दर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल आपणा हुक्म आप सुणावणा। हरि का भाणा गोबिन्द मन्नया, हरि शब्द करे जणाईआ। पन्थ ख़ालसा ताणा तणया, अमृत जाम प्याईआ। चार वरनां बेड़ा बन्न्या, ऊँच नीच ना कोई रखाईआ। मनमुखता माया ममता होई अन्नया, चारों कुन्ट नैण बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल सदा रखवाल, दो जहानां निगहबान, जीव जन्त आदि अन्त साध सन्त आपणी रीता पतित पुनीता ठांडा सीता आपे रिहा चलाईआ। पहली शक्ती हरि करतार, गुरमुख जोत जगाईआ। दूजा व्यक्ती हो त्यार, निरगुण सरगुण डेरा लाईआ। तीजे धरनी सोहे दुआर, हरिसंगत रही सुहाईआ। चौथे पद ख़बरदार, मनमुखां रिहा भुलाईआ। पंचम मिल्या मीत मुरार, तेज़ भान करी रुशनाईआ। जो जन सुत्ते पैर पसार, सम्मत सतारां दए उठाईआ। अठारां तोड़े गढ़ हँकार, वहिंदी धारे आप वहाईआ। साचा नाअरा विच संसार, गुरमति मनमति नाल लड़ाईआ। जो जन चरन डिगे आ दुआर, नानक गोबिन्द रूप दरसाईआ। जो जन हरिसंगत करे प्यार, रामा कृष्ना नज़री आया। जो जन मन रक्खे हँकार, मन मनुआ दए भुआईआ। कलिजुग अन्तिम तिक्खी रक्खी धार, दोवें मुख सलाहीआ। गुरमुखां बेड़ा जाए तार, मनमुखां दए डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी दया कमाईआ। तारनहार पुरख समरथ, नाथ अनाथां आप तरांयदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, जो जन आए दर्शन पांयदा। सदा सुहेला वसे साथ, विछड़ कदे ना जांयदा। आप उतार आपणे घाट, वञ्झ मुहाना आप चलांयदा। अग्गे नेड़े रक्खे वाट, जन भगतां पन्ध मुकांयदा। आपे खेवट आपे घाट, आपे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखे लाए आए दर, आवण जावण पतित पावण, लक्ख चुरासी जम की फाँसी, धनकपुर वासी शाहो शबासी फंद कटांयदा। राम नाम जेहवा जाप, उतरे पार किनारा। गुरमुख होए वड प्रताप, हरि देवणहार सहारा। कलिजुग काया रही कांप, चारों कुन्ट धूंआँधारा। जो जन बुज्झे आपणा आप, उतरे पार किनारा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरि जन देवे सच भण्डारा। राम नाम सच रमायण, गुरमुख कथा सुणाईआ। राम वेखे आपणे नैण, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सच्चा साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण आप अख्वाईआ। गुरमुखां चुकाए लहिण देण, जो जन सीस झुकाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सजाईआ। सचखण्ड दुआरे साचे बहिण, जिस जन रसना गाया गोबिन्द सच्चा माहीआ। सोहँ ढोला आप सुणाया, साचा बोला वड वड्डी वड्याईआ। कलिजुग चोला आप तजाया, तत्व तत्त रलाईआ। मेरा तेरा तेरा मेरा भेव चुकाया, चाकर ख़ाक सेवक गोला जीव ब्रह्म पारब्रह्म अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ ।

✪ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी राम लाल दे घर पिण्ड सरदारी जम्मू ✪

निहकलंक हरि निरँकार, शब्दी डंक वजांयदा। रवि ससि ख़बरदार, सेवक साची सेवा लांयदा। ब्रह्मा शिव दए हुलार, विष्नूं वंसी वेख वखांयदा। इक्क अकल्ला हो उज्यार, निरगुण धार चलांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, मण्डल मण्डप फोल फोलांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, जेरज अंड डेरा ढांयदा। उत्भुज सेत्ज करे कार, आप आपणी कल वरतांयदा। नाम डंका अपर अपार, राउ रंकां आप सुणांयदा। दुआर बंका सुहाए दुआर, सच सिँघासण आसण लांयदा। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। तिक्खी रक्खे दोवें धार, दो जहानां आप चलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी हो उज्यार, सत्तां दीपां मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी वेख विचार, हरिजन साचे आप उठांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, रवि ससि संग रलांयदा। निउँ निउँ सारे करन निमस्कार, हरि मृगिन्द आप हो जांयदा। गुणी गहिंद जाणे आपणी कार, वेद कतेब भेव ना आंयदा। मन मति बुध ना पाए सार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा भाणा आप जणांयदा। चारों कुन्ट नाअरा दए लग्गा, दहि दिशा वेख वखांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर इक्क वखांयदा । पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार कमा, अगम्मड़ी धाड़ आप उठांयदा। वरभण्डी हरि डेरा ला, ब्रह्मण्डी खोज खुजांयदा। भेख पखण्डी दए मिटा, साची डण्डी इक्क चलांयदा। आत्म रंडी कोई दिसे ना, कन्त कन्तूहल साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी खेले खेल, घर घर घर घर विच अलक्ख जगांयदा। रवि ससि करन पुकार, हरि साचे सेवा लाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी जोत दए रुशनाईआ। जोती नूर कर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ।

५३७ ०८

जीव जन्त ना पावे सार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पढ़ पढ़ विद्या गए हार, हरि का रूप दिस ना आईआ। चारों कुन्ट होया विभचार, नार दुहागण रही कुरलाईआ। गुरमुख विरला होया ख़बरदार, घर वेखे साचा माहीआ। चारों कुन्ट इक्क सरकार, इक्क सिक्दार आप अख्वाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, बस्त्र शस्त्र इक्क सुहाईआ। अस्व घोड़े हो अस्वार, शाह अस्वारा रिहा दौड़ाईआ। चढ़या दुलदुल बेऐब परवरदिगार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सति सति सति करे वड्याईआ। सति हरि सति दर, सति रूप समाया। सति सति करनी रिहा कर, सति सति वेख वखाया। सति सति धरनी उप्पर देवे धर, सति असति रहिण ना पाया। ब्रह्म मति एका वर, ज्ञान जोत इक्क जगाया। लक्ख चुरासी उब्बल रत, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे गेड़नहारा उलटी लट्ट, कलिजुग गेड़ा आप गढ़ाया। निहकलंक निरगुण धार आपे वेखे नट्ठ नट्ठ, आउँदा जाउँदा दिस ना आया। लेख चुकाए दिवस तिन्न सौ सट्ठ, अठसठ मेल मिलाया। चौदां तबकां वेखे हट्ट, चौदां लोक फोल फोलाया। जन भगतां मैल दुरमति कट्ट, आप आपणी बूझ बुझाया। तन नगारे मारे सट्ट, अनहद साची सेवा लाया। चढ़े दल वेखे भट्ट, भव सागर विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रवि ससि दर दुआरे अग्गे रहे खड़, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाया। रवि ससि दर दरवेश, हरि साचे सच वड्याईआ। मंगी मंग ब्रह्मा विष्न महेष, गणेश अग्गे झोली डाहीआ। फिरे दरोही देस प्रदेश, लोक परलोक ना कोए सहाईआ। सहँसर मुख गा गा थक्का शेष, हरि की गति ना कोए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया माझे देस, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जामा धरया भेस, शब्द डंका इक्क वजाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई चोटी मूंड मुंडाईआ। लक्ख चुरासी रिहा वेख, वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण हरि अख्वाईआ।

हरि की फौज हरि ही वेखे, दूसर दिस किसे ना आईआ। माया ममता भरम भुलेखे, कलिजुग जीव भुलाईआ। मानस जन्म किसे ना लेखे, आपणी गति ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन हरि भगतां आपणी फौज ना किसे वखाईआ। आपणी फौज आपणे अन्दर रक्ख, आपणा संग निभांयदा। रवि ससि सैनापति करे प्रतक्ख, जिस जन चरन लगांयदा। कलिजुग काया अन्दर लौंदे भक्ख, चारों कुन्ट अग्न लगांयदा। आपे करनहारा वक्ख, माया

ममता वंड वंडांयदा। लेखा जाणे लिख्या थित्त, एका पट्टी नाम पढ़ांयदा। गुरसिख वखाए साचा हट्ट, जिस दुआरे साची सैना आप बहांयदा। चारों कुन्ट औखा घाट, बिन गुर पूरे कोए ना पार करांयदा। आपे जाणे आपणी वाट, आपणा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सैनापत देवे मति, साचा हुक्म धुर फ़रमाना, जोत सरूपी हरि भगवान, एका एक सुणांयदा। हरि का शब्द धुर फ़रमाना, सैनापत अख्वाया। चारों कुन्ट लभ्भे राजा राणा, शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाया। लक्ख चुरासी ना दिसे कोई टिकाना, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर सुहाया। पहली चेत्र कर त्यारी, हरि साचे खेल रचाईआ। पंज तत्त जगत ख्वारी, राज राजानां आप भुलाईआ। निरगुण जोत वसे सभ तों बाहरी, बन्दीखाने बन्द ना किसे कराईआ। दो जहानां आवे जावे वारो वारी, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। नीले बस्त्र हरि बनवारी, अल्ला राणी वेख वखाईआ। हक्क हककीत रही कुँवारी, साचा शाहो ना कोई हंढाया। मक्का काअबा वेखे महल्ल अटारी, दो दोआबा आप सुहाईआ। मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर शाह हकीर पावे सारी, लहिंदी दिशा वेख वखाईआ। काया गंढु झूठी महल्ल अटारी, हरि का रूप हर घट रिहा समाईआ। सिँघ पूरन बणया जगत वपारी, जीवां जन्तां भरम भुलेखा पाईआ। निरगुण जोत इक्क निरँकारी, नौ खण्ड सत्त दीप छिन भंगर आवे जावे फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं रक्खे चरनां हेठ आपे जाणे आपणी धारी, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र जगत खेत्र हरि साचा वेख वखाईआ। काया नाता पहलों तोड़, दूजे कर्म कमाया। तीजे पौड़े चढ़या तोड़, चौथे डेरा लाया। पंचम आपे रिहा बौहड़, छेवां दर सुहाया। सत्तवां सत्त सत्त रिहा होड़, अट्ठां तत्तां बन्द ना किसे कराया। नौ दर दरवाज़े ना कोई लोड़, दसवां कुण्डा आपे लाहया। सुन्न अगम्मी आपे बौहड़, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। अलक्ख निरँजण आप बुझाए आपणी औड़, अगम्म अथाह आप हो जाया। लहिंदी दिशा पाए हिस्सा आदि निरजंण वेखे दौड़ दौड़, राज राजानां शाह सुल्तानां राउ रंकां जीआं जन्तां साधां सन्तां दिस ना आया। लशकर शाही हुक्म फ़रमान, हरि बंधन कोए ना पांयदा। बिरध बाल नौजवान, नरेश वरेश ना कोए वखांयदा। कड़ी हथ्थ ना कोए लगान, ज़ंजीर तन ना कोए बन्ंायदा। आपे होए जाणी जाण, आपणी खेल आप खिलांयदा। निरगुण जोत श्री भगवान, आदि जुगादी वेस वटांयदा। निहकलंक बली बलवान, पहली चेत्र रुत्त सुहांयदा। वेख वखाए शाह ईरान, अफ़गाना अफ़गान आप हो जांयदा। दीन मज़्हब बण इस्लाम, कलमा अमाम आप पढ़ांयदा। रसूल अल्ला हो प्रधान, इक्क अकल्ला वेख वखांयदा। चढ़या चिल्ला इक्क कमान, शब्द तीर आप चलांयदा। मेट मिटाए बेईमान,

बेईमाना ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी हद्द, आप वजाए आपणा नद आपणी धार आप चलांयदा। शाह ईरान हरि उठाउणा, कलमा अमाम इक्क पढ़ाउणा, आब हयात इक्क प्याउँणा, पुन्न सवाब इक्क रखांयदा। जगत कनात पर्दा लौहणा, जगत अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत सरूपी करे कार, वरते वरतावे विच संसार, सिँघ पूरन नाल पिछला प्यार, कलिजुग अन्तिम दित्ता तार, सरगुण खेल विच संसार, भगत विहार जोत उज्यार, आर पार आप चलांयदा।

जगत नेत्र अज्ञान अन्ध, बिन सतिगुर ना कोए खुल्हाईआ। कलिजुग झूठा दिसे पन्ध, ना सके कोई मुकाईआ। जन भगतां ख़ुशी होया बन्द बन्द, कलिजुग वेला दए दुहाईआ। अट्ठे पहर रहे परमानंद, जगत हिरस हरस मिटाईआ। जो गाया हरि सुहागी छन्द, पूरा रिहा कराईआ। भेव ना पायण बत्ती दन्द, पीसन पीस ना पीस पसाईआ। रसन वकारा जूठ झूठ गन्द, दूई द्वैती कंध ना कोए ढाईआ। शेख़सर चढ़ाया साचा चन्द, वेखण आई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे पूर कराईआ। लिख्या लेखा होए पूरा, ना कोई मेट मिटांयदा। जन भगतां लाहे सगल वसूरा, संसा रोग मिटांयदा। गुरमुखां वसे नेरन नेरा, दूरन दूर नज़री आंयदा। शेख़ सर वस्सया हाज़र हज़ूरा, आपणी गत आप जणांयदा। गुरमुख नारी कर प्यारी, तेजभान चढ़ाया साचा जोड़ा, मैहन्दी रंगण नाम रंगांयदा। एका रंग रंगाया गूढ़ा, उतर कदे ना जांयदा। पहलां बख़्शी चरन धूढ़ा, दूजा मस्तक टिक्का आप सुहांयदा। तीजे मस्तक तीजे नैण करे कराए बचन पूरा, स्वच्छ सरूपी दरस वखांयदा। चार कुन्ट बारां बारां कोस पहले हूंझे कूड़ा, धरत धवल वेख वखांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, आप आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग्यारां कत्तक लिख्या लेख वीह सौ चौदां बिक्रमी रिहा पेख, भुल्ल भुल्ल नर वक्त लँघांयदा। लिख्या लेखा ना जाए भुल्ल, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। तोलणहारा पूरा तोल, एका कंडा रिहा रखाईआ। लिख्या लेख ना मिटे रत्ती चौल, बिन हरि किरपा ना कोई बूझे बूझ बुझाईआ। बिन सति दुआरा हरि का शब्द रहे फोल, गोझ ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक्क सुहाईआ।

हरि दुआर सचखण्ड दुआरा, हरि साची जोत रुशनाईआ। निरगुण नूर अपर अपारा, नूरो नूर डगमगाईआ। जुगां

जुगन्तर लै अवतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। पंज तत्त कर प्यारा, आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जामा हरि अवतार, साचा खेल खिलाया। गुरमुखां अन्दर कर प्यार, आपणा रंग चढ़ाया। एका बख्शे सच विहार, साचा मार्ग एका लाया। निरगुण बाती कर उज्यार, दीपक एका एक जगाया। कमलापाती करे सच विहार, जगत नाता जोड़ जुड़ाया। साचा चवर कर प्यार, गुरमुख साजण हथ्थ फड़ाया। पहलों आपणा आप दित्ता वार, हरिसंगत भेट चढ़ाया। लोकमात ना दिसे छार, हड्ड मास नाड़ी नज़र ना आया। सो पुरख निरँजण कर आकार, निराकार वेस वटाया। साचा चवर चवर हुलार, गुरमुखां हुलारा रिहा दवाया। शब्द गुर शब्द जैकार, शब्द हरि शब्द अवतार, शब्द शब्दी आप हो जाया। गुरू ग्रन्थ बणाई शब्द धार, पंज तत्त अर्जन सेवा लाया। नानक मिल्या इकउँकार, जगत विद्या ना कोए सिखाया। साचा वेखे धुर दरबार, आप आपणा मेल मिलाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक कल्की अवतार, सीस जगदीस ना कोए वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर गण गंधर्ब फूलन बरखा उप्पर लाण, दोए जोड़ जोड़ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखीआं दित्ता साचा वर, एका चवर हथ्थ फड़ाया। चवर हुलारा धुर दरगाह, गुर सतिगुर आप रखांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, बेड़ा बन्ने लांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप बहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल धुवांयदा। सदा सुहेला रक्खे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणे सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी शक्त आपणे विच टिकांयदा। हरि शक्ती ना सके कोई खोह, बन्दा बन्दगी विच ना लाया। जगत तृष्ना ना कोई मोह, पंज तत्त ना कोई धराया। हास बिलास ना रिहा रो, तन श्रृंगार ना कोए जणाया। ना कोई ढोआ देवे ढो, सति वस्त ना कोई फड़ाया। करे कराए करनी करता करनी आपे हो, दूसर संग ना कोई रलाया। गोबिन्द मेला साचे सो, हँ ब्रह्म वेख वखाया। आपे हर घट दिसे अग्गे हो, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धार आप बंधाया। हरि प्रसादि लाया भोग, वड्डी वड वड्याईआ। आत्म अन्तर दित्ता पहला जोग, सतिगुर पाया मेरी माईआ। पंजां प्यारया मिटया रोग, नाम प्रसादि इक्क वरताईआ। एका दित्ती साची चोग, किसे लोकमात हथ्थ ना आईआ। हरिसंगत देवे दरस अमोघ, जागरत जोत इक्क जगाईआ। राह तक्कण बैठे चौदां लोक, चारों कुन्ट नैण उठाईआ। कलिजुग अन्त सुणाया इक्क सलोक, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। देवण आया साची मोख, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग,

बंधन बन्द ना कोई बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा विहार आपे रिहा वखाईआ। आपणी दृष्ट आपे पा, भोगी भोग लगांयदा। साचा मन्त्र नाम विच वसा, गुरमुखां मुख लगांयदा। साची अरदास आप सुधा, अभुल्ल पाठ करांयदा। जीव जन्त साध सन्त सति सरूप ना सके कोई वखा, कलिजुग कूड़ कुड़यारा अन्धेरा छांयदा। अन्तिम करन आया सच न्याँ, साची धारा आप बंधांयदा। पुरख अकाल एका लैणा मना, गुर गोबिन्द गवाह रखांयदा। हरि शब्द अग्गे सीस देणा झुका, जिस मन्दिर अन्दर आपे गांयदा। साढे तिन्न हथ्थ दुआरा ल्या बणा, सम्बल नगरी नाउँ रखांयदा। उच्च महल्ल अटल वेखे थाँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी गुर इक्क समझांयदा। शब्द गुर इक्क दातार, आदि जुगादि अख्वाया। बिन हरि शब्द ना किसे करे कोई निमस्कार, पंज तत्त ना सीस झुकाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ल्ए तराया। चार वरनां करे इक्क प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए रखाया। भगती भरे भगत भण्डार, नाम नामा झोली पाया। एका शक्ती हरि अवतार, आदि जुगादी खेल खिलाया। बूंद रक्ती वस्सया बाहर, मात गर्भ ना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। जुग जुग धार जोत अकाली, आपणी आप चलाईआ। आपे बणे सच्चा हाली, आपे बीज बिजाईआ। आपे फल लगाए डाल्ही, आपे पत पत सोभा पाईआ। आपे आवे बण के माली, लोकमात वेख वखाईआ। आपे आपणे हथ्थां रक्खे खाली, जन भगतां भण्डार आप भराईआ। एका वणज कराए नाम दलाली, हक्क हलाली इक्क जणाईआ। सालस बणया हरि साचा साली, दो जहानां वेख वखाईआ। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी काली, काली माता चरनां हेठ दबाईआ। अष्टभुज जोत ज्वाली, आप आपणे विच समाईआ। सिँघ शेर शेर अस्वारी, नर निरँकारी आप हो जाईआ। चारों कुन्ट करे कारी, करनी करता आप कमाईआ। वीह सद सोलां बिक्रमी छम्ब तेरी आई वारी, आपणी गति दए जणाईआ। टूणा जादू छल छिद्र मढ़ी, मसाण ना दए जगाईआ। हाकन डाकन ना मारे कोई ललकारी, सिर ख़ाकी ख़ाक पवाईआ। अंचनी कंचनी कला सोदरी ढहि पए दुआरी, खेले खेल बेपरवाहीआ। नाम खण्डा तेज़ कटारी, चारों कुन्ट फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेख वखाईआ। जादू जड़ीआं तोड़े नाता, तोड़नहारा आया। जो जन गाए सोहँ गाथा, सति पुरख निरँजण दरस वखाया। जिस जन चढ़या साचे राथा, प्रभ साचा रिहा चढ़ाया। नाम विकाए साचा हाटा, एका हट्ट खुल्हाया। डायण वायण जाए दूर दूर वाटा, गुरसिख अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाया। शब्द चोबलद फेरे सुहागा विच रहिण ना देवे कोई फाटा, उच्चे टिल्ले पर्बत देवे ढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाया। सोहँ

शब्द रसना गाउणा, जिन खवीस नज़र ना आईआ। दर घर साचा एका पाउणा, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। जगत जगदीस खेल खिलाउणा, सच हदीस इक्क पढ़ाईआ। चोगिरद राम नाम लकीर आप खिचाउणा, दरोही नाम ख़ुदाईआ। हज़ारा दरूद ना किसे पढ़ाउणा, कलमा कलाम ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पवण मसाणी डेरा ढाईआ। पवण मसाण लए खिच, गुरसिख तेरी पाहनी सिर विच लाईआ। तेज भान विचोला बणाए विच, देवे वड वड्याईआ। सच क्यारी जाए सिंच, अमृत इक्क छिड़काईआ। नाम रत्न रत्ते जो जायण भिंच, अग्नी अग्ग ना कोई सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां पूरी आस कराईआ। पूरी आस जाए कर, जिस हिरदे हरि वसाया। रसन स्वास आपणा आप धर, लेखा लेखे लए लगाया। रोग सोग मिटाए नारी नर, बख्शे चरन सच्ची सरनाया। मढ़ी मसाण टूणा जादू लए फड़, शब्द डोरी इक्क उठाया। बाल अञ्याणे कलेजा कोई ना सके फड़, मूर्च्छा गत ना कोए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम शब्द पंचम प्रधान, पंचां देवे इक्क ज्ञान, पंचम झुलाए इक्क निशान, पंचम मेला मेल मिलाया। पंचम प्रशन पंचम उतर, पंचां रिहा समझाईआ। हरि साचे दा जो साचा पुत्तर, कल कलेश नेड़ ना आईआ। धुर दरगाहों धरत धवल उत्ते आपे उतर, ध्रू प्रहलाद जिउँ आप तराईआ। आप सुहाए साची रुतड़, रुत्त बसन्ती इक्क वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता अचुतड़, अकल कल वड्याईआ। गुरमुख उपजाए एका मुठड़, आपणी मुट्ठी बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची इच्छया नाम भिच्छया जग रिच्छया आप कराईआ।

५४२ ०८

पूर्ब जन्म हरि हरि वेखे, पूर्ब लहिणा झोली पाया। गुरसिख क्यों प्या भरम भुलेखे, गुरमति मति समझाया। गूंगे बाँवरे नेत्र नैण आपे वेखे, आप आपणा खेल खिलाया। गूंगा रसना रक्खे चेते, गुंग मुख दए सलाहया। आपे तारे अगेते पछेते, वेला आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे सौहरे पेके, सौहरे पेईए फेरा पाया। आपणा मुख होया गुंग, अनहद शब्द ना सुणी शनवाईआ। अमृत आत्म मुम्मा ना ल्या चुंग, रसना जेहवा होई हल्काईआ। हरिभगती मुक्के भगती भंग आपणी करनी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर बूझ बुझाईआ। आपणा मुख पहले खोल्ह, दूजे संग फेर अल्हाउणा। आपणे अन्दर आपे बोल, आपणा पर्दा आपे पहलों लौहणा। आपणा तोलना आपे तोल, आपे कंडे आप चढ़ाउणा। आपणे मन्दिर सुणना ढोल, दूजे मन्दिर फेर

वजाउणा। गूंगे अन्दर रिहा बोल, जगत नेत्र दिस ना आउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाउणा। धन्न वड्याई गुंग मुख, जूठ झूठ ना कोई विचारदा। धृग जीवण दिसे उस मनुख, जो रसना काम क्रोध हँकारदा। गूंगे मिले साचा सुख, अजपा जाप तन उचारदा। दस दस मास मात गर्भ उलटा होए रुक्ख, चुरासी जन्म ना कोई निवारदा। गुंगे उपज्या एका सुख, अन्तर आत्म अमृत ठारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुंग मुख आप उभारदा। गुरमुख चढ़े रंग तन, मुन सुन रखाया। पुरख अबिनाशी बेड़ा आपे देवे बन्न्ह, लहिणा देणा मूल चुकाया। आपे जानणहारा जन, जन जनका दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, जोत सरूपी अग्गे खड़, आपणा दरस दए दिखाया। सच करामात दरस अमोघ, गुरमुखां आप वखाईआ। आत्म सेजा करे भोग, साची सेज सुहाईआ। एका नाम साची चोग, रसना मुख खवाईआ। इक्क सुणाए सच सलोक, एका ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवणहारा वर, वर घर एका एक वखाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। एका पूजा हरि भगवान, एका रिहा सुणाईआ। एका झूले धर्म निशान, एका वेख वखाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर बहाईआ। एका मस्जिद काअबा वेख वखान, मठ शिवदवाला इक्क बणाईआ। एका राम नाम सुल्तान, एका बंसरी नाम वजाईआ। एका नाम सति कर प्रधान, नानक निरगुण वज्जी वधाईआ। एका गोबिन्द नौजवान, ना मरे ना जाईआ। एका वेखे दो जहान, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ प्रधान, कूड़ी दिसे लशकर शाहीआ। कूड़ कूड़ा राज राजान, रईयत कूड़ी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। धर्म नाता गया तुट, चार वरन कुरलाया। कलिजुग बेड़ा रिहा डुब्ब, ना सके कोई बचाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर पई लुट्ट, धीरज धीर ना कोई धराया। सच सुच्च कढ्ढी कुट्ट, झूठा गढ़ उपाया। घट घट अन्दर दिसे फुट्ट, सांतक सति ना कोई वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम कूड़ ललकारा, चार कुन्ट सुणाया। लक्ख चुरासी करे ख्वारा, सोया कोए रहिण ना पाया। नाल रलाया मुहम्मदी यारा, चार यारी मता पकाया। ईसा मूसा इक्क अखाड़ा, एका वेख वखाया। नौ खण्ड पृथमी पंचम धाड़ा, दिवस रैण रही कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अमावस वेखण आया। कलिजुग अमावस होया अन्धेरा, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। प्यो पुत्तर ना करे निबेड़ा, माँ पुत्त ना कोई सलांहयदा। भैणां भईआ उजड़या खेड़ा, नगर खेड़ा ना कोई सुहांयदा। पंचम विकारा खुल्हा वेहड़ा, दिवस रैण नाच नचांयदा। धीआं भैणां करन

झेड़ा, लजपत ना कोई बणांयदा। पुरख अबिनाशी अन्तिम लौण आया उखेड़ा, वीह सौ बीस बिक्रमी राह तकांयदा। हक्क हकीकत करे निबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। कल काती राज राजान, रईयत रही कुरलाईआ। ग़रीब निमाणयां ना सके कोई पछान, ना होवे कोई सहाईआ। माया ममता वड दुकान, बैठे मात खुल्हाईआ। धीआं भैणां वणज करान, घर सद्दण धी जवाईआ। अन्तिम चुक्कणी कलिजुग कान, थिर रहिण कोई ना पाईआ। हरिसंगत मिल लाहौण आई मकाण, हाढ़ सतारां दिवस सुहाईआ। सति सतारवीं विच जहान, वीह सौ वीह बिक्रमी आप कराईआ। एका मंगल सारीआं सखीआं गान, एका इष्ट मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत अन्धेरा दए चुकाईआ। जगत अन्धेरा जाणा चुक्क, चुकावणहार आप अख्वांयदा। जूठा झूठा बूटा जाणा सुक्क, सच सुच्च मार्ग एका लांयदा। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, गुरमुखां आपणी गोद बहांयदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। हरि सरनाई जो जन बैठा झुक, आप आपणा दर सुहांयदा। घर घर अन्दर पैणी लुट्ट, धन माल सर्ब लुटांयदा। जीवां जन्तां वासना कढ्ढे खोट, एका नाम नाम वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा चन्द्रमा आप चढ़ांयदा। सच चन्द्रमा जाणा चढ़, हरि साचा आप चढ़ाईआ। गुरमुख साजण वेखणा खड़, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। सृष्ट सबाई एका अक्खर जाए पढ़, जात पात रहिण ना पाईआ। हर घट अन्दर बैठा वड़, आपणा पर्दा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग चोर डाकू उचक्के, चार कुन्ट प्रधानया। अन्तिम फल वेखे पक्के, मिटे सर्ब निशानया। हरिभगत गुरमुख गुरसिख साचे भाई भैण सके, मिल्या मेल धुर फ़रमानया। गुर गोबिन्द हथ्थ लगाया फल पहले कच्चे, गुरसिख ना किसे पछानया। कलिजुग अन्तिम राह एका तक्के, प्रगट होए श्री भगवानया। पंज शैतान नकेल पाए नक्के, दहि दिशा करे वैरानया। दरगाह साची पैणे धक्के, हरि का रूप ना किसे पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फेरा पाए मदीने मक्के, सम्मत सतारां दिवस सुहानया।

जुगा जुगन्तर टुट्टी गंढे, दीनां बंधप दीन दयाल। नाम निधान हरिजन वंडे, काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल। अमृत वखाए साचे खण्डे, शब्द सरूपी बण दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए बिरध बाल जवान। नारी नर हरि हरि वेख, आपणी दया कमांयदा। आपे लिखणहारा लेख, लिख्या लेख आप मिटांयदा। नर निरँकारा

दर दरवेश, दर भिखारी अलक्ख जगांयदा। दो जहानां सच नरेश, आप आपणा वेस वटांयदा। लहिणा देणा चुकाए मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाए पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बाली बुध्ध वड्यांअदा। बाल निधाना बाली बुध, देवे माण वड्याईआ। नारी पुरष कारज सुध, सतिगुर पूरा आप कराईआ। जगत विकारा मिटे युद्ध, सांतक सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, नाम भिच्छया झोली पाईआ। नाम भिच्छया भर भण्डार, काया गढ़ सुहाया। जो जन मंगे बण भिखार, खाली हथ्थ ना कोई जाया। देवणहार सर्ब संसार, समरथ पुरख अख्वाया। फड़ फड़ बांहों जाए तार, नारी नर ना कोई जणाया। एथे ओथे पावे सार, सगला संग निभाया। औखी घाटी विच संसार, सतिगुर पूरा बेड़ा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मंगल एक रसना गाया। रसना हरि हरि साचा गाउणा, बत्ती दन्द हिलाईआ। अन्तर आत्म एका पाउणा, एका वज्जे वधाईआ। जूठा झूठा काया कप्पड़ लौहणा, शब्द दोशाला तन हंढाईआ। खिमा ग़रीबी झोली पाउणा, याचक दान जो मंग मंगाईआ। काल महांकाल नेड़ ना आउणा, प्रितपाल हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, शब्दी शब्द सहारा। सखा सुहेला पिता माँ, मेल मिलाए पूत सपूत सुत्त दुलारा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन बख्शे चरन प्यारा। पुरख अबिनाशी देवे ठंडी छाँ, अन्त ना पारावारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बेड़ा जाए तार, पार कराए कल सागर डूँघी गारा।

सतिगुर पूरा रक्खे पति, पतिपरमेश्वर आप अख्वाया। लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी रत्त, आप आपणी दया कमाया। नाम बीज बीजे साचे वत, काया मन्दिर फोल फुलाया। धीरज सन्तोख देवे सति, सतिवाद आप उपजाया। एका उपजे हरि प्रीत, पारब्रह्म वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। पिया प्रीतम हरि निरँकार, परम पुरख अख्वाया। हरिजन साचे करे प्यार, लोकमात मेल मिलाया। चरन कँवल नाता विच संसार, पुरख बिधाता जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सीस जगदीस आपणा हथ्थ रखाया। रक्खे हथ्थ हरि करतार, सगला संग निभाईआ। लोकमात ना होए ख्वार, जो जन नेत्र लोचण नैण दर्शन पाईआ। कलिजुग भँवरी करे पार, सच समग्री इक्क वखाईआ। जोत इकग्री कर उज्यार, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। साची पगड़ी सीस दस्तार, नाम निधान आप बंधाईआ। अन्तिम अन्त ना होए ख्वार, जम जंधार, नेड़ ना आईआ। दरस दिखाए दया कमाए आप

आपणी किरपा धार, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे मेले दर, दर घर साचा सोभा पाईआ। सोभावन्त हरि भगवन्त, नर नरायण अख्वाया। हरिजन साची बणाए बणत, बन बनवारी वेस वटाया। होए सहाई आदि अन्त, जुगां जुगन्त खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, जगत अधार भगत अधारी वक्ख कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़ात अजाति मेट मिटाया।

कर्म सिँघ दे घर शेख़सर जम्मू

पूरन गुर सर्ब गुणतास, गुरसिख पूरन ब्रह्म जणाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, रसना जेहवा जो जन गाईआ। लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, गर्भ निवास फंद कटाईआ। होए सहाई पृथ्मी आकाश, आप आपणा संग निभाईआ। साचे मण्डल पावे साची रास, हरि साची वड वड्याईआ। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग भगतां पैज रखाईआ। सन्त सुहेला दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। साचे मण्डल पावे रास, गुरसिख सज्जण वेख वखाईआ। करे कराए पूरी आस, पूर्ब इच्छया वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुणवन्ता गुण निधान, पुरख अबिनाशी खेल महान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत नूर उजाल, नूरो नूर समाया। हरिजन वेखे साचे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। शब्द सरूपी बण दलाल, लोकमात वेखण आया। जो जन घालना रहे घाल, घाली घाल लेखे लए लगाया। सच वखाए लोकमात धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाया। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली चलदा आया। गुरमुख सज्जण लए भाल, लक्ख चुरासी फोल फोलाया। वेखे फल साचे डाल्ह, फुल फुलवाड़ी आप लगाया। तोड़नहारा जगत जंजाल, नाम जंजाल आपणा पाया। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़जीना इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। पूरन भिच्छया पूर हरि, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जगत संसा हउमे रोग दूर कर, दर्द दु:ख भय भञ्जण नेत्र अंजण एका पाईआ। नाम ख़ुमारी सति सरूर दर, साकी जाम इक्क प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन आसा शब्द भरवासा शब्दी शब्द चलाईआ। सतिगुर शब्द गुरदेव, शब्द शब्द इष्ट रखांयदा। शब्द ब्रह्मा विष्न महेष लगाए सेव, शब्द शब्दी हुक्म चलांयदा। शब्द दाता गुणी गहिंद वड मृगिन्द अलक्ख अभेव, जोद्धा सूरबीर आप अख्वांयदा। शब्द मेटे सगली चिन्द, शब्द सगला सुख उपजांयदा। शब्द उपजाए नादी बिन्द, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब गुणतास पुरख अबिनाश, निज

घर वासी आपणा आप वखांयदा। निज घर वासा शाहो शबासा, घर बैठा ताड़ी लाईआ। जिस जन देवे चरन भरवासा, बन्द किवाड़ी आप खुल्हाईआ। चिन्ता सोग ना रहे उदासा, रोग सोग ना कोए वहाईआ। रत्ती तोला ना तुले मासा, सेर धड़ी ना कोए विकाईआ। जन भगतां पूरी करे आसा, नाम रंगण इक्क रंगाईआ। अमृत जाम प्याए काया कासा, सच कटोरा हथ्थ उठाईआ। पंज तत्त पंचम शब्द देवणहारा हरि दलासा, आपणी बूझ आप बुझाईआ। कदे ना आवे हार पासा, जिस मिल्या दाता दानी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म धर्म वेख वखाईआ। कर्म कर्मां आपे वेख, कर्मी कर्मां बणत बणांयदा। सति पुरख निरँजण आदि जुगादी लिखणहारा लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपणे नेत्र आपे लए पेख, जगत नेत्र ना कोए वखांयदा। सति सतिवादी लाए साची मेख, गुरसिख तेरी जड़ ना कोए उखड़ांयदा। कुली कक्खां धारे भेख, जिउँ बिदर अलूणा साग भोग लगांयदा। आपणे लोचण आपणे नैण आपणा हरि जी लैणा पेख, कान्हा कृष्ना मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण वेस वटांयदा। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता आपे होए चेतन चेत, चितवत ठगौरी कोए ना पांयदा। बीज बीजे साचा काया खेत, आपणी हथ्थीं हल चलांयदा। रुत्त बसन्ती रहे महीना चेत, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे वसे नेतन नेत, नित नवित्त आपणी कार कमांयदा। जन भगतां करे साचा हित, लोकमात फेरा पांयदा। शब्द सरूपी खेवट खेट, भरया बेड़ा आप उठांयदा। आपणे नाम दुशाले लए लपेट, कलिजुग पर्दा उत्तों लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोपी काहन आप अख्वांयदा।

५४७

०८

✪ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे घर शेख़सर जम्मू ✪

निरगुण जोत पुरख अकाल, आदि जुगादि समाया। जोती नूर जल्वा जलाल, भेव अभेदा भेव ना राया। आदि निरँजण हरि मेहरवान, आदि अन्त इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मड़ा धाम अगम्मड़ा एका एक सुहाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ा नर निरगुण आप कराईआ। मात पित ना कोई अम्मी अंमड़ा, भाई भैण ना कोए रखाईआ। ना कोई पैसा धेला दमड़ा, दूसर वस्त ना कोए टिकाईआ। ना मरे ना कदे जम्मड़ा, एका एक खेल खिलाईआ। ना ख़ुशी ना गमड़ा, नीर नैण ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दीन दयाल एका एक एक हो जाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, परम पुरख अबिनाशया। वसणहारा सच सच्ची

धर्मसाला, हरि सज्जण शाहो शाबास्सया। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, आपे खेले खेल तमास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सच करे प्रकास्सया। सच प्रकाश हरि निरँकारा, एका एक करांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण सरगुण मेल संसारा, साची रचना आप रचांयदा। शब्द अगम्मी एका धारा, आप आपणा ताल वजांयदा। सर सरोवर ठंडी ठारा, अमृत आप सुहांयदा। वरते वरतावे विच संसारा, अतोट अतुट रखांयदा। समरथ पुरख हरि खेल न्यारा, कथा अकथ जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ उपजांयदा। निरगुण नाउँ आपणा रक्ख, निरँकार निराकार अख्वाया। जोती नूर नूर हो प्रतक्ख, आपणा दीपक आप वखाया। आपे होए अलक्खना अलक्ख, अलक्ख निरजंण नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रूप अनूप दरसाया। रूप अनूप शाह भूप सच सुल्तान, मेहरवान एका एक अख्वांयदा। साचा मन्दिर सच मकान, श्री भगवान आपणा आप आप रचांयदा। रवि ससि ना कोई तेज भान, मण्डल मण्डप ना कोए सुहांयदा। ना कोई ज़मीन ना अस्मान, पृथ्मी आकाश ना कोए वखांयदा। ना कोई शब्द राग गाए धुनकान, ताल तलवाड़ा ना कोए वजांयदा। जीव जन्त ना कोए जहान, साध सन्त ना कोए अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए निशान, लक्ख चुरासी ना कोए उपांयदा। ना कोई देवे जीआ दान, रिजक सबाई ना कोए अख्वांयदा। ना कोई सँघारे कढ्ढे प्राण, मेल विछोड़ा ना कोए वखांयदा। ना कोई दिसे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, ना कोई रामा बाण उठांयदा। ना कोई कृष्ना गोपी काहन, रास मण्डल ना कोए रचांयदा। ना कोई ईसा मूसा होए प्रधान, काला सूसा ना कोए छुहांयदा। कुरान हदीसा ना वेद पुराण, गायत्री मन्त्र ना कोए पढ़ांयदा। दुर्गा अष्टम्ी ना कोए वखान, सिँघ अस्वार ना कोए चढ़ांयदा। गदा चक्र ना कोए भुआन, खण्डा खड़ग ना कोए उठांयदा। ना कोई दीसे ज्ञान ध्यान, भगत भगती ना कोए कमांयदा। नानक नाउँ ना कोए वखान, पंज तत्त ना कोए वसांयदा। जोद्धा सूरबीर ना दिसे बलवान, पंचम प्यार ना संग रलांयदा। संग मुहम्मद चार यारी ना बहि बहि गाण, ऐनलहक्क नाअरा ना कोई लांयदा। पंडत पांधा ना करे कोई वख्यान, तिलक ललाट ना कोई चढ़ांयदा। करोड़ तेतीसा ना कोई पछान, सुरपति अपच्छरां ना कोई नचांयदा। किन्नर यच्छप ना मृदंग वजान, तान सैन ना कोई गांयदा। सत्त सागर ना करे कोई जल पान, पहाड़ उजाड़ ना कोई उपांयदा। दिवस रात ना देवे दान, घड़ी पल ना कोई गिणांयदा। आदि जुगादी इक्क भगवान, निरगुण नूर डगमगांयदा। जोती जोत दो जहान, सगला संग आप रखांयदा। चौदां हट्ट ना कोई दुकान, चौदां लोक

ना कोई बणांयदा। चौदां तबकां ना करे पछान, चौदस चौदां चन्द ना कोई चढ़ांयदा। साचा हरि इक्क मेहरवान, आप आपणी कल वरतांयदा। इक्क अकल्ला नौजवान, सच महल्ला आप वसांयदा। दूसर दिसे ना कोई निशान, दर दरबान, ना कोई उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार हरि निरँकार, इक्क अकल्ला आप अख्वांयदा। इक्क अकल्ला आदि निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। पुरख अबिनाशी दर्द दुःख भय भञ्जण, आप आपणा संग निभाया। आप कराए आपणा मजन, सर सरोवर आपणा आप सुहाया। आपे नेत्र पाए अंजण, आप आपणी सेवा लाया। आपे जाणे घड़न भन्नण, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल एका जोत नूर करे रुशनाया। जोती नूर नूर उपा, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे जाणे आपणी आणा, आपणा भाणा आप चुकांयदा। आपणे चढ़े आप बिबाना, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। आपणा बणे आपे राणा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपणे वसे आप टिकाणा, थिर घर साचा दर सुहांयदा। आपणा देवणहारा धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा देवे माणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। धुर फ़रमाना हरि दातार, आपणा आप उपजाईआ। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, साचा हुक्म आप सुणाईआ। शाहो भूप सच्ची सिक्दार, शाह सुल्तान वड वड्याईआ। जोत अकाल ख़बरदार, सेवक सेवा सच लगाईआ। आपे होया कन्त भतार, आपणी नारी आप हंढाईआ। आपे सेजा सुत्ता पैर पसार, अंगीकार आप अख्वाईआ। आपे आपणी किरपा धार, आप आपणा सुत्त उपजाईआ। शब्द सुत्त वड बलकार, घर साचे बैठा आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, साचा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। निरगुण नारी निरगुण कन्त, निरगुण सुत्त उपजाया। निरगुण निरगुण बणाए बणत, निरगुण निरगुण वेख वखाया। निरगुण आदि निरंजन अन्त, निरगुण आपणा खेल खिलाया। निरगुण पारब्रह्म बेअन्त, भेव कोई ना राया। निरगुण महिमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए तराया। निरगुण पिता निरगुण मात, निरगुण आपणे विच टिकाईआ। निरगुण निरगुण देवे दात, निरगुण भिच्छया झोली पाईआ। निरगुण निरगुण चलाए राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। निरगुण निरगुण निभाए सगला साथ, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण लाल इक्क उपजाईआ। निरगुण लाल हरि गोपाल, शब्दी सुत्त उपजाया। आपणे फल लगाया डाल्, आपणी रुत्त सुहाया। आपे करे कराए प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाया। आपे शाह आपे कंगाल, आपणा भण्डार आप भराया। आपे

बणया विच दलाल, सच दलाली आप कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचे हरि साची खेल खिलाया। थिर घर साचा सच दरबारा, हरि साचा कर्म कमांयदा। पूत सपूता सुत्त दुलारा, शब्दी शब्द उपजांयदा। एका हुक्म सच्ची सरकारा, आपणा आप सुणांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर उसारा, साची सेव लगांयदा। विष्न ब्रह्मा भर भण्डारा, शंकर संग रलांयदा। नाद अनादी सच्ची धुन्कारा, ब्रह्मादी आप अलांयदा। आदि जुगादी एका कारा, एकँकारा आप कमांयदा। लेखा लिखे ना बण लिखारा, ब्रह्मा वेता भेव ना पांयदा। चार वेदां भर भण्डारा, लोकमाती राह वखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, हुक्मी हुक्म चलांयदा। त्रैगुण तेरा मीत मुरारा, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी महल्ल उसारा, निरगुण निरगुण वंड वंडांयदा। मन मति बुध कर प्यारा, नौ दर खोज खोजांयदा। घर विच घर इक्क उसारा, आप आपणा आसण लांयदा। मानस मानुख कर उज्यारा, भगत भगती इक्क दृढ़ांयदा। दूतां दुष्टां करे सँघारा, आप आपणा वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, पंज तत्त मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि न अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। हरि भगवन्त हरि भगवान, हरि हरि जोत जगाईआ। आदि जुगादी वेखे जगत निशान, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे होया सीता राम, कान्हा गोपी आप नचाईआ। आपे मन्त्र दृढ़ाए सतिनाम गोबिन्द फतिह आप गजाईआ। आपे प्याए अमृत जाम, तृष्ना तृखा आप बुझाईआ। आपे वेखे कलिजुग अन्ध अन्धेरी शाम, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई नगर ना ग्राम, ना कोई खेड़ा रिहा वसाईआ। पल्ले दिसे ना किसे नाम, चारे कन्नीआं खाली रहे हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार निराकार, निरँकारा आपणी आप रखाईआ। निरँकार निरवैर, आदि जुगादि अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर आदि जुगादि शब्द अनादी करे सैर, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां फेरा पांयदा। जन भगत उधारे कर कर आपणी मेहर, आप आपणा दरस वखांयदा। लक्ख चुरासी वरते कहर, राज राजान शाह सुल्तान साचा हुक्म ना कोए सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर आपे धर, नूर उजाला इक्क वखांयदा। नूर उजाला हरि बनवारी, अकल कला अख्वाईआ। कलिजुग वेखे रैण अँध्यारी, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। वरनां बरनां होए खुआरी, साची सिख्या ना कोए पढ़ाईआ। धीआं भैणां वणज वपारी, कूड़े धन्दे लाईआ। काम क्रोध रिहा ललकारी, हउमे हँगता लए अंगड़ाईआ। साधां सन्तां सुरत सवाणी रही कुँवारी, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत बैठे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, जल धारा सीस वहाईआ। नाल रलाई तृष्ना लाड़ी, आसा मनसा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ । निरगुण नूर दीपक बाती, हरि साचे सच जगाईआ। प्रगट होया कमलापाती, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जन भगतां देवे अमृत आत्म बूंद स्वांती, सांतक सति वरताईआ। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी, बजर कपाटी आप तुड़ाईआ। अमृत जाम प्याए साचा साकी, शब्द प्याला हथ्थ उठाईआ। गुर गोबिन्द लहिणा देण चुकाए बाकी, पिछला मूल ना कोए रखाईआ। अस्व घोड़े रक्खे चाल बांकी, नीला नीली धारों पार लँघाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां अग्गे कोए रहे ना आकी, शाह सुल्तानां खाक मिलाईआ। पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा आपणी करे आप चालाकी, वेद कतेब भेव ना पाईआ। अलक्ख निरँजण अलक्खणा अलाखी, अगम्म अगोचर अथाह बेपरवाह आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम आप चलाए आपणी साखी, साची विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत नूरी अल्ला, अलाही नूर आप अख्वांयदा। एका वस्सया सच महल्ला, उच्च अटला दिस ना आंयदा। पावे सार जलां थलां, डूँघी कन्दर फोल फोलांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशन डेरा लांयदा। शब्द अगम्मी फड़या भल्ला, आपणे हथ्थ चमकांयदा। एका वार कलिजुग अन्तिम बोले हल्ला, दूसर संग ना कोए रखांयदा। फिरे दरोही इक्क अकल्ला, हज़रत पीर दस्तगीर शाह हकीर सीस ना कोए उठांयदा। आदि जुगादी अछल अछल्ला, वल छल धारी खेल खिलांयदा। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका ब्रह्म वखांयदा। मनमुख जीवां कलिजुग काया फल बूटा हुला, अन्तिम मुल ना कोए पवांयदा। शब्द अन्धेरा झक्खड़ एका झुल्ला, कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ांयदा। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला सतिगुर कंडे विरला तुला, तोलणहारा आप तुलांयदा। मनमुख जीव माया ममता हउमे हँगता रुल्ला, साची संगता ना कोई मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण नूर डगमगा, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े लए मना, कलिजुग अन्तिम सेव कमाईआ। घर घर अन्दर मन्दिर फेरी पा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क करा, एका नूर करे रुशनाईआ। रवि ससि रहे शरमा, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। करोड़ तेतीसा रिहा राह तका, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। ब्रह्मा वेता सीस रिहा झुका, घर साचे वज्जे वधाईआ। विष्नूं वंसी गोदी लए उठा, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, गुरसिख साचे वेखे थाउँ थाँईंआ। कलिजुग करे सच न्याँ, साचा सालस आप बण जाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा जूठे झूठे उडने काँ, कागों हँस ना कोए बणाईआ। जिस जन जप्या हरि हरि नाँ, हरि साचा वेख वखाईआ। शब्द सरूपी पकड़े बांह,

दिस किसे ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। निरगुण हरि हरि निरगुण जोत, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई ज़ात पात बणाया। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, अठसठ बैठे धूंणीआँ ताया। कोटन कोटी बन्नृ लंगोट, सीस ख़ाक रहे पवाया। कोटन कोटि मारन वासना खोट, मुख पर्दा रहे पाया। कोटन कोटि ना भरी पोट, दर दर बैठे अलख जगाया। कोटन कोटि चढ़े पर्बत चोट, आपणी चोटी रहे बणाया। बिन सतिगुर पूरे तन नगारे ना कोई लावे चोट, अनहद ताल ना कोए सुणाया। जन भगतां बख्शे चरन कँवल एका ओट, पुरख अकाल इक्क मनाया। कलिजुग जीव आहलनिउँ डिगे बोट, ना सके कोई उठाया। साधां सन्तां भरी ना पोट, माया ममता होए हल्काया। किसे ना रलाई जोती जोत, सुखमन राह ना पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए तराया। गुरसिख सज्जण सच्चा साकी, हरि साचा आप अख्वांयदा। कलिजुग देवण आया बाकी, पूर्ब लहिणा आप चुकांयदा। गुर गोबिन्द पूरा करे भविख्त वाकी, जो सरसे विच रुढ़ांयदा। अर्श फर्श वेखे बन्दा खाकी, कायनात फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धारा हरि निरँकारा चार वरनां इक्क चलांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका करे जणाईआ। चार वरनां इक्क ध्यान, एका इष्ट वखाईआ। चार वरनां एका माण, एका दर सुहाईआ। चार वरनां एका दान, एका भिच्छया झोली पाईआ। चार वरनां एका पीण खाण, एका रंग रंगाईआ। चार वरनां मारे एका बाण, पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। चार वरनां दरसाए इक्क भगवान, जोती नूर डगमगाईआ। चार वरनां इक्क ईमान, एका कलमा दए सिखाईआ। चार वरनां इक्क अञ्जील कुरान, इक्क हदाइत शरअ शरायत इक्क जणाईआ। चार वरनां एका वेद पुराण, एका पूजा पाठा करे पढ़ाईआ। चार वरनां एका गीता ज्ञान, ज्ञान गोझ इक्क खुल्हाईआ। चार वरन रखाए इक्क निशान, चार वरनां एका रिहा झुलाईआ। चार वरन साची दरगाह करे परवान, वड दाता बेपरवाहीआ। चार वरन मंगल एका गाण, गुर अर्जन शब्द सुणाईआ। चार वरनां इक्क कृपान, एका खण्डा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। चार वरनां एका रंग, हरि साचा आप चढ़ांयदा। चार वरनां सच पलँघ, हरि साचा आप वखांयदा। चार वरनां बख्शे एका मंग, मंगता मंगणहारा आप हो जांयदा। चार वरनां चाढ़े एका रंग, रंगणहार आप हो जांयदा। चार वरनां आप वजाए मृदंग, घर घर विच ताल रखांयदा। चार वरन सूरा सरबंग, सो पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। चार वरनां लाए अंग, हँ ब्रह्म आप प्रनांयदा। चार वरन अन्दर आपे लँघ, आपणा

मन्दिर आप सुहांयदा। चार वरन रसना तजाए मदिरा मास गन्द, अमृत जाम इक्क प्यांअदा। चार वरनां देवणहारा डन्न, डौरु डंका एका वांयदा। चार वरन आपे घड़े आपे लए भन्न, भन्नणहारा आप अख्वांयदा। चार वरन बेड़ा आपे दए बन्नृ, मँझधार आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका आपणा हुक्म चलांयदा। शब्द हुक्म धुर फ़रमाना, कलिजुग अन्तिम अन्त चलाया। पकड़ उठाए राजा राणा, शाह सुल्तान आप हिलाया। साधां सन्तां जीवां जन्तां मन्नणा पए भाणा, ना सके कोए रुकाया। ब्रह्मा शिव होए हैराना, हरि का भेव ना कोए आया। करोड़ तेतीसा बाल निधाना, दिवस रैण रिहा कुरलाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट्या जोद्धा सूर मर्द मरदाना, हरि आपणा नाउँ रखाया। एका चिल्ला तीर कमाना, शब्द अगम्मा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी करे ख्वार, गुरमुख सज्जण लाए पार, जिस जन आपणा दरस वखाया। गुरसिख तेरी वड्याई धन्न, धन्न नामा हरि हरि पाया। गुरसिख तेरी वड्याई धन्न, जनणी जन एका जाया। हरिजन तेरी वड्याई धन्न, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाया। हरिभगत वड्याई धन्न, भगत भगवन्त मीत बणाया। गुर गुर पूरा बेड़े देवे बन्नृ, आप आपणा बिरध रखाया। सतिगुर पूरा वस्सया बिन छपरी छन्न, चार दीवार ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार पुरख अबिनाशी किरपा धार, सरगुण चेला इक्क उपजाया। सरगुण चेला गुर गोबिन्द निरगुण मेल मिलन्नया। पुरख अबिनाशी मेटे सगली चिन्द, आपणा जन आपे जनिआ। आप उपजाई आपणी बिन्द, आप आपणा खेल खिलन्नया। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, दिस ना आए कलिजुग जीव अन्नृयां। मनमुख लाए आपणी निन्द, गुरमुखां अन्दर आपे सन्नृया। पकड़ उठाए वाली हिन्द, शब्द सुनेहड़ा एका घल्लया। कलिजुग अन्तिम पैणी छिंज, शाह सुल्तान बेड़ा किसे ना बन्नृया। मनमुखता हउमे हँगता देवे पिंज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर हाज़र हज़ूर ज़ाहरा चन्न चढ़ाए चन्नया। चढ़या चन्न सच प्रकाश, चन्दन निम्म महिकाईआ। गुरमुख मेला विच प्रभास, धरत धवल वड्याईआ। मंगलाचार पृथ्मी आकाश, पुरीआं लोआं सगन मनाईआ। जिस जन पाया शाहो शाबास, घर साचे होए रुशनाईआ। पुरख परखोतम पूरी करे आस, परम पुरख वड वड्याईआ। साची सखीआं पावण आया रास, साचा सगन इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दीवा निरगुण बाती निरगुण प्रगट कमलापाती एका एक अख्वाईआ। कमलापाती कन्त कन्तूहल, एका खेल खिलांयदा। गुरमुख नारी कन्त प्यारी शब्द पंघूड़ा रही झूल, हरि साचा आप झुलांयदा। आप

चुकाया आपणा मूल, लिख्या लेखा पूर करांयदा। जुगा जुगन्त ना जाए भूल, अभुल्ल गुर आप हो आंयदा। करनहारा सूलीउँ सूल, सूलां सथ्थर हेठ विछांयदा। हरिसंगत उत्तों बरखे फूल, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। शब्द सिँघासण आप बराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार गोबिन्द प्यार, साचा संग निभांयदा। गोबिन्द मीता इक्क अतीता, एका खेल खिलांयदा। किसे हथ्थ ना आए गुरुदुआर मन्दिर मसीता, हर घट बैठा आसण लांयदा। जिस जन रक्खया हरि हरि चीता, स्वच्छ सरूपी दरस वखांयदा। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावण नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी ठंडा सीता, गुरमुखां अग्नी आप बुझांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, निरगुण सरगुण आप अख्वांयदा। वेखणहारा हस्त कीटा, कीट कीटा आप समांयदा। आपणा भाणा आपे जीता, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर नूर अख्वांयदा। निरगुण नूर परवरदिगार, कलमा अमाम अख्वाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, लोकमात वेखण आया। संग मुहम्मद ना दीसे चार यार, कुतब गौंस शेख़ मुसायक पीर मुल्लां ना कोई संग रलाया। नूर अलाही नूरी अल्ला, हू हू आपणा नाअरा लाया। तूं ही तू वस्सया सच महल्ला, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा कलमा आप पढ़ाया। आपणा कलमा पढ़ हदीस, शरअ शरीअत आप जणाईआ। आपे गाया दन्द बतीस, तीस तीस करे रुशनाईआ। लहिणा देण चुकाए बीस, सद बीस बीस बीसा वड वड्याईआ। आपे होया लाशरीक, जगत शरीकत दए मिटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम रक्खे इक्क तरीक, नानक गोबिन्द दए गवाहीआ। वेद व्यासे लिख्या लेख अवतार चौबीस, ईसा मंगे एका भीख, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। कलिजुग पीसण रिहा पीस, जूठी झूठी चक्की रिहा चलाईआ। गुरमुख विरले मिल्या हरि जगदीस, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख तेरे छत्र झुलाए सीस, गुर गोबिन्द बणत बणाईआ। हरिजन तेरी कोई ना करे रीस, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। राज राजाना खाली खीस, दर मंगण भिख ना पाईआ। अल्ला राणी विच उनीस, रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी क्रिया दए मिटाईआ। कलिजुग तेरा चुकणा लहिणा, हरि साचे आप चुकावणा। जन भगतां नेत्र नाम पाउणा नैणा, कज्जल धार इक्क वखावणा। सति सरूपी पाउणा गहिणा, सोलां श्रृंगार आप पहनावणा। नाम मैंहदी रंग रंगाउणा, एका रंग हरि साचे सच चढ़ावणा। धुर कन्त कन्तूहल इक्क हंढाउणा, पुरख अबिनाशी सुहावणा। साची सेजा आसण लाउणा, एका बंक वखावणा। साची सखीआं रल मिल मंगल गाउँणा, सोहँ ढोला इक्क सुणावणा। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाउणा, दूई द्वैती

पर्दा लाहवणा। नारी कन्त रूप बसन्त आप चढ़ाउणा, आप आपणा खेल खिलावणा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त हरि आप अख्वाउणा, भेव किसे ना पावणा। सतिजुग साचा मार्ग लाउँणा, गुरमन्त्र इक्क उपजावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप नर हरि, आपणी करनी रिहा कर, आदि जुगादि हरि का लेखा लिख्या लेख ना किसे मिटावणा।

भिन्नड़ी रैण उठी जाग, हरिसंगत नाल जगाईआ। हँस बणदे वेखे काग, मुख तों आपणा पर्दा लाहीआ। घर विच घर दीपक जगदे वेखे चिराग, आपणा अन्धेरा रही मिटाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुखां धोवण आया दाग़, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। हरिसंगत तेरे वड वड भाग, धरत धवल ख़ुशी रही मनाईआ। भिन्नड़ी रैण सरन सरनाई गई लाग, दोए जोड़ बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। भिन्नड़ीए तेरा मीत मुरार, गुरसिख साचा आप बणाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, तेरा रंग ना किसे चढ़ाया। तेरा जोबन विच संसार, बिन गुरसिख ना सके कोए हंढाया। कलिजुग काली करे ख्वार, कालख टिक्का मस्तक लाया। दोहां मिल्या कन्त भतार, घर साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण लए उठाया। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्ह, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। हरिसंगत अन्दर रही बोल, आपणा राग अल्हाईआ। पूरा करन आई कौल, गोबिन्द पूरा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दए वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, सतिगुर पुरख मनाया। सतिगुर पूरा मिल्या इक्क मलाह, गुरसिख साजण वेख वखाया। दोहां बहाए एका थाँ, एका दर खुल्हाया। कलिजुग करे सच न्याँ, जगत झेड़ा मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण मेल मिलाया। भिन्नड़ी रैण मिल्या मेला, मेलणहार गोपाल। एका घर वसण गुरू गुर चेला, गुर तोड़े जगत जंजाल। सतिगुर मिल्या सज्जण सुहेला, भिन्नड़ी रैण उठाए बाल निधान। कलिजुग अन्तिम आया वेला, मेटणहारा पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण देवे माण। भिन्नड़ी रैण अंक सुहेली, गुरमुख मिलणे आईआ। तेज भान मिल्या बेली, सगला साथी रिहा तराईआ। आदि जुगादि रहे अकेली, बिन हरिभगतां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण नैण दरसाईआ। भिन्नड़ी रैण खोल्हे अक्ख, नेत्र नैण उग्घाड़या। सतिगुर वेखे कर प्रतक्ख, हरिसंगत लाया अखाड़या। कलिजुग अग्नी विच्चों लए रक्ख, लग्गे वा ना तत्ती हाढ़या। छाछ वरोले विच्चों मक्ख, नाम मधाणा एका पा ल्या। अमृत धारा करी वक्ख, गुरमुखां मुख चुआ ल्या। करनहारा कक्खों लक्ख, हरिजन कीमत

आपे पा रिहा। रैण भिन्नड़ी राह आपे दस्स, आप आपणे मार्ग ला रिहा। गुरसिख दुआरे रही हस्स, आपणा घूँगट आप उठा ल्या। दूर दुराडी रही नस्स, सगला पन्ध मुका ल्या। सतिगुर पूरा हिरदे अन्दर गया वस, शब्द विचोला इक्क बणा ल्या। कोई ना दीसे रवि ससि, गुरसिख साचा चन्द चढ़ा ल्या। भिन्नड़ी रैण मेटे रैण अन्धेरी मस्स, गुरसिख साचे वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर बहा ल्या। भिन्नड़ी रैण बैठी दर, हरि साचे दर खुल्हाया। गुरमुखां हरि हरि देवे वर, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। दोहां विचोला आपे बण, आप आपणा मेल मिलाया। लक्ख चुरासी वेखे रण, रणभूमी खेल खिलाया। हरिसंगत तेरी बणत गई बण, सतिगुर पूरा रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण मेला घर, गुरसिख साचे दए मिलाया।

५५६ ५५६

✪ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी गूढ़ा राम दे घर शेख़ सर जम्मू ✪

हरि सतिगुर पुरख सुल्तान, परम पुरख अख्वाया। गुर गुर होए आप मेहरवान, सरगुण सेव कमाया। गुरमुख मेला दो जहान, घर साचे आप मिलाया। गुरसिख साचा चतुर सुजान, घर मंगल एका गाया। मनमुख भुल्ले जीव नादान, मन का मणका ना कोए फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिजन लए तराया। हरि दाता भगवन्त, एका एक अख्वांयदा। गुर गुर बणाए बणत, लोकमात जोत जगांयदा। गुरमुख साजण साचे सन्त, सोए आप उठांयदा। गुरसिख मेला नारी कन्त, साचा सगण मनांयदा। मनमुखां माया पाए बेअन्त, ना पर्दा कोए लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा। हरि जोती भगवान, नूरो नूर उजालया। गुर देवणहारा दान, खेले खेल दो जहानयां। गुरमुख साचे करे पछान, आप चढ़ाए नाम बबानया। गुरसिख देवे साचा माण, एका बख्शे चरन ध्यानया। मनमुख भुल्ले जीव नादान, मानस जन्म होए वैरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवानया। हरि सतिगुर दाता निराकार, अकल कला अख्वाईआ। गुर शब्दी भरे नाम भण्डार, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यार, आत्म झोली इक्क भराईआ। गुरसिखां कराए वणज वापार, जगत विचोला आप हो जाईआ। मनमुखां मारे डाड़ी मार, लक्ख चुरासी जन्म भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ। हरि सतिगुर साचा मीतड़ा, पारब्रह्म करतार। गुर गुर चलाए आपणी रीतड़ा, प्रगट होए विच संसार। गुरमुखां लग्गे भाणा मीठड़ा, इक्क वखाए ठंडा दरबार। गुरसिख कराए पतित पुनीतड़ा, पतित

पावन किरपा धार। मनमुख काया कौड़ा होया रीठड़ा, चारों कुन्ट होए खुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। हरि सज्जण सच्चा पातशाह, शहिनशाह सुल्तान। गुर गुर वखाए सच्ची राह, मेल मिलावा दो जहान। गुरमुखां फड़े लोकमात बांह, आप आपणा कर ध्यान। गुरसिखां बणे पिता माँ, गोद उठाए बाल अञ्याण। मनमुखां ना देवे कोई थाँ, चारों कुन्ट पए कुरलाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी निगहबान। हरि सतिगुर साचा एक है, एका एक एकँकार। गुर बख्शे साची टेक है, लोकमात लए अवतार। गुरमुखां करे बुध बिबेक है, हउमे हँगता रोग निवार। गुरसिख लग्गे ना काया सेक है, अमृत बख्शे ठंडी ठार। मनमुख माया भुल्ले रहे वेख है, दूई द्वैती पर्दा ना देवे कोई उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी पावे सार। हरि सतिगुर सच्चा आदि जुगादि, जुग जुग खेल खिलांयदा। गुर गुर वजाए साचा नाद, शब्दी शब्द उपजांयदा। गुरमुख साजण लए लाध, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरमुखां मेटे वाद विवाद, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। मनमुखां सिर पाए ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। हरि सुल्तान वड वड मीआं, परम पुरख करतारा। गुर गुर जगाए साचा दीआ, निर्मल जोत कर उज्यार। गुरमुख बीज साचा बीआ, आप लगाए फुल फुलवाड़ा। गुरमुख साचे किया हीआ, मेल मिलावा सच दिहाड़ा। मनमुख आप दबाए कलिजुग तेरी हेठा नीआं, नौ खण्ड पृथ्मी पाए भारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता लए अवतारा। हरि करतार करनेहारा, करता पुरख अख्वांयदा। गुरू गुर शब्द शब्द जैकारा, शब्दी नाद वजांयदा। गुरमुख गुरमुख कर प्यारा, आपणी बूझ बुझांयदा। गुरसिख खोल्ह्े बन्द किवाड़ा, नेत्र नैण दरसांयदा। मनमुखां अग्नी तत्ती हाढ़ा, आठ पहर जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर हरि भगवाना, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। गुर गुर देवे नामा, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुखां देवे नाम बिबाणा, आपणी हथ्थीं आप चढ़ांयदा। गुरमुखां बख्शे इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म वखांयदा। मनमुख जीव होए शैताना, पंचां मार्ग पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप तरांयदा। गुरमुख काया साचा चोला, गुर सतिगुर रंग रंगाया। चरन भिखारी होया गोला, दर दरवेशा वेस वटाया। नाम जैकारा एका बोला, एका रिहा सुणाया। आदि जुगादी साचा तोला, निरगुण सरगुण तोल तुलाया। सच भण्डारा एका खोल्ह्ा, पुरख अबिनाशी वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन काया रंगण रंग रंगाया। काया रंगण नाम ललारी, हरि साचा रंग रंगाईआ। जोत निरँजण सेवादारी, सेवक रिहा

कमाईआ। कलिजुग अन्तिम चढ़े खारी, साचा वटना आप मलाईआ। जोती माता पाणी रही वारी, अमृत आत्म इक्क रही भराईआ। पंचम सखीआं मंगल गायण वारो वारी, अनहद साचा ताल वजाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द घोड़ी रिहा चाढ़ी, आपणी हथ्थीं वाग गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया रंग अनमोल, हरि साचा आप रंगाईआ। रंग अनमोला नाम चलूल, जगत जुगत रंगाया। सच सिँघासण आप बिठाए ना कोई पावा ना कोई चूल, फूलण बरखा एका लाया। चौथे जुग आप चुकाया पिछला मूल, देणा देवणहार देण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। गुरमुख मेला सच दुआर, गुरसिख वड वड्याईआ। गुर किरपा हरि जाए तार, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। गुरसिख मेला सच दरगाह, गुरमुख मेल मिलन्नया। गुर गुर पकड़े आपे बांह, हरि सतिगुर पूरे बेड़ा बन्न्या। सतिगुर पूरा करे सच न्याँ, गुर गुर राग सुणाए कन्नया। गुरमुखां वखाए साचा थाँ, गुरमुख विरला मात मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जन आपे जणया। गुरमुख सच्चा सच दुआर, गुरसिख वेख वखाईआ। गुर गुर भरे नाम भण्डार, हरि सतिगुर आप वरताईआ। सतिगुर पूरा सांझा यार, वरन गोत ना कोई रखाईआ। गुर गुर मीता देवणहार, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुख साजण लए उभार, गुरसिख साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। घट मन्दिर हरि फोल्लया, रूप अनूप करतार। पंज तत्त अन्दर आपे बोल्लया, शब्द अगम्मी इक्क जैकार। सच फुलवाड़ी आपे मौलया, खिड़ी रहे गुलज़ार। अमृत भरया साचा कौलया, नाभी रक्खी मूंहदे भार। प्रगट होया उप्पर धवलया, निहकलंक लए अवतार। आपे होए साँवल सँवलया, भगत वछल आप गिरधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लाए पार। गुरमुख साचा आप उठाया, आपणी बूझ बुझाईआ। कूड़ा नाता जगत तुड़ाया, कूड़ी क्रिया आप मिटाईआ। मस्तक चरन धूड़ी टिक्का आप लगाया, रेख रेखा रेख वेख वखाईआ। रस फीका अमृत फल लगाया, अमृत मिट्ठा मुख चुआईआ। दहि दिशा दीपक इक्क जगाया, घर साची करे रुशनाईआ। चारे कुन्टां आपणा फेरा पाया, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जूठा झूठा डेरा ढाया, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। काया अन्धेरा आप मिटाया, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। साचा खेड़ा आप वसाया, नाम बीज इक्क बिजाईआ। अमृत मेवा फल लगाया, गुरमुख साचे दए खवाईआ। देवी देवा इष्ट आप हो आया, गुरदेव वड वड्याईआ। नमो नमो निमस्कार आप कराया, वासदेव रूप वटाईआ। अस्तिक नास्तिक खेल खिलाया, वास्तक रूप विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

५५८
०८

आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख सज्जण वेख वखाईआ। गुरसिख सच्चा हरि हरि सज्जण, हरि साचे सच उपाया। गुरचरन दुआरे एका मजण, एका धूढ़ अशनान कराया। गुरमुखां आया पड़दे कज्जण, नाम दोशाला हथ्थ उठाया। गुरसिखां भाण्डे झूठे भज्जन, नाम प्याला हथ्थ फड़ाया। अमृत पी पी दर साचे रज्जण, चिन्ता संसा रोग गंवाया। ताल अनादी अनहद वज्जण, धुन आत्मक आप सुणाया। चार वरनां अन्दर गुरमुख साचे बहि बहि सजण, वरन गोत ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मार्ग इक्क वखाया। गुरमुख तेरा साचा राह, हरि साचा आप चलांयदा। भगत वछल प्रभ बेपरवाह, आपणा मार्ग आप वखांयदा। सन्त सतिगुर पकड़े बांह, सगला संग निभांयदा। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, घर साचा इक्क सुहांयदा। ग़रीब निमाणयां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सखा सखाई पिता माँ, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरा, चार कुन्ट कुरलाईआ। लक्ख चुरासी मेरा तेरा, मेरा तेरा पई लड़ाईआ। सच सुच्च ना करे कोई निबेड़ा, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उजड़या खेड़ा, साचा मन्दिर ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग रीती वेख वखाईआ। कलिजुग रीती मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर, चार दुआरी बंधन पाया। हरि का शब्द कर उज्यार, गुर मन्त्र विच टिकाया। निरगुण सरगुण खेल अपार, पंज तत्त ना कोई रखाया। चिट्टे उप्पर काली खिच लकार, आप आपणा नाउँ उपजाया। गुर अवतार लाए सेवादार, सन्त भगत नाल रलाया। आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। वेद कताबा पावे सार, लोकमात राह चलाया। शास्त्र सिमरत ख़बरदार, सगला संग निभाया। गीता ज्ञान गोहझ वखान, अठारा ध्याए लेख लिखाया। अञ्जील कुराना कर प्रधान, एका कलमा नाम पढ़ाया। खाणी बाणी धुर फ़रमान, हरि साचे हुक्म सुणाया। गुर सतिगुर होए मेहरवान, लोकमात नाम चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मार्ग वेख वखाया। कलिजुग मार्ग चार वरन, बरन अठारां वेख वखाईआ। वेद पुराण पंडत पांधे पढ़न, पढ़ पढ़ रसन विवाद वधाईआ। अञ्जील कुरान बहि बहि लड़न, मुल्ला शेख़ पई लड़ाईआ। ग्रन्थी पन्थी रहे सड़न, पंज तत्त अग्नी एका लाईआ। हरि की पौड़ी कोई ना चढ़न, डूँघी गारे डूँघी भँवरे रहे तारीआ लाईआ। गुर दुआर मन्दिर मस्जिद जूठे झूठे डरन, अन्तर नाम ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। निरगुण वेखे इक्क अकल्ला, आपणी कल वरताईआ। अठसठ फोले नीर जलां, गंगा गोदावरी फेरा पाईआ। सुरस्ती धाम अद्धविचकारे मेला, बैठा मुख छुपाईआ। गोदावरी किसे ना फड़या

पल्ला, बैठी संग छुड़ाईआ। चारों कुन्ट काम क्रोध लोभ हँकारा रल्ला, अमृत आत्म ना कोई प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग क्रिया रिहा वेख, फोल फुलाए थाउँ थाँईंआ। शिवदवाला मन्दिर मट्ठ, हरि साचा वेख वखानया। वेखणहारा तीर्थ तट्ट, तट किनारा आप पछानया। जानणहारा घट घट, घट अन्तर आप समानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवानया। शिवदवाला मट्ठ जगत मन्दिर, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। पंडत पांधे बैठे अन्दर, हरि की कथा रहे सुणाईआ। मन हँकारी वड़या अन्दर, माया ममता नाल रलाईआ। बजर कपाटी ना तोड़या जन्दर, रामा कृष्ना रहे ध्याईआ। कलिजुग अन्तिम भागा मन्दड़, मानस जन्म गए गंवाईआ। प्रभ अबिनाशी इक्क बख्शंदड़, बख्शणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर फोल फुलाईआ। साची मस्जिद सच मसल्ला, सच वज़ू ना कोई करांयदा। मुलां शेख़ करन हल्ला, मसला असल ना कोई जणांयदा। सच ईमान ना फड़या पल्ला, शरअ कुरान ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। गुरुदुआरा गुर का घर, गुर गुर वेस वटाया। निरगुण वेखे अग्गे खड़, दिस किसे ना आया। जीव जन्त जहानी रहे पढ़, आपणी विद्या आप अलाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार गए सड़, धीआं भैणां रहे तकाया। हरि मन्दिर बणाया वेसवा घर, सतिगुर पूरा इक्क भुलाया। गुर गोबिन्द खण्डा फड़, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, मात पित ना कोई उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, शिवदवाला मट्ठ वेख वखाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकार, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी वेख विचार, वेखणहारा हर घट थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चौथे जुग दए सलाहीआ। चौथे जुग जाणा जाग, हरि साचा आप जगांयदा। तेरी शाही तेरा काग, तेरे दर उडाईआ। ना कोई भगती ज्ञान वैराग, ना कोई वेख वखाईआ। जूठी झूठी लग्गी आग, लग्गी आंच ना कोई बुझांयदा। होए खुआरी प्रधान पांच, पंच पंचां वड वड्यांअदा। गुर मन्दिर अन्दर टुट्टी सांझ, साचा गुरू ना कोई वखांयदा। काया माटी वसे काम, कंचन गढ़ ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्दिर आप सुहांयदा। एका मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, गुरसिख बणत बणाईआ। नौ दुआरे प्रगट रक्ख, दसवां बन्द वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रतक्ख, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। दीपक साचा दित्ता रक्ख, दिवस रैण करे रुशनाईआ। चार दिवारी कीनी सख, पंज तत्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा मन्दिर दए

सुहाईआ। गुरसिख तेरा साचा मन्दिर, हरि साचे आप उपाया। जोत जगाई अन्दरे अन्दर, आपणा दीपक आप बलाया। भाग लगाया डूँघी कन्दर, अन्ध अन्धेर मिटाया। मन नटूआ ना फिरे बन्दर, दहि दिशा ना फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा मन्दिर खोज खुजाया। गुरसिख मन्दिर साचा घर, हरि साचे सच सुहाया। कलिजुग अन्तिम दित्ता वर, चार दिवारी मूल चुकाया। जिस जन अन्दर जाए वड़, नेत्र लोचण आप खुल्हाया। सुरत सुवाणी लए फड़, गुर शब्दी बंधन पाया। साची सेजा बहे चढ़, पलँघ रंगीला इक्क विछाया। गुरसिख अक्खर वक्खर रिहा पढ़, सोहँ अजपा जाप जपाया। पुरख अबिनाशी आप फड़ाया आपणा लड़, ना सके कोई छुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरदुआर इक्क सुहाया। गुरुदुआर गुरसिख मनारा, घर घर विच आप उपाया। अन्दर बैठा गुरू प्यारा, गुरसिख तेरा राह तकाया। लेख चुकाया चार दीवारा, नौ दुआरा पन्ध मुकाया। अमृत देवे ठंडी ठारा, अठसठ तीर्थ नहावण कोए ना जाया। पूजा पाठ पार किनारा, जिस जन आपणा दरस दए वखाया । जोग अभ्यास ना कोए सहारा, निउँली कर्म ना कोए कराया। नैण मूंद ना तट किनारा, जटा जूट ना कोए बणाया। चोटी मुन्न ना कोए ख़ाक पाए छारा, अग्नी धूणी ना कोए ताया। सतिगुर पूरा हो उज्यारा, नर निरँकारा लोकमात अन्तिम आया। गुरमुखां बख़्शे चरन प्यारा, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाया। पुरख अकाल कन्त भतारा, गुरमुख नारी विआउँण आया। सीता सुरती राम प्यारा, मन रावण दए मिटाया। राधा कृष्ना खेल अपारा, नाम बंसरी दए वजाया। नानक निरँकार वजाए सतारा, निरँकार निरँकार निरँकार एका गाया। गोबिन्द अमृत ठंडा ठारा, पुरख अबिनाशी एका जाम प्याया। दो जहानां पार किनारा, लक्ख चुरासी फंद कटाया। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, निहकलंक आपणा नाउँ रखाया। प्रगट होया विच संसारा, नाम डंका इक्क वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच जैकारा, सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां प्यार गुरसिखां भार, पुरख अबिनाशी हो त्यार, आपणे कंध आप उठाया। गुरसिख तेरा चुक्कया भार आपणे कंध, आपणी सेव लगाईआ। आप मुकाए दो जहानां पन्ध, एका डण्डा लाईआ। सोहँ सुहागी सुणाया छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जिस जन रसना गाया ख़ुशी कराए बन्द बन्द, रोग सोग चिन्त मिटाईआ। आप समाए परमानंद, निजानंद इक्क दरसाईआ। जिस जन तजाया मदिरा मास गन्द, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कोटन कोटि मंगां रहे मंग, जीव जन्त साध सन्त रहे कुरलाईआ। जिस जन किरपा करे सूरा सरबंग, हीण भगती पार कराईआ। आपणे अस्व घोड़े आपे कस्सया तंग, आपे चढ़या शाह अस्वार बेपरवाहीआ। गुरसिखां दुआरे

आपे रिहा मंग, शेख़ सर सर सिक्ख आप हो जाईआ। आपणी डोरी बद्धा पतंग, आकाश आकाशां विच उडाईआ। एथे ओथे दो जहान कट्टी भुक्ख नंग, नाम भण्डारा झोली पाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन हरिसंगत दर्शन पाईआ। सति पुरख निरँजण वजाए आप मृदंग, गुर अवतार रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नारी शब्द आधारी पार कराईआ ।

✪ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे घर शेख़ सर जम्मू ✪

नाम घनघोर शब्द धुन मन्दिर, सुरत बन्द हरि ज्ञाना। खोल्ह कपाट तोड़े हरि जन्दर, जुगत जोग भगवाना। स्वास प्रकाश अबिनाश घट अन्दर, मण्डल रास रचाना। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण इक्क धर, कमलापाती वेख वखाना। कमलापाती नर नरायण, निज मन्दिर निज घर वस्सया। पेखे वेखे आपणे नैण, दर भिखारी फिरे नस्सया। रसना किसे ना सके कहिण, हरि सज्जण जिस जन वेख्या। धाम इक्वे एका बहिण, दिस ना आए कोए रवि सस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीर निराला एका कस्सया। तीर अनीआला हरि निरँकार, निरगुण सेव लगाईआ। हँ ब्रह्म आर पार, पारब्रह्म वेख वखाईआ। कर्म धर्म जन्म संसार, त्रैगुण बंधन तोड़ तुड़ाईआ। वरन बरन उतरे पार, सरनगत सच्ची सरनाईआ। तरनी तरन आप करतार, तारनहारा हरि रघुराईआ। करनी करता करे करतार, आप आपणी किरत कमाईआ। धरनी धरत धवल दए सहार, धुर दी बाण इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नादी शब्द एका एक गाईआ। नादी शब्द सच धुन्कार, सुन्न समाध समाया। बोध अगाधी कर प्यार, घट छेतर वेख वखाया। माधो माधी ख़बरदार, मोहण मोहनी रूप वटाया। आदि जुगादी आपणी कार, एकउँकारा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा सच सुहाया। सच दुआरा गुरमुख घर, गुर गुर वेस वटाया। आपणी करनी क्रिया आपे कर, कारज करते काज रचाया। देवे वड्याई एका दर, दर दरबारा इक्क सुहाया। खाली भण्डारे जाए भर, अतोट अतुट आप हो जाया। बालक सुत्त देवे वर, अबिनाशी अचुत्त खेल खिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, एका नाअरा साचा लाया।

✪ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी देवा सिँघ दे घर धंगाली जम्मू ✪

हरि जोत नूर निरँकार, आदि जुगादि एकउँकारया। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार, आपणी आप आप चला रिहा। अबिनाशी

करता भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। आदि निरँजण नूर उज्यार, एका एक डगमगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, आपणा आप आप उपा रिहा। आपे वसे हरि दुआर, हरि मन्दिर आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखा ल्या। निरगुण नाउँ हरि दातार, आपणा आप धराया। ना कोई दीसे होर पसार, ना कोई बणत बणाया। महल्ल अटल ना कोए मीनार, गगन मण्डल ना कोए रखाया। रवि ससि ना कोए सतार, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए अधार, साकार रूप ना कोए वटाया। त्रैगुण देवे ना कोए आधार, पंज तत्त ना कोए रखाया। खेले खेल आप निरँकार, आप आपणी कल वरताया। सुहाए सच सच्चा घर बार, सच सिँघासण आसण लाया। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करते खेल खिलाया। अबिनाशी करता हरि भगवन्त, एका एक अख्वांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, दूसर कोए ना संग रलांयदा। आप बणाए आपणी बणत, तत्व तत्त ना कोए उपांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर हरि निरँकार, आदि जुगादी एका कार, अकल कल धारी आप अख्वांयदा। अकल कल कल हरि भगवाना, ना कोई दूसर चले होर निशाना, ना कोई रचन रचाईआ। आदि जुगादी नौजवाना, बाल बिरध ना कोए वखाईआ। अपणा भाणा आप पछाना, आपणे भाणे विच समाईआ। ना कोई राजा ना कोई राणा, राउ रंक ना कोए अख्वाईआ। ना कोई मर्द ना मरदाना, पूत सपूत ना दए उपाईआ। ना कोई राग ना कोई गाणा, ताल तलवाड़ा, ना कोए वजाईआ। ना कोई पीणा ना कोई खाणा, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा थान सुहाईआ। थान थनंतर हरि निरँकार, आपणा आप सुहांयदा। खेले खेल अपर अपार, अकल कल धारी कल वरतांयदा। सच दुआरा कर त्यार, सचखण्ड वासी डेरा लांयदा। थिर घर सोहे बंक दुआर, बंक दुआरी वेख वखांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, आप आपणी जोत डगमगांयदा। दूसर ना कोई दीसे धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल सति सतिवाद, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आदि जुगादि, जुग करता नाउँ रखाईआ। कोटन कोटि उपाए सन्त साध, लोकमात वेख वखाईआ। शब्द अनादी देवे दाद, धुन आत्मक आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, पारब्रह्म अख्वांयदा। आपे जाणे आपणा राह, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आप आपणी रचन रचा, आपे अन्तिम ढांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लए उपा, साची सेवा सेवक लांयदा। नाम निधाना एका गा, एका झोली पांयदा।

शब्द तराना आप सुणा, साचा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि अकल्ला, एका एक अख्वाया। वसणहारा उच्च महल्ला, दिस किसे ना आया। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा हुक्म चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर रुशनाया। निरगुण नूर पुरख अगम्म, वड वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना कोए टकाईआ। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गगन पताल रहाए बिन बिन थम्म, मण्डल मण्डप डेरा लाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्म, पंचम नाता ना जोड़ जुड़ाईआ। पवण स्वासी ना लए दम, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, आलस निन्दरा विच ना आईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आपणे कंध उठाईआ। सेवा लाए सूरज चन्न, देवे जोत रुशनाईआ। आपे करे खंन खंन, खण्डणहारा आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी आपे घड़े आपे देवे भन्न, भन्नणहार वड वड्याईआ। देवणहारा आपे डन्न, हर घट बैठा डेरा लाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, मन्दिर मन्दिर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। निरगुण धार अलक्खणा अलक्ख, आपणी आप चलांयदा। त्रै त्रै वेता कर प्रतक्ख, त्रै त्रै सेव लगांयदा। निरगुण सरगुण करया वक्ख, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। आपणी वस्तू अन्दर रक्ख, आपे वेख वखांयदा। दूसर ना कोई सके दस्स, भेव कोए ना पांयदा। शब्द अनादी ब्रह्मा वेता करया वस, आपणा राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर हाज़र हज़ूर जोती जोत डगमगांयदा। जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, दयानिध नाम धराया। आदि शक्ती खेल निराला, खेलणहार भेव ना पाया। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। आपे पावे त्रैगुण माया जगत जंजाला, तोड़नहार आप अख्वाया। आप उठाए काल महांकाला, महांकाल आप हो जाया। आपे बणे हरि दलाला, आप आपणी सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप, सच सुल्तान हरि मेहरवान, एका एक अख्वाया। सच तख्त हरि सच सुल्तान, घर साचे आसण लाईआ। परम पुरख प्रभ मेहरवान, आप आपणी खेल खिलाईआ। आपे जाणे धुर फ़रमान, आपे रिहा सुणाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। चार वेदां वेखे मार ध्यान, लोकमात वड्डी वड्याईआ। हरि का रूप ना सके पछान, बेअन्त बेपरवाहीआ। पंज तत्त कर प्रधान, पंचम मेल मिलाईआ। मन मति बुध निधान, निरगुण आपणी वस्त टिकाईआ। ब्रह्मण्डां मारे आप ध्यान, हरि साचा वेख वखाईआ। करोड़ तेतीसा बाल निधान, गुणवन्ता करे जणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, सुरपति मंग मंगाईआ। अड्डे

५६४
०८

नेत्र इक्क ध्यान, ब्रह्मा बैठा राह तकाईआ। हथ्थ त्रिसूल इक्क निशान, शंकर लए अंगड़ाईआ। विष्नूं देवे जीआ दान, दाता रिज़क सबाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, आप आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगण वड्डा वड वड्याईआ। वड्डा दाता बेपरवाह, निरगुण हरि अख्वाया। शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात वेख वखाया। देवणहारा सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। जीवां जन्तां आप बणा, आप आपणा विच रखाया। घर विच घर आप सुहा, घर बैठा मुख लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप सति सतिवादी, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाया। वेख वखाए हर घट अन्तर, हरि साचे वड वड्याईआ। आदि जुगादी साचा मन्त्र, आप आपणा नाउँ उपजाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेखे खेल सबाईआ। आप लगाए पंज तत्त बसन्तर, आपे दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। कल वरतंता मीत मुरारा, परम पुरख अख्वांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारा, गगन पातालां वेख वखांयदा। आकाश प्रकाश हो उज्यारा, धरत धवल डेरा लांयदा। लक्ख चुरासी दए सहारा, धीरज धीर धरांयदा। सरगुण निरगुण कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे सतिगुर हो अवतारा, आप आपणी जोत जगांयदा। भगती देवे सच भण्डारा, लोकमात वरतांयदा। साधां सन्तां खिच बहाए चरन दुआरा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सन्त सतिगुर होए वणजारा, नाम भिच्छया मंग मंगांयदा। सतिगुर पूरा भरनहारा भण्डारा, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। कोटन कोटि मंगदे रहिण दुआरा, अतोट अतुट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर जोत धर, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा सति है, सतिपुरख सुल्तान। साधां सन्तां देवे ब्रह्म मति है, एका ब्रह्म ज्ञान। सति सन्तोखी देवे धीरज जत है, मेट मिटाए पंज शैतान। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत है, आसा तृष्ना ना करे वैरान। हउमे हँगता बुरज जाए ढठ्ठ है, मारे शब्द तीर निशान। चरन दुआर वखाए तीर्थ अठसठ है, गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना वेख वखान। जोती नूर उजाला दीन दयाला हरि गोपाला आप महिकाए लट लट है, देवे दाता गुण निधान। चौदां लोक वखाए साचा हट्ट है, आपे होए निगहबान। त्रिलोकी नंदन मेटे फट है, तिन्नां लोकां पार करान। सचखण्ड दुआरा इकउँकारा हरि निरँकारा, एका सुत्ता खाट है, जोती नूर नूर उज्यारा। आपे जाणे आपणी वाट है, ना कोई चड़्हे जीव संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण एका एक आदि अवतारा। आदि जुगादी हरि अवतार, इकउँकार अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर पैज संवार, जन भगतां लए तराईआ। साधां सन्तां दए प्यार, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ।

सन्त साजण मंगी भिख बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। देवणहारा वारो वार, आपणी सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अबिनाशी करता इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता, करनी कर्म कमांयदा। आदि जुगादि कदे ना डरदा, मरन जन्म ना कोए रखांयदा। आपणी तरनी आपे तरदा, तारनहार वड वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग सदा सुहेला वसे संग, विछड़ कदे ना जांयदा। सदा सुहेला सज्जण मीत, हरि सतिगुर पुरख अख्वाया। सन्तां सुणाए साचा गीत, शब्द अनादी आप अल़ाया। जुगा जुगन्तर साची रीत, साचा मार्ग दए वखाया। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी लए तराया। काया करे ठंडी सीत, जिस जन बख्शे सच सरनाया। एका एक वसे चीत, दूजा भउ रहे ना राया। तीजे नेत्र इक्क प्रीत, स्वच्छ सरूपी दरस वखाया। चौथां पद जाए जीत, जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकाया। पंचम मेला हस्त कीट, हरि साचा घर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार निराकार, निरवैर आप हो जाया। निरवैर अकाल मूर्त, जूनी रहित अख्वाईआ। शब्द अनादी साची तूरत, आपणी आप वजाईआ। आपे वसे नेड़े दूरत, दूर नेड़े आप हो जाईआ। सन्तां भगतां आपे करे आसा पूरत, नाम वस्त झोली पाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, सच सुच्च करे कुड़माईआ। एका बख्शे चरन धूढ़त, मस्तक टिक्का मेटे झूठी शाहीआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, हरि सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराधार इक्क अख्वाईआ। निराधार पुरख अकाला, लोकमात वेख वखांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, साचे मार्ग आपे लांयदा। शब्द सरूपी बण दलाला, एका वणज करांयदा। फल लगाए काया डाल़ा, अमृत फल इक्क खुवांयदा। वेखे मन्दिर सच्ची धर्मसाला, जोत निरँजण डगमगांयदा। शब्द अनादी वज्जे ताला, अनहद राग सुणांयदा। सर सरोवर मारे उछाला, अमृत आत्म आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त साजण मीत मुरार, आप आपणी किरपा धार, देवे नाम इक्क अधार, एका बूझ बुझांयदा। सन्तन मीता हरि भगवाना, भगती भगत तरांयदा। अगम्म अगम्मड़ा इक्क तराना, अलक्खणा अलक्ख सुणांयदा। सचखण्ड दुआरे खेल महाना, जोती जोत डगमगांयदा। सुन अगम्मी वेख वखाना, आप आपणी धार बंधांयदा। आपे वसे पंज तत्त मकाना, दस्म दुआरी डेरा लांयदा। आत्म सेजा रंग रंगाना, सच सिँघासण आप विछांयदा। नारी सुरती मेल मिलाना, शब्दी कन्त हंढांयदा। पंचम सखीआं गायण गाणा, साचा मंगल आप अल़ांयदा। सर सरोवर इक्क वखाना, कागों हँस बणांयदा। राग अनादी इक्क सुनाणा, एका ताल वजांयदा। डूँघी भँवरी

पार कराणा, जोत निरँजण डगमगांयदा। नौ दुआरे छुट्टे आवण जाणा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाना, जगत विद्या ना कोए सिखांयदा। पुरख अगम्मा एका देवे धुर फ़रमाना, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। हरि का रूप ना किसे पछाना, रसना जेहवा लक्ख चुरासी गांयदा। साधां सन्तां बख्शे चरन ध्याना, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञाना, एका ब्रह्म वखांयदा। एका गोपी एका कान्हा, एका नाच नचांयदा। एका सीता एका रामा, तीर कमाना इक्क उठांयदा। एका नानक गाए पद निरबाना, निर्भय रूप आप हो जांयदा। गोबिन्द मारे सच निशाना, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। पुरख अबिनाशी देवे माणा, हरि सन्तां आप उठांयदा। सति पुरख निरँजण गुण निधाना, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर लोकमात वेखे मार ध्याना, गुर अवतार आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकउँकार, आदि जुगादी कर पसार, निर्मल जोती कर उज्यार, आदि निरँजण सेवादार, जोत निरँजण डगमगांयदा। जोत निरँजण साची राणी, हरि आपणी आप उठांयदा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, भर प्याला रही प्याईआ। गुर का शब्द सच्चा हाणी, राह तक्के नैण उठाईआ। साचे मन्दिर साची बाणी, हरि साचा रिहा सुणाईआ। सन्तां पाया एका पद निरबाणी, गुर पूरे बूझ बुझाईआ। भरमे भुल्ली चारे खाणी, चार वरन करे लड़ाईआ। हरि की जोत ना किसे पछानी, नेत्र नैण ना किसे खुल्हाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्ही, फल फुलवाड़ी ना कोए महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा मन्त्र, आपणे शब्द दए वड्याईआ। सतिजुग साचे साची धार, सतिपुरख निरँजण आप चलाईआ। भगत भगवन्ता मेल संसार, दूतां दुष्टां दए खपाईआ। वरनां बरनां वस्सया बाहर, आप आपणा मुख छुपाईआ। त्रेते तेरी पावे सार, तेरा रंग रंगाईआ। हरि का रूप अपर अपार, छे शास्त्र चार वेद भेव ना राईआ। द्वापर तेरा वेख किनार, आप आपणी कल वरताईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, अछल अछल्ल खेल खिलाईआ। एका मीता उधरया पार, इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, हरि साचे वड वड्याईआ। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, रैण अन्धेरी रही छाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी बणत बणाईआ। बणत बणाए हरि बनवारी, हर घट खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी जोत निरँकारी, निरगुण आप जणांयदा। ईसा मूसा वणज वापारी, एका कलमा आप पढ़ांयदा। संग मुहम्मद लाई यारी, साचा हुक्म सुणांयदा। नानक निरगुण करे कारी, त्रैगुण बंधन तोड़ तुड़ांयदा। गुर गोबिन्द खेल अपारी, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। साधां सन्तां जीआं जन्तां रिहा वेख विचारी, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सलाही बेपरवाह एका नाम सच्चा जाम, जन सन्तां आप प्यांअदा। हरि सन्त भगत वड्याई, हरि वड्यांअदा। कबीरे देवे इक्क रुशनाई, एका नैण खुल्हांयदा। एका घर धी जवाई, सौहरे पेके इक्क सुहांयदा। एका घर वज्जी वधाई, एक मंगल ढोला गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाम आप जपांयदा। कबीरे जपया हरि हरि नाउँ, हरि साचे वेख वखन्नया। आपे बणया पिता माउँ, लोकमात आया भंनयां। गंगा नीर करे सच न्याँ, खेले खेल अछल अछन्नया। देवणहारा साचा थाँ, पुरख अबिनाशी एका मन्नया। नगर खेड़ा सच ग्रां, सचखण्ड दुआरा इक्क वखन्नया। पार कराया फड़ के बांह, हरि जोती जोत मिलन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग सदा संग, हरि साचा सच वखन्नया। सच धाम हरि सुंहदड़ा, अगम्म अथाह अख्वांयदा। भगत भगवन्त मेल मिलंदड़ा, दिस किसे ना आंयदा। सरगुण जोती निरगुण जगन्दड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। सन्तां मार्ग इक्क वखंदड़ा, साचा मार्ग इक्क जणांयदा। भरम भुलेखे दूर करदंड़ा, अन्ध अन्धेर गवांयदा। सतिगुर पूरा हरि बख्शिंदड़ा, बख्शणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, हरि साचा मेल मिलांयदा। हरि सन्त वड्याई धन्न, हरि हरि मंगल गाया। हरिभगत वड्याई धन्न, सतिगुर पुरख इक्क मनाया। हरि सन्त वड्याई धन, हउमे रोग गंवाया। हरिभगत वड्याई धन, एका ओट रखाया। हरि सन्त वड्याई धन, माया ममता मोह तजाया। हरिभगत वड्याई धन्न, काया रंगण इक्क चढ़ाया। दोहां बेड़ा देवे बन्न्ह, सतिगुर पूरा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी गुर अवतार हरि निरँकार इक्क अख्वाया। आदि जुगादी हरि अवतारा, जुग जुग वेस वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। चार वरनां हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराया। बरन अठारां रहे पुकारा, नेत्र रो रो नीर वहाया। धरत मात मारे नाअरा, खुलड़े केस गल विच पाया। साधां सन्तां काम क्रोध लोभ मोह वध्या हँकारा, जगत तृष्ना ना कोए बुझाया। पढ़ पढ़ वेद ना किसे विचारा, गा गा रसन करे हल्काया। अठारां पुराण ना बन्न्ही धारा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक ना किसे गणाया। अठारां ध्याए ना पायण सारा, अर्जन रूप ना किसे वखाया। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर कुतब गौंस मारन नाअरा, ऐनलहक्क ना कोए अख्वाया। चारों कुन्ट चार यारा, मुकामे हक्क ना मेला इक्क ख़ुदाया। पंडत पांधे तिलक मस्तक लाया भारा, जोत ललाट ना कोए जगाया। गुर गद्दी बण बण बैठे विच संसारा, गुर का रूप नज़र ना आया। आपे वेखे आर पार किनारा, बेआस धारा आप रुढ़ाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणे हथ्थ उठाया। कलिजुग

अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाया। साधां सन्तां करे विचारा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। अन्दर वड़ वड़ मारे मारा, दिस किसे ना आया। दस्म दुआरी ना किया कोए उज्यारा, अगम्म अगम्म रहे राग अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी आपे फोले, साधां सन्तां नाम कंडे तोले, साचा तोला इक्क अख्वाया। तोलणहारा साचे कंडे, हरि कंडा हथ्थ उठांयदा। वेख वखाए विच ब्रह्मण्डे, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आपे वंडे, लक्खण पुष्कर करोच फेरा पांयदा। जम्बु तेरा तोड़ घमंडे, ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। सलमल सान मारे डण्डे, शब्द डण्डा हथ्थ रखांयदा। कुशा आत्म होए रंडे, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तिम जूठी झूठी कंड आपे वढ्ढे, भेख पाखण्ड मिटांयदा। साधां सन्तां आप लडाए आपणे लडे, आप आपणी गोद उठांयदा। दूर दुराडे कोई ना छड्डे, अनभव प्रकाश करांयदा। कलिजुग तेरीआं सीआं हेठ गड्डे, उप्पर भार आपणा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार आपणी आप चलांयदा। कलिजुग तेरा काला रूप, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। मन्दिर गुरदुआर धुखदे धूप, साचा हवन ना कोई कराईआ। ज्ञान ध्यान बोलत झूठ, पंडत पांधे देण दुहाईआ। सच धर्म गया रूठ, सच नाम ना कोई जणाईआ। खाली दिसन सभ दे ठूठ, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखण आया तेरी शाहीआ। कलिजुग कूड़ा शाह सुल्तान, कूड़ा कूड़ करे विहारया। सिक्दार बणाए पंज शैतान, चारों कुन्ट फिरे ललकारया। साधां सन्तां भुल्ला ज्ञान, माया ममता करन प्यारया। धीआं भैणां पए तकाण, एका भुल्ला हरि निरंकारया। मदिरा मास पीण खाण, बैठे विच गुरदुआरया। नानक गोबिन्द करे पछान, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। राम रमईआ जाणी जाण, जानणहारा भेव खुल्ला रिहा। सन्त भगत सर्ब कुरलाण, कलिजुग धीर ना कोए धरा रिहा। चारो कुन्ट गुरू अख्वाण, सिर छत्र ना कोए रखा ल्या। जीवां जन्तां भरम भुलाण, हरि रंग ना कोई रंग रिहा। गुरू ग्रन्थ सर्ब मनाण, गुरू टेक ना कोए धरा ल्या। सति पुरष बण बण सेवा कराण, सति पुरष नज़र किसे ना पा ल्या। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी खेले खेल दो जहान, कलिजुग अन्तिम जोती जामा भेस वटा ल्या। खाली करे सर्ब दुकान, एका डंका हथ्थ उठा ल्या। राज राजान शाह सुल्तान सर्ब कुरलाण, सीस ताज ना किसे टिका ल्या। साध सन्त सर्ब पछतान, निहकलंक वेखण आ गया। कलिजुग सोइआं आप जगाण, नाम खण्डा इक्क चमका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साध सन्त आपणी सेवा ला ल्या। सन्त साध मंगण पूजा, प्रभ, चरन इक्क ध्यानया। हरि बिन और ना कोई दूजा, दिसे

विच जहानया। बिन सतिगुर खोल्हे ना कोए नैण तीजा, ना देवे ब्रह्म ज्ञानया। चौथे पद ना कोए भीजा, मन का मोह ना कोए चुकानया। पंचम करे ना कोए साची रीझा, सिर शृंगार ना कोए रखानया। छेवें दिसे ना कोए किसे विच दहिलीज़ा, निरगुण रूप श्री भगवानया। सति पुरख निरँजण आपणे अन्तर आपे भीजा, आप आपणे रूप समानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ सत वेखे मार ध्यानया। नौ सत हरि हरि कार, हरि हरि आप करांयदा। वरभण्डी वेखे कर विचार, ब्रह्मण्डी खोज खोजांयदा। भेख पखण्डा दए निवार, एका डण्डा मगर लांयदा। चार वरनां इक्क अधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। शाह सुल्तान सोहण इक्क दरबार, ऊँचां नीचां एका रंग रंगांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटांयदा। इक्क सुहाए बंक दुआर, गुरुदुआर इक्क वखांयदा। एका पुरख एका नार, एका कन्त हंढांयदा। एका मन्दिर हो उज्यार, दीपक इक्क जगांयदा। शाहो भूप इक्क सुल्तान, एका रईयत सच बणांयदा। साची शख्शीयत विच संसार, हरि आपणी आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मंडां तेज़ प्रचण्डा आप चमकांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, समरथ हथ्थ उठाईआ। शाह ईराना करे ख़बरदार, पन्दरां कत्तक आप जगाईआ। लहिंदी दिशा वेख विचार, मक्का काअबा फोल फोलाईआ। बगदाद पैकट ना कोई धार, हिन्दी सार ना कोए वखाईआ। प्रभ का हुक्म मारे मार, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। कच्छ कशमीर रिहा ललकार, भेव कोई ना पाईआ। रूसा चीना दए हुलार, अफ़गान संग लड़ाईआ। आपे रक्खे सभ तों बाहर, प्रभ साचे वड वड्याईआ। गुरमुखां करे ख़बरदार, एका शब्द शब्द जणाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तार, जगत छम्ब ना कोए रुढ़ाईआ। मेल मिलावा मीत मुरार, आपणे लभ्भ लभ्भ ल्ए कराईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई बख्शे सच सरनाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा वेख विचार, दहि दिश फेरा पाईआ। कलिजुग तेरी कूड़ी धार, कूड़ी रेख मिटाईआ। पंजां मंगी इक्क विचार, प्रभ पूरी दए कराईआ। सरदारी कीना आप विहार, धिंगाली खेल खिलाईआ। भूत प्रेतां मारे मार, गुरसिख तेरी पाहनी सिर लगाईआ। देवे वर सच्ची सरकार, बारां बारां कोस कोई नेड़ ना आईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब दर वड्डा सिक्दार, साध सन्त आपणे हुक्म सुणाईआ।

५७० ०८

घड़े भन्ने भन्नणहार, समरथ पुरख वड्याईआ। गुरसिख साजण रिहा विचार, हरिसंगत मेल मिलाईआ। आपे होया सेवादार, सेवक रिहा कमाईआ। निरगुण नूर इक्क उज्यार, सृष्ट सबाई करे रुशनाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़

पहाड़, उच्चे टिल्ले फोल फोलाईआ। पावे सार डूँघी गार, सति सागर आप फुलाईआ। नाम निधाना अद्धविचकार, बाशक तशका सेवा लाईआ। आपे सुत्ता पैर पसार, आपणा पर्दा उत्ते पाईआ। कलिजुग जीव उठ निधान, पुरख अबिनाशी आया लोकमात विच मैदान, आदि जुगादी नौजवान, मेटण आया बेईमान, रहिण ना देवे कोई शैतान, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण धार शब्द कटार, गुरमुखां लाए पार, बेमुखां करे खुआर, जगत ख्वारी आप वखाईआ।

हरिजन देवे जीआ दान, दर्द दुःख वंडाया। आपे तोड़े माण अभिमान, आप आपणी बूझ बुझाया। मेट मिटाए पंज शैतान, सच ज्ञान इक्क दृढ़ाया। नाम निधाना पीण खाण, साची वस्तू झोली पाया। सति सरूपी इक्क बिबाण, हरिजन साचे दए वखाया। जिस जन करे दर परवान, दर दुआरा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता दानी इक्क अख्वाया। देवणहारा गुणवन्ता, गुण गहर गम्भीर समांयदा। आदि जुगादि बणाए बणता, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। आपे तोड़े हउमे हँगता, गढ़ हँकारी आप मिटांयदा। मेल मिलाए साची संगता, साचे सज्जण वेख वखांयदा। दर दरवेश बणे मंगता, घर घर अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण दर्द दुःख भय भञ्जण, कलिजुग सागर वेख वखांयदा। कलिजुग सागर डूँघी गार, लक्ख चुरासी रिहा डुबाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, गुरमुख साचे लए कढाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, चरन दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीआ दाता इक्क रघुराईआ। जीआ दाता शब्द भण्डारन, हरि हरि आप अख्वाया। दर दर घर घर आए पैज संवारन, दिस किसे ना आया। आपे जाणे आपणी कारन, करनी करता रिहा कराया। खेले खेल तरनी तारन, तारनहार वड वड्याआ। ग़रीब निमाणयां करे श्रृंगारन, बस्त्र गहिणा तन सजाया। आपे बणे जगत कहारन, गुरमुख डोला आप उठाया। सन्त सुहेले इक्क अकेले वाजा मारन, हरिजन साचे संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, दाता दानी एका वस्त झोली पाया। वड दाता बेपरवाह हरि निरँकार, हरिजन लए तराईआ। आदि शक्ती खेल अपार, आप आपणा नूर करे रुशनाईआ। शिव शंकर मीष्ता हो उज्यार, ब्रह्म पारब्रह्म खेल खिलाईआ। विष्नूं वंसी ख़बरदार, बाशक सेजा रिहा सुहाईआ। भगवन जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। कलिजुग अन्तिम डूँघी गार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। लक्ख चुरासी आई हार, ना सके कोई बचाईआ। भरमे भुल्ले

भरम गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मीत मुरार, हरि बैठे राह तकाईआ। इक्क अकल्ला पावे सार, निरगुण निज घर बैठा वेख वखाईआ। जोती जामा भेख अपार, कलिजुग आपणा वेस वटाईआ। हरिजन साचे करे प्यार, सोए लोकमात उठाईआ। हरिसंगत बख्शे हरि दीदार, निर्धन सरधन एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधाना देवे वर, जीव जन्त जन्त जीव जीव आपणा आप उपाईआ।

हरि अमृत शब्द भण्डार, गुर सतिगुर हथ्थ रखाया। तीर्थ तट पावे सार, अठसठ वेख वखाया। लक्ख चुरासी अन्दर बाहर, आप आपणा ताल सुहाया। साधां सन्तां कर प्यार, एका जाम प्याया। आदि जुगादी ठंडा ठार, सांतक सति कराया। राजस करे कराए ख्वार, तमो रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत आपणा आप उपाया। अमृत हरि हरि साची धार, आपणे घर वहाईआ। दूसर ना कोई सके विचार, ना कोई बणत बणाईआ। इक्क अकल्ला खेल अपार, निरगुण रिहा कराईआ। साचे दर सच विहार, हरि साचा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा अमृत आप उपाईआ। साचा अमृत चरन गुर देव, हरि साचा सच उपजांयदा। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेव, वेद कतेब ना कोई गांयदा। आपे लाए साची जेहव, आपे रस चखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत आप उपजांयदा। अमृत साचा रस मिट्ठा, हरि साचे आप उपाया। आपे रक्खे धाम अनडीठा, धाम अवल्ला आप बणाया। आपणी करनी आपे दित्ता, आप आपणा बिरध रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत अमर रखाया। अमृत अमर परम रस, हरि रमक रमक भराईआ। आपे अन्दर रिहा वस, आप आपणा विच टिकाईआ। आप नुहाए हस्स हस्स, ना दूसर संग रलाईआ। आपे वरोलणहारा छाछ, नाम मधाणा एका पाईआ। सच दुआरे बैठा आया हस्स, ख़ुशी गमी ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आपणा आप उपजाईआ। अमृत हरि हरि कर त्यार, चरन कँवल छुहाया। झिरना झिरया अपर अपार, आपणा रूप वटाया। विष्नूं विश्व कर त्यार, साकार आप अख्वाया। अमृत बख्शे ठंडी ठार, एका मुख लगाया। अन्दर मन्दिर हो उज्यार, साचा धाम सुहाया। नाभी फुट्टी आया बाहर, कँवल रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत एका एक सुहाया। अमृत एका अनमोल हरि साचे आप उपाया। आपणे अन्दर आपे गया मौल, आपणा खेल आप खिलाया। आपे भरया आपणा कँवल, कँवल कँवला नाम उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत वेख वखाया। साचे अमृत कर

५७३ ०८

प्यार, देवे सच वड्याईआ। कँवल नाभी मीत मुरार, एका फुल खुल्हाईआ। खिड़े फुल सच्ची गुलज़ार, हरि साचा आप महिकाईआ। पारब्रह्म प्रभ रूप अपार, अनभव प्रकाश रखाईआ। अजूनी रहित ना कोई विचार, पुरख अकाल अकाल अख्वाईआ। आपणी जाणे आपे सार, आपे भेव खुल्हाईआ। आपणी इच्छया आपणी भिच्छया भर भण्डार, अमृत आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। अमृत साचा हरि हरि जिया, एका आप उपाया। अमृत अमृत बीजे बीआ, अमृत अमृत फल लगाया। अमृत अमृत पिया, अमृत सुत्त दुलारा जाया। अमृत वेता ब्रह्मा थीआ, हरि साचे रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत एका एक सुहाया। एका अमृत साची धार, साचे सच वहाईआ। चरन कँवल कँवल चरन प्यार, सिर चोटी आप लगाईआ। ब्रह्मा ढहि ढहि पए दुआर, निझर मंगे मुख सलाहीआ। देवणहार आप निरँकार, भर प्याला जाम प्याईआ। दीन दयाला साचा यार, आपणी वस्त इक्क वखाईआ। महांकाला वेख विचार, अमृत कटोरा हथ्थ फड़ाईआ। काल दुआरे बणे भिखार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी धक्का देवे मार, लोकमात राह वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा प्यार, तेरा नाता दए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आपणा आप छुपाईआ। अमृत आपणा अन्दर रक्ख, आपे वेख वखांयदा। दूसर किसे ना आए हथ्थ, ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब तरसांयदा। जिस जन आपणी हथ्थीं देवे वंड, एका मुख भरांयदा। पावणहारा साची ठंड, साचे पर्बत डेरा लांयदा। होई सुहागण गंगा रंड, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत साचा साचे दर सुहांयदा। साचा अमृत हरि निरँकार, साचा संग रखाईआ। आदि जुगादी कर त्यार, जुग जुग आप वरताईआ। जन भगतां देवे कर प्यार, आपणी हथ्थीं मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग कुरलाए लोकमात आए, नेत्र नीर वहन्नया। चारों कुन्ट फेरा पाए, चारे कुन्टां फिरे भन्नया। लक्ख चुरासी आपे खाए, घर घर देवे डन्नया। जीव जन्त कोई रहिण ना पाए, साध सन्त ना बेड़ा बन्न्या। जो उपजे सो लए खपाए, रहिण देवे ना सूरज चन्नया। ब्रह्मा वेता पन्ध मुकाए मनवन्तर डेरा भन्नया। शिव शंकर बाशक तशका गलों लाहे, हथ्थ त्रिसूल सुटन्नया। विष्नूं वंसी आपणा खेल खिलाए, खेले खेल श्री भगवन्नया। करोड़ तेतीसा मेट मिटाए, सुरपति राजा इन्द ना दिसे छप्पर छन्नया। अपच्छरां नाच ना कोई कराए, गण गंधर्ब ना साज वजन्नया। किष्नर यच्छप ना मृदंग वजाए, प्रभ वेखे दो जहानया। चौदां लोकां फोल फुलाए, तिन्नां लोकां फिरे भन्नया। पुरीआं लोआं फेरा पाए, खेले खेल दो जहानया। बिन हरिभगतां किसे हथ्थ ना आए, सृष्ट सबाई वेख वखन्नया। लक्ख चुरासी सर्ब कुरलाए,

जीव जन्त होए अन्नया। काल नगारा सिर वजाए, हरि साचा सेव कमन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धार हरि निरँकार आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। कल कुलवन्ता रिहा कूक, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। लक्ख चुरासी रिहा फूक, बचया कोई रहिण ना पाईआ। आपणी हथ्थीं देवे झोक, पंज तत्त अग्नी रही जलाईआ। हरि हरि भाणा कोई ना सके रोक, गुर पीर देण गवाहीआ। गुर शब्द गाउणा सच सलोक, गुर सतिगुर लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग तेरा वेख नगारा, धरत धवल रही कुरलाईआ। खुल्ह्ड़े केस हाहाकारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ना कोई सहाई सुत्त दुलारा, ना सके कोई बचाईआ। चारों कुन्ट ना कोई देवे पहरा, सुंञ मसाण पई लोकाईआ। सृष्ट सबाई समुन्दर खारा, राम नाम ना कोई दुहाईआ। जूठ झूठ चुकया जाए ना भारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। मानस मानुख ना कोई करे विचारा, पसू प्रेत ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धारा वेखे सहिज सुभाईआ। कलिजुग नगारा वज्जया, चार कुन्ट उठ धाए। राजा राणा फिरे भज्जया, महल्ल अटल ना कोई सुहाए। ना कोई रक्खे किसे दी लज्जया, लज्ज पति ना कोई धराए। कलिजुग तेरा पर्दा किसे ना कज्जया, काला सूसा रिहा वखाए। बण कलन्दर घर घर नच्चया, डंका डौरु एका वजाए। तैथों कोई ना रिहा बचया, धीरज जत ना कोई धराए। प्रभ खेले खेल सच्चो सच्चया, सच वरतारा आप वरताए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया वेख वखाए। अमृत हरि हरि प्याला, गुरमुखां मुख चुआईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आपणी दया आप कमाईआ। ग़रीब निमाणे साचे लाला, हरि आपणी गोद उठाईआ। शब्द सरूपी दए दोशाला, ढाकन को पत आप अख्वाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। खेल खिलाए काल महांकाला, काल करता आप हो जाईआ। देवणहारा नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ाना इक्क वखाईआ। फल लगाए लक्ख चुरासी काया डाल्ह, फल फुलवाड़ी आप उपाईआ। सच्चा मन्दिर सच्ची धर्मसाला, गुरसिख काया घर वखाईआ। दीपक जोती एका बाला, दिवस रैण करे रुशनाईआ। मेटे रैण अन्धेरी काला, आपणी कल वरताईआ। गुरसिख साचे कलिजुग अन्तिम मारन छाला, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची माला तन पहनाईआ। साची माला मन मन मनका, हरि शब्दी डोर बंधाए। लेखा जाणे जनणी जन का, पंजे चोर वेख वखाए। लहिणा देण चुकाए पंज तत्त तन का, अन्धेरा घोर करे रुशनाए। एथे ओथे दो जहान हरि भगवान आप मिटाए हउमे शंका, सहिंसा रोग रहिण ना पाए। गुरसिख साचे आप उठाए जिउँ जन जनका, आप आपणे लड़ बंधाए। खेले

खेल बार अनका, अकल कल धारी वेस वटाए। प्रगट होए वासी पुरी घनका, कल कल्की नाउँ रखाए। नौ खण्ड पृथ्मी वजाए डंका, निरगुण सेवा आप कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म साचा रस, गुरमुख निझर आप झिराए। निझर झिरना मिले सीर, सतिगुर पूरा आप झिरांयदा। दूई द्वैती हउमे हँगता देवे चीर, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। किसे हथ्थ ना आए पीर फकीर, शाह हकीर दस्तगीर सर्ब कुरलांयदा। ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, अद्ध विचकारे सर्ब फसांयदा। हथ्थ किसे ना आए तीर, नाम कमाना ना कोई उठांयदा। कूड़ी क्रिया वज्जा ज़ंजीर, लोकमात ना कोई तुड़ांयदा। सतिगुर पूरा बन्ने बीड़, गुरमुखां भार आप उठांयदा। आपे मीर आपे पीर, पीर पीरां आप अख्वांयदा। आपे दाता जोद्धा सूरबीर, शस्त्र धारी वेस वटांयदा। आपे मेटे आपणी खिच्ची लकीर, तकसीर तकदीर बेनज़ीर आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत नाम सच कटोरा, गुरमुखां हथ्थ फड़ांयदा। गुरसिख अमृत आत्म पीउ, हरि साचा आप प्यांअदा। निर्मल करना आपणा जीउ, जीवण जुगत सिखांयदा। साचा बीज एका बीउ, अमृत फल खवांयदा। लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीउ, साची वंडन आप वंडांयदा। आपे माता आपे प्यो, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। आदि निरँजण जोत निरँजण दोतरवान लाए नेहों, पुत्त पोतरे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म गुण वखांयदा। अमृत गुण आत्म रस, हरिजन वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा होए वस, देवे वड वड्याईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाली मुक्खी इक्क रखाईआ। गुरमुखां मेला हस्स हस्स, घर घर विच आप कराईआ। दरस दिखाए नस्स नस्स, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जगत विकारा देवे झस्स, चरना हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे वड वड्याईआ। रसना हरि हरि साचा गाउणा, अन्तर हरि लिव लाईआ। आत्म सेजा पलँघ विछाउणा, राह तक्के बेपरवाहीआ। सुरत सवाणी शृंगार कराउणा, नैणां कज्जल धार वहाईआ। सोलां कलीआं वेख वखाउणा, सोलां इच्छया पूर कराईआ। सच सवाणी संग हंढाउणा, पिया प्रीतम एका पाईआ। पुरख अबिनाशी मेल मिलाउणा, गुर शब्द करे कुड़माईआ। निरगुण जोत अमृत पाणी वार वखाउणा, आप आपणा संग निभाईआ। दस्म दुआरी बहि बहि आपणी हथ्थीं आप पिआउणा, आप आपणा रंग रंगाईआ। नारी कन्त एका धाम सुहाउणा, गुर चेला रूप वटाईआ। चेला गुर गुर गोबिन्द आप अख्वाउणा, गुरमुखां ढहि ढहि प्रनाईआ। पंचम मीता खेल खिलाउणा, पंचम जोत करे रुशनाईआ। साचा ताज सीस टिकाउणा, सिर चवरा चवर कराईआ। नाम कल्गी तोड़ा आप चमकाउणा, नाम नामा तेज वखाईआ। चिट्टा अस्व घोड़ा आप दड़ाउणा, शाह अस्वारा आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा,

ब्रह्मण्डां वज्जे वधाईआ। नीली धार पर्दा लौहणा, नीले वाला साचा माहीआ। चौथे जुग चौथा पौड़ा आप उठाउणा, लहिंदी दिशा करे सफाईआ। गुरसिख दे बांह सरहाणे लोकमात सौणा, सतिगुर पूरा सेव कमाईआ। चोबदार प्रभ आप अख्वाउणा, पहरा देवे दिवस रैण ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे अमृत हरि, जुग जुग हरया आप कराईआ। हरि हरया हरयावला, हरि हरि रूप अपार। हरि सुन्दर साँवल साँवला, रूप अनूप हरि करतार। हरि खेले खेल जगत बेताला, ताल जाणे ना कोई सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ सत वेखे घर, हरिजन हरि हरि लए फड़, बेड़ा आपणा आप चलावणा।

नदरी नदर निहाल, नदर कर्म कमांयदा। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, रंग रंगीला इक्क चढ़ांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, जगत जंजाला तोड़ तुड़ांयदा। हरिजन साचे आपे भाल, साची सिख्या इक्क समझांयदा। सज्जण मीता एका लाल, अनमुल्लड़े हट्ट विकांयदा। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त मन्दिर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि कर्म नदर तरांयदा। नदरी हरि हरि जाणया, जानणहार करतार। सतिगुर पुरख पछानया, मेला विच संसार। चुक्के आवण जाणया, देवे नाम अधार। मेल मिलावा दो जहानया, एथे ओथे पावे सार। एका देवे धुर माणया, सोहँ शब्द सच्ची धुन्कार। गावणहारा साचा गाणया, गावे नाम अपर अपार। देवे दरस नैण मूँधानया, आत्म अन्तर खोल्ह किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नदर कर्म देवे कर, हरिजन वेखे साचे लाड़। नदर कर्म हरि भगवान, आपणी आप कराईआ। देवणहारा सच निशान, एका पल्ला नाम फड़ाईआ। चरन कँवल सच ध्यान, घर साचे इक्क लिव लाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति साची इक्क समझाईआ। गुरमति साची साचा राह, गुरमुखां बूझ बुझांयदा। एका जाप दए जपा, अक्खर वक्खर नाम पढ़ांयदा। नाता बिधाता जगत तुड़ा, चरन कँवल इक्क दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच ज्ञान इक्क समझांयदा। सच ज्ञाना हरि भगवाना, आपणी बूझ बुझांयदा। सोहँ बन्न्हे हथ्थीं गाना, तन्दन तन्द पांयदा। मदिरा मास ना रसन लगाना, रस जेहवा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, टुट्टी गंढुणहार गोपाल, आपणा बंधन आपे पांयदा।

तुठा सतिगुर दीन दयाल, धुर मस्तक वेख वखाया। हरिजन देवे जीआ दान, याचक मंगण जो जन आया। एका राग सुणाए कान, सोहँ ढोला साचा गाया। दीपक जोत जगे महान, अन्ध अन्धेरा दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणा आप वखाया। घर वखाए हरि भगवान, आपणी बूझ बुझाईआ। जगत तृष्ना छुट्टे पीण खाण, मदिरा मास ना रसन लगाईआ। सिगरट बीड़ा ना कोई पान, जेहवा जेहव ना होए हल्काईआ। एका एक एक गान, चरन कँवल इक्क सरनाईआ। धूंआँधार मिटे मकान, दो जहान होए रुशनाईआ । पाया शाह सच्चा सुल्तान, दु:ख भुक्ख दए मिटाईआ। सदा सुहेला निगहबान, दिवस रैण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति तत्त समझाईआ। साची मति हरि का नाम, नामे हरि चित लाईआ। राम वड्याई दिसे नगर ग्राम, काया खेड़ा वेख वखाईआ। लग्गे भाग काया माटी चाम, रवि ससि रहे सरनाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा दाम, ना पल्लू कोए छुडाईआ। पूरन करे आपे काम, गुरसिख साचे लए तराईआ। अमृत प्याए एका जाम, मस्तक धूढ़ी टिक्का चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सोहँ शब्द वस्त दस्त बदस्त आप फड़ाईआ।

५७७ ०८

घर गृह मन्दिर होया पवित, पापी पतित तराईआ। सच सहंजणी सुहाई थित, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। लेखे लाए काया रित, रत्ती रत्त तुलाईआ। शब्द शब्दी कर कर हित, लेखा लेख मिटाईआ। मानस जन्म जन जाए जित, जिस बख्शे सच सरनाईआ। दरस दिखाए नित नवित्त, रसना जो जन गाईआ। सर्ब जीआं प्रभ साचा पित, पिता पूत वेख वखाईआ। अबिनाशी एक अचुत, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल नित नवित्त, खेलणहारा बेपरवाहीआ। खेलणहार पुरख समरथ, हरि सज्जण मीत मुरारा। जिस जन रक्खे दे कर हथ्थ, उतरे पार किनारा। नाम निधाना देवे साची वथ, सोहँ शब्द अनादी नाद जैकारा। सगल विसूरे जायण लथ्थ, दरस दिखाए अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वसे एक एकँकारा। घर मन्दिर महल्ल उच्च अटल, दीवा बाती हरि रुशनाईआ। वेखणहारा जल थल, जल थल महीअल रिहा समाईआ। जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पल, आप आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर एका दीपक रिहा बल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर मन्दिर हरि सुहाया, सोहे बंक दुआर। गुरमुख मार्ग सच लाया, देवे नाम सच्चा आधार। भाण्डे काचे साचे तत्त पकाया, अग्नी जोती आपे डार। आपणे हट्ट आप विकाया, आपे करे वणज वापार। घट घट अन्दर वेख

वखाया, गृह मन्दिर हो उज्यार। धन्न धन्न जणेंदी माया, उपज्या, पूत सुत्त दुलार। गुर सतिगुर मेल मिलाया, नाता तुट्टा सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, खाली भरे भण्डार।

जिस मिल्या गुर पारब्रह्म, उतरे रोग संताप। पूरन काज करे कम्म, पुरख अबिनाशी साचा बाप। लेखे लाए दमा दम, जो जन गाए रसना जाप। जगत बुझाए तृष्ना तम, दरस दिखाए आपणा आप। जगत दुआरा देवे डन्न, वड वड्डा घर प्रताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पति रक्खे कमलापात।

बिरध अवस्था हरि हरि रंग, हरि हरि नाम चढ़ाया। साची मंग लई मंग, घर परमेश्वर आया। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी देवे फंद कटाया। अंगीकार लाए अंग, आप आपणी दया कमाया। कूड़ी क्रिया मेटे भुक्ख नंग, सच भण्डारा नाम भराया। लोक लाज विच ना जाणा संग, सगला संगी वेख वखाया। शब्द डोरी बन्ने पतंग, आकाश आकाशां पार कराया। शब्द खण्डा दर दर आपे वेखे लँघ, आपणा मन्दिर आप सुहाया। गुरमुखां वखाए इक्क पलँघ, आपणी हथ्थीं आप बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लेखे रिहा लगाया। मंगे मंग नाम अनमोल, अनमुल्ला लाल बणाईआ। दरस दिखाए सुत्या अनभोल, भोले भाउ वेख वखाईआ। इक्क प्रीती देवे कोल, सच वस्त हथ्थ फड़ाईआ। आपणे कंडे लए तोल, तोलणहारा हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जन्म जन्मा लेखे लाईआ। मानस जन्म लेखे जाए लग्ग, बिरधां बिरध तरांयदा। दाता दानी सूरा सरबग्ग, कारज सिद्ध आप करांयदा। चरन दास कराए नौ निध, अठारां सिद्ध सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अवण गवण त्रैभवण सगला फंद कटांयदा। कट्टे फंद जम की फाँस, फाँसी गल रहिण ना पाईआ। देवणहारा धुर धरवास, दरगाह साची होए सहाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर वसे सदा पास, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। वास निवासा घर घर रक्खे वास, आस निरासा लेखे लाईआ। दाता दानी सर्ब गुण तास, गुणवन्ता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बणाए साची बणता, मूर्ख मूढ़ मुग्ध अञ्याण आपे लए तराईआ।

✪ २५ जेठ २०१६ बिक्रमी संसार सिँघ दे घर छम्ब ज़िला जम्मू ✪

निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक एकँकारया। अलख अगोचर अगम्म अपार, आदि निरँजण नाउँ धरा रिहा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पारब्रह्म ब्रह्म हरि जोत जगा रिहा। रूप रंग ते वस्सया बाहर, रेख लेख ना कोए दसा रिहा। ना कोई मन्दिर चार दीवार, सच सिँघासण आसण ला रिहा। शाहो शाबाशन मीत मुरार, इक्क अकल्ला आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर इक्क उपा रिहा। निरगुण नूर अकाल, एका एक अकालया। ना कोई दूसर दिसे पसार, ना कोई बणत बणा ल्या। ना कोई मण्डल मण्डप ल्या उसार, रवि ससि ना कोए रखा ल्या। दूसर ना कोई मीत मुरार, सगला संग ना कोए निभा ल्या। आदि जुगादी जाणे कार, जुग करता आप अख्वा ल्या। नूर इलाही बेऐब परवरदिगार, आप आपणा डगमगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत डगमगा ल्या। जोती नूर पुरख अकाला, अकल कल अख्वाईआ। आपे वस्सया सच सच्ची धर्मसाला, बंक दुआरा आप उपाईआ। आपे करे आपणी आप प्रितपाला, प्रितपालक हरि वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वेस कराईआ। निरगुण वेस वेस अवल्ला, हरि आपणा आप करांयदा। आपे वस्सया सच महल्ला, उच्च अटला आप रखांयदा। आपणी जोती आपे रल्ला, मात पित ना कोए बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वांयदा। अबिनाशी करता करनेहारा एका रंग समाया। जूनी रहित खेल अपारा, दिस किसे ना आया। साची सूरत नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाया। सति सति सति वरतारा दर घर साचे आप वरताया। एकउँकारा रूप न्यारा, लेखा लेख ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। अगम्म अगम्मड़ा हरि बेअन्त, आदि जुगादि अख्वाईआ। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, आपे सखीआं मंगल गाईआ। आपे मणीआं होए मणत, गीत सुहागी आपे गाईआ। आपे खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण दर्द दु:ख भय भञ्जण निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि उजाला, आपणी कल वरतांयदा। आपे खेले खेल निराला, खेलणहार आप अख्वांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप चलांयदा। आपणा बणे आप दलाला, वणज वणजारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोती नूर उज्यार, एका दीपक आप जगांयदा। दीवा बाती कमलापाती,

हरि हरि आप जगांयदा। ना कोई दिवस ना कोई राती, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। ना कोई सँधया ना प्रभाती, ना कोए वेस वटांयदा। ना कोई वरन ना कोई जाति, ना कोई भगवन्त उपांयदा। ना कोई सगला दिसे साथी, ना कोई संग निभांयदा। ना कोई मस्तक ना कोई माथी, ना कोई मस्तक ललाट जगांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, ना कोई ज्ञान दृढ़ांयदा। ना कोई दीसे अठसठ तीर्थ ताटी, ना कोई तीर्थ बणांयदा। ना कोई जणाए औखी घाटी, पुरीआं लोआं ना वेख वखांयदा। त्रैगुण माया ना वेखे आण बाटी, पंज तत्त ना कोए जणांयदा। ना कोई विष्नूं चढ़े घाटी, ना कोई ब्रह्मा सीस झुकांयदा। ना कोई शंकर नेड़े जाणे वाटी, बाशक तशका ना गल लटकांयदा। ना कोई अमृत पीवे साची बाटी, करोड़ तेतीसा दरस ना पांयदा। खेले खेल बाज़ीगर नाटी, हरि साचा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वांयदा। पुरख अबिनाशा खेल तमाशा, अचरज बणत बणाईआ। आपे मण्डल मण्डप पावे रासा, आपे वेख वखाईआ। आपे पवण आप स्वासा, आपे रिहा चलाईआ। आपे पृथ्मी आप आकाशा, गगन मण्डल आप उपाईआ। आपे शाह आप शाबाशा, शाह सुल्तान आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वड वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क अकल्ला, एका एक अख्वांयदा। आपे वसे सच महल्ला, थिर घर साचा नाउँ उपांयदा। ना कोई जल ना कोई थला, समुंद सागर ना कोए बणांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई दीसे उच्चा टिल्ला, पर्बत चोटी ना कोई चढ़ांयदा। ना कोई तीर कमान दीसे चिल्ला, शस्त्र बस्त्र ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर एका एक सुहांयदा। उच्च मन्दिर उच्च मुनारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। एकउँकारा कर पसारा, आपे डगमगाईआ। सच सिँघासण अपर अपारा, बैठा आसण लाईआ। ना कोई दूसर दर दुआरा, ना कोई सीस झुकाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकारा, एकँकार आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाना, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। खेले खेल दो जहानां, वड दाता बेपरवाहीआ। आपे मर्द मर्द मरदाना, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप सति सतिवाद आप अख्वाईआ। सति सतिवादी पारब्रह्म, परम पुरख अख्वांयदा। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जागरत जोत हरि जगा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सरगुण साचा बण मलाह, पंज तत्त करे कुड़माईआ। लोकमाती फेरा पा, आप आपणी खेल खिलाईआ। शब्द अनादी धुन उपजा, एका राग सुणाईआ। साचा मार्ग सृष्ट लगा, साचा राह वखाईआ।

एका इष्ट दए वखा, दृष्ट आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दात वड करामात, सरगुण विच टिकाईआ। निरगुण दाता हरि बेअन्त, बेअन्त आप अख्वाया। सरगुण मेला साचे सन्त, साचा शब्द सुणाया। निरगुण दाता आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाया। सरगुण मेला नारी कन्त, कन्त कन्तूहला नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत डगमगाया। निरगुण नूर निरगुण धार, हरि साचे सच उपजाईआ। सरगुण मेला विच संसार, गुर गुर रूप वटाईआ। सतिगुर साचा मीत मुरार, हरि हरि आप अख्वाईआ। गुर गुर देवे नाम अधार, एका बूझ बुझाईआ। अन्दर मन्दिर मीत मुरार, एका मेल मिलाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद आप वजाईआ। रागी नादी ना पावे सार, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी हाहाकार, जीव जन्त रहे कुरलाईआ। धरत धवल करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। राए धर्म होया ख़बरदार, कलिजुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। लाड़ी मौत करे शृंगार, तन आपणा वेस वटाईआ। चित्रगुप्त बण लिखार, लेखा रिहा लिखाईआ। काल कूके मार जैकार, एका नाअरा लाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे पावणहारा सार, जुग जुग खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरा काल नगारा, चारों कुन्ट सुणांयदा। धर्म राए मीत मुराra, तेरा संग निभांयदा। कुँवार कन्या कर शृंगारा, सगला संग वखांयदा। गोबिन्द उठे जोद्धा सूरबीर बलकारा, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। उत्भुज सेत्ज दए हुलारा, आपणी करनी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेस अवल्ला हरि करांयदा। एकँकार कर पसार, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, आपणी कल वरताईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, एकँकारा आप अख्वाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, एका रिहा उठाईआ। एका वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं खोज खोजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव होए हैराना, करोड़ तेतीसा नैण उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी डगमगाना, सत्तां दीपां धीर ना कोई धराईआ। शाह सुल्तानां भुल्लया आपणा टिकाना, राज राजाना ख़ाक मिलाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणा वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणा गले लगाणा, चार वरनां सच सरनाईआ। राउ रंकां एका धाम बहाणा, ऊँचां नीचां मेट मिटाईआ। एका शब्द एका गाणा, एका राग अलाईआ। पुरख अकाल इक्क मनाणा, एका इष्ट वखाईआ। रामा कृष्ना इक्क ध्याना, एका रंग रंगाईआ। नानक गोबिन्द पद निरबाना, एका दर वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महाना, जोती नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ खण्ड दीप सत्त एका तत्त एका मति एका ब्रह्म जणाईआ। एका ब्रह्म शब्द ज्ञान, हरि

हरि आप दृढ़ांयदा। चार वरनां इक्क ध्यान, एका रूप दरसांयदा। दूई द्वैती मेट मिटान, हउमे गढ़ मिटांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख बुझांयदा। वाहिगुरू अल्ला राम कृष्न सारे गाण, साची सिख्या इक्क समझांयदा। रूप अनूप शाह सुल्तान, सच समग्री आपणे हथ्थ रखांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग जुग आपणी धार वहांयदा। कलिजुग वेखे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। जीआं जन्तां हरि भगवन्ता देवे साचा जीआ दान, एका भिच्छया झोली पांयदा। साची सखीआं साचा काहन, एका रास वखांयदा। एका सुरती एका राम, एका मेल मिलांयदा। एका जाप साचा नाम, नाम सति दृढ़ांयदा। वाहिगुरू फतिह पूरा काम, करनी करता आप करांयदा। अल्ला राणी कर प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। चार यार संग मुहम्मद पल्ले बन्ने दाम, एका भार उठांयदा। ईसा मूसा प्याए जाम, दो दो आबा वेख वखांयदा। लाशरीक हक्क ख़ुदाई इक्क मुकाम, एका कलमा आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती नूर अकल कल धार, अकल कला अख्वाईआ। कोटन कोटि रूप कर करतार, निराकार साकार हो जाईआ। शब्द चोट सच नगार, आदि जुगादि वजाईआ। अगम्म अगम्मा अगम्मड़ी कार, अगम्मड़े थान कराईआ। अलक्ख अलक्खणा हो त्यार, आपणी अलक्ख जगाईआ। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोकमात लै अवतार, सुन अगम्मो पार वखाईआ। सन्त सुहेले मीत मुरार, जुग जुग लए जगाईआ। भगत भगती दए अधार, भगवान मेल मिलाईआ। काया मन्दिर डूँघी गार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। टेडी बंक सुखमन नाड़, देवे पार कराईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। अनहद साचा सेवादार, साची सेव कमाईआ। पंचम मीता ख़बरदार, पंचम वेखे थाउँ थाँईआ। सर सरोवर ठंडी ठार, जल धारा आप उपाईआ। कागों हँस करे त्यार, आप आपणी दया कमाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़, आपणा मन्दिर दए वखाईआ। साची सेजा हरि निरँकार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। वरन गोत ना कोए प्यार, ज़ात पात ना कोए दसाईआ। ऐनलहक्क मारे नाअर, हक्क हकीकत वखाईआ। लाशरीक सांझा यार, हर घट बैठा जोत जगाईआ। राम रामा रूप अपार, रमईआ आपे बेपरवाहीआ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण कान्हा कृष्ना रूप अपार, नाम बंसरी आप वजाईआ। नानक गुर हो त्यार, गुरमुख साचे अन्दर मन्दिर लए मिलाईआ। देवे नाम शब्द अधार, साची बूझ बुझाईआ। ठांडा सीता सिरजणहार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई बन्ने एका धार, एका डोरी नाम बंधाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण पावे सार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। मक्का काअबा हो उज्यार, मुख नकाबा आपे पाईआ।

पीर दस्तगीरा शाह हकीरा करे ख़बरदार, मुल्ला शेख़ मुसायक गौंस आपे लए उठाईआ। पंडत पांधे दए हुलार, अन्दर मन्दिर पावे सार, ढूँघी कन्दर शब्द हुलारा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द निराला एका तीर, लोआं पुरीआं रिहा चीर, सोहँ मुक्खी अग्गे लाईआ। सो पुरख निरँजण आप करतार, हँ हँगता मेट मिटांयदा। नानक गाया आपणी वार, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। गोबिन्द मंगी मंग अपार, सोहँ भथ्था तीर कमान उठांयदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, लोकमात वेख वखांयदा। वेद व्यासा बण लिखार, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ मीत मुरार, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लांयदा। दिस ना आए विच संसार, कोटन कोटी राह तकांयदा। गिण गिण थक्के लक्ख चार बत्ती हज़ार, कलिजुग आयू वंड वंडांयदा। मारनहारा साची मार, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जीव जन्त बणाए गंवार, हरि का भेव कोई ना पांयदा। हरि का रूप गए विसार, दीपक बाती काया मन्दिर अन्दर ना कोए जगांयदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर रस झिरना ना कोए झिरांयदा। जूठ झूठ कर प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकांयदा। गुर का शब्द ना कोए जैकार, साचा नाअरा ना कोए लगांयदा। सति संतोख ना बन्न्ही सीस दस्तार, धीरज जत ना कोए धरांयदा। पंचम मेल ना मिल्या विच संसार, पंचम माया बंधन पांयदा। कूड़ा डंका कूड़ पसार, कलिजुग कूड़ा आप लगांयदा। शाह सुल्तान गए हार, साचा अदल ना कोए कमांयदा। धर्मी धर्म करे ख्वार, कर्मी कर्म ना कोए वखांयदा। निहकर्मी हरि पावे सार, आप आपणी रचन रचांयदा। वरनी बरनी वस्सया बाहर, निराकार आप हो जांयदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा विष्न शिव उठांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम दो धारा हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, अवण गवण वेख वखांयदा। चौदां तबकां पार किनार, चौदां हट्टां फोल फोलांयदा। नूर अलाही तेरी धार, आपणे विच मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग करता हरि करनेहार आप उपाए आपे लए सँघार, आपणी बणत आप बणांयदा। आप उपाए आप खपाए, हरि साचे वड वड्याईआ। गुर अवतार साध सन्त हरि सेवा लाए, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप हो जाए, भेव कोए ना पाईआ। जुगा जुगन्त वेस वटाए, ब्रह्मा लेख ना सके लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरे नैणां तेरा मूल चुकाईआ। मूल चुकाउणा पुरख अबिनाशी, आपणी जोत जगाईआ। प्रगट होए घनकपुर वासी, घर मन्दिर डेरा लाईआ। निरगुण जोत सर्ब प्रकाशी अनभव प्रकाश वखाईआ। आपे होए पाताल आकाशी, गगन मण्डल आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी

अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। खेल खिलंता बेपरवाह, हरि सच्चा शहिनशाह। आपे जाणे आपणा राह, दूसर भेव ना रा। लक्ख चुरासी वेख वखा, शब्द अगम्मी पावे फाह। नौ खण्ड पृथ्मी जोत जगा, जागरत जोत करे रुशना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटा। हरि सच्चा वेस वटंदड़ा, निरगुण जोत निरँकार। जीवां जन्तां वेख वखंदड़ा, साधां सन्तां पावे सार। राज राजानां आप उठंदड़ा, शाह सुल्तानां मारे मार। धरत मात अखाड़ा इक्क लगन्दड़ा, नौ खण्ड रिहा ललकार। नाम खण्डा इक्क चमकंदड़ा, ऐटम अंटी जाए हार। जन भगतां साचा राह वखंदड़ा, चरन प्रीती इक्क निरँकार। सिर समरथ हथ्थ रखंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। नाम जहाज इक्क चलंदड़ा, भव सागर करे पार। फड़ फड़ बांहों आप चढ़ंदड़ा, सेवा करे सिरजणहार। लहिणा देणा मूल चुकंदड़ा, पिछला कर्ज़ा रिहा उतार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखंदड़ा, कलिजुग पूरा करे उधार। जूठा झूठा जीव मसटंडड़ा, गुरमति ना करे विचार। माया ममता आत्म अन्धड़ा, मन मति बणाई नार। साची सेज ना कोए हढंदड़ा, घर घर होए ख्वार। मदिरा मास मुख लगन्दड़ा, विसरया करतार। नानक गोबिन्द ना किसे बख्शंदड़ा, जिस दरस ना पाया हरि निरँकार। जम का डण्ड हथ्थ वखंदड़ा, धर्म राए करे खुआर। चित्रगुप्त हिसाब खुल्हंदड़ा, लेखा लिखे अपर अपार। अट्ठ अठारां मूंह खुलंदड़ा, दस वेखे कुम्भी धार। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पार लघंदड़ा, लक्ख चुरासी डुब्बे अद्धविचकार। कलिजुग चोट नगारे इक्क लगन्दड़ा, डौरु डंका रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती नूर अपार। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लोकमात करे रुशनाईआ। लोकमात हरि हरि खेल, आपणा आप करांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेल, नूर नूर जोत डगमगांयदा। सदा सहाई सज्जण सुहेला आपे करे मेल, साचा साकी अमृत जाम प्यांअदा। आपे वसे रंग नवेल, हर घट आपे डेरा लांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द इक्क ज्ञान, एका देवे धुर फ़रमान, एका हुक्म सुणांयदा। धुर फ़रमाना हरि भगवाना, आपणा शब्द सुणाईआ। जन भगतां आत्म अन्तर इक्क तराना, एका धुन उपजाईआ। सति सन्तोखी बन्न्हे गाना, साची सिख्या इक्क वखाईआ। चार वरनां एका संग निभाना, एका ओट हरि रघुराईआ। दूई द्वैती भेव मिटाना, भरमी भरम गंवाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाना, इष्ट देव इक्क हो जाईआ। पतिपरमेश्वर एकउँकार, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। सर्ब जीआं हरि बणया दाता, दाता दानी रिज़क सबाईआ। आपे गोपी आपे कान्हा, राम नाम आप वड्याईआ। आपे सीता सुरती कर परवाना, आप आपणे अंग लगाईआ। आपे अनादि

धुन लगाए तराना, हू हू अल्ला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटाईआ। नर नरायण हरि निरँकार, निरगुण रूप वटाया। रसना किसे ना सके कहिण, गुरमुख विरले दर्शन पाया। लक्ख चुरासी डुब्बे आपणे वहिण, नाम चप्पू ना किसे लगाया। ना कोई चुकाए लहिण देण, फंदन फंद ना कोए कटाया। माया ममता पाया गहिण, जूठा झूठा दीसे साक सबंधी सैण, कट्ठे हो हो सारे बहिण, वेले अन्त ना होए सहाया। गुरमुख साचे धाम अवल्ले एका रहिण, चरन दुआरा हरि रघुराया। दर घर साचे सोभा पायण, राए धर्म ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल सृष्ट सबाया। सृष्ट सबाई हरि भगवन्त, आपणी चाल चलाईआ। पकड़ उठाए साचे सन्त, जिस नामे हरि लिव लाईआ। मनमुखां माया पाए बेअन्त, गूढ़ी नींद सवाईआ। हरि मेला हरि साची संगत, सगला संग रखाईआ। नानक निरगुण अंग लाया अंगद, दूजे दर ना मंगण जाईआ। दूजे दर ना होया मंगत, एका भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे सच सरनाईआ। सच सरनाई सरनगत, हरि सज्जण बूझ बुझांयदा। देवणहारा साची मत, एका ब्रह्म जणांयदा। इक्क वखाए साचा हित, एका रंग रंगांयदा। चरन कँवल साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। बीज बीजे साचे वत, साचा हल चलांयदा। फल फुलवाड़ी वेखे पत, फल अमृत आप लगांयदा। लेखे लाए रत्ती रत्त, जो जन रसना गांयदा। सगला संगी वसे साथ, साचा संग निभांयदा। आप चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही आप चढ़ांयदा। शब्द जणाई साची गाथ, सो पुरख निरँजण आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां एका सरनां बरन अठारां मेल मिलांयदा। वरनां बरनां एका धार, एका रंग रंगाईआ। राम रामा मीत मुरार, राम रूप आप वटाईआ। ठांडा सीता विच संसार, सतिगुर नाउँ धराईआ। नानक गोबिन्द इक्क जैकार, एका रूप वटाईआ। कलमा नबी आप जैकार, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी वंड तेरी झोली पाईआ। पंजे तत्त विकारा काया तन, माया मोह लुटाईआ। सेजे चढ़े ना साची धन, पिया प्रीत ना कोए रखाईआ। दिवस रैण देवे डन्न, दर साचे दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया झेड़ा इक्क वखाईआ। लोभ हँकारी काया चीथड़ा, माया तन रंगाया। मिल्या मेल ना कन्त मीतड़ा, सोभावन्त ना घर सुहाया। गाया दर ना सुहागी गीतड़ा, साचा सईआ ना कोए सुहाया। जूठा झूठा दीसे चीथड़ा, घर साचे मूल ना भाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह तन माया मोह लपटाया। जिस मिल्या सच्चा

साहिब सुल्तान, सो पतिवन्ती नार। आपे मन्दिर सच मकान, करे सच श्रृंगार। लेखे लाए निगहबान, आप आपणी किरपा धार। अंगीकार करे करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वड्याए विच संसार। गुरसिख नारी कन्त प्यारी, सोभावन्ती सेज सुहाईआ। पलँघ रंगीले सेज न्यारी, सतिगुर पूरे आप सवाईआ। आपे पैज रिहा संवारी, आपणी गोदी आप उठाईआ। लोकमात ना रही कुँवारी, माया ममता विच ना लपटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे लेखे लए लगाईआ। नानक नार हरि कन्त भतार, गुर आपणा वेस वटाया। सिख्या दित्ती सर्ब संसार, साचा मार्ग एका लाया। बिन हरि कन्त ना दूजा पती विच संसार, साची रक्खया ना कोए कराया। रत्ती रत्त रंगया करतार, नाम कंगण एका पाया। गुरमुख तेरा कज्जल धार, सतिगुर नैणा आप मटकाया। सुरत सुवाणी कर प्यार, आपणे गले लगाया। नानक निरगुण गाए वारो वार, गुरसिख तेरी वड वड्याआ। शब्द रंगीला पलँघ, हरि सज्जण सेज सहाईआ। लाल गुलाला चढ़या रंग, हथ्थी मैंहदी लाल लगाईआ। नाम चूड़ा साची वंग, कंगण रिहा छणकाईआ। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण लाईआ। शब्द अनादी वजाए मृदंग, हरि साचे सेवा लाईआ। गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना पाणी वारन कन्त संग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। दाता दानी सूरा सरबंग, सभ दी इच्छया पूर कराईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, गुरसिख तेरी काया वेख वखाईआ। तेरा लाए तेरी अंगी अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख नार कर प्यार, विच संसार आप प्रनाईआ। गुरमुख नारी वर घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। साचा रंग इक्क चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। एका खारे चरन टिकाया, पुरीआं लोआं चरनां हेठ दबाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी डोली आपे पाया, आपणे कंध उठाईआ। हौली हौली पन्ध मुकाया, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती अन्दर जोत मिलाया, जोती नूर जोत रुशनाईआ। नानक सतिगुर साचा गाया, ना मरे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिख नारी व्याहवण आया, आप आपणी बणत बणाईआ। आउदां जांदा दिस ना आया, कोटन कोटि रहे राह तकाईआ। पहला पौड़ा इक्क उठाया, चौथे घर टिकाईआ। पंचम मेला सहिज सुभाया, घर साचा इक्क वखाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए उपाया, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण खेल खिलाया, दीवा बत्ती ना कोए जणाईआ। सो पुरख निरँजण हरि हरि गाया, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख तेरी वड वड्याआ, जिस मिल्या कन्त नर हरि नरायण सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया चोली रंगे चीथड़ा, सतिगुर साचा एका मीतड़ा, नाम अनडीठ इक्क वखाईआ। काया चोली रंग चलूल, हरि सतिगुर आप चढ़ाया। साची सेजा बरखे

फूल, रुत बसन्ती आप सुहाया। सच सिँघासण सोहे कन्त कन्तूहल, पावा चूल ना कोए रखाया। शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, सच हुलारा इक्क लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाया। उठ जाग गुरसिख मीत, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। नानक निरगुण ठांडा सीत, अग्नी तत्त बुझाईआ। कान्हा कृष्ना वसे चीत, चितवत ठगौरी ना कोए पाईआ। राम रामा परखे नीत, नाम कसवटी एका लाईआ। निरगुण बैठा इक्क अतीत, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। शब्द सुणाए साचा गीत, आप आपणा ढोला गाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीटा कीट आप हो जाईआ। हरि का नाम सदा अनडीठ, नेत्र नैण ना कोए दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मिलावा धुर दरबार, सुरत सवाणी कर प्यार, नारी कन्त बण भतार, घर सहिजे सहिज मिलाईआ। घर दीवा घर बाती, घर घर करे रुशनाईआ। घर सज्जण घर कमलापाती, गुर मेला मेल मिलाईआ। घर जाम घर बैठा साकी, घर प्याला दए पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, अमृत बूंद स्वांती एका मुख चुआईआ। जुग जुग मेल विछोड़दा, पारब्रह्म करतार। आपे लग्गी तोड़दा, आपे जोड़े विच संसार। मनमुख जीव दर तों होड़दा, गुरमुखां करे प्यार। आदि अन्त एका बौढ़दा, एका गुर अवतार। लोआं पुरीआं एका दौड़दा, रवि ससि पाए सार। भेव जाणे मिट्ठे कौड़दा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नदीआं राह विछुन्नया जग मेला मेल मिलन्नया। नदीआं वाह विछुन्नया, विसरया करतार। राह दिसे ना जीवां अन्न्या, कलिजुग वैण वहिंदे डूँघे गार। जो घड़या सो भन्नया, थिर रहे ना विच संसार। जिस जन सतिगुर पूरे बेड़ा बन्न्या, अन्तिम मेल लए करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार। नदीआं वहिण उत्ते राह, समुंद शाह सुल्तानया। प्रभ खेले खेल बेपरवाह, गुणवन्ता गुण निधानया। जिस जन पकड़े आप बांह, करे पार दो जहानया। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची कर प्रधानया। आपे पिता आपे माँ, गुरसिख साचे बाल अञ्याणे गोद उठानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी आनया। मेल विछोड़ा हत्थ करतार, जुग जुग बणत बणाईआ। आदि जुगादी लै अवतार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। नेत्र लोचण दो उज्यार, लोइण तीजा आप खुल्हाईआ। चौथे पद सच दरबार, दर दुआरा दए वखाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा देवे कट्ट, दूई द्वैती मेटे फट, शब्द अनादी लाए सट्ट, वणज कराए साचे हट्ट, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ।

५८७ ०८

सचखण्ड दुआरा आपे खोल्, गुरमुखां राह वखांयदा। पुरख अगम्मा आपे बोल, आपणा बोला पूर करांयदा। साचे कंडे तोले तोल, एका तोला आप हो जांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख लाल अनमुल्लड़े लए वरोल, नाम मधाणा एका पांयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्, आपणा दरस वखांयदा। कोई भेव ना पाए पंडत पांधा रोल, ज्ञान ध्यान ना कोए दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, जगत वछोड़ा आपे मेट मिटांयदा। जगत वछोडा पैंडा दूर, हाज़र हज़ूर जोत जगाईआ। गुरमुखां देवे सति सरूर, नाम ख़ुमारी इक्क चढ़ाईआ। पंच विकारा चूरो चूर, चरन चरनोदक मुख लगाईआ। नाता तुटे कूड़ो कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दुरमति मैल धोवे झूठी शाहीआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त सन्त कन्त एका सेज हंढाईआ। एका सेजा हरि हरि सुत्ता, अबिनाशी अचुत अख्वाया। आपे जाणे आपणी रुत्ता, आपे वेख वखाया। फोल फोलाए दहि दिशा चारे कूटा, आप आपणा फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां उप्पर आपे तुठा, आप आपणी दया कमाया। रहिण ना देवे लुकया किसे गुझा, छम्ब अन्दर फेरा पाया। फड़ फड़ बंधाए एका मुट्ठा, सुत्ता संसार रहे ना राया। लक्ख चुरासी जीव जन्त फड़ फड़ टंगे आपे पुठ्ठा, वेले अन्तिम दए सजाया। तीर निराला एका छुट्टा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन नुहाए साचे सर, नदीआं मेला सज्जण सुहेला, चरन विछुन्ने लग्गे लेखे, पुरख अबिनाशी मेल मिलाया। पंचम प्यारे कर परवान, पंचम मुख सलाहीआ। पंचम देवे साचा दान, पंचम मंग मंगाईआ। पंचम मेटे पंज शैतान, पंचम मोह रहे ना राईआ। पंचम मीता पंच ज्ञान, पंच रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पंचम मंगी एका मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। चारों कुन्ट कहर मंग, दिवस रैण तारीआं रही लाईआ। ग़रीब निमाणे बैठे नंग, सगला संग ना कोए रखाईआ। भूत प्रेत मारन डंग, जिन खवीस दए दुहाईआ। डायण हाकन वखाए नंग, विच छम्ब रहिण ना पाईआ। किसे ना चढ़े ताप खंघ, जो जन रसना सोहँ गाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन आए दर्शन पाईआ। सतिगुर पूरा कट्टे फंद, गुर गोबिन्द दाता वेस वटाईआ। आप लगाए आपणे अंग, वेले अन्तिम होए सहाईआ। हिन्दू तुरक ना कोए जंग, ना कोए करे लड़ाईआ। बारा कोस वज्जे मृदंग, प्रभ साचा आप वजाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद सोलां वेख वखाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी कर विचार, हरि साचे दया कमाईआ। हरिसंगत रहिणा ख़बरदार,

सतिगुर पूरा लए बचाईआ। आलस निन्दरा ना करे कोई विचार, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोद्धा सूर बली बलकार, नाम लकीर चारों कुन्ट लगाईआ। बीर बेताले बन्ने ज़ंजीर, डोरी आपणे हथ्थ खिचाईआ। किसे वस ना चले पीर फ़कीर, मढ़ी मसाण ना कोई जगाईआ। जादू जड़ीआं मारे तीर, देवे जड़ उखड़ाईआ। वड दाता सिर पीरन पीर, निरगुण निरगुण आप आप अख्वाईआ। चिट्टे उत्ते खिच्ची लकीर, काला दाग़ ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत्त अट्ठ नौ दस हस्स हस्स मेल मिलाईआ। सुण फ़रयाद देवे दाद, हरि सज्जण शहिनशाह। वक्त वेला रक्खणा याद, गुर मिल्या इक्क मलाह। नाम वजाए साचा नाद, देवे दरस वखा। शब्द जणाई बोध अगाध, भेव अभेद दए खुल्हा। मोहण माधव हरि हरि माध, मोहणी रूप रिहा वटा। जो जन रसना रहे अराध, आपणी गोद लए उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग गुरमुख साचे लए तरा। तारनहारा हरि हरि आया, एका नाम चलाईआ। चार वरनां रिहा जगाया, भैणां भाई बणाईआ। वरन बरन ना कोई रखाया, साचा मार्ग एका लाईआ। गुरसिखां बेड़ा आप उठाया, आपणे कंध उठाईआ। मनमुखां कलिजुग झेड़े लाया, दर दुआर रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचां देवे साचा वर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ।

०८ ०८

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी छम्ब गुरदुआरे जम्मू ✪

धरत धवल भूमका अस्थान, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। आप बिराजे श्री भगवान, ब्रह्मण्ड रहे शरमाईआ। वंडे वंड नाम दान, त्रिलोकी हथ्थ ना आईआ। शब्द अगम्मी इक्क बिबान, सतिगुर आपणे हथ्थ रखाईआ। ग़रीब निमाणे कर पछाण, फड़ बांहों उप्पर चढ़ाईआ। ऐथे ओथे देवे माण, दो जहानां होए सहाईआ। करोड़ तेतीसा फुल बरसान, ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाईआ। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, लेखा लेखे लए लगाईआ। रोग संताप जगत सर्ब मिट जाण, वेख वखाईआ। गृह मन्दिर होए परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। नाम रंग साचा चाढ़, धरनी धवल सुहाया। सच सिंघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी इक्क हंढाया। हरिजन साचे कर प्यार, जन जनणी लेखे लए लगाया।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी छम्ब गुरदुआरे जम्मू ✪

गुरदुआर गुरमुख वसे, मनमुख रहे कुरलाईआ। जिस जन मार्ग साचा दस्से, भेख पखण्डा दए गंवाईआ। साचे मन्दिर बहि बहि हस्से, आप आपणा वेख वखाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्से, साचा चन्न चढ़ाईआ। कलिजुग माया ना होए वसे, माया ममता मोह तजाईआ। सतिगुर पूरा जिस जन हिरदे वसे, साध संगत सेव कमाईआ। माया ममता मूर्ख मुग्धां डस्से, दिवस रैण डंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरदर मन्दिर वेख वखाईआ। गुरुदुआर हरि की धार, हरि साचा सच उपजांयदा। जिस जन कराए नाम वणज वापार, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। दहि दिशा ना होए खुआर, चार कुन्ट ना फेरी पांयदा। एका रंग रवे करतार, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। काम क्रोध ना होए हँकार, लोभ मोह ना कोए दसांयदा। सद गुरसिख सतिगुर सोहे दुआर, सतिगुर पूरा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगांयदा। संगत तेरी साची सेव, हरि साचे सच मन भाईआ। तेरी रसना तेरी जेहव, आपणा नाम जपाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अभेव, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सज्जण साहिब वड देवी देव, साचा सतिगुर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। गुरदुआर सति प्रसादि, हरिसंगत भेट चढ़ाया। सतिगुर पूरा देवणहारा दाद, दर दर जिस जन हिरदे अन्दर राम वसाया। जूठा झूठा वेखे नाद, डंका डौरु कवण वजाया। कवण सन्त कवण साध, कवण गुरू ग्रन्थ सेव कमाया। कवण माया ममता रिहा लाध, सिर आपणे भार उठाया। किसे लेखे लग्गे ना नाड़ी मास, हाडी पंज तत्त अग्नी जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाया। साचा घर सच दरवाजा, हरि साचा आप खुलांयदा। हरि मन्दिर बैठा ग़रीब निवाजा, दिस किसे ना आंयदा। अनहद वजाए साचा वाजा, ढोलक छैणा ना कोई वजांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, आप आपणा अदल कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा लेखा तेरी झोली पांयदा। हरिसंगत सति प्रसादि, आपणी हथ्थीं रिहा वरताईआ। दूसर हथ्थ ना दित्ती दाद, ना मालक कोई बणाईआ। लहिणा चुक्के अज्जो आज, अज्ज कल ना फेर वखाईआ। आपणा साजण आपे साज, आपे वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां रक्खे लाज, सच प्रसादि भेट चढ़ाईआ। एका चौका रहे अराध, चौका एका इक्क लिव लाईआ। पहले युग बख्शी दाद, चौथे लए मिटाईआ। साची रक्ख रक्खया रक्खणी याद, रिख केस गवर्धन धार हरि निरँकार आप उठाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना वंडे सच प्रसादि, जीवां जन्तां भार ना सके कोई उठाईआ। आपणा प्रसादि आपे वंड, आपणा

सगन मनांयदा। हरिसंगत वरताए ठंड, साचा संग निभांयदा। किसे पल्ले बज्झी रहिण ना देवे गंढु, जो गुरमुख सेव चढ़ांयदा। नार दुहागण जीव रंड, हरि कन्त भेव ना पांयदा। प्रभ वेखणहारा जगत पखण्ड, घर घर विच आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर प्रसादि गुर किरपा जाण, गुरमुखां आप वरतांयदा। घर मन्दिर धुर दरगाह, हरि सज्जण वेख वखाया। आप सुहाए साचा थाँ, जिस दर चरन छुहाया। करे पुकार धरती माँ, धरत धवल कुरलाया। जीआं जन्तां पकड़े बांह, अमृत जल आप उछलाया। आपणे चरन लए छुहा, चरनोदक मुख छुहाया। गंगा गंगोतरी वेख वखा, सच सागर आप नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठांडा जल अमृत रस, अमृत मेघ वरसाया। अमृत मेघ सतिगुर नीर, सीर सीर प्याईआ। एका मारे साचा तीर, धरत धवल हिलाईआ। जन भगतां कढ्ढे हउमे पीड़, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। गुरू दुआर गुरू ग्रन्थ बन्न्हे बीड़, गुर सतिगुर आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल साचा हरि, लहिणा देणा हरिसंगत रिहा चुकाईआ।

तारनहार पुरख समरथ, आदि जुगादि इक्क अख्वाया। बिरध बाल जवान रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नाम जणाई साची गाथ, एका मन्त्र अन्तर दृढ़ाया। कलिजुग क्रिया ना मारे ठाठ, शौह दरयाए दए रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। बाहल नगर देवे बाहल, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। तोड़न आया जगत जंजाल, वड दाता बेपरवाहीआ। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, जो जन रसना हरि हरि गाईआ। माटी लेखे लाए खाल, खालक खलक वेख वखाईआ। हरिजन साचे लए संभाल, आप आपणे अंग लगाईआ। किसे ना गले कोई दाल, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल कलेश दए मिटाईआ। कल कलेश उतरे दुःख, हरि साचा दया कमांयदा। उज्जल करे मात मुक्ख, जो जन रसना सोहँ गांयदा। सुफल कराए मात कुक्ख, गर्भवास पन्ध मुकांयदा। उलटा होए ना फेर रुक्ख, अजून अजूनी आप भवांयदा। आपणी गोदी लए चुक्क, साचा धाम इक्क वखांयदा। मनमुखां मुख पाए थुक्क, थुक्कीं मुख भरांयदा। छल छिद्र ना रहे लुक, सिर चोटी आप मुंडांयदा। हरया बूटा ना जाए सुक्क, सुक्के हरे आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे पार करांयदा। बिरध बाल नौजवान, मात गर्भ आप तराईआ। शब्द झुलाए सच निशान, चारों कुन्ट आप उठाईआ। जीव जन्त सारे गाण, घर घर वज्जदी रहे वधाईआ। ना कोई पवण मसाण,

कँवरी कँवर ना कोई वखाईआ। एका मारे शब्द बाण, तीर निराला आप चलाईआ। सथ्थर लाहे झूठा घाण, आप आपणा गेड़ दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन सज्जण साचे मीत, हरि साची सिख समझाईआ। एका गाउणा सुहागी गीत, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण आप अख्वाईआ। काया करे ठंडी सीत, जो जन इक्क मन होए दर्शन पाईआ। लक्ख चुरासी गई बीत, अलख दाता नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरि साचे लए तराईआ।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी शंकर दास दे घर पिण्ड झण्डे जम्मू ✪

हरि सतिगुर दीन सच्चा दयाल, इक्क अकल्ला एकँकारया। गोबिन्द मीता गुर गोपाल, खेले खेल अगम्म अपारया। गुरमुख वेखे साचे लाल, आप आपणी दया कमा रिहा। मनमुखां मारनहारा मार, जुग जुग आपणा वेस वटा रिहा। आदि जुगादी इक्क अवतार, निरँकार आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तेज़ कटार, निरँकार हथ्थ रखा रिहा। सार शब्द साचा खण्डा, हरि साचा हथ्थ उठांयदा। वेख वखाए विच ब्रह्मण्डां, लोआं पुरीआं फोल फोलांयदा। आपणी वंडे आपे वंडा, वंडणहार इक्क अख्वांयदा। मेटणहारा भेख पखण्डा, लोकमात जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सार विच संसार, एका आप रखांयदा। सार शब्द अगम्म अथाह, वेद कतेब भेव ना पाईआ। आपे जाणे बेपरवाह, आप आपणी रचन रचाईआ। पारब्रह्म सच सेव कमा, सेवक सेवा आप लगाईआ। अलक्ख अभेव आप अख्वा, अलख निरँजण नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा दए सुहा, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची कार हरि निरँकार जुगा जुगन्तर आप कराईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, हरि साचा आप करांयदा। अबिनाशी करता खेल अपार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी एका धार, आपणी आप चलांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, हर घट डेरा आपे लांयदा। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सार शब्द हरि धार निराली, एका एक उपाईआ। एका जोत जगे अकाली, एका नूर करे रुशनाईआ। एका बणे करता पाली, प्रितपालक नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ। साचा घर हरि भगवन्त, एका एक सुहांयदा। हरिजन मेले साचे सन्त, साची सिख्या इक्क समझांयदा। नाम निधाना देवे गुण गुणवन्त, आत्म अन्तर ब्रह्म

वखांयदा। आप बणाए साची बणत, पंज तत्त फोल फोलांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, समरथ पुरख अख्वाया। आदि जुगादी लै अवतारा, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाया। नित नवित्त साची कारा, सांधा सन्तां लए उठाया। धुन अनादि सच्ची धुन्कारा, एका मंगल राग सुणाया। सर सरोवर ठंडी ठारा, ताल सुहावा इक्क उपाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। आत्म सेजा हो उज्यारा, निरगुण बैठा आसण लाया। सुरत सुवाणी मेल मिलाए साचे हाणी, घर साचा इक्क सुहाया। इक्क वखाए पद निरबाणी, परम पुरख वड वड्याआ। आवण जावण चुक्के काणी, जिस जन हरि हरि दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साध सन्त हरि बेअन्त कोटी कोटि रिहा तराया। कोटी कोटि सन्त अधार, हरि नामा वणज कराईआ। देवे दरस अगम्म अपार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। रवि ससि करन निमस्कार, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाईआ। आप सुहाए सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण आसण लाईआ। अलख अगोचर भेव न्यार, भेव अभेदा आप हो जाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, सति सतिवादी आप कराईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ी धार, चार कुन्ट रही वहाईआ। काया मन्दिर अन्ध अँध्यार, दीवा बाती ना कोई जगाईआ। सच ना दिसे गुरुदुआर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। रसना जेहवा कूड़ अहार, सच अमृत जाम ना कोई प्याईआ। तन श्रृंगार काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर एका हरि, आपणी कल वरताईआ। अकल कला कल धार, हरि हरि वेस वटांयदा। आदि जुगादी पावे सार, आपणा कर्म कमांयदा। कलिजुग कूड़ा वेख पसार, जोती जामा भेख वटांयदा। जीव जन्त होए विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवणहारा सच वर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। नाम कंडे साचे तोल, लेखा दए चुकाईआ। आदि जुगादी रहे अडोल, ना डोले कोई डुलाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती अनभोल, ना सोया कोई जगाईआ। चारों कुन्ट वज्जे ढोल, कूड़ नगारा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, हरि वड बली बलवाना। औलीए पीर शेख मुसायक मेटण आया, मारे तीर निशाना। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले शब्द दोशाले आप लपेटण आया, आपणा पाए नाम दोशाला। खेवट खेटा बेड़ा बन्ने लावण आया, खेले खेल दो जहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन जन हरि आपणे रंग रंगाया।

तारनहार गुर एक है, परम पुरख करतार। जिस जन बख्शे साची टेक है, देवे राम नाम अधार। काया बुधी करे बिबेक है, हउमे हँगता रोग निवार। पंज तत्त विकारा रिहा वेख है, माया मोह ना करे ख्वार। आपे लिखणहारा लेख है, ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार। आपे दाता नर नरेश है, शाह सुल्तान सच्ची सरकार। आपे गणपति हरि गणेश है, करोड़ तेतीस दए अधार। आपे सुरपति राजा इन्द करे वेस है, आपे अमृत बख्शे ठंडी ठार। आपे गंगा गोदावरी तेरा लेखा रिहा वेख है, आपे सुरस्ती करे प्यार। आपे जल जल धार है, जल धार रूप आप निरँकार। आपे घट घट अन्दर रिहा वेख है, घर घर विच महल्ल उसार। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस है, निरगुण जोती नूर उज्यार। आपे दसरथ सुत्त राम रामेश है, कान्हा कृष्ना आप मुरार। आपे नानक गुर दस्मेस है, एका जोती दस अवतार। आदि जुगादी रहे हमेश है, आवे जावे विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। एका एक एकँकार हरि निरँकार, पारब्रह्म हरि अख्वांयदा। आदि निरँजण मीत मुरार, जोत निरँजण मेल मिलांयदा। सार शब्द कर त्यार, अनहद ताल वजांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, गुरमुख साचे आप उठांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, एका दूजा भेव चुकांयदा। तीजे नैण दरस अपार, चौथे पद समांयदा। पंचम मीता मीत मुरार, पंचम मोह चुकांयदा। सोलां मग्घर सच्चा घर बार, हरि साचा खेल खिलांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, हरि साचा सच करांयदा। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, नौ दुआरे ना खोज खुजांयदा। दसवें मीता मेल मुरार, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका गीता गुण ज्ञान, मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका पूजा वेद पाठ पुराण, एका सिख्या सिक्ख समझांयदा। एका खाणी बाणी कर पछान, बाण निराला एका लांयदा। एक रूप श्री भगवान, चारे वरनां नज़री आंयदा। अठारां पुराणां टुट्टे माण, माण अभिमाना मेट मिटांयदा। सोहँ अक्खर इक्क पछाण, दो जहाना चलत चलांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म कर प्रधान, सचखण्ड दुआरा आप वखांयदा। गुरमुख साची सखी हरि हरि साचा काहन, नाम बंसरी विच वजांयदा। साचा मेला सीता राम, सीता सुरती आप प्रनांयदा। वसे खेड़ा नगर ग्राम, जिस दर सतिगुर पूरा चरन टिकांयदा। मिटे रैण अन्धेरी शाम, साचा नाम चन्द चढ़ांयदा। पूरन करनेहारा काम, पूरन इच्छया आप करांयदा। लेखे लाए माटी चाम, जो जन नेत्र नैण दर आए दर्शन पांयदा। रोग सोग सर्ब मिट जाण, जो जन रसना सोहँ गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र नाम सिखांयदा। एका मन्त्र साचा गाउणा, साची जुगत जणाईआ। रोगां सोगां डेरा ढौहणा, साचा सुख दए उपजाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, आप आपणा पर्दा लाहीआ। मनमुखां दर दर फिराउणा, काग वाग रहे कुरलाईआ। बिन हरि साचे ना बेड़ा किसे बन्ने लाउणा,

कलिजुग झूठा गुर ना देवे कोई गवाहीआ। बिन हरि सति पुरष ना किसे अख्वाउणा, दर घर साचे डेरा लाईआ। सन्त सति सरूप ना किसे समाउणा, सति असति गया रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बाल निधाना नौजवाना लेखा दए चुकाईआ। हरिजन लेखे जाए लग्ग, हरि सज्जण सच्चा पाया। फड़ फड़ हँस बणाए कग, माणक मोती चोग चुगाया। दीपक जोती जाए जग, अज्ञान अन्धेर मिटाया। दरस दिखाए हरि हरि उप्पर शाह रग, आप आपणा मेल मिलाया। पंज तत्त बुझाए लग्गी अग्ग, अमृत आत्म मुख चुआया। सतिगुर पूरा हरि सरबग्ग, दाता दानी देण दान आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी हथ्थीं बन्ने तन्द, साचा गाना हथ्थ बंधाया। शब्द गाना बन्ने डोर, हरि साचा सच कमाईआ। फड़ फड़ मारे पंजे चोर, शब्द कटार इक्क उठाईआ। जगत विकारा देवे होड़, आप आपणी सेव कमाईआ। अन्तिम वेले गया बौहड़, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। जिस जन आत्म अन्तर लग्गी औड़, दे दर्शन आप बुझाईआ। आपे चढ़या साचे घोड़, साचा अस्व आप दौड़ाईआ। दो जहानां लाया एका पौड़, लोकमात फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। गुरसिख उठ जाग भगत दुलार, हरि सतिगुर आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप खिलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकार, सत्त दीप सर्ब कुरलांयदा। साध सन्त ना पावे कोई सार, सिर हथ्थ ना कोई टिकांयदा। घर घर बैठ राम अवतार, राम राम सर्ब अख्वांयदा। गोबिन्द खण्डा कर त्यार, गोबिन्द आपणा नाम वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, दर आपणे सोभा पांयदा। सोभावन्त हरि भगवाना, भगतन भगती नाम दृढ़ांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, आदि शक्ती सेवा लांयदा। मेल मिलाए जोत ज्वाला, अष्टभुज कुड़माई आप करांयदा। सिँघ शेर शेर बलवाना, आप आपणी कल वरतांयदा। सन्त सुहेले बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। शब्द अनादी इक्क तराना, घर मन्दिर आप सुणांयदा। भेखाधारी भेख बावना, बलधारी आप हो जांयदा। आपे मारे रामा रावणा, लंका गढ़ आप सुहांयदा। आपे खेल खेल महाना, रथ रथवाही रथ चलांयदा। आपे नाम सति दर प्रधाना, वाह वाह गुरू फतिह गजांयदा। कलिजुग अन्तिम जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना, निहकलंक आप अख्वांयदा। चौदां तबकां पार कराना, चौदां लोक उठांयदा। ब्रह्मा विष्न वक्त चुकाना, सुरपति राजा तख्तों लांहयदा। लक्ख चुरासी फड़ फड़ाना, नौ खण्ड ख़ाक उडांयदा। गुरमुख साचे मेल मिलाना, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, दर साचा आप सुहांयदा। साचा दर हरि सुहञ्जणा, हरि साचे आप सुहाया। जोत

५६५ ०८

जगाए आदि निरँजणा, आदि निरँजण वेस वटाया। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर ल्ए तराया। जिस जन नेत्र नाम पाए अंजणा, अज्ञान अन्धेर दए मिटाया। दो जहानी साचा सज्जणा, लोकमात वेखण आया। जो घड़या सो भञ्जणा, थिर कोए रहिण ना पाया। हरिसंगत चरन धूढ़ कराए साचा मजणा, दुरमति मैल दए गंवाया। अन्तिम वेले पर्दा आपे कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। लाड़ी मौत घर घर नच्चना, आपणा घूँगट दए उठाया। काल नगारे कोलों किसे ना बचणा, डौरु डंका रिहा वजाया। पंज तत्त भाण्डा दिसे कच्चना, सच भठयाले ना कोई तपाया। हरि सतिगुर साचा साचो सचना, आदि जुगादि इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दए तराया।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी भाग सिँघ दे घर झण्डे जम्मू ✪

सच्च घर सच दुआर, गुर सतिगुर वेख वखाईआ। किरपा कर अपर अपार, आपणी दृष्ट आपे पाईआ। जगत तृष्ना दए निवार, साचा सुख इक्क उपजाईआ। भगती नाम भरे भण्डार, भवसागर पार कराईआ। वणज कराए इक्क वपार, नाम नामे हट्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध बालां ल्ए तराईआ। उतरे पार सर्ब परिवार, जिन हरि हरि मेल मिलाया। किरपा करे सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण वेख वखाया। सोहे बंक सच्चा दरबार, दर घर साचे मंगल गाया। पाया परम पुरख करतार, जगत जंजाला संगल कट्ट वखाया। दाता दानी देवणहार, दर्द दुःख भय भञ्जण नेत्र अंजन ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल गुरमुख लाल, घर मन्दिर इक्क सुहाया। घर मन्दिर सच मुनार, हरि साचा सच सुहाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, चरन चरनोदक गुरमुखां मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए आपणे दर, घर सच्चा इक्क वड्याईआ।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी पूरन चन्द दे घर झण्डे जम्मू ✪

तीर्थ तट सच किनार, गुर सतिगुर चरन दुआरया। अमृत भरे अमर भण्डार, आप आपणे रंग रंगा रिहा। निहकर्मी कर्म रिहा विचार, कुकर्मां लेख चुका रिहा। धर्मी धर्म इक्क संसार, हरिसंगत मेल मिला ल्या। वरन वरनी वसे बाहर, घर सच्चा इक्क वखा ल्या। मरनी मरे ना विच संसार, जीवण मुक्त आप बणा ल्या। करनी करे आप करतार, करता पुरख

नाउँ वड्या ल्या। धरनी निउँ निउँ करे निमस्कार, जिस दुआरे चरन छुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर वेखे बंक दुआर, अन्दर आपणा धाम वखा ल्या। अन्दर धाम हरि न्यारा, साची सेज हंढाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, त्रैगुण बंधन तोड़ तुड़ाईआ। पंचम देवे पंच हुलारा, शब्दी शब्द शनवाईआ। राज जोग सच्चा सिक्दारा, गुर चरन सच्ची शहिनशाहीआ। किरपा करे आप निरँकारा, निर्धन निर्धन लए तराईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, जगत तृष्ना तृखा बुझाईआ। गावत गावत उतरे पारा, जो जन रसना सोहँ गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साची वज्जे वधाईआ।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी सांई दास दे घर झण्डे जम्मू ✪

चरन चरनोदक साची धार, दु:ख दर्द मिटाईआ। जगत रुले कर प्यार, अनमुल्ले लाल बणाईआ। भण्डारे खुल्ले दर दरबार, अतोट अतुट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन चरनामित आप हो जाईआ। चरन मीता मीत मुरार, चरन सरन सरनाईआ। पतित पुनीता करे विच संसार, आप आपणा सुख उपजाईआ। चलाए रीता अपर अपार, आपणी नीती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बावल बोला नूरी अल्ला हू हू दए मिटाईआ। हू अल्ला हक्क बहक्क, हकीकत वेख वखांयदा। कलमा कलमी रिहा मुक्क, आयत शरायत मिटांयदा। अल्फ़ मीम नकेल पाए नक्क, हमज़ा मुख भवांयदा। मुला शेख़ डूँघी गारे देवे सट्ट, डूँघी भँवरी आप भुवांयदा। अन्दर मैल देवे कट्ट, अमृत साचा मुख चुआंयदा। एका दूआ मेटे फट्ट, दोए दोए रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत निमाणे निमाणयां आपणे गले लगांयदा।

✪ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी बीबी छम्ब जम्मू ✪

कलिजुग आयू सौ बरस, हरि साचे आप उपाईआ। आपे करनहारा तरस, नेत्र नैणां वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी बुझावणहार हिरस, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जिस जन देवे आपणा दरस, करामात इक्क वखाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणी वड्डी आप दवाईआ। आपणी वड्डी सौ रुपया, एका नाम रखाईआ। गुरमुख चढ़ाए आपणी नईआ, आपणा चप्पू लाईआ। हरिसंगत बणया भैणां भईआ, बेमुखां सिर छाईआ। प्रगट होया साचा सईआ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणी कढु के बैठा वहीआ, राए धर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वड्डी आपे रिहा खुआईआ। जिस जन वड्डी देवे नाम, कर किरपा गुण निधानया। नज़री आए एका राम, एक रूप श्री भगवानया। सज्जण साक सैण छुटयां तमाम, नाता तुटे मात पित भैण भ्राया। सच्चा दिसे एको काम, गुर सतिगुर चरन ध्यानया। मनमुख जीव होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पानया। अन्दर वड़े पंज शैतान, दूई द्वैती मारन कानीआ। मदिरा मास पीण खाण, रसना जेहवा गुण वखानया। ऐथे ओथे ना मिले माण, घर मन्दिर ना कोए सुहानया। सच्चा दिसे ना सच मकान, नौ दर जीव होए हलकानया। साचा ताल ना कोए वजान, मन मति होई प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वड्डी देवे नाम सच्ची निशानया। नाम निशाना सच्ची वड्डी, गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। पंज विकारा विच्चों जाए कढ्ढी, एका ब्रह्म वखाईआ। सुरत सुवाणी बाल अणजाणी नढ्ढी, गुर शब्द करे कुड़माईआ। लेखे लाए रत्त मास नाड़ी हड्डी, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंधन पाईआ। नाम वड्डी रिशवत खोर, भगवन भगतां आप करांयदा। मनमुख सुवाए अन्धेर घोर, गुरमुख साचे आप जगांयदा। पहलां बन्ने पंज चोर, दूजे मार्ग एका लांयदा। तीजा नेत्र खोल्ले फोर, हरन फरन फरन हरन आप आपणा दरस वखांयदा। चौथे पद गुरमुख साचा चढ़े घोड़, सतिगुर पूरा आप चढ़ांयदा। हरि पाया हरि रघुराया घर साचे वड्डा, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। लक्ख चुरासी वेखणहारा मिट्ठा कौड़, घट घट अन्दर फोल फोलांयदा। जिस जन आत्म अन्तर लग्गी औड़, अमृत भर प्याला आप प्यांअदा। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरा जाए बौहड़, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सचखण्ड दुआरे लाए एका पौड़, अद्धविचकार ना कोए अटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सौ बरस इक्क सद धार, एका एक उपजाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म नद वजाए अपर अपार, नाद अनादा आपणे हथ्थ रखाईआ। बोध अगाधा शब्द जैकार, आपणा लेखा आप लिखाईआ। पावे सार सन्त साध, सन्त साजण लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे आप समाईआ। झूठा ताअना जगत तराना, गुरमखां तोड़ तुड़ांयदा। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, एका रूप नज़री आंयदा। एका शब्द एका गाना, एका राम वखांयदा। एका कृष्ना एका कान्हा, एका मण्डल रास रचांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बंक सुहांयदा। एका पुरख इक्क

सुल्ताना, एका शाह उपजांयदा। एका राज इक्क राजाना, एका रईयत आप उपांयदा। एका पद वखाए हरि निरबाणा, निर्भय रूप आप हो जांयदा। कलिजुग वेखे दूसर झूठ दुकाना, कलिजुग जीआं माया ममता आप भरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सद कलिजुग तेरी हद्द आपे पार करांयदा। आपे करे पार किनारा, सद सद वेख वखाईआ। सज्जण साचा मीत मुरारा, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, आप आपणी रचन रचाईआ। खेले खेल कृष्न मुरारा, रूप अनूप आप दरसाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, बिप्पर सुदामा आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग तेरा खेल तमाशा, हरि साचा वेख वखांयदा। आपे सखीआं पाए रासा, आपे रथ चलांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथा, आपे वंड वंडांयदा। आपे जाणे हार पासा, आपे डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेल खिलांयदा। आपे शब्द आप ज्ञान, आपे गीता करे पढ़ाईआ। आपे अर्जन होए मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। आपे बख्शे चरन ध्यान, आपे देवे माण वड्याईआ। आपे आए विच मैदान, ग्यारां सत आप हो जाईआ। अठाई लक्ख इक्क पहचान, अठारां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां धिरा वेख वखाईआ। एका हरि दोए धार, लोकमात चलांयदा। पांडो बख्शे सच प्यार, दुर्योधन काम क्रोध हँकार भरांयदा। दहि दिशा विचोला विच संसार, भेव कोए ना पांयदा। अन्तिम करनी करे कार, सिपाहसलार आप हो जांयदा। करनी करन वेख बलकार, युधिष्टर संग निभांयदा। भीम नकल सहिदेव कर ख़बरदार, दरोणा कृपा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा खेल, आदि जुगादी कर कर मेल, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। आपे करे आपणा बोध, आपे ज्ञान दृढ़ाईआ। आपे वेखणहारा युद्ध, आपे करे लड़ाईआ। आपे अस्व बहे कुद, आपे जल थल फेरा पाईआ। आपे कौरुक्षेत्तर लए सुध, आप आपणा चरन टिकाईआ। आपे अग्नी जाणे आपे सीतल धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। आपे कान्हा कृष्न मुरार, आपे रूप अनूप वटांयदा। आपे खाली हथ्थ रक्खे सरकार, रथ रथवाही रथ चलांयदा। आपे दोहां धिरां मारे मार, भीसम पतामा आप तरांयदा। आपे शिखण्डी करे प्यार, आपणी डण्डी आपे लांयदा। आपे दूती दुष्टी दए सँघार, गदा चक्र आप चलांयदा। सन्त सुहेले सज्जण लए उभार, आपणा लेखा आप मुकांयदा। दीणा सुत्त होया ख़बरदार, असव अस्वथामा अक्ख खुल्हांयदा। अन्दर वेख अन्धेरी रात, आप आपणा राह तकांयदा। छत्र धारी सुत्ता विच प्रभास, साचा संग ना कोए वखांयदा। अन्तिम करी एका बात, तेरा लहिणा वक्त चुकांयदा। पंचम सीस देवे

काट, तेरे हट्ट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। अस्वथामा हो त्यार, दुर्योध्न दए सलाहीआ। पंजे पांडू देवां मार, जै जै तेरे नाम कराईआ। आप आपणा आया बल धार, खेले खेल बेपरवाहीअ। आप भुलाया भरम गंवार, भरमी भरम भवाईआ। द्रोपद सुत्त सीस लए उतार, आया वाहो दाहीआ। हँकारी वेख दुर्योध्न रोवे ज़ारो ज़ार, कुल आपणी कहर कमाईआ। ब्रह्मा ब्रह्मण गई सत्तया, अस्त्र शस्त्र हथ्थ सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। अत्याचार अन्त कर, अन्तिम नीर वहाया। अन्दर मन्दिर धूंआँधार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। शिव शंकर अग्गे करे पुकार, दोइ जोड़ सीस निवाया। कौण रच्छया करे संसार, कवण दूशन दए मिटाया। पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा शब्द अगम्मी मारे वाज, आप आपणा हुक्म सुणाया। कलिजुग अन्तिम तेरा साजे साज, मानस मानुख लए उपजाया। प्रगट होए हरि सच्चा शाहो राजन राज, आप आपणे अंग लए लगाया। गुर संगत तेरी रक्खे लाज, गोबिन्द आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी विच ना कोए भुआया। मानस ते मानस थीआ, हरि साचे जोत जगाईआ। अमृत बीज अमृत फल किया, अमृत मुख चुआईआ। अन्तिम लेखे लग्गे साढे तिन्न हथ्थ सीआं, नौ खण्ड करे लड़ाईआ। निर्मल किया आपे जिया, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि हरिभगत लए उपजाईआ। आपे आए जोत धर, जुग जुग जोत जगांयदा। सनक सनंदन सनातन सन्त कमारा रूप कर, बराह नाम आप रखांयदा। यज्ञे पुरख पावे सार, हाव ग़रीव वेख वखांयदा। नर नरायण चोटी चढ़, आप आपणा वेख वखांयदा। दत्तात्रे आपे फड़, आपे फड़ पंचम मेल मिलांयदा। कपल मुनी वेखे घर, आप आपणी जोत जगांयदा। रिखव देव लाए आपणे लड़, आप आपणा नाउँ धरांयदा। पृथू अन्दर आपे वड़, आप आपणी रीत चलांयदा। मत्सय रूप हरी हरि, जल धारा डेरा लांयदा। कच्छप मिन्दिरा पिठ धर, आप आपणा वेस वटांयदा। मोहणी रूप अग्गे खड़, बल बावन आप भुलांयदा। हँसा मोती चोग कर, सच ज्ञान दृढ़ांयदा। नर सिँघ आपे वेस धर, हरनाक्ष मेट मिटांयदा। नर सिँघ रूप धर, प्रहलाद पार करांयदा। हरी नरायण ध्रू गज वेख वखांयदा। धनंतर नाम आपे धर, आपणी कल चलांयदा। परस राम एका विद्या पढ़, माण ताण इक्क जणांयदा। राम रामा रूप करतार, हँकारी दुष्ट मेट मिटांयदा। वेद व्यासा कुँआरी कन्या मात कर, पुराण अठारां लेख लिखांयदा। कान्हा कृष्ना जोत धर, त्रिलोकी नंदन लक्ख चुरासी बंधन आप तुड़ांयदा। बोध बोधा बोध अवतार, ज्ञान ज्ञान आप उपांयदा। कलिजुग वेखे घर घर, निहकलंका नाउँ धरांयदा। नानक जोती दस अवतार, एका बूझ बुझांयदा। ध्रू प्रहलाद लए वर,

आप आपणा संग निभांयदा। अमरीक नुहाए साचे सर, दुरबाशा माण तुड़ांयदा। जनक बदेही आपे फड़, आप आपणा ज्ञान समझांयदा। हरी चन्द लगाए आपणे लड़, तारा राणी जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सैण कबीरा वेखे सर्ब लेखे लग्गे, रविदास चमार हरि साची बणत बणांयदा। अजामल पापी उतरे पार, गनका नाल रलाईआ। बधक एका दए सहार, चरन कँवल बाण छुहाईआ। पापण पूतना दए अधार, मोहण मुम्मे रही पाईआ। नामा कराए वणज वपार, गाए मोई आप जवाईआ। नाम देव कर सच जैकार, पत्त डाल्ही हरि हरि नज़री आईआ। सैण नाई लाए पार, सखा सैण आप हो जाईआ। कोटन कोटि कोटि जीव जन्त पाए सार, आप आपणा भेव छुपाईआ। द्वापर अन्तिम करया विहार, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। अस्वथामे मंगी मंग बण भिखार, पाप पुन्न हरि आप वेख वखाईआ। पिछला कर्ज़ा रिहा उतार, अग्गे आपणे मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोद्धा सूरबीर बलवान, आपे जाणे आदि जुगादी आण, वेद कतेब लेखा ना कोई लिखाईआ। वेद कतेब अन्दर हद्द, हरि साचा नीह रखांयदा। भगत बणाया आपणी यद्द, आपणे नाल उपजांयदा। आपे भार रिहा लद्द, आपणे कंध उठांयदा। सचखण्ड दुआर इक्क निशान देवे गड्ड, ना दूसर कोई फड़ उठांयदा। आपणे नाल लडाए आपणा लड, लोकमात जन्म दवांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर ना देवे छड्ड, जूनी जून ना कोई भवांयदा। अमृत प्याला प्याए साची मदि, सदा अमर रखांयदा। कलिजुग काल नगारा रिहा वज्ज, चारे कुन्टां कूक सुणांयदा। जूठ झूठ वज्जी ढड्ड, मोह हँकारा सारिंग हथ्थ उठांयदा। मनमुक्ख सुत्ते डूँघी खड्ड, पार किनारा ना कोई जणांयदा। राए धर्म नक्क गुत्त देवे वढ्ड, दुहागण नार सुहागण कन्त ना कोई उठांयदा। आपणी करनी बणे कग्ग, हँस चोग ना कोई खुवांयदा। तत्ती वा रही वग, अमृत धार ना कोई वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार, भेव अभेद अछल अछेद, अछल अछल्ल आप करांयदा। अछल अछल्ल हरि भगवाना, शब्द तराना इक्क सुणाईआ। साची सखीआं मंगल गाणा, एका राग एका राग अल्हाईआ। धुन आत्मक सच तराना, काया मन्दिर आप सुणाईआ। आपे होया जाणी जाणा, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग मेटणहारा कूड़ी शाहीआ। कूड़ी शाही मेट निशाना, सच सुच्च वरतांयदा। शब्द सरूपी नौजवाना, मात गर्भ ना फेरी पांयदा। एका चिल्ला तीर कमाना, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं खेल खिलाणा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजांयदा। चारे खाणी होए हैराना, चारे बाणी बोल सुणांयदा। परा पसन्ती इक्क मकाना, मधम बैखरी आप अल्हांयदा। जिस जन बन्ने हथ्थीं गाना, घर साचे मेल मिलांयदा। लोकमात छुट्टे आवण जाणा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा।

मेल मिलाए राम रामा, भगवन भगतन डोरी नाम बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणी धार, पुरख अबिनाशी हो त्यार, निरगुण सरगुण विच संसार, आपणी चलत चलांयदा। निरगुण रूप हरि निरँकारा, अकल कला अख्वाईआ। सरगुण पंज तत्त कर प्यारा, मन मति बुध दए चतुराईआ। निरगुण रूप अगम्म अपारा, रूप रंग ना कोई जणाईआ। सरगुण होया ख़बरदारा, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूआ दूआ एका एका आप अख्वाया। एका दूआ एकँकार, निराकार साकार रूप वटाया। आपे विष्नूं हो उज्यार, आपणी सेजा आसण लाया। आपे बस्त्र तन शृंगार, लाल रंगीला भूषन पाया। आपे लछमी ख़बरदार, आपे चरन झस्सण लाया। आपे ब्रह्मा वेता ब्रह्म रूप अपार, पारब्रह्म रूप वटाया। आपे वेखे वेखणहार, अट्ठे नेत्र खोल्ह खुल्हाया। आपे पाठ पूजा वेद विचार, चारे लेखा लेख खुल्हाया। आपे शंकर लए उभार, धूंआँधार आप मिटाया। आपे पाए गल विच हार, हथ्थ त्रिसूल आप उठाया। आपे बाशक तशका कर त्यार, मुकेश सेवा लाया। आपे सभ तों वस्सया बाहर, भेव कोए ना पाया। आदि जुगादी हरि अवतार, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। कलिजुग अन्तिम खेले खेल अगम्म अपार, वेद व्यासा लेख लिखाया। नानक गोबिन्द मारी मार, लक्ख चुरासी दए सज़ाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, उच्च महल्ल अटल डेरा लाया। नाम खण्डा तेज़ कटार दो धारा ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, जेरज अंड फोल फुलाईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार, आप आपणे चरन बहाया। नौ खण्ड पृथ्मी हो त्यार, कुलाखण्ड इलाबुत हरि नामे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भद्र भारत खण्ड लए तराया। भारत खण्ड जोत निराली, हरि साचे जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी वेखे पत पत डाल्ही, भार अठारां बनास्पत फोल फोलाईआ। चार वरनां देवे शब्द दलाली, नाम विचोला इक्क उपाईआ। जल्वा नूर नूर जलाली, नूरो नूर अलाहीआ। हक्क हकीकत ना होए खाली, लाशरीक इक्क अख्वाईआ। दो जहानां सच्चा माली, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम बणया हाली, धरत धवल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी हथ्थीं गेड़ा रिहा दवाईआ। आपे गेड़ा देवणहारा, दीन दयाल अख्वाया। आपे छेड़ा छेड़नहारा, घर घर अग्नी दए तपाया। आपे बेड़ा रोढ़नहारा, वहिंदे वहिण दए वहाया। आपे खेड़ा ढाहवणहारा, नगर खेड़ा दए मिटाया। आपे भाणा सहिणहारा, हरिजन भाणे आप रखाया। आपे लहिणा देणा देवणहारा, जुग जुग लहिणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक निरगुण जोत, नूरो नूर समाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात विच ना आईआ। वेख वखाए ब्रह्मण्ड खण्ड कोटी कोटि, कोटन

कोटां विच समाईआ। गुरमुख साचे बख्शे एका ओट, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। कलिजुग जीव आलूनिउँ डिगे बोट, उप्पर धरत ना कोए उठाईआ। रसन वासना होई खोट, दुरगंध रहे फैलाईआ। कोई ना चढ़या उप्पर चोट, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। जूठ झूठ भंग पीती घोट, अट्ठे पहर ख़ुमार वखाईआ। काम क्रोध क्रिया लोट पोट, माया ममता पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतन लए तराईआ। भगतन साचे आपे रक्ख, रक्खणहार अख्वांयदा। आप करे कक्खो लक्ख, करता कीमत आप चुकांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, वक्खरी धार बंधांयदा। दरस वखाए हो प्रतक्ख, स्वच्छ सरूप वटांयदा। मनमुखां मानस जन्म होए भट्ठ, कलिजुग भठयाला इक्क तपांयदा। जो घड़या सो जाए ढठ्ठ, वेला अन्तिम आंयदा। धर्म राए रिहा नठ्ठ, दहि दिशां पन्ध मुकांयदा। चित्रगुप्त चुक्कणी गट्ठ, लक्ख चुरासी हिसाब वखांयदा। लाड़ी मौत मारन हारी सट्ट, हरि साची सेवा लांयदा। सीस धड़ देवे कट्ट, अद्धविचकारे पार करांयदा। खाली दिसे काया मट्ट, अमृत जाम ना कोए प्यांअदा। स्वांगी स्वांग रचया बाज़ीगर नट, दिस किसे ना आंयदा। जोती जगे लट लट, घर मन्दिर आप जगांयदा। गुरमुखां तन पहनाए पट, सच दोशाला नाम वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगां जुगन्तर देवे वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, भगत भगवान गुण निधान आप आपणे लेखे लांयदा। सौ रुपया जगत चट्ट्री, जीवां जन्तां रही भरमाईआ। मनमुखां सच ना खट्टी खट्टी, गए वक्त गंवाईआ। हरि का दुआर समज्झया बाणीआ हट्टी, पुच्छ पुच्छ कीमत रहे पाईआ। मानस जन्म प्या पाशा चौपट नटी, सिध्धी नरद ना कोए कराईआ। धन जोबन जवानी मुल ना पए इक्क अट्टी, यूसुफ गया समझाईआ। किसे तोल ना तुलना सेर वटी, धड़ी पसेरी ना कोए पाईआ। अन्तिम बुज्झया दीवा बत्ती, ख़ाकी ख़ाक घर वखाईआ। भाईआं भैणां बाहर सुटणा हथ्थीं, इक्क परि ना कोए रखाईआ। नार प्यार ना करे रत्ती, जो रही सेज हंढाईआ। माँ वगदी ना वेखे वा तत्ती, आपणी हथ्थीं लम्बू लाईआ। पुत्तर धीआं पाले दे दे मती, अन्तिम धक्का देवण लाईआ। जो जन खावे आहार छत्ती, बिन हरि नाम कम्म ना आईआ। पाया कंचण सोना तोले मासे रत्ती, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। मदिरा प्याला पीता ता ता भट्ठी, अन्तिम भट्ठी दए जलाईआ। जीव जन्त आपणे हथ्थीं रिहा कट्टी, अन्तिम पुर्ज़ा पुर्ज़ा कट्ट वखाईआ। जो जन सौ रुपया सतिगुर पूरे कोलों खाधी चट्ट्री, रत्न जवाहर हीरे माणक मोती कोई ना तुल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। उठ जीव कलिजुग जाग, हरि साचा आप जगांयदा। छम्ब अन्दर लग्गा भाग, भगवन आपणा वेस वटांयदा। धोवण आया दुरमति मैल दाग़, जो जन दर आए सीस झुकांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सच

सरोवर इक्क नुहांयदा। दो जहानां पकड़े वाग, अस्व घोड़े आप चढ़ांयदा। चरन धूढ़ी मजन माघ, घर साचे आप करांयदा। पंज तत्त बुझे लग्गी आग, काम क्रोध नेड़ ना आंयदा। घर घर साचा जगे चिराग, जो जन रसना हरि हरि गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप उठांयदा। उठ जीव बाल नादान, जागण वेला आया। सतिगुर पूरा मेहरवान, देवे नाम सृष्ट सबाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सारे एका गाण, अल्ला वाहिगुरू राम नाम कृष्न आप अख्वाया। करनी करता पूरे करे काम, जो जन मंगण दर दर आया। निथाव्याँ देवे साचा थांव, हरिसंगत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत दए वड्याआ। हरिसंगत वड्याई धन्न, धन्न घर हरि नामा पाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, हरि हिरदे विच वसाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, धर धरनी धवल सुहाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, साची करनी किरत कमाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, निरत सुरत इक्क रखाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, पुरख अकाल इक्क मनाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, दीन दयाल दर बहाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, माया ममता मोह जंजाल तुड़ाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, काल दुआर ना फेरा पाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, सतिगुर पूरे निउँ निउँ सीस झुकाया। हरिसंगत बेड़ा आपे बन्न्, कलिजुग अन्तिम पार कराया। इक्क सुणाया राग कन्न, एका घर वसाया। जननी जनिआ साचा जन, गुरमुख वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आप अख्वाया।

६०४ ०८

सतिगुर विचोला इक्क है, दूसर नांहे कोए। पहलों मिटाए आपणी तृख है, फिर करे दूजी अरजोए। तीजे सिख्या लए सिख है, हरि भाणे अन्दर होए। चौथे संसार जाणे मिथ है, मिथ्या सर्ब लकोए। पंजवें आपे रिहा पेख है, नौ खण्ड पृथ्मी आप खलोए। छेवे लिखणहारा लेख है, मात पित ना जाए कोए। सत्तवें सभ दा दाता नर नरेश है, आपे देवणहारा ढोए। अठवें अट्ठां तत्तां सति उपदेश है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मति बुध एका तत्त परोए। नौ दर भुल्ले भरम भुलेख है, माया ममता मोह भुलाए। दसवें हरि हरि साचा लए वेख है, गुरसिख इक्को आए सोए। नौ खण्ड पृथ्मी हरि का घर, लक्ख चुरासी विच वसाईआ। कोटन मावां रोवण दर, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। आपणी करनी रिहा कर, करता आपणी कार कमाईआ। कर्म धर्म जरम लिख्त लेखा आपे धर, आपे दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति इक्क समझाईआ। पहलां सिखणी गुरमति, गुरमति बूझ बुझांयदा। दूजा उपजे

फिर तत्त, दूसर राह वखांयदा। पहलों निभाउणा चरन नत्त, जगत मार्ग फेर वखांयदा। पहलों बन्ने नाम गड्ड, दूजे पुत्त आप लुभांयदा। तीजे उत्ते जिस गल्ल दित्ती सुट्ट, उस दी झोली ना कोई भरांयदा। चरनी डिगे सतिगुर पूरा जाए तुठ, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। जो जगत लगाए सतिगुर पूरा ठोकर, अभुल्ल गुरू भुल्ल विच कदे ना आंयदा। सतिगुर पूरा चारन वाला नहीं चोखर, लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा। जन भगतां कट्टे आपे औकड़, जो जन सरनाई आंयदा। जो जन दर दुआरे बणे सौकण, सौकण मौहरा गल लटकांयदा। हथ्थ फड़ाए कल धौंसण, नगारा राह वखांयदा। पहलो काया अन्दर देणा चौकड़, पोच पाचा आप करांयदा। नाम बहारी देवे बौकर, जूठा झूठा कूड़ा आप हुंझांयदा। घर खिच ल्याए भुल्लया छोकर, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। ना कोई विच पाए रुकड़, ना कोई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति इक्क समझांयदा। गुरमति हरिजन लए जाण, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। बचन करे फिर परवान, आपणे लेखे लए लगाईआ। जिस जन अन्दर माण अभिमान, लोक लाज वेख वखाईआ। फुरना जाणे जाणी जाण, फुरने अन्दर आप समाईआ। सो माता ना होए जगत अञ्याण, जिस भुल्लया बिन बालक खाली गोद वखाईआ। दूजा ना कोई विचोला बणे विच जहान, हरि शब्द विचोला इक्क रखाईआ। ए वक्त मुकर सभ जाण, ना देवे कोई गवाहीआ। हरि की संगत ना सके कोई पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मात पित वेखे रित, विछोड़ा जोड़ा आपे वेख वखाईआ। माता बैठी मार दड़, डोरी दूजे हथ्थ फड़ाईआ। कवण लगाए उखड़ी जड़, कवण देवे घर मिलाईआ। पहलों गुर का शब्द जाए पढ़, दर दूजे वज्जे सच वधाईआ। तीजे फड़ाए आपणा लड़, चौथे पुत्तर मेल मिलाईआ। बीज बीजे आपणे वत्तर, आपणी काया फल लगाईआ। दूजे अग्गे ना रक्खे सथ्थर, जिस मिल्या धुर दरगाहीआ। नेत्र नैण ना वरोले अथ्थर, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। जो माता मन करके बैठी पत्थर, कवण पूत गोद उठाईआ। कलिजुग विचोला कोई ना पढ़े एका अक्खर, एकँकारा ना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, नरायण गढ़ रिहा समझाईआ। नरायण गढ़ सच महल्ला, हरि साचे आप सुहाया। काला बाग उप्पर थल्ला, अद्धविचकार आप रखाया। गुर गोबिन्द गुर दुआर एका मल्ला, एका डेरा लाया। साढे सत्त घंटे बाअद उठ जाए इक्क अकल्ला, गुर पूरे हुक्म सुणाया। किसे विच ना आए वल छला, वल छल धारी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जगत तोला पहलों तोले, शब्द अक्खर हरि हरि बोले, हरिजन वस्सया सदा कोले, नेरन नेरा आप हो आया।

६०५
०८

✪ २७ जेठ २०१६ बिक्रमी भोला राम दे घर पिण्ड जौड़ीआं ज़िला जम्मू ✪

धृग संसार जीवना, बिन हरि नाम प्यार। गुर सतिगुर चरनी थीवना, देवणहारा नाम अधार। साचा प्याला एका पीवणा, भरया नाम जाम करतार। बीज अमृत सच्चा बीवना, फल लग्गे अपर अपार। तन पाटा आपणा सीवणा, नाम तागा गंढुणहार। मन आपणा करना नीवणा, निउँ निउँ हरी दुआर निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे सच विहार। बिन हरि नामे भुल्लया, मूर्ख मुग्ध अञ्याण। लोकमात फिरे रुलया, जूठा झूठा पीण खाण। साचे तोल किसे ना तुल्या, दर घर साचे ना होए परवान। सच भण्डारा एका खुल्या, खोल्णहारा श्री भगवान। देवे नाम एका अनमुलया, जो जन मंगे दानी दान। भाग लगाए साची कुलया, कुलवन्ता विच जहान। कलिजुग अन्धेर एका झुलया, जीव जन्त सर्ब कुरलान। सोहँ शब्द जो जन गाए आपणे बुल्लया, लक्ख चुरासी फंद कटान। काया बूटा किसे ना हुल्लया, जिस रसना गाया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। अमृत आत्म मूल ना डुल्लया, कँवल नाभी आप भुआन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमान। हरि फ़रमाना धुर दी बाण, हरिभगतां आप जणाईआ। एका नेत्र नाम निधान, निरवैर झोली पाईआ। किरपा करे वाली दो जहान, दोए दोए मन्दिर वेख वखाईआ। मेटणहारा झूठ दुकान, सच समग्री इक्क वखाईआ। एका दाता गुण निधान, गहर गम्भीर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नामे वणज कराईआ। वणज वापारा हरि हरि नाम, हरि सज्जण आप करांयदा। नगर खेड़ा सच ग्राम, थिर घर वासी इक्क वखांयदा। ना कोई सुबाह ना कोई शाम, सूरज चन्द ना कोई चढ़ांयदा। पंज तत्त ना दीसे चाम, रक्त बूंद ना कोई अख्वांयदा। जिस जन प्याए आपणा जाम, तिस जन आपणा घर वखांयदा। निरगुण बैठा साचा राम, सच सिँघासण आसण लांयदा। भुक्ख तृष्ना ना कोई ताम, आलस निन्दरा ना कोई जणांयदा। ना कोई माया ममता दाम, सोना रुपा ना कोई उठांयदा। जन भगतां आदि जुगादी करे काम, लोकमात फेरी पांयदा। पल्ले बन्ने एका नाम, आपणी हथ्थीं गंढु दुवांयदा। दस्म दुआरी करे खाम, आपे बन्द लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, बिन हरि नामे लेखा कोए ना लांयदा। बिन हरि नाम ना कोई लेखा, दर घर साचे मिले ना ढोईआ। ना कोई माण रखाए धारी केसा, मूंड मुंडाए ना करे रसाईआ। जिस जन लिखे आपे रेखा, मस्तक मेखा आप लगाईआ। नाम जपाए दस दस्मेसा, वाह वाह गुरू वड्डी वड्याईआ। राम नाम नर नरेसा, निरगुण आपणे घर सुहाईआ। अकल कला कल धारी वेसा, कलिजुग रूप वटाईआ। राह तक्कण ब्रह्मा विष्न महेषा, शिव शंकर नैण उठाईआ। गुरमुख हिरदे होए प्रवेशा, आप

आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरे सद आदेसा, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नाम दए वड्याईआ। हरि का नाम धीरज धरवास, धरत धवल रखांयदा। बिन हरि नामे ना दिसे कोई स्वास, हरिजन भगती भगत लगांयदा। काया मन्दिर मण्डल मंडप पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आप वखांयदा। साचे मन्दिर साहो शाबास, निरगुण सतिगुर डेरा लांयदा। डूँघी कन्दर पावे रास, साची गोपी काहन नचांयदा। आपे करे आपणा वास, शब्द अनादी आपणा आपे गांयदा। आपे आपणा कर प्रकाश, दीवा बाती आप जगांयदा। जन भगतां होए दासी दास, लोकमाती राह तकांयदा। कलिजुग अन्तिम पूरी करे आस, जो जन रसना जेहवा गांयदा। जिस जन लग्गी दरस प्यास, दे दरस तृखा बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नाम मन्त्र इक्क रखांयदा। हरि का नाम साचा मन्त्र, हरिजन हरि लिव लाईआ। त्रैगुण माया बुझे बसन्तर, पंचम चोर ना करे लड़ाईआ। जिस जन बणाए साची बणतर, घोरी रैण अन्धेरी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नाम सिख्या साची बूझ, गुरमुखां आप बुझांयदा। लहिणा देणा चुक्के एका दूज, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। नेत्र नैण वेखे तीज, हरि लोचण आपणा आप खुल्लांयदा। चौथे घर आपे सीझ, तन मन हरया आप वखांयदा। पंचम मीता जन भगतां करे आपे रीझ, शृंगारा नाम करांयदा। आदि जुगादी बीजे बीज, आपणी हथ्थीं आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, नाम निधाना एका गुण वखांयदा। नाम निधान हरि हरि धार, हरिजन विच टिकाईआ। वेख वखाए नर नार, नर नरायण जो रहे गाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला करे कराए सच प्यार, साचा मेला मेल मिलाईआ। गुरू गुर चेला सोहे इक्क दुआर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। सज्जण सुहेला हरि निरँकार, डुब्बदे पाथर लए तराईआ। नाम खण्डा तेज कटार, गुरसिख काया गात्रे आप लटकाईआ। राम नाम मारे मार, जगत विकारा मेट मिटाईआ। इक्क वसाए सच ग्राम, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जिस जन बख्शे साचा नाम, हँ ब्रह्म रूप अख्वाईआ। सोहँ पीणा साचा जाम, चेत चेत सहिज सुख पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लड़ अग्गे खड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जन भगतां आप फड़ाईआ।

✪ २७ जेठ २०१६ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे घर जम्मू ✪

सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, इक्क अकल्ला एकउँकारया। जोती नूर श्री भगवान, अबिनाशी करता नाउँ धरा रिहा।

आदि निरँजण खेल महान, पारब्रह्म रूप समा रिहा। थिर घर वसे सच मकान, बंक दुआरा आप उपा ल्या। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान, सच सिँघासण आसण ला ल्या। आपे देवणहारा आपणा दान, आपणी झोली आप भरा ल्या। आपे देवे धुर फ़रमान, आप आपणा शब्द सुणा ल्या। आपे वेखे दो जहान, आप आपणी कल वरता ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा इक्क अख्वा रिहा। सतिगुर साचा हरि भगवन्त, अकल कला अख्वाईआ। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे बणाए आपणी बणत, ना मरे ना जाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहंत, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सच सिँघासण नारी कन्त, कन्त कन्तूहला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा नाउँ रखाईआ। सतिगुर साचा हरि निरँकार, आदि जुगादि अख्वाया। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा नाउँ रखाया। आपे पावे आपणी सार, आप आपणा मेल मिलाया। आपे बन्ने आपणी धार, धार धारा विच्चों कढाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त नाउँ धराया। अलक्ख निरँजण बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा वेस वटाया। सतिगुर साचा सच महल्ला, निरगुण आपणा आप उपाईआ। पुरख अकाल वस्सया इक्क अकल्ला, जूनी रहित वड्डी वड्याईआ। आपणे दीपक आपे बला, आपणे नूर करे रुशनाईआ। आपणे प्रकाश आपे रला, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। आपणा सिँघासण आपे मल्ला, शाह शाबासन वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा नाउँ रखाईआ। सति सतिगुर सच्चा नाउँ रक्ख, हरि आपणा नाउँ रखाया। आप आपणा कर प्रतक्ख, आप आपणा रूप वटाया। आपणा लेखा आपे लिख, लिखणहारा आप हो जाया। आपणी सिख्या आपे सिख, आपणी विद्या आप पढ़ाया। आपणी मंगे आपे भिख, आपणी झोली अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाया। सतिगुर सच्चा हरि भगवान, हरि साचे जोत जगाईआ। एका वसे सच मकान, उच्च महल्ल अटल आप उपाईआ। आपे होया नौजवान, बिरध बाल ना वेस वटाईआ। आपे खेले खेल महान, खेल खेलंता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा हरि रघुराईआ। सतिगुर सच्चा सच्चा दाता, हरि साचे वड वड्याईआ। आपणी रक्खे उत्तम ज़ाता, वरन बरन ना कोए बणाईआ। बैठा रहे इक्क अकांता, इक्क अकल्ला जोत रुशनाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, ना कोई सूरज चन्न चढ़ाईआ। ना कोई मण्डप माढ़ी वेखे बहु बिध भांता, गगन मण्डल ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा घर साचा वेख वखाईआ। साचा हरि दरवाज़ा, आपणा आप खुल्ह्यंदा। परम

पुरख प्रभ ग़रीब निवाज़ा, निरगुण निरगुण जोत जगांयदा। आपणी रक्खी आपे लाजा, आपणा पर्दा आपे पांयदा। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजा, शब्द अनादी सुत्त उपजांयदा। एका अस्व रक्खया ताजा, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं रचया काजा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा। लक्ख चुरासी साजन साजा, त्रैगुण माया बंधन पांयदा। पंचम मेला पंचम राजा, पंचम रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा हरि मेहरवान, धुर दरबान इक्क अख्वांयदा। सतिगुर सच्चा शहिनशाह, पारब्रह्म बेअन्त। आपणा बणे आप मलाह, आप बणाए आपणी बणत। ब्रह्मा विष्न शिव लए उपा, आपे नारी आपे कन्त। आपे सेजा रिहा हंढा, आपे चाढ़े रंग बसन्त। आपे लक्ख चुरासी लए उपा, आपे देवे जोत निरंत। आपे मन मति बुध विच टिका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जुगा जुगन्त। सतिगुर पूरा जागरत जोत, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, चक्र चिहन ना कोए वखाईआ। रूप अनूपा कोटी कोटि, घड़ भाण्डे साज धराईआ। शब्द अगम्मी लाए चोट, धुन आत्मक आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा साचा मार्ग इक्क वखाईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, आदि निरँजण रूप वटांयदा। संग रखाए काल महांकाल, आप आपणे लाल उठांयदा। लक्ख चुरासी करे प्रितपाल, प्रितपालक आप हो जांयदा। आपे बणे शब्द दलाल, गुर गुर वेस धरांयदा। लक्ख चुरासी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। आपणी घालन आपे घाल, आपणी सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा देवे वर, शब्द गुर इक्क उपजांयदा। शब्द गुर सूरबीर बलकारा, हरि सतिगुर आप उपजांयदा। निरगुण सरगुण कर प्यारा, पंज तत्त मेल मिलांयदा। दीपक जोती कर उज्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म जणांयदा। एका मन्दिर खेल न्यारा, घर घर विच सोभा पांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अलक्ख अलक्खणा लेख लिखांयदा। वरते वरतावे विच संसारा, करनी करता नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा साचा कर्म कमांयदा। सतिगुर सच्चा साख्यात, हरि साचे सच वड्याईआ। गुर मन्त्र देवे नाम दात, पंज तत्त करे कुड़माईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्न चढ़ाईआ। अमृत आत्म बूंद स्वांत, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर सच्चा मेहरवान, गुर गुर वेस कराईआ। हरि सतिगुर साची सिख्या, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर मंगी एका भिख्या, हरि नामा झोली पाया। धुर मस्तक आपे लिख्या, गुरमुख साचे लए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेस वटाया। सतिगुर सच्चा देवणहार, एका नाम भण्डारया। गुर गुर लए मात अवतार, जग खेल अपारया। भगतन मीता ख़बरदार,

गुरमुख सोए मात उठा रिहा। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती नाता आप जुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकउँकार अकल कल धार आपणी कल वरता रिहा। सतिगुर साचा इक्क अकल्ला, एका रंग रंगाईआ। गुर गुर वसाए सच महल्ला, लोकमात वज्जे वधाईआ। वसणहारा जलां थलां, गुरमुख साचे लए जगाईआ। गुरमुख आत्म सच सिँघासण एका मल्ला, आप आपणी सेज विछाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुगा जुगन्त हरि भगवन्त वड्डी वड्याईआ। भगतन मीता पुरख अबिनाशा, जन भगतां खेल खिलांयदा। गुर गुर वेखे जगत तमासा, आप आपणा मार्ग लांयदा। गुरमुखां अन्दर पावे रासा, गोपी काहन आप नचांयदा। गुरसिख गाए स्वास स्वासा, रसना जेहवा गुण वखांयदा। पूरन करे जुग जुग आसा, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप सति सरूप आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा शाह सुल्तान, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुर मन्त्र देवे इक्क ज्ञान, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। जीव जन्त सभ रसना गान, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, दे मति आप समझाईआ। एका दूजा भेव मिटाण, तीजे लोइण करे रुशनाईआ। चौथे पद मेल श्री भगवान, हरि मेला सहिज सुभाईआ। छेवें छप्पर ना कोई मकान, सत्तवें सति पुरख निरँजण बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग सतिगुर पूरा आप हो जाईआ। सतिगुर पूरा जीअ दाता, दयावान अख्वांयदा। गुर गुर सुणाए साची गाथा, हरि का नाम मन्त्र अलांयदा। गुरमुखां लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब झोली पांयदा। गुरसिख चढ़ाए साचे राथा, रथ रथवाही आप हो जांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथा, त्रैलोकां वेख वखांयदा। चौदां लोकां एका हाटा, एका वणज करांयदा। एका वस्त एका खाटा, एका आसण लांयदा। एका जोती नूर लिलाटा, एका डगमगांयदा। एका अमृत मारे ठाठा, सर सरोवर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आप आपणी खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा दीना बंधन, नाथ अनाथां लए उठाईआ। गुर गुर देवे परमानंदन, परम पुरख मिलाईआ। गुरमुखां मस्तक लाए चन्दन, धूढ़ी टिक्का इक्क छुहाईआ। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाला बंधन, माया ममता मोह चुकाईआ। नाम सुणाए सुहागी छन्दन, पंचम सखीआं मिल मिल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर दाता सचखण्ड, साचा थान सुहांयदा। गुर गुर नाम देवे वंड, आपणी वंड वंडांयदा। गुरमुख अन्तर पाए ठंड, सांतक सति करांयदा। गुरमुखां पल्ले बन्ने नाम गंढ, चोर यार लुट्ट कोई ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, जुग करता आप अख्वांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, परम पुरख सुल्तानया। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि पावे सारा, कलिजुग खेले खेल महानया। आपे राम कृष्ना लए अवतारा, निरगुण जोती जोत जोत जगानया। आपे वेद व्यासा बण लिखारा, पुराणी पुराण आप अख्वानया। गीता ज्ञान दए अधारा, तीर निशाना मारे बाणया। आपे ईसा मूसा कर वणजारा, अञ्जील कुरान करे प्रधानया। आपे मेला संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी आप प्रनानया। आपे कलमा रसूल कायनात लाए नाअरा, आप आपणा खेल खिलानया। आपे निरगुण नानक बन्ने धारा, नाम सति मन्त्र इक्क दृढ़ानया। आपे जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बलवानया। आपे अर्जन पंचम बण लिखारा, आप आपणा भेव खुलानया। आपे वसे सभ तों बाहरा, भेव कोए ना पानया। आदि जुगादी एकँकारा, अकल कला अख्वानया। लक्ख चुरासी पावे सारा, देवे धुर फ़रमानया। ब्रह्मा विष्न शिव कोटन कोटि खड़े रहिण दुआरा, निउँ निउँ सीस झुकानया। करोड़ तेतीसा बणे भिखारा, सुरपति राजा इन्द नाल मिलानया। राए धर्म मारे नाअरा, नेत्र नैणां नीर वहानया। चित्रगुप्त ढहि पए दुआरा, आपणा लेखा आप वखानया। धरत मात रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धरानया। शाह सुल्तान होए गंवारा, साचा धर्म ना कोई वखानया। चार वरन नार विभचारा, साचा कन्त ना कोई हंढानया। मनमति लोकमात होई अवारा, दहि दिशा फेरी पानया। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यानया। थिर घर बैठा सच दुआरा, जोती जोत डगमगानया। शब्दी शब्द लए अवतारा, जोद्धा सूरबीर आप हो जानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वरते आपणे भाणया। सतिगुर सच्चे साचा भाणा, आपणे हत्थ रखाया। ना कोई जाणे राजा राणा, शाह सुल्तान भेव ना पाया। गुरमुख विरले दर आपणे देवे माणा, मनमुख गूढ़ी नींद सुआया। जूठा झूठा तणया ताणा, पंच विकारा जाल लगाया। साध सन्त माया ममता लोभ हलकाना, काम क्रोध संग रखाया। किसे मन्दिर अन्दर वज्जे ना राग तराना, अनहद ताल ना कोए सुणाया। पंज तत्त मुनारा दिसे सुंञ मसाणा, हरि का रूप ना कोई दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा वेस आप कराया। साचा वेस हरि बनवारी, सतिगुर पुरख करांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारी, आपणी कल वरतांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, सरगुण वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारी, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फोलांयदा। जेरज अंडां रिहा ललकारी, उत्भुज सेत्ज आप उठांयदा। राज राजानां करे खुआरी, शाह सुल्तानां ख़ाक रलांयदा। लहिणा देणा चुक्के पंज तत्त हँकारी, नाम खण्डा हत्थ उठांयदा। जूठ झूठ रिहा मारी, वहिंदी धारी आप रुढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम नाता तुटे यारी, चार यार संग मुहम्मद कोए ना नाल रखांयदा। अञ्जील कुराना

करे पुकारी, बहि बहि मता पकांयदा। अन्तिम कलिजुग आई वारी, ना कोई संग रखांयदा। अल्ला राणी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारी, मुख पल्लू आपे लांहयदा। नानक गोबिन्द बण लिखारी, कलिजुग लेखा लेख चुकांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारी, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आवे जावे वारो वारी, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारी, ब्रह्मण्डां नाम चमकांयदा। मनमुख जीआं जाए मारी, तिक्खी दोवें धार वखांयदा। गुरमुख साजण जाए तारी, फड़ बांहों गल लगांयदा। एका देवे नाम ख़ुमारी, राम नाम झोली पांयदा। मोहण मुकट नर नरायण मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण, नेत्र नैण इक्क खुलांयदा। राम रामा हरि अवतारी, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लांयदा। नानक निरगुण निरगुण धारी, त्रैगुण बंधन कोए ना पांयदा। गुर गोबिन्द शाह सवारी, नीला नीली धारों पार करांयदा। लोकमात वेखे वड संसारी, समुंद सागर फोल फोलांयदा। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, सतिगुर पूरा फोल फोलांयदा। जन भगतां फिरे पिच्छे अगाड़ी, जुग जुग सेव कमांयदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ी, जोत निरँजण आप जगांयदा। साचे मन्दिर जाए वाड़ी, कबीर कबीरा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति गुर पूरा देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। गुर मन्त्र देवे नाम अंजन, नाम सति वड्डी वड्याईआ। चरन धूढ़ जन साचा मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। धुर दरगाही साचा सज्जण, लोकमात फेरा पाईआ। जन भगतां आए पर्दा कज्जण, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। शब्द अनादी ताल घर साचे वज्जण, ताल तलवाड़ा इक्क वखाईआ। गढ़ हँकारी, भाण्डे भज्जण, जो जन आए सरनाईआ। आपे रक्खणहारा लज्जण, वेले अन्त दए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, जोती नूरा नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर निहकलंक, निरगुण आप अख्वाया। आप वजाए आपणा डंक, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। वेख वखाए राउ रंक, ऊँचां नीचां आप समाया। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाया। खेले खेल बार अनक, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। प्रगट होया वासी पुरी घनक, घर मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा बंधन पाया। सतिगुर पूरा बन्दी छोड़, बन्दी बन्द कटांयदा। गुर गुर लगाए निभे तोड़, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। गुरमुख चढ़े साचे घोड़, दरगाह साची आप वखांयदा। आदि अन्त जाए बौहड़, आप आपणा बिरध धरांयदा। जिस जन अन्तर लग्गी औड़, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। लक्ख चुरासी वेखे फल मिठ्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखांयदा। दो जहानां रिहा दौड़, आप आपणा पन्ध

मुकांयदा। आपे जाणे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लांयदा। आपे लाए आपणा पौड़, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धार जोत निरँकार आपणी आप आप उपजांयदा। निहकलंक हरि का नाउँ, ना मरे ना जाया। एका वसे सच ग्राउँ, नेहचल धाम सुहाया। ना कोई पिता ना कोई माउँ, बालक गोद ना किसे उठाया। ना कोई देवे ठंडी छाउँ, सिर हथ्थ ना किसे टिकाया। ना कोई करे बैठ न्याउँ, इक्क अकल्ला आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निहकलंक इक्क अकल्ला, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। आपे होए अछल अछल्ला, अछल अछल्ल आप करांयदा। आपणी जोती आपे रला, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, कलिजुग खेल खिलांयदा। बोलणहारा अन्तिम हल्ला, लक्ख चुरासी आप जगांयदा। बिन हरिभगत ना फड़े कोई पल्ला, खाली हथ्थ सर्ब फिरांयदा। किसे फल ना दिसे डाल्ला, सिम्मल रुख लहरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ रखांयदा। नाउँ निरँकार आप अलाह, अलाही नूर अख्वाया। आपणा सजदा आप करा, आपे सीस झुकाया। आपणा कलमा आप पढ़ा, मुकामे हक्क आप मिलाया। शरअ शरीअत आप जणा, लाशरीक आप ख़ुदाया। हक्क हकीकत वेख वखा, ख़ालक ख़लक दए हिलाया। कलिजुग तारीक इक्क लिखा, लेखा दए मुकाया। चौदां तबकां फोल फुला, सद चौदां पार कराया। एका डंका रिहा वज्जा, भुल्ल रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराकार निरँकार निरवैर आप हो जाया। निरआकार अकाल मूर्त, जूनी रहित अख्वाईआ। सति सरूप साची सूरत, सति पुरख निरँजण आप वखाईआ। शब्द अगम्मा नाद तूरत, निरँकार आप वजाईआ। आप सुणाए नेड़े दूरत, दो जहानां वेख वखाईआ। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन धूढ़त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, माया ममता मोह चुकाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़त, उतर कदे ना जाईआ। मनमुख मनमुख जीव रहे झूरत, मुख निन्दक रसना काग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, एकँकारा आप अख्वाईआ। सतिगुर सरनाई साची ओट, घर सज्जण सच्चा पाया। उतरे पाप कोटी कोटि, जिस जन आपणे गले लगाया। जगत विकारा कढ्ढे खोट, सच सच नाम दृढ़ाया। निरगुण जगाई निरगुण जोत, जोती जोत करे रुशनाया। अनहद लगाई साची चोट, साचा राग आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकँकारा रूप वटाया।

पंज तत्त तन शरीर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाया। पंज तत्त मारे तीर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। पंज शब्द बन्ने धीर, साचे मन्दिर अन्दर आप सुणाया। पंजां कढ्ढे हउमे पीड़, अग्नी तत्त बुझाया। पंजां चोटी चाढ़े अख़ीर, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाया। आपणी हथ्थीं देवे सीर, अमृत आत्म जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, चिन्ता सोग दए मिटाया। चिन्ता सोग मिटे दुःख, लथ्थे सगल विसूरा। सतिगुर मेला साचा सुख, मानस जन्म ना रहे अधूरा। उज्जल होए मात मुक्ख, आसा मनसा हरि हरि पूरा। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा। उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, नाता छुट्टे कूड़ो कूड़ा। लहिणा देणा चुक्के मानस मनुख, जिस मिल्या हरि सज्जण सतिगुर पूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जिन देवे आपणा नाम वर, मन्दिर अन्दर अन्दर मन्दिर जोत जगाए नूरो नूरा। नूर नुरानी जोत अकाली, अकल कला कल धारीआ। लक्ख चुरासी वसे नाली, गुरमुख विरले चढ़ी लाली, जिस मेला शाह सवारीआ। आपे होया जाण जाणी, जानणहार आप अख्वा रिहा। गुरमुख उठाए अञ्याणी बाली, आप आपणी गोद बहा रिहा। शब्द सुणाए अकथ कहाणी, समरथ पुरख आप गा रिहा। हरिजन बणे साची राणी, सतिगुर कन्त मेल मिला रिहा। अमृत देवे ठंडा पाणी, निझर धारा मुख चुआ ल्या। अजपा जाप एका बाणी, आपणा नाम पढ़ा ल्या। साचे दर कर परवानी, जगत सैंहसा रोग मिटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, दर आया लेखे ला ल्या। लेखे लेखा गया लग्ग, हरि सतिगुर आप लगाया। हँस हँस बणाया कग्ग, कागों हँस रूप वटाया। दुरमति मैल धोवे दाग़, निर्मल अमृत नीर वहाया। साचा दीपक जाए जग, जगत अन्धेरा वक्ख रहिण ना पाया। मिल्या मेल सूरा सरबग्ग, तृष्ना अग्ग दए बुझाया। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, सो सतिगुर पूरा आप हो जाया। गुरसिख हीरे लाल अमोलक मोती नग, आप आपणी रंगण लए चढ़ाया। सचखण्ड दुआरे दए रक्ख, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाया। कलिजुग चार कुन्ट दहि दिशा लौंदे भक्ख, जगत विकारा लम्बू लाया। जुग जुग सन्त भगत भगवन्त आपणे लए रक्ख, दूता दुष्टां मेट मिटाया। बिन हरि सरनाई मानस जन्म भट्ठ, लेखा लेखे कोई ना लाया। चरन धूढ़ गुर तीर्थ अठसठ, मजण माघ इक्क कराया। जो उपजे सो जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। प्रभ गेड़नहारा उलटी लट्ठ, कलिजुग वेला अन्तिम आया। गुरसिख उठाए नठ्ठ नठ्ठ, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ज़ात पात ना कोई रखाया। एका देवे साची मति, एका दूजा भउ मिटाया। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, अग्नी तत्त ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म बीज बीजे साचे वत, अमृत मेवा फल खवाया। दुःख रोग उतरे

संताप, पूत सपूता वेख वखाईआ। रसना गाउणा सोहँ जाप, जुग जुग आप जणाईआ। लोकमात होए वड प्रताप, फुल फल दए महिकाईआ। दरस दिखाए आपणा आप, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपे होए माई बाप, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रोग सोग देवे कट्ट, जो जन रसना जेहवा जेहवा रसना हरि गुण गाईआ।

हरि नाम वस्त सच रास, गुर सतिगुर हथ्थ रखाईआ। हरिजन मेल मिलाए शाहो शबाश, निरगुण निर्धन दया कमाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंगे रंग हरि भगवान, नाम रंगण चलूलया। एका देवे धुर फ़रमान, शब्द शब्दी नाम अनमोल्लया। मेल मिलाए दो जहान, आपणे कंडे आपे तोल्लया। सखा सखाई जाणी जाण, घट मन्दिर बहि बहि बोल्लया। शब्द जणाई धुर फ़रमान, आप सुणाए साचा ढोल्लया। गुरमुख गाए चतुर सुजान, मनमुख सुत्ता रहे अनभोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन काया आपे मौलया। काया अन्दर जाए मौल, आप आपणी दया कमाईआ। अमृत देवे साची पौहल, एका जाम प्याईआ। उलटा करे नाभ कँवल, कँवला आप भवाईआ। जग वड्याई उप्पर धवल, धरनी धरत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बख्शे सच सरनाईआ। सरनगत हरि सज्जण मीत, सोहे बंक दुआरा। एका नाम वसाए चीत, मेल मिलाए एकँकारा। सदा सुहागी साचा गीत, रसना हरि हरि जैकारा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, गुरमुख साजण उतरे पारा। देवे नाम शब्द अनडीठ, वेख वखाए गुप्त ज़ाहरा। सदा सुहेला वसे चीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे चरन प्यारा। चरन प्यारा साचा संग, हरिजन आप निभाईआ। अंगी कार लाए अंग, आप आपणी गोद उठाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एका वज्जे सच मृदंग, हरि साचा सच वजाईआ। साची सेजा हरि पलँघ, शब्द सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नाम अनमुल्ल अनडीठड़ा, गुरमुख रिदे विचार। हरि सतिगुर साचा मीतड़ा, अमृत साची धार। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, जुग जुग वरते विच संसार। साचा गुरुदुआर मन्दिर मसीतड़ा, गुरमुख काया महल्ल अपार। नौ दर रस दिसे फीकड़ा, दसवें मेला हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण पाए सार। सज्जण सोया जागया, घर साचे वज्जी वधाईआ। सतिगुर पाया वड वड भागया, उज्जल मुख

६१५ ०८

कराईआ। हँस बणया कागया, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। वर पाया राजन राज्जया, शाहो भूप सहिज सुखदाईआ। घर मंगल रचया काज्जया, गुण गावत ख़ुशी मनाईआ। चढ़या नाम सच जहाज्जया, सतिगुर बेड़ा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग रिहा वखाईआ। एका मार्ग सच सलाह, पुरख अकाल ध्यावणा। पुरख अबिनाशी विच मलाह, चप्पू नाम लगावणा। बेऐब ख़ुदाई बेपरवाह, कलमा सच पढ़ावणा। वाह वाह गुरू आप अख्वा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ावणा। सतिनाम हरि सति वरता, सति सतिवादी वेस वटावणा। हउमे हँगता गढ़ दए तुड़ा, माया ममता मोह चुकावणा। साची संगता मेल मिला, गुरमुख बूझ बुझावणा। गुरमुख खेड़ा दए वसा, मन्दिर अन्दर डेरा लावणा। दीवा बत्ती इक्क जगा, निर्मल नूर नूर रुशनावणा। कमलापाती मेल मिला, साची सेज सुहावणा। आपणी आरती ल्ए करा, गगन मण्डल वेख वखावणा। सो दर साचा ल्ए सुहा, सो घर आप बणावणा। राग अनादी एका गा, गुणवन्ता गुण ध्यावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां आपे होए साक सज्जण सैणा। सज्जण सच्चा पातशाह, सतिगुर पुरख सुल्तान। हरिजन जपाए आपणा नाँ, देवे धुर फ़ुरमाण। लोकमात पकड़े बांह, चुक्के जम की कान। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दर घर साचे कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां होए सदा निगहबान।

✪ २८ जेठ २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर बटाले ✪

काया गागर अमृत नीर, हरि हरि आप भराईआ। किसे हथ्थ ना आए पीर फकीर, साध सन्त रहे कुरलाईआ। जिस जन मारे आपणा तीर, नाम उछाला दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा सिरजणहार, आदि अन्त श्री भगवानया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, दो जहानां देवे माणया। लक्ख चुरासी गई हार, बिन सतिगुर पूरे कोए ना पार करानया। पंज विकारा डुब्बे अद्धविचकार, नाम वञ्झ महाणा ना कोई लगानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका चरन ध्यानया। चरन ध्यान सतिगुर मीत, हरिजन हरि समझांयदा। अबिनाशी करता पतित पुनीत, पतित पावण आप तरांयदा। साचा मन्दिर गुरुदुआरा देहुरा मसीत, काया कंचन गढ़ सुहांयदा। आपे वसणहारा चीत, घर मन्दिर फेरी पांयदा। आदि जुगादि अवल्लड़ी रीत, जुग जुग मात धरांयदा। जन भगतां देवे नाम अनडीठ, अनडिठड़े धाम सुहांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आप आपणा मुख भवांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां एका राह वखांयदा। एका राह पुरख सुल्तान, निरगुण धार विच समाईआ। भगत वछल श्री भगवान, जन शब्दी मेल मिलाईआ। जगत विचोला हरि मेहरवान, एका ढोला साचा गाईआ। बणया तोला गुण निधान, निरगुण सरगुण तोल तुलाईआ। बदलया चोला खेल महान, पर्दा उहला आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहारा पुरख समरथ अकल कला अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर चलाए रथ, आप आपणी सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, शब्द डोरी तन्द बंधांयदा। त्रैगुण माया पाए भट्ठ, पंजां तत्तां मेट मिटांयदा। लेखा चुकाए तीर्थ अठसठ, तट किनारा फोल फुलांयदा। पावे सार चौदां हट्ट, चौदां तबका पर्दा लांहयदा। वसणहारा घट घट, आप आपणी खेल खिलांयदा। कलिजुग खेल अन्तिम बाज़ीगर नट, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द नगारे मारे सट्ट, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। जन भगतां दुरमति मैल देवे कट्ट, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। मनमुखां लाए एका फट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। दूई द्वैती अग्नी अग्ग, पंज तत्त रही जलाईआ। कलिजुग जीव रहे दग, चारों कुन्ट रहे कुरलाईआ। एका वाअ रही वग, ना सके कोई मिटाईआ। सतिगुर पूरा हरि सरबग्ग, एक एकँकारा नाउँ धराईआ। जन भगतां बन्ने नाम तग, हथ्थीं गाना आप उठाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कग, सोहँ साची चोग चुगाईआ। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, आप आपणा दर सुहाईआ। कौस्तक मणीआ साचा नग, जोत निरँजण लिलाट वखाईआ। अनहद ताल जाए वज्ज, पंचम तलवाड़ा आप वजाईआ। आत्म सेजा बहि सज, अमृत धारा मुख चुआईआ। सुरत सुवाणी कराए साचा हज्ज, काया काअबा इक्क सुहाईआ। पतिपरमेश्वर जोती नूर अलाही आपे रब्ब, रहीम रहिमान आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा पद, आपणी सोभा आप गणाईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, वेद कतेब ना कोई लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, घर सज्जण मेल मिलाईआ। घर मेला शौह पाया, आत्म रंग चलूल। निमाणी नढड़ी गले लगाया, कन्त कन्तूहल ना जाए भूल। साची सेजा फूलन बरखा बरसाया, आप चुकाए आपणा मूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सन्त ना जाए भूल। घर सुहञ्जणा हरि बनवारी, गुरमुख नारी कन्त प्रनाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यारी, घर मन्दिर दीवा बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। सुरत सवाणी साची लाड़ी, उत्तम होई जाति पाया वर पुरख बिधाती, ना मरे ना जाईआ। प्रकाश प्रकाश नाड़ नाड़ी, सच महल्ले देवे वाड़ी, उच्च अटले पिछे अगाड़ी, आप आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। अमृत आत्म रस

साचे मुक्ख, निरगुण सरगुण आप चुआया। आप उतारे तृष्ना भुक्ख, त्रै त्रै बंधन तोड़ तुड़ाया। सुफ़ल कराए साची कुक्ख, जन जननी जन जाया। आपे बैठा अन्दर लुक, आपे मुखड़ा दए वखाया। गुरमुखां भार रिहा चुक्क, सिर आपणे आप उठाया। मनमुखां ख़ाक पाए बुक्क, छार संसार रिहा उडाया। हरि का भाणा ना जाए रुक, हरे बूटे जाण सुक्क, सुक्के हरे ना कोई कराया। गुरमुखां देवे अन्तर आत्म एका सुख, हरि मन्दिर हरि हरि मेल मिलाया। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, आलस निन्दरा विच ना आया। जन भगत प्यार अग्गे जाए झुक, दूसर सके ना कोई निवाया। अन्तिम आपणी गोदी लए चुक्क, सति पुरख निरँजण सेव कमाया। मात गर्भ ना उलटा रुख, कलिजुग अन्तिम जिस जन नर हरि दर्शन पाया। शेर शेर निराला हरि जी रिहा बुक, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणी ढक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले आपणे घर, घर सुहञ्जणा दीवा बाती इक्क निरँजणा, मेल मिलाए दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी काया गागर आपणा अमृत नाम सच सरोवर इक्क वखाया।

हँस उडया मार उडारी, छुटयां जगत सरीर। हरि दर्शन पाया अन्तिम वारी, चोटी चढ़या अख़ीर। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कारी, गुरसिख तेरी सतिगुर बन्ने बीड़। नित नवित्त हित करे निरँकारी, जन भगतां तोड़े लोकमात चुरासी ज़ंजीर। पिता पूत दए सिक्दारी, आवण जावण कट्टे भीड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, मानस जन्म ना जाए हर, लेखे लग्गे काया धरत सरीर।

✪ पहली हाढ़ २०१६ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

सतिगुर पुरख दयाल, पारब्रह्म अबिनास्सया। जोती जल्वा नूर जलाल, निरगुण नूर नूर प्रकास्सया। आदि निरँजण गुर गोपाल, खेले खेल शाहो शाबास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रास्सया। दीन दयाल सतिगुर ठाकर, एका एक एकँकारया। गहर गम्भीर गहर गुर सागर, खेले खेल अगम्म अपारया। एका जोत जगत उजागर, आप आपणा वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल आप अख्वा रिहा। पुरख अकाल हरि निरँकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध आप हो जाईआ। खेले खेल दो जहान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक आप आपणी

कल वरताईआ। अकल कला धारी पुरख अगम्मा, एका एक अख्वांयदा। ना मरे ना कदे जम्मा, मात पित ना कोई रखांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़मा, आलस निन्दरा ना कोई रखांयदा। तृष्ना भुक्ख ना कोई तमा, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा कम्मा, करनी करता आप अख्वांयदा। आपे घड़या आपे भन्नया, भन्नणहारा भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार एकँकार, रूप अनूप शाहो भूप आप आपणा नाउँ प्रगटांयदा। नाउँ निराला हरि निरँकार, आपणा आप रखाईआ। शब्द शब्दी शब्द जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका दर इक्क दरबार, मन्दिर अन्दर इक्क सुहाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरार, घर बैठा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। आपणे रंग हरि राता, वड वड्डा वड वड्याईआ। पतिपरमेश्वर पुरख बिधाता, आदि अन्त इक्क अख्वाईआ। इक्क अकल्ला इक्क अकांता, एक एकँकारा निराकार अख्वाईआ। आदि निरँजण उत्तम जाता, जूनी रहित भेव ना राईआ। मूर्त अकाल सर्ब सुख दाता, घर साचा रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दीपक इक्क जगाईआ। निरगुण दीपक कर उजाला, हरि हरि रूप वटाया। सतिगुर पुरख पुरख अकाला, परम पुरख नाउँ धराया। आदि शक्ति जोत ज्वाला, जोती नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाया। करनहार पुरख समरथ, हरि साचे वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा रथ, आप आपणी सेव कमाईआ। आपणी कथा सुणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेलणहारा खेल खिलंदड़ा, खेले पुरख अपार। ना कोई दूजा संग रखंदड़ा, ना कोई मीत मुरार। धरत धवल धौल ना कोई सुहंदड़ा, गगन मण्डल ना कोई उज्यार। आकाश प्रकाश ना वेख वखंदड़ा, सुन अगम्म ना धूंआँधार। सति पुरख निरँजण वेस वटंदड़ा, आदि जुगादी बेऐब परवरदिगार। नूर इलाही आप अख्वंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। साचा धाम इक्क वखंदड़ा, ना कोई मन्दिर ना कोई दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि निरँकार। निराकार निराकार, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। मात पित ना कोई सुत्त दुलार, भाई भैण ना कोई रखाईआ। साध सन्त ना कोई दुआर, ब्रह्मा विष्न शिव ना सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीस ना गाए वारो वार, गण गंधर्ब ना ताल वजाईआ। गुर पीर ना कोई अवतार, रसना जेहवा ना कोई हिलाईआ। जंगल जूह ना कोई उजाड़ पहाड़, सागर समुंद ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला बैठा बेपरवाहीआ। इक्क अकल्ला आदि अन्त, अन्त आदि समाया।

खेले खेल जुगा जुगन्त, आप आपणी कल वरताया। रवि ससि बणाए बेअन्त, मण्डल मण्डप आप सहाया। आपे लक्ख चुरासी उपाए जन्त, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। आपे लक्ख चुरासी नारी नर बणे कन्त, नारी नर नरायण लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि रघुराया। खेलणहारा हरि निरँकारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आदि जुगादी इक्क वरतारा, एका गुर अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण मेल संसारा, हरि साचा वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सारा, आप आपणी कल वरताईआ। दिवस रैण दए हुलारा, मास बरस संग रखाईआ। राउ रंक इक्क दुआरा, एका घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। जुगा जुगन्तर खेलया खेल, हरि सज्जण सच्चा शाह। सतिजुग त्रेता मेलया मेल, वड दाता बेपरवाह। आपे वसे रंग नवेल, आपे निथाव्याँ दए थाँ। आपे चाढ़नहारा तेल, सगनी सगन लए मना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे सच न्याँ। द्वापर उतरया आपणे घाट, हरि साचे जोत जगाया। कलिजुग अन्तिम वेखे वाट, भेव कोई ना पाईआ। त्रैगुण माया अग्नी लाट, पंज तत्त रही जलाईआ। बुध मति विकी हाटो हट, मन हौका दए सुणाईआ। गुर के शब्द ना सुत्ता कोई खाट, नाम पलँघ ना हेठ विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रुतड़ी वेख वखाईआ। साची रुत्त चौथे जुग, कलिजुग वेख वखाया। आपणी चोग लक्ख चुरासी लई चुग, माया ममता मोह रखाया। हरि का भेव ना सके कोई बुझ, वेद पुराण रहे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा सच्ची सेव रिहा कमाया। सतिगुर सच्चा पातशाह, शहिनशाह सुल्तान। दो जहानां बण मलाह, लोकमात होए निगहबान। चार वरनां पकड़े बांह, इक्क वखाए सच निशान। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दाता दानी वड मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल दो जहान। दो जहानां हरि हरि वाली, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी तेरा पाली, प्रितपालक वड वड्याईआ। नाम शब्द इक्क दलाली, जगत वणजारा वणज कराईआ। आपे जाणे हक्क जलाली, सच सुच्च वेख वखाईआ। वेखे फल पत पत डाली, आप आपणी फेरी पाईआ। आपणे हथ्थां रक्खे खाली, गुरमुख साचे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, छे गुर छे उपदेस, छे घर आपे वेख वखाईआ। छे घर छे गुर, छप्पर छन्न छुहाया। सति पुरख निरँजण आपे तुर, तुरीआ नाद इक्क वजाया। कोई ना जाणे हरि का सुर, तान सैन ना किसे गाया। छत्ती राग ना चढ़े घोड़, बहत्तर तलवाड़ा ना किसे वजाया। दर दुआरे जायण मुड़, हरि का पन्ध ना किसे मुकाया। जोती जोत

६२१ ०८

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सेवक साची सेवा आप लगाया। साची सेवा बारां मास, तीस तीस वड्याईआ। छे रुत्तड़ी कर प्रकाश, छप्पर छन्न छुहाईआ। आपे वसे आस पास, रूप सरूप ना कोई जणाईआ। ताणा तणया पृथ्मी आकाश, नाम डोरी बंधन पाईआ। लक्ख चुरासी धरया वास, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार करे कुड़माईआ। शब्दी शब्द शब्द धरवास, ब्रह्म ब्रह्म उपजाईआ। उँणंजा पवण इक्क स्वास, एका हुक्म चलाईआ। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनाशी पुरख आप अख्वाईआ। कलिजुग खेले खेल तमाश, हरि दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। छे रुत्तड़ी वंडी वंड, रुत्ती रुत्त सुहाया। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड विच ना आया। उत्भुज सेत्ज सुत्ता दे कर कंड, आप आपणा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोती दस अवतार, हरि जी लाए आपणी कार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। बारां मास बारां बरस, बारां बारां रास बणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। ना कोई घसवटी सके परख़, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जिस जन कमाए आपणा तरस, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नानक निरगुण मेटे हरस, एका रंग रंगाईआ। आपे अर्श आपे फर्श आपे कुर्श , काअबा दए वखाईआ। आपे मेघ आपे बरस, जल धारा आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी वंडन आप वंडाईआ। पहली रुत्तड़ी वंडी वंड, वंडणहार करतारा। आपे सुहागण आपे रंड, आपे वसे सभ तों बाहरा। आपे भेख आपे पखण्ड, आपे वरते सच वरतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जाणे आपणी कारा। कलिजुग तेरी कमाई, हरि साचे सच जणाया। निरगुण जोत कर रुशनाई, नानक तत्त सजाया। एका वस्त विच टिकाई, लेखा लेख ना कोई लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाया। खेले खेल पुरख अकाला, निरगुण सरगुण विच समांयदा। दीपक जोती कर उजाला, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। पंज तत्त बण रखवाला, नाना रूप आप करांयदा । चरन दुआर काल महांकाला, आप आपणा बंधन पांयदा। साचा मन्दिर सच धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रुत्त सुहावणी रसना जेहवा किसे ना गावणी, निरगुण निरगुण आप वखांयदा। निरगुण मेला निरगुण धार, निरगुण नानक विच समाया। निरगुण इक्क एकँकार, एकउँकारा वेस वटाया। आपे शब्द आप जैकार, आपणा नाअरा आपे लाया। आपे नाम सति कर वरतार, वंडणहारा आप हो जाया। आपे धुन अनादी बण धुन्कार, अनहद साचा ताल वजाया। आपे सोई जागी करे ख़बरदार, आलस निन्दरा आप मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, साची रुत्त पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त आप आपणी वेख वखाया। पहली रुत्त कर परवान, कलिजुग दए गवाहीआ। नानक निरगुण मारे बाण, नाम सति फड़ फड़ाईआ। सरगुण खेले खेल जहान, हरि साचा आप खिलाईआ। चेत्र चित वसे भगवान, विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विसाख आप हो जाईआ। विसाख उपज्या फुल कमल, कमला आप खिलाया। पुरख अबिनाशी तोल्लया तोल, विष्नूं सेवा लाया। ब्रह्मा बैठा विच अडोल, एका रूप वटाया। आप उठाए नाथ भोल, भोला नाथ आप जगाया। सभ दा पर्दा आपे खोल्ह, नेत्र दरस आप दृढ़ाया। आप वजाया साचा ढोल, ब्रह्म पारब्रह्म दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली रुत्त आपणे लेखे लाया। पहली रुत्त सरगुण धार, नानक निरगुण गाईआ। शब्द डंका अपर अपार, लोकमात गया वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग कूके विच संसार, रो रो दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया नार मुटयार, तन शृंगार रही कराईआ। चारों कुन्ट करे विचार, नेत्र नैण रही उठाईआ। जूठ झूठ कज्जल धार, आप आपणी धार बंधाईआ। पंच विकार कर प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सतिगुर छुट्टा मीत मुरार, घर रुढ्ढा धी जवाईआ। कुड्डा खाए सर्ब संसार, हरि का नाम ना रसना लाईआ। नानक निरगुण मारे मार, शब्द निशाना तीर चलाईआ। अर्जन जोद्धा सूरबीर बलकार, साची सेवा सेव कमाईआ। दूजी वंड वंडे संसार, आपणी हथ्थीं आप लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम भेव खुल्हाउणा, शब्दी शब्द नगारा। नानक विचोला इक्क बणाउणा, गुर अर्जन लेख लिखारा। नौ खण्ड पृथ्मी मद्य तपाउणा, पंच तत्त बणे अन्नयारा। कूड़ा लम्बू एका लाउणा, जले सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे इक्क हुलारा। शब्द जणाई नानक गुर, हरि हरि बूझ बुझाईआ। एका ताल एका सुर, इक्क सतार हिलाईआ। एका शब्द एका घोड़, एका रिहा चढ़ाईआ। इक्क लगाए निभे तोड़, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। एका हुक्म ना सके कोई मोड़, हुक्म अन्दर सर्ब फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वंड, शब्दी वंड वंडाईआ। शब्द जैकारा गुर बुलंदड़ा, हरि हरि कर ध्यान। जेठ जलन्दड़ा सर्ब रखंदड़ा, होए आप मेहरवान। पंचम मीता पंचम मेल मिलंदड़ा, पंचम होए आप निगहबान। लोकमात जोत जगन्दड़ा, पंज तत्त करे प्रधान। आप आपणा भेव छुपंदड़ा, जोती नूर श्री भगवान। आप आपणा नाउँ वटंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे जाणी जाण। जानणहार जाणया, आपणा बिरध पछान। नानक रंग एका माणया, एका जोत श्री भगवान। गुर अर्जन चले साचे भाणया, दिवस रैण सुणे फ़रमान। लेखा

लिखे अकथ कहानीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा आपे दान। कलिजुग अन्तिम तप्या जेठ, जीव जन्त रहे कुरलाया। मायाधारी वड वड सेठ, राज राजान देण दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाया। सरगुण धार पंचम जेठ, आपणी रुत्त सहाईआ। भन्नणहारा कौड़े रेठ, बैठा वेस वटाईआ। ना कोई दिसे बाशक सेज, सांगोपांग ना कोई हंढाया। ना कोई नर ना नरेसे, शाह सवार ना कोई वखाईआ। ना कोई पूजा गणपति गनेश, शिव शंकर ना कोई मनाईआ। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेष, आपणी जेहवा ना कोई गाईआ। इक्क अकल्ला कर कर वेस, आप आपणी कल वरताईआ। सुधा सर साचा वेस, दर दर बैठा अलक्ख जगाईआ। छे छे कर प्रवेश, छे दर खोल्ह खुल्हाईआ। आदि जुगादी रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। दूजी रुत्त कर परवान, पंचम जेठ सुहाया। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, भेव कोए ना पाया। खेले खेल दो जहान, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वेला आप सुहाया। साचा वेला साची धार, हरि सतिगुर हथ्थ रखाईआ। सन्त सुहेले पावे सार, गुर चेले लए उठाईआ। भगत भगती दए आधार, आत्म शक्ती नाम धराईआ। बूंद रक्ती कर विचार, मानस मानुख लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाईआ। जेठ तपाया सर्ब संसार, चार कुन्ट कुरलाया। अठसठ तीर्थ ना पावे कोई सार, अग्नी तत्त ना कोई बुझाया। शब्द खण्डा ना देवे कोई मार, गा गा थक्की ख़लक सबाया। पार कन्ढा ना कोए किनार, अद्धविचकार सर्ब रुढ़ाया। जिस जन आपणी किरपा देवे धार, त्रैगुण बंधन तोड़ तुड़ाया। दरस दिखाए अगम्म अपार, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अग्नी वेख वखाया। कलिजुग अग्नी तप अन्यारा, धरत धवल डुलाईआ। जीव जन्त करे पुकारा, हरिभगत रहे सुणाईआ। गुरमुख रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जूठे झूठे करन बहारा, कलिजुग सगला संग निभाईआ। नानक निरगुण वेखे विच संसारा, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मंगे मंग बण भिखारा, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जुग जुग वरते तेरा वरतारा, तूं दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादी एकँकारा, तेरा भेव ना कोई पाईआ। तेरी चरन सरन निमस्कारा, सरनगत इक्क रखाईआ। कलिजुग अन्तिम होए खुआरा, जेठ अग्नी इक्क लगाईआ। पारब्रह्म हरि प्रभ सुण पुकारा, एका शब्द सुणाईआ। आप आपणा लए अवतारा, वेखे थाउँ थाँईंआ। गुरमुख साचे लए उभारा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अग्नी जेठ आपे दए बुझाईआ। आपणा मठ आप तपाया, हरि साचा लम्बू लांयदा। आपणा हठ आप निभाया,

बवन्जा साल मुख छुपांयदा। बवन्जा अक्खर वक्ख कराया, आप आपणी वंड वंडांयदा। पैंतीस अक्खर पत्थर हेठ दबाया, साचा सथ्थर मात विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। नानक गुर गुणी गहिंद, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी सगला संग, साची सिख्या इक्क समझाईआ। तेरी काया मेरा रंग, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। तेरी सेज मेरा पलँघ, मेरा तेरा तूं हंढाईआ। तेरी भुक्ख मेरा नंग, तेरा पर्दा उप्पर पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या रिहा समझाईआ। नानक गुर सुण सलाह, रसना हरि हरि गांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क मलाह, आदि जुगादि अख्वांयदा। सन्तां भगतां पकड़े बांह, मनमुख आप मिटांयदा। लोकमात करे न्याँ, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। वख वख हँस करे काँ, आप आपणी वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। पहला रंग रंग करतारा, पैंती अक्खरी आप चढ़ाईआ। आपणा अक्खर कर अवतारा, आपे रूप वटाईआ। आपे मुक्ता वसे बाहरा, आपणा कन्ना आप लगाईआ। सिहारी हिस्सा पाए अपारा, बिहारी झोली डाहीआ। औउँकड़ बणे दर भिखारा, दोऔउँकड़ दूजा भेव चुकाईआ। एका डण्डा एका धारा, एका लांव लगाईआ। दोए लावां कर प्यारा, निरगुण शब्द जोत कुड़माईआ। उत्ते होड़ा कर त्यारा, आपणा छत्र आप झुलाईआ। औ कनौड़ा पावे सारा, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। एका टिप्पी दए सहारा, आप आपणा बन्द कराईआ। एका बिन्दी निरगुण धारा, एका नुक्ता दए समझाईआ। पैंती अक्खर गुर विचारा, गुरमुखां करे पढ़ाईआ। छत्तीआं छत्ती रागां वस्सया बाहरा, छत्ती रागां कोई ना गाईआ। सैंती ना पुरख ना होए नारा, नर नरायण आप हो जाईआ। अड्ड तीस हो उज्यारा, आप आपणी कल वरताईआ। तीस नौ एका धारा, एका रंग समाईआ। चार चार कर प्यारा, एका बिन्दी बिन्द उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता वेख वखाईआ। पंचम अक्खर पंचम रंग, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम रंगे साचा रंग, गोबिन्द सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी धार हरि निरँकार, आपे आप चलांयदा। आपणी धार आप चला, आपणा खेल खिलाया। आपणा तन आप जला, गुरमुखां भेट चढ़ाया। गुरमुख साचे लए जगा, बीस बीसा वड वड्याआ। जगत जगदीस रचन रचा, जागरत जोत करे रुशनाया। इक्क एकँकारा आप अख्वा, आप आपणा वेस वटाया। दूजे वेस ल्या वटा, निरगुण सरगुण विच समाया। तीजे जोती आप जगा, जागरत जोत करे रुशनाया। चौथे घर डेरा ला, साचा दर सुहाया। पंचम खेले खेल सहिज सुभा, आपणा मंगल आपे गाया। छेवा घर दए वसा, निरगुण जोत करे रुशनाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण बेपरवाह, जोती जामा भेख वटाया।

अट्ठ तत्त कोई जाणे ना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध ना कोई रखाया। नौ दर ना कोई धरवास, रसन स्वास ना कोई चलाया। दसवें दर हो प्रकाश, आपणा नाअरा आपे लाया। दस अक्खर साची रास, दस जोती भेंट चढ़ाया। मात गर्भ ना दस दस मास, बालक गोद ना किसे उठाया। आपणे अन्दर रक्खया वास, आपणा मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म दुआरी साची धार, वीह सद वीह बिक्रमी हो उज्यार, वीह सौ लेखा विच संसार, वीह दस साचा करे प्यार, साचा लेखा आप लिखाया। अक्खर पंज पहली वंड, पंजां विच टिकाईआ। पैंती पंज चार चुताली होए ब्रह्मण्ड, चौथे जुग वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण धारा आपणी आप बदलाईआ। सरगुण बदलया चोला, निरगुण रूप वटाया। दसवें अक्खर बोल्लया बोला, आपे रसना गाया। आपे खेलया आपणा होला, आपे सगन मनाया। आपणा बणया आपे विचोला, आपे वेखण आया। आपणा गाया आपे ढोला, सोहँ नाम धराया। नानक बणया साचा तोला, एका कंडा हथ्थ उठाया। दस अक्खर निरगुण धार ना कोई पाए रौला, घर दसवें मेल मिलाया। पचास अक्खर कर प्यार, सच सतार आप हिलाया। निहकलंका जामा धार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। लक्ख चुरासी पावे सार, साधां सन्तां फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेल आप खिलाया। दस दस साची किरपा कर, दर दसवें डेरा लाया। आपणा आप गुरमुखां अग्गे धर, गुरमुख सोए लए जगाया। अजपा जाप एका कर, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाया। साचा घाड़न आपे घड़, गुरमुख साचे दर घड़ाया। डूँघी कन्दर आपे वड़, काया भँवरी वेख वखाया। सुखमन नाड़ी पार कर, आपणे मार्ग आपे लाया। आपणा पल्ला आपे फड़, गुरसिखां लड़ बंधाया। त्रिकुटी छुट्टी गया चढ़, सतिगुर पूरा लैण आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई वखाया। अन्दरे अन्दर दरस देवे खड़, आप आपणा रूप वटाया। सोहँ अक्खर आप आपणा आपे पढ़, जीवण मरन इक्क वखाया। दस्म दुआरी बैठा वड़, निकल कदे ना जाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर नाउँ रखाया। दस्म दुआरी साची धार, दस साल आप चलाईआ। दिवस दिवस कर प्यार, सोए बाले आप उपाईआ। रात राणी पहरेदार, सेवक सेवा रही कमाईआ। दर दुरकाए चोर यार, ठग्गी ठग्ग ना कोए वखाईआ। निरगुण रूप सच्ची सरकार, सच तख्त सुल्तान अदल कमाईआ। जुग जुग विछड़े मेले यार, चार युग फोल फुलाईआ। साचा मीता मीत मुरार, एका एक आप हो जाईआ। साची रीता विच संसार, कलिजुग अन्तिम रिहा चलाईआ। मन्दिर मसीता वेख विचार, गुरदुआरे फोल फुलाईआ। जीव

६२५
०८

जन्त होया हँकार, मनमति करे पढ़ाईआ। साची सिख्या ना करे कोई विचार, पुरख अकाल ना कोई मनाईआ। गुर का बचन गए विसार, गुर गोबिन्द लेख लिखाईआ। जो परमेश्वर मुझ को उचरे नर नार, कुंभी नर्क रखाईआ। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। वीह सौ दस बिक्रमी कर प्यार, साची रीती आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी कथा कहाणी आपे गाए पद निरबाणी, निर्भय रूप वखाईआ। दस दो तेरा सच विहारा, हरि सतिगुर आप कराया। प्रगट हो विच संसारा, साचा लेख लिखाया। साचे अक्खर कर उज्यारा, साचे दर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा उठाया। गुरमुख साचे दए हुलारा, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। वीह सौ दस बिक्रमी कर प्यारा, सोलां मग्घर रुत्त सुहाईआ। इकवंजवां अक्खर लिख्या अपर अपारा, कलम शाही ना कोई रखाईआ। लिखणहारा हरि निरँकारा, अमृत धार नाल रलाईआ। जन भगतां करया सच प्यारा, चौथे जुग दए वड्याईआ। कबीर जुलाहा बण लिखारा, देवे दर गवाहीआ। आदी आदि मिल्या मीत मुरार, सो सुहञ्जणी घड़ी होई रुशनाईआ। पूजा पाठ पार किनारा, जिस दर बैठा सच्चा माहीआ। हरिसंगत दीपक कर उज्यारा, साची जोत करे रुशनाईआ। साचा लाल कर प्यारा, आप आपणे रंग रंगाईआ। जितया मन विच संसारा, मन जीत वज्जी वधाईआ। इकवंजा अक्खर कर उज्यारा, साढे तिन्न हथ्थ दए वखाईआ। बावन तेरी बन्न्ह धारा, भेखाधारी भेख ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। इक्क दस एका रंग, हरि साचे रंग रंगाया। नानक निरगुण मंगी मंग, हरि पूरी दए कराया। दाता दानी सूरा सरबंग, आदि जुगादी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंक जगत जगदीश, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा छत्र झुल्ले सीस, हरि साचा वेख वखाईआ । राज रजानां शाह सुल्तानां इक्क हदीस, साधां सन्तां इक्क पढ़ाईआ। बवन्जा अक्खर तेरी कोई ना करे रीस, पोह छब्बी करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर हरि निरँकार, लोकमात उपजांयदा। जगत जगदीसा पहलों करया ख़बरदार, साची पुरी आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। नौ दुआरे कर त्यार, नौ खण्ड फोल फुलांयदा। सत रंग निशाना अपर अपार, सच संदेश सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख एका मार्ग लांयदा। नौ दुआरे कर त्यार, उप्पर मन्दिर आप रचाया। दस्म दुआरी बन्द किवाड़, ना कोई वेखे वेख वखाया। पारब्रह्म रूप करतार, निरगुण जोत करे रुशनाया । जन भगतां करे मात प्यार,

गुरमुख साचे लए उठाया। साढे तिन्न हथ्थ लेखा अद्धविचकार, सच सिँघासण आसण लाया। जोत अकाली निराकार, नूरो नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा दए वखाया। पहली हरि हरि बणत बणाई, दर दरबार सुहाया। दूजे हरिसंगत आप उठाई, नौ अठारां वेख वखाया। वीह सौ बारां जोड़ जुड़ाई, दर साचा इक्क सुहाया। साचा लेखा गया समझाई, लक्ख चुरासी फंद कटाया। दस्म दुआरी पन्ध मुकाई, नौ दुआरे चरनां हेठ दबाया। सच सिँघासण रिहा विछाई, आप आपणा आसण लाया। गुरमुखां मिले चाँईं चाँईं, जगत नेत्र बन्द कराया। पकड़ उठाए आपे बाहीं, सोया कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवन्जा अक्खर कीते वक्खर, दस्म दुआरी तोड़या पत्थर, पंच विकारा लाहया सथ्थर, आप आपणा संग निभाया। साची भगती भगत भगवान, आपणी आप जणाईआ। वीह सद बारां कर ध्यान, दूजी रुत्तड़ी वेख वखाईआ। जेठ नाल रलाया हाढ़ बलवान, अग्नी तत्त रही बरसाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। पहली हाढ़ कढ्ढुया बाहर, कलिजुग कूड़ कुरलाया। दूजी हाढ़ वेखे अखाड़, पंज तत्त डेरा लाया। तीजी हाढ़ होए उजाड़, जूह जंगल डेरा ढाया। चौथी हाढ़ बण वणजार, हरिजन साचे मेल मिलाया। पंचम कर पंच प्यार, छेवें दर सुहाया। सत्तवें साची करे कार, अठवें अट्ठ तत्त रंगाया। नौ दर वेखे जगत अखाड़, दसवें गुरमुख मेल मिलाया। दस इक्क ग्यारां हो त्यार, आप आपणा राह तकाया। दस दो बारां नर अवतार, निरगुण नूर करे रुशनाया। तेरां हाढ़ कर विचार, आप आपणा नाम धराया। चौदां तबकां पाए सार, चौदां हट्टां फोल फुलाया। पन्दरां अन्दरां वेखे धार, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। सोलां इच्छया कर श्रृंगार, गुर भिच्छया गुरमुखां आपे पाया। सतारां हाढ़ हरि निरँकार, वीह सौ बारां वेख वखाया। गुरमुखां दित्ता इक्क प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाए जैकार, लक्ख चुरासी विच ना आया। जोग अभ्यास ना कोई सुनार, अग्नी मट्ठ ना कोई तपाया। सिर पाए ना कोए जल धार, धूणी ता ना कोई वखाया। बिन सतिगुर पूरे कोई ना उतरे पार, गुर नानक दए गवाहया। कबीर कहे पुकार पुकार, उच्चे मन्दिर कूक सुणाया। नाल रलाया रविदास चम्यार, आपणा चमड़ा जिस विकाया। गोबिन्द करया सच प्यार, गुरमुख साचे लए उठाया। अमृत बख्शया खण्डे धार, नाम खण्डा विच फिराया। एका बोल सच्चा जैकार, लक्ख चुरासी गया सुणाया। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दित्ता एका वर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया। हाढ़ सतारां सच सुभाग, गुरमुख नारी कन्त

मिलाया। घर मन्दिर जगाया सच चिराग़, दीवा बत्ती ना कोई रखाया। चार युग दा धोया दाग़, आपणी हथ्थीं मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी पकड़ी वाग, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाया। आप बणाए हँस काग, सोहँ साची चोग चुगाया। अट्ठे पहर इक्क वैराग, आपणा आप हिरदे विच टिकाया। पहलों मोया फेर गया जाग, गुरसिख आपणे लए जगाया। एका शब्द एका राग, एका रिहा सुणाया। जो जन सरन सरनाई गए लाग, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ बारां सच विहारा, हरिसंगत तेरा आप मनाया। हरिसंगत तेरी कट्ट चुरासी फाँसी, आपणे गल लटकाईआ। पहलो नाम रखाया घनकपुर वासी, दूजे जोत करे रुशनाईआ। तीजे खेले खेल पृथ्मी आकाशी, छोटे बाले लए उठाईआ। चौथे घर करे वासी, वास निवासी आप हो जाईआ। किसे हथ्थ ना आए पंडत काशी, कोटन कोटि ज्ञानी ध्यानी फिरदे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत एका मति समझाईआ। हरिसंगत तेरा तोड़या फंद, हरि आपणा कर्म कमाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द, राए धर्म ना दए सजाया। दर दुआरे दरस अमोघ परमानंद, जिस जन आए दर्शन पाया। नौ दुआरे डूँघी कंध, दूई द्वैती पर्दा लाहया। आवण जावण चुकया पन्ध, जिस जन आपणे रंग रंगाया। मदिरा मास तजाया गन्द, विष्टा कीट ना फिर अख्वाया। दरगाह साची चढ़या चन्द, ब्रह्मा शिव रहिण सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जेठ हाढ़ मेल मिलाया। जेठ जेठा अग्नी ला, नौ खण्ड रिहा जलाईआ। हाढ़ आपणा आप उपा, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। हाढ़ सतारां दिवस सुहा, वीह सद बारां कर्म कमाईआ। बवन्जा साल वेख वखा, बावन खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवणहारा वर, आसा मनसा पूर कराईआ। आसा मनसा हरि हरि पूर, हरि हरि मेल मिलन्नया। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, एका जोत श्री भगवन्नया। आपे नेड़े आपे दूर, खेले खेल दो जहानया। आपे शब्द आपे तूर, नाद अनादी आप वजन्नया। आपे दाता आपे सूर, सूरबीर आप अख्वन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा जोग वखन्नया। सच तख्त सुल्तान बिराजे, परम पुरख श्री भगवन्तया। जन भगतां आपे करे काजे, आप आपणा धाम सुहन्तया। रैण अन्धेरी मारे वाजे, सोए लोकमात उठन्तया। प्रगट जोत देस माझे, सम्बल नगरी धाम सुहन्तया। मनमुखां खोलणहारा पाजे, एका राग सुणन्तया। गुरमुखां देवे साचा राजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्म दुआरी कर प्यारी, गुरमुखां वखाए चरन दुआरी, जोती निरगुण हरि उज्यारी, आसण सिँघासण पुरख अबिनाशन डेरा लांयदा।

थिर घर हरि साचा वासन, निरगुण दीवा बाती। सच दुआरा साचा आसण, निरगुण जोत इक्क इकांती। निरगुण दुआरा सच सिँघासण, पुरख अबिनाशी निरगुण रक्खी तिलक लिलाटी। पारब्रह्म साची सेजा सेवा करे नेहचल धामा, आपे गुरू आपे चेला आपणा आप कहावे। ना विछड़े ना तुट्टे, ना कोई वहिण वहावे। जीव जन्त आपणे वहिण वहे, लक्ख चुरासी वहिण वहावे। साच सूत साचा कर्म, निर्मल भोजन किया। ना जूनी ना कोई जिया, आप आपणा आपे थीआ। शब्द घोड़ सच्चा अस्वारी, कोटन कोटि जीव जन करन निमस्कारी। गुर का शब्द लैणा मूर्ख मुग्ध अज्याण, भव सागर तारे, मेल मिलावे शाह सुल्तान। अचरज लील्ा अपर अपार, हरि आपणी आप रचाईआ। असुत्ते प्रकाश हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। लाल वेस खेल अपार, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कंचन वेखे सिरजणहार, सूहा वेस वटाईआ। चिटी धार कर प्यार, आप आपणा संग निभाईआ। पीला पीर पीर गुर अवतार, परम पुरख आप अख्वाईआ। नीला निरगुण सरगुण कर प्यार, जोत शब्द करे कुड़माईआ। काला वेखे अन्ध अँध्यार, हिरदा कवण फोल फुलाईआ। सति पुरख निरँजण रंग सत लील्ा अपर अपार, अट्ठे पंखड़ीआं खेल खिलाईआ। दोए दस करन निमस्कार, रवि ससि सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज लील्ा अपर अपार, अकल कल रंग वरताईआ।

६२६

८०

हरि का गुण जाणे की बप्परा, वड वड्डी वड्याईआ। काया चोला पहने कपड़ा, जुग जुग वेस वटाईआ। वस्सया धाम आपणे छप्परा, साची छन्न छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे गुण दए लिखाईआ। आया गुणवन्ता भगवान, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। सोहँ शब्द उठाया हथ्थ निशान, लोआं पुरीआं आप वखाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। मनमुखां मारे तीर निशान, दूई द्वैती बाण चलाईआ। कलिजुग मिटे झूठ दुकान, सच सुच्च करे कुड़माईआ। सतिजुग साचा कर प्रधान, एका मार्ग दए लगाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। ऊँच नीच राउ रंक आप वसाए इक्क मकान, एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आपे रिहा कमाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि हरि आया, निरगुण नूर रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। सच्चे पातशाह शाह सुल्ताना आप अख्वाया, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। लोआं पुरीआं दए उठाया, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि भाणा बलवान, आपणे हथ्थ रखांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, जुग जुग शब्द सुणांयदा।

जन भगतां होए निगहबान, आप आपणा मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी पीड़े घाण, मनमती डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग मिटे सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, हरि साचे सच वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका रंग रंगाउणा, इक्क निशान रिहा वखाईआ। सोहँ शब्द सृष्ट सबाई गाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका मार्ग पाईआ। राम कृष्न वेस वटाउणा, नानक गोबिन्द कर जोत रुशनाईआ। ईसा मूस खेल खिलाउणा, संग मुहम्मद वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच्चे पातशाह बेपरवाह इक्क अख्वाईआ। सच्चे पातशाह निरगुण धार, आपणी आप चलाईआ। मूर्ख मुग्ध ना पावे सार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। लेखा लिख्त अगम्म अपार, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ।

बिन किरपा ना बूझे ढोर, मन मति ना कोई चतुराईआ। संग रलाए पंज चोर, पंचम मेल मिलाईआ। लभ्भदा फिरे अन्धेर घोर, निहकलंक हथ्थ ना आईआ। जगत दर्शन खिच्ची डोर, चारों कुन्ट भवाईआ। मन ममता चढ़या घोड़, काम क्रोध हल्काईआ। दहि दिशा वेखे दौड़ दौड़, आपणी अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। जगत वासना ना मिटे कौड़, रस मिट्ठा ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे लच्छण आपे दए लिखाईआ। हरि का लच्छण कोई ना पेखे दिस किसे ना आया। गुर गोबिन्द कढ्ढे भरम भुलेखे जिस जन गुर गोबिन्द वेख वखाया। पहलों मिले नर नरेशे, नर नरायण फेर दरसाया। गुर चरन भेट चढ़ाए मुच्छ दाढ़ी केसे, सो गुर सूरा निहकलंक दए वखाया। दिवस रैण सदा वेख हाज़र हज़ूर, हाज़र आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप दए खुल्हाया। साचा युध हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। मन मति बुध ना पावे सार, गुर गोबिन्द लेख लिखाईआ। आपणी सुध ना पाए जीव विच संसार, अनभव कवण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे साचा वर, निहकलंक सो जन वेख वखाईआ। निहकलंक हरि का रूप, पुरख अकाल वटाया। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। जिस जन उप्पर जाए तुठ, आप आपणा पर्दा लाहया। लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठ, अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। निहकलंक शब्द खण्डा एका फड़या जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, करदा युद्ध दिस किसे ना आया। शब्द खण्डा तिक्खी धार, निहकलंक हथ्थ उठाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, मनमुखां दए सजाईआ। मारी जाए वारो

वार, चारे कूटां कूके वाहो दाहीआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, गुरमुख रसना रहे गाईआ। घर मिल्या सज्जण मीत मुरार, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम एका एक डंक वजाईआ।

सदा दयाल सर्ब सुख दाता, हरि हरि सज्जण मीत मुरार। जिस जन बख्शे चरन कँवल नाता, सो जन उधरे पार। नाम देवे साची दाता, देवणहार आप निरँकार। आदि जुगादी इक्क अकांता, खेले खेल विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन जन हरि आप लाए पार। पार किनार पुरख करतार, आपणा आप वखाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, देवे सच सच्ची सरनाईआ। मिटे रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, कूड़ कुड़यारा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या पाए भिच्छया दर साचे वेख वखाईआ। नाम वस्त जगत अनमोल, हरिजन झोली पांयदा। दर दरवाजा आपे खोल्ह, आपे वेख वखांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, आपणा भार आप उठांयदा। वसणहारा सदा कोल, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम राम इक्क वखांयदा। नाम धन सच्चा धन माल, धन हरि हरि नाम वखाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, जंजाला जगत तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख बुज्झे हरि दर सुझे, मेला सहिज सुभाया। चरन प्रीती गुर गुर लुझे, गुर मन्दिर अन्दर पाया। हरि भेव खुल्हाए आपणे गुज्झे, आप आपणा पर्दा लाहया। लेखा चुक्के एका दूजे, एका रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे ल्ए वड्याआ। वड वड्याई आप कर, देवे नाम निधाना। एका अक्खर जाप धर, करे पंच प्रधाना। हरिजन भाणा जाए जर, भाणा वरते दो जहानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां बन्न्हे नाम हथ्थीं सच्चा गाना।

आदि नमो गुर देवा, गुरू गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेवा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। आदि जुगादी आपणी सेवा, शब्द ब्रह्मादी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ सत्त देवे वर, अड्ड अड्ड गंढु बंधाईआ। नौ सत्त वंड वंड, दो दो लेख लिखाया। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, हरि हरि

रूप वटाया। खेले खेल जेरज अंड, जोग जुगत वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप दरसाया। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण रूप चलाईआ। निरगुण रूप आप करतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण खण्डा तेज़ कटार, निरगुण आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत्त दुलारा वेख वखाईआ। सुत्त दुलारा शब्द अनरंग, रूप रंग ना राया। आदि जुगादि सूरा सरबंग, सहँसर मुख शेष ना गाया। लाल भूशण लाए अंग, अंगीकार वेस वटाया। पुरख अगम्मा वजाए मृदंग, एका नाअरा लाया। आप आपणा रक्खे संग, सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाया। लाल भूषन बसुधा धार, लक्ख चुरासी रंग रंगांयदा। सत्तां दीपां करे ख़बरदार, सति सरूपी वेस वटांयदा। सत्त पैसे कर प्यार, कलिजुग करता कीमत आपे पांयदा। जूठ झूठ करे खुआर, माया ममता मोह तुड़ांयदा। नाम डंका इक्क अपार, शब्द नगारा आप वजांयदा। जोगन कल जोगन ख़बरदार, हाकन डाकन मूंड मुंडांयदा। रिद्ध सिद्ध जाए हार, नौ नाथ मुख शरमांयदा। इक्क लक्ख हज़ार चुरासी मारे मार, लोकमात भार ना कोई उठांयदा। एकँकारा होया ख़बरदार, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगांयदा। लाल धारी लाल रंग, लालो लाल रंगाया। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया। आपणे अस्व कस्सया तंग, एका डौरु डंका रिहा वजाया। दर दुआरे आपे लँघ, आपे वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाल लालां विच टिकाया। लाल उप्पर काली धार, अक्खर अक्खर पढ़ाईआ। साध सन्त करन विचार, प्रगट होया बेपरवाहीआ। निहकलंका लए अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। सम्मत सोलां होया ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी मारे मार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। इक्क नलेर कर प्यार, आपणे हथ्थ उठाईआ। दूसर ना कोई दिसे होर सिक्दार, सच्चा ताज ना कोई टिकाईआ। पारब्रह्म गुर इक्क अवतार, प्रभ अबिनाशी करता नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत ज़ंजीर इक्क बंधाईआ। जगत ज़ंजीर नाम बन्न्, शब्दी ताला लाया। मनमुख जीवां देवे डन्न, बन्दी बंध बंधाया। जो घड़या सो देवे भन्न, राए धर्म सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका संगल हथ्थ फड़ाया। जगत संगल झूठ विकारा, माया मोह बंधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, लेखा ना कोई जणाईआ। सन्त साध करन विचारा, साखियात नज़र ना आईआ। सम्मत सत्तरां दए हुलारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। पहली चेत्र रहिणा ख़बरदारा, नाम डण्डा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ।

नाम डण्डा हथ्थ करतार, आपणे आप उठांयदा। दो जहानां मारे मार, कलिजुग सतिजुग वेख वखांयदा। नाम निशाना अपर अपार, साधां सन्तां तन लगांयदा। बन्ने गाना अपर अपार, साचा सगन मनांयदा। सोलां सोलां हो उज्यार, सोलां धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची भेटा भेट वखांयदा। टुट्टी गंढ्ढणहार गोपाल, पूरन पुरख अबिनासीआ। टुट्टे फल लगाए डालू, हरि सज्जण शाहो शाबासीआ। गुरमुख सज्जण साचे लाल, आप आपणी गोद उठासीआ। सन्त सुहेले जुग जुग भाल, देवे नाम धरवासीआ। सखा सुहेला करे प्रितपाल, निज घर आत्म रक्खे वासीआ। शब्दी शब्द बण दलाल, करे कराए पूरी आसीआ। हरिसंगत वखाए सच्ची धर्मसाल, गुर चरन सच्चा भरवासीआ । एका नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना आप वखासीआ। देवणहारा दानी दान, दाता दानी आप अख्वासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे बन्द खुलासीआ। बन्दी छोड़ पुरख बिधाता, बन्दी छोड़ अख्वाया। जो जन मंगे नाम दाता, नाम भण्डारा दए भराया। जो जाणे जन आत्म गाथा, अन्तर आत्म मेल मिलाया। जो जन मंगे सगला साथा, सगला संग रखाया। जो जन मंगे लहिणा देणा मस्तक माथा, पूर्ब झोली पाया। जो जन मंगे पूजा पाठा, सो जन चरन ध्यान रखाया। जो जन मंगे काया घाटा, नाम कंडे तोल तुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तोड़णहारा आप हो जाया। आपे तोड़े तोड़णहारा, टुट्टी गंढु वखांयदा। साची सिख्या दए संसारा, साख्यात रूप वटांयदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अगम्मड़ा धाम सुहांयदा। सोहँ शब्द इक्क जैकारा, चार वरनां आप सुणांयदा। गुरमुख सज्जण मीत मुरारा, दर घर आपणे आप सुहांयदा। भुल्ल रुल जो आए दुआरा, फड़ बांहों गले लगांयदा। दोए जोड़ करे निमस्कारा, निउँ निउँ वेख वखांयदा। काया कंचन गढ़ कर प्यारा, साची वस्त टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिख्या लेखा लेख मिटांयदा। लिख्या लेखा आप मिटाए, जिस जन आपणी दया कमाईआ। साची सिख्या गुर मति समझाए, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। आत्म भिच्छया एका पाए, जो जन दर दरवाजा मंगण आईआ। अन्तिम रच्छया कर वखाए, दो जहानां होए सहाईआ। साचे दर तों घुथया थाएँ ना कोई पाए राहे, राए धर्म दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वर दाता देवे इक्क वड्याईआ। हरिसंगत दर साचा पाउणा, हरि सज्जण मीत मुरार। शब्द अनादी गाउणा, सो पुरख निरँजण जै जै जैकार। हँ ब्रह्म इक्क दरसाउणा, वरन गोत वस्सया बाहर। कर्मी कर्म इक्क कमाउणा, हुक्मी हुक्म सच्चा दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत जाए तार। हरिसंगत मंगो नाम भिख, भरया हरि भण्डारा। अग्गे लेखा देवे लिख, करे पार किनारा। साची सिख्या लैणी सिख, तुटे गढ़

हँकारा। सम्मत सोलां साची थित, वीह सौ करे पुकारा। गुरमुख तेरी साची रित, हरि सज्जण ल्ए उभारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल नित नवित्त, लोकमात लै अवतारा। हरिसंगत हरि दर पाया, मंगी मंग अपार। तृष्ना भुक्ख गंवाया, देवे नाम अधार। सुफली कुक्ख वखाया, जो मंगे सुत्त दुलार। काया रोग जलाया, दु:खड़े दए निवार। नाम चोगी चोग चुगाया, तृष्ना देवे मार। धुर संजोगी मेल मिलाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत लाए पार। हरिसंगत साचा बेड़ा बन्न्ह, गुर सतिगुर कंध उठाया। गुरमुख वड्याई तेरी धन्न, घर हरि धन नामा पाईआ। जननी जणया साचा जन, मिली सच्ची सरनाईआ। वा ना लगे तत्ती तन, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। राग अनादी एका कन्न, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। हरि का भाणा लैणा मन्न, हरिजन भाणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दए वड्याआ। हरिसंगत तेरा सच्चा घर, हरि साचा आप सुहांयदा। खुल्हा रक्खे सदा दर, ना कोई बन्द करांयदा। आवण जावण चुक्के डर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। सच सरोवर नुहाउणा सर, अमृत जल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मुख सलांहयदा। हरिसंगत उज्जल मुखड़ा, लोकमात उज्यार। दूर विकारा होए दु:खड़ा, बख्शे चरन प्यार। मात गर्भ ना उलटा रुखड़ा, जूनी जून दए निवार। जो जन होए दर्शन भुखड़ा, देवे दरस अगम्म अपार। गुरसिख काली नींद कदे ना सुतड़ा, अट्ठे पहर रहे ख़बरदार। खेले खेल पुरख अबिनाशी अचुत्तड़ा, लेख लिखाए गोबिन्द धार। सुफ़ल कराए मात कुखड़ा, जो जन आए चल दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बेड़ा लाए पार। हरिसंगत तेरा पार किनारा, गुरमति सुर आप कराईआ। एका देवे नाम सहारा, निरगुण हथ्थ वड्डी वड्याईआ। आपे खड़ा अद्धविचकारा, आपणा राह तकाईआ। जिस जन बख्शे चरन दुआरा, चरन प्रीती तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत संग समाईआ। हरिसंगत हरि समाया, हरि हरि रूप अपार। हर घट डेरा आपे लाया, गुरमुख विरला पावे सार। कलिजुग अन्तिम अन्धेरा छाया, भरमे भुल्ला सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे नाम दान, अज्ञान अन्धेर गंवाया।

✪ ११ हाढ़ २०१६ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, हरि नर सतिगुर वेस वटाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता आप बणाए आपणी बणतर, निरगुण

नूर जोत रुशनाया। खेले खेल गगन गगनंतर, भेव अभेदा भेव छुपाया। इक्क अकल्ला एकँकार निराकार घट घट अन्तर, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। जूनी रहित पुरख अकाल, एका एकँकारया। आदि जुगादी दीन दयाल, खेले खेल अपर अपारया। अग्गे वस्सया सच सच्ची धर्मसाल, घर साचे आसण ला ल्या। आपणा दीपक आपे बाल, जोती नूर डगमगा रिहा। करे कराए सर्ब प्रितपाल, आपणी सेवा आप कमा ल्या। आपे चले आपणी चाल, आपणा मार्ग आपे ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। आपणी रचना आपे रच, हरि आपे वेख वखांयदा। आपे सतिगुर पुरख सच्च, सति सरूप हो जांयदा। एका शब्द आपे वाच, एका आप अल़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप उपजांयदा। जोती नूर उजाला हरि गोपाला, एका रंग समाया। खेले खेल खेल निराला, खेलणहार दिस ना आया। चले चलाए चाल निराला, जुग जुग आपणा वेस वटाया। एका शब्द एका ताला, एका राग अल़ाया। एका मन्दिर एका अन्दर एका घर एका दर खुल़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूरो नूर रुशनाया। निरगुण नूर हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। इक्क अकल्ला लए अवतार, आपणा वेस वटाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। आपे वसे सचखण्ड दुआर, थिर घर आपे डेरा लाईआ। आपे शाह भूप सुल्ताना सच सिक्दार, धुर फ़रमाना आपणा आप जणाईआ। आपे चोबदार होए पहरेदार, दर दरबाना आप सुहाईआ। आपे होए निगहबाना, आपे वेख वखाईआ। आदि जुगादी नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। बिरध बाल ना कोई वखाना, एका अंक समाईआ। वसणहार सच मकाना, उच्च महल्ला डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सरगुण वेस हरि अवल्ला, एका एक कराया। सच दुआरे बैठ अकल्ला, अकल कला अख्वाया। आपणी जोती आपे बला, आपणी जोत करे रुशनाया। आपणा शब्द सुनेहड़ा आपे घला, आपे रिहा सुणाया। आप फड़ाए आपणा पल्ला, वर दाता आप हो जाया। आपणा आसण आपे मल्ला, दूसर संग ना कोई रलाया। वसे नेहचल धाम अटला, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह डेरा लाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई अंग लगाया। ना कोई नगर ना ग्रां, ना कोई खेड़ा होर वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत जोत डगमगाया। जोती नूर हरि गोपाल, गोबिन्द हरि रघुराईआ। आप आपणी करे प्रितपाल, घर साचा इक्क सुहाईआ। आपे चले नाल नाल, आप आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क वड्याईआ। आदि जुगादी हरि करतार, आपणा खेल खिलांयदा।

खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना पांयदा। विष्नूं देवे इक्क सहार, ब्रह्मा झोली पांयदा। ब्रह्म कँवल होया उज्यार, अमृत मुख पुवांयदा। नाम सच सति भण्डार, साचे दर सुहांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप धरांयदा। आपणा नाम आपे रक्ख, आपणा रूप वटाईआ। ब्रह्मा विष्नूं कर प्रतक्ख, साचा संग निभाईआ। शंकर लेखा अलक्खणा अलक्ख, आपे लए गणाईआ। आपे सभ तों होए वक्ख, आपणी कल आप वरताईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, त्रैगुण मेल मिलाईआ। पंज तत्त देवे वथ्थ, एका झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन आप रचाईआ। निरगुण धार पुरख अकाल, रूप रंग ना कोए। दीनां बंधप दीन दयाल, करे खेल जाणे ना कोए। त्रै उपजाए साचे लाल, देवे नाम शब्द सच ढोए। फल लगाए आपणे डाल्, लक्ख चुरासी आप परोए। आपे माया पाए जंजाल, तोड़ ना सके कोए। सेवा लाए काल महांकाल, निरगुण वेखे दर खलोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत आप बलोए। निरगुण जोत साचा नूर, नूरो नूर उपजाया। आपणे दर हाज़र हज़ूर, आप आपणा पर्दा लाहया। आपे वसे नेड़े दूर, दूर नेड़े ना कोई जणाया। आपे शब्द अनादी तूर, धुनी नाद आप वजाया। आपणी मनसा आपे पूर, लक्ख चुरासी वंड वंडाया। अमृत आत्म सति सरोवर, घट घट ताल भराया। त्रैगुण नाता पंज तत्त गरूर, माया बंधन बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल कराया। खेलणहार पुरख समरथ, अकल कल अख्वाया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। आपे पूजा आपे पाठ, आपे मन्त्र नाम दृढ़ाया। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, जल धारा आप रुढ़ाया। आपे अग्नी होए काठ, जगत बसन्तर आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल खिलाया। ब्रह्मा देवे शब्द अधार, एका शब्द जणाईआ। चारे वेदां बण लिखार, लेखा गया समझाईआ। धरत धवल महल्ल उसार, आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर वाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाईआ। आपे कढ्ढणहारा बाहर, जुग जुग वेख वखाईआ। सरगुण निरगुण लए अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। सन्त साजण लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। भगतां देवे नाम अपार, नाम नामा झोली पाईआ। खोल्हणहारा बन्द किवाड़, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस पुरख अगम्म, आपणा आप करांयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, चिन्ता सोग ना कोई रखांयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। हड मास नाड़ी

ना दिसे चम्म, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। जुग जुग बेड़ा आपे बन्न, आप आपणा भार उठांयदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, थिर घर साचे डेरा लांयदा। गुरमुख वेखे साचे जन, जन जननी लेखे लांयदा। एक राग सुणाए कन्न, एका धुन उपजांयदा। लोकमात चढ़ाए साचे चन्न, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। गढ़ हँकारी भाण्डा भन्न, आत्म ज्ञान जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वांयदा। जग करता हरि करनेहारा पारब्रह्म अख्वाया। आदि जुगादी लए अवतारा, एका गुर गुर नाम धराया। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट वेख वखाया। जन भगतां देवे नाम धारा, अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। डूँघी कन्दर हो उज्यारा, जोत निरँजण दीप इक्क जगाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजाया। सर सरोवर ठंडी ठारा, अमृत ताल भराया। मेल मिलाए दस्म दुआरा, आत्म सेजा इक्क विछाया। निरगुण जोती नूर इक्क उज्यारा, दिवस रैण डगमगाया। मुख शरमायण रवि ससि सितारा, निउँ निउँ सीस झुकाया। गुरमुख तेरा सच दुआरा, आदि जुगादी वेख वखाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, निराकारा वेस वटाया। सृष्ट सबाई कर पसारा, सगला बंधन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाम धराया। जुग जुग मन्त्र नमो देव, आदि पुरख अख्वांयदा। पारब्रह्म अलख अभेव, वेद कतेब ना कोई जणांयदा। निरगुण जाणे सरगुण सेव, सेवा सरगुण निरगुण आप करांयदा। आपे रसना आपे जेहव, पवण स्वासी आप चलांयदा। आपे देवणहारा मेव, अमृत फल आप खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा नाउँ रखाया। ओम रूप विच संसार, सो पुरख निरँजण वेस वटाया। हँ ब्रह्म कर कर त्यार, परम पुरख वड्याआ। एका रूप दिसे धार, नारी पुरख मेल मिलाया। कन्त कन्तूहला कर प्यार, साची सेजा आप हंढाया। सुरत सुवाणी ख़बरदार, दिवस रैण रही जगाया। मेल मिलावा साचे यार, मानस मानुख लए तराया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा बंधन आपे पाया। सतिजुग त्रेता बंधन पा, द्वापर वेख वखाईआ। आप आपणा वेस वटा, आपणा नाउँ धराईआ। आप आपणा नाम ध्या, आदि शक्ति आप हो जाईआ। आपे देवे रिज़क सबा, उत्पत आपे रिहा कराईआ। आपे चारे वेदां रिहा गा, चारे मुख अलाईआ। बाशक तशका आपे गल लटका, हथ्थ त्रिसूल उठाईआ। सांगोंपांग आप हंढा, आपे नैण मटकाईआ। करोड़ तेतीसा सेवा ला, एका रसना गाईआ। गण गंधर्ब दए उठा, किन्नर यच्छप आपे ताल वजाईआ। लक्ख चुरासी बणत बणा, आप आपणा नाम जपाईआ। भगत वछल आप अख्वा, हरिजन लए उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। मुहम्मद लेखा दए लिखा, लेखा लिख

ना कोई मिटाईआ। ईसा मूसा साचा सूसा तन छुहा, साचे सीस वखाईआ। नानक निरगुण गा, नाम सति पढ़ाईआ। अर्जन लेखा दए लिखा, एका गुर वड्याईआ। गोबिन्द सपूता आप बणा, देवे माण वड्याईआ। अमृत खण्डा जाम प्या, सुधासर सुहाईआ। शस्त्र बस्त्र तन सजा, वेखे बेपरवाहीआ। एका नूर डगमगा, जोती नूर करे रुशनाईआ। दस्म घर दर सुहा, गुर दसवां वेख वखाईआ। घर घर मंगल आपणा गा, एका रिहा सुणाईआ। चारों कुन्ट फेरी पा, दहि दिशा वेख वखाईआ। जीव जन्त रहे कुरला, ना दिसे कोई सहाईआ। धरत मात मारे धक्का, खुल्ल्हे केस नेत्र रो रो नीर वहाईआ। कोई ना देवे ठंडी छाँ, कलिजुग अग्नी अग्ग तपाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख वखा, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणा सुत्त आप उठा, अबिनाशी अचुत्त दए वड्याईआ। साची रुत्त रुत्त सुहा, फुल रुत्तड़ी इक्क लगाईआ। चार वरनां बणाए भैण भ्रा, ऊँचां नीचां मेट मिटाईआ। एका सिख्या सिख समझा, एका गुर वखाईआ। पुरख अकाल गया मना, ना दूसर कोई सहाईआ। बंस सरबंस भेट चढ़ा, आप आपणी सेव कमाईआ। जीव जन्त गया समझा, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। गोबिन्द धार हरि निरँकार, निरगुण आप चलाईआ। एका जोती दस अवतार, रूप अनूप दरसाईआ। एका शब्द इक्क कटार, एका खण्डा ल्या चमकाईआ। एका सज्जण मीत मुरार, एका मार्ग लाईआ। राउ रंकां इक्क प्यार, एका धाम बहाईआ। अमृत आत्म कर त्यार, गुरमुखां आप प्याईआ। आप आपणा उत्तों वार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। मंगे मंग बण भिखार, एका झोली रिहा डाहीआ। मिल्या मेल धुर करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द चेला गोबिन्द गुर हरि अवतार, हरि हरि वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम चार कुन्ट होए धूंआँधार, रैण अन्धेरी एका छाईआ। साध सन्त जीव जन्त होए विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। जूठ झूठ होए हाहाकार, नाम सति ब्रह्म मति ना कोए कुड़माईआ। पंज तत्त चले विकार, कुँवारी कन्या करे श्रृंगार, साचा घर ना मिले दुआर, नर नरायण ना कोई हंढाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा उडदे ना दिसे पंखी डार, पृथ्मी आकाश लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां होए दुहाईआ। धरत धवल उलटा कँवल, ना कोई सहाई साँवल सँवल, श्री राम नाम ना कोई गाईआ। अल्ला हू ना कोई अल्ला ऐनलहक्क ना सके कोई अल्ल्हा, चारों कुन्ट उडने कक्ख, सृष्ट सबाई होए हल्काईआ। नूर ख़ुदाई परवरदिगार, ना कोई सांझा यार, राम नाम ना कोई सहार, राधा कृष्न ना कोई विचार, दुर्गा इष्ट ना कोई विचार, वाहिगुरू फतिह ना कोई गजाईआ। घर घर होए हाहाकार, भईआ भैणां मारे मार, साचा सईआ ना कोई विचार, कलिजुग नईआ रिहा चलाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखार, गरुसिक्खां करया सच प्यार, शब्द सनेहुड़ा विच संसार, आपणी रसना

गए सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, लोआं पुरीआं मारे मार, लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, सरगुण मीत नूर होए उज्यार, महल्ल अटल अचल्ल एका नाम वखाईआ। जल थल ढूँघे सागर पावे सार, जंगल जूह वेखे पहाड़ उजाड़, कन्दर अन्दर मस्जिद गुरदुआर फोल फोलाईआ। वेद विद्या लए उभार, शास्त्र सिमरत कर विचार, अञ्जील कुराना खोल्ह किवाड़, खाणी बाणी वेखे घाड़, लक्ख चुरासी टोहे नाड़ नाड़, अड़या कोई रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अखाड़, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वाड़, शब्द अगम्मी रक्खे धाड़, पुरख अबिनाशी साचा लाड़, साचा घोड़ा जोती शब्दी जुड़या जोड़ा साह अस्वार, हरि निरँकार निरगुण नूर नूर उज्यार, लोकमात करे चढ़ाईआ। ना कोई खण्डा ना कटार, पंज तत्त ना कोई प्यार, ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण ना कोई रखाईआ। गुरसिखां करे प्यार, जुग जुग गुरमुख जाए तार, देवे नाम शब्द अनडीठड़ा काया मन्दिर साचे अन्दर दए टिकाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका रूप सच्ची सरकार, नज़री आए विच संसार, चारे वरनां करे प्यार, जगत रुशनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर प्यार, अठारां बरन दए अधार, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, पारब्रह्म करतार। लोकमात किसे दिस ना आया, प्रभ वेखणहार सर्ब संसार। रूप रंग किसे नज़र ना आया, अन्दर वड़ वड़ बैठे गुरुदुआर। शब्द नाद ना किसे वजाया, रागी गाण गायण अपर अपार। बोध अगाधी शब्द ना किसे सुणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत विहार हरि निरँकार आपणे हथ्थ रखाया। आपणे हथ्थ रक्खी डोर, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। प्रगट होए अन्ध घोर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। आपे जाणे आपणा ज़ोर, ना लेखा कोई लिखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे दौड़, जेरज अंडां फोल फोलाईआ। शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, वागां आपणे हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाईआ। लोकमात आया वागां मोड़, निहकलंक नाउँ रखाईआ। गुरमुखां आत्म अन्तर लग्गी औड़, गुर प्रसादी दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ रखाईआ। चौथे जुग चौथे घर चौथी धार, चौथा पद समाया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। मूर्त अकाल हो उज्यार, निरगुण धार रिहा चलाया। सरगुण साजण कर प्यार, हरिजन मेल मिलाया। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, दर साचे आसण लाया। शाह सुल्ताना वड सिक्दार, शाहो भूप वेख वखाया। गोपी काहन कर प्यार, सीता राम मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम

वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, लक्ख चुरासी आप भुलांयदा। सगला संगी मीत मुरारा, साचा संग निभांयदा। वसणहारा सभ तों बाहरा, आप आपणा नूर डगमगांयदा। चार कुन्ट इक्क नगारा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, एका सिख्या आप सिखांयदा। पुरख निरँजण खेल अपारा, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। एका पुरख एका नारा, एका सेजा सुहांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, साची रुत्ती रुत्त वखांयदा। आत्म ताकी खोलू किवाड़ा, आपणा मुख वखांयदा। बुझाए अग्नी तत्ती हाढ़ा, पंज तत्त आप जलांयदा। साचे मन्दिर सच अखाड़ा, साची सखीआं आप वखांयदा। दो जहाना पार किनारा, आप आपणा बंक सुहांयदा। निरगुण जोत नूर कर उज्यारा, लोकमात वेख वखांयदा। सम्मत सम्मती पावे सारा, वीह सद बिक्रमी नाल रलांयदा। वीह सद पन्दरां कर विचारा, चौदां मुख सलांहयदा। चौदां हट्टां वणज वणजारा, चौदां तबकां मेल मिलांयदा। नूर अलाही खेल अपारा, परवरदिगार आप अख्वांयदा। ख़ालक ख़लक दए सहारा, आप आपणा वेस वटांयदा। निरगुण ब्रह्म कर विचारा, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। नाम सति सति वरतारा, सतिगुर पूरा आप वरतांयदा। फतिह डंक डंका जै जैकारा, वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू आप गजांयदा। त्रैगुण आपे वस्सया बाहरा, दिस किसे ना आंयदा। निहकलंका लए अवतारा, आपणा नाउँ धरांयदा। सोहँ शब्द वणज वापारा, लक्ख चुरासी आप करांयदा। वीह सौ पन्दरां सच दिहाड़ा, हाढ़ ग्यारां लेख लिखांयदा। गुर गुर कर वणजारा, साचे दर बहांयदा। दिवस रैण एका कारा, पंज पंज वेख वखांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, अन्दर बाहर आप अख्वांयदा। आपे भगती भरे भण्डारा, नाम नामा झोली पांयदा। आपे शब्द खण्डा बण तेज़ कटारा, गुरमुखां तन सुहांयदा। आपे अमृत बणया ठंडी ठारा, आत्म रस आप चखांयदा। आपे रण भूमी सुत्ता पैर पसारा, आपे सीस धड़ कट्ट वखांयदा। आपे कर सच प्यारा, आप आपणी गोद उठांयदा। आपे मीता पंच प्यारा, पंचम नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका भेद आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि का भेद कोई ना जाणे, वेद कतेब रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत जगत गाए गाणे, भगत भगवन्त करे वड्याईआ। गुरमुख विरला सन्त रंग एका माणे, जिस छड्डी सर्ब लोकाईआ। एका दर होए परवाने, एका मिले साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा लहिणा आपे दए चुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा, गुर गुर रूप वटांयदा। गुरमुख साचा लेवणहारा, आपणा लेखा ना कदे मुकांयदा। आपणा तन मन धन पाए गहिणा, बिन सतिगुर पूरे ना कोए छुडांहयदा। कलिजुग अन्तिम वखाए नैणां, वेला अन्तिम आंयदा। चार वरनां बणाए भाई भैणां, हरिसंगत नाउँ रखांयदा। लक्ख चुरासी

जूठा झूठा वहिण वहिणा, अन्तिम एका धक्का लांयदा। सचखण्ड दुआरे किसे ना बहिणा, धर्म राए राह तकांयदा। गुर गोबिन्द गुर साचा कहिणा, हरि साचा पूर करांयदा। जीवां जन्तां साधां सन्तां लक्ख चुरासी इक्क दूजे दे नाल खहिणा, ना पल्लू कोई तुड़ांयदा। राह तक्के लाड़ी मौत डैणा, राए धर्म हुक्म सुणांयदा। लहिंदी दिशा पाए वैणा, आपणा गेड़ा आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। वेखणहार पुरख समरथ, समरथ पुरख अख्वाया। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थ, ना कोई उधार कराया। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, दहि दिशा रिहा फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका धार इक्क विचार, एका रिहा वखाया। एका धार नानक गुर, कलिजुग मात चलाईआ। पैंती अक्खरी आपे बौहड़, आपे वेख वखाईआ। आपे लाया आपणा पौड़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवन्जा अक्खर करे वक्खर, बावन बावन वेस वटाईआ। ईश्वरी अक्खर बावन, भेव किसे ना पाया। पैंती अक्खर सारे गावण, सत्त सतारां दिस ना आया। एका बाण मारे रावण, सीता सुरती ना कोए छुडाया। कान्हा कृष्ना ना होए ज़ामन, अर्जन रथ ना कोए चलाया। चार यार ना पकड़े दामन, संग मुहम्मद ना कोए रलाया। कलिजुग मेला कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। गोबिन्द गुर मिल्या ज़ामन, साचा मार्ग इक्क वखाया। पुरख अबिनाशी मेटे तृष्ना तामन, पुरख अकाल इक्क मनाया। कलिजुग अन्तिम होए ज़ामन, निहकलंक नाउँ रखाया। लोआं पुरीआं मेटे रैण अन्धेरी शामन, साचा चन्द इक्क चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां कर विचार, चौदां रक्खी एका धार, अठसठ खिच्चे चरन दुआर, गंगा गोदावरी रही कुरलाया। अठसठ तीर्थ गुर के चरन, दूजा तट ना कोई वखाईआ। खोल्हणहारा हरन फरन, घट मन्दिर मेल मिलाईआ। दाता दानी करनी करन, करता पुरख आप अख्वाईआ। गेड़ चुकाए मरनी मरन, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लहिणा चुक्के वरनी वरन, वरन गोत ना कोई बणाईआ। गुरमुख विरले सरनी पड़न, जिस बख्शे सच सरनाईआ। निरगुण रूप तरनी तरन, तारनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चार कुन्ट रंग रता। सृष्ट सबाई धूंआँधार, ना जाणे कोई गुर मता। लक्ख चुरासी नार विभचार, ना दीसे धीरज सता। चारों कुन्ट हाहाकार, बहत्तर नाड़ी उबली रता। किसे ना मिल्या हरि सज्जण मीत मुरार, ना होया ठंडा तत्ता। गुरमुखां करे आप प्यार, बीज बीजे साचे वता। सम्मत सोलां सच विहार, आपे करे पुरख बिधाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल इक्क इकांता। अकल

कल धार अकल कल धारी, अकल कल अख्वाईआ। निरगुण जोत जोत निरँकारी, आदि निरँजण वड वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपारी, अलख अगोचर भेव ना राईआ। शब्द शब्द कर जैकारी, शब्दी शब्द शब्द कराईआ। चौथे जुग पावे सारी, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। ब्रह्मा मनवन्त्र होए खुआरी, शब्द तीर एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे आपणी डोर, आपे रिहा खिचाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकारा, हरि हरि खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी लए अवतारा, लोकमात वेख वखांयदा। आपे घड़े आपे भन्नणहारा, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। आपे सन्त साध करे प्यारा, भगत भगवन्त मेल मिलांयदा। आपे दूतां दुष्टां पाए सारा, लंका गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे वेखणहारा धुँधूकारा, प्रकाश आकाश आप सुहांयदा। आपे रवि ससि मण्डल तारा, धरत धवल आप हो जांयदा। आपे गगन मण्डल कर पसारा, लोआं पुरीआं आसण लांयदा। आप सुहाए सचखण्ड दुआरा, थिर घर आपणा आसण लांयदा। आपे दीपक जोती कर उज्यारा, आपे डगमगांयदा। आपे शाहो भूप सिक्दारा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपे सति पुरख निरँजण खेले खेल अपारा, अगम्मड़ी कार आप करांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। भगतां आत्म खेल न्यारा, सम्मत सोलां राह तकांयदा। ग्यारां हाढ़ दिवस विचारा, गुरमुखां मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्द कर प्यारा, सिँघ गोबिन्द लेख लिखांयदा। वज्जे किंग नाम सितारा नाम सुरंगी हथ्थ उठांयदा। अनहद मृदंगा गाए वारो वारा, बहत्तर ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। छत्ती राग ना पायण सारा, नारद मुन सुरस्ती मुख सलांहयदा। गा गा थक्का सर्ब संसारा, हरि का शब्द दिस ना आंयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, दर साचे सोभा पांयदा। आपे राम कृष्न अवतारा, नानक गोबिन्द आप अख्वांयदा। अन्तिम कलिजुग लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गुरमुखां भरया शब्द भण्डारा, आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर झिरना हरि झिरांयदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़ा, नौ दुआर पार करांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। मेल मिलाए सच दुआरा, घर मन्दिर कुण्डा लांहयदा। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारा, आपणी करवट आप बदलांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, आपणी गोदी आप उठांयदा। धन गुरसिख सच दुलारा, गुर गोबिन्द रसना गांयदा। कलिजुग अन्तिम लाहे उधारा, पिछला लहिणा ना कोई रखांयदा। पहलां करे जगत विहारा, सृष्ट सबाई फेर उठांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां मारे मारा, सीस ताज ना कोई टिकांयदा। साधां सन्तां करे भिखारा, दर मंगण भिख ना पांयदा। कूड़ा मेटे कूड़ हँकारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। साचा शब्द सच जैकारा, सो पुरख निरँजण आप लगांयदा। साचे दिवस सच विहारा, हरिसंगत आप करांयदा। आपे लाल आपणा

आप वारा, सीस जगदीस भेट चढ़ांयदा। राग छतीस ना कोए उचारा, अञ्जील कुरान ना कोई गांयदा। वेद पुराण ना लाए नाअरा, ना कोई हवन गवन वखांयदा। इष्ट देव हरि इक्क अवतारा, एका पुरख अख्वांयदा। नूरी जल्वा नूर अपारा, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां सोलां धार, गुरमुखां करे आप श्रृंगार, सोलां इच्छया देवे वर, पाए भिच्छया हरि करतार, करे रच्छया विच संसार, दूसर दर ना कोई वखाईआ। साचा दर हरि सुहञ्जणा, हरि साचे आप सुहाया। पुरख अबिनाशी जोत जगाई आदि निरँजणा, निरगुण दीप डगमगाया। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर लए तराया। नेत्र नाम पाए अंजणा, जो जन सरनाई आया। चरन धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल दए गंवाया। धुन अनादी ताल एका वज्जणा, अनहद साचा दए वजाया। सतिगुर पूरे पर्दा कज्जणा, शब्द दोशाला हथ्थ उठाया। काल नगारा कलिजुग वज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाया। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाया। संगी साथी किसे ना पर्दा कज्जणा, वेले अन्तिम देण तजाया। हरि चरन दुआरे अमृत पी पी रज्जणा, कलिजुग वेला अन्तिम आया । गुरमुख मीत प्यारे साचे सज्जणा, जुग जुग तेरा राह तकाया। लक्ख चुरासी लौण ना देवे अज पज्जणा, ना कोई सके मुख छुपाया। बीस सद बीस बिक्रमी नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मदिरा मास सभ ने तजणा, रसना पान बीड़ी ना कोई लगाया। गुरसिख साचे धुर दरगाही राजन राजना, शाह सुल्तान बणके आया। प्रगट होया देस माझना, शब्द डंका रिहा वजाया। चिट्टा अस्व एका ताजना, शाह अस्वार आप दौड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां कर प्यार, गुर संगत वखाए हरि दुआर, हरि का रूप नज़री आया। हरि दुआर हरि का रूप, हरिजन विच टिकाईआ। गुरसिख तेरा सति सरूप, गुर नानक मुख सलाहीआ। कबीर दुआरे देवे धूप, ब्रह्म अग्नी नित जलाईआ । आत्म राम एका सुख, सुख सहिज सेव कमाईआ। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, जिस मिल्या दाता बेपरवाहीआ। मात गर्भ सुफ़ल होई कुक्ख, लक्ख चुरासी कट्टी जम की फाहीआ। उज्जल होया लोकमात मुक्ख, जो जन दर आपणे लए मिलाईआ। हरिसंगत निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग बूटा जाणा सुक्क, प्रभ साचा जड़ उखड़ाईआ। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, सोहँ शब्द हथ्थ ना आईआ। गुर नानक गाया लुक लुक, हरि साचा करे रुशनाईआ। सिँघ शेर शेर रिहा बुक्क, सिँघ शेर नाउँ रखाईआ। गुरसिखां भार आपे चुक्क, कलिजुग पैंडा रिहा मुकाईआ। उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। करोड़ तेतीस देवी देव सुरपति इन्द ब्रह्मा विष्न शिव सुखना रहे सुख, कवण वेला हरि हरि दर्शन पाईआ।

ना हरि मानस ना मानुख, गुरमुखां अन्दर आपणा आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणी बीज फुल फुलवाड़ी, हरि साचे कर्म कमाया। कृष्न अर्जन मिल्या वार ग्यारां हाढ़ी, गुड़गाउँ दरोना अचारज धाम सुहाया। कलिजुग अन्तिम होए पिछे अगाड़ी, आप आपणी सेव कमाया। हरि का रूप ना कोई मुच्छ ना कोई दाढ़ी, ना कोई मूंड मुंडाया। गुर गोबिन्द बणाया लाड़ी, साचा लाड़ा आप सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग द्वापर तेरा लहिणा, गोबिन्द गहिणा कलिजुग अन्तिम वेखण आया। गोबिन्द गहिणा तन श्रृंगार, आपणा कर्म कमाया। सिँघ दया कर प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपणा आप अग्गे धर, आपणी झोली रिहा विछाया। पंचां बन्ने इक्क दस्तार, एका बंधन पाया। पंचां मेला मीत मुरार, पंचम दए मिलाया। चार चारे दए वार, चारे कुन्टां वेख वखाया। चार यारी करे ख्वार, भेव किसे ना पाया। दो दब्बे धरनी भार, दो मैंहदी लाल रंगण आप रंगाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, आपणा रूप ना कोई रखाया। कलिजुग करया कर्म विचार, जगत मार्ग इक्क रखाया। शब्द सुनेहड़ा देवे सांझे यार, मित्र प्यारे हाल सुणाया। खंजर प्याला मिठी धार, सूलां सेज रिहा हंढाया। पुरख अबिनाशी पावे सार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंका नाउँ रखाया। गोबिन्द तेरा डंका वज्जे सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्मी दए सुणाया। पंचां देवे सच्ची सिक्दार, सीस दस्तार आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया। नर नरायण हरि भगवान, भगवान वेस वटाया। लोकमात ना सके कोई पछान, वल छल धारी खेल खिलाया। लक्ख चुरासी बाल निधान, ब्रह्म ज्ञान ना कोई जणाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, शास्त्र भेव किसे ना आया। खाणी बाणी होए हैरान, हथ्थ किसे ना आया। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदवाला वेख मकान, काया मन्दिर ना कोए सुहाया। झूठ चलाई जगत दुकान, चौदां हट्ट ना हट्ट विकाया। जगत तृष्ना पीण खाण, आत्म रस हथ्थ किसे ना आया। मदिरा मास करन पान, माया ममता मोह ना कोई तुड़ाया। अन्तिम पीड़े कोहलू घाण, गुर पीर ना कोए छुडाया। प्रगट होए आया घर तरखाण, एका रंदा हथ्थ उठाया। लक्ख चुरासी करे पुण छाण, सद बख्शिंद वेस वटाया। देवणहारा नाम दान, नाम भण्डारा इक्क सुहाया। सोहँ शब्द धुर फ़रमान, सतिजुग साचा राह वखाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सारे गाण, भेव रहे ना राया। हाढ़ ग्यारां वड प्रधान, हरि साचे माण रखाया। सम्मत सोलां झुल्ले निशान, सतिगुर पूरा रिहा झुलाया। साधां सन्तां घर घर पई मकाण, हरि शब्द ना मेल मिलाया। हथ्थ ना आई साची खाण, बिन गुर पूरे कुंजी ना कोई फड़ाया। पूजा पाठ कर कर सुणाण, मन मनुआ ना किसे बंधाया। गुर

दर मन्दिर खाधा पूजा धान, अन्तिम लेखा देणा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, वीह सौ ग्यारां वड वड्याई देवणहार हरि रघुराई, आप आपणा रंग रंगाया। रंग रंगाया हरि चलूल, घर सज्जण मेल मिलन्नया। जुग विछड़े ना जाए भूल, देवणहार श्री भगवानया। गुर संगत गुरमुख लोकमात उपजाए साचे फूल, सतिजुग साचा चड़्हे चन्नया। हरिजन सच पंघूड़ा रिहा झूल, सतिगुर पूरे बेड़ा बन्न्हया। मेल मिलावा कन्त कन्तूहल, मेल मिल्या चिरीं विछुन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण आपे चुणया। गुरसिख सज्जण तेरा सच मुनारा, हरि साची जोत जगाईआ। निर्मल दीपक कर उज्यारा, एका मन्दिर रिहा सुहाईआ। आपे वेखे वेखणहारा बैठ न्यारा, निरगुण नूर बेपरवाहीआ। साचे घर मंगलाचारा, आपणा मंगल आपे गाईआ। साची सखीआं मीत मुरारा, साख्यात नज़री आईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजाईआ। नेत्र दर्शन कँवल नैण निरँकारा, निज नेत्र वेख वखाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर झिरना रिहा झिराईआ। गुरमुखां लेखा चुक्के नौ दुआरा, नौ दर ना कोई हल्काईआ। खोल्हण आया बन्द किवाड़ा, सम्मत सोलां राह तकाईआ। सम्मत सतारां ग्यारां हाढ़ा, एका अग्गे एका पिछे आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ । शब्द सुनेहड़ा हरि मृगिन्द निरगुण नूर अलाहीआ। गुरमुखां मेटणहारा चिन्द, सगली चिन्त गंवाईआ। बख्शे धार सागर सिन्ध, गहर गम्भीर अख्वाईआ। हरिसंगत बणाए साची बिन्द, सुत्त अनादी आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मेल मिलाईआ। हाढ़ ग्यारां नौ दस धाड़, अट्ठ तत्त वेख वखाया। सति पुरख निरँजण साची कार, छे दर वेस वटाया। पंचम मीता हो त्यार, चौथे पद दए मिलाया। तीजे नेत्र खोल्ह किवाड़, आप आपणा दरस दिखाया। दूई द्वैती देणी मार, एका रंग रंगाया । इक्क अकल्ला एकँकार, निरगुण सरगुण वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। हरिसंगत करया सच प्यार, सच दुआरा इक्क सुहाया। डुब्बदे पाथर जाए तार, मूर्ख मुग्ध अञ्याण लए बचाया। जो जन बणे दर भिखार, नाम झोली दए भराया। मेल मिलाए गुर करतार, शब्द विचोला विच रखाया। साचा ढोला गाए हरि संसार, सोहँ बोला आप जणाया। बणया तोला गिरवर गिरधार, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। बदलया चोला ना कोई पाए सार, सम्मत सोलां राह तकाया। ग्यारां हाढ़ आपणी संगत आपे मवला, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। उलटा करे नाभ कँवला, चार युग जो उलटा वखाया। मंगे मंग धरनी धवला, अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाया। लेखा जाणे साँवल सँवला, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच त्यौहार कर

विहार, पंचम मारनहारा मार, आपणी करनी रिहा कराया। सम्मत सोलां वीह सौ ग्यारां हरि साचे कर्म कमाया। गुरमुख साजण मीत मुरारा, दर साचे सद बहाया। निरगुण सरगुण करे कारा, करनी करता करदा आया। एका रंग रंगाए पुरख नारा, नारी नर ना कोई जणाया। दो जहानां पावे सारा, एथे ओथे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुच्च सुहाया। सच विहार करने योग, आपणी किरत कमांयदा। पहलों कट्टे हउमे रोग, माया ममता दर दुरकांयदा। गुरमुखां मेटे चिन्ता सोग, काम क्रोध नेड़ ना आंयदा। पार कराए चौदां लोक, रवि ससि मण्डल मण्डप चरना हेठ दबांयदा। शब्द सुणाए इक्क सलोक, हँ ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। देवणहारा साची मोख, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मार पंचम ख्वार, पंच मीत पंच धुन्कार, पंच जैकार आप लगांयदा। पंचम मारे कर ख्वार, पंचम वड वड्याईआ। पंचम देवे दर दुरकार, पंचम सोभा दर घर पाईआ। पंचम करन हाहाकार, पंचम मंगल हरि हरि गाईआ। शब्द विचोला बण करतार, कलिजुग अन्तिम जोड़ जुड़ाईआ। हाढ़ ग्यारां दिवस विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण रिहा समझाईआ। हाढ़ ग्यारां सच तारीख, एका वंड वंडाईआ। कान्हा कृष्णा रक्खे उडीक, एका राह तकाईआ। गुर गोबिन्द काले उत्ते खिच्ची लीक, आपणा लेख गया लिखाईआ। पुरख अकाल मंगी भीख, प्रभ भिच्छया झोली पाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा चुक्के लक्ख चार हज़ार बतीस, पंचम झोली पाईआ। छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। ना कोई करे तेरी तेरी रीस, जूठी झूठी मेटे लशकर शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणी कल वरताईआ। कुलवन्ता हरि भगवन्ता, अकल कला अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, आदि अन्ता वेस वटांयदा। गुरमुखां उठाए साचे सन्तां, भगतां मेल मिलांयदा। सतिजुग बणाए साची बणता, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सेहरा सीस दस्तार, आपणी हथ्थीं आप बनांयदा। सच दस्तार सीस ताज, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। दो जहानां साचा राज, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। आप उठाए मारे वाज, सुत्या लए जगाईआ। दिवस रैण रिहा भाज, औदा जांदा दिस ना आईआ। सम्मत सोलां रचया काज, हाढ़ ग्यारां साह सुधाईआ। हरिसंगत चढ़ाए सच जहाज, नाम चप्पू एका लाईआ। वेले अन्तिम रक्खे लाज, हाढ़ सतारां लेखा दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। सुरत शब्द मेल मिलाउणा, मिलणी हरि करांयदा। कुड़म कुड़माई साची आउणा, घर साचा वेख वखांयदा। धी जवाई इक्क बणाउणा, एका वेस वटांयदा। एका सेजे आप सुहाउणा, दूजा दर ना कोई बणांयदा।

एका बस्त्र काया चोली रंग रंगाउणा, रंग मजीठी इक्क रंगांयदा। हरिसंगत तेरा पन्ध मुकाउणा, तेरी डोली आपणे कंध उठांयदा। जगत कहार आप अख्वाउणा, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। दरगाह साची सच्चा धाम सुहाउणा, सुहांयदा। दर दरवाज़ा आप खुल्हाउणा, आपणा हुक्म सुणांयदा। गुरमुखां साचे धाम बहाउणा, आप आपणी सेव कमांयदा। जगत सुत्त फेर बहाउणा, पूरन इच्छया पूरन पूरी आप करांयदा। पिछला वेला आप सुहावणा, चौथे चौथे धार रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्चा वर, सोलां सोलां वेख वखांयदा। सम्मत सोलां चढ़या चा, त्रैलोक वजी वधाईआ। पुरीआं लोआं रहे गा, मंगलाचार हर घट थाँईंआ। साध सन्त नेत्र रहे उठा, राह तक्कण साचे माहीआ। मनमुख जीव रहे कुरला, कलिजुग अग्नी एका लाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। अन्तिम प्रगट होया जगत मलाह, निहकलंका नाउँ रखाईआ। करन आया सच न्याँ, एका तोला तोल तुलाईआ। लहिणा चुक्के पुत्तरां माँ, भैण भाई ना वंड वंडाईआ। अड अड करे हँस काँ, काग हँस वेख वखाईआ। जिस जन जपाए आपणा नाँ, आप आपणे विच मिलाईआ। निथाव्याँ देवे सच्चा थाँ, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
६४७ हरिसंगत तेरा सच व्याह, घर साचे होए कुड़माईआ। घर व्याह घर सच्चा पाया, घर मन्दिर सोभावन्त। साचा सच नज़री ६४७
०८ आया, धन्न सोभागण सोभावन्ती मिल्या हरि हरि कन्त। ना मरे ना कदे जाया, आदि जुगादि महिमा अगणत। फड़ निमाणी ०८
गले लगाया, इक्क सुणाया सुहागी छंत। अंगीकार अंग कराया, बणाई साची बणत। साचा रंगण रंग रंगाया, उतर ना जाए आदि अन्त। हरि सज्जण नाम महिकाया, पिर पाया धन हरि भगवन्त। साची हाढ़ी ख़ुशी मनाया, लेखा चुक्के जीव जन्त। कलिजुग अन्तिम नेड़े आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचां देवे सीस ताज, आप आपणी दए वड्याआ। गुरसिख तेरी वड वड्याई, गुर सतिगुर तेरी सेव कमाईआ। हरिजन तेरी वड वड्याई, हरि हरि दर तेरे वेस वटाईआ। हरिसंगत तेरी वड वड्याई, तेरी भगती हरि कमाईआ। हरिसंगत तेरी वड्याई, हरि तक्की तेरी सरनाईआ। बिन तेरे प्रगट होए ना किसे थाँईं, साध सन्त रहे धूंणीआँ ताईआ। सन्त सुहेले भुजां बांही, गुरसिख आपणे बल रखाईआ। आपणी काया जगत विहार हरिसंगत तेरे चरनां हेठ वछाई, तेरी धूढ़ी रहे सीस जगदीस छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा प्यार अमृत धार, नेत्र नीर छहिबर लाईआ। हरिसंगत तेरा सच प्यार, सतिगुर पूरा इक्क वखानया। लक्ख चुरासी झक्ख रही मार, रूप अनूप शाहो भूप दर दरवेश ना किसे दरसानया। मानस मानुख गए हार,

आत्म ब्रह्म ना कोए वखानया। तीर निराला मारे बाण, अणयाला तीर ना कोए चलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा साचा घर, कलिजुग अन्तिम करे परवानया। संगत तेरा सच दुआर, हरि साचे आप प्रनाया। गोबिन्द लेखा लिख अपार, सम्बल नाउँ धराया। वेद व्यासा कर विचार, पूत सपूत ब्रह्मण गौड़ राह तकाया। हरि का खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणा करदा आया। वेले अन्तिम लए अवतार, निरगुण नूर करे रुशनाया। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर विच अपार, घर साचे डेरा लाया। आपे खेले खेलणहार, खेल खिलंता खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सगन आप मनाया।

इक्क अकल्ला एकँकार, हरी हरि आप अख्वांयदा। छे दर पावणहारा सार, दर दरवेश वेस वटांयदा। बीस बीसा ख़बरदार, बलधारी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। पंच प्यार पंच प्रधान, पंचम वड वड्याईआ। पंचम शब्द पंच निशान, पंच रिहा झुलाईआ। पंचम नाम पंचम ज्ञान, पंचम रिहा दृढ़ाईआ। पंचम धूढ़ पंचम अशनान, पंचम पंचम रहे कराईआ। पंचम माण पंचम अभिमान, पंच पंचां वेख वखाईआ।

पंच चिल्ला पंच तीर कमान, पंच खण्डा नाम वखाईआ। पंच जोद्धा सूर बली बलवान, बल धारी आप हो जाईआ। पंच खेले दो जहान, पंच लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम पाया हरि गुर मीता, घर सज्जण वड वड्याईआ। बैठा रहे इक्क अतीता, आप आपणी कल वरताईआ। आप चलाई साची रीता, जुग जुग वेस वटाईआ। आपे ठंडा आपे सीता, सांतक सति आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करे आप पढ़ाईआ। पंचम देवे धुर फ़रमाना, धुन आत्मक आप सुणाईआ। शब्द अनादी साचा गाणा, आपे आप अलाईआ। मेल मिलाया शाह सुल्ताना, तख्त ताज इक्क वखाईआ। गुरसिख रहिणा अन्दर भाणा, हरि भाणे वड वड्याईआ। तख्तो लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां रिहा सुणाईआ। हाढ़ ग्यारां दिवस सुहावणा, पंचम दए वड्याईआ। साचा ताज सीस टिकावणा, शाह सुल्ताना खाक मिलाईआ। जगत राजाना आप उठावणा, घर घर अग्नी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज रचना आप रचाईआ। गुरसिखां देवे वड भण्डार, मनमुखां करे हल्काया। गुरमुखां बन्ने सीस दस्तारा, आप आपणी सेव कमाया। जगत शाही दए हुलार, चारों कुन्ट वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, दिवस रैण एका नैण, आपणा दरस दए वखाया। पंच प्यारे रहिणा त्यार, वेला अन्तिम आंयदा। घर फड़न आए सरकार, साचा सगन मनांयदा। हथ्थकड़ी लवौणी कर प्यार, जगत बंधन आप तुड़ांयदा। अग्गे चले शाह अस्वार, आप आपणा कदम उठांयदा। सोहँ जैकारा नाअरा लाए विच संसार, अदली अदल कमांयदा। बन्दीखाने कोई ना सके वाड़, वाड़ गढ़ हँकार आप तुड़ांयदा। पंचम मीता पंचम पहला करे त्यार, आप आपणे लड़ बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वाली हिन्द आप उठांयदा। वाली हिन्द उठया जाग, हरि साचे जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई लोकमात नौ खण्ड बुझणा चिराग, दीवा बत्ती ना कोई जलाईआ। उच्चे मन्दिर उडने काग, हरि साचा दए उडाईआ। बिन सिँघ पूरे किसे ना पकड़े वाग, पिछला लेखा दए समझाईआ। अस्सू तिन्न रक्खणा याद, वीह सौ तेरां बिक्रमी दए गवाहीआ। राज मन्त्री ना सुणे कोई फ़रयाद, ना दिसे कोई सहाईआ। प्रभ का खेल आदि जुगादि, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हाढ़ ग्यारां कर प्यार पंच जणाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीता, गुर गुरमुख तेरी काया गुरदुआर इक्क बणाया। गुरसिख तेरा काया हट्ट, हरि साचे आप खुल्हाया। जोती जगे लट लट, दिवस रैण डगमगाया। दुरमति मैल देवे कट्ट, अमृत आत्म जाम प्याया। इक्क वखाए तीर्थ तट्ट, अठसठ नहावण कोई ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा गोबिन्द पाया गहिणा, कलिजुग अन्तिम भाणा सहिणा, सिँघ बिशन तेरी वड्याईआ। भाणा सहिणा हरि आप सहाई, अट्ठे पहर नज़री आईआ। इक्क छिन विछड़ ना जाई, लड़ फड़या बेपरवाहीआ। घर मंगल गाउणा चाँईं चाँईं, चढ़या चन्न सृष्ट होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी प्रीत साची रीत, बिप्पर सुदामा नेह निहकामा, निहकर्मी आप कमाईआ। बिप्पर सुदामा जगत प्रीत, बाल बाला मेल मिलाया। आपे पतित आप पुनीत, आपे पापी लए तराया। आपे हस्त आपे कीट, आप आपणे विच समाया। आपे वसणहारा चीत, चित वित ठगौरी आपे पाया। आपे गाए सुहागी गीत, आपे बैठा मुख भवाया। आपे परखणहारा नीत, जुग जुग वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रीतम प्रीती वेख वखा, सिँघ प्रीतम तेरी प्रीती पाल, परम पुरख संग निभाया। सतिगुर पूरा दीन दयाल, कलिजुग सागर लए तराया। फल लगाए साचे डाल्ह, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। उत्ते देवे नाम रुमाल, सीस दस्तार इक्क बंधाया। चरन भिखार कराए काल महांकाल, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लेखा रिहा लिखाया। लेखा लिखणहार निरँजण, आदि पुरख अबिनास्सया। आपे गंगा गोदावरी करे मजन,

६४६ ०८

आपे बनारस थेटा पावे रास्सया। आपे होया पड़दे कज्जण, आपे कसीरा हथ्थ वटास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग खेले खेल तमास्सया। तेरा कसीरा कौडी मुल्ल, करता कीमत आपे पांयदा। ढोरू ढेर गया तुल, नाड़ी चमड़ा वेच वटांयदा। सच भण्डारा गया खुल्, हरि साचा वेख वखांयदा। गंगा धारा अमृत धार उपज्या कँवल फुल, फल फुलवाड़ी आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत लहिणा पूर करांयदा। रविदास रवीदास, रवि ससि करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना करे निरास, स्वास स्वास जो रहे ध्याईआ। साचे मण्डल पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। आपे जाणे लेखा दस दस मास, मात गर्भ वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पूरी करे आस, आप आपणे लड़ बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुख गुर गुर मुख आप मिलाईआ। मुख गुर गाए गुरमुख, गुरसिख वड वड्याईआ। कलिजुग धूंआँ रिहा धुख, तेरी हथ्थीं लम्बू लाईआ। जगत कंगन ना सके कोई चुक्क, पंडत पांधे रहे शरमाईआ। जिस दर्शन पाया नेत्र झुक, चरन दुआरा नज़री आईआ। प्रगट होए जो बैठा लुक, स्वच्छ सरूपी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दित्ता गुरमुख वर, गुर गुरमुख वज्जी वधाईआ। गुरमुख हरि दर सच्चा पाया, घर साचे सच्चा ढोआ। सतिगुर पूरा नज़री आया, भउ चुकया एका दूआ। दया दृष्टी जिस कमाया, सो जन जागे सोया। बटवारा कर विचारा बख्शे धारा, आदि जुगादी नवां नरोआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे जेहा आपे होया। आपे वड्डा वड वड्याई, भेव कोए ना पांयदा। मूर्ख मुग्ध लए तराई, जिस जन दया कमांयदा। बाल्मीक बटवारा बजवाड़ा वेखे थाउँ थाँईं, तन खाता फोल फुलांयदा। कलिजुग मेला सहिज सभाई, पिछली रीत नीत ना आप भुलांयदा। मिल्या मेल चाँईं चाँईं, गीत सुहागी एका गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द ज्ञान इक्क ध्यान हरि भगवान दर आपणा आप सुहांयदा। अट्ठे पहर दिवस रात, इक्क प्रभात एका रंग रंगाया। उत्तम होई लोकमात ज़ात, ज़ात अजाति मेट मिटाया। अमृत पीता बूंद स्वांत, निझर झिरना इक्क झिराया। गाया शब्द अनादी इक्क अकांत, इक्क अकल्ला रिहा सुणाया। सिँघ पाल तेरी पुच्छी वात, पिछला पला पूरा रिहा कराया। करे खेल बहु बिध भांत, बिध बिधना जोड़ जुड़ाया। अन्दर मन्दिर मारे झात, डूँघी कन्दर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सेहरा पहली वेरा, आपणी हथ्थीं गुरमुख साचे सीस बंधाया। साचा सेहरा हरि निरँकार, सिँघ इन्द्र सीस बंधाईआ। नाता तुट्टा सर्ब संसार, हरि चरन सेव कमाईआ। साचा वर कन्त भंतार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार जुगां सच्चा साथी,

लेखा लिखे ना कथना काथी, जगत रसना रही शरमाईआ। जगत रसना भेव ना राए, कलम मुख भवाया। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुग जुग जिस जन आपणी नज़री वेखे, सो जन जन्म मरन विच ना आया। आपणा रंग रंगाए मूंड मुंडाए धारी केसे, दस दस्मेसे वेस वटाया। राह तक्कण ब्रह्मा विष्न महेषे, गणपति गणेशे नैण उठाया। लए अंगड़ाई बाशक सेजे, विष्नूं आपणा चरन उठाया। वड वड्याई रिखी केशे, गुरसिख गवर्धन आप चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम दित्ता नाम वर, आपे वस्सया काया घर, घर साचा इक्क सुहाया।

पंचम घोड़ी चाढ़, हरि शब्दी घोड़ चढ़ाया। आदि शक्ती पाणी रही वार, साचा मंगल एका गाया। पुरख अबिनाशी वेखे हो त्यार, आप आपणा दर सुहाया। जोत निरँजण कर प्यार, वाग रही हथ्थ उठाया। शब्द विचोला फेरे मारे वारो वार, दो जहानां पन्ध मुकाया। साची सखीआं मंगलाचार, वाह वाह मंगल सोहणा गाया। सोहँ शब्द जै जै जैकार, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाया। नाता तुट्टा सर्ब संसार, घर कन्त सुहागी एका पाया। वज्जी वधाई धुर दरबार, प्रभ साचे मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे सज्जण हरि साचा रंगण रंग रंगाया। पंच प्यारे रंगे रंग, हरि हरि रंग अमोला। दर दुआरे मंगी मंग, रंगया काया चोला। शब्द अनादि वज्जे मृदंग, अनहद साचा ढोला। सर सरोवर आत्म गंग, उलटे नाभ कँवला। मानस जन्म ना होए भंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पाए सार उप्पर धवला। पंच प्यारे मिल्या मेल, हरि सज्जण सतिगुर पाया। जगत लिखारी भगत भिखारी चढ़े तेल, सिँघ दर्शन वेख वखाया। पंच विकारा पाए नकेल, चारों कुन्ट रिहा नचाया। आपे गुरू आपे चेल, आपे लेखा रिहा लिखाया। आपे सज्जण आप सुहेल, सखा सखाई आप बण जाया। आपे वसे रंग नवेल, आपे सिँघ दर्शन अन्दर मन्दिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंच प्यारे कर लिखारी, साचा सगन मनाया। पंच प्यारे शब्द लिखारी, चार जुग वड्यांअदा। सतिजुग तेरी सच्ची सिक्दारी, पंचां हथ्थ फड़ांयदा। आपे होए पहरेदारी, आपणी सेव कमांयदा। तेरी कीमत ना कोई पाए लक्ख हज़ारी, सतिगुर पूरा आपे आप चुकांयदा। गुरसिख आप उठाए वारो वारी, इक्की इक्की जोड़ जुड़ांयदा। हाढ़ सतारां निउँ निउँ करे निमस्कारी, निवण सो अक्खर एका मति समझांयदा। तोड़ निभाए लग्गी यारी, जो जन सथ्थर यार विछांयदा। गुरसिख तेरी सुरत सवाणी ना रहे कुँवारी, गुर का शब्द आप प्रनांयदा। मिले मेल साची हाणी, घर साचे मेल मिलांयदा। साचे मन्दिर साची बाणी, आपणा शब्द सुणांयदा।

६५१
०८

भेव खुलाए चारे खाणी, चारे बाणी रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत देवे साचे वर, जगत चुकाए झूठा डर, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। राए धर्म तुट्टा नाता, सतिगुर पूरे आप तुड़ाया। देवणहारा साची दाता, एका नाम वस्त झोली पाया। हरिसंगत तेरी सच बराता, दरगाह साची दए चढ़ाया। कलिजुग कूड़ा मारे ठाठां, चारे कुन्ट शोर मचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, साचा मेला आप कराया।

✪ १२ हाढ़ २०१६ बिक्रमी लछमण सिंघ दे घर वैरोवाल अमरजीत सिंघ दी शादी समें ✪

सतिगुर सच्चा साख्यात, पारब्रह्म गुर अवतारया। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्न चढ़ा रिहा। शब्द अगम्मी लए बरात, लोकमात वेख वखा रिहा। जन भगतां देवे साची दात, नाम ख़ज़ाना इक्क भरा रिहा। गुरमुखां करे उत्तम ज़ात, आप आपणा मेल मिला रिहा। आदि जुगादी इक्क अकांत, एकँकारा आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साची धार बंधा रिहा। सतिजुग साची बन्ने धार, चार वरन जणाईआ। शतरी शूद्र ब्रह्मण वैश ना कोई विचार, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणाईआ। एका शब्द इक्क प्यार, एका वणज कराईआ। एका दर सच्चा दरबार, दर मन्दिर इक्क खुलाईआ। ग़रीब निवाज़ा हो त्यार, लोकमात करे कुड़माईआ। राजन राजा शाह सिक्दार, आप आपणा हुक्म चलाईआ। वरते वरतावे वरत्नहार, आप आपणी कल वरताईआ। धरनी धरत धवल हो उज्यार, निर्भय रूप आप अख्वाईआ। जूनी रहित सिरजणहार, अकल कल वड्याईआ। नाद तूरत शब्द अपार, आपणा आप वजाईआ। पुरख अकाल मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शौह दरयाए आप रुढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम रुढ़या बेड़ा, हरि साचा आप रुढ़ांयदा। आपे देवणहारा गेड़ा, उलटी लठ्ठ गिढ़ांयदा। पंज तत्त विकारा जीआं जन्तां साधां सन्तां लग्गा झेड़ा, आत्म ब्रह्म ना कोई जणांयदा। पारब्रह्म दर खुल्ला वेहड़ा, भेव कोई ना पांयदा। करे कराए हक्क निबेड़ा, जुग जुग वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग लहिणा गया चुक्क, हरि सतिगुर आप चुकाया। मनमुखां पैंडा गया मुक्क, गुरमुखां राह वखाया। जूठयां झूठयां मुख पैणा थुक्क वेला अन्तिम आया। हरया बूटा रिहा सुक्क, अमृत सिंच हरा ना कोई कराया। आपणा भार ना लए कोई चुक्क, जगत

६५३
०८

ग्रन्थी होए हल्काया। प्रभ अबिनाशी बैठा लुक, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप चलाया। चार वरनां कर प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। चार वरनां शब्द ज्ञान, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। सतिगुर पूरा मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, एका शब्द जणाईआ। वरनां बरनां एका आण, अठारां बरनां बंधन पाईआ। राउ रंक राज राजनां शाह सुल्ताना, ऊँचां नीचां रिहा सुणाईआ। प्रगट होया श्री भगवाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ निशाना, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। ना कोई वेद ना पाठ पुराणा, गीता ज्ञान ना कोई वखाईआ। शास्त्र सिमरत ना करे ध्याना, ना कोई फोल फुलाईआ। ना कोई वेखे अञ्जील कुराना, ना बाईबल होए सहाईआ। खाणी बाणी ना होए प्रधाना, आप आपणी रचन रचाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, एका खण्डा शब्द उठाईआ। वेखणहारा दो जहाना, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचा राह सुहञ्जणा, हरि साचे आप सुहाया। पारब्रह्म प्रभ दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराया। गुरसिखां नेत्र पाए नाम अंजणा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। धुरदरगाही साचा सज्जणा, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा रिहा चुकाया। कलिजुग लहिणा आप चुकावणा, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। जूठा झूठा हरिसंगत विच कोई ना आवणा, गुरमुखां देवे वड वड्याईआ। मदिरा मासी ना कोई दर बहावणा, देवे दर दुरकाईआ। सचखण्ड दुआरा लोकमात बणावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ । सरगुण साचा मेल मिलावणा, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। पंचम सखीआं धुन अनादी मंगल गावणा, ताल तलवाड़ा हरि इक्क वजाईआ। अमृत धार ठंडी ठार आत्म रस इक्क वखावणा, निझर झिरना दए झिराईआ। साचा मन्दिर आप सुहावणा, काया खेड़ा दए वसाईआ। जुग जुग विछड़े मेल मिलावणा, नाम बंधन डोरी पाईआ। तिलक चन्दन मस्तक इक्क लगावणा, जोत लिलाट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची बणत बणाईआ। सतिजुग साचे हो प्रधाना, आया हरि दुआर। पुरख अबिनाशी निगहबाना, देवे इक्क ज्ञान। चार वरनां एका माणा, ऊँच नीच ना कोई रंक राजान। एका शब्द सारे गाणा, एका नूर श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जाणी जाण। सतिजुग साचा मार्ग लाउँणा, हरि सज्जण सच कुड़माईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, गुर सतिगुर दया कमाईआ। अनन्द कारज आप कराउणा, परमानंद समाईआ। निजा नंद रस चुआउणा, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। झूठा धन्दा मात मिटाउणा, एका रंगण रंग रंगाईआ।

६५३
०८

एका साची जोड़ी जोड़ जुड़ाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। नाम घोड़ी आप चढ़ाउणा, आपणे हथ्थ वाग उठाईआ। अन्तिम सखीआं मंगल गाउणा, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। मनमुख जीव कोई नज़र ना आउणा, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका राह चलाईआ। चार वरनां एका रंग, हरि सज्जण आप चढ़ांयदा। शब्द रंगीला वेख पलँघ, गुरमुख नारी आप बहांयदा। आपे लाए आपणे अंग, अंगीकार आप करांयदा। आपणे मन्दिर आपे लँघ, लोक लज्जया ना कोई रखांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा बणे मलाह, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, इक्क अकल्ला एकँकार आप अख्वांयदा। एकँकारा निरगुण जोत, हरि हरि रूप समाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बरन धराया। शब्द नगारा एका चोट, जुगा जुगन्तर रिहा लगाया। कलिजुग अन्तिम गुरमुखां कढ्ढे वासना खोट, दुरमति मैल दए धुवाया। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, हरि का रूप दिस ना आया। साधां सन्तां माया भरी ना अजे पोट, दिवस रैण होए हल्काया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर तेरा वेखण आया। कलिजुग कूड़ पसार, अन्त घर घर झूठ प्रधानया। जीवां जन्तां लग्गी बसन्तर, लग्गी अग्ग पंज शैतानया। गुर का शब्द ना जाणे मन्त्र, गुर नानक देवे ब्रह्म ज्ञानया। गुर अर्जन बणाई साची बणतर, गुरू ग्रन्थ इक्क वखानया। आपे जाणे जुगा जुगन्तर, जुग जुग खेल श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी बाणीआ। आपणी बाणी आपे बोल, आपे लेख लिखाईआ। आपे वसणहारा कोल, आपे वेख वखाईआ। आपे धरनी आकाश गया मवल, मौला रूप आप हो जाईआ। आपे अमृत आत्म भरया कँवल, सर सरोवर आप अख्वाईआ। आपे आदि अन्त रहे अडोल, ना मरे ना जाईआ। जन भगतां करे सदा चोल्ह, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। नाम कंडे देवे तोल, एका तोला आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी छाछ वरोल, गुरसिख मक्खण लए कढाईआ। मनमुखां कलिजुग अन्तिम कढ्ढे पोल, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, चार वरन जणाया। पुरख अबिनाशी पावे भिख, नाम भण्डारा इक्क वरताया। जगत तृष्ना मिटे तृख, तृप्त तृप्त कराया। आपणी हथ्थीं लेखा लिख, लिखणहार आप हो जाया। आपे मंगणहारा भिख, आपे झोली अग्गे डाहया। आपे आपणे नेत्र रिहा पेख, जगत नेत्र बन्द कराया। आपे मुच्छ दाढ़ी रक्खे केस, आपे मूंड मुंडाया। आपे दाता दानी दस दस्मेस, गुर गोबिन्द नाम धराया। आपे खेले खेल रिखी केस, कलिजुग गोवर्धन हथ्थ उठाया। आपे राम रामा हो प्रवेश, सीता सुरती

ल्ए उपाया। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, आपे गणपति नाम रखाया। आपे करोड़ तेतीसा करे अदेश, आपे सुरपति वेस वटाया। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग हंढाया। आपे सचखण्ड दुआरे नर नरेश, निरगुण नूर डगमगाया। आपे अलख अगम्म हर घट अन्दर रिहा वेख, आप आपणा आसण लाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वर धरया भेख, निहकलंका नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे कर प्यार, आपे बणे आपणी धार, दूसर कोई ना विच रखाया। शब्द विचोला कर त्यार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। साचा ढोला करे ख़बरदार, सोहँ अजपा जाप जपाईआ। प्या रौला सर्ब संसार, भेव अभेद भेव छुपाईआ। अछल अछल्ला हरि निरँकार, वल छल धारी खेल खिलाईआ। चारे वेद ना पायण सार, बरन अठारां रहे गाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकार, हरि सज्जण दिस ना आईआ। गुरमुख विरला करे विचार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन धूढ़ी मस्तक लाईआ। दुरमति मैल दए उतार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, घर घर विच मन्दिर वेख वखाईआ। उच्च महल्ल अटल मिनार, निरगुण आपणा आप सुहाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यार, तेल बाती ना कोई पाईआ। कमलापाती मीत मुरार, एका साचा माहीआ। गीत सुहागी गाए वारो वार, आप आपणा राग अलाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, साचे शब्द करी कुड़माईआ। सुरत सुवाणी कर त्यार, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। अमृत पाणी देवे वार, खण्डा धार मुख चुआईआ। बजर कपाटी देवे पाड़, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। पंचम धाड़ी कर ख्वार, साचा राह तकाईआ। आत्म सेजा हो त्यार, आपणीआं भुजा रिहा उठाईआ। साचा मेला कन्त भतार, नारी निरगुण मेल मिलाईआ। एका सेजा सुत्ते पैर पसार, दूसर दर ना कोई वखाईआ। अबिनाशी अचुत खेल अपार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सुहाए रुत्त विच संसार, लोकमात वज्जी वधाईआ। हाढ़ बारां दिवस विचार, वीह सौ सोलां बिक्रमी नाल रलाईआ। गुरसिखां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, साची शब्द करी कुड़माईआ। सतिजुग साचे वर घर पाउणा, हरि साचा कन्त कन्तूहलया। पुरख अबिनाशी इक्क मनाउणा, दूसर दर ना जाणा भूलया। नानक मार्ग इक्क रखाउणा, गुर गोबिन्द फलया फूलया। बेमुखां वहिंदी धार वहाउणा, जूठ झूठ मुकाए मूलया। सच सुच्च मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, पूरा करे कीता कौलया। चार वरनां एका सरन लगाउणा, आपे होया राम कृष्न नानक गोबिन्द साचा मौलया। ईसा मूसा वेख वखावणा, संग मुहम्मद चार यार आपे चढ़े उप्पर धौलया। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल आदि जुगादी इक्क अडोल्लया। आदि जुगादी जुग जुग कार, करनी करता आप करांयदा।

सतिजुग तेरा सच विहार, सतिगुर पूरा आप वखांयदा। गुरमुखां करे जगत प्यार, भगत भगती वेख वखांयदा। अन्दर मन्दिर इक्क दुआर, मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर चार दिवार ना रचन रचांयदा। साची बाणी अमृत धार, निझर झिरना आप झिरांयदा। अनहद हिलाए इक्क सतार, ताल तलवाड़ा इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, एका नाम तरांयदा। एका नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप उपाईआ। चार वरनां करे प्यार, सतिजुग साची वड वड्याईआ। अनन्द कारज जगत विहार, गुर मन्त्र दए सुणाईआ। सोहँ शब्द जै जैकार, पारब्रह्म विच समाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर, आप हो जाईआ। आपे नारी कन्त भतार, आपे सेज हंढाईआ। आप जोड़ी जोड़े अपर अपार, जोड़नहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा देवे वर, हाढ़ बारां कर विहारा साचा मार्ग एका लाईआ। हाढ़ ग्यारां संगत विहार, हरि साचे सच कराया। साची जंञ कर त्यार, घर साचे सोहला गाया। एका मीता पुरख अकाल, दूसर ओट ना कोई धराया। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध वेख वखांयदा। हरिसंगत तेरे तोड़े जगत जंजाल, कलिजुग बंधन रहे ना राया। देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट कोए ना जाया। इक्क वखाए सच सच्ची धर्मसाल, गुरदुआरा इक्क बणाया। ना कोई शाह ना कंगाल, सतिगुर बैठा आसण लाया। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाया। जिस घर दीवा बत्ती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचे देवे वर, दिवस राती एका रंग रंगाया। गुरमुख तेरी सच प्रभात, अट्ठे पहर जणाईआ। मिल्या मेल कमलापात, घर साचे वज्जी वधाईआ। सोहँ शब्द साची दात, सतिगुर पूरा झोली पाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता ना कोई तुड़ाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, सच सुच्च करे रुशनाईआ। कोई ना पुच्छे ज़ात पात, जो जन रसना हरि हरि गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचे शब्द करे कुड़माईआ। शब्द गुर गुरसिख धार, गुरमुख विच टिकाया। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा रंग रंगाया। वेखे विगसे करे विचार, अलख अलखणा भेव ना राया। अगम्म अगोचर बेऐब परवरदिगार, सांझा यार आप अख्वाया। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक इक्क ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका कलमा रिहा पढ़ाया। एका कलमा कायनात, हरि साचा आप पढ़ांयदा। नूर इलाही वेखे मार झात, आप आपणा वेस वटांयदा। मुकामे हक्क साची दात, हक्क हकीकत झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत निकाह बेपरवाह आपे वेख वखांयदा। जगत निकाह आपे कर, आपणा

रंग रंगाया। इक्क वखाए साचा घर, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। ना कोई पुरख नारी नार, नर नरायण आप हो जाया। गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, नबी रसूलां जोड़ जुड़ाया। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर एका पौड़े जायण चढ़, हरि साचे आप चढ़ाया। चार कुन्ट तोड़े किला हँकारी गढ़, कलिजुग वेला अन्तिम आया। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुर सतिगुर आपे लए फड़, सन्त विचोला इक्क रखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, जननी जन ना गोद उठाया। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, ना कोई इष्ट मनाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मात धराया। आपे राम रामा अवतारा, राम रामा वड वड्याईआ। आपे सीता सुरती करे प्यारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आपे वेद वेदांता बण लिखारा, एका विद्या ब्रह्म पढ़ाईआ। एका वेदी कर त्यारा, वेद शास्त्र दए गवाहीआ। साख्यात गुर करतारा, आप आपणा कर्म कमाईआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल न्यारा, जुग जुग आप कराईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। नानक बद्धी साची धारा, गुर अर्जन लेख लिखाईआ। पहली लाव प्रकृति तेरा पार किनारा, गुरमुख साचे बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह चलाईआ। इष्ट देव श्री भगवान, सति पुरख मनाया। दूजे शब्द शब्द ज्ञान, गुर मन्त्र इक्क दृढ़ाया। तीजे नेत्र इक्क ध्यान, एका राह तकाया। चौथे घर हो परवान, घर सज्जण वेख वखाया। पंचम मीता नौजवान, गुर पूरा आप अख्वाया। किसे ना वस्सया मन्दिर जगत मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। किसे ना विके हट्ट दुकान, चौदां लोक ना कोई विकाया। चौदां तबकां वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं फेरा पाया। जुग जुग खेले खेल महान, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। गुरमुखां करे दर परवान, जन भगतां मेल मिलाया। कलिजुग जीव सुत्ते बाल अञ्याण, माया पर्दा उप्पर पाया। राखी करन पंज शैतान, चारों कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाया। साची सिख्या पुरख नार, हरि साचा सच समझांयदा। सीता सुरती राम प्यार, सतिगुर मेल मिलांयदा। कान्हा कृष्ना वेख विचार, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। एका हक्क सर्ब संसार, एका कलमा आप पढ़ांयदा। नानक बीज बीजे साचे वत, नाम नामा झोली पांयदा। गुर अर्जन रक्खे आपे पति, गुरू ग्रन्थ लेख लिखांयदा। गुर गोबिन्द लेखे लाई रत्त, रत्ती रत्त लगांयदा। गुरसिखां दे समझावे मति, गुरू ग्रन्थ इक्क वखांयदा। सगल विसूरे जाण लथ्थ, जो जन सरनाई आंयदा। दूई द्वैती होए भट्ठ, भट्ठ खेड़ा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा देवे वर,

साची सिख्या सिख विचार, आत्म अन्तर इक्क विचार, दूसर ना कोई बन्ने धार, नेत्र नैण इक्क उज्यार, चौथे घर मेल भतार, साची नारी कन्त मिलांयदा । नारी कन्त हरि हरि मेला, गुर सतिगुर आप कराया। आपे गोला गुरू गुर चेला, चेला गुर आप अख्वाया। आपे सज्जण सज्जण सुहेला, सखा सखाई आप हो जाया। आपे वसे आपणे रंग नवेला, रंग रत्तड़ा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरा बस्त्र, तेरा गहिणा तेरा कज्जल तेरे नैणा जगत श्रृंगार कराया। कलिजुग नैण कज्जल धार, कूड़ो कूड़ वहाईआ। मनमुख नारी होई विभचार, झूठ श्रृंगार रही हंढाईआ। घर घर वेसवा होए ख्वार, ना पल्लू कोई फड़ाईआ। पुरख अबिनाशी देवे दर दुरकार, दरगाह साची कोई ना थाँईंआ। राए धर्म मारे मार, देवणहारा अन्त सजाईआ। जिस जन मिल्या नर निरँकार, नानक मेला सहिज सुभाईआ । नंना मुक्ता नानक हो त्यार, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। नन्ना स्सयारी ख़बरदार, दो जहानां फेरा पाईआ। कक्के औकड़ करे विचार, लोकमात वज्जे वधाईआ। त्रैगुण तेरा भेव अपार, रजो तमो सतो वेख वखाईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश कर त्यार, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। मन मति बुध दए अधार, निरगुण आपणी वस्त टिकाईआ। सरगुण साचा कर त्यार, नौ दर खोल्ह खुल्हाईआ। गगन मण्डल वेख विचार, रवि ससि आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, दु:ख दर्द रहे ना राईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, पारब्रह्म वेख वखाया। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। भगत सुहेला वसे पास, घर घर डेरा लाया। आपे वेखे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल फेरा पाया। साचे घर साची रास, गोपी काहन आप नचाया। हर घट अन्दर रक्खे वास, गुरमुखां पर्दा लाहया। मनमुख सुत्ते विच प्रभास, हरि हरि रूप दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचे देवे वर, धर धरनी धरत सुहाया। धरनी धरत धवल कर पुकार, नेत्र नीर रही वहाईआ। लक्ख चुरासी होई खुआर, चारों कुन्ट रहे कुरलाईआ। साधां सन्तां आई हार, हरि सज्जण ना कोई मेल मिलाईआ। मदिरा मास करन अहार, धृग धृग जीवण धृग जीवास, दरगाह साची कोई ना होए सहाईआ। नानक गोबिन्द ना वस्सया पास, वेले अन्त ना दए गवाहीआ। रसना गाया ना स्वास स्वास, मन तन धन गुर अग्गे ना भेट चढ़ाईआ। गुरसिख साचे बलि बलि जास, धन्न धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। तेरी आसा ना होए निरास, पूरन आसा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची नींह रखाईआ। सतिजुग साची नींह धर, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। नारी मिल्या साचा वर, शब्द विचोला

विच रखांयदा। आपणी करनी आपे कर, कर किरपा मेल मिलांयदा। नाम फड़ाया साचा लड़, ना छोड़े ना छोड़ छुड़ांयदा। दोहां अन्दर आपे वड़, हरि नारी वेख वखांयदा। मस्तक लेखा आपे पढ़, पिछला मेट मिटांयदा। दोहां जोती एका कर, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा सच वरतांयदा। सतिजुग साचा सच वरतावणा, सति सति सति आप कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मति इक्क उपजावणा, ब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। हँ ब्रह्म आप अख्वावणा, हँ रूप आप हो जाईआ। एकँकारा वेस वटावणा, ओंकारा खेल खिलाईआ। निरगुण धार धार चलावणा, सरगुण डेरा लाईआ। सरगुण साचा वेख वखाउँणा, निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, चार वरन करे कुड़माईआ। चार वरन जगत कुड़माई, हरि साचा सच जणांयदा। एका घर वज्जे वधाई, एका मंगल साचा गांयदा। एका मन्दिर दए सुहाई, एका जोत जगांयदा। एका शब्द सच्ची शनवाई, एका राग अलांयदा। एका मेला सहिज सभाई, एका गुर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची धार हरि निरँकार, आपणी किरपा आप करांयदा। चार वरनां सच्चा रंग, हरि सतिगुर पुरख चढ़ाया। सतिजुग साची मंगी मंग, अग्गे आपणी झोली डाहया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, देवे दान रिज़क सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिखां देवे साचा वर, एका शब्द शब्द सुणाया। सो पुरख निरँजण इक्क अकाल, एका एकँकारया। आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध आप अख्वा रिहा। करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण आप आपणा मेल मिला रिहा। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, अकल कला अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, पुरख अबिनाशी वड्डी वड्याईआ। हँ ब्रह्म कर त्यारा, आत्म जीव वंड वंडाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। नारी कन्त वेख भतारा, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। लिख्या लेख अपर अपारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां होए उज्यारा, हरि साचा आप कराईआ। लक्खण दीप खेल अपारा, पुष्कर वेख वखाईआ। करौच लाए एका नाअरा, जम्बु करे कुड़माईआ। सलमल तेरा सति सहारा, सान वड्डी वड्याईआ। कुशा करे इक्क प्यारा, आत्म ब्रह्म पढ़ाईआ। प्रगट हो विच संसारा, साची लाँव इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मर्यादा बंधन पाईआ। जगत बंधन आपे पा, आपे तन्द बंधांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग बणे जगत मलाह, शब्द विचोला नाल रखांयदा। जन भगतां पहलों पकड़े बांह, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों

हँस उडांयदा। आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणे आपणे आपे गोद उठांयदा। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर समरथ हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा साचा वर, साचा मेला मेल मिलांयदा। नारी कन्त जुड़या जोड़, हरि साचा सगन मनांयदा। आदि जुगादी जाए बौहड़, जुग जुग वेस वटांयदा। मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत फल इक्क खुवांयदा। दरगाह साची लाया पौड़, चौथे पौड़े आप चढ़ांयदा। प्रभ अबिनाशी गया बौहड़, दूजी ओट ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनन्द कारज आरम्भ आप करांयदा। अनन्द कारज चार वरन, एका पुरख अकाल मनाईआ। दूजा चुक्के जगत डरन, मिले मेल साचे माहीआ। तीजा खुल्ले हरन फरन, घर साचे वज्जे वधाईआ। चौथे घर आपे चढ़न, दोए मूर्ति जोत इक्क हो जाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंचम पंचम वार जै जै जै पढ़न, सतिजुग रीती आप चलाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद गुरसिख कदे ना वड़न, काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे दित्ता वर, नारी पिर वसे एका घर, घर साचे सगन मनाईआ।

✪ अमरजीत सिँघ दे अनन्द कारज दे पिच्छों शुभ अशीश सतिजुग धार ✪

पूत सपूता सुत्त दुलार, गुर गुरमुख रंग रंगाया। दर घर साचे कर प्यार, आप आपणा दरस दिखाया। देवे दरस अगम्म अपार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाया। अमृत अमर बख्शे ठंडी धार, अमरजीत सिँघ अतीत वखाया। साची रीत चली संसार, गोबिन्द लेखा दए मुकाया। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, गुरसिख तेरा खुल्हा वेहड़ा आप बणाया। भरया रहे नाम भण्डार, तोट रहे ना राया। नज़री आए हरि करतार, दूसर नैण ना कोई वखाया। गुरसिख ना उडे काग उडार, हँस हँसा आप बणाया। सोहँ माणक मोती चुगे विच संसार, गुर नानक रसना गाया। दुरमति मैल गई धोती, सतिगुर पूरे काज रचाया। जगत जोड़ी नाल बीबी जगीरो चढ़ी चोटी, बेमुखां राह दिस ना आया। तीर्थ तट्टां लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, ढूँघी कन्दर बैठे आसण लाया। जिस जन देवे पारब्रह्म अबिनाशी करता एकँकार एका शब्द सोटी, लोआं पुरीआं पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, बारां हाढ़ हो त्यार, वीह सौ सोलां बिक्रमी सतिजुग तेरा साचा मार्ग आप लगाया।

✪ १२ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल ✪

हरि सज्जण सतिगुर मीतड़ा, परम पुरख करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, आप आपणी किरपा धार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत बरखे ठंडी ठार। आदि जुगादी पतित पुनीतड़ा, पतित पापी जाए तार। जुगा जुगन्तर जाणे रीतड़ा, वरते वरतावे विच संसार। साचा मन्दिर गुरुदुआर गुरसिख काया इक्क मसीतड़ा, हरि सुत्ता पैर पसार। वेखे धाम नाम इक्क अनडीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल कर, खेले खेल सिरजणहार। धाम अवल्ला हरि निरँकार, आपणा आप उपांयदा। उच्च महल्ला कर त्यार, साचे मन्दिर डेरा लांयदा। इक्क अकल्ला ख़बरदार, आदि जुगादी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करता करनेहार, अबिनाशी करता खेल अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, अकल कला अख्वाया। आदि जुगादी जुगा जुगन्त आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त आप उपाए आपे देवे मथ, वेखणहार आप हो जाया। बोध अगाधी शब्द धुन अकथना अकथ, पारब्रह्म आपे लए उपाया। आपे जाणे पूजा पाठ, मन्त्र ज्ञान नाम आप दृढ़ाया। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, साचा तीर्थ आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रीता वेख वखाया। वेखणहारा हरि निरंकारया, हरि सतिगुर शहिनशाह। निरगुण नूर करे उज्यारया, सतिगुर पूरा बेपरवाह। खेले खेल अगम्म अपारया, लोकमाती जोत जगा। जन भगतां देवे नाम अधारया, एका मन्दिर मेल मिला। शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा, सोहँ ढोला साचा गा। पिछला लहिणा मूल चुका रिहा, अग्गे आपणे मार्ग पा। साचा मार्ग इक्क वखा रिहा, चार वरनां पकड़े बांह। उचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहा ल्या, वेखणहारा एका थाउँ थाँ। सच सनेहुड़ा इक्क सुणा ल्या, फड़ फड़ हँस बणाए काँ। डुब्बदे पत्थर आप तरा ल्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रथ आप चला ल्या। रथ रथवाही हरि निरँकारा, हरि हरि रूप समांयदा। इक्क अकल्ला कर पसारा, जलां थलां वेख वखांयदा। नौ खण्ड तेरा वेस अपारा, नर नरेश वेस वटांयदा। चार कुन्ट दहि दिशा होए ख़बरदारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। भगत वछल वछल गिरधारा, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। तार सितार वजाए सितारा, नाम सुरंगी आपणे हथ्थ उठांयदा। नानक निरगुण करे नाम वणजारा, साचा हट्ट इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी कल आप वरतांयदा। कलिजुग वरते हरि हरि कल, अकल कला कल धारया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, जोती जामा भेख अपार, वसे नेहचल धाम अटल, उच्च महल्ल अगम्म अपारया।

पावे सार जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी खेल खिला रिहा। खेल खिलंता हरि भगवन्ता, आदिन अन्ता जोत जगांयदा। पुरख अबिनाशी नारी कन्ता, चाढ़े रंग इक्क बसन्ता, साची सेजा आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी बणाए बणता, आपे जाणे आपणी मनता, शब्द ज्ञान आपणा आप दृढ़ांयदा। आपे साधन आपे सन्तां, आपे माया पाए बेअन्ता, भरम भुलेखे आप भुलांयदा। आपे जीव आपे जन्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे शाह आपे सुल्तान, सच सिक्दार आप अख्वाईआ। आपे राज आप राजान, आपणा हुक्म आप चलाईआ। आपे दर दरवेश बण दरबान, दर बैठा अलक्ख जगाईआ। आपे अलख निरँजण हो प्रधान, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आपे उठाए सच निशान, थिर घर साचे आप झुलाईआ। आपे जोद्धा सूर बली बलवान, एकँकारा आप अख्वाईआ। आपे शब्द खण्डा तीर कमान, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। आपे मन्दिर मस्जिद बण मकान, पूजा पाठ आप कराईआ। आपे हवन पवण सुगंध वेख वखान, धूंआँधार आप हो जाईआ। रवि ससि कर प्रधान, मण्डल मण्डप आपे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि हरि मौला, हरिजन जन मिलानया। नाम वणजारा नाम कंडे साचे तुला, पावे मुल सर्ब संसारया। एका धारन एका बोला, एका ढोला रसना गा ल्या। एका काया एका चोला, शब्द विचोला इक्क बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोती इक्क जगा ल्या। जागरत जोत जगत जगा, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। सतिगुर साचा सगन मना, घर वसे बेपरवाहीअ। आपणी सिख्या आप सुणा, आपणी झोली पाईआ। आपणा लिख्या आपे दए मिटा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी भेटा दए चढ़ा, आपे पोच पुचाईआ। खेवट खेटा आप अख्वा, आपणी नईआ आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। घर मन्दिर हरि जाणया, परम पुरख करतार। गुरमुख विरले मात पछाणया, जिस जन बख्शे चरन प्यार। कलिजुग जीव सुत्ता बाल अञ्याणया, ना देवे कोई हुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। कार करंदड़ा दिवस रैण, परम पुरख अख्वाया। धाम सुहंदड़ा साक सैण, सज्जण मीत बण जाया। जुगा जुगन्त चुकाए लहिण देण, आपणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाया। दरस विखंदड़ा दिवस रैण, नेत्र नैण इक्क खुल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा वेख वखाया। घर साचे हरि जोत अकाली, निरगुण आप जगाईआ। एका मंगे नाम दलाली, एका मति समझाईआ। शाह शहाना हक्क

६६२
०८

हलाली, हक्क बहक्क वेख वखाया। गुरमुख विरले घाल घाली, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख मस्तक चढ़े लाली, मनमुख रोवे दए दुहाईआ। धुर दरगाही साचा माली, लोकमात फेरा पाईआ। जुगा जुगन्त अवल्लड़ी चाली, चाल निराली इक्क चलाईआ। लक्ख चुरासी वेखे फल पत्त डाल्ही, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा इक्क सुहाईआ। साचा दर सच दरबारा, हरि साचे सच खुल्हाया। आदि निरँजण हो उज्यारा, जोत निरँजण वेख वखाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, तन मन्दिर आप वजाया। आपे होए सुनणेहारा, दिस किसे ना आया। खेले खेल गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर भेव ना राया। ना कोई पुरख ना कोई नारा, नर नरायण नाउँ धराया। ना कोई सज्जण ना कोई सैण ना कोई मीत मुरारा, भाई भैण ना कोई बणाया। गुरमुखां करे इक्क प्यारा, जुग जुग आपणा वेस वटाया। लेखा लिख्या वीह सौ बिक्रमी साल बारां, बारां बारां लेख जणाया। बारां रासी होए रास, नाम कुण्डली एका पाया। सम्मत तेरां कर प्रकाश, साधां सन्तां वेख वखाया। सम्मत चौदां घर घर वास, एका इक्की जोड़ जुड़ाया। सम्मत पन्दरां शाहो शबाश, अठसठ चरनां हेठ दबाया। सम्मत सोलां गुरमुखां अन्दर करे वास, आप आपणी दया कमाया। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना सोहँ गाया। पार किनारा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल निउँ निउँ सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख अबिनाश, गुरमुख साचे लए मिलाया। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। लहिणा देणा चुक्के दस दस मास, गर्भवासा फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दिवस रैण रैण दिवस जगत प्रभात एक वखाईआ। सच प्रभाती हरि हरि बोले, हरिजन आप जगाया। कलिजुग अन्तिम कंडे तोले, नाम कंडा हथ्थ उठाया। वसणहारा काया चोले, आप आपणा मुख छुपाया। मेल मिलावे हौले हौले, गुरमुख सोए लए जगाया। वसणहारा निज घर आत्म सदा कोले, मुख तों पर्दा दए लाहया। गुरसिख नारी कर प्यारी आपे पाए साचे डोले, लाल रंगीला रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शाहो शाबाशी शब्द अनादी धुन एका बोले, आपणा मंगल आपे गाया। वीह सौ सोलां सचखण्ड तेरा दर दरवाज़ा आपे खोल्हे, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण लए तराया। तारन आया तारनहारा, अन्तिम कलिजुग जोत जगाईआ। वणज कराए वणज वपारा, नाम नामा हट्ट विकाईआ। कँवल कराए कँवल उज्यार, कँवल कँवला आप खुल्हाईआ। भगती भरे भगत भण्डार, देवणहार बेपरवाहीआ। गुरमुखां देवे इक्क सहारा, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। छुटयां नाता सर्ब संसारा, बिन सतिगुर पूरे दूसर कोई दिस ना आईआ। दिवस रैण करे प्यारा,

आत्म सेजा सुत्ता बेपरवाहीआ। सम्मत सोलां करे शृंगारा, सोलां इच्छया पाए भिच्छया, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नानक कबीर नेत्र पेख्या, सो सतिगुर साचा इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम ग़रीब निमाणे लिखे लेखया, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जामा धारया भेखया, भगवन आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहारा वर, वर दाता आप अख्वाईआ।

त्रैगुण रंग अपार, पंज तत्त रंग रंगाया। मन मति बुध बख्शे धार, आपणा खेल खिलाया। आपे जाणे जानणहार, डूँघा सागर ताल भराया। काया गागर वेख विचार, अमृत जल टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रस आप चुआया। आपणा रस निझर धार, हरिजन आप चुआईआ। काया करे ठंडी ठार, सांतक सति वरताईआ। अग्नी तत्त देवे मार, रत्ती रत्त सुकाईआ। ब्रह्म मति इक्क अपार, गुरमति करे पढ़ाईआ। मेल मिलावा कमलापत, घर सज्जण शहिनशाहीआ। देवणहारा तख्त ताज, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द अगम्मी मार अवाज़, सोया सुत्त उठाईआ। सिँघ तारा रक्खे लाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कूड़ी क्रिया जगत जञ्जू देवे गलों लाहीआ। जगत जञ्जू कच्चा तन्द, कलिजुग तन बंधाया। पुरख अबिनाशी तोड़नहारा फंद, आपणी हथ्थीं तोड़ तुड़ाया। रसना गाउणा बत्ती दन्द, घर घर विच होए सहाया। दीन दयाला गुर गोपाला, आप चढ़ाए साचा चन्द, रवि ससि रहे शरमाया। इक्क उपजाए परमानंद, आत्म दरसी दरस दिखाया। शब्द अनादी सुहागी छन्द, मंगल सोहला राग एका गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेखे लाया। लेखा लेखे गया लग्ग, हरि साचा आप लगांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग, सोहँ मोती चोग चुगांयदा। दीपक जोती जाए जग, जगत अन्धेर मिटांयदा। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, आप आपणा रूप वटांयदा। गुरसिख मेरा सुच्चा नग, आपे ताज सीस टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सेहरा चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा वेख वखांयदा। तेरा मेरा एका रंग, अंगीकार कराया। तेरी सेजा सच पलँघ, हरि जी आसण लाया। आप वजाए सच मृदंग, ढोलक छैणा ना कोई वजाया। तेरे अन्दर वहाए साची गंग, गंगा लहिणा दए चुकाया। रविदास निभाया अन्तिम संग, हरि साचे मेल मिलाया। तुटी आपे ल्ए गंढ, गंढुणहार आप अख्वाया। तेरे कर्मा आपणे सीस चुक्के पंड, तेरा हौला भार कराया। तेरा दर उप्पर ब्रह्मण्ड, हरि साचे आप बणाया। कोटन कोटि जोग जुगीशर मुनी मुनीश्र तपी तपीश्र रहे मंग, हथ्थ किसे ना आया। सतिगुर पूरा दाता दानी वड सरबंग, कलिजुग सरसा पार कराया। काया चोली नाम मजीठी चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, गुरमुख साचे दर तेरा सच्चा इक्क सुहाया। तेरा दर सच्चा दरबार, हरि साचे जोत जगाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यार, सरगुण वेखे बेपरवाहीआ। शब्द अगम्म सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप वजाईआ। लेखा लिखणा बण भिखार, प्रभ साचा दए लिखाईआ। सम्मत सोलां सतारां हाढ़ा भरे भण्डार, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी तेरे चरनां राह तकाईआ। देवे नाम धुर नाम इक्क निशान, सोहँ झण्डा हथ्थ फड़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मा विष्न महेषा करोड़ तेतीस देवत सुर वज्जे कानी, तीर निराला इक्क चलाईआ। आपे मन्दिर गाए बाणी, बावन बावन रूप वटाईआ। धन्न सुभाग सुघड़ स्याणी होई राणी, घर बैठी सगन मनाईआ। कन्त कन्तूहल रंग रंगीला अबिनाशी करता जाण जाणी, घट अन्दर वेख वखाईआ। मिले मेल प्रभ साचे हाणी, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी तार हरि निरँकार, आपे खिच्चे आपणी वार, आपणी सेवा आप लगाईआ। खिच्चे तार सुरत सवाणी, शब्दी सेव कमाया। देवे नाम धुर दी बाणी, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। आप सुणाए अकथ कहाणी, कथनी कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिखां देवे वर, जन भगतां दर दर घर घर कलिजुग करे आप पछाणी। खिच्ची तार सति सतार निरँकार, अकल कल वरताईआ। देवे नाम सच्ची धुन्कार, धुन अनादी आप सुणाईआ। गावत गाए वारो वार, दिवस रैण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वक्खर, नाम भिच्छया गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणी झोली पाईआ। दिवस सुहञ्जणा भगत वड्याई, सन्तन मंगल गाया। आदि निरँजण खेल खिलाई, जागरत जोत करे रुशनाया। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, मेटणहार काली शाहीआ। साचा मार्ग इक्क रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत रिहा जणाया। हरिसंगत हरि शब्द जणाए, साची सिख्या इक्क समझाईआ। भैण भाई सर्ब वखाए, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। पहला सोहला कुलदीप गाए, सिँघ बिशन दी जाईआ। साचा सेहरा सीस बंधाए, वीर वीर करे वड्याईआ। भाई भैण सिर हथ्थ रखाए, आपणीआं भुजा उठाईआ। भैण भाई राह तकाए, दिवस रैण वेख वखाईआ। सतिजुग साचा नाता सतिगुर पूरा आप चढ़ाए, हरिसंगत एका माता एका पिता एका घर जाईआ। सच सपुत्री सतिगुर पूरा तेरा लेखा आपणे लेखे लाए, तेरी आत्म हरि गुण गाए, घर वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा सेहरा हरिसंगत सिर बंधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत वीह सौ सोलां बिक्रमी आपे वेखण आईआ।

१६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच

नौ नौ चार सद, अलक्ख अभेव अपार। आदि जुगादि खेल ब्रह्मदि, पारब्रह्म रूप करतार। शब्द अनाद वजाए नद, धुन अगम्म सच्ची धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेलणहार। नौ नौ चार खेल, खेल हरि निरंकारया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्क अवतार, गुरमति सुर इक्क अख्वा रिहा। जोती नूर नूर उज्यार, शब्द शब्दी शब्द उपजा रिहा। हरि हरि हरि त्यार, पारब्रह्म वेस वटा रिहा। बोध अगाधी खेल अपार, लेखा लेख ना कोई जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचा ल्या। नौ नौ चार खेल अगम्म, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। आदि जुगादी जाणे आपणे कम्म, ना कोई दूसर संग रखाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकल कला आप अख्वाईआ। नौ नौ चार धार हरि निरँकार, आपणी आप चला। खेले खेल खेलणहार, भेव अभेदा भेव छुपा। निरगुण दीपक बाती कमलापाती आप कर उज्यार, आप आपणा दर सुहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकाल मूर्त अजूनी रहित निराकार आप हो जा। नौ नौ चार हँ, परम पुरख अख्वाया। थिर घर बैठ सच पलँघ, पुरख अबिनाशी आसण लाया। आपणा दर दरवाज़ा दर दरवेश आपे लँघ, आप आपणी अलक्ख जगाया। निरगुण निरगुण अग्गे रिहा मंग, निराकार वेस वटाया। आपे दाता दानी सूरा सरबंग, देवणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम धराया। नौ नौ चार नाउँ, नामा नाम वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच ग्राउँ, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, बेपरवाह अगम्म अथाह आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीपक जोत कर रुशनाईआ। नौ नौ चार मीत, चौथे पद समाया। पुरख अबिनाशी एका गीत, एकँकारा मुख सलाहया। आपे जाणे आपणी रीत, लेखा लिख्त विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। नौ नौ चार खेल, खेलणहार पुरख समरथया। वसणहारा रंग नवेल, आप चलाए आपणा रथिआ। धुरदरगाही सज्जण सुहेल, आपे जाणे आपणी कथन कथ्थया। आपे गुरू आपे बणे चेल, आपे घट घट अन्दर वस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि दो जहानी फिरे नस्सया। नौ नौ चार दो जहान, हरि हरि खेल खिलंदड़ा। पुरख अबिनाशी मेहरवान, सच दुआरा इक्क सुहंदड़ा। शब्द अगम्मी इक्क निशान, धर्म दुआरे आप झुलंदड़ा। थिर घर बैठ सच्चे मकान, आपणा दीपक आप जगन्दड़ा। दीपक जोती जगे महान, प्रकाश प्रकाश करंदड़ा। सच तख्त बैठ सुल्तान, शाहो

भूप आप अख्वंदड़ा। आपे दर दरबारी बण दरबान, दर दरवेश सीस झुकंदड़ा। आपे देवे धुर फ़रमान, आप अपणा हुक्म सुनंदड़ा। आपे होए निगहबान, वेखणहार आप हो जांदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे खेल खिलंदड़ा। नौ नौ चार जुग, चार चार वड्याईआ। आपे करे आपणा युद्ध, आपे वेख वखाईआ। जगत झेड़ा मन मति बुध, बुध बिबेक आप हो जाईआ। आपे मनुआ रिहा कुद्द, आपे हरि रंग वखाईआ। आपे वेस वटाए अठारां सिद्ध नौ निध, नौ दर खोज खुजाईआ। आपे त्रैगुण करे युद्ध, रजो तमो सतो मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ नौ चार खाण, खाणी खाण पछाणया। देवणहारा साचा दान, दाता दानी श्री भगवानया। एका वसे सच मकान, मन्दिर अन्दर शाह सुल्तानया। साचा भूप राज राजान, सीस ताज इक्क टिकानया। खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं वेख विखानया। रवि ससि करे पछाण, मण्डल मण्डप फेरा पानया। वेखणहारा ज़िमी अस्मान, गगन गगनंतर डेरा लानया। एका जोत श्री भगवान, जीअ दाता आप अख्वानया। आपे होया बेपछाण, आप आपणा रूप वटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगानया। नौ नौ चार जोत उजाला, सतिगुर पुरख अख्वाया। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, भेव अभेदा अछल अछेदा चारे वेदां भेव ना राया। चरन दुआरे रखाए काल महांकाला, धर्मसाला इक्क सुहाया। आदि जुगादी जुगा जुगन्त चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग चलदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया। नौ नौ चार जोत रुशनाई, हरि सचा वेस वटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वज्जे वधाई, आपे वेख वखांयदा। शब्द शब्दी कर कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। लक्ख चुरासी डेरा लाई, आपणा मुख छुपांयदा। विष्नूं वंसी रूप वटाई, कँवल मुख खुल्हांयदा। ब्रह्मा हरि हरि इक्क समझाई, एका राग अल्हांयदा। शंकर लेखा आप समझाई, आपणे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। नौ नौ चार सज्जण, हरी हरि आप अख्वांयदा। अबिनाशी करता पारब्रह्म अगम्म अथाह बेपरवाह आपे होए पर्दे कज्जण, आपे पर्दा लांहयदा। शब्द अगम्मा सच सलाह, इक्क जपाए आपणा नाँ, दूसर मार्ग ना कोई वखांयदा। जगत जुगत भगत पकड़े बांह, आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा करे न्याँ, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। करोड़ तेतीसा मारे धा, रो रो नीर वहांयदा। गण गंधर्ब तक्कण राह, राह खैहड़ा दिस ना आंयदा। सतिगुर पूरा बेपरवाह, करनी करता करनी आपणी आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर जगत बुझाए बसन्तर, आत्म अन्तर वेख वखांयदा। नौ नौ चार आत्म धार, आत्म हरि हरि जणाईआ। जगत विद्या वस्सया बाहर, लिखण पढ़ण

६६७
०८

विच ना आईआ। गा गा थक्के वेद चार, पुराण अठारां रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत गए हार, दिवस रैण सिफ्त सलाहीआ। गुर पीर साध सन्त रहे पुकार, दिवस रैण रसना जिह्वा हिलाईआ। गीता ज्ञान इक्क अधार, अट्ठ दस रंग रंगाईआ। अञ्जील कुरान करे पुकार, परवरदिगार भेव ना राईआ। नानक निरगुण निराकार, निरँकार सेवा लाईआ। शब्द अगम्मी एका धार, आदि अनाद आप सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादि रिहा विचार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ठांडा दरस दर सच्चे दरबार, हरि बैठा आसण लाईआ। सज्जण सुहेला मीत मुरार, इक्क अकेला रिहा तराईआ। गुर चेला सोहे इक्क घर बार, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। नौ नौ चार हरि करन जोग, आपणा कर्म कमांयदा। जगत आयू रिहा भोग, जुग वेख वखांयदा। वेखणहारा तीनां लोक, चौदां हट्टां फोल फुलांयदा। चौदां तबकां इक्क सलोक, एका सोहला गांयदा। लक्ख चुरासी देवणहारा मोख, आप आपणा वेस वटांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जन भगतां चुगाए नाम चोग, सोहँ हँसा मुख सलांहयदा। कट्टणहारा हउमे रोग, अन्तर आत्म मेल मिलांयदा। भोगणहारा साचा भोग, सुरत सुवाणी संग रलांयदा। देवणहारा दरस अमोघ, जोती नूर डगमगांयदा। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बंधन पांयदा। नौ नौ चार बंधन पा, डोरी तन्द बंधाया। निरगुण निरगुण खेल खिला, लेखा निरगुण हथ्थ रखाया। सरगुण मेला बेपरवाह, गुर सतिगुर रूप वटाया। पंज तत्त डेरा आपे ला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सुहाया। मन मति बुध लए प्रना, आप आपणा संग निभाया। घर विच घर लए उपा, निज घर आपे डेरा लाया। शब्द अनादी राग अला, अनहद ताल वजाया। हरि लेखा इक्क समझा, एका दर वखाया। दूई द्वैती पर्दा लाह, आपणा राह वखाया। साची सेजा डेरा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर कर रुशनाया। नौ नौ चार हरि हरि ज़ोर, आप आपणा बल वखाईआ। वसणहारा अन्ध घोर, घोर अन्धेरा वेख वखाईआ। वेखणहारा पंच चोर, पंचां करे लड़ाईआ। पावणहारा झूठा शोर, दिवस रैण रिहा कुरलाईआ। वसणहारा मढ़ी गोर, ख़ाकी ख़ाक रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका रंग रंगाईआ। नौ नौ चार जला थला, समुंद सागर वेख वखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, मन्दिर अन्दर फेरा पाईआ। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका रंग रंगाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल मुनार दर दुआर बैठा आसण लाईआ। आपणे दीपक आपे बला, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, धुर दी बाण रखाईआ।

६६९ ०८

करे कराए वल छल्ला, अछल अछल्ल आप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ नौ चार जुग, जुग जुग वेस वटाया। सन्त सुहेले साचे चुग, आप आपणे चरन लगाया। सुफल करे मात मुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माया। सचखण्ड दुआरे साचा सुख, घर साचे मेल मिलाया। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, हउमे हँगता रोग मिटाया। सुफल कराए जननी कुक्ख, दस दस मास लेखे लाया। उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, गुर सतिगुर लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ चार उतरे पार, सद सद करे विचार, ब्रह्मादि तेरा बेड़ा पार, पार किनारा आप वखाया। पार किनारा डूँघा सागर, गहर गम्भीर दया कमाईआ। हरिजन तेरी काया गागर, सति सरोवर वेख वखाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, कलिजुग अन्तिम जन्म दवाईआ। कराया वणज सच्चा सौदागर, सोहँ शब्द होई कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा वेख वखाईआ। चौथे जुग साची कल, हरि साचा आप वरतांयदा। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छल, वल छल धारी भेव ना आंयदा। वसणहारा जल थल, लोकमात जोत जगांयदा। जोती शब्दी आपे रल, पवणी पवण समांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ल, गुरमुख सोए मात उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत जगांयदा। जोती जोत जोत जगा, जोत सरूपी जामा पांयदा। वरन गोत गोत वरन ना कोई रखा, आप आपणा रंग रंगांयदा। शब्द चोट नगारे इक्क लगा, सच नगारा आप वजांयदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पार करा, चौथे जुग फेरा पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लाई ढाह, कलिजुग अन्तिम कन्ढा आप वखांयदा। खेले खेल अगम्म अथाह, भेव कोई ना पांयदा। वेद व्यासा लेखा गया लिखा, चार लक्ख बत्ती हज़ार मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रखांयदा। आपणे भाणे आपे रक्ख, जुग जुग बंधन पाया। लक्ख चुरासी कर प्रतक्ख, आदि जुगादी आपे वेखण आया। आपे भाण्डे करे सख, आपे दए भराया। लक्ख चुरासी लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां जेरज अंडां आपे देवे मथ, नाम मधाणा एका पाया। वेखणहारा अठसठ नट्ठ नट्ठ, पूजा पाठ गायत्री मन्त्र फोल फुलाया। उलटी गेड़णहारा लट्ठ पुरख समरथ, त्रैगुण माया पाए नथ्थ, लक्ख चुरासी देवे मथ, चारों कुन्ट आप भुवाया। वसणहारा घट घट, जोती नूर लट लट, वेखणहारा चौदां हट्ट, अवण गवण पवण रिहा समाया। कलिजुग प्रगट होया लट पट, शब्द अगम्मी लाए सट्ट, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तट्ट, गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद खाली रिहा वखाया। साढे तिन्न हथ्थ तेरा एका तत्त, पुरख अबिनाशी रक्खी पति, बीज बीज्जया आपणे वत, गुर गोबिन्द सेवा लाया। नाड़ बहत्तर ना उबली रत्त, मेल मिलावा कमलापत, घर साचे बैठा सथ्थर घत्त,

ੳ੭੦ ०८

सूलां सथ्थर हेठ ना कोई विछाया। खेले खेल बाज़ीगर नट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौथे वेख वखाया। चौथे जुग उठ निधान, हरि साचा आप उठांयदा। प्रगट होया श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, एकँकारा आप अख्वांयदा। आदि निरँजण वड मेहरवान, पारब्रह्म वेस वटांयदा। आदि शक्ति जोत महान, जोती जोत डगमगांयदा। नूर इलाही बेपहिचाण, नेत्र नैण ना किसे जणांयदा। खेले खेल शाह सुल्तान, आपणा हुक्म सुणांयदा। शाह भूप राज राजान, सच सिँघासण आसण लांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणी बणत बणांयदा। जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यान, आपणा लेखा पूर करांयदा। आपे सीता आपे राम, गोपी काहन आप नचांयदा। आपे नानक गोबिन्द कर प्रनाम, आपणा सीस झुकांयदा। आपे देवणहारा दान, आपे झोली डांहयदा। आपे प्रगट होए विच जहान, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा। आप झुलाए धर्म निशान, धर्मी आपणे हथ्थ उठांयदा। आपे शस्त्र तीर कमान, खड़ग खण्डा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार आकार धर, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखांयदा। चौथे जुग नेत्र खोल्ह, हरि हरि आप खुल्हांयदा। चौथे मन्दिर रिहा बोल, गुरमुख सोए आप उठांयदा। चार चार पर्दे देवे खोल्ह, चाल निराली इक्क रखांयदा। हौली हौली आपे बोल, आपणा राग सुणांयदा। साचे कंडे देवे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी छाछ दए विरोल, गुरमुख मक्खण बाहर कढांयदा। बीस बीसा करया घोल, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे बणया जगत विचोल, नाम विचोला इक्क रखांयदा। हरि का भेव ना जाणे पंडत रौल, ज्ञानी ध्यानी ध्यान ना कोई लगांयदा। गुरमुख बणाए कला सोल, अकल कला आप अख्वांयदा। देवे वड्याई हरि हरि धौल, धरत धवल वेख वखांयदा। उलटा करे नाभ कौल, कँवला झिरना मुख झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ पंज चार प्रगट हो विच संसार, शब्द अगम्मी फड़ कटार, तिक्खी रक्खे दोवें धार, मारी जावे वारो वार, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सर्ब कुरलांयदा। विष्नूं पुकार एका नाअर, चतुर्भुज वड्याईआ। ब्रह्मा हरि हरि प्यार, पारब्रह्म रिहा ध्याईआ। शंकर निउँ निउँ करे निमस्कार, हथ्थ त्रशूल उठाईआ। कलिजुग अन्तिम आई वार, लेखे मंगे साचा माहीआ। मन मनवन्तर होए पार, भस्मन्त्र ना कोए सहाईआ। बाशक सेजा ख़बरदार, सहँसर मुख गाईआ। रागी नादी वस्सया बाहर, भेव कोई ना पाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, करनहार आप अख्वाईआ। त्रै त्रै लाए सेवादार, त्रै आपणे दर बुलाईआ। चौथे जुग चौथे घर हो त्यार, चौथा पद इक्क वखाईआ। पंचम मार कर ख़ुआर, पंचम वड वड्याईआ। छे दर मेला मीत मुरार, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। सति पुरख निरँजण निराकार, निरगुण आपणा खेल

खिलाईआ। सति दुआरे पाए सार, सति सरूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौ चार वेखे घर, घर साचा इक्क वखाईआ। घर साचा हरि पाया, हरि मिल्या बेपरवाह। थिर घर साचा इक्क सुहाया, पुरख अबिनाशी मेला सद मला। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंका नाउँ रखा। मात पित ना कोई बणाया, ना कोई दिसे भैण भ्रा। ना किसे मुलां पंडत पांधे इल्म पढ़ाया, ना कोई अल्फ़ी लई पा। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर ना कोई उपाया, घर सुहाया एका थाँ। राग ताल ना कोई वजाया, शब्द अनादी रिहा गा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया, जोती जामा भेख वटा। ब्रह्मा लेखा दए चुकाया, आत्म जोती मेल मिला। विष्नूं विश्व धारी आप हो जाया, आपणा नाअरा आपे ला। शिव शंकर खेल खिलाया, आपणी गोदी लए सुआ। गुरमुखां माण दुवाया, साची पौड़ीआं लए चढ़ा। दर दरवाजा इक्क खुल्हाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा मार्ग ला। आपणा मार्ग जाणे पन्थ, पन्थ पन्थी आप अख्वाईआ। भेव ना जाणे कोई ग्रन्थ, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। आदि जुगादी इक्क भगवन्त, दूसर होर ना कोई दिसाईआ। गुरमुख उठाए साचे सन्त, हरि सज्जण मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआरे बणाए बणत, आप आपणी मति समझाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त ना कोई लिखाईआ। वेखणहारा जीव जन्त, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचा आप उठाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। वीह सद सोलां मेल मिलाउणा, मेलणहारा बेपरवाहीआ। बेआस किनारा पार कराउणा, बेआसा रहे ना कोईआ। जिस जन नेत्र दर्शन पाउणा, थिर घर बैठा आसण लाईआ। हाढ़ सतारां दिवस सुहाउणा, नव सत्त करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा नज़री आउणा, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। हँस कागी काग हँस बणाउणा, कागद कलम शाही दए गवाहीआ। साचा जोग इक्क समझाउणा, जगत जुगीशर भेव ना पाईआ। तप तपीश्र इक्क वखाउणा, त्रैगुण अग्नी दए बुझाईआ। समरथ पुरख कल खेल खिलाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचा रथ चलाउणा, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। लोकमात बेड़ा इक्क तराउणा, चार वरनां लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्त अन्त आप हो जाईआ। आपे अन्त आपे आदि, आदि जुगादि आप अख्वाया। आपे सन्त आपे साध, आपे सति सति वरताया। आपे ब्रह्म आपे ब्रह्मादि, पारब्रह्म आप हो जाया। आपे शब्द धुन होए नादी नाद, ताल तलवाड़ा आप वजाया। आपे अगम्म अगम्मड़ा बोध अगाध, अलक्ख अलक्खणा भेव ना राया। आपे सुनणेहारा फ़रियाद, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। आपे भगतां वेला रक्खे याद, गुरमुखां विछड़ कदे

ना जाया। कलिजुग अन्तिम देवण आया दाद, पिछला लहिणा दए चुकाया। जन्म कर्म पूर्ब साथ, अगला लेखा दए समझाया। एका विकणा सतिगुर हाट, हाढ़ सतारां दिवस सुहाया। गुरमुखां किसे ना नुहाए तीर्थ ताट, सतिगुर चरन दुआरा मजन इक्क कराया। सोहँ शब्द पूजा पाठ, हरि हरि पारब्रह्म मिलाया। किसे ना विकणा दूजे हाट, निउँ निउँ सीस ना किसे झुकाया। एकँकारा करनहारा पूरा घाट, साचे कंडे रिहा तुलाया। अग्गे नेड़े दिसे वाट, पिछला पन्ध मुकाया। काया चोला सभ दा जाए पाट, बिन सतिगुर पूरे ना कोई सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां वेख वखाया। वीह सद सोलां फुलया फुल्ल, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। हरिसंगत तेरा पावण आया मुल्ल, करता कीमत आपे दए चुकाईआ। आपे वसण आया कोल, नगर खेड़ा आपणा आप तजाईआ। आप वजावण आया ढोल, सोहँ आपणा नाउँ धराईआ। आपे तेरे पर्दे रिहा फोल, आपणे पर्दे अग्नी भेट चढ़ाईआ। आपे तेरी काया रिहा मवल, आपणी काया ना कोई वखाईआ। आपे अमृत भरया तेरे कँवल, आपणा कँवल पहले भन्नाईआ। आपे तेरे अन्दर रिहा बोल, आपणा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ पहलों ढाहीआ। आपे तेरे पर्दे रिहा खोल़, आपणा पर्दा मुख तों लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा साचा वर, सम्मत सोलां लाहे डर, निहकलंक करे रुशनाईआ। निहकलंक गाउणा ढोला, हरि प्रगट नर अवताररया। सतारां हाढ़ी बदलया चोला, प्रगट होए विच संसाररया। कोए ना रक्खे पर्दा उहला, सिँघ पूरन विच समा रिहा। गुर गोबिन्द बण विचोला, सम्बल नगरी डेरा ला ल्या। साधां सन्तां जीआं जन्तां चारों कुन्ट प्या रौला, हरि का भेव कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां आपणा पर्दा आपे लाह रिहा। झूठा पर्दा जाणा लथ्थ, हाढ़ सतारां वड वड्याईआ। चारों कुन्ट नज़री आए पुरख समरथ, पूरन पूरे विच समाईआ। इक्क खुल्ह़ाए साचा हट्ट, चार वरनां वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन जोत आप हो जाईआ।

✪ १७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच शब्द जैकार ✪

अचरज खेल करे भगवान, आदि पुरख वड वड्याईआ। प्रगट होया विच जहान, पारब्रह्म रूप वटाईआ। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जोती नूर श्री भगवान, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। पुरख अगम्म अगम्मड़ा आपे होया मेहरबान, आप आपणी दया कमाईआ। आप उपाया आपणा

सच मकान, थिर घर साचा नाउँ रखाईआ। आपे शाह आपे सुल्तान, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी कल वरताईआ। कुलवन्ता हरि भगवन्ता, पारब्रह्म अख्वाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग करदा आया। आदि जुगादी साची बणता, हरि साचा आप बणाया। खेले खेल नारी कन्ता, साची सेज हंढाया। पुरख अबिनाशी एका रंग चढ़ाए बसन्ता, उतर कदे ना जाया। आपणे दर दुआर हरि निरँकार कर पसार आपे होए मंगता, मंगणहार आप अख्वाया। दर दरवेश नर नरेश आपे लँघदा, आपणा मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। आपणा नाउँ आपे धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। करता पुरख करनी कर, आपणी किरत कमाईआ। आपणा देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, आपणा नाउँ धराया। आपे वेखे सच सच्च, सच आप वरताया। आपणे अन्दर आपे गया रच, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहार पुरख अकाल, एका एकँकारया। आपे दाता दीन दयाल, आपे खेले खेल अगम्म अपारया। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरा रिहा। जुग जुग खेल खेल भगवाना, हरि हरि भेव ना राया। वसणहारा सच मकाना, नेहचल धाम अटल सुहाया। दीपक जोती इक्क महाना, परम पुरख जगाया। खेले खेल दो जहानां, घर साचा इक्क सुहाया। राग अनादी इक्क तराना, आपणा आपे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाया। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकार, आपणा आप प्रगटाईआ। इक्क इकल्ला निराकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी आसण लाईआ। आपे सेवक सेवादार, आपणी सेव कमाईआ। आपे शाह भूप सुल्तान, आप आपणा हुक्म चलाईआ। आपे खड़ग खण्डा तीर कमान, आपे रिहा सीस लगाईआ। आप झुलाए सच निशान, सच सुच्च वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आपे रिहा कराईआ। करनहारा पुरख करतारा, एका एक अख्वाया। आदि जुगादी खेल अपारा, जुग जुग आप कराया। साचा मन्दिर कर उज्यारा, दीवा बाती इक्क जगाया। इक्क शब्द इक्क भण्डारा, एका नाम वरताया। एका शस्त्र कर त्यारा, एका सीस जगदीश टिकाया। एका रक्खे तिक्खी धारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाम धराया। अजूनी रहित एका निरँजण, एका एक अख्वांयदा। दानी दाता दर्द

६७३
०८

दुःख भय भंजन, आप आपणा खेल खिलांयदा। आप आपणा बणे सज्जण, सज्जण मीत आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धरांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, पारब्रह्म आप अख्वाया। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर समझाया। एका नाम सच भण्डारा, एका रिहा वरताया। ब्रह्मा विष्न दए सहारा, शिव शंकर सेवा लाया। करोड़ तेतीसा दए सहारा, आप आपणा खेल खिलाया। त्रैगुण तेरा मीत मुरारा, त्रै त्रै मेल मिलाया। पंज तत्त कर उज्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश होए सहाया। मन मति बुध बन्ने धारा, नौ दर खोज खुजाया। महल्ल अटल उच्च मिनारा, घर घर विच टिकाया। निरगुण बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण दीपक इक्क जगाया। पारब्रह्म भेव न्यारा, भेव किसे ना पाया। आपे वसे सभ तों बाहरा, आप आपणी रचन रचाया। आदि जुगादी जुग जुग खेल करतारा, खेलणहारा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाया। सचखण्ड निरगुण धार, सचखण्ड बणत बणाईआ। निरगुण जोत जगे अपार, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई कन्त सुहाग हंढाईआ। ना कोई मन्दिर ना कोई घर बार, दर दुआर ना कोई वखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल वरताईआ। जोती नूर शब्द कटार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एका रूप दरसाईआ। सचखण्ड दुआर साचा रंग, हरि हरि आप सुहाया। पुरख अबिनाशी मंगी मंग, आपणी झोली आपे डाहया। आपणा वेखे सच पलँघ, घर साचे आप रखाया। दाता दानी सूरा सरबंग, एका एक अख्वाया। आदि जुगादि ना होए भंग, जुग जुग आपणी रचन रचाया। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, निरगुण धारा आप चलाया। निरगुण धार जोत अकाल, हरि हरि आप जगाईआ। दीपक आपणा आपे बाल, आप करे रुशनाईआ। आपे गगन मण्डल पावे रास दीपक होए थाल, रवि ससि आप लटकाईआ। आपे करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ रखाईआ। आपे दो जहानां साचा माली, साची करनी रिहा कराईआ। आपणी घाल आपे घाली, आपणा लेखा आपणे लेखे लाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, चाल निराली इक्क रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सिँघासण पुरख अबिनाशण एकँकारा कर पसारा, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, निरँकारा रूप वटाया। आपे वस्सया नेहचल धाम अटला, उच्च मुनार इक्क वसाया। सच सिँघासण आपे मल्ला, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ धराया। निरगुण धार तेज़

कटार, शब्द खण्डा चमकाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह हो त्यार, बेपरवाह आप अख्वाईआ। आदि निरँजण ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। आदि शक्ति कर प्यार, एका संग निभाईआ। जोद्धा सूर बली बलकार, आपणी भुजा आप उठाईआ। आपणा बल आप विचार, आपे वेख वखाईआ। खड़ग खण्डा साची धार, आप आपणी वंड वंडाईआ। जेरज अंड कर पसार, उत्भुज सेत्ज मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आप चलाईआ। निरगुण धार पुरख अबिनाशा, आपणी आप चलांयदा। आपे मण्डल पावे रासा, आपे वेख वखांयदा। आपे खेले खेल तमाशा, खेलणहार आप हो जांयदा। आपे वसे पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल आप रहांयदा। आपे लक्ख चुरासी करे वासा, आपे मुख छुपांयदा। आपे होए दासी दासा, जन भगतां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नौ नौ चार धार, हरि साचे नाउँ रखाया। नौ नौ चार चौकड़ी उतरी पार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। ब्रह्मा ब्रह्म पुरी रोवे ज़ारो ज़ार, ना दिसे कोई सहार, शिव शंकर करे दर पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। विष्नूं मीता मीत मुरार, हरि साचे संग बणाया। करोड़ तेतीसा आई हार, सुरपति इन्द ना होए सुहाया। गण गंधर्ब रहे पुकार, किन्नर यच्छप ना राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। आप आपणा नाउँ रंग, नौ संग चार चार कुड़माईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी होई भंग, कलिजुग अन्तिम वेला आईआ। पारब्रह्म वजाए इक्क मृदंग, गुर पीर ना कोई अख्वाईआ। शब्द सुहेला वसे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाईआ। नौ नौ चार मंग, चार चार संग रखाया। आदि जुगादी साचा कन्त, ओअँ नाउँ धराया। राम रामा बणाए बणत, कृष्न कृष्न वड्याआ। सतिनाम वस्सया चित्त, निरगुण नानक गाया। गोबिन्द चलाई साची रीत, वाहिगुरू फतिह गजाया। ना कोई मन्दिर ना मसीत, ना गुरदुआर वखाया। जो जन हिरदे रक्खे चीत, सतिगुर पूरा होए सहाया। आदि जुगादी परखे नीत, आप आपणा नाउँ धराया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीट कीटां अन्दर डेरा लाया। देवणहारा नाम अनडीठ, नाम अनमुल्ला आपणे हट्ट विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। पारब्रह्म निरँकारा, हरिजन विछड़े मेलण आया। देवे नाम भण्डारा, गुर गुर चेले वेखण आया। कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख चुकाए रवि ससि सतारा। रवि ससि सतार लेख चुकावणा, हरि साचे वड वड्याईआ। सप्तम रिखी गोद सुहावणा, वेला अन्तिम दए गवाहीआ। जोती तेज इक्क वखावणा, नूरो नूर करे रुशनाईआ।

ज़िमी अस्माना डेरा ढाहवणा, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। आपणी कल आप वरतंत, करनहार आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, घर साचे वेख वखाया। जन भगतां चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। तोड़णहारा गढ़ हँगत, दूई द्वैती मेट मिटाया। दर दरवेश होए मंगत, मंगणहार वेस वटाया। वेखणहार साची संगत, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंक कलि प्रगट होया, त्रैलोक वज्जे वधाईआ। चौदां लोक रहे ना सोया, चौदां तबकां दए उठाईआ। गुरमुखां देवे धुरदरगाही साचा ढोआ, नाम निधाना झोली पाईआ। अमृत बीज साचा बोआ, साचा फल खुआईआ। आदि जुगादी नवां नरोआ, ना मरे ना जाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोआ, वेद शास्त्र सिमरत पुराण खाणी बाणी भेव कोए ना पाईआ। आपणे जैसा आपे होया, आप आपणा रूप वटाईआ। वेखणहारा बाल नौजवाना , लोकमात करे रुशनाईआ। जन भगतां अमृत आत्म चोआ, झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करनी आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम हरि हरि आया, हरि साचा खेल खिलांयदा। गुरमुख सोया मात उठाया, दे मति आप समझांयदा। एका दर एका घर एका वर आपे होया, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा वेख वखांयदा। नौ नौ चार पार किनारा, हरि सतिगुर आप करांयदा। प्रगट हो विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गोबिन्द मीता दए सहारा, गुर गुर शब्द अलांयदा। भगती भगत भरे भण्डारा, आत्म ब्रह्म जणांयदा। नाम खण्डा तेज कटारा, गुरसिखां हथ्थ फड़ांयदा। आपे बैठा अद्धविचकारा, आपणा सीस भेट वखांयदा। मनी सिँघ चीरया आरा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। आपणा आप पहलों वारा, दूजा खेल खिलांयदा। कलिजुग करे पार किनारा, खाली हथ्थ वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां एह समझांयदा। गुरमुख तेरी तेज कटार, हरि साचे सीस उठाईआ। चरन प्रीती कराए इक्क प्यार, दूजा दर ना कोई वखाईआ। लक्ख चुरासी मारे मार, आपणी रचन रचाईआ। हरिसंगत फड़ फड़ जाए तार, देवे शब्द वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। गुरसिखां करे सच प्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। वीह सौ सोलां बन्ने धार, सोलां कलीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिख्या लेखा दए समझाईआ।

वीह सद सोलां शब्द धार, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। दस्म दुआरी मीत मुरार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग आप कराईआ। शब्द भण्डारा लै करतार, नौ दुआर पार कराईआ। आपे आए संगत विचकार, दे मति रिहा समझाईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, निझर धार मुख चुआईआ। शब्द धुन अनादी धार, घर घर विच वजाईआ। बज़र कपाटी खोल्ह किवाड़, सुन्न समाध खुल्हाईआ। अग्नी बुझाए तत्ती हाढ़, पंज तत्त ना कोई लगाईआ। आपणे मन्दिर देवे वाड़, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। ख़ुशी कराए नाड़ नाड़, जो जन आए सरनाईआ। वज्जे दमामा सतारां हाढ़, हरि साचा आप वजाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखाईआ। हरिसंगत मिल्या मेला, गुर पूरा आप मिला रिहा। रंग रंगाया गुरू गुर चेला, चेला गुर आप हो जाया। धुरदरगाही सज्जण सुहेला, लोकमात वेखण आया। हाढ़ सतारां चढ़ाए तेला, सम्मत सोलां साह सधाया। आदि जुगादी वसे कोला, विछड़ कदे ना जाया। नौ खण्ड पृथ्मी खेले होला, शब्द अगम्मी कल वरताया। गुर संगत तेरा चुक्के डोला, आप आपणे कंध उठाया। नौ खण्ड पृथ्मी पाए रौला, ना कोई धीर धराया। पुरख अबिनाशी बदलया चोला, निहकलंका नाउँ रखाया। आदि जुगादी बणया तोला, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। साचा रंग आप चढ़ाउँणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउँणा, कलिजुग कूड़ा दए उठाईआ। हरि सज्जण शाह वेख वखाउणा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाउँणा, एका बूझ बुझाईआ। निरगुण बाती दीप जगाउणा, अट्ठ तत्त करे रुशनाईआ। पूजा पाठ ना कोई कराउणा, कर किरपा पार कराईआ। अठसठ तीर्थ किसे ना नहाउणा, चरन सरन इक्क सरनाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर ना कोए सुहाउणा, तेरा मन्दिर आप सुहाईआ। नौ दुआरे पन्ध मुकाउणा, सुखमन टेडी नाड़ी आपे पार कराईआ। दर घर साचा वेख वखाउणा, आपणी आप करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां किरपा कर, आप आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। नौ दुआरे चुकया पन्ध, हरि साचे आप चुकाया। हरिसंगत घर घर चढ़या चन्द, गुरमुख आपणे आप चढ़ाया। देवणहारा परमानंद, निज घर बैठा आसण लाया। सतिगुर पूरा बण बख्शिंद, एका मार्ग लाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द, लेखा लेखे दए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण ल्ए तराया। शब्द खण्डा तेज कटार, सतिगुर पूरा हथ्थ उठाईआ। शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, आप आपणा हुक्म वरताईआ। मारे मार दो दो धार, दो जहानां वेख वखाईआ। ख़लक ख़ुदाई

गई हार, हू हू कर कर नाअरा लाईआ। राम राम ना कोई प्यार, रामा कृष्न ना वेख वखाईआ। सति नाम ना कोई अधार, वहिगुरू फतिह ना कोई गजाईआ। प्रगट होया निहकलंक हरि निरँकार, आपणी सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या विच संसार, साचा मार्ग लए लाईआ। गुरमुखां होया पहरेदार, आप आपणी सेव कमाईआ। हरिसंगत सौणा पैर पसार, दूती दुष्ट नेड़ ना आईआ। दूतां दुष्टां देवे मार, आप आपणा हुक्म चलाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, भगतन संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी बणत बणाईआ। बणत बणाई हरि ब्रह्मण्डा, वंडी वंड वंडांयदा। वढ्ढणहारा लक्ख चुरासी कंडां, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। चार कुन्ट नौ खण्ड सति दीप मेटणहारा भेख पखण्डा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। एका प्याए जाम साचे धाम गुरमुखां पाए ठंडा, आपणी सेव कमांयदा। नार दुहागण गुरसिख ना दिसे रंडा, साचा कन्त आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा तेज कटार, हथ्थ फड़ी आप निरँकार, सत्तां दीपां मारे मार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। गुरमुखां हरि हरि बेड़ा बन्न्ह, आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्न, कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां कहे धन्न धन्न, नौ सौ चुरानवें किसे हथ्थ ना आंयदा। प्रगट हो निरँकार, लोकमात लै अवतार, सोहँ शब्दी डंक वजांयदा। नानक गाया आपणी वार, मंगी मंग बण भिखार, देवणहार सच्ची सरकार, एका भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां इच्छया आप करांयदा। आपे खड़ग तेज कटार, आपे खण्डा रिहा चमकाईआ। शाह सुल्तानां दो जहानां वेखे विगसे करे विचार, आप आपणी रचन रचाईआ। शस्त्र बस्त्र कर त्यार, सोलां कलीआं इक्क श्रृंगार, साचा अस्व आप दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आपे रंगे लोकमात मूल ना संगे, निर्भय रूप आप हो जाईआ। निर्भय रूप आप करतार, प्रगट होया विच संसार, लक्ख चुरासी करे खुआर, साधां सन्तां ना देवे कोई सहार, जोती सभ दी खिच हरिसंगत तेरे चरनां हेठ दबाईआ। साधां सन्तां आई हार, कोई ना पावे किसे सार, धीरज जत ना कोई धरांयदा। जप तप गए हार, गुर दर ना कोई प्यार, मन्दिर मस्जिद हाहाकार, साची रक्खया ना कोई करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर आप अख्वांयदा। निहकलंक कल प्रगट होया, परम पुरख सुल्ताना। सतिगुर पूरा कदे ना सोया, खेले खेल दो जहानां, गुरमुखां देवे नाम सच्चा ढोआ, नाल रलाए अनहद शब्द सच्चा मरदाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खण्डा शब्द चमकाणा।

आपणा सीस आपे कट्ट, गुरमुखां वखाए साचा हट्ट प्रगट होए झट पट, जोती नूर लट लट, चार कुन्ट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खण्डा फड़ कटार, मारनहारा मार, प्रगट होया विच संसार, गुरमुख सज्जण लए उभार, मनमुखां दए सजाईआ। गुरमुख साचा साजण मीता, हरि साचे मेल मिलाया। प्रगट होया इक्क अतीता, दिस किसे ना आया। आदि जुगादी ठंडा सीता, सतिगुर नाउँ धराया। आपे जाणे आपणी रीता, वेद कतेब भेव ना राया। लक्ख चुरासी परखे नीता, देवणहार सर्ब सजाया। नाम निधान जिस जन पीता, आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सज्जण चरन धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल दए गंवाया। शब्द हुलारा साची धार, गुर सतिगुर आप चलाईआ। कालख टिक्का दुरमति मैल झूठी शाही दए उतार, जो जन आए सरनाईआ। अमृत भरे नाम भण्डार, काया करे ठंडी ठार, सांतक सति वरताईआ। एका रंग रंगाए पुरख नार, मेल मिलावा कन्त भतार, साची सेजा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धार, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां दए वड्याईआ। सम्मत सोलां गया चढ़, हरि साचा सेव कमांयदा। गुरमुख साचे मेल मिलाए फड़ फड़, सोलां हाढ़ी दिवस सुहांयदा। भरम भुलेखा दूर कर, आपे हउमे गढ़ तुड़ांयदा। आसा मनसा पूर कर, आपे बेआस ना कोई वखांयदा। चरन भरवासा इक्क धर, ना कोई दूजा राह तकांयदा। सिर समरथ हथ्थ टिकाया, सर्ब कला समरथ आप अख्वांयदा। साढे तिन्न हथ्थ तेरा रथ चलाया, आप आपणा धक्का लांयदा। कलिजुग अन्तिम बोध अगाध शब्द बाणी अकथना अकथ चलाया, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। लक्ख चुरासी मथ वखाया, नाम मधाना एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंका कल अवतारा, सम्बल धार बंधाईआ। गुर गोबिन्द कर प्यारा, सिँघ सिँघ वेख वखाईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, बैठा आसण लाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नानक मेला मीत मुरारा, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। सर्ब जीआं सांझा यारा, परवरदिगार इक्क ख़ुदाईआ। ऐनलहक्क लाए नाअरा, आप आपणा नूर वखाईआ। राम सीता कर प्यारा, शास्त्र सिमरत फोल फुलाईआ। कान्हा कृष्ना दए हुलारा, एका ज्ञान दृढ़ाईआ। नाम सति सति वणजारा, वाह वाह गुरू वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, भेव कोई ना पाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, आप आपणी कल वरताईआ। जन भगतां देवे शब्द भण्डारा, सोहँ झोली पाईआ। सचखण्ड वखाए सच दुआर, हरि बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका खण्डा विच ब्रह्मण्डा, हरि हरि नाम चमकाईआ। नाम अवल्ली धार, एकँकार हरि निरँकार,

६७६
०८

निरगुण आप चलांयदा। प्रगट हो विच संसार, पावे सार शब्द अधार, अनहद ढोला साचा गांयदा। राउ रंक करे प्यार, चार वरनां दए सहार, राज राजाना मेल मिलांयदा। शाह सुल्तानां करे खुआर, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। दूई द्वैती मेटे धार, शरअ शरीअत पार किनार, साची सिख इक्क समझांयदा। एका नाअरा शब्द जैकार, एका रामा कृष्ना हरि अवतार, नानक गोबिन्द इक्क वखान, संग मुहम्मद पावे सार, वेखणहारा चार यार, ईसा मूसा संग रलांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, आदि जुगादी बन्ने धार, प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, मारी जाए वारो वार, दिस ना आए विच संसार, मनमुखां मुख ना आप वखांयदा। तोड़णहारा गढ़ हँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशण हरि अनमुल्ला, करता कीमत आपे पांयदा। जगत तराजू किसे ना तुला, तोलणहार आप अख्वांयदा। कदे ना जम्मया उच्ची कुला, आपणी कुल ना कोई बणांयदा। आदि जुगादि कदे ना भुल्ला, अभुल आप अख्वांयदा। गुरमुखां पावण आया मुल्ला, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिँघासण एका एक सुहांयदा। सच सिँघासण हरि निरँकारा, एका एक उपाया। निरगुण दीपक कर उज्यारा, जोती जोत प्रगटाया। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, धुनी नाद इक्क वजाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए विच संसारा, सम्मत सोलां आपणा पर्दा आपे दए लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया। सम्मत सोलां चुकया पर्दा ओहला, हरि आपे जोत जगाईआ। गुरसिख गाओ घर घर ढोला, मिल्या पारब्रह्म वड वड्डी वड्याईआ। दिवस रैण वसे कोला, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख बणाए कला सोलां, जो जन रहे सरनाईआ। मनमुखां व्याहे आत्म बोला, आपणा खण्डा आप उठाईआ। ग़रीब निमाणे गुरसिख निताणे आप आपणी गोद उठाए आप बणया भोला, भोले भाउ लए तराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आदि निरँजण अलक्ख बेपरवाहीआ। आदिन अन्ता हरि निरँकारा, प्रगट होया विच संसारा, शब्द सरूपी फड़ कटारा, आप आपणा बदलया चोला, आप आपणी खेल खिलाईआ। अगम्म अगंड़ा अगम्मड़ी कार, हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े वस्सया बाहर, अलक्ख निरँजण इक्क जैकार, सचखण्ड लोकमात एका नाअरा रिहा लगाईआ। मनमुखां करे ख़बरदार, सोया रहे ना विच संसार, प्रगट होया निरगुण हरि करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धुर दा शब्द धुर दी बाण, गुरमुख सुणाए आप कान, कलिजुग अन्तिम लौहण आया मकान, मनमुख रोवण चार कुन्ट देवण दुहाईआ। नाल रलाए पंज शैतान, भरमे भुल्ले जीव निधान, माया ममता बेईमान, जगत विद्या रही भुलाईआ। जो जन रसना सोहँ गाण, काया मन्दिर मिले

भगवान, शब्द झुलाए साचा निशान, अट्ठे पहर रंग रंगाईआ। जूठे झूठे सर्ब पछताण, वेले अन्त ना कोई मकान, दर दर फिरदे बेईमान, साचा दर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम धार अपर अपार, प्रगट कर विच संसार, सोहँ खण्डा कर त्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। सोहँ शब्द तेज कटारी, हरि आपणे हथ्थ उठांयदा। खेले खेल अगम्म अपारी, अलक्ख अलक्खणा भेव ना आंयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, दीपक दीप आप जगांयदा। जन भगतां करे जगत प्यारी, आत्म शक्ति वखांयदा। बूंद रक्त रिहा उधारी, रत्ती रत्त सुकांयदा। पार कराए नर नारी, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पांयदा। कट्टणहारा जुग जुग बीमारी, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। साचा मेला कन्त भतारी, आत्म सेजा इक्क सुहांयदा। नाता छुट्टे सर्ब संसारी, सतिगुर पूरा लड़ लगांयदा। सम्मत सोलां सतारां हाढ़, बेआस निरास ना कोई वखांयदा। बेआस किनारा करया पार, हरि साचे मेल मिलाया। चरन कँवलां बख्शे इक्क प्यार, एका दर वखाया। एका नाम एका ढोला एका सोहला जै जैकार, एकँकारा एका मुख सलाहया। छत्ती राग ना पायण सार, नारद सुरस्ती दए दुहाया। गौड़ी भैरों रहे विचार, धनासरी आपणा तन कटाया। जैतसरी होए लाचार, गौंड कानड़ा ना कोई खुआया। पूत सपूता कर त्यार, पारब्रह्म खेल खिलाया। चारे कूटां कर पसार, दहि दिशा वेख वखाया। धुन अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद ताल वजाया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, सोहँ रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। बेआस किनारा गया पैंडा मुक्क, हरि साचे जग मुकाया। हरिसंगत तेरा भार आपे चुक्क, आपणे सीस उठाया। सोलां साल रिहा बुक्क, आपणा मुख छुपाया। हाढ़ सतारां ढोआ गया ढुक, आपणा पर्दा देवे लाहया। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाया। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, प्रभ साचा दए सजाया। कलिजुग बूटा गया सुक्क, पत डाली रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा पार किनारा, शब्द अगम्मी दए सहारा, आत्म अन्तर इक्क वणजारा, आपणा वणज कराया। पार किनारा साचा घर, हरि हरि आप वखांयदा। आवण जावण चुक्के डर, लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। चरन धूढ़ नुहाया साचे सर, दुरमति मैल मिटांयदा। आपणी किरपा आप कर, आपणी रंगण आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा सगन आप मनांयदा।

कलिजुग कल वरताई आप प्रभ, करनहार खेल खिलाया। सन्त सुहेले जुग जुग विछड़े आपे लभ्भ, आप आपणा मेल

मिलाया। उलटी करनहारा कँवल नभ, अमृत झिरना दए झिराया। पंच विकारा दए दब्ब, हरिजन साचे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप अपणा दर खुल्हाया। आपणा दर खोल्ह दुआरा, हरि साचा वेख विखंदड़ा। पुरख अबिनाशी भेव न्यारा, जुगा जुगन्तर आप करंदड़ा। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखंदड़ा। गोबिन्द साचा मीत मुरारा, हरि साचा मेल मलंदड़ा। शब्द विचोला बण संसारा, साचा खेल खिलंदड़ा। गुरमुख मेले वारो वारा, आप आपणा धाम सुहंदड़ा। निरगुण जोती निरगुण धारा, निरगुण नाम सुहंदड़ा। निरगुण दीवा निरगुण बाती कमलापाती कर उज्यारा, आप आपणा मुख विखंदड़ा। बूंद स्वांती अमृत धार ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिरंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला मेल मिलंदड़ा। मेल मिलावा पुरख सुल्तान, हरि सज्जण वड वड्याईआ। घर मन्दिर गाए गोपी काहन, साची रास वखाईआ। साची सुरती कर प्रनाम, एका राम लए प्रनाईआ। एका नूर श्री भगवान, एका शब्द कुड़माईआ। नाम सति सति प्रधान, परम पुरख उपाईआ। वाह वाह गुरू गुर सारे गाण, गावणहारा दिस ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। हरिजन मेला दो जहान, घर साचा वेख वखाईआ। एका राग सुणाया कान, एका बूझ बुझाईआ। इक्क वखाए सच मकान, चौदां चौदां आप खुल्हाईआ। एका अमृत पीण खाण, एका ब्रह्म वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम बेपरवाह, आपणी दया कमांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, साची सिख्या इक्क समझांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पकड़े बांह, वेले अन्त ना कोई छुडांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल अगम्म पुरख अबिनाशी, आपणा आप कराईआ। प्रगट हो घनकपुर वासी, पुरी घनक वड्याईआ। जन भगतां लाहे जगत उदासी, आपणे रंग रंगाईआ। दर दुरकाए मदिरा मासी, हरिजन साचे वेख वखाईआ। भेव ना पायण पंडत कांशी, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी निरगुण नूर जोत प्रकाश नूरो नूर डगमगाईआ। किसे हथ्थ ना आए पृथमी आकाशी, गगन गगनां विच समाईआ। हरिजन मेले रसन स्वासी, जो जन रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मति रिहा समझाईआ। रसन जिह्वा हरिजन गावण, राम नाम उरधारा। मेल मिलावा जिउँ बल बावन, प्रगट होए विच संसारा। मारे दुष्ट पंच विकारा रावण, राम रामा रूप करतारा। कान्हा कृष्ना बणया ज़ामन, द्रोपत सुत्त द्रोपती अधारा। पंच फड़ाए आपणा दामण, आपे लाए सतिगुर नाअरा। मेट मिटाए कामनी कामन, घर दीपक कर उज्यारा। रैण अन्धेरा चुक्के शामन, एका प्रगटे गुर अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारा। अगम्म

अगोचर अगम्म अथाह, पारब्रह्म अख्वाया। निरगुण सरगुण बण मलाह, गुर सतिगुर नाउँ धराया। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाया। साचा मेला नगर ग्रां, काया खेड़ा इक्क वसाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाया। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे बणया पिता माँ, गुरमुख साचे गोद उठाया। करन आया सच न्याँ, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। सतिजुग साचा मार्ग देवे ला, सूर गाँ ना कोए खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा लिखाया। आपणा लेखा आप लिखावणा, लिखणहारा आप हो जांयदा। पारब्रह्म प्रभ नाउँ धरावणा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। विष्नूं वंसी आप अख्वावणा, विश्व रूप समांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म प्रभ भेव चुकावना, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। शंकर शंकर संग रलावणा, हरी हरि वेख वखांयदा। त्रैगुण माया फुल्ल चढ़ावणा, पंचम मंगल गांयदा। पृथ्मी आकाश आप सुणावणा, एका नाअरा लांयदा। गगन पतालां फेरा पावणा, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जुगा जुगन्तर नाम धरावणा, आप आपणी कल वरतांयदा। चारे वेदां वेख वखावणा, वेद विदांता आप उपांयदा। सन्त भगत भगवन्त मेल मिलावणा, नाम डोरी इक्क बंधांयदा। गुर चेला एका रंग रंगावणा, गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा। शब्द रंगीला पलँघ विछावणा, आत्म सेजा सच सुहांयदा। नर नरायण नारी कन्त मेल मिलावणा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। मिल सखीआं पंचम बहि गावणा, राग अनादी धुन उपजांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजावणा, खोजणहारा दिस ना आंयदा। बोध अगाधी शब्द चलावणा, सोहँ ढोला आपे गांयदा। सम्मत सोलां मेला मेल मिलावणा, कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकांयदा। हाढ़ सतारां दिवस सुहावना, बावन अक्खरी पूर करांयदा। पैंतीस राग तेरा अलावणा, गुर गुर सेव कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ आप अख्वावणा, दस सतारां जोड़ जुड़ांयदा। पहली हाढ़े रंग रंगावणा, आपणी करनी आप करांयदा। दूजा पर्दा आपे लाहवणा, आप आपणा मुख वखांयदा। तीजा नेत्र इक्क खुल्हावणा, आप आपणा नूर दरसांयदा। चौथे पद मेल मिलावणा, साचा घर वसांयदा। पंचम मीता पंचम गुर पंचम मेला आप करावणा, पंचम मुख आप सलांहयदा। छेवें दर राग अलावणा, नाद अनाद ना कोई वजांयदा। सति पुरख निरँजण आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी एका एक धाम सुहावणा, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। हरिजन साचे वेख वखावणा, अट्ठ अठोतरी माला ना कोई गल लटकांयदा। नौ दुआरे खोज खुजावणा, नौ दर बणत बणांयदा। दस्म दुआरी पर्दा लाहवणा, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहांयदा। चतुर्भुज आप अख्वावणा, आप आपणी भुजा उठांयदा। पूजा पाठ ना कोई करावणा, अभ्यास तप ना कोई जणांयदा। निउली कर्म ना कोई अख्वावणा, सीस ख्राक ना कोई पांयदा। जल धारा ना कोई ठरावणा, अग्नी तत्त ना कोई जलांयदा। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ावणा, पिछला

लहिणा झोली पांयदा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, चार वरनां इक्क समझांयदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहावणा, एका दर सुहांयदा। नारी कन्त हरि भगवन्त रूप बसन्त इक्क चढ़ावणा, लाल गुलाला दीन दयाला एका रंग रंगांयदा। साध सन्त गुरमुख साचे आपा तरावना, आया जिस जन आपणे चरन टिकांयदा। पंज तत्त बणाए बणत महिमा अगणत जुगा जुगन्तर आप आपणा भेव खुल्हावणा, भेव अभेदा अछल अछेदा आप हो जांयदा। पुरख सुल्तान हरि मेहरबान शब्द अनादी ढोला एका गावणा, सोहँ नाउँ रखांयदा। निरगुण धार हो उज्यार, पुरख करतार गुरमुख साजण लए उभार, निहकलंक वज्जी डंक राउ रंक आप उठावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पुरख अबिनाश खेल तमाश, आदि जुगादी जुगा जुगन्त हरि भगवान कर पसार विच संसार गुर अवतार पारब्रह्म आप अख्वांयदा। निहकलंक नरायण नर, नेत्र लोचण पेखे नैण, गुरमुख साचे साक सज्जण सैण, आप चुकाए लहिण देण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लहिणा साचा गहिणा आपणी हथ्थीं झोली पांयदा। साचे मन्दिर साचे अन्दर साचे घर हरिदुआर गुरमुख साचे साचे बहिणा, हरि साचा आप बहांयदा। सम्मत सोलां तोल्लया तोला, ना कोई पाया तोला, एकँकारा हरि निरँकार कर पसार आत्म धार, निरगुण सरगुण गुण अवगुण छाण पुण लक्ख चुरासी जम की फाँसी हरिजन साचे दए लटकाईआ। मण्डल रासी शाहो शाबासी पृथ्मी आकाशी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां कर विचार, हाढ़ सतारां इक्क प्यार, साध सन्त हरिदुआर गुरमुख सोहिण चरन दुआर भगतां अमृत नाम आप प्याईआ। गुरमुख सज्जण सुहेले, घर साचे मेल मिलाईआ। मिल्या मेल गुरू गुर चेले, गुर गोबिन्द करे कुड़माईआ। सन्त सुहेले आपे मेले, मिल सखीआं मंगल गाईआ। सतिगुर पूरा निरगुण जोत हाज़र हज़ूर ज़ाहर ज़हूर नेड़े दूर ना कोई जाणे आत्म अन्तर ब्रह्म पछाणे सतिगुर पूरे चले भाणे, दे मति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रंग रिहा रंगाईआ। रंगण रंग रंग चलूल, गुरमुख ना जाए भूल, करनहारा सूलीउँ सूल, आप चुकाए पिछला मूल, अग्गे मार्ग एका पांयदा। पुरख अबिनाशी गुरमुखां उत्ते बरखे फूल, आदि जुगादि ना जाए भूल, हरिजन साचे आपणी गोद उठांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशी ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई धरत धवल ना पृथ्मी आकाश ना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई जल थल ना कोई गार, डूँघे सागर ना जाए तार, पुरख अगम्म ना मरे ना जाए जम्म, आपे जाणे आपणा कम्म, थिर घर साचा सचखण्ड अपर अपारा, हरि निवास पुरख अबिनाश, भेव कोए ना पांयदा। जोत निरँकार प्रगट संसार खेल अपार गोबिन्द धार शब्द कटार अपर अपार गुरमुख धार आत्म ब्रह्म नाम तन

सतिजुग दात वड करामात, एका एक झोली पाईआ। हरिसंगत तेरी उत्तम ज़ात, सतिगुर पुच्छे वात, चरन कँवल बंधाए नात, नर नरायण नेत्र लोचण आपे पेख, पिछले मेटणहारा लेख, अगला लेखा दए लिखाईआ। आपे मूंड मुंडाए मुच्छ दाढ़ी केस, आपे नानक गुर दस दस्मेश, पावे सार गणपति गणेश, वेखणहारा ब्रह्मा विष्न महेष, शाहो भूप सच सिँघासण नर नरेश, एकँकार कर पसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द खण्डा तेज कटार, गुरमुखां करे इक्क शृंगार, सोलां कलीआं अकल कला कल धार, आपणी कल वरताईआ। सम्मत सोलां हो त्यार, बदलया चोला विच संसार, गाया ढोला अपर अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान इक्क जैकार, पुरख आपणा नाअरा लाईआ। हाढ़ सतारां करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द संदेश इक्क सुणाईआ। हरिजन लेखा लेखे लावणा, गुर सतिगुर पूरा आप अख्वाया। सम्मत सोलां राह चलावणा, आप आपणी चाल चलाया। बेआस बेआस पार करावणा, नाम मुहाणा चप्पू एका लाया। साचा बेड़ा आप उठावणा, आपणे कंध आप उठाया। सुहागी ढोला आपे गावणा, साचा सगन मनाया। हरिसंगत दे बांह सरहाणे सोवणा, वेले अन्तिम लए बचाया। राए धर्म ना दर पुछावणा, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। लाड़ी मौत ना मौत प्रनावणा, आप आपणा खेल खिलाया। आए घर खोल्ह दर चुकाए डर, देवे दरस नारी नर बाल बिरध जवान एका रंग रंगावना, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेला साचे दर, हरिसंगत आप कराईआ। नौ नौ चार वस्सया खेड़ा, हरि सतिगुर आप वसाया। कलिजुग अन्तिम आया बन्न्हण बेड़ा, आप अपणा संग निभाया। लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, उलटी लट्ठ गिढ़ाया। धरत मात दा खुल्ला वेहड़ा, आपे दए कराया। दो जहानां सच निबेड़ा, साचा दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे वेख वखाया। हरि सज्जण जोड़ जुड़ंदड़ा, सम्मत सोलां कर विचार। पूरन इच्छया आप करंदड़ा, भरे नाम भण्डार। हउमे हँगता रोग मिटंदड़ा, बख्शे चरन प्यार। साचा मन्दिर इक्क सुहंदड़ा, निरगुण बाती कर उज्यार। शब्द अनादी इक्क सुनंदड़ा, अनहद धुन सच्ची धुन्कार। दर दरवाजा आप खुलंदड़ा, बज़र कपाटी देवे पाड़। साची हाटी नाम विकंदड़ा, आप सुहाए दस्म दुआर। हरिजन तेरा राह तकंदड़ा, निरगुण बैठा कर प्यार। हाढ़ सतारां मेल मिलंदड़ा, लेखा लिख्या अपर अपार। आवण जावण गेड़ कटंदड़ा, लक्ख चुरासी दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे पार किनार। बेआस किनारा पार उतारा, हरि सतिगुर वड वड्याआ। गुरमुख साजण कर प्यारा, नाम अधार हरिजन झोली पाया। वणज वपारा एकँकारा, निराकारा आप कराया।

शब्द भण्डार विच संसार, निरगुण धार रिहा चलाया। बंक दुआरा थिर दरबारा, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाया। जागरत जोत इक्क जगा, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। ब्यास किनारा पार करा, गुरमुख बणे मलाहीआ। खेवट खेटा बेड़ा रिहा चला, दिवस रैण वाहो दाहीआ। सम्मत सोलां नाल रिहा रला, सोलां कल दए वड्याईआ। बदलया चोला बेपरवाह, सोहँ ढोला साचा गाईआ। साचा सोहला ल्या सुणा, सो पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। साचे तोले तोल ल्या तुला, नाम वट्टा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। तोलण आया हरि करतार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। नाम कंडा अपर अपार, कलिजुग अन्तिम नाल लिआंयदा। नानक गाई तेरां धार, त्रैगुण वेख वखांयदा। सम्मत चौदां हो त्यार, एका इक्की पांयदा। सम्मत पन्दरां खेल अपार, तीर्थ तट्टां फोल फुलांयदा। खिच्ची शक्ती हरि निरँकार, जल धारा ना कोई समांयदा। सम्मत सोलां मारे मार, साधां सन्तां मुख भुवांयदा। पीर फ़कीरां मारे मार, दस्तगीर ना कोई दस्त फड़ांयदा। मुलां शेख़ मुसायक पीर करन पुकार, कुतब गौंस ना कोई छुडांयदा। पंडत पांधे रहे विचार, पान्धी पन्ध ना कोई मुकांयदा। थक्के मांदे गए हार, हरि का भेव कोई ना पांयदा। ग्रन्थी पन्थी हाहाकार, आत्म ब्रह्म ना कोई रखांयदा। नाम शब्द ना वणज वपार, निरगुण घर ना कोई बहांयदा। नानक मेला ना मीत मुरार, गोबिन्द लड़ ना कोई बंधांयदा। आत्म अमृत ठंडी ठार, प्याला भर ना जाम प्यांअदा। धर्म ना बध्धी सीस दस्तार, जूठ झूठ रसना गांयदा। सच खण्डा ना तेज़ कटार, तन कृपान ना कोई वखांयदा। अमृत सर सरोवर ना करे कोई विचार, कूड़ी क्रिया कर्म कमांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, थिर बैठा वेख वखांयदा। अन्तिम प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जुग जुग विछड़े लए उभार, हरि साचा मूल चुकांयदा। साची मुक्त बणाई जुगत, भगत भगती रंग रंगांयदा। पंचम सेहरा कर कर मेहरा ना लाए देरा, आपणी धार वखांयदा। चुरासी गेड़ा मुक्के झेड़ा हक्क निबेड़ा, साचे मन्दिर डूँघी कन्दर, अन्दरे अन्दर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेआस मेला सर्ब गुणतास, सच धरवास इक्क रखांयदा। सच धरवासा चरन भरवासा, चरन कँवल वड्याईआ। साचा मण्डल साची रास, गोपी काहन सच नचाईआ। साचा पुरख साचा शाहो शाबास, घर साचा सगन मनाईआ। करनहारा पूरी आस, पूरन इच्छया आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हाढ़ सतारां सति सति वरताईआ। सति वरते सति करतार, सति सति समाया। रत्ती रत्त कर प्यार, रत्ती रत्त रंगाया। ब्रह्म मति करे उज्यार, गुरमति मेल मिलाया। साचा तत्त विच संसार, सतिगुर इक्क समझाया। धीरज जत नारी नार, सति

सन्तोख इक्क वखाया। मानस जन्म होए भट्ठ, जिस जन गुर का शब्द भुलाया। सतिजुग साची करी चट्ठ, सम्मत सोलां वेल वधाया। हरिसंगत तेरा खोल्ह़े हट्ट, नाम भण्डारा इक्क भराया। काया मन्दिर तीर्थ तट्ट, सर सरोवर दए नुहाया। अमृत आत्म आपे झट्ट, निझर झिरना दए झिराया। दुरमति मैल देवे कट्ट, दूई द्वैती मेट मिटाया। शब्द लपेटे साचे पट्ट, एका पल्लू हथ्थ उठाया। वेखे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। वसणहारा घट घट, कलिजुग अन्तिम जोती जामा भेख वटाया। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, मारनहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां जगत मलाह, पुरख अबिनाशी बेपरवाह, जन भगतां पकड़े साची बांह, दर मन्दिर इक्क खुल्ह़ाया। दर मन्दिर एका आपणा खोल्ह़, आपणी दया कमाईआ। शब्द अनादी एका बोल, सोहँ ढोला गाईआ। आदि जुगादी करे चोल्ह़, जन भगतां मेल मिलाईआ। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला रूप आप अख्वाईआ। उलटा करे नाभ कँवल, कँवल कँवला आप भुवाईआ। ना कोई जाणे पंडत पांधा रवल, हिसाब कताब ना लेख लिखाईआ। गुरसिखां प्याए अमृत आत्म साची पौहल, नाम खण्डा विच फिराईआ। मिले वड्याई उप्पर धवल, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाईआ। साचा अमृत मिट्ठा रस, सोहँ शब्द जैकारा। सतिगुर पूरा देवे हस्स हस्स, गुरमुखां भरया रहे भण्डारा। आपे हरिजन होए वस, आपे निउँ करे निमस्कारा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग खोल्ह़े इक्क दुआरा। साचा अमृत शब्द धार, गुरमुखां मुख चुआईआ। पंचम बाती पंच प्यार, पंचम करे पढ़ाईआ। धुर दी राणी जोत निरँकार, साचा सगन मनाईआ। मिल्या हाणी विच संसार, गुरमुख वेख वखाईआ। अमृत पाणी वार ठंडी ठार, सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां अमृत रस, गुरमुखां आप प्याईआ। अमृत रस पंचम मुक्ख, पंचम धार बंधाया। सतिगुर पूरा देवणहारा सुख, घर साचे वेख वखाया। आप उठाए आपणी कुक्ख, जन जननी आप हो जाया। लेखा चुक्के उलटा रुख, दस मास ना अग्न तपाया। मेटणहारा तृष्ना भुक्ख, दर बैठा अलक्ख जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे वरनां रंग रंगाया। चारे वरनां हरि रंग राता, रंगणहारा रंग करतारा। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ाता, ज़ातां वसे बाहरा। शब्द अनाद सच्ची धुन गुर दाता, हरि मन्दिर भरे भण्डारा। पुछणहारा साची वाता, आदि जुगादि ल्ए अवतारा। बैठा रहे इक्क इकांता, इक्क इकल्ला खेल अपारा। हरिजन बंधाए चरन कँवल सच्चा नाता, टुट्ट ना जाए विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे लिखणहारा। ब्रह्मा दर भिखार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। विष्नूं करे कल पुकार, अग्गे आपणी झोली

डाहीआ। शंकर धाहां रिहा मार, धरत धवल कुरलाईआ। करोड़ तेतीसा गया हार, सिल पूजस ना कोए कराईआ। सरगुण तेरा पार किनार, पंज तत्त ना कोई वड्याईआ। निरगुण मिल्या निरगुण धार, शब्द करी रुशनाईआ। चारे वेदां कर त्यार, पुराण अठारां संग रलाईआ। छे शास्त्र इक्क अधार, सिमरत मनू आप समझाईआ। गीता ज्ञान दस अट्ठ अठारां अर्जन मुख सलाहीआ। अञ्जीलां कुरानां कर विचार, एका कलमा रिहा सुणाईआ। नाम सति बाणी धार, गुर गुर नाम वड्याईआ। गोबिन्द खण्डा तेज कटार, विच ब्रह्मण्ड समाईआ। पावे वंडां हरि निरँकार, जगत वंड वंडाईआ। अन्तिम कलिजुग प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। जन भगतां बख्शे चरन प्यार, ना कोई दूसर करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार आप अख्वाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन प्यार, प्रेम प्याला इक्क प्याईआ। वीह सद बिक्रमी होया ख़बरदार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, दूजी कुदरत आप बणाईआ। तीजे नेत्र करे विचार, चौथे घर डेरा लाईआ। पंचम नाम शब्द धुन्कार, साचे मन्दिर आप वजाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई सोहे दुआर, बंक दुआरी वड वड्याईआ। वीह सौ सत्त खेल अपार, सति सतिवादी ख़ुशी मनाईआ। वीह सद अट्ठ अपर अपार, आप आपणी बणत बणाईआ। सन्त मनी सिँघ सुत्त दुलार, बेआस किनारा वेख वखाईआ। वीह सद नौ रंग करतार, आपणे चोले आप रंगाईआ। वीह दस होया ख़बरदार, दिल्ली दुआरे फेरा पाईआ। साचा सज्जण कर त्यार, लोकमात करे कुड़माईआ। सोलां मग्घर दिवस विचार, साचा खेल खिलाईआ। मनजीत सिँघ मन लए अधार, माया ममता मोह चुकाईआ। इन्द इन्दासण कर ख्वार, सच सिँघासण डेरा लाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार, दस इक्क ग्यारां नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। इक्क ग्यारां एका खेल, एकँकारा आप करांयदा। भगत भगवन्त सज्जण सुहेल, जुग जुग आप अख्वांयदा। सन्त साजण चाढ़े तेल, गुरमुख वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जगदीशा डेरा ढांयदा। जगत जगदीशा दस दो, आपणा कर्म कमाया। आपे जाणे आपणे राह, आपे वहिण वहाया। आपे दाता होया निरभउ, भय ना कोई रखाया। आपे लक्ख चुरासी घट घट अन्दर रिहा सौं, गुरमुख विरले मात जगाया। आपे जाणे आपणा मोह, माया ममता दए मिटाया। आपे दरस दिखाए अग्गे हो, निरगुण नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत बारां वीह सद धारा, साचा राह साचा मार्ग लाया। वीह सद बारां सच तारीक, नौ नौ चार राह तकाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव रहे उडीक, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। हरि जी दिसे ना कोई शरीक, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। हरि का लेखा सदा

बरीक, ना सके पढ़ाईआ। हरि हरि खिच्चे साची लीक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी अन्तिम वर, जन भगतां भरया शब्द भण्डार, आपणे खाली हथ्थ रखाईआ। वीह सौ बारां सम्मत चढ़या, हरि साचे आप चढ़ाया। गुर संगत तेरा अक्खर पढ़या, आपणी विद्या दए मुकाया। हरिजन तेरा घाड़ण घड़या, साची बणत बणाया। आप फड़ाया आपणा लड़या, छुट्ट कदे ना जाया। साची मेली मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दर इक्क खुल्हाया। साचा दर हरि निरँकार, वीह सौ बारां अक्ख खुल्हाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, हरि मन्दिर इक्क सुहाईआ। सच सिँघासण अपर अपार, साढे तिन्न हथ्थ बैठा डाहीआ। सिँघ लछमण सेवा करे अपार, दिल्ली लेखा गया समझाईआ। छब्बी पोह दिवस विचार, आप आपणा आसण लाईआ। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी रंग करतार, आपणे दए चढ़ाईआ। राज राजाना लिख्या लेख अपार, साधां सन्तां गया उठाईआ। सत्त रंग निशाना कर त्यार, चव्ही हथ्थ दए चढ़ाईआ। खोल्ही नाम गड्ड गुर करतार, गुरमुखां अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ बारां कर प्यार, हरिसंगत तेरी जड़्ह, प्रभ अबिनाशी लोकमात खड़, आपणे अन्दर आप लगाईआ। गुरमुख साचा लाया बूटा, अमृत मुख चुआया। शब्द अगम्मी दित्ता झूटा, सोहँ ढोला गाया। लहिणा देणा चुकाए जूठा झूठा, साचा मार्ग एका लाया। आप मनाया जुगां जुगां दा रुठड़ा, आप आपणा दर सुहाया। हरिसंगत बन्न्ही एका मुठड़ा, ऊँच नीच ना कोई बणाया। नर निरँकार एका तुठा, गुर रूप ना कोए दिखाया। गुर का रूप शब्द अनडिठा, कलिजुग अन्तिम आप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह वखाया। हरिसंगत हरि कर त्यार, हरि शब्द करी कुड़माईआ। लेखा लिख्या अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लक्ख चुरासी तन श्रृंगार, चुरासी कलीआं वंड वडाईआ। चिट्टे अस्व हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, हथ्थ फड़या साचे माहीआ। सम्मत तेरां होया ख़बरदार, नानक तेरी धार बंधाईआ। तोला बणया विच संसार, एका ढोला गाईआ। साधां सन्तां कढुया पोला, घर थिर फेरा पाईआ। राज राजानां भार करया हौला, धन माल ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। सम्मत तेरां उतरया पार, हरि सज्जण खेल खिलाया। पुरख अबिनाशी हो त्यार, निरगुण जोती नूर रुशनाया। शब्द अगम्मी कर जैकार, एका नाअरा लाया। गुरमुख साजण पावे सार, लोकमात लए उठाया। गोबिन्द सूरा कर त्यार, एका बंधन बंध बंधाया। एका इक्की वेख विचार, साची सिक्खी दए समझाया। चौदां लोकां पार किनार, चौदां तबकां पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, सम्मत चौदां चौदां हट्ट खेले खेल बाज़ीगर नट, हरिजन साचे लए उठाया। सम्मत पन्दरां हरि मृदंग, अपणा नाम वजाया। पावे सार गोदावरी गंग, सुरस्ती वेख वखाया। जमना मंगे आपणी मंग, निउँ निउँ सीस झुकाया। अठसठ होवण मात नंग, उप्पर पर्दा कोए ना पाया। एका इक्की रक्खी संग, चरन चरनोदक इक्क चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा लेखा पहला आप चुकाया। अठसठ तीर्थ फेरा पा, गुरमुखां नाल रलाईआ। मन्दिर मड्ढ वेखे थाँ थाँ, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गुर दर खेल रिहा खिला, खेलणहार बेपरवाहीआ। आपणी रचना लई रचा, आपे वेख वखाईआ। आपे जोती दए टिका, आपे खिच वखाईआ। हरिदुआर हरि की पौड़ी कोई ना सके नहा, हरि का रूप ना कोई दिसाईआ। सतिगुर पूरा एकँकार कलिजुग अन्तिम एका पकड़णहारा बांह, एका खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पन्दरां वेखे डूँघे मन्दिर फोल फुलाईआ। सम्मत पन्दरां पार किनार, हरि साचा जोत जगाईआ। निरगुण रूप अपर अपार, दिस किसे ना आया। निरगुण मेला विच संसार, गुरमुख मेल मिलाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा नेत्र नैणां साची भिच्छया जगत इच्छया, आपे पूर कराईआ। सम्मत सोलां चढ़या चाअ, लोकमात उठ धाया। पुरख अबिनाशी मिल्या इक्क मलाह, नाम पल्लू इक्क फड़ाया। शब्द सरूपी सच सलाह, साचा मता पकाया। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, आपणी गोद उठाया। राज राजानां देवे ख़ाक रला, शाह सुल्तानां सीस ताज ना कोई टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद सोलां वेख वखाया। वीह सद सोलां एका छीका, रंगे रंगणहार। लक्ख चुरासी रसना रस जाणे फीका, हरिजन मेला कन्त भतार। सतिगुर पूरा नीकण नीका, शब्द अगम्मी देवे झलकार। जाणे भेव जीव जन जी का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां साचा रंग, हरिजन मेला सूरा सरबंग, आपे लाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। अंगीकार पुरख करतार, हरिजन रंग रंगाया। सच बणाई साची नार, सच साची सेज हंढाया। सुहाए बंक थिर दरबार, घर सुहञ्जणा आदि निरँजणा जोत जगाया। दीपक बाती इक्क उज्यार, एका नूर डगमगाया। लोकमाती लै अवतार, निहकलंका नाउँ धराया। खोल्ह ताकी बन्द किवाड़, गुरमुख सज्जण मेल मिलाया। दीवा बाती नर निरँकार, पूर्ब लहिणा झोली पाया। लक्ख चुरासी उतरे पार, हाढ़ सतारां जिस जन दर्शन पाया। मार पलाकी शाह अस्वार, चिट्टे अस्व आप चढ़ाया। धुर दा राकी कर त्यार, लोकमात रिहा दौड़ाया। साचा साकी ख़बरदार, अमृत जाम प्याला दए प्याया। नाता छुट्टा सर्ब संसार, सतिगुर पूरे लड़ फड़ाया। मानस जन्म ना आए हार,

आवण जावण रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत मेघ सावण हरिसंगत आप बरसाया। हरिसंगत हरिसंगत रत्तड़ा, दिवस रैण प्रभात। सतिजुग साची देवे मतड़ा, प्रगट होया साख्यात। जगत विसूरा सगला लथ्थड़ा, जिस मिल्या पुरख बिधात। लहिणा चुक्के साढे तिन्न हथ्थड़ा, त्रैगुण मिटी वाट। लेखे लग्गा मस्तक मथड़ा, उतरया पूरे घाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा हाट। साचा हट्ट सच दरबारा, हरि साचे मात खुल्हाया। सम्मत सोलां कर विहारा, हाढ़ सतारां दिवस सुहाया। जो जन गाए सोहँ जैकारा, सतिगुर पूरा वेख वखाया। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यार, घर मन्दिर इक्क सुहाया। राज जोग जगत सच्चा सिक्दार, सच सुल्तान डेरा लाया। मोख मुक्त पार किनार, साची जुगत इक्क समझाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा इक्क सुहाया। दर दरबार नर निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। भगत वछल हरि मीत मुरार, हरिसंगत दए वड्याईआ। आपे वेखे ब्यास किनार, बेआसा थाउँ थाँईंआ। रसन स्वास कर प्यार, शाह शबाश मेल मिलाईआ। सर्ब गुण तास पावे सार, जगत उदासी दए मिटाईआ। गुरसिख अन्त ना रहे निरासी, दूसर दर ना मंगण जाईआ। प्रगट होया घनक पुर वासी, पुरी घनक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगाईआ।

सतिगुर पूरा उठया, वड दाता हरि मेहरवान। गुरसिख कोए ना रहे रुट्ठया, लक्ख चुरासी विच्चों लए पछाण। आप बन्हाए आपणी मुट्ठया, आपे होया पंच प्रधान। तीर निराल एका छुट्टया, मारे मार दो जहान। गुरसिख कदे ना जाए लुट्टयां, तेरी सेवा करे आप भगवान। लक्ख चुरासी खाली ठूठया, दर मंगण राज राजान। मनमुखां टंगे पुट्ठया, राए धर्म इक्क फ़रमान। हरिसंगत तेरे उत्ते हरिजू हरि हरि मन्दिर आपे तुठया, गुर अर्जन लेखा लिख्या महान। हरि मन्दिर हरि जागया, निरगुण जोत कर प्रकाश। शब्द सुणाया साचा रागया, जन भगतां पूरी करे आस। लोकमात आया भागया, वेखणहार पृथ्मी आकाश। हरिसंगत तेरी सरनाई सतिगुर पूरा लागया, पहलां आपणी पूरी करे आस। तेरी पकड़े फेर वागया, सम्मत सोलां बुझाए प्यास। साचा बन्न्हे नाम तागया, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ विच प्रभास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल शाहो शाबासया। खेलण आया खेल खिलारी, कलिजुग खेल खिलाया। जोत जगाई जोत निरँकारी, निरगुण नाउँ धराया। नौ दुआरे पार किनारी, नौ दर वेख वखाया। हरिसंगत करी माँ प्यारी, साचा मेल मिलाया। पहरा देवे पहरेदारी, चोबदार अख्वाया। ख़लक ख़ुदाए ना पाए सारी, ख़ालक ख़लक विच हो आया। जोती

जामा भेख न्यारी, जोती नूर डगमगाया। शाहो भूप भूप सिक्दारी, साचा सज्जण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आपे रिहा चलाया। बन्ने धार नाम डोर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरिसंगत तेरे कढ्ढे पंज चोर, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। मन मति ना मचाए कोई शोर, गुरमति इक्क समझाईआ। मनुआ दहि दिशा ना जाए दौड़, आपणा बंधन आपे पाईआ। करे रस मिट्ठा कौड़, अमृत झिरना आप झिराईआ। धुरदरगाही आया दौड़, हरिसंगत वेख वखाईआ। चौथे पद लाया एका पौड़, आपणे पौड़े आप चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम गया बौहड़, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआं दान, खेले खेल दो जहान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। निहकलंका रक्खया नाउँ, हरि हरि खेल खिलाया। सम्बल नगरी सच ग्राउँ, आपणा आसण लाया। आपे पिता आपे माउँ, आपे बाल उठाया। आपे देवे ठंडी छाउँ, हरिजन साचे मेल मिलाया। देवणहारा ठंडी छाउँ, हरिसंगत तेरे सीस हथ्थ टिकाया। दो जहानी पकड़े बाहों, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सतिगुर तेरी वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां, आपणा आप चमकाया। उठया हरि बलवान सूरबीर बलकारा, भेव कोई ना पांयदा। जन भगतां देवे नाम सहारा, साचा मार्ग एका लांयदा। दूत दुष्ट करे ख्वारा, हँकारां गढ़ तुड़ांयदा। राम नाम इक्क अधारा, एका रूप दरसांयदा। एका शब्द इक्क जैकारा, एका राग अल्लांयदा। इक्क दर इक्क दरबारा, दर दुआर इक्क खुल्लांयदा। एका मीत इक्क मुरारा, एका ब्रह्म अख्वांयदा। एका पुरख एका नारा, सृष्ट सबाई रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत अगम्मी ना मरे ना कदे जम्मी, निरगुण निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण नाम सति करतार, सति सति वरताया। निरगुण साची पावे सार, साचा शब्द अल्लाया। शब्द शब्द गुर अपर अपार, नेत्र नैण ना वेस दिसाया। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, आपणा मन्त्र दए दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां इक्क समझाया। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका मति समझाईआ। एका सीता एका राम, एका कृष्न मनाईआ। एका अल्ला राणी कर प्रनाम, एका नाअरा लाईआ। एका नाम सति प्रधान, नानक रसना गाईआ। एका गोबिन्द लेख महान, वाहिगुरू फतहि गजाईआ। सभ दा दाता आप भगवान, जुग जुग खेल खिलाईआ। नौ नौ चार वेख निशान, कलिजुग वज्जी सच वधाईआ। प्रगट हो हरि मेहरबान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े लए पछाण, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। एका दरस श्री भगवान, एका रंग रंगाईआ।

६६३ ०८

एका अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सोहँ ढोला सारे गाण, नौ खण्ड मिले वधाईआ। सत्तां दीपां साची आण, हरि साचा आप रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन ध्यान, भगवन नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी नाद वजाईआ। शब्द नाद हरि वज्जया, एका नाम जैकार। सतिगुर पूरा लोकमात हरि गज्जया, निहकलंकी जामा धार। जो घड़या सो भज्जया, थिर रहे ना कोए संसार। जन भगतां रक्खे लज्जया, आप आपणी किरपा धार। प्रगट होया देस माज्झया, सम्बल नगरी धाम न्यार। आपे जाणे आपणा काज्जया, लेखा लिखे ना कोई अपार। शाहो भूप वड राजन राज्जया, फड़े शब्द तेज कटार। गुरमुखां मारे वाज्जया, मनमुख सुत्ते पैर पसार। सम्मत सोलां चलाया सच जहाज्जया, सतारां हाढ़ी हरि विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां कराए सच श्रृंगार। उठ सिक्ख कर सच श्रृंगारा, हरि साचे बणत बणाईआ। सोहँ नाम कज्जल धारा, तेरे हथ्थ फड़ाईआ। प्रेम मैहन्दी रंग अपारा, तेरा तैनूं दए चढ़ाईआ। दिशा लहिंदी खेल अपारा, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे वेखे आपे पेखे, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपे लिख्या लिखे लेखे, आपे दए मिटाईआ। आपे दाता दस दस्मेशे, दर दरवेश आप हो जाईआ। आप नरायण नर नरेशे, निरगुण नूर आप रुशनाईआ। आपे मुच्छ दाढ़ी रक्खे केसे, आपे मूंड मुंडाईआ। आपे धारनहारा भेसे, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत तेरी करी नाम कुड़माईआ।

नाम कुड़माई जुड़या नाता, हरि साचे जोड़ जुड़ाया। वर घर पाया पुरख बिधाता, विछड़ कदे ना जाया। मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्न चढ़ाया। देवणहारा साची दाता, एका वस्त झोली पाया। मेल मिलावा भैण भ्राता, भैणां भईआ वेख वखाया। देवणहारा साची गाथा, सोहँ नाम रिहा जपाया। चलावणहारा सच्चा राथा, हरिजन रथ रिहा चलाया। खेलणहारा त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथां होए सहाया। चौदां रत्नां आपे माथा, मथणहार भेव ना आया। सत्त सरोवर मारे ठाठा, सागर सागरां विच टिकाया। धरनी धरत धवल फिरे नाठा, पंज तत्त वेख वखाया। त्रैगुण पूरा घाटा, अन्तिम दए कराया। सतिजुग साचे साची वाटा, साचा मार्ग लाया। एका बस्त्र एका खाटा, एका सेज हंढाया। एका जोती एका लाटा, एका धूप धुखाया। वसणहारा काया माटा, गुरमुख साचे लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर,

सम्मत सोलां घाड़ण घड़, गुरमुखां अन्दर जाए वड़, ना कोई सके बाहर कढाया। गुरमुखां अन्दर आपे वड़ना, आपणी जोत जगाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़ना, ना मरे ना जाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़ना, माटी गोर ना कोई दबाईआ। जल धारा कदे ना हड़ना, डूँघी धार ना कोई वहाईआ। जगत विद्या अक्खर कोए ना पढ़ना, ना कदे कोई पढ़ाईआ। हरिसंगत फड़ाए आपणा लड़ना, आप आपणे लड़ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्मत सतारां हरिसंगत अग्गे दए ब्यान, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। हरिजन हरि हरि कीता बन्द, बन्दीख़ाना इक्क रखाया। चार दीवार ना कढ्ढी कंध, छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। रवि ससि ना चमकाया सूरज चन्न, मण्डल मण्डप ना कोई वखाया। हथ्थीं पैरीं ना पाया कोई तन्द, एका बंधन प्रेम वखाया। नाम गाया सुहागी छन्द, सतिगुर पूरा सुणने आया। आपे मेटे आपणी चिन्द, सगली चिन्दा दए मिटाया। सतिगुर पूरा हरि मेहरबान सद बख्शिंद, हरिजन साचे लए तराया। आप बणाए आपणी बिन्द, नारी सुत्त आप उपजाया। गहर गम्भीर गुणी गहिंद, वड दाता बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लए उठाया। उठ जाग सज्जण मीतड़े, हरि साजण अवाज़ लगाईआ। रंगण आया काया चोली चीथड़े, नाम ललारी इक्क वखाईआ। वसे धाम इक्क अनडीठड़े, दिस किसे ना आईआ। पूरे करे कौल कीतड़े, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। मिट्ठे करे काया कौड़े रीठड़े, गुर नानक मति समझाईआ। जिस जन वस्सया हरि हरि चीतड़े, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर गुरदुआर मसीतड़े, घर घर विच बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म पतित पुनीतड़े, पतित पापी लए तराईआ। हरिसंगत गाओ सुहागी गीतड़े, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड्डी वड्याईआ। मानस जन्म गुरसिखां जीतड़े, हाढ़ सतारां जिस जन ख़ुशी मनाईआ। मनमुखां लब माया रंगे चीथड़े, रसना होए हल्काईआ। छत्ती जुग पिछले बीतड़े, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी दए दुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा दुआरे खाली कीतड़े, ध्रू आपणी गोद उठाईआ। गुरमुख साचे सज्जण मीतड़े, लोआं पुरीआं आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां हाढ़ सतारां दो जहानां दए वड्याईआ। दो जहानां वड वड्डा दिन, हरि लोकमात जणाया। चार जुगां लेखा देवे गिण गिण, गुरमुख तेरी बाकी रहे ना राया। पार कराए लोक तीन, मण्डल मण्डप तेरे चरनां हेठ दबाया। दरस दिखाए प्रगट होए जिस जन, जोती जामा भेख वटाया। नौ खण्ड पृथ्मी लेखा चुकाए साढे तिन्न हथ्थ मिण मिण, भुल्ल रहे ना राया। खेले खेल खिन खिन, भय भयानक रूप वटाया। सृष्टी तेरा लेखा चुक्के तिन्न दिन, त्रैगुण अग्नी तत्त जलाया। आपणी हथ्थीं

६६४ ०८

चिखा देवे चिन्न, जोती लम्बू एका लाया। गुरसिख तेरा नज़री आवे एका चिन्न, उप्पर सोहँ लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां हाढ़ सतारां हरिसंगत करे सच प्यारा, साचा मेली मेल मिलाया। हरिसंगत साचा मीतड़ा, पाया पुरख अपार। सतिजुग साची चली रीतड़ा, सोहँ गावणा वारो वार। साचा मन्दिर इक्क मसीतड़ा, काया हरि मन्दिर होए उज्यार। रंगणहार चोली चीथड़ा, चाढ़े रंग नौ दुआर। आदि जुगादी ठंडा सीतड़ा, सति सति वरते विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत दर तेरे हरि बणया आप भिखार। हरि भिखारी दर दरवेश, हरिसंगत माल ख़ज़ानयां। मंगे मंग नर नरेश, हरिसंगत करे परवानया। सोहँ शब्द सच संदेश, आदि जुगादी साची बाणीआ। परम पुरख रहे हमेश, गुर पीर साध सन्त भेजे आपणी आप निशानीआ। नौ नौ चार ना चले किसे पेश, खाणी बाणी होए हैरानया। पुरख अबिनाशी आपे आपणी रेखा ल्ए वेख, आपे करे आपणी आप कुरबानीआ। लक्ख चुरासी मेटे रेख, ना दिसे जगत निशानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला शाह सुल्तानया। शाह सुल्तान सच्चा हरि भूप, साचे तख्त बराज्जया। सति सरूपी रंग अनूप, प्रगट होया देस माज्झया। फिरे दरोही चारे कूट, दहि दिशा फिरे भाज्जया। मेट मिटाए जूठ झूठ, जन भगतां रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क वजाए साचा वाज्जया। साचा वाजा अनहद ढोल, मृदंगा आप वजाईआ। निश्अक्खर वक्खर आपे बोल, आपे रिहा गाईआ। तोल तुलाए आपणे तोल, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। हरिसंगत तेरे नाल मारे कोई ना रोल, तेरी वासना तेरे विच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा वणज वणज वापारा, करे कराए आप निरँकारा, दूसर कोई ना संग रखाईआ। ना कोई दूसर ना कोई दूआ, दूई द्वैती ना वेख वखांयदा। आदि जुगादी नवां नरोआ, एकँकारा आप अख्वांयदा। सो पुरख पुरख आपे होया हं, ब्रह्म आप अख्वांयदा। शब्द अनादी आपे ढोआ, आपे गीत अल्लांयदा। अन्दर मन्दिर आपे बोआ, फुल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा मुल्ल, फुल फुलवाड़ी गई फुल्ल, पत डाली फोल फुलांयदा। फुल्ल मौलया फुलवाड़या, वेखे रुत्त बसन्त। होए ख़ुशी बहत्तर नाड़या, हरिजन मिल्या हरि हरि कन्त। धन्न सुभाग सतारां हाढ़या, रसना जिह्वा मणीआ मंत। दर घर वेख्या इक्क अखाड़या, जगे जोत श्री भगवन्त। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़या, कलिजुग माया पाए बेअन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन उपजाए साचे सन्त। सन्त दुलारा हरि गोबिन्द, हरि हरि विच आप समाया। सतिगुर पूरा मेटणहारा चिन्द, चिन्ता चिखा

दए गंवाया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराया। गुरमुखां आत्म धार वहाए सागर सिन्ध, अमृत ताल भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत तेरा होए आप सहाया। आप सहाई लजपत राखा, वेखे दो जहाना। सतिगुर पूरा सज्जण साचा, खेले खेल महाना। करता कीमत पाए अलक्खणा अलाखा, लक्ख कौड़ी ना कोई चुकाना। आप सुणाए आपणी गाथा, सोहँ धुर फ़रमाना। लेखे लग्गे चरन छुहाया मस्तक माथा, आवण जावण चुक्के काना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए श्री भगवाना। श्री भगवान कल्गीधर, धर धरनी जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी करनी करता कर, आपणी करनी रिहा कमाईआ। आदि जुगादी वरनी वरन, बरन वरन ना कोई रखाईआ। शब्द शब्दी साची सरन, लक्ख चुरासी मति समझाईआ। गुर गुर अक्खर एका पढ़न, हरि हरि नाम पढ़ाईआ। साचे मन्दिर आपे वड़न, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। त्रैगुण अग्नी मूल ना सड़न, अग्नी तेज ना कोई सड़ाईआ। सतिगुर पूरे जो जन लड़ फड़न, आर पार किनारा ब्यास पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे वेख वखाईआ।

६९६

०८

०८

गाया ढोला आदि निरँजणा, इक्क इकल्ला एकँकार। हरिसंगत मेला साचे सज्जणा, सुहाया बंक दुआर। चरन धूढ़ कराए साचा मज्जणा, आप आपणी किरपा धार। कलिजुग अन्तिम पर्दा कज्जणा, सम्मत सोलां रिहा पुकार। हाढ़ सतारां जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहे ना विच संसार। गुरसिख रक्खे तेरी लज्जणा, प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार। मदिरा मास सभ ने तजणा, मिले मेल परवरदिगार। शब्द अनादी अनहद ताल वज्जणा, आप वजाए सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। पार करिंदड़ा पुरख सुल्तान, सति पुरख अख्वाया। गावत गाए जीव जहान, जीवण जुगत ना कोए वखाया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, एका शब्द दए सुणाया। देवणहारा आत्म दान, ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाया। धुन अनादी राग साचे कान, ब्रह्म ब्रह्मादी आप अलाया। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वेख मकान, उच्च महल्ल अटल सुहाया। नौ दुआरे जगत दुकान, दसवां आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग जन भगतां करे मात पछाण, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला दए कर, जन जननी लेखे लाया। जन जननी जन जाणया, जानणहार निरँकारा। लक्ख चुरासी पुणया छाणया, गुरमुख मिल्या लाल

अपारा। हरिसंगत कर परवानया, आप बणाया सुत्त दुलारा। देवणहारा धुर फ़रमानया, लावणहारा एका नाअरा। गावणहारा साचा गाणया, गावत गाए अपर अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां भरे नाम भण्डारा।

आपणे नेत्र करे बन्द, गुरमुखां नैण खुल्हाईआ। जन भगतां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी छोड़ वड वड्याईआ। आप विखाए निजा नंद, परमा नंद डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप उठाईआ। गुरसिख उठ भिन्नड़ी रैण, नेत्र नैण उग्घाड़या। हरिजन मेला साक सज्जण सैण, हाढ़ सतारां ख़ुशी मना रिहा। जुगां जुगां चुकाए लहिण देण, जुगा जुगन्तर पावे सारया। लक्ख चुरासी सारे कहिण, दिस ना आए विच संसारया। गुरमुख गुरसिख धाम इक्ठे बहिण, सतिगुर साचा बंक सुहा ल्या। नाता तोड़े भाई भैण, गुरमुखां मेल मिला रिहा। मनमुखां लैण ना देवे चैन, नाम खण्डा इक्क चमका रिहा। लाड़ी मौत राह वेखे डैण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म सुणा ल्या। हरिसंगत उठ उठ जाग, हरिसंगत आप जगांयदा। सचखण्ड दुआरे लग्गा भाग, लोकमात वेख वखांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगांयदा। दीपक जोती जगे चराग, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। दुरमति मैल धोवे दाग, मस्तक टिक्का काली शाही लांहयदा। माया डस्सनी ना डस्से नाग, ममता मोह चुकांयदा। दो जहानां पकड़े वाग, साचा संग निभांयदा। जो जन सरनाई गया लाग, आवण जावण फंद कटांयदा। त्रैगुण माया ना लग्गे आग, पंच विकारा मेट मिटांयदा। आप उपजाए साचा राग, अनहद ताल वजांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, सच सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां वेख वखांयदा। हरिसंगत उठ बल धार, नेत्र नैण उग्घाड़ना। पुरख अबिनाशी दरस अपार, घर बैठा सच दुआरना। मिल्या मेल विच संसार, उतरया पार किनारना। पाया वर कन्त भतार, पारब्रह्म पुरख सुल्ताननना। सोभावन्ती होई नार, घर मन्दिर इक्क सुहावना। पिया प्रीतम कर प्यार, साचा सगन मनावना। आत्म सेजा रही शृंगार, साचा कन्त हंढावना। अन्तिम वेखण आया कन्या कुँवार, गुरमुख साचे आप प्रनावणा। होए ना दुहागण विच संसार, जिस जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गावणा। उठ सिक्ख जाग, प्रभ संगत मेल मिलन्नया। प्रभ देवण आया दाज, नाम भण्डारा खोल्ह रखन्नया। रक्खणहारा साची लाज, लोकमात फिरे भन्नया। प्रगट होया देस माझ, आपे मेले चिरी विछुन्नया। दो जहानां साजण साज, सतिगुर पूरा खेल खिलन्नया। कलिजुग अन्तिम रचया काज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेल मिलन्नया।

हरिसंगत उठ नेत्र खोल्ह, आलस निन्दरा जगत गंवाईआ। सतिगुर सज्जण आया कोल, रोग सोग दए मिटाईआ। सतिगुर पूरे अग्गे आपणे दुःखड़े फोल, दुःख सुख विच समाईआ। आपणी ज़िंदड़ी आपे घोल, घोली घोल घुंमाईआ। आपणी रसना आपे बोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड्डी वड्याईआ। निहकलंक वजाया ढोल, त्रिलोकी रिहा उठाईआ। लक्ख चुरासी तेरा कढ्ढे पोल, पर्दा उहला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत रिहा जगाईआ। संगत खोल्ह नेत्र अक्ख, नैणी नैण उग्घाड़या। पारब्रह्म रूप प्रतक्ख, सच सिँघासण जोत निरंकारया। करनहारा कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख आप बणा रिहा। ख़ाली करे भाण्डे सख, आप आपणा खेल खिला रिहा। हरिसंगत लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, चार वरन ना कोई विचारया। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, आपे जाणे आपणी कारया। दो जहानी रक्खे पति, पति पतिवन्ता मीत मुरारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत नाम अधारया। हरिसंगत लए अंगड़ाई, हरि साचे खेल खिलाया । एका नाम शब्द कुड़माई, हरि नामा वणज वखाया। रसना गाउणा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा एका पाया। मंगल गाओ सहिज सभाई, जगत विछोड़ा दए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उठाया। उठया हरिजन सच्चा मीता, हरिसंगत संग निभाया। नज़री आया इक्क अतीता, ठांडा सीता दर्शन पाया। नाम सुणाई साची गीता, एका ज्ञान दृढ़ाया। शब्द वखाए इक्क अनडीठा, एका अक्खर सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां सो पुरख निरँजण सवाधान विच जहान नौ नौ आपे होया। नौ रंग नौ अन्तरा, नौ नौ खेल अपार। चार जुग वेखे सथ्थरा, सथ्थर लाहे सर्ब संसार। बज़र कपाटी लग्गा पत्थरा, अन्दर मन्दिर बन्द किवाड़। गुरमुख विरला होया वक्खरा, जिस जन किरपा करी आप करतार। लभ्भदे फिरदे गोकल मथरा, घर बैठा काहन मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत करे प्यार। घर बैठा सच्चा पातशाह, परम पुरख सुल्तान। दो जहानां सच मलाह, वस्सया उच्च मकान। फड़ फड़ आपे पाए राह, एका वेखे श्री भगवान। आप जपाए आपणा नाँ, आपे देवे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत होया मेहरबान। हरिसंगत बाल निधानया, बाली बुध निधान। सतिगुर पूरा होए मेहरबानया, देवे नाम निधान। धर्म झुलाए इक्क निशानया, धर्मी धर्म धर्म निशान। अनहद सुणाए साची बाणीआ, आत्म अन्तर हो प्रधान। तीर निशाना मारे कानीआ, अणयाला तीर इक्क महान। आपे होए जाणी जाणया, हरिसंगत कर परवान। लेखा चुक्के चारे खाणीआ, चारे बाणी पद निरबाण। सतिगुर मिल्या साचा हाणीआ, छुट्टयां आवण जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे धुर माण। धुर

६६८ ०८

ਫ਼ਰਮਾਨ placeholder

अतोट अतुट रखांयदा। बेआस किनारे उतरे पार, सच किनारा इक्क सुहांयदा। सच किनारा सचखण्ड दुलार, सतिगुर पूरा आसण लांयदा। निरगुण जोत जगे अपार, दिवस रैण डगमगांयदा। शब्द धुन सच्ची धुन्कार, एका राग अलांयदा। सच तख्त बैठ सची सरकार, साचा हुक्म चलांयदा। निरगुण रूप अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण भेव ना आंयदा। सरगुण चेला विच संसार, साची जोत प्रगटांयदा। गुरसिख सज्जण लए उभार, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कागों हँस बणांयदा। कागों हँस चुगाए चोग, माणक मोती ताल सुहाया। दरस दिखाए हरि अमोघ, कोटन कोटी जीव तराया। जन भगतां बख्शे साचा जोग, एका अल्फ़ी अल्फ़ नाम पाया। कट्टणहारा हउमे रोग, गैन ग़फ्लत विच ना आया। ऐन अक्खर सुणाए सच सलोक, एका ढोला नाअरा गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा लेखा, लेखे लए लगाया। लेखे लाए लेख बनवारी, लिख्या लेखे पांयदा। दर आयां पैज रिहा संवारी, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जो जन आए बण भिखारी, नाम भिच्छया झोली पांयदा। जो जन बैठे बण हँकारी, दर दुआरे आप दुरकांयदा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारी, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संगत मेला साचे घर, हाढ़ सतारां सम्मत सोलां साचा चोला आप बदलांयदा। चोला बदलया आप निरँकार, आपणी दया आप कमाईआ। सिँघ बिशन कर प्यार, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। सिँघ प्रीतम पहरेदार, पिच्छे पिच्छे चरन उठाईआ। सिँघ गुरमुख हो त्यार, नाम डण्डा रिहा हिलाईआ। सिँघ इन्द्र कर प्यार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सिँघ पाल करे विचार, दीन दयाल दरस दिखाईआ। दर्शन सिँघ बण लिखार, दो जहानां लेखा रिहा मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम उतरया पार, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। झूठ जूठ मिटे संसार, नार विभचार ना कोई दिसाईआ। नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना दए जलाईआ। एका रूप सच्ची सरकार, निरँकार नूर रुशनाईआ। चारे कुन्ट ख़बरदार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप गुरमुखां विच बन्द कराईआ। पंच सिक्ख पंच प्रधान, पचम मीत अख्वाया। पंचम कढु नाम किरपान, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाया। पंचम करे निगहबान, पंचम मेला मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। पंचम खिच्च कटार, हरि निरँकार, दो दो हथ्थ फड़ाईआ। आपे आया अद्धविचकार, नठ्ठ किते ना जाईआ। गुरसिख खिच ल्याए विच दरबार, हरिसंगत तेरी वड वड्याईआ। तेरे विच्चों ना होए बाहर, पहरेदार पंच

७०० ०८

बहाईआ। लेखा लिख्या बण लिखार, चिट्टे उप्पर काली शाहीआ। नाता जुड़या विच संसार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। भवजल सागर कर जाए पार, डूँघी भँवर ना कोई रुढ़ाईआ। कागज़ कलम ना लिखे लेख हरि निरँकार, सत्त समुन्द्र मस बणे कागज़ कलम बणे बन राईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जामा भेख अपार, गुर गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, उच्च अटला आसण लाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, आपणी कल वरताईआ। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां दिवस विचार, पंच प्यारे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीत पतित पुनीत, सतिजुग मार्ग आपणा आपे लाईआ। पंचम प्यारे पहरेदार, हरि बंधन बन्दी पाया। आप उठाए जगत सरकार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। प्रगट होया हरि निरँकार, वरनां बरनां दए मिटाया। राज राजाना करे खुआर, शाह सुल्तानां वेख वखाया। साधां सन्तां मारे मार, जीआं जन्तां दए सजाया। गुरमुख सचे लए उभार, जिस जन आपणा नाम जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, कर किरपा वेख वखाया। पंच प्यारे पहरेदार, सेवक सेव कमाईआ। बन्द करी जोत निरँकार, प्रेम डोरी बंधन पाईआ। अग्गे पिच्छे विच संसारे, खब्बे सज्जे सेव कमाईआ। हरिसंगत लेखे हरि दुआरे, हरी दुआरे इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भेटा हरिसंगत आप चढ़ाईआ। हरिसंगत अग्गे सीस धर, तेज कटार कटाया। गुरमुख सज्जण चुक्के डर, सतिगुर पूरा होए सहाया। कलिजुग रोवे नारी नर, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हर घट हर थाँईं, हरिजन साचे होए सहाया।

हरि सतिगुर ढाडी आया, गुरसिखां गाए साची वार। आदि जुगादी वेस वटाया, इक्क इकल्ला एकँकार। शब्द अनादी एका गाया, आप आपणा कर जैकार। आदि शक्ति नाउँ धराया, रूप अनूप सच्ची सरकार। निरगुण आपणा खेल खिलाया, खेले खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्ने आपणी धार। हरि ढाडी दर मंगदा, गुरमुखां उच्च दुआर। थिर घर साचे आपे लँघदा, आपे बणया शाह सरकार। आपणा आसण आपे रंगदा, आप अपणी किरपा धार। खेले खेल सूरे सरबंग दा, सतिगुर पूरा ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर जोत उज्यार। जोती नूर आदि भवानी, आदि शक्ति अख्वाईआ। परम पुरख शाह सुल्तानी, हरि हरि नाउँ उपाईआ। नाम खण्डा तीर कमानी, साचा शस्त्र हथ्थ उठाईआ। खेले खेल दो जहानी, लोकमात वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी

कर प्रधानी, आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव भरदे पाणी, सेवक सेवा साचा लाईआ। एका मन्त्र शब्द ज्ञानी, एका ब्रह्म पढ़ाईआ। एक वेखे धुर दी बाणी, एका राग अल्लाईआ। साचे अन्दर सच सवाणी, साची शक्ती आप टिकाईआ। आपे बणया आपणा बानी, आपणी बाण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूपा साचा भूपा बिन रंग रूपा, भेव अभेद ना कोई वड्याईआ। आदि शक्ति हरि अधार, हरि हरि जोत जगांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव कोई ना पांयदा। निरगुण निराकार निरँकार, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे होए सलाहकार, सच सलाह आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जागरत जोत पुरख अकाल, आपणी आप उपाईआ। आपे चले नाल नाल, आप आपणा संग निभाईआ। आपे करे कराए प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। आप आपणा दीन दयाल, आपे बंधन तोड़ तुड़ाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, जुग जुग आपणी चाल रखाईआ। आपे होए काल महांकाल, काल नगारा आप वजाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, दो जहानां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपे जोद्धा बण बलकार, आपे खण्डा हथ्थ उठांयदा। आपे सीस जगदीश आपणा वार, आपे भेट चढ़ांयदा। आपे रक्खे तिक्खी धार, आपे मुख भुवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खण्डा तेज कटार, पुरख अबिनाशी कर प्यार, आप आपणे हथ्थ वखांयदा। शब्द खण्डा खड़ग खण्ड, हरि साचे हथ्थ उठाया। वेखणहारा विच ब्रह्मण्ड, लोकमात वेस वटाया। लोआं पुरीआं आपे लँघ, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाया। आपे हरि अवतार, दूती दुश्मण आप अख्वाईआ। आपे खेल करे संसार, आपे करे लड़ाईआ। आपे बस्त्र शस्त्र तेज कटार, आपे बैठा सीस झुकाईआ। आपे चिल्ला तीर कमान, आपे कमन्द खिचाईआ। आपे मारनहारा मार, आपे लए बचाईआ। आपे एका एकँकार, आदि जुगादी रिहा कराईआ। आदि शक्ति हो त्यार, एका नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता खेल कराईआ। जुग करता जोत नुरानी, नूरो नूर समाया। आपे इष्ट आदि भवानी, आप आपणा नाउँ धराया। आपे होया जाण जाणी, जानणहार भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। आपे मारे आप जवाए, आपे वेख वखांयदा। आपे साचा खेल खिलाए, आपे वेस वटांयदा। आपे जोत ज्वाला नाउँ धराए, सिँघ अस्वार आप अख्वांयदा। सुंभ निसुंभा आप उठाए, आप आपणा मेल मिलांयदा। अभेव अभेदा रिहा छुपाए, भेव कोई ना पांयदा। अष्टभुज धारी नाउँ धराए, सिँघ मृदंग आप वजाए, आपणा नाअरा लांयदा। आपणा अंग आप कटाए, अंगीकार

आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्ति आदि भवानी, जोती जोत नुरानी, नूर नूर डगमगांयदा। आदि शक्ति रूप धर, सिँघ शेर अस्वारया। कलिजुग खेल अपर अपार, भेव कोए ना पा रिहा। पंज तत्त नाउँ धर, सीस जगदीश ना कोई वखा रिहा। एका जोती नूर कर, नूरो नूर डगमगा रिहा। साचे शेर अस्वारी कर, कहर रूप हो आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी देवे वर, वर दाता आप अख्वा रिहा। साचे शेर कर अस्वारी, सिँघ सिँघ उठ उठ धाया। खेले खेल जोद्धा बलकारी, बल अपणा वेख वखाया। निरगुण जोती कर उज्यारी, आप आपणा नाउँ धराया। निरगुण नाउँ निहकलंक अवतारी, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारी, ब्रह्मा विष्न शिव हिलाया। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारी, सत्तां दीपां आप हिलाया। मनमुख जीवां करे खुआरी, ना सके कोई तजाया। गुरमुख सज्जण रिहा तारी, आप आपणे चरन लगाया। चरन लग्गण दी आई वारी, क्यों बैठे मुख भुवाया। प्रगट होया हरि निरँकारी, एका ढोला साचा गाया। गाओ ढोला अपर अपारी, लेखा लेखे दए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका जोत, ना कोई वरन ना कोई गोत, खेले खेल कोटी कोटि, कोटि कोटी वेस वटाया। चरन दुआर साचा घर, कलिजुग अन्तिम आप वखाया। जो जन सरनाई गए जुड़, जन्म मरन फंद कटाया। आप फड़ाया आपणा लड़, ना सके कोई छुडाईआ। साचे पौड़े गया चढ़, गुरमुखां लए चढ़ाईआ। अद्धविचकार ना जाए कोई अड़, नानक कबीर दए गवाहीआ। एकँकारा एका अक्खर पढ़, सोहँ मेल मिलाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बख्शे चरन सच्ची शरनाया। चरन दुआर उच्च महल्ला, हरिसंगत हरि समझांयदा। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला, आपणा रंग रंगांयदा। वसणहारा जलां थलां, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त, आप भुलाए कर कर वल छला, गुरमुखां पर्दा लांहयदा। जोती शब्दी आपे रला, सच सुनेहड़ा आप घलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आपणा नाउँ धरांयदा। चरन दुआरा सचखण्ड निवास, गुरमति एह समझाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, लोकमात करे रुशनाईआ। जन भगतां होया दासी दास, सेवक सेव कमाईआ। पार किनारा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल चरनां हेठ दबाईआ। गुरसिख तेरे मन्दिर तेरी पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। लेखे लग्गे स्वास स्वास, जो जन रसना गाईआ। सम्मत सोलां पूरी करे आस, निरासा कोई रहिण ना पाईआ। साचे मन्दिर सच बिलास, भोग भोगी इक्क वखाईआ। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग करता वड वड्याईआ। जोती जोत कर प्रकाश, चरन कँवल करे रुशनाईआ। लहिणा देणा चुक्के दस

दस मास, दर दरबारा लए खुल्हाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत साची लए तराईआ। चरन कँवल कँवल जन नाता, गुर सतिगुर आप बंधाया। दरस दिखाए पुरख बिधाता, आप आपणा रूप वटाया। देवणहारा साची दाता, सोहँ मन्त्र झोली पाया। मेटणहारा अन्धेरी राता, साचा चन्द इक्क चढ़ाया। शब्द अगम्मी सुणाए गाथा, आपणा मन्त्र आप अल्हाया। इक्क वखाए पूजा पाठा, गुरदुआर इक्क सुहाया। इक्क सरोवर मारे ठाठा, एका अमृत आप प्याया। एका भरया नाम बाटा, धुरदरगाही लै के आया। कलिजुग अन्तिम पूरा करे घाटा, जिस जन चरन ध्यान रखाया। दूसर विके ना किसे हाटा, गुर का शब्द इक्क समझाया। दर दर फिरे ना कोई नाठा, आप आपणा दर बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती देवे वर, चरन चरनोदक एका मुख चुआया। चरन चरनोदक आत्म रस, गुरमुखां मुख चुआईआ। दरस दिखाए नस्स नस्स, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। तीर निराला मारे कस, अनिआला तीर इक्क लगाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, आपे लए मिलाईआ। हिरदे अन्दर हरिजू वस, हरि मन्दिर दए वड्याईआ। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि ससि, सूरज चन्न रहे शरमाईआ। आदि जुगादी आपणा जस, जन भगतां झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती साची रीती, कलिजुग अन्तिम इक्क समझाईआ। चरन प्रीती साचा रंग, हरिजन साचे आप चढ़ांयदा। आत्म सेजा वेख पलँघ, आपणा आसण लांयदा। शब्द अनाद वज्जे मृदंग, गुर सतिगुर आप वजांयदा। अमृत धार वहाए गंग, निझर झिरना इक्क झिरांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आपणी सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, चरन कँवल कँवल सहारा, दो जहानां उतरे पारा, सचखण्ड दुआर इक्क सुहांयदा। चरन कँवल कँवल जन, चरन चरन चरन वड्याईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, लोचण लोचण दर्शन पाईआ। आप मिटाए मरन डरन, डरन मरन भय ना कोई रखाईआ। सतिगुर पूरा तरनी तरन, हरिजन साचा लए तराईआ। जो जन सरनाई साची पड़न, चरन चरन जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वर दानी जोत भवानी शब्द निशानी इक्क वखाईआ। वर दानी वर मंगण आई, गुरमुखां वेख दुआरा। आपणी चोली आपे रंग रंगण आई, सालू रतड़ा लाल अपारा। गुरमुखां गुरसिखां संग रक्खण आई, विछड़या संसारा। जोत नुरानी डगमगाई, कलिजुग अन्तिम लए अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारा।

सोहँ शब्द साची धार, निरगुण सरगुण आप अख्वाईआ। पारब्रह्म रूप करतार, ब्रह्म ब्रह्म वेख वखाईआ। जुगा जुगन्त साची कार, करनी करता आप कमाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आपणा नाउँ जपाईआ। आदि अन्त इक्क प्यार, एका विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ सो आप हो जाईआ। सो पुरख निरँजण दीन दयाला, निरगुण हरि हरि आप अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल निराला, हरि साचा आप खिलांयदा। प्रगट हो दीन दयाला, आप आपणी दया कमांयदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सो दर हरि कर परवाना, घर साचे आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी नौजवान, साचा मन्दिर इक्क आप सुहांयदा। सच सिँघासण मेहरबान, आप आसण लांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणी वंड वंडांयदा। पारब्रह्म पुरख सुल्तान, ब्रह्म रूप उपजांयदा। हँ ब्रह्म कर प्रधान, लोकमात राह चलांयदा। लक्ख चुरासी जीआ दान, आपे झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो आपणा आप उपजांयदा। सोहँ रूप आप करतारा, सो सो वेख वखाईआ। आपणे रंग रंगे करतारा, आपणी चोली आप रंगाईआ। आपणा भर आप भण्डारा, आपे रिहा वरताईआ। एका ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। सोहँ रूप सच्ची धारा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती दीप जोत जगाया, जागरत जोत वखाईआ। सतिगुर पूरा साख्यात आपणा रंग रंगे अपार, रंग रंगीला मोहण माधव माध लाल गुलाला इक्क रंग चढ़ाईआ। शब्द हरि अपर अपार धुन नाद वजा रागी राग साचा गाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्ला, भगवन भगौती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोहँ शब्द दए वड्याईआ। सोहँ शब्द सच जैकारा, राम नाम समाया। कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, गीता ज्ञान दृढ़ाया। अल्ला हू एका नाअरा, एका संग निभाया। नाम सति वणज वपारा, नानक आप उपाया। गोबिन्द बोले सच जैकारा, साचा गुरू सलाहया। खेले खेल पुरख करतारा, कलिजुग वेस वटाया। चार वरनां करे इक्क प्यारा, शब्द जैकारा इक्क सुणाया। हिन्दू सिक्ख ना कोए विचारा, मुस्लिम ईसाई ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म मेल मिलाया। उपजे ब्रह्म शब्द ज्ञान, शब्दी शब्द समझाईआ। हरिजन मेला हरि भगवान, हरी हरि आप कराईआ। धर्म वखाए सच निशान, साची सिख्या इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ मेला शाहो भूप, सति सरूप आदि जुगादि रूप वटाईआ। आदि जुगादी हरि का रंग, हरि हरि विच समाया। हँ ब्रह्म मंगी मंग, सो पुरख निरँजण झोली पाया। वज्जे नाम इक्क मृदंग, हरि

साचा आप वजाया। दो जहानां आपे लँघ, दर दरवाज़ा कुण्डा लाहया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्को दाता, देवणहार रिज़क सुबाया।

आदि पुरख करतारा, निरगुण निरँकारा नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती नूर नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। सति सरूपी साची धारा, सति सति उपजांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुग करता हरि हरे, हरि हरि रूप समाया। आपणी करनी आपे करे, करनी करता आप हो जाया। निरगुण साची जोत धरे, पारब्रह्म रूप वटाया। पुरख अबिनाशी साचा घाड़ण घड़े, घड़ण हार आप हो जाया। साचे मन्दिर आपे वड़े, थिर घर साचा इक्क सुहाया। उच्च महल्ले आपे चढ़े, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। आपणा फड़े आपे लड़े, आप आपणा बन्नृण पाया। आपणी विद्या आपे पढ़े, आपणा लेखा आप लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराया। आदि जुगादी हरि भगवान, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वेख वखांयदा। निरगुण दीपक बाती नूर महान, जागरत जोत जगांयदा। सच तख्त बैठ सुल्तान, शाहो भूप आप अख्वांयदा। निरगुण राज राजान, दर दरबान इक्क सुहांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ रखांयदा। आपणा नाउँ आपे रक्ख, निरँकार आप अख्वाया। आपे निरगुण हो प्रतक्ख, दीपक जोत करे रुशनाया। आपे आपणा आप करे वक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म वेस वटाया। आपे लेखा जाणे अलक्खणा अलक्ख, अलक्ख निरँजण भेव ना राया। आपे भाण्डे करे सक्ख, आपे सक्खणे रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता खेल खिलाया। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग धार बंधांयदा। आप बणाए आपणी बणता, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आपे जाणे आपणी मन्नता, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे तोड़े गढ़ हउमे हँगता, हँ ब्रह्म आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित वेख वखांयदा। अजूनी रहित पुरख अकाल, अकल कला कल धारया। निरगुण दीपक बाती जोती एका बाल, एका एक करे उज्यारया। एका गगन एका थाल, एका मण्डल आप सहारया। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप चला रिहा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाम धरा ल्या। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, परम पुरख करतार। निरगुण सरगुण वेस वटंदड़ा, पंज तत्त करे प्यार। आदि निरँजण वेख वखंदड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। आदि शक्ती मेल मिलंदड़ा, आप आपणा कर प्यार। धाम अवल्ला इक्क सुहंदड़ा, वसणहारा सचखण्ड दुआर। अगम्म अगम्म अगम्म आप अख्वंदड़ा, अलक्ख अलक्खणा भेव न्यार। शब्द नगारा ताल इक्क वजंदड़ा, धुन अनादि सच्ची धुन्कार। घर साचा इक्क सुहंदड़ा, थिर घर बैठ सच्ची सरकार। आपणा हुक्म आप चलंदड़ा, देवणहार धुर फ़रमान। लोआं पुरीआं रचन रचन्दड़ा, मण्डल मण्डप लए उसार। विष्न ब्रह्मा लेख लिखंदड़ा, शिव शंकर लए उभार। करोड़ तेतीसा आप उठंदड़ा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपार। आदि जुगादी हरि हरि खेल, अचरज बणत बणाईआ। निरगुण निरगुण कर मेल, पंज तत्त करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेल, मन मति बुध वेख वखाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, घर दसवें वज्जे वधाईआ। नौ दुआरे दिसे वेहल, दर दरवेशा वेख वखाईआ। पंचम सखीआं पावण वेल, साचा मंगल एका गाईआ। सतिगुर पूरा वसे रंग नवेल, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग जुग रचना साची रच, हरि हरि वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डे कच्च, आपे बणत बणांयदा। मन्दिर अन्दर कलन्दर आपे नच्च, आपे स्वांग वरतांयदा। आपे ब्रह्म ब्रह्म होए सच्च, पारब्रह्म वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल आपे धार, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी लए अवतार, गुर गुर वेस वटाईआ। शब्द शब्दी तेज कटार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, जेरज अंडां फोल फुलाईआ। उत्भुज सेत्ज दए हुलार, आप आपणी दया कमाईआ। भगत वछल हरि मीत मुरार, हरिजन साचे लए उठाईआ। देवणहारा नाम अधार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सच सुच्च भरे भण्डार, सतिगुर साचा आप वरताईआ। आपे सुहाए बंक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। निरगुण बाती कर उज्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात विच संसार, साचा चन्द चढ़ाईआ। पुच्छे वाती अन्तिम वार, गुरमुख साचे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। कल वरते हरि निरँकार, अकल कला अख्वाया। अछल अछल्ल खेल अपार, वल छल धारी भेव ना राया। जुगा जुगन्तर बन्न्हे धार, जुग जुग नाउँ उपाया। सतिजुग त्रेता वेख विचार, राम नाम इक्क दृढ़ाया। द्वापर तेरा इक्क सहार, गीता ज्ञान इक्क वखाया। कान्हा कृष्ना दए हुलार, नाम बंसरी इक्क वजा

रिहा। ग़रीब निमाणे लाए पार, बिधर सुदामा गले लगाया। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यार, कूड़ा धन्दा वेख वखाया। माया ममता मोह प्यार, हउमे हँगता संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। जुग जुग नाम अलक्ख अभेव, आपणा आप धरांयदा। आदि जुगादी देवी देव, देव देवा आप अख्वांयदा। वास्तक रूप हरि निहकेव, नेहचल धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा रंगे रंग, रंगणहार पुरख अख्वाया। सचखण्ड दुआरा सच पलँघ, पुरख अबिनाशी सच सिँघासण आसण लाया। दाता दानी सूरा सरबंग, थिर घर बैठा खेल खिलाया। नाम वजाए इक्क मृदंग, एका नाअरा रिहा सुणाया। लोआं पुरीआं आपे लँघ, निरगुण सरगुण धार बंधाया। मंगणहारा साची मंग, आपणी झोली अग्गे डाहया। ग़रीब निमाणयां कट्टे भुक्ख नंग, लोकमात वेख वखाया। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े कसे तंग, सोलां कलीआं आसण लाया। निरगुण सरगुण वस्सया संग, सगला संग निभाया। हरिजन मन्दिर आपे लँघ, हरि मन्दिर वेख वखाया। अमृत धार सची गंग, जमना सुरस्ती नाल रलाया। गोदावरी मंगे एका मंग, निउँ निउँ चरन सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस वटंदड़ा, परम पुरख करतार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलंदड़ा, खेले खेल अगम्म अपार। वेद व्यासा भेख विटंदड़ा, लेखा लिख्या अपर अपार। नानक गोबिन्द मेल मिलंदड़ा, घर बैठा बंक दुआर। राम कृष्ना वेख वखंदड़ा, गोपी कान्हा कर त्यार। सोइम रूप आप हो जाइंदड़ा, हँ ब्रह्म कर प्यार। ईसा मूसा लेख लिखंदड़ा, अल्ला राणी ऐनलहक्क नाअरा देवे मार। निरगुण बाती जोत जुगन्दड़ा, नूर इलाही बेऐब परवरदिगार। ख़लक ख़ुदाई वेख वखंदड़ा, सर्ब जीआं दा सांझा यार। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका रंग रंगदड़ा, दूई द्वैती देवे मार। अमृत आत्म जाम पिलंदड़ा, जगत तृष्ना दए निवार। साचा मार्ग इक्क विखंदड़ा, चार वरन सोहे बंक दुआर। अठारां बरनां मेट मिटंदड़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगे करतार। साची सिख्या इक्क समझंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उभार। साची सिख्या गुर करतार, एका एक जणाईआ। राउ रंकां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। दूई द्वैती कर ख्वार, हउमे हँगता दए मिटाईआ। साची संगता सच प्यार, सतिजुग साचा दए कराईआ। भुक्खा नंगता जाए तार, फड़ फड़ बाहों पार कराईआ। जो जन मंगण आए दर दरबार, दर लेखा लए लगाईआ। संगदा रहे ना विच संसार, सतिगुर पूरा लोक लाज दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम जोती नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि निरगुण जोत जगांयदा। चार वरनां

रिहा समझाया, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई वखांयदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म जणाया, पारब्रह्म समझांयदा। राम नाम एका गाया, एका कृष्न मनांयदा। हू हू नाअरा आपे लाया, कलमा नबी आप पढ़ांयदा। नानक नाम सति मन्त्र जगत दृढ़ाया, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। वाहिगुरू फतिह गुर गोबिन्द गजाया, वाह वाह गुरू मनांयदा। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नाउँ रखाया, जोती जामा भेख वटांयदा। सृष्ट सबाई रिहा समझाया, नौ खण्ड सोया आप उठांयदा। सत्तां दीपां रिहा उठाया, शब्द हुलारा इक्क लगांयदा। ब्रह्मा नेत्र रिहा खुल्हाया, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। विष्नूं बाशक सेजा रिहा तजाया, सांगोपांग ना कोई हंढांयदा। शंकर बाशक तशका गलों लाहया, हथ्थ त्रिसूल उठांयदा। करोड़ तेतीसा दए दुहाया, देवी देव ना कोई मनांयदा। कलिजुग अन्त अन्धेरा छाया, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। साध सन्तां पीर फ़कीरां शाह हकीरां सच सुच्च दर डेरा ढाहया , साचा मन्त्र नाम ज्ञान, ना कोई दृढ़ांयदा। पंडत पांधे जूठा झूठा मस्तक तिलक लगाया, जोत ललाट ना कोई जगांयदा। पढ़ पढ़ विद्या वाद वधाया, आत्म ब्रह्म ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एकँकार हरि निरँकार, आदि शक्ति आदि शक्ति रूप अपार, जोत भवानी आदि शक्ति खड़ग खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। भेख पखण्डा दए निवार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम कन्ढा वेख सर्ब संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि का नाम गए विसार, राम नाम साची माला गल कोई ना पाईआ। साचा मन्दिर अन्ध अँध्यार, दीवा बाती ना कोई जगाईआ। कमलापाती ना मिल्या मीत मुरार, बूंद स्वांती ना मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। निहकलंका हरि निरँकार, हरि निरगुण जोत जगांयदा। पुरख अगम्मा लए अवतार, आपणा रूप वटांयदा। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, तिक्खी धार आप रखांयदा। जन भगतां करे सच प्यार, हरिजन सोए मात उठांयदा। मनमुख डोबे वहिंदी धार, भव जल बेड़ा आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रगन्दड़ा हरि चलूल, एका लाल गुलालया। हरिजन आत्म सेजा बरखे साचे फूल, फूलण बरखा एका ला ल्या। मेल मिलावा नारी कन्त कन्तूहल, साचा मन्दिर इक्क सुहा ल्या। शब्द पंघूड़ा सच सिँघासण पुरख अबिनाशण रिहा झूल, नाम हुलारा एका ला ल्या। गुरमुखां चुकाए पिछला मूल, अगला मार्ग आप वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर सुच्चा इक्क सुहा ल्या। सोहे घर हरि सुहञ्जणा, हरि साचे जोत जगाईआ। गुरमुखां नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दर दुआरे साचा मजना, दुरमति मैल

गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। साची सिख्या साची मति, चार वरन समझांयदा। पंज तत्त ना उब्बल रत्त, जो जन सतिगुर पूरे दर्शन पांयदा। चरन कँवल प्रीत बंधाए नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। आत्म अन्तर देवे धीरज जति, सति सन्तोख आप समझांयदा। शब्द अनादी साची गाथ, सोहँ ढोला सुणांयदा। अगम्म अगम्मड़े चढ़ाए रथ, रथ रथवाही रथ चलांयदा। पंच विकारा पाए नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। जगत विसूरा देवे मथ, सथ्थर हेठ वछांयदा। हरिजन साचे लए रक्ख, सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए अलक्खणा अलक्ख, आपणा लेखा आप लखांयदा। लेखा लिखणहार हरि समरथ, वड्डा वड वड्याईआ। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवणहारा साची गाथ, आत्म ब्रह्म पढ़ाईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथ, घर चौथे वज्जे वधाईआ। लहिणा देणा चुक्के मस्तक माथ, पूर्ब लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरि सज्जण हरि उठाया, आप आपणी किरपा धार। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, वज्जे शब्द सच्ची धुन्कार। साचे मार्ग आपे लाया, कूड़ी क्रिया कर्म विचार। सच दुआरा इक्क वखाया, ढांडा दर सच्चा दरबार। सतिगुर पूरा नज़री आया, निहकलंक इक्क अवतार। शब्द डंका रिहा वजाया, नों खण्ड पृथ्मी करे खबरदार। शाह सुल्तानां रिहा हिलाया, अगम्म अगम्मड़ा मारे मार। भारत खण्ड वेख वखाया, जम्बु दीप हो उज्यार। सम्मत सोलां राह दिखाया, हाढ़ सतारां दिवस विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे उज्यार। जोती नूर उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला आप अख्वाईआ। वसे धर्म सच्ची धर्मसाला, तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आदि जुगादी बण रखवाला, शब्द अगम्मी वजाए ताला, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। लक्ख चुरासी फल वेखे डाल्हा, मिट्ठे कौड़े वेख वखाईआ। जन भगतां तन पाए नाम सच्ची माला, एका आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। वज्जी वधाई सच घर, हरि साचा आप वजांयदा। जन भगतां चुक्के जगत डर, सतिगुर पूरा नज़री आंयदा। लहिणा देण चुकाए नारी नर, बिरध बाल आप तरांयदा। इक्क नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क भरांयदा। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुर शब्द नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर गया वड़, दिस किसे ना आंयदा। सन्त सुहेले लए फड़, जुग जुग आपणा मेल मिलांयदा। आपे भाण्डे लए घड़, आपे भन्न वखांयदा। आपे चोटी जाए चढ़, आपे मुख भुवांयदा। आपे फड़ावणहारा आपणा लड़, आपणा पल्लू आप छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

७११ कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची करनी किरत आप कमांयदा। कलिजुग अन्तिम शब्द हुलारा, हरि सतिगुर आप लगाया। जन भगतां करे जगत प्यारा, जागरत जोत इक्क जगाया। नाम अगम्मी शब्द भण्डारा, सतिगुर पूरा रिहा वरताया। ब्रह्म मति वरते विच संसारा, मनमति अन्तिम दए मिटाया। एका नत सच्ची सरकारा, तत्व तत्त आप अख्वाया। चरन नाता परवरदिगारा, साचा जोड़ जुड़ाया। पुच्छे वात अन्तिम वारा, जो जन रसना गए गाया। धन्न सुभाग सतारां हाढ़ा, हरिसंगत लए तराया। जगे जोत बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर गंवाया। सचखण्ड दुआरे सच अखाड़ा, सम्बल नगरी डेरा लाया। धुरदरगाही साचा लाड़ा, गुरमुख साचे वेखण आया। किसे हथ्थ ना आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत कोटन कोटी रहे धूंणीआँ ताया। गुरमुखां करे इक्क प्यारा, आत्म अन्तर मेल मिलाया। जगत बसन्तर पार किनारा, त्रैगुण माया बंधन तोड़ तुड़ाया। पंजां तत्तां पंच जैकारा, शब्द नाअरा इक्क लाया। राम नाम खण्डा तेज कटारा, आप आपणा हथ्थ उठाया। चार कुन्टां दहि दिशा लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदारा, शाह सुल्तानां राज राजानां आप उठाया। जन भगतां मेला मीत मुरारा, एकँकारा निरँकारा वेख वखाया। साचा गीत साचा नाअरा, अन्दर गुप्त वसे ज़ाहरा, सच जैकारा आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा नाउँ रखाया। निहकलंक हरि भगवान, हरि सतिगुर आप अख्वांयदा। कलिजुग उठया नौजवान, आप आपणा बल धरांयदा। प्रगट होया दो जहान, लोकमात खेल खिलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां पर्दा लांहयदा। शब्द रखाए सच निशान, साचे दर झुलांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, जगत महल्ला वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कूड़ी क्रिया कूड़ पसार, अन्तिम मेट मिटांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, हरि हरि मेट मिटावणा। मेटणहार झूठी सरकारा, सतिजुग साचा मार्ग लावना। सुहाए बंक सच्चा दरबारा, दर दुआर इक्क खुल्हावणा। चार वरनां इक्क प्यारा, चारे कूटां वेख वखावणा। जूठ झूठ पार किनारा, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ावणा। माया ममता मोह छुट्टे विकार, काम क्रोध हँकार नेड़ ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकावणा। कलिजुग तेरा पन्ध मुकावणा, वेला अन्तिम आया। सतिजुग साचा मात धरावणा, साची सिख्या इक्क समझाया। गुरमुख साचे संग रलावणा, सोहँ साचा जाप जपाया। धरत धवल हरि रंग रंगावणा, धरनी वेख वखाया। नाम मृदंगा इक्क वजावणा, एका राग सुणाया। काग हँस आप बणावणा, हँस हँसा विच उडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे साचा वर, अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। अन्दर मन्दिर सच नगार, शब्दी शब्द वजाईआ।

खेले खेल पुरख करतार, पुरख परखोतम वड वड्याईआ। दीपक जोती कर उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। कँवल कँवला मूधे भार, आपे मुख भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी क्रिया आपणी हथ्थीं दए कराईआ। कलिजुग उठया नेत्र खोल्ह, रो रो नीर वहांयदा। दर दुआरे रिहा बोल, पिछली भुल्ल बख्शांयदा। सच वस्त ना किसे कोल, राज राजाना शाह सुल्ताना ख़ाली हथ्थ वखांयदा। जूठा झूठा वज्जया ढोल, जगत नगारा इक्क वजांयदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी कढ्ढणहारा पोल, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां विचोला आपे बण, शब्द सालस नाउँ रखांयदा। कलिजुग सालस आप प्रभ, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। सतिजुग सालस आप प्रभ, सोया सुत उठाईआ। कलिजुग सालस आप प्रभ, कर्म कुकर्मां वेख वखाईआ। सतिजुग सालस आप प्रभ, बाल निधाना दे मति रिहा समझाईआ। दोहां विचोला बैठा फब्ब, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग सालस आप हरि, हरिजन वेख वखांयदा। सतिजुग सालस आप प्रभ, धरनी धरत धवल आप सुहांयदा। कलिजुग सालस आप हरि, माया ममता मोह वेख वखांयदा। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग साचा मेल मिलांयदा। दोहां विचोला आप बण, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा लेख लिखांयदा। कलिजुग सालस हरि हरि मीत, हरिजन आप उठांयदा। सतिजुग सालस इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ सो नाउँ धरांयदा। कलिजुग सालस मेटे कूड़ी रीत, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। सतिजुग सालस पतित पुनीत, एकँकारा नर निरँकारा आप अख्वांयदा। दोहां वस्सया आपे चीत, आप आपणा मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क खुल्हाए साचा घर, दोहां सद बहांयदा। कलिजुग आया चल दुआर, सम्मत सोलां दए दुहाईआ। हाढ़ सतारां कर निमस्कार, एका दए दुहाईआ। नाता तुट्टा मुहम्मदी यार, चार यारी ना संग निभाईआ। पीर दस्तगीर ना कोई सहार, मुलां शेख़ मुसायक कुतब गौंस ना देवे कोई गवाहीआ। चारों कुन्ट आई हार, हक्क हकीकत ना कोई वखाईआ। लक्ख चुरासी होई ख्वार, वरनां बरनां पई लड़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम मारन नाअर, नाता तुट्टा भैणां भाईआ। नारी कन्त ना कोई प्यार, विभचार रूप वटाईआ। साध सन्त ना कोई अधार, निरगुण जोत ना कोए जगाईआ। जीव जन्त होए ख्वार, चारों कुन्ट हाहाकार मचाईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। एथे दिसे ना कोई सहार, अग्गे सके ना कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका

७१२ ०८

शब्द जणाईआ। कलिजुग उठ जगत निधान, कलिजुग तेरी औध विहाईआ। तेरा संग पंज शैतान, दिवस रैण रहे निभाईआ। मनमति होई प्रधान, देवे सदा सलाहीआ। जूठे झूठे बेईमान, आलस तृष्ना जगत वखाईआ। हउमे हँगता पीण खाण, माया ममता रही कुरलाईआ। चार कुन्ट झूठ दुकान, आप आपणी आप चलाईआ। अन्तिम दिसे फनाह मकान, ना सके कोई बचाईआ। हक्क हकीकत करे पछाण, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। वेद पुराण सारे गाण, वेद पुराणी मेल ना राईआ। अञ्जील कुराना करन वख्यान, तीस बतीसा दए दुहाईआ। अठ्ठ अठारां कर प्रधान, गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। खाणी बाणी जगत निशान, एकँकारा वेख वखाईआ। कलिजुग भुल्ले जीव निधान, गुर का शब्द ना कोई समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बहि बहि सारे गाण, साची सिख्या ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम घर, हरि साचा वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम सुण संदेश, हरि साचा आप सुणांयदा। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ा वेस, जुग जुग आप वटांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। आदि निरँजण जोत प्रवेश, जोती जोत डगमगांयदा। दर दरवेश ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा मूल चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम मारे धा, दर दर करे पुकार। कोई ना दिसे अन्तिम मलाह, लक्ख चुरासी गई हार। ना कोई देवे सच सलाह, जूठ झूठ भरे भण्डार। ना कोई पकड़े साची बांह, ना दिसे पार किनार। सतिगुर पूरा करे न्यॉं, पारब्रह्म गुर करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए निवार। कलिजुग तेरा लेख चुकावणा, लिख्या लेख रहे ना राईआ। तेरा अन्तिम पन्ध मुकावणा, अग्गे पैंडा ना कोई रखाईआ। तेरा जूठा झूठा तेरे सीस टिकावना, उप्पर आपणा भार पाईआ। धर्म राए दा राह वखावणा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। चित्रगुप्त हिसाब खुल्हावना, ना लेखा सके कोई मिटाईआ। लाड़ी मौत तन श्रृंगार करावणा, हथ्थीं मैहन्दी नैण कज्जल धार बंधाईआ। हाढ़ सतारां सगन मनावणा, वाह वाह सखीआं रल मिल सोहँ मंगल एका गाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त कलिजुग अन्तिम इक्क प्रनावणा, एका घर वसाईआ। गुरमुख साचे आप उठावणा, शब्द विचोला नाउँ रखाईआ। सौहरे पेईए एका धाम रखावणा, एका कन्त वड्डी वड्याईआ। गीत सुहागी एका सुणावणा, छंत छंता आप अल्हाईआ। साचे मन्दिर मेल मिलावणा, सति सुहञ्जणी सेज वछाईआ। राग नादी नाद वजावणा, राग रागां विच टिकाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्हावणा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म वेख वखावणा, भरम भुलेखा दूर कराईआ। गुरमुख सज्जण साचे मीत सच सिँघासण पुरख अबिनाशण साचा धाम सुहावणा, महल्ल अटल

उच्च मुनारया। लक्ख चुरासी तेरा पन्ध मुकावणा, अन्तिम लेखा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नारी नर वेख वखाईआ। नारी नर आत्म अन्तर, हरि हरि वेख वखांयदा। कलिजुग काया लग्गी बसन्तर, त्रैगुण अग्नी पंज तत्त जलांयदा। ना कोई जाणे साचे मन्त्र, ना कोई घर सुहांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलंतर, अचरज खेल खिलांयदा। वेखणहारा गगन गगनंतर, गगन पताला फेरा पांयदा। प्रगट होए जुगा जुगन्तर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम कर प्रकाश, खेले खेल सृष्ट तमाश, लक्ख चुरासी भेड़ भिड़ांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम खेड़ा, हरि साचा वेख विखंदड़ा। पंज तत्त लग्गा झेड़ा, ना कोई मेट मिटंदड़ा। जूठा झूठा देवे गेड़ा, साचा धाम ना कोई सुहंदड़ा। कलिजुग अन्तिम करे हक्क निबेड़ा, हक्क बहक्क वेख विखंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण मेल मिलंदड़ा। मिल्या मेल सज्जण मीत, गुर सतिगुर हरि हरि पाया। काया होई ठांडी सीत, हउमे रोग गंवाया। पतित पापी करे पुनीत, पतित पावण नाउँ धराया। साचा मन्दिर देहुरा गुरदुआर मसीत, गुरमुख तेरा काया हट्ट वखाया। निरगुण बैठा इक्क अतीत, सरगुण साची जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। सतिगुर तारनहारा आया, हरिजन साचा लए उठाए। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, दूई द्वैती पर्दा लाहे। तीजा नेत्र नैण खुल्हाया, आप आपणा दरस दिखाए। चौथे घर आप समाया, चौथा वड वड्याए। पंचम मेला सहिज सुभाया, साची सखीआं मंगल गाए। छेवें छप्पर ना कोए जणाया, थिर घर बैठा आसण लाए। सत्तवें सति पुरख निरँजण मेल मिलाया कलिजुग अन्तिम फेरा पाए। निहकलंका नाउँ धराया, जोती नूर डगमगाए। शब्द अनादी नाद वजाया, ब्रह्म ब्रह्मादि आप सुणाए। आदि जुगादी वेस वटाया, लेखा लेख ना कोई लिखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले गुरमुख चेले, गुर मार्ग एका लाए। गुर मार्ग बिखड़ा हरि सज्जण मीत, गुर सतिगुर आप लगांयदा। गुरसिख साचा सिखड़ा पतित पुनीत, दर मन्दिर अन्दर साचा मंगल एका गांयदा। भाणा मिट्ठड़ा चेतन चीत, डूँघी कंधर अन्ध अँध्यार हरि निरँकार हरिजन साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम शब्द अनडीठ, मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत फल इक्क खुवाए। पतित पुनीत रीत हरि करतार, जग सांतक सति गुरमुख उरधारया। ठांडा सीत वसे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजाना एका रंग रंगांयदा। आदि जुगादी महिंमा अगणत, आपे जाणे आपणी रीत, ना कोई डेरा लांयदा।

गुरमुख काया तेरी काया हट्ट प्रगट होए झट पट, जगे जोती लट लट, आपणा दीपक आपे बालया। खेले खेल पुरख करतार, इक्क इकल्ला एकँकार, हरिजन साचे पाए दूई द्वैती मेटे फट्ट, आप नुहाए अठसठ, दुरमति मैल देवे कट्ट, काया करे ठंडी ठारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरिसंगत तेरे संग समा रिहा। सचखण्ड दुआर उच्च महल्ला, हरि हरि जोत जगांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग वेख वखांयदा। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सला, आप आपणा रंग रंगांयदा । सच सिँघासण आत्म सेजा आपे मल्ला, आप आपणा डेरा लांयदा। जोती शब्दी आपे रला, शब्द सुनेहड़ा इक्क अल्लांयदा। आप फड़ाया आपणा पल्ला, आपे लड़ बंधांयदा। पार कराए जगत सागर डूँघी डल्ला, टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। आपणे दीपक आपे बला, आपणी जोत आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम करन आया हल्ला, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशी खेले खेल पृथ्मी आकाशी, गगन पताला आपणे चरनां हेठ दबांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हिला, देवत सुर शब्द हुलारा इक्क लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हो उज्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, घट घट बैठा आसण लाईआ। भगत सुहेले लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। पार कराए नौ दुआर, डूँघी कवरी वेख वखाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां दिवस विचार, आप आपणी रचन रचाईआ। ग़रीब निमाणे जाए तार, ऊँचां नीचां इक्क प्यार। इक्क प्यार सतिगुर नाता पुरख बिधाता, उत्तम ज़ाता एका एक उठाईआ। सोहँ शब्द साची गाथा, लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, साढे तिन्न हथ्थ चलाए तेरा राथा, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। सतिजुग तेरी पूजा पाठा, सर सरोवर मारे ठाठा, चौदां लोक वेखे हाटा, चौदां तबकां एका दाता, एका भल्ला इक्का पल्ला एकँकार आप फड़ाईआ। जन भगतां पूरा घाटा, कलिजुग नेड़े वाटा, आदि शक्ति जोत लिलाटा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलांयदा। सरगुण साचे कर प्यार, पंज तत्त डेरा लांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आंयदा। सन्तां भगतां करे ख़बरदार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, धुन राग आप वजांयदा। ब्रह्मा वेता ना पाए सार, चारे वेदां वेख वखांयदा। वेद व्यासा बण लिखार, अठारां पुराण गया समझांयदा। शास्त्र सिमरत दए अधार, छे छे मेल मिलांयदा। गीता ज्ञान हो उज्यार, एका सिख समझांयदा। अञ्जीलां कुरानां ख़बरदार, आपणा लेखा आप समझांयदा। खाणी बाणी भेव न्यार, नानक निरगुण रसना गांयदा। पुरख

७१५
०८

अबिनाशी सभ तों वस्सया बाहर, हथ्थ किसे ना आंयदा। गुरमुखां मेला विच संसार, जुग जुग आप करांयदा। देवे भगती नाम भण्डार, भगवन आपणी दया कमांयदा। साची शक्ती हो उज्यार, अष्टभुज नाउँ धरांयदा। सुंभ निसुंभ कर ख्वार, लंका गढ़ तोड़ हँकार, रावण मेट मिटांयदा। मारनहारा कंसा मार, कान्हा बंसरी इक्क वजांयदा। कलिजुग तेरा रूप चौथे जुग वेख हरि निरँकार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वांयदा। कलिजुग दुष्ट हँकारी रावण, चार कुन्ट लए अंगड़ाईआ। जूठ झूठ बणया नाल ज़ामन, पंज तत्त विकार नाल दए गवाहीआ। खेले खेल अन्धेरी शामन, रैण अन्धेरी नाल रलाईआ। ना कोई कर्म धर्म वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लेखा जानण कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक वेख वखाईआ। कलिजुग कंसा गढ़ हँकार, दहि दिशा वेख वखाईआ। सच सुच्च ना कोए प्यार, साची सिख्या ना कोई समझाईआ। मात पित ना कोई प्यार, पुत्तर धी ना ख़ुशी मनाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। कुँवार कन्या कर श्रृंगार, नेत्र नैण रही मटकाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद बणया वेसवा दरबार, हरि का गुण ना कोई गाईआ। कलिजुग कूड़ा वेख कुड़यार, डौरु डंका एका वाहीआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, माया पर्दा उत्ते पाईआ। एका भुल्लया हरि करतार, सतिगुर पूरा नज़र ना आईआ। मदिरा मास करन अहार, रसना रस रिहा गंवाईआ। आत्म रस ना कोई धार, निझर झिरना ना कोई झिराईआ। नस्स नस्स तीर्थ तट्टां होण ख्वार, अमृत हरि काया आत्म सर सरोवर अशनान करन ना कोई जाईआ। नार अहिल्या बणी गौतम, कलंक मस्तक इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचे सज्जण, साचे मीत प्यारया। तेरी ओट इक्क अकाल, तेरा वणज नाम वणजारया। तेरा मन्दिर सच्ची धर्मसाल, तेरा शब्द सच भण्डारया। तेरा वज्जे साचा ताल, तेरा गुरू इक्क उठा रिहा। ना दूसर कोई सहार, दिवस रैण देवे पहरया। आलस निन्दरा ना लए वखाल, आपे गुप्त आपे ज़ाहरया। आपे अन्दर मन्दिर लए भाल, आपे लाए सोहँ सच जैकारया। नेड़ ना आए काल महांकाल, कलिजुग अन्तिम सतिगुर पूरा आण वंगारया। आपणी चली अवल्लड़ी चाल, फड़ फड़ ढाहे उच्च मुनारया। ना कोई दिसे चार दिवार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिला रिहा। राज राजानां आई हार, साचा सीस ताज ना कोई टिका रिहा। ग़रीब निमाणयां ना पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन करे प्यारया। ग़रीब निमाणे जग कुरलाए, धरत धवल दए दुहाईआ। साचा अदल ना कोई कमाए, भरमे भुल्ली भरमी शाहीआ। शाह सुल्तान ना साचा कोई अख्वाए, साचा हुक्म ना कोई सुणाईआ।

७१६
०८

जगत तृष्ना ना कोई मिटाए, दुःखीए भुखीए रो रो देण दुहाईआ। मायाधारी माया मोह वधाए, बैठे बंक सुहाईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म वेखणहारा थाउँ थाए, आप आपणी ल्ए अंगड़ाईआ। दए सुनेहड़ा बेपरवाहे करे न्याए, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाईआ। जीव जन्त मात कुरलाया, कूके दए दुहाईआ। सतिगुर पूरे बेड़ा ना किसे उठाया, माया भुल्ली सर्ब लोकाईआ। निहकलंक कल जामा पाया, लोकमात वज्जी वधाईआ। चार वरनां इक्क रिहा बणाया, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। सम्मत सोलां नींह धराया, हाढ़ सतारां थित लिखाईआ। बीस बीसा वेख वखाया, भुल्ल रहे ना राईआ। जगत हदीसा इक्क पढ़ाया, एका कलमा रिहा सिखाईआ। नबी रसूल इक्क उपाया, कायनात वेखे मार झात, आप आपणा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम कृष्न एका घर, नानक गोबिन्द वेख वखाईआ। सम्मत सोलां सति सतिवाद, सति पुरख कराया। जन भगतां रक्खणहारा लाज, साची हाढ़ी दिवस सुहाया। एथे ओथे सुणे फरयाद, सच सिंघासण आसण लाया। मोहण माधव मुंकद मनोहर लखमी नरायण साँवल सुन्दर वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा घर घर, घर घर दीपक इक्क जगाया। घर दीपक घर बातीआ, घर घर करे रुशनाईआ। घर मेला कमलापातीआ, घर घर विच पए जुदाईआ। घर देवे अमृत बूंद सवांतया, घर झिरना आप झिराईआ। घर मेटे अन्धेरी रातीआ, घर साचा चन्द वखाईआ। घर गावे साची गाथीआ, घर अनहद सेवा लाईआ। घर मेला शाहो शाबास्सया, घर सेजा इक्क सुहाया। गुरमुखां पूरी करे आस्सया, दर निरास ना कोई वखाईआ। लेखे लाए रसन स्वास्सया, जो जन सोहँ रहे गाईआ। निज आत्म करे वास्सया, घनक पुर वासी वड वड्याईआ। दर दुरकाए मदिरा मासीआ, देवणहार अन्त सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला सहिज सुभाईआ। मेल मिलावा हरिसंगत, हरि साचा इक्क सुहञ्जणा। सतिगुर पूरा चाढ़े रंगत, धूढ़ी चरन एका मजना। दूसर दर ना होए मंगत। दाता मिल्या दर्द दुःख भञ्जणा। लेखा मुकाए जिउँ नानक अंगद, अंगीकार आपे रक्खणा। मानस जन्म ना होए भंगत, अमृत रस आत्म चक्खणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत अन्तिम वेले आपे रक्खणा। अन्तिम वेला हरि निरँकार, गुरमुखां होए सहाईआ। सज्जण मीत कर प्यार, धाम अतीत वखाईआ। साची रीत चले संसार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। हस्त कीट सोहे इक्क दुआर, सीस ताज ना कोई रखाईआ। सोहँ गीत गाए सर्ब संसार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे जीआ दान, जीवण दाता आप

हो जाईआ। जीवण दाता हरि भगवान, जगत जुगत उपांयदा। गुरमुख बणाए चतुर सुजान, गुरमति इक्क समझांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। सोहँ शब्द अनादी गाण, साचा नाअरा एका लांयदा। आप वखाए सच मकान, काया मन्दिर अन्दर हरि मन्दिर आप उपांयदा। दीपक जोती जगे महान, तेल बाती ना कोई टिकांयदा। एका राग सुणाए कान, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। जुगा जुगन्तर जाणी जाण, जानणहार भेव खुलांयदा। लेख चुकाए पवण मसाण, पवण मसाणी वेख वखांयदा। गुरमुख साजण बाल निधान, आप आपणी गोद उठांयदा। बिरहों निराला मारे बाण, जगत वैरागी आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, बेआसां पूरी आस करांयदा। हरिसंगत ना होए बेआस, मंगे मंग गुर दुआरया। सतिगुर पूरा शाहो शाबाश, भरे नाम भण्डारया। पुत्तर धीआं रक्खे आस, सुफल कुक्ख करे संसारया। जो जन गाए स्वास स्वास, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। जो जन तजाए मदिरा मास, आप आपणा दरस दिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरी पूरी आसा, चरन कँवल कँवल भरवासा, पुरख अबिनाशी दरसी दरस, सेवक सेवा आप कमा रिहा। दिवस रैण दासी दासा, सेवा सच कमाईआ। गुरसिख तेरे मिलण दी इक्को आसा, सतिगुर पूरा आप तकाईआ। तेरी प्रीती सच भरवासा, पुरख अबिनाशी दासी दासा, लोकमात मार्ग लाईआ। सतिगुर साचे करे वासा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे एका वर, एका इच्छया एका भिच्छया झोली पाईआ। एका इच्छया भर भरपूर, हरि नाम भण्डारा आप भरांयदा। जो जन वसण नेड़े दूर, एका रंग रंगांयदा। जो जन आए चल हज़ूर, आप आपणी गोद उठांयदा। आसा मनसा सभ दी पूर, हरिसंगत तेरे संग पतित पापी नाल तरांयदा। गुरसिख तेरी सेजा तेरा पलँघ, तेरी आत्म हरि परमात्म आपणा आसण लांयदा। हरिभगत तेरे कोलों मंगे मंग, तेरी प्रीती हरि का रंग, दोए धार विच संसार, चतुर्भुज ख़बरदार, भेव गुझ कढ्ढे संसार, गुरमुखां घर साचा गया सुझ पाया वर कन्त भतार, वज्जी नाम वधाईआ। छुटा संसार ना कोई दिसे मात पित भाई भैण मीत मुरार, सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा आपे नज़री आईआ। नाता तुट्टा कूड़ो कूड़, मस्तक लग्गी साची धूढ़, चतुर सुघड़ स्याणा बणाया मूर्ख मूढ़, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आसा मनसा करे पूर, पूरी इच्छया आपे आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां हाढ़ सतारां, हरिसंगत संग रखाईआ। हरिसंगत तेरे अन्दर वड़या, पारब्रह्म करतारा। तेरा तीर आपे फड़या, प्रगट हो विच संसारा। तेरा घाड़ण आपे घड़या, दिवस लिखाया हाढ़ सतारां। एका सतिजुग मार्ग धरया, सम्मती सम्मत चले

विहारा। एका अक्खर एका लेख लक्ख चुरासी पढ़या, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सच जैकारा। कलिजुग अन्तिम राज राजान शाह सुल्तान जीव जन्त साध सन्त कोई ना अग्गे अड़या, फड़या नाम खण्डा दो धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां करे सच प्यारा। गुरसिख उठ सुत्या, हरि सज्जण आप जगांयदा। सोभावन्ती होई रुतया, रुत्त रुतड़ी आप महिकांयदा। प्रगट होया पुरख अबिनाशी अचुतया, जागरत जोत इक्क जगांयदा। ना कोई धड़ ना कोई बुत्तया, ना कोई रूह विच रखांयदा। गुरसिख तेरा लाह, भगत वछल गिरधार। जुग जुग आपे लुट्टयां, दूसर हथ्थ ना आए विच संसार। तेरा भाण्डा तेरा सोमा तेरे अन्दर फुटयां, सतिगुर पूरा भरे भण्डार। तेरा रस पुरख अबिनाशी हस्स हस्स लोकमात नस्स नस्स चार कुन्टां दहि दिशा आपे लुट्टयां, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे साचा वर, उतरे पार किनार। पार किनारा औखी घाटी, हरि सतिगुर पार करांयदा। हरिजन तोड़े बज़र कपाटी, दूई द्वैती कुण्डा लांहयदा। लहिणा देणा चुक्के आण बाटी, आप आपणा मेल मिलांयदा। लेखे लाए पंज तत्त काया माटी, काया गढ़ सुहांयदा। चरन दुआरा साची हाटी, चौदां चौदां मुख शरमांयदा। दुरमति मैल रिहा काटी, नाम प्याला इक्क जाम प्यांअदा। आत्म सेजा साची खाटी, प्रेम पटोला इक्क वछांयदा। निरगुण जोती नूर लिलाटी, निज घर आत्म आप टिकांयदा। अनहद शब्द सच्ची धुन गाथी, पंचम सेवा आप कमांयदा। पुरख अगम्मा बणया साथी, सगला संग निभांयदा। सुरत सवाणी मिल्या हाणी चिन्ता सगल विनासी, पुरख अबिनाशी मेल मिलांयदा। जुगां जुगां दी लथ्थी उदासी, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। मनमुख जीव करन हासी, हस्स हस्स जन्म गवांयदा। धर्म राए एका फांसी, गल विच पल्ला पांयदा। प्रगट होया घनक पुर वासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखांयदा। लहिणा देणा पूर्ब गहिणा, लक्ख चुरासी तन पहनाईआ। जन भगतां दरस वखाए नैणां, मनमुखां रैण अन्धेरी छाईआ। हरिजन मेला हरि सज्जण साक सैणा, मनमुख गूढ़ी नींद सुवाईआ। जन भगतां धाम अवल्ले, सचखण्ड दुआरे साचे बहिणा, मनमुख अग्नी कुण्ड तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि ला, हरि हरि बणत बणाईआ। साची सिख्या इक्क समझा, एका एक वखाईआ। चार वरनां भैण भ्रा, भैणां भईआं मेल मिलाईआ। ना कोई खाए सूर गां, हक्क हलाल ना कोई वखाईआ। ना कोई हँस ना कोई काँ, काग हँस एका दर बहाईआ। लक्ख चुरासी जपाए साचा नाँ, हँस हँसा वड वड्याईआ। मेल मिलाए साचे थाँ, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। सिफ्त सालाही पकड़े बांह, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां पार किनारा, बेआस ना कोई रुढ़ाईआ। बेआस ना जाणा रुढ़, हरि सतिगुर सच्चा आया। पूरी करनहारा थुड़, घर भाण्डा दए भराया। हरि सज्जण दी साची लोड़, जुग जुग वेख वखाया। आदि अन्त जाए बौहड़, जो जन रसना रहे ध्याया। शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, एका अस्व रिहा दौड़ाया। सम्मत सोलां मारे पहला पौड़, लहिंदी दिशा वंड वंडाया। वेखणहारा मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला दौड़ दौड़, दर मन्दिर इक्क सुहाया। हरि मन्दिर हरि वस्सया, हरि हरि जोत जगाए। जन भगतां मार्ग एका दस्सया, एका राह वखाए। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि सस्सया, अन्ध अन्धेर गंवाए। हरि हिरदे अन्दर वस्सया, हरिजन विरला दर्शन पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन साचे लए मिलाए। हरिसंगत हरि पाया, हरि गोबिन्द गुरमीत। घर मंगल साचा गाया, होए पतित पुनीत। राम नाम एका घर वसाया, एका वस्सया चीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सुहाई सभनी थाउँ थाँईं, पकड़े बाहीं करे न्याई, जन हरि हरि जन गुर सिक्ख सिक्ख गुर गुर मुख मुख गुर जो जन रहे ध्याईआ।

७२०

०८ चार जुग हरि गुण गाया, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। जुग जुग सतिगुर वेख वखाया, जन भगतां मेल मिलाईआ। भगत भगती आपे लाया, आपे दए सलाहीआ। आपे सन्त संग निभाया, सारंगधर भगवान बीठला आप हो जाईआ। आपणा रंग आप रंगाया, नाम भट्ठी एका ताईआ। ब्रह्म भाह विच पाया, लाल गुलाला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौ चार खेल खिलाईआ। नौ नौ चार शब्द हरि दाता, गुरमुख आप सुणाया। छत्ती जुग बणया दाता, दाता दानी दान देंदा आया। सतिजुग साचे बद्धा गाना, साचा सगन मनाया। त्रेता बख्शे तीर कमाना, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाया। द्वापर मारे इक्क निशाना, एका बाण उठाया। नानक गाए साचा गाणा, गुरमुख आप सुणाया। गुर गोबिन्द दित्ता पीणा खाणा, अमृत जाम प्याया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलिजुग अन्तिम आपणे घर करे परवाना, आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरि सज्जण वेख वखाया। जुग जुग जोत अकाली, आपणी आप घलाईआ। आदि जुगादी सच्चा माली, लोकमात फुल फुलवाड़ी गुरमुख साचे आप लगाईआ। आपे करे आपणी वाड़ी, चार दिवार आप रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खिड़ी गुलज़ारी, कल आपे फूल फुलाईआ। साचे फल नर नारी, नर नरायण आपणे हथ्थ उठाईआ। कलिजुग वेखे अन्त क्यारी, हरिसंगत आप बणाईआ। बण के मालण

तोड़ण आया वड संसारी, कली कली महिकाईआ। सिर उठाई गुर संगत तेरी खारी, चारों कुन्ट फिरे वाहो दाहीआ। तेरा प्रेम सति सतारी, निरगुण आपे रिहा बुझाईआ। तेरे हार कर शृंगारी, आपणा तन सजाईआ। आपणी काया पहलों साड़ी, साची बणत बणाईआ। गुरमुखां दी हुण आई वारी, गुर पूरा तन शृंगार वखाईआ। नेत्र खोल्हो सतारां हाढ़ी, सम्मत सोलां ल्ए मिलाईआ। सतिगुर पूरा फिरे पिच्छे अगाड़ी, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लुट्टी जाए दिन दिहाड़ी, गुरसिखां झोली पाईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, हरिजन साचे आप प्रनाईआ। आपे आया चल दुआरी, लोकमात वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द बणया सच लिखारी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सम्बल नगरी उच्च अटारी, हरि वस्सया बेपरवाहीआ। करे कराए आपणी कारी, कारज करता आप अख्वाईआ। गाउ मंगल नर नारी, गुर पाया बेपरवाहीआ। नाता तुट्टा जगत संसारी, जागरत जोत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जगत विछोड़ा रिहा कटाईआ। जगत विछोड़ा आप कटाया, हरिसंगत मेल मिलंदड़ा। साची डोरी तन्द बंधाया, सोहँ हथ्थ उठंदड़ा। साची घोड़ी आप चढ़ाया, सतिगुर पूरा वाग गुड़ंदड़ा। फूलण सेहरा सीस सजाया, गुरमुख तेरा मुख सुहंदड़ा। केसर टिक्का मस्तक लाया, जोत ललाटी नूर वखंदड़ा। वडा छोटा निक्का ना कोई बणाया, बाल अञ्याणा बिरध जवान एका रंग रगन्दड़ा। साची सिख्या इक्क समझाया, चार वरनां इक्क वखंदड़ा। भैण भाई सर्ब वखाया, दूसर नाता ना कोई वखंदड़ा, जो जन धी भैण रहे तकाया, शौह दरयाए आप सुटंदड़ा। दूसर कोए ना सके बचाया, लक्ख चुरासी गेड़ भवंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। हरिसंगत हरि समझावनी, एका एक बूझ बुझाईआ। दर दुआर नीत रास करावणी, फल नीती आप खुवाईआ। माँ भैण धी सर्ब बणावणी, बिन नार नार ना कोई दिसाईआ। नार कन्त इक्क समझावनी, सुरत शब्द वेख वखाईआ। सतिगुर पूरी करे भावनी, जो जन भावना मन रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, दामन कोए ना सके छुडाईआ। सतिगुर फड़या साचा दामन, दर साचा इक्क सुहाया। हरिसंगत तेरा होया ज़ामन, नाम जामनी इक्क ल्या। पहलों मारे हँकारी रावण, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। मेट मिटाए कामनी कामन, क्रोध हँकार नेड़ ना आया। मेटणहार अन्धेरी शामन, साचा चन्द दए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर एका दर एका वर रिहा वखाया। गुरमुख साचे तेरा सच शृंगार, गुर सतिगुर आप करांयदा। चरन प्रीती इक्क प्यार, लोकमात वखांयदा। नेत्र नैणां नाम अधार, कज्जल सच सुहांयदा। मस्तक बिन्दी जोत ललाट, नूरो नूर डगमगांयदा। मैंढी गुंदे नेड़े वाट, आपणा पन्ध मुकांयदा। बस्त्र भूषन

मारन ठाठ, गुर चरन धूढ़ी जो जन नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति इक्क समझांयदा। सतिजुग तेरी साची मति, साची धार चलाईआ। हरिसंगत तेरी इक्को रत्त, एका बिन्द उपजाईआ। एका पिता एका मात, एका गोद बिठाईआ। एका देवणहारा दात, एका झोली रिहा भराईआ। इक्क बंधाए चरन कँवल नात, नाता बिधाता इक्क जुड़ाईआ। एका शब्द एका गाथ, एका करे पढ़ाईआ। एका पूजा एका पाठ, इष्ट देव गुर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां रक्खे साचा संग, सगला संग आप निभाईआ। कलिजुग अन्तिम जोड़ जुड़ाया, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। एका मार्ग इक्क वखाया, साची सिख्या सिक्ख समझाईआ। सोहँ ढोला साचा गाया, जगत विचोला बणया माहीआ। आपणा चोला आप बदलाया, गुरमुखां चोली रंग रंगाईआ। हौली हौली खेल खिलाया, सोलां साल मुख छुपाईआ। सम्मत सोलां रौला पाया, प्रगट होया निहकलंक चार कुन्ट वज्जी वधाईआ। आपणा पर्दा उहला लाहया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख कला सोलां आप जणाया, जो जन हुक्मे हुक्म चलाईआ। लक्ख चुरासी गोला दर दुरकाया, दर दुआर रहिण ना पाईआ। पिछला कौल आप निभाया, गुर गोबिन्द नाल रलाईआ। सिँघ सिँघ हरि वेस वटाया, शेर शेर लड़ाईआ। दस दस्मेश नाउँ धराया, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जगत विछोड़ा दए कटाया, आप आपणी गोद उठाईआ। हिरदा सोध जिस जन पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाया, कोटन कोटि जन्मां पाप रहे मिटाईआ। सुधा सर सच थाया, साचा अमृत सीर एका मुख चुआईआ। आपणा भेव गुज्झा आप खुल्हाया, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। तीजा नैण नेत्र आप खुल्हाया, लोचण वेखे बेपरवाहीआ। चौथे पद आप समाया, चौथे घर वज्जी वधाईआ। वाह वाह पंचम सतिगुर पाया, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया, हरिसंगत वड वड्याईआ। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां तेल चढ़ाया, साचा सगन मनाईआ। साचा खेड़ा इक्क वसाया, हरिसंगत वसी चाँईं चाँईंआ। नौ दुआरे बेड़ा पार कराया, दस्म दुआरे मेला मिल्या सच्चे शहिनशाहीआ। चौथे जुग गेड़ा आप दुवाया, गुरमुखां कटे लक्ख चुरासी फाहीआ। नौ खण्ड पृथमी झेड़ा आपे पाया, छेड़ां छेड़े थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। हरि साची कल वरतांयदा, करे कराए करनेहार। लक्ख चुरासी आप भुलांयदा, खेले खेल अगम्म अपार। हरिजन सोए मात जगांयदा, देवे नाम अधार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा, सम्बल नगरी धाम न्यार। गुर गोबिन्द नज़री आंयदा, शस्त्र बस्त्र तन शृंगार। दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा, चतुर्भुज करे प्यार। गुरमुखां राह तकांयदा, आपणे नेत्र नैण दए उग्घाड़। फड़ फड़ बाहों गोद उठांयदा, फड़ फड़ मारे डाढी मार। नाम खण्डा इक्क

चमकांयदा, जोद्धा सूरबीर सच्ची सरकार। सतिजुग साचा मार्ग लांयदा, लक्ख चुरासी कर खुआर। हरिसंगत तेरा बेड़ा आप चलांयदा, खेवट खेटा बण पनिहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। नर नरायण नर अवतारा, निरगुण हरि अख्वाया। आदि जुगादी कर पसारा, लोकमात वेखण आया। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, वेद कतेब भेव ना राया। मन मति बुध ना दए सहारा, लिख्या लेख ना कोई जणाया। जन भगतां करे आप प्यारा, आपणा मेला आप मिलाया। गुर चेला सोहे इक दुआरा, साढे तिन्न हथ्थ साचा मन्दिर इक्क सुहाया। दस्म दुआरी सच चुबारा, सतिगुर बैठा आसण लाया। भरन आया नाम भण्डारा, हरिसंगत आप वरताया। ख़ाली दिसे ना कोई दुआरा, जिस जन सोहँ रसना गाया। उतरे पार नारी नारा, नर नरायण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत प्यार जुग जुग अवतार, डुब्बदे पाथर लए तार, गुरमुखां बख्शे इक्क दुआर, चरन नाता उत्तम ज़ाता पिता माता आप अख्वाया।

✪ २८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ ✪

राम नाम अनमोल, गुर गुरमुखां हट्ट विकांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, पूरा तोल इक्क करांयदा। आदि जुगादि जुगादी जुग अडोल, एका एक अख्वांयदा। सच भण्डारा साचा खोल्ह, सच सच वरतांयदा। सो पुरख निरँजण एका अक्खर बोल, हँ ब्रह्म रूप वटांयदा। वसणहारा सदा कोल, दर मन्दिर घर सुहांयदा। आपणी फुलवाड़ी आपे मौल, रुत्त बसन्त आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वणज वणजारा इक्क अख्वांयदा। राम नाम साची दात, हरिजन हथ्थ वड्याईआ। देवणहार पुरख अबिनाश, पूरन आस कराईआ। साचा लेखा स्वास स्वास, गुर सतिगुर गणत गणाईआ। पूर्ब लहिणा धुर धरवास, धर धरनी धरत चुकाईआ। लेखा लिखे पृथ्मी आकाश, आत्म निवास सहिज सुखदाईआ। करे कराए पूरी आस, आप आपणी दया कमाईआ। सदा सुहेला वसे पास, सद पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म एका रास, मण्डल इक्क सुहाईआ। राम नाम कर प्रकाश, पुरख पुरखोतम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वस्त एका हट्ट वखाईआ। राम नाम निरगुण धार, निरगुण आप उपजांयदा। राम नाम सर्ब गुण सार, सरगुण विच टिकांयदा। राम नाम वणज वपार, लक्ख चुरासी आप करांयदा। राम नाम जगत उरधार, हरि हिरदे विच धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्त्र राम नाम आप उपांयदा। राम नाम शब्द संदेश,

७२३ ०८

सतिगुर पुरख सुणांयदा। राम नाम घट घट प्रवेश, परम पुरख अख्वांयदा। राम नाम नर नरेश, नर नरायण आप अख्वांयदा। राम नाम अवल्लड़ा वेस, जुग जुग आप वटांयदा। सो पुरख निरँजण करे आदेश, हँ ब्रह्म रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। राम नाम नाम निरँकार, निरगुण नाउँ धराया। शब्दी शब्द शब्द जैकार, शब्द शब्दी वेस वटाया। रूप रंग रंग रूप ते वस्सया बाहर, लेखा लेख ना कोई जणाया। साचा भूप सच्ची सरकार, सच सुल्तान गुण निधान शब्द अख्वाया। खेले खेल खेल महान, मेहरबान भेव ना राया। आदि जुगादी नौजुवान, ना मरे ना जाया। भेखाधारी दो जहान, जुगा जुगन्तर वेख वखाया। नाम नामा तीर कमान, खण्डा खड़ग आप उठाया। सो पुरख निरँजण मारे इक्क निशान, हँ ब्रह्म पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका आपणा नाम दृढ़ाया। राम नाम नाम वड्याई, हरि सच्चा वड वड्यांअदा। राम नाम नाम कुड़माई, हरि सतिगुर आप करांयदा। राम नाम वज्जे वधाई, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। राम नाम मेल मिलावा सहिज सुभाई, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण खेल कर, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। राम नाम नाम गुण निधान, भेव अभेद छुपाया। पुरख अबिनाशी चतुर सुजान, आप आपणा खेल खिलाया। भेव ना पायण वेद पुराण, कोटि कोटां रहे गाया। खाणी बाणी ना करे पछाण, लक्ख चुरासी मुख भुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। राम नाम आपे धर, धरत धवल सुहांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, हरिजन वेख वखांयदा। चरन धूढ़ नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवांयदा। लक्ख चुरासी चुकाए डर, आपणा रंग रंगांयदा। आपे देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। सोहँ अक्खर पढ़, एका राग अलांयदा। तोड़ तुड़ाए हँकारी गढ़, गढ़ हँकार रहिण ना पांयदा। जगत विकारा आपे फड़, आपे मार मुकांयदा। शब्द सरूपी सतिगुर फड़ाए लड़, गुरमुख राम नाम फड़ांयदा। अन्दर मन्दिर साचे वड़, घर साचा आप सुहांयदा। पौड़ी पौड़ी जाए चढ़, चौथा डण्डा हथ्थ रखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई उपांयदा। निरगुण सरगुण दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपे वेख वखाईआ। आपे निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण रूप वटाईआ। आप आपणा आप करे वक्ख, अंगीकार आप अख्वाईआ। आपे खेले चार कूट उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वक्ख, दहि दिशा आप हो जाईआ। आपे नाउँ धराए अलक्खणा अलक्ख, अगम्म अगोचर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाम आपे वणज कराईआ। राम नाम सच वपार, हरि सतिगुर आप करांयदा। काग़ज़ कलम ना पाए सार, मस मुख शरमांयदा।

अठारां भार रोणा ज़ारो ज़ार, पत डाल्ही दिस ना आंयदा। ब्रह्मा वेता हाहाकार, वेद व्यासा नीर वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम नाम आपणा आप आप वरतांयदा। वड वड्याई हरि हरि नाउँ, लिख्या लेख ना जाणया। ना कोई नगर ना कोई गाउँ, ना दिसे कोई टिकानया। ना कोई खेड़ा ना ग्राउँ, ना कोई जाणे हरि हरि भाणया। खेले खेल अगम्म अथाहो, जुग जुग होए मात प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपे पकड़े बाहों, धुर मस्तक लेख पछाणया। धुर मस्तक लेखा राम नाम, रत्न अमोलक हीरा लाल। करनी करता पूरा करे काम, आदि जुगादी दीन दयाल। शब्द अनादी साची तूर, नाद तूरत वजाए सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म ब्रह्मादी एका नाम आदि जुगादी, जुग जुग चले चलाए आपणी चाल। आदि जुगादी हरि का नाम, हरि हरि आप धराया। जुग जुग पूरन करे काम, कारज करदा आया। जगत मेटे अन्धेरी शाम, साचा चन्द चढ़ाया। जन भगतां प्याए एका जाम, तृष्ना तृखा मिटाया। साचा पल्ले बन्न्हे दाम, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम नाम इक्क सलाहया। राम नाम सिफ्त सलाहो, सागर सिन्ध संसारया। हरिजन बणे आप मलाहो, बेड़ा करे पार किनारया। वेख वखाए थाउँ थाउँ, दहि दिशा पावे सारया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहों, आप आपणी सेव कमा रिहा। कलिजुग करे सच न्याउँ, कूड़ी क्रिया वेख वखा रिहा। सोहँ जपाए साचा नाउँ, सो पुरख निरँजण वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम नाम नाम अदेस, जन भगतां देवे सच संदेश, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा। शब्द सुनेहड़ा धुर दरबार, गुर सतिगुर आप जणाईआ। पतिपरमेश्वर कर प्यार, गुरमुख गुर वेख वखाईआ। दीवा बाती कमलापाती कर कर उज्यार, अन्धेरी राती मेट मिटाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, आपणा नाउँ प्याईआ। धुन अनाद शब्द जैकार, सोहँ सच पढ़ाईआ। मोहण माधव माधी रूप अपार, निर्भय रूप इक्क दरसाईआ। आदि जुगादी साची कार, जुग जुग वेस वटाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला ख़बरदार, दूजी कुदरत विच समाईआ। तिन्नां लोकां कर विचार, चौथे घर करे कुड़माईआ। पंचम सोहे बंक दुआर, छेवें छप्पर ना कोई सुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण मीत मुरार, सांतक सति सति वरताईआ। अठवें तत्तां अठ्ठां वस्सया बाहर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। नौ दुआर ना कोई किवाड़, नौ नौ ना कोई वड्याईआ। दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, आप आपणा रूप वटाईआ। इक्क ग्यारां कर प्यार, दस दस वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे ग्यारां हाढ़, वदी सुदी ना लेख जणाईआ। जगत बिक्रमी ना कोई प्यार, ना ईसवी करे कुड़माईआ। पुरख अगम्मा खेल अपार, आप अपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, हरि का रूप आपे धर, राड़ा राड़ सर्ब मिटाईआ। इक्क इक्क इक्क आकार, एका एक रंग रंगाया। दस्म दुआरी विच संसार, मानस मनुक्ख खेल खिलाया। एका एक आए जाए बाहर, आवत जावत दिस ना आया, एका निरगुण निरगुण धार, एका सरगुण सरगुण मेल मिलाया। एका एक सरगुण छुटयां संसार, एका एक निरगुण विच टिकाया। अभेव अभेदा भेव करतार, हरि का रूप आप हो जाया। ड़ाड़ा लेख ना जाणे जीव गंवार, ब्रह्मा वेता भेव ना राया। पुरख अबिनाशी हो उज्यार, आप आपणा रंग रंगाया। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार, दीवा बाती इक्क जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इक्क जुड़या जोड़ा, जोड़ी जोड़ आप जुड़ाया। इक्क हरि इक्क नर, इक्क इक्क नाल बंधाईआ। इक्क गुर इक्क अवतार एका घर करे कुड़माईआ। एका गुरमुख लए वर, एका घर वज्जे वधाईआ। एका गुरसिख पल्ला लए फड़, एका सतिगुर रूप वटाईआ। एका इक्क अक्खर लए पढ़, एका करे नाउँ पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इक्क बण ग्यारां, लेखा जाणे हाढ़ ग्यारां, यार यारां नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग जुग जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ।

७२६ ०८ ७२६ ०८

(२६-३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी) दिल्ली सिँघासण दरबार विच

निराकार निरँकार, निरगुण रूप समांयदा। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह भेव ना आंयदा। आदि निरँजण खेल अपार, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। पारब्रह्म पुरख करतार, पुरख पुरखोतम वेस वटांयदा। सति सरूप सति जैकार, नाद अनादी धुन उपजांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, नाम जैकारा इक्क लगांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, अगम्म अथाह बेपरवाह आप वसांयदा। थिर घर सोहे बंक दुआर, बंक दुआरी आप सुहांयदा। छप्पर छन्न ना कोई दीवार, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। जोती दीपक कर उज्यार, आप आपणा डगमगांयदा। कमलापाती खेल अपार, साची खेल आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, निराकार नाउँ धरांयदा। निराकार पुरख अकाल, एका रंग समाया। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग जुग वेस वटाया। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप चलाया। आपणी करे आप प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ रखाया। आपणे मन्दिर आपणा दीपक आपे बाल, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण सच्चा शाह शहिनशाह शाह सुल्तान नाउँ धराया। निरगुण शाहो सच

७२७
०८

सुल्तान, हरि हरि आप अख्वांयदा। खेले खेल दो जहान, आप आपणी रचन रचांयदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, सच सुनेहड़ा आप सुणांयदा। दाता दानी वड मेहरबान, आप आपणी दया कमांयदा। आपे वसे मन्दिर सच मकान, थिर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निरँकार निरगुण वेस आपणा आप वटांयदा। निरगुण धार निरगुण रूप, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण दाता सति सरूप, घर साचे बैठा आसण लाईआ। निरगुण वसे चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। निरगुण आपे जाए तुठ, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निराधार एका रंग रंगाईआ। एका रंग पुरख करतार, आपणा आप रंगांयदा। खेले खेल अपर अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। शाहो भूप सुल्तान वड सिक्दार, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण डेरा लांयदा। रवि ससि ना कोई सितार, मण्डल मण्डप ना कोई सुहांयदा। एका दीपक कर उज्यार, एका घर लटकांयदा। एका गाए गावणहार, सुर ताल ना कोई वजांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई प्यार, करोड़ तेतीसा ना कोए संग रखांयदा। निरगुण रूप अपर अपार, आप आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाउँ धरांयदा। अजूनी रहित मूर्त अकाल, एका एकँकारया। संग रखाए काल महांकाल, खण्ड सच बंक दुआरया। आपणा फल आपे लाए डाल्ह, आप आपणी रुत्त सुहा ल्या। आपणा अमृत भरे आपणे ताल, ताल सुहावा इक्क उपा रिहा। आपणा दीपक आपे बाल, आपे वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेस नर नरेश, एका एक करा रिहा। नर नरेश निरँकार, निराकार अख्वांयदा। जोती जामा भेख अपार, भेव कोई ना पांयदा। आपे नारी कन्त भतार, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप आपणा कर प्यार, आपे मेल मिलांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निरगुण नर नरायण एका रंग रंगांयदा। सरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। जोती जोत कर पसार, जोती जोत विच टिकाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा ना करे कोई त्यार, रक्त बूंद ना कोई टिकाईआ। सुत्त अनादी ख़बरदार, आप आपणा संग रखाईआ। हँ ब्रह्म ब्रह्मादी हो त्यार, रूप अनूपा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार साकार आप हो जाईआ। निराकार पुरख करतार, एका वेस वटाया। साकार खेले खेल अगम्म अपार, अंगी अंगी कार कराया। इक्क मृदंग वज्जे अपार, वजावणहारा दिस ना आया। खेले खेल खेलणहार, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा रूप सति सरूप, विष्नूं विष्नूं नाउँ धराया। विष्नूं रूप अनूप अनूपा, आपणा आप वटांयदा। निरगुण होया सति सरूपा, साची धार बंधांयदा। वेखणहारा चारे कूटा, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे भरया आपणा ठूठा, अमृत आपणे मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, अबिनाशी करता इक्क अख्वांयदा। अबिनाशी करता खेल अवल्ला, आपणा आप कराया। आप वसाया सच महल्ला, एका दर सुहाया। आपणी जोती आपे रला, आपणा बीज बिजाया। आपणा सिँघासण आपे मल्ला, आपे डेरा लाया। आपणा फड़या आपे पल्ला, आपणे नाउँ धराया। आपे करे वल छला, वल छल धारी आप हो जाया। आपे धारे आपणा बला, आप आपणा बल रखाया। निरगुण रूप सति सरूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक वेस वटाया। वेस वटाया विष्नूं धार, अकल कला वड्याईआ। पुरख अबिनाशी भेव न्यार, भेव कोई ना पाईआ। अमृत भरया सच भण्डार, साचा दर सुहाईआ। कँवल कँवला कर त्यार, कँवल मुख सुहाईआ। वेखणहारा सिरजणहार, ना कोई दूसर संग रखाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। खेले खेल अपर अपार, आप आपणी दया कमाईआ। नाभी फुट्टी आया बाहर, पंखड़ीआं मुख सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ चार वेख वखाईआ। कँवल फुल फुल उज्यार, हरी हरि आप करांयदा। कमलापाती खेल अपार, बूंद स्वांती विच टिकांयदा। इक्क इकांती पावे सार, आप आपणा मेल मिलांयदा। पुरख बिधाती भेव न्यार, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। उत्तम जाति कर उज्यार, आप आपणा मुख खुल्हांयदा। हँ ब्रह्म इक्क पसार, पारब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। चारे मुख कर उज्यार, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर साचा इक्क सुहांयदा। हरी हरि हरि हरि रूप, हरि हरि वेख वखाईआ। पारब्रह्म सति सरूप, ब्रह्म ब्रह्म उपजाईआ। दाता दातार शाहो भूप, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, आदि जुगादि जुगा जुगन्त जुग जुग आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आप उपाए ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे आदि आपे जुगादि, आप आपणा नाउँ रखाईआ। आपे शब्द आपे नाद, आपे तुरीआ तूरत नाद वजाईआ। आपे मोहण माधव माध, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपे निरगुण सरगुण लए लाध, निराकार साकार आप हो जाईआ। आपे आपणा आप रिहा अराध, आपे आपणी सेव कमाईआ। आपे जाणे भेद बोध अगाध, आप आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता एकँकार, इक्क इकल्ला कर पसार, जुगा जुगन्तर पावे सार, जुग करता आप हो जाईआ। जग करता हरि करनेहारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। पुरख

अबिनाशी खेल अपारा, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे उत्पत करनेहारा, आपे मेट मिटांयदा। आपे विष्नूं वेस न्यारा, आपणा आप वटांयदा। आपे ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। आदि जुगादी एकँकारा, अकल कला वरतांयदा। लेखा लिखे ना कोई संसारा, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, इक्क इकल्ला सच महल्ला सच सिँघासण पुरख अबिनाशण सचखण्ड दुआर दरवाजा ग़रीब निवाजा एका एक खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआर दर दरवेश, एका एकँकारया। पुरख अबिनाशी नर नरेश, सति सुल्तान आप अख्वा रिहा। आपे ब्रह्मा आपे विष्न होए महेष, आप आपणा वेख विखा रिहा। आपे शंकर बण करे अदेस, आपे निउँ निउँ सीस झुका रिहा। आपे बाशक तशका होए शेष, आपे सेज हंढा रिहा। आपे जुगा जुगन्त करे वेस, वेस अनेका आप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आदि जुगादी नाद अनादी अख्वा रिहा। आपणा नाउँ रक्ख करतार, निरगुण आप उपजांयदा। शब्द अगम्मी खेल अपार, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा वेता कर प्यार, ब्रह्म ब्रह्म समझांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कार, एका धुनी नाद वजांयदा। चारे मुख मुख उज्यार, मुख कँवला आप खुल्हांयदा। बोध अगाधी एका धार, शब्द अनादी नाद वजांयदा। लेखा लिख्या हरि अपार, आपणा लेख आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक आप हो जांयदा। एका रंग पुरख करतारा, एका रूप समाईआ। एका निरगुण खेल अपारा, एका सरगुण वेस वटाईआ। एका मेला विच संसार, एका साची रचन रचाईआ। एका लोआं पुरीआं दए सहार, एका मण्डल मण्डप रिहा सुहाईआ। एका जोती नूर रवि ससि सतार, आप आपणी दया कमाईआ। एका पुरख एका नार, एका कन्त सुहाग हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जुगत जुग जगत आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ (२६-३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी) प्रीतम सिँघ दे घर १२ ए १६ वैस्ट ईसट एरीआ दिल्ली ✪

हरि किरपा हरि जाणया, पारब्रह्म गुर करतार। हरि किरपा हरि पछाणया, निरगुण जोत शब्द अधार। हरि किरपा हरि संगत मानया, मेल मिलावा सिरजणहार। हरि किरपा खेल दो जहानया, खेल खिलाए गिरवर गिरधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे परवानया। हरि किरपा हरि पेख्या, आत्म अन्तर मीत। हरि किरपा हरि वेख्या, सतिगुर ठांडा सीत। हरिभगतन हरिभगती लेखया, आदि जुगादी पतित पुनीत। हरि किरपा हरि धारे भेस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे गाए सुहागी गीत। हरि किरपा हरि पाया, सतिगुर सज्जण शाह।

७२६ ०८

हरि किरपा दर खुल्हाया, प्रभ मिल्या बेपरवाह। हरि किरपा घर वसाया, लेखा चुका अगम्म अथाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी बणे मलाह। हरि किरपा हरि रूप है, हरि हरि रंग समाए। हरि किरपा मेला सतिगुर शाहो भूप है, जन हरि साचे मेल मिलाए। हरि किरपा लेखा चुक्के चारों कूट है, दहि दिशा पन्ध मुकाए। हरि किरपा नाता तुटे जूठ झूठ है, घर साचे सच वसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर वेख वखाए। हरि मन्दिर हरि बोल्लया, निरगुण शब्द जैकार। पुरख अबिनाशी पर्दा खोल्हया, निरगुण बाती कर उज्यार। नाम वस्त कंडे तोल्लया, तोलणहार अपर अपार। आदि जुगादि कदे ना डोल्लया, लक्ख चुरासी पावे सार। हर घट अन्दर आपे मौलया, जोती नूर कर उज्यार। अमृत भरे आपे कौलया, खिल्हे कँवल सच्ची गुलज़ार। खेले खेल उप्पर धौलया, धरत धवल दए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। हरि किरपा सतिगुर साख्यात, निरगुण जोत जगाए। हरि किरपा मेल मिलावा कमलापात, कँवल मुखी मुख अड्ड खुल्हाए। हरि किरपा मेला चरन नात, सतिगुर पूरा जोड़ जुड़ाए। हरि किरपा साची दात, नाम वस्त वस्त झोली पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाए। हरिजन साचा मीतड़ा, मेल मिलावा विच संसार। सतिगुर पूरा काया चोली रंगे चीथड़ा, रंगे रंग अपार। अनादी ब्रह्मादी शब्द सुणाए साचा गीतड़ा, वाद विवादी देवे मार। पंज तत्त तत्तां करे ठंडा सीतड़ा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। पतित पापी करे पतित पुनीतड़ा, हिरदे राम नाम उरधार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार साचा नाता, सतिगुर पुरख बंधांयदा। आदि जुगादी इक्क इकांता, एका खेल खिलांयदा। धुरदरगाही साची दाता, नाम नामा झोली पांयदा। जुगा जुगन्तर पुच्छे वाता, वेस अनेका वेस वटांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द चढ़ांयदा। शब्द अगम्मी सुणाए गाथा, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका मन्दिर एका हाटा, एका दर खुल्हांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। एका जोती नूर लिलाटा, दिवस रैण डगमगांयदा। एका बिस्तर एका खाटा, एका सेज सुहांयदा। एका चोली काया माटा, पंज तत्त वेख वखांयदा। एका अग्गे वखाए नेड़े वाटा, पिछला पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर लेखा जाणे धुर, धुर लेखा आप लिखांयदा। धुर लेखा हरि लिखणहारा, एका एकँकारया। खेले खेल अगम्म अपारा, वेद कतेब भेव ना पा रिहा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण ला रिहा। दीपक बाती कर उज्यारा, जोती निरगुण डगमगा रिहा।

शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, घर मन्दिर इक्क सुणा रिहा। ढूँघी कन्दर अन्ध अँध्यारा, एका मुख छुपा रिहा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाह रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे मेटे अग्नी हाढ़ा, तत्व तत्त मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, ब्रह्म मति इक्क समझा रिहा। ब्रह्म मति सुर चरन प्रीत, गुर गुरमुख वड वड्याईआ। सीतल सांत करे सीत, ठांडी धार मुख चुआईआ। आपे जाणे आपणी रीत, चाल निराली इक्क वखाईआ। ना कोई मन्दिर गुरदुआरा मसीत, शिवदुवाला मट्ठ ना कोई उपजाईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग रंगाईआ। आपे वसे धाम अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। आपणे भाणे आपे जाणे मीठ, आपणे भाणे रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुणाए सुहागी गीत, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। हरि किरपा शब्द उपाया, गुर गुर किरपा धार। हरि नाद अनादी ढोला गाया, गावणहारा पुरख करतार। लोआं पुरीआं आप सुणाया, ब्रह्मण्ड खण्ड होए उज्यार। लोकमात वेख वखाया, धरनी धरत धवल दए सहार। आकाश प्रकाश आप कराया, आप आपणी किरपा धार। हर घट अन्दर वास रखाया, लक्ख चुरासी कर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला गुर गोपाला, निरगुण नूर एका डगमगाया। निरगुण दीवा निरगुण बाती, निरगुण आप जगाईआ। निरगुण पिया कमलापाती, कँवल नैण अख्वाईआ। निरगुण बैठा इक्क इकांती, थिर मन्दिर सोभा पाईआ। निरगुण बणया साचा साकी, साचा जाम प्याईआ। निरगुण खोल्हे आपणी ताकी, आपणा कुण्डा लाहीआ। निरगुण लहिणा देणा चुक्के बाकी, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। निरगुण अस्व निरगुण राकी, निरगुण शाह अस्वार अख्वाईआ। निरगुण वेखे लक्ख चुरासी जीव ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा मेल मिलाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, निरगुण रूप समांयदा। निरगुण शब्दी बण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलांयदा। निरगुण ल्या आपणा नाँ, निरगुण नाअरा आपे लांयदा। निरगुण वेखे थाउँ थाँ, निरगुण आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार निराकार आप करांयदा। निरगुण माता निरगुण पिता, पिता पूत आप अख्वाईआ। निरगुण बन्न्हे साचा नाता, निरगुण आपे जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण उत्तम रक्खे ज़ाता, हरि का वरन ना कोए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल खेलणहार बेपरवाहीआ। निरगुण पुरख पुरख महान, सरगुण शाह भूप अख्वाया। निरगुण गोपी निरगुण काहन, निरगुण राम नाम उपजाया। निरगुण खेले खेल दो जहान, निरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण शब्द निरगुण बिबान, निरगुण रिहा उडाया। निरगुण वेखे

७३१
०८

मार ध्यान, निरगुण निरगुण दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। घर सच्चा हरि मन्दिर उच्च मुनारा, जोती जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी खेल न्यारा, खेले बेपरवाहीआ। एका दीपक बाती कर उज्यारा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर डगमगाईआ। रवि ससि ना कोई सतारा, मण्डल मण्डप ना कोई सहारा, धरत धवल ना कोए वसाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई उज्यारा, आप आपणी रचन रचाईआ। निरगुण मीता निरगुण अतीता करे प्यारा, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस थाउँ थाँईंआ। निरगुण सतिगुर पुरख निरँजण, सति सतिवाद अख्वांयदा। निरगुण दाता दर्द दुःख भय भञ्जण, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। निरगुण मीत निरगुण सज्जण, साक सैण निरगुण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। निरगुण पुरख पुरख करतार, सति सरूप समांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, आप आपणा भेव खुल्ांयदा। आप आपणी किरपा धार, कर किरपा वेस वटांयदा। सरगुण बन्ने साची धार, साचा मार्ग लांयदा। पंज तत्त कर प्यार, आप आपणा विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका घर, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। निरगुण उपज्या हरि करतार, सरगुण जोत जगाईआ। सरगुण मेला विच संसार, निरगुण वेख वखाईआ। दोहां विचोला करनेहार, करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सज्जण पाया, सतिगुर मीत मुरार। सरगुण ढोला गाया, शब्दी शब्द जैकार, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाया आप आपणा कर प्यार। इष्ट देव इक्क जणाया, एका रूप सच्ची सरकार। नेत्र नैण इक्क खुल्ाया, खोलणहार बन्द किवाड़। साचा किला इक्क सुहाया मन्दिर सोहे बंक दुआर। आपे हरि हरि रूप वटाया, निरगुण नूरो नूर उज्यार। पंजां तत्तां मेल मिलाया, मन्दिर अन्दर गुप्त ज़ाहर। साची कन्दर डेरा लाया, वसणहारा धूआँधार। शब्द अनादी इक्क चलाया, धुन अगम्मी धुनीकार। आप आपणा राग अल्ाया, गावणहार हरि निरँकार। गावणहार दिस ना आया, भरमे भुल्ले सर्ब संसार। गुरमुख विरले मेल मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार।

✪ पहली सावण २०१६ बिक्रमी जेठूवाल ✪

७३३ ०८ निरगुण धार हरि निरँकार, नूरो नूर जोत समाईआ। आदि निरँजण खेल अपार, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव कोए ना पाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, खेले खेल बेपरवाहीआ। कमलापाती हो उज्यार, एका एक डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण नूर पुरख अकाला, एका एकँकारया। आदि जुगादी हो उजाला, आप आपणा रूप वटा रिहा। साचा मन्दिर सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचा इक्क सुहा रिहा। आपणा दीपक आपे बाला, आप आपणा दर सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ रखा ल्या। आदि जुगादी पुरख करतार, एका रंग समाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, अन्दर बाहर आप हो जाया। आपे जोती नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। आपे शब्द जै जै जैकार, धुन अनादी आप सुणाया। आपे बोध अगाधी भर भण्डार, आपे वेख वखाया। आपे बण हरि वणजार, आप आपणा वणज कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण रूप अकाल मूर्त, एका एक अख्वांयदा। शब्द अनादी साची तूरत, जुगा जुगन्तर इक्क वजांयदा। आपे वसे नेड़े दूरत, दर दुआरा आप सुहांयदा। आपे दाता हाज़र हज़ूरत, हरि हरी हरि वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ प्रगटांयदा। आपणा नाउँ रक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। अजूनी रहित हो प्रतक्ख, आपणी कल वरताईआ। आपे लेखा जाणे अलक्खणा अलक्ख, अगम्म अगम्म वड्डी वड्याईआ। आपे करे आपणा पक्ख, आप आपणा संग निभाईआ। आपणे मन्दिर आपे वस, आपे आसण लाईआ। आपणी सेजा आपे हस्स, नारी कन्त आप हो जाईआ। आपणे हिरदे अन्दर आपे वस, आप आपणा बीज बिजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आप चलाईआ। निरगुण धार धुर दरबार, हरि साची सच चलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। अबिनाशी करता हो त्यार, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। अगम्म अलक्ख अगोचर बेऐब बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर डगमगाईआ । थिर घर साचा मन्दिर कर त्यार, अन्दर बैठा बेपरवाहीआ। आदि जुगादी एकँकार, अकल कला वरताईआ। पिता पूत ना कोई दुलार, भाई भैण ना कोई अख्वाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार वड वड्याईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। आपे वसे आपणे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क उपाया। छप्पर छन्न ना ल्या कोई छुहा, चार दीवार ना कोई बणाया। दीवा बाती ना ल्या कोई जगा, जोती नूर डगमगाया। कमलापाती आप अख्वा,

आप आपणा बंक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, एका आपणा नाम वड्याआ। नाम वड्याई पुरख अकाल, एका एक अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर दीन दयाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द वजाए साचा ताल, धुन आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे शाह कंगाल, थिर घर साचे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार वड्डी वड्याईआ। निराकार पुरख अबिनाशी, आपणा रंग रंगांयदा। खेले खेल शाहो शाबासी, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। आपणे मण्डल पावे रासी, ना कोई दूसर संग रलांयदा। ना कोई पृथ्मी ना कोई आकाशी, मण्डल मण्डप ना कोई सुहांयदा। रवि ससि ना कोई प्रकाशी, ना कोई रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। नूर उजाला हरि गोपाला, जोती जोत करे रुशनाईआ। खेले खेल दीन दयाला, दयानिध वड्डी वड्याईआ। आपे चले आपणी चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क रखाईआ। साचे मन्दिर बैठ सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक वड वड्याईआ। आपणा फल लगाए डाल्हा, फुल्ल फुलवाड़ी इक्क महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत हरि हरि धार, हरि हरि आप उपजांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, अगम्मड़े धाम सुहांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े ना कोई प्यार, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। मात पित ना अंमड़ी कोई दुलार, भैण भाई ना कोई अख्वांयदा। पृथ्मी आकाश ना कोई सहार, पुरीआं लोआं ना रचन रचांयदा। गगन मण्डल ना कोई प्यार, धरत धवल ना कोई सुहांयदा। जंगल जूह ना कोई पहाड़, समुंद सागर ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई उज्यार, मन मति बुध ना कोए रखांयदा। तीर्थ तट ना कोई किनार, चौदां हट्ट ना कोई खुल्हांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए प्यार, शंकर संग ना कोई निभांयदा। करोड़ तेतीस ना कोई अधार, गण गंधर्ब ना कोई रखांयदा। शाह सुल्तान ना कोई दर दरबान, राज राजान ना कोई अख्वांयदा। ना कोई देवणहार फ़रमान, ना कोई निउँ निउँ सीस झुकांयदा। बत्ती दन्द कोई ना गायण, रसना जिह्वा ना कोई हलांयदा। गुर पीर अवतार ना कोई निशान, साध सन्त ना कोई दिसांयदा। आदि जुगादी एकँकार निरगुण रूप श्री भगवान, निराकार आप अख्वांयदा। आपे वसे साचे मन्दिर सच मकान, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, परम पुरख आप अख्वांयदा। आपे होए जाणी जाण, जानणहार नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, वेद कतेब भेव ना पांयदा। लेखा जाणे ना अञ्जील कुरान, मूसा ईसा ना कोई सदांयदा। खाणी बाणी ना कोई कल्याण, छत्ती राग ना कोई सुणांयदा। ना कोई पूजा ना अशनान, तीर्थ तट ना कोई वखांयदा। ना कोई

ज्ञान ना कोई ध्यान, इष्ट देव ना कोई दृढ़ांयदा। ना कोई गुरदुआर वसे मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला, मट्ठ ना कोई रहांयदा। आदि जुगादी पुरख सुल्तान, निरगुण जोत डगमगांयदा। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी हरि ब्रह्मादी, हरि हरि आप अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, एका एकँकारया। आपे पिता आपे माता, सुत्त दुलारा आप अख्वा रिहा। आपे जाणे आपणी उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोई बणा रिहा। बैठा रहे इक्क इकांता, अडोल आप अकाल अख्वा रिहा। खेले खेल बहु बहु भांता, हरि का भेव कोई ना पा रिहा। आपे पुच्छे आपणी वाता, आप आपणा मेल मिला रिहा। आपे देवणहारा दाता, आपणी झोली आप भरा रिहा। आपे जाणे सच सुगाता, सच भण्डार आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, एका एकँकारा खेल खिला रिहा। एकँकारा खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप करांयदा। पुरख अबिनाशी बैठा इक्क इकल्ला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। सच सिँघासण आसण मल्ला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप, सति सरूप आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा नाउँ रक्ख निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। थिर घर मन्दिर सोहे मन्दिर सच दुआर, हरि बैठा बेपरवाहीआ। राउ रंक ना कोई विचार, राज राजान ना कोई वड्याईआ। शाह सुल्तान ना कोई सिक्दार, दर भिखारी ना कोई वखाईआ। ना कोई करे हाहाकार, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। ना कोई रोवे ज़ारो ज़ार, हँस मुख ना कोई सलाहीआ। ना कोई दिसे कागी डार, ना कोई कूंज रही कुरलाईआ। ना कोई बगला बप्प करे पुकार, ना कोई हँसा मोती चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार खेल कर, करनी करता आपणी करे वड्याईआ। हरि वड्याई पुरख समरथ, आपणी आप करांयदा। आदि जुगादी आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आप निभाए आपणा साथ, सगला साथी आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणी गाथ, कथा अकथ कथ ना कोई सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, सच दुआरे बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। साचा बेड़ा आपे बन्नू, हरि साची बणत बणाईआ। लोआं पुरीआं देवे थम्म, शब्द डोरी इक्क बंधाईआ। सेवा लाए सूरज चन्न, रवि ससि करे रुशनाईआ। आपे विष्नूं ल्ए जम्म, आपे कँवला मुख खिलाईआ। आप ब्रह्मा वेता राग सुणाए कन्न, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। आपे शंकर देवणहारा डन्न, बाशक तशका गल विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार, साकार आप हो जाईआ। साकार पुरख सुल्तान, निरगुण जोती जोत जगांयदा। आपे

विष्नूं विश्व रूप भगवान, वासदेव नाम धरांयदा। आपे आत्मक आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म प्रभ अख्वांयदा। आपे शब्द मन्त्र बण ज्ञान, गुण निधान वेस वटांयदा। आपे वेखे त्रैगुण तेरा सच मकान, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ांयदा। आपे खेले खेल महान, मन मति बुध संग रलांयदा। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, आपणा बंधन आपे पांयदा। आपे करया बन्द मकान, घर घर विच आप टिकांयदा। अमृत साचा पीण खाण, सर सरोवर इक्क भरांयदा। जोत निरँजण जगे महान, साचा दीपक आप जगांयदा। अनहद नाम सच्ची धुनकान, नाद अनादी नाद वजांयदा। पंचम मीता हो प्रधान, पंचम मुख सालांहयदा। साचे मन्दिर हो प्रधान, आप आपणा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार, साकार वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण एका धार, सतिगुर बणत बणाईआ। शब्द अगम्मी कर प्यार, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। आदि निरँजण खेल अपार, जोत निरँजण सेवा लांयदा। दर्द दुःख भय भञ्जण ख़बरदार, ना मरे ना जाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, साची हाटी आप विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मेला सरगुण चेला, घर साचे वज्जी वधाईआ। एका वसे धाम इकल्ला, घर बैठा बेपरवाहीआ। पंचम मीता सज्जण सुहेला, एका राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। निरगुण वड्याई आपणे रक्ख हथ्थ, हरि साचे वड वड्यांअदा। सरगुण देवे साची वथ्थ, साचा बीज बिजांयदा। दोहां विचोला पुरख समरथ, पारब्रह्म अख्वांयदा। ब्रह्म ब्रह्म पाए नथ्थ, दिस किसे ना आंयदा। शब्द जणाई अकथना अकथ, एका राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी काया मन्दिर डूँघी कन्दर सच सिँघासण पुरख अबिनाशण निरगुण धार निराकार इक्क इकल्ला कर प्यार, घट घट डेरा लांयदा। घट घट अन्दर आपे वस, आपणा राह बुझांयदा। आपणी जोत कर प्रकाश, आपे वेख वखांयदा। आपे पावणहारा रास, गोपी काहन आप नचांयदा। आपे लेखा जाणे दस दस मास, मात गर्भ लेख चुकांयदा। आपे निज घर साचे रक्खे वास, आत्म ब्रह्म आप अख्वांयदा। आपे वसे विच प्रभास, फुल्ल फलवाड़ी आप लगांयदा। आपे जाणे पृथ्मी आकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे दर, सरगुण साचा वेख वखांयदा। सरगुण तेरा साचा रूप, त्रैगुण माया मेल मिलाया। पंज तत्त वसे चारे कूट, दो जहानां फेरी पाया। अबिनाशी करता गया तुठ, आप आपणा जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अवतार, एका एक अख्वाया। लक्ख चुरासी बन्न्है धार, हरि हरि बणत बणाईआ। मानस मनुक्ख कर त्यार, आपणी बूझ बुझाईआ। एका दीपक आपे बाल, आपणी करे आप कुड़माईआ। आपणा बणे मीत

मुरार, आपणा सज्जण आप अख्वाईआ। आपणी रीत चले संसार, साची रीत इक्क वड्याईआ। हस्त कीट एका धार, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। पतित पुनीत करे प्यार, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। अलक्ख निरँजण अगम्म अथाह, आपणा खेल खिलांयदा। सरगुण साचा मेल मिला, मेल मिलावा आप करांयदा। निरगुण दीवा आप जगा, कमलापाती वेख वखांयदा। साचे मन्दिर खोल्ह ताकी, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, एका बंधन बंध बंधांयदा। बंधनहारा शब्द डोर, शब्दी शब्द वड्डी वड्याईआ। वसणहार अन्ध घोर, अन्ध घोर आसण लाईआ। रक्खणहारा पंज चोर, पंजां चोरां करे लड़ाईआ। चाढ़णहारा साचे घोड़, साचा अस्व इक्क रखाईआ। दो जहानां रिहा दौड़, हरि साचे वड वड्याईआ। आदि जुगादि लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, घट घट अन्दर खोज खुजाईआ। आप लगाए दो जहानी एका पौड़, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी खेल कर, खेले खेल थाउँ थाँईंआ। पुरख अबिनाशी साची धार, आपणी आप चलांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, एका गुर अख्वांयदा। जन भगतां सुत्ता कर प्यार, साचे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर वेखणहार, हरि वड्डी वड्याईआ। निरगुण रूप आपणा धर, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। आपणा मेला आपे कर, आपे मेल मिलाईआ। आपणा भाणा आपे ज़र, आपे भाणा रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा उतरया पार, त्रेता तेरा मीत मुरार, त्रैगुण मेला वेख वखाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, लोकमात डेरा लाया। साची सिख्या इक्क विचार, एका रंग रंगाया। एका घर इक्क दरबार, एका बंक सुहाया। एका शाह इक्क दरबार, राज राजान इक्क अख्वाया। एक गीता कर प्यार, सीता सुरती लए प्रनाया। एका तोड़े गढ़ हँकार, लंका गढ़ तुड़ाया। भगत वछल कर प्यार, भगतन मीता मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता त्रीया वेस कर, त्रैगुण खेल खिलाया। खेले खेल पुरख करतारा, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, पुराण अठारां गया गाईआ। कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। गीता ज्ञान कर प्यारा, अर्जन इक्क समझाईआ। बिप्पर सुदामा कर प्यारा, द्रोपद लाज रखाईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकारा, हँकारी गढ़ तुड़ाईआ। अन्तिम करया पार किनारा, आप आपणा कल वरताईआ। कलिजुग कूड़ा कर प्यारा, कूड़ा डंक वजाईआ। चारों कुन्ट धुँधूकारा, वेखे सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, आप आपणी

कल वरताईआ। ईसा मूसा कर प्यारा, अञ्जीलां कुरानां दए वड्याईआ। संग मुहम्मद चार यारा, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, अल्ला हू हू नाअरा लाईआ। नानक लेखा धुर दरबारा, हरि साचा रिहा जणाईआ। प्रगट होया निराधारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। पाया वर पुरख करतारा, ना मरे ना जाईआ। मिल्या मेल मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जाईआ। थिर घर सोहया सच दुआरा, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, अन्दर बाहर करे रुशनाईआ। निरगुण निरगुण ढहि प्या दुआरा, नानक एका मंग मंगाईआ। लक्ख चुरासी करे प्यारा, साचा हट्ट खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी उतरे पारा, जो जन रसना गाईआ। कलिजुग कूड़ा होए उज्यारा, धूआँधार सर्ब कराईआ। ना कोई दिसे किसे सहारा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ना कोई सहाईआ। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द वज्जी वधाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे नाम लटकाईआ। साचा बस्त्र अपर अपारा, तन शस्त्र आप सजाईआ। सीस जगदीश सोहे दस्तारा, कल्गी तोड़ा आप टिकाईआ। पंचम मीता पंच प्यारा, पंचम पंचम करे कुड़माईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, अंमिउँ रस मुख चुआईआ। आप लँघाए एका धारा, एका वार कराईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, आर पार आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे कर त्यारा, साची बणत बणाईआ। आपे ढहि प्या दुआरा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। गुर चेला सोहे इक्क दुआरा, एका घर वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा रूप अपारा, भेव अभेव रहे ना राईआ। वहिगुरू फतिह बोल जैकारा, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। मेल मिलावा सुत्त दुलारा, गोबिन्द नाउँ वड वड्याईआ। सिँघ रूप आप करतारा, सिँघ सिँघ वेख वखाईआ। चार कुन्ट खेल अपारा, दहि दिशा फेरी पाईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकारा, आपणा बल वखाईआ। आपे मंगे बण भिखारा, दर बैठा अलक्ख जगाईआ। गोबिन्द तेरा सच दुआरा, ख़ाली कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आपे रिहा रचाईआ। गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बलकार, एका शब्द सुणांयदा। कलिजुग तेरी आए वार, एका ढईआ विच रखांयदा। कोई ना पावे तेरी सार, तेरा भेव आपणे विच छुपांयदा। चार लक्ख बत्ती हज़ार गए हार, लेखा लिख्या आप मिटांयदा। मारनहारा साची मार, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। लेखा चुक्के विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। कलिजुग कूके दए दुहाई, नेत्र नीर वहाया। वेले अन्त ना कोई सहाई, संग मुहम्मद ना कोई रखाया। अल्ला राणी बैठी मुख शरमाई, चौदां चौदां वेस वटाया। चौदां तबकां पए लड़ाई, ना कोई धीरज धीर धराया। मुलां शेख़ मुसायक कुतब

गौंस ना कोई सहाया। ना कोई दीसे नेरन नेर, पीरन पीर ना कोई अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, शब्द बोला साचा तोला, एका ढोला आपे गाया। कलिजुग तेरा साचा पन्ध, हरि साचे आप मुकावणा। गोबिन्द गाया साचा छन्द, हरि साचे पूर करावणा, आपणे घर प्रगट होए आपे नंद, आप आपणा कर्म कमावणा। तेरा कट्टे बन्द बन्द, नाम खण्डा हथ्थ रखावणा। मेट मिटाए भेख पखण्ड, जूठ झूठ रहिण ना पावणा। आपे वंडे साची वंड, साचा तोला आप अख्वावणा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, लोकमात वेस वटावणा। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलावणा। मनमुख मेटे नार दुहागण रंड, विभचार ना कोई जणावणा। जन भगतां आत्म पाए ठंड, अमृत आत्म जाम प्यावणा। नंगी होए ना कदे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकावणा। सो पुरख निरँजण साचा नाम वंड, हँ ब्रह्म इक्क रखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सति सन्तोखी इक्क ज्ञान, अन्दर मन्दिर खोल्ह दुकान, इक्क वणज नाम वणजारा, साचे हट्ट विकावणा। कलिजुग उठ उठ बल धार, दोए जोड़ करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, तेरा दर सोहे अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी जाए हार, साध सन्त ना दिसे सहारा। नारी कन्त ना कोई प्यार, भैण भाई ना कोई सहारा। पंज तत्त विकारा होए उज्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम आपे सारा। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, हरि हरि वेख वखावणा। प्रगट होए सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी खेल खिलावणा। नाम वजाए सच मृदंग, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठावणा। लोआं पुरीआं आपे लँघ, लोकमात फेरा पावणा। गोबिन्द विछाई सेज पलँघ, हरि साचे आसण लावणा। आपे धार वहाए गंग, आपे मेट मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप तेरे दर, तेरा हरि सुहावणा। कलिजुग तेरा कूड़ प्रधान, कूड़ा डंक वजांयदा। राज राजान ना दिसे कोई शाह सुल्तान, सच सुच्च ना कोई जणांयदा। गुर का मन्त्र ना कोई गायण, हरि हिरदे ना कोई वसांयदा। साचा राग ना सुणण कान, नाम निधाना ना कोई वखांयदा। अमृत आत्म ना मिले पीण खाण, रस मिट्ठा कोई ना पांयदा। किसे ना वस्सया काया मन्दिर सच मकान, नौ दुआरे ख़ाली सर्ब वखांयदा। कलिजुग तेरी जगत दुकान, हरि साचा फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, लेखा कोई रहिण ना पांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणी दया कमांयदा। देवे नाम राम सच्ची धुन्कान, धुन धुनी इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशान हरि मेहरवान, एका एक वखांयदा। कलिजुग तेरा अन्त निशान, चार कुन्ट विभचारया। जूठ झूठ होए प्रधान, सच सच सच जणा रिहा। चारों कुन्ट सुंञ

मसाण, दहि दिशा हरि का नाम ना कोई गा रिहा। रवि ससि मुख शरमाण, तेज बल ना कोई धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार, आप आपणी रचन रचा रिहा। कलिजुग तेरा अन्तिम आउणा, हरि साचा सच सुणांयदा। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, जागरत जोत इक्क जगांयदा। गोबिन्द साचा संग निभाउणा, शब्दी डंक वजांयदा। सम्बल नगरी धाम सहाउणा, आप आपणा आसण लांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोई रखांयदा। एका ढोला साचा गाउणा, सोहँ शब्द चलांयदा। राम कृष्न एका दर बहाउणा, एका दर सुहांयदा। ईसा मूसा मेल मिलाउणा, संग मुहम्मद जोड़ जुड़ांयदा। नानक निरगुण धार चलाउणा, गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा। फतिह डंका इक्क वजाउणा, राउ रंकां आप समझांयदा। चार वरनां एका धाम बहाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। जोती जामा हरि करतार, आपणा आप उपांयदा। प्रगट हो विच संसार, सोहँ ढोला गांयदा। गुरमुख साजण लए उभार, आप आपणा मेल मिलांयदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, साचे मन्दिर दरस दखांयदा। सतारां हाढ़ी बाकी चुक्के विच संसार, ख़ाकी ख़ाक ना कोई समझांयदा। शब्द राकी कर त्यार, लोकमात आप सुहांयदा। सोलां कलीआं आसण पाया सिरजणहार, चारे रासां हथ्थ उठांयदा। गुरमुखां लहिणा देणा बाकी चुकाए आप करतार, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेखे अन्त निशान, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। गुरमुख नेत्र सतिगुर पेख्या, विसरया संसार। ज़ाहरा ज़हूर हाज़र हज़ूर सतिगुर वेख्या, मिल्या मीत मुरार। दो जहानां चुक्कया लेखया, भव सागर उतरे पार। लेखे लग्गे मुच्छ दाढ़ी केस्सया, जिस जन चरन करी निमस्कार। एथे ओथे मिटाए भरम भुलेखया, सुहाए सचखण्ड दुआर। गुरमुखां लिखणहारा लेखया, कलिजुग अन्तिम गुरमुखां बणे दर भिखार। धुर मस्तक लाई साची मेखया, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर्शन देवे अग्गे खड़्ह, निरगुण सरगुण रूप आप करतार। दस्म दुआरा सच टिकाणा, सतिगुर साचे आप बणाया। उप्पर बैठ शाह सुल्तान साचा राणा, सति सरूपी नज़री आया। गुरमुख वेखे चतुर सुजाणा, आप आपणी दया कमाया। आवण जावण चुक्के जम की काणा, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा मार्ग आपे लाया। सच तख्त बैठ सुल्तान, हरि घर साचा आप सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम होया प्रधान, जोती जामा भेख वटांयदा। गुरमुखां

देवे नाम निधान, सोहँ जाम प्याला आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण जोती नूर नूर उज्यार, देवे दरस मिटे हरस सर्ब संसार, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा।

✪ २ सावण २०१६ बिक्रमी केहर सिँघ दे घर पिण्ड रजीवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

तारनहारा पुरख समराथा, हरिजन साचे आप तरांयदा। नाम जणाई साची गाथा, एका एक अलांयदा। हरिजन चढ़ाए साचा राथा, सतिगुर साचा रथ चलांयदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। साचा मन्त्र पूजा पाठा, एका हरि हरि नाम दृढ़ांयदा। सर सरोवर तीर्थ ताटा, चरन दुआरा ताल सुहांयदा। आपे जाणे आपणी वाटा, जुग जुग पन्ध मुकांयदा। दीपक जोती जोत ललाटा, घर मन्दिर आप टिकांयदा। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी फिरे नाठा, हरि हरि आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेख वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, एका एक एकँकारया। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त माह वरख वेख वखा रिहा। जुग जुग उपजाए साचे सुत, हरिभगती नाम दृढ़ा रिहा। अमृत आत्म बख्शे साचा घुट, सति सरोवर सीर मुख चुआ रिहा। हउमे कढ्ढे वासना खोट, एका अन्तर रंग रंगा रिहा। तन नगारे लाए चोट, धुन अनादी शब्द वजा रिहा। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, तीर्थ तट्टां हथ्थ ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, परम पुरख अख्वांयदा। हरिजन लेखे लाए दम, जो जन रसना हरि हरि गांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमांयदा। गगन पताल रहाए बिन बिन थम्म, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। सेवा लाए सूरज चन्न, रवि ससि आप फिरांयदा। लोआं पुरीआं बेड़ा बन्न्, आदि निरँजण आप उठांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी सुणाए राग कन्न, शब्द अनादी आप सुणांयदा। आपे जाणे जननी जन, हरिजन साचे मात उपजांयदा। एका राग सुणाए कन्न, आप आपणा ढोला गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप उठांयदा। सतिगुर सच्चा पातशाह, परम पुरख करतारा। आदि जुगादी एका शहिनशाह, नित नवित्त लए अवतारा। दो जहानां चलाए साचा राह, खेले खेल अगम्म अपारा। शब्द सरूपी बण मलाह, आपे वेखे आर पार किनारा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका बख्शे नाम भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन उपजाए साचा सुत्त दुलारा। हरि भगवन्त आदि अन्त, सन्तन संग समांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। मेल मिलावा

नारी कन्त, नर नरायण वेख वखांयदा। आप सुहाए रुत्त बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। हरि हरि महिमा गणत अगणत, भेव कोई ना पांयदा। वेखणहार जीव जन्त, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरि हरी हरि नरायण, हरी हरि रूप वटाईआ। आपे पेखे आपणे नैण, नेत्र लोचण इक्क दरसाईआ। आप चुकाए लहिण देण, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका घर, घर सुहञ्जणा जोत रुशनाईआ। घर सुहञ्जणा हरि गोपाल, नर हरि आप उपजांयदा। दीप अगम्मा आपे बाल, जोती बाती विच टिकांयदा। आपे रक्खे आपणे थाल, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखांयदा। वसणहारा धर्म धर्म सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि निरगुण जोत जगाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका एकँकारा बैठा इक्क इकल्ला, अकल कला वरताईआ। सति सरूपी नेहचल धाम अटला, दर मन्दिर एका सोभा पाईआ। आपणी जोती आपे रला, आप आपणी कर रुशनाईआ। सच सनेहुड़ा आपे घल्ला, शब्द अनादी ढोला गाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एका मल्ला, आप आपणा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आपणे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा हरि हरि खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। अक्खर वक्खर आपे बोल, आप राग सुणांयदा। जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी तोले आपणे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। भगत वछल हरिजन साचे लए विरोल, आप आपणा मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा रहे अडोल, गुरमुख सज्जण आप तरांयदा। देवे वस्त नाम अनमोल, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। नाम वस्त हरि करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। सन्त साजण पाए सार, सति पुरख निरँजण वेख वखाईआ। बोध अगाधी शब्द जैकार, एका नाअरा लाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, लोकमात वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। वेखणहारा हरि भगवाना, एका एकँकारया। शब्द सरूपी सति तराना, सतिगुर पूरा नाउँ उपजा रिहा। साचे मन्दिर एका गाणा, एका राग सुणा रिहा। इक्क वखाए पद निरबाणा, निर्भय रूप वटा ल्या। अकाल मूर्त खेल महाना, साची तूरत नाद वजा ल्या। जूनी रहित हो प्रधाना, आप आपणी कल वरता रिहा। सोहँ शब्द धुर फ़रमाना, आपणा गाणा आपे गा ल्या। जन भगतां देवे नाम निधाना,

७४२
०८

गुरमुख विरले झोली पा रिहा। जगत झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी आप अख्वा रिहा। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, साचा सगन मना ल्या। सम्मत सोलां कर परवाना, बीस बीसा रंग रंगा ल्या। विछड़ ना जाए दो जहानां, जिस जन नेत्र लोचण दर्शन पा ल्या। आवण जावण चुकी काना, लक्ख चुरासी फंद कटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहा ल्या। घर सुहञ्जणा आदि निरँजण, चार कुन्ट रुशनाईआ। सतिगुर दाता दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधाना पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सखा सखाई साचा सज्जण, सज्जण मीत सतिगुर अतीत इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम आया पर्दे कज्जण, हरिजन साचे वेख वखाईआ। चारों कुन्ट झूठ नगारे वज्जण, कूड़ी क्रिया करे कुड़माईआ। गुरमुख विरले मदिरा मास तजण, रसना जिह्वा सोहँ ढोला गाईआ। सतिगुर पाया साचा सज्जण, निरगुण मीता वड वड्याईआ। अन्तिम वेले रक्खे लज्जण, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तान राज राजान दर दरबान तजण, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। घर साचा सोहे बंक दुआर, बंक दुआरी हरि हरि आया। आत्म अन्तर कर प्यार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। जगत तृष्ना दए निवार, आत्म साचा जाम प्याया। दिवस रैण इक्क ख़ुमार, एका रंग रंगाया। बंस सरबंसा करे विचार, सोहँ हँसा रूप वटाया। कलिजुग गुण कर ख्वार, रावण हँकारी मेट मिटाया। सहिंसा विच्चों कर उज्यार, गुरमुख साचा इक्क जगाया। कोटन कोटी कोटि कोट रहे विचार, दिवस रैण रहे बिल्लाया। कलिजुग चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, साचा चन्न ना कोई चढ़ाया। भरमे भरम भुल्ला संसार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। निहकर्मी अन्तिम लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। वरनी बरनी वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाया। साची करनी करे विच संसार, करनेहार आप अख्वाया। गुरमुख साचे लए उभार, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल साचे घर, घर साचा इक्क दरसाया। घर साचा वेखे उच्च मुनारा, निरगुण जोत जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। सरगुण मेला विच संसारा, साचे शब्द करी कुड़माईआ। एका शब्द धुनी धुन्कारा, नाद अनादी नाद वजाईआ। रागी नादी वसे बाहरा, भेव कोई ना पाईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका मन्त्र एका नाम इक्क जैकारा, एका नाअरा रिहा सुणाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, लोकमात वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच ब्रह्मण्ड लेखा जाणे जेरज अंड, वरभण्डी वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, अकल कला कल धारीआ। हरिजन वेखे साचे

लाल, घर साचे मेल मिला रिहा। दिवस रैण करे प्रितपाल, आप आपणी सेव कमा ल्या। जो जन घालण रहे घाल, आपणे लेखे आप लगा रिहा। देवणहार सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना इक्क लुटा रिहा। लहिणा देण चुकाए काल महांकाल, महांकाल रूप आप अख्वा रिहा। एथे ओथे चले नाल नाल, दो जहानां संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप उठा रिहा। गुरमुख साचे आप उठाए, आप आपणी दया कमाईआ। कलिजुग लेखा लेख लिखाए, लिखणहार बेपरवाहीआ। सच संदेशा इक्क सुणाए, चार कुन्ट फेरी पाईआ। नर नरेशा आप अख्वाए, नर नरायण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजण लए वर, राजन राज आप हो जाईआ। राजन राज शाहो भूप, सति पुरख अख्वांयदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। जन भगतां उप्पर जाए तुठ, आप आपणा संग निभांयदा। देवे नाम साचा घुट्ट, अमृत नाम प्यांअदा। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, आवण जावण पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर साचा सोहे सतिगुर पाया, मिल्या पुरख करतारा। साचे मन्दिर ढोला गाया, राम नाम इक्क जैकारा एकँकारा तोला बण के आया, तोलणहार सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिखां एका भरे नाम भण्डारा।

७४४ ०८

✪ मल्ल सिँघ दे घर रजी वाला ✪

हरि सतिगुर एक एकँकार, मूर्त अकाल अख्वाईआ। गुर गुर रूप अपर अपार, हरि शब्दी शब्द उपजाईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। गुरसिख सोहे बंक दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। परम पुरख पुरख करतार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला अकल कल पसार, आदि जुगादी वेख वखाईआ। हरिजन देवे नाम अधार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। हरि सतिगुर सच्चा मेहरवान, आदि निरँजण वड वड्याईआ। गुर मूर्त प्रगट विच जहान, अनादी तूरत शब्द सुणाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, घर साचे मेल मिलाईआ। गुरमुखां बख्शे इक्क ध्यान, एका रूप दिसाईआ। सभना दाता हरि भगवान, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी हो प्रधान, घट घट बैठा आसण लाईआ। सन्त साजण कर परवान, आत्म अन्तर

ब्रह्म जणाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, दूसर वस्त ना कोई दिसाईआ। साचा राग सुणाए कान, धुनी नादी नाद वजाईआ। अन्तर आत्म पीण खाण, अमृत साचा जाम प्याईआ। निर्मल जोती नूर महान, दिवस रैण डगमगाईआ। काया मन्दिर सच मकान, घर मेला बेपरवाहीआ। नौ दुआरे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। मेटणहारा पंज शैतान, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्त वेखे मार ध्यान, आदि अन्त वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता एका एकँकारा निराकारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, सतिगुर हरि हरि अख्वाया। गुर गुर साचा बण मलाह, लोकमात वेस वटाया। गुरमुख साचे साजण लए जगा, आप आपणी बूझ बुझाया। गुरसिखां नेत्र दए खुल्ह, अन्ध अन्धेर मेट मिटाया। साची सिख्या इक्क समझा, साचा मार्ग इक्क वखाया। बंक दुआरा दए सुहा, थिर घर वासी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर आपे वेख वखाया। सतिगुर पूरा हरि सुल्तान, शाहो भूप अख्वाया। गुर गुर खेले खेल विच जहान, वरभण्डी वंड वंडाया। गुरमुख साजण चतुर सुजान, आप आपणा मेल मिलाया। गुरमुख वेखे मार ध्यान, आप आपणी सेव कमाया। दाता दानी हरि मेहरवान, नाम निधाना झोली पाया। शब्द निशाना तीर कमान, तीर अणयाला आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। सतिगुर पूरा एका एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। गुर गुर वेस अपर अपार, गुर गुर आपणा खेल खिलाईआ । गुरमुख साजण कर त्यार, पंज तत्त करे रुशनाईआ। गुरसिख मेला विच दरबार, सच मन्दिर वज्जे वधाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी पावे सार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। अछल छल करे करतार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोती जोत नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर सतिगुर दयाल, दीन दयाल अख्वांयदा। गुर गुर सुहाए साचा ताल, सच अमृत नाम भरांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, मदि प्याला नाम जाम प्यांअदा। गुरमुखां फल लगाए डाल्ह, आप आपणी दया कमांयदा। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना पांयदा। खेले खेल पुरख अकाल, जूनी रहित दिस ना आंयदा। थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाल, दर साचा इक्क सुहांयदा। सतिगुर सचा पुरख अबिनाशा, परम पुरख अख्वाईआ। गुर गुर वेखे खेल तमाशा, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। गुरमुखां पूरी करे आसा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। गुरमुख मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आपे धार, आपे

वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा अकल कला कल धार, एका रंग समांयदा। गुर गुर रूप लै अवतार, नाम निधान डंक वजांयदा। गुरमुख साजण कर प्यार, आपणा रंग रंगांयदा। गुरमुख मेला दर दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। आदि जुगादी एकँकार, अकल कलधारी नाउँ रखांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, आपणा नाअरा लांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती नूर कर उज्यार, दिवस रैण डगमगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा निउँ निउँ सीस झुकांयदा। रवि ससि रहे विचार, हरि का भेव कोई ना पांयदा। निहकलंका जामा धार, सोहँ डंका शब्द विचार, राउ रंकां करे ख़बरदार, वासी पुरी घनका आप अख्वांयदा। गुरसिख जनका कर त्यार, दर घर साचा वेख वखांयदा। बार अनका लए अवतार, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। धरनी धरत धवल सुणे पुकार, लक्ख चुरासी सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला गुर गोपाला, दीन दयाला वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा दीन दर्द दुःख भय भञ्जण, अनभव प्रकाश समाईआ। सतिगुर पूरा आदि निरँजण, गुर गुर नाउँ रखाईआ। गुरमुखां नेत्र पाए अंजन, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। गुरमुख मेला साचे सज्जण, घर मिल्या साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी रिहा कमाईआ। सतिगुर पूरा हरि अडोल, आदि अन्त ना कोई डुलाईआ। गुर गुर शब्द जैकारा बोल, लोकमात करे पढ़ाईआ। गुरमुखां वसे सदा कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख तोले आपणा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी रही अनभोल, हरि का भेव कोई ना पाईआ। त्रैगुण माया करया घोल, पंज तत्त करे लड़ाईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा बोल, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। हउमे हँगता वज्जे ढोल, दर दर मंगता दए दुहाईआ। भुक्खा नंगता पर्दा रिहा फोल, आपणी गठड़ी आप खुल्हाईआ। सच वस्त ना दिसे कोल, ख़ाली हथ्थ फिरे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। सतिगुर पूरा हरि गोबिन्द, रूप अनूप दरसाईआ। गुर गुर मेटे सगली चिन्द, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, पिता पूत आप हो जाईआ। गुरमुखां अन्तर आत्म धारा देवे सागर सिन्ध, गहर गम्भीर समाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर सहिज सुखदाईआ। सतिगुर पूरा निराकार, निरगुण नाउँ धरांयदा। गुर गुर वेस विच संसार, सरगुण मेला मेल मिलांयदा। गुरमुखां देवे नाम भण्डार, आपणी दात आप वरतांयदा। गुरमुखां बख्शे इक्क प्यार, इष्ट देव इक्क जणांयदा। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणा खेल

७४६
०८

खिलांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, घर मेला मेल मिलांयदा। सतिगुर सच्चा मेलणहारा, साख्यात अख्वांयदा। गुर गुर खेल अगम्म अपारा, गुर दीवा बाती आप जगांयदा। गुरमुखां मेटे अन्ध अँध्यारा, बन्द ताकी आप खुल्हांयदा। गुरसिखां करे पार किनारा, औखी घाटी आप चढ़ांयदा। एका वणज करे वणजारा, हरि हरि नामा हट्ट विकांयदा। चौदां लोकां खोल्ह किवाड़ा, एका हट्ट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणा मन्त्र शब्द अनाद हरि ब्रह्मादि, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप सुणांयदा। सतिगुर दाता गहर गम्भीर, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। गुर सूरा ठांडा सति सति सीर, सांतक सति सति वरताईआ। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। गुरमुखां बज़र कपाटी चीर, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। माया ममता कट्ट जंजीर, साची संगता मेल मिलाईआ। चरन चरनोदक बख्शे ठांडा सीर, सीतल धारा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे थाउँ थाँईआ। सतिगुर पूरा वेखणहारा, जोती जोत डगमगांयदा। गुर गुर भरे नाम भण्डारा, जगत वरतारा आप हो जांयदा। गुरमुख मंगण मंग दुआरा, सतिगुर पूरा झोली पांयदा। गुरमुख चरन सरन सरन चरन करन निमस्कारा, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। देवे दरस दरस करतारा, करनी करता किरत कमांयदा। मेटे हरस हरस संसारा, तृष्ना तृखा आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सतिगुर रंग रंगे चलूल, साचा चोला आप रंगाईआ। आदि जुगादि ना जाए भूल, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। गुरमुख चुकाए पिछला मूल, नेत्र नैणां वेख वखाईआ। गुरमुखां आत्म सेजा बरखे फूल, दस्म दुआरी इक्क सुहाईआ। सुरती शब्दी मेला कन्त कन्तूहल, घर साचे वज्जी वधाईआ। सच सिँघासण आप बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाईआ। अगम्म अगम्मड़ा पंघूड़ा रिहा झूल, नाम हुलारा इक्क रखाईआ। गुरमुख नारी मेला कन्त कन्तूहल, दोए मूर्ति इक्क जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, साचे घर करी कुड़माईआ। सतिगुर साचा कन्त सुहागी, एका एक अख्वांयदा। गुर गुर शब्द बणे लागी, साचा सगन मनांयदा। गुरमुख नारी उठ उठ जागी, एका राह वखांयदा। गुरसिख पेईए रिहा त्यागी, कूड़ा मोह चुकांयदा। भैणां भईआ मात पित साक सज्जण सैण ना कोई दिसे सच्चा साथी, सगला संग निभांयदा। सतिगुर पूरा एका दिसे पाकन पाकी, पतित पुनीत इक्क अख्वांयदा। संग रखाए साचा राकी, आप आपणा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, आपे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा हरि रघुनाथ, हरि हरि वड्डी वड्याईआ।

७४७ ०८

गुर गुर देवे आपणा साथ, सगला संग निभाईआ। गुरमुख सुणाए आपणी गाथ, आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख लेखा वेखे मस्तक माथ, लेखा लिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। घर मन्दिर सोहे सच महल्ला, जोती जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला, नर निरँकार डेरा लांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशण सोभा पांयदा। आपणे दीपक आपे बला, जोती जोत डगमगांयदा। शब्द सुनेहड़ा साचा घल्ला, गुरमुख साचे मात उठांयदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणे लड़ बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर साचा इक्क वखांयदा। आपणा पल्ला आपे फड़ाए, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। गुरमुख नारी मेल मिलाए, घर साचे वज्जी वधाईआ। थिर दरबारा इक्क लगाए, उप्पर बैठा बेपरवाहीआ। चोबदार कोई दिस ना आए, राज मन्त्री ना कोई वखाईआ। वेद पाठ ना कोई सुणाए, गायत्री मन्त्र ना कोई पढ़ाईआ। वेदी फेरे ना कोई दुवाए, हवन धूप सुगंध ना कोई कराईआ। खाणी बाणी ना कोई पढ़ाए, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ । चार कुन्ट ना कोई फिराए, ना कोई गेड़ वखाईआ। सतिगुर पूरा साख्यात हरि सतिगुर सच्चा नज़री आए, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे आपणा मेल मिलाए, मिल्या मेल अगम्म अथाहीआ। आपणा मेला आप कराए, विछड़ कदे ना जाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़ाए, चौथे डण्डे हथ्थ फड़ाईआ। आपणी गोदी आप उठाए, आप आपणे अंग लगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव राह रहे तकाए, गुरमुख तेरा दर सुहाईआ। लक्ख चुरासी किसे हथ्थ ना आए, कोटन कोटि होए हल्काईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराए, हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा, ना मेल मिलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रंगाए, अनबंसा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर पाया इक्क रघुराईआ । गुरमुख नारी कन्त प्यारी, हरि हरि कन्त रखाईआ। आत्म सेजा मीत मुरारी, देवे दरस अगम्म अपारी, निरगुण जोती इक्क जगाईआ। एका शब्द धुनी धुन्कारी, रागां नादा वसे बाहरी, आप सुणाए साचा रागीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, आपे करे कराए वड वड्याईआ। हरिजन मेला पारब्रह्म, परम पुरख सुल्तान। ना मरे ना पए जम्म, खेले खेल दो जहान। गुरमुखां संवारे आपे कम्म, गुरमुख साचे कर पछाण। जगत तृष्ना मेटे तम, मेल मिलाए श्री भगवान। जूठा झूठा गढ़ हँकारी भन्न, नाम फड़ाए हथ्थ निशान। शब्द डोरी बन्न्हे मन, दहि दिशा वेखे मार ध्यान। राग अनादी सुणाए कन्न, सोहँ शब्द हरि जवान। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, मेटे रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यान। एका वस्त दिसाए तन, चोर यार लुट्ट कोई ना लै जाण। गुरमुख साजण आपे पेखे आपे लाए लड़, सतिगुर पूरा गया मन्न। आवण जावण लक्ख

चुरासी तुट्टे कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग जगत भगत भगवन्त सन्त नारी कन्त करे परवान।

३ सावण २०१६ बिक्रमी निरँजण सिघ दे घर अजितवाल ज़िला फ़िरोज़पुर

सति पुरख निरँजण हरि सुल्ताना, आदि जुगादि एक एकँकारया। पुरख अबिनाशी खेल महाना, आदि निरँजण वेस वटा रिहा। जोती नूर दो जहाना, निरगुण दाता आप जगा रिहा। खेले खेल श्री भगवाना, हरि का भेव कोई ना पा रिहा। शब्द अनादी धुन तराना, पारब्रह्म आप उपा रिहा। थिर घर वसे सच मकाना, सचखण्ड थिर दरबार आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर डगमगा रिहा। पारब्रह्म पुरख सुल्तान, हरि हरि आप अख्वांयदा। दीपक जोती दीप महान, नूरो नूर डगमगांयदा। इक्क इकल्ला मेहरवान, एकँकारा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा अछल अछल्ल अछेदा, आप आपणा भेव छुपांयदा। पारब्रह्म श्री भगवन्ता, निरगुण नूरो नूर उपानया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस श्री भगवानया। आप बणाए आपणी बणता, आपे वसे सच टिकाणया। आपे नारी आपे कन्ता, आपणा दर आप सुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर करे परवानया। हरि सज्जण हरि मीतड़ा, पारब्रह्म करतारा। एका वसे धाम अनडीठड़ा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा। आदि जुगादी जाणे आपणी रीतड़ा, खेले खेल अपर अपारा। आपणा भाणा रक्खे मीठड़ा, दाता दानी सिरजणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर नूर होए उज्यारा। निरगुण दाता बेपरवाह, एका एकँकारया। आप आपणा बण मलाह, आपे देवे सच सहारया। आपे वसे साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क उपा रिहा। अगम्म अगम्मड़ी कार कमा, अलक्ख अलक्खणा अलक्ख जगा रिहा। थिर घर मन्दिर इक्क सुहा, निरगुण दीवा बाती इक्क जगा रिहा। कमलापाती वेस वटा, सच सिँघासण आसण ला रिहा। शाहो भूप सुल्तान नाम धरा, रूप रंग ना कोई वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता आपणी कल वरता रिहा। वरते कल हरि करतार, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। खेले खेल सच्ची सरकार, दर घर साचे डेरा लाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, सतिगुर पूरा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सर्ब कल आपे समरथ, सतिगुर

पूरा नाउँ धरांयदा। शब्द अगम्मी एका वथ, आपणी झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी पुरख अकाल, एका रूप समाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। थिर घर वसे सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। करता पुरख करनेहारा, एका एक एकँकारया। आदि जुगादी लए अवतारा, जुग जुग वेस वटा रिहा। शब्द अगम्मी नाम भण्डारा, गुर पूरा आप वरता रिहा। निरगुण मेला अपर अपारा, निरगुण साचा संग निभा ल्या। निरगुण नारी कन्त भतारा, साची सेज हंढा ल्या। निरगुण उपजे सुत्त दुलारा, शब्दी नाउँ धरा ल्या। निरगुण वणज करे वणजारा, एका नामा हट्ट खुल्ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क उपा ल्या। थिर घर साचा उच्च महल्ला, हरि हरि जोत जगांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, निराकार रूप वटांयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। आपणी जोती आपे रला, आपणा दीपक आप जगांयदा। शब्द सुनेहड़ा साचा घल्ला, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। निरगुण नाउँ रक्ख करतार, आपणी कल वरताईआ। परम पुरख प्रभ किरपा धार, आपणी करी आप कुड़माईआ। आप सुहाया बंक दुआर, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, आपणी झोली आप भराईआ। ब्रह्म भिच्छया आपे पा, आपणी दया कमांयदा। आपे देवे साचा नाँ, आपे नाउँ धरांयदा। आपे पकड़णहारा बांह, आपे संग निभांयदा। आपे करे सच न्याँ, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हरि वेखे साचा दर, दर साचा इक्क उपजांयदा। दर घर हरि साचा खोल्ल, सचखण्ड वड्डी वड्याईआ। शब्द अनादी आपे बोल, आपणा राग अलाईआ। अबिनाशी करता तोलणहारा पूरा तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे बंधन आपे पा, आपे वेखे सहिज सुभाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण वड़या, निरगुण जोत जगांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़या, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। निरगुण रूप निरगुण धरया, निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण नारी निरगुण कन्त वरया, निरगुण सुहाग हंढांयदा। निरगुण आपे घाड़ण घड़या, रक्त बूंद ना कोई धरांयदा। निरगुण आपणे पौड़े चढ़या, सच महल्ले आसण लांयदा। निरगुण लड़ आपणा फड़या, आपणा पल्लू नाम बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी अजूनी रहित नाम धरांयदा। अजूनी रहित हरि भगवाना, एका रंग समांयदा। एका वसे सच मकाना, दिस

किसे ना आंयदा। एका गाए सच तराना, रागी नादी भेव ना पांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, शाहो भूप इक्क हो जांयदा। ना कोई दिसे दर दरबाना, ना कोई सीस झुकांयदा। एकँकारा हरि निरँकारा खेले खेल श्री भगवाना, जोती नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे साचा दर, दर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा नूरो नूर समांयदा। आदि निरँजण हरि भगवन्ता, एका रूप समाईआ। खेले खेल आदिन अन्ता, अन्त आदि भेव कोई ना पाईआ। जाणे भेव जुगा जुगन्ता, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला निरगुण दर, वेखणहार आप हो जाईआ। निरगुण निरँजण निरगुण धार, निरगुण मात वड्याईआ। निरगुण मात पित सुत दुलार, पूत सपूता आप अख्वाईआ। निरगुण प्रगट होए आप करतार, आप आपणी रचन रचाईआ। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग रंगांयदा। आपणा देवे आपे वर, आपे दर सुहांयदा। आपे नारी नर, नर नरायण आप आपणी दया कमांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख नाउँ धरांयदा। आपणे दर आपे वर, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साचा वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि अवल्ला, आपणा आप कराया। आपे वस्सया सच महल्ला, नौ दुआर ना कोई बणाया। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, ना कोई रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सोहे आपणे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, एका एक खुल्हांयदा। पुरख अबिनाशी साजण साजा, साची बणत बणांयदा। अन्दर रख्या एका वाजा, अनहद आप वजांयदा। धुरदरगाही साचा राजा, राज राजान आप अख्वांयदा। आपे रचया आपे काजा, आपणा मंगल आपे गांयदा। आपे रक्खे आपणी लाजा, लाजावन्त आप हो जांयदा। आपे चढ़े आपणे ताजा, अस्व घोड़ा आप दौड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल दीन दयाल, आप आपणा लाल उपजांयदा। दीन दयाला गुर गोपाला, हरि हरि नाउँ उपजांयदा। शब्दी सुत्त सुत्त दुलारा, घर घर वेख वखाईआ। फल लगाए आपणे डाल्हा, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। निरगुण सरगुण खेल निराला, आप आपणी कल वरताईआ। आप आपणा तोड़ जंजाला, विष्नूं विश्व रूप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे वेखणहारा आप हो जाईआ। आपे विष्नूं विश्व धार, आप हो जांयदा। एका दूआ कर प्यार, एका नेत्र आप खुल्हांयदा। आपणे रंग रंगे करतार, रंगणहार आप हो जांयदा। एका अमृत भरे भण्डार, साची नाभी कँवल भरांयदा। आपे कँवला कर उज्यार, एका मुख खिलांयदा। एका

रूप सच्ची सरकार, हरि हरि रूप वटांयदा। हरि हरि कर पसार, आपणा अंग कटांयदा। एका शब्द नाद धुन्कार, धुनी नाद आप वजांयदा। चारे कूटां पावे सार, चारे मुख सलांहयदा। गावणहारा गाए आपणी वार, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। चारे वेदां कर त्यार, चार जुग सलांहयदा। शंकर मेटे धुँधूकार, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। एका बख्शे गल विच हार, बाशक तशका गल लटकांयदा। त्रैगुण माया कर त्यार, पंचम मीता पंचम प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग रखांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। मन मति बुध करे ख़बरदार, आप आपणा दर खुल्हांयदा। घर विच घर कर त्यार, मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। संग रलाए पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाउँ रखांयदा। आसा तृष्ना कर प्यार, हउमे हँगता मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। पंज तत्त कर प्रधाना, हरि हरि जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी खेल महाना, घट घट डेरा लांयदा। शब्द अनादि धुन तराना, अनहद रागी राग सुणांयदा। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आपणा मार्ग आपे लाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। मानस मानुख आप उपजाए, आपणी दया कमाईआ। साची सिख्या इक्क समझाए, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। ओअँ रूप आप अख्वाए, सो पुरख निरँजण खेल खिलाईआ। हँ ब्रह्म सर्ब बणाए, जीव जन्त रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपणा नाउँ आपे रक्ख, हरि आपे वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, सतिगुर रूप वटांयदा। आप खुल्हाए जन भगतां अक्ख, नेत्र नैण इक्क दरसांयदा। आपे करे कक्खों लक्ख, आपे हट्टो हट्ट विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटांयदा। आदि जुगादी हरि निरँकारा, आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां देवे नाम भण्डारा, भगती मार्ग इक्क वखांयदा। आत्म शक्ती कर उज्यारा, नूरो नूर उपजांयदा। वेखणहारा डूँघी कन्दर गारा, घट मन्दिर फोल फुलांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, सर सरोवर ताल भरांयदा। अनहद राग उपजाए सच्ची धुन्कारा, पंचम सखीआं मंगल गांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। पंच विकारा मारे नाअरा, नौ दुआरे सर्ब कुरलांयदा। हरिजन मेला सच घर बाहरा, घर साचा इक्क खुल्हांयदा। दस्म दुआरी हो उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। आत्म सेजा खेल अपारा, साची सेजा आप सुहांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, हरिजन साचा मेल मिलांयदा। सुरती शब्द दए हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। भगतन मीता हरि निरँकार, आदि जुगादि अख्वांयदा। देवे नाम शब्द धुन्कार,

७५२
०८

साची सिख्या इक्क समझांयदा। चरन प्रीती सच प्यार, साची रीती मात चलांयदा। हस्त कीटी इक्क दुआर, ऊँच नीच ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साचे अकल कल धार, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणी पावे सार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण सरगुण खेल संसार, लक्ख चुरासी वज्जे वधाईआ। भगत वछल हरि मीत मुरार, जन भगतां लए तराईआ। देवे दरस अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर देवे वर, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। चार जुग चार कुन्ट चार घर, चौथे पद समांयदा। जन भगतां चुक्के आवण जावण डर, एका साचा नाद वजांयदा। अमृत ताल सुहावा देवे भर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। आपणी करनी आपे कर, करनी करता आप कमांयदा। हरिजन साचा घाड़ण घड़, घड़ण भन्नणहार आप अख्वांयदा। अपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ांयदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती नूर डगमगांयदा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, दिस किसे ना आंयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि जोती जोत जगांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आदि निरँजण हो उज्यार, आप आपणा रूप वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, भेव अभेदा भेव चुकांयदा। मरे ना जन्मे विच संसार, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग वेस पुरख सुल्तान, हरि जोती जोत रुशनाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सत्तां दीपां हो प्रधान, एका डंका रिहा वजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। करोड़ तत्तीसा तुटे माण, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाईआ। गण गंधर्ब ना गावण गाण, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सृष्ट सुबाईआ। सृष्ट सुबाई हरि हरि खेल, आदि जुगादि खलांयदा। जन भगतां आपे साचा मेल, धुर मस्तक लेख लखांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेल, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पुरख अबिनाशी लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंका आदि निरँजण, हरि सतिगुर वेस वटाया। पुरख अबिनाशी दर्द दुःख भय भञ्जण, हरिजन साचे लए तराया। गुरमुखां नेत्र पाए नाम अंजन, जगत अन्धेरा दए मिटाया। धुरदरगाही साचा सज्जण, एकँकारा इक्क अख्वाया। अन्तिम आया पर्दे कज्जण, जो जन रसना जिह्वा रिहा गाया। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर

कोई रहिण ना पाया। काल नगारे सिर ते वज्जण, कलिजुग कूके दए दुहाया। राज राजान शाह सुल्तान दर दर घर घर छड्ड छड्ड भज्जण, सिर ताज ना कोई टिकाया। बिन सतिगुर पूरे कोई ना रक्खे लज्जण, नानक गोबिन्द एह समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, हरि हरि वेख वखांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, सतिगुर पूरा वेस वटांयदा। चार कुन्टां दहि दिशा लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां आप वजाए आपणा मृदंग, गगन पतालां वेख वखांयदा। वेखणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। एका अक्खर एका नाउँ देवे वंड, चार वरनां एह समझांयदा। देवणहारा कलिजुग दंड, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। मनमुखां वढ्ढे अन्तिम कंड, गुरमुख साचे गले लगांयदा। नाम निधाना चण्ड प्रचण्ड, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। जन भगतां आत्म अन्तर पाए ठंड, हरि हरि पारब्रह्म मिलांयदा। नार दुहागण कोई ना दिसे रंड, कलिजुग अन्तिम मेट मिटांयदा। सतिजुग साचा चाढ़े चन्द, सच सुच्च इक्क वरतांयदा। पुरख अबिनाशी सद बख्शिंद, बख्शणहारा आप हो जांयदा। गुरमुखां देवे निजानंद, निज घर साचा डेरा लांयदा। हरिजन तजाया मदिरा मास गन्द, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। जो जन गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा लेखे लांयदा। अन्त ना होवे नंगी कंड, सतिगुर पूरा हरि समरथ, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका नाम वजांयदा। हरि डंका नाम अपार, गुर सतिगुर आप वजाईआ। चौथे जुग हो त्यार, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। नानक निरगुण लेखा अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द फतिह बोल जैकार, वाह वाह गुरू जणाईआ। पुरख अकाल हो त्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अकाल मूर्त मूर्त अकाल, अकल कला वरताईआ। अजूनी रहित बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर इलाहीआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका गुर अख्वाईआ। लक्ख चुरासी करे प्यार, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। गुरमुखां करे ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकार, हउमे हँगता दए मिटाईआ। साची संगता कर प्यार, एका रंगता नाम चढ़ाईआ। रंगे नाम अपर अपार, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण रूप शाहो भूप, सति सरूप आप अख्वाईआ। सति सरूप सतिगुर मीता, हरि हरि नाउँ रखांयदा। बैठा रहे इक्क अतीता, एका घर वसांयदा। ना कोई मन्दिर देहुरा गुरदुआर मसीता, शिवदुआला मट्ठ ना कोई बणांयदा। निरगुण वसे धाम अनडीठा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। थिर घर वासी जाणे आपणी रीता, जुग जुग आपणी धार बणांयदा। आपे हस्त आपे कीटा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपे

होए कौड़ा रीठा, आपे मिट्ठा रस भरांयदा। आपे होए पतित पुनीता, पतित पापी आप तरांयदा। आपे वेद शास्त्र पुराण आपे गाए गीता, आपे सिख्या सिक्ख समझांयदा। आपे अञ्जील कुराना बहि बहि परखे नीता, तीस बतीस आप अलांयदा। आपे खाणी बाणी ठंडा सीता, आपे गुर गुर शब्द चलांयदा। आपे हरिजन वस्सया अन्दर चीता, हरि मन्दिर डेरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। हरि मन्दिर हर काया गढ़, हरि जू बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी अन्दर वड़, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए फड़, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, आप आपणा रूप वटाईआ। चौथे पौड़े आपे चढ़, पंज तत्त करे जुदाईआ। सुरत सवाणी लए फड़, शब्दी बंध बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे शब्द विचोला, गुर गुर आप उपजांयदा। आपे गाए आपणा ढोला, सोहँ नाउँ रखांयदा। नानक निरगुण बणया तोला, तेरां तेरां धार चलांयदा। कलिजुग अन्तिम बदलया चोला, निहकलंका नाउँ रखांयदा। ना कोई जाणे कला सोला, अकल कला आप हो जांयदा। घट घट अन्दर आपे मौला, मौला रूप वटांयदा। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवला, अमृत आत्म जाम भरांयदा। देवे वड्याई उप्पर धवला, ध्रू प्रहलाद आप तरांयदा। आपे होए साँवल सँवला, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए पुरख अबिनाशा, वड वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा जगत तमाशा, जोती नूर करे रुशनाईआ। मण्डल मण्डप लोआं पुरीआं पावे रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन पतालां डेरा लाईआ। गुरमुखां हिरदे अन्दर रक्खे वासा, निरगुण जोती नूर करे रुशनाईआ। आदि जुगादी दासन दासा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जिस जन गाया रसन स्वासा, पवण पवण समाईआ। कलिजुग अन्तिम ना होए निरासा, सतिगुर पूरा वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तुले तोल ना कोई तोला मासा, रत्ती नाम ना कोई टिकाईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां काया भाण्डा दिसे ख़ाली कासा, अमृत धार ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका एका डंक वजाईआ। निहकलंक साचा डंक, हरि शब्दी शब्द वजांयदा। आप सुहाए साचा बंक, घर मन्दिर डेरा लांयदा। गुरमुख उपजाए जीव जन जनक, जन जननी लेखे लांयदा। जोती शब्दी लाए तनक, तार निराली आप हिलांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी जोत जगांयदा। खेले खेल बार अनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा।

जगत जंजीरी लोहा सार, सतिगुर डोरी आप बणाईआ। लक्ख चुरासी मारे मार, चारों कुन्ट बंधन पाईआ। वेखणहारा आर पार किनार, अद्धविचकार बैठा सच मलाहीआ। नौ सत पावे सार, हरि बन पर्बत खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बंधन आपे वेख वखाईआ। जगत जंजीरी हथ्थ करतार, चारों कुन्ट फिरांयदा। पीर फ़कीरां मारे मार, दस्तगीर ना कोई छुडांयदा। शाह सुल्तान करे ख़बरदार, राज राजाना ख़ाक मिलांयदा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, मनमति सर्ब कुरलांयदा। कूड़ी क्रिया रहे निवार, जूठ झूठ जगत डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरतांयदा। जगत जंजीरी जगत संगल, सतिगुर हथ्थ उठांयदा। गुरमुख एका नाउँ गायण मंगल, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा गवर्धन उठाए एका उंगल, गुरमुखां भार वंडांयदा। बीस बीसा हरि जगदीसा जगत मेटे लक्ख चुरासी चुगल निन्दक, निन्दया ना कोई सुणांयदा। ना कोई खान ना कोई मुगल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डोरी बंध बंधांयदा। एका डोरी बन्ने चोर, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। वेखणहारा अन्ध घोर, दिस किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, नीला नीली धारों पार कराईआ। कलिजुग अन्तर मारे पहला पौड़, चौथे जुग डेरा ढाहीआ। रूप वटाए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता नाउँ रखाईआ। दो जहानां रिहा दौड़, आप आपणा वेस वटाईआ। जिस जन आत्म अन्तर लग्गी औड़, अमृत मेघ बरस ठंडी ठार दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डोरी हथ्थ करतार, लक्ख चुरासी अद्धविचकार, चारों कुन्ट आपणा राक आपे रिहा फिराईआ। साची डोरी हथ्थ फड़, चार कुन्ट उठ धाया। सृष्ट सबाई नाल रिहा लड़, दिस किसे ना आया। कलिजुग तोड़े किला हँकारी गढ़, नाम खण्डा इक्क उठाया। सन्त सुहेले लए फड़, अन्दर मन्दिर फेरा पाया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत जोत रुशनाया। साचे पौड़े आपे चढ़, आप आपणा कुण्डा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण पृथ्मी आकाशन फेरा पाया। पृथ्मी आकाश खेल खिला, नौ खण्ड खोज खुजाईआ। वसणहारा जलां थलां, उच्चे टिल्ले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पर्बत फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर वल छला, वल छल धारी भेव ना राईआ। जन सन्तां मेटे दूई द्वैती सला, सांतक सति सति वरताईआ। शब्द सुनेहड़ा आपणा आप आपे घल्ला, आपे बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डोरी एका तन्द, आपणे हथ्थ खेले खेल पुरख समरथ, गुरमुख साजण लए रक्ख, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर फोल, हरिजन आप जगांयदा। सतिगुर साचे कंडे तोल, एका कंडे नाम चढ़ांयदा।

आपणी धारन आपे बोल, आपणा राग सुणांयदा। हरिजन वसे सदा कोल, घर साचे मेल मिलांयदा। बज़र कपाटी पर्दा खोल्, आपणा दरस दिखांयदा। मृदंगा वजाए अनहद ढोल, राग अनादी आपे गांयदा। हरिजन चरन प्रीती रिहा घोल, सेवक सेवा लेखे लांयदा। मनमुख जीव रहे अनभोल, हरि का भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, दर साचा इक्क सुहांयदा। साची वस्त आई भेटा, हरि हरि वेख वखांयदा। आप उपजाया नादी शब्द सुत्त जेठा, जेठा रुत्त सुहांयदा। आपे रक्खे आपणी साया हेठा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे मेटे वड वड सेठा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे जीउ पिण्ड पिण्ड तन काचे, अन्दर मन्दिर डेरा लांयदा। गुरमुख वेख आपणी नैणी, हरि संगल जगत कटांयदा। उप्पर रक्खी साची छैणी, नाम हथौड़ा उप्पर लांयदा। साध संगत सच करनी बहिणी, साची सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तेज़ कटार, खड़ग खण्डा कर त्यार, तिख़ी दोवें धार रखांयदा। तिक्खी धार आपे रक्ख, आपे वार करांयदा। आपे सन्तां मार्ग दस्स, आपे सेवा लांयदा। आपे मेला करे हस्स हस्स, आपे मुख छुपांयदा। आपे तीर निराला मारे कस, अणयाला तीर आप चलांयदा। आपे हिरदे अन्दर जाए वस, आप आपणी दया कमांयदा। आपे कोटन कोटि प्रकाश करे रवि ससि, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आपे दरस दखाए नस्स नस्स, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपे जाणे जणाए हरिजन तेरा जस, जस वेद पुराणी आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी हथ्थीं आपे गंढे आपे कट्ट वखांयदा। कट्टणहार हरि स्वामी, एका एक एकँकारया। पारब्रह्म पुरख सुल्तानी, निहकलंक नरायण नर अवतारया। घट घट अन्तर अन्तरजामी, जोती नूरो नूर उज्यारया। आपे जाणे आपणी बाणी, आपणा शब्द आप सुणा रिहा। हरि की महिमा अकथ कहाणी, रसना जिह्वा ना कोई गा रिहा। गुरमुख विरला पाए पद निरबाणी, निर्भय रूप विच समा रिहा। सर्ब जीआं दा जाण जाणी, जानणहार आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम संगल, जामा धार वार मंगल, पंचम पंचम मोह कटा रिहा। पंचम नाता देवे कट्ट, हरि सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका रंग रंगाईआ। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, चौदां तबकां फेरा पाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सम्मत सतारां तुटणा हठ, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। घर बार तजना नट्ठ नट्ठ, फिरना वाहो दाहीआ। प्रभ गेड़ण आया उलटी लट्ठ, ना सके कोई बचाईआ। हरिसंगत तेरा इक्क इक्ट्ठ, दर एका सोभा पाईआ । रक्खे पति कमलापति, पति पतिवन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

७५७ ०८

तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेले गुरु गुर चेले, धाम अवल्ला इक्क दरसाईआ। गुर चेला मेला धुरदरगाह, हरि मन्दिर आप खुल्हाया। पुरख अबिनाशी देवे सति सलाह, सतिगुर मार्ग एका लाया। सोहँ अक्खर नाम जपा, सो पुरख निरँजण वेख वखाया। जगत हरि हरि गया समा, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। अलक्ख अगोचर अगम्म बेपरवाह, अगाध बोध भेव खुल्हाया। जन भगतां कट्टे जम का फाह, मनमुखां संगल आपणे हथ्थ गल पुवाया। ना कोई सहाई पुत्तर माँ, भैण भाई धी जवाई ना सके कोई बचाया। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा सद रक्खे ठंडी छाँ, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्त्र आप दृढ़ाया। हाहे उप्पर टिप्पी, एका मुख रखाईआ। चार वरनां साची सिक्खी, सतिगुर पूरा आप बणाईआ। भेव ना जाणे कोई मुनी रिखी, पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के सर्ब लोकाईआ। वालों निक्की तिक्खी खण्डयों तिक्खी, गुर गोबिन्द लेख लिखाईआ। नर नरायण नेत्र पेखी, शाह सुल्तान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। एका कंगण एका धार, एका रूप वटांयदा। पंचम अक्खर उप्पर हो त्यार, हँ ब्रह्म समांयदा। एका पत्थर पर्दा भार, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। दूई द्वैती अद्धविचकार, माया मोह वखांयदा। शरअ शरीअत मारे मार, हक्क हकीकत मुख छुपांयदा। लाशरीक बेऐब परवरदिगार, ख़ालक ख़लक आप अख्वांयदा। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। अल्ला राणी कर प्यार, ऐनलहक्क वेख वखांयदा। एका कंगन तन शृंगार, भूषन बस्त्र आप सुहांयदा। मंगी मंग धुर दरबार, संग मुहम्मद चार यार अग्गे झोली डांहयदा। धर्म राए ख़बरदार, लाड़ी मौत करे त्यार, नेत्र नैणां रिहा शृंगार, धर्म सपुत्री एह समझांयदा। लहिदी दिशा हो त्यार, पाई हिस विच तेरा सहाई परवरदिगार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। एका कंगन हथ्थ करतार, करे सगन जीव गंवार, मन मति होए नार विभचार, कन्त सुहाग ना कोई हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका कंगन लाए अंगण, गुरमुख मंग साची मंगण, साची भिच्छया झोली पांयदा।

इक्क एका एक एकँकार, इक्क इकल्ला हरि अख्वाईआ। दूजी बन्न्हे कुदरत धार, कादर करते वड वड्याईआ। तीजा नेत्र नैण उग्घाड़, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईआ। चौथे घर मीत मुरार, बैठा आसण लाईआ। पंचम सोहे दर दरबार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई महल्ल मुनार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, आदि जुगादि वेख वखाईआ। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध ना कोई रखाईआ।

नौ दुआरे जगत दुआर, नौ रस फीके दर फिराईआ। दस्म दुआरी जोत उज्यार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। जन भगतां देवे नाम अधार, ऊरध कमल बिगसाईआ। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सच सरोवर इक्क वखाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाईआ। शब्द अनादि सची धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। आत्म सेजा कर प्यार, गुरमुख नारी कन्त प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा दूजा एका एका भेव चुकाईआ। एका दूजा चुक्के भेव हरिजन हरि हरि आप चुकांयदा। तीजे नेत्र करे सच न्याउँ, लोचण नैण खुल्हांयदा। चौथे पद पकड़े बाहों, गुरमुख साजण मेल मिलांयदा। पंचम वेखे थाँईं थाउँ, थान थनंतर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगा जुगन्ता खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। जुग जुग चलाए साचा रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। शब्द कहाणी अकथना अकथ, आप आपणी आप दृढ़ाया। सर्ब कला आपे समरथ, एकँकारा नाउँ धराया। आपे जाणे आपणी वथ्थ, नाम भण्डारा हरि वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, नाम निधाना एका पाया। नाम निधान वस्त अनमोल, हरि हरि आप उपजांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, आपे वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी आपे बोल, आपे राग अल्हांयदा। त्रैगुण माया करे चोल, पंज तत्त वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर रिहा बोल, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। त्रैगुण माया तत्त पसारा, हरि हरि रचन रचाईआ। पंचम तत्त कर न्यारा, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। काया मन्दिर महल्ल मुनारा, उच्च अटल वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरी पावे सारा, घर मेला सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे लिखणहारा, दूसर भेव कोई ना पाईआ। नेत्र नैण होए उज्यारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। आपे होए अन्ध अँध्यारा, जोत नैण आप अख्वाईआ। आपे करे रेख त्यारा, आपे हथ्थो हथ्थ वखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जानणहारा, पंडत पांधा थक्का मांदा भेव अभेदा अछल अछेदा, चारे वेदां दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रेखा, गुरमुख कढ्ढे भरम भुलेखा, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। जगत नेत्र होए मन्द, माया ममता मोह चुकांयदा। काया कप्पड़ वेखे बन्द, बन्दी बंधन बन्द बंधांयदा। कलिजुग आयू चुकया पन्ध, साचा मार्ग ना कोई वखांयदा। जीवां जन्तां साधां सन्तां भुलाया आत्म अनन्द, प्रमानंद ना कोई समांयदा। जूठ झूठ रसना लाया गन्द, सच सुच्च ना कोई दृढ़ांयदा। सतिगुर घर ना चढ़या चन्द, हथ्थ दी रेखा ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अन्दर बैठा वड़, ढूँघी कन्दर डेरा लांयदा।

हर घट अन्दर हरि हरि वड़या, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणी रेखा आपे पढ़या, जन भगतां करे पढ़ाईआ। मनमुख जीव हउमे हँगता सड़या, काम क्रोध हल्काईआ। पंज तत्त मुनारा बणया गढ़या, गढ़ हँकारी दए दुहाईआ। जगत तृष्ना अन्दर सड़या, सांतक सति ना कोई कराईआ। सतिगुर सरनाई जो जन पड़या, रेख मस्तक लेख दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जानणहारा घर घर, घर घर विच बैठा आसण लाईआ। घर महल्ला घर मुनारा, घर साचा वेस वटांयदा। घर इकल्ला जोत निरँकारा, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। घर शब्द घर बुलारा, घर धुन अनादी नाद वजांयदा। घर गुरू घर गुरसिख प्यारा, घर गोबिन्द वेख वखांयदा। घर नर हरि हरी अवतारा, हरि जू हर घर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा लेखा, लिखणहार आप अख्वांयदा। हरि का लेखा धुर दी रेख, दोए नैण पढ़न ना जाईआ। आत्म अन्तर जो जन रिहा वेख, देवे दरस श्री भगवानया। दर दुआर जन भगतां होए दर दरवेश, पारब्रह्म पुरख सुल्तानया। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा सेव कमाईआ। हरिभगतां करे आप अदेस, जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। जिस जन सतिगुर पूरा पूर्ब लहिणा मस्तक रेखा लए वेख, देवे नाम निधाना साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, कर्म धर्म जन्म जन्म कर्म धर्म, दोवें दर करे परवानीआ।

✪ ४ सावण २०१६ बिक्रमी मेहर सिँघ दे घर जगराउँ शहर ✪

निरगुण निराकार निरँकार, पारब्रह्म हरि पुरख अबिनाशया। जोती नूर नूर उज्यार, जागरत जोत खेल तमास्सया। परम पुरख पुरख करतार, आदि जुगादी एका एक प्रकाशया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर मन्दिर रक्खे आपे वास्सया। अबिनाशी करता हरि भगवन्त, आदि अन्त वड वड्याईआ। जोती नूर जुगा जुगन्त, निरगुण नूर डगमगाईआ। आप बणाए आपणी बणत, पारब्रह्म पुरख अख्वाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित आप अख्वाईआ। जूनी रहित पुरख अकाल, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण वसे सच सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा बंक सुहाईआ। दीपक जोती बाती एका बाल, आपणी आप करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण खेल खिलाईआ। आदि निरँजण पुरख बिधाता, पारब्रह्म अख्वांयदा। एका पिता एका माता, पूत सपूता इक्क उपांयदा। एका देवणहारा दाता, साची दात झोली पांयदा। एका

पूजा एका पाठा, एका गाथ सुणांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। एका मन्दिर एका हाटा, एका घर खुल्हांयदा। एका दीपक जोत लिलाटा, नूर नूर डगमगांयदा। इक्क सिँघासण साची खाटा, पुरख अबिनाशी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप सुहांयदा। अजूनी रहित पुरख करतारा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला धराईआ। निरगुण रूप अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। जुगा जुगन्तर पावे सारा, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, भेव कोए ना पांयदा। आपे वसे सच दुआर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग निभांयदा। रवि ससि ना कोई सतार, मण्डल मण्डप ना कोई सुहांयदा। पृथ्मी आकाश ना कोई अधार, जल बिम्ब ना कोई जणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई प्यार, करोड़ तेतीसा ना रचन रचांयदा। त्रैगुण माया ना कोई प्यार, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। लक्ख चुरासी ना भरे भण्डार, ना कोई हट्टो हट्ट विकांयदा। जल थल ना कोई धार, समुंद सागर ना कोई वखांयदा। जंगल जूह ना कोई पहाड़, डूँघी कन्दर ना कोई उपांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई कन्त सुहाग हंढांयदा। ना कोई मन्दिर गुरूदुआर, चार दुआर ना कोई उपांयदा। ना कोई सन्त साध करे प्यार, रसना जिह्वा ना कोई गांयदा। राग नाद ना कोई धार, ताल तलवाड़ा ना कोई वजांयदा। ना कोई घाड़ण घड़े अपर अपार, ना कोई रचन रचांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप आप अख्वांयदा। जोती जोत अगम्म अपार, नूरो नूर डगमगांयदा। थिर घर वसे हरि दरबार, धुर दरबारा आप खुल्हांयदा। अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार, आप आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। निरगुण दाता आदि निरँजण, आदि अन्त श्री भगवानया। सखा सहेला आपे बणे आपणा सज्जण, आप करे आपणी प्रितपालया। आपणे दर कराए साचा मजन, आपे गुरू गुरु गुर चेलया। आपे होया पर्दे कज्जण, आपे वसे धाम नवेलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त अचरज खेल आपे खेलया। अचरज खेल हरि खिलंदड़ा, सतिगुर रूप वड्डी वड्याईआ। निरगुण जोती जोत जुगन्दड़ा, दीवा बाती करे रुशनाईआ। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। शब्द सिँघासण इक्क विछंदड़ा, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। आप आपणा वेख वखंदड़ा, ना कोई दूसर दस्से सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणा कर पसार, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग करता हरि

७६१ ०८

करनेहारा, परम पुरख अख्वांयदा। त्रैगुण माया मीत मुरारा, त्रै त्रै वेस वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, साचा मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी कर प्यारा, घट घट आसण लांयदा। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, जोती जोत मेल मिलांयदा। शब्द अगम्मी सच्ची धुन्कारा, नादी नाद वजांयदा। भगतन मीता कर प्यारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। देवे दरस दरस अपारा, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त, आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, लोकमात करे रुशनाईआ। सरगुण रूप हो प्रतक्ख, गुर सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। हरिजन साचे करे वक्ख, हरिजन साचा फोल फुलाईआ। देवे नाम साची वथ्थ, आत्म अन्तर आप टिकाईआ। पल्ले बन्ने साची गट्ठ, सच सुच्च झोली पाईआ। इक्क वखाए तीर्थ तट्ट, सर सरोवर काया हट्ट आप खुल्हाईआ। अमृत आत्म देवे झट्ट, निझर झिरना आप झिराईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, आप आपणी दया कमाईआ। शब्द अगम्मी लाए सट्ट, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। भाग लगाए काया मट्ट, डूँघी कन्दर जोत रुशनाईआ। जिस जन उप्पर जाए तुठ, सतिगुर पूरा हरि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाईआ। हरिजन मेला धुर दरगाह, हरि हरि मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, गुर गुर नाउँ धरांयदा। सतिगुर दाता बेपरवाह, दिस किसे ना आंयदा। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, फड़ फड़ बाहों आप उठांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणांयदा। वसणहारा नगर ग्रां, काया खेड़ा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। हरि जी हरि हरि वेस अवल्ला, जुग जुग आप करांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, लोकमात फेरा पांयदा। आपे करे वल छला, वल छल धारी नाउँ धरांयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, जुग जुग शब्द सुणांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी किरत कमांयदा। शब्द सुनेहड़ा धुर दी बाणी, हरि साचे शब्द जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कर पछाणी, पूरन जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग वेखे कलिजुग राणी, अञ्जील कुरानी भेव खुल्हाईआ। नाता तुट्टा वेद पुराणी, बावन अक्खरी ना कोई पढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तानी, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। खेले खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी दिसे फानी, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि हरि वेख, आपणी दया कमांयदा। नानक सरगुण लिखणहारा लेख, नानक अंग समांयदा। लेखा चुका औलीआ पीर शेख़, दस्तगीर ना कोए बचांयदा। दाता दानी दस दस्मेश, एका जोती रूप वटांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल ना कोई मुच्छ

दाढ़ी ना केस, मूंड मुंडाया ना कोई दिसांयदा। अलख निरँजण जोत प्रवेस, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग आप हंढांयदा। आपे वेखे ब्रह्मा विष्न महेष, शिव शंकर आप अख्वांयदा। आपे होए रिखी केस, गवर्धनधारी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी हरि ब्रह्मादी, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस धर, हरि साची जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण अन्दर वड़, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। ना कोई ससि ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई जणाईआ। उच्च महल्ले गया चढ़, हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुख विरले आपे लए फड़, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, गुरमुखां करे नाम पढ़ाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, दो जहानां विछड़ ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी उखेड़े जड़, नौ खण्ड सत्तां दीपां फेरा पाईआ। आपणे भाण्डे आपे लए घड़, भन्नणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। समरथ पुरख पुरख गुर अवतारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, आप आपणी कल वरतांयदा। नाम खड़ग खण्डा कटारा, तिक्खी धारा वेख वखांयदा। राज राजाना शाह सुल्ताना करे ख़बरदारा, राउ रंकां आप उठांयदा। साधां सन्तां दए हुलारा, जीवां जन्तां आप उठांयदा। शब्द डंका अपर अपारा, निरगुण आपणा ताल वजांयदा। प्रगट हो विच संसारा, निहकलंक नाउँ रखांयदा। माँ पित ना कोई प्यारा, पुत्तर धीआं ना कोई उपांयदा। जोत सरूपी इक्क जैकारा, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप अनूप सच्ची सरकार, हरि सतिगुर आप अख्वाईआ। प्रगट हो विच संसार, अकल कलधार वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, घट घट बैठा बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। कागद कलम लिख लिख गए हार, गुर पीर साध सन्त देण गवाहीआ। हरि का भेव ना पाए कोए विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग समाईआ। निरगुण पुरख अकाल, एका एकँकारया। सरगुण साचा लाल, गुर गुर मेल मिला ल्या। शब्द विचोला बण दलाल, आपणा खेल खिला ल्या। संग रखाए काल महांकाल, आप आपणा जोड़ जुड़ा ल्या। दरगाह साची वज्जे ताल, दो जहानां आप सुणा ल्या। लोआं पुरीआं सुरत संभाल, ब्रह्मा विष्नूं शिव उठा ल्या। सर सरोवर मार उछाल, माणक मोती इक्क उछालया। गुरमुख साचे आपे भाल, आप आपणे दर बुला ल्या। लेखा चुक्के शाह कंगाल, राज राजान ना कोई वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, काया मन्दिर डूँघी कन्दर आत्म ताकी लहिणा देणा देवे बाकी, दूई द्वैती पर्दा आपे लाह ल्या।

✪ ४ सावण २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे घर पिण्ड सदा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

पुरख अबिनाश हरि निरँकार, आदि जुगादी एक एकँकारया। पारब्रह्म प्रभ पुरख करतार, जोती नूर डगमगा रिहा। इक्क इकल्ला कर पसार, अकल कलधारी नाउँ रखा ल्या। महल्ल अटल उच्च मिनार, थिर घर साचे आसण ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला ल्या। पुरख अबिनाशी हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। आदि निरँजण भेव अपारा, भेव कोई ना पांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, आपणा नाउँ रखांयदा। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, साची कल वरतांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वासी पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला सच महल्ला घर साचा आप सुहांयदा। घर साचा सज्जण, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी दर्द दु:ख भय भंजन, एका एकँकारा नाउँ धराईआ। आपे सन्त मीत मुरारा सज्जण, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादी इक्क मलाह, एका बेड़ा रिहा चलाईआ। एका हरि नर अवतार, एका जोती जोत जगांयदा। एका प्रभ गुर करतार, रूप अनूप सति सरूप वटांयदा। एका लोआं पुरीआं कर उज्यार, ब्रह्मण्ड खण्डां आप सुहांयदा। एका ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, आप आपणी दया कमांयदा। एका पंज तत्त खेले खेल न्यार, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता एकँकार, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, अकल कला अख्वांयदा। जोती नूर श्री भगवन्ता, रूप रंग ना कोई वखांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप बणाए आपणी बणता, आपणी रचन आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन इक्क इकल्ला डेरा लांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादि समांयदा। सतिगुर पूरा नर निरँकार, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आपे सुहाए बंक दुआर, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। निरगुण बाती दीपक कर उज्यार, आदि जुगादी डगमगांयदा। कमलापाती मीत मुरार, परम पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दर सुहांयदा। एका दर इक्क दरवाज़ा, थिर घर साचे आप उपाया,

वेखणहारा ग़रीब निवाज़ा, दूसर संग ना कोए रखाया। आपे रचया आपणा काजा, आप आपणा सगन मनाया। आपे मारे आपणी वाजा, शब्द अगम्मी आप उपाया। थिर घर साचे साजण साजा, चार दिवार ना कोई बणाया। शाहो भूप वड राजन राजा, शाह सुल्तान इक्क अख्वाया। दो जहानां फिरे भाजा, लोआं पुरीआं फेरा पाया। अस्व घोड़ा रक्खे ताजा, शब्द शब्दी रिहा दौड़ाया। आदि जुगादि आप आपणी रक्खे लाजा, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, घर साचे बैठा आसण लाया। घर साचा सोहे बंक सच्ची धर्मसाल, हरि साची जोत जगाईआ। दीपक दीवा एका बाल, एका नूर करे रुशनाईआ। एका गगन साचा थाल, हरि साचा आप टिकाईआ। एका चले अवल्लड़ी चाल, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, नेहचल धाम उच्च महल्ला पुरख अबनाशी इक्क इकल्ला एकँकारा नर निरँकारा, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। निरगुण दाता सति सरूप, हरि साचा सच अख्वांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, ना कोई वेख वखांयदा। ना कोई माता ना कोई पूत, ना कोई पिता नाउँ धरांयदा। ना कोई ताणा पेटा ना कोई सूत, ना कोई बाडी बणत बणांयदा। वसणहारा चारे कूट, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। आपणी करनी करता आपे जाए तुठ, आप आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर जाए रुठ, आप आपणा मूंह भुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त साची तूरत, नाद अनादी नाद वजांयदा। एका नाद शब्द ब्रह्मादि, हरि साचा आप वजांयदा। शब्द जणाई बोध अगाध, भेव अभेदा भेव खुल्लांयदा। आपे देवे आपणी दाद, आपणी झोली आप भरांयदा। आपणी वस्त आपे लाध, आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा हरि दुआर, हरि जोती जोत जगांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यार, परवरदिगार आप अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आदि जुगादी एका कार, जुग करता आप करांयदा। पुरख पुरखोत्तम साची धार, पारब्रह्म इक्क इक्क वखांयदा। मरे ना जन्मे विच संसार, एका रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती नूर दीप उजाला, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। साचा साची वसे धर्मसाला, घर साचा इक्क सुहाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, धन माला आप वखाईआ। आपे होए आपणा आप दलाला, आपणी वस्त आप विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा साचा घर, हरि साची जोत जगांयदा। आपणा देवे आपे वर, आप आपणा सगन मनांयदा। आपणी करनी आपे कर, हरि

करता वेख वखांयदा। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण आप हो जांयदा। आपणी जोती अन्दर आपे जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। आपणी गोदी आपे हरी कर, बाल निधाना आप उपजांयदा। शब्द शब्दी वसे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत दुलारा एकँकारा, एका नाम उपजांयदा। सुत्त दुलारा हरि बलवान, आपणा आप उपजाईआ। अगम्म अगम्मी धुर फ़रमान, साचा रिहा सुणाईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। रवि ससि ना कोई निशान, मण्डल मण्डप ना कोई वखाईआ। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोई बणाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई प्रधान, पंज तत्त ना करे कुड़माईआ। करोड़ तेतीस ना कोई वखाण, गण गंधर्ब ना कोए उपाईआ। हत्थ त्रशूल ना कोई उठाण, ब्रह्मा चारे वेद ना रिहा वखान, चारे मुख चार कुन्ट खुल्हाईआ। विष्नूं बाशक सेजा ना होए प्रधान, सांगोपांग ना कोई हंढाईआ। ना कोई जोद्धा सूरबीर बली बलवान, शाह सुल्तान ना कोई दिसाईआ। ना कोई रंक ना राजान, ऊँच नीच ना वड वड्याईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। तीर्थ तट अठसठ ना कोई इशनान, गंगा गोदावरी ना कोई नुहाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, रास मण्डल ना कोई नचाईआ। ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई लंका गढ़ तुड़ाईआ। ना कोई पूजा वेद पाठ पुराण, शास्त्र सिमरत ना कोई सुणाईआ। ना कोई साध सन्त करे ज्ञान, आत्म ध्यान ना कोई लगाईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमान, ना कोई दीसे रथ रथवाहीआ। ना कोई ईसा मूसा दिसे निशान, अञ्जील कुरान ना कोई सलाहीआ। इक्क इकल्ला एकँकार श्री भगवान, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर लोकमात वेखे मार ध्यान, आपणी रचन आप रचाईआ। लक्ख चुरासी कर सन्तान, ब्रह्मे झोली पाईआ। पंज तत्त जीआ दान, आत्म ब्रह्म वंड वंडाईआ। मन मति बुध कर प्रधान, निरगुण विच टिकाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमान, दिवस रैण सुणाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजाण, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेलणहार पुरख समरथा, अकल कला अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणी गाथा, आपणा नाउँ धरांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, इष्ट देव आप हो जांयदा। आपे तीर्थ आपे ताटा, सर सरोवर आप नुहांयदा। आपे चौदां लोकां खोल्हे ताका, चौदां हट्टां वेख वखांयदा। आपे लोआं पुरीआं बणे साका, साकी साचा जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल हरि खिलंदड़ा, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण मेल मिलंदड़ा, घर साचे वज्जे वधाईआ। सतिगुर आपणा रूप वटंदड़ा, गुर गुर नाउँ धराईआ। गुरमुख साचे वेख वखंदड़ा, काया मन्दिर खोज

खुजाईआ। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, मेलणहार बेपरवाहीआ। गुरमुखां बज़र कपाटी तोड़े जन्दरा, शब्द अगम्मी सट्ट लगाईआ। जूठा झूठा मेटे पन्धड़ा, पंच विकारा दर दुरकाईआ। अनहद साचा राग सुणाए छन्दड़ा, धुन अनादी आप उपजाईआ। अमृत साचा जाम आप प्यंदड़ा, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलंदड़ा, गुर पूरे वड वड्याईआ। दो जहानी पन्ध मुकंदड़ा, जिस जन बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी गेड़ कटंदड़ा, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। गुर चेले एका रंग रगन्दड़ा, रंगे रंग उतर कदे ना जाईआ। जुग जुग आपणा वेस वटंदड़ा, भेखाधारी भेख धराईआ। शाहो भूप आप अख्वंदड़ा, सच सुल्तान हरि रघुराईआ। आपणा मार्ग आप चलंदड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे आपणी थाँईंआ। कलिजुग कूड़ा कूड़े धन्दे लगन्दड़ा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। जीव जन्त भागां मन्दड़ा, पंज तत्त होया हल्काईआ। नेत्र नैण आत्म अन्धड़ा, लोचण नैण ना कोई खुल्हाईआ। मदिरा मासी पापी गन्दड़ा, पाया वर ना हरि साचा माहीआ। साची डोली ना कोई चढ़ंदड़ा, बण कुहार ना कोई उठाईआ। राए धर्म राह तकंदड़ा, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। गुर गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बख्शंदड़ा, गुर नानक मेला सहिज सुभाईआ। जो जन चरन प्रीती साची रीती मात रखंदड़ा, पतित पुनीती वेख वखाईआ। हस्त कीटी एका धाम सुहंदड़ा, राज राजान शाह सुल्तान राउ रंक दुआर बंक एका घर वखाईआ। जन भगतां होए सद बख्शंदड़ा, बख्शणहार आप हो जाईआ। अन्तिम आत्म देवे निजा नंदड़ा, निज आत्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर जुग जुग लग्गी वेखे बसन्तर, चार कुन्ट दहि दिशा निरगुण आपणी फेरी पाईआ। निरगुण रूप पुरख अकाल, एका एक एकँकारया। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। संग रखाए काल महांकाल, दर दुआरे सेव लगा रिहा। भगत वछल दीन कृपाल, दीनां नाथां मेल मिला रिहा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना इक्क वखा रिहा। लक्ख चुरासी विच्चों विरोले हरिजन साचे लाल, नाम मुधाणा एका पा ल्या। गुर शब्द विचोला बण दलाल, गुरमुख साचे मेल मिला ल्या। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत मेवा इक्क खुवा ल्या। सर सरोवर भरया ताल, तीर्थ तट इक्क वखा ल्या। तोड़णहारा जगत जंजाल, लोकमात वेस वटा ल्या। सन्त सुहेले गुरू गुरु गुर चेले सतिगुर पूरा आपे भाल, आप आपणी सेव कमा रिहा। वेले अन्त कन्त भगवन्त सन्त करे प्रितपाल, गुरमुख सज्जण मीत आप तरा ल्या। जीव जन्त होए कंगाल, हरि का नाम साचा वणज हट्ट ना किसे विका ल्या। पंज तत्त काया माटी दिसे खाल, रत्ती नाम ना कोई टिका ल्या। गुरमुख विरले घालण रहे घाल, रसना जिह्वा हरि गुण गा ल्या। आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां करे आप संभाल, आपणी

गोदी आप उठा ल्या। कलिजुग कूड़ा वजाए ताल, डंका डौरू हथ्थ उठा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा वेस वटा ल्या। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक करांयदा। वसणहारा जलां थलां, हर घट डेरा आपे लांयदा। सच सिँघासण आसण मल्ला, पुरख अबिनाशण खेल खिलांयदा। आपे करे आपणा वल छला, बल बावन आप छलांयदा। त्रेता द्वापर करया हल्ला, आपणा बल धरांयदा। कलिजुग अन्तिम फड़या पल्ला, सोहँ खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती शब्दी आपे रला, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्द सरूपी बण मलाह, कलिजुग अन्तिम दस्से राह, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। कलिजुग तेरी हक्क हकीकत, हरि साचा वेख वखांयदा । आपे होया लाशरीकत, शरअ शरीअत मूल चुकांयदा। नबी रसूला जाणे अकीदत, आलम उलमा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका कलमा नाम अमाम, कायनात प्याए साचा जाम, पीर दस्तगीर शाह हकीर, एका रंग रंगांयदा। एका रंग रंग करतारा, आपणा आप चढ़ांयदा। नूर इलाही बेऐब परवरदिगारा, मुकामे हक्क वखाए इक्क ऐनलहक्क नाअरा, दर साचा आप लगांयदा। चौदां तबकां दए हुलारा, चौदां चौदां वेख वखांयदा। मक्का काअबा खेल अपारा, शाह नवाबा फेरा पांयदा। हक्क जनाबा हो न्यारा, आपणी वंडण आप वंडांयदा। अग़ैब अग़ैबी मारे मारा, अज़मतो कस्मतो भेव कोई ना पांयदा। ख़ालक ख़लक करे प्यारा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। एका कलमा कर त्यारा, एका अल्फी अल्फ पहनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी रचन रचांयदा। राम रामा हरि अवतार, आपणी कल वरतांयदा। राधा कृष्न करे प्यार, जै जै मुख सलांहयदा। आदि शक्ती हो त्यार, दिवस रैण डगमगांयदा। नमो देव निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। अकाल मूर्त खेल अपार, अजूनी रहित वेस वटांयदा । एकँकार कर पसार, सति नाम मन्त्र आप दृढ़ांयदा। करता पुरख करनेहार, वेद कतेब भेव ना पांयदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। चौथे जुग पाए सार, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। अगाध बोध शब्द धुन्कार, गीत सुहागी एका गांयदा। आपणा बोल आप जैकार, आपणा नाअरा आपे लांयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, सस्से उप्पर होड़ा आपे लांयदा। निरगुण सरगुण करे कार, करनी करता किरत कमांयदा । हँ ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म रूप वटांयदा। सोहँ शब्द धुर करतार, आदि जुगादि रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रंग हरिजन साचे आप रंगांयदा। एका रंग रंगणहारा, एका दर सुहाईआ। गुरमुखां चरन प्रीती मंगणहारा, एका लेखा रिहा समझाईआ। साची

७६८
०८

रीती नीती बन्नृणहारा, राम नाम घसवटी एका लाईआ। ऊँचां नीचां करे विचारा, राउ रंकां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा वेस नर नरेश, दर दरवेश आप वटाईआ। नानक निरगुण धार, गुर शब्द मात चलाईआ। अंगद किया अंगीकार, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। अमरु अमृत आत्म देवे ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। राम दास गुर पार उतार, हरि मेला सहिज सुभाईआ। गुर अर्जन भरया शब्द भण्डार, गुर नानक वंड वंडाईआ। लेखा लिख्या अपर अपार, सन्त भगत भगवन्त एका थान सुहाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, गुरमति इक्क समझाईआ। हरि मन्दिर सोहे बंक दुआर, काया कंचन गढ़ वखाईआ। अट्ठे पहर शब्द धुन्कार, अनहद साचा राग अलाईआ। पंचम सखीआं गावण वारो वार, आपणी सेवा आप कमाईआ। निरगुण बाती कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाईआ। एका मेला धुर दरबार, गुर मन्त्र बाणी नाम दृढ़ाईआ। गुरमुख विरला करे विचार, कलिजुग सुत्ती सर्ब लोकाईआ। हरि गोबिन्द गुर गुर अपार, दोए धार बंधाईआ। हरिराए हरि दए अधार, उरध कँवल बिगसाईआ। हरि कृष्न वसे घर बार, बाल बाला रुत्त वखाईआ। तेग बहादर तेग त्यार, आपणे नाम चलाईआ। सुत्त दुलार कर त्यार, पारब्रह्म ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द गुर ख़बरदार, लोकमात करे रुशनाईआ। मिल्या मेल पुरख करतार, विछड़ कदे ना जाईआ। लेखा देवे सर्ब संसार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मेला मेल मिलाईआ। नाम खण्डा खिच कटार, तिक्खी धार वखाईआ। गुरसिख रंग चढ़या अपार, प्रेम रंगण इक्क रंगाईआ। अमृत प्याला कर त्यार, साचा खण्डा विच फिराईआ। शब्द पढ़े हरि पढ़णेहार, गुर शब्दी शब्द सुणाईआ। अमृत करया ठंडी ठार, सांतक सति सति कराईआ। गुरमुखां दित्ता कर प्यार, पंचम नाम करे रुशनाईआ। तन पहनाए इक्क इक्क कटार, पंजां चोरां डन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आप मिलाईआ। पंचम मेला गुर मिलाया, मेलणहार दया कमाईआ। आपे दर मंगण आया, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपे चेला नाम धराया, गुर गोबिन्द निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुरसिख तेरी वड वड्याआ, तेरा मेरा एका रंग रंगाईआ। जो जन सतिगुर पूरा हिरदे अन्दर रिहा ध्याया, विछड़ कदे ना जाईआ। नानक निरगुण होए सहाया, अट्ठे पहर सेव कमाईआ । कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, जोती जामा भेख कराईआ। निहकलंका नाउँ धराया, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। जगत नेत्र किसे दिस ना आया, गुरमुखां आपणा नेत्र दए खुलृाईआ। नानक सोहँ ढोला साचा गाया, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। अन्तिम तोला बण के आया, तेरां तेरां तेरां तेरी धार चलाईआ। सम्मत सोलां वेस वटाया, वीह सौ बिक्रमी वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द सरूपी लड़ फड़ाया, आपणा पल्लू अग्गे डाहीआ।

अन्दर मन्दिर डूँघी कन्दर उप्पर चढ़ डेरा लाया, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। अग्गे खड़ दरस दिखाया, स्वच्छ सरूपी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम चार वरन जन भगत हरिजन गुरमुख गुरसिख देवे साचा वर, एका नाम झोली पाईआ। साचा नाम शब्द ज्ञान, गुर मन्त्र आप दृढ़ांयदा। सतिगुर पूरे चरन ध्यान, साची भगती भगत सिखांयदा। देवे दरस श्री भगवान, आदि शक्ति रूप वटांयदा। गुरमुख सज्जण विछड़ कदे ना जाण, जिस जन आपणे दर बहांयदा। अमरा पद अन्तिम पाण, जोती जोत मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मेल मिलाए साचे घर, जगत विछोड़ा फंद कटांयदा। जगत विछोड़ा तुटे नाता, सतिगुर पूरा आप तुड़ांयदा। मेल मिलाए पुरख बिधाता विछड़ कदे ना जांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, सतिगुर साचा चन्न चढ़ांयदा। शब्द सुणाए साची गाथा, सोहँ ढोला आप सुणांयदा। लहिणा देणा चुक्के मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। एथे ओथे दो जहानां निभाए साथा, सगला संग आप अख्वांयदा। पंज तत्त चलाए काया राथा, रथ रथवाही काया मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। लहिणा देणा जगत जुग पूजा पाठा, जो जन नेत्र लोचण नैण दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेले आपणे दर, दर मेला गुरू गुर चेला, चेला गुर आप हो जांयदा।

✪ ५ सावण २०१६ बिक्रमी जोरा सिँघ दे घर सदा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

निरगुण धार शब्द सार, हरी हरि आप उपजाईआ। आपे वेखे करे विचार, आप आपणी दया कमाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार, नाम निधाना आप उपजाईआ। थिर घर साचे बैठ दुआर, धुर दरबारा इक्क सुहाईआ। इक्क इकल्ला अकल कल धार, अकाल मूर्त खेल खिलाईआ। अजूनी रहित सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, रूप अनूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। सार शब्द शब्द अपारा, हरि हरि आप उपजांयदा। जोती माता कर प्यारा, पूत सपूता झोली पांयदा। पुरख अबिनाशी सुत्त दुलारा, एका एक आपणा आप उपजांयदा। आदि निरँजण कर प्यारा, आप आपणा अंग लगांयदा। पारब्रह्म प्रभ दए सहारा, साचा संग निभांयदा। थिर घर साचे कर उज्यारा, एका हुक्म सुणांयदा। करे कराए करनेहारा, कादर करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द आप उपजांयदा। सार शब्द हरि का रूप, हरि हरि आप उपजाईआ। आप वसाए चारे कूट, दहि दिशा आप टिकाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, आपे वेख वखाईआ। खेले खेल पारब्रह्म

अबिनाशी अचुत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एका एक दुलारा सुत्त, सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। पंज तत्त ना दिसे बुत्त, काया गढ़ ना कोई वखाईआ। ना कोई किला ना कोई कोट, मन्दिर महल्ल ना कोई वखाईआ। ना कोई नगारा ना कोई चोट, डंका डौरु कोई ना वाहीआ। इक्क रखाई आपणी ओट, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका तत्त एका सार, एका रूप इक्क करतार, एका नूर करे रुशनाईआ। सार शब्द शब्द उजाला, हरि सतिगुर आप उपजांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुर गोपाला, गोबिन्द आपणा नाउँ धरांयदा। आपे खेले खेल निराला, आप आपणी कल वरतांयदा। शब्दी शब्द अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सार वंडी वंड, आप उपजाए कोट ब्रह्मण्ड, कोटन कोटां विच मिलाईआ। सार शब्द कर त्यार, हरि हरि खेल खिलांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, शब्दी बंधन पांयदा। रवि ससि कर उज्यार, एका हुक्म सुणांयदा। मण्डल मण्डप दए सहार, आप आपणा संग निभांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ख़बरदार, आप आपणी अंस उपजांयदा। बंस सरबंसा हो त्यार, रसना सहिसा आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्दी सार, सतिगुर साचा आप हो जांयदा। सार शब्द हरि मीत, सतिगुर रूप वटाया। आदि जुगादी इक्क अतीत, सच घर बैठा आसण लाया। पुरख अबिनाशी पतित पुनीत पतित पावण नाउँ धराया। सदा सुहेला ठंडा सीत, अग्नी तत्त ना कोई रखाया। एका भाणा जाणे मीठ, आपणे भाणे विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रीत, आपणा मार्ग आपे लाया, शब्द सार सच घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, प्रभ आपणा नाउँ धराईआ। आपे देवणहारा वर, आपे करे कुड़माईआ। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। आपे अन्दर जाए वड़, आपे बैठा डेरा लाईआ। आपे विद्या रिहा पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपणा लड़ आपे फड़, आपे वेख वखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, मूर्त अकाल इक्क उपजाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई बीज रिहा बिजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्दी धार, सति सरूप आप उपजाईआ। सार शब्द हरि का रंग, हरि हरि आप उपन्नया। आपे मंगे आपणी मंग, आपे देवे माल नाम धन धन्नया। आपे होए सदा संग, सतिगुर पूरा आपे मन्नया। आपे सच सिँघासण बैठ पलँघ, थिर घर साचा इक्क सुहन्नया। आप वजाए इक्क मृदंग, नाम मृदंगा इक्क रखन्नया। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भन्नया। आपे वेखे सूरज चन्न, रवि ससि आपे बेड़ा बन्नया। आपे वसे पंज तत्त तन, आप सुणाए आपणा राग कन्नया। आपे देवणहारा डन्न, जुगा जुगन्तर देवे डन्नया। आपे जननी जन लए

जन, भगत वछल आप अख्वन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द एका वर, एका घर सहुन्नया। सार शब्द ग़रीब निवाजा, आपणा आप उपजांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, एका हुक्म सुणांयदा। एका अस्व एका ताजा, एका हरि दौड़ांयदा। एका पुरख आत्म वजाए वाजा, अनहद एका ताल वजांयदा। एका आदि जुगादी रचे काजा, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। एका लक्ख चुरासी साजण साजा, एका त्रैगुण मेल मिलांयदा। एका पंचम खोल्हे पाजा, एका पंचम मोह चुकांयदा। एका मक्का काअबा हाजी हाजा, शरअ शरीअत इक्क वखांयदा। एका पंडत पांधा देवे दाजा, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांयदा। एका मारनहारा वाजा, गुरमुख सोए आप उठांयदा। सार शब्द जुग रक्खे लाजा, आदि जुगादी आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्द अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। सार शब्द शब्द अनमोल, हरि सतिगुर हरि उपजाईआ। आपणे अन्दर आपे मौल, फुल्ल फुलवाड़ी आप खिलाईआ। आपे भरया अमृत कँवल, कँवल नाभी मुख भुवाईआ। आपे लेखा जाणे धरत धवल, धवल धरनी धरत आप सुहाईआ। आपे रहे आदि जुगादि सदा अडोल, लक्ख चुरासी रिहा डुलाईआ। गुरमुख साजण तोले आपणे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। मनमुख जीव रहे अनभोल, हरि का भेव कोई ना पाईआ। गुरमुखां पर्दा देवे खोल्ह, अन्तर आत्म इक्क जणाईआ। सतिगुर पूरा वसे कोल, अन्दर मन्दिर बेपरवाहीआ। अनहद वजाए साचा ढोल, इक्क मृदंगा नाउँ वजाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला जन भगतां करे सदा चोल्ह, आप आपणी गोद उठाईआ। अक्खर वक्खर शब्द अनादी आपे बोल, सार शब्द सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे वड्याईआ। सार शब्द हरि वड्याई, हरि हरि हरि गुण गांयदा। लक्ख चुरासी कर कुड़माई, घट घट डेरा लांयदा। गुरमुख साजण वेखे चाँईं चाँईं, जुग जुग वेख वखांयदा। सन्त सुहेले आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, आप आपणा दर सुहांयदा। देवणहार ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तीर निराला सेवा लाए काल महांकाला, काल रूप आप हो जांयदा। सार शब्द हरि फ़रमान, आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादी हो मेहरवान, जुग जुग खेल खिलाईआ। एकँकारा कर ध्यान, नर निरँकारा वेख वखाईआ। खेले खेल दो जहान, चौदां लोकां फोल फुलाईआ। लोआं पुरीआं इक्क ज्ञान, लोकमात वज्जे वधाईआ। गुरमुखां करे आप पछाण, आपणी सिख्या आप समझाईआ। मनमुख जीव बाल अञ्याण, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। वेले अन्त सर्ब पछताण, ना दिसे कोई सहाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजाण, हरिजन मेला मेल मिलाईआ। रसना जिह्वा हरि गुण गाण, बत्ती दन्द सलाहीआ। मिले पद पद निरबाण, निरगुण निर्भय विच रखाईआ।

आवण जावण चुक्के काण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। पाया पुरख पुरख सुल्तान, घर साचे वज्जी वधाईआ। रल मिल सखीआं मंगल गाण, सोहँ ढोला एका गाईआ। जगत विचोला श्री भगवान, दूसर कोई ना संग रखाईआ। हरिजन देवे जीआ दान, दाता दानी दान झोली पाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सतिगुर पूरे चरन ध्यान, दर दुआरा इक्क बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तिक्खी धार, विच संसार आप चलाईआ। तिक्खी धार पुरख करतार, शब्दी शब्द रखांयदा। गुरमुखां करे मात प्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। मनमुखां करे अन्त खुआर, धीरज धीर ना कोई रखांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाधी शब्द जणांयदा। अलक्ख निरँजण हो त्यार, जुग जुग आपणी अलक्ख जगांयदा। सचखण्ड दुआरा खेल अपार, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। वंडे वंड सर्ब संसार, वंडणहारा आप हो जांयदा। वरभण्डी पावणहारा सार, ब्रह्मण्डी खोज खुजांयदा। शब्द खण्डी तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, आदि जुगादी गुर अख्वांयदा। नाम तोड़ा सीस दस्तार, एका कल्गी जोत चमकांयदा। अस्व घोड़ा कर त्यार, शाह अस्वार आप अख्वांयदा। गुरमुखां पावणहार सार, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। जिस जन बख़्शे चरन प्यार, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। दरस दिखाए अगम्म अपार, आप आपणी दया कमांयदा। ख़ुशी ग़मी ना कोई विचार, एका रंग रंगांयदा। तोड़णहारा गढ़ हँकार, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। अमृत भरे नाम भण्डार, नाम प्याला भर प्यांअदा। जो जन मंगे बण भिखार, साची भिच्छया झोली पांयदा। ग़रीब निमाणे लाए पार, जो जन सरनाई आंयदा। रोग सोग चिन्ता दु:ख दए निवार, जो जन रसना सोहँ गांयदा। करे कराए सच प्यार, गुरसिख बाल अञ्याणे आप आपणी गोद उठांयदा। मावां पुत्तरां इक्क प्यार, इक्क सुहाए बंक दुआर, सतिगुर पूरा हरि अख्वांयदा। एथे ओथे दए सहार, दो जहानां मीत मुरार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, फड़ फड़ बाहों पार करांयदा। सार शब्द तेज़ कटार, मारी जाए वारो वार, गुरमुख साजण लाए पार, मनमुख शौह दरियाए आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका नाम एका जोत श्री भगवान, एका देवणहारा दान, एका बख़्शे ब्रह्म ज्ञान, आत्म प्रेम इक्क जणांयदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म जणाई, जन हरि बूझ बुझांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमाई, गुरमुख सज्जण वेख वखांयदा। दर घर साचे होई कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। दिवस रैण वज्जे वधाई, एका रंग समांयदा। अन्त विछोड़ा होए नाही, जिस जन आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, सतिगुर पूरा बण मलाह, गुरमुखां कलिजुग पकड़े बांह, दो जहानी करे सच न्याँ, दरगाह साची देवे थाँ,

एका धाम सुहांयदा। धाम अवल्ला हरि निरँकार, गुरमुखां आप वखाईआ। इक्क इकल्ला बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म सुणाईआ। जलां थलां पावे सार, लक्ख चुरासी मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। गुरमुखां गुरसिखां पूर्ब लहिणा कर विचार, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। जुगां जुगां दे विछड़े यार, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। बावन रामा हो अवतार, कृष्ना काहन आप अख्वाईआ। ईसा मूसा बन्ने धार, संग मुहम्मद सेवा रिहा कमाईआ। नानक गोबिन्द इक्क प्यार, एका शब्द करी कुड़माईआ। नाम डंका विच संसार, नाम सति रिहा वजाईआ। वासी पुरी घनका हो त्यार, कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंका लए अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ऊँच नीच ना कोई विचार, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम बहाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, दिस किसे ना आईआ। जिस जन आपणी किरपा देवे धार, आप आपणा दरस दिखाईआ। भव जल सागर उतरे पार, जो जन आए चल सरनाईआ। काग ना उडे कागां डार, कागों हँस उडाईआ। माणक मोती भरे भण्डार, सोहँ चोग चुगाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। गुरसिख वरन गोती वस्सया बाहर, एका वरन पारब्रह्म करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले काया मन्दिर अन्दर उच्च मिनार, हरि निरँकार जोती नूर नूर उज्यार, शब्दी शब्द शब्द धुन्कार, हरिजन साचे मेल मिलाईआ।

✪ गुरदयाल सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गोशब्द प्यार हरिजन सज्जण, सतिगुर दरसाईआ। सतिगुर बख्शे चरन मजन, धूढ़ी धूढ़ मस्तक लाईआ। मेल मिलावा आदि निरँजण, निरगुण मिले सहिज सुभाईआ। घर मन्दिर साचे वाजे वज्जण, दिवस रैण शनवाईआ। जन भगतां हरि पर्दे कज्जण, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। चरन प्रीती जो जन बज्झण, जगत बंधन तोड़ तुड़ाईआ। दर घर साचे बहि बहि सजण, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। दो जहानी रक्खे लज्जण, गुर गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सहाईआ। गोबिन्द मीता साचा साकी, सतिगुर हरि अख्वांयदा। गुरमुख चढ़ाए साचे राकी, वागां आपणे हथ्थ उठांयदा। लहिणा देणा देवे बाकी, जगत मलाह मेल मिलांयदा। लेखे लाए तन ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक सुहांयदा। साचे मन्दिर खोल्हे ताकी, दीवा बाती इक्क जगांयदा। मेल मिलावा कमलापाती, घर सेजा इक्क सुहांयदा।

लहिणा देणा चुक्के बाकी, जगत बेड़ा बन्ने लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। जगत मलाह पार किनारा, एका इक्की रिहा तराईआ। साची सिक्खी कर उज्यारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। कलिजुग सागर डूँघी धारा, आर पार ना कोई जणाईआ। चार वरन ना कोई सहारा, मन मति रही रुढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी लै अवतारा, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। चेला सोहे इक्क दुआरा, चेतन चित्त इक्क कराईआ। एका देवे नाम अधारा, अदभुत रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग सागर वेख वखाईआ। जग सागर हरि तारनहारा, हरिजन साचे आप तरांयदा। बेड़ा बन्ने गुर करतारा, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। नाम चप्पू अपर अपारा, सोहँ डण्डा हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं पार किनारा, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। निरगुण बैठा निरगुण धारा, नूरो नूर डगमगांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, चतुर्भुज आपणी भुजा आप उठांयदा। मेल मिलाए वारो वारा, वार थित ना कोई वखांयदा। आदि जुगादी पावे सारा, भगत वछल निगाहवान आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। गोबिन्द वरया, गोबिन्द मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेला गोबिन्द करया, गोबिन्द खेल खिलांयदा। गोबिन्द घाड़ण हरिजन घड़या, गोबिन्द लेख लिखांयदा। गोबिन्द सूरा अन्दर वड़या, दे मति आप समझांयदा। गोबिन्द बेड़े पहले चढ़या, जगत धारा जल फिरांयदा। खेवट खेटा आपे खड़या, चारों कुन्ट फिरांयदा। एका अक्खर हरि हरि पढ़या, एका रसन ढोला गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा जाणे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जगत मलाह बण सहारा, नईआ नाउँ चलाईआ। आपे फिरे अद्धविचकारा, पार किनारा ना कोई जणाईआ। गोबिन्द बोले बोल जैकारा, एका नाम सुणाईआ। ना कोई घाट उतरे पारा, कवण थान सुहाईआ। चरन डिग्गे करे पुकारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अन्तिम आए तेरे दुआरा, मेरा उधार रहे ना राईआ। भव सागर करना पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई डुबाईआ। गोबिन्द दित्ता नाम अधारा, आपणी दया कमाईआ। इक्की कुलां उतरे पारा, कुल कुलवन्ता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर देवे वर, हरिजन वेखे वेख वखाईआ। गोबिन्द सिफ्त गोबिन्द सलाह, गोबिन्द रंग चढ़ाया। गोबिन्द नईआ गुर मलाह, गोबिन्द बेड़ा रिहा चलाया। गोबिन्द पकड़णहारा बांह, गुर गोबिन्द वेस वटाया। गुर करनेहारा सच न्याँ, सतिगुर पूरा नाउँ धराया। कलिजुग अन्तिम देवे ठंडी छाँ, सिर समरथ हथ्थ टिकाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, अमृत आत्म जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा वेखे नैणां, नेत्र लोचण आप दरसांयदा। पूर्ब लहिणा हरि चुकाउणा, सतिगुर वड वड्याईआ। पिछला

लेखा लेख चुकाउणा, अग्गे मार्ग पाईआ। साचे राकी आप चढ़ाउणा, नाम घोड़ा इक्क वखाईआ। चार कुन्ट आप दुड़ाउणा, आपे सेव कमाईआ। साची सिख्या इक्क समझाउणा, गुरमति वड्डी वड्याईआ। बंस सरबंसा लेखे लाउणा, सगला संग तराईआ। नेत्र सहिसा आप खुल्लाउणा, सहँसर मुख रहे शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, गुर सहिज सहिज कराईआ। गुर शब्द उपदेश, हरिजन साचे आप जगांयदा। जुगा जुगन्तर धारे भेस, शब्द शब्दी नाउँ धरांयदा। आपे दाता दानी दस दस्मेश, दर घर साचा आप सुहांयदा। आपे होए रिखी केस, जगत गवर्धन आप उठांयदा। आपे रामा राम रमेश, राम रमईआ खेल खिलांयदा। आपे विष्न ब्रह्मा गणपति गणेश, स्वांगी आपणा स्वांग वरतांयदा। आदि जुगादी रहे हमेश, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म पुरख सुल्तान सदा अदेस, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। जोती नूर नूर प्रवेश, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, एका पल्ला नाम फड़ांयदा। एका पल्ला नाम फड़ाया, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। दूई द्वैती पर्दा लाहया, एका रंग रंगाईआ। नैण लोचण इक्क खुल्लाया, चौथे घर वज्जे वधाईआ। पंचम मेला सहिज सुभाया, मिल सखीआं मंगल गाईआ। छेवें घर घर दरसाया, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। सतिगुर पुरख निरँजण जोत जगाया, अट्ठां तत्तां वेखण आया, जोती जामा भेस वटाईआ। नौ दर खोजे खोज खुजाया, नौ खण्ड फेरा पाईआ। दस्म दुआरी आसण लाया, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साचे लए जगाया, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। आत्म सेजा रिहा सुहाया, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। गुरसिख सज्जण राह तकाया, दिवस रैण वेख वखाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाया, जगत विचोला बेपरवाहीआ। सोहँ ढोला साचा गाया, सो पुरख निरँजण सिफ्त सलाहीआ। हँ ब्रह्म आप रघुराया, पारब्रह्म नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मिले वर, वर घर हरि नर साचा इक्क सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निराकार सरगुण पावे सार, धुर मस्तक लेखा लेख लिखाईआ।

✪ ५ सावण २०१६ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड नाथे वाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

निरगुण सरगुण साची धार, पुरख अकाल चलाईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, त्रै त्रै वेस वटाईआ। त्रैगुण माया कर उज्यार, आपणे रंग रंगाईआ। साची वस्त अगम्म अपार, आपणी आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, आपे देवणहार वड्याईआ। त्रैगुण मीता त्रैगुण अतीता, त्रैगुण वेस वटांयदा। त्रैगुण ठांडा त्रैगुण सीता, त्रैगुण अग्नी तत्त तपांयदा। त्रैगुण पतित त्रैगुण पुनीता, त्रैगुण आपणा वेख वखांयदा। त्रैगुण हस्त त्रैगुण कीटा, त्रैगुण लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। त्रैगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। निरगुण सरगुण रूप अपार, विष्नूं वेस वटाईआ। ब्रह्मा वेता कर उज्यार, कँवल फुल्ल खिलाईआ। शंकर बन्न्हे साची धार, सिव शक्ती विच टिकाईआ। आदि शक्ती कर प्यार, एका इष्ट वखाईआ। इक्क महल्ल लए उसार, एका वेख वखाईआ। एका बख्शे सच प्यार, एका दर खुल्हाईआ। इक्क कराए वणज वपार, एका वस्तू झोली पाईआ। एका देवे सच भण्डार, एका रिहा वरताईआ। एका ब्रह्मण्ड खोल्ह किवाड़, लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। इक्क उपाए रवि ससि सितार, मण्डल मण्डप इक्क सुहाईआ। एका पुरख एका नार, कन्त सुहागी एका नाउँ धराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, आप आपणा बंस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै त्रै आपणा लेख लिखाईआ। आपणा लेखा आपे धर, आपे वेख वखांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे राग अल्हांयदा। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे इष्ट मनांयदा। आपणे अग्गे आपे खड़, आपे दरस दिखांयदा। आपणा फड़े आपे लड़, आपे मेल मिलांयदा। आपणा वेस आपे कर, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं विश्व रूप अख्वांयदा। ब्रह्मा वेता पारब्रह्म, आपणी अंस उपाईआ। आपणे घर आपे प्या जम्म, मात पित ना कोई बणाईआ। एका तृष्ना एका तम, एका लेख मुकाईआ। एका बेड़ा रिहा बन्न्ह, एका हुक्म चलाईआ। एका देवे साचा धन, एका साचा हट्ट खुल्हाईआ। एका राग सुणाए कन्न, एका बूझ बुझाईआ। एका जननी जणया जन, आदि शक्ती साची माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वाईआ। एका शंकर कर त्यार, एका रूप वटाया। एका शिव हो उज्यार, एका नैण खुल्हाया। एका गल विच पाए हार, एका कंठ सुहाया। एका करे सच प्यार, एका मेल मिलाया। एका देवे इक्क अधार, एका दरस दिखाया। एका सिख्या सच विचार, एका बूझ बुझाया। एका लिख्या धुर दरबार, एका दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै त्रै आपणा नाउँ धराया। आपे विष्नूं कर आकार, आपणा रूप वटांयदा। आपे ब्रह्मा हो त्यार, पारब्रह्म प्रभ आपणा अंग कटांयदा। आपे शंकर करे ख़बरदार, आलस निन्दरा आप गवांयदा। आपे तिन्नां मीत मुरार, आपणा संग निभांयदा। खेले खेल पुरख करतार, अगम्म अगोचर भेव ना आंयदा। आदि निरँजण भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। इक्क इकल्ला कर पसार, एका वेख वखांयदा। ना कोई दूजी दिसे धार, ना कोई कुदरत रचन

रचांयदा। ना कोई तीजा दर दरबार, ना कोई चौथा वसांयदा। ना कोई पंचम मीत मुरार, ना कोई छप्पर छन्न सुहांयदा। ना कोई सति सतिवादी हो उज्यार, साचा मार्ग लांयदा। अट्ठ तत्त ना कोई अधार, नौ दर ना कोई खुल्हांयदा। ना कोई मेला दसवें दर दरबार, सुरत शब्द ना कोई जणांयदा। जोत निरँजण ना कोई उज्यार, लक्ख चुरासी ना वेख वखांयदा। सन्त साध ना कोई दुलार, भगत वछल ना कोई अख्वांयदा। ना कोई गोपी काहन मीत मुरार, ना कोई बंसरी जगत वजांयदा। ना कोई सीता राम करे प्यार, जनक सपुत्ती ना कोई प्रनांयदा। ना कोई बल छल धारे भेखा धार, बल बावन ना वेस वटांयदा। धू्र भगत ना कोई सहार, ना कोई नामा नाम ध्यांअदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल धारी आप अख्वांयदा। आदि आदि हरि कर पसार, आपणी रचन रचांयदा। निरगुण रूप सच्ची सरकार, सरगुण वेस वटांयदा। सरगुण करे इक्क अधार, एका दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि अनादी एक एकँकार, एका एक अख्वाईआ। आपे देवे आपणी दादी, आपणी वस्त आपे झोली पाईआ। आप लडाए आपणी लाडी, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण नाउँ धराईआ। निरगुण सरगुण भेस वटाया, आपणी कल वरतांयदा। आपणी गोदी आप सुहाया, आपे खेल खिलांयदा। सुत्त दुलारा एका जाया, एका घर वसांयदा। अमृत साचा जाम प्याया, भर प्याला आप प्यांअदा। रूप रंग ना कोई वखाया, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपणा लेखा आप जणाया, आपे भेव खुल्हांयदा। आपणी सेवा आप कमाया, आप आपणा नाउँ धरांयदा। विष्नूं रूप बण के आया, दिस किसे ना आंयदा। आपे दाता रिज़क सुबाया, देवणहार आप अख्वांयदा। आदि निरँजण जोत जगाया, जोती नूर डगमगांयदा। आपणा नाउँ आप धराया, आपे खेल खिलांयदा। आपणा बीज आपे पाया, आपे फल लगांयदा। आपणा ताल आप भराया, आपे हरि सुहांयदा। आपणा कँवला आप उपजाया, आपे मुख खुल्हांयदा। आपणा रूप आप वटाया, आपे वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव ना राया, ब्रह्म ब्रह्म समांयदा। नाभी फुट्टी बाहर आया, एका मुख दरसांयदा। चारे मुख रिहा खुल्हाया, अट्ठे नेत्र वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी नज़री आया, निउँ निउँ सीस सीस झुकांयदा। गल विच पल्लू एका पाया, साची मंग मंगांयदा। हरि हरि साची दया कमाया, दे मति समझांयदा। आपणी रचन आप रचाया। आपणा लेखा आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा वेता आपे धर, आप आपणा संग निभांयदा। ब्रह्मा उपज्या पारब्रह्म, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। दूसर घर ना गया जम्म, मात पित ना कोई अख्वाईआ। ना कोई रसना जिह्वा लए दम, पवण स्वास ना कोई जणाईआ। आलस तृष्ना ना कोई तम, नैण नींदर ना कोई रखाईआ। ना कोई ख़ुशी

ना कोई गम, चिन्ता सोग ना कोई रखाईआ। ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्म, पुरख अबिनाशी आपणी रचन रचाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। आपणा राग आप सुणाए आपणे कन्न, सुनणेहार आप हो जाईआ। आपे जननी बण बण जणया जन, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका विष्नूं विष्न आकार, दूजा ब्रह्मा कर त्यार, तीजा आपणा रंग रंगाईआ। तीजा रंग रंग करतारा, आपणी रचन रचांयदा। आपे वसे धुँधूकारा, आपे सुन्न समाध समांयदा। आपे जोत नूर कर उज्यारा, आपे डगमगांयदा। आपे वेखणहार गिरधारा, आपणा लोचण आप खुल्ह्यांयदा। आपणा वरते आप वरतारा, आपणी करनी आप करांयदा। आपणी जोती दए सहारा, आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणा सरूप आपे रक्ख, आपे जोत जगाईआ। आपे निरगुण हो प्रतक्ख, आपे करे कुड़माईआ। खेले खेल अलक्खणा अलक्ख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे भाण्डे करे सख, आपे रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपे शंकर भोला नाथ, आपणी दया कमांयदा। आपे निरगुण सरगुण रलया साथ, आपणी दया कमांयदा। आप जणाए आपणी गाथ, आपणा मन्त्र आप दृढ़ांयदा। आप निभाए सगला साथ, सगला संगी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी जोती देवे वर, आपणा खेल खिलांयदा। आपणी जोती नूर उजाला कर, विष्नूं नाउँ धराया। ब्रह्मा वेता आपे कर, पारब्रह्म वड्याआ। शिव जी देवे आपणा वर, आपणा संग निभाया। तिन्नां डोरी लए बन्न्ह, एका शब्द उठाया। थिर घर साचे चढ़या चन्न, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाया। रवि ससि बेड़ा बन्न्ह, आपणा नूर करे रुशनाईआ। मण्डल मण्डप तणया ताण, आप आपणा बंधन पाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, भेव कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, सच सुनेहड़ा शब्द सुणाया। साचा हुक्म धुर फ़रमान, हरि हरि आप जणांयदा। विष्नूं सुण ला कर कान, हरि साचा आप सुणांयदा। ब्रह्मा वेता कर ध्यान, भरम भुलेखा दूर करांयदा। शंकर तेरा रक्खे माण, तेरा दर सुहांयदा। तिन्नां विचोला आप भगवान, दूसर संग ना कोई निभांयदा। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोई वखांयदा। पारब्रह्म पुरख खेल महान, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच संदेश नर नरेश इक्को हुक्म सुणांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, धुर फ़रमान इक्क सुणाईआ। विष्नूं वेता ख़बरदार, प्रभ साचा आप कराईआ। ब्रह्मा वेता हो त्यार, तेरी सेवा रिहा लगाईआ। शंकर उठ उठ बल धार, हरि साचा रिहा उठाईआ। तिन्नां होया मीत मुरार, सज्जण सुहेला आप अख्वाईआ। गाए गीत सुहागी साची धार, सो

७७६
०८

पुरख निरँजण वड वड्याईआ। आपणी अंस कर त्यार, सोहँ रूप आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, दर दुआरा आप सुहाईआ। विष्नूं उठ उठ बल धार, हरि साची दया कमाईआ। ब्रह्मा वेता बण भिखार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। शिव शंकर रहिणा मीत मुरार, चरन प्रीती इक्क दरसाईआ। आपे तिन्नां वस्सया बाहर, आपे तिन्नां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन आप रचाईआ। ब्रह्मा उठया नौजवान, घर साचे लए अंगड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तान, दर साचा वेख वखाईआ। एका मंगे साचा दान, देवणहार बेपरवाहीआ। तेरा मेरा रूप महान, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वंडण वंड वंडाईआ। साची वंड हरि निरँकार, घर साचे आप वंडांयदा। विष्नूं करे इक्क प्यार, सांतक सति वरतांयदा। ब्रह्मा वेता दए अधार, राजस राज कमांयदा। शंकर मेला अपर अपार, तामस तृखा वधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तिन्नां देवे वर, एका एक झोली पांयदा। विष्नूं मेला सांतक सति दर, सति सति समाईआ। ब्रह्मा राजस एका घर, आपणा राज कमाईआ। शंकर तामस लाया लड़, आपणी तृष्ना वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कर, अचरज बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा आपणा भेव खुल्हाईआ। साची वस्त हरि निरँकार, त्रै त्रै वंड वंडाया। राजस तामस सांतक कर प्यार, एका दर वखाया। आपे खिच्चे चरन दुआर, आप आपणा मेल मिलाया। आपे बणे हरि वरतार, आपणा भण्डारा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण मेला एका दर, एका दर सुहाया। विष्नूं सेव सच कमौणी, हरि साचा सच सुणाईआ। ब्रह्मा वेता एह समझौणी, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। शिव शंकर तेरी चोट लगौणी, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। त्रैगुण माया तेरी वस्त पुरख अबिनाशी ब्रह्मा झोली पौणी, आपणी भिच्छया कर कर इच्छया, आपे वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण दित्ता साचा वर, घर साचा आप सुहाईआ। त्रैगुण ब्रह्मा वेता वरया, त्रै त्रै वेस वटाया। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़या, आपणा हुक्म सुणाया। पंज तत्त आकारा सच धड़या, निरगुण सरगुण वेख वखाया। घट घट अन्दर आपे वड़या, आप आपणा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखाया। ब्रह्मा वेता बाल निधान, दोए जोड़ करे निमस्कारया। हरि जू तेरा धुर फ़रमान, मन्ने विच संसारया। लक्ख चुरासी जीव जन्त जहान, आप करे उज्यारया। तेरा रूप होए प्रधान, देवे सर्ब सहारया। निरगुण जोत जगे महान, एका होए उज्यारया। तेरा शब्द सच्ची धुनकान, तेरा राग सुणा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमान, तेरा हुक्म वजा ल्या। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आप अख्वा रिहा। ब्रह्मा वेता वड बलवान, दर अग्गे सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमांयदा। एका बख्शे नाम निधान, नाम नामा झोली पांयदा। आदि जुगादी धुर फ़रमान, एका हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखांयदा। ब्रह्मा वेता पूत सपूता, साचे घर सुहाया। वेखणहारा चारे कूटा, दहि दिशा फेरा पाया। लक्ख चुरासी लाया बूटा, आपणा बाग खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म चलाया। लक्ख चुरासी बणत बणा, साची रचन रचाईआ। घट घट बैठा गणत गणा, लेखा रिहा समझाईआ। जीव जन्त आप समझा, मन मति बुध विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया दित्ता वर, ब्रह्मा वेस साचे घर, वरभण्डी खेल खिलाईआ। त्रैगुण माया हो प्रधान, लोकमात करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी वेख मार ध्यान, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। कवण सो वेला तेरा होए ध्यान, तेरी रचना तेरे विच समाईआ। मेरी अन्त करे कौण कल्याण, कवण लेखा दए चुकाईआ। त्रैगुण मेटे कवण निशान, कवण आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। ब्रह्मा वेता आस रक्ख, हरि साचा सच समझांयदा। नौ नौ चार होए प्रतक्ख, पारब्रह्म रूप वटांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे सख, लोकमात फेरा पांयदा। त्रैगुण माया पाए भट्ठ, आपणे तत्त जलांयदा। जोत सरूप होए प्रगट, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती नूर लट लट, पुरख अकाल डगमगांयदा। चौदां लोकां मेटे हट्ट, आपणी खेल खिलांयदा। आपे जाणे वार थित, भेव कोई ना पांयदा। लक्ख चुरासी आपे लए जित, आपणा हित्त चुकांयदा। खेले खेल नित नवित्त, खेलणहार आप अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पित, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप चुकांयदा। त्रैगुण माया लेख चुकाउणा, नौ नौ चार वज्जी वधाईआ। शिव शंकर लेखा अन्त मुकाउणा, प्रभ साचा लेख चुकाईआ। ब्रह्मा जोती जोत मिलाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। विष्नूं रूप आप वटाउणा, भगवान जोती नूर रुशनाईआ। त्रैगुण माया तेरा तत्त निभाउणा, तत्व तत्त ना कोई दिसाईआ। साची रुत्त इक्क सुहाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। इक्की जेठ वड वडिआउणा, वीह सद बीस करे कुड़माईआ। नाथे वाली धाम सुहाउणा, धरत धवल रुशनाईआ। गोबिन्द तेरा लेख चुकाउणा, प्रभ साचा पूर कराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कोई भेव ना पाउणा, वेद कतेब ना कोई सुणाईआ। शास्त्र सिमरत ना किसे गाउणा, अञ्जील कुरान ना कोई पढ़ाईआ। निरगुण रूप तेरा नाउँ निरगुण सरगुण हरि हरि गाउणा, हँ ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हर

घट नज़री आउणा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। गुरमुख विरले दर्शन पाउणा, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी रसना गाउणा, घर घर वज्जे वधाईआ।

६ सावण २०१६ बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड नाथे वाल ज़िला फ़िरोज़पुर

त्रैगुण वस्त अनमोल, हरि आपणी आप उपजाईआ। त्रैगुण तोले आपणे तोल, एका तोल वखाईआ। त्रैगुण तत्त रिहा विरोल, आप आपणी खेल खिलाईआ। त्रैगुण रक्खे आप अडोल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण आपे जाए मौल, आपणा मेल मिलाईआ। त्रैगुण रूप रहे अनभोल, अनुभव प्रकाश कराईआ। त्रैगुण पूरा करे कौल, सगला संग निभाईआ। त्रैगुण वेखे घोल, करे सच लड़ाईआ। त्रैगुण प्रगटे उप्पर धवल, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द जणाईआ। त्रैगुण दाता हरि निरँकार, त्रैगुण अंग लगांयदा। त्रैगुण मात पित पुरख करतार, त्रैगुण पूत सपूत उपांयदा। त्रैगुण दाता भरे भण्डार, आप आपणी दया कमांयदा। त्रैगुण जाता वेस करतार, रूप रंग ना कोई वखांयदा। त्रैगुण नाता पावे सार, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। त्रैगुण गाथा बन्ने धार, त्रै त्रै नाम उपजांयदा। राजस तामस सांतक दए अधार, विष्नूं ब्रह्मा शिव मेल मिलांयदा। आदि जुगादा पावे सार, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण सुहाए आपणी रुत्त, करे कराए आप उत्पत, आपे वेख वखांयदा। त्रैगुण वंड हरि ब्रह्मण्ड, आपणी आप करांयदा। त्रैगुण पल्ले बन्ने गंढ, त्रैगुण हट्ट विकांयदा। त्रैगुण मेला जेरज अंड, त्रैगुण उत्भुज सेत्ज संग निभांयदा। त्रैगुण विच वरभण्ड, वरभण्डी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धरांयदा। त्रैगुण दिवस त्रैगुण रात, त्रैगुण रूप वटाईआ। त्रैगुण सँध्या त्रैगुण प्रभात, त्रैगुण आपणा खेल खिलाईआ। त्रैगुण रवि ससि करे प्रकाश, त्रैगुण मण्डल मण्डप फेरा पाईआ। त्रैगुण पाए साची रास, त्रैगुण आपे वेख वखाईआ। त्रैगुण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आप उपजाईआ। त्रैगुण त्रैगुण निवास, त्रैगुण भेव अभेद छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण अतीता पतित पुनीता, एका एक अख्वाईआ। त्रैगुण अंग त्रैगुण संग, त्रैगुण मेल मिलन्नया। त्रैगुण सेजा त्रैगुण पलँघ, त्रैगुण आप विछन्नया। त्रैगुण मंगे साची मंग, त्रैगुण आपणा दर खुलन्नया। त्रैगुण वजाए इक्क मृदंग, त्रैगुण आपणे हथ्थ रखन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै त्रै आपणा खेल खिलन्नया। त्रैगुण मीता इक्क अतीता, त्रै त्रै अंग समाईआ। त्रैगुण ठांडा त्रैगुण सीता, त्रैगुण अग्नी तत्त बणाईआ।

त्रैगुण हस्त त्रैगुण कीटा, त्रैगुण शाह सुल्तान उपजाईआ। त्रैगुण खेल खेल अनडीठा, प्रभ साचा आप खिलाईआ। त्रैगुण फल कौड़ा रीठा, त्रैगुण मिट्ठा रस आप खुआईआ। त्रैगुण जाणे आपणा कीता, आपणी करनी आप कराईआ। त्रैगुण वेखे साची रीता, चाल अवल्लड़ी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वस्त देवे दस्त पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साची वस्त हरि धरा, पारब्रह्म समझांयदा। आपणा लड़ आप फड़ा, आपे राह वखांयदा। आपणी बणत आप बणा, दे मति आप समझांयदा। आपणी गणत आप गणा, लेखा गणत आप रखांयदा। आदि अन्त आप अखवा, आपणी कल वरतांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, त्रैगुण मेल मिलांयदा। पंचम मेला सहिज सुभा, घर साचा आप सुहांयदा। एका तत्व तत्त रखा, एका ब्रह्म दृढ़ांयदा। एका अग्नी अन्दर पा, एका हवन करांयदा। एका ताल दए भरा, अमृत जल वहांयदा। एका हवा रिहा चला, पवणी पवण समांयदा। एका आकाश रिहा वखा, एका धरत टिकांयदा। आपे अन्दर डेरा ला, आपणा मुख छुपांयदा। आपणा राग आप अल्ला, आपे राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तेरी तत्त दिवार, पुरख अबिनाशी खेल अपार, निरगुण वसे अद्धविचकार, आप आपणा आसण लांयदा। त्रैगुण तेरा महल्ल अपारा, हरि हरि आप उपांयदा। लोआं पुरीआं इक्क सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी तन मुनारा, पंज तत्त जोड़ जुड़ांयदा। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहरा, सच सिँघासण आसण लांयदा। निर्मल बाती कर उज्यारा, कमलापाती खेल खिलांयदा। साचा साकी बण वणजारा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। त्रैगुण तत्त भर भण्डारा, ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। रत्ती रत्त ना कोई सहारा, रक्त बूंद ना कोई वखांयदा। शब्द अगम्मी सच धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। सच सिँघासण आसण भारा, पुरख अबिनाशण डेरा लांयदा। थिर घर सोहे बंक दुआरा, सचखण्ड नाउँ धरांयदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कारा, आपणी कार कमांयदा। अलक्ख अगोचर भेव न्यारा, भेव कोई ना पांयदा। सति पुरख निरँजण एक एकँकारा, आपणी कल वरतांयदा। आपे वसे धाम न्यारा, उच्च महल्ल अटल अगम्म अथाह बेपरवाह आप आपणा आसण लांयदा। सिफ्त सिफ्ती सिफ्त सलाह, आप आपणा नाम चलांयदा। त्रैगुण बणे आप मलाह, आपणा पर्दा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर पसारा, त्रैगुण तेरी बन्ने धारा, ब्रह्मा विष्न शिव करे लेखा लेख ना कोई जणांयदा। ब्रह्मा वेता रिहा पुकार, हरि का भेव ना कोई पांयदा। त्रैगुण माया सच प्यार, साचा संग निभांयदा। शब्दी देवे शब्द धुन्कार, आपणा हुक्म सुणांयदा। लेखा जाणे धुर फ़रमान, भेव कोई ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे लांयदा। ब्रह्मा वेता उठ निधान, हरि साचा आप जगाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ।

लेखा लिखाए आप महान, लिखणहारा आप अख्वाईआ। तेरी सेवा कर परवान, तेरी झोली पाईआ। मेरा मन्त्र तेरा ज्ञान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। एका नूर श्री भगवान, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द अनादी मारे बाण, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे देवे एका वर, एका सिख समझाईआ। ब्रह्मे वर घर साचा पाउणा, हरि हरि शब्द अलांयदा। हरि का भेव भेव खुल्हाउणा, हरि साचा भेव खुल्हांयदा। लोकमात दी बणत बणाउणा, लक्ख चुरासी वेस वटांयदा। तेरा नाम नाम प्रगटाउणा, तेरी क्रिया कर्म कमांयदा। तेरा लेखा लेख लिखाउणा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। चारे जुगां मार्ग लाउणा, जुग जुग पन्ध मुकांयदा। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझांयदा। साची सिख्या सिख मति, हरि साचा आप समझांयदा। एका रूप ब्रह्म तत्त, पारब्रह्म दरसांयदा। आपणी रंगे साची रत्त, रत्ती रत्त रत्त टिकांयदा। आदि जुगादी जाणे मित्त गत, भेव कोई ना पांयदा। ना कोई वार ना कोई थित्त, बरस मास ना कोई रखांयदा। पुरख अबिनाशी आप आपणा करया हित्त, नित नवित्त वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, एका हुक्म सुणांयदा। हरि हरि हुक्म धुर फ़रमाना, हरि हरि आप उपाईआ। थिर घर बैठा साचा राणा, साचा अदल कमाईआ। शब्द अनादी एका गाणा, एका राग अल्हाईआ। ब्रह्मे बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपणा मेल आपे लए कराईआ। सचखण्ड दुआरा साची धार, हरि साचा आप चुआंयदा। चरन कँवल इक्क अधार, एका रूप दरसांयदा। आपणा अमृत आपणे उत्ते आपे वार, चरनोदक नाउँ रखांयदा। सचखण्ड दुवारिउँ आए बाहर, एका बूंद बरसांयदा। ब्रह्मा मंगे बण भिखार, अट्ठे नेत्र राह तकांयदा। कृपानिध किरपा धार, एका एक रस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। अमृत बूंद ठंडी ठार, चरनोदक चरन उपाईआ। ब्रह्मा दित्ता कर प्यार, एका रस खुवाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अन्दर मन्दिर आप सुणाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म हो त्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा बल आपे धार, आपणा जोबन रिहा हंढाईआ। पुरख अबिनाशी दए अधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, ब्रह्मा नाउँ धराईआ। आदि अनादी पुरख करतार, अकल कला वरताईआ। शब्द शब्दी शब्द धुन्कार, ब्रह्म विद्या समाईआ। चार चार हो उज्यार, चार चार जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्मा शिव विष्न तिन्न प्यार, त्रैगुण चौथी नाल रलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कल कलिजुग बन्न्हे धार, आप आपणी खेल खिलाईआ। नौं नौं चार कर ख्वार, नौ सत्त वेस वटाईआ। दो इक्क

दस दए अधार, शब्द शब्द करे कुड़माईआ। अन्त भगवन्त पावे सार, दूसर भेव कोई ना पाईआ। इक्क इकल्ला एका एकँकार, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। साधां सन्तां सेवादार, आपणी सेव रिहा कमाईआ। एका देवे नाम अधार, हरि हिरदे विच टिकाईआ। गा गा थक्का सर्ब संसार, गावत गावत हरि का रूप ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आपणा मेवा आपे फल खुवाईआ। त्रैगुण तेरा फुलया फुल्ल, फुलवाड़ी आप महिकाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटल, लोकमात वेख वखाईआ। कलिजुग वरते आपणी कल, कलधारा वड्डी वड्याईआ। आपणी जोती दीपक आपे गया बल, आपणी आप करे रुशनाईआ। आपणा आसण आपे मल्ला, आपे बैठा डेरा लाईआ। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा उठाईआ। त्रैगुण लग्गा जगत सला, त्रैगुण अग्नी तत्त तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे जुग चौथी धार, आपणी आप चलाईआ। धार अवल्ली पुरख अबिनाशी, निरगुण आपणी आप चलांयदा। सरगुण रूप सर्ब प्रकाशी, परम पुरख अख्वांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशी, आप आपणी खेल खिलांयदा। त्रैगुण तेरी पावे रासी, गोपी काहन सर्ब नचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव वेखण पासी, दर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। गुणवन्ता हरि भगवन्त, आदि आदि वड्याईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी जोत जगाईआ। आपे नाम मणीआं मंत, आपे शब्दी डंक वजाईआ। आपे रूप साध सन्त, आपे भगत करे कुड़माईआ। आपे लक्ख चुरासी जीव जन्त, खाणी बाणी आप अख्वाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढाईआ। आपे फुल्ल फुलवाड़ी रुत्त बसन्त, ख़िज़ां बहार आप हो जाईआ। आपे महिमा जाणे अगणत, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। त्रैगुण तेरा पार किनारा, हरि साचा आप करांयदा। पहलों ढाया पंज तत्त मुनारा, आपणा नाउँ ना कोई रखांयदा। दूजे निरगुण जोत कर उज्यारा, निरगुण आपणा नाउँ उपजांयदा। निहकलंका हरि अवतारा, शब्दी डंक रखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पार किनारा, पारब्रह्म मेल मिलांयदा। त्रैगुण वेखे विच संसारा, आपणी गंढु खुल्हांयदा। जगत जगदीश हो उज्यारा, एका डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। त्रैगुण तेरा कर प्रकाश, सचखण्ड खेल खिलाया। अन्तिम तेरा कर विनास, लोकमाती जोत धराया। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, रवि ससि ना कोई चमकाया। ना कोई पवण ना कोई स्वास, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। मात गर्भ ना रख्या वास, पित गोद ना कोई उठाया। गुरमुख अन्दर कर प्रकाश, आपणा जामा आपे पाया।

गोबिन्द सूरा दासी दास, सेवक सेव कमाया। आपे लक्ख चुरासी करे नास, त्रैगुण आप लए उपजाया। आपे लेखा जाणे बरख मास, दिवस रात गणत गणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त, एका नूर करे रुशनाया। आपे वेखे भारत खण्ड, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जम्बु दीप वंडी वंड, दीपक जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड खण्ड खण्ड, सति सत्त सत्त वटाईआ। जन भगतां अन्तिम पावे ठंड, आप आपणी दया कमाईआ। एका अक्खर नाम वंड, सोहँ करे सच पढ़ाईआ। गोबिन्द हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। नाता तोड़े भेख पखण्ड, सच सुच्च वरताईआ। लहिणा देणा चुक्के नार दुहागण रंड, विभचार ना कोई वखाईआ। एका रूप करे वरभण्ड, आप आपणी दया कमाईआ। नंगी होवे ना किसे कंड, जो जन आए सरनाईआ। त्रैगुण माया देवे वंड, एका इक्की सिक्खी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिक्खी धार इक्क वखाईआ। तिक्खी धार तेज कटार, हरि साचा सच वखांयदा। शब्द खण्डा अपर अपार, दोवें मुख सलांहयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, अग्गे हो ना कोई बचांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। शिव शंकर गलों लाहे हार, कंठ माला ना कोई वखांयदा। विष्नूं वंसी करे पुकार, अग्गे सीस झुकांयदा। त्रैगुण माया होए ख्वार, लोकमात ना कोई बचांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आदि जुगादी हरि निरँकार, दूसर कोई ना विच रखांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंक नाउँ रखांयदा। भगतन मीता कर प्यार, गुरमुख साचे आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द लहिणा मूल चुकांयदा। गोबिन्द लहिणा हरि चुकाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। पिछला लेखा पूर कराउणा, अग्गे बाकी रहे ना राईआ। वरनां बरनां आप मिटाउणा, एका सरन समझाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहाउणा, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, इष्ट देव इक्क हो जाईआ। एका अमृत जाम पिआउणा, अन्तर आत्म आप रखाईआ। ब्रह्मण शूद्र वैश क्षत्री एका रंग रंगाउणा, एका ब्रह्म करे कुड़माईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा आप अख्वाउणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। जिस दुआरे हरि चरन छुहाउणा, सोभा सोभ सोभ वड्याईआ। जीवां जन्तां साधां सन्तां निउँ निउँ सीस झुकाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। डल्ला झल्ला लेखे लाउणा, सगली कुल तराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व रूप साचा भूप वसणहारा चार कूट, दहि दिशा पाए हिस्सा, नेत्र नैण लोचण जगत ना दिसा, गुरमुखां दरस दिखाईआ।

६ सावण २०१६ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे घर नाथे वाल ज़िला फ़िरोज़पुर

ब्रह्मा विष्न शिव अधार, इक्क इकल्ला एका एकँकारया। लक्ख चुरासी कर पसार, आप आपणी जोत टिका ल्या। गुरमुख वंडी वंड अपार, मन मति बुध रूप वटा ल्या। पंज तत्त करे प्यार, पंचम नाता जोड़ जुड़ा ल्या। पंचम भरे जगत भण्डार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच वसा ल्या। पंचम मीता कर प्यार, हरि शब्द धुन उपजा ल्या। साचा मन्दिर कर उज्यार, दीवा बाती इक्क जगा ल्या। साचा शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद साचा ताल वजा ल्या। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी डेरा ला ल्या। इक्क इकल्ला कर आकार, निरगुण सरगुण वेख वखा ल्या। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ पावे सार, पारब्रह्म संग निभा ल्या। एका जोती नूर पसार, घट घट अन्दर वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहा ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव कर परवान, हरि साचे सच समा ल्या। त्रैगुण माया कर प्रधान, आपे खेल खिला रिहा। आपे पंचम करे निशान, आपे हरि वेख वखा रिहा। आपे वसे दो जहान, लोकमात आपे वेस वटा ल्या। आपे जोत श्री भगवान, आपे पंज तत्त डेरा ला ल्या। आपे राज भूप सुल्तान, राउ रंक आप अख्वा रिहा। आपे मन्दिर वसे सच मकान, आपे ख़ाकी ख़ाक डेरा ला ल्या। आपे बंधन ज़िमी अस्मान, गगन पतालां आपे डोरी पा ल्या। आपे आप उपाए रवि ससि भान, आपे आपणा माण रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरता ल्या। आपे ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, आपणी दया कमाईआ। आपे बख्शे सच भण्डारा, आपे रिहा वरताईआ। आपे करनी कराए करनेहारा, एका हुक्म जणाईआ। आपे आदि लै अवतारा, अन्त रूप आप वटाईआ। आपे वसे सच मुनारा, उच्च अटल इक्क अख्वाईआ। आपे जोत निरगुण धारा, आपे सरगुण नाउँ धराईआ। आपे खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सिक्दार, त्रै त्रै लोक उपजांयदा। आपे वेखे विगसे करे विचार, आपे आपणा हुक्म चलांयदा। आपे पावणहार सार, आपे लेख लिखांयदा। आपे उत्पत करे सर्ब संसार, आपे मेट मिटांयदा। आपे लक्ख चुरासी दए अधार, निरगुण बाती आप जगांयदा। आपे कमलापाती मीत मुरार, नारी कन्त आप हो जांयदा। आपे राकी शाह अस्वार, आपणा घोड़ा आप दौड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा विष्न सिव कर ध्यान, आपणी सेवा लाईआ। आपे पाए आपणी आण, आपणे भाणे विच रखाईआ। आपे बख्शे चरन ध्यान, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगन रंग रंगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव मीत मुरार, एका एक एकँकारया। आपे

करे आपणा आप पसार, आपे वेख वखा रिहा। आप उपाए ब्रह्मण्ड खण्ड किनारा, लोआं पुरीआं रचन रचा ल्या। आप रचाए रवि ससि सतारा, मण्डल मण्डप आप सुहा ल्या। आपे ज़िमी अस्मानां रक्खे पाड़ा, आप आपणा गुण वखा ल्या। आपे वजाए आपणा नगारा, आपे ढोल वजा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहा ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव सुत्त हरि सुत्त दुलार, आपणे आप उपजांयदा। आपे खेले खेल अपर अपार, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। आपे लक्ख चुरासी दए अधार, आप आपणा मेल मिलांयदा। ब्रह्मा वेता कर प्यार, एका ब्रह्म जणांयदा। विष्नूं भरया सच भण्डार, आदि जुगादि वरतांयदा। शिव शंकर मारनहारा मार, पंचम लेखा लेख चुकांयदा। पुरख अबिनाशी साची कार, जुग जुग आपणी आप करांयदा। तिन्नां लोकां वस्सया बाहर, त्रैगुण विच ना आंयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आवण वारो वार, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। देवी देव वड बलकार, जोद्धा सूरबीर आप अख्वांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकांयदा। जोती नूर कर उज्यार, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, आप आपणा मता पकांयदा। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग वखांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। जुगा जुगन्तर मारे मार, लक्ख चुरासी मेट मिटांयदा। निरगुण जोती नूर उज्यार, सरगुण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव नाम सौदागर, एका वणज करांयदा। लक्ख चुरासी वसे काया गागर, आपणा मुख छुपांयदा। जन भगतां करे कर्म उजागर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त आपणा वेस वटांयदा । आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग धार चलाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग बणाए साची बणता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा धाम इक्क सुहंता, घर साचे वज्जी वधाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण वेखे थाउँ थाँईआ। त्रैगुण तेरा तत्त मुनारा, हरि हरि वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। मानस मनुक्ख दए हुलारा, इक्क हुलारा नाम रखांयदा। अन्दर मन्दिर पावे सारा, डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। निरगुण वणज करे वणजारा, मन मति बुध नाल रलांयदा। मन पंखी उड़े दहि दिश धारा, चारों कुन्ट फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। मन सिक्दार काया मन्दिर, हरि हरि आप बहाया। करे राज डूँघी कन्दर, आपणा हुक्म चलाया। चार कुन्ट दहि दिशा फिरे बन्दर, दिवस रैण एका रंग रंगाया। नेत्र नैण

ममता अन्धड़, मोह विकारा जाल फसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। मन शाह भूप सुल्तान, पंज तत्त वड्याईआ। आपणा देवे इक्क फ़रमान, एका कर्म कमाईआ। नौ दर वेखे जगत दुकान, दिवस रैण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपणी अंस आप उपजाईआ। मन मनुआ ब्रह्म अंस, जोती नूर सुबाया। आपे जाणे आपणी अंस, आपे लेख लिखाया। बाशक गाए ना मुख सहँस, दोए सहँसर जिह्वा ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाया। मति मतवाली दिसे ख़ाली, तन मन्दिर दर सुहांयदा। चारों कुन्ट घटा काली, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। फल ना दिसे किसे डाल्ही, फुल्ल फुलवाड़ी ना वेख वखांयदा। मन मनुआ बणया जगत वाली, आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मति एका तत्त, एका रत्त रखांयदा। बुध बबेकी लग्गा सेक, तत्व तत्त जलाया। त्रैगुण मीता रिहा वेख, आप आपणी दया कमाया। आपे लिखणहारा लेख, आपे मेट मिटाया। आपे होए दर दरवेश, आप आपणा वेस धराया। सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष, सेवक सेवादार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण वंडी वंड, निरगुण वस्सया जेरज अंड, सरगुण मेला सहिज सुबाया। पंज तत्त तत्त प्रकाश, आपणा आप करांयदा। आपे पाए साची रास, आपणा मण्डल आप सुहांयदा। आपे रक्खे अन्दर वास, आपे मुख छुपांयदा। आपे होए दासी दास, आपे हुक्म चलांयदा। आपे दाता शाहो शाबाश, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे निरगुण जोत करे प्रकाश, सरगुण रूप आप वटांयदा। आपे वासा रक्खे दस दस मास, अजूनी रहित आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। अजूनी रहित पुरख करतार, पंज तत्त डेरा लांयदा। साचा दीपक इक्क उज्यार, एका डगमगांयदा। दिस ना आए विच संसार, नैण नेत्र ना कोए दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आपे वर, आपणी आप करी कुड़माईआ। त्रैगुण माया अग्गे धर, तिन्नां वंड वंडाईआ। एका झोली रिहा भर, एका वस्त वखाईआ। एका हुक्म देवे दर, एका रिहा समझाईआ। एका घाड़ण रिहा घड़, एका भाण्डे रिहा उपजाईआ। एका अन्दर गया वड़, एका रिहा उठाईआ। एका विद्या गया पढ़, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव सेवक सेवा सच कमाईआ। ब्रह्मे सेवा कर परवान, हरि अन्तिम अन्त वड्याआ। चौथे जुग करे परवान, नौ नौ चार लेखा आप चुकाया। आपे देवे धुर फ़रमान, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। अन्तिम वेला पुज्जया आण, थिर कोए रहिण ना पाया। प्रगट होए

७८६ ०८

श्री भगवान, निहकलंका नाउँ धराया। पिछला मेटे सर्ब निशान, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाया। छड्डुणा पए ब्रह्म मकान, पुरी ब्रह्म ना कोई वसाया। जोती मेल श्री भगवान, अन्तिम मेला दए कराया। गुरमुख साचा चतुर सुजाण, तेरा रूप लए वटाया। आपे जाणे जाणी जाण, दूसर भेव किसे ना पाया। खाणी बाणी होई हैरान, लेखा लेख ना कोई जणाया। वेद पुराण सर्ब कुरलाण, अञ्जील कुरान देण दुहाया। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान, कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, लोकमात फेरा पाया। रवि ससि सर्ब मिट जाण, लेखा चुक्के ज़िमी अस्मान, अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताया। शिव जी तेरा अन्त किनारा, हरि हरि आप सुणांयदा। कलिजुग देवे अन्त हुलारा, बेड़ा पार वखांयदा। नाता तुटे त्रैगुण धारा, आपणे तत्त मिलांयदा। बाशक तशक ना कोई सहारा, ना कोई दर सुहांयदा। भोले नाथ करे ख़बरदारा, भोला भाउ आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। भोले नाथ उठ कर त्यारी, हरि साचे शब्द जणाईआ। कलिजुग तेरी आई वारी, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारी, पंज तत्त ना कोई वखाईआ। दो जहानां करे सच्ची सिक्दारी, शाह सुल्तानां वड वड्याईआ। लेख चुकाए वारो वारी, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिखां देवे नाम अधारी, आप आपणी बूझ बुझाईआ। करे खेल वड संसारी, सहिंसा कोई रहिण ना पाईआ। जगत जगदीशा खेल अपारी, आप आपणी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर आपणा घर, आपे वेख वखाईआ। शिव शंकर नाता तोड़ तुड़ाउणा, कलिजुग अन्तिम लेख लिखांयदा। गुरमुख साचे साचा माण दवाउणा, आप आपणा माण धरांयदा। आपणी वंड आप वंडाउणा, आपणा नाउँ उपजांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब उठाउणा, ध्रू प्रहलाद आप समझांयदा। जेरज अंड पन्ध मुकाउणा, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। निरगुण साचा चन्द चढ़ाउणा, रवि ससि मुख शरमांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, ब्रह्मा शिव मूल चुकांयदा। विष्नूं मेला मात कराउणा, भगवन जोती जोत जगांयदा। दोहां रंग इक्क चढ़ाउणा, एका रंग रंगांयदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पाउणा, साचा सगन मनांयदा। गुर गोबिन्द नाल रलाउणा, गोबिन्द गढ़ सुहांयदा। सम्बल नगरी डेरा लाउणा, त्रैगुण तेरा घर वखांयदा। तेरा अन्तिम मन्दिर ढाउणा, आप आपणा मेट मिटांयदा। दीपक जोती इक्क जगाउणा, दिवस रैण डगमगांयदा। शब्द सरूपी शब्द चलाउणा, शब्द गुर इक्क अख्वांयदा। ना कोई दूसर संग उपाउणा, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। ब्रह्मा शिव तख्तों लहाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नर नरेश निराकार, त्रैगुण मारनहारा मार, पंज तत्त करे खुआर, नौ दर खोज खुजांयदा।

नौ दर जगत राह, कलिजुग अन्त दए दुहाईआ। निरगुण सतिगुर बण मलाह, एका जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द गुर पकड़े बांह, आपणा मेल मिलाईआ। जन भगतां देवे सच सलाह, एका मति समझाईआ। सो पुरख निरँजण लैणा गा, हँ ब्रह्म रूप समाईआ। नाता तुट्टे भैण भ्रा, मात पित ना कोई अख्वाईआ। नर निरँकारा देवे ठंडी छाँ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, ब्रह्मा विष्न शिव देण दुहाईआ। हरि का भेव कोई जाणे ना, आदि अन्त आपे भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे दाता सूरा सरबंग, आपे ख़ालक ख़लक वसणहारा, जुग जगत जुगत जोत आपणी आप करे रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निराकार, दो जहानां खेल अपार, लोकमात खेल खिलाईआ।

७ सावण २०१६ बिक्रमी मुकंद सिँघ दे घर पिण्ड महराज ज़िला फ़िरोज़पुर

सतिगुर सच्चा शाह सुल्तान, पारब्रह्म पुरख निरंकारया। दाता दानी वाली दो जहान, निरगुण नूर करे उज्यारया। एका वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहा रिहा। एका शाहो भूप राज राजान, तख़्त ताज इक्क वखा ल्या। एका देवणहारा धुर फ़रमान, एका हुक्मी हुक्म चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ रखा ल्या। निरगुण दाता आदि निरँजण, आदि पुरख वड्याईआ। पुरख अबिनाशी साचा सज्जण, घर मेला बेपरवाहीआ। आपे रक्खे आपणी लज्जण, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर निराकार, एक एकँकारा नाउँ धराईआ। एकँकारा पुरख अकाल, अकल कला अख्वाईआ। सतिगुर साचा दीन दयाल, थिर घर बैठा आसण लाईआ। शब्द सरूपी दीन दयाल, जुग जुग आपणी चलत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल अगम्म अथाह, भेव अभेद आप छुपाईआ। अछल अछला हरि निरँकार, निरगुण जोती नूर समांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, मूर्त अकाल आप अख्वांयदा। अजूनी रहित कर पसार, आप आपणी धार बंधांयदा। एका नाम कर जैकार, एका नाअरा लांयदा। रूप रंग ते वस्सया बाहर, दिस किसे ना आंयदा। सच महल्ला उच्च मुनार, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप निराकार आप अख्वांयदा। सति सरूपी शाह सुल्ताना, आदि पुरख वड्याईआ। एका वसे सच मकाना, सतिगुर आपणी बणत बणाईआ। एका देवे धुर फ़रमाना, एका शब्द जणाईआ। एका

देवे राग तराना, एका नाद वजाईआ। एका खेले खेल दो जहाना, प्रभ साचा वड वड्याईआ। एका गोपी एका कान्हा, एका मण्डल रास रचाईआ। एका रवि ससि तेज करे कोटन भाना, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता करनेहार, कादर करता आप हो जाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, अलक्ख अगोचर भेव ना आया। सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, आप आपणा मन्दिर आप उपाया। इक्क इकल्ला एकँकार, एका आसण लाया। आदि निरँजण हो उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। आदि शक्ति कर प्यार, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटाया। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, एका रंग समांयदा। आपे वस्सया सच महल्ला, थिर घर साचा आप वखांयदा। आपणी करनी आपे फला, फुल्ल फुलवाड़ी आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, नाद अनादी आप वजांयदा। एका नाद शब्द धुन्कार, हरि साचा आप वजाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, जुग जुग आप चलाईआ। आप आपणा कर प्यार, आपे मेला सहिज सुभाईआ। आपे चेला गुर बण अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। आपे ब्रह्मा वेता मीत मुरार, त्रैगुण माया झोली पाईआ। आपे विष्नूं हो उज्यार, सांगोपांग सेज हंढाईआ। आपे शंकर दए अधार, हथ्थ त्रशूल फड़ाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर अलाहीआ। आदि जुगादि बन्ने धार, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। पंज तत्त कर प्यार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। घर सुहञ्जणा पुरख बिधाता, एका एक अख्वांयदा। आपे बैठा कमलापाता, कँवल नैण डगमगांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, आपणी सिख्या इक्क समझांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सर्ब कल आपे समराथा, परम पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। कुलवन्ता हरि भगवन्त, अकल कला कल धारीआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता भेव न्यारीआ। आपे रसना जिह्वा मणीआ मंत, आपे शब्द जैकार लाईआ। आपे महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे सेज हंढाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, एका रंगण नाम रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका तत्त एका रत्त एका ब्रह्म समझा रिहा। पुरख अबिनाशी साचा तत्त, आपणा आप समझांयदा। निरगुण बीज बीजे आपणे वत, आपणा फुल्ल आप उपांयदा। आपे जाणे मित गत, वेद कतेब भेव ना आंयदा। आपे बन्ने आपणा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, जोती करता हरि निरँकार, लक्ख चुरासी पावे सार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, हरि हरि जोत जगाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे खेला, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण चाढ़े तेला, थिर घर बैठा सगन मनाईआ। आपे जाणे आपणा वेला, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना पाईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, निरगुण धार हरि निरँकार आप उपाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत जोत उजाला, हरि हरि आप उपांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, गोबिन्द नाउँ रखांयदा। संग रखाए काल महांकाला, दर किसे ना आंयदा। आपे चल्ले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, चार दिवार ना कोई उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा बंक दुआर, पुरख अबिनाशी कर त्यार, निरगुण सरगुण आसण सच सिँघासण डेरा लांयदा। निरगुण आसण धुर दरबारा, हरि साची रचन रचाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, नूरो नूर डगमगाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। ना कोई दूसर दिसे सहारा, ना कोई तीजा वेस वटाईआ। चौथा घर ना कोई किनारा, पंचम मेल ना कोई मिलाईआ। छप्पर छन्न ना कोई उसारा, सति सतिवाद वड्डी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, आप आपणी रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, वर दाता आप हो जाईआ। आपे वर दाता हरि निरँकार, आपे हुक्म चलांयदा। आपे मारनहारा मार, आपे लेख मुकांयदा। आपे विष्नू विश्व कर आकार, वास्तक रूप आप वटांयदा। आपे शिव शंकर लए सँघार, आपे लेखा लेख जणांयदा। आपे त्रैगुण कर उज्यार, पंचम तत्त आप मिलांयदा। आपे निरगुण सरगुण दए अधार, आपणी खाणी आप जणांयदा। आपे खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। हरि साचा वेस वटंदड़ा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल खिलंदड़ा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटंदड़ा, लोकमात करे रुशनाईआ। एका साचा नाम जपंदड़ा, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता वेख वखंदड़ा, द्वापर आपणा खोज खुजाईआ। कलिजुग काला लेख मिटंदड़ा, झूठी मिटे मस्तक छाहीआ। पावे सार जूठ झूठ पखण्डड़ा, मन मति रिहा दुरकाईआ। जोती जामा भेस वटंदड़ा, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। नानक निरगुण लेख लिखंदड़ा, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। वेद व्यासा राह वखंदड़ा, पुराण पुराणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। खेल खिलंदड़ा जोत जगन्दड़ा, परम पुरख करतारया।

भेस वटंदड़ा लेख लखंदड़ा, निरगुण लोकमात लए अवतारया। आपणा लेखा पूर करंदड़ा, भरम भुलेखा जगत घड़ंदड़ा, एका शब्दी शब्द डंक वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटा ल्या। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। नाम खड़ग खण्ड तेज़ प्रचण्ड तिक्खी रक्खे धारा, दो जहानां वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्डा जेरज अंडां पावे सारा, आप आपणी वंड वंडांयदा। नार दुहागण रंड करे खुआरा, कलिजुग अन्तिम कंड वढांयदा। देवे दंड देवणहारा, आप आपणी कल वरतांयदा। एका नाम सच्चा जाए वंड, चार वरनां झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। निहकलंक वड दाता सूर, निरगुण हरि बेपरवाहीआ। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। गुरमुखां बख्शे साची चरन धूढ़, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निहकलंक पुरख करतारा, पारब्रह्म अख्वाया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, आप आपणा नाउँ धराया। एका नाम इक्क जैकारा, एका नाअरा लाया। सो पुरख निरँजण पावे सारा, जगत ब्रह्म वेख वखाया। चारों कुन्ट दए हुलारा, दहि दिशा फेरा पाया। नौ खण्ड पृथ्मी मारे मारा, सत्तां दीपां डेरा ढाया। राज राजाना करे ख्वारा, शाह सुल्तानां मेट मिटाया। चार वरनां वखाए इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां एका धाम बहाया। एका वणज कराए वणजारा, नाम हट्ट इक्क खुल्हाया। चौदां हट्टां दए अधारा, चौदां लोकां वेख वखाया। चौदां तबकां लाए पाड़ा, सतारां हाढ़ा वेस वटाया। लोआं पुरीआं वेख अखाड़ा, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मा विष्न शिव लेखा दए चुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम रथ, हरि साचा आप चलांयदा। आपे जाणे आपणी महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोई सुणांयदा। आपे तेरा अन्त विछाए लोकमात सथ, तेरा सथ्थर इक्क वखांयदा। जो दीसे सो जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पांयदा। ना कोई मन्दिर मस्जिद दिसे मठ्ठ, शिवदुआला ना कोई सुहांयदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ तट्ट, गंगा गोदावरी ना कोई नुहांयदा। लेखा चुक्के जूठ झूठ पंज तत्त तेरा हट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, हरि साचे जोत जगाईआ। भेख पखण्डा मेट मिटाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चार वरनां एका रंग रंगाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश

एका धाम बहाईआ। अठारां बरना मेट मटाउणा, शरअ शरीअत इक्क सिखाईआ। अञ्जीलां कुरानां वक्त चुकाउणा, नबी रसूलां रिहा समझाईआ। पीर फ़कीर शाह हकीर दस्तगीर मेट मिटाउणा, मुलां मुसायक शेख़ ना कोई अख्वाईआ। ऐनलहक्क नाअरा ना किसे लाउणा, मुकामे हक्क ख़ुदाईआ। ख़ालक खलक विच आप समाउणा, आप आपणी जोत कर रुशनाईआ। चौदां तबकां वेख वखाउणा, सदी चौदवीं दए दुहाईआ। संग मुहम्मद चार यार मेल मिलाउणा, रफ़ीक इक्क तारीक रिहा वखाईआ। लाशरीक एका एक रूप वटाउणा, आप आपणी कल वरताईआ। अल्ला राणी मुख शरमाउणा, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। मेकाईल ज़बराईल असराईल असराफील निउँ निउँ सीस झुकाउणा, दोए जोड़ रोवण मारन धाहीआ। पुरख अबिनाशी नाम खण्डा हथ्थ उठाउणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाउणा, आप आपणी जोत करे रुशनाईआ। अस्व घोड़ा आप दुड़ाउणा, शाह अस्वार आसण लाईआ। सोलां कलीआं आसण पाउणा, नौ सत्त वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठाउणा, पुरीआं लोआं ख़ाली रिहा कराईआ। करोड़ तेतीसा पन्ध मुकाउणा, गण गंधर्ब ना कोई वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा फंद कटाउणा, अन्तिम फंद रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बत्ती दन्द एका ढोला हरि हरि साचा गाउणा, चार वरन करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका मन्दिर आप बहाउणा, एका इष्ट देव दरसाईआ। राम कृष्न ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार रूप वटाउणा, नानक गोबिन्द नज़री आईआ। सो पुरख निरँजण आपणा वेस वटाउणा, एका ब्रह्म करे कुड़माईआ। आत्म अन्तर दीपक जोत जगाउणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दूई द्वैती मेट मिटाउणा, आसा तृष्ना दए जलाईआ। हउमे हँगता गढ़ तुड़ाउणा, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। बज़र कपाटी पर्दा लौहणा, आप आपणा दरस दखाईआ। गुरमुख सज्जण मीत मुरारे सतिगुर तेरा राह तकाउणा, गुर गुर सेव कमाईआ। शब्द डोरी तन्द बंधाउणा, साचा सगन मनाईआ। सुरत सुवाणी बहि बहि गाउणा, मेल मिलावा साचे माहीआ। एका मन्दिर आप सुहाउणा, निज घर आत्म डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, ईश जीव जीव जगदीश जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत जोत गुर दीना, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ। जिस जन हिरदे हरि हरि चीना, हरि हिरदा कँवल खलाया। अट्ठ पहर रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल रलाया। आपे होए बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाया। जन भगतां करे ठांडा सीना, अमृत जल मुख चुआया। लक्ख चुरासी नालों वक्ख कीना, राए धर्म ना दए सजाया। पार कराए लोकां तीनां, घर चौथे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पुरख अबिनाशी देवे वर, गुरमुख सज्जण लए तराया। गुरसिख

सज्जण मीतड़ा, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। काया चोली रंगे चीथड़ा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी आप तरांयदा। आदि जुगादी ठंडा सीतड़ा, अग्नी तत्त ना कोई वखांयदा। जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणी रीतड़ा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। आपे देहुरा गुरदुआर मन्दिर मसीतड़ा, शिव दुवाला मट्ठ आप अख्वांयदा। आपे अठसठ होए तीर्थड़ा, पार किनारा आप सुहांयदा। आपे कौड़ा करे मिट्ठा रीठड़ा, अमृत धार आप चुआंयदा। आपे जुग जुग गाए आपणा सुहागी गीतड़ा, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका ढोला शब्द सुणांयदा। साचा ढोला शब्द जैकार, सो पुरख निरँजण आप अलांयदा। हँ ब्रह्म पाए सार, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। मरे ना जम्मे विच संसार, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर साची कार, करनी करता आप करांयदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, लोकमात वेस वटांयदा। निहकलंका निरगुण धार, निरगुण जोती नूर डगमगांयदा। शब्द डंका अपर अपार, आपणा ताल आप वजांयदा। राउ रंकां करे ख़बरदार, आलस निन्दरा सर्ब मिटांयदा। जन भगतां करे जगत प्यार, भगत भगती नाम दृढ़ांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, आत्म अन्तर इक्क प्यार, हउमे हँगता दए निवार, साची संगता मेल मिलांयदा। गुरमुख साचा हरि हरि सज्जण, लोकमात उपजाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धुआईआ। अन्तिम आया पर्दे कज्जण, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चार कुन्टां दहि दिशा कूड़ नगारे वज्जण, राए धर्म रिहा वजाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाईआ। कोई ना किसे रक्खे लज्जण, ना होवे अन्त सहाईआ। गोबिन्द मीता इक्क अतीता सतिगुर साचा सज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जगत अखाड़ा, हरि साचा आप लगांयदा। लक्ख चुरासी लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। सम्मत सम्मती मारे मार सतारां हाढ़ा, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी धुरदरगाही साचा लाड़ा, शाहो भूप सुल्तान इक्क अख्वांयदा। पावे सार जल थल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, आपणा आप करांयदा। वेस अवल्ला पुरख करतारा, आपणा आप कराईआ। दूजी बन्न्हे कुदरत धारा, तीजे नैण दरसाईआ। चौथे पद हो उज्यारा, पंचम करे रुशनाईआ। छेवें छे दर बन्न्हे धारा, सत्तवें सति पुरख वड्याईआ। अठवें अट्ठां तत्तां वसे बाहरा, मन मति बुध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश

ना कोई उपाईआ। नौवें नौ दर करे पार किनारा, लक्ख चुरासी बेपरवाहीआ। दसवें दहि दिशा मेला मीत मुरारा, घर बैठा साचा माहीआ। निरगुण जोती दीप उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, बैठा आसण लाईआ। चतुर्भुज दए हुलारा, आपणी भुजां रिहा उठाईआ। गुरसिख आए सच दुआरा, बज़र कपाटी कुण्डा लाहीआ। जोत निरँजण सेवादारा, साची सेव कमाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, पंचम सखीआं बहि बहि मंगल गाईआ। सुरती शब्दी मेला कन्त भतारा, साची सेजा इक्क हंढाईआ। आवण जावण छुट्टा संसारा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। सतिगुर मेला मीत मुरारा, निरगुण दाता वड वड्याईआ। सुन्न अगम्मी पार किनारा, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। अलक्ख अलक्खणा अगम्म अपारा, अगम्मड़े धाम डेरा लाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े ना कोई अधारा, तत्व तत्त ना कोई उपजाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर अवतारा, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, एका मीता मिले वर, दर सच्चा इक्क सुहाईआ। गुरमुख साचे दर दरवाज़ा, हरि हरि आप सुहांयदा। परम पुरख प्रभ ग़रीब निवाज़ा, आप आपणा फेरा पांयदा। शब्द वजाए अनहद वाजा, राग रागनी मुख शरमांयदा। संग रखाए अस्व ताजा, साचा घोड़ा आप दौड़ांयदा। धुरदरगाही फिरे भाजा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखांयदा। गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां मारे वाजा, हरिजन सोए मात उठांयदा। अक्खर वक्खर देवे दाजा, सोहँ झोली पांयदा। शाहो भूप हरि ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। ख़ाक रलाए राजन राजा, दर दर भिक्ख मंगांयदा। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, सम्मत सोलां लेख लिखांयदा। आपे मक्का काअबा दो दो आबा हाजी हाजा, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। आपे सतिगुर शाह नवाबा, आप आपणा अदल कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा लेखा अनमोल, हरि साचा वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी कंडे रिहा तोल, एका तोला हरि रघुराईआ। नानक निरगुण तेरां तेरां गया तोल, तेरां तेरी धार बंधाईआ। लक्ख चुरासी काया माटी पर्दा फोल, नाम रत्ती वेख वखाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, लक्ख चुरासी ख़ाली हथ्थ दए वखाईआ। साध सन्त जीव जन्त ख़ाकी माटी रहे विरोल, लाल अनमुल्लड़ा ना कोई वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार प्या घोल, त्रैगुण माया करे लड़ाईआ। हरि का शब्द ना कोई विचोल, दरगाह साची दए मिलाईआ। अनहद ना वज्जे ढोल, घर मन्दिर दए सुहाईआ। भरमे भुल्ले पांधे रौल, वाक भविख्त ना कोई जणाईआ। गुर गोबिन्द कीता एका कौल, पुरख अबिनाशी तोड़ निभाईआ। प्रगट होए उप्पर धवल, धरत धवल आप सुहाईआ। नानक लेख ना मिटे रत्ती चौल, वेद व्यासा संग

निभाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी लक्ख चुरासी काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर पर्दा देवे फोल, भुल्ल रहे ना राईआ। अन्तर साचे कंडे देवे तोल, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा एका खोल्ह, आप आपणी करे कुड़माईआ। सोहँ अक्खर सतिगुर पूरा बोल, सतिजुग साची करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक एकँकारा इक्क उपजाईआ। एका एक एकँकारा, ओंकारा इक्क अख्वाईआ। इक्क डंक इक्क नगारा, इक्क रिहा वजाईआ। इक्क जोत निरगुण धारा, एका एक करे रुशनाईआ। एका पुरख इक्क नार, नारी कन्त इक्क अख्वाईआ। इक्क शब्द इक्क जैकार, नाअरा एका एक लगाईआ। एका एक इक्क दुआर, सचखण्ड इक्क सुहाईआ। इक्क राज इक्क सिक्दार, शाहो भूप इक्क हो जाईआ। इक्क मंग मंगे बण भिखार, इक्क भिच्छया झोली पाईआ। एका लेखा लिखे अपर अपार, लिखणहारा इक्क हो जाईआ। रूप अनूप ल्ए अवतार, इक्क आपणी कल वरताईआ। एका रंग रूप तों वस्सया बाहर, अजूनी रहित इक्क अख्वाईआ। इक्क करता पुरख बन्न्हे धार, अकाल मूर्त इक्क अख्वाईआ। इक्क निर्भय होए सच्ची सरकार, इक्क भउ सर्ब जणाईआ। इक्क इकल्ला एका घर निरगुण जोत करे उज्यार, नूरो नूर इक्क रुशनाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, इक्क एका गुर अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर एका कार, इक्क इकल्ला रिहा कराईआ। कलिजुग अन्तिम भेख न्यार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। निहकलंका नाम अपार, गुर गोबिन्द रसना गाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठा आसण लाईआ। राम दास दास राम करे विचार, पूर्ब पूर्ब वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जाईआ। नर नरायण नेत्र नैण, नैणी नैण बिगसाया। गुरमुख विरले मिल्या साचा सज्जण सैण, लक्ख चुरासी दिस ना आया। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सारे रसना कहिण, गोबिन्द दरस किसे ना पाया। गुरमुखां चुकाया लहिण देण, पिछला लहिणा रहे ना राया। साक सज्जण भैण भाई बंधप बणया मीत, मात पित आप अख्वाया। तन बस्त्र पाए सोहँ साचा गहिण, सोलां शृंगार वेस वटाया। गुर गुरमुख गोबिन्द धाम इक्ट्ठे एका रहिण, जिस जन रसना साची गाया। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस नेत्र नैण, लोचण आपणा आप खुल्हाया। गुरमुख नेत्र जाए खुल्ह, गुर सतिगुर आप खुल्हांयदा। सतिगुर पूरा कोई ना लाए मुल, कर किरपा मेल मिलांयदा। जो जन सोहँ कंडे गया तुल, दरगाह साची धाम सुहांयदा। हसदे रहिण सदा बुल, ख़ुशी ग़मी एका रंग रंगांयदा। भाग लगाए साची कुल, जन जननी लेखे लांयदा। गुरसिख तेरा जन्म अनमुल्ल, लक्ख करोड़ी कीमत कोई ना पांयदा। चरन प्रीती जो जन गया घुल्ल, हर घोली

घोल घुमांयदा। आप उपजाए सच्चा फुल्ल, फल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। लोकमात ना जाए रुल, जो जन निहकलंक नरायण नर तेरी सरन तकांयदा। सच दुआर गया खुल्ह, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। कलिजुग अन्धेर रिहा झुल्ल, पत डाली ना कोई वखांयदा। अन्तिम पाणी प्या काया चुल, साचा तत्त ना कोई उपजांयदा। जो जन चरन दुआरे आए भुल्ल, अन्तिम लेखा लेख चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पावे सार मूंड मुंडाए केसाधारी वेख वखांयदा। केसाधारी केस गढ़, गुर गुर बणत बणाईआ। पंचम अन्दर आपे वड़, आपणी कीती आप पढ़ाईआ। नाम खण्डा हथ्थ फड़, प्रेम कटार चलाईआ। लेखा जाणे सीस धड़, जीव जन्त भेव ना राईआ। अन्तिम मरने लड़ लड़, पल्लू लड़ ना कोई फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख अन्दर जाए वड़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख काया मन्दिर सच मकान, हरि साचा आप उपजांयदा। पुरख अबिनाशी निगहबान, दिवस रैण सेव कमांयदा। निरगुण दीपक जोत महान, आपणी बाती आप टिकांयदा। खेले खेल गोपी काहन, साची सखीआं वेख वखांयदा। अनहद राग अनादी आपे गाण, आप आपणा हुक्म चलांयदा। सर सरोवर अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। आत्म सेजा कर परवान, हरिजन साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, धर्म उठाए इक्क निशान, लोआं पुरीआं पाए आण, वरभण्डी देवे इक्क ज्ञान, सोहँ शब्द मात प्रधान, सतिजुग साचा राह वखांयदा।

८ सावण २०१६ बिक्रमी वधावा सिँघ दे घर पिण्ड महराज

हरि मेहरवान शाह सुल्ताना, आदि अन्त एकँकारया। पारब्रह्म श्री भगवाना, इक्क इकल्ला खेल अपारया। आदि निरँजण जोत महाना, नूरो नूर डगमगा रिहा। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड दुआरा इक्क उपा रिहा। एका राग इक्क तराना, एका शब्द अल्ला रिहा। एका देवणहारा दान धुर फ़रमाना, एका हुक्म सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वा रिहा। अबिनाशी करता एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, परम पुरख आप कराईआ। निरगुण बाती जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। ना कोई दूसर दिसे होर आकार, ना कोई रचन रचाईआ। एका वसे सच दुआर, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सिक्दार इक्क अख्वाईआ। इक्क इकल्ला खेले खेल निरगुण धार, अकाल मूर्त वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित भेव अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती नूर नूर उजाला, हरि हरि वेस वटांयदा। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क चलांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दर घर साचे सोभा पांयदा। अग्नी जोती नूर ज्वाला, आदि शक्ती डगमगांयदा। शब्द अनादी वज्जे ताला, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। वसणहारा धर्म सच्ची धर्मसाला, दर मन्दिर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, परवरदिगार आप अख्वांयदा। बेपरवाह बेअन्त, भेव कोई ना पाईआ। खेले खेल श्री भगवन्त, भगवन जोती नूर रुशनाईआ। आपे नारी आपे कन्त, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे गाए आपणा छंत, आपणा शब्द आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर निराकार, निरगुण नाउँ धरांयदा। मात पित ना कोई प्यार, ना कोई हित्त वखांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण ना कोई बणांयदा। ना कोई नाता पंज तत्त आकार, सरगुण वेस ना कोई धरांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। जोती बाती कर त्यार, आपणा नूर आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, सुते प्रकाश आप करांयदा। सुते प्रकाश लाल गुलाल, हरि साची रचन रचाईआ। कंचन रूप जोत जलाल, जोती नूरी बेपरवाहीआ। सूहा वेस दर दरवेश मूर्त अकाल, इक्क वखाईआ। चौथी धार छुटी कार, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। पीला वेस नर नरेश, नर हरि साचा आप मुकाईआ। नीली धार आपे वेख, आपणा रंग रंगाईआ। काला रंग साचा संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला एकँकार, आपणा आप करांयदा। वलीआ छलीआ सिरजणहार, भेव कोई ना पांयदा। वसे नेहचल धाम अटलया कर पसार, दीवा बाती इक्क रखांयदा। कमलापाती हो त्यार, आपणी गाथी आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, उच्च अटला नेहचल धाम पुरख अबिनाशी आपणा आप उपांयदा। वस्सया घर मन्दिर सुल्तान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। एका तख्त ताज श्री भगवान, पारब्रह्म आप हंढाईआ। आदि निरँजण फड़ निशान, सच दुआरे रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला सच्ची सरकार, निरगुण खेले खेल अपार, आपणी रचना आप रचाईआ। निरगुण महल्ला उच्च अटारी, सचखण्ड आसण लांयदा। इक्क इकल्ला खेल अपारी, ब्रह्मण्ड खण्ड वेस वटांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारी, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ निरँकारा वेस मदारी, वेस अवेसा वेस करांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द सलाह, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। हुक्मे अन्दर हरि हरि वस्सया, हरि हुक्म वड्डी वड्याईआ। आपणे हुक्म आपे वस्सया, आपे सेव कमाईआ। पुरख बिधाता फिरे नस्सया, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सेव लगाए रवि सस्सया, जोती नूर डगमगाईआ। बाण निराला तीर एका कस्सया, एका चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे निरगुण रूप आपणे दुआरे बहि बहि आपे हस्सया, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे आपणा वर, आपणी झोली आप भराईआ। आपणा वर आपे दे, आपे खेल खिलांयदा। आप आपणा लाए नेंह, आपे तोड़ चढ़ांयदा। आपे माता आपे पे, बाल बाला आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, साचा घर इक्क सुहांयदा। साचे घर पुरख अकाल, इक्क इकल्ला एकँकारया। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, आप आपणी चाल चला रिहा। खेले खेल दीन दयाल, दयानिध वेस वटा रिहा। एका बाती दीपक बाल, आप आपणी जोत जगा रिहा। ब्रह्मा विष्न करे प्रितपाल, शिव शंकर संग निभा ल्या। करोड़ तेतीसा फल लगाए डाल, सुरपति राजा इन्द संग रला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या, हरि हरि साचा वेस वटाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण मीता मीत अख्वाए, मीत मुरारा इक्क रघुराईआ। त्रैगुण वस्त झोली पाए, राजस तामस सांतक सति सति रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अप तेज वाए पृथमी आकाश सुहाए, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जागरत जोत हरि जगा, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। मन मति बुध विच टिका, निरगुण आपणी धार बंधांयदा। घर विच घर दए सुहा, महल्ल अटल उच्च मिनार इक्क वखांयदा। शब्द अगम्मी धुन उपजा, अनहद राग अलांयदा। निरगुण जोती जोत जगा, जोत निरँजण सेवा लांयदा। साचा मन्दिर वेख वखा, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना हरि रचाए, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी वेस वटाए, घट मन्दिर डेरा लाईआ। शब्द अनादी धुन उपजाए, आप आपणा राग सुणाईआ। सन्त सुहेले आप उठाए, दे मति आप समझाईआ। भगत वछल हरि रघुराए, हरिभगतन मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत जगत जुग आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगत जुग करनेहारा, करता पुरख अख्वांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, ब्रह्मा सुत्त समझांयदा। एका देवे नाम अधारा, एका बूझ बुझांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। सतिजुग तेरी साची धारा, सति पुरख निरँजण आप चलांयदा। एका शब्द एकँकारा, ओम रूप आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, दूजी बणे कुदरत धारा, हँ ब्रह्म आप अख्वांयदा। सतिजुग तेरा साचा रंग, हरि साचा वेख वखाईआ। वार अठारां आत्म सेजा माण पलँघ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे वसे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। आप धार वहाए गंग, जमना सुरस्ती आप सुहाईआ। आपे कन्ढ्ढा शौह दरयाए लँघ, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। आप वजाए नाम मृदंग, आपणा राग आप अलाईआ। सुरस्ती नार मंगी मंग, एका वस्त झोली पाईआ। छत्ती राग लाए अंग, फल फुलवाड़ी आप सुहाईआ। वड दाता सूरा सरबंग, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखाईआ। अस्व घोड़े कस्सया तंग, चिट्टा अस्व आप दुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, लोकमात करे रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड हरि खेल अपारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। रवि ससि दए हुलारा, एका किरना किरना बूझ बुझाईआ। एका मण्डल मण्डप दए सहारा, तारा मण्डल वेख वखाईआ। गगन गगनंतर हो उज्यारा, एका नूर करे रुशनाईआ। पुरी ब्रह्म वड अधारा, एका नाम पढ़ाईआ। शिव शंकर कर प्यारा, चरन कँवल इक्क दरसाईआ। विष्नूं मीता मीत मुरारा, आप आपणे अंक लगाईआ। करोड़ तेतीसा दए अधारा, एका अमृत जाम प्याईआ। गण गंधर्ब इक्क हुलारा, एका राग अलाईआ। किन्नर यच्छप कर उज्यारा, आपणी सेवा आप कराईआ। लोकमात खेल अपारा, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। नौ दस ग्यारा बीस तीस चार चार जुग वज्जी वधाईआ। राग छतीस कर प्यारा, दन्द बतीस गाईआ। इक्क हदीस सिरजणहारा, आदि जुगादि आप उठाईआ। जुग जुग पीसण रिहा पीस, आपणी चक्की आप चलाईआ। दाता दानी शाहो शबीस, लक्ख चुरासी हदीस इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। सतिजुग देवे सति हुलारा, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। आप आपणा लै अवतारा, आप आपणा रूप वटांयदा। सतिजुग साचे खेल अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। त्रेते त्रीया हरि हरि वेस, एका एक कराया। पारब्रह्म प्रभ सदा अदेस, भेव कोई ना राया। सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति गणेश आप अख्वाया। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग आप हंढाया। आपे करे आपणा वेस, इष्ट देव आप हो जाया। आपे वशिष्ट नर नरेश, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। जुग जुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप उपांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, एका हथ्थ उठांयदा। मारनहारा साची मार, गढ़ हँकार तुड़ांयदा। वेखणहारा दर दुआर, घर घर फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा पार किनार, आपे आप करांयदा। त्रेता उतरया पार किनारा, लंका गढ़ तुड़ाईआ।

रावण सुत्ता पैर पसारा, छे शास्त्र चार वेद ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई रोवे ज़ारो ज़ारा, सिर ताज ना कोई वखाईआ। राम नाम इक्क उज्यारा, एका करे पढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, भीलणी गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा वेखे घर, द्वापर साची जोत जगाईआ। द्वापर साची जोत जगा, हरि हरि वेख वखाईआ। वेद व्यासा लए उपा, पुराण अठारां लेख लिखाईआ। कान्हा कृष्ना रूप नाम बंसरी इक्क वजाईआ। अर्जन मेला सहिज सुभा, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। अन्तिम लहिणा देणा दए चुका, दोहां धिरां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। द्वापर अन्तिम उतरया पार, कलिजुग कूड़ा लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी मंगे मंग भिखार, दोवें जोड़ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, देवे वर बेपरवाहीआ। लेखा चार लक्ख बत्ती हज़ार, चौथे जुग करी कुड़माईआ। तेरा रूप होए विभचार, तेरे नाम फिरे दुहाईआ। तेरी खड़ग तेरी धार, तेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग साचे रिहा समझाईआ। कलिजुग कूड़े चढ़या चा, दर साचे ख़ुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी सच मलाह, बेड़ा मात चलांयदा। आपणा मृदंग नाम वजा, चारों कुन्ट सुणांयदा। राम नाम इक्क भुला, हरि का नाम ना कोई गांयदा। घर घर सथ्थर दिआं विछा, आप आपणा खेल खिलांयदा। नाता तोड़े पुत्तरां माँ, भैण भाई ना कोई रखांयदा। आपणी करनी करा, आपणे बल बांह, आप आपणा ज़ोर जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा लेखा आप समझांयदा। कलिजुग उठया नौजवान, धरत मात करे कुड़माईआ। नाल रलाया पंज शैतान, पंच विकार मोह रलाईआ। अन्तिम उतरया विच मैदान, आप आपणा बल धराईआ। बुध मति होई हैरान, मन डौरु इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। कलिजुग इक्क इकल्ला दए हुलारा, लक्ख चुरासी ना सके हुलाईआ। नेत्र रोया ज़ारो ज़ारा, नैण नेत्र नीर वहाईआ। मंगे मंग चरन दुआरा, निर्धन आपणा रूप वटाईआ। मेरा ना चले कोई चारा, दूसर संग ना कोई वखाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, एका शब्द रिहा सुणाईआ। तेरा मेरा इक्क अधारा, तेरा लहिणा झोली पाईआ। पंज तत्त कर आकारा, ईसा मूसा तेरा संग रलाईआ। नाल रलाए मुहम्मदी यारा, चार यारी करे कुड़माईआ। अल्ला राणी नार मुटयारा, सच करे कुड़माईआ। एका कलमा एका नाअरा, एका नबी सुणाईआ। इक्क रसूल हो उज्यारा, एका सबक पढ़ाईआ। एका शरअ शरीयत कर पसारा, कायनात इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग देवे साचा वर, तेरा संग आप निभाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम संग, संग मुहम्मद आप निभावना।

चार यारी वज्जे मृदंग, अल्ला राणी डौरु हथ्थ उठावणा। हरि हरि नाम करना भंग, एका नाअरा सच्चा लावणा। ऐनलहक्क लग्गे अंग, हक्क हकीकत इक्क वखावणा। लाशरीक सूरा सरबंग, चौदां तबकां वेख वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपणा धर, आप आपणा नाउँ वड्यावणा। कलिजुग अन्तिम दोए धार, हरि साचा आप चलांयदा। ब्रह्मा वेता ना पाए सार, भेव अभेदा भेव रखांयदा। करे कराए करनेहार, करता पुरख नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग कूड़ा रंग, चार कुन्ट चढ़न्नया। घर घर झूठ वज्जे मृदंग, दर दुआरे फिरे भन्नया। कोई ना दिसे साचा संग, लक्ख चुरासी होई अन्नया। जन भगत गुरमुख गुरसिख मंगी साची मंग, नेत्र रो रो नीर वहन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, घर साचे आपे मन्नया। गुरमुखां हरि सुण पुकार, आपणी दया कमाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। नानक रक्खया नाम संसार, माता पिता वज्जी वधाईआ। भेव ना पायण परवरदिगार, जल्वा नूर नूर अलाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हर घट होया जगत मलाहीआ। बाल निधाना गुर करतार, गुर गुर नाउँ धराईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, शब्द सरूपी वड्डी वड्याईआ। निरगुण दाता एका वाज रिहा मार, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। निरगुण बणया दर भिखार, नानक आपणा वेस वटाईआ। प्रभ अग्गे निउँ निउँ करे निमस्कार, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। तूं कन्त हउँ तेरी नार, सच सुहाग इक्क हंढाईआ। तेरी सेजा मेरा प्यार, तेरा रंग मेरा रंग इक्क चढ़ाईआ। तेरा मृदंग सच्ची सरकार, नानक निरगुण दए वजाईआ। एका डोरी बन्नु पतंग, दो जहानां आप उडाईआ। दर दरवेश मंगी मंग, एका वस्त मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, सच वस्त झोली पाईआ। इक्क एकँकारा वस्त अनमोल, नानक सतिगुर झोली पांयदा। सचखण्ड दुआरे साचे कंडे आपे तोल, एका तोला आप हो जांयदा। आपणा वाक आपे बोल, सोहँ रसना गांयदा। प्रभ चरन दुआर नानक घोली गया घोल, मेरा तेरा भेव कोई ना आंयदा। तूं दाता निरगुण रहे अडोल, हउँ तेरे विच समांयदा। तेरी किरपा तेरी काया बदलया चोल, लोकमात जामा पांयदा। तेरा वज्जे सच्चा नाम तेरा ढोल, चार कुन्टां आप सुणांयदा। पुरख अबिनाशी आप आपणा पर्दा खोलु, गुर नानक गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल जगत कर, जुग करता वेस वटांयदा। नानक मिल्या हरि निरँकार, घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, देवे सिफ्त नाम सलाहीआ।

एका अक्खर कर त्यार, त्रैगुण बन्द कराईआ। तिन्ना लोकां इक्क अधार, एका बूझ बुझाईआ। उप्पर खिच्ची आप लकार, ऊड़ा मुख खुल्हाईआ। भरया सतिनाम भण्डार, नानक झोली अग्गे डाहीआ। निरगुण आपणी अक्ख उग्घाड़, एका ऐड़ा ल्या उपाईआ। ईड़ी इष्ट करे विचार, निरगुण नानक लोकमात करे रुशनाईआ। सस्सा सतिगुर सच्चा किला कर त्यार, सस्सा अक्खर आप सुहाईआ। हाहा हरि का रूप अपर अपार, पंचम शब्द वज्जे वधाईआ। उत्ते टिप्पी ब्रह्म विचार, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। सस्सा हाहा जगत विहार, एका होड़ा नाल रलाईआ। सस्सा होड़ा कर प्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता नाम वर, सतिनाम करे पढ़ाईआ। सतिनाम सति जैकार, हरि साचा सच सुणांयदा। सतिगुर नानक कर प्यार, लोकमात वरतांयदा। चार वरनां दए अधार, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। जन भगतां बणे दर भिखार, प्रेम भिच्छया इक्क मंग मंगांयदा। साची सिख्या अपर अपार, जगत ग़रीबी झोली पांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दए अधार, सिँघ रूप ना कोए जणांयदा। कलमी कलमा इक्क उज्यार, शरअ शरीअत इक्क रखांयदा। मक्का काअबा ख़बरदार, हक्क जनाबा नाउँ धरांयदा। पीर दस्तगीर शाह हकीर पावे सार, मुल्ला शेख़ मुसायक आप समझांयदा। पंडत पांधे दए अधार, तिलक ललाटी वेख वखांयदा। अठसठ तीर्थ वेखे जा किनार, आप आपणा आसण लांयदा। पावे सार ठग्ग चोर यार, मूर्ख मूढ़े आप समझांयदा। तोड़णहारा गढ़ हँकार, हउमे हँगता मेट मिटांयदा। देवणहारा सच प्यार, सतिनाम मन्त्र दृढ़ांयदा। चार वरनां इक्क दुआर, एका बंक वखांयदा। अठारां बरनां वस्सया बाहर, आप आपणा भेव छुपांयदा। गुरमुख साजण लए उभार, अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। लेखा लिख अपर अपार, बेअन्त बेअन्त हरि हरि नाउँ धरांयदा। साची जोत जोत निरँकार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक निरगुण नाम ध्यांअदा। नानक हरि हरि साचा गाया, हरि साचे विच समाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त आप समझाया, आत्म अन्तर हरि हरि नाम बीज साचा इक्क बिजाया आपणी हथ्थीं बूटा लाईआ। गुरमुख सज्जण मीत मुरार गुर करतार दर घर साचे वेख वखाया, आप आपणी दया कमाईआ। एका अंगद लेखे लाया, लैहणे लहिणा झोली पाईआ। अन्तिम आपणी सिख्या रिहा समझाया, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द वज्जी वधाईआ। निरगुण जोत शब्द धार, नानक हरि उपजाईआ। नानक अंगद करया अंगीकार, हरि की वस्त विच टिकाईआ। आपणा शब्द गाए वारो वार, ओट इक्क अकाल रखाईआ। देवे मति सर्ब संसार, गुरमति वड्डी वड्याईआ। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द मेला अन्त मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम

पापी कूड़ा कुड़यार, चारों कुन्ट डंक रिहा वजाईआ। भरमे भुल्ला नारी नार, नर नरायण दिस ना आईआ। जीव जन्त होए गंवार, साध सन्त ना कोई दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका बूझ बुझाईआ। नानक बोले साची धार, लक्ख चुरासी रिहा जणाईआ। सोहँ शब्द जै जै जैकार, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, कलिजुग अन्तिम वेखे बेपरवाहीआ। निहकलंका लए अवतार, दिस किसे ना आईआ। एका शब्द करे जैकार, चारे वरनां करे पढ़ाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। शाह सुल्तानां करे ख्वार, राज राजाना मेट मिटाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। निहकलंक कल अन्तिम आउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चौथा जुग मेट मिटाउणा, नौ नौ चार वेख वखाईआ। ब्रह्मा वेते अन्त कराउणा, शिव शंकर रहिण ना पाईआ। सुरपति राजा इन्द तख्तों लाहउणा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। अगला मार्ग आपे लाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि का भेव किसे ना पाउणा, साध सन्त जीव जन्त रसना रिहा गाईआ। आदि अन्त इक्क अख्वाउणा, गुर पीर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। नानक जोती अंगद धर, अमरदास वड्याईआ। राम दास अन्दर गया वड़, गुर अर्जन बूझ बुझाईआ। शब्दी अक्खर एका पढ़, अगाध बोध जणाईआ। गुरू ग्रन्थ बणाया सर, गुर इष्ट इक्क वखाईआ। हरि गोबिन्द फड़या लड़, दोवें धार बंधाईआ। हरिराए दरस दिखाए अग्गे खड़, हरि कृष्ना बाला लेखे लाईआ। तेग़ बहादर लेखे लग्गा सीस धड़, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। गुर गोबिन्द लगाए आपे जड़, पूत सपूता आपे जाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत ल्या फड़, हेम कुन्ट वज्जी वधाईआ। पंज तत्त सुहाया काया गढ़, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सुत्त उपजाईआ। उपज्या सुत्त सुत्त दुलारा, हरि गोबिन्द नाउँ रखाईआ। दर मन्दिर शब्द अधारा, दिवस रैण शनवाईआ । अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, अलक्ख निरँजण मेल मिलाईआ। दर्द दुःख भय भञ्जण गुर करतारा, गुर मूर्त आप हो जाईआ। अकाल मूर्त हरि खेल अपारा, अकल कल रिहा वरताईआ। देवे शब्द नाम अधारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका हवन एका पवन, एका अमृत मेघ बरसे सवन, एका अहूती साची पाईआ। एका सुगंधी परमानंदी, चन्द नौ चन्दी गुर साचा आप चढ़ाईआ। एका तोड़णहारा खाना बन्दी, बन्दी तोड़ इक्क अख्वाईआ। एका कढ्ढे वासना गन्दी, आत्म अन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या पुरख अकाल, गुर

गोबिन्द नाम जणांयदा। फल लगाए साचे डाल, साचा फल खवांयदा। अमृत भरया रहे ताल, ताल सुहावा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणी वस्त साचे दस्त आपणे हथ्थ फड़ांयदा। साची वस्त नाम खण्डा, गुर गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। मारे मार विच ब्रह्मण्डां, अग्गे कोए रहिण ना पाईआ। तेज़ रखाया चण्ड प्रचण्डा, दोवें धार बंधाईआ। पावे सार विच वरभण्डा, वरभण्डी वेख वखाईआ। मेट मिटाए भेख भखण्डा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम वंडे वंडा, साची वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। गोबिन्द हरि घर साचे पाया, जगे जोत पुरख अबिनासीआ। आप आपणा खेल खिलाया, खेले खेल शाहो शाबाशीआ। साचा मार्ग इक्क वखाया, आप आपणी कल वरतासीआ। पंचम मेला मेल मिलाया, आपे गाए रसन स्वासीआ। चेला गुर एका धाम बहाया, पावे सार पृथ्मी आकाशीआ। अमृत आत्म साचा जाम प्याया, लक्ख चुरासी कट्टी जम की फाँसीआ। सीस दस्तार इक्क बंधाया, जगदीश मेला सहिज सुभासीआ। छत्र सीस इक्क टिकाया, कलिजुग अन्तिम पावे रासीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेस कर, खेले खेल शाहो शाबासीआ। गोबिन्द साची बन्ने धार, पंचम मेल मिलांयदा। पंचम मीता ख़बरदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। एका वहिगुरू फतिह बोल जैकार, पुरख अकाल इक्क सुणांयदा। अन्तिम देवे नाम अधार, एका शब्द सुणांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसार, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। नानक लिख्या लेख अपार, ना कोई मेट मिटांयदा। गोबिन्द मीता मीत मुरार, अन्तिम संग निभांयदा। एका ढईआ अद्धविचकार, पिछला पन्ध मुकांयदा। प्रगट होवे विच संसार, गोबिन्द आपणा वेस वटांयदा। नाल रलाए पुरख करतार, निहकलंका नाउँ धरांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, सतिगुर साचा आसण लांयदा। दिस ना आए विच संसार, कलिजुग जीव सर्ब भुलांयदा। गुरमुख विरले लए उभार, जो सरसे भेट चढ़ांयदा। खिच ल्याए चरन दुआर, चरन चरनोदक मुख छुहांयदा। दरस दखाए अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी नज़री आंयदा। लक्ख चुरासी सोए पैर पसार, गूढ़ी नींद ना कोई उठांयदा। पंचम विकार देण प्यार, आसा तृष्ना संग रलांयदा। हउमे हँगता करे ख्वार, माया ममता विच फसांयदा। मनमुख जीव नार विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। घर घर मदिरा मास होए अहार, हरि का नाम ना कोई गांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप छुहांयदा। गुरमुख साचे कर त्यार, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, हरि साचे वड वड्याईआ। निहकलंका जामा पाया, निरगुण जोत करे

रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रिहा सुणाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। नाम डंका इक्क वजाया, चार वरन करे पढ़ाईआ। राम कृष्न आप अख्वाया, नानक गोबिन्द वेस वटाईआ। ईसा मूसा नाउँ धराया, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। चारे वेदां आपे गाया, ब्रह्मा सेवा लाईआ। शास्त्र सिमरत आप उपजाया, आप आपणी दया कमाईआ। पुराण अठारां लेख लिखाया, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक जणाईआ। गीता ज्ञान आप दृढ़ाया, अठारां ध्याए आपे गाईआ। अञ्जील कुरानां लेख लिखाया, बाईबल करे आप रुशनाईआ। खाणी बाणी वेख वखाया, अगाध बोध भेव खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर डेरा ढाया, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। प्रभ का भाणा ना किसे कोई मिटाया, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। साचा राणा बण के आया, राज राजाना रिहा खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बन्न्हे धार, हरि शब्द करे कुड़माईआ। लक्खण पुष्कर हो त्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। एका नाम इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका गुर इक्क अवतार एका रूप दरसाईआ। एका मन्दिर गुरदुआर, मस्जिद काअबा इक्क वखाईआ। एका रूप नर निरँकार, घट घट जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा साची पावे सार, पुरख अकाल खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, वर दाता आप अख्वाईआ। गुरमुख वड्याई धन्न, गुर सतिगुर सज्जण साचा पाया। आत्म अन्तर मनुआ मन गया मन्न, दहि दिशा ना उठ उठ धाया। शब्द सुहागी सुणया कन्न, नाद अनादी इक्क वजाया। गढ़ हँकारी दित्ता भन्न, हउमे रोग रहे ना राया। जोत निरँजण चढ़या चन्न, नूरो नूर डगमगाया। एका देवे नाम सच्चा माल धन, सोहँ साचा आप उपाया। दो जहानां बेड़ा देवे बन्न्ह, राए धर्म ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेले साचे घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। वज्जी वधाई हरि हरि पाया, मिल्या पुरख अकाल। एका अक्खर साचा गाया, नाता तुट्टा जगत जंजाल। जगत रंडेपा कट्ट वखाया, सतिगुर मिल्या दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे लाल। हरिजन लाल अमोलक हीरा, गुरमुख गुरमुख नाउँ उपजाईआ। सतिगुर पूरा साचा सीस बन्न्हे चीरा, कौस्तक मणीआ नाल लगाईआ। शब्द कटार तन पहनाए नाम फड़ाए कमान तीरा, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाईआ। आत्म अमृत देवे ठंडा सीरा, सांतक सति सति वरताईआ। हउमे हँगता दूई द्वैती कढ्ढे पीड़ा, रोग सोग चिन्ता दु:ख रहिण ना पाईआ। पाया वर गहर गम्भीरा, समुंद सागर खोजण ना जाईआ। एका रंग रंगाया हस्त कीड़ा, कीट कीटां विच समाईआ। प्रगट होया वड पीरन पीरा, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। गुरमुखां देवे साची धीरा, धीरज जति इक्क

वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग गुर ज्ञान ज्ञान गुर उपदेश, देवणहारा नर नरेश ब्रह्मा विष्न शिव करे पढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि आप पढ़ाए, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साची मति समझाए, सोहँ अक्खर झोली पाईआ। कलिजुग लेखा रहिण ना पाए, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाए, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। गुरमुख कागों हँस बणाए, माणक मोती चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत डगमगाईआ। गुरमुख सज्जण तेरा सच दुआरा, हरि सतिगुर साचे भांयदा। जुग जुग अन्त लै अवतारा, जन भगतां वेखण आंयदा। दर दरवेश बणे भिखारा, एका अल्फ़ी गल लटकांयदा। नेत्र नैण दिस ना आए विच संसारा, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। गुरसिखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। अन्दर मन्दिर कन्त भतारा, साची नारा आप प्रनांयदा। आत्म सेजा खेल अपारा, सेज सुहञ्जणी आप सुहांयदा। जोत निरँजण दीप उज्यारा, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। गुरमुखां करे गुर प्यारा, गुर दीवा गुर बाती गुर मेला कमलापाती, कन्त कन्तूहल आप हो जांयदा। कन्त कन्तूहल हरि सज्जण स्वामी, गुरमुख विरले पाया। पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी, आदिन अन्ता वेस वटाया। जुगा जुगन्तर सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कमाया। आप उचारे आपणी बाणी, आप आपणा हुक्म सुणाया। आपे जाणे आपणा पद निरबाणी, प्रभ आपणा नाउँ धराया। आपे गाए आपणी अकथ कहाणी, जीव जन्त ना सके कोई गाया। आपे बणया आपणा हाणी, आप आपणा मेल मिलाया। आपे वस्सया चारे खाणी, आप आपणी जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जाणे चारे बाणी, परा बसन्ती मधम बैख़री आपे रिहा अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए तराया। गुरसिख तारनहार पुरख समरथ, हरि सज्जण मीत मुरारया। आदि जुगादि जुग जुग रक्खे दे कर हथ्थ, नित नवित्त साची कारया। शब्द जणाई पूजा पाठ, एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा। चरन धूढ़ सरोवर तीर्थ अठसाठ, गंगा गोदावरी ना कोई रखा रिहा, आप उतारे आपणे घाट, साचा बेड़ा नाम चला रिहा। अन्तिम नेड़े आई वाट, कलिजुग अगला पन्ध मुका ल्या। कलिजुग कूड़ा बस्त्र जाणा पाट, तन ख़ाली सर्ब वखा रिहा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे पूरा घाट, नाम पल्लू ना कोई फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर चेले एका रंग रंगा ल्या। गुर चेला एका रंग रंगणा, हरि साची दया कमाईआ। गुरमुख दूजा दर ना कोई मंगणा, पाया हरि बेपरवाहीआ। लोकमात किसे कोलों ना संगणा, सतिगुर पूरा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर दरवाज़ा आपणा आपे लँघणा, नौ दर रस तजाईआ। आत्म सेजा सच पलँघणा,

गुर बैठा आप विछाईआ। दिवस रैण वजाए मृदंगना, अनहद तार सतार हिलाईआ। दीन दयाल हरि कृपाल गुरसिख लाल सदा सदा बख्शंदना, बख़शिश आपणी आप कराईआ। निज आत्म निज घर निज हरि निज दर निज देवे वर, नाम भण्डारा एका भर, अतोट अतुट रखाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, ग़रीब निमाणे गुरसिख सज्जण जाए तार, तारनहार गुर करतार करनी करता करता पुरख, ना कोई सोग ना कोई हरख़, अमृत मेघ आत्म बरस, जन भगतां उप्पर कर कर तरस, जगत तृष्ना भुक्ख बुझाईआ। जगत तृष्ना जाए बुझ, गुर सतिगुर आप बुझांयदा। गुरसिख आपणे दुआरे जाए बूझ, सतिगुर पूरा पर्दा लांहयदा। चरन प्रीती जाए झूज, साचा मन्दिर इक्क वखांयदा। हरि बिन अवर ना दिसे कुझ, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। हरि का भेव ना जाणे मन मति बुध, ज्ञान ध्यान जगत वख्यान ना कोई हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका वर, आत्म अन्तर साचे घर, दर दरवाज़ा आपे खोल्ह, शब्द अनादी अक्खर बोल, सोहँ ढोला नाम अनमोला साची झोली आप पांयदा। हरिसंगत हरि भेटयां, हरि सतिगुर पुरख दयाल। सतिगुर पूरा खेवट खेटयां, पार कराए गुरमुख लाल। ताणा सूत एका पेटयां, एका रंग रंगाए बण दलाल। लेखा जाणे पंचम जेठया, अग्नी तत्त आपे ढाल। निरगुण रक्खे साया हेठया, दिवस रैण करे प्रितपाल। पिछली मेटे लिखी रेखया, अग्गे देवे नाम वस्त धन्न माल। गुरमुखां कढ्ढे भरम भुलेखया, जो जन चरन प्रीती घालण रहे घाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, कलिजुग अन्तिम तोड़े जगत जंजाल।

✪ ६ सावण २०१६ बिक्रमी अजैब सिंघ दे घर पिण्ड अरनी वाला मलोट मंडी ✪

सो पुरख निरजण हरि मेहरवान, आदि जुगादी एक एकँकारया। हँ ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म रूप वटा ल्या। पुरख अबिनाशी खेल महान, आदि निरँजण जोत जगा ल्या। खेले खेल दो जहान, पुरख अकाल भेव ना आ रिहा। अजूनी रहित श्री भगवान, मूर्त अकाल डगमगा ल्या। एका दिसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा आप उपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, परम पुरख वड्याईआ। हँ ब्रह्म कर प्रधाना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी धुन तराना, आपणा राग अल्हाईआ । निरगुण खेल श्री भगवाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। दीपक जोती इक्क जगाना, एका जोत करे रुशनाईआ। ना कोई दूसर संग रखाणा, आप आपणा वेस वटाईआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जण हरि सुल्ताना, शाहो भूप राज राजाना आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर

खेल महाना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल एका जोत करे रुशनाईआ। दीन दयाल सर्ब गुणवन्ता, एका एकँकारया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी कार कमा रिहा। एकँकारा आदिन अन्ता, अनभव प्रकाश समा रिहा। आप बणाए आपणी बणता, आप आपणी रचन रचा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव वेस वटंता, एका जोती डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता पुरख करतार, आप आपणा कर पसार, आप आपणी धार चला रिहा। निरगुण नूर कर उज्यारा, एका एक डगमगाईआ। आपे रवि ससि बण सतारा, मण्डल मण्डप जोत रुशनाईआ। आपे गगन मण्डल दए सहारा, आकाश प्रकाश आप सुहाईआ। आपे धरत धवल वेखे जलधारा जल बिम्ब रूप वटाईआ। आपे निरगुण मीत मुरारा, त्रैगुण सगला संग निभाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहरा, दिस किसे ना आईआ। आपे खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आप अख्वाईआ। आपे बोले शब्द जैकारा, आपणा नाउँ आप उपजाईआ। आपे बणे वणज वणजारा, आपणी कीमत करता आपे पाईआ। आपे भरे घर भण्डारा, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। आपे बणे हरि वरतारा, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। निरगुण रूप अपर अपारा, निराकार वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर आकार, निरगुण खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। अगम्मड़ी कार पुरख करतारा, आदि जुगादि चलांयदा। आपे कन्त आपे नारा, आप आपणा संग निभांयदा। आप उपजाए सुत्त दुलारा, शब्दी डंक वजांयदा। आपे सच सिँघासण आसण लाए निरगुण धारा, जोती नूर डगमगांयदा। आपे सिफ्ती सिफ्त सलाह परवरदिगारा, राम रामा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता भगवन जोती कर प्रकाश, करे खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता भेव ना आंयदा। भेव अभेद पुरख सुल्ताना, हरि साचे वड वड्याईआ। दो जहानां खेल महानां, पुरीआं लोआं वेस वटाईआ। ब्रह्मा विष्न देवे नाम निधाना, करोड़ तेतीसा नाम जपाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। पंज तत्त होए प्रधाना, पंचम मेला सहिज सुबाईआ। एका राग इक्क तराना, एका नाद वजाईआ। एका मन्दिर सच मकाना, काया कोठड़ी आप बहाईआ। एका पद पद निरबाणा, दर साचा इक्क समझाईआ। एका नेत्र नैण खुल्हाणा, हरि लोचण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस पुरख करतारा, आपणा आप करांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात जोत जगांयदा। भगत सन्त कर प्यारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। एका देवे नाम अधारा, एका ढोला साचा गांयदा। एका खोल्हे बन्द किवाड़ा, घर साचा इक्क

वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। हरि हरि नाउँ रक्ख करतार, आपणी कल वरताईआ। निरगुण दीवा बाती कर उज्यार, सरगुण मन्दिर आप टिकाईआ। कमलापाती मीत मुरार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। सतिजुग धार हरि अवल्ली, एका एक चलांयदा। वसणहारा जली थली, आदि शक्ती नाल रलांयदा। जोद्धा सूरबीर वड बली, लोकमात वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग वेखे साचा घर, त्रेता आपणा लेख लिखांयदा। त्रेता लेखा धुर दरबार, हरि साचा आप लिखांयदा। आपे निरगुण सरगुण लै अवतार, राम रामा रूप वटांयदा। आपे तोड़े गढ़ हँकार, हउमे हँगता रोग मिटांयदा। आपे जाणे आर पार, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। रथ रथवाही हरि निरँकार, जुग जुग आपणा रथ चलांयदा। द्वापर साचा हो उज्यार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ वड्यांअदा। आपणा नउँ आपे रक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी जोत करे प्रतक्ख, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। आपे वेखे साची वथ, आपणे मन्दिर आप टिकाईआ। आपे गाए आपणी गाथ, आपणी करे आप पढ़ाईआ। आपे हो त्रिलोकी नाथ, कान्हा बंसरी नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणी लए अंगड़ाईआ। कलिजुग हरि लै अंगड़ाई, आपणा खेल खिलांयदा। ईसा मूसा कर कुड़माई, संग मुहम्मद वेस वटांयदा। नानक गोबिन्द जोत जगाई, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादी बण मलाह, जगत बेड़ा आप चलांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। निरगुण निरगुण लए अवतार, सरगुण डेरा लाईआ। जोती जोत नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। दिस ना आए विच संसार, नेत्र नैण दरस कोई ना पाईआ। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। तोड़े लंका गढ़ हँकार, हउमे गढ़ रहिण ना पाईआ। एका मंगता धुर दरबार, अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। सत्तां दीपां दए हुलार, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, एका डंका हथ्थ उठाईआ। वासी पुरी घनका हो त्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। एका नाम जै जैकार, चार वरनां रिहा सुणाईआ। शाह सुल्ताना मारे मार, दर मंगण भिख ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, जगत निमाणे गले लगाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, हरि साचे हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्डां मारनहारा मार, ना सके कोई बचाईआ। जेरज अंडां करे खुआर, उत्भुज सेत्ज रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जामा पाईआ। निहकलंक पुरख करतारा, हरि सतिगुर नाउँ धरांयदा। गोबिन्द साजण मीत मुरारा, सिँघ रूप वटांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, दो धारा हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, आप आपणी कल वरतांयदा। मनमुख जीव करे ख्वारा, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, नाम प्याला जाम प्यांअदा। अग्नी बुझे तत्ती हाढ़ा, हउमे तत्त ना कोई रखांयदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द अगम्मी लाए अखाड़ा, अनहद साचा ताल वजांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। धुरदरगाही साचा लाड़ा, एकँकारा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अन्त करांयदा। कलिजुग तेरा अन्त कराउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। जूठा झूठा पन्ध मुकाउणा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। बत्ती दन्द पुरख अबिनाश ढोला जीव जन्त एका गाउणा, एका करे पढ़ाईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द एका दर वखाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई गाउणा, मस्तक तिलक ना किसे लगाउणा, अल्ला हू हू नाअरा कोई ना लाईआ। एका मार्ग हरि दृढ़ाउणा, अकाल पुरख इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा मूल तेरा लहिणा, तेरी झोली पाईआ। कलिजुग तेरा मूल चुकाउणा, हरि सतिगुर आप चुकांयदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, चार वरनां आप समझांयदा। ऊँचां नीचां एका रंग रंगाउणा, एका धाम सुहांयदा। अमृत जाम प्याला इक्क प्याउणा, एका मुख सलांहयदा। गोबिन्द मेला मेल मिलाउणा, गुर गोबिन्द वेस वटांयदा। पुरख अकाल इक्क ध्याउणा, दूजा इष्ट ना कोई जणांयदा। मुच्छ दाढ़ी केस ना किसे मुनाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी एह समझांयदा। राज राजाना सच्चा नाम ना किसे गाउणा, दर दरबार ना कोई सुहांयदा। अठसठ तीर्थ किसे ना नुहाउणा, गंगा गोदावरी कोई ना जांयदा। मन्दिर मस्जिद लेख चुकाउणा, शिवदुआला मट्ठ वेख वखांयदा। काया गुरदुआर इक्क सुहाउणा, सतिगुर साचा आसण लांयदा। अनहद नादी राग सुणाउणा, साचा शब्द आपे गांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, आत्म ब्रह्म जणांयदा। नेत्र तीजा आप खुल्हाउणा, स्वच्छ सरूपी दरस दखांयदा। चौथे पद आप बहाउणा, जोती जोत मेल मिलांयदा। पंचम मीता घर सुहाउणा, पंचम मोह चुकांयदा। कलिजुग लेखा रहिण ना पाउणा, जुग चौथे मेल मिलांयदा। सम्मत सम्मती मेट मिटाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलावणा। कलिजुग झूठा नाता तोड़, झूठी क्रिया दए मिटाईआ। सतिजुग साचा जाए बौहड़, धरत मात गोद सुहाईआ। कलिजुग कूड़ा चढ़या घोड़, चारों कुन्ट फेरी पाईआ। सतिजुग साचा गया बौहड़, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग रीठा होया

कौड़, मिट्ठा रस ना कोई वखाईआ। सतिजुग साचा लाया पौड़, आप आपणी नींह धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग एका दर वखाईआ। कलिजुग दर हरि दरबारा, रो रो सीस झुकांयदा। ना कोई सहाई मुहम्मदी यारा, अल्ला राणी मुख शरमांयदा। जूठा झूठा बन्नया भारा, ना सीस कोई उठांयदा। ना कोई दिसे परवरदिगारा, मुकामे हक्क ना कोई वखांयदा। ख़ालक ख़लक ना कोई पसारा, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यारा, साचा चन्न ना कोई चढ़ांयदा। मात पित ना कोई प्यारा, पुत्तर धीआं ना साक जणांयदा। भाई भैण ना कोई सहारा, नारी कन्त ना कोई अख्वांयदा। सच सुच्च ना कोई वणजारा, जूठा झूठा वणज वखांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, ठग्ग चोर यार सर्ब दरसांयदा। ना कोई मन्दिर ना दुआरा, इष्ट देव ना कोई जणांयदा। ना कोई गोबिन्द जाणे धारा, नानक दरस ना कोई पांयदा। ना कोई दिसे पंच प्यारा, पंचम मोह ना कोई चुकांयदा। ना कोई दिसे खण्डा धारा, तिक्खी धार ना कोई बणांयदा। ना कोई दीसे कुछ सहारा, धीरज जति ना कोई धरांयदा। ना कोई केस सीस दिसे दस्तारा, ना कोई जगदीश सीस झुकांयदा। ना कोई कंगन करे प्यार, समरथ हथ्थ ना कोई मिलांयदा। ना कोई पंडत वेद विचारा, आत्म ब्रह्म ना कोई वखांयदा। ना कोई वेद पाठ करे जैकारा, आत्म राम ना कोए वसांयदा। ना कोई सनातन धर्म करे प्यारा, साची सिख्या ना कोई समझांयदा। रिखी मुनी ना कोई अधारा, सुन्न समाध ना कोई लगांयदा। आदि शक्ति जोत ज्वाला ना कोई उज्यारा, नूरो नूर ना डगमगांयदा। ना कोई भगत ना सन्त दुलारा, सतिगुर रूप ना कोई समांयदा। ना कोई ऐनलहक्क लाए नाअरा, हक्क हकीकत ना कोए जणांयदा। ना कोई मुलां शेख़ मुसायक पीर गुप्त ज़ाहरा, दस्तगीर ना कोई अख्वांयदा। ना कोई कलमा अमाम पाए सारा, जल्वा नूर ना कोई जगांयदा। ना कोई कागद कलम लिखे बण बण लिखारा, गुर बाणी भेव कोई ना पांयदा। कलिजुग अन्तिम गुर अर्जन बणया इक्क वणजारा, साचा हट्ट खुलांयदा। भरमे भुल्ला भरम संसारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। चार वरनां इक्क दुआरा, गुरू ग्रन्थ गुरमति एह समझांयदा। सन्त भगत भगवन्त एका सुहाया घर सच्चा घर बारा, दर एका आसण लांयदा। जोग जुगत जगत ना कोए विचारा, निउली कर्म ना कोए करांयदा। ना कोई ठरे ठंडी जल धारा, तत्ती अग्ग ना कोई तपांयदा। ना कोई जंगल जाए जूह पहाड़ा, बनखण्ड ना कोई खोज खुजांयदा। ना कोई तन बिभूत लगाए मारे नाअरा, जटा जूट ना कोई लगांयदा। ना कोई अभ्यास त्याग वैराग करे प्यारा, एका शब्दी शब्द सुणांयदा। जो जन सतिगुर चरन ढहि पए दुआरा, गुर पूरा पार करांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा, चार कुन्ट वेस वटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा।

नौ खण्ड पृथ्मी सुहाए इक्क दुआरा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। हरि का शब्द छत्ती राग ना पायण सारा, राग रागनी आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, करनी करता हरि निरँकार, खेले खेल अगम्म अपार, गुरमुख साजण लए उभार, आप आपणा मेल मिलांयदा।

✪ १० सावण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे घर अबोहर शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति पुरख निरँजण हरि मेहरवान, आदि जुगादी एकँकारया। रूप अनूप श्री भगवान, इक्क इकल्ला खेल अपारया। जुगा जुगन्तर खेल महान, पारब्रह्म गुर अवतारया। थिर घर वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहा रिहा। शाहो भूप सच्चा सुल्तान, राज राजान वेख वखा रिहा। देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा हुक्म सुणा रिहा। ना कोई दीसे दर दरबान, दर दरवेश ना कोई बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, एकँकारा नाउँ धरा रिहा। एकँकारा पुरख सुल्ताना, हरि वडा वड वड्याईआ। जोती नूर दीप महाना, परम पुरख आप जगाईआ। खेले खेल दो जहाना, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आदि जुगादी इक्क तराना, नाद अनादी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता हरि निरँकार, निरगुण जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती नूर हरि उजाला, एका एक रूप दरसांयदा। परम पुरख दीन दयाला, थिर घर साचे डेरा लांयदा। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना आंयदा। आपे वसे सच सच्ची धर्मसाला, आपणा दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप सति सरूप आप अख्वांयदा। सति सरूपी हरि गिरधार, रूप रंग ना कोई जणाईआ। निरगुण खेल करे अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। मात पित ना कोई अधार, पूत सपूत ना कोई जाईआ। ना कोई नार कन्त भतार, ना कोई सेज हंढाईआ। ना कोई सखीआं मंगलाचार, ना कोई गीत सुहागी गाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, ना कोई सगला संग रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणी कल वरताईआ। रवि ससि ना कोई सतार, मण्डल मण्डप ना कोई सुहाईआ। गगन पताला बन्ने धार, आकाश प्रकाश ना कोई जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई विचार, लोआं पुरीआं ना रचन रचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई आकार, करोड़ तेतीस ना वेख वखाईआ। गण गंधर्ब ना कोई उज्यार, किन्नर यच्छप ना कोई

वखाईआ। धरत धवल ना कोई उसार, जल बिम्ब ना कोई उपाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई विहार, जेरज अंड ना कोई उपाईआ। उत्भुज सेत्ज ना पाए सार, जल थल महीअल ना कोए समाईआ। जंगल जूह ना कोई पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा कोए ना लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ना कोई अखाड़, सत्त दीप ना वंड वंडाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई पसार, जीव जन्त ना रचन रचाईआ। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई दिसाईआ। राउ रंक ना कोई दुआर, राज राजान ना कोई अख्वाईआ। दर दरवेश ना कोई भिखार, चार कुन्ट दहि दिशा अलक्ख कोई ना जगाईआ। क्षत्री ब्रह्म शूद्र वैश ना कोई विचार, खाणी बाणी ना रचन रचाईआ। वेद पुराण ना कोई अधार, इष्ट देव ना कोई वखाईआ। गीता ज्ञान ना कोई सुधार, रसना जिह्वा कोई ना गाईआ। राम कृष्न ना कोई अवतार, भेव अभेदा भेव ना कोई लिखाईआ। रिख मुन जप तप ना कोई संसार, सागर सिन्ध ना कोई वहाईआ। ईसा मूसा ना कोई पनिहार, संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी नाअरा कोई ना लाईआ। नानक गोबिन्द ना सरगुण धार, साख्यात रूप ना कोई दरसाईआ। आदि जुगादी एकँकार, इक्क इकल्ला इक्क अख्वाईआ। सच महल्ला कर त्यार, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। त्रैगुण माया ना कोई पसार, पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। निरगुण जोती दीप उज्यार, दिवस रैण ना कोई बणाईआ। इक्क इकांती पावे सार, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाही, आदि जुगादि जुगा जुगन्त एका एक अख्वाईआ। एका इक्क आकार निरँकार, आदि जुगादि समांयदा। जुगा जुगन्तर भेव अपार, वेद कतेब भेव ना आंयदा। सचखण्ड दुआरे बैठ सच दरबार, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणे मन्दिर पावे सार, महल्ल अटल अचल्ल आप सुहांयदा। आपणा देवे धुर फ़रमान, आपणा हुक्म आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे सच घर, साचा घर सच सिँघासण, जगे जोत पुरख अबिनाशण, दीवा बाती ना कोई रखांयदा। ना कोई दीवा ना कोई बाती, ना कोई बणत बणाईआ। इक्क इकल्ला कमलापाती, बैठा डेरा लाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राती, मास बरख़ ना कोई उपजाईआ। आपणे मन्दिर आपे खोल्हे ताकी, आप आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, घर साचा आप सुहाईआ। घर साचा हरि सुहञ्जणा, जोती नूरो नूर नुरानया। पारब्रह्म प्रभ दर्द दुःख भय भञ्जणा, खेले खेल श्री भगवानया। आप आपणा आपे बणया सज्जणा, ना कोई दूसर संग रखानया। आपे रक्खे आपणी लज्जणा, आप आपणा मेल मिलन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, थिर घर साचा इक्क सुहानया। थिर घर साचा सोहे दरबार, हरि साचा सेज सुहांयदा।

इक्क अकल्ला निरगुण निरँकार, निरगुण जोती डगमगांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी कल वरतांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपणी बन्ने आपे धार, आपणा हुक्म सुणांयदा। आपणी करे आपे कार, करनी करता आप अख्वांयदा। आपे नारी कन्त भतार, आपे सेज हंढांयदा। आपे करे सच शृंगार, आपे वेख वखांयदा। आपे सोहे मन्दिर बंक दुआर, आपे खेल खिलांयदा। आपे रंग रवे करतार, रंग रूप ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे साचे घर, दर दरवाज़ा इक्क खुलांयदा। सचखण्ड दुआरा दर दरवाज़ा, हरि साचा खोल खुलनिआ। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाज़ा, खेले खेल श्री भगवानया। आपे रचया आपणा काजा, वेख वखाए दो जहानया। आपणा साजण आपे साजा, आपे घड़े आपे भन्नया। आपणी दिशा आपे फिरे भाजा, आपणा हुक्म आपे मन्नया। आपे रईअत आपे राजा, शाह सुल्तान आप अखवन्नया। आपे रक्खे आपणी लाजा, आपे वेख विखन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटन्नया। वेस वटंदड़ा हरि निरँकार, आपणी कल वरतांयदा। आपणी जोत कर उज्यार, आपणी जोत जगांयदा। आपणा रूप वेख वखाए पाए सार, रूप रंग ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मन्दिर आपणी रच्छया, आपणी झोली पाए भिच्छया, आपणा दर सुहांयदा। आपणी भिच्छया आपे पा, आपणी झोली आप भराईआ। आपणा मंगल आपे गा, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। आपणा संग आप बणा, आपे होए सहाईआ। आपणा इक्कु आप करा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण करे कुड़माईआ। निरगुण निरगुण निरगुण जुड़या नाता, निरगुण आपणा आप जुड़ांयदा। निरगुण निरगुण देवे दाता, निरगुण निरगुण झोली अग्गे डांहयदा। निरगुण देवे सगला साथा, निरगुण सगला संग निभांयदा। निरगुण निरगुण चलाए राथा, रथ रथवाही निरगुण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त, नारी कन्त मेल मिलांयदा। नारी कन्त हरि हरि मेला, हरि आपणा आप मिलांयदा। आपे होया सज्जण सुहेला, साची सिख्या आप समझांयदा। आपे वसे रंग नवेला, आपे आपणे विच समांयदा। आपणा खेल आपे खेला, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप चलांयदा। जोती धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। थिर घर बैठ साचे दरबार, दयावान दया कमाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, आपणी आप उपाईआ। नाउँ रखाया सुत्त दुलार, घर साचे वज्जी वधाईआ। करे कराए इक्क प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। पूत सपूता कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपणा कर, आप आपणा भेव खुलाईआ।

निरगुण आपणा भेव खुल्हाया, शब्दी सुत्त उठांयदा। साची सेवा सेवक लाया, साचा हुक्म सुणांयदा। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाया, महिमा अकथनी अकथ जणांयदा। अलक्ख अलक्खणा नाउँ धराया, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। अगम्म अगम्मड़े धाम बहाया, दिस किसे ना आंयदा। सति पुरख निरँजण खेल रचाया, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपणी सिख्या आप समझांयदा। सुत्त दुलारा शब्द जवान, घर साचे लए अंगड़ाईआ। थिर घर वस्सया सच मकान, चार दिवार ना कोई दिसाईआ। एका नूर श्री भगवान, एका जोत डगमगाईआ। एका भूप सति सुल्तान, एका बैठा राज कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत्त देवे वर, एका हुक्म सुणाईआ। शब्द सुत्त उठ बलवान, हरि साचा सच सुहांयदा। मेरी इच्छया तेरा दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं बणाउणा इक्क मकान, तेरी सेवा सेवक लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण देवणहारा वर, एका आपणा हुक्म सुणांयदा। शब्द सुत्त सीस झुकाए, निउँ निउँ करे निमस्कारया। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाए, आप आपणा संग निभा रिहा। तेरा भाणा मेरे विच समाए, मेरा रूप तेरा नाउँ उपा ल्या। चार कूट तेरा डंक बजाऐ, तेरा नाअरा इक्क सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, बोध अगाध इक्क समझा ल्या। बोध अगाध शब्द धुन्कार, हरि साचा सच जणांयदा। गगन मण्डल कर त्यार, तेरा दर सुहांयदा। रवि ससि कर उज्यार, तेरा नूर डगमगांयदा। अकल कला कल आपे धार, आपे वेख वखांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, एक एकँकारा आप अख्वांयदा। शब्द सुत्त करे प्यार, दर घर साचा आप सुहांयदा। आपणा रंग रवे करतार, रंग रंगीला आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे आपणा वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आपे जाणे आपणी गाथ, आपे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा अंग सूरा सरबंग, निरगुण निरगुण दए कटाईआ। निरगुण रूप पारब्रह्म, एका एक अख्वांयदा। ना मरे ना पए जम्म, आप आपणा खेल खिलांयदा। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, बत्ती दन्द ना मुख हसांयदा। ना ख़ुशी ना कोई ग़म, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला पुरख करतारा, आपणा आप करांयदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। आपणी बन्ने आपे धारा, आप आपणा वेस वटांयदा। खेले खेल खेलणहारा, साची

खेल खिलांयदा। करे वणज वणज वणजारा, आप आपणा हट्ट खुल्हांयदा। आपे वस्त रक्खे एका एक थारा, थिर आपणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण देवे निरगुण वर, सरगुण आपणा वेस वटांयदा। निरगुण वेस सरगुण धर, विष्नूं विश्व रूप अख्वाया। अमृत आत्म भर, आप आपणा खेल खिलाया। नाभी कँवली घाड़ण घड़, साची बणत बणाया। आपे अन्दर बैठा वड़, आप आपणा मुख छुपाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखाया। ना कोई बाढी बणत बणाए ना सके घड़, रूप रंग ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म आपणे घर आपे जम्म, ब्रह्म ब्रह्म आप अख्वाया। आप आपणा कर उजाला, आपणी दया कमांयदा। खेले खेल दीन दयाला, दयानिध भेव ना आंयदा। आप उपजाया आपणा बाला, आपे वेख वखांयदा। चले चलाए आपणी चाला, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म ब्रह्म नाउँ धरांयदा। ब्रह्म उत्पाती कमलापाती, हरि हरि वेस वटाया। देवणहारा साची दाती, नाम भण्डारा आप वरताया। खेले खेल इक्क इकांती, अकल कला धराया। आपे दीवा आपे बाती, आकाश प्रकाश आप वखाया। आपे वेखे मार झाती, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा साचा वर, एका नाम नामा झोली पाया। एका शब्द नाम जणाई, पारब्रह्म उपजांयदा। एका धुन राग सुणाई, एका ताल वजांयदा। एका दीप रिहा जगाई, इक्क अन्धेर मिटांयदा। एका नज़री आए भैण भाई, एका नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, आपणा वेस वटांयदा। आपे आदि आपे अन्ता, मध आपणा वेस वटांयदा। आपे दरवेश आपे मंगता, शाह भिखारी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव जोत धर, त्रैगुण त्रै त्रै मेल मिलांयदा। त्रैगुण तेरी बणत बणा, हरि हरि वेस वटाईआ। ब्रह्मा विष्न सेवा ला, तत्त तत्त करे कुड़माईआ। तत्व विच गया समा, ब्रह्म मति उपजाईआ। निरगुण आपणा अंग कटा, मन मति बुध विच टिकाईआ। नौ दुआरे खोल्ह खुल्हा, रचना रचन रचाईआ। घर विच घर महल्ल बणा, आप आपणा आसण लाईआ। आपणे मन्दिर हुक्म सुणा, अनहद शब्द रिहा वजाईआ। आत्म सर सरोवर ताल भरा, साचा सर सुहाईआ। जगत नेत्र बन्द करा, नेत्र आपणा इक्क खुल्हाईआ। बज़र कपाटी कुण्डा ला, आप आपणा पर्दा पाईआ। पंज तत्त विकारा संग रला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कुड़माईआ। आसा तृष्ना मेल मिला, हउमे हँगता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। लक्ख

चुरासी जुड़या नाता, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। आपे बैठा इक्क इकांता, घर घर विच डेरा लाया। जुगा जुगन्तर चलाए राथा, रथ रथवाही नाउँ धराया। साचा नाउँ पूजा पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आदि अबिनाशा खेल तमाशा, आदि आदी वेख वखांयदा। गगन गगनंतर पावे रासा, ब्रह्मण्डां खण्डां डेरा लांयदा। जुगादि आदि ना कदे विनासा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। परम पुरख प्रभ शाहो शबाशा, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, चौदां लोकां चौदां हट्टां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट आपे आसण लांयदा। हर घट मिल्या पुरख सुल्तान, हरि साचे वड वड्याईआ। काया मन्दिर सच मकान, निरगुण बैठा आसण लाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, एका शब्द रिहा सुणाईआ। आपणी करे आप पछाण, आप आपणी बूझ बुझाईआ। मानस मानुख लक्ख चुरासी विच्चों कर प्रधान, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। एका अक्खर वक्खर लोकमात निशान, आप आपणा दए उपजाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। हँ ब्रह्म कर प्रधान, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। सर्ब जीआं होए जाणी जाण, जानणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे दर, सरगुण साची वज्जी वधाईआ। निरगुण सरगुण साची धार, लोकमात चलांयदा। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मेल मिलांयदा। त्रैगुण अतीता खेल अपार, ठांडा सीता नाउँ रखांयदा। पतित पुनीता हरि करतार, पतित पावण खेल खिलांयदा। हस्त कीटा एका रंग रंगे संसार, ऊँच नीच ना कोई जणांयदा। नाम मीठा देवे अमृत धार, साचा सीर मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवणहारा वर, जुगा जुगन्त हरि भगवन्त हरि सन्त, साचे मात उपजांयदा। सन्त दुलार शब्द भण्डारा, हरि साचा सच भराईआ। नाम अधार अपर अपारा, एका वस्त वखाईआ। धुन जैकारा अनहद सतारा, सच सतार हिलाईआ। जोत निरँजण कर उज्यारा पावे सारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। पंचम सखीआं पावे सारा गावण वारो वारा, साची सेव लगाईआ। डूंघी भँवरी पार किनारा, सुखमन नाड़ी दए हुलारा, संगम एका पार कराईआ। बज़र कपाटी खोल्ह किवाड़ा, मेट मिटाए पंचम धाड़ा, धर्म अखाड़ा इक्क वखाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, आप आपणी दया कमाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, गुरमुख नारी ल्ए प्रनाईआ। सुरती शब्दी इक्क हुलारा, साचे सन्तां आप दवाईआ। आप सुहाए दस्म दुआरा, बैठा बेपरवाहीआ। एका सेजा सुता पैर पसारा, नारी कन्ता वेख वखाईआ। आपणी जाणे आपणी धारा, आप आपणा राह तकाईआ। आपे अन्दर आपे बाहरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सुन्न समाधी लाए

पाड़ा, पार किनारा आप कराईआ। आपे वेखे सच दुआरा, खण्ड सच वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, एकँकारा बैठा आसण लाईआ। जन सन्तां करे सच प्यारा, जोती जोत समाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपारा, सरगुण साचा वेस वटाईआ। सतिजुग करे पार उतारा, त्रेता लेख मुकाईआ। द्वापर अन्तिम उतरया पार संसारा, संसा कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग कूड़ा कर पसारा, धरत मात दी गोद बिठाईआ। जूठा झूठा भर भण्डारा, आप आपणा रिहा वरताईआ। हउमे हँगता बोल जैकारा, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। भेख पखण्डा खेल अपारा, भेखी आपणा भेख धराईआ। नाल रलाए काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, अग्नी तत्त जलाईआ। जीवां जन्तां साधां सन्तां करे ख्वारा, सति धीरज ना कोई उठाईआ। लक्ख चुरासी होई नार विभचारा, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। ना कोई दीसे सति दुआरा, वस्त नाम ना कोई विकाईआ। नौ दर होए जीव भिखारा, नौ रस रसन हल्काईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नौ नौ अखाड़ा, नौ दर ना कोई खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारा, कलिजुग क्रिया वेख वखाईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ा सुल्तान, चार कुन्ट ललकारया। तीर्थ तट्टां वेखे मार ध्यान, आप आपणा नैण उग्घाड़या। नाल रलाया पंच शैतांन, पंचम मीता पंचम मोह चुका ल्या। घर घर बणया झूठा मकान, साचा घर ना कोई सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा खेल खिला रिहा। कलिजुग अन्तिम मन मति प्रधान, साचा शब्द जणाईआ। आपे पाए आपणी आण, आपणा हुक्म सुणाईआ। घर घर वेखणा मार ध्यान, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दित्ता एका वर, दूजी करे जगत कुड़माईआ। कलिजुग कुड़माई वज्जी वधाई, हरि साचे सगन मनाया। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, वेद कतेब भेव ना राया। वेद व्यास ना सके भुलाया, पुराण अठारां रिहा गाया। पुरख अबिनाशी वेस वटाया, एका कलमा रिहा पढ़ाया। शरअ शरीअत इक्क बणाया, लाशरीक इक्क खुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेला साचे दर, दर दरवाजा इक्क सुहाया। दर दरवाजा धुर दरबार, पारब्रह्म आप सुहांयदा। कलिजुग मेला परवरदिगार, पारब्रह्म आप करांयदा। ख़लक ख़ुदाई पाए सार, खालक ख़लक वेख वखांयदा। आपे बन्ने आपणी धार, आपणी कल वरतांयदा। संग मुहम्मद चार यार, एका नबी अख्वांयदा। कायनात खेल अपार, हरि आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आप आपणा वेस वटांयदा। संग मुहम्मद चार यार, साचा संग निभाया। एका कलमा कर त्यार, एका नाअरा लाया। एका राणी अल्ला ख़बरदार, मुख आपणा

८२१ ०८

पर्दा लाहया। चारों कुन्ट वेखे नैण उग्घाड़, दहि दिशा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। अल्ला राणी नार मुटयार, हरि साचे बणत बणाईआ। कलिजुग करया अन्त शृंगार, बस्त्र भूषण आपे पाईआ। नेत्र कजला तिक्खी धार, नैण रही मटकाईआ। दर मंगे एका कन्त भतार, जोबन रही हंढाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, दे मति रिहा समझाईआ। तेरा भगत इक्क दुआर, चौदां तबकां आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, आपणा आप धराईआ। वेस अवल्ला हरि निरँकार, आपणा आप करांयदा। परवरदिगार सांझा यार, नूरो नूर डगमगांयदा। ऐनलहक्क हक्क विचार, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। मुकामे हक्क एका धार, एका नूरो नूर दरसांयदा। साचा मेला मीत मुरार, लोकमात धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पांयदा। साची वस्त हरि अनमोल, आपणी झोली पांयदा। चौदां तबकां पर्दा खोल्ह, आपे कुण्डा लांहयदा। मुलां शेख मुसायक पीर दस्तगीर शाह हकीर, एका कंडे तोल तुलांयदा। साचा दुआरा नानक गुर, निरगुण मात खुल्हाया। जुड़या जोड़ा लिख्या धुर, ना कोई मेटे मेट मिटाया। एका शब्द एका ताल एका सुर, एका सतार रिहा वजाया। एका चढ़या साचे घोड़, शाह अस्वार इक्क अख्वाया। एका दो जहानां रिहा दौड़, पुरीआं लोआं फेरा पाया। एका लक्ख चुरासी जीव जन्त वेखे मिट्ठा कौड़, मिट्ठे कौड़े रिहा कराया। एका सचखण्ड दुआरे लाया पौड़, सतिनाम डण्डा हथ्थ फड़ाया। एका चौथे पद गया बौहड़, हरि सन्तां मेल मिलाया। एका तीजा नेत्र खोल्हे हरन फोर, अन्ध अन्धेरा दए गंवाया। एका दूई द्वैती देवे होड़, अन्तिम नाम इक्क दृढ़ाया। एका सुरती शब्दी नाता दए जोड़, जिस जन हरि हरि रसना गाया। कलिजुग लग्गी जन भगतां औड़, अमृत आत्म मेघ बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी एह समझाया। नानक गुर लेख अवल्ला, आपणा आप लिखांयदा। लहिणे अन्दर सच सिँघासण आपे मल्ला, निरगुण जोती जोत डगमगांयदा। आप फड़या हरि हरि पल्ला, जीवां जन्तां आप फड़ांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वसणहारा नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटार, निरगुण बैठा आसण लांयदा। शब्द सुनेहड़ा देवे गुर करतार, गुर करनी किरत कमांयदा। कलिजुग कूड़ा चार कुन्ट कुड़यार, कूड़ी रईयत वेख वखांयदा। अन्तिम मात आए हार, सगला संग ना कोए निभांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता मारे मार, जुग जुग वेस वटांयदा। निहकलंका ल्ए अवतार, एका डंका शब्द वजांयदा। पावणहारा साची सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रहांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि वेस वटाउणा, गुर नानक लेख लखांयदा।

निहकलंक प्रभ जामा पाउणा, निरगुण नूर नूर उपजांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी साचा मार्ग लाउणा, चार वरनां एका रंग रंगांयदा। शाह सुल्तान ख़ाक मिलाउणा, आप आपणा खेल खिलांयदा। वरन बरन कोई दिस ना आउणा, अट्ठ अठारां वेख वखांयदा। नौ अठारां ना धार चलाउणा, एका खण्डा नाम चमकांयदा। एका पुरख अकाल मनाउणा, इष्ट देव इक्क दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अन्तिम वार, कलिजुग कूड़ा मेट मिटांयदा। नानक जोती निरगुण धार, दस दस रूप वटाईआ। अंगद गुर कर प्यार, अमर रामदास विच धराईआ। गुर अर्जन मीता हरि निरँकार, बोध अगाध शब्द जणाईआ। गुरू ग्रन्थ कर त्यार, चार वरन गया समझाईआ। हरिगोबिन्द ख़बरदार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। हरिराए हरिकृष्न पाए सार, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुर तेग बहादर तिक्खी धार, विच संसार आप चलाईआ। गुर गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बली बलकार, सुत्त दुलारा पुरख अकाल आप उपजाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, दूसर दर ना कोई वखाईआ। एका खण्डा नाम कटार, तन गात्रे आप पहनाईआ। आपे सीस जगदीश होए दस्तार, कल्गी तोड़ा आप सुहाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मेले सहिज सुबाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, गुरमुखां आप प्याईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, सिँघ रूप वड्डी वड्याईआ। आपणी खिच्ची सति कटार, सति सतिवादी लए तराईआ। पंचम मीता पंचम दए अधार, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। पंचम नाता तोड़ जगत संसार, चरन कँवल प्रीत बंधाईआ। पंचम फतिह बोल जैकार, वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू ख़ुशी मनाईआ। आपे ढहि प्या दुआर, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। गुर गुर रूप आप करतार, गुर चेला गुर मेला गुरसिख गोबिन्द रूप वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित भेव ना राईआ। अजूनी रहित पुरख अकाल, आदि जुगादि समांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, करता कीमत आपे पांयदा। गुरू गुर रूप बण दलाल, लोकमात धरांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों आपे भाल, गुरमुख साचे मात जगांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट कोए ना लै जांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, गुरमुखां सच ख़ज़ाना आप लुटांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोई ना पांयदा। आपणी घाल आपे घाल, गुर गोबिन्द आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुख साचे मात जगाउणा, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सम्मत चौदां वेख वखाउणा, लक्ख चुरासी जोड़ जुड़ाईआ। नौ दस ग्यारां बीस तीस चार मेल मिलाउणा, चार चार करे कुड़माईआ। राग छतीसा भेव खुलाउणा, अञ्जील कुराना मूल चुकाईआ। वेद पुराण रहिण ना पाउणा, पंडत पांधा मस्तक तिलक ना

कोई लगाईआ। मक्का काअबा सीस ना किसे झुकाउणा, दो दोआबा दए दुहाईआ। हक्क जनाबा पारब्रह्म अबिनाशी करते आप अख्वाउणा, इक्क अमाम शब्द करे वड्याईआ। तालब तल्ब आप अख्वाउणा, साचा सालस इक्क हो जाईआ। नौ खण्ड पृथमी ख़ालस ख़ालसा आप बणाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका धाम बहाईआ। सम्मत वीह सौ सोलां लेख लिखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धुर संदेश जीव जन्त सुनाउणा, साध सन्त रिहा जगाईआ। सम्मत सतारां खेल खिलाउणा, अग्नी तत्त लड़े लड़ाईआ। अट्ठ अठारां वहिण वहाउणा, जल जल रूप सर्ब समाईआ। सम्मत उन्नी मुस्लिम सुन्नी रहिण ना पाउणा, ईसा मूसा ख़ाली ख़ीसा इक्क वखाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा निहकलंक कल डंक वजाउणा, एका शब्द करे जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी सर्ब उठाउणा, दिल्ली दरबारे चरन छुहाउणा, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। पन्दरां कत्तक लेख लखाउणा, जगत भुलेखा भरम कढाउणा, औलीआ पीर शेख़ा मेट मिटाउणा, एका वरन सर्ब लोकाईआ। एका अलक्ख जीव जन्त साध सन्त सत्त दीप जगाउणा, पुरख अकाल दीन दयाल एका इष्ट वखाईआ। पंचम राज साचा जोग कमाउणा, जुगत जोग जगत प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। स्यासत वरासत किसे दी रहिण ना पाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल अगम्म अपर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मात धर, गुरमुखां चुकाए चुरासी डर, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, सति पुरख निरँजण एकउँकारया। गुरमुखां देवे नाम निधान, लोकमात लए अवतारया। शब्द जणाई धुर फ़रमान, एका अक्खर नाम पढ़ा रिहा। चरन धूढ़ बख्शे सच अशनान, दुरमति मैल गवां रिहा। राग सुणाए साचा कान, अनहद धुन उपजा रिहा। दरगाह साची देवे माण, राए धर्म फंद कटा रिहा। आवण जावण लक्ख चुरासी छुट्टे काण, मात गर्भ फंद कटा रिहा। एका बख्शे पद निरबान, हरि सज्जण मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा इक्क समझा रिहा। सतिगुर साचा पुरख करतार, हरि साचा वड वड्याईआ। जन भगतां करे मात प्यार, नित नवित्त खेल खिलाईआ। मनमुखां मारनहारा मार, जुग जुग देवे जगत सज़ाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, दोवें धार रिहा वखाईआ। गुरमुख विरले लाए पार, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। मूर्ख मूढ़े सुत्ते पैर पसार, गुर का रूप दिस ना आईआ। सुरत शब्द ना कोई अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा हरि समरथ, हरिजन वेख वखांयदा। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी दया कमांयदा। इक्क कराए पूजा पाठ, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। एका तीर्थ एका तट्ट, एका घाट वखांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, हउमे रोग गवांयदा। दीपक जोती लट लट, मस्तक थाल आप

जगांयदा। वसणहारा घट घट, गुरमुख सोए मात उठांयदा। भाग लगाए काया मट्ट, कंचन गढ़ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, अन्दर मन्दिर मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा अन्दर वड़, गुरमुख लए जगाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, दिस किसे ना आईआ। सन्त सुहेले आपे लए फड़, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। दरस दखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, एका करे पढ़ाईआ। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, दूसर हट्ट ना किसे वकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा हरि भगवान, देवणहारा जीआ दान, जीआ दाता आप हो जाईआ। जीआ दाता पुरख बिधाता, पारब्रह्म पुरख सुल्तानया। आपे पिता आपे माता, आपे वेखे बाल निधानया। आपे देवणहारा साची दाता, आपे बख्शे चरन ध्यानया। आपे मेटे रैण अन्धेरी राता, आपे तेज प्रकाश करे कोटन भानया। आप चढ़ाए आपणे राथा, पार कराए दो जहानया। सतिगुर पूरा सगला साथा, सगला संग निभानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे हरि मेहरवान, आपणे दर करे परवानया। आए दर होए परवान, जिस जन नेत्र लोचण दर्शन पाया। अन्तिम मेला वाली दो जहान, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाया। सो पुरख निरँजण रसना जिह्वा गाण, हँ ब्रह्म मेल मिलाया। सोहँ शब्द सतिजुग प्रधान, साचे साचा मार्ग लाया। आप झुलाए हरि निशान, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाया। चारे खाणी कर परवान, चारे बाणी विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाया। सतिगुर पूरा हरि गोबिन्द गोपाल, दीनां नाथ दीन दिआलया। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द गले लगाए साचे लाल, दो जहान करे प्रितपालया। गहर गम्भीर सागर सिन्ध अमृत भरया साचा ताल, भर प्याए नाम प्यालया। दाता दानी सदा बख्शिंद तोड़णहारा जगत जंजाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए साचा घर, सचखण्ड दुआरा इक्क परवानया। सचखण्ड दुआरा हरि हरि खोल्ह, गुरमुखां राह वखांयदा। गुर नानक तेरां तेरां तोले तोल, तेरा तेरी झोली पांयदा। सोहँ अक्खर आपणी रसना बोल, नाम सति मन्त्र जगत दृढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण वजाए साचा ढोल, एका डंका हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी राउ रंकां जीवां जन्तां कढ्ढे पोल, घट घट अन्दर फोल फुलांयदा। हरि का भेव ना पाए कोई पंडत पांधा रौल, ज्ञान ध्यान ना कोए समझांयदा। गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा आपणा करे कीता पूरा कौल, वेला अन्त सन्त कन्त भगवन्त आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी सुत्ती रही अनभोल, माया पर्दा कोए ना लांहयदा। मनमति करया जगत जग घोल, फड़ बांह ना कोए छुडांयदा।

सम्मत चढ़या वीह सद सोल, सोलां सोलां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा एका हरि, गुरमुख साजण जाए तार, तारनहार पुरख समरथ, गुरमुख रक्खे दे कर हथ्थ, दो जहानां हरि मेहरवाना बेड़ा पार करांयदा।

✪ ११ सावण २०१६ बिक्रमी पिण्ड भूंडर ✪

हरि सतिगुर सच्चा दीन दयाल, बेअन्त बेअन्त बेअन्तया। लोकमात बण दलाल, गुरमुख तारे साचे सन्तया। जगत जुग अवल्लड़ी चाल, खेले खेल श्री भगवन्तया। जन भगतां देवे नाम सच्चा धन माल, आप आपणी दया कमन्तया। गुरसिख साजण घालण साची घाल, एका भगती नाम दृढ़न्तया। फल लगावे काया डाल्ह, अमृत मेवा इक्क खवन्तया। तोड़नहारा जगत जंजाल, सिर समरथ हथ्थ रखन्तया। दिवस रैण करे प्रितपाल, नेड़े दूर वेख वखन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलन्तया। मेलणहारा सर्ब जीअ दाता, पारब्रह्म गुर करतारया। गुरमुख विरले बख्शे चरन नाता, चरन प्रीती इक्क वखा रिहा। सदा सहाई पिता माता, पूत सपूता गले लगा रिहा। देवणहारा साची दाता, नाम वस्त झोली पा रिहा। मेटे रैण अन्धेरी राता, जग बंधन तोड़ तुड़ा रिहा। रसना गाई हरि हरि गाथा, गोबिन्द मेला मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। हरिजन सच्चा दासन दास, सेवक सेव वड्डी वड्याईआ। हरि हरि हिरदे रक्ख वास, निज आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोती नूर नूर प्रकाश, दीवा बाती इक्क जगाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। पावे सार पृथ्मी आकाश, पतित पावण वड वड्याईआ। हरिजन ना होए कदे उदास, आदि जुगादी वेख वखाईआ। सन्तन मीता दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा लेखा रिहा चुकाईआ। गुरमुख लेखा हरि चुकाउणा, आपणी दया कमांयदा। पूर्ब लहिणा झोली पाउणा, नेत्र नैणां दरस दखांयदा। आत्म मध जाम प्याउणा, एका रस वखांयदा। शब्द सुर ताल वजाउणा, एका राग अल्हांयदा। काग हँस आप बणाउणा, एका मोती चोग वखांयदा। पिछला दाग़ आपे लौहणा, साचे मार्ग आपे पांयदा। चरन धूढ़ी मजन माघ आप कराउणा, दर घर साचे फेरा पांयदा। जगत तृष्ना अग्ग बुझाउणा, सांतक सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहारा हरि भगवान, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यान, कलिजुग अन्तिम दाता बेपरवाहीआ। एका देवे धुर फ़रमान, साची सिख्या नाम पढ़ाईआ। सोहँ मन्त्र कर प्रधान, चतुर सुजाण जगत तराईआ। नारी पुरख सारे गाण,

पुरख पुरखोतम मेल मिलाईआ। साचा मन्दिर वेख मकान, कंचन गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे अन्दर वड़, आपणी सदा आप लगाईआ। उच्ची सदा देवे बांग, एका नाअरा लांयदा। इक्क सुणाए साचा राग, एका कलमा आप सुणांयदा। सो पुरख निरँजण मारे वाज, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्च महल्ल अटल मुनार, गुरमुख सज्जण पाए सार, गीत गोबिन्द इक्क अल्लांयदा। गीत गोबिन्द सच्ची धुन्कार, गुर पूरे हथ्थ रखाईआ। आप आपणी किरपा धार, गुरमुखां झोली रिहा भराईआ। साची सिख्या विच संसार, गुरमति इक्क समझाईआ। चरन प्रीती भगत अधार, जगत जुगत वड्याईआ। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख सज्जण जाए तार, कलिजुग तारे फड़ फड़ बाहींआ। नेत्र लोचण नैण दिस ना आए विच संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, घर साचा वड वड्याईआ। गुरमुख नाम भण्डारा वण्ड, गुर सतिगुर दया कमांयदा। पल्ले बन्न्हे नाम गण्ढ, सच ख़ज़ाना इक्क वखांयदा। नंगी होवे ना मात कण्ड, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। भेख पखण्डा देवे दण्ड, नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठांयदा। पावे सार विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजांयदा। लक्ख चुरासी खण्ड खण्ड, धीरज धीर ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, एका नाम तार सितार हिलांयदा। नाम सितार साची सुर, गुरमुख काया आप हिलाईआ। गुर चरन प्रीती गया जुड़, मेल मिल्या सहिज सुभाईआ। लेखा सतिगुर जाणे धुर, दूसर होर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाईआ। सगला संग आसा मनसा पूर, गुरमती मति दृढ़ांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या सिख समझांयदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, मस्तक टिक्का जोत ललाटी डगमगांयदा। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, जगत ललारी ना कोए चढ़ांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणा मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा दाता दानी सूर, सूरबीर आप अख्वांयदा। सर्ब कल आपे भरपूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा देवे वर, तन गहिणा बस्त्र पहनांयदा। तन बस्त्र शब्द अपार, गुरमुख गुर पाया। गुर मीता सज्जण मुरार, धुर लेखा वेख वखाया। लोकमात करे प्यार, घर मन्दिर इक्क सुहाया। इक्क इकल्ला लए उभार, एका बंस सुहाया। जीवां जन्तां मारे मार, मारनहारा बेपरवाहया। घनक पुर वासी हो त्यार, निरगुण जोती आपणी आप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तर आत्म

वेखे मार ध्यान, आप आपणी दया कमाया। दयानिध गहर गुण सागर, गुर गुर नाउँ धराईआ। गुरमुखां कराए नाम वणज बण सौदागर, साचा हट्ट खुल्हाईआ। भाग लगाए काया गागर, रत्न अमोलक हीरा विच रखाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चार कुन्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी पावे हिस्सा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी वंड आपे रिहा वंडाईआ।

११ सावण २०१६ बिक्रमी बीबी प्रीतो दे घर दया होई पिण्ड मदरसा ज़िला फ़िरोज़पुर

टुट्टी गंढुणहार गोपाल, गुण गहर गम्भीर अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, आपणी आप करांयदा। भगत वछल सद कृपाल, करता पुरख नाउँ धरांयदा। हरिजन वेखे साचे लाल, साचा मेवा अमृत फल खवांयदा। सतिगुर सूरा बण दलाल, लोकमात पार करांयदा। जो जन घालण रहे घाल, पूर्ब लेखा झोली पांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेल मिलांयदा। जगत टुट्टी देवे गंढ, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। एका अक्खर नाम देवे वण्ड, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। काया सीतल पाए ठण्ड, सांतक सति सरूप वखाईआ। जगत विकारा तोड़ घमण्ड, एका रंगण रंग रंगाईआ। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा जो जन गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। टुट्टी गंढे हरि गोबिन्द, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, साची सिख्या सिख समझाईआ। हरिजन उपजाए आपणी बिन्द, सुत्त नादी नाउँ धराईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, साची वस्तू झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द करे कुड़माईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, हरिजन साचे वेख वखांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आप आपणा मेल मिलांयदा। आत्म दरसी दरस महान, दर दुआरा इक्क वखांयदा। नाता तुट्टे जगत जहान, घर साचा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तान, सतिगुर पूरा इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेखे लांयदा। आया दर हरि निरँकार, निरगुण जोती नूर जगाईआ। बिरध बालां जाए तार, जो जन आए सरनाईआ। अन्तिम वार ना होए ख्वार, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। जगत बुढेपा तुट्टा नाता, हरि सतिगुर आप तुड़ांयदा। रसणा गाउणा साचा जापा, सोहँ नाम जपांयदा। मेट मिटाए तीनों तापा, अग्नी तत्त ना कोए तपांयदा। मेल मिलाए साचे बापा, पिता पूत एका गोद

सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे दर, साचा दरसी दरस वखांयदा। जगत बुड़ेपा निभया तोड़, हरि साचा वेख वखानया। अन्तिम चाढ़े आपणे घोड़, पार कराए दो जहानयां। सतिगुर पूरा बन्दी छोड़, तोड़े बन्द खेल महानया। अन्तिम वेले जाए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवानया। पंज तत्त तत्त प्यार, तत्व तत्त रिहा तजाईआ। बल छुटकया सर्ब संसार, नेत्रहीण जोत खिचाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, खेले खेल बेपरवाहीआ। जो जन चरन सरन सीस धरे दस्तार, सीस जगदीश लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जगत गुरदेव, एका एकउँकारया। जन भगतां लावे आपणी सेव, आप आपणा खेल खिला रिहा। एका अमृत आत्म नाम देवे मेव, साचा फल खुआ रिहा। गुरमुख गुरसिख गाए रसना जिह्व, एका सिख्या सिख समझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे लड़ हरिजन फड़, आपे बंध बंधा ल्या।

✪ १२ सावण २०१६ बिक्रमी तेजा सिँघ दे घर दया होई पिण्ड सादक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

८२६ ०८

आदि जुगादी इक्क इकल्ला एकउँअंकार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, जोती नूरी करे रुशनाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। आदि निरँजण भेव न्यार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। निरगुण रूप अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आप अख्वाईआ। थिर घर वसे सच दुआर, दर साचा इक्क सुहाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। नूरो नूर नूर उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ रखाईआ। अबिनाशी करता हरि निरँकार, आदि जुगादि समांयदा। खेले खेल सिरजणहार, आप आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण रूप निराकार, दिस किसे ना आंयदा। सुहाए साचा बंक दुआर, सचखण्ड दुआरा वेख वखांयदा। अलक्ख अलक्खणा अलक्ख करे इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। अगम्म अगम्मड़ा धाम अपार, आप आपणा थान सुहांयदा। समरथ पुरख कल करतार, करनी करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला उच्च अगम्म अथाह, बेपरवाह पारब्रह्म अख्वांयदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वाईआ। आपे खेले खेल तमाशा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे पाए आपणी रासा, आपे वेख वखाईआ। आपे दासी आपे दासा, सेवक सेवा आप कमाईआ। आपे निरगुण जोत प्रकाशा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे पृथमी

आप आकाशा, गगन मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड करे निवासा, लोआं पुरीआं सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकउँअंकार, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। अलक्ख अगोचर बेअन्त बेपरवाह, एका एक परवरदिगारया। नूरो नूरी नूर ख़ुदा, इलाही नूर आप अख्वा रिहा। आपे खेले खेल बेपरवाह, आप आपणा वेस वटा रिहा। एका बणे आप मलाह, आपणा बेड़ा आप चला रिहा। आपे देवे सच सलाह, सिफ्त सलाही नाउँ धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहा रिहा। सचखण्ड दुआरा धुर दरबारा, हरि हरि आप सुहांयदा। निरगुण बाती कर उज्यारा, साचा दीपक इक्क जगांयदा। इक्क इकल्ला निराकारा, निरगुण आपणा धाम सुहांयदा। शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, शाह सुल्तान इक्क अख्वांयदा। ना कोई दीसे होर पसारा, ना कोई संग रखांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, ना कोई मेल मिलांयदा। ना कोई सुत्त ना कोई दारा, पिता पूत ना कोए अख्वांयदा। ना कोई मन्दिर दिसे चार दीवारा, ना कोई रचन रचांयदा। ना कोई शब्द ना जैकारा, ना कोई नाअरा लांयदा। ना कोई सन्त ना दुलारा, ना कोई प्यार वखांयदा। ना कोई गुर ना अवतारा, ना कोई वेस वटांयदा। ना कोई रवि ससि दिसे सितारा, आकाश प्रकाश ना कोई सुहांयदा। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दिसे डूँघी गारा, जल थल ना कोए रखांयदा। ना कोई ज़िमीं अस्मान दिसे पाड़ा, मण्डल मण्डप ना कोई सुहांयदा। ना कोई विष्न करे आकारा, बाशक सेज ना कोए हंढांयदा। ना कोई ब्रह्मा वेद विचारा, चारे मुख ना कोए सलांहयदा। ना कोई शंकर गल पाए हारा, हथ्थ त्रसूल ना कोए उठांयदा। ना कोई करोड़ तेतीसा अमृत मंगे धारा, सुरपति राजा इन्द ना कोए अख्वांयदा। ना कोई गण गंधर्ब राग वजाए सितारा, किन्नर यच्छप ना कोए बणांयदा। ना कोई त्रैगुण करे पसारा, रजो तमो सतो ना कोए उपांयदा। ना कोई पंचम करे प्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोए उपांयदा। ना कोई लक्ख चुरासी कर उज्यारा, घर घर विच दीप ना कोए जगांयदा। ना कोई खोल्ह़े नौ दुआर किवाड़ा, पंचम धाड़ ना कोए वखांयदा। ना कोई नार कन्त भतारा, साची सेज ना कोए हंढांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला एकउँअंकारा, आपणी कल वरतांयदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी भेव न्यारा, आप आपणा रूप ना कोई वखांयदा। आदि शक्ती खेल न्यारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। ना कोई खड़ग खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड ना कोए उठांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान जोद्धा सूरबीर दिसे बली बलकारा, बलधारी ना कोए अख्वांयदा। ना कोई राम सीता करे प्यारा, रावण गढ़ ना कोए तुड़ांयदा। ना कोई वेद व्यासा बणे लिखारा, वराह रूप ना कोए धरांयदा। ना कोई शास्त्र सिमरत करे प्यारा, अनभव ना कोए जणांयदा।

ना कोई कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, जगत बंसरी ना कोए वजांयदा। ना कोई सईआं मंगलचारा, ना कई नाच नचांयदा। ना कोई गीता ज्ञान दए अधारा, अठारां ध्याए ना कोए उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि न अन्ता हरि भगवन्ता, एका एक एक अख्वांयदा। एका एक इक्क इकल्ला, हरि साचा वड वड्याईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल अटार निरगुण बैठा जोत जगाईआ। सचखण्ड वसे सच निरँकार, घर साचे सोभा पाईआ। कर्म धर्म ना कोए विचार, गोत वरन ना कोए जणाईआ। तरनी तरन भेव न्यार, तारनहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपे साजण हरि हरि आपे मीता, आपे खेल खिलांयदा। आपे बैठा रहे इक्क अतीता, त्रैगुण माया विच ना आंयदा। आपे ठंडा आपे सीता, अग्नी तत्त ना कोए रखांयदा। आपे पतित आपे पुनीता, पतित पापी आप तरांयदा। आपे हस्त आपे कीटा, अनडीठा रूप वटांयदा। आपे परखणहारा नीता, आपे वेख वखांयदा। आपे मिट्ठा कौड़ा रीठा, अमृत फल आप खुवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्सया साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण साचा सच सुहाईआ। खेले खेल सर्ब घट वासन, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। पावे सार पृथ्मी आकाशन, अकल कल वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर साची रासन, आप आपणी रिहा रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण बैठा साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि सुहंदड़ा, इक्क इकल्ला एक ओंकारया। थिर घर साचा वेख वखंदड़ा, पारब्रह्म रूप अगम्म अपारया। निरगुण जोती दीप जगन्दड़ा, आदि जुगादि रहे उज्यारया। सच सिँघासण इक्क सुहंदड़ा, आप आपणा आसण ला रिहा। चोबदार ना कोए वखंदड़ा, दर दरबान ना कोए दसा रिहा। आपणी कल आप वरतन्दड़ा, अकल कल धारी नाउँ रखा ल्या। आपणा हुक्म धुर फ़रमान आप चलंदड़ा, आपे हुक्म जणा रिहा। शब्द सरूपी साचा सुत्त इक्क उपजंदड़ा, आपणी गोदी आप उपजा रिहा। आपणा भाणा हरि समझंदड़ा, लेखा लेख ना कोए जणा रिहा। लोआं पुरीआं रचन रचन्दड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा ल्या। शब्द डोरी इक्क बधन्दड़ा, तन्दन तन्द इक्क उठा ल्या। पृथ्मी आकाश खेल खिलंदड़ा, आप आपणी आण तका ल्या। विष्न रूप आप अख्वंदड़ा, निरगुण सरगुण नाउँ धरा ल्या। ब्रह्मा लेखा आप लिखंदड़ा, नाभी कँवल आप आपणा फुल्ल खिला ल्या। आपे चारे वेदां भेव खुलंदड़ा, एका शब्द सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा नाउँ धरा रिहा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, शंकर रूप आप वटाईआ। आपे करे घर सच आदेस, आपणी अलक्ख आप जगाईआ। आपे देवणहारा

नर नरेश, आपणी झोली आप भराईआ। आपे धारे आपणा भेस, वेस अनेका आप कराईआ। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग हंढाईआ। आपे आप आपणा रिहा वेख, आप आपणा नेत्र रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपार, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अकाल हरि समरथ, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। आपे जाणे महिमा अकथ, अगाध बोध आप आपणा भेव खुल्हाईआ। आपे देवे आपणी वथ्थ, आपणी झोली आप भराईआ। आप निभावे आपणा साथ, सगला संग सर्ब रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, त्रैगुण रचन रचाईआ। त्रैगुण तेरा साचा मेला, हरि हरि मेल मिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल खेला, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वेस वटांयदा। निरगुण बणया सज्जण सुहेला, सरगुण नाउँ धरांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त कर प्यार, निरगुण बाती कर उज्यार, रक्त बूंद साची वेख वखांयदा। पंज तत्त तत्त मुनारा, हरि हरि आप उपाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा, वेद कतेब भेव ना राईआ। मन मति बुध दए सहारा, आप आपणा अंग कटाईआ। घर विच घर महल्ल उसारा, घर बैठा सेज वछाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन अनादी ताल वजाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, सर सरोवर इक्क भराईआ। निरगुण जोत कर उज्यारा, काया मन्दिर करे रुशनाईआ। आत्म सेजा खेल अपारा, घर बैठा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल काया साचे घर, घर विच वेख वखाईआ। काया मन्दिर नौ दर, दर दर वेस वटाया। पंज तत्त विकारा भर, हउमे गढ़ सुहाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार फड़ाया लड़, आसा तृष्ना लए प्रनाया। डूँघी भँवरी बैठा वड़, दिस किसे ना आया। सुखमन नाड़ी वेखे खड़, हरिजन साचे राह तकाया। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, आप आपणी दया कमाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता ना कोई सीस ना कोई धड़, हर घर बैठा जोत जगाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, माटी ख़ाक ना कोए दबाया। जगत विद्या ना रिहा पढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाया। निरगुण जोती नूर उजाला, हरि हरि आप अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला, आदि पुरख खेल खिलांयदा। वसे सच सच्ची धर्मसाला, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखांयदा। आपे काल आपे महांकाला, प्रितपाला आप अख्वांयदा। आपे बणे जुग जुगन्त दलाला, लोकमात वेस वटांयदा। हरिजन वेखे साचे लाला, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। देवे नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ीना इक्क वखांयदा। फल लगाए पंज तत्त काया डाला, अमृत मेवा मुख खुवांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका गुर, लेखा जाणे लिख्या धुर, दूसर कोए भेव ना पांयदा। हरि का भेव आदि अभेदा, अन्त कोए ना पाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्का चारे वेदा, गणत गणी ना जाईआ। कोटन कोटि गा गा थक्के जिह्वा, जिह्वा गुण ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेवा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। आदि शक्ति वड देवी देवा, देव आत्मा रूप वटाईआ। आपे जाणे आपणी सेवा, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, पुरख अकाल करांयदा। अजूनी रहित निरगुण धार, मात गर्भ फेरा ना पांयदा। अकाल मूर्त नूर अपार, नूरो नूर नूर समांयदा। निर्भय वसे आप करतार, भउ विच सर्ब रखांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात नाउँ धरांयदा। आपणे नाउँ कर जैकार, नर निरँकारा आप अख्वांयदा। वसे नगर खेड़े सच ग्राउँ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लांयदा। सन्तन मीता कर प्यार, इक्क अतीता दरस दखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण दाता बेपरवाह, एका एक ओंकारया। सरगुण बणे जगत मलाह, गुर गुर रूप वटा रिहा। शब्द सरूपी पकड़े बांह, नाम नामा लड़ फड़ा रिहा। हरिजन हँस बणाए काँ, माणक मोती चोग चुगा रिहा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, सतिगुर पूरा आप अख्वा रिहा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, जुग जुग बेड़ा आप तरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत वछल वछल गिरधार, खेले खेल विच संसार, सगला संग आप निभा रिहा। भगतन मीता सगला संग, हरि हरि आप निभाईआ। आपे आत्म सेजा सुत्ता सच पलँघ, घर घर विच आसण लाईआ। आपे अनहद ताल वजाए मृदंग, पंचम सखीआं राग अल्ाईआ। आपे अमृत धारा जाणे गंग, निझर झिरना आप झिराईआ। आपे नौ दुआरे रिहा लँघ, टेडी बंक पार कराईआ। आपे सुरती शब्दी डोरी बन्ने पतंग, आकाश आकाश आप उडाईआ। आपे भगतां मंगे जुग जुग दर मंग, दर दरवेश फेरी पाईआ। काया चोली चाढ़े मजीठी रंग, उतर कदे ना जाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, भूत भविख्त रिहा समझाईआ। अस्व घोड़े कसे तंग, शाह सवार फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी वजाए मृदंग, नाम सितार इक्क हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वस्सया सदा संग, सगला साथ आप रखाईआ। भगतन मीता हरि भगवन्त, हरि सज्जण सच तरांयदा। हरिजन वेखे साचे सन्त, जुग जुग मेल मिलांयदा। मेल मिलावा नारी कन्त, आत्म सेजा सच हंढांयदा। काया चोली चाढ़े रंग, बसन्त, नाम रंगन इक्क रंगांयदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, हरि का भेव कोए ना पांयदा। आपे जाणे आपणा शब्द आपणा

मंत, आपे आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी आप अख्वांयदा। शब्द अनादी धुन जैकारा, हरि साचा सच उपजाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आप सुणाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, अन्दर बाहर आप हो जाईआ। आपे वस्सया अन्ध अँध्यारा, बैठा मुख छुपाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुर इष्ट आप हो जाईआ। पुरख अबिनाशी पाए सारा, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जन भगतां खोल्हे एका दर, आप आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, जुग जुग करदा आया। निरगुण सरगुण खेल अपारा, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। सतिजुग साची बन्ह्हे धारा, त्रेता आपणा वेस वटाया। द्वापर करया पार किनारा, भेव किसे ना आया। कलिजुग खेले खेल अगम्म अपारा, आप आपणा नाउँ धराया। ईसा मूसा दए अधारा, एका कलमा नबी सुणाया। हक्क हकीकत खेल न्यारा, महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला एका रूप दरसाया। आपे वस्सया सच महल्ला, नूरो नूर नूर रुशनाया। बेऐब ख़ुदा पकड़या पल्ला, दस्तगीर वेस वटाया। आपणी जोती आपे रला, आपणा नाअरा आपे लाया। मुकामे हक्क फड़या पल्ला, लाशरीक इक्क ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि निरँकार, आपणी कल वरतांयदा। करे प्यार मुहम्मदी यार, चार यारी वेख वखांयदा। अल्ला राणी दए अधार, एका हुक्म सुणांयदा। कायनात पावे सार, चार कुन्ट सेवा लांयदा। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, एका हट्ट वखांयदा। चौदां लोकां वस्सया बाहर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा कर अमाम, दहि दिशा वेख वखांयदा। दहि दिशा हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। एका नाअरा कर त्यार, एका सबक पढ़ाईआ। आपे पावणहारा सार, आपे वेख वखाईआ। आपे निरगुण जोती कर उज्यार, नानक नाम वज्जी वधाईआ। सतिनाम वणज वपार, चार वरनां रिहा कराईआ। ऊच नीच राउ रंक सोहे इक्क दुआर, राज राजानां एका धाम बहाईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। एका बख्शे हरि चरन प्यार, गुरमति इक्क समझाईआ। कागद कलम लिख लिख गई हार, मस बनास्पत रही शरमाईआ। चुक्के भार ना चौदां भार, भाग आपणा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। नानक निरगुण नाउँ रक्ख, हरि आपणी कल वरतांयदा। सरगुण रूप हो प्रतक्ख, लोकमात फेरा पांयदा। गुरमुख सज्जण ल्ए रक्ख, ठग्ग ठगोरी ना कोए पांयदा। जूठ झूठ पाए नथ्थ, चारों कुन्ट फिरांयदा। मिल्या मेल पुरख समरथ, घर साचा बंक सुहांयदा। हरि की महिमा कथनी अकथ, कथ कथा आप सुणांयदा। कलिजुग उपजाया साचा रथ, चार

वरनां आप चढ़ांयदा। लहिणा देणा चुकाया तीर्थ अठसठ, घर साचा इक्क वखांयदा। एका पूजा एका पाठ, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका धीरज एका सति, एका जति वखांयदा। एका जाणे मित गति, गति मित आपणे हथ्थ रखांयदा। पारब्रह्म जोत जगाए नित नवित्त, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां करे साचा हित्त, हित्तकारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतार, गोबिन्द बन्ने साची धार, पुरख अकाल मीत मुरार, सुत्त दुलारा नाउँ धरांयदा। सुत्त दुलारा गुर गोबिन्द, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। प्रगट होया गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। आपे मेटे सगली चिन्द, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। गुरसिख उपजाए आपणी बिन्द, पंचम मीता पंचम मेल मिलाईआ। अमृत धार देवे सागर सिन्ध, नाम खण्डे पौहल छकाईआ। सिँघां मेटी सगली चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गोबिन्द मेला हरि करतार, हरि हरि विच आप समांयदा। इक्क सुहाया बंक दुआर, गुर दर मन्दिर सोभा पांयदा। निरगुण जोती अगम्म अपार, दिवस रैण डगमगांयदा। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, ठाकर करता आप प्यांअदा। मेल मिलावा कलिजुग धार, कूड़ा बंधन तोड़ तुड़ांयदा। साचा सज्जण मीत मुरार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। तेरा रूप अपर अपार, हरि हरि रंग रंगांयदा। कलिजुग अन्तिम करना पार, बेड़ा तेरे हथ्थ फड़ांयदा। गुर गोबिन्द बण लिखार, सिँघ सिँघ एह फ़रमांयदा। कलिजुग अन्तिम होणे विभचार, नारी कन्त ना कोए हंढांयदा। ना कोई दीसे सच सिक्दार, राज राजाना ना कोए अख्वांयदा। मात पित ना कोए प्यार, धी भैण ना कोए बणांयदा। ना कोई सज्जण दिसे विच संसार, ठग चोर यार सर्ब वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, आपे लेखा लेख लिखांयदा। लेखा लिख्या साचा तत्त, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी उब्बल रत, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साधां सन्तां लथ्थे पति, श्री भगवान ना कोए मिलाईआ। खड़ग खण्डा फड़ हथ्थ, सूरबीर ना कोए अख्वाईआ। पंच विकारा पाए नथ्थ, जीव जन्त होए हल्काईआ। सृष्ट सबाई भुल्ले गुर गुरमति, मनमति करे लड़ाईआ। आत्म बीज ना बीजे कोई साचे वत, नाम बीज ना कोए बिजाईआ। मायाधारी भरया खत, झूठा वणज कराईआ। किसे ना दिसे धीरज जति, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। सतिनाम ना किसे कोल वथ, नानक नामा गया समझाईआ। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। वेसवा घर बणे तीर्थ अठसठ, धीआं भैणां रहे तकाईआ। पंडत पांधा कोई ना करे पूजा पाठ, जूठा झूठा मस्तक तिलक लगाईआ। गुर दर मन्दिर वेखे हाट, गुर का नाउँ हट्टो हट्ट विकाईआ। कोई ना उतारे पूरे घाट, घर घर बैठण

धूंणीआँ लाईआ। कलिजुग नेड़े आई वाट, एका ढईया विच रखाईआ। गुर गोबिन्द सतिगुर पूरा कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, नीला नीली धारों करे बाहर, कलिजुग वेखे अन्तिम वार, चौथे जुग चौथा पौड़ा पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, रूप अनूप शाहो भूप उच्चा टिल्ला पर्बत साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि पुरख खेल खिलाईआ। आदि पुरख हरि खेलणहारा, जुग जुग खेल खिलांयदा। नानक निरगुण ल्या अवतारा, लक्ख चुरासी आप समझांयदा। गुर गोबिन्द सच भण्डारा, अमृत जाम प्यांअदा। लेखा लिखे लिखणहारा, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। लहिणा देणा चुक्के संग मुहम्मद चार यारा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। चौदां लोकां दए अधारा, सदी चौधवीं वेख वखांयदा। प्रगट होए हरि करतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। निहकलंक नाउँ जैकारा, रूप रंग ना कोए वखांयदा। एका जोत नूर कर उज्यारा, शब्दी शब्द चलांयदा। शब्द गुर गोबिन्द मीत मुरारा, पुरख अकाल संग निभांयदा। सम्बल नगरी वसे धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ महल्ल उपांयदा। आपे घड़े भन्ने हरि घड़ण भन्नणहारा, दूसर संग ना कोए रखांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। सरसा तेरी साची धारा, गोबिन्द लेखा आप जणांयदा। लक्ख चुरासी उतरे पारा, जिस जन दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता मीत मुरारा, देवे दरस अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। गुरमुख सज्जण मीत प्यारा, गुर सतिगुर साचे भाया। लोकमात करे प्यारा, लक्ख चुरासी विच्चों वेख वखाया। एका बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआया। साचा नाम देवे जगत सहारा, अन्दर मन्दिर आप सुहाया। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, तन गात्रे इक्क लटकाया। पंच विकारे मारे मारा, तिक्खी धार वखाया। जूठ झूठ पार किनारा, साची सिख्या सिख समझाया। गुरमुख साचा सुत्त दुलारा, गुर गोबिन्द वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क खुल्हाया। सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, गुरमुखां मेल मिलन्नया। शब्द अगम्मी आपे बोल, सच सुनेहड़ा आप घलन्नया। काया मन्दिर साचे अन्दर अनहद वजाए साचा ढोल, ढोलक छैणा ना कोए रखन्नया। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, तीजे नेत्र दरस वखन्नया। गुरमुख मक्खण ल्ए विरोल, लक्ख चुरासी छाछ वखन्नया। आपणे तोले साचे तोल, गुर नानक तेरां धार चलन्नया। सतिगुर पूरा आदि जुगादि रहे अडोल, एका एक श्री भगवन्नया। कलिजुग अन्तिम जूठ झूठ कढ्ढण आया पोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे बेड़ा बन्न्हया। गुरमुख तेरा बेड़ा बन्न्ह, गुर सतिगुर भार उठांयदा। लोकमात चढ़या साचा चन्न, दरगाह साची आप सुहांयदा।

एका राग सुणाया कन्न, राग रागनी मुख शरमांयदा। भाग लगाया काया तन, आत्म ब्रह्म जणांयदा। मन मनुआ दित्ता बन्नृ, दहि दिश उडारी ना कोए लगांयदा। मति मतवाली दित्ता डन्न, माया ममता मोह चुकांयदा। बुध बबेकी कहे धन्न धन्न धन्न गुरसिख धन्न, हरि नामा साचा पांयदा। जनणी जणया साचा जन, जन जनणी लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, एका पुरख अकाल लैणा वर, दूजा दर ना कोए वखांयदा। पुरख अकाल इक्क मनाउणा, सतिगुर सिख्या सच समझाईआ। गुर का शब्द रिदे ध्याउणा, अन्तर हरि लिव लाईआ। दूई द्वैती मेट मिटाउणा, एका रंग रंगाईआ। एका मन्दिर घर सुहाउणा, दूजे शब्द होए कुड़माईआ। तीजा नेत्र इक्क खुलाउणा, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाईआ। चौथे पद पद समाउणा, घर चौथे वज्जे वधाईआ। पंचम मीता मेल मिलाउणा, पंचम मोह चुकाईआ। छेवां दर इक्क सुहाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण लेखे लाउणा, लेखा लेख रहे ना राईआ। अठ्ठां तत्तां तत्त गवांउणा, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध दिस ना आईआ। नौ दुआरे पन्ध मुकाउणा, नौ रस फिक्के जगत वखाईआ। दस्म दुआरी कुण्डा लौहणा, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। आत्म सेजा साचा पलँघ वछाउणा, फूलण बरख़ा एका लाईआ। सुरत सवाणी सच श्रृंगार कराउणा, सोलां इच्छया पूर कराईआ। सोलां कलीआं सीस गुंदाउणा, नेत्र नाम कज्जल एका पाईआ। प्रेम मैहन्दी रंग रंगाउणा, साचा सगन मनाईआ। साची सखीआं मिल मिल मंगल गाउणा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। अनन्द मंगल इक्क सुहाउणा, पुरी अनन्द वेख वखाईआ। परमानंद डेरा लाउणा, परम पुरख मेल मिलावा साचा माहीआ। गुरमुख नारी कन्त भगवन्त इक्क हंढाउणा, दुहागण बण दूसर सेज ना कोए हंढाईआ। सचखण्ड दुआरा दर सुहाउणा, दर्द दुःख भय भञ्जण, दुःख दर्द दए मिटाईआ। साचा सज्जण इक्क अख्वाउणा, एथे ओथे दो जहानां होए सहाईआ। सिर समरथ हथ्थ टिकाउणा, निवण सो अक्खर ख़िमा ग़रीबी नानक गुर गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत निहकलंक मेल मिलाउणा, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा दर घर साचे सोभा पाउणा, सो पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। हँ ब्रह्म ब्रह्म रंग रंगाउणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। चार वरनां एका रसना गाउणा, एका नाअरा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत निरगुण सरगुण लए वर, जगत जंजाला चुक्के डर, गुर गोबिन्द गुणी गहिंद दरस दखाए अग्गे खड़्, आपणे पौड़े आपे चढ़, आप फड़ाए आपणा लड़, लोकमात मार झात, इक्क इकांत मेटे रैण अन्धेरी रात, गुरमुखां देवे साची दात, नाम वस्त अनमोल, नानक कंडे साचे

तोल, आत्म झोली आप भराईआ। हरिसंगत वड वड्याई, हरी हरि हरि हरि वड्डा पाया। हरि शब्द होई कुड़माई, सगला बंधन तोड़ तुड़ाया। साचे घर वज्जी वधाई, घर मंगल एका गाया। सतिगुर मेला चाँईं चाँईं, चातृक तृखा रिहा बुझाया। अन्तिम पार कराए फड़ फड़ बाहीं, गुरमुख सज्जण लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत अंग संग संग अंग अंगीकार आप अखवाया।

✪ १३ सावण २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे घर दया होई पिण्ड पिपली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अबिनाशी करता हरि मेहरवान, आदि जुगादी एक ओंकारया। निरगुण रूप श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारया। आदि निरँजण खेल महान, जोती नूर डगमगा रिहा। शाहो भूप सच सुल्तान, राज राजान इक्क अखवा रिहा। वसणहारा सच मकान, इक्क इकल्ला वेस वटा रिहा। ना कोई दूसर दिसे थान, ना कोई रचन रचा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला ल्या। एक ओंकारा हरि निरँकारा, आदि जुगादि समांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। वसे घर सच मुनारा, खण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण नूर पुरख अकाल, एका रंग समाया। आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध नाम रखाया। आपे चले आपणी चाल, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण नाउँ रखाया। सति पुरख निरँजण हरि करतारा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यारा, नूरो नूर नूर समाईआ। आप सुहाए सचखण्ड दुआरा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अगम्म अगम्म आप अखवाईआ। अलक्ख निरँजण बोल जैकारा, आपणी अलक्ख जगाईआ। आप सुहाए सच दुआरा, बंक दुआरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर वखाईआ। एका घर सच महल्ला, हरि साचा सच उपजांयदा। पुरख अबिनाशी बैठ इकल्ला, एकओंकारा नाउँ धरांयदा। आपणी जोती आपे बला, आपणा दीपक आप जगांयदा। आपणा फड़े आपे पल्ला, आपणा मेल मिलांयदा। आपे वसे निहचल धाम अटला, उच्च मुनार निंरकार निराकार आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस अनेका अनक कल धारी आप करांयदा। अकल कल धारी हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ । खेले खेल बेअन्त बेअन्त बेअन्त,

बेपरवाह भेव ना राईआ। आदि जुगादी नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आप अख्वाईआ। आप बणाए आपणी बणत, आपणा लेखा आप बणाईआ। आपे आदि आपे अन्त, निरगुण दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपर, बोध अगाध अगाध बोध आप अख्वाईआ। पुरख निरँजण बेपरवाह, एका रंग समांयदा। आप उपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप रखांयदा। आपे पकड़े आपणी बांह, आप आपणा संग निभांयदा। आपे वसे आपणे थाँ, थान थनंतर इक्क वखांयदा। आपे रक्खे आपणी छाँ, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर अकाल मूर्त, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण साची सूरत, रेख रंग ना कोए जणाईआ। आदि जुगादी हाज़र हज़ूरत, हर घट बैठा आसण लाईआ। आपणी आसा मनसा आपे पूरत, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। आपे नाद अनादी साची तूरत, धुनी नाद आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता देवे वर, वर घर साचा एका सोभा पाईआ। आपे देवणहारा वर, आपे मंग मंगाईआ। आपे भिच्छया मंगे दर, आपे झोली पाईआ। आपे फड़ाए आपणा लड़, आपे पल्लू गंढु वखाईआ। आपे आपणे मन्दिर जाए वड़, थिर घर साचा आप सुहाईआ। आपे आपणा दरस दिखाए खड़, निरगुण नूरो नूर डगमगाईआ। आपे आपणी विद्या लए पढ़, ना कोई दूसर करे पढ़ाईआ। आपे वेखे आपणा गढ़, आपे होए सहाईआ। आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे रचन रचाईआ। आपे चोटी आपे जड़, फल फुल्ल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप सति सुल्तान हरि मेहरवान, आदि जुगादी इक्क निशान, एकओंकारा कर त्यारा, आपणा आप चलाईआ। सच निशाना सचखण्ड, हरि साचा सच झुलांयदा। पुरख अबिनाशी वंडी वंड, आप आपणी दया कमांयदा। शब्द सरूपी खेल ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं रचन रचांयदा। आपे वसे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लेखे लांयदा। आपे प्रकाश रवि ससि सूरज चन्द, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, आपणा आप करांयदा। थिर घर वसे सच महल्ला, सच सिंघासण आसण लांयदा। आपणे दीपक आपे बला, आपणी जोत आप जगांयदा। आपणा शब्द सच सुनेहड़ा आपे घल्ला, आपे नाम दृढ़ांयदा। आपे करे वल छला, अछल छल धारी नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल, खेल आपणा आप खलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगन्दड़ा, देवे नाम अधार। त्रैगुण माया वेस वटंदड़ा, पंज तत्त करे प्यार। लक्ख चुरासी लेख लखंदड़ा, लेखा जाणे अगम्म अपार। घट

घट अन्दर जोत जगन्दड़ा, निरगुण दीआ कर उज्यार। घर घर विच आप वखंदड़ा, आप आपणी किरपा धार, लोकमात वेस वटंदड़ा, निरगुण सरगुण लै अवतार। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, देवे शब्द नाम अधार। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ंदड़ा, सच सुच्च करे वरतार। साची सिख्या इक्क समझंदड़ा, गुर मन्त्र नाम प्यार। रसना जिह्वा कथनी कथा आप सुणंदड़ा, आपे गाए गावणहार। भेव अभेदा भेव खुलंदड़ा, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे उज्यार। निरगुण धार सरगुण रूप, लोकमात वज्जे वधाईआ। सरगुण प्यार सति सरूप, साचे शब्द करे कुड़माईआ। वज्जे डंका चारे कूट, दहि दिशा दए उठाईआ। अमृत आत्म सोमा जाए फूट, निझर धारा मुख चुआईआ। पंच विकार ना सके लूट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। निरगुण सरगुण जाए तुठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकउँकार, लोकमाती कर पसार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, निरगुण नाउँ धरांयदा। घट घट अन्दर महल्ल मुनारा, आपणा आप सुहांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, अन्ध अँध्यारा मेट मिटांयदा। धुन अनाद सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, भर प्याला जाम प्यांअदा। सन्त सुहेला हो उज्यारा, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। चेला गुर कर प्यारा, एका दर वखांयदा। साचा भरे नाम भण्डारा, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आप बणाए जगत वणजारा, एका वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त खेले खेल श्री भगवन्त, भगत भगवन मेल मिलांयदा। भगवन मीता हरिभगत, हरिजन वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे आदि शक्ति, निरगुण जोत नूर इलाहीआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल आपणे वक्त, वेला वक्त ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग रचना आप रचाईआ। जग रचना हरि आपे रच, आपे बणत बणांयदा। आपे निरगुण सरगुण सतिगुर सच्च, सच सच आप दृढ़ांयदा। आपे वसे पंज तत्त काया माटी कच्च, आपे कंचन गढ़ सुहांयदा। आपे नौ दुआरे रिहा नच्च, दस्म दुआरी आपे मुख छुपांयदा। आपे गुरमुखां हिरदे जाए रच, आपणी रचना आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला दयानिध गहर गम्भीर, सागर सिन्ध आप अख्वांयदा। गहर गम्भीर हरि गोपाल, भगवन भेव ना राईआ। परवरदिगार नूरी जोत जलाल, नूरो नूर डगमगाईआ। खेले खेल पुरख अकाल, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। मूर्त अकाल वसे सच सच्ची धर्मसाल, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। जुग जुग चलाए आपणी चाल, वेद कतेब भेव ना पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव फल लगाया आपणे डाल, फल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आपणी घालण आपे रिहा घाल, ना कोई दूसर संग

रलाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पतालां चौदां तबकां वजाए आपणा ताल, चौदां लोकां रिहा सुणाईआ। सत सरोवर मारे इक्क उछाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेखणहारा डूँघा ताल, अन्ध घोर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी शब्द ब्रह्मादी जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। जुग जुग नाउँ रक्ख करतारा, आपणा वेस वटांयदा। आपणे शब्द करे जैकारा, लोकमात सुणांयदा। भगतां कराए सच वणज वणजारा, साची वस्त झोली पांयदा। रंगन रंगे रंग अपारा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। आत्म अन्तर सच हुलारा, आत्म ब्रह्म जणांयदा। पारब्रह्म प्रभ कन्त भतारा, साची सखीआं कन्त मिलांयदा। सुहाए दर सच्चा दरबारा, महल्ल अटल इक्क वखांयदा। इक्क इकल्ला एकउँकारा, निरगुण रूप आसण लांयदा। सति सरूपी साची धारा, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए पारब्रह्म, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। जुगा जुंगतर जाणे आपणा कम्म, करनी करता नाउँ रखाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण रचन रचाईआ। पंज तत्त ना दिसे तन, त्रैगुण माया ना संग रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना बेड़ा रिहा बन्न्, ना कोई देवे संग सालाहीआ। ना कोई राग सुणाए कन्न, राग रागनी कोए ना गाईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, मन्दिर गुरदुआर ना डेरा लाईआ। ना कोई जननी जणया जन, मात पित ना कोए अख्वाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणे अन्दर आपे गया मन्न, आप आपणा मता पकाईआ। आपे देवणहारा डन्न, आपे लेखा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात लै अवतार, गुर पीर आप अख्वाईआ। आपे गुर आप अवतारा, आपे सन्त साध उपजांयदा। आपे नाम आपे शब्द भण्डारा, आपे हरि हरि मात वरतांयदा। आपे भगत भगवन्त करे प्यारा, आपे जीव जन्त वेख वखांयदा। आपे आदि कर पसारा, आपे अन्त ढांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, आपे करोड़ तेतीसा लेखे लांयदा। आपे लक्ख चुरासी करे विचारा, आपे बूझ बुझांयदा। गुरमुख विरले देवे नाम अधारा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। एका बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर अख्वांयदा। खड़ग खण्डा तेज कटारा, साचा नाउँ हथ्थ उठांयदा। दो जहानां मारे मारा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा, सत्तां दीपां आप जगांयदा। शाह सुल्तानां करे ख्वारा, राज राजान ना कोए अख्वांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। निर्धन सरधन रूप करतारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस मात धर, दर दरवेश नाउँ रखांयदा। दर दरवेश हरि भगवान, जुग जुग वेस वटाईआ। जन भगत दुआरे मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। खेले खेल पुरख सुल्तान, सतिगुर साचा रूप वटाईआ। आपे राम रमईया हो मेहरवान, आपे कान्हा बंसरी नाम वजाईआ। आपे सतिजुग हो प्रधान, वल छल धारी खेल खिलाईआ। आपे कलिजुग हो मेहरवान, आपणी नईआ नाउँ चलाईआ। आपे जूठ झूठ कर प्रधान, कूड़ी क्रिया संग रलाईआ। नाल रलाए पंज शैतान, घर घर करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम धुर फ़रमाना, हरि हरि आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी वेखे राजा राणा, जीआं जन्तां फोल फुलांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे विच समांयदा। जीव जन्त साध सन्त बाल अञ्याणा, दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि हरि खेल खिलंदड़ा। प्रगट हो विच संसार, जोती जामा भेख वटंदड़ा। एका शब्द नाम जैकार, एका ढोला आप सुणंदड़ा। रागां नादां वस्सया बाहर, आप आपणी खोज खुजंदड़ा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूर इलाही नाउँ रखंदड़ा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, दर दरवेश नर नरेश वेस वटंदड़ा। पुरख अबिनाशी एकओंकार, आपणी कल आप वरतन्दड़ा। राम रूप सिरजणहार, साची जोत इक्क जगन्दड़ा। आपे करे मंगलाचार, साची सखीआं वेस वटंदड़ा, आपे ईसा मूसा पाए सार, संग मुहम्मद चार यार, एका रंग रगन्दड़ा। आपे नानक गोबिन्द बन्ने धार, पुरख अकाल मेल मिलंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटंदड़ा। जोती जामा हरि हरि पाया, निहकलंक वज्जी वधाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। ब्रह्मा विष्न आप उठाया, शिव शंकर अक्ख खुल्हाईआ। करोड़ तेतीसा दए हिलाया, सुरपति राजा सोया रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कर रुशनाया, एका जोत करे रुशनाईआ। शब्द जैकारा सच्चा नाअरा एका लाया, चार वरनां करे पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई रहिण ना पाया, एका ब्रह्म वखाईआ। कूड़ी क्रिया पर्दा दए मिटाया, दूई द्वैती गढ़ तुड़ाईआ। साची सिख्या इक्क समझाया, साख्यात रूप वटाईआ। सतिजुग साचा आप हंढाया, त्रेते वज्जी वधाईआ। दुआपर तेरा पन्ध मुकाया, कलिजुग जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द मेला मेल मिलाया, घर साचे सोभा पाईआ। पुरख अकाला वेस वटाया, दीन दयाला भेव ना राईआ। जोत ज्वाला विच समाया, आदि शक्ति चरनां विच बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अकल कल धार हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम कल वरताए, हरि साची वड वड्याईआ। जूठा

झूठा हउमे हँगता पंज तत्त विकारा मोह चुकाए, साची रंगन नाम रंगाईआ। एका सिख्या एका भिच्छया नाम अक्खर वक्खर आप पढ़ाए, सो पुरख निरँजण आपणा ढोला आपे गाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ मेल मिलाए, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। जप तप ना कोए कराए, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। गंगा गोदावरी ना कोई नुहावण जाए, चरन धूढ़ इशनान साचा इक्क कराईआ। अठसठ ना फेरा पाए, काया मन्दिर साचे बुत्त सर सरोवर इक्क वखाईआ। पूजा पाठ ना कोए रखाए, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। सोहँ शब्द जो जन रसना गाए, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। कलिजुग बेड़ा पार कराए, वंञ मुहाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। धर्म राए ना दए सज़ाए, चित्रगुप्त ना हिसाब खुल्हाईआ। लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाए, सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, गुरमुख साचे आपणी गोद उठाईआ। आसा मनसा करे पूरा, संसा रोग गंवाईआ। अनहद शब्द अनादी तूरा, तन मन्दिर दए सुणाईआ। नाता तुटे कूड़ो कूड़ा, घर सच होए कुड़माईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा, कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का एका लाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़्हा, जो जन आए सरनाईआ। काया रंग चढ़ाए गूढ़ा, लोकमात उतर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तारनहार पुरख समरथ, हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तारनहार हरि भगवान, एका एकओंकारया। गुरमुख साजण करे परवान, बख्शे चरन दुआरया। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म जणा रिहा। इक्क वखाए सच निशान, धर्म निशाना हथ्थ उठा रिहा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पाए एका आण, एका हुक्म चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखा ल्या। निहकलंक नाउँ निरँकार, जोती जोत जगाईआ। शब्द डंका अपर अपार, नौ खण्ड रिहा सुणाईआ। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सम्मत सोलां बीस सद दए दुहाईआ। पर्दा उहला दए उतार, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ । बदलया चोला नर निरँकार, निरगुण सरगुण विच समाईआ। बणया तोला विच संसार, लक्ख चुरासी आपणे कंडे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आप आपणा रूप वटाईआ। रूप वटंदड़ा पुरख अकाला, एका जोत जगांयदा। खेल खिलंदड़ा दीन दयाला, भेव कोए ना पांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखांयदा। संग रखाए काल महांकाला, अकल कल आप वरतांयदा। लक्ख चुरासी वेखे डाल्हा, फल फुलवाड़ी फोल फुलांयदा। चारों कुन्ट वजाए एका ताला, काल नगारा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर फ़रमान, शब्द सरूपी पाए आण, आपणा हुक्म सुणांयदा। साचा हुक्म सच्ची सरकार, विष्नूं विष्न जणाईआ। कलिजुग अन्तिम उठ उठ बल धार, तेरी सेवा साची

लाईआ। निरगुण सरगुण कर आकार, करता करनी रिहा कमाईआ। तेरा भरया हरि भण्डार, तेरा दर सुहाईआ। तेरी लछमी करे प्यार, लाल बस्त्र भूषन रही सुहाईआ। कलिजुग कूड़ा मारे मार, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। रंगण रंग रंग करतार, हरि आपणी आप रंगाईआ। लक्खण दीप कर पसार, आपणी कल रिहा वरताईआ। ब्रह्मा तेरी ब्रह्म धार, कंचन गढ़ वखाईआ। कंचन रूप हरि निरँकार, आपणी जोत करे रुशनाईआ। अलक्ख निरँजण खेल अपार, एका नाअरा रिहा सुणाईआ। पुष्कर पाए साची सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सूहा वेस दर दरवेश करतार, एका अल्फ़ी रिहा हंढाईआ। करौच करे ख़बरदार, खड़ग खण्डा हथ्थ चमकाईआ। दिस ना आए विच संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पाए वंडां अपर अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। पुष्कर करे इक्क प्यार, वेला अन्तिम दए समझाईआ। थिर ना दिसे कोए संसार, आवण जावण खेल खिलाईआ। सच सुहाए बंक दवार, आपणी किरपा आप कराईआ। सुन्न समाधी आया बाहर, आप आपणा वेस वटाईआ। पंज तत्त कर पसार, दसम दुआरी आसण लाईआ। चिट्टी धार हरि निरँकार, जम्बु दीप सुहाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वेस वटाईआ। सलमल पुरख सलमल नार, सलमल नारी कन्त भतार, साची सेजा रिहा हंढाईआ। पीला वेस सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। लोकमात बन्न्हे धार, खेले

८४४ खेल बेपरवाहीआ। नीला नीली धारों करे पार, सान वज्जे वधाईआ। सखीआं गायण मंगलाचार, गोबिन्द मिल्या साचा माहीआ। ८४४

मनमुखां दर दर हाहाकार, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। सृष्ट सबाई नार विभचार, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। हउमे हँगता गढ़ हँकार, मनमति करी कुड़माईआ। आसा तृष्ना करे खुआर, जगत तृष्ना ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सान दुआरे अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। स्वच्छ सरूपी हरि हरि रूप, आपणा वेख वखांयदा। सच सुल्तानां शाहो भूप, राज राजानां लेख लखांयदा। वसणहारा चारे कूट, नौ खण्ड फेरा पांयदा। लहिणा देणा चुकाए जूठ झूठ, भेख पखण्ड मेट मिटांयदा। गुरमुखां उप्पर आपे जाए तुठ, आप आपणी सेवा लांयदा। अमृत देवे आत्म घुट्ट, निझर झिरना आप झिरांयदा। सच सरोवर सोमा रिहा फुट्ट, साची धारा आप वहांयदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, पंचम मेल मिलांयदा। शब्द अणयाला तीर रिहा छुट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। साचे मन्दिर पौह रही फुट्ट, जोत निरँजण चन्द चढ़ांयदा। गुरमुख उधारे विच्चों कोटी कोटि, कोटि कोटां विच्चों फोल फुलांयदा। जीव जन्त साध सन्त आहलणिउँ डिग्गे बोट, फड़ विच ना कोए टिकांयदा। जूठ झूठ बन्न्ही तन लंगोट, धीरज जत ना कोए रखांयदा। भंग प्याला पीता घोट, नाम ख़ुमारी ना कोए चढ़ांयदा। माया तृष्ना ना भरी पोट, दर दर मंगण भिक्ख कोए ना पांयदा। जिस जन रक्खी

पुरख अकाल एका ओट, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। पहलां कढ्ढे वासना खोट, दूजी सिख्या सिख समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सज्जण साचा मीत मुरार, मेल मिलावा धुर दरबार, घर साचे सोभा पांयदा। घर सुहञ्जणा पुरख अबिनाशा, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। चरन धूढ़ कराए मजना निज घर आत्म रक्खे वासा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। दो जहानी साचा सज्जणा चरन कँवल दए भरवासा, दूजा दर ना कोए वखाईआ। अन्तिम हरिजन पर्दा कज्जणा मण्डल मण्डप पावे रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। गुरमुख विरला गाए रसन स्वासा, जिस जन आपणी सेवा लाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ कर कर वासा, सोइम रूप दरसाईआ। सोहँ शब्द पृथ्मी आकाशा, आदि जुगादि समाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म ना कदे विनासा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द करे पढ़ाईआ। गुरसिख तेरी साची सिक, हरि सतिगुर आप रखाईआ। पहला लेख आपे लिख, दूजे लए मिलाईआ। तीजे नेत्र लैणा पेख, चौथे पद समाईआ। पंचम मेला नर नरेश, छेवें दर वज्जे वधाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। अट्ठां तत्तां दए इक्क आदेस, एका मति समझाईआ। नौ दर ना बणना दर दरवेश, जूठी झूठी ना मंग मंगाईआ। एका मेला श्री दस्मेश, घर दसवें वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गुरमुख साचे तैनूं निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पाबब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण धारे आपणा वेस, वड दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड सुहाए साचा देस, लोकमात चरन कँवल इक्क वखाईआ। आपे मेटे जुगा जुगन्तर पिछली रेख, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे ना चले कोई पेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरे मिलण दी साची बिध, आपे आप कराईआ। गुरमुख तेरे मिलण दी प्यास, हरि जी आदि जुगादि रखांयदा। लोकमात होवे दासी दास, सेवक सेवा सेव कमांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल मण्डप फेरा पांयदा। गुरसिख तेरी काया मन्दिर पावणहारा साची रास, गोपी काहन घर नचांयदा। कलिजुग अन्तिम पूरी करे आस, त्रेता सतिजुग दुआपर विछड़े घर साचे मेल मिलांयदा। साचा मेला कलिजुग विच प्रभास, जगत जूह जंगल उजाड़ पहाड़ अन्ध अन्धेरा सर्ब वखांयदा। साचा दीपक कर प्रकाश, गुरमुख साचे आप जगांयदा। एका देवे धुर धरवास, धुर संजोगी मेल मिलांयदा। दर आया ना जाए निरास, जो निउँ निउँ सीस झुकांयदा। सतिगुर पूरा अन्दर रक्खे वास, आपणी सिख्या आप समझांयदा। सदा सुहेला वसे पास, चिन्ता रोग जगत मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा राह तकांयदा। गुरसिख तेरा तक्के राह, गुर सतिगुर नैण उठाईआ। गुरमुख बणया जगत मलाह, जीवां

जन्तां राह दसाईआ। गुरमुख देवे सच सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। गुरमुख तेरी पकड़े हरि हरि बांह, जगत विछोड़ा पन्ध कटाईआ। आदि जुगादी करे सच न्याँ, दरगाह साची बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरे मिलण दी साची आस, लोकमात आप रखाईआ। सचखण्ड तज दुआरा, लोकमात उठ धांयदा। गुरमुख करे सच प्यारा, गोबिन्द मेल मिलांयदा। साचा सीस सीस दस्तारा, खुल्ह्ड़े केस आप वखांयदा। गुरमुख तेरे चरन छुहाए आपणा दाढ़ा, तेरी धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। देवे वड्याई सतारां हाढ़ा, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अखाड़ा, सत्तां दीपां विच नचांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता धुरदरगाही बणया लाड़ा, सीस सेहरा इक्क लटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले साचे दर, घर साचे राह तकांयदा। राह तक्कणहारा परवरदिगार, गुरमुख वेख वखाईआ। ख़लक ख़ुदाई ना पाए सार, ख़ालक आपणी खेल खिलाईआ। मेल मिलावा साचे यार, मुकामे हक्क वज्जे वधाईआ। कलमा अमाम कर त्यार, इक्क दमामा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा मेला दर, बंक सुहाए गुरू गुर चेला, चेला गुर रूप वटाईआ। गुरसिख तेरी साची ओट, लोकमात हरि रखांयदा। नाता तोड़े कोटी कोटि, तेरा संग निभांयदा। तेरे तन लगाए चोट, शब्द डंका हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख मिल्या गुर गोबिन्द, हरि घर वज्जी वधाईआ। सतिगुर मेटे सगली चिन्द, संसा रोग मिटाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाईआ। अमृत धारा देवे सागर सिन्ध, जल अमृत आप भराईआ। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख होए सदा बख्शिंद, बख़शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख तेरी साची धार, प्रेमी प्रेम रंगांयदा। गंगा गोदावरी गई हार, तट किनारा ना कोए सुहांयदा। जमना सुरस्ती रोवे वारो वार, अठसठ पल्लू गल विच पांयदा। मक्का काअबा करे पुकार, दो दो आबा ना कोए सुहांयदा। मन्दिर गुरूदुआर शिवदवाला मट्ठ मारे नाअर, मस्जिद मुल्ला सर्ब कुरलांयदा। तुट्टा जत सति सर्ब संसार, साचा हट्ठ ना कोए रखांयदा। कलिजुग खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरतांयदा। चौदां लोकां वेखणहारा हट्ट, चौदां तबकां खोल्ह खुलांयदा। गुरसिखां अन्तिम रक्खे पति, पति पतिवन्ता जोत जगांयदा। चरन प्रीती बन्न्हे नत, नाता बिधाता ना कोए तुड़ांयदा। दरस दखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला फेरी पांयदा। कलिजुग अन्तिम पुच्छे वात, आप आपणी गोद उठांयदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ांयदा। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँचां नीचां राउ रंकां क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग

रंगांयदा। चार वरनां नाता भैणां भाई साध संगत दर सुहाई एका शब्द करे कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। गुरमुखां गल तन शृंगार वखाई, फूलण बरखा हरि हरि लाई, साची सेवा सेव कमांयदा। सोहँ ढोला गाउणा चाँईं चाँईं, सतिगुर पूरा पार उतारे फड़ फड़ बाहीं, बेड़ा शौह दरयाए ना किसे रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख वेखे थाउँ थाँईं, जन्म कर्म वेख वखांयदा। गुरसिख तेरा साचा कर्म, कर्म सिँघ सिँघ कर्म विचारया। ना कोई गोत ना कोई वरन, ना कोई बरनी बरन समझा रिहा। पुरख अबिनाशी बख्शी आपणी सरन, दूजा डेरा जगत ढाह रिहा। लहिणा देणा आवण जावण छुट्टा जन्म मरन, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। सतिगुर पूरा तरनी तरन, बंस सरबंस सर्ब तरा ल्या। कारज करन आया करता करनी करन, गुरमुख साचे काज रचा ल्या। निउँ निउँ निमस्कार करे धरनी धरत धवल, जिस घर सतिगुर पूरे चरन छुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म जरम आपणे हथ्थ वखा ल्या। कर्म सिँघ निहकर्म उपाया, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। साची कुल जन्म दुवाया, कुलवन्ता वेख वखाईआ। इक्की कुलां पार कराया, पशू प्रेतों देव बणाईआ। पिता पूत मात हित्त भैण भाई नित नवित्त दरस दिखाया, चेतन चित चित आप हो जाईआ। रक्त बूंद लेखे लाया, हड्ड मास नाड़ी रत्त आपणी झोली पाईआ। अमृत आत्म सिंच हरा कराया, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। नित नवित्त दरस दखाया, नेत्र लोचण नैण आप खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी साचा मित्त बण के आया, गुरसिखां हथ्थ नाल हथ्थ रिहा मिलाईआ। वार थित किसे ना दस के आया, ब्रह्मा चारे वेद रहे शरमाईआ। त्रैगुण माया जित के आया, गुरसिख सुरती शब्द मिलाईआ। दो जहानां डोरी आपणी हथ्थीं खिच के आया, नाम सतार इक्क वजाईआ। जगत विकार नौ दुआर गुरमुख तेरा परे सट्ट के आया, साचा दर इक्क सुहाईआ। लक्ख चुरासी दिन दिहाड़े लुट्ट के आया, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम जड़्ह पुट्ट के आया, गुरमुखां आपणी हथ्थीं बूटा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेटे कर्म जरम, निहकर्मी निहकर्म वड्डी वड्याईआ। मिटया कर्म जग तुट्टा नाता, पाया पारब्रह्म करतार। दर घर साचे मिली साची दाता, सोहँ शब्द नाम जैकार। एका सतिगुर चढ़या राथा, दूजी वार ना होए फेर अस्वार। लहिणा देणा चुक्कया पूजा पाठा, जिस जन दर्शन पाया नेत्र नैण करया दीदार। पिछला पूरा करया घाटा, अग्गे भरया नाम भण्डार। सतिजुग साची आई वाटा, गुरसिख सोहण बंक दुआर। ना कोई दस्से तीर्थ ताटा, ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर। चरन कँवल गुर खोल्हे साचा हाटा, सतिगुर पूरा देवणहार सर्ब संसार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर इक्क एकउँकारा इक्क अवतार।

गुरमुख तन श्रृंगार, तन मन हरया थीआ। सतिगुर पूरे किया प्यार, लोकमात बीज्जया बीआ। एका देवे नाम अधार, निर्मल होए जिया। सोहँ सचा बंक दवार, गुरमुख आपणे जेहा किया। लक्ख चुरासी ना मिले गिरधार, साध सन्त कर कर थक्के कलिजुग आपणा हीआ। साध संगत देवे वर आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सचा वर, अमृत आत्म बरसे मेघ साचा मेंहा। अमृत मेघ बरसे साची रुत्त, रुत्ती रुत्त सुहावणी। खेले खेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, भिन्नड़ी रैण होई सुहावणी। गुरसिख उपजाए साचे सुत्त, गाए सोहँ अक्खर साचा बावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लगाए आपणे लड़, आप गुरसिखां पकड़े दामनी। गुरसिख तेरा पकड़े दामन, गुर सतिगुर हथ्थ उठाईआ। दरगाह साची होवे ज़ामन, लोकमात लए तराईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, कर्म खण्ड ना कोए जणाईआ। मेटे रैण अन्धेरी शामन, शमा शमस तबरेज़ एका रंग रंगाईआ। वसे नगर खेड़ा ग्रामन, ग्राम गोबिन्द सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तोड़े लंका गढ़ हँकारी रावन, राम सीता सुरती मेल मिलाईआ। साचा तीर्थ गुरसिख नहावण, गुर चरन धूढ़ दुरमति मैल दए धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे एका दान, दर आई संगत करे परवान, रोग सोग चिन्ता दुःख जगत भगत दए मिटाईआ।

जो जन आए आस कर, आसा पूरन दए कराईआ। जो जन मंगे नाम दान, बण दास दासी सेव कमाईआ। सो जन गाए स्वास स्वास, हरि घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जो जन मंगे मंग उतरे दुःख, चिन्ता दुःख सर्ब मिटांयदा। जो जन मंगे हरी होवे कुक्ख, बाल बाला गोद सुहांयदा। जो जन मंगे जगत मिटे तृष्ना भुक्ख, नाम रंगण रंग रंगांयदा। जो जन मंगे मंग उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जो जन जगत सुखणा रहे सुख, माया भाण्डे घर भरांयदा। गुरमुखां लेखा पिछला रिहा मुक्क, अगला लेखा आप लिखांयदा। आपणी गोदी आपे चुक्क, बाल अञ्याणे आप खिडांयदा। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, वेले अन्त ना कोए छुडांयदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। कलिजुग बूटा रिहा सुक्क, लक्ख चुरासी पत्त डाली ना कोए सुहांयदा। गुरमुखां उज्जल करे मात मुक्ख, मकुख सोहँ ढोला गांयदा। सतिगुर पूरा ना माणस ना दिसे मनुक्ख, घट घट अन्दर आसण लांयदा। गुरसिख चुक्कया आपणी कुक्ख, गोबिन्द अन्दर सोभा पांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां अन्दर बैठा लुक, जगत जीवां दिस ना आंयदा। जो जन चरन दुआर नीवां होए वेखे झुक, सतिगुर पूरा नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कर्मा मेटे दु:ख, आपणा लेखा आप लिखांयदा।

✪ १४ सावण २०१६ बिक्रमी ✪

अबिनाशी करता हरि निरँकार, आदि जुगादि समांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना पांयदा। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। अकल कल कल आपे धार, आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण ख़बरदार, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। निरगुण नूर पुरख अकाला, एका एक रंग समाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखाईआ। आपे जोती नूर ज्वाला, आदि शक्ति आप वड्याईआ। आपे वसे सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण हरि इक्क इकल्ला, एका एकओकारया। एका बैठा सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहा रिहा। आपणी जोती आपे बला, आपणा दीपक आप जगा रिहा। आपणा सिँघासण आपे मल्ला, दर दरबान ना कोए वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, असुते प्रकाश आप करा ल्या। पारब्रह्म हरि बेअन्त, आदि जुगादि भेव ना आया। आप बणाए आपणी बणत, ना कोई दूसर संग रलाया। ना कोई नारी ना कोई कन्त, नारी कन्त आप हो जाया। आपे जाणे मणीआ मंत, आप आपणा नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूनी रहित नाउँ रखाया। जूनी रहित परवरदिगार, एका एक नूर इलाहीआ। आदि जुगादि भेव अपार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, एकउँकार आप अख्वाईआ। अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख आप जगा, आप आपणी फेरी पाईआ। सचखण्ड दुआर आप सुहा, निरगुण आपणी जोत करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी डंक वजा, आपणा नाद आप वजाईआ। जुगा जुगन्तर खेल खिला, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। पंज तत्त चोला आप हंढा, लोकमात रूप दरसाईआ। गुर अवतार सेवा ला, साध सन्त दए वड्याईआ। भगत भगवन्त मेल मिला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिला, एका मन्दिर दए वड्याईआ। आपणा पर्दा आपे लाह, आपे वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलिजुग अन्तिम जोत प्रगटाईआ। ठांडा दर इक्क वखा, सृष्ट सबाई दए समझाईआ।

गुरमुख साचे गोद बहा, आप आपणे अंग लगाईआ। जगत तृष्ना दए बुझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी कल आप वरताईआ।

✪ १४ सावण २०१६ बिक्रमी धर्म सिँघ दे घर दया होई, पिण्ड पिपली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

हरि बाणी गुर मन्त्र, गुर सतिगुर आप जणाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, जो जन रसना गाईआ। लेख जणाए गगन गगनंतर, काया गगन मण्डल सुहाईआ। सच सति बणाए साची बणतर, सति असति दए मिटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नाम नाम डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। हरि फ़रमान धुर धुर दी बाणी, गुर सतिगुर मुख सलाहीआ। दो जहानां साची राणी, साचे कन्त वड्याईआ। शब्द मिलावा साचे हाणी, सगला संग रखाईआ। अमृत देवे ठंडा पाणी, भर प्याला संग लिआईआ। गुरमुखां चुकाए जगत काणी, आवण जावण लेख मिटाईआ। रसना गायण पायण पद निरबाणी, निर्भय रूप दरसाईआ। धुरदरगाही सच निशानी, लोकमात करे रुशनाईआ। आपे जाणे जाण जाणी, दूसर हथ्थ ना कोए वखाईआ। पावे सार चारे खाणी, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड तोल तुलाईआ। करे कराए पुण छाणी, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र नाम वड्याईआ। हरि बाणी नेत्र मन्त्र फोर, गुर सतिगुर खेल खिलाईआ। नाता तोड़े पंचम चोर, झूठी धाड़ दए मिटाईआ। आसा तृष्ना हराम ख़ोर, गुरसिख नेड़ ना आईआ। लेखा जाणे अन्ध घोर, डूँघी भँवरी खोज खुजाईआ। सुरत सवाणी रिहा होड़, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। हरि बाणी बन्ने साची डोर, शब्दी गंढु दवाईआ। चरन कँवल प्रीती जोड़, जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। आप चढ़ाए साचे घोड़, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। गुरसिख लग्गी निभे तोड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर पूरा जाए बौहड़, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। हँ ब्रह्म लग्गी औड़, पारब्रह्म अमृत मेघ बरसाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, एका अमृत फल लगाईआ। दो जहानां रिहा दौड़, वेस अनेका रूप वटाईआ। आपे पन्ध जाणे लम्मा चौड़, लोआं पुरीआं गगन पतालां ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। सचखण्ड दुआरे लाया एका पौड़, एका डण्डा रिहा वखाईआ। गुरमुखां अन्तिम जाए बौहड़, हरि सज्जण लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जननी लेखे लाईआ। हरि बाणी धुर फ़रमान, शब्दी शब्द जणांयदा। लक्ख चुरासी पाए आण, एका हुक्म सुणांयदा। राजे राणीआं सारे गाण, राउ रंकां मुख सलांहयदा।

आपे होए जाणी जाण, जानणहारा नाउँ धरांयदा। सन्त सुहेले गुरमुख साजण मात पछाण, माता पिता तृप्त करांयदा। बख्शणहारा चरन ध्यान, चात्रक चित सर्ब बिल्लांयदा। चुकौणहारा दूजी काण, दोए दोए धार गवांयदा। देवणहारा दरस महान, नेत्र लोचण दरस वखांयदा। वसणहारा सच मकान, चौथे पद डेरा लांयदा। पंचम मेला गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखांयदा। सन्त साजण दो जहान, सतिगुर पूरा पार करांयदा। खाणी बाणी बण बबाण, गुरमुख साचे विच चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल दर, दर साचा इक्क सुहांयदा।

हरि बाणी हरि रूप है, गुर सतिगुर विच समाए। हरि बाणी सति सरूप है, सतिगुर साचा वेख वखाए। हरि बाणी चारे कूट है, दहि दिशा विच समाए। हरि बाणी साचा सूत है, ताणा पेटा इक्क अख्वाए। हरि बाणी साचा भूप है, राज जोग सच सुल्तान इक्क कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाए। हरि बाणी हरि अन्तर ध्यान, गुर सतिगुर बूझ बुझाईआ। हरि बाणी मारे बाण महान, तीर निराला इक्क चलाईआ। हरि बाणी मेटे पंज शैतान, हउमे हिंसा रहे ना राईआ। हरि बाणी मेटे नौजुवान, पंचम मेल ना कोए वखाईआ। हरि बाणी लहिणा चुकाए जगत जहान, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। हरि बाणी देवे धुर फ़रमान, शब्द ढोला एका गाईआ। हरि बाणी होए दर परवान, हरि साचा लेखा लेखे पाईआ। हरि बाणी लोकमात कर प्रधान, आपणे नाम करे वड्याईआ। हरि बाणी गुरमुखां देवे जगत माण, भगत वछल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, एका शब्द करे कुड़माईआ। हरि बाणी अमृत रस, गुर सतिगुर आप चुआया। पारब्रह्म अबिनाशी अन्दर वस, आप आपणा भेव खुल्ह़ाया। दरस दखाए हस्स हस्स, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाया। साचा मार्ग लोकमात दस्स, दर दसवां आप खुल्ह़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, गुर मन्त्र नाम समझाया। हरि बाणी हरि का नेत्र, गुर गुर आप खुल्ह़ांयदा। आपे वेखे काया खेत्र, नव नव फोल फुलांयदा। रुत्त बसन्ती महीना चेत्र, फल फुलवाड़ी फल महिकांयदा। गुरमुखां करे साचा हेतड़, नित नवित्त वेख वखांयदा। लेखा जाणे पंचम जेठड़, वदी सुदी ना नाल रलांयदा। हरिजन रक्खे साया हेठड़, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि केतड़, दिस किसे ना आंयदा। राज राजान वड वड सेठड़, पुन्न दान सर्ब करांयदा। मिले मेल ना हरि हरि मीतड़, मित्र प्यारा ना कोए मिलांयदा। काया करे ना ठांडी सीतड़, अग्नी तत्त ना कोए बुझांयदा। सतिगुर पूरा

हरि मेहरवान गुरमुखां मेला आपे कीतड़, हस्त कीट एका रंग रंगांयदा। रंग रंगाए इक्क मजीठड़, लाल गुलाला रूप वटांयदा। शाहो भूप वड बीठला बीठल, मोहन माधव नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी जाणे रीतड़, आपणा मार्ग आपे लांयदा। सतिजुग साचा पतित पुनीतड़, पारब्रह्म प्रभ नाउँ धरांयदा। ना कोई गुरदुआर ना मन्दिर मसीतड़, चार वरनां सतिगुर एका रूप दरसांयदा। हरि बाणी हरि शब्द जगत अनडीठड़, सतिगुर पूरा भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मेल मिलांयदा। हरि बाणी हरि जाणया, गुर सतिगुर रूप अपार। दर घर साचा इक्क पछाणया, मिल्या मेल श्री भगवान। लेखा चुक्का जीव जहानया, पाया पद पद निरबाण। अमृत मिल्या ठंडा पाणीआ, साचा नीर सीर विरोले दो जहान। सतिगुर पूरा गाए अकथ कहाणीआ, लेखा जाणे ना वेद पुराण। गुरमुख साचा साची सुघड़ सुवाणीआ, मेल मिलावा सीता राम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका नाम प्याए जाम। हरि बाणी हरि नाम प्याला, गुर सतिगुर हथ्थ फड़ांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आपणी दया कमांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। गुरमुख काया सच्ची धर्मसाला, साचा बंक सुहांयदा। जोती नूर हाज़र हज़ूर इक्क उजाला, प्रकाश आकाश रखांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाला, बाल बाला लेखे लांयदा। गल विच पाए एका माला, सोहँ हार गल विच पांयदा। अजपा जाप आपे घाले आपणी घाला, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। फल लगाए साचे डाला, पत डाल्ही वेख वखांयदा। दो जहानी बण दलाला, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मुख सलांहयदा। हरि बाणी साचा रंग साची अम्मड़ीए, हरि सतिगुर आप चढ़ांयदा। रंग रंगे काया माटी झूठी चम्मड़ीए, चम्म दृष्टी इष्ट मिटांयदा। कीमत करता कोए ना लाए पैसा धेला दमड़ीए, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे आपे वेख वखांयदा। हरि बाणी हरि साचा ज़ोर, जगत जुगत बणाईआ। गुर सतिगुर आपे तोर, लोकमात करे जणाईआ। निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे डोर, सरगुण तन्द बंधाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फोर, फुरना फुरे बेपरवाहीआ। आपे हुक्मे रिहा तोर, हुक्मी हुक्म फिराईआ। पावे सार अन्ध घोर, एका जोत कर रुशनाईआ। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर, ना कोई कुदरत रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी ना जोड़े जोड़, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए सहाईआ। हरि का रूप सति सरूप गुरमुखां चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि बाणी आपणी आप सुणाईआ। हरि बाणी पतित पुनीत, पतित पावन आप चलाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, रसना गावत गावत गावत पार कराईआ। धुर दा शब्द साचा मीत, साक सज्जण

सैण इक्क अख्वाईआ। गुरसिख गाउणा सोहँ सुहागी गीत, सतिगुर पूरा करे कुड़माईआ। अट्ठे पहर वसे चीत, चेतन सता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। हरि बाणी बाण निराला, गुर सतिगुर हथ्थ उठाया। रसना चिल्ला तीर कमाना, लोकमात आप चलाया। खेले खेल दो जहानां, भेव अभेदा भेव छुपाया। गुरमुखां मारे इक्क निशाना, सोए मात लए उठाया। पुरख अबिनाशी बीना दाना, दाना बीना आप हो जाया। हरिजन करे ठांडा सीना, सति सति सति वरताया। तिन्नां लोकां पार कीना, ब्रह्मा विष्न शिव राह रहे तकाया। आपणा रंग चढ़ाया भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल सुहाया। रसना जिह्वा जिस जन सोहँ चीना, चिन्ता सोग रहे ना राया। अन्तिम अन्त आप आपणे जेहा कीना, हँ ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल खिलाया। हरि शब्द सच्ची धुन्कार, धुर बाणी नाउँ धराईआ। पुरख अगम्म खेल करतार, कुलावन्त कल वरताईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सिरजणहार, अन्त आदि वड्डी वड्याईआ। कन्त कन्त कन्त हरि नार भतार, दर सुहागण सोभा पाईआ। इच्छया भिच्छया कर शृंगार, भूषन बस्त्र इक्क सजाईआ। कौस्तक मणीआ साचा हार, मस्तक टिक्का तिलक ललाट लगाईआ। नैणां कज्जल नाम धार, लोइण रही मटकाईआ। हस्स मुख बत्ती दन्द उचार, गोबिन्द गोबिन्द जिह्वा रही गाईआ। सरवन सुणन कन्त प्यार, धुनी नाद एका लिव लाईआ। नक्क वासना सुगंधी वेख विहार, गुर संगत संग महिकाईआ। बन्दी तोड़ आया विच संसार, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। शाहो भूप साचे घोड़े चढ़या शाह सवार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। सोलां सोलां बन्ने धार, सोलां सोलां वड वड्याईआ। सोलां सोलां मारे मार, सोलां सोलां लेख लिखाईआ। बदलया चोला कलिजुग तेरी अन्तिम वार, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। बणया गोला गुरसिख दुआर, लोकमात साची सेवा रिहा कमाईआ। गाया ढोला बेऐब परवरदिगार, सोहँ रसना गाईआ। बणया तोला विच संसार, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। पाए रौला नर नार, चारों कुन्ट पई दुहाईआ। मनमुख माया करे खुआर, कामी क्रोधी लोभी आसा तृष्ना होई हल्काईआ। माणस मानुक्ख जन्म गए हार, गल पाई जम की फाहीआ। दरश ना पाया गुर करतार, जगत वेख वेख नैण नैणां नाल मिलाईआ। बन्द किवाड़ ना खोल्या ताक, आपणी अक्ख ना आप उठाईआ। गुरमुखां मेला साचे सज्जण सैण साक, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि बाणी हरि मन्त्र, गुर सतिगुर मुख सुणाईआ। सतिगुर गाए धुर धुर राग, हरि रागी राग अलांयदा। शब्द अगम्मी एका अवाज़, धुर धामी आप सुणांयदा। आपे रचया सच काज, साची वस्तू संग रखांयदा। जुगा जुगन्तर ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। कलिजुग

अन्तिम देस माझ, मजन माघ इक्क वखांयदा। हाढ़ सतारां साजण साज, जन भगतां भगती लेखे लांयदा। सीस रखाए साचा ताज, आपे वेख वखांयदा। धुरदरगाही एका राज, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण पार करांयदा। पार उतारा आपे कर, गुर शब्दी बेड़ा हरि चलाईआ। आप उतारे आपणे घर, वञ्झ मुहाणा इक्क रखाईआ। आवण जावण दो जहानां चुक्के डर, साचा दामन रिहा फड़ाईआ। गुरमुख ज़ामन बणया हरि, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। कलिजुग मेटे हँकारी रावण गढ़, हउमे लंका गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरमुख गुर गुर गुर झोली पाईआ। गुरसिख आपणी झोली पा, पूर्ब लहिणा लहिण चुकांयदा। सतिगुर साजण बण मलाह, बेड़ा मात चलांयदा। अन्तिम वेले पकड़े बांह, लेखा लेख लखांयदा। निहकलंकी जामा पा, जोत जात जगत इक्क वखांयदा। गुरसिखां बणया पिता माँ, बाल अञ्याणे गले लगांयदा। हरिसंगत तेरी ठंडी छाँ, सतिगुर सिर आपणा हेठ धरांयदा। इक्क दूजे दी फड़ी बांह, दूजा विचोला ना कोए वखांयदा। पुत्तरां प्यारी लग्गे माँ, माँ पुत्तरां संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई तीर ना कमान, ना कोई रथ रथवाही दिसे निशान, एका जोती नूर वाली दो जहान, गुरमुखां करे कलि पछाण, लक्ख चुरासी मार ध्यान, एका देवे सोहँ दान, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोई गोत ना कोई वरन, अंस बंस बंस अंस, अंसा बंसा आप अख्वांयदा।

✪ १४ सावण २०१६ बिक्रमी सुच्चा सिँघ दे घर दया होई पिण्ड पिपली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

हरि सतिगुर सूरा नौजवान, आप आपणा बल रखाईआ। निरगुण जोत श्री भगवान, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। सच वखाए इक्क निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। दाता दानी वड मेहरबान, पारब्रह्म गुर अख्वाईआ। खेले खेल खेल महान, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। सतिगुर उठया जोद्धा सूर, सति पुरख लए अंगड़ाईआ। करे प्रकाश जोती नूर, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ। सर्ब कल आपे भरपूर, समरथ पुरख अख्वाईआ। आपे वसे नेड़े दूर, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। आपे शब्द अनादी वज्जे तूर, नाद अनादी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बलधारी आप अख्वाईआ। आपे जोद्धा हरि बलवान, परम पुरख अख्वांयदा। खेले खेल दो जहान, लोकमात वेस वटांयदा। पावणहारा साची आण, एका हुक्म सुणांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, साचा

शब्द अलायंदा। लक्ख चुरासी हो प्रधान, आपणा आसण लांयदा। दिस ना आए जीव जहान, जन्त कन्त ना कोए मिलांयदा। दाता दानी गुण निधान, गुणवन्ता नाउँ रखांयदा। जोती नूर कोटन भान, आकाश प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वांयदा। एका सूरा सतिगुर पुरख समरथ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। महिमा गाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। चलावणहारा साचा रथ, जुग जुग गेड़ा आप दवाईआ। आपे देवणहारा साची वथ्थ, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। आपे लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सज्जण एका एक हो जाईआ। सतिगुर साजण पूरा उठया, निरगुण जोती नूर उज्यार। जन भगतां उप्पर आपे तुठया, देवे नाम शब्द अधार। लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठया, वेख वखाए नौ खण्ड पृथमी सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्मड़ा खेल हरि मेहरवाना, आपणा आप खलाईआ। प्रगट हो दो जहानां, तिन्न लोक करे रुशनाईआ। चौदां हट्टां वेख वखाणा, चौदां चौदां संग निभाईआ। चारों कुन्ट मारे इक्क ध्याना, एका नैण उठाईआ। लक्ख चुरासी जाणी जाणा, सन्त साध भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण दाता सूर, सतिगुर साचा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर भरया नाम भण्डारा, नर हरि झोली पांयदा। परम पुरख प्रभ बण वरतारा, गुरमुखां आप वरतांयदा। वणज कराए सच वणजारा, साचा दर खुलांयदा। एथे ओथे दए सहारा, सगला संग निभांयदा। बेड़ा करे पार किनारा, शौह दरयाए ना कोए डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा हरि हरि मीता, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, कीट कीटां विच समाईआ। पारब्रह्म प्रभ ठांडा सीता, सीतल धार रिहा वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। खेल खिलावणहार बेअन्ता, आदि जुगादि समाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। लेखा जाणे साधन सन्ता, सन्त साध आप हो आया। जोती नूर श्री भगवन्ता, भगवन जोती नूर वटाया। तोड़णहारा हउमे गढ़ हँगता, नाम खण्डा तेज कटार हथ्थ उठाया। गुरमुखां काया चोली रंगदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। मनमुख दुआरे कदे ना लँघदा, दर दुआरा रिहा तजाया। जन भगतां अग्गे फिरे मंगदा, जुग जुग आपणी झोली अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बल धराया। बल धराए हरि भगवाना, हरि सज्जण वड वड्याईआ। अन्तिम देवे धुर फ़रमाना, विष्नूं करे जणाईआ। उठ बाल बाल निधाना, हरि साची सेवा लाईआ। तेरा जोग तेरा भोग तेरा रस वेख वखाणा, तेरी धार बंधाईआ।

तेरा चिल्ला तीर कमाना, तेरे हथ्थ उठाईआ। तेरा पीणा तेरा खाणा तेरा अन्न तेरा दाणा, तेरी झोली पाईआ। तेरा भूपा तेरा राजा तेरा राणा, तेरी रईयत रिहा वखाईआ। पुरख अबिनाशी वरते आपणा भाणा, आपणा भाणा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं रिहा उठाईआ। उठ विष्नूं लै अंगड़ाई, हरि साचा आप जगांयदा। अन्तिम वेला पए दुहाई, ना कोई धीर धरांयदा। रवि ससि पेखण मुख शरमाई, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा। साचे दर मंगल कोए ना गाई, ना कोई नाद वजांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलाई, खेलणहारा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, विष्नूं देवे एका वर, सोया आप उठांयदा। विष्नूं सोया उठ खलोता, नेत्र नैण उग्घाड़या। पुरख अबिनाशी हथ्थ विच फड़या सोटा, एका हथ्थ हिला रिहा। तेरे भण्डारे आवे तोटा, तेरा मूल चुका रिहा। सच नगारे लग्गे चोटा, एका ताल वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका ओट समझा रिहा। विष्नूं नेत्र आपणा खोल्ह, सांगोपांग सुहांयदा। निउँ निउँ सीस रिहा बोल, चरन कँवल बिगसांयदा। पारब्रह्म प्रभ पूरे तोलीं तोल, साचा तोला तूं अख्वांयदा। मैं सुत्ता रिहा अनभोल, छत्ती जुग ना कोए उठांयदा। तूं सतिगुर दाता सदा अडोल, हरि हरि तेरा भेव कोए ना पांयदा। मैं वसां सदा तेरे कोल, तेरा विछोड़ा ना मोहे सुखांयदा। तेरा रूप जाए मौल, मेरा कँवल खिलांयदा। मेरा कँवल जाए फूल, ब्रह्मा उत्पत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए खेल खिलाए, आपे मेट मिटांयदा। विष्नूं सुण हरि जणाई, हरि साचा सच अल्हांयदा। तेरी मेरी होए कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। तेरा रूप मैं लवां प्रनाई, अंगीकार करांयदा। आपे धी आप जवाई, सौहरे पेईए आप सुहांयदा। आपे सेजा रिहा हंढाई, आपे गोद सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। विष्नूं बाला लाल गुलाला, हरि हरि रंग रंगाईआ। मेल मिलावा दीन दयाला, गुर गोपाला सहिज सुभाईआ। आपे बणे सच दलाला, आपे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरगुण रिहा उठाईआ। विष्नूं उठया हरि हरि तुठया, लोकमात उठ धाया। तीर निराला एका छुटयां, हरि साचे आप चलाया। अन्तिम अन्त मैं गया लुट्टया, मेरा भण्डारा ख़ाली रिहा कराया। अबिनाशी करता एका रुठया, ना सके कोई मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वर दाता आप अख्वाया। आपे ब्रह्मे खोल्हे जाग, आपे अक्ख खुल्हाईआ। आपे मारे आपणी वाज, आप रिहा उठाईआ। आपे रक्खणहारा लाज, आपे वेख वखाईआ। आपे साजण लए साज, आपे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारबहम ब्रह्म रिहा समझाईआ। उठ ब्रह्म

८५६

कर ध्यान, पारब्रह्म समझांयदा। चार वेदां जगत ज्ञान, अन्तिम पन्ध मुकांयदा। तेरा नाता छुट्टे दो जहान, नौ नौ चार वेस वटांयदा। अन्तिम जोती मेल मिलाण, जोती जोत जोत समांयदा। तेरी क्रिया करे कल्याण, तेरा अन्त वखांयदा। तेरा मन्दिर वेख वखाण, हरि साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। ब्रह्मा वेता अक्ख उग्घाड़, हरि साचे आप सुणाया। लहिणा देणा चुक्कया सतारां हाढ़, वीह सौ बीसा दए दुहाया। तेरी वज्जे ना कोए सतार, राग रागनी ना कोए सुहाया। तेरा बेड़ा आर पार, नारद मुन ना वेख वखाया। सुरस्ती करे ना कोए प्यार, अंक सहेली ना गले लगाया। त्रैगुण बन्ने ना कोई धार, पंचम नाता ना जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अंग करे भंग, आपणे रंग रंगाया। ब्रह्मे तेरा साचा रूप, हरि हरि वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। कलिजुग अन्तिम लए लुट्ट, आपणा नाअरा एका लांयदा। दो जहानां चोग गई निखुट्ट, अमृत प्याला ना कोए प्यांअदा। अन्तिम रक्खणी एका ओट, वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। ब्रह्मा वेता नेत्र रो रो, नैण नीर वहांयदा। आपणा मुक्खड़ा आपे धो धो, आपे वेस वटांयदा। आपणा अमृत आपे चो चो, आपे कँवल खिलांयदा। आपे कर कर आपणा मोह, आपे अन्त तुड़ांयदा। हरि का भेव ना जाणे को, ब्रह्मा रो रो नीर वहांयदा। प्रगट होया हरि हरि सो, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। हँ ब्रह्म आपे हो, आपे नाम धरांयदा। आपे ढोआ देवे ढोअ, आपे खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा वेता एका मीता, नेत्र नैण नज़री आंयदा। साचा मीता हरि निरँकार, निरगुण रूप समाईआ। ब्रह्मा वेता दए अधार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर पसार, जीव जीव समझाईआ। अन्तिम मारे आपणी मार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लक्ख चुरासी आर पार, आपणी नैं चलाईआ। नईआ डोबे अद्धविचकार, साचा सईआ वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शंकर रिहा समझाईआ। शंकर शिव उठ मीत, बाशक तशका गल सुहाईआ। हथ्थ त्रिशूल आपणा आप रिहा जीत, दर आपणा सोभा पाईआ। भोला नाथ बैठा अतीत, त्रैगुण माया फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। भोले नाथ नाथ अनाथा, हरि हरि जोत जगांयदा। तेरा अन्तिम तुटे साथा, अंगी अंग समांयदा। आप चलाए आपणा राथा, जुग जुग वेस धरांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, आपे नाउँ उपजांयदा। तेरी जोती खिच ललाटा, आपणे विच मिलांयदा। चौथे जुग आया घाटा, ना कोई पूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं रूप आपे धर, ब्रह्मा वेता लए फड़, शंकर

चोटी रिहा चढ़, आपणी खेल खिलांयदा। शंकर चोटी हरि हरि चढ़या, ब्रह्मे बंधन पाईआ। विष्नूं रूप आपे धरया, भगवन संग निभाईआ। सोहँ अक्खर आपे पढ़या, सो पुरख निरँजण वज्जी वधाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ घाड़न घड़या, आप आपणे विच टिकाईआ। निरगुण निरगुण नाल लड़या, खण्डा तीर कमान ना हथ्थ उठाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, दो धार ना कोए चलाईआ। हुक्मे अन्दर तोड़े गढ़या, हरि हुक्म वड्डी शहिनशाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपे फड़या, आप आपणे लड़ बंधाईआ। करोड़ तेतीसा एका अक्खर पढ़या, हरि साची करे पढ़ाईआ। सुरपति राजा अन्दर वड़या, बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। उठ इन्द इन्द्रासण देणा तज, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। सच सिँघासण ना बहिणा सज, वेला अन्तिम आंयदा। कोई ना पर्दा सके कज्ज, हरि साचा पर्दा लांहयदा। हरि शब्द नगारा रिहा वज्ज, करोड़ तेतीसा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। इन्द इन्द्रासण अन्त तजाउणा, सच सिँघासण ना आसण लाईआ। अमृत जाम ना किसे प्याउणा, चौदां रत्न ना कोए वखाईआ। दर अपच्छरां ना कोई गाउणा, ना कोई वेस वेस वटाईआ। तार सितार ना कोए हलाउणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, आदि अन्त हरि भगवन्त, आपणी खेल खिलाईआ। इन्द्र रोवे मारे धाह, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। अट्ठे पहर उभे साह, साचा संग ना कोए निभांयदा। ना कोई पकड़े अन्तिम बांह, हरि साचा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल खिलांयदा। आपणी खेल खिलावणहारा, एका एकओंकारया। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखा रिहा। आपे सेवक सेवादारा, साची सेवा आप करा रिहा, आपे विष्नूं देवे भण्डारा, आपणी दया कमा रिहा, आपे ब्रह्म कर पसारा, आपे अन्त वखा रिहा। आपे शंकर बन्ने धारा, सच सँघारा आप करा रिहा। आपे वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आ रिहा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, हरि साचा आप अख्वा रिहा। लोकमात लक्ख चुरासी जीव जन्त पाए सारा, थिर घर साचा इक्क सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्द सरूपी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चला रिहा। सतिजुग साचा बेड़ा आप चलाया, हरि साची सच वड्याईआ। त्रेता लहिणा देण मुकाया, एका नाम वज्जे वधाईआ। दुआपर तेरा खेल खिलाया, खेलणहारा बेपरवाहीआ। कलिजुग साचा वेस वटाया, चारों कुट अन्धेरा छाईआ। नानक निरगुण जोती जोत जगाया, करे सच रुशनाईआ। एका मन्त्र सतिनाम पढ़ाया, चार वरनां करे पढ़ाईआ। जीवां जन्तां आप समझाया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। आदि जुगादी इक्क अख्वाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग मेटे

मेट मिटाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वरन गोत ना कोए रखाया, मात पित ना भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण रंगया साचा रंग, हरि घर साचे वज्जी वधाईआ। गोबिन्द सेजा सच पलँघ, पुरख अकाल सेज वछाईआ। वाहिगुरू फतिह डंका वज्जे मृदंग, वाह वा गुरू वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण खेले खेल अपार, आदि जुगादी एकउँकारया। सरगुण करे सच प्यार, लोकमात लै अवतारया। शब्द रक्खे तिक्खी धार, साचा खण्डा इक्क अपारया। गुरमुख साजण लाए पार, मनमुखां मेट मिटा रिहा। कलिजुग अन्तिम रैण अँध्यार, चारों कुन्ट अन्धेरा छा रिहा। गुर गोबिन्द होया ख़बरदार, सिँघ आपणा रूप वटा ल्या। एका खण्डा तेज कटार, एका संग रखा ल्या। कमलापाती जोती नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, हरिजन देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ा ल्या। एका मन्त्र हरि हरि नां रसना गाउणा, चार वरन जणाईआ। ऊँच नीच ना कोए रखाउणा, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। पंडत पांधा कोई दिस ना आउणा, मुलां शेख़ मुसायक कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। हू हू नाअरा किसे ना लाउणा, ऐनलहक्क ना कोए सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम साची खेल खिलाउणा, गुर गोबिन्द निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाउणा, सत्तां दीपां दए उठाईआ। एका खण्डा नाम चमकाउणा, चार कुन्ट वखाईआ। शब्द अगम्मी फौज उठाउणा, दिस किसे ना आईआ। सम्मत सोलां साह सुधाउणा, वीह सौ बिक्रमी नाल रलाईआ। वीह सद सतारां वेस वटाउणा, जोती नूर कर रुशनाईआ। गुरमुख सज्जण आप उठाउणा, घर घर देवे दरस बेपरवाहीआ। जागरत जोत इक्क जगाउणा, जोती नूर करे रुशनाईआ। साचा मार्ग इक्क वखाउणा, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। वीह सौ अठारां अट्ठां तत्तां मूल चुकाउणा, तत्व तत्त समाईआ। उन्नी उनीसा शाह सुल्तानां ख़ाली ख़ीसा, मुस्लिम सुन्नी चोटी जाए मुन्नी, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा शाहो शाहबीसा, एका छत्र सीस टिकाईआ। चार वरन इक्क हदीसा, एका हुक्म सुणाईआ। प्रगट होए पंचम मीता, पंच निशाना हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगण नूर आप अख्वाईआ। निहकलंक हरि निरँकार, एका एक ओंकारया। दूजा दिसे ना कोए संसार, पंज तत्त ना कोए बणा रिहा। गोबिन्द गुर साची धार, पुरख अकाल आप चला रिहा। सिँघ रूप सच्ची सरकार, साचा खण्डा हथ्थ उठा रिहा। शाहो भूप भूप अस्वार, सच सिँघासण आसण ला रिहा। सचखण्ड दुवारिउँ आए बाहर, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबा रिहा। लोकमात पावे सार, साची जोती

८५६
०८

डगमगा रिहा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिला रिहा। जन भगतां अन्तर आए बौहड़ा, जगत संदेशा रोग मिटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, घर मन्दिर इक्क वखा ल्या। गुरमुख तेरा सच दरवाज़ा, सचखण्ड हरि सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। धुन अनादी अनहद मारे वाजा, सुन्न समाध खुल्हाईआ। हरि सुल्तान वड राजन राजा, अदली अदल कमाईआ। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, त्रैगुण रोवे दए दुहाईआ। जन भगतां साचा साजण साजा, मिले मेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरी रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख तेरी वड्याई धन्न, हरि गोबिन्द दर्शन पाया। सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्न्ह, जिस जन हरि हरि रसना गाया। जननी जणया साचा जन, धन्न धन्न धन्न जणेंदी माया। एका राग सुणया कन्न, पुरख अकाल इक्क मनाया। राए धर्म ना देवे डन्न, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण देवे वर, वर दाता इक्क अख्वाया।

८६० ८६०

✪ १५ सावण २०१६ बिक्रमी अर्जन सिँघ दे घर पिण्ड पिपली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

असंख असंखा हरि गुण निरँकार, असंख असंख ना गणत गिणाईआ। आपणी पावे आपे सार, आपणी जोत कर रुशनाईआ। धाम अगम्मड़े बैठ निरँकार, जोती नूर डगमगाईआ। साचा मन्दिर बंक दुआर, आपणा आप सुहाईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणी किरण इक्क उपजाईआ। आपणे अन्दरों करी बाहर, ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। एका किरन वंडे वंड, त्रै त्रै वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, असंख गुण आप अख्वाईआ। एका किरन त्रै त्रै धार, हरि साची वंड वंडांयदा। नूरी नूर नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। एका विष्नूं करे प्यार, इक्क ब्रह्मा विच वसांयदा। एका शिव दए अधार, एका रंग रंगांयदा। इक्क किरन किरन किरन आकार, आपणा रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, असंख गुण आप अख्वांयदा। इक्क किरन हरि वंड वंडाए, वड वड्डी वड्याईआ। इक्क इक्क इक्क तिन्ने एके संग रलाए, इक्क सद इक्क दस इक्क करे कुड़माईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, ब्रह्मादि आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क किरन इक्क सौ ग्यारवां हिस्सा दए वंड, रवि ससि दए रुशनाईआ। दूजा खेले खेल ब्रह्मण्ड, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, असंख गुण इक्क अख्वाईआ। इक्क इक्क इक्क खेल निराला, एका इक्क इक्क नाल रलाईआ। तीजा एका कर निराला, आपणी

बणत बणाईआ। तिन्ने लोक गग्न थाला, साची बणत बणाईआ। एका शक्ती जोत ज्वाला, आदि आदि उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मण्ड आपणी वंड वंडाईआ। दूजा एका कर त्यार, दोहां मेल मिलांयदा। एका किरन ग्यारवीं धार, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। निरगुण नूर कर आकार, घट घट अन्दर डेरा लांहयदा। देवणहार सर्ब संसार, राज़क रहीम आप अख्वांयदा। आपे उत्पत करे आपणी धार, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे अन्तिम लए सँघार, आपणा लेखा आप चुकांयदा। दोए एके कर प्यार, एका एके नाल जुड़ांयदा। एका किरन होई उज्यार, रवि ससि दए आधार, लक्ख चुरासी जोत जगांयदा। तीजा एका निरगुण रूप, हरि हरि आपणे हथ्थ रखाईआ । अबिनाशी करता सति सरूप, पंचम पंचम वड्डी वड्याईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे तुठ, रवि ससि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरन आपणे हथ्थ रखाईआ। तीजा एका तिक्खी धार, एकओंकार उपजांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, आदि जुगादि करांयदा। पंज तत्त कर प्यार, आप आपणा आसण लांयदा। नाउँ धर गुर अवतार, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, असंख गुण असंख असंखा, आप उपजांयदा। इक्क इक्क इक्क, एका रंग रंगाया। एका रवि ससि मेटे तृख, इक्क लक्ख चुरासी फेरा पाया। इक्क आपणा लेखा आपे लिख, आपे वेख वखाया। एका धारे साचा भेख, ब्रह्मा विष्न शिव लए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाया। एका किरन हरि करतार, आपणी आप आप उपजाईआ। त्रै त्रै खेल खेले अपार, तिन्नां मेला सहिज सुभाईआ। जेरज अंड करे प्यार, उत्भुज सेत्ज आसण लाईआ। गुर रूप आप करतार, आपणी जोत करे रुशनाईआ। ना कोई दीसे होर पसार, ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका करनी किरन उपजाईआ। इक्क इक्क इक्क ग्यारां, एका रंग रंगाया। कलिजुग अन्तिम मीत मुरारा, लोकमाती वेस वटाया। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, ब्रह्मा विष्न शिव बन्न्ह वखाया। लक्ख चुरासी मारे मारा, एका खण्डा हथ्थ उठाया। गुरमुखां करे सच प्यारा, इक्क सौ ग्यारा दिवस साचा जाप जपाया। छत्ती जुग ना पाए कोई पारावारा, गुर पीर साध सन्त औलीए पीर, शेख़ मुलां सारे गए गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्ह्हाया। एका किरन निरगुण धार, इक्क ग्यारां वंड वंडाईआ । आपणे अन्दरों आई बाहर, दर दुआरा आप तजाईआ। असंख गुण बैठ निरँकार, खेले खेल बेपरवाहीआ। एका वंडी तिन्न प्यार, तीजा हिस्सा आप रखाईआ। दूजा कुदरत कादर बणया साचा यार, कादर कुदरत विच समाईआ। आपे करे रवि ससि उज्यार, आपणी

करनी नूर रुशनाईआ। आपे साहिब सज्जण सतिगुर साचा मीत मुरार, लोकमात वेख वखाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जो उपजे सो लए सँघार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुगा जुगन्त साध सन्त गुर अवतार आपणे अन्दर लए वाड़, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। गुर पीर अवतार साध सन्त, हरि आपणे अन्दर आप टिकांयदा। जुगा जुगन्तर कर प्यार, लोकमात धरांयदा। शब्द सरूपी कर जैकार, साचा नाम सुणांयदा। लाए मार्ग अगम्म अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारो नर निरँकारो, निरगुण नूर सर्ब गुणवन्तया। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारो, जोती नूर नूर उज्यारो, घर साचे सोभावन्तया। अकल कल कल आपे धारो, जल थल महीअल रिहा पसारो, रूप रंग ना कोए वखन्तया। वसे नेहचल धाम न्यारो, आदि निरँजण ब्रह्म पसारो, पारब्रह्म श्री भगवन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहन्तया। भगवन भय भञ्जण, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण नरायण सज्जण, अकाल पुरख बेपरवाहीआ। जूनी रहित घड़ण भन्नण, समरथ पुरख अख्वाईआ। आदि जुगादि एका सज्जण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर नूर दरसाईआ। अलक्ख अलक्खणा अगम्म अगम्मड़ा, अनभव प्रकाश समाईआ। सद वसे वक्खरा हड्ड मास नाड़ी ना चम्मड़ा, तत्त रत्त ना कोए वखाईआ। जुगा जुगन्त होए प्रतक्खणा, पल्ले ना कोई पैसा दमड़ा, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। दोवें हथ्थीं फिरे सक्खणा, मात पित ना कोए अम्मी अम्मड़ा, साक सज्जण ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। लिखणहारा हरि निरँकार, एकओंकार अकल कला अख्वांयदा। जोत उज्यार खेल अपार, सचखण्ड दुआर सोभावन्त सोभा पांयदा। सुत्त दुलार शब्द जैकार, एका नाअरा नाम नामा सति लगांयदा। सचखण्ड दरबार धर्म आकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क सुहांयदा। दर सुहावणा राग अल्लावणा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। सच सिँघासण आसण लावणा, जोत प्रकाशण खेल खिलावणा, नूरो नूर डगमगाईआ। दीपक जोती इक्क जगावणा, आप आपणा मेल मिलावणा, घर मेला सहिज सुभाईआ। साचा बंक सुहावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। घर उपजाया हरि रघुराया, खण्ड सच सच वड्डी वड्याईआ। सच समाया दिस ना आया, सच कहिणा कहिण ना कोए जाईआ। शब्द अल्लाया मंगल गाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणा कर हरि पसारा, हरि निरँकारा आपे आप वेख वखांयदा। करनी करता कर उज्यारा, करना करता करनी करता

आप कमांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, आपे वेख वखांयदा। आपे उत्पत करे कराए सर्ब संसारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे मेटे कूड़ पसारा, त्रैगुण डेरा आपे ढांहयदा। आपे ब्रह्मा विष्न कराए अन्त किनारा, आपे जोती नूर धरांयदा। कलिजुग अन्तिम जोत उज्यारा, एकओंकारा, आप अख्वांयदा। वेद कतेबां वसे बाहरा, खाणी बाणी मुख सालांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणे सोभा पांयदा। दर सोभा पाए सोभावन्त, गुणवन्त गुण जणाईआ। दर मन्दिर अन्दर साची बणत, निरगुण आपणी आप उपजाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि निरँकार, भेव किसे ना पाया। चारे जुग बण लिखार, आपणा आपणा लेखा गए लिखाया। साध सन्त गुर सतिगुर रहे पुकार, निहकलंक तेरा नां ध्याया। कलिजुग अन्तिम आउणा विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाया। निरगुण जोती दीपक बाल, गुरमुखां रिहा जगाईआ। इक्क वखाए साची धर्मसाल, चरन दुआरा वड वड्याईआ। आपे परखे साचे लाल, नाम कसवटी हथ्थ उठाईआ। लेखे लाए काची माटी झूठी खाल, रत्त तत्त ब्रह्म मति आप उपजाईआ। अबिनाशी करता धरनी धरता धरत धवल उप्पर गुरमुख साजण लए भाल, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। शब्द शब्दी बण दलाल, वणज कराए नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना इक्क लुटाईआ। गुरसिख शाह बणया कंगाल, अतोट अतुट भण्डार आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए तराईआ। तारनहारा एका गुर, एका एकओंकारया। गुरमुख साजण साचे चढ़ाए घोड़, साचा घोड़ा इक्क वखा रिहा। कलिजुग अन्तिम गया बौहड़, आप आपणा वेस वटा ल्या। लक्ख चुरासी वेख मिट्ठा कौड़, कलिजुग रीठा कौड़ा भन्न वखा ल्या। गुरमुखां अन्तर आत्म लग्गी औड़, दे दरस तृखा बुझा ल्या। सतिगुर पूरा गया बौहड़, भाण्डा भरम गढ़ भना ल्या। गुरमुख चड़ना एका पौड़, चौथे पद चौथे घर सोहँ डण्डा एका ला ल्या। अद्ध विच ना जाणा अड़, गुर पूरे सिर आपणा हथ्थ टिका ल्या। शब्द सरूपी लए फड़, सतिगुर विचोला शब्द रखा ल्या। सस्से उप्पर होड़ा धर, निरगुण सरगुण नाउँ धरा ल्या। हँ ब्रह्म लाए लड़, आपणा पल्लू आप फड़ा ल्या। पुरख अबिनाशी साचे घोड़े रिहा चढ़, सच सिँघासण आसण ला ल्या। गुरमुख नारी लए वर, कन्त कन्तूहला फेरा पा ल्या। साची डोली चुक्के बण कहार, आपणे कंध उठा ल्या। तिन्नां लोकां करे पार, साचे मार्ग आपे पा ल्या। आदि शक्ति पाणी दए वार, अमृत साचा हथ्थ उठा ल्या। सचखण्ड दुआरे कर प्यार, गुरमुख साचा आप बहा ल्या। लक्ख चुरासी घूँगट दए उतार, आपणा मुखड़ा आप वखा ल्या। करे कराए सच प्यार, अंगीकार

अंग लगा ल्या। साची सेजा पुरख करतार, निरगुण आपणी आप सुहा ल्या। सन्त दुलारा दए अधार, साची सेजा आप सवा ल्या। एका सेजा सुत्ते पैर पसार, दूसर फेर ना किसे उठा ल्या। जुग जुग बन्न्हे आपणी धार, भगतां आप जगा ल्या। शब्द सुनेहड़ा देवे आपणी वार, साचा हुक्म सुणा ल्या। लोकमात जाणा विच संसार, भगती मार्ग इक्क वखा ल्या। मैं आवां किरपा धार, गुर सतिगुर रूप वटा ल्या। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, निरगुण साचा खेल खिला ल्या। गुरमुख साजण लाए पार, आपणे बेड़े आप चढ़ा ल्या। कोए ना डोबे विच मँझधार, भव सागर पार वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगा ल्या। गुरमुख नारी कन्त प्यारी, नेत्र नैण श्रृंगारया। दिवस रैण रही पुकारी, घर आ साजण मीत मुराराया। धुरदरगाही लग्गी यारी, जगत विछोड़ा क्यों पा ल्या। मैं भुल्ली अवगुणहारी, तेरा गुण ना जणा ल्या। तूं शाहो सच्चा बख्शणहारी, हउँ ख़ाकी ख़ाक रमा ल्या। बिन तेरे दर्शन होए ख़ुआरी, लक्ख चुरासी भरम भुला ल्या। तेरी सेज़ा इक्क प्यारी, दूजा रस ना कोए वखा ल्या। तेरा शब्द सच्ची धारी, साचा मंगल गा ल्या। पा गलवकड़ी अन्तिम वारी, कलिजुग माया मोह झूठा धन्दा तोड़ तुड़ा ल्या। तेरी डिग्गी तेरे चरन दुआरी, तेरा आसरा इक्क तका ल्या। छत्ती जुग रही कुँवारी, कन्त सुहाग ना कोए हंढा ल्या। कलिजुग अन्तिम आई वारी, सोहणा सीस मात गुंदा ल्या। साचा करया इक्क विहारी, हरि हरि सगन मना ल्या। सोहँ शब्द मिल्या दाज भरी पटारी, आपणे संग उठा ल्या। जांञी लाड़ा आए कर त्यारी, सोहणा घोड़ा वाग गुदा ल्या। गुर गुरमुख नारी मैहन्दी लाए हत्थीं अपारी, लाल रंगन रंग रंगा ल्या। सूहे बस्त्र सूहा वेस, तिन्नां लोकां करे विचारी, कंचन रूप आप वटा ल्या। आदि जुगादि जुग जुग नेत्र रो रो करे गिरयाज़ारी, पेईआ घर ना किसे वसा ल्या। फड़या लड़ चौथे जुग पारब्रह्म अबिनाशी करते हरि निरँकारी, आपणा पल्लू आप बन्न्हा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुनणहार जगत पुकारा, गुरमुख साचे वेख वखा ल्या। सुणी पुकार दातार प्रभ, सचखण्ड लए अंगड़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख साचे लए लभ्भ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पहला अमृत चोवे नभ्भ, उलटा कँवल खुल्हाईआ। पंज विकारा देवे दब्ब, मोह विकार रहिण ना पाईआ। तीजा नेत्र ना झल्ले ताब, नूरो नूर रुशनाईआ। चौथे घर आबहयात, दो दोआब मेल मिलाईआ। पंचम मीता शाह नवाब, शाह सवार खेल खिलाईआ। चरन घोड़े दे रकाब, लोकमात उठ धाईआ। परवरदिगारा हक्क जनाब, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। ना कोई पुन्न जाणे सवाब, पतित पापी ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। उठया हरि हरि शाह सुल्ताना, घर साचे सोभा पांयदा। निरगुण हत्थीं बद्धा गाना, साचा चीरा सीस टिकांयदा।

८६४
०८

हथ्थ विच फड़या शब्द निशाना, तीर कमाना इक्क रखांयदा। जांञी लाड़े रवि ससि भाना, ब्रह्मा विष्न शिव संग रलांयदा। सुरपति बणया लागी खेल महाना, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। करोड़ तेतीसा सखीआं मंगल गाणा, वाह वा राग अलांयदा। गण गंधर्ब ताल वजाणा, किन्नर यच्छप आप नचांयदा। खेले खेल श्री भगवाना, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, आप आपणा बल धरांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाणा, चरन चरनोदक इक्क वखांयदा। लोकमात आया वाली दो जहानां, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। गुरमुख नारी करे परवाना, आप आपणी दया कमांयदा। शब्द सुणाए सच तराना, साचा हुक्म सुणांयदा। तेरा कन्त आदि अन्त इक्क भगवाना, तेरी सेज हंढांयदा। लक्ख चुरासी भरम भुलाणा, झूठी क्रिया विच फसांयदा। शाहो भूप हरि वड सुल्ताना, राज राजाना इक्क अख्वांयदा। गुरमुख राणी मिल्या साचा हाणी, सतिगुर साचा इक्क अख्वांयदा। अमृत देवे ठंडा पाणी, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। लक्ख चुरासी तुट्टे काणी, फंदन फंद कटांयदा। सोहँ अक्खर पढ़ाए बाणी, ब्रह्म पारब्रह्म आप हो जांयदा। गुरमुख तेरी नाम निशानी, लोकमात धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन वर घर साचा पाया, पाया कन्त कन्तूहल। एका दूजा भउ गंवाया, फुल फुलवाड़ी गई फूल। तीजा नेत्र नैण इक्क खुलाया, सच सिँघासण दर्शन पाया, ना पावा ना दिसे चूल। चौथे पद डेरा लाया, हरि मिल्या साचा कन्त कन्तूहल। पंचम मेला आप कराया, पिछला लहिणा गया भूल, साचे मन्दिर डेरा लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तोले पूरे तोल। गुरमुख साजण मीतड़ा, मिल्या पारब्रह्म करतार। घर वस्सया इक्क अनडीठड़ा, महल्ल अटल उच्च मुनार। सतिगुर पाया ठंडा सीतड़ा, नाता छुट्टा दुःख संसार। गुरमुख गुरसिख गाओ सोहँ सुहागी गीतड़ा, जन्म कर्म धर्म वरन बरन तरनी तरन लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी करे आप पसार।

✪ १५ सावण २०१६ बिक्रमी दे घर पिण्ड गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गुर प्रसादि हरि हरि पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। सति पुरख निरँजण जोत जगाया, निरगुण आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। सच सिँघासण आसण लाया, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। जोत प्रकाशण नाउँ धराया, अकल कला बेपरवाहीआ। पृथमी आकाशण डेरा लाया, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लोआं पुरीआं बंधन पाया, रवि ससि रिहा चमकाईआ। मण्डल मण्डप आप सुहाया, धरत धवल वड्याईआ। लक्ख चुरासी जन्त उपाया,

निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण जोती दीप जगाया, घट मन्दिर कर रुशनाईआ। आदि जुगादी वेस वटाया, गुर गुर रूप वटाईआ। मन्त्र शब्द अनादी इक्क सुणाया, आप आपणा आपे गाईआ। हरि बाणी हरि भेव खुल्हाया, हरि नामा नाम जपाईआ। महिमा गणत गणी ना जाया, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। कथनी कथा कथ आप सुणाया, आपणी करे सिफ्त सालाहीआ। आपणा बेड़ा आप चलाया, एका चप्पू नाम वञ्झ मुहाणा इक्क रखाईआ। भव सागर आर पार तराया, काया गागर काची माटी सोभा पाईआ। गुरमुख सज्जण लए जगाया, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी धुन उपजाया, अनहद सेव कमाईआ। साचा मंगल आपे गाया, सुनणहार आप हो जाईआ। गुरसिखां काया खेड़ा डेरा लाया, पंचां डेरा देवे ढाहीआ। नगर खेड़ा आप वसाया, कंचन गढ़ उपाईआ। जोती शब्दी जोड़ जुड़ाया, जुड़या जोड़ एका थाँईंआ। दस्म दुआरी डेरा लाया, महल्ल अटल उच्च मुनार एका एक सुहाईआ। गुर पूरे सतिगुर राह जणाया, रसना गाया बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दया कमाया, पारब्रह्म होए सहाईआ। जूनी रहित वेस वटाया, वेस अवल्ला आप कराईआ। साची नाद तूरत रिहा वजाया, गुरमुख सज्जण आप उठाईआ। आसा मनसा पूरत नाउँ धराया, पूरी इच्छया आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर दर वेखे साचा घर, घर साचे दर्शन पाया। गुर किरपा हरि जाणया, सतिगुर गहर गम्भीर। तुट्टा मान अभिमानया, ठांडा सांतक सति सरीर। घर मन्दिर अन्दर इक्क पछाणया, दूई द्वैती हउमे निकली पीड़, अनहद सुणी साची बाणीआ, दूई द्वैती पर्दा चीर। गावणहारा अकथ कहाणीआ, गाए राग इक्क अक्सीर। मारे तीर सच्चा निशानीआ, शाह सुल्तान वड पीरन पीर। गुरमुखां देवे नाम निशानीआ, अन्तर मन्त्र साची धीर। जोद्धा सूरबीर बली बलवानीआ, गुरमुख चोटी चाढ़े इक्क अख़ीर। देवणहारा पद निरबाणीआ, लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, सतिगुर दाता गुणी गहीर। गुर किरपा हरि मेलया, पारब्रह्म करतार। सतिगुर पाया सज्जण सुहेलया, सोहया बंक दुआर। एका घर वसे गुरू गुर चेलया, गुर चेला मेला नारी कन्त भतार। आपे जाणे साचा वेलया, आदि अन्त लै अवतार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, दिस ना आए विच संसार। जन भगतां धर्म राए दी कट्टी जेल्हिआ, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा लए उभार। सतिगुर साचे हट्ट है, हरि हरि आप खुल्हाया। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट है, दूसर हथ्थ किसे ना आया। वसणहारा घट घट है, घट मन्दिर बैठा आसण लाया। खेले खेल बाज़ीगर नट है, नट नटूआ स्वांग वरताया। किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तट है, अठसठ भौंदी फिरे लोकाया। जिस जन हिरदे अन्दर जाए वस है, बन्द ताकी दए खुल्हाया।

कोटन करे प्रकाश रवि ससि है, जोती नूर कर रुशनाया। दरस दिखाए हस्स हस्स है, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सज्जण साचा हरि हरि पाया। गुर किरपा हरि लेखया, आदि निरँजण मीत। लिखणहारा साचा लेखया, आदि जुगादी परखे नीत। कढ्ढणहारा भरम भुलेखया, काया मन्दिर वखाए देहुरा सच मसीत। सति पुरख निरँजण सदा अदेस्सया, निरगुण बैठा रहे अतीत। जुग जुग लोकमात करे वेस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वस्सया हरि हरि चीत। गुर किरपा हरि गाया, रसना जिह्वा नाउँ। सति पुरख निरँजण इक्क मनाया, मेल मिलावा नेहचल साचे थाउँ। बंक दुआरा इक्क सुहाया, पाया पुरख अगम्म अथाहो। जूठा झूठा मोह चुकाया, सतिगुर पूरा पकड़णहारा बाहों। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, देवणहारा ठंडी छाउँ। एथे ओथे होए सहाया, दो जहानी करे न्याउँ। फड़ कागों हँस बणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। गुर प्रसादी हरि हरि बुज्झया, दीना बंधप दीन दयाल। आदि जुगादी भेव रक्खे गुज्झया, पारब्रह्म गुर गोपाल। जन भगतां उप्पर आपे तुठया, देवे नाम सच्चा धन माल। झूठ विकारा फड़ फड़ कुट्ठया, ख़ाली करे सच्ची धर्मसाल। अमृत देवे आत्म घुट्टयां, पकड़ उठाए साचे लाल। आवण जावण गुरसिख छुट्टयां, लक्ख चुरासी तुट्टा जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए भाल। गुर प्रसादी हरि मन्दिर पाया, अनहद वाजा राग अलाईआ। ताल तलवाड़ा इक्क वजाया, सच दुआरा सोभा पाईआ। साची सखीआं मंगल गाया, वाह वाह गोबिन्द वज्जी वधाईआ। रंग रंगीला मोहन माधव एका पाया, एका रुत्त सुहाईआ। दाना बीना नज़री आया, दाता दानी वड वड्याईआ। तिन्नां लोकां डेरा ढाहया, चौथे घर करे कुड़माईआ। साचे सन्तां मेल मिलाया, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। कागद कलम ना लेख लिखाया, चारे वेद रहे कुरलाईआ। ब्रह्मा वेता भेव ना आया, विष्नूं शंकर सार ना पाईआ। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साचे लए जगाया, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। आत्म अन्तर वेख वखाया। निज नेत्र आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेले दर, दर साचे सोभा पाईआ। गुर किरपा हरि पाया, मिटया जगत अन्धेरा। एका दूजा भउ चुकाया, सतिगुर वस्सया नेरन नेरा। घर मन्दिर इक्क सुहाया, पुरख अबिनाशी पाया फेरा। जोती दीपक इक्क जगाया, आप कर कर आपणी मेहरा। सच सिँघासण आसण लाया, आपे गुरू आपे चेरा। घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया, आपे करे हक्क नबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा वर, शब्दी शब्द फड़ाए लड़, एका रंग रंगाए दया कमाए, भेव चुकाए सञ्झ सवेरा। सञ्झ सवेर

सच प्रभात, गुरमुखां इक्क जणाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाईआ। जिस जन बख्शे नाम दात, नाम भण्डारा आप वरताईआ। उत्तम गुरसिख होई ज़ात, वरन बरन ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा अन्तिम पुच्छे वात, नेत्र हरन फरन खुल्हाईआ। दुरमति मैल देवे काट, निर्मल निर्मल निर्मल आप समाईआ। वणज कराए साचे हाट, चौदां लोकां हथ्थ ना आईआ। हरिजन मेला आत्म खाट, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, नाम भिख्या भिच्छया झोली पाईआ। नाम भिच्छया झोली पा, हरिजन भण्डार भराया। जगत इच्छया पूर करा, संसा रोग चुकाया। दहि दिशा होए आप सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कलिजुग अन्तिम गुरमुख आपणा हिस्सा रहे वंडा, मनमुख हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नर गुर सतिगुर नाउँ धराया।

✪ १५ सावण २०१६ बिक्रमी राम सिँघ दे घर दया होई फ़िरोज़पुर छाउँणी ✪

एकओंकारा पुरख आदि, अबिनाशी करता हरि रघुराईआ। जाणे भेव हरि जुगादि, मध आपणे हथ्थ रखाईआ। अगम्म वजाए एका नाद, एका राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। निरगुण हरि हरि निराकार, जोत जोत उज्यारया। इक्क इकल्ला कर पसार, खेले खेल नर निरंकारया। आपे जाणे आपणी धार, आप आपणी बणत बणा रिहा। आपे करे आपणी कार, करनी करता आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धरा रिहा। निरगुण जोत सुते प्रकाश, हरि आपणा आप करांयदा। आपे करया आपणा वास, आपे वेख वखांयदा। आपे पावे साची रास, आपे हरि सुहांयदा। आपे वसे सदा पास, आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। हरि हरि हरि अतीत, निरगुण नूरो नूर उजालया। आदि जुगादी ठंडा सीत, पारब्रह्म पुरख अकालया। आपे जाणे आपणी रीत, आपणा मार्ग आप वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगा ल्या। जोती नूर हरि निरँकार, एका एक ओंकारया। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपार, अगम्मड़ा धाम सुहा रिहा। लेखा जाणे अपर अपार, भेव अभेदा आप खुल्हा ल्या। रूप अनूप सति सरूप साची धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिला ल्या। खेलणहारा हरि समरथ, आपणी खेल खिलांयदा। आपे चढ़या आपणे रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी कहाणी अकथ, कथनी

कथ आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपे आप प्रगटांयदा। आपणी इच्छया आपे कर, हरि आपे मता पकांयदा। आपणी सिख्या आपे पढ़, आपे हुक्म चलांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख नाउँ अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी जोती हरि उज्यार, नूरो नूर समाया। आदि जुगादी ख़बरदार, एकओंकारा इक्क अख्वाया। आपे सज्जण सच्चा साथी, सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा देस सुहाया। देस सुहाए हरि हरि राए, हरि साची वड वड्याईआ। आपणी रचना आप रचाए, आपे वेख वखाईआ। आपणा मन्दिर आप बणाए, आपे बंक सुहाईआ। चार दीवार ना कोए वखाए, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दर दरवाज़ा ना कोए लगाए, ग़रीब निवाज़ा वड वड्याईआ। चार कुन्ट दहि दिशा ना कोए वखाए, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। रवि ससि ना कोए चमकाए, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ज़िमी अस्मान ना कोए टिकाए, ना कोई थान सुहाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराए, भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा बंक वखाए, आप आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, एकओंकारा आप बणांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, जोती नूर कर उज्यारा, एका एक डगमगांयदा। रूप अनूप सच्ची सरकारा, सति सरूप आप समांयदा। शाहो भूप राज राजान खेले खेल शाह दारा, सच सुल्तान इक्क अख्वांयदा। निरगुण आसण सच सिँघासण खेल अपारा, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आपणा घर, घर साचा आप उपांयदा। सचखण्ड दुआरा सोहे बंक, हरि साचे आप उपाया। कोए ना जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाया। हरि हरि महिमा सद अगणत, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा वेख वखाया। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, एका एक सुहाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। दर दरबार पुरख करतार जोत उज्यारा, एका एक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंड आपे रिहा वंडाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि सच्ची बणत बणांयदा। आपे बणया नारी कन्त, आपे सगन मनांयदा। आप बणाए आपणी बणत, आपे सति उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। धरया नाउँ नर निरँकार, निरगुण वड वड्याईआ। जोती जोत जोत कर उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। आपणी करनी कर त्यार, एका किरनी किरन उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणी वस्त आपणी झोली आपे पाईआ। साची वस्त नाम भण्डारा, हरि हरि झोली पांयदा। आपे साजण मीत मुरारा, आपे संग निभांयदा। आपे बख्शे इक्क प्यारा, आपे वेख वखांयदा। आपे देवे सति हुलारा, सति सतिवादी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे सच घर, सचखण्ड महल्ला उच्च अटला निहचल धाम इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा थिर दरबार, हरि साचे सच उपन्नया। पुरख अबिनाशी निराकार, निरगुण बैठा इक्क इकल्लया। जोती बाती कर उज्यार, दर साचा इक्क सुहन्नया। कमलापाती खेल अपार, कँवल नैण इक्क खुलन्नया। साचा साथी बण करतार, सगला संग निभन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, थिर घर साचा वेख वखन्नया। घर विच घर बणत बणा, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। सच्चखण्ड अन्दर थिर घर बैठा डेरा ला, घर घर विच आप टिकाईआ। जोती नूर जोत जगा, एका एक करे रुशनाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता बेपरवाह, पुरख सुल्तान वड्डी वड्याईआ। दूसर कोई दिसे ना, ना कोई रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच रिहा सुहाईआ। घर विच मन्दिर कर त्यारा, घर साचा आप सुहांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, थिर घर आपे कुण्डा लांहयदा। आपे साजण मीत मुरारा, आपे खेल खिलांयदा। आपे वरते आपणा वरतारा, आपणी कल आप वरतांयदा। आप सुहाए बंक दुआरा, आपे घर उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा भेव खुल्हांयदा। सचखण्ड अन्दर थिर दरबार, हरि साचे आप सुहाया। इक्क इकल्ला कर पसार, आपे वेख वखाया। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर रुशनाया। आपणी जोती कर उज्यार, आपे खेल खिलाया। सच सिघासण बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म आप सुणाया। आपे बणया चोबदार, आपे निउँ निउँ सीस झुकाया। आपे होया ख़बरदार, आपणा हुक्म आप मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वेखे सचखण्ड दुआर, थिर घर साचा आप सुहाया। थिर घर साचा हरि हरि मन्दिर, हरि हरि आप उपजांयदा। आदि निरँजण वड़या अन्दर, आदी पुरख खेल खिलांयदा। परम पुरख प्रभ बणया सज्जण, पारब्रह्म सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआरे साचा कन्त, निरगुण नूरो नूर समाईआ। थिर घर नारी बणे बणत, आप आपणी रचन रचाईआ। खेले खेल आदि अन्त, अन्त आदि वड्डी वड्याईआ। आपे चाढ़े आपणा रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि निरँकार, आपणे घर लए अंगड़ाईआ। निरगुण दाता हो त्यार, दयावान खेल खिलाईआ। खेले खेल अगम्म अपार,

आप आपणा हुक्म सुणाईआ। सगन मनाए पहली वार, आप आपणे मुख लगाईआ। आपणे सीस कर शृंगार, साचा सेहरा आप लटकाईआ। हरि जगदीश खेल अपार, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एका एक सुहाईआ। थिर घर साचे जोती नारी, आपणा आप शृंगारया। आदि जुगादि रहे कुँवारी, ना कोई कन्त मेल मिला ल्या। खेले खेल पुरख करतारी, करता पुरख खेल खिला ल्या। आप विचोल बणया आपणी वारी, आपे मेल मिला ल्या। आपे कजला पाए तिक्खी धारी, आपे नैण सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख विखा ल्या। सचखण्ड दुआरे हरि भगवन्त, आपणा जोबन वेख वखाईआ। अबिनाशी करता साचा कन्त, घर साचे सोभा पाईआ। थिर घर नारी जोत उज्यारी एका एक महिमा अगणत, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। दर घर साचे बणी बणत, होई सच्ची कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वेख वखाईआ। घर कन्त भतारा मीता, सचखण्ड दुआर सुहांयदा। आप चलाए आपणी रीता, आपणे मार्ग लांयदा। आपणा खेल आपे कीता, ना कोई दूसर संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। थिर घर साचे नार भतारी, आपणा वेस वटाईआ। आपणे तन कर शृंगारी, आपे सोभा पाईआ। आपणा नैण रही उग्घाड़ी, आपे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणी खेल खिलाईआ। थिर घर साचे नार सुहागण, आपणा वेस वटाया। हरि जोत होई इक्क बेरागण, बिरहो रोग जलाया। ना कोई दिसे लागी लागण, विचोला कोए दिस ना आया। पारब्रह्म अबिनाशी करते आप आपणा साज्जया साजण, साजणहार आप अख्वाया। सचखण्ड दुआरे उठया राज राजन, शाहो भूप बल धराया। आपणे चढ़या अस्व ताजन, आपणा आसण आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। उठया राजा हरि जगदीश, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। जोती नारी गुन्दया सीस, थिर घर बैठी राह तकाईआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल इक्क इकीस, अकल कल अख्वाईआ। जोती नारी निउँ निउँ झुकाए सीस, प्रणवत आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे रिहा समझाईआ। जोती नारी सीस गुंदाया, थिर घर सोहे बंक दुआरा। पुरख अबिनाशी उठ के आया, सचखण्ड करे खेल अपारा। आपणा मेला आप मिलाया, आप कराया सच प्यारा। आपणा पल्ला आप फड़ाया, आपे करे इक्क विहारा। आपणे अंग आप लगाया। आपे होया अंगीकारा, आपणा धाम आप सुहाया। आप सुहाए सच दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बन्ने आपणी धारा। कन्त भतारी हरि हरि रूप, एका रंग समाया। एका नारी चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया।

सचखण्ड दुआरे गया तुठ, थिर घर साचे मेल मिलाया। आपे अमृत वारे आपणा घुट्ट, आपे मुख लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच रिहा सुहाया। घर मन्दिर हरि सुहञ्जणा, पारब्रह्म उपजांयदा। खेले खेल आदि निरँजणा, सचखण्ड दुआरा वेख वखांयदा। थिर घर मेला साचे सज्जणा, साची सखी संग निभांयदा। एका पाया साचा अंजणा, एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच डेरा लांयदा। घर महल्ल उच्च अटारी, हरि साचे आप सुहाईआ। थिर घर जोत जगे निरँकारी, निरगुण आपे रिहा जगाईआ। सचखण्ड वासी लग्गी प्यारी, अन्त अन्त प्रनाईआ। नारी कन्त खेल अपारी, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचे होए सहाईआ। सचखण्ड दुआरा सच दरवाज़ा हरि हरि खोल्ह खुल्हाया। थिर घर मन्दिर बहि बहि मारे वाजा, आप आपणा हुक्म चलाया। शाह सुल्तान वड राजन राजा, राज राजाना इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे साचे घर, घर साचे वेस वटाया। थिर घर साचा कर परवान, परम पुरख ख़ुशी मनांयदा। सचखण्ड दुआरा सोहे मकान, दर मन्दिर इक्क सुहांयदा। वेखणहार श्री भगवान, एकओंकारा इक्क अख्वांयदा। आपे बणया गोपी काहन, आपे नाच करांयदा। आपणी सखी कर परवान, आपे सेज हंढांयदा। आपे देवणहारा दान, आपे झोली पांयदा। आप उपजाए आपणा सच निशान, आपणा शब्द आप उपजांयदा। जोती माता वेखे मार ध्यान, पुरख अकाल पिता अख्वांयदा। सचखण्ड दुआरा वेख मकान, थिर घर साचे आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। सुत्त दुलारा करे प्यार, एका मंग मंगाईआ। थिर घर रोवे ज़ारो ज़ार, अंमड़ी गले लगाईआ। कवण पिता मेरा मीत मुरार, कवण गोद सुहाईआ। जोती माता हो उज्यार, दे मति रही समझाईआ। सचखण्ड दुआरा वेख खोल्ह किवाड़, अबिनाशी करता बैठा बेपरवाहीआ। एका कन्त सुहागी लाड़, तेरा पिता अख्वाईआ। साची घोड़ी देवे चाढ़, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सिख्या आप समझाईआ। सुत्त दुलारे चढ़या चाअ, पिता पूत वेख वखानया। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, उंगली लाए बाल अंजाणया। निरगुण देवे ठंडी छाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहानया। जोती माता सदके घोली वारी जां, आप आपणा मेल मिला ल्या। थिर घर वखाया साचा थाँ, दर साचा इक्क सुहा ल्या। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, मात पित पूत आप अख्वा रिहा। आपे माता आपे पिता, आपे सुत्त उपजाईआ। आपे करे साचा हित्ता, आपे गोद उठाईआ। आपे रक्त बूंद नित नवित्ता, आपे मेल मिलाईआ। आपे अमृत साचा सिता, आपे सिंच हरा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आप आपणा वेस धराईआ। सुत्त दुलारा उठया, जोद्धा सूरबीर बलवान। पिता पूत उप्पर एका तुठया, देवे एका धुर फ़रमान। हरि का शब्द तीर निराला छुटयां, खेले खेल श्री भगवान। आपणे अन्दर आपणे मन्दिर आपे फुट्टया, आपे वेखे मार ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरी एका हरि, थिर घर साचे बैठा लुकया। थिर घर साचा सच सिँघासण, साची सेज सुहाईआ। हरि हरि सज्जण शाहो शाबाशण, शहिनशाह बेपरवाहीआ। आपे खेले खेल तमाशण, आपणी रचना वेख वखाईआ। आपणी जोत करे प्रकाशण, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका घर एका वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ांयदा। थिर घर वेखे आपे लँघ, आपणा चरन टिकांयदा। सचखण्ड दुआरे सच पलँघ, पावा चूल ना कोए बणांयदा। थिर घर वजाए इक्क मृदंग, एका नाम सतार हिलांयदा। सचखण्ड दुआर सूरा सरबंग, एकओंकारा आप अख्वांयदा। थिर घर वासी मंगे मंग, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआरी पाए भिच्छया, हरि वड वड्डा मेहरवानया। थिर घर पूरी करे इच्छया, खेले खेल श्री भगवानया। एका देवे साची सिख्या, सति शब्द करे प्रधानया। आपणा लेख आप लिख्या, ना कोई दूसर होर निशानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख सुल्तानीआ। लेखा लिख्या सचखण्ड, हरि साची खेल खिलाईआ। थिर घर वंडे आपणी वंड, आपणा हिस्सा पाईआ। सुत्त दुलारा नौजवान आप उठाए दया कमाए एका नाम देवे वंड, खेले खेल सबाईआ। रचन रचाए खेल कराए आप उपजाए हरि ब्रह्मण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अन्दर निरगुण वड़, निरगुण साचा मेल मिलाईआ। निरगुण अन्दर निरगुण वड़या, पारब्रह्म पुरख करतारा। निरगुण मन्दिर निरगुण चढ़या, निरगुण खेले खेल अगम्म अपारा। निरगुण लड़ निरगुण फड़या, निरगुण नारी कन्त भतारा। निरगुण निरगुण लाए जड़या, आदि जुगादी जोत उज्यारा। निरगुण अक्खर निरगुण पढ़या, निरगुण लेख लिखारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए सचखण्ड इक्क दुआरा। सचखण्ड दुआरा निरगुण धार, पारब्रह्म उपजाईआ। थिर घर जोत नूर उज्यार, एका एक डगमगाईआ। शब्द अनादी धुन जैकार, दर दरवाज़े आप लगाईआ। दोहां विचोला बण करतार, आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, आदि जुगादि समाया। सचखण्ड दुआरा रिहा सुहा, थिर घर आसण लाया। जुगा जुगन्तर बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाया, आपणा नाउँ आप धरा, आपे रिहा

जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख वखाया। थिर घर साचा हरि हरि पेख्या, हरि मन्दिर नूर अपार। सचखण्ड दुआरा लेख किसे ना लिख्या, ना कोई पावणहारा सार। नेत्र नैण किसे ना दिस्सया, दिसे धाम अटल उच्च मुनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, आप वंडाए आपणा हिस्सया। आपणा हिस्सा आपे वंड, आपणी रचन रचाईआ। आपे रचया हरि ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं आप उपाईआ। शब्द सरूपी दित्ती गंढु, सति सतिवादी डोरी इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। आपणी धार आप चला, आपे वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण नाउँ धरा, विष्नूं मुख सलांहयदा। कँवल नाभी मुख खुल्हा, साचे तन टिकांयदा। एका कँवला लए खिला, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटांयदा। आपे चारे मुख दए वखा, एक राग सुणांयदा। आपणी सेवा आप कमा, शंकर नाउँ धरांयदा। तिन्नां लेखा लए जगा, त्रैगुण संग निभांयदा। पंचम मेला मेल मिला, लक्ख चुरासी वेस वटांयदा। निरगुण जोती जोत जगा, आपणी धीर धरांयदा। मन मति बुध विच रखा, आपणा अंग कटांयदा। शब्द अनादी धुन उपजा, अनहद राग सुणांयदा। घर विच घर दए वसा, साचा बंक सुहांयदा। एका जोती दए जगा, जोत निरँजण डगमगांयदा। आपणा मन्दिर आप खुल्हा, आपे वेख वखांयदा। साची सेजा आसण ला, आपे सगन मनांयदा। दाता दानी बेपरवाह, भेव कोए ना पांयदा। पंज शैतान मेट मिटा, पंचम शब्द अल्हांयदा। घर मन्दिर साचा दए सुहा, सोभावन्त नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा लोकमात आप सुहांयदा। लोकमात सच दुआरा, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। पुरख अबिनाशी कर त्यारा, आपे वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड अन्दर बाहरा, जीउ पिण्ड वसाईआ। आपे थिर घर वेखे बंक दुआरा, सचखण्ड आपे सोभा पाईआ। आपे गुरमुख सुरती करे नार प्यारा, शब्द साचा कन्त बणाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा ताक आप खुल्हाईआ। साचे मन्दिर करे प्यारा, आपणीआं भुजां आप उठाईआ। मेल मिलावा मीत मुरारा, घर सज्जण साचा माहीआ। लोकमात हरि खेल न्यारा, आदि जुगादि कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा वस्सया, लोकमात वज्जी वधाईआ। जन भगतां मार्ग एका दस्सया, एका नाम दृढ़ाईआ। निरगुण धारा अन्दर वस्सया, सरगुण नूर करे रुशनाईआ। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि सस्सया, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, गुर शब्दी चन्द चढ़ाईआ। हरि मन्दिर हरि जू आपे फिरे नस्सया, काया बंक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणी खेल खिलाईआ। जुग करता हरि करन जोग, जगत जुगत आपणे

हथ्थ रखांयदा। आपे रस रसीआ भोगे भोग, आपणी इच्छया आपे पूर करांयदा। आपे जाणे आपणा जोग, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आपे मेल विछोड़ा करे संजोग, आपे विछड़े मेल मिलांयदा। आपे कट्टणहारा हउमे रोग, दूई द्वैती ढेरी ढांयदा। आपे देवणहारा साची चोग, सोहँ हँसा चोग चुगांयदा। आपे देवणहारा दरस अमोघ, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। आपे वसणहारा तीन लोक, चौदां लोकां आप सुहांयदा। आपे गावणहारा सच सलोक, अक्खर वक्खर नाम सुणांयदा। आपे देवणहारा मोख, आपे मुक्ती झोली पांयदा। आपे लक्ख चुरासी देवे झोक, घड़ण भन्नणहार नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलावणहार पुरख अगम्मड़ो, रूप अनूप बहु बहु रंगीआ। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्मड़ो, पंज तत्त ना कोई संगीआ। ना कोई पल्ले पैसा धेला दमड़ीओ, गुरमुखां दुआरा एका मंगीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धर, खेले खेल सूरा सरबंगीआ। सूरा सरबंग पुरख समरथ, अकथ कथा कहाणीआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही खेल महानीआ। आप निभाए आपणा साथ, सगला संग रखानीआ। आपे जाणे पूजा पाठ, आप उपजाए आपणी बाणीआ। आपे तीर्थ आपे ताट, अठसठ आपे वेस वटानीआ। आपे जाणे आपणे घाट, आर पार वञ्झ मुहाणीआ। आपे वेखे आपणे हाट, चौदां तबकां ताक खुल्लानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल गुण निधानीआ। गुण निधान हरि भगवान, हरि वडा वड वड्याईआ। शाहो भूप सच सुल्तान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता दुआपर भगत लए पछाण, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, लोकमात करे रुशनाईआ। विष्नूं मीता चतुर सुजाण, साचा संग रखाईआ। भगवन जोती नूर महान, आप आपणी डगमगाईआ। ब्रह्मे देवे धुर फ़रमान, वेला अन्तिम आईआ। शिव शंकर उठ बाल निधान, हरि साचा आप जगाईआ। करोड़ तेतीसा कर पछाण, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सुरपति इन्द वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। खेले खेल पुरख सुल्तान, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं दए हुलारा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोकमात लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका अपर अपारा, चारे कुन्टां रिहा वजाईआ। गुरमुखां करे ख़बरदारा, मनमुख गूढ़ी नींद सवाईआ। आपे गुरसिख तेरे दर देवे पहरा, दिवस रैण सेव कमाईआ। तेरा मन्दिर लग्गे प्यारा, हरि मन्दिर नाउँ धराईआ। ढूँघी कन्दर खेल अपारा, हरि साचा वेख वखाईआ। तुड़ाया जन्दर बज़र किवाड़ा, आप आपणा कुण्डा लाहीआ। धन्न सुभाग सतारां हाढ़ा, सम्मत सोलां वज्जी वधाईआ। जन भगतां बख़शया

इक्क प्यारा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। दूसर दिसे ना कोए दुआरा, ना कोई बंक सुहाईआ। निरगुण दीप जोत उज्यारा, पुरख अबिनाशी डगमगाईआ। मेटणहारा अन्ध अँध्यारा, रैण अन्धेरी रिहा गंवाईआ। मुख शरमायण रवि ससि सतारा, गुरसिख तेरा दर्शन पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कारा, दोए निउँ निउँ सीस झुकाईआ। चार वेद ना पाए सारा, पुराण अठारां कोए ना गाईआ। शास्त्र सिमरत ना मारे नाअरा, नाना रूप ना कोए दरसाईआ। गीता ज्ञान कर उज्यारा, एका भगत दए वड्याईआ। एका राम राम न्यारा, शाह भबीख़ण गले लगाईआ। ऐनलहक्क एका नाअरा, मुकामे हक्क रिहा वखाईआ। नानक निरगुण बण वरतारा, नाम सति रिहा वरताईआ। गुरु अर्जन बण लिखारा, अगाध बोध लिखाईआ। गुर गोबिन्द सुत्त दुलारा, पुरख अकाल एका पिता माईआ। पारब्रह्म प्रभ दए हुलारा, आपणी बूझ बुझाईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, साक सैण ना कोए अख्वाईआ। धीआं भैणां करन वणज वणजारा, भैण भाई ना कोए अख्वाईआ। नारी कन्त ना कोए प्यारा, नार दुहागण सर्ब लोकाईआ। मिल्या मेल ना कन्त करतारा, सुरत सवाणी रही कुरलाईआ। साधां सन्तां आए हारा, धीआं भैणां रहे तकाईआ। ना कोई मन्दिर गुरुदुआरा, ठग्ग चोर बैठे आसण लाईआ। एका भुल्लया नाम करतारा, हरि का नाउँ ना कोए ध्याईआ। काम क्रोध लोभ मोह होया हल्कारा, आसा तृष्ना रही जलाईआ। नाता तुट्टा गिरवर गिरधारा, गिरयाज़ारी ना कोए कराईआ । जूठ झूठ कर प्यारा, भेख पखण्डा रिहा वखाईआ। कलिजुग जोद्धा सूर बली बलकारा, आपणा बल धराईआ। संग मुहम्मद चार यार लाए नाअरा, अल्ला राणी नाल रलाईआ। चौदां तबकां करे ख़बरदारा, सदी चौदवीं दए दुहाईआ। पुरख अकाल मीत मुरारा, गुर गोबिन्द रिहा समझाईआ। तेरा दर सच्चा घर बारा, थिर घर मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड वसे निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, वेला अन्तिम आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गोबिन्द तेरा रूप शब्दी धारा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। पुरख अकाल कन्त प्यारा, घर साचे लए प्रनाईआ। लोकमात लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे खुआरा, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। चार वरन वखाए इक्क दुआरा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए जणाईआ। एका वरते नाम भण्डारा, हरि साचा आप वरताईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे प्यारा, आपणी गोद उठाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा खोल्ह किवाड़ा, लोकमात नाउँ धराईआ। देवे वड्याई सतारां हाढ़ा, सतिजुग साची नींह रखाईआ। ज़िमीं अस्मानां मेटे पाड़ा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए इक्क अखाड़ा, सत्तां दीपां रिहा जगाईआ। गुरसिख सज्जण बणाए साचा लाड़ा,

सिर सेहरा एका नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन नारी कर प्यार, मेल मिलावा कन्त भतार, गुण फल देवे अमृत चार, रस भिन्ना आदि जुगादी सिरजणहार, तिन्नां लोकां वस्सया बाहर, बेऐब परवरदिगार, थिर घर मेला साचे यार, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा गुरमुख सज्जण कर प्यारा, आप आपणी गोद उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रूप एकओंकारा, आदि जुगादी कर पसारा, जुग जुग लोकमात लए अवतारा, जन भगतां पावे साची सारा, लक्ख चुरासी पार किनारा, दरगाह साची साचा धाम, मेल मिल्या एका राम, नज़री आए घनईआ शाम, नानक गोबिन्द इक्क प्रनाम, सतिगुर पूरा पकड़े दाम, एथे ओथे दो जहानां, पुरख अबिनाशी हरि मेहरवाना, जन भगतां साचे सन्तां आप आपणा मेल मिलाईआ। मिल्या मेला गुर गुर चेला, हरि हरि रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी पाया सज्जण सुहेला, दूसर दर ना मंगण जाया। आपे वसे धाम नवेला, गुरमुख साजण आपणे घर बहाया। कलिजुग अन्तिम करया मेला, विछड़ कदे ना जाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, दिस किसे ना आया। हरिजन हरिभगत गुरसिख गुरमुख तेरी धर्म राए दी कट्टे जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, जोत निरँजण चाढ़े तेला, अन्तर आत्म सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे जीआ दान, जीआ दाता पुरख बिधाता मेटे रैण अन्धेरी राता, अमृत देवे बूंद स्वांता, चरन कँवल बंधाए साचा नाता, नित नवित्त कर कर हित्त, आपणा दरस दिखाया। दर्शन पाउणा गहर गम्भीर, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। काया करे सांत सरीर, सति सति सति रूप दरसाईआ। हउमे हँगता जूठी झूठी कढ्ढे पीड़, अमृत आत्म सीर प्याईआ। जगत जंजाला कट्ट ज़ंजीर, नाम डोरी तन्दन तन्द बंधाईआ। शाह सुल्तान वड पीरन पीर, दस्तगीर शाह हकीर एका रंग रंगाईआ। गुरमुखां देवे अन्तिम धीर, वेले अन्त कन्त भगवन्त होए सहाईआ। सचखण्ड दुआरे चोटी चाढ़े इक्क अख़ीर, थिर घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचे दर बहाईआ। बधक तेरा सच्चा तीर, चरन कँवल सीस झुकाईआ। मुख चुंघे साचा सीर, कृष्ना रिहा चुंघाईआ। भगती विरोले एका नीर, अन्तर आत्म भीड़ कढाईआ। कट्टणहारा साची भीड़, साख्यात नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। तेरा तीर तिक्खा मुक्ख, साचा सुख उपजांयदा। चरन सरन मिटे दु:ख, चरन कँवल चित लांयदा। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, साचा मेल मिलांयदा। चौथे जुग चुक्के आपणी कुक्ख, द्वापर वेस वटांयदा। पुरख अबिनाशी ना माणस ना दिसे मनुक्ख, रूप अनूप इक्क रखांयदा।

आपणे मन्दिर आपे बैठा लुक, लोकमात दिस ना आंयदा। हरि सज्जण साचे वेखे झुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हरि, दर साचे वेख वखांयदा। चरन तीर तीर निराला, तिक्खी धार वहांयदा। मिल्या मेल हरि गोपाला, गोबिन्द वेख वखांयदा। नेत्र नैण नीर साची माला, माणक मोती तन सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देण पूर्ब झोली पांयदा। चरन तीर मन चित, भउ भगती लेखे लाईआ। बंधक कराया आप निरभउ, निरवैर आप अख्वाईआ। दे बांह सरहाणे रहिणा सौं, सुख सहिज सहिज सहिज इक्क वखाईआ। जुग जुग पकड़णहारा बाहों, आपणे गले लए लगाईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याउँ, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। मिल्या वर धुर दरबार, ब्रह्म दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मेला विच संसार, संसार सागर वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, खेले खेल हर घट थाँईआ। माणस जन्म दए आधार, भगत भगती भगवन्त रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। भगतन मीता आदि निरँजण, आदि जुगादि समाया। पुरख अबिनाशी साचा सज्जण, सतिगुर वेस वटाया। जन भगतां आया पर्दे कज्जण, सोए मात लए उठाया। धुरदरगाही साचा सज्जण, साख्यात रूप वटाया। चरन धूढ़ कराए मजन, मन का मणका दए भुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा इक्क सुहाया। सोहया दर घर बंक दुआरा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। बधक तारया दूजी वारा, आप आपणा संग निभाईआ। सोहँ शब्द भर भण्डारा, सोहँ मुखी तीर वखाईआ। मिल्या मेल मीत मुरारा, सज्जण सतिगुर हरि रघुराईआ। अन्तिम उतरया पार किनारा, साचा घाट आप सुहाईआ। राम रूप राम निरँकारा, सिँघ सिँघ वेख वखाईआ। नाद किंगरी मृदंग वज्जे सितारा, मृदंगा आपणे हथ्थ उठाईआ। सतिगुर पाया एकओंकारा, हरि सज्जण साचा माहीआ। बंस सरबंसा एका तारा, झूठा कंसा दए मिटाईआ। रावण तोड़े लंका गढ़ हँकारा, राम नाम इक्क वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार उतारा आप कराईआ।

✪ १६ सावण २०१६ बिक्रमी गुरचरन कौर दे घर फ़िरोज़पुर ✪

आदि पुरख निरँजण हरि मेहरवान, आदि जुगादी एक ओंकारया। पारब्रह्म पुरख सुल्तान, खेले खेल अगम्म अपारया। जोती नूर नूर महान, एकओंकारा नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटा

ल्या। रूप अनूपा हरि निरँकार, एका एक समांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। जोती दीपक नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। एका वसे सच सच्चे घर बार, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। आदि अन्त ना पारा वार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी सार, दूसर भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता हरि भगवान, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आपणी करे आप पछाण, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर वसे मकान, घर साचे सोभा पाईआ। ना कोई दिसे होर निशान, दूसर वस्त ना कोए उपाईआ। इक्क इकल्ला गुण निधान, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला अकल कलधारी, एका एक ओंकारया। आदि जुगादी इक्क अवतारी, एका खेल अपारया। एका महल्ल इक्क अटारी, एका बंक सुहा रिहा। एका शाहो भूप वड सिक्दारी, शाह सुल्तान इक्क अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटा रिहा। इक्क इकल्ला पुरख सुल्ताना, एका रंग समांयदा। खेले खेल दो जहानां, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा। आपे अपणी चले चाला, चाल अवल्लड़ी आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकओंकार निराकार निरगुण जोती डगमगांयदा। निराकार आदि निरँजण, निरगुण नाउँ धराईआ। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा करे मजन, आप आपणा ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला अकल कल धार, खेले खेल अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। भेव अभेदा हरि भगवन्त, आपणा आप रखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप बणाए साची बणत, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर निराकार, एका जोती जोत जगांयदा। जोत उजाला हरि गोपाला, आदि पुरख अबिनास्सया। खेले खेल पुरख अकाला, मण्डल मण्डप पावे रास्सया। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, लोकमात जोत प्रकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड वेखे खेल तमास्सया। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकार, आपणा आप सुहाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला निराकार, नूरो नूर डगमगाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, राम रूप आप अख्वाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, आपणी आप वखाईआ। अलक्ख निरँजण भेव न्यार, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, हरि साचा खेल खिलांयदा।

आपे साजण बणया सच्च, सच वस्तू विच टिकांयदा। आपे आपणा हुक्म रिहा वाच, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप रखाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर, दर मन्दिर इक्क सुहाईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। ना कोई रवि ससि सूरज चन्न दिसे सतार, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई ब्रह्मा विष्न शिव करे आकार, ना कोई त्रैगण बणत बणाईआ। पंज तत्त ना कोए प्यार, बूंद रक्त ना कोए जुड़ाईआ। ना कोई पृथ्मी आकाश दए हुलार, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए वखाईआ। जेरज अंड ना करे प्यार, उत्भुज सेत्ज ना कोई उगाईआ। ना कोई दीसे जल धार, ख़ाकी ख़ाक ना कोए उडाईआ। ना कोई करोड़ तेतीसा दए आधार, सुरपति राजा इन्द ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सोहे साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह आपे बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म बेपरवाह बेअन्त, एका एक ओंकारया। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग खेल अपारया। आप बणाए आपणी बणत, आपे वेस वटा रिहा। आपे महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखा रिहा। आपे नारी आपे कन्त, कन्त सुहाग आप हंढा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती एका नूर, एका दीपक एका बाती, कमलापाती आप जगा रिहा। कमलापाती हरि निरँकार, एका रंग समाया। ना कोई दूसर दिसे होर पसार, सचखण्ड दुआरे डेरा लाया। थिर घर सोहे बंक दुआर, पुरख अबिनाशी रिहा सुहाया। थिर घर साचे करे प्यार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, आपणी आसा आपणी मनसा आपे पूर कराया। आपणी इच्छया आपे झोली पा, आपणी दया कमांयदा। आपणी वंड आप वंडा, आपे झोली डांहयदा। आपे शब्द सुत्त लए उपजा, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं बणत बणा, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे विष्न ब्रह्मा शिव लए उपा, आपे जोती नूर डगमगांयदा। आपणी सेवा आपे ला, आपे कार कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै त्रै मेला एका धार, अबिनाशी करता कर प्यार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण पंज तत्त, तत्व तत्त समाया। आपे पारब्रह्म ब्रह्म कर उत्पत, आपे वेख वखाया। आपे बूंद रक्त रत, आपे जोड़ जुड़ाया। आपे डाली आपे पत, फल फुलवाड़ी आप खिलाया। आपे देवणहारा सता सति, सति सरूप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। निरगुण सरगुण बन्ने धार, हरि साचे वड वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, त्रै त्रै सेव लगाईआ। तिन्नां गुणां आपे वस्सया बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लक्ख चुरासी

कर त्यार, घर घर विच आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दीवा बाती आपणा आप टिकाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगांयदा। माणस मानुख कर प्यारा, एका दर सुहांयदा। अन्दर मन्दिर खेल अपारा, हरि साचा आप करांयदा। धुन अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। सर सरोवर ठंडी ठारा, साचा ताल वखांयदा। दस्म दुआरी खोलू किवाड़ा, आपणा दर सुहांयदा। आत्म सेजा साचा लाड़ा, आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी देवे वर, आपे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। अन्दर वड़या हरि निरँकार, दिस किसे ना आईआ। आपणे मन्दिर आपे चढ़या, आपणी कल वरताईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़या, दिवस रैण रुशनाईआ। लक्ख चुरासी किसे ना फड़या, हत्थ किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकओंकारा आपणी कल वरताईआ। एकओंकारा कर पसारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। निरगुण रूप सरगुण धारा, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। खेले खेल विच संसारा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। आपे पाए आपणी सारा, आपणी कल आप वरताईआ। आपे बोल शब्द जैकारा, आपणा नाअरा आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। सरगुण वेस लए वटा, लोकमात उठ धाया। पंज तत्त डेरा आपे ला, त्रैगुण बंधन पाया। ब्रह्म पारब्रह्म लए मिला, आप आपणे अंग छुहाया। जोती जोत दए जगा, जागरत जोत कर रुशनाया। गुर अवतार आप अख्वा, आप आपणा नाउँ धराया। आपणा शब्द सुनेहड़ा रिहा घला, धुर फ़रमाना इक्क जणाया। साचे भाणे रिहा समा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार करता पुरख, एकओंकारा आप अख्वाया। करनेहार पुरख करतारा, एका एकओंकारया। लोकमात लै अवतारा, आप आपणा वेस वटा रिहा। एका देवे नाम सहारा, आप आपणा नाउँ जपा रिहा। दीपक बाती कर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखा रिहा। जुग करता पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आप चलाए आपणा रथ, हरि साचा रथ रथवाहीआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आप चलाए आपणी गाथ, आपणी सिख्या आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, एका एक एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, सतिजुग त्रेता दुआपर वेस वटांयदा। लोकमात खेल अपार, अपरम्पर करता आप करांयदा। देवी देव दए सहार, इष्ट देव आप हो जांयदा। नमो नमो नमो कर निमस्कार, निउँ निउँ आपणा

सीस झुकांयदा। आदि शक्ति जोत उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखांयदा। आपे राम रूप निराकार, आपे बंसरी कान्हा आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, आपणी रचन रचांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, पंचम डेरा लांयदा। एका ल्याए नाम वथ, लोकमात वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग कूड़ा वेख पसारा, हरि साचा दया कमांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखांयदा। रजो तमो सतो दे सहारा, साची धीर धरांयदा। मात पित कर प्यारा, बूंद रक्त सुहांयदा। दस मास खेल अपारा, नौ अठारां वक्त लँघांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप अख्वांयदा। आपे जोती नूर उज्यारा, अन्ध अन्धेरा आपे आसण लांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। नानक पंज तत्त प्यार, काया तन समाया। पुरख अबिनाशी कर प्यार, एका दीपक जोती जोत जगाया। निरगुण सरगुण करया प्यार, कर किरपा मेल मिलाया। इक्क सुहाया बंक दुआर, दर घर साचा वेख वखाया। ठांडा मीता एकओंकार, आपणा संग निभाया। अचरज रीता अपर अपार, एका शब्द सुणाया। एका ढोला जै जैकार, एका मंगल गाया। एका तोला अपर अपार, दिस किसे ना आया। ना कोई जाणे कला सोलां, अकल कला उठ धाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला साचे घर, दर दुआरा इक्क सुहाया। नानक पाया कन्त भतारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरारा, साचा संग निभाईआ। शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, धुर फ़रमाना रिहा जणाईआ। एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका राग सुणाईआ। एका गावे एका सुणे सुनणेहारा, दूसर दिस किसे ना आईआ। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट खुल्हाईआ। चौदां हट्टां पार किनारा, चौदां तबकां भेव ना राईआ। लोआं पुरीआं खेल न्यारा, आप आपणी रचन रचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धारा, कर किरपा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ । नानक मिल्या पुरख अकाल, अकल कला वड्याईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, दयानिध आप अख्वाईआ। आपणा दीपक आपे बाल, आपे वेख वखाईआ। आपे मात पित सुत्त दुलारा बणे लाल, आपे गोद उठाईआ। आपे फल लगाए डाल्ह, फल फुल आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अवल्लड़ी खेल आपणी आप चलाईआ। अवल्लड़ी खेल पुरख अगम्म, आपणी आप चलांयदा। हरि घर हरि

शब्द प्या जम्म, मात पित ना कोए दिसांयदा। दो जहानां जाणे कम्म, करनी करता कर्म कमांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, एका रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपे मात चलांयदा। बेड़ा बन्नृ पुरख सुल्तान, आपणी दया कमांयदा। लोकमात हो प्रधान, वेस अनेका रूप वटांयदा। शब्द जणाई धुर फ़रमान, साचा हुक्म सुणांयदा। नानक मेला हरि मेहरवान, सगला संग रखांयदा। देवणहारा साचा दान, नाम सति झोली पांयदा। शब्द सरूपी इक्क बबाण, दो जहानां आप उडांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, साचा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगांयदा। नानक हरि रंग रतया, रंगे रंग अनमोल। पुरख अबिनाशी कमलापतया, काया वेखे पंज तत्त खोल। एका वस्त अन्दर घत्तया, आपे तोले साचे तोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप रखाए सदा अडोल। अडोल अडुल पुरख करतार, एका एक अख्वाया। खेले खेल अगम्म अपार, भेव किसे ना पाया। नानक निरगुण जोती पावे सार, जोती जोत डगमगाया। आप आपणी बख्शे धार, सुन्न समाध ना कोए वखाया। एका नाद इक्क सितार, एका रिहा वजाया। एका सज्जण मीत मुरार, एका नज़री आया। ना कोई दीसे होर दुआर, ना कोई बंक सुहाया। सचखण्ड वसे हरि निरँकार, जोती नूर डगमगाया। नानक वर घर पाया सोहया बंक दुआर, घर सज्जण वेख वखाया। सेवा करे सेवक दर, साची सेवा सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण हरि समझाया। एका गुण हरि गहर गम्भीर, नानक नाम समझाईआ। एका अमृत एका सीर, एका मुख चुआईआ। एका मन्दिर चोटी चढ़ अख़ीर, महल्ल अटल मुनार इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आपे लाईआ। साची सेवा लोकमात, हरि साचा आप लगांयदा। गुर नानक दित्ती एका दात, नाम सति झोली पांयदा। चार वरनां इक्क जमात, एका पट्टी नाम पढ़ांयदा। एका मेटणहारा अन्धेरी रात, साचा चन्द इक्क चढ़ांयदा। एका चरन कँवल बंधाए नात, राम रूप इक्क अख्वांयदा। एका खोलृणहारा ताक, बन्द किवाड़ा इक्क खुलृांयदा। एका बणया साचा सज्जण साक, मीत मीता इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे नानक वर, आपे खेल खिलांयदा। नानक देवे धुर फ़रमान, दिवस रैण हरि जणाईआ। नानक लोकमात करे परवान, हरि भाणे विच समाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। नानक निरगुण होया जाणी जाण, जानणहार आप हो जाईआ। सचखण्ड दुआरे निगहबान, पुरख अकाल राह तकाईआ। नानक मेला वाली दो जहान, एका रंग समाईआ। मिल्या पद पद निरबान, एका दर वखाईआ। इक्क इकल्ला खेल महान, दूजा आपणा वेस धराईआ। तीजा नेत्र नैण

महान आपणा आप खुल्हाईआ। चौथे घर कर परवान, साचा सोहला आप सुणाईआ। पंचम मीता हो प्रधान, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। छेवें दर कर परवान, छे घर बैठा सोभा पाईआ। सति पुरख निरँजण वड मेहरवान, आपणी रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना रिहा जणाईआ। धुर फ़रमाना धुर दरबार, हरि साचा सच सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, वेद कतेब भेव ना आंयदा। चारे मुख ना सके उचार, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। आपे जाणे आपणी कार, करनी करता कार कमांयदा। नानक मेला विच संसार, घर साचा वेख वखांयदा। शब्द ढोला इक्क जैकार, बोला इक्क सुणांयदा। तोला बण सिरजणहार, साचा कंडा हथ्थ उठांयदा। पर्दा उहला विच संसार, आपणा आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप अख्वांयदा। नानक सतिगुर सेव कमाए, हरि साचे सेव लगाईआ। ग़रीब निमाणयां गले लगाए, आप आपणी गोद उठाईआ। खिमा ग़रीबी झोली पाए, चाकर चाकरी रिहा कमाईआ। प्रभ अबिनाशी तेरा सुनेहड़ा भुल्ल ना जाए, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा दास कर अरदास, स्वास स्वास रसना रिहा ध्याईआ। सदा सुहेले वसना पास, पृथ्मी आकाश चरनां हेठ दबाईआ। गगन पताल ना होए निराश, पूरी आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी धुर फ़रमाना, नानक नाम समझांयदा। तेरा मेरा एका ताणा, एका पेटा सूत वखांयदा। तेरा मन्दिर मेरा गाणा, तेरी सितार वजांयदा। मेरा शब्द तेरा बबाणा, तेरा नाम सुघड़ स्याणा, लोकमात समझांयदा। तेरा रूप हरि पछाणा, हरि का रूप नानक अख्वाणा, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। मेरा तीर तेरी कमाना, तेरा चिल्ला तेरी रसन चढ़ांयदा। तेरा खेल दो जहानां, वेखणहार श्री भगवाना, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। आदि जुगादी देवणहारा धुर फ़रमाना, सच सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। नानक निउँ निउँ कर परवाना, लोकमात मार्ग लांयदा। लेखा लिखे लेख महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेश नर नरेश जोती जोत हो प्रवेश, शब्द तराना इक्क सुणांयदा। शब्द तराना साचा गीत, हरि हरि आप उपजाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, नानक काया गढ़ सुहाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क अतीत, मेल मिलावे साचा माहीआ। आदि जुगादी ठंडा सीत, त्तत्व तत्त ना कोए रखाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी आप तराईआ। लक्ख चुरासी आपे जीत, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता साचा वर, एका शब्द जणाईआ। नानक शब्द नाम धुन्कारा, हरि सतिगुर आप सुणांयदा। लोकमात वणज वणजारा, एका वणज करांयदा। एका नूर नूर उज्यारा, एका जोत जोत डगमगांयदा।

एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। नानक अन्तर हरि ध्यान, एका हरि लिव लाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। निरगुण वसे सच मकान, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। निरगुण जोती जगे महान, आदि निरँजण आप जगाईआ। सच सिँघासण कर परवान, बैठा आसण लाईआ । शब्दी शब्द धुर फ़रमान, साचा हुक्म जणाईआ। नानक लोकमात कर परवान, आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण अवगुण ना कोए वखाईआ। नानक मन्नया धुर फ़रमाना, एका तोला तोल तुलांयदा। एका दर इक्क दरबाना, एका घर सुहांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार करांयदा। नानक तोला आपे तोल, हरि साचे सेवा लाईआ। सोहँ गाए साचा ढोला ढोल, आप आपणे मुख सलाहीआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते तेरे दर बणया गोला गोल, घर साचे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। नानक बणया निरगुण गोला, सरगुण पंज तत्त हंढाया। आपणी रसना हरि हरि बोला, एका ढोला सोहँ गाया। जीवां जन्तां सुणाया सोहला, सतिनाम मन्त्र दृढ़ाया। आपे हरि जू वसे कोला, नेड़ा दूर ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाया। नानक गोला बणया हरि निरँकार, आपणी सेवा आप कमाईआ। सृष्ट सबाई करया ख़बरदार, बिन हरि अवर ना दीसे कोई, इष्ट देव ना कोए जणाईआ। सो पुरख निरँजण एका होई, एकओंकारा नाउँ रखाईआ। दो जहानां देवे ढोई, एथे ओथे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बूझ बुझाईआ। नानक गोला दर दरवेश, हउमे गढ़ तुड़ाया। पुरख अबिनाशी आपे पेख, आपणा सीस झुकाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता लिखणहारा लेख, नानक लेखा आपणे हथ्थ रखाया। लोकमात कर आदेश, सच संदेश इक्क सुणाया। पाए सार रिखी केस, कलिजुग कूड़ गोवर्धन हथ्थ उठाया। एका जोती नूर दस दस्मेश, नूरो नूर डगमगाया। घर साचे गोला बणया हमेश, गुरमुखां सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, आपे पूर कराया। आपे वर घर दाता देवणहार, आपे पूर कराईआ। आदि जुगादि आपे वेखणहार, मध आपे बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, नानक निरगुण अन्दर वड़, सति सति लाई जड़, आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। थिर घर ठांडा हरि दरबार, हरि साचे आप उपाया। दीवा बाती कर उज्यार, आपणा दर सुहाया। लोकमाती खेल अपार, हरि सन्तन मेल मिलाया। भगतन देवे नाम आधार, भगत

८८५
०८

भगती वेख वखाया। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआया। एका शब्द नाम जैकार, साचा नाअरा इक्क सुणाया। अन्तिम वेले पाए सार, गुरमुख साजण लए तराया। सचखण्ड दुआरे खोल्ह किवाड़, गुरमुखां राह वखाया। मेटणहारा पंचम धाड़, जूठा झूठा मोह चुकाया। आपणी किरपा आपे धार, गुरसिख सज्जण थिर घर साचे लए बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाया। सतिगुर पूरा संवारे काज, लोकमात वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां मारे इक्क अवाज़, शब्दी राग सुणाईआ। अन्तिम अन्त रक्खे लाज, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचे तारनहारा, सतिगुर पूरा आप समरथ। आपे कराए पार किनारा, आपे रक्खे दे कर हथ्थ। आपे देवे नाम सहारा, आप जणाए कथा कथनी अकथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चढ़ाए आपणे रथ। आपणे रथ आप चढ़ा, आपणी दया कमांयदा। दूती दुष्ट दए खपा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। आसा तृष्ना दए मिटा, हउमे हँगता रोग गवांयदा। अमृत आत्म जाम प्या, अग्नी तत्त बुझांयदा। अनहद राग आप सुणा, धुनी नाद सच वजांयदा। पंचम सखीआं खेल खिला, वाहवा । शब्द देवे साची दात, चोर यार कोई लुट्ट ना जाईआ। सरन सरनाई हरि भगवान, एका एक वखाईआ। मेल मिलावा गोपी काहन, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। थिर घर वसणा सच मकान, आप बठाए बेपरवाहीआ। सतिगुर काज संवारे विच जहान, पूरे गुर हथ्थ वड्याईआ। शाह सुल्ताना पाए आण, आपणा हुक्म जणाईआ। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, अमृत आत्म जाम प्याईआ। निर्भय वखाए इक्क निशान, अमरापद वखाईआ। एका एक श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। साध संगत विटुह कुरबान, हरिसंगत मेल मिलाईआ। सरन सरनाई चरन ध्यान, एका मति समझाईआ। एका ओट वाली दो जहान, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल देवे वर, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित खेल अपारा, हरि हरि आप करांयदा। एका साहिब पुरख करतारा, करनहार अख्वांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लांयदा। पंज तत्त तत्त आधारा, पंज पंज मेल मिलांयदा। पंचम भरे शब्द भण्डारा, पंचम दर सुहांयदा। पंचम देवे इक्क अधारा, पंचम एका मार्ग लांयदा। पंचम नूर कर उज्यारा, पंचम पंचम डगमगांयदा। पंचम धुन सच्ची धुन्कारा, पंचम शब्दी राग अला्यदा। पंचम मेला धुर दरबारा, पंचम बंक सुहांयदा। पंचम सज्जण मीत मुरारा, पंचम वेख वखांयदा। पंचम बोल इक्क जैकारा, एका मंगल गांयदा। पंजम ठांडा सीता दर दरबारा, एका घर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम पंचम रूप वटांयदा। पंचम वेखे खेल

८८६
०८

अपार, पंचम रंग रंगाईआ। पंचम काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचम नार विभचार हंढाईआ। पंचम नाता जोड़ संसार, पंचम माया बंधन पाईआ। पंचम कूड़ कूड़ा सिक्दार, पंचम जूठ झूठ करे कुड़माईआ। पंचम वखाए गढ़ हँकार, पंचम बैठा आसण लाईआ। पंचम करे हाहाकार, पंचम रो रो नीर वहाईआ। पंचम सुणे ना कोई पुकार, पंचम थान ना कोए सुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पंचम पंचम संग निभाईआ। पंचम मीता इक्क अतीता, पंचम रंग रंगांयदा। पंचम हस्त पंचम कीटा, पंचम एका संग वखांयदा। पंचम वसे धाम अनडीठा, लोकमात दिस किसे ना आंयदा। पंचम रस देवे मीठा, अमृत जाम मुख प्यांअदा। पंचम कौड़ा करया रीठा, फल सच ना कोए वखांयदा। पंचम हरि हरि वस्सया चीता, पंचम मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जोड़े पंचम तोड़े, पंचम वेख वखांयदा। पंचम मारे मार, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। पंचम देवे सच्ची धुन्कार, आपणा राग सुणाईआ। दोहां विचोला हरि निरँकार, आपणी करनी रिहा कमाईआ। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। कट्टे लोभ काम क्रोध हउमे हँकार, जो जन निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जगत विकारा ना करे ख्वार, आसा तृष्ना ना होए हल्काईआ। हउमे हँगता रोग दए निवार, साची संगता मेल मिलाईआ। जो जन भुक्खा नंगता आए दर दरबार, नाम बस्त्र भूषन तन बस्त्र एका पाईआ। जो जन मंगे बण भिखार, साची वस्त आत्म अन्तर एका झोली पाईआ। जो जन मंगे दरस दीदार, तीजा लोचण खोलू वखाईआ। जो जन मंगे चरन प्यार, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जो जन मंगे मंग दर्द दुःख दए निवार, रोग सोग चिन्ता रहिण ना पाईआ। जो जन मंगे जोग विच संसार, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जो जन मेटे सोग अन्तिम वार, आपणी गोद लए उठाईआ। चार वरनां सांझा यार, एकओंकारा आप अख्वाईआ। रामा कृष्ना आप अवतार, ईसा मूसा संग मुहम्मद करे प्यार, अल्ला राणी वेख वखाईआ। नानक गोबिन्द एका धार, दूजा दर ना कोए सुहाईआ। वेद पुराणां पावे सार, शास्त्र सिमरत फोल फुलाईआ। गीता ज्ञान दए अधार, एका भगत वड्डी वड्याईआ। अञ्जील कुरानां दए हुलार, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। बाणी खाणी वेख विचार, एका धार रिहा चलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार, राम रहीम आप अख्वाईआ। ख़ालक ख़लक विच रिहा पसार, नूरो नूर नूर इलाहीआ। आपे नाम आप जैकार, आपे ढोला सोहला गाईआ। आपे भगतां करे प्यार, आपे हरिजन लए जगाईआ। आपे गुरमुख साजण जाए तार, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। गुरमुखां उत्तों आपणा आप दित्ता वार, सीस जगदीश

८८७
०८

भेट चढ़ाईआ। गुरमुख सुहागण एका नार, हरि साचे कन्त प्रनाईआ। लक्ख चुरासी दुहागण होए खुआर, कन्त कन्तूहल ना अंग लगाईआ। गुरमुख वैरागण रोवे धाहां मार, दिवस रैण रही कुरलाईआ। सोए जागण इक्क विहार, सुप्न सखोप्त जागरत तुरीआ सतिगुर एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सो जन विछड़ कदे ना जाईआ।

इक्क इकल्ला एकओंकार, आदि जुगादि समाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आईआ। जोती नूरो नूर उज्यार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, दिस किसे ना आईआ। सच्चा मन्दिर हरि दुआर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। थिर घर सोहे बंक दुआर, आप आपणा वेख वखाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सुल्ताना आप अख्वाईआ। कमलापाती मीत मुरार, आप आपणा संग निभाईआ। दीवा बाती कर त्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अबिनाशी करता आप अख्वाईआ । एकओंकारा खेल अपारा, आदि जुगादि समांयदा। आपे वसे धाम न्यारा, नेहचल धाम अटल इक्क वखांयदा। ना कोई दिसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए सुहांयदा। रवि ससि ना कोए सितारा, मण्डल मण्डप ना कोए वखांयदा। पृथ्मी आकाश ना कोए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड ना रचन रचांयदा। विष्न शिव ना कोए आकारा, ब्रह्मा वेद ना कोए लिखांयदा। करोड़ तेतीस ना बन्न्हे धारा, सुरपति राजा इन्द ना कोए सुहांयदा। गण गंधर्ब ना कोए जैकारा, किन्नर यच्छप ना वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं ना कोए आकारा, थान थनंतर ना भेव छुपांयदा। त्रैगुण माया ना कोए पसारा, पंज तत्त ना कोए हंढांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोए उज्यारा, रक्त बूंद ना मेल मिलांयदा। नौ दर ना कोए किवाड़ा, दसवां घर ना कोए सुहांयदा। ना कोई दिसे पंचम धाड़ा, पंचम राग ना कोए अलांयदा। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर ना कोए वखांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई सेज हंढांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, साक सैण ना कोए अख्वांयदा। ना कोई पूत सपूता सुत्त दुलारा, ना कोई गोद सुहांयदा। ना कोई वणज ना वणजारा, ना कोई हट्ट खुल्ांयदा। ना कोई शब्द ना जैकारा, ना कोई रसना जिह्वा गांयदा। ना कोई गुर पीर दिसे अवतारा, साध सन्त ना कोए जणांयदा। ना कोई लोकमात करे पसारा, नव सत ना वंड वंडांयदा। इक्क इकल्ला एकओंकारा, घर आपणे सोभा पांयदा। आपे जाणे आपणी धारा,

८८६
०८

आपणी कल वरतांयदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अगम्मड़ी कार करांयदा। सचखण्ड सोहे बंक दुआरा, बंक दुआरी वेख वखांयदा। थिर घर साचे सच सिँघासण निरगुण धारा, पावा चूल ना कोए बणांयदा। आपे घड़े घड़णेहारा, ना कोई बाढी संग रखांयदा। आपे शाह सुल्तान भूप वड सिक्दारा, राज राजान आप अख्वांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। हुक्मे अन्दर सर्ब वरतारा, हुक्म शब्दी नाउँ रखांयदा। शब्दी शब्द खेल अपारा, भेव कोए ना पांयदा। आप आपणा कर पसारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे आसण लांयदा। आपे निराकार करे खेल न्यारा, साकार रूप आप हो जांयदा। आपे निरगुण बन्ने धारा, आपे सरगुण वेस वटांयदा। आपे पुरख आपे नारा, कन्त कन्तूहल आप अख्वांयदा। आपे करे सच प्यारा, साची सेज हंढांयदा। पारब्रह्म बेअन्त बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर नूर अख्वांयदा। आदि निरँजण भेव न्यारा, सुते प्रकाश डगमगांयदा। अजूनी रहित सोहे सच दुआरा, सच घर एका सोभा पांयदा। मूर्त अकाल खेल अपारा, खेले खेल दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, आप आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी बणत बणाए, हरि साचे वड वड्याईआ। लोआं पुरीआं रचन रचाए, आपणी सेवा आप कमाईआ। शब्द डोरी बंध बंधाए, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। आपणा रूप आप वटाए, विष्नूं वंशी नाउँ धराईआ। सांगोपांग सेज हंढाए, आपणा आसण लाईआ। आपे नाभी कँवला फुल्ल खिलाए, आपे अमृत मुख चुआईआ। आपे पंखड़ीआं वेख वखाए, आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ रूप वटाए, ब्रह्म नाउँ रखाईआ। एका ब्रह्म सर्ब दरसाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निहकर्मी निहकर्म कमाए, गुण दाता बेपरवाहीआ। धुँदूकारा वेख वखाए, शिव शंकर वेख वखाईआ। बाशक तशका गल लटकाए, इक्क त्रिसूल हथ्थ उठाईआ। साचा शब्द धुर फ़रमाना हरि जणाए, आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वसे साचा हरि, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कला कल धारीआ। आप वसाए आपणा सच महल्ला, आपे निरगुण जोत करे उज्यारीआ। आपे त्रैगुण माया रला, वंडे वंड भेव न्यारीआ। आपे पंज तत्त लगाए फला, खेले खेल सर्ब संसारीआ। आपे लक्ख चुरासी अन्दर रला, निरगुण सरगुण संग निभारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदी पुरख आप अख्वा रिहा। आदी पुरख पुरख अबिनाशा, एका रंग समाया। आपे खेले खेल तमाशा, खेलणहार आप हो जाया। आदि जुगादि ना कदे विनाशा, थिर घर बैठा आसण लाया। आपणी जोत आप प्रकाशा, आपे रिहा डगमगाया। आपणे मन्दिर करया वासा, आपे बंक सुहाया। आप आपणा होया दासा, दासी दास सेव कमाया। आप आपणी पाए रासा, आपे वेख वखाया। आपे लक्ख चुरासी पूरन करे आसा,

आपे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि ब्रह्मण्ड, धरत धवल नव खण्ड दीप सत्त आप सुहाया। सत्त दीप नौ खण्ड हरि हरि धार, आपणी आप चलांयदा। लोकमात खेल अपार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। एका वस्त थिर दरबार, साचे हट्ट विकांयदा। शब्दी शब्द भर भण्डार, साचा वणज करांयदा। आप आपणा लै अवतार, आप आपणा राह वखांयदा। आपे बोले सति जैकार, आपे नाउँ रखांयदा। करनहारा सच प्यार, साची क्रिया कर्म कमांयदा। जन भगतां मेला विच संसार, साचा मेला आप मिलांयदा। एका देवे नाम आधार, धुन अनादी नाद वजांयदा। अनहद साचा सेवादार, साची सेव कमांयदा। पंचम सखीआं मंगलचार, वाहवा राग अलांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क वखांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, अन्ध अँध्यार मिटांयदा। सुखमन नाड़ी पावे सार, टेडी बंक सुहांयदा। त्रिबैणी नैणी खेल अपार, साचा संगम वेख वखांयदा। त्रिकुटी वेखे एका धार, एका वेस वटांयदा। आपे तोड़े बज़र कपाट, दूई द्वैती पर्दा लांयदा। आपे तोड़े गढ़ हँकार, हउमे रोग गवांयदा। आपे पंचम देवे मार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। एका शब्द कराए सच वणजार, नाम खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। अन्दर मन्दिर पावे सार, डूँघी कन्दर पार करांयदा। सतिगुर पूरा साची धार, साख्यात रूप वटांयदा। गुरमुख सज्जण लाए पार, साचा बेड़ा आप चलांयदा। ना कोई डोबे विच मँझधार, पार किनारा आप वखांयदा। हरि हरि सज्जण मीत मुरार, साचा संग निभांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता दुआपर करया पार, रामा कृष्ना नाउँ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे खेल न्यार, ईसा मूसा वेस वटांयदा। संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी मेल मिलांयदा। नानक गोबिन्द कर प्यार, एका जोती दस अवतार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। एका भरया शब्द भण्डार, नाम सति चार वरनां आप वरतांयदा। ऊँचां नीचां कर प्यार, राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहांयदा। एका अमृत ठंडी ठार, साचे मुख लगांयदा। दूई द्वैती देवे मार, काम क्रोध हँकार नेड़ ना आंयदा। हरि शब्द वखाए सच प्यार, साचा मार्ग लांयदा। जो जन रसना गाए विच संसार, डूँघा सागर पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेले खेल विच ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वरभण्डी वेख वखांयदा। वरभण्डी हरि वेखणहारा, आदि जुगादि समाया। जुग जुग लोकमात लै अवतारा, आप आपणा मार्ग लाया। जन भगतां करे सच प्यारा, गुरमुख साचे लए जगाया। एका मन्त्र साचा वणज वणजारा, घर साचे हट्ट विकाया। नानक तोले तेरां धारा, तेरा तेरी झोली पाया। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। ना कोई दिसे सच ठठयारा,

काया भाण्डा कंचन गढ़ ना कोए वखाया। जूठ झूठ जगत प्यारा, आसा तृष्ना विच फसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणा वेस आपे धर, खेले खेल अगम्म अपार, अगाध बोध बोध अगाध आपणे हथ्थ रखाया। हथ्थ वड्याई पुरख समरथ, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्तया। जुग जुग चलाए साचा रथ, गुरमुख साजण उधारे साचे सन्तया। चार कुन्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, आप बणाए आपणी बणतया। जन भगतां सगल वसूरा देवे मथ, मेल मिलाए नारी कन्तया। हउमे गढ़ जाए ढठ्ठ, काया चोली चाढ़े रंग बसन्तया। इक्क वखाए तीर्थ तट्ट, सर सरोवर इक्क सुहन्तया। वसणहारा घट घट, घट मन्दिर खोज खुजन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अगम्म अपार, लोकमात वेस वटन्तया। लोकमात हरि अवतारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, वेद कतेब भेव ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, दिस किसे ना आईआ। हरि का गुण अवगुण ना किसे विचारा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकओंकारा वेस वटाईआ। एकउँकार पुरख करतार, करनी किरत कमांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। निहकलंका नूर उज्यार, शब्दी डंक वजांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप उठांयदा। साधां सन्तां दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पांयदा। झूठा गढ़ तोड़े हँकार, कलिजुग रावण मेट मिटांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, गुर गोबिन्द हथ्थ उठांयदा। साचे घोड़े शाह सवार, नीला नीली धारों पार करांयदा। लाल भूषन अपर अपार, कंचन रूप वटांयदा। पीला रंग हरि गिरधार, पिया प्रीतम नाउँ रखांयदा। चिट्टी धारी जोत उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। पीला बस्त्र तन श्रृंगार, साचा शस्त्र हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काली धार मारे मार, काला सूसा वेख वखाए ईसा मूसा आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम जोत जगाई, हरि साचे वड वड्याईआ। चार वरनां करे जणाई, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए वखाईआ। एका हुक्म रिहा सुणाई, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे जणाईआ। सत्तां दीपां भेव खुल्हाई, नौ खण्ड खोज खुजाईआ। कलिजुग अन्तिम दए दुहाई, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि का नाम ना कोए ध्याई, गुर दर मन्दिर मस्जिद मढ्ढ वेसवा घर रहे बणाईआ। धीआं भैणां रहे तकाई, पारब्रह्म अबिनाशी करता हरि समरथ, थिर घर वेखे बेपरवाहीआ। आपे गेड़े उलटी लट्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां देवे साची वथ्थ, नाम वस्त अनमोल झोली पाईआ। रसना जिह्वा हरि हरि नाउँ लैणा रट, एका नाउँ हरि रघुराईआ। आपे खोल्हया साचा हट्ट, जुग जुग वेस वटाईआ। आपे रामा आपे कृष्ना आपे

सोया आपणी खाट, आपे लए अंगड़ाईआ। आपे नूर इलाही गया पाट, आपे जल्वा रिहा वखाईआ। आपे नानक निरगुण मेले आपणे घाट, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द रूप आप उलटाईआ। चार वरनां आप पसारा, आपे रंग रंगांयदा। आपे देवे नाम अधारा, आपे जाप जपांयदा। आपे देवे दरस अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। आपे सुत्ता अन्ध अँध्यारा, बेमुखां दिस ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम मारे नाअरा, आपणा बल वखांयदा। संग रलाया मुहम्मदी यारा, काला सूसा तन छुहांयदा। मुख नकाब पर्दा भारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोती नूर धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि हरि आया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ नगरी डेरा लाया, सम्बल नाउँ धराईआ। पुरख अकाल मेल मिलाया, एकओंकार सहिज सुभाईआ। सति सतिवादी साचा धाम सुहाया, असति असति ना कोए दसाईआ। हरिजन साचे लए जगाया, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लहिणा मूल चुकाया, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। निरगुण नूर दरस दिखाया, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। एका इष्ट देव रिहा समझाया, राम नाम इक्क जपाईआ। पुरख अकाल इक्क मनाया, ना दूसर कोए सहाईआ। परवरदिगार इक्क ख़ुदाया, मुकामे हक्क डेरा लाईआ। आदि शक्ति जोत जगाया, नमो नमो सीस झुकाईआ। आपणी शक्त सभ में पाया, समरथ पुरख इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर खेल खिलाया, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। गुरमुख सज्जण लए तराया, बेड़ा आपे रिहा उठाईआ। मनमुख गूढ़ी नींद सवाया, माया पर्दा उप्पर पाईआ। वीह सौ सोलां बिकर्मी दए दुहाया, हरि का भाणा ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चारों कुन्ट कहर ख़ुदाया, दहि दिशा पए दुहाईआ। सम्मत सतारां नेड़े आया, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। राज राजानां दए हलाया, शाह सुल्तानां आप भुवाईआ। आपणा भाणा आप वरताया, विच भाणे आप समाईआ। राजा राणा तख़्तों लाहया, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। सम्मत अठारां खेल खिलाया, जल धारा धार वहाईआ। मनमुख जीवां दए रुढ़ाया, ना सके कोए बचाईआ। उन्नी उनीसा जोत जगाया, एका नाया नाल रलाईआ। एका एकओंकारा आप अख्वाया, नायां नौ खण्ड वेस वटाईआ। मुस्लिम सुन्नी कोई रहिण ना पाया अल्ला राणी सिर चुन्नी कोए ना दवाईआ। अजूनी रहित आपणी कल आप वरताया, अकल कल आप अख्वाईआ। बीस बीसा हरि रघुराया, जगत जगदीशा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन देवे वर, एका जप्या हरि रघुराईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका दर वखांयदा। चार वरनां इक्क ध्यान, एका रंग रंगांयदा। चार वरनां देवे माण, दर घर साचे आप सुहांयदा। चार वरनां कर परवान,

आपणे लड़ लगांयदा। जो जन गायण श्री भगवान, अन्त कन्त सन्त भगवन्त मेल मिलांयदा। दाता दानी वड मेहरवान, भगत वछल आप अख्वांयदा। आपे गोपी आपे काहन, सीता राम नाउँ रखांयदा। आपे नानक निरगुण कर प्रनाम, आपे गोबिन्द सुत्त सुहांयदा। आपे जोद्धा सूर बली बलवान, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। आपे चण्ड प्रचण्ड तेज़ किरपान, दो धारी खेल खिलांयदा। आपे वंडे वंड दो जहान, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे जीव शैतान, पंच विकारा मूल चुकांयदा। जन भगतां देवे आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। दीपक जोती जगे महान, सच प्रकाश वखांयदा। अनहद धुन सच्ची धुनकान, दर मन्दिर आप सुणांयदा। घर विच घर खेल महान, गुरमुख सज्जण मेल मिलांयदा। शब्द गुर वड मेहरवान, आपणी दया कमांयदा। आपे बणया साचा काहन, सुरत सवाणी आप प्रनांयदा। आपे वसे सच मकान, दस्म दुआरी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, चार वरनां एका घर, दूई द्वैती फंद कटांयदा। आपे राम कृष्न अवतारा, हरि मेहरवान आप अख्वाईआ। आपे वेद पुराण शास्त्र सिमरत बन्ने धारा, आप आपणा हुक्म जणाईआ। आपे गीता ज्ञान रिहा उचारा, आपे अर्जन मुख सालाहीआ। आपे अञ्जील कुरानां पावे सारा, तीस बतीसा आपे गाईआ। आपे ऐनलहक्क लाए नाअरा, हक्क हकीकत आप अख्वाईआ। आपे लाशरीक सांझा यारा, एकओंकारा नाउँ धराईआ। आपे नानक नाम सति करे प्यारा, चार वरनां रिहा वरताईआ। आपे गोबिन्द देवे अमृत ठंडी ठारा, ऊँच नीच ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे बोले सच जैकारा, वाहिगुरू फतिह आप गजाईआ। आपे मंगे बण भिखारा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपे पुरख अकाल बण वरतारा, आपणी वंड आप वंडाईआ। आपे गोबिन्द देवे सच सहारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण रूप आप वटाईआ। तेरा सुहाए बंक दुआरा, तेरा संग निभाईआ। तेरा वणज करे सर्ब संसारा, बीस बीसा राह तकाईआ। कलिजुग उतरे पार किनारा, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां देवे सच्चा वर, राम नाम रसना गाओ, आदि शक्ति घर घर बणाओ, नेत्र नैण कान्हा कृष्ना दर्शन पाओ, ईसा मूसा वेख वखाओ, संग मुहम्मद चार यार संग निभाओ, नानक निरगुण हिरदे वसाओ, गोबिन्द मेला दर दुआर कराओ, दूई द्वैती भरम चुकाओ, एका संघम सृष्ट सबाई लोकमात बणाओ, पारब्रह्म अगम्म अथाहो, वेखणहारा हर घट अन्दर करे कराऐ सच न्याउँ, कलिजुग वेला अन्तिम अन्त, खेले खेल पारब्रह्म अबिनाशी बेअन्त, गुरमुख साजण वेखे सन्त, मेल मिलावा नारी कन्त, आत्म सेजा करे प्यारी, गुरमुख काया महल्ल अटारी, दस्म दुआरी जोत निरँकारी, हरिजन मेला एका रंग रंगाए

८६३
०८

गुरू गुर चेला आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग जुग आवण जावण पतित पावण आपणी खेल रचाईआ।

✪ १७ सावण २०१६ बिक्रमी सुलक्खण सिँघ दे घर दया होई पिण्ड रुकना मूगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सोहिण बंक दुआर, घर सज्जण हरि हरि आया। निर्धन निर्बल लए उभार, निरगुण आपणी दया कमाया। बख्शे बल चरन प्यार, लक्ख चुरासी हथ्थ किसे ना आया। सचखण्ड दुआरा बणाए सच दुआर, जिस दुआरे चरन छुहाया। पतित पापी उधरे पार, पतित पावण रिहा तराया। माणस जन्म जाए स्वार, जिउँ सुदामा दलिद्री गले लगाया। दर दरबारा कर प्यार, प्रेम पटोला सीस टिकाया। भरया सच सच्चा भण्डार, सच ख़ज़ाना इक्क वखाया। काया काया काची माटी पैज जाए स्वार, माणस जन्म लेखे लाया। कागद कलम ना पाए सार, गुरमुख तेरी वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक सुहाया। सोहे बंक सच महल्ल, महल्ल महल्ल सुहाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटल, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग करया वल छल, वल छल धारी खेल खिलाईआ। गुरमुख आत्म आसण ल्या मल्ल, दिस किसे ना आईआ। देवणहारा साचा फल, अमृत मेवा इक्क खुवाईआ। फल लगाए काया डाल्ह, फल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। लाल अनमुल्लड़े आपे भाल, करता कीमत आपे पाईआ। जन भगतां बणे जगत दलाल, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपणी गोदी उठाए आपणे लाल, बाली बाला रूप सखाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। जो जन चरन प्रीती घालण रहे घाल, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, रोग सोग दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम चोग चुगाईआ। सोहया बंक सच दरवाज़ा, घर साचे सच सुहाया। शाहो भूप वड राजन राजा, दर दरवेशा फेरी पाया। ग़रीब निमाणयां रक्खे लाजा, जुग जुग आपणा बिरध धराया। जिउँ बिदर अलूणा खाए सागा, दुर्योध्न दर ना चरन टिकाया। कलिजुग अन्तिम आया भाजा, भेव अभेदा भेव छुपाया। गुरसिख उठाए मार वाजा, पूर्ब लहिणा झोली पाया। बाहों पकड़ चढ़ाए सच जहाज़ा, नाम चप्पू एका लाया। रक्खणहारा आदि अन्त लाजा, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन अन्दर निर्धन वड़, निर्धन रूप आप हो जाया। सोहे बंक सच अटारी, हरि साचा सच वड्यांअदा। निरगुण जोत जगे निरँकारी, दीवा बाती ना कोए वखांयदा। अगाध बोध शब्द धुन्कारी, साचा शब्द अल्हांयदा। गुरमुखां रिहा पैज संवारी, सिर आपणा

हथ्थ रखांयदा। जुगा जुगन्तर लहिणा देण चुकाए वारो वारी, देवणहार इक्क अख्वांयदा। बख्शणहारा चरन प्यारी, चरन नाता जोड़ जुड़ांयदा। एका देवे सच सच्ची सिक्दारी, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, काया मन्दिर आपे चढ़, दिस किसे ना आंयदा। सोहे बंक विच संसार, सतिगुर साचा आप सुहाईआ। कुली कक्खां कर प्यार, करता बैठा आसण लाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान, एका रंग रंगाईआ। जन भगतां करे सच प्यार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा वेख वखाईआ। सोहे बंक सच सिँघासण, हरि साचे सच सुहाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशण, जुग जुग आपणा वेस वटाया। खेले खेल पृथ्मी आकाशण, गगन मण्डल डेरा लाया। नौ खण्ड पृथ्मी पावे रासन, लक्ख चुरासी विच समाया। जन भगतां देवे नाम स्वासण, रसना जिह्वा एका गुण वखाया। हिरदे अन्दर कर कर वासन, आप आपणा मेल मिलाया। सतिगुर सच्चा शाहो शाबासण, एकओंकारा इक्क अख्वाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए दास दासन, दासी दास सेव कमाया। सेवा सेवकदार, हरी हरि आप अख्वांयदा । गुरमुखां करे लोकमात प्यार, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वरनां बरनां वरसया बाहर, ज़ात पात ना कोए रखांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी दरस दखांयदा। ग़रीब निमाणे फड़ फड़ बाहों जाए तार, तारनहार पुरख समरथ एका एक एक अख्वांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, हरि साचा खेल खिलांयदा। भगत वछल हरि मीत मुरार, भगत भगवन्त आप अख्वांयदा। साची नईआ कर त्यार, आप आपणा चप्पू लांयदा। गुरसिख गुरमुख भवजल सागर कर जाए पार, मँझधार ना कोए रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरिजन मेला पुरख सुल्तान, घर सोहे बंक दुआरा। सतिगुर पूरा देवे जीआ दान, भगती भरे नाम भण्डारा, मेल मिलावा वाली दो जहान, खेले खेल अगम्म अपारा। एका बख्शे चरन ध्यान, लक्ख चुरासी पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साजण लए वर, मेल मिलावा विच संसारा।

✪ १७ सावण २०१६ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे घर दया होई पिण्ड शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

एका हरि हरि पुरख करतार, आदि जुगादी एकओंकारया। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, राम रहीम आप अख्वा

रिहा। दो जहानां सांझा यार, रूप रेख ना कोए वखा रिहा। जोती नूर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ भेव अपार, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। कमलापाती खेल अपार, आप आपणा खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। जोती नूर नूर उज्यारा, आदि जुगादि समाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाईआ। एका वसे नेहचल धाम न्यारा, महल्ल अटल उच्च समाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, जोती नूर डगमगाईआ। आप सुहाए बंक दुआरा, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ। सति सिँघासण अपर अपारा, आपणी बणत आप बणाईआ। सच सुल्तान वड सिक्दारा, हरि निरँकारा बैठा आसण लाईआ। आपणे मन्दिर बोल जैकारा, आपणा नाअरा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। कल वरतंता हरि भगवन्ता, हरि वड्डा वड वड्याईआ। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। आपे आदिन आपे अन्ता, आप आपणी खेल खिलाईआ। आप बणाए आपणी बणता, आपे वेख वखाईआ। आपणा दर आप सुहंता, सोभावन्त आप हो जाईआ। आपे नारी नर नरायण कन्ता, रुत्त बसन्ता आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी एका एक, इक्क इकल्ला एकओंकारया। आपणी रक्खे आपे टेक आपे देवे सच सहारया। आप बैठा आपे ल्ए वेख, दूसर दिस किसे ना आ रिहा। आपे लिखणहारा लेख, आपे लेख लिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटा ल्या। वेस अवल्ला हरि इकल्ला, एकओंकारा आप करांयदा। आपे वसे सच महल्ला, थिर घर साचा धाम सुहांयदा। आपे वसे जलां थलां, समुंद सागर आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। हरि नामा आपे नाम रक्ख, आपणे नाउँ करे वड्याईआ। आदि जुगादी एकओंकारा बन्ने धारा, आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणी मति आप समझाईआ। आपे जोती नूर रवि ससि, घट प्रकाश आप कराईआ। आपे हरि हरि हिरदे रिहा वस, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। आपे नव सत्त रिहा नस्स, दिवस रैण सेव कमाईआ। आपे तीर निराला मारे कस, एका मुखी मुख लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुगा जुगन्तर हरि हरि कार, साची सच करांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। लोकमात हो उज्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। एका नाम शब्द जैकार, रसना ढोला एका गांयदा। एका शब्द सच प्यार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। एका इष्ट देव गुर करतार, पुरख अकाल इक्क मनांयदा। एका बंक इक्क दुआर, घर एका सोभा पांयदा। एका सज्जण मीत मुरार, एका संग निभांयदा। नाता

तुट्टे सर्ब संसार, जो जन एकओंकारा दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। दयावान हरि मेहरवान, आदि जुगादि समाईआ। जन भगतां देवे साचा दान, अन्तर आत्म झोली रिहा भराईआ। एका मन्त्र सच ज्ञान, बिरहों रोग इक्क गंवाईआ। एका मारे तीर निशान, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। इक्क वखाए सच बिबान, गुरमुख सज्जण लए चढ़ाईआ। जोती नूर श्री भगवान, एकओंकारा निराकारा निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि बेअन्त, एका रंग समाया। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाया। गुरमुख नारी मेला कन्त, घर सज्जण सच्चा पाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्त, हरिजन तेरी महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। लेखा जाणे साध सन्त, जीव जन्त ना कोई सके भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द इक्क ज्ञान, एका बख्शे चरन ध्यान, एका वर झोली पाया। साची वस्त नाम भण्डार, हरि साचे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, गुरमुखां आप वरताईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, पार किनारा पार कराईआ। घड़ण भन्नणहार सर्ब संसार, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। ग़रीब निमाणे लाए पार, आपणे बेड़े आप चढ़ाईआ। चारों कुन्ट जीव जन्त साध सन्त लक्ख चुरासी हाहाकार, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। खेले खेल पुरख करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सोहे बंक दुआर, एका मंगल गाईआ। एका मंगल एका गीत, एका हरि जणाईआ। एका दाता ठंडा सीत, एका सतिगुर नाउँ रखाईआ। एका हस्त एका कीट, एका दर बहाईआ। एका नाम देवे जगत अनडीठ, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। एका ठांडा एका सीत, निझर धारा इक्क चलाईआ। एका पतित इक्क पुनीत, पतित पावण इक्क अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी रीत, जगत विचोला ना कोए बणाईआ। पावे सार मन्दिर मसीत, गुरुदुआर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। खेलणहार हरि भगवान, हर घट खेल खिलांयदा। काया मन्दिर सच मकान, निज घर डेरा लांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए लड़, पल्लू मात ना कोए छुडांयदा। हरिजन साचा पल्ला फड़या, हरि हरि आप फड़ाईआ। आबिनाशी करता निरगुण धार आपे अन्दर वड़या, काया मन्दिर वेख वखाईआ। आपणी चोटी आपे चढ़या, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। गुरमुख विरला आपे फड़या, जिस जन बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त भरया भण्डार हउमे गढ़या, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

८६७ ०८

जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरि सज्जण हरि सिख है, गुरमुख नाम आधार। सन्त साजण देवे साचा सुख है, लोकमात खेल अपार। भगतष भगती उज्जल मुख है, गावणहारा गाए वारो वार। घट घट अन्दर बैठा लुक है, गुरमुख विरले पर्दा दए उतार। दूर दुराडा आपे झुक है, गुरमुख सज्जण लए उभार। ना माणस ना मनुख है, हरि का रूप अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। हरि सज्जण हरि रंग रत्तया, मिल्या मेल श्री भगवान। बीज बीज्जया साचे वतया, अमृत लग्गा फल महान। वेख वखाणे डाली पत्तया, फल फुलवाड़ी विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे परवान। हरि साजण सुख पाया, हरि मिल्या सतिगुर मीत। अनन्द मंगल एका गुण गाया, दिवस रैण वस्सया चीत। दूई द्वैती भरम मिटाया, एका रंग रंगाया हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, देवे नाम शब्द अनडीठ। नाम शब्द अनडिठ अनमोला, हरि सतिगुर हट्ट विकांयदा। सति पुरख निरँजण शब्द भण्डारा आपे खोल्ह, पुरख अकाल प्रभ आप वरतांयदा। सोहँ लाया साचा ढोला, आपणा चोला आप बदलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण मेल मिलांयदा। गुरमुख साजण सच मुनारा, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाईआ। पावे सार नौं दुआरा, नौ दर खोजे खोज खुजाईआ। डूँघी कन्दर हो उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अन्दर बाहर खेल अपारा, भेव ज़ाहरा वड वड्याईआ। गुप्ती गुप्त भरे भण्डारा, दिस किसे ना आईआ। जो जन करे सच प्यारा, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। आप सुहाए बंक दुआरा, बंक अंक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डंका शब्द उठाईआ। शब्द डंका हरि उठाया, आपे ताल वजांयदा। लक्ख चुरासी रिहा हिलाया, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। चारों कुन्ट रिहा फिराया, दहि दिशा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राज आप कमांयदा। आपे राज जोग सुल्तान, आपे तख्त हंढाईआ। आपे देवणहारा धुर फ़रमान, आपे हुक्म चलाईआ। आपे वसे पद निरबाण, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। हरि का मन्त्र ना विके किसे जगत हट्ट मकान, हट्टो हट्ट ना कोए वखाईआ। जिस जन कर किरपा बख्शे चरन ध्यान, सो जन रसना जिह्वा गाईआ। एका पाए पद निरबाण, परम पुरख विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर नूर धर, नूरो नूर समाया। आपणी करनी आपे कर, आपे वेख वखाया। आपणी सरनी आपे पड़, आपे हुक्म सुणाया। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे रिहा गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। हरि सज्जण कल जागया, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। धूढ़ी

मजन करया साचा माघिआ, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। एका नाम इक्क वैरागया। हरि एका वेख वखांयदा, एका लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दहि दिशा फिरे भाज्जया, रैण दिवस रवि ससि हस्स हस्स सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सज्जण, दर साचे वेख वखाया। गुरमुख सज्जण सच्चा लाल, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। परम पुरख प्रभ दीन दयाल, दीनां अनाथां संग निभांयदा। ग़रीब निमाणे उठाए लाल, अमुलड़े लाल आपणे हट्ट विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साचा देवे वर, सच सच्चा आप अख्वांयदा।

१८ सावण २०१६ बिक्रमी गुरदास सिँघ दे घर दया होई
शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर

हरीअं अकालं करे खेल दिआलं परम पुरख प्रितपालं, भेव अभेद वखानीऐ। शाह सुल्तानं दो जहाननं तेज भाननं, कोटन कोटि महानीए। गुण निधानं श्री भगवानं जोत ज्वालं, आदि शक्ति भवानीए। रूप अनादिं खेल ब्रह्मादं शब्द जुगादिं, जगत वहानीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी बाणीए। अकाल मूर्तं नाद तूरतं सच सूरतं, अनभव प्रकाशया। नेड़े दूरतं आस पूरतं हाज़र हज़ूरतं, पुरख अबिनास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल तमाशया। सूरा सरबंगं तेज प्रचण्डं खण्ड ब्रह्मण्डं जेरज अंडं, उतभज सेत्ज वेख वखानया। कल करना दु:ख हरना सर्ब सुख तरना, हरिजन हरि मेहरवानया। भूत भविख्त आदि शक्ति सति सरूपं शाहो भूपं, सति सतिवाद समानीए। सर्ब जोगं सर्ब भोगं अन रोगं, एका पुरख अकालीए। नाम राजं सर्ब ताजं जोत जोतं ब्रह्म पोतं, पारब्रह्म वखानीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवानीए। हरि भगवानन जोत महानन शब्द दानन, देवणहार दातारया। सच्चखण्डं ब्रह्मण्डं वरभण्डं, एका रंग वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगानया। अखण्ड मीता अचरज रीता भय भीता, भगवन रूप वटाईआ। ठांडा सीता पतित पुनीता हस्त कीटा, एका रंग रंगाईआ। आदि जुगादि अतीता साची रीता पतित पुनीता, आपणी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेल खिलंता सर्ब गुणवन्ता श्री भगवन्ता, एका गुण वखाणीए। जीव जन्तां जोत जुगन्ता बाल रखंता, बल बावन भेख वटानीए। नाम मंगता चोली रंगता, साची संगता साचा गढ़ वखानीए। भुक्खा नंगता नानक अंगदा, गुर अमृत नाम वखाणीए। दर दरवेशं नर नरेशं श्री पति दस्मेसं, दस दस मास फंद कटानीए।

स्वच्छ सरूपं महिमा अनूपं एका सरूपं, गुण अवगुण ना कोए जाणीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वरते आपणे भाणीए। नेहचल धामं एका रामं एका नामं एका रस वखाणीए। पूरन कामं पकड़े दामं होए ज़ामं, दो जहानां शाह सुल्तानीए। मेटे शामं प्रकाश कोटिं भानं गुरमुख विरले जानं, जिस जन देवे आत्म ब्रह्म ज्ञानीए। सच निशानं दो जहानं आप झुलानं, श्री असकेत आप वखानीए। मध पुराणं वेद निधानं गुर शब्द महानं, गुर मन्त्र इक्क वखानीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप जाणे आपणी अकथ कहाणीए। कथा कथनं सर्ब समरथं, एका एक ओंकारया। अकाल अकाला दीन दयाला जोत ज्वाला शक्ती रूप अनभव सरूप सहिस गुण ना किसे वखानया। अपरम्पर करता खेल खिलंता जुगा जुगन्ता, वेद वेदांता भेव ना आणया। खेल मुरारी जोत निरँकारी अकल कलधारी वेस अनेका रूप वटानया। खड़ग खण्डं तेज़ प्रचण्डं हथ्थ उठनं तिक्खी रक्खे दोवें धारया। राज राजानं शाह सुल्तानं कर खुआरं तोड़े हउमे गढ़ हंकारया। भगत उधारं दुःख रोग शब्दारं सर्ब सुख सारं, सारं धर बीठलो आप अख्वा रिहा। भगवन भगतं मेल मिलंतं जोग जुगतं, जीवण मुक्त आप अख्वा रिहा। सालसा सालस ख़ालसा ख़ालस लालसा लालस, जगत तृष्ना मोह चुका रिहा। दुआर चरनं सर्ब दुःख हरनं चार वरनं, सति सतिवाद हरि ब्रह्माद एका एक समझा रिहा। लेख लिखंता जुगा जुगन्ता आदिन अन्ता, केशव केशव कंकर किन्नर आप अख्वा रिहा। लोक परलोकं एका ओटं शब्द चोटं नाम नगारा इक्क वजा रिहा। ब्रह्मा विष्न कोटं भण्डारा मंगण अतोटं, शंकर घाइल आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिला रिहा। खेल खिलंदड़ो हरि बख्शंदड़ो जोत जगन्दड़ो, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। दीपक बलंदड़ो अज्ञान मिटंदड़ो सच मन्दिर सुहंदड़ो, सोभावन्त सोभा पाईआ। एकओंकार अख्वंदड़ो नाम सति जपंदड़ो, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। करता करनी करंदड़ो निर्भय सुहंदड़ो, निरवैर आप अख्वाईआ। अजूनी रहत वेस वटंदड़ो जुगा जुगन्त लेख लखंदड़ो, वेद पुराण ना कोए दसाईआ। कलिजुग अन्तिम नाम रखंदड़ो निहकलंक डंक वजंदड़ो, शब्द खण्डा हथ्थ उठंदड़ो, खण्ड ब्रह्मण्ड वेखे सर्ब लोकाईआ। जन भगतां मेल मलंदड़ो दरस वखंदड़ो भाण्डा भरम भउ तुड़ंदड़ो भव सागर पार कराईआ। काल महांकाल दर दुआर दुरकंदड़ो सतिगुर साजण प्रितपाल आप अख्वंदड़ो, शाह कंगाल आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां दर सुहंदड़ो लक्ख चुरासी नाता तोड़ तुड़ंदड़ो, एका बंधन हरि हरि नामा पाईआ। काल फास कटंदड़ो राए धर्म दर दुआर दुरकंदड़ो, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए तराईआ। तारनहारा एकं एक, हरिजन बख्शे साची टेक, त्रैगुण ना लाए माया सेक, सांतक सति सति वरताईआ। करे कराए बुध बबेक, आपे

लेखा जाणे लिख्या लेख, आपणे नेत्र लए पेख, जगत नेत्र बन्द वखाईआ। खेले खेल दस दस्मेश, दानी दाता दर दरवेश, स्वांगी करे आपणा वेस, नीले बस्त्र चोली पाईआ। उच्च पीर धारया भेख, वसणहारा गढ़ केस, पुरी अनन्द लाई ठेस, दर दुआर बंक ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणी रचना आप रचाईआ। पीरन पीरं दस्तगीरं शाह हकीरं, आपणा रूप वटांयदा। बस्त्र चीरं हाल फ़कीरं खण्डा तीरं, तुपक कमान ना कोए उठांयदा। नीली धारं हरि निरंकारं गोबिन्द सारं, स्वांगी स्वांग वटांयदा। खेल अपारं विच संसारं वल छल धारं, अछल अछलीआ आप अख्वांयदा। वरन बरन वस्सया बाहरं, हिन्दू मुस्लिम करे प्यारं, सिख साजण आप उधारं, साचा करे सच प्यारया। मुगल पठानं नाम निधानं आत्म ध्यानं, चरन कँवल बख्शे सच सिक्दारीआ। दरस महानं श्री भगवानं जोत अकालं, नूर इलाही नूर वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपर, भेव अभेदा भेव छुपा ल्या। उच्च पीर शहिनशाह, दस्तगीर रूप वटाया। नीले बस्त्र तन छुहा, आपणा भाणा आप मनाया। तीर कमान खण्डा दित्ता तजा, तेज बल आपणा आप धराया। आपणा कलमा आप पढ़ा, नबी रसूल आप समझाया। आपणी शरीअत आप जणा, शरअ शरीअत विच आप ना आया। चार कहार लए बणा, साचा मुर्शद वेस वटाया। एका हुक्म दए जणा, हुक्मी हुक्म रिहा भुवाया। खुलड़े केस गल विच पा, ख़ालक ख़लक वेख वखाया। हथ्थीं मैहन्दी लई लगा, प्रेम रंगण रंग चढ़ाया। तसबी गल लई लटका, गढ़ी चमकौर गुरमुखां सीस आपणे गल रिहा लटकाया। हथ्थ मुसल्ला ल्या उठा, गुरमुखां साची सेज सुहाया। एका कूज़ा रिहा वखा, अमृत साचा जल भराया। एका कलमा रिहा गा, तेरा भाणा मीठा मोहे भाया। एका सीस रिहा झुका, तेरा सजदा पुरख अकाल तेरा रिहा कराया। एका बांग रिहा अल्ला, इलाही जल्वा वेख वखाया। एका इक्क सदा रिहा लगा, सिदक सबूरी तोड़ निभाया। इक्क गदागर बण फेरा रिहा पा, एका अल्फ़ी रिहा हंढाया। एका सखी सरवर सुल्तान नाम धरा, नाम मतैहरा हथ्थ उठाया। नंगी पैरीं खेल खिला, गुरसिखां भुक्ख नंग रिहा कटाया। आपणी बणत आप बणा, आपे वेख वखाया। वेद पुराण ना सके कोई गा, साध सन्त ना किसे जणाया। मुग़ल शाही विच्चों मुग़ल लए उठा, आप आपणा दरस दखाया। सर्ब जीआं दा दाता इक्क बेपरवाह, दीन मज़्ब ना कोए जणाया, वरन गोत विच ना जाए आ, बंधन बंध ना कोए पाया। साची सिख्या गया समझा, साचा मार्ग एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। चार कहार हो त्यार, साचा दर सुहाईआ। उच्च पीर मीत मुरार, ठांडा सीत अख्वाईआ। करया दरस बेनज़ीर, रहिमत भरी नाम ख़ुदाईआ। सति सलामत अन्त अख़ीर,

६०१
०८

ना मरे ना जाईआ। इक्क अमाम दए ज़मानत, ज़ामन ज़ामनी तोड़ निभाईआ। दरगाह साची सच अदालत, साचा अदल कमाईआ। आपे बणे साचा सालस, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरवैर नाउँ धराईआ। चार कहार पेख, गोबिन्द ख़ुशी मनांयदा। हिन्दू मुस्लिम एका नेत्र वेख, एका दरस दखांयदा। एका लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। एका दाता दस दस्मेस, दर दरवेश इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपणा मेला आपे कर, आपे खेल खिलाईआ। आपे देवे दरस दर, दर साचा इक्क सुहाईआ। आप बंधाए आपणे लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। आपे लाए साची जड़, फल फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे घाड़ण लए घड़, घड़ण भन्नणहार वड्डी वड्याईआ। आपे साची सेजा बैठा चढ़, आपणी खाट हेठ विछाईआ। चार कहारां आपे फड़, आपणी सेवा लाईआ। आपणी सेवा आपे कर, आपणी सेव कमाईआ। शहिनशाही चुकया डर, शाह सुल्तान हथ्थ किसे ना आईआ। अन्तिम देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई पुरख करतार, आपणे रंग समाया। चार चारां कर प्यार, चौथे जुग वेख वखाया। एका भरया सच भण्डार, एका हथ्थ वरताया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, लहिणा देणा दए चुकाया। अन्तिम मेला विच संसार, लोकमात दए कराया। निरगुण आवे हो त्यार, सरगुण वेखे सहिज सुभाया। गोबिन्द करे सच प्यार, सिर पीर पीरां नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा इक्क समझाया। पीरन पीरां उच्च सुल्तान, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। अन्तिम मेला करे जहान, माणस जन्म लेखे लाईआ। लोकमात कर पछाण, कलिजुग अन्तिम भेव खुल्हाईआ। मेल मिलावा श्री भगवान, भगतन मीता इक्क रघुराईआ। आपे जाणे जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर देवे दान, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाईआ। कर किरपा हरि जाणया, हरि गुणवन्त सोभावन्त गहर गम्भीर। पारब्रह्म पुरख सुल्तानया, खेले खेल जुगा जुगन्त जुग जुग जाणे अन्त अख़ीर। हरिजन साचे करे दर परवानया, चरन प्रीती बख्शे साची धीर। चार चारे मेल मिलानया, सिँघ जरनैल गुरदास नछत्र करनैल प्याया अमृत सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछले लेखे उत्ते फेर लकीर, अग्गे पाए नाम ज़ंजीर।

✪ १८ सावण २०१६ बिक्रमी सरदारा सिँघ पिण्ड मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

आदि निरँजण हरि भगवाना, एका एक ओंकारया। जोती नूर नूर महाना, नूरो नूर डगमगा रिहा। शाहो भूप वड सुल्ताना, राज राजाना आप अख्वा रिहा। आदि जुगादी इक्क निशाना, इक्क ओंकारा आपणा आप झुला रिहा। खेले खेल दो जहानां, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणा ल्या। पारब्रह्म हरि हरि बेअन्त, एका एक अख्वाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणत, आपणी महिमा आप जणाईआ। आपे खेले खेल श्री भगवन्त, निरगुण नूर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता, एका एक ओंकारया। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। दीन दयाला गुर गोपाला सगला साथा, पारब्रह्म आपणा आप निभा रिहा। पुरख अबिनाशा खेल तमाशा, जुगा जुगन्तर वेख वखा रिहा। आपणे मण्डल पावे रासा, आप आपणी जोत डगमगा रिहा। ना कोई पृथ्मी ना आकाशा, गगन मण्डल ना कोए वखा रिहा। शाहो भूप हरि शाहो शाबाशा, सति सरूप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्ता वेस वटा ल्या। आदिन अन्ता हरि भगवाना, अकल कला अख्वाईआ। खेले खेल खेल महाना, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। सच तख्त सच सुल्ताना, हरि साचा बैठा आसण लाईआ। साचा मन्दिर सच मकाना, सचखण्ड दुआरा बंक सुहाईआ। सच घर साचे देवे माणा, थिर घर वड्डी वड्याईआ। राग अनादी एका तराना, एका शब्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण दाता एकओंकार, आदि जुगादि समाया। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, सगला संग निभाया। ना कोई दूसर होर पसार, ना कोई दर सुहाया। सचखण्ड वसे आप निरँकार, दीवा बाती इक्क जगाया। कमलापाती खेल अपार, आप आपणा खेल खिलाया। नारी कन्ता बण भतार, साची सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, निरगुण निरगुण आप कराईआ। अलक्ख निरँजण अलक्ख जैकार, आपणी आप जगाईआ। बंक सुहाए सचखण्ड दुआर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। आदि निरँजण भेव न्यार, आदि शक्ति वेस वटाईआ। करता पुरख करनी करे आपणी कार, करनहार आप हो जाईआ। अजूनी रहत निराकार, मूर्त अकाल आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी धार, आपणी धारा आप वहाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाईआ। वसणहारा उच्च महल्ल अटल मुनार, ऊँचो ऊँच आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नूर उजाला गुर गोपाला, एका रंग रंगाया। दीनां बंधप दीन दयाला, भेव अभेदा भेव छुपाया। आदि जुगादि चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना किसे जणाया। शब्द सरूपी बण दलाला, आपणा वणज कराया। खेले खेल पुरख अकाला, अकल कला वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाया। जोती नूर जोत निरँकारा, निरगुण नाउँ रखांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव अगाध बोध जणांयदा। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी साची धारा, घर साचे आप चलांयदा। कन्त कन्तूहल मीत मुरारा, नर नरैण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा सचखण्ड सच दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड वसे निरँकारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। आपे दीवा बाती हो उज्यारा, आपे डगमगाईआ। आपे सच सिँघासण सोहे बंक दुआरा, हरि बैठा आसण लाईआ। आपे दो जहानां बण सिक्दारा, आपणा हुक्म चलाईआ। आपे वरते सति वरतारा, सति सरूप वड्डी वड्याईआ। आपे करे आपणा आप ख़बरदारा, आपे लए अंगड़ाईआ। आपे बणया चोबदारा, आपे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कल धार हरि निरँकार, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। खेल खिलंदड़ा पारब्रह्म, गुण अवगुण ना कोए जणांयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोए रखांयदा। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख नाउँ धरांयदा। सति सरूपी बेड़ा बन्न्ह, साचे सागर आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका जोती जोत जगांयदा। जोती नूर पुरख अकाला, परम पुरख अख्वाईआ। आपे बणया हरि रखवाला, आपणी सेवा आप कमाईआ। निरगुण निरगुण बण दलाला, एका वणज कराईआ। इक्क उपाए साचा लाला, लाल अमोलक हीरा नाउँ धराईआ। शब्दी शब्द वज्जे ताला, ताल तलवाड़ा इक्क वखाईआ। आपणा फल लाया डाला, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। साचा शब्द सच्ची धुन्कार, घर साचे आप उपांयदा। हरि मन्दिर हरि खेल अपार, थिर घर वासी वेख वखांयदा। ना कोई दीसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। रवि ससि ना कोए उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोए सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए आकार, करोड़ तेतीस ना नज़री आंयदा। लक्ख चुरासी ना कोए पसार, त्रै गुण मेल ना कोए मिलांयदा। पंज तत्त ना कोए आधार, रक्त बूंद ना संग निभांयदा। धरत धवल ना कोए पसार, जल बिम्ब ना कोए टिकांयदा। आकाश प्रकाश ना कोए उज्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए सुहांयदा। लोआं पुरीआं ना कोए धार, ना कोई रचन रचांयदा। आदि जुगादी एकओंकार, आप आपणी कल वरतांयदा। थिर घर वसे सच

दुआर, हरि साचा सोभा पांयदा। परम पुरख हरि मीत मुरार, पारब्रह्म सगला संग निभांयदा। आदि निरँजण साचा यार, साचा दर सुहांयदा। निरगुण दीवा निरगुण बाती, निरगुण मीत कमलापाती, निरगुण साची सेज हंढांयदा। निरगुण खोलणहारा अबिनाशी करता आपणी ताकी, आपणा भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाद अनादी धुर फ़रमाना एका शब्द सुणांयदा। धुन अनादी धुर फ़रमान, हरि हरि आप अलाईआ। आपे वेखे दो जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाईआ। लोआं पुरीआं मार ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाईआ। निरगुण जोत श्री भगवान, निराकार वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म पुरख सुल्तान, सतिगुर सच्चा एका शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत हरि करतार, आपणी आप जगांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, लोकमात वेस वटांयदा। पंज तत्त कर प्यार, घर घर विच आसण लांयदा। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। एका शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद राग अलांयदा। डूँघी कन्दर कर उज्यार, जोत निरँजण आप जगांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिरांयदा। बूंद स्वांती कर प्यार, हरिजन साचे आप प्यांअदा। बज़र कपाटी खोल किवाड़, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। आत्म सेजा कर श्रृंगार, आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां करे सच प्यार, साचा मार्ग आप वखांयदा। सुरती शब्द मीत मुरार, जोड़ी जोड़ा मेल मिलांयदा। एका घर सुत्ते पैर पसार, एका रंग रंगांयदा। नारी कन्त कन्त भतार, सगला संग निभांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप अख्वांयदा। आपे सुन्न अगम्मी जाए बाहर, दिस किसे ना आंयदा। आपे वसे धूँआंधार, आकाश प्रकाश आप समांयदा। आपे सोहे सचखण्ड दुआर, थिर घर साचे आसण लांयदा। आपे अलक्ख निरँजण बोल जैकार, आपणा नाअरा लांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, अगम्म अगम्मड़ा आप करांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता दुआपर करया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, कूड़ कुड़यारा डंक वजांयदा। नाता तुट्टा सर्ब संसार, हरि का नाउँ ना कोए ध्यांअदा। पंडत पांधे गए हार, इष्ट देव ना कोए मनांयदा। मुलां शेख़ मुसायक पीर करन पुकार, दस्तगीर ना कोए मिलांयदा। वरन बरन होए खुआर, साची सरन ना कोए तकांयदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हाहाकार, घर बंक ना कोए सुहांयदा। लक्ख चुरासी दुहागण नार, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। भैण भईया ना कोए प्यार, माता पुत्तर सेज हंढांयदा। चारों कुन्ट जूठ झूठ वणज वपार, कलिजुग आपणा गढ़ सुहांयदा। पंज तत्त हाहाकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार, दिवस रैण कुरलांयदा। अग्नी तत्त रिहा साड़, अमृत जल ना कोए प्यांअदा। कलिजुग अग्नी लग्गी हाढ़, सिर हथ्थ ना कोए रखांयदा। ना कोई

सज्जण मीत मुरार, सगला संग ना कोए निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, खेले खेल श्री भगवन्त, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण मेला पुरख करतार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सरगुण चेला सोहे बंक दुआर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। दोहां विचोला शब्दी धार, नाम नामा नाउँ धराईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा उठाईआ। नौ सत पावे सार, ब्रह्म मति वेख वखाईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, सतिगुर पूरा आपणे हथ्थ उठाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा पावे सार, पुराण अठारां रिहा उठाईआ। भेख पखण्डा कूड़ कुड़यारा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। पावे वंडां हरि करतार, वंडणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, एका एकओंकारया। आदि जुगादी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर वेस वटा ल्या। आपे रामा कृष्ना बण अवतारा, आप आपणा खेल खिला ल्या। आपे ईसा मूसा कर श्रृंगारा, पंज तत्त चोला आप हंढा ल्या। आपे संग मुहम्मद चार यारा, नाता जोड़ जुड़ा ल्या। आपे वेद पुराणा लाए नाअरा, शास्त्र सिमरत आपे गा ल्या। आपे गीता ज्ञान भर भण्डारा, आपणे हथ्थीं आप वरता ल्या। आपे अञ्जील कुरानां कर त्यारा, ऐनलहक्क नाअरा ला ल्या। आपे नूर इलाही बेऐब परवरदिगारा, शाह नवाब आप अख्वा ल्या। आपे वसे अगम्मड़ी धारा, अगम्म पुरख वेस वटा ल्या। आपे बोल सच जैकारा, आपणी अलक्ख जगा ल्या। आपे खोल्ह थिर घर दुआरा, सचखण्ड इक्क सुहा ल्या। आपे शब्द धुन हो उज्यारा, आपणा रूप वटा ल्या। आपे निरगुण निरगुण कर प्यारा, आपणा हुक्म सुणा ल्या। आपे नाम आप सतारा, आपे ताल वजा ल्या। आपे देवणहारा धुर फ़रमाना, आपणा हुक्म वखा ल्या। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे हरि समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर वेस वटा ल्या। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी, आपणी कल वरताईआ। हरि पुरख निरँजण शाहो शाबाशी, शाह सुल्ताना खेल खिलाईआ। आपणी जोत आप प्रकाशी, अनभव प्रकाश रखाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशी, नूरो नूर डगमगाईआ। आपणे अन्दर आपणा करया वासी, वास निवासा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोत नूरी धार, निरगुण निराकार आपणी आप उपजाईआ। पंज तत्त तत्त कर प्यार, रत्ती रत्त समाईआ। ब्रह्म मति दए आधार ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म जोत निरँकार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। त्रैगुण मेला विच संसार, नानक नाउँ धराईआ। शब्दी डंका अपर अपार, नाम सति वजाईआ। एका गाया करता करतार, दूसर होर ना कोए वखाईआ।

वरनां बरनां तोड़ हँकार, चार वरनां बख्शे सच्ची सरनाईआ। ऊँचां नीचां कर प्यार, राउ रंकां एका धाम बहाईआ। लेखा लिख्या अगम्म अपार, हरि हरि महिमा साचा ढोला आपणी जेहवा गाईआ। पुरख अबिनाशी बणया तोला, तोले तोल बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बदलया चोला, भेव कोए ना पाईआ। आपे जाणे पर्दा ओहला, काया कप्पड़ इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अनादी एक बोला, सोहँ रसना गाईआ। सोहँ गाया हरि घर पाया, पाया हरि बेअन्त। एका दूजा भउ चुकाया, रंग रंगाया इक्क बसन्त। निज नेत्र हरि दर्शन पाया, तुट्टा गढ़ हउमे हँगत। हरि मन्दिर हरि वेस वटाया, खेले खेल जुगा जुगन्त। नारी पुरख पुरख नार आप अख्वाया, आप आपणी सेज हढंत। आपणा अंग आप कटाया, आपे ब्रह्मा विष्नूं शिव बणाए बणत। आपणी जोती नूर जगाया, आपे लक्ख चुरासी उपाए जीव जन्त। जुग जुग आपणा खेल खिलाया, खेले खेल जुगा जुगन्त। नानक पुरख अबिनाशी दर एका पाया, आदि निरँजण श्री भगवन्त। हरि भगवन्त पुरख अथाह, पारब्रह्म अख्वाईआ। लोकमात बण मलाह, नानक सिफ्त सलाहीआ। साचा मार्ग एका ला, चार वरनां गया समझाईआ। कलिजुग जीव कोई जाणे ना, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अन्तिम लेखा गया चुका, आपणा हुक्म सुणाईआ। कलिजुग लहिणा रहिण ना पा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। निहकलंक कलि जामा पा, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोती दस अवतारा, दीपक दीपक आप जगाया। घर विच घर कर उज्यारा, घर मन्दिर आप सुहाया। घर शब्द सच्ची धुन्कारा, घर राग अनादी आपे गाया। घर अमृत सर भर भण्डारा, सर अमृत आप भराया। घर पंचम सखीआं लाया अखाड़ा, घर पंचम सखीआं राग अल़ाया। घर मेला हरि साचा लाड़ा, साची सेजा बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द नूर करे रुशनाया। गोबिन्द सुत्त दुलार, पुरख अकाल मनांयदा। इक्क सुहाए सच दुआर, बंक दुआरी वेख वखांयदा। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मोह चुकांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप सुहांयदा। साची सिख्या गुर विचार, सिँघ रूप आप दरसांयदा। आप आया उत्तों वार, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे गुरमुखां सीस धरे दस्तार, सरताज आप बणांयदा। आपे लेखा लिख शृंगार, दे मति आप समझाईआ। कलिजुग अन्तिम आउणा हरि करतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लांयदा।गोबिन्द मीता मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी धाड़ उठांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े वस्सया बाहर, तत्व तत्त ना कोए जणांयदा। मात पित ना कोए प्यार, भैण भईया साक सज्जण सैण सईया, लोकमात ना कोए रखांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि भगवाना, कलिजुग अन्तिम पाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, एका हथ्थ उठाईआ। एका जोद्धा सूर बली बलवाना, मर्द मर्दाना इक्क अख्वाईआ। एका खेले खेल दो जहानां, एका लोकमात करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी बाल निधाना, भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, पंडत पांधे दिस ना आईआ। अञ्जील कुरान ना किसे पछाणा, कूके बांग दए दुहाईआ। खाणी बाणी होई हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वड विद्वाना, ज्ञान ध्यान रहे लगाईआ। दिस ना आए श्री भगवाना, गुर दर मन्दिर बैठे आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ सद मेहरवाना, मेहरवान आप अख्वाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्याना, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला सरगुण कर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। निहकलंका नाउँ निरँकार, दूसर होर ना कोए जणांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। वंडे वंडां किरपा धार, कलिजुग वंड वंडांयदा। लहिंदी दिशा कर ख्वार, आपणा हुक्म सुणांयदा। लाल मैहन्दी रंग अपार, घर घर सगन मनांयदा। अञ्जील कुरान इक्क दूजे दे नाल खहिंदी, ना कोई परे हटांयदा। आपे जाणे धार वहिंदी, आपे वेख वखांयदा। आपे लेखा जाणे अमाम मैहन्दी, सच अमाम आप हो जांयदा। कायनात रसना कहिंदी, काया गढ़ ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। निहकलंक जोत चमत्कारा, चार कुन्ट दरसाईआ। खेले खेल सिरजणहारा, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। दीप लोआं करे इक्क जैकारा, एका नाअरा लाईआ। एका नाम बण वरतारा, वरनां बरनां आप वरताईआ। सति सतिवादी भर भण्डारा, घर साचे आप टिकाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यारा, गुरसिखां झोली आप भराईआ। दोवें रक्खे तिक्खीआं धारा, मनमुखां मुख भुआईआ। दिस ना आए विच संसारा, गूढ़ी नींद सुवाईआ। त्रैगुण माया पर्दा भारा, पंज तत्त मुख छुपाईआ। जगत विकारा धूंआँधारा, रैण अन्धेरी छाईआ। मुख शरमायण रवि ससि सितारा, कालख टिक्का दुरमति लग्गी छाहीआ। गुरमुख विरला बोले सोहँ इक्क जैकारा, मिल्या पारब्रह्म ब्रह्म साचा माहीआ। लक्ख चुरासी उतरे पारा, जम की फास कटाईआ। शौह दरया ना सुट्टे कोई धारा, वहिंदे वहिण ना कोए वहाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, घर साचे मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक रिहा वजाईआ। एका डंका राउ रंका, हरि हरि आप सुणांयदा। आप सुहाए साचा बंका, बार अनका जोत जगांयदा। सो पुरख निरँजण

हथ्थ उठाए एका धनुखा, हँ ब्रह्म वेख वखांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनका, घनक पुर वासी जोत जगांयदा। जन भगतां मारे एका तनका, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। आपे फेरे मन का मणका, मन ममता मोह चुकांयदा। लेखा जाणे जननी जन का, जानणहार आप हो जांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी कढ्ढे शंका, साख्यात रूप वटांयदा। एका नाअरा एका डंका, एका हरि सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मीता एकओंकार, आदि जुगादी लै अवतार, नित नवित्त कर कर हित्त, साचा मेल मिलांयदा। हरि सतिगुर सच्चा पातशाह, जुग जुग मेलणहार। जन भगतां बण लोकमात मलाह, बेड़ा जाए तार। देवे नाम सच्ची सिफ्त सलाह, राम नामा इक्क उरधार। आप जपावे आपणा नाँ, भेव अभेदा भेव निवार। गुरमुखां पकड़े आपे बांह, हरि सज्जण मीत मुरार। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम न्यार। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन बख्शे चरन प्यार। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता वेखे हरि करतार। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, हक्क नबेड़ा विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि कल्की अवतार। कल्की अवतार खेल निराला, आपणी कल वरतांयदा। जगत जुगत चलाए आपणी चाला, भगत भगती वेख वखांयदा। साचा मन्दिर सची धर्मसाला, गुरसिख काया घर वखांयदा। पहलां तोड़ जगत जंजाला, दूजा मोह चुकांयदा। तीजा नेत्र खोल्ह गोपाला, गोबिन्द मेल मिलांयदा। चौथे घर बण रखवाला, चौथे पद समांयदा। पंचम मीता शाह कंगाला, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सुहाना, सचखण्ड डेरा लांयदा। सति पुरख निरँजण जोती नूर डगमगाना, जोती नूर इक्क रुशनांयदा। अट्ठां तत्तां कर परवाना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध मेल मिलांयदा। नौ दुआरे खोल्ह दुकाना, नौ खण्ड फेरा पांयदा। दसवें नूर श्री भगवाना, नूरो नूर नूर चमकांयदा। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे रास रचांयदा। गुरमुख साजण कर परवाना, आपणे लड़ बंधांयदा। देवे नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ीना इक्क भरांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त हरिभगत करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम चार वरनां दस्से राह सुखाला, सोहँ साचा जाप जपांयदा। एका मन्त्र पाए माला, साचा कंठ सुहांयदा। जल्वा नूर नूर जलाला, आपणा आप दरसांयदा। मूर्त अकाल अकाल अकाला, अकल कल वरतांयदा। राम राम गुर गोपाला, हरि हरि वेस वटांयदा। राग अनादी सच तराना, धुनी नाद वजांयदा। सति सतिवादी साचा गाणा, एका मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटांयदा। जोती जामा आदि निरँजण, कलिजुग अन्तिम पाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। गुरमुखां नेत्र नाम पाए अंजण, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। धुरदरगाही साचा सज्जण, साख्यात जोत

करे रुशनाईआ। जिस जन चरन धूढ़ कराए साचा मजन, अठसठ पन्ध मुकाईआ। जुगा जुगन्तर रक्खे लज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अनहद ताल नगारे वज्जण, धुन आत्मक आप सुणाईआ। जो घड़े सो सर्ब भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम नर नरेश दर दरवेश खेले खेल देस माझन, वड दाता बेपरवाहीआ। आप चलाए कलिजुग तेरा कूड़ जहाज़न, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां देवे जीआ दान, आदि ब्रह्म जुगादि ब्रह्म मध ब्रह्म पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आदि गुर नमो देवा, परम पुरख अबिनाशया। अबिनाशी करता अलक्ख अभेवा, खेले खेल खेल तमाशया। सर्ब गुणवन्ता निहकेवा, सर्ब जोत नूर प्रकाशया। आपे करे कराए आपणी सेवा, आपे घट घट रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे अमृत आत्म साचा मेवा, किसे हथ्थ ना आए पृथ्मी अकाशया।

✪ १६ सावण २०१६ बिक्रमी बली सिँघ दे घर दया होई पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ✪

इक्क इकल्ला एकओंकार, आदि जुगादि समाया। जोती नूर नूर उज्यार, पारब्रह्म नाउँ रखाया। मूर्त अकाल भेव न्यार, दीन दयाल दिस ना आया। आदि निरँजण खेल अपार, आदि शक्ति वेस वटाया। बेऐब नूर इलाही परवरदिगार, नूरो नूर डगमगाया। आदि जुगादी खेल अपार, जुग करता आप कराया। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण भेव ना राया। सचखण्ड दुआरा सोहे बंक दुआर, थिर घर बैठा आसण लाया। शाहो भूप हरि वड्डा सिक्दार, राज राजान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार, अबिनाशी करता वेस वटाया। अबिनाशी करता इक्क इकल्ला, एका रंग समांयदा। उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह आपे वसे सच महल्ला, घर साचे आसण लांयदा। आपणे दीपक आपे बला, जोती जोत डगमगांयदा। आपे फड़या आपणा पल्ला, आप आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला पुरख अकाला निरगुण रूप शाहो भूप, सति सरूप आप अख्वांयदा। सति सरूप हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणी रचन रचांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे सेज हंढांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँकार निरगुण धारा, एकओंकार रूप वटांयदा। एकओंकारा पुरख अबिनाशा, इक्क इकल्ला जोत जगाईआ। आदि जुगादी खेल तमाशा, जुग जुग वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर पावे रासा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। ना कोई

पृथ्मी ना आकाशा, गगन मण्डल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपर, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। पुरख अगम्मड़ा आदि निरँजण, एका एक अख्वांयदा। दो जहानां साचा सज्जण, घर साचे सोभा पांयदा। आपणी धूढ़ आपे करे मजन, आपणे सर सरोवर आपे नुहांयदा। आपे बणया साक सज्जण, आपे सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर सुहांयदा। घर सुहञ्जणा पुरख बिधात, एका एक सुहांयदा। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। ना कोई सँधया ना प्रभात, वेला वक्त ना कोए वखांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोए मनांयदा। ना कोई सर सरोवर मारे ठाठ, तट तीर्थ ना कोई वखांयदा। ना कोई चौदां लोक दस्से हाट, लोआं पुरीआं ना बणत बणांयदा। ब्रह्मा विष्न ना सुत्ता आपणी खाट, शंकर सांगोपांग ना सेज हंढांयदा। ना कोई त्रैगुण माया उतरे घाट, पंज तत्त ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी ना नाता आन बाट, रक्त बूंद ना कोए सुहांयदा। अबिनाशी करता एकओंकार खेले खेल बाज़ीगर नाट, आदि जुगादि स्वांगी स्वांग रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वसे साचे घर, निराकार निराधार एका नूर रहांयदा। नूर नुराना जोत निरँकारा, नूरो नूर डगमगांयदा। सचखण्ड वसे इक्क दुआरा, दूसर दर ना कोए वखांयदा। ना कोई दिसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। शाहो भूप वड्डा सिक्दारा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। पुरख अबिनाशण सच सिँघासण खेले खेल अपारा, एका हुक्मी हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, आपे झोली पांयदा। आपे दाता हरि भण्डारी, आपे झोली डांहयदा। आपे वणज करे वणजारी, आपे खेल खिलांयदा। आपे नारी कन्त भतारी, कन्त कन्तूहल आप अख्वांयदा। कर प्यारी, थिर घर साचे आसण लांयदा। खेले खेल अगम्म अपारी, भेव अभेदा भेव खुल्ह्रांयदा। साचा शब्द सुत्त दुलारी, आपणे घर उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि भगवन्ता श्री भगवान, एका रंग समांयदा। एका रंग श्री भगवान, आदि जुगादि रखाया। वसणहारा सच मकान, थिर घर बैठा आसण लाया। जोद्धा सूर बली बलवान, इक्क इकल्ला आप अख्वाया। ना कोई दीसे होर निशान, ना कोई रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मृदंग आपणा आप वजाया। साचा मृदंग नाम ढोल, थिर घर साचे आप वजांयदा। पुरख अगम्मा आपे बोल, आपणी अलक्ख जगांयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, आपे मुख वखांयदा। आपणे अन्दर जाए मौल, आपे फुल्ल महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत एका दर, साचा शब्द सुहांयदा। शब्द सच्चा हरि मेहरवान, आपणे अंक लगाईआ। दाता दानी

देवे दान, एका वस्त झोली पाईआ। पुरख अकाला धुर फ़रमान, दीन दयाला रिहा सुणाईआ। लोआं पुरीआं इक्क मकान, साची रचन रचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, आप आपणा नैण खुल्ाईआ। पावे वंड दो जहान, आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द डोरी साचा तन्द, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बंधन पाईआ। शब्द डोरी हरि सहारा, तन्दन तन्द बंधाया। निरगुण खेल अगम्म अपारा, आपणा वेख वखाया। आपे बन्ने् आपणी धारा, आपणा नाउँ धराया। विष्नूं वंसी हो उज्यारा, विश्व रूप समाया। अमृत भरया ठंडा ठारा, कँवला फुल खिलाया। आपे अन्दर आपे बाहरा, आपे नाभी मुख भवाया। आपे प्रगट होया अपर अपारा, ब्रह्म पारब्रह्म हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण वड वड्याआ। सो पुरख निरँजण दाता हरि भगवन्त, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। आपे आदि आपे अन्त, आपे मध समाईआ। आपे जाणे आपणी बणत, दूसर दिस किसे ना आईआ। आपे लेखा जाणे महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, आपणा दित्ता आपे दान, पारब्रह्म खेल महान, ब्रह्म रूप आप अख्वाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म हरि पसारा, आपणा खेल खिलांयदा। आपणी जोती हो उज्यारा, आपे डगमगांयदा। आपणा शब्द सच धुन्कारा, साचा राग सुणांयदा। आपे खोल्े बन्द किवाड़ा, आपे हट्ट खुल्ांयदा। आपे बोल सच जैकारा, आपणा नाउँ उपजांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हँ ब्रह्म वेख वखांयदा। आदि रूप खेल न्यारा, निरगुण निरगुण अंग कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त मूर्त अकाल, अकल कला अख्वांयदा। अकल कल धारी हरि निरँकारी, एका एक वड्डी वड्याईआ। जूनी रहित खेल अपारी, आपणी रचन रचाईआ। निरगुण सरगुण बण अधारी, साख्यात जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारी, शिव शंकर वेख वखाईआ। आपे वसे तिन्नां गुणां बाहरी, तत्व तत्त ना कोए रखाईआ। पंचम धर सच्ची सिक्दारी, अप तेज वाए पृथमी आकाश करी कुड़माईआ। लक्ख चुरासी खेल अपारी, हरि साची रचन रचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारी, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, निराकार निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप, सरगुण अन्दर बैठा डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। अबिनाशी करता खेल अपार, साची खेल खिलाईआ। पंज तत्त कर प्यार, नौ दर खोज खुजाईआ। डूँघी भँवरी पाए सार, काया कवरी वेख वखाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण सेव कमाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, साचा ढोला आपणा आप सुणाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। बन्द

ताकी खोल्ह किवाड़, आपणा दर खुल्हाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क वखाईआ। कागों हँस करे करतार, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। शब्द मीता एकओंकार, आपणा राग अल्हाईआ। आपे वस्सया रहे अतीता, पतित पुनीता बेपरवाहीआ। ठांडा सीता बेऐब परवरदिगार, ना मरे ना जाईआ। हस्त कीटा लए उधार, आप आपणी दया कमाईआ। अनडीठा खेल करे विच संसार, वेद कतेब भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर हरि हरि वेसा, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। खेले खेल नर नरेशा, नर नरायण नाउँ धरांयदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी दिसे केसा, मूंड मुंडाया ना रंग वखांयदा। आदि जुगादि रहे हमेशा, थिर घर बैठा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग नाउँ रक्ख निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख साजण लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। जन भगतां दर्शन देवे अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। हरिजन साचे लाए पार, एका नईआ नाम चढ़ाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। सन्त सुहेले कर उज्यार, लोकमात बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपर, अलक्ख अगोचर भेव ना आईआ। पारब्रह्म अलक्ख अलक्खणा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। लोकमात हो प्रतक्खणा, प्रतक्ख रूप आप वटाईआ। खेले खेल पुरख समरथना, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथना, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। आपणी महिमा जाणे अकथना, कथनी कथ ना सके राईआ। आपे सुणाए आपणी गथना, आपण मन्त्र नाम पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणी पूजा पाठना, आपे करे पढ़ाईआ। आपे वेखे चौदां लोक हाटना, आपे हट्टो हट्ट विकाईआ। आपे खेले खेल तीर्थ ताटणा, आपे अठसठ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी शब्द ब्रह्मादी एका राग सुणाईआ। एका राग इक्क तराना, एका हरि उपजांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग नाउँ धरांयदा। सतिजुग साचा वेस वटाणा, वेस अनेका आप करांयदा। त्रेता त्रीया नाम वखाणा, राम रामा डंक वजांयदा। द्वापर मीता श्री भगवाना, कान्हा कंसा मेट मिटांयदा। कलिजुग खेले खेल महाना, ईसा मूसा जोत जगांयदा। जोती नूर कर प्रधाना, साचा संग निभांयदा। संग मुहम्मद हो प्रधाना, आपणा डंक वजांयदा। चार यारी हरि मेहरवाना, एका कलमा नबी पढ़ांयदा। पीर दस्तगीर आप अख्वाणा, शाह हकीर नाउँ धरांयदा। मुलां शेख़ मुसायक गायण गाणा, एका नाअरा हू हू लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादि शब्द ब्रह्माद आपणा आप सुणांयदा। साचा शब्द हरि बलवान, आदि जुगादि उठाईआ। जुग जुग वेखे मार ध्यान, लोकमात लए अंगड़ाईआ। लक्ख

चुरासी कर पछाण, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। वसणहारा पंज तत्त मकान, निर्भय नाउँ रखाईआ। अकाल मूर्त खेल महान, जूनी रहित वड्डी वड्याईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, अनहद शब्द करे कुड़माईआ। साचा मीता दो जहान, एकओंकारा इक्क अख्वाईआ। अल्ला राणी वेखे मार ध्यान, नूरो नूर डगमगाईआ। एका कलमा तीस बतीसा आपे गाईआ। आपे दाता शाह सुल्तान, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। वसणहारा उच्च मकान, एका काअबा रिहा सुहाईआ। मुकामे हक्क श्री भगवान, परवरदिगार नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ चलाईआ। जुग जुग आपणा नाम धराए, हरि वड वड्डी वड्याईआ। आपणी रसना आपणी जेहवा आपणी मणीआ मंत बणाए, आपे करे पढ़ाईआ। आपे जीव आपे जन्त, आपे साध आपे सन्त, आपे सतिगुर नाउँ धराईआ। आपे खेले खेल श्री भगवन्त, जुगा जुगन्त जुग दाता बेपरवाहीआ। आपे तोड़े गढ़ हउमे हँगत, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। आपे ग़रीब निमाणे लाए अंग, आप आपणी गोद उठाईआ। आपे दाता सूरा सरबंग, सर्ब गुण आप हो जाईआ। आप वजाए सति मृदंग, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपणी भिच्छया आपे मंग, आपणी झोली पाईआ। सच दुआरा बैठा लँघ, सचखण्ड एका एक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, एका एकओंकारया। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, खेले खेल सिरजणहारया। पंज तत्त तत्त विहारा, त्तत्व तत्त ना कोए बणा रिहा। निरगुण सरगुण करे प्यारा, साचा संगम इक्क रखा ल्या। मात गर्भ तों आया बाहरा, ब्रह्म पारब्रह्म मिला ल्या। पारब्रह्म ब्रह्म एका धारा, एका रूप वटा ल्या। नानक मिल्या हरि करतारा, हरि साचा सज्जण वेख विखा ल्या। एका भरया नाम सति भण्डारा, चार वरनां आप वरता रिहा। ऊँचां नीचां एका दुआरा, एका रंग रंगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धरा ल्या। आपणा नानक नाउँ रक्ख, आपे खेल खिलाईआ। आपे अंगद हो प्रतक्ख, अमरदासे गया समाईआ। आपे राम दास अलक्खणा अलक्ख, आपे अर्जन अगाध बोध जणाईआ। आपे गुरु ग्रन्थ गुरू गुर रच, गुर इष्ट देव इक्क जणाईआ। आपे हरिगोबिन्द रक्खे पति, पीर पीरां वड वड्याईआ। हरिराए निभाया साचा सति, हरिकृष्न वड्डी वड्याईआ। गुर तेग बहादर लेखा लेख ना सके कोई लिख, लेखा लिखण विच ना आईआ। दाता दानी दस दस्मेश, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। सुत्त दुलारा रिहा वेख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण धारा कर प्रवेश, जोती जोत डगमगाईआ। शब्द सुनेहड़ा सच संदेश, कलिजुग अन्तिम रिहा सुणाईआ। लेखा चुक्के ब्रह्मा विष्न गणेश, दर दरवेश कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि मंगण भिक्ख, देवणहारा इक्क अख्वाईआ। करोड़ तत्तीसा लेखा जाए चुक्क, हरि साचा दए चुकाईआ। गण

६१४
०८

गंधर्ब पैंडा रिहा मुक्क, ना कोई संग निभाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त बूटा रिहा सुक्क, ना हरा कोई कराईआ। लक्ख चुरासी नार दुहागण सुफल होए ना कोई कुक्ख, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आदि आदि हरि कर पसारा, हर घट आसण लाईआ। जुगादि जुगादी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर नाउँ धराईआ। ब्रह्म ब्रह्मादि दए हुलारा, विष्न ब्रह्मा बैठा आप उठाईआ। शंकर करे ख़बरदारा, एका अक्ख खुल्हाईआ। करोड़ तत्तीसा दए हुलारा, सुरपति इन्द नाल रलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पार किनारा, वरभण्ड करे रुशनाईआ। नव खण्ड फड़े तेज़ कटारा, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। सत्तां दीपां पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग मेटे अन्ध अँध्यारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां करे ख़ुआरा, तख़्त ताज ना कोए हंढाईआ। दर दर घर घर कर भिखारा, मंगण भिख भिच्छया कोए ना पाईआ। ऊँचां नीचां पार किनारा, राउ रंकां एका धाम बहाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा लाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणे एका धारा, एका रंग रंगाईआ। हिन्दू सिख ईसाई मुस्लिम कर प्यारा, आपणा लड़ फड़ाईआ। आपे वसे मन्दिर गुरुदुआरा, मक्का काअबा आपे फेरा पाईआ। आपे मड्ड शिवदवाला हो उज्यारा, आपे अठसठ जोत करे रुशनाईआ। आपे गंगा गोदावरी तट किनारा, जमना सुरस्ती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी अरथी आप उठाईआ। आपे पुरख पुरख सुल्तान, आपे राजन वड वड राज्जया। आपे वाली दो जहान, आपे हरि ग़रीब निवाज़िआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव वेखे मार ध्यान, आपे लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भाज्जया। आप उठाए हथ्थ निशान, आपे चढ़या शाहसवार साचे ताज्जया। आपे लक्ख चुरासी पाए एका आण, प्रगट होए देस माज्झया। देवणहारा धुर फ़रमान, हरि भगवान श्री नवाब्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, जन भगतां रक्खे लाज्जया। भगतन मीता एकओंकार, अकल कला अख्वाईआ। जुग जुग मात लए अवतार, हरिजन साचे लए तराईआ। फड़ फड़ बाहों करे पार, भव सागर वेख वखाईआ। दूती दुष्ट कर ख़ुआर, जूठ झूठ मेट मिटाईआ। एका खड़ग खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए सार, लोआं पुरीआं गगन पतालां वेख वखाईआ। दुहागण नार रंड ना दिसे कलिजुग तेरी अन्तिम वार, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। निहकलंक वज्जा डंक, चार कुन्ट जैकारा। आप उठाए राउ रंक, शाह सुल्ताना दए हुलारा। गुरमुखां सुहाए साचा बंक, साचा मन्दिर गुरुदुआरा। हरिजन लेखे लाए जिउँ जन जनक, जन जननी पार किनारा। जोती शब्दी लाए

तनक, त्रैगुण वस्सया बाहरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अवतारा। इक्क अवतार इक्क गुर, गुर सतिगुर इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे लहिणा देणा धुर, धुर दरगाह वेख वखाईआ। भेव ना पाए त्रै त्रै जुड़, कोटी सुर गण गंधर्ब ना कोए गाईआ। जगत विद्या ना लए पढ़, हरि भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्त अन्त भगवन्त हरि सन्त लए मिलाईआ। सन्तन मेला सच दुआर, हरि साचा सच करांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। दूई द्वैती देवे मार, माया ममता मोह मिटांयदा। तीजा नेत्र इक्क उग्घाड़, आपणा दरस दिखांयदा। चौथे पद देवे वाड़, चौथा घर सुहांयदा। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम साचा राग अल़ांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहार, थिर घर साचा इक्क वसांयदा। सति पुरख निरँजण हो उज्यार, दीपक जोती डगमगांयदा। अट्ठां तत्तां कर प्यार, हरिजन मेल मिलांयदा। नौ दुआरे वस्सया बाहर, नौ खण्ड फोल फुलांयदा। दस्म दुआरी बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लांहयदा। हरिजन साचा मीत मुरार, आपे मार्ग पांयदा। सुरती शब्द शब्द प्यार, सुरत सवाणी मेल मिलांयदा। साचा हाणी कर प्यार, आपणे अंग लगांयदा। साचा आत्म सेजा मीत मुरार, साचा बंक सुहांयदा। एका सेजा सुत्ते पैर पसार, लोकमात ना कोए उठांयदा। निरगुण मिल्या निरगुण धार, जोती जोत डगमगांयदा। सज्जण सुहेला मीत मुरार, आपणी गोद उठांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे वस्सया अन्ध अँध्यार, आकाश प्रकाश आप वखांयदा। सुन अगम्मी अलक्ख निरँजण खेल अपार, सुन्न समाधी डेरा ढांयदा। आपे निरगुण जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क जगांयदा। कमलापाती खेल अपार, दिस किसे ना आंयदा। इक्क सुहाए सच दुआर, थिर घर बैठा आसण लांयदा। सच सिँघासण हरि करतार, रूप अनूप आप दरसांयदा। अलक्ख निरँजण आपणी बोल जैकार, इक्क अलक्ख जगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, करनी करता आप करांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, जोती जामा भेख वटांयदा। गोबिन्द मीता मीत मुरार, सज्जण सैण अख्वांयदा। मन्दिर मसीता वस्सया बाहर, गुरमुख काया मन्दिर डेरा लांयदा। अचरज रीता साची धार, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। मनमुख जीवां करे ख्वार, दूती दुष्ट रहिण ना पांयदा। गुरमुख साजण लए उभार, चारे वरनां वेख वखांयदा। ऊँचां नीचां इक्क प्यार, एका सरन बहांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सतिगुर साचा इक्क अख्वांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अछल अछेदा अछल अछल्ल करांयदा। अछल अछल्ल श्री भगवाना, भेव अभेद छुपाया। जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना, आपणा नाउँ धराया। आपे गोबिन्द खेल महाना, आपे खड़ग खण्डा खड़काया। आपे चिल्ला तीर कमाना,

आप कमन्द खचाया। आपे मारे नौ खण्ड पृथ्मी इक्क निशाना, सत्तां दीपां वेख वखाया। आपे शाह आप सुल्ताना, प्रधान मन्त्री आप बण जाया। आपे मेटे राज राजाना, आपे रंकां राज कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक हरि सूरबीर, एका एकओंकारया। शब्द निराला फड़या तीर, लोआं पुरीआं पावे सारया। नौ खण्ड पृथ्मी रिहा चीर, दो जहानां पार किनारया। लक्ख चुरासी कोए ना बन्ने धीर, धीरज धरवास ना कोए रखा रिहा। शाह सुल्तानां नेत्र वगे नीर, पीर फ़कीर ना कोए तरा ल्या। पंडत पांधे लथ्थे चीर, तिलक ललाट ना कोए वखा ल्या। मुलां शेख़ मुसायक पीर हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, आप आपणे भार दबा ल्या। जन भगतां अन्तिम कट्टे भीड़, आप आपणा दरस वखा ल्या। नानक निरगुण खेल अखीर, गोबिन्द साची सेव कमा ल्या। पारब्रह्म वड पीरन पीर, आप आपणा वेस वटा ल्या। गुरमुखां देवे साचा सीर, अमृत धारा निझर मुख चुआ ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका हुक्म सुणा ल्या। एका हुक्म धुर फ़रमान, हरि साचा सच जणाईआ। दो जहानां एका आण, एका बंधन पाईआ। शाहो भूप इक्क सुल्तान, नौ खण्ड राज कमाईआ। मन मति करे जगत वैरान, खेले खेल बेपरवाहीआ। जूझ झूठ पंज शैतान, पंच विकारा दए खपाईआ। सच सुच्च कर प्रधान, साची सिख्या इक्क समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे गाण, एका कलमा आप पढ़ाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी रसना गाईआ। सतिजुग साचे कर प्रधान, एका रंगन रंग रंगाईआ। जोद्धा सूरा श्री भगवान, एकओंकारा एका एक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार खेल अपार, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, हरी हरि आप करांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द नाउँ धरांयदा। आपे सतिगुर सज्जण सुहेला, साचे मार्ग लांयदा। जुग जुग आपे जाणे आपणा वेला, वार थित घड़ी ना कोए लिखांयदा। आपे वसे रंग नवेला, आपे घर घर विच मेल मिलांयदा। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेला, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। आपे जुगा जुगन्त हरि भगवन्त हरिभगतन चाढ़े साचा तेला, साचा सगन मनांयदा। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म, अचरज खेल आपे खेला, ब्रह्मा वेता भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकओंकारा दीन दयाला दयानिध गहर गम्भीर सागर गुणी गहीर आप अख्वांयदा। गुणी गहीरा गहर गम्भीरा, एका एक ओंकारया। जन भगतां बख्शे अमृत आत्म सीरा, निर्मल धारा मुख चुआ रिहा। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़ा, हउमे रोग गंवा ल्या। चार वरन बणाए भैणां भाई एका रंग रंगाए गूढ़ा, उतर कदे ना जा रिहा। बीस बीसा हरि जगदीशा नौ खण्ड पृथ्मी बख्शे चरन धूढ़ा, मस्तक टिक्का जोत ललाटी

एका डगमगा रिहा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जो जन सरनाई आ गया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ा बंधन तोड़ तुड़ा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख तेरा काया मन्दिर हरि मन्दिर आप सुहा ल्या। काया मन्दिर सच टिकाणा, हरि साचा सच सुहांयदा। शब्द सरूपी इक्क बबाना, एका गुर वखांयदा। गुरमुखां देवे वंञ मुहाणा, साचा चप्पू नाम लगांयदा। साची सेवा सेव कमाना, सेवक आपणा नाउँ धरांयदा। अद्धविचकारे गाए गाणा, अनहद राग सुणांयदा। अमृत जल वखाए ठंडा पाणा, एका मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्धन सरधन आपे वेख वखांयदा। निर्धन मीता आप करतार, पतित पापी पार करांयदा। सरधन मेला विच संसार, घर साचे मेल मिलांयदा। दोहां विचोला शब्द प्यार, एका बंधन पांयदा। घट मन्दिर साजण हो त्यार, आपणा दरस दखांयदा। अस्व घोड़ा कर त्यार, सोलां कलीआं आसण पांयदा। नीले वाला शाह सवार, नीला नीली धारों पार करांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, सतिगुर पूरा हथ्थ उठांयदा। कलिजुग अन्तिम करे ख़ुआर, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। सतिजुग साची बन्हे धार, साचा मार्ग लांयदा। इक्क वखाए सच दरबार, दर दरवाज़ा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतार जोत निरँकार, शब्द खण्डा तेज़ कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा।

✪ पहली भाद्रों २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ✪

आदि जुगादी एकओंकार, अकल कला कलधारीआ। खेले खेल अगम्म अपार, निरगुण जोत नूर अपारीआ। अलक्ख निरँजण भेव न्यार, रूप अनूप आप अख्वा रिहा। वसणहारा धाम न्यार, भेव अभेदा भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। खेलणहारा हरि भगवान, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती दीपक जोत नुरान, नूरो नूर डगमगांयदा। एका वसे सच मकान, घर साचा इक्क सुहांयदा। एका पुरख इक्क सुल्तान, एका नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, एका रूप समाईआ। खेले खेल श्री भगवन्ता, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आप बणाए आपणी बणता, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे पुरख नारी कन्ता, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आप अख्वाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, एकओंकार समांयदा।

वसणहारा सच महल्ला, एका घर वखांयदा। नेहचल धाम उच्च अटला, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण आसण आपे मल्ला, सच सिँघासण आप सुहांयदा। आपे फड़या आपणा पल्ला, आपे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर डगमगांयदा। निरगुण जोत जोत अकाला, एका रंग समाया। आदि जुगादी दीन दयाला, भेव कोए ना पाया। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ रखाया। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाला, साचा मन्दिर आप सुहाया। आदि शक्ती जोत ज्वाला, एका डगमगाया। नूरो नूर ख़ुदा तुआला, बेऐब परवरदिगार आप अख्वाया। आपे खेले खेल निराला, खेलणहार दिस ना आया। चले चलाए आपणी चाला, चाल निराली आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ रखाया। आदि निरँजण नाउँ रक्ख, हरि करता करनी कमांयदा। आपे निरगुण हो प्रतक्ख, आपे डगमगांयदा। आपणे आपणे दर जगाए अलक्ख, अलक्ख अलक्खणा आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणा पक्ख, दूजा दर ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशा, एका रंग समाईआ। आपे खेले खेल तमाशा, ना कोई दूसर संग जणाईआ। आपे मण्डल पावे रासा, आपे रचन रचाईआ। आपे शाहो भूप शाह शाबाशा, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप हो जाईआ। आपे जोती नूर उजाला, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपे खेले खेल निराला, खेलणहार बेपरवाहीआ। आप वजाए आपणा ताला, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी घाले आपे घाला, आपे घोली घोल घुंमाईआ। आपे जाणे आपणी माला, आपे फेरा फराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाए पारब्रह्म, भेव अभेव छुपाया। मात गर्भ ना पए जम्म, पिता पूत ना कोए रखाया। ना कोई पवण स्वासी दम, नेत्र नीर ना कोए वहाया। हड्ड मास ना नाड़ी चम्म, रक्त बूंद ना कोए धराया। वसणहारा धाम अगम्म, अगम्मड़ी खेल खिलाया। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, आलस निन्दरा विच ना आया। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया। आदि जुगादी ना कोई देवे डन्न, ना कोई हुक्मी हुक्म फिराया। ना किसे वसेरा छप्परी छन्न, चार दीवार ना कोए बणाया। ना कोई माल दिसे धन्न, वणज वणजारा ना कोए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाया। आपे खेले खेल पुरख समरथ, हरि साचे वड वड्याईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। आपे जाणे महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आपे जाणे आपणी वथ्थ, आपणे मन्दिर आप टिकाईआ। आपे बन्ने आपणी गड्ड, आपे भार उठाईआ। आपे गेड़े आपणी लड्ड, गेड़ा

आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी हरि सुल्ताना, एका एक अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ श्री भगवाना, निरगुण नूर डगमगांयदा। ना कोई मन्दिर ना मकाना, ना कोई बणत बणांयदा। खेले खेल दो जहाना, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जुगत धरांयदा। आपणी जुगत आपे धर, आपे वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कर, करनी करता कर्म कमाईआ। आपणे अन्दर आपे वड़, आपे वेख वखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई त्तत्व तत्त जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, जूनी रहित वड वड्याईआ। जूनी रहित हरि करतारा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल अपारा, हरि साचा आप करांयदा। करे कराए करनेहारा, करता पुरख नाउँ धरांयदा। एका वसे सच्चे घर बाहरा, थिर घर साचे आसण लांयदा। सचखण्ड सोहे बंक दुआरा, जोती जोत डगमगांयदा। सच सिँघासण अपर अपारा, निरगुण आसण लांयदा। ना कोई दिसे चोबदारा, ना कोई सेवक सेव कमांयदा। ना कोई शाह सुल्तान दिसे सिक्दारा, राज जोग ना कोए वखांयदा। ना कोई रवि ससि सूरज चन्न सतारा, मण्डल मण्डप ना कोए सुहांयदा। ना कोई गुर पीर अवतारा, साध सन्त ना कोए अख्वांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई सहारा, त्रैगुण ना झोली पांयदा। पंज तत्त ना कोए भण्डारा, त्रै त्रै ना मेल मिलांयदा। दस पंज ना कोए विहारा, अट्ठ तत्त ना कोए वखांयदा। ना कोई खोल्ह नौ दर किवाड़ा, ना कोई रूप धरांयदा। ना कोई शब्दी शब्द जैकारा, रसना जेहवा ना कोए हिलांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, गुण अवगुण ना कोए वखांयदा। ना कोई नारी कन्त भतारा, ना कोई सेज हंढांयदा। ना कोई ब्रह्मा वेद उचारा, ना कोई मुख सलांहयदा। ना कोई विष्नूं कँवला धारा, मुक्खी मुख धरांयदा। ना कोई शंकर करे सँघारा, ना कोई मेट मिटांयदा। आदि जुगादी एकओंकारा, एका घर वसांयदा। थिर घर बैठ सच्ची सरकारा, घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। आपे जोत नूर उज्यारा, आपे अंक समाईआ। आपे खेले खेल अपारा, खेलणहार बेपरवाहीआ। आपे अगम्म अलक्ख वसे वसणहारा, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे सचखण्ड खोल्ह किवाड़ा, आप आपणा दर सुहाईआ। आपे बैठा साचा लाड़ा, आपे सोभा पाईआ। आपे वेखे इक्क अखाड़ा, आपे बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकओंकारा, नूरो नूर नूर उज्यारा, एका बोल एका पोल एका होल वखाईआ। एका सोल हरि निरँकार, एका नूर जगांयदा। एका पोल कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचांयदा। चारों कुन्ट दए हुलार, दहि दिशा आप फिरांयदा। आपणी कर आप विचार, आपे खेल खिलांयदा।

आपे बन्ने आपणी धार, आपे रचन रचांयदा। आपे वेखे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आंयदा। आपणे अन्दर लाए पाड़, एका दर खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप करांयदा। एका सोल हरि प्रकाशा, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। आपणे पोल पाए रासा, अनभोल बेपरवाहीआ। आपणी होल खोल्ह करे रासा, एका किरन बाहर कढाईआ। एका किरन पावे रासा, रास मण्डल दए रचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पूरन आसा, पूरी इच्छया दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एक एक आप अख्वाईआ। एका एक इक्क टिकाणा, एका घर वसांयदा। एका भूप इक्क सुल्ताना, एका राज कमांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका दर सुहांयदा। एका रूप श्री भगवाना, रूप अनूप आप वखांयदा। एका राग इक्क तराना, एका गीत अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल हरि भगवाना, आपणी बणत बणाईआ। आपणी किरन कर परवाना, आपे दए सलाहीआ। आपणा मार्ग आप वखाणा, आपे दए समझाईआ। आपे चतुर सुघड़ स्याणा, दानी दाना आप हो जाईआ। आप होया जाणी जाणा, जानणहार नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला बेपरवाह, आपे जाणे सच सलाह सिफ्त सलाहीआ। सच सलाह साचे मन्दिर, हरि आपणी आप रखांयदा। ना कोई दूजा वड़े अन्दर, ना कोई संग निभांयदा। ना कोई दीसे होर कन्दर, ना कोई रचन वखांयदा। ना कोई लाए आपणा जन्दर, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर आपे देवे वर, नर नरायण आप हो आंयदा। आपे हरि हरि अवतारा, आपे रंग समाया। आपे मीत मीत मुरारा, आपे मेल मिलाया। आपे बंक बंक दुआरा, बंक दुआरा आप सुहाया। आपे देवणहारा सच सहारा, आपे साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप खुल्हाया। आपणा दर हरि निरँकार, एका एक खुल्हाईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणी वंड वंडाईआ। एका किरन कर त्यार, आपणा अंग कटाईआ। इक्क इक्क इक्क कर विचार, एका रंग समाईआ। एका विष्न रूप करतार, आपणा आप वटाईआ। एका ब्रह्म कर विचार, पारब्रह्म नाउँ धराईआ। एका शंकर बन्ने धार, साख्यात बेपरवाहीआ। एका किरन एका हिस्सा इक्क तन देवे वाड़, त्रै त्रै मूल चुकाईआ। एका शब्द राग सच्ची धुन्कार, सच सतार हिलाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा हुक्म जणाईआ। आपे पाए आपणी आण, वड दाता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपणा मेल, आपे मेल मिलाईआ। मेल मिलावा करनी करता कर, आपणी कल वरतांयदा। आपणी जोत आपे वर, आपे जोती नाउँ रखांयदा। आप चुकाए आपणा डर, आपे भय

मुकांयदा। आपे विष्नूं अन्दर वड़, आपणी धार बनांयदा। आपे ब्रह्मा गया खड़, आपे वेख वखांयदा। आपे शंकर फड़ाया लड़, आपणे पौड़े आप चढ़ांयदा। आप आदि शक्ति भवानी लाए जड़, घर साचा आप सुहांयदा। जुगा जुगन्तर वेस धर, दर दरवेशा नाउँ धरांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, जीवत मरन ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा खेल खिलाड़ी, एका एक अख्वाईआ। आदि जुगादि जोत निरँकारी, निरगुण नाउँ वटाईआ। शाहो भूप सुल्तान वड सिक्दारी, साचा संग आप निभाईआ। आपे जाणे आपणी कारी, आपे किरत कमाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव दए आधारी, आपे जोत जोत समाईआ। आपे वसे धाम न्यारी, अडोल अडुल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप अख्वाईआ। आपे दाता दर भण्डारी, आपे हरि वरतांयदा। आपे खोल्ह सच दुआरी, साची वस्त आप विकांयदा। आपे शब्द नाम जैकारी, आपे राग अल्हांयदा। आपे ढोला गावे वड संसारी, आपे सिफ्त सलांहयदा। आपे वेस अनेका करे अकल कलधारी, कुलवन्ता आप अख्वांयदा। आपे निरगुण जोत उज्यारी, आपे सरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप अख्वांयदा। जोती नूर निराकार, निरगुण वड वड्याईआ। आपणा खेल आपे कर, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव फड़ाया लड़, आप आपणा लड़ बंधाईआ। आप अन्दर बैठा वड़, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक नाम शब्द निशान, दो जहान आपणा आप झुलाईआ। आपे निरगुण हरि भगवाना, आपे जोत जगांयदा। आपे जोत विष्न महाना, आपे वेस धरांयदा। आपे ब्रह्मा देवे माणा, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे शंकर मेल मिलाणा, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे होए वड प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाना, आपे हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या पाए भिच्छया, साची झोली आप भरांयदा। एका ब्रह्म कर उज्यारा, हरि हरि बणत बणाईआ। दीवा बाती खेल अपारा, आपणा आप जगाईआ। दिवस रैण रहे उज्यारा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपणा शब्द सच्ची धुन्कारा, राग अनादी इक्क सुणाईआ। एका किरन सच बीठलो अपार, सारंगधर भगवान आपणी आप उपाईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान, कवण दाता बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी नौजवान, बिरध बाल ना कोए वखाईआ। अग्गे खड़े श्री भगवान, जोती नूर दरस दिखाईआ। चरन कँवल इक्क ध्यान, एका मति समझाईआ। पूत सपूते खोल्ह दुकान, तेरा हट्ट विकाईआ। खेले खेल दो जहान, लोकमात दए वड्याईआ। त्रैगुण माया

कर प्रधान, तेरे पल्ले पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, अनाद अनादी ताल वजाईआ। वज्जे नादी ताल, हरि वजांयदा। खेले खेल दीन दयाल, भेव कोए ना पांयदा। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखांयदा। ब्रह्मा वेता करे कराए प्रितपाल, प्रितपालक आप हो जांयदा। तेरे फल लगाए डाल, लक्ख चुरासी फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। तेरा रूप काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, साचे मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल कर, करनी करता कर्म कमांयदा। ब्रह्मा वेता दर्शन पा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना पांयदा। तेरी सिफ्त तेरी सलाह, तेरा तेरी गांयदा। तेरा बणया जगत मलाह, तेरा मार्ग लांयदा। तेरा नाम नाम धरा, नाम नामा वणज वखांयदा। पूरन इच्छया काम करा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आपे लांयदा। सेवक सेवा साची ला, हरि हरि शब्द जणाईआ। ब्रह्मा वेता नैण रिहा उठा, एका अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण दाता रिहा समझा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। तेरा रथ दिआं चला, चारों कुन्ट आप फिराईआ। तेरी अंस उपा, साचा बंस सुहाईआ। लक्ख चुरासी बणत बणा, बावन मुख छुपाईआ। राग रागनी रहे गा, छत्ती राग भेव ना आईआ। सोभावन्त बेपरवाह, घर बैठा वेख वखाईआ। वेख वखाए साचा थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाईआ। मण्डल मण्डप दए सुहा, रवि ससि करे रुशनाईआ। गहर गम्भीर डेरा ला, अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाईआ। सुन्न अगम्मी वेख वखा, सुन्न समाध आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी वेस वटा, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार करे कुड़माईआ। पंज तत्त मेला मेल मिला, त्रैगुण वज्जे वधाईआ। मन मति बुध विच टिका, आपे वेख वखाईआ। नौ दुआरे खोल्ह खुल्हा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। दसवे डेरा आपे ला, निरगुण जोत नूर करे रुशनाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सर्ब दए जणा, अनभव प्रकाश कराईआ। अकाल मूर्त वेख वखा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी इक्क वजा, अनहद ताल वजाईआ। डूँघी कँवरी पार करा, आपणे मार्ग लाईआ। सच सुनेहड़ा दए सुणा, एका ढोला गाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्या, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। पंच विकारा दए मिटा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। आसा तृष्ना दए गंवा, सांतक सति सति वरताईआ। आपणी बूझ दए बुझा, सच बुझारत एका पाईआ। ब्रह्मा वेता मेल मिला, ब्रह्म ब्रह्म वेख वखाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म चढ़या चाअ, वेले अन्त वज्जी वधाईआ। मिल्या दाता बेपरवाह, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, आपणे कंध उठाईआ। करे कराए सच न्याँ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सतिजुग वेखे साचा थाँ, बावन भेखाधारी भेख वटाईआ। राम

रमईया आप अख्वा, त्रेते त्रैगुण लेखे लाईआ। कान्हा कंसा जोत जगा, सहँस सहँसा मेट मिटाईआ। नानक गोबिन्द खेल खिला, आप आपणा हुक्म चलाईआ। ईसा मूसा वेख वखा, काला सूसा तन छुहाईआ। संग मुहम्मद चार यार एका रंग रंगा, एका पल्लू रिहा फड़ाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, ओअँ रूप आप हो जाईआ। नमो देव आप अख्वा, वास्तक वेस रिहा वटाईआ। आपे विष्नूं पूज पुजा, चतुर्भुज आप हो जाईआ। आपे ब्रह्मा ब्रह्म समा, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपे शंकर लेख लिखा, आपे दए मिटाईआ। आपे वेदां वेद जणा, आपे चार मुख सलाहीआ। आपे शास्त्र सिमरत रिहा समा, पुराण पुराणी आपे गाईआ। आपे गीता ज्ञान रिहा दृढ़ा, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। आपे अञ्जील कुराना रहे अला, अली अल्ला आप हो जाईआ। आपे खाणी बाणी डेरा ला, नानक गोबिन्द जोत समाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, भेव कोए ना पाईआ। आदि जुगादी रहे गा, जुग जुग रहे सलाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव सीस निवा, दोए जोड़ पड़न सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखा, नौ पंज करे लड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटा, चौदां तबकां खेल खिलाईआ। चौदां तबकां भेव चुका, भाण्डा भरम दए भनाईआ। नौ दुआरे मुहम्मद गया गा, पंज तत्त नाल रलाईआ। चौदां तबक काया विच मिला, काया गढ़ कोट सुहाईआ। देवे सुनेहड़ा बेपरवाह, इज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील संग रलाईआ। मुलां शेख़ मुसायक पीर भेव ना सके कोई पा, कुतब गौंस ना करे जणाईआ। अल्ला हू नाअरा रहे ला, हू हू कूके ख़लक ख़ुदाईआ। बिस्मिल होए ना कोई गया समा, बिस्मिल दिस किसे ना आईआ। ऐनलहक्क ना नाम ल्या रखा, हक्क हकीकत ना खोज खुजाईआ। मुकामे हक्क इक्क ख़ुदा, बैठा बेपरवाहीआ। संग मुहम्मद चार यारी रिहा समझा, चौदां चौदां वेख वखाईआ। चौदां दाता आप अख्वा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। पंज तत्त विकारा दए गंवा, आप आपणी रचन रचाईआ। बाल अञ्याणे अग्गे ला, एका मति समझाईआ। ब्रह्म मति हरि वेख विखा, गुरमति करे पढ़ाईआ। सिँघ मनजीता दए सलाह, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिला, साची बणत बणाईआ। सिँघ जगदीशा सेवा ला, साची ख़ुशी मनाईआ। नौ दुआरे खोल्ह् खुल्ह्, साची वंड वंडाईआ। नौ पंज चौदां एका धाम बहा, चौदां तबक दए वखाईआ। गुरसिख कोई भुल्ले ना, वड दाता हरि बेपरवाहीआ। सच सिँघासण आसण ला, थिर घर वासन वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी जोत जगा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। पृथ्मी आकाश फेरा पा, गगन मण्डल रिहा फिराईआ। ब्रह्मा विष्न रिहा उठा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। शंकर तेरी सेवा ला, साची मति रिहा समझाईआ। करोड़ तेतीसा रहिणा ना, सुरपति राजा दए दुहाईआ। गण गंधर्ब ना कोए रिहा गा, किन्नर यच्छप ना कोए गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेस वटा, सत्तां दीपां

६२५
०८

करे रुशनाईआ। एकओंकारा एका एक ख़ुदा, ख़ालक ख़लक आप हो जाईआ। एका एक राम रहीम आप अख्वा, एका नूर करे रुशनाईआ। एका कान्हा बंसरी डंक वजा, एका गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। एका खाणी बाणी भेव खुल्हा, अञ्जील कुराना एका गाईआ। एका गुर पीर अवतार साध सन्त लए बणा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर रक्खे थाउँ थाँ, थान थनंतर आप सुहाईआ। आपे जाणे आपणा मन्त्र, ब्रह्मा मनवन्तर भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सोल एका पोल एका होल वखाईआ। एका होल किरन उजाला, हरि हरि मुख खुल्हांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव निराला, वेद कतेब ना कोए जणांयदा। इक्क इकल्ला निराकार निरगुण धार, नूरो नूर नूर डगमगांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, चौथे जुग वेस वटांयदा। चौथे जुग चौथी धारी, हरि हरि चाल चलाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटे संसारी, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। ना कोई दीसे जीव हँकारी, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। मेट मिटाए पंच विकारी, पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। शाह सुल्तानां करे खुआरी, राज राजान ना कोए अख्वाईआ। नौ सत जोत निरँकारी, एका डंक वजाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमान सच्ची सिक्दारी, एका मार्ग लाईआ। चार वरन सोहन इक्क दुआरी, एका बंक सुहाईआ। एका खण्डा तेज़ कटारी, एका नाम हथ्थ उठाईआ। वरते वरतावे आपणी वारी, जुग जुग वेस अनेक कराईआ। कलिजुग कूके रोवे ज़ारो ज़ारी, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारी, सच ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। साध सन्त सुरत नार होई विभचारी, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। आत्म ब्रह्म ना बन्न्हे कोई धारी, ब्रह्म ब्रह्म ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग रचना आप रचाईआ। जुग रचना हरि आपे रच, आपे वेख वखांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न सच्च, आपे सच समांयदा। आपे तोलणहारा कच, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। आपे भेख पखण्डा नौ दुआरे रिहा नच्च, आपे सच घर आसण लांयदा। आपे त्रैगुण माया अग्नी रिहा मच्च, आपे अमृत धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका ब्रह्म सर्ब समझांयदा। ब्रह्म पसारा हरि अवतारा, ब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। ब्रह्म शब्द भर भण्डारा, ब्रह्म झोली पाईआ। ब्रह्म रूप निरगुण धारा, ब्रह्म निरगुण विच समाईआ। निरगुण ब्रह्म हो उज्यारा, सरगुण करे कुड़माईआ। सरगुण ब्रह्म पंज तत्त प्यारा, काया चोला इक्क हंढाईआ। बूंद रक्त हड्ड मास नाड़ी गारा, लहू मिझ आप उपाईआ। अन्दर वड़ करे खेल अपारा, दिस किसे ना आईआ। जुग जुग हरिजन मेले विच संसारा, जन भगतां दरस दखाईआ। हरिजन उतरे पार किनारा, मँझधार ना कोए रढ़ाईआ। कलिजुग डूँघा सागर दिसे गारा, गहर गम्भीर इक्क अख्वाईआ। अन्तिम आया अन्त किनारा, अन्त अन्त भगवन्त वेख वखाईआ। एका

मंत नाम जैकारा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण बण वणजारा, साचा वणज कराईआ। हँ ब्रह्म इक्क उधारा, एका दर सुहाईआ। सोहँ रूप आप करतारा, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपारा, अटल महल्ल बैठा आसण लाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, आप उपजाए आपे मेट मिटाए, आपणा गेड़ा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बरन रखाईआ। वरन गोत ना कोई प्यारा, ना कोई वंड वंडांयदा। चौथे जुग करे पार किनारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सतिजुग बन्ने साची धारा, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। एका ब्रह्म रूप अपारा, हर घट आप दरसांयदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। काया अन्दर डूँघी गारा, आपे पार करांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत जल थल फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां वेखे इक्क अखाड़ा, जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। गुरमुखां करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, आप आपणी दया कमांयदा। हरि साजण साचा लाड़ा, दर घर साचे आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चारे वरन देवे वर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए जणांयदा। चार वरन एका नाता, एका जोड़ जुड़ाईआ। खेले खेल पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। उत्तम रक्खी आपणी ज़ाता, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। सो पुरख निरँजण साची गाथा, हँ ब्रह्म समझाईआ। आप चलाए आपणा रथा, जुग जुग बण रथवाहीआ। आपे होए त्रिलोकी नाथा, अवण गवण त्रैभवण आप समाईआ। आपे रखे सगला साथा, ब्रह्मा विष्न शिव संग निभाईआ। आपे पूजा आपे पाठा, इष्ट देव गुर आप हो जाईआ। आपे सर सरोवर मारे ठाठा, तीर्थ तट आप सुहाईआ। आपे जन भगतां पिछे फिरे नाठा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाटा, कूड़ा पन्ध दए मुकाईआ। हरिजन पूरा करे घाटा, मनमुखां संग तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम मृदंग वजाईआ। नाम मृदंगा इक्क वजावणा, हरि साचा हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठावणा, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। लोकमात मार्ग लावणा, नव सत फेरा आपे पांयदा। लक्ख चुरासी खेल खिलावणा, घट घट अन्दर फोल फुलांयदा। घनक पुर वासी नाम धरावणा। जम की फाँसी गुरमुखां आप कटावणा। मदिरा मासी दर दुरकावणा। साची दरगाह ना कोई ज़ामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप फड़ाए आपणा दामना। गुरसिख दामन साचा फड़, हरि साचा आप फड़ांयदा। साचे पौड़े जाणा चढ़, साचा मार्ग एका लांयदा। आपणे अन्दर जाणा वड़, नौ दुआरे पार करांयदा। पंच विकार ना सके अग्गे अड़, एका खण्डा

नाम उठांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। आपणी चोटी बैठा चढ़, कलिजुग चोटी अन्त मुंनांयदा। कोटन कोटी रहे लड़, हरि का दरस कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चेतन आपे जड़, आपे भाण्डे लए घड़, आपे अन्दर बहे वड़, आपे ब्रह्म फड़ाए लड़, आपे पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, आपे जाणे नर नरेशा, जन भगत दुआरे दर दरवेशा, ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, आपे वेख वखांयदा। आप ब्रह्मा विष्न महेष, गणपति गणेश आप हो जाईआ। आपे होए रिखी केश, जगत गोवर्धन आप उठाईआ। आपे राम रामा नर नरेश, रावन गढ़ तुड़ाईआ। आपे नानक गोबिन्द दस दस्मेश, एका रूप वटाईआ। आपे आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। पंज तत्त हरि कर कर वेस, निरगुण सरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। भेव ना राया हरि रघुराया, हरि हरि वेस वटाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया खेल खिलाया, खेल खिलारी आप हो जाईआ। निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया, मात पित ना कोए बणाईआ। शब्द विचोला विच रखाया, सालस सालसी करने आईआ। हरिजन साचे लए जगाया, सोया कोई रहिण ना पाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, ज्ञान गुरू आप अख्वाया, गुर नेत्र नाम धराईआ। भगत भगती वेख वखाया, आदि शक्ती सेव कमाया, जागरत जोत करी रुशनाईआ। अनहद नाद इक्क वजाया, अनहद राग रिहा अलाया, बहत्तर ताल तलवाड़ा आप अख्वाईआ। जीव जन्त किसे भेव ना पाया, साध सन्त किसे दिस ना आया, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। ब्रह्मा वेता सेवा लाया साचा हुक्म इक्क सुणाया, हुक्मी हुक्म रिहा चलाईआ। अनडिठड़ा धाम आप सुहाया, पुरख अबिनाशी डेरा लाया, निरगुण जोती जोत जगाईआ। गोबिन्द मेला सहिज सुभाया, आदि जुगादि विछड़ ना जाया, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम नाउँ धराया, सम्बल नगरी दए सुहाया, सोहँ ढोला एका गाईआ। गुरमुख साचे लए तराया, हरिसंगत साची मेल मिलाया, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। धर्म राए ना दए सज़ाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाया, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। जिस जन नेत्र दर्शन पाया, पूर्ब लहिणा दए चुकाया, पूजा पाठ ना कोई कराईआ। कर किरपा आपणी गोद उठाया, गुरमुख साचे चार जुग सच जोग कमाया, कलिजुग अन्तिम लहिणा लहिणा झोली पाईआ। पहलां हउमे रोग गंवाया, दूजा धुर संजोग मिलाया, तीजे नेत्र दरस वखाईआ। चौथे घर इक्क वखाया, नौ दुआरे आप लँघाया, अग्गे बैठा बेपरवाहीआ। पंचम मीता दया कमाया, पंचम सीस ताज पहनाया, जगत जगदीश वड्डी वड्याईआ। छप्पर छन्न

ना कोए छुहाया, गुरदुआर मन्दिर मस्जिद ना कोए बणाया, शिवदवाला मट्ठ ना कोए वखाया, गुरसिख तेरी काया अन्दर बैठा डेरा लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण वेस वटाया, दीवा बाती आप जगाया, गुरसिख तेरा चरन प्यार एका घृत विच रखाईआ। अट्ठां तत्तां पन्ध मुकाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाता तोड़ तुड़ाया, मन मति बुध रहिण ना पाईआ। नौ दुआरे खोज खुजाया, काम क्रोध वेख हल्काया, गुरमुख साचे लए उठाया, आप आपणा दरस दिखाया, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण लोकमात मार झात, वड दाता बेपरवाह शब्द सरूपी बण मलाह, इक्क जपाए आपणा नाँ, एका नईआ रिहा चढ़ाया। नौ दुआरे पार किनारा, गुरमुखां पन्ध मुकांयदा। आपे खिच ल्याए चरन दुआरा, आत्म ब्रह्म आप समझांयदा। आपे वणज करे वणजारा, आपे वस्त हट्ट विकांयदा। आपे भरे नाम भण्डारा, आपे झोली पांयदा। गुरमुख साजण मीत मुरारा, घर साचे आप सुहांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, आपे अन्दर आपे बाहरा, आपणे सिँघासण आसण लांयदा। दस्म दुआरी खेल अपारा, साढे तिन्न हथ्थ सेज हंढांयदा। गुरमुखां देवे इक्क अधारा, एका मार्ग लांयदा। जो जन रसना बोले सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, आवण जावण पन्ध मुकांयदा। गुरमुख निउँ निउँ तेरे चरन करन निमस्कारा, ब्रह्मा विष्न शिव तेरा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आदि आपे अन्त, आपे जोत श्री भगवन्त, आपे नारी आपे कन्त, आपे साध आपे सन्त, आप बणाए आपणी बणत, आपे जाणे महिमा अगणत, खेले खेल जुगा जुगंत, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत तेरा रूप, तेरे अन्त आप हो जाईआ। जोती जामा भेख भगवन्त, भगत भगती नाम ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पावे सार जीव जन्त, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाईआ।

हरिसंगत हरि हो मेहरवान, आपणी दया कमांयदा। एका देवे जीआ दान, एका झोली पांयदा। चरन धूढ़ सच अशनान, अठसठ माण गवांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, सोहँ जाम प्यांअदा। नेत्र लोचण नैण दरस महान, कमलापाती आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत हरि मेलणहारा, वड वड्डी वड्याईआ। एका बख्शे चरन प्यारा, साची सिख्या सिख समझाईआ। गुरमुख बन्ने गुरमति धारा, गुर गुर बूझ बुझाईआ। एका खोल्ह सच किवाड़ा, एका हट्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लए तराईआ। हरिसंगत साचा लेख लिखाउणा, लिखणहारा आप लिखांयदा। रोग सोग जगत मिटाउणा, दर्द दुःख वंड वंडांयदा। पवण मसाण

नेड़ ना आउणा, जिन्न भूत प्रेत ख़बीस ना कोए सतांयदा। शहीद दीद ना कोए मनाउणा, चिराग़ आग ना कोए बलांयदा। जोत जोत ना कोए जगाउणा, देवी देव आप समझांयदा। एका शब्द डण्डा हथ्थ उठाउणा, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। शब्द सुहागी छन्दा एका गाउणा, एका राग अलांयदा। सिर बांह सरहाणे दे दे सौणा, भय भयानक ना कोए जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा दुःख, आपणी झोली आपे पांयदा। हरिसंगत तेरा जगत विसूरा, सतिगुर पूरा दए मिटाईआ। दरस दखाए हाज़र हज़ूरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आसा मनसा सभ दी करे पूरा, जो जन साची मंग मंगाईआ। जो जन मंगे चरन धूढ़ा, मस्तक टिक्का जोत ललाटी दए जगाईआ। जो जन मंगे शब्द तूरा, शब्द शब्दी दए जणाईआ। जो जन माया ममता मंगे नाता कूड़ा, दे मति दए समझाईआ। गुरमुखां बख्शे जोती नूरा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। गुरसिख सज्जण वड सूरन सूरा, जो आया चल सरनाईआ। जगत विकारा नाता तुट्टा कूड़ा, कूड़ा नाता मात पित भैण भाईआ। वसणहारा नेड़ दूरा, नेरन नेर दरस दखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जगत विसूरे जायण लथ्थ, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। जो जन सरनाई गए ढठ्ठ, ढहि ढहि ढेरी आप हो जांयदा। आप सुणाए आपणी गाथ, आपे हरि हरि गांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब झोली पांयदा। लेख चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चमारा संग रलांयदा। गुरसिख विकया एका हाट, हरि करता कीमत पांयदा। खेले खेल बाज़ीगर नाट, नट नटूआ स्वांग वरतांयदा। सच सरोवर तीर्थ ताट, हरिसंगत साचा संगम इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रबैणी नैणी वेखे घाट, आप आपणा दर सुहांयदा। हरिसंगत तेरा लेखा जाए चुक्क, सतिगुर पूरा आप चुकाईआ। काया मेटे लग्गा दुःख, दीनां अनाथां दर्द वंडाईआ। धरत धवल जुग जुग सुखणा रही सुख, गुरमुखां राह तकाईआ। गुरमुख उज्जल करन मुक्ख, भगत भगवन्त रसना हरि हरि गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत रक्खे आपणी कुक्ख, आपे पिता आपे माईआ। ना माणस ना मनुक्ख, निरगुण जोत बेपरवाहीआ। हर घट अन्दर बैठा लुक, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां अग्गे जाए झुक्क, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। मनमुखां मुख पाए थुक्क, वेले अन्त दए सज़ाईआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, गुर पीर साध सन्त वेद शास्त्र खाणी बाणी दए गवाहीआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुखां करे इक्क प्यार, हरिसंगत मेला धुर दरबार, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा एका एक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा गया खुल्ह, हरि साचे आप खुल्हाया। कलिजुग अन्तिम कोई ना लाए मुल्ल, चरन प्रीती इक्क सिखाया। तारनहारा

साची कुल, इक्की कुला पार कराया। जो जन दर दुआरे हरिसंगत विच आया भुल्ल, वेले अन्त पार कराया। गुरमुख फुलवाड़ी खिड़या साचा फुल्ल, सतिगुर पूरे हार बणाया। ब्रह्मा विष्न शिव तिन्ने दर पावण आवण मुल, करता कीमत ना कोए चुकाया। जो जन चरन प्रीती घोली गया घुल, लाल अमोलक हीरा रत्न जवाहर माणक मोती आपणे कंठ लगाया। साचे कंडे पूरे तोल गया तुल, तोलणहारा एका आया। कलिजुग जीव माया ममता हउमे हँगता गए रुल, साचा लड़ ना कोए फड़ाया। जूठा झूठा बूटा गया हुल, सिम्मल रुख फल ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, हरिसंगत मेल आपे कर, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाया। आ मिल सखी प्यारी लग्ग अंक, अंक अंकड़ी रिहा पाईआ। नार भतारी सोहे बंक, बंक दुआरी वेख वखाईआ। लेखा जाणे वासी पुर घनक, घनक पुर वासी वेस वटाईआ। खेले खेल बार अनक, अनक कल आप हो जाईआ। गुरमुख तराए जिउँ जन जनक, ध्रू प्रहलाद संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत दर आई मंगत, काया चोली चढ़े रंगत, नाम बस्त्र भूषन सच दुशाला पंज तत्त काया कप्पड़ त्रैगुण संग हंढाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका गुर एका अवतार, एका शब्द इक्क जैकार, एका कन्त इक्क भतार, गुरमुख नारी शब्द सुहागण नाम वैरागण कलिजुग अन्तिम अन्त लए प्रनाईआ। निरगुण नूर आदि निरँजण पुरख अबिनाशी मूर्त अकाल पारब्रह्म परवरदिगार राम रहिमान नूर अला बेपरवाह, एकओंकार निराकार निराधार निरवैर एका रंग एका रूप एका रेख एका भेख एका आदि एका जुगादि एका वेस, एका दरवेश एका नरेश एका अगम्म एका नाम एका सति एका जोत एका सो एका नौं एका लाट, हरि हरि आप आप अख्वाईआ।

✪ २ भाद्रों २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ✪

बन्दी छोड़ बंधन कट्ट, एका बंधन नाम पाईआ। काली भैरों गौरजा मारे सट्ट, शब्द डण्डा हथ्थ उठाईआ। जाणे खेल घट घट, घट घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पापी पापी पतित आप तराईआ। साध सन्त जगत फ़कीर, बंधन बंध बंधांयदा। चिट्टे उप्पर खिच्च लकीर, काला दाग़ मिटांयदा। बन्नृणहार बेताल बीर, अहिमद मुहम्मद धीर ना कोए धरांयदा। भौंदा दीआ खलंता वहाए नीर, सलसला मुख शरमांयदा। पिछली कट्टणहारा भीड़, पिछला पन्ध मुकांयदा। अग्गे तन बस्त्र पहनाए साचा चीर, सच शृंगार वखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेख मेट मिटांयदा। काग़ज़ कलम लिखे दवात, लाल शाही नाल रलाईआ। आपे वेखे मार झात, या मुबीन कलमा नूर इलाहीआ। जगत फ़कीर ना पुच्छे कोई वात, देवे धक्का धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बंधन नाम बंधाईआ। बंधन नाम बन्ने मन, तन तन्दूर ना कोए तपाया। झूठा ठीकर देवे भन्न, साचा भाण्डा आप घड़ाया। विच रखाए अमृत जल, जल धारा मुख चुआया। काया लगाए साचा फल, आप आपणी दया कमाया। पवण पवण सिर जाए टल, सच हुलारा इक्क वखाया, पावे सार जल थल, घर मन्दिर अन्दर बाहर होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म रिहा वेख, चरन चँवरा साचे केस, आप आपणा अंग रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आया लेखा तन मन अन्दर बाहर दुःख भुक्ख अग्नी तत्त हड्ड मास नाड़ी रत्त, आपणे लेखे लए लगाईआ।

✪ २ भाद्रों २०१६ बिक्रमी हज़ारा सिँघ पिण्ड छीने ज़िला अमृतसर ✪

इक्क इकल्ला एकओंकार, आदि जुगादि समाया। खेले खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म भेव ना राया। अदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। एका वसे धाम न्यार, अटल महल्ल आप सुहाया। थिर घर बैठ सच्ची सरकार, दीवा बाती इक्क जगाया। कमलापाती खेल अपार, निरगुण आपणा वेस वटाया। दिवस राती ना कोई धार, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया। मण्डल मण्डप ना कोए पसार, धरत धवल ना कोए वखाया। आकाश प्रकाश ना कोए उज्यार, लोआं पुरीआं ना रचन रचाया। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए प्यार, निरगुण नाउँ ना कोए धराया। पंज तत्त ना कोए आकार, लक्ख चुरासी ना बणत बणाया। साध सन्त ना कोए गुर पीर अवतार, जीव जन्त ना कोए वखाया। जल थल ना कोए धार, तीर्थ तट ना कोए सुहाया। वेद पुराण ना कोए उधार, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाया। अञ्जील कुरान ना वजाए कोए सतार, कलमी कलमा ना कोए पढ़ाया। खाणी बाणी ना कोए किवाड़, शब्दी शब्द ना कोए अल्लाया। राम कृष्न ना कोए प्यार, ईसा मूसा ना रंग रंगाया। संग मुहम्मद ना चार यार, ऐनलहक्क ना कोए वखाया। नानक गोबिन्द ना कोए धार, तत्व तत्त ना कोए सुहाया। अबिनाशी करता खेल अपार, आप आपणा रिहा कमाया। एकओंकारा जोत उज्यार, निरगुण बैठा बेपरवाहया। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर नाम धराया। आपणी करे आपे कार, करता पुरख आप अख्वाया। अजूनी रहित भेव न्यार, मूर्त अकाल आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। आदि

पुरख एकओंकारा, एका रंग समाईआ। ना कोई दूसर मीत मुरारा, ना कोई संग निभाईआ। ना कोई खोल्हे दर किवाड़ा, ना कोई बंक सुहाईआ। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर ना कोई वखाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद मठ्ठ दिसे गुरदुआरा, गहर गम्भीर ना कोई सहाईआ। अठसठ ना कोई जल जलधारा, गंगा गोदावरी ना कोए वहाईआ। राज राजान ना कोई दिसे सिक्दारा, राज जोग ना कोए कमाईआ। तीस बतीस ना कोए पुकारा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। सीस जगदीश ना कोए निमस्कारा, दोए जोड़ ना कोए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकओंकार, जोती नूर कर उज्यार, अगम्म अथाह बेपरवाह, दर घर साचे बैठा बेपरवाहीआ। दर घर सच्चा बेपरवाह, हरि हरि आप उपाया। ना कोई दूसर दए सलाह, ना कोई संग निभाया। ना कोई रचन रिहा रचा, ना कोई लेख लिखाया। ना कोई मंगल रिहा गा, ना कोई राग अल्हाया। ना कोई तख्त ताज रिहा सुहा, चोबदार ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपार, जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। नूरो नूर पुरख अकाल, एका रंग समाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे चले आपणी चाल, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणा दीपक आपे बाल, आपे करे रुशनाईआ। आप सुहाए आपणी सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घर साचे आसण लाईआ। आपे मण्डल पावे रासी, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, खेलणहारा आप अख्वाईआ। आपणा खेल हरि खलंता, खेलणहार एकओंकारा। जोती नूर श्री भगवन्ता, आदि जुगादी जोत उज्यारा। आपे नारी आपे कन्ता, आपे सेज सुत्ता सच भतारा। आप बणाए आपणी बणता, आपे मात पित सुत्त दुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेल न्यारा। खेलणहार पुरख सुल्ताना, एका एकओंकारया। आदि जुगादी नूर नुराना, नूरो नूर डगमगा रिहा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर सुहा रिहा। एका रूप श्री भगवाना, एका रंग रंगा रिहा। एका देवणहारा दाना, एका झोली अग्गे डाह रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या। वेस वटंदड़ा हरि भगवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा देवे आपे दान, आपणी इच्छया भिच्छया आपे पाईआ। सच वस्त इक्क महान, निरगुण आपणी आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोती नूर उज्यार, हरि हरि आप करांयदा। आपे वेखे वेखणहार, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपणे रंग रवे करतार, करनी करता आप अख्वांयदा। साजण मीता कर प्यार, इक्क अतीता वेस वटांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, आपे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आप आपणा धाम सुहांयदा। हरि हरि धाम इक्क अवल्ला, हरि साची जोत जगाईआ। बैठा रहे इक्क इकल्ला, एकओंकारा बेपरवाहीआ। आपे नूर ख़ुदाई अल्ला, राम रहीम आप अख्वाईआ। आपे आपणे अन्दर होया बिस्मिला, बिस्मिल रूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जल्वा जलाल वेख वखाईआ। जल्वा जलाल नूर परवरदिगार, एका रंग समाया। अलक्ख अगोचर भेव अपार, भेव कोए ना राया। आदि आदी खेल न्यार, जुगा जुगादी वेस वटाया। आपे साजण मीत मुरार, आपे सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा जोत जगाए आदि निरँजणा, एका नाउँ रखाया। एकओंकारा नाउँ रक्ख, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी जोत कर प्रतक्ख, आपे वेख वखाईआ। आपे सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणी गथ, आपे करे पढ़ाईआ। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही आप हो जाईआ। आपे पूजा आपे पाठ, आपणा गुण आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया सच घर, सच घर उच्च महल्ला इक्क इकल्ला बैठा आसण लाईआ। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म रघुराया। खेले खेल शाहो शाबासण, शाह सुल्तान नाम धराया। आदि जुगादी एका रासन, आप आपणी रिहा रचाया। आपणे मन्दिर करया वासण, घर आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। निरगुण नूर हरि करतार, अकल कला कल धारया। आपे पाए आपणी सार, आप आपणे विच समा रिहा। आपे खोल्ह सच किवाड़, आपणा मन्दिर आप सुहा ल्या। सचखण्ड वखाए इक्क दुआर, चार दुआर ना कोए बणा ल्या। छप्पर छन्न ना कोए सहार, रवि ससि ना कोए चढ़ा ल्या। निरगुण बाती कर उज्यार, आदि जुगादी डगमगा रिहा। कमलापाती खेल अपार, घर साचे आप खिला ल्या। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण इक्क सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडा ल्या। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकार, आपणा आप सुहांयदा। थिर घर वेखे उच्च मुनार, उच्च अटला नाउँ धरांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे नारी कन्त भतार, आपे सेज हंढांयदा। आपे पूत सपूता कर त्यार, सुत्त दुलारा शब्द उपांयदा। आप वजाए सच सतार, आप आपणा नाम अल्हांयदा। आपे गाए गावणहार, गावणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा सोहे बंक, पुरख अबिनाशी एका अंक, एका डंक वजांयदा। हरि हरि शब्द साचा डंक, हरि हरि आप वजाईआ। हरि हरि सुहाए साचा बंक, हरि हरि वेख वखाईआ। हरि हरि खेले खेल बार अनक, अनक कला अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी

एकओंकार, अकल कलधारी आप हो जाईआ। अकल कला हरि आपे धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी वरनी आपे वर, आप करे कुड़माईआ। आपणी सरनी आपे पढ़, आपे सीस झुकाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणे मन्दिर बैठा वड़, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाईआ। खेले खेल हरि मेहरवान, आपणी दया कमांयदा। आपणा देवे धुर फ़रमान, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे होए जाणी जाण, जानणहार आप हो जांयदा। आपे रक्खे आपणा माण, आपे थान सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग कटांयदा। आपणा अंग निरगुण कट्ट, निरगुण वेस वटाया। जोती नूर लट लट, नूर नुराना डगमगाया। आपणा खोल्ह आपे हट्ट, आपे वस्त टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार निरगुण रूप सति सरूप, सरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण सरगुण वेस धर, आपणी कल वरताईआ। भगवन जोती नूर नूर कर, नूरो नूर आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। रचन रचाए हरि भगवान, आपणा खेल खिलाया। आपे देवे आपणा दान, आपणी झोली आप भराया। आपे विष्नू हो प्रधान, आप आपणा वेस वटाया। आपे कँवल कँवला खेल महान, आपे नाभी फुल्ल खलाया। आपे पारब्रह्म प्रभ मार ध्यान, ब्रह्म रूप आप हो जाया। आपे देवे शब्द ज्ञान, अन्तर मन्त्र आप दृढ़ाया। आपे वेखे मार ध्यान, आप आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दीपक आपे आप जगाया। आपणा दीपक आप जगा, आप करे रुशनाईआ। आपे वेखे थाउँ थाँ, ब्रह्मा विष्न दए टिकाईआ। शंकर लेखा आप गणा, धुँधूकार समाईआ। एका रूप लए वटा, त्रै त्रै नाउँ रखाईआ। त्रै त्रै मेला आप करा, आपणी डोर बंधाईआ। सज्जण सुहेला बेपरवाह, खेल खेले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा रिहा कमाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आकार, निरगुण निराकार कराया। शब्द सरूपी बन्न्हे धार, सति पुरख निरँजण खेल खिलाया। एका वस्त कर त्यार, त्रैगुण झोली आप भराया। पंज तत्त मीत मुरार, एका रूप दरसाया। हँ ब्रह्म खेल कर, लक्ख चुरासी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। लक्ख चुरासी हरि मेहरवान, लोकमात बणत बणाईआ। विष्नू वंसी खेल महान, जीआ दाता रिज़क सुबाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क ज्ञान, एका मार्ग लाईआ। शिव शंकर अन्तिम वेखे मार ध्यान, भुल्ल रहे ना राईआ। तिन्नां दाता हरि भगवान, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता दुआपर आपे देवे दान, कलिजुग वंड वंडाईआ। चार जुग कर परवान, आपणे नाम करे वड्याईआ। आपे

अन्तिम मेटे सर्ब निशान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनहार हरि करतारा, करनी करता आप कराईआ। करनहार हरि हरि, एका एक समाया। आदि जुगादी खोल्ह दर, आपे वेख वखाया। आप रखाए आपणा डर, आप आपणा भउ चुकाया। आपे हर घट अन्दर बैठा वड़, आपे मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। जुग जुग नाम हरि करतारा, आपणा आप चलांयदा। आपे वरते विच संसारा, वड संसारी आप हो जांयदा। आपे भगतन मीता बण प्यारा, साचा मार्ग लांयदा। आपे देवे नाम आधारा, आपे शब्द सुणांयदा। आपे जोत कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आपे राम कृष्न बण अवतारा, भगत वछल नाउँ रखांयदा। आपे नानक गोबिन्द बोल जैकारा, एका नाअरा लांयदा। आपे ईसा मूसा खेल सच्ची सरकारा, काला सूसा तन छुहांयदा। आपे मुहम्मद मुहम्मदी होए प्यारा, आप आपणा वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, हरि साचा आप करांयदा। वेद पुराण कतेब ना पावण सारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। साध सन्त भगत भगवन्त एका धारा, एका मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग हरि वेस वटाया, अचरज बणत बणाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, खेले खेल बेपरवाहीआ। साध सन्त किसे भेव ना पाया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हउमे हँगता रोग वधाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होई हल्काईआ। आसा तृष्ना ना कोए बुझाया। सांतक सति ना कोए वरताईआ। साचे मन्दिर ना देवे कोई चढ़ाया, दरस ना पाया साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, हरि हरि आप करांयदा। आपे वेखे राणी अल्ला, आपे हू हू नाअरा लांयदा। आपे पावे सार जला थला, डूँघी कन्दर फोल फुलाईआ। आपे मेटे गुरमुखां दूई द्वैती सला, साचा रंग इक्क चढ़ांयदा। आपे सच सिँघासण आसण मल्ला, आत्म सेजा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्त भगवन्त गुरमुख साजण सन्त आप जगांयदा। सन्त सुहेला इक्क अतीता, एका एकओंकारया। गुरमुखां दस्से चरन प्रीता, साची रीती मार्ग इक्क वखा ल्या। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां भेव चुका ल्या। शब्द जणाए नाम अनडीठा, मिट्ठा रस इक्क खवा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप तरा ल्या। तारनहार हरि गुरदेव, एका एक एक अख्वाईआ। जिस जन गाया रसना जेहव, आसा मनसा पूर कराईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक थेव, चौदां रत्न मुख शरमाईआ। अबिनाशी करता अलक्ख अभेव, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

६३५
०८

साचा वर, घर साचा वेख वखाईआ। घर साचा हरि सुहाया, पाया परम पुरख करतार। गुरमुख मेला मेल मिलाया, नाता तुट्टा सर्ब संसार। गुर चेला एका रंग रंगाया, गुर गोबिन्द मीत मुरार। आपे सगला संग निभाया, सगला साथी विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कल कल्की इक्क अवतार। कल कल्की हरि अवतारा, निरगुण जोत जगाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सारा, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। जन भगतां करे सति प्यारा, सति सरूप आप हो जाईआ। ब्रह्म मति एका धारा, एका रंग रंगाईआ। मन मति होए ख्वारा, चारों कुन्ट कूके दए दुहाईआ। नार विभचार ना हाहाकारा, साचा कन्त ना कोए मनाईआ। हरि का भेव ना पाए जीव गंवारा, रसना जिह्वा ना कोए वखाईआ। गुरमुख विरला उतरया पारा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। एका वणज कराए सच्चा वणजारा, एका नाम करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा ठांडा सीत, एका रंग समाया। पतित पापी करे पुनीत, पतित पावण नाउँ धराया। जिस जन रक्खया हरि हरि चीत, वेले अन्तिम मेल मिलाया। कलिजुग कूड़ा रिहा बीत, हरि साचे वेस वटाया। वसणहारा धाम अनडीठ, लोकमात फेरा पाया। लक्ख चुरासी रिहा जीत, आप आपणा डंक वजाया। गुरमुख विरला गाए सुहागी गीत, सोहँ ढोला इक्क अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, आप आपणी दया कमाया। गुरमुख सज्जण बेपरवाह, हरि हरि लध्धा राम। पारब्रह्म अबिनाशी करता देवणहारा सच सलाह, अमृत नाम प्याए जाम। दो जहानी बण मलाह, कलिजुग अन्तिम पूरन करे काम। निधावयां देवे साचा थाँ, सचखण्ड दुआरा साचा धाम। आपे पकड़णहारा बांह, वेख वखाए नगर ग्राम। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेटे अन्धेरी शाम। हरिजन अन्धेरा जाए चुक्क, सतिगुर पूरा आप चुकाईआ। सफल कराए मात कुक्ख, धन्न धन्न धन्न जणेंदी माईआ। उलटा गर्भ ना होए रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कर दरस उतरे भुक्ख, हरि साचा तरस कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप उठाए लुक लुक, मनमुखां दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, जीआ दाता वड वड्याईआ। अन्तरजामी पुरख बिधाता, हर घट वेख वखांयदा। जन भगतां देवे साची दाता, आत्म ब्रह्म जणांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्न चढ़ांयदा। शब्द सुणाए एका गाथा, अनहद ताल वजांयदा। काया मन्दिर पूजा पाठा, एका राग सुणांयदा। सर सरोवर तीर्थ ताटा, अन्तर आत्म आप नुहांयदा। नूरी नूर जोत ललाटा, जोत

निरँजण डगमगांयदा। आपे सुत्ता साची खाटा, आसण सिँघासण आप विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट घट आपे वेख वखांयदा। अन्तरजामी पुरख सुजाण, एका एक ओंकारया। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग खेले विच संसारया। जन भगतां देवे भगती दान, एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा। आत्म दरसी दरस महान, स्वच्छ सरूपी रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात मार झात, इक्क इकांत खेल खिला रिहा। अन्तरजामी खेल अपारा, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप पसारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, एका अंक समाईआ। आपे सोहे सच दुआरा, बंक दुआरी डेरा लाईआ। निज घर वसे वसणहारा, निज आत्म खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट मेला मेल मिलाईआ। घट घट ब्रह्म वस्सया, पारब्रह्म गुर करतार। आदि जुगदी फिरे नस्सया, आप आपणी किरपा धार। जन भगतां रैण अन्धेरी मेटे मस्सया, निर्मल जोत करे उज्यार। साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, आपे काया खोल्ह किवाड़। शब्द तीर निराला कस्सया, हउमे हँगता देवे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट खेले खेल अपार। घट घट अन्तर नूर उज्यारा, हरि हरि आप कराईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। पावणहारा साची सारा, साची सिख्या सिख समझाईआ। आपे जाणे आर पार किनारा, मंझधार आप सुहाईआ। आपे वसे खण्ड सच दुआरा, थिर घर साचे डेरा लाईआ। आपे विष्नूं रूप अपारा, आपे ब्रह्म जोत प्रगटाईआ। आपे शंकर खेल अपारा, खेलणहारा आप खिलाईआ। आपे त्रैगुण तत्त करे उधार, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खले अगम्म अपार, मन मति बुध आपणा अंक वखाईआ। अन्तरजामी हरि हरि मीता, एका रंग समाया। आदि जुगादी ठंडा सीता, तत्व तत्त ना कोए वखाया। करे कराए पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए जणाया। आपणा भाणा जाणे मीठा, आपणे भाणे आप रहाया। आपे वसे धाम अनडीठा, नेत्र लोचण नैण दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अन्दर काया मन्दिर, निज घर वासी पुरख अबिनाशी एकओंकारा निराकारा निरगुण बैठा जोत जगाया। घट अन्दर हरि खेल अपारा, घट घट जोत जगाईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका वणज करे कराए सच वणजारा, एका वस्त झोली पाईआ। एका रंग रंगे करतारा, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट मेला खेले खेल बेपरवाहीआ। घट अन्दर हरि हरि वासा, आपणा आप करांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं

पाए रासा, रवि ससि आप नचांयदा। जन भगतां होए दासी दासा, जुग जुग वेस वटांयदा। पूरन करे आपे आसा, आप आपणा संग निभांयदा। शाह सुल्तान शाहो शाबाशा, सतिगुर पूरा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट भीतर डेरा लांयदा। घट घट अन्दर हरि वसेरा, हरि हरि जोत जगाईआ। गुरमुखां दिसे नेरन नेरा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुखां अन्दर कर अन्धेरा, बैठा मुख छुपाईआ। आपे जाणे हेरा फेरा, वल छल धारी खेल खिलाईआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर करे कराए हक्क नबेड़ा, भुल्ल रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी देवणहारा आपणा गेड़ा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज आप भवाईआ। गुरमुख वसाए काया खेड़ा, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। पंच विकारा चुक्के झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। मन मति ना करे वसेरा, आसा तृष्ना दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट बैठा बेपरवाहीआ। घट घट वस्सया ऊँच नीच, हस्त कीट एका रंग समाया। खेले खेल जगत जगदीश, जगत जगदीश्र वेस वटाया। आपणा पीसण रिहा पीस, आपणी चक्की आप चलाया। आदि जुगादी शरअ हदीस, आप आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी अन्दर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आप आपणा आसण लाया। घट अन्दर हरि कर कर वासा, हरि आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुख देवे नाम धरवासा, नाम नामा रसना जेहवा मुख सलांहयदा। लेखा जाणे स्वास स्वासा, सगला संग निभांयदा। मनमुखां ख़ाली करे काया कासा, नाम वस्त ना झोली पांयदा। दोहां वेखे जगत तमाशा, आप आपणी रचन रचांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, विश्व रूप सर्ब समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बिध जाणे अन्तर, तन बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत आत्म साचा जाम प्यांअदा। अन्तर बिध हरि हरि जाणे, भुल्ल रहे ना राईआ। दिवस रैण वेख वखाणे, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। जो जन हरि हरि रक्खे चरन ध्याने, चरन चरनोदक मुख प्याईआ। आप चलाए आपणे भाणे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर दुआरे देवे माणे, दर घर साचे सोभा पाईआ। मनमुख भुल्ले जीव अञ्याणे, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख विरले चतुर सुघड़ स्याणे, जगत तृष्ना रहे मिटाईआ। दोहां विचोला श्री भगवाने, सन्त कन्त भगवन्त जीव जन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त जागरत जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आत्म ब्रह्म ब्रह्म पछाण, प्रभ पारब्रह्म इक्क ध्यान, इष्ट देव हरि साचा माण, आदि शक्ती रूप महान, नूर इलाही बेऐब परवरदिगार, सर्ब जीआं दा सांझा यार, ख़ालक ख़लक करे प्यार, ओअँ रूप आप निराकार, सरगुण पसरे सर्ब पसार, हँ ब्रह्म दए अधार, शब्द डंका बार अनका, अकल कल कल धार आपणा आप सुणाईआ। अन्तरजामी उच्च

अगम्मा, एका एक अख्वांयदा। ना मरे ना कदे जम्मा, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। पवण स्वास ना लए दमां, नेत्र नीर ना कोए वहांयदा। करे कराए आपणा कम्मा, करनी करता आप अख्वांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई गमा, हरख सोग ना कोए रखांयदा। ना कोई हड्ड मास नाड़ी दिसे चम्मा, पंज तत्त ना कोए हंढांयदा। जिस जन गाया दम दमां, कर किरपा मेल मिलांयदा। लोकमात भगत वछल जग आए भन्ना, आप आपणा रूप वटांयदा। करे सेव जिउँ माल चराए धन्ना, सेवक सेवा आप कमांयदा। अनादी नाद वजाए राग सुणाए कन्ना, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तरजामी अन्तर जानत, भले बुरे दी पीर पछाणत, परम पुरख हरि कर प्यार, गुरमुख सज्जण जाए तार, मनमुखां करे जगत खुआर, लक्ख चुरासी जम्म की फाँसी राए धर्म सेव लगांयदा। अन्तरजामी जिस जन वेख्या, मिटया जगत अन्धेर। एका नेत्र आपणे पेख्या, सैंहसा चुकया सञ्झ सवेर। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस्सया, मूंड मुंडाए ना लाए ढेर। आदि जुगादी एका जोत जोत प्रवेस्सया, निरगुण नूर नूर उज्यार। आपे लिखणहारा लेखया, बैठा धर्म सच्चे दरबार। ब्रह्मा विष्न महेष करन आदेसया, कोटन कोटि रहे पुकार। कलिजुग अन्तिम अन्त हरि भगवन्त, गुरमुखां जाणे अगली पिछली रेखया, मेल मिलाए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वरते वरतावे आपणी धार। धार निराली जोत अकाली, आपणी कल वरतांयदा। जन भगतां दुआरे बणे सवाली, आप आपणी भिख्या मंग मंगांयदा। मनमुखां दर रक्खे ख़ाली, साची वस्त ना कोए टिकांयदा। दोहां करे जगत दलाली, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अन्दर वेखे वड़, आपणी चोटी आपे चढ़, आपणी विद्या अक्खर आपे पढ़, हरिजन साचे करे पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध अख्वांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, कारज सिद्ध वखांयदा। सन्त सुहेले आपे भाल, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा मीतड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। गुरसिख काया चोली रंगे चीथड़ा, चाढ़े रंग नाम अपार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा जाणे ना कोए संसार। सुणाए सच सच्चा सुहागी गीतड़ा, काया मन्दिर सुहाए बंक दुआर। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी जाए तार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, जो जन मंगे नाम बण भिखार। आदि जुगादी ठंडा सीतड़ा, अग्नी तत्त मिटाए झूठी धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरन प्यार। सतिगुर साचा एक है, एका एक ओंकार। गुरमुख बख्शे साची टेक है, चरन कँवल प्यार। करे कराए बुध बबेक है, निरगुण बाती जोत उज्यार। त्रैगुण माया ना

लाए सेक है, पंचम तत्त ना करे खुआर। हरिजन साचे आप आपणे वेख है, जुग जुग मेले मेलणहार। आपे पूर्ब लहिणा रिहा पेख है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस अगम्म अपार। सतिगुर पूरा तुठया, वड दाता हरि मेहरवान। एका नाम अमृत प्याए साचा घुटयां, दूई द्वैती मेटे झूठ निशान। गुरसिख आप उठाए सुत्या, आलस निन्दरा गंवाए जगत दुकान। सच सुहाए एका रुतया, देवे आत्म जीआ दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण करे दर परवान। किरपा करे हरि मेहरवाना, आपणी दया कमांयदा। पतित पापी कर ध्याना, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। एका देवे नाम निधाना, साची वस्त झोली पांयदा। जोग अभ्यास ना कोए वखाणा, जप तप हठ्ठ ना कोए करांयदा। नज़री नज़र नदर करे भगवाना, हरिजन साचे पार करांयदा। धुरदरगाही देवे सच परवाना, आपणा नाम हथ्थ फड़ांयदा। शब्दी बन्ने एका गाना, एका कन्त सगन मनांयदा। नारी कन्त कन्तूहल पुरख सुल्ताना, ब्रह्म पारब्रह्म प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत सज्जण मीत अतीत लए वर, मन्दिर मसीत ना कोए जणांयदा। हरिसंगत सोहे दर, वड वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा किरपा दए कर, मनमति रहिण ना पाईआ। आपणी इच्छया अन्दर धर, साची भिच्छया इक्क वखाईआ। जगत विकारा तोड़ गढ़, हउमे रोग गंवाईआ। सो पुरख निरँजण फड़ाए लड़, नाम सति सति कुड़माईआ। एका अक्खर एकओंकारा जाणा पढ़, एका सिख्या सिख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए वर, जो जन मंगे सरन सरनाईआ। आए दर दर सवाली, मंगे नाम भिखारी। आत्म अन्तर कोए ना जाए ख़ाली, माणस जन्मा पैज संवारी। सतिगुर पूरा सच्चा माली, फुल्ल फल बूटे वेखे जगत क्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे घर, घर सज्जण मीत मुरारी। जन श्रदालू श्रद्धा रक्ख, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। दरस दखाए हो प्रतक्ख, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। लोकमात लए रक्ख, लोक लाज दए गंवाईआ। करे कराए लक्खों कक्ख, कक्खों लक्ख बणाईआ। काग हँस करे वक्ख वक्ख, आपणी चोग आप चुगाईआ। एका मार्ग चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रिहा दस्स, पुरख अकाल इक्क शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण देवे वर, जुगत जगत भगत भगवन्त सज्जण सन्त, साधक सिद्ध एका एक जणाईआ। आपे चावल आपे दाल, आपणी हाण्डी आप तपाईआ। आपे पाणी देवे डाल, आपे रत्त तत्त उबलाईआ। आपे लूण मिरच लाए मसाल, आप आपणा रस बणाईआ। आपे पर्दा उप्पर दए डाल, अन्दरे अन्दर आप भड़काईआ। आपे करे हाल बेहाल, चावल दाल सुध रहे ना राईआ। आपे परोसे रक्खे विच थाल, आपे रसना भोग लगाईआ। आपे विष्टा कर कढ्ढे बाहर

काया माटी खाल, रूप रंग ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता दीन दयाल, भेव अभेदा अछल अछेदा जुगा जुगन्त आपणी बणत रिहा बणाईआ। चावल दाल आपे मेल, आपणा मेल मिलाया। आपे रिहा आपणा खेल खेल, आपणा डण्डा आपे विच फिराया। आपे अन्दर बाहर सज्जे खब्बे पिछे अग्गे रिहा धकेल, अग्गे अड़ कोई ना जाया। लक्ख चुरासी आपणी हथ्थीं पाई नकेल, खिच्ची जाए वाहो दाहया। विष्न ब्रह्मा शिव तिन्नां बहिण ना देवे किसे वेले वेहल, साची सेवा आप कराया। गुरमुख साचे सज्जण सुहेल, आप आपणे वेख वखाया। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे आपणे हथ्थ फड़ वेखे रस लाए रसना जेहव, कलिजुग वेला अन्तिम आया। सो चावल दाल होई परवान, जिस हथ्थ लाया भगवान, आप आपणे विच टिकाया। जीव जन्त जन्त अञ्याण, हरि का भेव भेव महान, देवी देव सर्ब गुण गाण, साध सन्त करन ध्यान, गुर पीर अवतार रहे वखान, भेव अभेदा लेख ना जाणे चारे वेदा, शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुरान, खाणी बाणी रही मुख सलाहया। जीव जीव जीव अञ्याणा, जीवन जुगत जणाईआ। ईश ईश खेल महाना, ईश ईश वड्याईआ। आपे वंञ आप मुहाणा, आपे चप्पू लाईआ। आपे सुघड़ आप स्याणा, आपे वेख वखाईआ। आपे लक्ख चुरासी बणत बणाणा, आपे रिहा भवाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर सर्ब फिराईआ। हुक्मी हुक्म वड बलवान, आपणा आप चलांयदा। लोआं पुरीआं एका आण, रवि ससि सेवा लांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करे ध्यान, साचा शब्द जणांयदा। लक्ख चुरासी हो प्रधान, आपणा वेस वटांयदा। खेले खेल श्री भगवान, खेल खिलंता नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आपणा झेड़ा आपे करे हक्क नबेड़ा, आपे वसे साचे खेड़ा, आपे दूर आपे नेड़ा आपे मुख छुपांयदा। सर्ब कला हरि भरपूर, जप तप ना कोए रखाईआ। आपे उपजे आपणा नूर, आपे डगमगाईआ। आपे आपणा देवे सति सरूर, आप आपणे विच समाईआ। आपे होए हाज़र हज़ूर, दूर नेड़ा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर आपे सोहे, आपे सेज सुहाईआ। ना कोई ज्ञान ना कोई ध्यान, हरि इष्ट ना कोए मनाईआ। ना कोई पढ़े वेद पुराण, पूजा पाठ ना कोए वखाईआ। ना कोई अञ्जील ना कोई कुरान, कलमा अमाम ना कोए रखाईआ। खाणी बाणी ना कोए वखाण, रसना ढोला ना कोए गाईआ। आपणी कर आप पछाण, आप आपणे विच समाईआ। पुरख अकाल इक्क महान, एका एक एक हो जाईआ। वेस अनेक विच जहान, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। आपणा नाम जगत निशान, धुन नाद जणाईआ। पंज पंजी खेल महान, तत्त रत्त बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म देवे साचा वर, ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ।

काया मन्दिर अमृतसर, हरि हरि रचन रचाईआ। गुरमुख विरला हरि की पौड़ी जाए चढ़, जिस जन सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। गुर अमर दास फड़ाया आपणा लड़, गुर अंगद राह जणाईआ। नानक घाड़ण दित्ता घड़, राम दास वज्जी वधाईआ। गुर अर्जन दरस दिखाया अग्गे खड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जो जन सरन सरनाई जाए पढ़, नौ दुआरे दए तजाईआ। सुखमन नाड़ी बहे लड़, त्रै संगम मेट मिटाईआ। सरोवर नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। काग हँस जाए बण, एका चोग माणक मोती शब्द गुर चुगाईआ। आवण जावण चुक्के डर, मिटे भरम की काईआ। अठसठ तीर्थ ना मिले हरि, हरि मन्दिर काया अन्दर साचा मेल मिलाईआ। जगत तुड़ाउणा हँकारी जन्दर, साचे मन्दिर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर सरोवर अमृत आत्म एका एक एक दरसाईआ। अमृतसर साचे नहाउणा, हरि साचे ताल सुहाया। हउमे हँगता रोग गंवाउणा, माया ममता मोह चुकाया, भाण्डा गढ़ हँकार भनाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। धीरज सति इक्क रखाउणा, सति सतिवादी वेख वखाया। काया कपड़ माया ममता लौहणा, सच सरोवर गुरमुख नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इशनान जीआ दान, जीवण दाता आप कराया।

जीआ दान जागरत जोत, गुरमुखां आप जगाईआ। लहिणा देणा चुकाए वरन गोत, एका रंग समाईआ। शब्द नगारे लाए चोट, अनहद राग सुणाईआ। दूजी वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। धीरज जत सति बंधाए इक्क लंगोट, काम क्रोध ना होए हल्काईआ। इक्क जणाए साची ओट, दूसर इष्ट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान एका झोली पाईआ।

६४२ ०८

३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी पिण्ड माना वाला

इक्क इकल्ला एकओंकार, आदि जुगादि समाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। आदि निरँजण भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, खेलणहारा आप खलाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, नाद अनादी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकओंकार, आदि जुगादी कर पसार, आप आपणा वेख वखाईआ। वेखणहार पुरख अकाला, एका एकओंकारया। आपे खेले खेल निराला, खेलणहार आप अख्वा रिहा। चले चलाए आपणी चाला, चाल निराली इक्क विखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। आपणी रचना आप रचाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपणी बणत आप बणाए, आपे वेख वखाईआ। नारी कन्त आप अख्वाए, आपणी दया कमाईआ। आपणा रंग आप चढ़ाए, वड दाता बेपरवाहीआ। दूसर ना कोई संग रखाए, सगला संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकओंकार, आप आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला एकओंकारा, आपणा आप करांयदा। निर्मल बाती कर उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। वसणहारा सच दुआरा, दर घर साचे आसण लांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनारा, आप आपणा आप सुहांयदा। शाहो भूप वड सिक्दारा, राजन राज नाम धरांयदा। हुक्मी हुक्म कर प्यारा, आपणा हुक्म मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वांयदा। अबिनाशी करता हरि भगवाना, आदि जुगादी एका एकओंकारया। खेले खेल दो जहाना, वेखे विगसे करे विचारया। साचा मन्दिर इक्क सुहाना, सचखण्ड दुआरा नाम रखा ल्या। दीवा बाती इक्क टिकाणा, निरगुण जोती नूर उज्यारया। साचा तख्त आप सुहाणा, सच सिँघासण आसण ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकओंकार, आप आपणी बन्ने धार, आपणी धारा आप बंधा रिहा। करता पुरख हरि करनेहारा, आपणी किरत कमांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पांयदा। आपे वसे धाम न्यारा, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा मन्दिर कर त्यारा, आप आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत जोत प्रकाश, पारब्रह्म वड वड्याईआ। आपणे मण्डल पावे रास, आपे वेख वखाईआ। ना कोई दूसर दिसे पास, ना कोई अंग लगाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोए सुहाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, आदि जगादि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत अकाला दीन दयाला, आप आपणी दया कमाईआ। दीन दयाल पुरख करतारा, एका रंग समाया। आपे जाणे आपणी धारा, आप आपणा वेस वटाया। आपे वसे सच दुआरा, खण्ड सच आप बणाया। आपे निरगुण नूर उज्यारा, निराकार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहार पुरख समरथ, एका एक वड्डी वड्याईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कत्थ ना सके राईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। आपे वेखे आपणी वथ, आपणे मन्दिर आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलाईआ। पारब्रह्म पुरख अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार कमांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्मड़ा, रक्त बूंद मात पित भाई भैण ना कोए अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत

उज्यारा निरगुण धारा, नर निरँकारा आप अख्वांयदा। नर निरँकार पुरख अकाल, आपणी कल वरताईआ। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण आसण लाईआ। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। हुक्मे अन्दर खेल अपार, आपणी बणत बणाईआ। आपणे मन्दिर खोल्ह किवाड़, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बंधन आपे पा, लेखा जाणे बेपरवाह, आप आपणा सगन मनाईआ। आपणा बंधन आपे पाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपणा सगन आप मनाए, आप करे कुड़माईआ। नारी कन्त आप अख्वाए, आपे सेज हंढाईआ। सुत्त दुलारा आपे जाए, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाईआ। शब्द दुलारा साचा सुत्त, हरि साचा आप उपजांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना आंयदा। आप सुहाए रुत्ती रुत्त, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। शब्द सुत्त उपज्या पूत, हरि साची दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे वस्सया दूत, साची सेवा आप लगाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। चार वरन एका रूप, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। सुत्त दुलारा नौजवान, शब्दी शब्द उठांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। एका तत्त एका रत्त कर परवान, एका मति जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा सच घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआर नेहचल धाम अटल, हरि साचा आप सुहांयदा। ना कोई जल ना कोई थल, गगन मण्डल ना कोई उपाया। साध सन्त ना कोई अवतारा, गुर पीर ना कोई उपजांयदा। लक्ख चुरासी ना बन्ने धारा, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई रखांयदा। शब्द अनादी सुत्त दुलारा, हरि साचा आप उपजांयदा। आपे मात पित बण सहारा, आपे गोद उठांयदा। आपे वणज कराए बण वणजारा, आपे वस्त वखांयदा। आपे बन्ने साची धारा, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे लोआं पुरीआं कर पसारा, रवि ससि आप चमकांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड खेल अपारा, आप आपणा दर दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सुत्त इक्क उठांयदा। साचे सुत्त उठ बलवान, हरि साचे दया कमाईआ। तेरा रूप श्री भगवान, तेरा अंक लगाईआ। तेरा नाम इक्क निशान, एका दए झुलाईआ। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वाली आप अख्वाईआ। हरि का शब्द धुर फ़रमान, शब्द शब्दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। शब्दी सुत्त बण भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा सच दुआरा, घर साचा इक्क सुहाईआ। चरन

६४४
०८

कँवल इक्क सहारा, एका आस तकाईआ। आपे बण विचोला देवे देवणहारा, सच भण्डारा नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची वस्त झोली पा, आपणी दया कमाईआ। एका मति दए समझा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका रंग दए चढ़ा, एका वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, शब्द सुत्त अबिनाशी अचुत आपणा आप सुहाईआ।

सचखण्ड दुआरा हरि हरि वासा, हरि साची रचन रचाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। साचे बंक बंक दुआरी पाए रासा, आपणी रचन रचाईआ। साचे शब्द दए भरवासा, एका बूझ बुझाईआ। आदि जगादि जुगा जुगन्तर तेरी पूरी करे आसा, पूरन इच्छया आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपणा रक्ख नाउँ निरँकार, निरगुण वेस वटाया। आपे शब्द बोल जैकार, आपणा नाअरा आपे लाया। आपे सज्जण मीत मुरार, बंपन बंधू आप हो जाया। आपे खेले खेल अपार, आप आपणी अचरज खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, नूरो नूर डगमगाया। सच दुआरा साची धार, हरि साचे सच बणाईआ। साची वस्त अपर अपार, साचे विच टिकाईआ। साचा शाहो भूप हरि सिक्दार, शाह सुल्तान सच अख्वाईआ। साचा दूत दर दरबान, एका एक सुहाईआ। साचा शब्द धुर फ़रमान, आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना आप रचाए, हरि वड वडा बलकारीआ। आपणे मन्दिर वेस वटाए, दर दरवेश शाह सवारीआ। नर नरेश नाउँ धराए, निरगुण जोत नूर उज्यारीआ। आपणा अंग आप कटाए, निरगुण बन्ने साची धारीआ। साख्यात आप हो आए, विष्नूं वेस करे अपारीआ। आपणी जोती जोत जगाए, जोती जोत डगमगा रिहा। आपणा अमृत जल भराए, सर सरोवर इक्क सुहा रिहा। आपणा कँवल फुल्ल उगाए, नाभी मुख खुल्हा रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाए, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस करा ल्या। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक करांयदा। आपे करे वल छला, अछल अछल्ल आप अख्वांयदा। आपणी जोती आपे बला, विष्न ब्रह्मा शिव दीपक आप जगांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, एका हुक्म अल्हांयदा। मेल मिलावा घड़ी घड़ी पल पल्ला, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेस वटाया, हरि हरि वड्डी वड्याईआ।

सो पुरख निरँजण दया कमाया, हँ ब्रह्म आप हो जाईआ। सोहँ सो सो रघुराया, एका एक एक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सच दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा गया खुल्ह, हरि साचा आप खुल्हांयदा। अबिनाशी करता कोए ना पाए मुल, आपणी करनी आप करांयदा। आपे फुलया आपे गया फल, ब्रह्मा विष्न शिव आप उपांयदा। आपणे कंडे तोले तोल, साचा कंडा हथ्थ उठांयदा। शब्द अगम्मी एक बोल, आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल अकल कल धार, कल आपणी आप वरतांयदा। कुलवन्ता कल आपणी धार, आपे वेस वटाईआ। आपे विश्व रूप बण करतार, आपणा संग निभाईआ। आपे ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे वसे धूंआँधार, आपे शंकर गले लगाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। सुत्त दुलारे कर प्यार, साचा हुक्म जणाईआ। लोआं पुरीआं दए सहार, मण्डल मण्डप आप रहाईआ। दो जहानां हो उज्यार, जोती नूर रिहा डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया भर भण्डार, आपे दए वरताईआ। सच भण्डारा सति सरूप, आपणा आप उपांयदा। शब्द सुत्त शाहो भूप, हरि झोली आप भरांयदा। त्रैगुण उपजे तेरा रूप, तेरे संग रखांयदा। होए पसारा चारे कूट, दहि दिशा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा।

४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे घर पिण्ड माना वाला ज़िला अमृतसर

दीन दयाल सर्ब गुणवन्ता, घट घट रिहा समाईआ। हरिजन बणाए साची बणता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। देवे नाम मणीआ मंता, रसना जिह्वा आप ध्याईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, भरमी भरम मिटाईआ। लेखे लाए भुक्खे नंगता, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेखे लए लगाईआ। लेखा लिखणहार करतारा, आदि जुगादि समांयदा। गुरमुखां देवे नाम भण्डारा, गुर सतिगुर रूप वटांयदा। दर दिखाए अगम्म अपारा, आप आपणा पर्दा लांहयदा। एका बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। काल फास कल कट्टणहारा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। दासन दासी हो उज्यारा, सेवक सेवा आप कमांयदा। ख़ालक ख़लक मीत मुरारा, गहर गम्भीर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप मिलांयदा। हरिजन साचा मेल मिलाया, मेलणहार गुर करतार। जगत विछोड़ा फंद कटाया, नाता तोड़ जगत संसार। आत्म अन्तर ज्ञान दृढ़ाया, हउमे हँगता रोग निवार। साचा

राग इक्क सुणाया, धुन अनादि सच्ची धुन्कार। पंचम सखीआं बहि बहि गाया, वर पाया पुरख करतार। घर मन्दिर साचे डेरा लाया, दीवा बाती निरगुण जोत कर उज्यार। कमलापाती वेस वटाया, दिस ना आए जीव गंवार। सन्त साजण वेख वखाया, आप आपणी किरपा धार। पूर्ब लहिणा झोली पाया, नेत्र नैणां दरस अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण जाए तार। तारनहार इक्क करतारा, आदि जुगादि समाया। जुग जुग खेले खेल अपारा, लोकमात वेस वटाया। गुरमन्त्र नाम शब्द जैकारा, एका नाअरा लाया। जन भगतां देवे सति हुलारा, सति सतिवादी आप दवाया। एका दसे सच प्यारा, घर साचे बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर वेख वखाया। घर मन्दिर हरि मेलया, गुरमुख सज्जण मीत। एका रंग गुरू गुर चेलया, गुर नाम अमृत बाणी ठंडा सीत। आपे होए सज्जण सुहेलया, धुरदरगाही सच्चा मीत। आपे वसे रंग नवेलया, आपे होया हस्त कीट। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेलया, किसे हथ्थ ना आए देहुरे मन्दिर मसीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, आदि जुगादी परखणहारा नीत। गुरमुख सच्चा सज्जण, हरिजन वेख वखांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल गंवांयदा। भाण्डे गढ़ हँकारी भज्जण, हउमे हँगता रोग मिटांयदा। नेत्र नैण पाए कज्जल, नाम नामा इक्क रखांयदा। सखा सखाई साचा सज्जण, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। दो जहानी पर्दे कज्जण, शब्द दोशाला उप्पर पांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जुग जुग मेल मेलणहारा, आदि जुगादि समाया। गुरमुख सोहे सच दुआरा, घर साचा इक्क वखाया। एका रूप सति सरूप महिमा अनूप लेखा लिखे ना कोई संसारा, लेखा लिख्त विच ना आया। जन भगतां देवे भगती भण्डारा, नाम नामा झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल घर, घर मेला सहिज सुभाया। मेला हरि शाह सुल्तान, पाया पुरख अगम्म। धर्म वखाए इक्क निशान, निहकर्मी करे कर्म। सति सरूपी इक्क बबाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, ना मरे ना पए जम्म। शब्द बिबाणा हरि भगवन्त, एका एक रखांयदा। गुरमुख चढ़ाए साचे सन्त, साची सेवा आप कमांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, दर साचा इक्क सुहांयदा। दर सच्चा दरबार, हरि सुहांयदा। सचखण्ड दुआरे खोल्ह् किवाड़, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। गुरमुख साजण साचे लाड़, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। शब्द सरूपी पकड़े वाग, लोआं पुरीआं पार करांयदा। जूठी झूठी क्रिया धोवे दाग़, सच सुच्च इक्क वखांयदा।

सरन सरनाई जो जन जाए सतिगुर पूरे लाग, राए धर्म फंद कटांयदा। त्रैगुण माया बुझे आग, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ांयदा। मेल मिलाए कन्त सुहाग, सुरत सवाणी शब्द हाणी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण मीत अतीत, आपणे आप जगांयदा। गुरमुख सोया जाए उठ, गुर सतिगुर आप जगाईआ। सतिगुर पूरा जाए तुठ, देवे दरस बेपरवाहीआ। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। नाम लगाए साची चोट, शब्द नगारा इक्क वजाईआ। दूई द्वैती कढ्ढे खोट, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण दर घर साचे सोभा पाईआ । सोभावन्त पाया भगवान, भगती भगत लेखे लाईआ। उत्तम होया विच जहान, जागरत जोत वड्डी वड्याईआ। सुणया राग साचे कान, एका एक सिफ्त सलाहीआ। अमृत मिल्या पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि हरि नर गुरमुख लेखे लाए जन, धन्न धन्न धन्न जणेंदी माईआ।

पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, आदि जुगादी एक एकँकारया। खेले खेल दो जहाना, आप आपणी कल वरता रिहा। निरगुण जोती जोत महाना, आदि निरँजण डगमगा रिहा। एका वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआर आप बणा रिहा। लोआं पुरीआं खेल महाना, शब्द शब्दी डंक वजा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव आपणी सेवा आप लगा रिहा। लक्ख चुरासी हो प्रधाना, आप आपणा संग निभा रिहा। पंज त्रै वेस वटाना, त्तत्व तत्त समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकार, निरगुण खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आप करा रिहा। खेल अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक करांयदा। अबिनाशी करता वस्सया सच महल्ला, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। नेहचल धाम धाम अटला, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण दीपक बाती जला, जोती नूर डगमगांयदा। आपणी शक्ती आपे रला, आप आपणे रंग समांयदा। आपणा आसण आपे मल्ला, आपे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप आप अख्वांयदा। सति सरूप हरि मेहरवान, एका रंग समाईआ। जोती जोत जोत महान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर बैठ मकान, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपणा देवे धुर फ़रमान, आपणा शब्द जणाईआ। शब्द दाता वड बलवान, निरभउ आप हो जाईआ। निरवैर खेले खेल महान, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित नौजवान, ना मरे ना जाईआ। थिर घर वसे श्री भगवान, बीठल बीठलो नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, नाउँ निरँकारा आप अख्वाईआ। नाउँ निरँकार निरगुण धार, हरि आपणी आप उपांयदा। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखांयदा। आपे करे मंगला चार, राग अनादी आपे गांयदा। आपे वसे धूंआँधार, सुन्न समाध आप हो जांयदा। आपे आसण सिँघासण कर जोत उज्यार, शाहो शाबाश आप अख्वांयदा। आपे पावे रासण आपणे दुआर, मण्डल मण्डप आप उपांयदा। आपे रवि ससि करे उज्यार, जोती जोत जगांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, आपणी आस करांयदा। आपे त्रैगुण माया भर भण्डार, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। आपे पंज तत्त कर प्यार, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपे सरगुण मेला अपर अपार, निरगुण आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला कर सहारा, आपे वेखे वेखणहारा, दिस किसे ना आंयदा। वेखणहार पुरख समरथ, एका एक एकँकारया। आदि जुगादि चलाए रथ, जुग जुग खेल अपारया। शब्द डोरी पाए नथ्थ, लोआं पुरीआं आप बंधा रिहा। ब्रह्मण्ड खण्ड देवे वथ, शब्द जैकारा एका ला रिहा। वसणहारा घट घट, अन्तर रूप वटा ल्या। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, नाद अनादी नाद वजा ल्या। शब्द अनादी साचा नाद, हरि हरि आप वजांयदा। आप सुणाए ब्रह्म ब्रह्माद, आपणा ढोला आपे गांयदा। आप आपणा रख्या याद, आपे भेव खुल्हांयदा। आपे रूप मोहणी माधव माध, आप आपणा वेस वटांयदा। आपणा घर आपे लाध, आपे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला एका एक अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला वरताईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट डेरा लाईआ। मानस मानुक्ख कर त्यार, आपणी रचन रचाईआ। नौ दर खोल्हे जगत किवाड़, साची रचन रचाईआ। घर विच घर कर त्यार, आपे बैठा आसण लाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। नाद नाद शब्द धुन्कार, अनहद साचा ताल वजाईआ। सर सरोवर अमृत धार, काया मन्दिर आप रखाईआ। आत्म सेजा मीत मुरार, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी खेल खिलाया, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया, आपणा हुक्म सुणांयदा। संसारी भण्डारी नाउँ धराया, लाए दीबाण आप जणांयदा। आपणा भेव ना किसे जणाया, भेव अभेद भेव छुपांयदा। जुगा जुगन्तर खेल खिलाया, जुग करता आप अख्वांयदा। आपणा शब्द राग अल्हाया, चारे वेद उपजांयदा। चारे खाणी वंड वंडाया, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड आपे डेरा लांयदा। शब्द अगम्मी मेल मिलाया, ब्रह्मण्डी खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे रुशनाईआ। निरगुण

नूर परवरदिगार, एका नूर इलाहीआ। एका वसे धाम न्यार, दिस किसे ना आईआ। मुकामे हक्क सांझा यार, सगला संग निभाईआ। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। एका राम राम रहिमान एका एक एकँकारया। एका गुणी गुण ग़ैन, गावत गावत भेव कोई ना पा रिहा। एका मुख खोल्ले ऐन, अल्फ़ डण्डा मीम नुक्ता ग़ैन ना कोई रला ल्या। आपे जाणे आपणी कल्याण, तालिब तल्ब आप बणा ल्या। आपणे मन्दिर आपे बहि बहि चीना, आपणा कलमा आप पढ़ा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला ल्या। राम नामा हो उज्यार, आपणा डंक वजाईआ। खेले खेल पुरख करतार, करनी करता किरत कमाईआ। जोत जगाए विच संसार, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां करे इक्क प्यार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, स्वच्छ सरूपी दरस दखाईआ। कमलापाती मीत मुरार, दीवा बाती इक्क रखाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर धारा इक्क चलाईआ। खुल्ले कँवल होए उज्यार, उलटी नाभी आप भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस दरवेश नरेश आपणा आप वटाईआ। दर दरवेश इक्क इकल्ला, आदि जुगादि समाया। सच सिँघासण एका मल्ला, थिर घर डेरा लाया। लोकमात आवे कर वल छला, जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। खेले खेल हरि हरि मीत, अचरज रीत चलाईआ। जीवां जन्तां परखे नीत, निज घर बैठा आसण लाईआ। जन भगतां दस्से सच प्रीत, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। राग सुणाए सुहागी गीत, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। मन मनुआ मन लए जीत, मति मतवाली ना दए दुहाईआ। बुध बिबेक ठंडी सीत, सांतक सति सति वरताईआ। आपे वसे हरिजन चीत, आपणा नाम आप जपाईआ। आप सुहाए काया मन्दिर देहुरा सच मसीत, घर साचे आसण लाईआ। बैठा रहे इक्क अतीत, निरगुण वड वड्डी वड्याईआ। एका एक रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, सर्ब कल आपे समरथ आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाईआ। रथ रथवाही बेपरवाह, आपणी सेव कमांयदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात वेस वटांयदा। गुर पीर आप अख्वा, अवतार आपणा नाउँ धरांयदा। जन भगतां देवे सच सलाह, साचे मार्ग लांयदा। लक्ख चुरासी कट्टे फाह, आवण जावण फंद कटांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, नाम नामा आप उपजांयदा। सदा सुहेला पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, साची चोग नाम चुगांयदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग

९५०
०८

जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस वटंदड़ा, पारब्रह्म करतार। लोकमात जोत जगन्दड़ा, पंज तत्त करे प्यार। निरगुण सरगुण नाउँ रखंदड़ा, खेले खेल विच संसार। गुरमुख सज्जण मीत आप अख्वंदड़ा, देवे नाम शब्द अधार। दीवा बाती इक्क वखंदड़ा, कमलापाती जोत उज्यार। अन्धेरी राती मेट मिटंदड़ा, मेल मिलावा एकँकार। लहिणा देणा मूल चुकंदड़ा, पूर्ब लेखा लए विचार। हरिजन साचे पार करंदड़ा, आपे जाणे आर पार। मँझधार ना कोई रुढ़ंदड़ा, भव सागर करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लए मात अवतार। लोकमात हरि अवतारा, हरि हरि रचन रचाईआ। आपे खेले खेल अपारा, निरगुण वड्डी वड्याईआ। वेद कतेब ना पावण सारा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणा नाउँ धराईआ। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, नाम जैकारा एका लांयदा। सतिजुग हो प्रतक्ख, एका रूप समांयदा। त्रेता आपणा आप किया वक्ख, राम रामा डंक वजांयदा। द्वापर कृष्ना अलक्खणा अलक्ख, एका अलख जगांयदा। कान्हा कृष्ना एका पक्ख, किसना सुखला ना कोई वखांयदा। वसणहारा घट घट, लोकमात खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम लाए सट्ट, डंक नगारा इक्क वजांयदा। आपे प्रगट होए खेल बाजीगर नट, ईसा मूसा नाउँ धरांयदा। आपे आपणा कलमा रिहा रट, चार यार संग मुहम्मद नाता जोड़ जुड़ांयदा। आपे जोती नूर लट लट, नानक काया डेरा लांयदा। आपे खोल्ले चौदां हट्ट, चौदां तबकां वेख वखांयदा। आपे बोले नाम सति, सति नाम सति आप हो जांयदा। आपे पंचम बीजे आपणे वत, आपे फल फुल्ल लगांयदा। आपे पाणी देवे झट्ट, आपणी सेवा आप लगांयदा। आपे गोबिन्द जोद्धा सूरा होए समरथ, सर्ब कल आप अख्वांयदा। आपे आपणी हाढ़ी लए कट्ट, दूसर कोए ना संग रलांयदा। कलिजुग खेले खेल बाज़ीगर नट, कूड़ी रास नचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि हरि वेस, आपणा आप वटाईआ। भेव ना पायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, कोटन कोटि दर बैठे सीस झुकाईआ। लिख लिख थक्का चारे वेद, वेद व्यासा भेव ना राईआ। पुराण अठारां करन आदेस, शास्त्र सिमरत रहे गाईआ। गीता ज्ञान आपे वेख, आपणा गुण आप जणाईआ। अञ्जील कुराना लिखी रेख, हँसा बंसा करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी इक्क अदेस, नीचो नीच सीस झुकाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता किसे दी चले ना कोई पेश, आप उपाए आपे लए मिटाईआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल हमेश, खेलणहारा आप अख्वाईआ। सचखण्ड दुआरे वस्सया नर नरेश, हुक्मी हुक्म सर्ब भुवाईआ। आपे नानक निरगुण मोढे धरे खूंडी भूरी खेस, आपणा मुख छुपाईआ। आपे दाता जोद्धा दस दस्मेश, आप आपणा भेट चड़ाईआ। पुरख अकाल रिहा वेख, भुल्ल रहे ना राईआ। जानणहारा रिखी केस, कवण

गोवर्धन रिहा उठाईआ। एका जाणे मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाए भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी लिख्या लेख, हरि का लेखा ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। अगम्मड़ी कार हरि कराए, करन करावणहारा। ना कोई दूसर संग रलाए, खेले खेल पुरख निरँकारा। तिन्नां लोकां डेरा ढाहे, चौथे घर वसे सच घर बारा। चौदां हट्टां भेव खुल्हाए, चौदां तबकां मारे मारां। ब्रह्मा वेता रो रो नीर वहाए, कलिजुग अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ारा। शंकर निउँ निउँ सीस झुकाए, गल पाई कंठ माला। विष्नूं वेस आप वटाए, आपे खेले खेल निराला। पारब्रह्म प्रभ भेव ना राए, जगत विद्या होए बेहाला। चौदां विद्या दिस ना आए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल ब्रह्मण्ड, आपणी पाए आपे वंड, वरभण्डी खोज खुजाईआ। वरभण्डी हरि खोजणहारा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। ब्रह्मण्डी देवणहार सहारा, जेरज अंडी डेरा लांयदा। तोड़े गंढुां तोड़णहारा, गढ़ हँकार रहिण ना पांयदा। तेज प्रचण्डी तेज कटारा, नाम खण्डा हत्थ उठांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। दहि दिशा चार कुन्ट पावे सारा, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। सत्तां दीपां हो उज्यारा, निरगुण साचा चन्द चढ़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा, आपणा धक्का आपे लांयदा। धरत मात करे पुकारा, अन्तर रो रो नीर वहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता, कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। वेखे विगसे करे विचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ ख़ुदाई परवरदिगार, अकल कला अख्वाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, बेऐब रूप वटाईआ। नबी रसूलां करे विचार, कुतब गौंस शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर वेख वखाईआ। खेले खेल गुप्त ज़ाहर, अन्दर बाहर वड्डी वड्याईआ। धरत धवल ना चुक्के भार, पापां दब्बी रही कुरलाईआ। साध सन्त रहे पुकार, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। कलिजुग जीव होए विभचार, नाता तुट्टा भैणां भाईआ। ना कोई नार कन्त भतार, सुहाग कन्त ना कोई हंढाईआ। मात पित ना कोई प्यार, पिता पूत ना कोई वड्याईआ। साक सज्जण ना मीत मुरार, झूठे धन्दे रहे झूठे बंधन पाईआ। कोई ना गावे हरि निरँकार, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। साध सन्त करन प्रचार, धीआं भैणां रहे तकाईआ। तट तीर्थ होए ख्वार, पुरष नारी नंगे रहे तारीआं लाईआ। किसे ना मिल्या हरि का दुआर, हरि की पौड़ी ना कोई चढ़ाईआ। फिर फिर थक्के नौ दुआर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। मिल्या मेल ना मीत मुरार, आसा तृष्ना ना कोई चुकाईआ। काया तुट्टा ना गढ़ हँकार, मन का मणका ना कोई फिराईआ। सुरत सुवाणी ना करे प्यार, गुर शब्द ना जोड़ जुड़ाईआ। साचे मन्दिर अन्ध अँध्यार, दीवा बत्ती ना कोई

९५२ ०८

टिकाईआ। भरमे भुल्ला भरम संसार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। कलिजुग जोद्धा वड बलकार, आपणी करनी रिहा कराईआ। चारों कुन्ट करे खुआर, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सति सन्तोख गए हार, जत लंगोट ना कोई बंधाईआ। ख़ाकी ख़ाक होया संसार, साची ख़ाक ना तन रमाईआ। जटा जूट वेख पसार, झूठा बंधन गल विच पाईआ। गुरमुख विरला करे विचार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। दरस दखाए अगम्म अपार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। नाता तुटे सर्ब संसार, सगला संग तजाईआ। पुरख अबिनाशी कन्त भतार, मिले मेल साचे माहीआ। नार सुहागण सोहे बंक दुआर, गुरमुख साचे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक पुरख सुल्ताना, एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जुग जुग वेस वटांयदा। शब्द अनादी राग तराना, एका राग अलांयदा। जन भगतां वेखे मार ध्याना, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। सति सरूपी बद्धा गाना, साचा सगन मनांयदा। चरन धूढ़ कराए सच्चा इशनाना, दुरमति मैल धवांयदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, साचा जल प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कल कल्की आप अख्वांयदा। कल कल्की हरि धार अवल्ली, आपणी आप चलाईआ। निरगुण जोत इक्क इकल्ली, अकाल पुरख वड वड्याईआ। लोकमात होका देवे गलीओ गली, मनमुख कोए उठ ना जाईआ। खेले खेल वल छली, अछल अछल्ल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए अमृत फली, गुरमुखां चोग चुगाईआ। गुरमुख चुगाए साची चोग, आत्म रस जणांयदा। आत्म सेजा साचा भोग, साचा दर सुहांयदा। जगत विछोड़ा कट्टे विजोग, बिरहों रोग मिटांयदा। दर घर मेला सति संजोग, सगला संग निभांयदा। दरस दिखाए हरि अमोघ, स्वच्छ सरूप रूप विटांयदा। चरन प्रीती साचा जोग, साचा मार्ग एका लांयदा। सोहँ शब्द सच सलोक, सतिजुग साचा राह वखांयदा। कलिजुग लहिणा देणा चुक्के चौदां लोक, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। लक्ख चुरासी देवे झोक, त्रैगुण अग्नी मट्ठ तपांयदा। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सज्जण लए वर, आप आपणा जोड़ जुड़ांयदा। गुरमुखां गुर नाता जोड़, गुर शब्दी शब्द समाईआ। कलिजुग अन्तिम आया वागां मोड़, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। सरसे लग्गी निभे तोड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। शाह सवारा चढ़या नीले घोड़, नीला नीली धारों पार कराईआ। गुरमुखां अन्तिम जाए बौहड़, आप आपणा रूप वटाईआ। दो जहानां लाए एका पौड़, अद्धविचकार डण्डा ना कोई लगाईआ। जगत तृष्ना मेटे औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, गुरमुख

साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका शब्द वजाईआ। डंका शब्द निशान, हरि वजांयदा। खेले खेल श्री भगवान, भेव कोई ना आंयदा। दो जहानां पावे आण, हुक्म सुणांयदा। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, बणत बणांयदा। लोकमात वेखे मार ध्यान, गुरमख उठांयदा। मनमुख ना सके कोई पछाण, माया पर्दा पांयदा। सर्ब जीआं दा जाणी जाण, आप आपणा मुख छुपांयदा। कलिजुग मेटे झूठ मकान, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सन्त सुहेले कर परवान, गुर चेले मेल मिलांयदा। वेद पुराण अञ्जील कुरानी खाणी बाणी सारे गाण, हरि का भेव कोई ना पांयदा। भगत वछल गुण निधान, गुणवन्ता नाउँ रखांयदा। गुरसिक्खां वखाए पद निरबान, परमानंद समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्त संदेश, लोकमात आप सुणांयदा। अन्त संदेसा कलिजुग धार, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। कलिजुग काया तोड़े गढ़ हँकार, हउमे गढ़ रहिण ना पाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा होया ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। इक्क हदीस पढ़ाए सर्ब संसार, कलमा कायनात आप जणाईआ। वाहिगुरू अल्ला एका धार, राम कृष्न करे पढ़ाईआ। बरनां वरनां कर ख्वार, साची सरन इक्क तकाईआ। पुरख अकाल मीत मुरार, दूसर होए ना कोई सहाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम बहाईआ। एका नाम शब्द जैकार, एका नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डंक इक्क वजाईआ।

✪ ४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सुरिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड भूलर ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण इक्क ओंकार, आदि जुगादि समांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, अलख अगोचर अगम्म आप करांयदा। जोती नूर नूर उज्यार, पुरख अकाल नाउँ धरांयदा। साची सूरत बेऐब परवरदिगार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप खलांयदा। खेलणहार श्री भगवाना, एका रंग समाया। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे विच समाया। आपे शाह सुल्तान वड राज राजाना, शाहो भूप आप अख्वाया। आपे गुणवन्ता हरि गुण निधाना, गहर गम्भीर नाउँ धराया। आपे चतुर सुघड़ हरि स्याणा, लेखा लेख ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर प्रगटाया। नूर उज्यारा पारब्रह्म, आपणा आप करांयदा। हड्ड

मास नाड़ी ना दिसे चम्म, पंज तत्त तत्त ना कोई रखांयदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमांयदा। हरख सोग ना ख़ुशी ग़म, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, एका रंग रंगांयदा। एका रंग हरि बनवारी, आपणा आप रंगाईआ। निरगुण जोत नूर उज्यारी, एका एक डगमगाईआ। आदि निरँजण खेल अपारी, खेल खिलंता बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर वसे अगम्म अपारी, आप आपणा आसण लाईआ। थिर घर बैठा लाई ताड़ी, दिस किसे ना आईआ। ना कोई मुच्छ ना कोई दाढ़ी, मूंड मुंडाए ना कोई रखाईआ। ना कोई नाता जोड़े बहत्तर नाड़ी, मन मति बुध ना कोई रखाईआ। ना कोई समुंद सागर डूँघी ख़ाड़ी, धरत धवल ना कोई वखाईआ। पंज तत्त ना कोई हँकारी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हल्काईआ। ना कोई खण्डा तीर कटारी, शस्त्र बस्त्र ना कोई हंढाईआ। आदि जुगादि खेल न्यारी, आपणी आप कराईआ। थिर घर सोहे सचखण्ड सच्चे दरबारी, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आपणा नाउँ रखाईआ। अबिनाशी करता करनेहारा, अकल कला वरतांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, भेव कोई ना पांयदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। साचा मन्दिर कर त्यारा, सचखण्ड आप सुहांयदा। ना कोई दीसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोई सुहांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, घर साचे आसण लांयदा। ना कोई दीसे चोबदारा, ना कोई सीस झुकांयदा। ना कोई गुर पीर साध सन्त अवतारा, शब्द नाद धुन ना कोई वजांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, आप आपणा वेस वटांयदा। पवण पाणी ना कोई विचारा, गगन मण्डल ना कोई सुहांयदा। ना कोई रवि ससि दिसे सितारा, मण्डल मण्डप ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे सच महल्ला, नेहचल धाम उच्च अटला, कमलापाती एका एका एक सुहांयदा। एका एक एक करतारा, एका एक अख्वाईआ। एका एक निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। एका एक सति सरूप हरि सिरजणहारा, सति सति सति अख्वाईआ। एका पुरख अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, आपणी आप चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारा, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आप समाईआ। आदि जुगादी हरि हरि खेल, आपणा आप करांयदा। आपे करे आपणे मेल, आपे वेस वटांयदा। आपे निरगुण दीवा बाती पाए तेल, आपे डगमगांयदा। आपे दाता सूरा सरबंग सदा सुहेल, आपे सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणा नाउँ धरांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, दूसर नांही कोए। थिर घर बैठ सच्चे दरबारा, आपे जाणे आपणी सोए। आप आपणा कर प्यारा, आप

आपणे रंग बलोए। आपे कन्त आप भतारा, आपणी सेजा आपे सोए। आपे पुरख आपे नारा, आप आपणा खेल खिलोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपार, जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। नूर उजाला हरि गोपाला, अकल कला वरताईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। शब्द सिँघासण खेल निराला, पुरख अबिनाशण सोभा पाईआ। हरिजन करे आप प्रितपाला, प्रितपालक वड वड्याईआ। आपणा मार्ग जाणे राह सुखाला, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। आपे काल आपे महांकाला, अकाल मूर्त रूप बेपरवाहीआ। आपे तत्त जोत ज्वाला, आदि शक्ति आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंक बणाईआ। आप आपणा अंक बणा, आपणी खेल खिलांयदा। आपणा सुत्त आप उपजा, आपे कुक्ख उठांयदा। आपणी गोदी आप उठा, आपे वेस वटांयदा। सचखण्ड दुआरा रचन रचा, साचा धाम जणांयदा। दाता दानी बेपरवाह, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख निरँजण इक्क अलक्ख जगांयदा। अलक्ख निरँजण अलक्ख जगा, आपणी अलक्ख जगाईआ। आपे बणे बेपरवाह, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपे भिच्छया देवे पा, झोली आपे रिहा भराईआ। आपे पूरन इच्छया आपणी लए करा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि

जुगादि वेस वटाईआ। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक कराईआ। आपे फलया आपे फुला, फुल्ल फुलवाड़ी आप हो जाईआ। आपणी करता कीमत पाए आपणा मुला, आपे दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा सच दरवाज़ा, हरि साचा आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़ा, निरगुण आसण लांयदा। आदि निरँजण रचया काजा, अबिनाशी करता वेख वखांयदा। सति सरूपी देवे दाजा, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, हरि साचा आप उपजाईआ। जोत जगाए आदि निरँजणा, वड दाता बेपरवाहीआ। नाउँ रखाए दर्द दुःख भय भञ्जणा, दूसर भय ना कोई रखाईआ। आपे सर सरोवर करे कराए मजना, आपणा ताल आप सुहाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सच नगारा एका वज्जणा, पुरख अकाल इक्क वजाईआ। आपणा बणे आपे सज्जणा, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड वेखे साचा घर, थिर घर अन्दर डेरा लाईआ। सचखण्ड सच दुआरा, हरि साचा आप सुहांयदा। थिर घर करे जोत उज्यारा, निरगुण बाती दीप जगांयदा। अन्दर मन्दिर पुरख करतारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आदि शक्ति कर प्यारा, साचा संग निभांयदा। जोती नारी जोत भतारा, साचा

वेस वटांयदा। आपे जाए सुत्त दुलारा, शब्दी नाउँ धरांयदा। शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, शाह सुल्तानां हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगोचर बेपरवाह, शब्द सुत्त ल्ए उठा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द सुत्त वड बलवाना, हरि हरि आप जगाया। आपे देवे धुर फ़रमाना, आप आपणा हुक्म सुणाया। थिर घर वेखे सच मकाना, सचखण्ड दुआरा इक्क उपाया। एका राग इक्क तराना, एका मंगल गाया। एका पद रक्खे निरबाणा, दूसर दर ना कोई सुहाया। एका ओट श्री भगवाना, सिर समरथ हथ्थ टिकाया। सति सरूपी बन्ने गाना, साचा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल, अजूनी रहित वेस वटाया। अजूनी रहित करनी करता, आपणी किरत कमाईआ। सुत्त दुलारा वेस दर दरवेश, अनेका रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत दीआ बाती, कमलापाती आप जगांयदा। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी, सच सिँघासण आसण लांयदा। शाहो शाबाशी पावे रासी, आपणा मण्डल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा दर, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा इक्क सुहाया, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड अन्दर डेरा लाया, घर घर विच मेल मिलाईआ। मेल मिलावा सहिज सुभाया, विछड़ कदे ना जाईआ। एका रूप आप वटाया, दूजी धार ना कोई जणाईआ। तीजा दर ना कोई खुल्हाया, चौथे घर ना वज्जे वधाईआ। पंचम मेल ना कोई मिलाया, साची सखीआं ना मंगल गाईआ। छेवें छप्पर ना कोई रखाया, अट्ठां तत्तां विच ना आईआ। अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध ना नाल रलाया, नौ दर ना खोल्ह खुल्हाईआ। जगत वासना ना कोई भराया, दस्म दुआरी ना डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साची रचन रचाईआ। एका बैठा हरि भगवन्त, भगवान रूप बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणा आदि अन्त, आदि आदि आप अख्वाईआ। आप बणाए आपणी बणत, सुत्ते प्रकाश वेख वखाईआ। आपे महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, मण्डल रास खेल तमाशा, आपणा आप कराईआ। खेल तमाशा कर कर वेखे, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपणे नेत्र आपे पेखे, दिस किसे ना आईआ। आपे दर दरबान दर दरवेशे, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सुत्त शब्द शब्द समझाईआ। सुत शब्द हो त्यार, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, आपणा आसण लांयदा। रवि ससि कर त्यार, जोती जोत डगमगांयदा। जल बिम्ब वेख विचार, धरत धवल उपांयदा। आकाश प्रकाश इक्क प्यार,

९५७ ०८

एका रूप वटांयदा। आपणी किरपा आपे धार, निरगुण खेल करांयदा। विष्नूं वंसी वेस अपार, विश्व रूप वटांयदा। अमृत जल भर भण्डार, कँवल नाभ खुल्हांयदा। खिल्या कँवल होई गुलज़ार, ब्रह्मा मुख सलांहयदा। त्रैगुण मीता दए अधार, ठांडा सीता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे साचा वर, सुन्न समाध बोध अगाध आप जणांयदा। आपे सञ्झ आप सवेर, दिवस रैण आप हो जांयदा। आपे देवणहारा गेड़, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे लहिणा देणा दए निबेड़, ना कोई दूसर संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। मण्डल मण्डप हरि हरि माढ़ी, आपणी आप सुहांयदा। रवि ससि सूरज चन्न सतारी, साची सेवक सेव लगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यारी, आपणे हुक्मे हुक्म फिरांयदा। पंज तत्त त्रैगुण खेल न्यारी, पुरख बिधाता नाता जोड़ जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी खेल न्यारी, आपे वेख वखांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, घर घर विच आप टिकांयदा। पवण स्वासी सेवादारी, स्वास स्वासा नाम धरांयदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरी, आप आपणा खेल खिलांयदा। वरभण्डी हरि खेल न्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, आपणा राग अल्हाया। आपणा नाम बोल जैकारा, आपे मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेल रघुराया। शब्द जैकारा आपे बोल, आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रिहा तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ढोल, मृदंगा रिहा हिलाईआ। सदा सुहेला वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे ब्रह्मा वेता जाए मौल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे अन्तर जाए मौल, आपे कँवल नाभ भुवाईआ। आपे लेखा जाणे धरत धौल, आपे धवला भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटाईआ। आदि जुगादी खेल खिलंता, भेव कोई ना पांयदा। लक्ख चुरासी वेस वेस वटंता, निरगुण जोत जगांयदा। पंच विकार संग रखंता, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाउँ रखांयदा। आसा तृष्ना जोड़ जुड़ंता, हउमे हँगता गढ़ बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचन आपे रच, आपे वेख वखाईआ। आपे अन्दर वड़या सच्च, सच आप समझाईआ। आपे काया माटी भाण्डा कच्च, आपे भन्ने घड़ वखाईआ। आपे नौ दुआरे रिहा नच्च, आपे दसवें सेज सुहाईआ। आपे त्रैगुण अग्नी जाए मच्च, आपे सांतक सति रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, अकल कला वरतांयदा। निरगुण सरगुण बन्न्हे धारा, सरगुण निरगुण वेस वटांयदा। दोहां वचोला अगम्म अपारा, शब्द शब्दी

नाउँ धरांयदा। दिस ना आए विच संसारा, रूप रंग ना कोई समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलंता शाह सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शब्द झुलाए इक्क निशान, एका हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव पाए आण, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हो प्रधान, सत्तां दीपां वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी जाणी जाण, घट घट वेखे दिस ना आईआ। गुरमुख साचे लए पछाण, जन भगतां देवे नाम वड्याईआ। काया मन्दिर सच मकान, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत जगे महान, जोत निरँजण डगमगाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुनकान, राग अनादी आप सुणाईआ। सर सरोवर इक्क महान, कागों हँस बणाईआ। जूठी झूठी मिटे दुकान, पंज तत्त ना कोई हल्काईआ। आत्म सेजा कर परवान, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। दरस दिखाए हो मेहरवान, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। सुरती शब्दी इक्क ध्यान, एका रंग समाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका मेला सहिज सुभाईआ। आदि जुगादी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम करे वड्याईआ। वड वड्डी वड्याई हरि हरि नाउँ, हरि साचा नाउँ उपजांयदा। सन्त सुहेले पकड़े बाहों, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आपे बणे पिता माउँ, हरिजन बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, एका साची चोग चुगांयदा। नगर खेड़ा वेखे इक्क ग्राउँ, काया मन्दिर सोभा पांयदा। करे कराए सच न्याउँ, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा नाउँ हरि करतार, आपे आप रखाईआ। लोकमात लए अवतार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण मेल विच संसार, काया चोला इक्क हंढाईआ। शब्द बोल सच्चा जैकार, आपणा नाअरा दए लाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साची बन्ह धार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। चारे वेद कर विचार, आपे वेख वखाईआ। भगत सुहेले लए उभार, आप आपणा मेल मिलाईआ। दूती दुष्ट कर खुआर, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर जाणे बिध घट घट अन्तर, आपणा लेखा आपे पाईआ। लेखा लिखणहार भगवाना, भेव अभेद ना कोई छुपांयदा। अबिनाशी करता गुण निधाना, गुणवन्ता वेस वटांयदा। शब्द अनादी धुन तराना, लोकमात आप सुणांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे बन्ह गाना, आपे सगन मनांयदा। जन भगतां करे जगत पछाणा, आपणा नेत्र आप खुलांयदा। आप वखाए पद निरबाणा, परमानंद आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी जुगत आप बंधांयदा। जुगत जगत हथ्थ करतार, राज जोग कमाईआ। प्रगट हो विच संसार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ।

सतिजुग त्रेता खेल अपार, आप आपणा वेस वटाईआ। द्वापर उतरया अन्तिम पार, ना सके कोई बचाईआ। कलिजुग प्रगट हो संसार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। नाल ल्याया इक्क विभचार, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। पंच विकारा भर भण्डार, जीवां जन्तां आप वरताईआ। साधां सन्तां आई हार, दहि दिशा डेरा ढाईआ। कलिजुग तेरा खेल अपारा, हरि साचा आप खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, साचे घाट बहाईआ। खेले खेल खेलणहारा, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दर साचे घर देवे हरि, ना कोई दूसर संग रखाईआ। कलिजुग उठया बाल निधान, दोए जोड़ करे निमस्काररया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, दर मंगे मंग बण भिखाररया। जगत वेखां इक्क मकान, नौ खण्ड पृथमी खोल्ह किवाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मंगे मंग, दर दरवेश बण भिखाररया। कलिजुग मंगे आपणा दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जूठ झूठ कर प्रधान, हरि तेरी वड वड्याईआ। एका अक्खर होए निशान, दूसर रूप वटाईआ। जाणे खेल दो जहान, दो जहानां भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मंगणहारा तेरे दर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कलिजुग सीस रिहा झुका, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पुरख अबिनाशी वस्त झोली पा, मंगण आया दर दुआरा। तेरा नाअरा देवां ला, करां खेल विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा वड भण्डारा। कलिजुग कूके दए दुहाईआ, नेत्र रो रो नीर वहाया। बाल अवस्था कर कुड़माईआ, आपणा नाता जोड़ जुड़ाया। एका संग रिहा निभाईआ, दूसर वस्त ना कोई तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मंगण तेरा आया। तेरा दर उच्च अपारा, कलिजुग बोल सुणाया। आदि जुगादी वड भण्डारा, तूं वरतारा रिहा वरताया। देवणहार सर्ब संसारा, भुल्ल रहे ना राईआ। एका मंगे मंग भिखारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे दित्ता आपणा वर, बुध मति आप समझाया। साची वस्त झोली पा, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग बस्त्र तन छुहा, जूठ झूठ शृंगार बणाईआ। तत्त विकारा दए वसा, साचा मेल मिलाईआ। एका सिख्या दए पढ़ा, मनमति वड्डी वड्याईआ। गुरमति सभ दी दऐ गंवा, हउमे रोग जणाईआ। झूठे मार्ग देवे ला, सच सुच ना कोई जणाईआ। आपणा रूप रिहा वटा, कलिजुग बैठा आसण लाईआ। द्वापर मिल्या सच्चा थाँ, लोकमात गया तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर देवे बेपरवाहीआ। कलिजुग बाल निधान, दिवस दिवस राह तकांयदा। सदी सदी होया नौजवान, आप आपणा अंग हिलांयदा। चारों कुन्ट उठ बलवान, आपणा चक्र आप फिरांयदा। नाल रलाया पंज शैतान, साचा हुक्म सुणांयदा। मन मति मेला बेईमान, सच ईमान ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणी रचन आप रचांयदा। कलिजुग चार कुन्ट ललकार, आपणा आप लगांयदा। कर कर वेस गया हार, ना कोई पन्ध मुकांयदा। इक्क इकल्ला ना पावे सार, हरि का भेव कोई ना आंयदा। दूजी वारी मंगे मंग बण भिखार, अग्गे हरि हरि झोली डांहयदा। तूं दाता दानी सिरजणहार, सर्ब जीआं रिज़क सबांयदा। खाली कोई ना दिसे भरे रहिण भण्डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर तेरा इक्क तकांयदा। पुरख अबिनाशी देवे वर, कलिजुग कूड़ा आप उठाया। तेरा संग देवे हरि, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। ईसा मूसा जोत धर, पंज तत्त करे रुशनाया। राम नाम जाए हरि, एका कलमा दए पढ़ाया। इक्क मुहम्मद अन्दर वड़, चार यारी ल्ए उपजाया। उच्ची चोटी आपे चढ़, जल्वा नूर आप वखाया। आपणी हदीस आपे पढ़, कलमा अमाम आप उपजाया। आपे कायनात वेखे खड़्, आप आपणा नैण खल्हाया। आपे खोल्हे चौदां दर, चौदां तबकां मूल मुकाया। आपे घाड़ण ल्ए घड़, घड़णहार दिस ना आया। कलिजुग तेरी बांह ल्ए फड़, दोहां मेला मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा खेल खिलाया। संग मुहम्मद चार यार, नाता जोड़ जुड़ाईआ। अल्ला राणी कर प्यार, साचा संग निभाईआ। एका नाअरा बोल जैकार, निउँ निउँ दए सुणाईआ। ऐनलहक्क हक्क पुकार, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। मुकामे हक्क सांझे यार, आपणी करनी रिहा कमाईआ। लाशरीक बेऐब परवरदिगार, वाहद इक्क रूप वटाईआ। तेरा करे सच प्यार, आपणा पल्लू नाम बंधाईआ। जगत क्रिया करे ख्वार, एका कलमा आप पढ़ाईआ। शरअ शरीअत मारे मार, मुलां शेख़ मुसायक काज़ी पीर नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका कलमा रिहा सुणाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, हरि साचा आप सुणांयदा। मुहम्मदी बद्धा एका गाना, साचा मौली तन्द रंगांयदा। हथ्थी मैहन्दी खेल महाना, एका रंग रंगांयदा। तीस बतीस गाए गाणा, आपणा राग सुणांयदा। भेव खुल्हाए अञ्जील कुराना, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे तीर आपे निशाना, आपे चिल्ला हथ्थ उठांयदा। आपे मारे खिच कमाना, आर पार आप दरसांयदा। आपे चौदां तबकां हट्ट खुल्हाणा, मुहम्मद बूझ बुझांयदा। नौ दुआरे जगत मकाना, पंचम मोह समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचांयदा। मुहम्मद मिल्या साचा वर, हरि साचे आप सुणाया। एका कलमा लैणा पढ़, एका अल्फ अल्फी पाया। एका पौड़े जाणा चढ़, एका डण्डा हथ्थ फड़ाया। चार कुन्ट वेखणा खड़्, तेरा नाअरा नाम लगाया। ऐड़ा अक्खर अद्ध विच बैठा वड़, दूजा घर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाया। साची सिख्या हरि सुल्तान, आपणी आप समझाईआ। महिबान

९६१
०८

बीधो हरि मेहरवान, नूरो नूर उपजाईआ। आपे कलमा दीन ईमान, आपे मुस्लिम रूप वटाईआ। आपे शरअ शरीअत वेख जहान, आप आपणी ईन रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, इक्क कलमा रिहा समझाईआ। अन्त मुहम्मद हरि समझाए, नेत्र नैण उग्घाड़या। थिर कोई रहिण ना पाए, जो दीसे विच संसारया। सतिजुग त्रेता दिस ना आए, द्वापर होए ना कोई उज्यारआ। कलिजुग कूड़ा डंक वजाए, चारे कुंट फिरे हंकारया। तेरा साचा संग निभाए, सगला साथी इक्क अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका मति समझा रिहा। इक्क मुहम्मद नेत्र खोलू, आपणा राह तकांयदा। अन्तिम अन्त चार यार ना दिसण कोल, ना कोई संग निभांयदा। उम्मत उम्मती ना तोले तोल, ना कोई कंडा हथ्थ उठांयदा। चार कुन्ट प्या घोल, घोल घोली ना कोए घुंमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम अन्त आप जणांयदा। अन्तिम खेल हरि जणाए, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग कूड़ा वेख वखाए, कूड़ी क्रिया कर हल्काईआ। पंज तत्त तत्त लड़ाए, दिवस रैण करे लड़ाईआ। अग्नी अग्ग अग्ग जलाए, सांतक सति ना कोई वखाईआ। सूरा सरबंग खेल खिलाए, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दित्ता साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। मुहम्मद करया आपणा ज़ोर, ज़ोरू ज़र प्रनांयदा। कूड़ कुड़यारा कलिजुग पकड़ी डोर, चारों कुन्ट सरन लगांयदा। दोहां विचोला अन्ध घोर, पंज चोर फेरा पांयदा। जूठ झूठ ना सके कोई होड़, ना कोई बाहर कढांयदा। अबिनाशी करता जुगा जुगन्तर आपे चढ़या आपणे घोड़, आपणा वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण जाए बौहड़, नानक नाम धरांयदा। वेखे फल मिट्ठा कौड़, अमृत रस आपणे हथ्थ रखांयदा। चार कुन्ट दौड़ दौड़, कलिजुग अग्नी अग्ग बुझांयदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी औड़, सति प्याला नाम इक्क प्यांअदा। चरन प्रीती साची जोड़, घर साचे मेल मिलांयदा। सस्से उप्पर लाया होड़, साची सिख्या इक्क समझांयदा। ऊड़ा ओंकारा तोले तोल, ऐड़ा आपणी वंड वंडांयदा। ईड़ी इष्ट हरि रिहा मौल, मौला रूप आप अख्वांयदा। सस्सा किला मन्दिर खोलू, काया गढ़ सुहांयदा। पंजवां अक्खर वजाए ढोल, हाहा नाल रलांयदा। हँ ब्रह्म तोल्लया तोल, पारब्रह्म वेस वटांयदा। सच वस्त नानक कोल, निरगुण झोली आप भरांयदा। जन भगतां पर्दे देवे खोलू, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। चार वरनां वसे कोल, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोई वखांयदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कढे पोल, पंडत पांधे आप समझांयदा। कलमा अमाम आपे बोल, आपणा सजदा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रंग रंगांयदा। नानक खण्डा नाम फड़, लोकमात उठ धाया। पुरख अबिनाशी वेखे खड़, आप आपणा मेल मिलाया। निरगुण

अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई रूप वटाया। आपणी विद्या आपे पढ़, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया। कलिजुग कूड़ा रिहा सड़, अग्नी तत्त तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साचा वेख वखाया। कलिजुग कूके दए दुहाई, नेत्र नीर वहन्नया। इक्क मुहम्मद संग रलाई, दर आए साचे भन्नया। पुरख अबिनाशी लए अंगड़ाई, आपे वेखे मार ध्यानया। आपे पुच्छे चाँईं चाँईं, दोहां कोल बहन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटन्नया। मुहम्मद रोवे मारे धा, कूके कूक दुहाईआ। तेरा हुक्म ल्या वजा, तेरी सच सरनाईआ। तेरा बस्त्र तेरा गहिणा गल विच पा, तेरा वेख वखाईआ। तेरा डंका दित्ता वजा, तेरा राग सुणाईआ। तूं दाता बेपरवाह, तेरा भेव कोई ना पाईआ। हँकारीआं देवे गढ़ तुड़ा, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। मेरा माण दित्ता गंवा, नानक जोत कर रुशनाईआ। वेखण जाए थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथमी फेरा पाईआ। मैं वसां केहड़े नगर ग्रां, मक्का काअबा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुण सुत्त सुत्त बलकार, तेरे अंक समाया। तेरा करां सच प्यार, तेरा लेखा लेख लिखाया। तेरा भरया जगत भण्डार, तेरी वंड वंडाया। तेरा तबक तेरी धार, तेरा रंग रंगाया। नौ पंज ख़बरदार, नानक करने आया। चौदां सद होए ख्वार, चौदां चौदां दए गंवाया। अन्तिम लेखा मुक्के विच संसार, लहिणा देणा दए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द रिहा सुणाया। सच्चा शब्द हरि जणा, आपणा बिरध धराईआ। मुहम्मद ढहि प्या सरना, सरनागत इक्क जणाईआ। तेरा लेखा जाणे तूंही बेपरवाह, तेरा भेव कोई ना पाईआ। तेरा नानक तेरा राह, तेरा मार्ग रिहा चलाईआ। तूंही खेल रिहा खिला, ख़ालक ख़लक आप अख्वाईआ। आलम उलमा सर्ब दए भुला, जगत विद्या ना कोई चतुराईआ। पंडत पांधे देणे रुला, रावण गढ़ तुड़ाईआ। दुष्ट हँकारी दए खपा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सतिजुग डेरा दित्ता ढाह, त्रेता पार वखाईआ। द्वापर लेखा दित्ता चुका, कलिजुग वेस वटाईआ। नानक निरगुण जोत जगा, जोती नूर करे रुशनाईआ। आपणा वेस वेख वखा, इक्क इकल्ला फेरा पाईआ। नानक निरगुण रिहा गा, गावत गावत ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। नानक गाए हरि निरँकार, निरगुण निरगुण विच समाया। हउँ भिखारी सेवक सेवादार, मंग मंगण एका आया। ख़िमा ग़रीबी कर प्यार, आप आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहया। नानक सतिगुर बोल जैकारा, हरि हरि आप ध्यांअदा। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, तेरा भेव ना कोई खुल्हांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम

दिसे पार किनारा, आपे वेख वखांयदा। जोत सरूपी लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द डंका वज्जे विच संसारा, सोहँ ढोला रसना गांयदा। तोला तोले तोले तोलणहारा, मोदीख़ाने तेरां तेरां धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। नानक जोती दस अवतार, हरि हरि खेल खिलांयदा। गोबिन्द मीता सुत्त दुलार, पूत सपूता नाउँ धरांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। सीस जगदीश कल्गी तोड़ा सीस सुहाए दस्तार, शस्त्र बस्त्र तन सजांयदा। साचे अस्व हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण लांयदा। लोआं पुरीआं वस्सया बाहर, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबांयदा। कलिजुग अन्तिम बोल जैकार, एका डंका हुक्म वजांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मीता इक्क अतीता, आदि जुगादी आप अख्वांयदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर, हरि साचा खेल खिलांयदा। आपे जाणे आपणा मन्त्र, आपणा नाम दृढ़ांयदा। आप गुर पीर अवतार बणाए बणतर, आप आपणे विच समांयदा। आपे बाशक सेजा सुत्ता पैर पसार आपे मुख गाए सहँसर, दो सहँसर जिह्वा आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। नानक नानक गुर गुर अवतारा, गोबिन्द जोत जगाईआ। दसवें घर दस्म प्यारा, गुरमुख साचे लए उठाईआ। अर्जन मेला मेल प्यारा, गुर शब्द करे कुड़माईआ। भगत सन्त गुर सतिगुर सोहिण इक्क दुआरा, एका थान सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। गोबिन्द मेला मेल मेला, आपणा रंग रंगाईआ। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेला, हरि शब्द करे कुड़माईआ। पुरख अकाल बणया सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द सच संदेशा, पुरख अकाल जणाईआ। सूलां सथ्थर करया वेसा, यारड़े राह तकाईआ। प्रगट होया नर नरेशा, निरगुण नूर डगमगाईआ। मेल मिलावा दस दस्मेशा, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपणी जोत आप प्रवेशा, आपे नूरो नूर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। एका अक्खर हरि पढ़ाउणा, एका ओट रखांयदा। गुर गोबिन्द गुर मेल मिलाउणा, साचा सगन मनांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाउणा, निहकलंक नाउँ रखांयदा। कलि कल्की अवतार फेरा पाउणा, मात पित ना कोई जणांयदा। शब्द डंका इक्क वजाउणा, राज राजानां राउ रंका शाह सुल्तानां आप उठांयदा। कलिजुग भेख पखण्ड मिटाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। राजा राणा तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोई टिकांयदा। चार वरन मेट मिटाउणा, अठारां बरन मुख शरमांयदा। एका सरन पुरख अकाल कराउणा, दूजा इष्ट ना कोई मनांयदा। शब्द जैकारा

एका लाउणा, एका कलमा आप पढ़ांयदा। ऊँचां नीचां एका धाम बहाउँणा, ज़ात पाती मेट मिटांयदा। निहकलंक हरि नाउँ रखाउणा, गोबिन्द साचा संग निभांयदा। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ आसण लांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आउणा, आसा तृष्ना ना कोई चलांयदा। पुत्तर धीआं ना रंग रंगाउणा, नारी कन्त ना मेल मिलांयदा। पीला बस्त्र ना रंग चढ़ाउणा, ना कोई शस्त्र तन सजांयदा। शब्द खण्डा इक्क उठाउणा, ब्रह्मण्डां आप चमकांयदा। जेरज अंडां लेख मुकाउणा, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ रक्ख हरि निरँकार, निहकलंक डंक वजांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। करोड़ तेतीसा करे हाहाकार, धीरज धीर ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी नार विभचार, हरि कन्त ना कोई हंढांयदा। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सुआंयदा। जूठा झूठा वणज वपार, साधां सन्तां आप करांयदा। अठसठ तीर्थ होए ख्वार, लजपत ना कोई धरांयदा। अल्ला राणी कर शृंगार, मुख घूँगट आपणा लांहयदा। एका रक्खी तिक्खी धार, चारों कुन्ट नैण मटकांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पंज तत्त विकारा लोभ हलकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे तेरी दिशा आपे पावणहारा हिस्सा आपे वंड वंडांयदा। कलिजुग अन्तिम वंडी वंड, गुर गोबिन्द वड्डी वड्याईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी खोज खुजाईआ। चारों कुन्ट भेख पखण्ड, जूठे झूठे धूंणीआँ ताईआ। सुरत सुआणी होई रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। हउमे हँगता चुक्की पंड, सतिनाम ना सीस कोई उठाईआ। जूठी झूठी पल्ले बद्धी गंढ, कुकर्मां करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी क्रिया वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ा रंग, हरि हरि वेख वखांयदा। मावां पुत्तरां टुट्टा संग, पिता पूत ना मेल मिलांयदा। भैणां भईआ सेज माणे पलँघ, सति धर्म ना कोए रखांयदा। साधां सन्तां माया ममता मारे डंग, त्रैगुण आपणा वेस वटांयदा। काम क्रोध चढ़ी कंग, चारों कुन्ट वहांयदा। कूड़ कुड़यारा होया नंग, उत्ते पल्लू कोए ना पांयदा। गुर गोबिन्द वजाए मृदंग, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुर गोबिन्द नौजवान, ना मरे ना जाईआ। आदि पुरख हरि हरि मेहरवान, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। निरगुण जोत नूर महान, दो जहानां खेल खिलाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, नाम संदेशा इक्क सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा होए हैरान, लोकमात राह तकाईआ। नर नरेशा वड बलवान, जोती जामा भेख वटाईआ। आपे गोपी कृष्ना काहन, आपे मण्डल

रास वखाईआ। आपे मेला सीता राम, सीता सुरती लए प्रनाईआ। आपे ब्रह्मण्ड वस्सया नगर ग्राम, आपे खोज खुजाईआ। आपे पंज तत्त नाता हड्ड चाम, आपे जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। आपे मेटे रैण अन्धेरी शाम, साचा चन्द आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग हरि खेल खिलाउणा, वेद कतेब भेव ना राया। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निहकलंकी जामा पाया। शब्द डंका इक्क वजाउणा, एका हथ्थ उठाया। आप आपणा मेल मिलाउणा, गुरमुख साचे लए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाया। गुरमुख साजण उठ उठ जाग, हरि साचा आप जगांयदा। दर घर साचे लग्गा भाग, कमलापाती आप लगांयदा। माझे दीपक जगे चराग, नौ खण्ड आप वखांयदा। सत्तां दीपां एका राग, एका शब्द सुणांयदा। लक्ख चुरासी पकड़े वाग, चारों कुन्ट भुआंयदा। त्रैगुण माया वेखे आग, पंचम तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख सोया जाए उठ, हरि सतिगुर आप उठाईआ। अबिनाशी करता आपे तुठ, देवे दरस बेपरवाहीआ। जुगां जुगां दे विछड़े बैठे रुठ, कलिजुग अन्तिम लए मनाईआ। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ्ठ, जो जन रसना रहे गाईआ। कलिजुग अन्तिम करे एका मुठ्ठ, चार वरनां मेल मिलाईआ। दूई द्वैती मेटे फुट्ट, भाण्डा भरम भनाईआ। माया मोह विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। गुरसिख आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन आए सरनाईआ । कलिजुग पौह रही फुट्ट, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। सम्मत सतारां पए लुट्ट, सम्मत सोलां दए गवाहीआ। गुरमुखां प्याए अमृत घुट्ट, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, निहकलंक अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम बण मलाह, गुर गोबिन्द संग निभांयदा। गुरमुखां देवे सच सलाह, साचा मार्ग आपे लांयदा। अक्खर वक्खर नाम पढ़ा, जोती जोत डगमगांयदा। साचे पौड़े दए चढ़ा, अद्धविचकारे ना कोई अटकांयदा। दस्म दुआरी मेल मिला, सुखमन नाड़ी पार करांयदा। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ा, अमृत धारा मुख चुआंयदा। कँवल नाभ आप उलटा, आपणा झिरना आप वहांयदा। आपणा राग दए सुणा, पंचम सखीआं मंगल गांयदा। सुरत शब्द हरि जोड़ जुड़ा, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। दस्म दुआरी बाहर कढा, आपणा कुण्डा आपे लांहयदा। आपे सुन्न समाध जाए समा, रूप रंग ना कोई जणांयदा। आपणी खेल आप खिला, आपणा दर वखांयदा। सच्चखण्ड दुआरा रचन रचा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। थिर घर अन्दर बणत बणा, घर घर विच सोभा पांयदा। जोती जोत लए मिला, जोती जोत आप मिलांयदा। अलक्ख निरँजण बेपरवाह, अगम्म अगोचर भेव ना आंयदा। सति पुरख निरँजण

नाउँ धरा, सति सतिवादी वेस वटांयदा। अजूनी रहित बेपरवाह, मूर्त अकाल दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जांयदा। नर अवतार श्री भगवाना, हरि हरि बली बलकारया। नाम खण्डा तेज कृपाना, चण्ड प्रचण्ड आप चमका रिहा। शब्द तीर सच कमाना, साचे चिल्ले आप चढ़ा रिहा। आपे मर्द मर्द मर्दाना, सूरबीर आप अख्वा रिहा। आपे खेले खेल दो जहानां, लोकमात वेस वटा रिहा। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, कलिजुग अन्तिम सगन मना रिहा। राए धर्म वेखे मार ध्याना, चित्रगुप्त हिसाब विखा रिहा। लाड़ी मौत नौजवाना, कुँवार कन्या आप उठा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे सृष्ट सबाना, लक्ख चुरासी फोल फुला रिहा। कवण दर होए प्रधाना, कवण संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम धार चला रिहा। धर्म राए ल्ए अंगड़ाई, आपणी करवट आप बदलाईआ। चित्रगुप्त रिहा उठाई, आपणा लेखा फोल फुलाईआ। दोहां मेला एका थाँई, एका अंग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे सच सलाहीआ। सच सलाह देवे देवणहारा, आदि अन्त अख्वाया। लक्ख चुरासी पावे सारा, राए धर्म दए सजाया। गुरमुख साचे ल्ए तराया, जिस जन रसना हरि हरि गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा खेल खिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेस अनेक अनक कल धार, दयाल काल करे खेल विच संसार, काल महांकाल आपणी सेवा लाया।

हरि सज्जण मीत मुरार सर्ब गुणवन्त, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। खेले खेल अगम्म अपार श्री भगवन्त, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी खेल अपार करंत, हरिजन साचे मात जगांयदा। मनमुखां माया पाए बेअन्त, पर्दा ओहला आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ रखांयदा। भगतन मीता पुरख अकाल, परम पुरख अख्वाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग जुग वेस वटाईआ। सन्त सुहेले साचे लाल, लोकमात आप उठाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, घर साचे मेल मिलाईआ। धुन अनादि वजाए सच्चा ताल, अनहद सेवा लाईआ। अमृत सर देवे सर सरोवर इक्क उछाल, ताल सुहावा इक्क दरसाईआ। नाम ख़ज़ाना धन सच्चा धन माल, गुरमुखां झोली पाईआ। फल लगाए काया डाल, अमृत मेवा आप खवाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। चरन प्रीती घालण घाल, घाली घाल लेखे लाईआ। इक्क वखाए धर्म सच्ची धर्मसाल, घर बैठा बेपरवाहीआ। दीपक जोती साची

बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आप हो जाईआ। ग़रीब निमाणे आपे भाल, जुग जुग आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। सज्जण सच्चा पातशाह, पारब्रह्म बेअन्त इकओंकार। आदि जुगादी बणे जगत मलाह, आपे गुर पीर अवतार। आपे साध सन्त लए उपा, आपे भगतन भगती भरे भण्डार। आपे आपणा नाउँ लए जपा, शब्द बोले सच जैकार। आपे लहिणा देणा दए मुका, पूर्ब लहिणा कर विचार। गुरमुखां तन बस्त्र गहिणा देवे पा, शब्द सरूपी सच श्रृंगार। माया ममता पर्दा देवे लाह, कूड़ी क्रिया दए निवार। चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का देवे ला, जोत निरँजण कर उज्यार। अमृत ठंडी धार मुख दए चुआ, निझर बरसे एक एकँकार। बन्द किवाड़ा दए खुल्ा, मेट मिटाए पंचम धाड़। अनहद राग दए सुणा, पंचम मेला मीत मुरार। सुरती शब्द एका रंग दए रंगा, करे कराए सच प्यार। आत्म सेजा दए सुहा, आपे सुत्ता पैर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण लाए पार। गुरमुख सज्जण पार किनारा, गुर सतिगुर आप करांयदा। पहलों बख्शे चरन प्यारा, दूजा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। तीजे नेत्र कर उज्यारा, आपणा दरस दिखांयदा। चौथे घर खोल्ह किवाड़ा, चौथे पद रहांयदा। पंचम मीता हो उज्यारा, पंचम संग निभांयदा। छे घर करे पार किनारा, छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण साची कारा, घर साचे आप करांयदा। अट्ठ तत्त ना कोई विचारा, पंज त्रै ना मेल मिलांयदा। नौ दर ना कोई हाहाकारा, अन्तर रो रो नीर ना कोई वहांयदा। दसवें आपे पावे सारा, गुरमुख सज्जण वेख वखांयदा। नाता तोड़ जगत संसारा, आप आपणे अंग लगांयदा। नारी कन्त कन्त भतारा, हरिजन साची सेज हंढांयदा। रलीआं माणे गुप्त ज़ाहरा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण आपणे लेखे लांयदा। गुरमुख लेखे जाए लग्ग, गुर सतिगुर आप लगांयदा। आपे हँस बणाए कग, आपे माणक मोती चोग चुगांयदा। आपे वसे उप्पर शाह रग, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आपे अग्नी जोती रिहा मघ, नूरो नूर आप डगमगांयदा। आपे तारे जीव अल्पग, सरबग आप अख्वांयदा। आपे चरन धूढ़ी मजन कराए माघ, दुरमति मैल आप गवांयदा। आपे शब्द सरूपी बन्ने साचा तग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण वेख वखांयदा। वेखणहारा एकँकार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। भगतन मीता मीत मुरार, सन्त भगत करे कुड़माईआ। देवे नाम शब्द अधार, राम नामा भेव खुल्हाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर दिसाईआ। पंचम पंचम कर ख्वार, पंचम मोह माया मोह चुकाईआ। पंचम नाद नाद धुन्कार, पंचम साचा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आपणे

९६८
०८

दर, दर सच्चा इक्क सुहाईआ। साचा दर आदि निरँजण, आपणा आप रखांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, दुखियां दुःख वंडांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, मस्तक इक्का जोत लिलाट जगांयदा। दो जहानां पर्दे कज्जण, नाम दोशाला उप्पर पांयदा। सखा सुहेला साचा सज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मात तरांयदा। गुरमुख सिख सुत्त दुलारा, सतिगुर साचे पाया। गुण अवगुण ना कोई विचारा, कर किरपा पार कराया। निरगुण सरगुण बणे धारा, साची सिख्या सिख समझाया। करे खेल जुगा जुगन्तर वारो वारा, आपणा नाउँ धराया। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। मन मति जीव होए हँकारा, हरि का नाम ना कोए ध्याया। गुरमुख विरला आत्म अन्तर रोवे ज़ारो ज़ारा, बिरहों रोग जलाया। देवे दरस अगम्म अपारा, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत जोत चमत्कारा, रवि ससि रहे शरमाया। गुरमुखां देवे इक्क अधारा, आप आपणी दया कमाया। कलिजुग भुल्ला सर्ब संसारा, नेत्र ज्ञान ना कोई खुल्ह्हाया। चारों कुन्ट धूंआँधारा, दिवस रैण अन्धेरा छाया। हरि का शब्द ना किसे विचारा, गुर गुर नाम ना कोई जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण लए उठाया। गुरमुख गुरसिख आप उठाए, आपणी सेवा आप कमांयदा। दिवस रैण रिहा जगाए, सोया कोई रहिण ना पांयदा। चरन प्रीती नाता जोड़ जुड़ाए, पुरख बिधाता वेस वटांयदा। साची गाथा आप सुणाए, सोहँ जाप जपांयदा। सतिजुग राथा रिहा चलाए, कलिजुग बेड़ा आप डुबांयदा। त्रिलोकी नाथा वेस वटाए, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण सच्चा मीत, एका बख्शे चरन प्रीत, चरन दुआरा इक्क वसांयदा। सच प्रीती सच दुआरा आपे खोल्ह, गुरमुखां मुख सलाहीआ। शब्द अनादी आपे बोल, पारब्रह्म ब्रह्म ढोला रिहा गाईआ। आपणे कंडे आपे तोल, तोलणहारा दिस ना आईआ। गुरमुखां हिरदे अन्दर रिहा मौल, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे वेखे अमृत भरया कँवल, आपे नाभी दए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। घर सोहया हरि बंक दुआर, गुरमुख हरि हरि पाया। नाता तुट्टा सर्ब संसार, घर बहि बहि मंगल गाया। मिल्या मेल हरि मीत मुरार, घर साची वज्जी वधाया। सोभावन्त होई नार, कन्त सुहागी मेल मिलाया। जुग जुग विछड़े मेले यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे आपणे घर, घर मन्दिर इक्क खुल्ह्हाया। घर मन्दिर हरि सुहञ्जणा, दिवस रैण प्रभात। जगे जोत आदि निरँजणा, हरि बैठा रहे इक्क इकांत। मीत मुरारा साचा सज्जणा, दरस दिखाए बहु बिध भांत। कलिजुग अन्तिम

लक्ख चुरासी ठीकर भज्जणा, नाता तुट्टे ज़ात पात। चार वरन कराए एका मजना, एका नाम बख्शे साची दात। सतिजुग साचा मात लग्गणा, गुरमुख चढ़े सची बरात। काल नगारा लक्ख चुरासी सिर ते वज्जणा, पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे वेखे मार झात। जगत दुआरा सभ ने तजणा, ना कोई पिता ना कोई मात। बिन सतिगुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे तेरा खात। कलिजुग खाता डूँघा सागर, हरि साचा वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी काया गागर, आपे फोल फुलांयदा। गुरमुखां निर्मल कर्म करे उजागर, आप आपणा नाम जपांयदा। साचा वणज कराए हरि सौदागर, रत्न अमोलक हीरा नाम झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। राम नाम रत्न जवाहर माणक मोती, गुरमुखां झोली आप भराईआ। तीर्थ तट्टां भुल्ले फिरदे कोटन कोटी, हरि हरि रूप दिस ना आईआ। कोटन कोटी चढ़े चोटी, कोटन कोटी जल धारा रहे तारीआं लाईआ। कोटन कोटी तुड़ावण बोटी बोटी, कोटन कोटी ख़ाकी ख़ाक रहे रमाईआ। कोटन कोटी बन्नू लंगोटी, चारों कुन्ट रहे फेरीआं पाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना कढ्ढे वासना खोटी, निरगुण दीवा बाती जोत ना करे कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन साचे दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण दरसाईआ। कर किरपा प्रभ जाए तार, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। अठसठ लेखा चुक्के संसार, गंगा गोदावरी गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कार, दोए दोए बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, हरि सन्त लए जगाईआ। कन्त भगवन्त एका धार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म हरि मीत मुरार, ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। बैठ अतीत सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। हस्त कीट कर प्यार, ऊँच नीच वेख वखाईआ। राउ रंक सोहे इक्क दुआर, दूजा दर ना कोई बणाईआ। गुरमुखां भगती भरे भण्डार, नाम भण्डारा आप वरताईआ। एका शब्द सच्ची जैकार, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हँ ब्रह्म जन्म कर्म वरन बरन धर्म दए संवार, साची सरन इक्क सरनाईआ। आवण जावण पतित पावण मरन डरन चुकाए विच संसार, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। हरन फरन नेत्र फोर खोलू किवाड़ा, आप आपणा दरस दिखाईआ। सचखण्ड दुआरे गुरमुख लाड़े देवे वाड़, शब्द घोड़े आप चढ़ाईआ। जोत निरँजण पाणी देवे वार, साचा सगन मनाईआ। आदि शक्ति कर प्यार, आपणा कुण्डा देवे लाहीआ। दरस दिखाए अगम्म अपार, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। साचा तख्त सच्चा सुल्तान, हरि साचा रिहा सुहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार वड मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुखां झुलाए सच निशान, लोकमात वज्जे वधाईआ। एका बख्शे ब्रह्म ज्ञान, आत्म अन्तर

बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या पाए भिच्छया, एका दरस वड्डी वड्याईआ। हरि का दरस सच दरगाह, खण्ड साचा आप सुहाया। बेपरवाह बण मलाह, शब्द सलाह, साचा मार्ग रिहा वखाया। पकड़े बांह निथाव्याँ देवे थाँ, ग़रीब निमाणे गले लगाया। आपे पिता आपे माँ, सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, समरथ पुरख आप अख्वाया। गुरसिख तेरा काया खेड़ा दिसे नगर ग्रां, पंचम छेड़ां दए छड़ा, पंचम राग नादि धुन आप अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख वसाए आपणे घर, दूसर वखाए ना कोई दर, धर्म राए दा चुक्के डर, आपणा घाड़ण लए घड़, दस्म दुआरी चोटी चढ़, गुरमुख सुरती लए फड़, शब्द सरूपी बन्ने लड़, त्रै भवण विच ना जाए अड़, अवण गवण विच ना जाए सड़, जगत विद्या ना जाए पढ़, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, गुरमुख साचे संग रखाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका पूजा एका पाठ, सर सरोवर एका घाट एका तीर्थ एका ताट, एका दस्त एका हाट, खेले खेल लोकमात गुरमुख उठाए मार झात, कलिजुग वेख अन्धेरी रात, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द सुणाए आपणी गाथ, फड़ फड़ चढ़ाए साचे राथ, आप निभाए आपणा साथ, लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हाथ, तत्त विकारा जाए नाठ, पल्ले बन्ने एका गाठ, अग्गे नेड़े रक्खे वाट, गुरमुख उतरे आपणे घाट, सतिगुर पूरा पार कराईआ। सच्चा घाट सच किनारा। दो जहानी पावे सारा। लोआं पुरीआं वस्सया बाहरा। ब्रह्मा विष्न शिव ना किसे विचारा। आपे सोहे आपणे बंक दुआरा। सचखण्ड अन्दर थिर घर दुआरा। पुरख अबिनाशी वस्सया आपे वसणहारा। निरगुण बाती निरगुण दीआ निरगुण जोत करे उज्यारा, निरगुण नारी निरगुण कमलापाती निरगुण कन्त कन्त भतारा। निरगुण सेजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार जोत उज्यारा। आदि निरँजण भेव न्यार। पारब्रह्म पुरख करतार। अजूनी रहित सच्ची सरकार। अकाल मूर्त खेल दो धार। निरगुण सरगुण करे विचार। लोकमात लए अवतार, डुब्बदे पाथर जाए तार। जिस जन बख्शे चरन प्यार। पतित पापी लाए पार। जो जन चरन करे निमस्कार। एथे ओथे दए सहार। आप आपणी किरपा धार। गुरसिक्खां बणया सांझा यार। चुरासी दुक्खां दए निवार। जम की फाँसी लाहे हार। घनक पुर वासी करे सच श्रृंगार। शाहो शाबाशी सिरजणहार। गुरू रामदास करया इक्क प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन देवे नाम भण्डार। भण्डार भरपूर देवणहारा दाता सूर। वेखे विगसे नेड़े दूर। सखा सहाई हाजर हज़ूर। आसा मनसा करे पूर। नाता तोड़े कूड़ो कूड़। मस्तक टिक्का बख्शे साची

धूढ़। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणाए काग हँस, गुरमुख सोहे बंस सरबंस, हरिसंगत बणाए आपणी अंस, विष्नूं वंसी बंस चलाईआ। कोटन कोटि जुग बीते सहँस, कोटन कोटि कृष्ना मारे कंस, कोटन कोटि रामा चुक्के धनुश, कोटन कोटि बावन रक्खण अंक, असंख असंख ब्रह्मा विष्न शिव नैण रो रो पेख पारब्रह्म अबिनाशी करता एका एकँकारा इक्क बेअन्त, लेखे लाए गुरमुख सन्त, आप बणाई कलिजुग साची बणत, वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी महिमा जाणे अगणत, अकल कला आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अञ्याणे ग़रीब निमाणे, गुरसिख आपणी गोद उठाईआ।

आदि जुगादी तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। आपणी धारा आपे बोल, आपे हरि सुणांयदा। आपणी वस्त आपे लए वरोल, आपे वेख वखांयदा। आपणा पर्दा आपे खोल्, आपे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम तराना इक्क वखांयदा। तोलणहारा पुरख सुल्तान, एका एकँकारया। आपणे कंडे चाढ़े दो जहान, लोआं पुरीआं दए हुलारया। जुगा जुगन्तर खेल महान, प्रगट होए विच संसारया। लक्ख चुरासी कर पछाण, गुरमुख साचे लए उभारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा तोला नाउँ धरा रिहा। तोला तोले तोलणहारा, एका कंडा तुलाईआ। सच भण्डारा खोल्हे खोल्हणहारा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। एका ढोला बोले बोलणहारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ दए हुलारा, हँ हँ आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा कंडा आप उठाईआ। आपणा कंडा हथ्थ फड़, आपे वेख वखांयदा। आपणे आसण बैठा चढ़, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। आपणी धड़ आप कर, दो जहाना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच तराजू बणत बणांयदा। सच तराजू बणाए तक्कड़, हरि आपणी कल वरताईआ। खेले खेल कलिजुग अन्तिम छेकड़, घर बैठा बेपरवाहीआ। लिखणहारा साचा लेख, लेखा लिख्या फोल फुलांयदा। आपे लक्ख चुरासी लोकमात लाए झक्खड़, आपे दए उखड़ाईआ। आपे माया ममता पाए भरम भुलेखड़, आपे आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बणत आप बणाईआ। साची हरि हरि बणत बणाए, आपणा खेल खिलांयदा। एका डण्डा नाम रखाए, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। त्रै त्रै लोकां लासा पाए, सच तराजू बणत बणांयदा। थिर घर वासी बोदी इक्क रखाए, सोहँ

होड़ा नाल रलांयदा। कलिजुग सतिजुग छाबा वेख वखाए, दोहां वंड वंडांयदा। लक्ख चुरासी जगत अनाजा आपे गाहे, आपे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी वेखे दाना, हरि हरि बणत बणाईआ। पारब्रह्म श्री भगवाना, वड दाता बेपरवाहीआ। तोलणहारा सुघड़ स्याणा, एका एक सच्चा धड़वाईआ। आपे गाए एका गाणा, आपणी धारन आप चलाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त कर पछाणा, आपणे कंडे देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी कलिजुग रास, हरि साचे आप भराईआ। आपे वेखे खेल तमाश, आपे रचन रचाईआ। आपे करे पूरी आस, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। आपे लेखा जाणे दस दस मास, दहि दिशा वेख वखाईआ। आपे लेखा लिखे पृथ्मी आकाश, गगन पतालां आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी होई त्यार, अन्तिम फल पकाईआ। आपणी हाढ़ी वढ्ढे आपणी वार, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। खेती खेत ना खाए वाड़, पहरेदार भेव ना राईआ। वेखे पता जंगल जूह उजाड़ पहाड़, अठारां भार तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। तोलणहार हरि ब्रह्मण्ड, आपणे कंडे आपे पांयदा। आपे लोआं पूरीआं वंडे वंड, आपणा हिस्सा आप वंडांयदा। आपे नौ खण्ड पृथ्मी करे खण्ड खण्ड, अंग भंग आप करांयदा। आपे वेखणहारा भेख पखण्ड, जूठा झूठा आप सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे तक्कड़ी आपे छाबा, आपे कंडा नाम उठाईआ। आपे तोले दो दो आबा, आप आपणा भार वंडाईआ। आपे गिणती गिणे हक्क जनाबा, आपणा लेखा आप गिणाईआ। आपे वसे कँवल नाभा, आपे विश्व करे रुशनाईआ। आपे शंकर मारे दाबा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। आपे चरन घोड़े दे रकाबा, लोआं पुरीआं आप दुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेती वेख वखाईआ। आपे पवण आप अस्वारा, आपे घोड़ा नाम दौड़ांयदा। आपे जल अग्नी वसे धारा, आपे तत्व तत्त रखांयदा। आपे मेघ बरसे अपर अपारा, आपे छहिबर लांयदा। आपे सत्त समुन्दर विरोले एक एकँकारा, आपे छाछ वखांयदा। आपे चौदां रत्नां कढ्ढे बाहरा, नाम मधाणा एका पांयदा। आपे होए अन्न दाना, पीणा खाणा आप अख्वांयदा। आपे राजा आपे राणा, आपे हुक्म चलांयदा। आपे तख्त ताज सुहाना, आपे सीस जगदीश इक्क वखांयदा। आपे वंञ आप मुहाणा, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आपे सुघड़ आप स्याणा, मूर्ख मूढ़ आप अख्वांयदा। आपे राग आपे गाणा, आपे नाद वजांयदा। आपे पेटा आपे ताणा, आपे सूत्र वट चढ़ांयदा। आपे वसे दो जहानां, आपे सचखण्ड डेरा लांयदा। आपे

लक्ख चुरासी हो प्रधाना, आपणा मंगल गांयदा। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, आपे चिल्ला हथ्थ उठांयदा। आपे खिच्चे नाम कमाना, इक्क निशाना नाम लगांयदा। आपे खाणी आपे बाणी आपे होए जाणी जाणा, भेव अभेदा आप छुपांयदा। आपे तरवर सरवर पंखी वेखे रो रो दो जहाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे कथा अकथ कहाणा, आप आपणी आपे गांयदा। आपे राजा आपे राणा, आपे दर दरबार सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी क्रिया आपे वेख वखांयदा। आपणी क्रिया आपे वेखे, आपे रचन रचांयदा। आपे लिखणहारा लेखे, आपे लेख मिटांयदा। आपे होए धारी केसे, आपे मूंड मुंडांयदा। आपे नर आपे नरेशे, आपे रईयत नाम धरांयदा। आपे होए दर दरवेशे, आपे अलक्ख जगांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न महेषे, गणपति पूजा आप करांयदा। आदि अन्त आदि निरँजण आपे वेखे, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। आपे पाए भरम भुलेखे, अभुल्ल अभुल्ल आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे मुला शेख़ मुसायक पीर, आपे हाज़ी हज्ज गुज़ारीआ। आपे देवणहारा धीर, आपे बिरहों लाए तीर तेज़ कटारीआ। आपे कट्टणहारा पीड़, आपे वेखे हउमे रोग बीमारीआ। आपे तोड़णहार जंजीर, आपे लक्ख चुरासी करे ख्वारीआ। आपे देवे ठंडा सीर, अमृत धारा आप चुआ ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा ल्या। आपे जोद्धा सूरबीर बलकार, बलधारी नाउँ रखांयदा। आपे गुर पीर अवतार, साध सन्त आप हो जांयदा। आपे लक्ख चुरासी पावे सार, जीव जन्त आप उपजांयदा। आपे पुरख प्रखोतम बण बण नार, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे कन्त होए भतार, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे महल्ल अटल लए उसार, आपे आसण लांयदा। आपे जगमग जोत करे उज्यार, निरगुण दीवा बाती इक्क रखांयदा। आपे कमलापाती मीत मुरार, आपणा संग निभांयदा। आपे अमृत बूंद स्वांती, देवे ठंडी ठार, सांतक सति आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मन्दिर डेरा लांयदा। आपे मन्दिर आपे ताकी, आपे खोल्ह वखांयदा। आपे जाम आपे साकी, आपे नाम प्याला प्यांअदा। आपे देवे लहिणा देणा बाकी, आपे पिछला मूल चुकांयदा। आपे माटी होए ख़ाकी, आपे ख़ाकी ख़ाक रमांयदा। आपे करे आपणी आप चलाकी, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आपे चढ़े आपणे राकी, आपणा घोड़ा आप दौड़ांयदा। आपे बैठे मार पलाकी, आपणा आसण आप सुहांयदा। आपे जाणे भविक्ख वाकी, वेद पुराण कोई ना गांयदा। आपे निर्धन आपे आकी, आपे आपणा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी क्रिया वेख वखांयदा। आपे खड़ग खण्डा तलवार, तिक्खी धार आप हो जाईआ। आपे बरछी तेज़ कटार, हथ्थ त्रशूल आप उठाईआ। आपे संख नाद जैकार, आपे दुर्गा

इष्ट मनाईआ। आपे खेल करे करतार, आपणी कल आप वरताईआ । आपे जुगा जुगन्तर हो त्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। आपे वेस वेस अवल्ला, हरि हरि आप करांयदा। आपे राम आपे नाम आपे शाम, आपे अल्ला रूप वखांयदा। आपे प्याए आपणा जाम, आपे मेटणहारा सला, आपे मार्ग पांयदा। आपे नगर आप ग्राम, आपे वसे सच महल्ला, साचा खेड़ा आप वसांयदा। आपे जला आपे थला, आपे जोती जोत बला, आपे जाणे आपणा झेड़ा, आपणा गेड़ा आप दुवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे वेखे आपे लेखे, आपे लेख लिखाईआ। आपे नानक गोबिन्द दस दस्मेसे, आपे जोत जगाईआ। आपे आदि जुगादि रहे हमेशे, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल आपे कर, आपणा वेस वटाया। नाम तराज़ू हथ्थ विच फड़, लोकमात उठ धाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा अक्खर आपे पढ़, जीवां जन्तां रिहा सुणाया। अग्नी हवन ना गया सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। साचे पौड़े बैठा चढ़, दिस किसे ना आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, धरनी धरत धवल ना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख वखाया। लक्ख चुरासी आपे फोल, आपे मुल्ल पुआंयदा। आपे कंडे देवे तोल, आपे धार सुणांयदा। कलिजुग छाछ रिहा विरोल, गुरमुख मक्खण बाहर कढांयदा। पहली वस्त रक्खे कोल, किसे छाबे विच ना आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। त्रैगुण माया मारे धाह, वेला अन्तिम आया। कंडा फड़या बेपरवाह, वट्टा विच ना कोई रखाया। पंच विकारा नाल लए रला, हौला भार आप जणाया। सगला साथी कर कर ना, बैठा मुख भुवाया। कलिजुग अन्तिम बणया कॉं, कागी काग उडाया। मुहम्मद ना देवे कोई थाँ, सदी चौधवीं वेख वखाया। अल्ला राणी कर कर ना, मुख पल्लू रही पाया। खेले खेल अगम्म अथाह, भेव कोई ना राया। एका छाबे देवीं पा, नबी रसूलां लए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे कंडा तोल तराज़ू, आपे तोलण आया। तोलणहारा नानक गाए, तेरां धार चलाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पाए, आपणा वेस वटाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठाए, सोया कोई रहिण ना पाईआ। गुण अवगुण वक्ख वक्ख कराए, कलिजुग साची वंड वंडाईआ। दूसर ना कोई संग रलाए, ना कोई दए गवाहीआ। सालस बण के आपे आए, एक एकँकारा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भार आप उठाईआ। कलिजुग तोले साचा भार, सच सच्चा कर्म कमांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, एका पासे आप बहांयदा। दूसर पासे ख़बरदार,

आपणा डंक वजांयदा। गुरमुखां दी चरन धूढ़ी देवे डार, जनक नैण शरमांयदा। कोटन कोटी जो कढ्ढे बाहर, अन्तिम फेर भरांयदा। कलिजुग तेरी सुण पुकार, हरि सच्चा वेस वटांयदा। एका धक्का देवे मार, अठाई कुण्डां आप भरांयदा। अठारां कुण्डां उतरे दस, आपणे नाल रलांयदा। आपणा छाबा दए हुलार, आपणा वाक पूर करांयदा। लक्ख चुरासी करे आर पार विच संसार, सागर सिन्ध धार वहांयदा। गुरमुख विरले बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क वखांयदा। फड़ फड़ बाहों कढ्ढे बाहर, आप आपणी सेव कमांयदा। कलिजुग तेरा घोर अँध्यार, सच सुच्च ना नज़री आंयदा। पंडत पांधे मस्तक ललाटी ला ला गए हार, जोत निरँजण ना कोई जगांयदा। तन जनेऊ कर श्रृंगार, तन माटी साचा चौका ना पोच पुचांयदा। झूठी हाटी वणज वपार, माया ममता मोह करांयदा। साध सन्त गए हार, सति सन्तोख ना कोई रखांयदा। नार दुहागण होई मुटयार, सुरत सुवाणी ना कोई प्रनांयदा। कुआरी कन्या कर श्रृंगार, कलिजुग वेस वटांयदा। पुरख अबिनाशी लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। चारों कुन्ट करे खुआर, नाम डण्डा हथ्थ उठांयदा। तोला बणया अपर अपार, हौला भार आप तुलांयदा। सोलां कलां ना कोई अवतार, अकल कल आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तोले आपणी धारन, धरत धवल तुलाईआ। पृथ्मी आकाश आया पैज संवारन, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। ब्रह्मा शिव उतरन पारन, आपणा घाट वखाईआ। गुरमुखां बोले इक्क जैकारन, एका नाअरा लाईआ। जन भगतां आया पैज संवारन, लोकमात वड्डी वड्याईआ। मनमुख मिटे जीव हँकारन, लंका गढ़ तुड़ाईआ। हरिजन मेटे रैण अधेरी शामन, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाईआ। गुरमुखां होए आपे ज़ामन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। पूरी करे मनो कामन, पूरी इच्छया आप कराईआ। ना कोई पंडत ना कोई ब्रह्मण, ना कोई क्षत्री शूद्र वैश होए शामन, साख्यात निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चार वरनां एका तोल तुलाईआ। चार वरन तुले तोल, हरि साचा आप तुलांयदा। आप चुकाए पिछला मूल, लहिणा कोई रहिण ना पांयदा। सतिजुग फुलवाड़ी लाए फल फूल, नाम क्यारी इक्क बिजांयदा। गुरमुख पंघूड़ा रहे झूल, सतिगुर साचा आप झुलांयदा। करे कराए सूलीउँ सूल, सूलां सथ्थर हेठ विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार, गुरमुखां करे प्यार, सोहँ बस्त्र साचा गहिणा कलिजुग जीआं दिस ना आए, जगत जन्तां आपणे नेत्र आप वखांयदा।

सर्ब परवार लग्गे लेखे, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। बाल अञ्याणे कढ्ढे भरम भुलेखे, भरम गढ़ तोड़ तुड़ाईआ। बिधना मेटे लिखी रेखे, आपणा लेखा आप सुहाईआ। चरन लगाई मुच्छ दाढ़ी केसे, केस दस्मेस सीस सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिता पूत दए अधार, लेखे लाए सर्ब परवार, आवण जावण फंद कटाईआ। गुर परवार हरि का बेड़ा, सतिगुर आप चलाईआ। जन भगतां वसे नगर खेड़ा, सद वज्जदी रहे वधाईआ। करे कराए हक्क निबेड़ा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वसणहारा दूर नेड़ा, घर मन्दिर दरस दिखाईआ। गुरमुखां रखाए खुल्ला वेहड़ा, सचखण्ड निवासी बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम दान, दरगाह साची करे परवान, मात गर्भ फेर ना आईआ।

सुहंदड़ा थान हरि दरस दिखाया, संगत संग रलाईआ। श्री भगवान तरस कमाया, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। धर्म निशान इक्क वखाया, घट मन्दिर रिहा झुलाईआ। गुरसिख बिबाण इक्क बठाया, सतिगुर पूरा रिहा उडाईआ। आवण जावण पन्ध मुकाया, जिस जन बख्शी सच सरनाईआ। पीण खाण लेखे लाया, गुर संगत सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, कलिजुग आपणी करनी कर, दर घर आए दया कमाए, आवे जावे फेरा पाईआ।

९७७

✪ ५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी मंगल सिघ दे घर पिण्ड सारिंगढ़ा ज़िला अमृतसर ✪

आदि जुगादी एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर ख़ुदाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, इक्क इकल्ला डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आप आपणा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, एका एक एकँकारया। आदि जुगादी खेले खेल तमाशा, जुग जुग मात ल्ए अवतारया। मण्डल मण्डप पावे रासा, गगन गगनंतर आप सुहा रिहा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, जल थल महीअल आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी मेट मिटा रिहा। पारब्रह्म हरि बेअन्त, आदि जुगादि समांयदा। जुग जुग खेले खेल महान महिमा अगणत, भेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। आपे जाणे आपणी बणत, घड़ण भन्नणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर वेस अवल्ला, हरि साचा आप करांयदा। वसणहारा नेहचल धाम अटला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा मल्ला, थिर घर साचे डेरा लांयदा। निरगुण दीपक बाती आपे बला, प्रकाश प्रकाश करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता आप अख्वांयदा। करनी करता हरि करतार, एका एक अख्वाया। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राया। निरगुण बाती कमलापाती कर उज्यार, जोती जोत नूर डगमगाया। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी खेल न्यार, आप आपणा लए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दीपक आप जगाया। आपे दीपक आपे जोती, आपे नूरो नूर समाईआ। आपे सचखण्ड दुआरे चढ़या चोटी, आप आपणा आसण लाईआ। आपे फड़े आपणी सोटी, आपणा डण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला नाउँ धराईआ। दीन दयाला दीनां नाथ, अकल कला कल धारीआ। आपे आपणा रक्खे साथ, आप आपणा संग निभा रिहा। जुगा जुगन्तर चलाए राथ, रथ रथवाही वेस वटा रिहा। आपे लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब लहिणा आप चुका रिहा। आप चलाए आपणी गाथ, आपणा मन्त्र आप दृढ़ा रिहा। आपे पूजा आपे पाठ, इष्ट गुरदेव आप उपा रिहा। आपे सर सरोवर मारे ठाठ, जलधारा आप समा रिहा। आपे विके आपणे हाट, आपणी कीमत आपे पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता एक एकँकार, खेले खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना आ रिहा। भेव अभेद पुरख अकाल, हरि वड वड्डी वड्याईआ। निरगुण जोती दीपक बाल, आपणी आप करे रुशनाईआ। सचखण्ड वसाए सची धर्मसाल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। ना कोई दीसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। रवि ससि ना कोई सतार, मण्डल मण्डप ना आप सुहाईआ। गगन पताल ना कोई धार, पृथ्मी आकाश ना नाउँ धराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई अहार, त्रैगुण नाता ना जोड़ जुड़ाईआ। पंचम तत्त ना कोई अधार, लक्ख चुरासी ना रचन रचाईआ। जंगल जूह ना कोई पहाड़, डूँघी गार ना कोई वखाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ना दिसे कोई सिक्दार, हुक्मी हुक्म ना कोई फिराईआ। शस्त्र बस्त्र ना दीसे कोई शाह अस्वार, अस्व घोड़ा ना कोई दुड़ाईआ। सोलां कलीआं ना कोई शृंगार, आसण सिँघासण ना कोई विछाईआ। गुर पीर साध सन्त ना कोई अवतार, ब्रह्मा वेद ना कोई पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणी कल वरताईआ। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, आप आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड सोहे बंक सच्चा घर बार, दर दरवाज़ा आप खुल्ह्राईआ। ग़रीब निवाज़ा हो त्यार, आपणा मता आप पकाईआ। आपे बन्न्हे आपणी धार, आपणा मार्ग लाईआ। आपे पुरख आपे नार, आपे सेज

हंढाईआ। आपे सुत्त दुलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द विचोला खेल अपार, पारब्रह्म आप कराईआ। सच सुनेहड़ा देवे सिरजणहार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। लोआं पुरीआं कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाईआ। आपणा किया आप प्यार, आपे वेख वखाईआ। निरगुण निरगुण विच्चों आया बाहर, दिस किसे ना आईआ। मात पित ना कोई अधार, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलाईआ। खेल खिलंदड़ा पुरख अगम्म, पारब्रह्म बेअन्तया। आपे मन्दिर आपे अन्दर आपणी गोदी आपणी कुक्ख आपे पए जम्म, मात पित ना कोई रखन्तया। करनी करता करनेहारा आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणी कार करन्तया। आदि जुगादी हरि ब्रह्मादी आपणा बेड़ा देवे बन्ह, आपे भार उठन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्द सरूपी बण मलाह, आप आपणा वेस वटन्तया। वेस वटंदड़ा पुरख करतार, निरगुण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निराकार निरवैर आपणे अन्दरों आया बाहर, आपे वेख वखाईआ। मूर्त अकाल खेल अपार, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। गुणवन्ता गुण करे अपार, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। आपणा नाउँ रक्ख अपर अपार, विष्नूं रूप आप हो जाईआ। अमृत भर सच भण्डार, नाभी कँवल फुल्ल खिलाईआ। आपे पारब्रह्म ब्रह्म लए अवतार, आपणा अंग आप कटाईआ। आपे शंकर मीता हो उज्यार, आपणा संग निभाईआ। आपे शब्द अनादी बोल जैकार, आपणा नाअरा आपे लाईआ। आपे त्रैगुण माया कर त्यार, त्रै त्रै झोली पाईआ। आपे शाहो भूप सच सिक्दार, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, हरि साचा आप सुहाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, साची सेवा आप लगाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। मन मति बुध दए अधार, आप आपणे रंग रंगाईआ। नौ दर खोल्ह किवाड़, काया गढ़ सुहाईआ। घर विच घर कर त्यार, अन्दर बैठा मुख छुपाईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कार, अनहद साचा राग अल्हाईआ। अमृत सर सरोवर भरया ताल, आपणी नाभी मुख भवाईआ। बज़र कपाटी खेल अपार, आपणा पर्दा आपे पाईआ। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार, निरगुण सरगुण वेखे चाँई चाँईआ। दसवें मेला मीत मुरार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, जूनी जून आप भवाईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणा वेस आप वटाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क हुलार, एका शब्द सुणाईआ। चारे वेदां कर त्यार, चार युग करे कुड़माईआ। आपणा खोल्ह आप किवाड़, आपे वेख वखाईआ। आपे लेखा जाणे पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाईआ। आपे करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ।

लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लांयदा। शब्दी शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन्कारा धुन साचा राग अल्लांयदा। पवण पाणी दए सहारा, सारिंग धर आप अख्वांयदा। जल थल महीअल खेल न्यारा, भेव कोई ना आंयदा। आपणी पावे आपे सारा, आप आपणा वेस वटांयदा। साध सन्त भगत भगवन्त कर प्यारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। एका वणज कराए सच वणजारा, नाम वस्त इक्क तुलांयदा। चौदां हट्टां वेख किवाड़ा, आपे मुल पुवांयदा। लोआं पुरीआं वस्सया बाहरा, त्रैगुण माया विच ना आंयदा। पंचम मीता पंचम संग हो उज्यारा, पंचम दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो धारा नाउँ धरांयदा। आपे निरगुण धार, जोत जगांयदा। आपे सरगुण पसर पसार, वेख वखांयदा। आपे शब्द शब्द जैकार, नाअरा लांयदा। आपे जुग जुग लए अवतार, खेल खिलांयदा। आपे भगतां करे प्यार, मेल मिलांयदा। आपे सन्तां लाए पार, दरस दखांयदा। आपे मनमुखां करे खुआर, गढ़ तुड़ांयदा। आपे खण्डा तेज कटार, हथ्थ उठांयदा। आपे आदि शक्ति हो त्यार, जोत ज्वाला आप जगांयदा। आपे होए सिँघ अस्वार, गदा चक्र संख आप रखांयदा। आपे रक्खे आपणी तिक्खी धार, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आपणी रचन रचाईआ। आदि जुगादी हरि हरि मीता, आपणी बणत बणाईआ। आपे जाणे आपणी रीता, आपे वेख वखाईआ। आपे वस्सया हस्त कीटा, ऊँचां नीचां डेरा लाईआ। आपे वस्सया धाम अनडीठा, महल्ल अटल सुहाईआ। आपे करे मिट्ठा कौड़ा रीठा, अमृत फल आप खवाईआ। आपे गुरमुखां वस्सया हरि हरि चीता, चितवत ठगौरी कोई ना पाईआ। आपे पतित आप पुनीता, पतित पापी आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराईआ। आदि जुगादी हरि निरँकार, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साची बन्ने धार, आप आपणा वेस वटांयदा। हरिजन सज्जण लए उभार, गुरमुख पार करांयदा। सन्त सुहेले कर प्यार, गुर चेले मेल मिलांयदा। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, घर साचा वेख वखांयदा। काया गढ़ तोड़ हँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। सतिजुग उतरया आपणे घाट, हरि साचा आप चढ़ांयदा। आपे सुत्ता आपणी खाट, सोया सुत्त ना कोई उठांयदा। आपणा रस आपे गया चाट, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। सच सुच्च ना विके किसे हाट, ना कोई कीमत पांयदा। अग्गे नेड़े आई वाट, त्रेता आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी धार धरांयदा। त्रेता तेरा त्रीआ वेस, हरि हरि वेख वखांयदा। आदि जुगादी रहे हमेश, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। सो पुरख निरँजण सदा आदेश, थिर घर बैठा राह तकांयदा। आपे जोती जोत प्रवेश, आपे पंज तत्त

मेल मिलांयदा। आपे आपणे नेत्र लए पेख, नैण लोचण बन्द करांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। आदि जुगादी एकँकारा आपे होए नर नरेश, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। आपे खड़ग खण्डा तीर कमान, आपे चिल्ला हथ्थ उठाईआ। आपे जोद्धा सूर बली बलवान, बलधारी आप हो जाईआ। आपे खेले खेल महान, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे लंका गढ़ हँकार, आपे बंक सुहाईआ। आपे रावण पंडत हो त्यार, आपणी विद्या करे पढ़ाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, भेव कोई ना पाईआ। खेले खेल पुरख करतार, आपणी रचन आप रचाईआ। दो जहानां विचोला बण संसार, अछल छल धारी वल छल आप वखाईआ। आपे रण भूमी सुत्ता पैर पसार, तिक्खी धार आप वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा पार किनारा, रावण तुट्टा गढ़ हँकारा, आपणा नाउँ धरांयदा। द्वापर उठया बाल निधान, हरि साचा आप उठांयदा। लोकमात हो प्रधान, आपणा बल धरांयदा। खेले खेल श्री भगवान, कान्हा कृष्ना रूप वटांयदा। ग़रीब निमाणयां देवे माण, निमाणे गले लगांयदा। आपे अक्खर बण ज्ञान, आपणा नेत्र आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। द्वापर तेरा सच दुआरा, हरि साचा वेख वखांयदा। कान्हा कृष्ना मीत मुरार, मुकद मनोहर लख़मी नरायण वेस वटांयदा। रथ रथवाही करे आपणी कारा आप करांयदा। अट्ठ अठारां पार किनारा, नौ धारा आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा वेख घर, हरि साचा खेल खिलांयदा। कलिजुग बाला कर त्यारा, आपणा हुक्म सुणांयदा। देवे वर सच्ची सरकारा, साची वस्त झोली पांयदा। कूड़ कूड़ा तेरा पसारा, कूड़ डंक वजांयदा। नाल रलाए हउमे हँगता पंच विकारा, आसा तृष्ना मेल मिलांयदा। अन्तिम मेला होए विच संसारा, संग मुहम्मद तोड़ निभांयदा। ईसा मूसा बन्न्हे धारा, अञ्जील कुराना लेख लिखांयदा। अल्ला राणी लाए नाअरा, एका कलमा आप पढ़ांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। मुकामे हक्क सांझा यारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ होए अँध्यारा, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। चारों कुन्ट हाहाकारा, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग रो रो करे निमस्कारा, आपणा सीस आप झुकांयदा। साचा वणज करां कौण वपारा, कवण वस्त हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए इक्क इकल्ला, अकल कला कल धारीआ। कलिजुग मेला राणी अल्ला, हरि साचा मेल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे जगत महल्ला, आप आपणी बन्न्हे धारीआ।

दूई द्वैती फड़या भल्ला, नाल रलाया गढ़ हँकारीआ। हउमे हँगता होया सला, साचा रंग ना रंगे कोई ललारीआ। राम नाम ना फड़े कोई पल्ला, ऐनलहक्क एका नाअरा लाईआ। ख़लक ख़ुदाई ख़ालक वेखे आपे बोले आपणा हल्ला, आप आपणी आपे वारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वरते विच संसारीआ। वरते वरतावे विच संसार, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। कलिजुग मेला मुहम्मदी यार, चार कुन्ट पई दुहाईआ। जीव जन्त करन पुकार, साध सन्त रहे कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया आप कमाईआ। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण जोती जोत जगाईआ। नानक रक्ख नाम संसार, आप आपणा वेस वटाईआ। नाम सति सति भण्डार, चार वरन वरताईआ। ऊँचां नीचां कर प्यार, एका थान वखाईआ। तेरां तेरां तोले धार, मोदीख़ाना इक्क चलाईआ। चार कुन्ट मार उडार, आपणी फेरी आपे पाईआ। गढ़ हँकारी दए सँघार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। अन्तिम बोल इक्क जैकार, साची सिख्या गया समझाईआ। पुरख अकाल सर्ब जीआं दा सांझा यार, दूसर इष्ट ना कोई वखाईआ। कलिजुग प्रगट होए विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर अर्जन भेव खुल्हाईआ। बोध अगाधी बण लिखार, सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख एका धाम बहाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। हरि का भेव अचरज खेल अगम्म अपार, बिन गुर पूरे कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचना आप रचाईआ। आपे रचना रच रच, सच सच सच विच टिकांयदा। आपे काया माटी भाण्डा कच्च, आपे कंचन गढ़ वखांयदा। आपे नौ दुआरे रिहा नच्च, आपे दसवें आसण लांयदा। आपे त्रैगुण माया रिहा मच्च, आपे अमृत जल वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। कल वरतंता हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग नाम धरांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, साचे सन्तां मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्द बणाई साची बणता, साचा मार्ग एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, कोटन कोटि जीव तरांयदा। गुर गोबिन्द गुर दीन दयाला, गुर नेत्र नैण रूप शृंगारया। गुर सूरा गुर करे प्रितपाला, गुर देवे नाम सहारया। गुर हाज़र हज़ूर तोड़े जगत जंजाला, लक्ख चुरासी गेड़ निवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला मेल मिला ल्या। गोबिन्द सूरा सरबंग, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। गुरमुख लगाए अंगी अंग, अंगीकार आप करांयदा। मानस जन्म ना होए भंग, अमृत जल प्यांअदा। देवे दान मंगी मंग, साची सिख्या झोली पांयदा। गुरसिख तेरी नंगी ना होवे कंड, जो नानक गोबिन्द रसना गांयदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, तेज प्रचण्ड हथ्थ फड़ांयदा।

अमृत धारा आपणी वंड, चार वरनां रंग रंगांयदा। ऊँचां नीचां दित्ती गंढु, ना कोई मात खुलांयदा। मनमुख जीव सुरत सवाणी होए रंड, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। मेटणहारा भेख पखण्ड, आपणा डण्डा हथ्थ उठांयदा। पावे सार विच ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं फेरी पांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग नाउँ हरि बनवारी, आपणा आप धराईआ। गोबिन्द मेला वड संसारी, साचा खेल खिलाईआ। सूलां सेज कर प्यारी, सथ्थर रिहा हंढाईआ। मंगे मंग बण भिखारी, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। पारब्रह्म प्रभ पाए सारी, घर साचा वेख वखाईआ। दोहां विचोला जोत निरँकारी, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल, गोबिन्द मेल मिलांयदा। आपे जाणे आपणा लाल, आपे गोद उठांयदा। आपे बणे लोकमात दलाल, आपे वणज करांयदा। आपे जाणे हक्क हलाल, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। आपे शरअ शरीअत तोड़ जंजाल, साचा मार्ग एका लांयदा। पंचम मीता करे प्रितपाल, पंचम माया मोह चुकांयदा। पंचम देवे माल सच्चा धन माल, लुट्ट कोई ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर माणा, एका एक श्री भगवाना, एका खेल खिलांयदा। धुर फ़रमाना पुरख करतार, आपणा आप जणाईआ। गोबिन्द मीता मीत मुरार, आपे रिहा समझाईआ। तेरा रूप अनूप सच्ची सरकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। फतिह डंका बोल जैकार, वाह वाह गुरू वड्याईआ। चार वरन करे प्यार, वरन बरन रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका धार, सत्तां दीपां जोड़ जुड़ाईआ। एका शब्द होए जैकार, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। एका मिल्या पार किनार, लोकमात रहिण ना पाईआ। संग मुहम्मद चार यारी होए ख्वार, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। चौदां तबकां मारे मार, ज़िमीं अस्मानां पए दुहाईआ। तेरा खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां दए चमकाईआ। पावे वंडां सिरजणहार, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठे मुख छुपाईआ। दिस ना आए विच संसार, गुरमुख विरले लए जगाईआ। एका जोत नूर उज्यार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। सच सुच्च कराए तन श्रृंगार, बस्त्र चोला एका पाईआ। गाए ढोला आपणी वार, नानक निरगुण गया समझाईआ। बणे तोला हरि निरँकार, लक्ख चुरासी तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निहकलंक पुरख सुल्ताना, एका एक एक अख्वांयदा। कलिजुग प्रगट होवे वाली दो जहानां, आप आपणा नाउँ धरांयदा। सच झुलाए नाम

निशाना, लोआं पुरीआं आप वखांयदा। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, राए धर्म सगन मनांयदा। गुरमुखां करे आप पछाणा, कलिजुग सोए मात उठांयदा। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, आप आपणी बूझ बुझांयदा। राग सुणाए सच तराना, अनहद ताल वजांयदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। इक्क सुहाए सच मकाना, काया मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक वड बलवान, सतिगुर पूरा हरि अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, आपणा डंक वजांयदा। बिरध बाल ना कोई जवान, एका रंग समांयदा। सृष्ट सबाई पाई आण, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जूठ झूठ मेटे निशान, सच सुच्च वरतांयदा। आपे गोपी आपे काहन, आपे मण्डल रास रखांयदा। आपे सीता आपे राम, आपे दर सुहांयदा। आपे नानक गोबिन्द कर प्रनाम, आपे सीस झुकांयदा। आपे ईसा मूसा संग मुहम्मद दए पैग़ाम, अज़राईल मेकाईल ज़बराईल असराफील सेवा लांयदा। आपे करे आपणा काम, करनी करता नाउँ धरांयदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी शाम, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुखां प्याए एका जाम, साचा साकी नाम प्याला इक्क उठांयदा। लक्ख चुरासी करे ताम, एका शब्द बाज उडांयदा। ना कोई नगर ना कोई ग्राम, ना कोई खेड़ा घर वसांयदा। किसे पल्ले ना दिसे कोई दाम, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा श्री भगवाना, एका एक अख्वांयदा। जोती जामा श्री भगवान, लोकमात वज्जी वधाईआ। एका एक इक्क प्रधान, दूजी कुदरत वेख वखाईआ। तीजे नेत्र खेल महान, चौथे पद समाईआ। पंचम मीता शाह सुल्तान, छेवें छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। सति पुरख नौजवान, ना मरे ना जाईआ। अट्ठां तत्तां बाहर मकान, नौ दर ना डेरा लाईआ। दसवें मेल ब्रह्म पछाण, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क दस गुण निधान, सुन्न समाध समाईआ। दो दस वेख निशान, रवि ससि मुख शरमान, त्रै दस खेल महान, आपणी धार आप चलाईआ। चार दस वड बलवान, आपणा डंका आप वजाईआ। पंज दस मेट निशान, घर साचे सोभा पाईआ। दस छे सोलां विच जहान, वीह सौ बिक्रमी नाल रलाईआ। खेले खेल श्री भगवान, नाम डंका इक्क वजाईआ। कलिजुग उठ जीव निधान, वेला अन्तिम आईआ। भरमे भुल्ला सर्ब जहान, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। मिल्या मेल पंज शैतान, पंचम धुन शब्द ना राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां देवे वर, आप आपणी दया कमाईआ। वीह सद सोलां सम्मत चढ़या, हरि साचा वेख वखांयदा। मन मति बुध आपे लड़या, आपे फड़ फड़ांयदा। मनमुखां दे अन्दर वड़या, कलिजुग छेड़ छिड़ांयदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। हथ्थो हथ्थी किसे ना

फड़या, हथ्थ किसे ना आंयदा। जगत विद्या आपे पढ़या, कलिजुग जीआं आप पढ़ांयदा। आपे वेखे हँकारी गढ़या, आपे बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजांयदा। गुर गोबिन्द तेरा साचा डंक, हरि सज्जण आप वजाईआ। आप उठाए राउ रंक, सोया कोई रहिण ना पाईआ। शाह सुल्ताना कढ्ढे शंक, सति सागर ना कोई रुढ़ाईआ। गुरमुखां सुहाए साचा बंक, आप आपणा दरस दिखाईआ। हरिजन उधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाईआ। खेले खेल बार अनक, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे सनक सनंदन सनातन कुमार सन्त, आपे बराह रूप वटाईआ। आपे यज्ञे पुरष लाए तनक, हाव गरीव रूप वटाईआ। नरायण नर खेले खेल बार अनक, दत्ता त्रै आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई पुरख समरथ, जुग जुग वेस वटाया। सतिजुग त्रेता चलाया रथ, द्वापर नाउँ धरांयदा। कलिजुग महिमा अकथना अकथ, वेद पुराण कोई ना गांयदा। वेद व्यासा गया दस्स, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। अबिनाशी करता आपे नस्स, आपणा वेस वटांयदा। नानक गोबिन्द लेखा लिख, लिख लिख आप समझांयदा। भरमे भुल्ले ना कोई सिख, हरि का भेव कोई ना पांयदा। ना कोई जाणे वाक भविख, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि का रूप नेत्र सके ना कोई पेख, नेत्र ज्ञान ना कोई खुल्हांयदा। चारों कुन्ट धरया भेख, रेख मेख ना कोई लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां देवे वर, सोलां सोलां पूर करांयदा। सम्मत सोलां चढ़या चा, हरि साचे जोत जगाईआ। साधां सन्तां बणे मलाह, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। भिन्नड़ी रैण नेत्र रही उठा, गुरमुखां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरताईआ। कलिजुग कल कल वरताए, अकल कला कल धारीआ। सम्मत सोलां लेख लिखाए, वड दाता खेल अपारीआ। सम्मत सतारां नौ खण्ड पृथ्मी आप उठाए, ना कोई सुहाए बंक दुआरीआ। राज राजानां दर दर फिराए, नाता तुट्टे सर्ब पिता पूत मात पित, भाई भैण ना करे कोई प्यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल आपणी वारीआ। सम्मत सतारां साची धार, हरि आपणी आप वहांयदा। नर नारी होए ख्वार, नर नरायण दिस ना आंयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण ना मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अट्ठ अठारां देवे वर, जल धारा आप रुढ़ांयदा। दस अट्ठ अठारां खेल अपारा, हरि साचा रचन रचांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी आप वहाए जल जल धारा, मेघ मेघणी आप बरसांयदा। इन्द्र रोवे ज़ारो ज़ारा, ख़िज़र ख़वाजा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा हरि भगवन्त, भगतन भेव कोई ना आया। गुरमुख वेखे साचे सन्त, हरि सतिगुर सज्जण मेल मिलाया। एका जेहवा एका मणीआ एका नाम मंत, एका रसन हरि गुण गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहया। दस नौ उन्नी उनीसा, हरि अचरज खेल खिलांयदा। शाह सुल्ताना खाली खीसा, दर दरबार ना कोई रखांयदा। लेखा चुक्के मूसा ईसा, अञ्जील कुराना मेल मिलांयदा। ना कोई पढ़े जगत हदीसा, निउँ निउँ सीस ना कोई झुकांयदा। संग मुहम्मद पीसन पीसा, चार यारी वेख वखांयदा। ना कोई पढ़े तीस बतीसा, बत्ती दन्द ना कोई सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम बीस सद बीस, हरि साचे खेल खिलावणा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क हदीस, सत्तां दीपां आप समझावणा। एका छत्र सोहे हरि साचे सीस, राजा राणा दिस ना आवणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पन्दरां कत्तक दिवस सुहावणा। बीस बीसा हो उज्यार, हरि साचा डंक वजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बन्ने धार, सत्तां दीपां आप सुहाईआ। सत रंग निशाना देवे चाढ़, उप्पर लेखा लेख लिखाईआ। लक्खण पुष्कर पावे सार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सत रंग निशाना आप चढ़ाउणा, हरि साचा शब्द जणांयदा। राउ रंक राज राजान ऊँच नीच ग़रीब निमाणा एका धाम बहाउणा, दूजा दर ना कोई वखांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दीन मज़्हब ना कोई रखाउणा, एका कलमा नाम पढ़ांयदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेट मिटाउणा, एका ब्रह्म जणांयदा। चार वरन एका रंग रंगाउणा, नाम लिलारी आप अख्वांयदा। सीस ताज इक्क टिकाउणा, जगदीश खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग नाता देवे तोड़, हरि साचे वड वड्याईआ। सतिजुग साचे चाढ़े पौड़, लोकमात धराईआ। धरत माता जाए बौहड़, आप आपणे गले लगाईआ। फल ना दिसे कोई कौड़, मिट्ठा रस आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी हरि ब्रह्मादी, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगा जुगन्ता खेल खिलंता, साधां सन्तां मेल मिलाईआ। बीस बीसा हरि निरँकार, एका डंक वजांयदा। आप बणाए सच्ची सरकार, साचा मार्ग एका लांयदा। एका नाम शब्द जैकार, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। एका मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर, शिवदुवाला मट्ठ इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम लहिणा जाए चुक्क, हरि साचे आप चुकावणा। चौथा गेड़ा जाए मुक्क, साची गोदी फेर सवावना। तिन्न जुग ना पए

उठ, फड़ बाहों ना किसे मनावणा। अबिनाशी करता गया तुठ, सतिजुग साचे मेल मिलावणा। अमृत देवे एका घुट्ट, एका जाम प्यावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकावणा। कलिजुग जाए मुक पन्ध, हरि साचा आप मुकाईआ। सतिजुग साचा चढ़े चन्द, लोकमात वज्जे वधाईआ। कोई ना लाए रसना मुख मदिरा मास गन्द, बीड़ी सिरगट पान ना कोई मुख छुहाईआ। कोई ना करे किसे निन्द, मुख ना थुक्क भराईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आपे मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द मेला साचे घर, घर मेले सहिज सुभाईआ।

६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी अवतार सिंघ दे घर पिण्ड काउँके

नेत्र गुर हरि दरस, गुरमुख विरला पाईआ। मेल मिलावा लिख्या धुर, अमृत मेघ देवे बरस, सांतक सति सति वरताईआ। दाता सूरा मेटे हरस, आप आपणा तरस कमाईआ। लेखा जाणे दिवस मास बरख़, जुगा जुगन्तर गणत गणाईआ। पावे सार अर्श फर्श, कुर्श कुरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप समाईआ। नेत्र लोचण दर्शन गुर, हरि किरपा अपर अपारीआ। चरन कँवल जन जाए जुड़, उतरे दुःख संसारीआ। सतिगुर पूरा जाए बौहड़, देवे नाम वड भण्डारीआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत नाम चढ़े ख़ुमारीआ। काया मन्दिर लाए पौड़, करे खेल पुरख निरँकारीआ। आपणे घर आपे दौड़, देवे दरस जोत उज्यारीआ। जगत विकारा देवे होड़, मारे खण्डा नाम तेज कटारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि दाता वड सिक्दारीआ। गुर दर्शन मेला हरि, समरथ पुरख वज्जे वधाईआ। आपणा वेखे साचा घर, सचखण्ड जोत रुशनाईआ। ना कोई नारी ना कोई नर, नर नरायण इक्क बैठा बेपरवाहीआ। ना जन्मे ना जाए मर, जोबन ज़र ना कोए वखाईआ। आपणा घाड़ण आपे घड़, समरथ पुरख नाउँ धराईआ। साचे मन्दिर बैठा वड़, आदि निरँजण जोत रुशनाईआ। जीव जन्त ना सके फड़, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, दे मति आप समझाईआ। जुग जुग आपणा अक्खर पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपणे पौड़े जाए चढ़, गुरमुख सज्जण नाल रलाईआ। सचखण्ड दुआरे अग्गे खड़्, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि दर्शन नेत्र गुर प्यार, चरन सरन सरनाईआ। लेखा जाणे धुर

करतार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साचे लए उभार, कर किरपा मेल मिलाईआ। आत्म अन्तर इक्क अधार, एका रंग रंगाईआ। सञ्झ सवेर ना कोई विचार, दिवस रैण ना कोई वखाईआ। जोती नूर इक्क उज्यार, अट्ठ पहर डगमगाईआ। साचा राग सच्ची धुन्कार, अनहद सेवा लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म मंगलाचार, परम पुरख कराईआ। साचे मन्दिर खेल अपार, त्रैगुण मूल चुकाईआ। नौ दर नाता तोड़ संसार, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस बेपरवाहीआ। नेत्र दरस निरगुण चानण, चन्न सूरज शरमाईआ। निरगुण नूर गोपी काहनन, मण्डल रीती रास पवाईआ। आपे मेटे अन्धेरी शामन, धूंआँधार आप गंवाईआ। आपे जन भगतां बणे लोकमात ज़ामन, आप आपणी दया कमाईआ। काया खेड़ा वेखे नगर ग्रामन, कंचन गढ़ सुहाईआ। आप फड़ाए आपणा दामन, दर दरवेशा फेरी पाईआ। पूरी करे कराए मनो कामन, जगत कामना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। गुर नेत्र दरस हरन फरन, हरि हरि मेल मिलन्नया। आवण जावण चुक्के मरन डरन, घर साचा एक सुहन्नया। सतिगुर पूरा तरनी तरन, तारनहार श्री भगवन्नया। जन भगत वखाए एका सरन, सरन सरनाई दो जहानया। लेखा चुकाए बरन वरन, एका रंग रगन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आवे भन्नया। दरस प्यासा गुरमुख मीता, दिवस रैण बिल्लाईआ। पुरख अबिनाशी ठांडा सीता, अमृत धार मुख चुआईआ। आपे करे पतित पुनीता, पतित पावन आप अख्वाईआ। एका राग सुणाए गीता, गोबिन्द गाए थाँईं थाँईंआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता, गुरसिख काया सोभा पाईआ। जुगा जुगन्तर जाणे आपणी रीता, आपणी चाल आप रखाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। आपणा भाणा जाणे मीठा, हरिजन भाणे विच रखाईआ। देवे शब्द नाम अनडीठा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस बेपरवाहीआ। दर्शन मीता पुरख बिधाता, हरिजन वेख वखांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्न चढ़ांयदा। हरिजन रक्खे उत्तम ज़ाता, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, आपणी कल वरतांयदा। गुरमुखां अन्दर बहि बहि करे बाता, दिस किसे ना आंयदा। एका देवे नाम सुगाता, साची झोली आप भरांयदा। शब्द अगम्मी बोले गाथा, आपणा हुक्म सुणांयदा। साढे तिन्न हथ्थ चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। गुरमुख विरले सगल विसूरा लाथा, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठा, फड़ बाहों गले लगांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुखां करे पूरा घाटा, आपणे तोल आप तुलांयदा। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, नट नटूआ सांग वरतांयदा। दो जहानां फिरे नाठा, लक्ख चुरासी वेख

वखांयदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मारे ठाठा, जीव जन्त तारीआं लांयदा। ना कोई सुहाए तीर्थ अट्ठ साठा, गंगा गोदावरी नेत्र नैणां नीर वहांयदा। ना कोई धीरज सति दिसे हाठा, सति सन्तोख ना कोई धरांयदा। ना कोई लहिणा देण चुकाए आन बाटा, मात गर्भ ना फंद कटांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी एका एक सर्ब कला समराथा, हरिजन साचे आप तरांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब देणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरसी दरस दिखांयदा। हरि दर्शन गुर बलिहारी, गुर सज्जण हरि हरि पाया। सोहया बंक बंक दुआरी, घर मजन मैल गंवाया। जगी जोत जोत निरँकारी, निरगुण दाता बेपरवाहया। हरिजन मंगे मंग भिखारी, दोए जोड़ सीस झुकाया। देवणहारा वड दातारी, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आपे रक्खे अतुट भण्डारी, अतोट अतुट आप रखाया। दाना बीना वड संसारी, सतिगुर साचा नाउँ धराया। जुग जुग जन भगतां पैज रिहा संवारी, दूसर हथ्थ किसे ना आया। राउ रंक करे खुआरी, जिस हरि हरि नाम भुलाया। ग़रीब निमाणे जाए तारी, जो बैठे राह तकाया। दर घर साचे करे प्यारी, घर सज्जण इक्क मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। गुर दर्शन हरि मेलया, पारब्रह्म गुर करतार। हरि पाया सज्जण सुहेलया, सतिगुर साचा मीत मुरार। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया, दूसर रंगे ना कोई विच संसार। आपे वसे धाम नवेलया, आपे हर घट करे पसार। आपणा खेल पारब्रह्म अबिनाशी करता जुगा जुगन्तर आपे खेलया, लोकमात लए अवतार। जन भगतां धर्म राए दी कट्टे जेलया, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। दर घर साचे सचखण्ड दुआरे जोत निरँजण चाढ़े तेलया, नाता तोड़ जगत संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। सतिगुर दर्शन चरन प्यार, भाण्डा भरम भन्नाईआ। हरि हरि सज्जण मीत मुरार, हरिजन साचे लए जगाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। नेत्र लोचण नैण दए उग्घाड़, निज नेत्र आप वखाईआ। आपे करे बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लाहीआ। आपे अनहद वजाए सच्ची धुन्कार, राग अनादी आपे गाईआ। आपे बख्शे अमृत धार, उलटा कँवल आप भुआईआ। आपे आत्म सेजा हो उज्यार, दसम दुआरी बंक सुहाईआ। आपे कमलापाती मीत मुरार, आपे शब्दी डंक वजाईआ। आपे सुरत सवाणी पाए सार, आप आपणे लड़ लगाईआ। आपे कन्त आप भतार, आपे नारी सेज हंढाईआ। आपे सुत्ता पैर पसार, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। आपे गुरमुख सज्जण लाए पार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। गुर करता गुर करनेहारा दर्शन देवे किरपा धार, कर्म धर्म ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस बेपरवाहीआ। हरि दरस नेत्र जाए खुल्ह, सतिगुर मार्ग इक्क वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता कोए ना लाए मात

मुल्ल, एका मार्ग आप वखांयदा। जो जन साचे नाम कंडे जाए तुल, दूसर दर ना कोई जणांयदा। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता वेख वखांयदा। आपे वेखे फुल फुलवाड़ी फुल्ल, रुत्त बसन्ती आप सुहांयदा। हरिजन विरला हरि चरन प्रीती जाए घुल, आपे घोली घोल घुंमांयदा। त्रैगुण माया पंज तत्त विकारा ना जाए रुल, मन मति ना संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण आप उठांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, पारब्रह्म बेअन्तया। आदि जुगादी नौजवान, खेले खेल श्री भगवन्तया। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म अन्तर एका जोत जुगन्तया। शब्द अनादि सच्ची धुनकान, अनहद राग वजन्तया। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटन्तया। मन्दिर सुहाए सच मकान, काया गुरूदुआर इक्क वखन्तया। आप वखाए सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलन्तया। आदि जुगादी निगहबान, गुरमुख सज्जण वेख वखन्तया। शब्द सरूपी पाए आन, नाम खण्डा इक्क उठन्तया। मेट मिटाए पंज शैतान, पंजां मोह तुड़न्तया। वेखणहारा चौदां हट्ट चौदां लोक दुकान, लोआं पुरीआं खोज खुजन्तया। ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, वड दाता श्री भगवन्तया । लोकमात खेल महान, जुग जुग आपणा वेस वटन्तया। हरिजन साचे करे पछाण, लक्ख चुरासी फोल फुलन्तया। जीव जन्त जगत निधान, हरि का भेव ना कोई खुलन्तया। राग नाद सारे गाण, साध सन्त कहिण बेअन्तया। वेद पुराणी धुर फ़रमान, अञ्जील कुरानी बणत बणन्तया। खाणी बाणी कर प्रधान, आप अपणा हुक्म सुणन्तया। आपे होया बेपछाण, दिस किसे ना आए जीव जन्तया। जिस जन किरपा करे श्री भगवान, आप आपणा मेल मिलन्तया। पाए दरस दर दरबान, दर दरवाजा आप खुलन्तया। जोती नूर जगे महान, नूरो नूर डगमगन्तया। साचा मन्दिर सच मकान, नौ दुआर ना कोई रखन्तया। छप्पर छन्न ना कोई निशान, सचखण्ड दुआरा एक एकँकारा नर अवतार आप वसन्तया। ना कोई नगर ना ग्राम, ना खेड़ा रंग रगन्तया। ना कोई हड्ड मास नाड़ी दिसे चाम, पंज तत्त ना वेस वटन्तया। ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई कृष्ना गाए गाण, सरगुण खेल ना कोई जहान, निरगुण जोत नूरो नूर सर्ब कल आपे भरपूर, दूसर संग ना कोई विखन्तया। जन भगतां आदि जुगादि हाज़र हज़ूर, नेड़ा दूर ना कोए जणन्तया। आसा मनसा हरि हरि पूर, हरिजन हउमे रोग गवन्तया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटन्तया। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दुरमति मैल गंवन्तया। दाता दानी सतिगुर सूर, सूरबीर आप अख्वन्तया। जगत विकारा चूरो चूर, शब्द खण्डा इक्क उठन्तया। गुरमुखां दरस दखाए नेड़े दुर, दो जहानां पन्ध मुकन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटन्तया। हरि दर्शन सतिगुर पाया, गुर मिल्या मीत मुरार। सन्त सुहेला संग रलाया, भगत भगती भरे भण्डार। गुरमुखां गुर गुर

मंगल गाया, सोभावन्ती होई नार। गुरमुख निउँ निउँ सीस झुकाया, चरन कँवल करे प्यार। पारब्रह्म प्रभ आपणा मेल मिलाया, आप आपणी किरपा धार। आदि निरँजण जोत जगाया, अन्ध अन्धेरा दए गंवा। अबिनाशी करता वेख वखाया, करे कराए आपणी कार। नाम मन्त्र सति दृढ़ाया, सति सतिवादी बन्ने धार। अकाल मूर्त नज़री आया, निरगुण नूरो नूर कर पसार। अजूनी रहित खेल खिलाया, खेले खेल खेलणहार। आदि जुगादि भय ना कोई रखाया, निर्भय होए आप करतार। लोकमाती वेस वटाया, जुग जुग लए मात अवतार। आपे रावण गढ़ तुड़ाया, करया वार आपणी वार। आपे कंस केसी पकड़ गिराया, आपे दुर्योध्न कर खुआर। आपे मन्त्र नाम दृढ़ाया, आपे गीता ज्ञान करे उज्यार। वेद पुराणा नाम धराया, आप आपणी बन्ने धार। आपे ईसा मूसा संग रलाया, आपे बण मुहम्मदी यार। आपे अञ्जील कुराना वेख वखाया, आपे कलमे पढ़े आपणी धार। आपे निउँ निउँ सीस झुकाया, आपे सजदा करे परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपार। आपे नानक जोती रास, मण्डल मण्डप पाईआ। आपे पृथ्मी आपे आकाश, दहि दिशा फेरी पाईआ। आपे पवण आप स्वास, आपे रसना जिह्वा गाईआ। आपे देवे चरन धरवास, आस निरास पूर कराईआ। आपे घट घट अन्दर रक्खे वास, आप आपणा आपे विच टिकाईआ। खेले खेल खेल तमाश, हरि वडा वड वड्याईआ। मरे ना जम्मे पुरख अबिनाश, निरगुण सरगुण नाउँ धराईआ। कलिजुग जोत जोत प्रकाश, परम पुरख आप अख्वाईआ। जन भगतां होए आपे दास, दास दासी सेव कमाईआ। नाता तोड़े गर्भ वास, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, देवे दरस सहिज सुभाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, जल थल महीअल डेरा लाईआ। गुरसिख ना होए कोए निरास, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस अगम्म अथाहीआ। गुरमुख नेत्र दर्शन पाउणा, हरि सज्जण मेल मिलाया। माया ममता मोह चुकाउणा, हउमे हँगता रोग मिटाया। पंचम विकारा नेड़ ना आउणा, अमृत आत्म जाम प्याया। नेत्र लोचण इक्क खुलौणा, एका रंग रंगाया। साचे मार्ग आपे पाउणा, पारब्रह्म ब्रह्म रूप दरसाया। गुरसिख लोकमात दे बांह सरहाणे सौणा, सतिगुर पूरा आपे लए उठाया। करे कराए जो हरि भाउणा, हरि भाणा भावी विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे वर, घर घर विच मेल मिलाया। घर मेला घर पाया, घर परम पुरख करतार। घर सज्जण घर बंक सुहाया, घर लेखा बन्द किवाड़। घर चेला घर गुर घर आपणा रंग रंगाया, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। घर शब्द घर नाद घर धुन वजाया, घर सखीआं मंगलचार। घर सरोवर घर अमृत जल भराया, घर बूंद

स्वांती ठंडी ठार। घर दीपक घर बाती घर घर जोती जोत डगमगाया, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। गुरमुख सवाणी सोती आप उठाया, देवे दरस शाहो शाबाश। साची सोटी शब्द फड़ाया, पार कराए पृथ्मी आकाश। कोटन कोटी जीव रहे ध्याया, किसे हथ्थ ना आए सतिगुर सच्चा शाहो शाबास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होया दासी दास। दासी दास सेवा कर, आपणी ख़ुशी मनांयदा। गुरमुख सज्जण आपे वर, आपणे अंग लगांयदा। आप लै जाए आपणे घर, आपणा घर सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ निमस्कार रहे कर, जिस मार्ग गुरमुख जांयदा। नानक खुल्हाया साचा दर, गोबिन्द वेख वखांयदा। प्रभ अबिनाशी खेले खेल सचखण्ड दुआरे उप्पर चढ़, सति पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। गुरसिख गुरमुख कलिजुग अग्नी विच ना जाए सड़, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सो पुरख निरँजण आप फड़ाया आपणा लड़, हँ ब्रह्म आप प्रनांयदा। चौथे जुग कलिजुग अन्तिम चौथे पौड़े जाए चढ़, जोग अभ्यास ना कोई वखांयदा। जो जन सोहँ अक्खर लए पढ़, जन्म मरन फंद कटांयदा। दरगाह साची जाए वड़, हरि सतिगुर मेल मिलांयदा। दरस दखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। आपे लक्ख चुरासी भाण्डे लए घड़, आपे भन्न वखांयदा। आपे तोड़ हँकारी गढ़, आपे खड़ग खण्डा चमकांयदा । आपे गुरसिक्खां अन्दर जाए वड़, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेल कर, गुरसिख सज्जण मीत अतीत, चरन प्रीत इक्क सिखांयदा। चरन प्रीती साचा रंग, नीली काली धार छुपाईआ। गोबिन्द मेला आत्म सेजा सच पलँघ, गुर मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा खण्डा तीर देवे नाम तरंग, हरिजन साचा रिहा दृढ़ाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सच दुआरे आपे लँघ, हरिजन साचे लए उठाईआ। सर सरोवर साची धार, अमृत वहाए एका गंग, गुरसिख गंगा गोदावरी ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती नाता जोड़, पंच विकारा देवे होड़, शब्द चढ़ाए साचे घोड़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख तेरी उत्तम ज़ात, पारब्रह्म सरनाईआ। अबिनाशी करता वेखे मार झात, जुग जुग वेस वटाईआ। जन भगतां देवे साची दात, एका नाम झोली पाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, घट घट आपे रिहा समाईआ। हरिजन मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। शब्द सुणाए साची गाथ, काया मन्दिर आपणा राग अलाईआ। सतिगुर पूरा देवे सगला साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चमारा दए गवाहीआ। गुर गोबिन्द उतारे पार घाट, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। नानक निरगुण देवे साथ, जो जन रसना रहे ध्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल पुरख समराथ, समरथ

हथ्थ वड्याईआ। कर दरस सगल विसूरे गए लथ्थ, राए धर्म ना दए सजाईआ। जो जन सरन सरनाई गए ढठ्ठ, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोत जगाए काया मट, दिवस रैण डगमगाईआ। अनहद ताल नगारे लाए सट्ट, शब्द अनादी आप सुणाईआ। अमृत आत्म देवे झट्ट, तृष्ना अग्ग बुझाईआ। दरस दिखाए नठ्ठ नठ्ठ, गुरमुखां सेव कमाईआ। वसणहारा घट घट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, चरन कँवल जोड़ नाता, दरस दखाए इक्क इकांता, इक्क इकल्ला एकँकार जन भगतां करे सद प्यार, आवे जावे विच संसार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। गुरमुख सज्जण रक्खे आस, दिवस रैण राह तकाईआ। सतिगुर पूरा आप बुझाए लग्गी प्यास, दे दरस तृप्त कराईआ। हिरदे अन्दर रक्खे वास, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। सखा सुहेला वसे पास, दिवस रैण ना कोई जणाईआ। लहिणा देणा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। जुगा जुगन्ता जन भगतां पूरी करे आस, मनमुखां दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बाहों लए फड़, आपणे बेड़े आप चढ़ाईआ।

हरी हरि हरि निरँकार, हरि हरी हरि रूप समाईआ। शब्दी शब्द शब्द भण्डार, शब्दी शब्द समाईआ। गुरू गुर गुर अवतार, गुरू गुर रूप अख्वाईआ। नाम नाम नाम जैकार, नाम नाम आप बुलाईआ। सच वस्त वस्त अपार, सच सच्ची आप उपजाईआ। आदि पुरख एकँकार, एका एक एक अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर भेव न्यार, भगवान भेव कोई ना पाईआ। आदि जुगादी बन्ने धार, सति सतिवादी वड वड्याईआ। बोध अगाधी पावे सार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। धुन अनादी अगम्म अपार, अलक्ख अलक्खणा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि अन्त हरि भगवान, भगवन आपणी खेल खिलांयदा। राम नाम नाम निशान, दो जहान आप झुलांयदा। शब्द सरूपी धुर फ़रमान, सच सुनेहड़ा आप सुणांयदा। दो जहानां पावे आण, लोआं पुरीआं बंध बंधांयदा। लक्ख चुरासी हो प्रधान, आपणा डंक वजांयदा। साधां सन्तां ब्रह्म ज्ञान, आपणा इष्ट वखांयदा। खोल्हे दृष्ट वड मेहरवान, आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। शब्द ज्ञान सर्ब गुणवन्ता, नाम भण्डारी आप अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जागरत जोत जोत जगांयदा। मेल मिलावा साचे सन्ता, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। पंज तत्त बणाए आपे बणता, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क अलूांयदा। सच संदेशा धुर फ़रमान, आदि जुगादि सुणाईआ। निरगुण जोत श्री भगवान, परम पुरख वड्याईआ। लोकमात वेखे मार ध्यान, आप आपणी दया कमाईआ। शब्द सरूपी इक्क बिबान, हरि हरि लए उठाईआ। हरिजन साजण चतुर सुजान, चतुर्भुज मेल मिलाईआ। आदि अनादी इक्क मकान, एक एकँकारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ा वेस, पंज तत्त तन हंढांयदा। सति सरूपी सति संदेश, सति सति सति आप सुणांयदा। आपे धारे आपणा भेख, आप आपणा नाउँ वटांयदा। आप आपणी करे आदेश, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। जुग करता हरि करने योग, करनी किरत कमाईआ। हरिजन मेल मिलावा धुर संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। कट्टणहारा हउमे रोग, बिरहों अग्ग बुझाईआ। देवणहारा साची मोख, राम नामा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीनां लोक, त्रिलोक ना कोई भुवाईआ। आप सुणाए सच सलोक, आपणा ढोला आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। आपे शब्द गुर ज्ञान, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आपे निरगुण जोती नूर महान, आपे डगमगांयदा। आपे ब्रह्मे बख्शे आपणा दान, चारे वेदां आपे गांयदा। आपे वेद व्यासे करे परवान, पुराण अठारां आप सलांहयदा। आपे शास्त्र सिमरत कर वख्यान, आपे राग अलूांयदा। आपे गीता मेला विच जहान, आप आपणे मुख सलांहयदा। आपे कलमा बण ईमान, नबी रसूल आप अख्वांयदा। आपे अञ्जील आप कुरान, आपणी आईत आप अलूांयदा। आपे निरगुण हो प्रधान, नानक नाम रखांयदा। आपे शब्द सरूपी सच बिबान, लोकमात उडांयदा। आपे सतिनाम साचा दान, लक्ख चुरासी झोली पांयदा। आपे अंगद कर पछाण, आपणे अंग लगांयदा। आपे अमर हो प्रधान, अमरापद वखांयदा। आपे रामदास कर परवान, आपणी गोद बहांयदा। आपे अर्जन देवे इक्क ध्यान, एका शब्द अलूांयदा। धुरदरगाही धुर फ़रमान, आपणा आप सुणांयदा। लोकमात खेल महान, साची सिख्या इक्क वखांयदा। सन्त भगवन्त मेला दो जहान, विछड़ कदे ना जांयदा। गुर सतिगुर वेखे इक्क दुकान, एका हट्ट खुलूांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर शुबद ज्ञान, गुरू रूप वखांयदा। पंचम गाइन इक्क ध्यान, एका राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणा नाउँ वटांयदा। गुर गुर गुरदेव गुरू गुर इष्ट, गुर देव आप समाईआ। आपे रामा आप वशिष्ट, आप आपणी कल वरताईआ। आपे खोल्हे आपणी दृष्ट, आपे रंग रंगाईआ। आपे वसे सर्ब सृष्ट, आदि जुगादि वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। शब्द

मन्त्र गुरदेव नमो नमो, निमस्काररया। वेख वखाणे तमो तमो, तामस तृष्ना वेख विचाररया। भेव खुल्हाए रजो रजो, राजस खेले खेले विच संसाररया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति वरते आप वरताररया। नाम निधान सर्ब गुण अन्तर, गुणवन्ता आप चलाईआ। गुर का शब्द सच्चा जग मन्त्र, साची करे पढ़ाईआ। पंज तत्त बुझाए लग्गी बसन्तर, माया ममता मोह चुकाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, भेव रहे ना राईआ। खेले खेल जुगा जुगन्तर, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। आपे शब्द गुरू गुर ग्रन्थ, गुर बंधन आपे पांयदा। आपे जाणे आपणा मार्ग पन्थ, आपे राह वखांयदा। आप वजाए आपणे नाम आपे संख, संख असंखा आप उठांयदा। आपे साध आपे सन्त, सादिक सिद्ध आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणी बणत, आप आपणी रचन रचांयदा। आपे गिणे आपणी गणत, लेखा लेख ना कोई गिणांयदा। खाणी बाणी कहे बेअन्त, भेव कोई ना पांयदा। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, घर साचा आप सुहांयदा। आपे आदि आपे अन्त, आपे मध समांयदा। निरगुण जोत श्री भगवन्त, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्द तराना जोत उजाला, राग नूर दरसाईआ। खेले खेल खेल निराला, गुर गोपाला वड वड्याईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, दीन दयाला भेव ना राईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगतां दस्से राह सुखाला, आपणी दया आप कमाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाला, लक्ख चुरासी तोड़ तुड़ाईआ। गल विच पाए साची माला, सो पुरख निरँजण आप वटाईआ। हरिजन बहाए धर्म सच्ची धर्मसाला, गुरदुआरा इक्क वखाईआ। ना कोई शाह ना कोई कंगाला, नाम धन्न झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। घर मन्दिर सोहे गुरूदुआर, गुरू ग्रन्थ गुर अख्वाईआ। अन्दर मन्दिर खेल अपार, दिवस रैण राग अल्हाईआ। साचा संख वज्जे सच्ची धुन नादि, अनहद आपे रिहा वजाईआ। आसा मनसा पूर करतार, सञ्झ सवेर ना कोई रखाईआ। अट्ठे पहर एका धार, एका प्रभात जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। हरि मन्दिर हरि गुर का घर, गुर शब्दी राग सुणांयदा। शब्द गुर फड़े लड़, अन्दर वड़ दिस किसे ना आंयदा। हरिजन घाड़ण आपे घड़, आपे वेखे अग्गे खड़, दरस दिखाए चोटी चढ़, दर दुआरा आप खुल्हांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, हरिजन लगाए मात जड़, लोक परलोक ना कोई उखड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा रंग रंगांयदा। निरगुण हरि गुर सन्त कन्त भगवन्त, निरगुण जीव जन्त अख्वाईआ। निरगुण दाता गुणी गनीम गुणवन्त, राम

रहीम निरगुण रूप वटाईआ। निरगुण निरवैर आदि अन्त, निरगुण भउ भय ना कोई जणाईआ। निरगुण खेले खेल जुगा जुगन्त, निरगुण नित नवित्त वेस वटाईआ। निरगुण गुरसिक्खां बणाए साची बणत, नानक अंगद अमरदास गुर अर्जन गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग विछड़े जुग मेले, बण शब्द विचोला घर घर फेरा पाईआ।

✪ हज़ारा सिँघ दे घर पिण्ड काउँके ज़िला अमृतसर ✪

हरि सतिगुर शब्द बिबान, गुरमति सुर आप सुहांयदा। जुग जुग वेखे मार ध्यान, लोकमात राह तकांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, हरिजन साचे आप उठांयदा। देवे मन्त्र नाम निधान, आपणा हुक्म सुणांयदा। साची सिख्या सिख परवान, सच साचा मार्ग लांयदा। पंच विकारा मेट निशान, पंचम शब्द मिलांयदा। मेल मिलावा दो जहान, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा वेख वखांयदा। सतिगुर सज्जण मीतड़ा, मेहरवान मेहरवान। हरिभगत जणाए आपणी रीतड़ा, दयावान दयावान। सुणाए सुहागी गीतड़ा, धुर फ़रमानी धुर फ़रमान। मन मनुआ आपे चीतड़ा, डोरी बन्ने बन्न बंधाण। आप आपणे जिहा कीतड़ा, भगत भगवान रूप पछाण। करे कराए ठंडा सीतड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए निगहबान। सतिगुर पूरा साचा रस, नाम अमृत आप चखांयदा। भगत भगती मार्ग दस्स, भव सागर आप तरांयदा। पकड़ उठाए नस्स नस्स, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। साचे मन्दिर बहि बहि हस्स, हंसमुख सलांहयदा। बिरहों तीर निराला मारे कस, अणयाला नाउँ धरांयदा। हिरदे अन्दर जाए वस, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्धन सरधन सरधन निर्धन एका रंग रंगांयदा। निर्धन सरधन एका दात, चरन दुआर रखाईआ। नाम निधाना वड करामात, गुरमुखां झोली पाईआ। साचा शब्द साची गाथ, हरि साचा आप सुणाईआ। सतिगुर पूरा एका राथ, लोकमात आप चलाईआ। जन भगतां देवे सगला साथ, फड़ बाहों आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले मेल मिलाईआ। मेल मिलावा पुरख बिधाता, परम पुरख मिलांयदा। देवे नाम साची दाता, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, जोत प्रकाश करांयदा। काया मन्दिर खोल्हे साचा हाटा, बन्द किवाड़ी ताक खुल्हांयदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जो जन गुर सतिगुर दर्शन पांयदा। अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, पिछला पन्ध मुकांयदा। सच सिँघासण वेखे खाटा, आत्म सेजा डेरा लांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सज्जण जीवण मुक्त करांयदा। जीआं दाता जीवण दान, जीआं जी जणाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगवन भगवत भगती रूप वटाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्म निशान, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण आप झुलाईआ। राम नाम नाम धुर फ़रमान, काया नगर ग्राम आप सुणाईआ। पतित पावण कर ध्यान, बल बावन भेख वटाईआ। हरिजन साचे विटहों कुरबान, काया कुरा वेख वखाईआ। अनन्द परमानंद घर साची खाण, नाम सुगंध बन्द बन्द आप महिकाईआ। रवि ससि सूरज चन्द होण हैरान, जोत निरँजण डगमगाईआ। कोटन कोटि तेज़ बख्शे भान, आत्म अन्तर इक्क दृढ़ाईआ। मेल मिलावा हरि साचे राम, सीता सुरती ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द मेला साचे काहन, घर बंसरी नाम वजाईआ। छहिबर लाए दो जहान, अमृत मेघ आप बरसाईआ। साचा सईआ वड मेहरवान, आपणी नईआ ल्ए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप जणाईआ। साची नईआ सच किनारा, हरि साची धार वहांयदा। डूँघे सागर पावे सारा, कलिजुग वेख वखांयदा। एका चप्पू नाम सहारा, साढे तिन्न हथ्थ आपे लांयदा। घाड़ण घड़े घड़णहारा, दिस किसे ना आंयदा। आपे चढ़े उच्च मुनारा, घर आपणे सोभा पांयदा। समरथ पुरख हरि खेल अपारा, भेव कोई ना आंयदा। त्रैगुण वस्सया आपे बाहरा, तत्व तत्त ना कोई जणांयदा। रंग रलीआं माणे विच संसारा, घर सन्तां डेरा लांयदा। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण रूप वटांयदा। आपे चुक्के आपणा भारा, सीस जगदीश आप उठांयदा। गुरमुखां करे सच शृंगारा, सच साची सेज विछांयदा। शब्द सरूपी दए हुलारा, अवण गवण पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण सच सलांहयदा। सच सलाही सतिगुर रूप, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। सर्ब जीआं दा इक्क महबूब, एका दाता बेपरवाहीआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रूप अनूप आप दरसाईआ। शाह सुल्तान वड वड भूप, वड राजन राज आप अख्वाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। जन भगतां उप्पर जाए तुठ, आप आपणा मेल मिलाईआ। अमृत जाम प्याए साचा घुट्ट, साचा साकी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। वड वड्याई बेपरवाह, भेव कोई ना पांयदा। गुरमुखां बणे मात मलाह, फड़ बेड़ा पार करांयदा। सति सरूपी देवे नाम सलाह, साचा वणज इक्क वखांयदा। आपणा ढोला देवे गा, आपणा शब्द आप उपजांयदा। गुरसिख मेले थाउँ थाँ, निथाव्याँ थान वखांयदा। नगर खेड़ा सच ग्रां, गुरमुख काया गढ़ सुहांयदा। इक्क अतीता ठंडा सीता पतित पुनीता पकड़े बांह, गुरमीत आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे हस्त आपे कीटा, आपे वसे धाम अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। ना दिसे हरि दिसणहारा, कलिजुग रैण

अन्धेरी छाईआ। चारों कुन्ट धूंआँधारा, चार वरन पई लड़ाईआ। साचा धर्म ना किसे विचारा, धरत धवल रही कुरलाईआ। गुर का शब्द ना बोले कोई जैकारा, गुर शब्द ना कोई समाईआ। जीव जन्त गढ़ हँकारा, हउमे रंग वधाईआ। बिन हरिनामे विसरया करतारा, करता पुरख ना नज़री आईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, पुरख पुरखोतम वड वड्याईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, बोध अगाध शब्द जणाईआ। सो पुरख निरँजण बोल जैकारा, हँ ब्रह्म लए समझाईआ। आलम इल्म उल्मा ना किसे विचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तालिब तल्ब ना कोई रखाईआ।

✪ ६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवन्त सिँघ दे घर
पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण हरि करतार, हरि आपणी कल वरताईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, पुरख अकाल आप कराईआ। सचखण्ड वसे सच दुआर, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। थिर घर खोल्ह् बन्द किवाड़, आपणा महल्ल अटल आप सुहाईआ। साचा नाम कर त्यार, नाम सति नाउँ रखाईआ। नाम सति तिक्खी धार, आपे आप उपाईआ। साचा खण्डा हरि निरँकार, आपणा आप उठाईआ। आपणे अन्दरों आए बाहर, आप अपणी कल धराईआ। सुन अगम्मी कर विचार, सुन्न समाध वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। रवि ससि दए हुलार, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड मारे नाअर, इक्क जैकार बुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव अपार, भेव कोई ना पाईआ। जुगा जुगन्त लए अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, जीआं जन्तां वेख वखाईआ। साधां सन्तां नाम अधार, भगत भगती मार्ग लाईआ। आपणे रंग रंगे करतार, रंग साचा आप चढ़ाईआ। नौ खण्ड पावणहारा सार, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। जेरज अंडज सुणे पुकार, उत्भुज सेत्ज भुल्ल ना जाईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर डेरा लाईआ। समुंद सागर बन्न्हे धार, सर सरोवर वेख वखाईआ। जल थल महीअल कर विचार, आप आपणी रचन रचाईआ। पृथ्मी आकाश खेल अपार, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। दिवस रैण खेल अपार, घड़ी पल वंड वंडाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। अकल कला कल आपे धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। आपे साध सन्त गुर पीर बण अवतार, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपे

हरि का नाम करे कराए वणज वपार, साची वस्त आप उपाईआ। आपे चौदां लोकां खोल्ह किवाड़, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। आपे पंज तत्त कर आकार, आपे त्रैगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणी रचन रचाईआ। सति पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एका रंग समांयदा। सचखण्ड वसे सच महल्ला, आप आपणा दर वखांयदा। थिर घर वासी उच्च अटला, पुरख अबिनाशी आप हो जांयदा। आपणी जोती आपे बला, आपणा दीपक आप जगांयदा। आपणा शब्द संदेशा आपे घल्ला, सच सुनेहड़ा आप सुणांयदा। आपणा फड़ाए आपे पल्ला, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आदि जुगादी अछल अछल्ला, वेद पुराणां भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित वेस वटांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, निरगुण आपणी आप उपाईआ। आपे रक्खे सचखण्ड दुआर, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर कर त्यार, तिक्खी धार बंधाईआ। दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। लोकमात हरि हो उज्यार, आप आपणा डंक वजाईआ। निरगुण सरगुण बन्न्हे धार, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। सन्त सहेले लाए पार, गुर चेले मेल मिलाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकार, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी वेख विचार, घट घट फोले फोल फुलाईआ। लहिणा देणा कर्म वीचार, धर्मी धर्म करे वड्याईआ। जूठ झूठ करे खुआर, सच सुच्च साचा मार्ग आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कराईआ। सति पुरख निरँजण पुरख बिधाता, एका मार्ग लांयदा। सचखण्ड वसे इक्क इकांता, एका दर खुल्हांयदा। खेले खेल बहु बिध भांता, वेस अनेक रूप वटांयदा। ज़ात में जोत जोत में जाता, भेव कोए ना पांयदा। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही नाउँ धरांयदा। शब्द अगम्मी साची गाथा, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आपे खोल्हे साचा हाटा, आपे वणज वखांयदा। आपे तीर्थ आपे ताटा, आपे अमृत जल भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। सति पुरख निरँजण सति सति सतिवाद, सारिंग धर अख्वांयदा। पारब्रह्म बीठलो माधव माध, रूप रंग ना कोई जणांयदा। सचखण्ड दुआरा आपे लाध, आपे आसण लांयदा। शब्द अनादी बोध अगाध, पुरख अकाला आपे गांयदा। आप वजाए आपणा नाद, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणांयदा। आपे मारे आपणी वाज, आपणा नाम आप धरांयदा। आपे रक्खे आपणी लाज, लजपत आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे रचे आपणा काज, करनी करता आप करांयदा। आपे जाणे आपणा राज, शाह सुल्तान आप हो जांयदा। आपणा साजण आपे साज, आपे वेख वखांयदा। आपे दाता ग़रीब निवाज़, परवरदिगार आप अख्वांयदा। आपे रक्खे लक्ख चुरासी सांझ, आपे घट घट आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

६६६ ०८

आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। सति पुरख निरँजण सति सरूप, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। वसणहारा दहि दिशा चारे कूट, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। सचखण्ड हुलारा रिहा झूट, सच सिँघासण आसण लाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोले निरगुण निरगुण विच्चों फूट, तत्व तत्त ना कोई वखाईआ। आपे धारे भेस कोटन कोट, कोटी कोटि रूप वटाईआ। आपे चढ़या आपणी चोट, आपणा दर आप सुहाईआ। आपे रक्खे आपणी ओट, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। आपे निरगुण बणे जोत, आपे सरगुण पंज तत्त कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर बणत बणाईआ। सति पुरख निरँजण बणत बणाए, आप आपणी कल धारीआ। सचखण्ड साचा धाम सुहाए, निरगुण बैठा निरँकारीआ। थिर घर आसण इक्क विछाए, भेव ना जाणे जीव संसारीआ। शब्द अगम्मी आप चलाए, आपे बन्ह्रे आपणी धारीआ। तेज़ धार नाम रखाए, प्रगट होए वड संसारीआ। ब्रह्मण्डी खण्डी वेख वखाए, आप आपणी कर विचारीआ। जेरज अंडी वंड वंडाए, खेले खेल अगम्म अपारीआ। जुगा जुगन्तर भेख पखण्डी मेट मिटाए, हरिजन साचे पार उतारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए शब्द पैज संवारीआ। शब्द निवासी पुरख अबिनाशी, घट घट अन्दर जाणया। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे रासी, निरगुण जोत नूर महानया। पृथ्मी आकाशी खेल तमाशी, खेले खेल वाली दो जहानया। जन भगतां पूरी करे आसी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात हो प्रधानया। लोकमात हरि हो प्रधान, आपणा खेल खिलांयदा। पुरख अगम्मा श्री भगवान, आप आपणी कल वरतांयदा। शब्द सरूपी सच निशान, आपणा आप झुलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे आप फ़रमान, करोड़ तेतीसा भुल्ल ना जांयदा। लोकमात कर ध्यान, साधां सन्तां आप उठांयदा। आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म समझांयदा। शब्द अनादी धुर फ़रमान, अन्दर मन्दिर आप अलांयदा। दाता दानी हरि मेहरवान, चतुर सुघड़ स्याण बाल अञ्याण आप उठांयदा। एका राग सुणाए कान, दूजी धार ना कोई जणांयदा। भगतन भगती देवे दान, हरि सज्जण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, चारों कुन्ट आप फिराईआ। उलटी गेड़े आपे लठ्ठ, गेड़ा आपणे हत्थ रखाईआ। सन्त सुहेले मेले नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमाईआ। वसणहारा घट घट, जागरत जोत करे रुशनाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट, नट नटूआ स्वांग वरताईआ। पावे सार तीर्थ अठसठ, तट किनारा वेख वखाईआ। जोती नूर लट लट, आदि जुगादी डगमगाईआ। गुरमुखां दुरमति मैल देवे कट्ट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, हउमे हँगता रोग मिटाईआ। अनहद मारे साची सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। दस्म

दुआरी हो प्रगट, आप आपणा रूप दरसाईआ। अमृत आत्म देवे झट्ट, निझर धारा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई पुरख सुल्तान, हरि सतिगुर वड मेहरवाना। खेले खेल श्री भगवान, आदि निरँजण जोत महाना। पारब्रह्म ब्रह्म मेहरवान, देवणहारा साचा दाना। हरिजन हरि हरि आत्म ज्ञान, देवे माण चरन ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाणा। खेलणहारा खेल खिलारी, जुगा जुगन्तर आप खलाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यारी, जुग जुग वेस वटाईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआरी, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। शब्द ख़ज़ाना वड भण्डारी, अतोट अतुट चलाईआ। आपे बण हरि संसारी, आपणे रंग रंगाईआ। आपे वणज करे वपारी, आपे वस्त वखाईआ। आपे गुर पीर अवतारी, साध सन्त आप हो जाईआ। आपे राज राजान शाह सिक्दारी, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे दर दर बणे भिखारी, आपे घर घर अलक्ख जगाईआ। आपे किल्ला कोट रिहा उसारी, आपे रिहा ढाईआ। आपे लक्ख चुरासी कर प्यारी, आपे मेट मिटाईआ। आपे उत्पत करे आदि जुगादी आपणी वारी, आपे आपणे विच समाईआ। आपे विष्नूं वंसी हो उज्यारी, आपे आपणा वेस वटाईआ। आपे ब्रह्मा कँवल खिले गुलज़ारी, आपे पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाईआ। आपे शंकर खेल न्यारी, बाशक तशका गल सुहाईआ। आपे त्रैगुण तत्त विचारी, त्रै त्रै वेख वखाईआ। आपे पंज तत्त बण भण्डारी, आप आपणा आप विकाईआ। आपे सतिगुर गुर गुर खेल करे संसारी, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। सति पुरख निरँजण हरि हरि नाउँ, जुगा जुगन्तर आप धरांयदा। आपे वेखे थाँईं थाउँ, दर दर आपणा वेस वटांयदा। आपे नगर आप ग्राउँ, आपणा खेड़ा आप वसांयदा। आपे पिता आपे माउँ, पूत सपूता आपे जांयदा। आपे पकड़णहारा बाहों, आपे आपणा मार्ग लांयदा। आपे देवणहारा ठंडी छाउँ, सिर समरथ आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, आपे साची चोग चुगांयदा। आपे जुग जुग करे सच न्याउँ, शब्द विचोला नाल रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ रखांयदा। शब्द विचोला हरि निरँकार, आपणा आप बणांयदा। सचखण्ड वेखे सच दुआर, लोकमात फेरा पांयदा। लोकमात लक्ख चुरासी बण बण यार, साचा हुक्म सुणांयदा। सचखण्ड वेखे मीत मुरार, निरगुण बैठा आसण लांयदा । लोकमात हो ख़बरदार, आपणा डंक वजांयदा। सचखण्ड निउँ निउँ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। सचखण्ड वड बलकार, राज राजाना आप उठांयदा। लोकमात मारे मार, बचया कोई रहिण ना पांयदा। करनी करता करे कार, कादर करीम आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, शब्द वचोला मात कर, जुग जुग लेखा लेख चुकांयदा। शब्द विचोला मारे फेरे, दो जहानी बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी लेवे घेरे, आप आपणी कल वरताईआ। सचखण्ड निवासी देवे गेड़े, आपणी वारी आप भुआईआ। जगत विचोला वसे खुल्ल्हे वेहड़े, कोटन कोटि ब्रह्मण्डां डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आप आपणा हुक्म चलाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमान, हरि शब्दी शब्द अल्लांयदा। लोकमात मार ध्यान, सच सन्तां आप सुणांयदा। भगतां देवे इक्क ज्ञान, एका रूप दरसांयदा। गुरमुख बणाए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ गले लगांयदा। गुरमुखां देवे नाम निधान, हउमे रोग मिटांयदा। मनमुख ना सके कोई पछाण, गूढ़ी नींद सवांयदा। शब्द विचोला गुण निधान, आपणा कर्म कमांयदा। डंका मारे विच जहान, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। माया राणी हो प्रधान, आपणा रंग रंगांयदा। नाल रलाए पंज शैतान, पंचां जोड़ जुड़ांयदा। मन मति रलाई बेईमान, सच ईमान ना कोई धरांयदा। हरि का नाम ना सुणया कान, काया गढ़ ना कोई वखांयदा। शब्द विचोला मारे उठ ध्यान, आप आपणी अक्ख खुल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा खेल खिलांयदा। लोकमात वेख विचार, शब्दी शब्द करे सलाहीआ। मन मति होई नार विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर प्यार, आपणी सेज रही हंढाईआ। हउमे हँगता आसा तृष्ना झूठी जूठी धार, शौह दरया रही वहाईआ। माया ममता डूंघी गार, अन्ध अन्धेरा अन्ध रिहा छाईआ। वरन बरन ना कोई प्यार, नाता तुट्टा भैणां भाईआ। राज राजान शाह सुल्तान रहे झक्ख मार, ग़रीब निमाणे कोई ना गले लगाईआ। धरत धवल करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। साधां सन्तां हाहाकार, अन्तर आत्म रही कुरलाईआ। भगत ना सुणे कोई पुकार, भरमे भुल्ली झूठी शाहीआ। चारों कुन्ट गढ़ हँकार, कलिजुग किला रिहा बणाईआ। उत्ते चढ़या मन सिक्दार, सीस आपणा ताज टिकाईआ। हउमे रलया नाल सरदार, देवे सिफ्त सलाहीआ। काम क्रोध मोह हंमार, लोभी बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुहंदड़ा वेखे घर, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। शब्द सरूपी घर घर वड़या, भुल्ल रहे ना राया। कलिजुग आपे घाड़ण घड़या, आपे रचन रचाया। कलिजुग विद्या आपे पढ़या, चौदां विद्या माण मुकाया। साधां सन्तां पांधे पंडतां दर दुआरे खड़या, मुलां शेख़ मुसायक पीर रिहा भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा शब्द विचोला, लोकमात धराया। शब्द विचोला फेरा पा, लोकमात वेख वखाईआ। आपणा पन्ध रिहा मुका, सचखण्ड साचा राह तकाईआ। सम्मत सोलां गया आ, आपणा लेखा लए लिखाईआ। पुरख अबिनाशी दए सुणा, जो पढ़या पढ़ जणाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा जो ल्या बणा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाईआ।

तेरा नां गए भुला, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुर गोबिन्द गया लिखा, रैण अन्धेरी छाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई भैण ना भ्रा, ना कोई नारी कन्त भतार, ना कोई नगर ना कोई ग्रां, ना कोई तीर्थ तट्टां देवे छाँ, चारों कुन्ट काम क्रोध लोभ मोह हँकार साध सन्त ना पकड़े बांह, राज राजान ना करे सच न्याँ, ग़रीब निमाणे मारन धाह, दुःख भुक्ख रही सताईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, वेखणहारा थाउँ थाँ, जुग जुग करे सच न्याँ, घर साचे बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, शब्दी सुत्त बुलाया। घनक पुर वासी शाहो शाबासी, सच संदेशा हाल सुणाया। पंडत कांशी मदिरा मासी, दर मन्दिर ना कोई सुहाया। सन्यासी वैरागी ना रही उदासी, धीरज जत ना कोई धराया। माया ममता पाई फाँसी, साध सन्त होए हल्काया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा भाणा तेरे दर ना भाया। पुरख अबिनाशी ल्ए अंगड़ाई, आपणी करवट आप बदलाईआ। सचखण्ड दुआरा सोहे चाँईं चाँईं, निरगुण खेले खेल बेपरवाहीआ। नाम कटार तिक्खी धार रिहा उठाई, दो जहानां आप चमकाईआ। सो पुरख निरँजण खेल रचाई, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। सोहँ चिल्ला तीर कमान चलाई, जगत निशाना इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खण्डा कर त्यार, पुरख अबिनाशी मारे मार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तिक्खी धार रखांयदा। सोहँ शब्द बोल जैकार, लोकमात उठ धांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहांयदा। शंकर गल विच लाहे हार, हथ्थ त्रिशूल उठांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द ढहि ढहि पए दुआरा, फड़ बाहों ना कोई उठांयदा। रवि ससि करन निमस्कारा, आप आपणा भेट चढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी शाह अस्वारा, साचे अस्व आसण लांयदा। सोलां कलीआं कर श्रृंगारा, सोलां इच्छया पूर करांयदा। खड़ग खण्डा हरि तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकांयदा। नीली धारों पार किनारा, लोकमाती राह तकांयदा। प्रगट हो विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। सोहँ डंका अपर अपारा, आपणा नाम वजांयदा। शाह सुल्तानां करे ख़बरदारा, वेला अन्तिम आंयदा। संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नैण खुल्हांयदा। ईसा मूसा खोल्ह किवाड़ा, आपणा राह वखांयदा। अञ्जील कुराना दए हुलारा, कलमा नबी आप पढ़ांयदा। आपे पावणहारा सारा, शरअ शरीअत आप रचांयदा। आपे चौदां तबकां दए हुलारा, नौ पंज वेख वखांयदा। आपे चौदां सदीआं करे पार किनारा, चौधवीं चन्द आप चढ़ांयदा। आपे अल्ला हू हू लाए नाअरा, बिस्मिल रूप आप हो आंयदा। आपे ऐनलहक्क करे प्यारा, हक्क हकीकत आपे वेख वखांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, सांझा यार आप हो जांयदा। मुकामे हक्क हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे जाणे आपणा पार किनारा, आपणा हुक्म आप चलांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, भेव कोई ना पांयदा। वेद

पुराण पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, नेत्र लोचण नैण दरस कोई ना पांयदा। वेद व्यासा बण लिखारा, साचा राह वखांयदा। नानक गोबिन्द रहे पुकारा, एका नैण उठांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे विच संसार, निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोई बणांयदा। त्रैगुण रूप वस्सया बाहरा, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। नाम खण्डा तेज कटारा, हरि आपणे हथ्थ उठांयदा। दिस ना आए विच संसारा, निहकर्मी कर्म कमांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। चरन प्रीती चरन दुआरा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। समरथ पुरख घड़न भन्नणहारा, आपे घड़े आपे भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द कटार रक्खी तिक्खी, पावे सार मुनी रिखी, परखी जाए साची सिक्खी, वालों निक्की खंडिउँ तिक्खी, नेत्र नैण दिस ना आईआ। सूरबीर सुल्तान, जोद्धा बलि बली बलकारया। पारब्रह्म श्री भगवान, आदि निरँजण खेल अपारया। आदि जुगादी नौजवान, जागरत जोत इक्क जगा रिहा। कलिजुग वेखे जीव शैतान, घट घट अन्दर रूप वटा ल्या। गुरमुख मेले करे दर परवान, दर दरवाज़ा आप खुल्हा ल्या। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, आप आपणी दया कमा रिहा। चरन धूढ़ बख्शे सच अशनान, दुरमति मैल गंवा रिहा। मनमुक्ख वेखे जीव शैतान, धरत मात गोद बहा रिहा। जूठी झूठी जगत दुकान, कलिजुग अन्तिम आप लुटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द पीर आप बणा रिहा। शब्द हरि शब्द दर, शब्दी शब्द वड्डी वड्याईआ। शब्दी धरनी धरत धवल धर, हरि शब्द करे कुड़माईआ। शब्द चुकाए जगत डर, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। शब्द शब्दी रिहा लड़, नौ खण्ड फेरा पाईआ। शब्दी शब्द फड़ाए लड़, एका पल्लू नाम रखाईआ। शब्दी शब्द मन्दिर जाए वड़, काया मन्दिर सोभा पाईआ। शब्द शब्दी गुरमुख अक्खर जाए पढ़, ना दूसर कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सज्जण लए तराईआ। तारनहारा हरि निरँकार, हरिजन साचे आप तरांयदा। चरन प्रीती बख्श प्यार, साची रीत इक्क वखांयदा। नाम निधाना भर भण्डार, आत्म झोली आप भरांयदा। कलिजुग खाली करे दुआर, झूठा ठूठा भन्न वखांयदा। सच वस्त ना किसे दुआर, ना कोई भिच्छया इच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मीत मुरार, कर कर किरपा लाए पार, बेड़ा बन्न्हे आपे लांयदा। गुरमुख बेड़ा पार किनारे, हरि साचा आप लगाईआ। मनमुख डुब्बे विच मँझधारे, डूँघी धार वहाईआ। कलिजुग कूड़ा कूके कूक पुकारे, दिवस रैण दए दुहाईआ। नाता तुट्टा संग मुहम्मद चार यारे, चार यारी रही मुख भवाईआ। प्रगट होया हरि निरँकारे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पंचां बन्न्हे सीस दस्तारे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार वरन

कराए इक्क वपारे, एका करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सोहिण इक्क दुआरे, शूद्र ब्रह्मण क्षत्री वैश ना कोई अख्वाईआ। एका नाम भरे भण्डारे, अतोट अतुट रखाईआ। चार कुन्ट पुरख अकाल तेरे नाउँ जैकारे, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। आपे राम कृष्न अवतारे, आपे गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। आपे ब्रह्मा वेद विचारे, शास्त्र सिमरत आप बणाईआ। आपे वेद व्यास बण लिखारे, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक लिखाईआ। आपे ईसा मूसा खेल न्यारे, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। आप मुहम्मद चार यारे, आपे सगला संग निभाईआ। आपे बन्ने साची धारे, तीस बतीसा आपे गाईआ। आपे निरगुण जोत नूर उज्यारे, आप पंज तत्त नाउँ रखाईआ। आपे सतिनाम बोल जैकारे, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ। आपे गोबिन्द दस अवतारे, पूत सपूता नाउँ धराईआ। आपे अमृत ठंडी ठारे, आपे शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। आपे करे खेल न्यारे, खेलणहारा दिस ना आईआ। आपे सूलां सथ्थर आपणी सेज माणे, आपे शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। आपे जोत अकाल दीन दयाल खेले खेल विच संसारे, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। आपे आदि आपे अन्त, आपे मध समाईआ। आपे जोत नूर हो उज्यारे, गुर गुर आपे नाउँ धराईआ। आपे लेखा लिखे लिखारे, गुर गोबिन्द रिहा समझाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, निहकलंका जाम प्याईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारे, बैठे आसण लाईआ। मनमुख जीव ना कोई विचारे, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। सदी बीसवीं खेल अपारे, बीस बीसा आप कराईआ। सम्मत सोलां आपणा पर्दा पाड़े, आपणा नूर करे रुशनाईआ। सम्मत सतारां आए विच अखाड़े, जोद्धा सूरबीर आप हो जाईआ। नाल रलाए गुरमुख लाड़े, हथ्थीं गाना नाम बंधाईआ। दिवस सुहाए सतारां हाढ़े, हरि की पौड़ी आप चढ़ाईआ। जगे जोत बहत्तर नाड़े, सम्मत सोलां वड वड्याईआ। आपे जाणे आर पार किनारे, मँझधार आपे डेरा लाईआ। गुरमुखां हरि काज सुआरे, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। जो सरसे डुब्बे कलिजुग धारे, अन्तिम आप आपणा मेल मिलाईआ। माया ममता भुल्ले जीव गंवारे, हरि का रूप दिस ना आईआ। गुरमुख सुत्ते पैर पसारे, जिस मिल्या दाता बेपरवाहीआ। लोकमात खिड़ी गुलज़ारे, फल फुल्ल आप महिकाईआ। गुरसिख प्रीती बणया साचे हारे, तन सच शृंगार कराईआ। लक्ख चुरासी लुट्टी जाए दिन दिहाड़े, औंदा जांदा दिस ना आईआ। गुरमुखां करे जगत प्यारे, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। दरस दखाए अगम्म अपारे, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। जुगां जुगां दे काज संवारे, जो जन रसना रहे ध्याईआ। काल महांकाल ना आए दुआरे, प्रभ बख्शे सच सरनाईआ। गुरसिख बहाए सचखण्ड महल्ल उच्च चुबारे, अटल थान इक्क वखाईआ। दरगाह साची मेल कन्त भतारे, कन्त कन्तूहला मेल मिलाईआ। धन्न सोभागण गुरमुख साजण साची नारे, वर पाया बेपरवाहीआ। मनमुख जीव मानस जन्म गए हारे, लक्ख चुरासी आप

भुवाईआ। राए धर्म मारे मारे, आपणे कुण्डां आप फिराईआ। रो रो कढुण हाढ़े, बिन सतिगुर पूरे ना कोई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां मेले साचे घर, आवण जावण चुक्के डर, आप लगाए आपणे लड़, साचे पौड़े जाए चढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, दरस दखाए अग्गे खड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताईआ।

भगत जनां गुण हरि हरि गाए, हरि सन्त जनां सेव कमाईआ। गुरमुखां लेखा लेख लिखाए, गुरमुख वेख वखाईआ। धुर संदेशा आप सुणाए, सतिगुर साचा नाउँ धराईआ। नर नरेशा वेस वटाए, धरत धवल डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन सज्जण लए मिलाईआ। गुरमुख साचे आप उपाए, आपणी दया कमाईआ। गुरमुख रंगन रंग रंगाए, रंग कंचन इक्क चढ़ाईआ। सन्त साजण संग निभाए, सगला संग निभाईआ। भगतां भगती मार्ग पाए, आप आपणा राह दिसाईआ। जुगा जुगन्तर धार बंधाए, आप आपणा नाम दृढ़ाईआ। एका शक्ती जोत जगाए, सच व्यक्ती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। भगतन घर हरि वस्सया, सन्तां धुर संजोग। गुरमुखां राह साचा दस्सया, गुरमुखां कट्टे हउमे रोग। बिरहो वैरागी फिरे नस्सया, लभ्भदा फिरे चौदां लोक। औंदा जांदा किसे ना दिस्सया, आप सुणाए सच सलोक। लोकमात वंडावे आपणा हिस्सया, आपे देवे साची मोख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे ओत पोत। सिख वणजारा नाम धन, गुर सतिगुर आप बणाईआ। गुरमुखां राग सुणाए कन्न, आप आपणा ढोला गाईआ। सन्त चढ़ाए साचे चन्न, लोकमात करे रुशनाईआ। भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, नित नवित्त वज्जी वधाईआ। हरिजन साचा जननी जणे जन, जन जननी लेखे लाईआ। मेट मिटाए पंच विकारा तन, एका नाम रत्न झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। भगतन घर भगवान, जुग जुग वेस वटांयदा। सन्तां देवे आत्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान आप समझांयदा। गुरमुख मेले वाली दो जहान, भगत विछोड़ा फंद कटांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, सच प्रीती इक्क सखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीआं दाता आपणी जुगत आप जणांयदा। गुरसिख सिक्खी सच विचार, साचा सच समझांयदा। गुरमुख साजण लाए पार, आपणा बेड़ा आप उठांयदा। सन्त सुहेले बोल जैकार, आपणा सोहला आप सुणांयदा। भगत मेला विच संसार, भगवन आपणा आप करांयदा। नेत्र दर्शन नैण उग्घाड़, लोचण आप खुल्हांयदा। धर्म वखाए इक्क अखाड़, सचखण्ड दुआरे

सोभा पांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़, एकओंकारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। भगतन मीता हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सुत्त जगाए जुगा जुगन्त, जोती नूर कर रुशनाईआ। गुरमुख महिमा जगत अगणत, लेखा लेख ना कोई वखाईआ। गुरसिख रसना जिह्वा मणीआ मंत, एका ब्रह्म नाम दिसाईआ। दोहां विचोला बण भगवन्त, चारे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवान एका ओट, एका आस रखांयदा। सन्तन कढ्ढे विच्चों खोट, कोटी कोटि फोल फुलांयदा। गुरमुख तन नगारे लाए चोट, अनहद साचा ताल वजांयदा। गुरसिक्खां कढ्ढे वासना खोट, सच सुगंधी नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरस दिखाए निर्मल जोत, बिजली रूप आप हो जांयदा। गुरमुख सज्जण सच है, साचे संग प्यार। गुरमुख रिहा नच्च है, घर होए मंगलाचार। सन्त हरि शब्द रिहा वाच है, धुर फ़रमाना पावे सार। भगत नाता तोड़े पंज तत्त माटी कच्च है, पाए पुरख पुरख करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। भगतन भगती रतया, नामा रंग चलूल। सन्तां अन्दर आपे वस्सया, पुरख अबिनाशी कन्त कन्तूहल। गुरमुखां पिच्छे फिरे नस्सया, आदि जुगादि ना जाए भूल। गुरसिख मार्ग आपणा दस्सया, आप चुकाए पिछला मूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आप अस्थूल। गुरसिख सच्चा सच्चा राह, एका एक तकाईआ। गुरमुखां बणे आप मलाह, आपे बेड़ा रिहा चलाईआ। सन्तां देवे सच सलाह, पंचम पंचम इक्क बणाईआ। भगतन मेला बेपरवाह, भगत भगती लेखे लाईआ। वेखणहारा थाउँ थाँ, हरि वड वड्डा वड्याईआ। करे कराए सच न्याँ, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे भगतन संग, सन्तन दर वज्जे मृदंग, गुरमुख पार किनारा जाए लँघ, गुरसिख लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। गुरसिक्खां आपणे अंग आप लगा, आपे गोद सुहांयदा। गुरमुख साचे लए जगा, आपणा मेल मिलांयदा। सन्तन नाम दए जपा, राम नाम रंग रंगांयदा। भगतन बणे पिता माँ, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। भगतन रंग हरि मौलया, परम पुरख करतार। जन सन्तां उलटा करे नाभ कँवल्या, अमृत भरे भण्डार। गुरमुखां माण दुवाए उप्पर धवल्या, धरन धरनी पैज संवार। गुरमुख मेला साँवल सँवलया, शाम सुन्दर मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। गुरसिख गुर गुर पाया, हरि गोबिन्द। गुरमुख नाम ध्याया, मिटी सगली चिन्द। घर सन्तन राग अल़ाया, वड दाता गुणी गहिंद। भगतन मेला सहिज सुभाया,

करे कराए सदा बख्शिंद। कलिजुग चौथे जुग आपणा खेल खिलाया, वड दाता गुणी गहिंद। चारे अक्खर आप पढ़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा अंक आपे लेखे लाया, आपणा अंक आप बणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। भगतन मेला सहिज सुभा, घर सज्जण वेख वखाईआ। दूजा अक्खर नाल रला, हरि सन्त करे कुड़माईआ। तीजा नाता दए जुड़ा, गुरमुख मेल सच सरनाईआ। चौथे पौड़े आप दए चढ़ा, गुरमुख विछड़ कदे ना जाईआ। चारे अक्खर वेख वखा, आप आपणा रंग रंगाईआ। कलिजुग ढेरी देवे ढाह, चौथा जुग रहिण ना पाईआ। चारे अक्खर देण सलाह, वाह वाह गुरू वड्डी वड्याईआ। गुरसिख गुरमुख लए तरा, सन्त भगवन्त गोद उठाईआ। चौहां मेला दए मिला, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ धरा, सचखण्ड दुआरे सच दरबारा इक्क लगाईआ। नानक गोबिन्द बणे गवाह, नाल कबीरा भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दे विछड़े यार, आप आपणा कर प्यार, अन्तिम आपणे लेखे आपणे खाते आपे पाईआ। हरि सज्जण शाह वड्डा खाता, धुरदरगाह रखाया। आपे बणया गुरमुखां मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाया। दूसर कोलों ना लए सलाह, ना कोई संग रलाया। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे फड़ फड़ बांह, आप आपणा बिरध रखाया। गुरसिख गुर कदी भुल्ले ना, गुर गोबिन्द रिहा गुरमुखां उत्तों भेट चढ़ाया। अन्तिम खेवट खेट बण दस्से राह, अगला पन्ध मुकाया। गुरसिक्खां दे गीत सुहागी आपे रिहा गा, आपे सगन मनाया। जोत निरँजण तक्के राह, आदि निरँजण ध्यान लगाया। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, भज्जा जावे वाहो दाहया। दरगाह साची साचा थाँ, गुरसिक्खां वंड वंडाया। कलिजुग जीव अञ्याणे हँस बणे काँ, कां कागां विच फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां उत्तों हो कुरबान, आप आपणा सीस जगदीश भेट चढ़ाया।

✪ ७ भाद्रों २०१६ बिकर्मी बलदेव सिँघ दे घर पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुखां देवे अनमोल, वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख साचे कंडे देवे तोल, एका तोला हरि रघुराईआ। सन्तां वसे सदा कोल, घर घर विच मेल मिलाईआ। भगतां अन्दर आपे बोल, नाम जैकारा इक्क सुणाईआ। सच दरवाजा साचा खोल्ह, साचे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। भगती हरि हरि जाणया, एका एक एकँकार। हरि सन्त रूप पछाणया, निरगुण नूर जोत निराधार। गुरमुख साचे मिले माणया,

मेल मिलावा कन्त भतार। गुरमुख चले साचे भाणया, साचा हुक्म सच्ची सरकार। जगत विचोला श्री भगवानया, आदि जुगादी करे कार। नाम विचोला दो जहानया, आप बणाए सच्चा सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता करे विचार। गुरमुख चरन गुर जोड़या, कर किरपा देवे दात। गुरमुख चढ़े साचे घोड़या, मिटे रैण अन्धेरी रात। सति लगाए साचा पौड़या, उच्च महल्ल मार झात। जन भगतां आपे बौहड़या, लेखा लिखे बिन कलम दवात। लक्ख चुरासी वेखणहारा मिट्ठा कौड़या, जुगा जुगन्तर लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सर्ब कला समराथ। भगत वछल हरि हरि मीता, एका रंग समाया। सन्तन मेला धाम अनडीठा, अमृत जल प्याया। गुरसिख काया ठंडा सीता, सांतक सति आप वरताया। जुगा जुगन्तर आपणी रीता, हरि आपे मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। गुरमुख मीत साचा सज्जण, गुर सतिगुर आप तरांयदा। गुरमुखां कराए साचा मजन, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का आप लगांयदा। सन्त सुहेला सन्तन होए पर्दे कज्जण, नाम दोशाला उप्पर पांयदा। भगत भगवन्त एका धाम बहि बहि सजण, घर साचा इक्क सुहांयदा। आदि जुगादी आपे रक्खणहारा लज्जण, आप आपणी सेव कमांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता आप अख्वांयदा। भगत वछल गिरवर गिरधारा, कँवल नैण अख्वाईआ। सन्तन करे सच प्यारा, साख्यात दरस वखाईआ। गुरमुखां देवे नाम भण्डारा, राम नाम आपणे हट्ट विकाईआ। गुरमुखां खोल्ह्रे बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा मेट मिटाईआ। साची सखीआं गावण मंगलचारा, घर साचे वज्जे वधाईआ। खेले खेल पुरख करतारा, एक एकँकारा आपणी कल वरताईआ। आदि निरँजण भेव न्यारा, आदि शक्ति वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर सिरजणहारा, पारब्रह्म अख्वाईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआरा, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। भगतन हरि रंग रतया, रंगे रंग अपार। सन्तन देवे साची सत्तया, सतिनाम अधार। गुरमुखां पंच विकारा करे हत्या, खड़ग खण्डा देवे मार। गुरमुख चरन बंधाए नतया, नाता तोड़ सर्ब संसार। आप सुणाए साची गाथिआ, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सर्ब कला आपे समरथया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। जन भगतां मार्ग साचा दस्सया, सोहँ शब्द नाम जैकार। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थया, भव सागर लाए पार। जो जन सरनाई आए ढठ्ठया, राए धर्म ना करे खुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगवन्त सन्त कन्त गुरमुखां बणाए बणत, गुरमुख उपजाए विच जीव जन्त, जीआं दाता आप अख्वाईआ। जी दाता हरि भगवान, गुरमुख मेल मिलन्नया। गुरमुखां मात करे पछाण, देवे नाम

सच्चा धन धन्नया। सन्तन राग सुणाए कान, धुन अनादी इक्क वखन्नया। भगतन भगती कर परवान, आप चढ़ाए साचा चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणा वेस नर नरेश दर दरवेश, खेले खेल दो जहानया। दो जहानां खेल अगम्म, भेव अभेद छुपाया। गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न्, साचे मार्ग आपे लाया। गुरमुखां लेखे लाए तन, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाया। सन्तन कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न जणेंदी माया। जगत दुआरे जाए मन्न, आप आपणा बिरध रखाया। कलिजुग अन्तिम श्री भगवान, भारत खण्ड कराया। लक्ख चुरासी देवे डन्न, जो घड़या सो भन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, माण ताण भगत भगवान सन्त निधान गुरमुख पछाण, गुरसिख वखाण कर्म धर्म जन्म मरन हरन फरन नेत्र फोर अन्ध घोर पंच चोर शब्द डोर चढ़ घोड़ दए होड़, लोआं पुरीआं दौड़, सचखण्ड लाया एका पौड़, गुरमुखां दए बिठाया। गुरसिख गुरमुख आ, हरि सतिगुर आप मिलांयदा। सन्त भगवन्त गलवकड़ी पा, आपणा आप बुझांयदा। नाम तक्कड़ी तोल तुला, सो पुरख निरँजण एकँकारा आपणी धार उठांयदा। आपणा वाक आपे दए सुणा, सोहँ बोला बोल बुलांयदा। सो पुरख निरँजण तोला आप अख्वा, हँ ब्रह्म मुल पुवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां पर्दा उहला दित्ता चुका, रूप अनमुल्ला आप दरसांयदा। गुरसिख गुरसिख आ सुत्त दुलारे, सतिगुर पूरा राह तकाईआ। सन्तन जाए बल बलिहारे, बलिहारी बलिहार आप हो जाईआ। भगतन मंगे मंग दुआरे, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी बण भिखारे, घर घर अलक्ख जगाईआ। गुरसिखां वसदे रहिण दुआरे, जगत निशान आप झुलाईआ। गुरमुख चढ़े उच्च मुनारे, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सन्तन पाया पुरख करतारे, निहकलंका मिल्या साचा माहीआ। भगतन करया इक्क श्रृंगारे, नेत्र नैणां नाम कज्जल धार बंधाईआ। सीस गुंदाया पहली वारे, आपणी मेढी आप वखाईआ। चार जुग बणे कहारे, रहे भार उठाईआ। पुरख अबिनाशी वाजां मारे, घर बैठा बेपरवाहीआ। सन्त मेरे सुत्त दुलारे, जिउँ गोबिन्द मेला चाँईं चाँईंआ। कलिजुग अन्तिम खड़ा किनारे, प्रभ देवे धक्का लाईआ। गुरसिखां उत्तों आपणा आप पहला वारे, हरिसंगत फेर बणाईआ। लोकमात खिड़ी गुलज़ारे, जुग जुग रक्खे बूटे कलिजुग अन्तिम धरत धवल दए टिकाईआ। सतिगुर घर बसन्त खिड़ी सच्ची गुलज़ारे, हरिसंगत महक महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआं दान, गुरमुखां सगली चिन्त आप निवारे।

गुरमुखां कट्टे हउमे रोग, हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुरमुखां देवे साचा जोग, एका रसना नाम जणाईआ। सन्तन देवे सति सन्तोख, सति सतिवादी वड्डी वड्याईआ। भगतन मीता दरस अमोघ, आप आपणा आप दरसाईआ। जुगा जुगन्तर सच सलोक, धुर मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बेअन्त बेअन्त आप अख्वाईआ। भगतन मेला सच दुआर, हरि साचा आप करांयदा। सन्तन सोहे जगत दुआर, दर दरवाजा आप खुल्हांयदा। गुरमुखां देवे दरस अपार, नेत्र नैणां दरस दखांयदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा वेख वखांयदा। वेखणहार पुरख समरथ, गुण अवगुण ना कोई जणांयदा। गुरसिख साचे लए रक्ख, रक्खणहारा दया कमांयदा। गुरमुखां सगल वसूरे जायण लथ्थ, निज नेत्र दरस वखांयदा। सन्तन वसे घट घट, घट मन्दिर डेरा लांयदा। भगतन वखाए साचा हट्ट, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख अगम्म बेपरवाह आप अख्वांयदा। बेपरवाह हरि निरँकार, भगतन संग निभाईआ। सन्तन सोहे बंक दुआर, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरसिख मंगण मंग भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। गुरसिखां गुर देवणहार, गुर शब्दी वंड वंडाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, घर साचा वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर करतार, धुर दी बाण आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुण निधान वड वड्याईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधान, गहर गम्भीर समांयदा। गुरमुखां देवे साचा दान, गुरमुखां चरन धूढ़ अशनान करांयदा। सन्त वखाए सच निशान, घर साचे आसण लांयदा। भगतन मीता इक्क भगवान, नित नवित्त वेस वटांयदा। जागरत जोत खेल महान, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्भय आपणा नाउँ धरांयदा। निर्भय रूप सच्ची सरकार, सति पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। भगत वछल जग पावे सार, आप आपणा वेस वटाईआ। सन्तन घर बोल जैकार, शब्द अगम्मी आप सुणाईआ। गुरमुख साचे दए हुलार, नाम हुलारा इक्क लगाईआ। गुरमुखां नेत्र दए उग्घाड़, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, नाता तोड़े जगत लोकाईआ। घाड़ण घड़े गुर करतार, भन्नणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। कुलवन्ता हरि भगवान, भगतन संग निभांयदा। जुगा जुगन्ता खेल महान, हरि सन्तन जोत जगांयदा। आदिन अन्ता गोपी काहन, गुरमुख मण्डल माया रास रचांयदा। गुरसिख वेखे कर ध्यान, दर साचा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल हरि भगवन्त, भगत भावनी पूर कराईआ। लेखा जाणे साचे सन्त,

सति सरूपी नाउँ धराईआ। गुरमुखां बणाए साची बणत, साची देवे नाम वड्याईआ। गुरसिख मेला हरि हरि कन्त, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। सच सुहावनी रुत्त बसन्त, रुत्त रुतड़ी आप सुहाईआ। घर मन्दिर हरि सोभावन्त, घर सखीआं मंगल गाईआ। घर मेला घर चेला घर गुरू भगवन्त, घर ताल तलवाड़ा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क वखाईआ। साचा दर ग़रीब निवाज़, आपणा आप सुहांयदा। गुरमुखां मारे इक्क अवाज़, सोए मात उठांयदा। गुरमुखां देवे साचा ताज, सीस सेहरा नाम बंधांयदा। सन्तन रक्खणहारा लाज, जोती नूर डगमगांयदा। भगतन पूरा करे काज, करनी करता आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। जुगा जुगन्तर रक्खणहारा लाज, आप आपणा बिरध धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहारा आ गया, कल कल्की लै अवतार। गुरमुख सोए आप उठा गया, निरगुण जोत कर उज्यार । गुरमुख साजण मेल मिला गया, तन कर कर शब्द शृंगार। सन्त सुहेले रंग रंगा गया, रंग मजीठी आपणा चाढ़। भगत भगवन्त कोल बहा गया, आप सुहाया साचा लाड़। आपणी सेवा आप कमा गया, गुरमुखां गिर्द करे साची वाड़। कलिजुग राखा हो के दे सुणा रिहा, त्रैगुण लग्गी मात आग। हँसा काग बणा गया, कागों हँस देवे साज। जो जन सरनाई आ गया, लोकमात रक्खे लाज, एका अल्फ़ी गल विच पा गया, सीस धरया सोहँ ताज। दो जहानां पन्ध मुका गया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा साजण साज। सज्जण सच्चा बोल्लया, घर घर शब्द जैकार। आदि जुगादि कदे ना डोल्लया, पारब्रह्म हरि करतार। गुरमुख आपणे कंडे तोल्लया, फड़ हत्थ सच्ची सरकार। जो जन चरन प्रीती घोल घोल्लया, लेखा लेखे लाए विच संसार। कलिजुग खेलण आया होल्लया, सृष्ट सबाई हौला करे भार। गुरमुखां अन्दर आपे बोल्लया, दिवस रैण करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीअ जन्त जगत जुगत करे कराए सच विहार।

✪ ७ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे घर पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख मेला साचे घर, थिर घर नाउँ रखाईआ। गुरमुख वेखे अन्दर वड़, सतिगुर पूरा बूझ बुझाईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, आपे वेखे बेपरवाहीआ। जन भगत फड़ाए आपणा लड़, निरगुण दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलाईआ। हरिजन वासा थिर दरबार, गुरसिख मेल मिलांयदा। गुरसिख सोहे बंक दुआर, सन्त सुहेले पार करांयदा। भगती नाम बोल जैकार, भगत भगवन्त खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार,

आदि जुगादी वेस वटांयदा। सर्ब कल वरते संसार, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, सति सरूपी डगमगांयदा। भय भंजन भव सागर करे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखांयदा। वेखणहारा दीन दयाल, अकल कला वड्याईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, साचे हट्ट विकाईआ। गुरमुखां बणे आप दलाल, सच सालस बेपरवाहीआ। सन्तां नित नवित्त करे रखवाल, करनी करता वेस वटाईआ। भगत भगवन्त वसे धर्म सच्ची धर्मसाल, दर साचा इक्क सुहाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख प्रीती निभे नाल, गुर पूरा आप निभाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। फल लगाए साचे डाल, फुल्ल फुलवाड़ी आप लगाईआ। जो जन चरन प्रीती घालण रहे घाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे लेखे आपे लाईआ। गुरसिख हरि हरि पाया, परम पुरख करतार। गुरमुख विरले रसना गाया, भरमे भुल्ला सर्ब संसार। घर सन्तन रंग चढ़ाया, आप आपणी किरपा धार। शब्द विचोला आप अख्वाया, शब्दी शब्द वणज वपार। आपणा ढोला आपे गाया, जुग जुग वेस आप निरँकार। काया चोला आप हंढाया, पंज तत्त कर उज्यार। पर्दा उहला आप रखाया, आपे अन्दर आपे बाहर। सर्ब कला समरथ आप अख्वाया, खेले खेल अगम्म अपार। हरिजन सगली चिन्त मिटाया, हउमे हँगता रोग निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उभार। गुरमुख साचा सच घर मन्नया, घर मेला बेपरवाह। गुरमुख चढ़े साचा चन्नया, वेख वखाए थाउँ थाँ। सन्तां गढ़ हँकारी भन्नया, एका देवे ठंडी छाँ। भगतां भाणा हरि हरि मन्नया, निउँ निउँ रहे सीस झुका। खेले खेल श्री भगवन्नया, आप आपणी जोत जगा। लक्ख चुरासी देवे डन्नया, ना कोई सके मात बचा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण लए तरा। तारनहारा पुरख अकाल, इक्क इकल्ला एकँकारया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, लोकमात लै अवतारया। निरगुण सरगुण बण दलाल, नाम वणज इक्क करा रिहा। वसणहारा काया माटी झूठी खाल, कंचनगढ़ आप बणा ल्या। सर सरोवर भरया ताल, अमृत झिरना आप झिरा ल्या। जन भगतां आप रखवाल, सेवक सेवा सच कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेख वखा रिहा। गुरमुख सज्जण रंग मजीठ, हरि सतिगुर आप चढ़ांयदा। गुरमुखां हरि हरि वस्सया चीत, चितवित ठगौरी कोई ना पांयदा। सन्त सुहेला इक्क अतीत, त्रैगुण वेस ना कोई वटांयदा। भगतन मीता ठंडा सीत, सति सन्तोखी धार चलांयदा। आदि जुगादी अचरज रीत, मन्दिर मसीत ना कोई वखांयदा। एका शब्द सुणाए सुहागी गीत, हरि गोबिन्द नाउँ धरांयदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप

१०१४
०८

हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे घर, सन्तन वेखे अन्दर वड़, गुरमुख सज्जण लए फड़, गुरसिख बंधाए आपणे लड़, दूसर राह ना कोई जणांयदा। गुरमुख बाला बाल निधाना, गुरमती मति समझांयदा। गुरमुखां देवे नाम बिबाना, कर किरपा आप चढ़ांयदा। साचे सन्तां देवे घर साचे माणा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। भगतां अन्दर हो प्रधाना, आप आपणा डंक वजांयदा। आपे शब्द आप तराना, आपे राग अलृांयदा। आपे जाणे पद निरबाना, आपे बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। मेल विछोड़ा हथ्थ रक्ख, गुरमुखां दए वड्याईआ। गुरमुख सज्जण करे वक्ख, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। सन्त सुहेले रंगे आपणी रत्त, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। भगतां देवे एका हरि हरि मत, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सो पुरख निरँजण आप सुणाए आपणी गाथ, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख सन्त दुलार भगत अधार, साचा रंग चढ़ाईआ। रंग अनमोला काया चोला, हरि चोजी आप चढ़ांयदा। दर दरवेश नर नरेश बण बण गोला, दर घर साचा आप सुहांयदा। सोहँ बोला साचा ढोला, आपणा आप अलृांयदा। भगती मौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे चुकाए डर, भय भयानक ना कोई वखांयदा। भय भयानक चुक्के डर, हरि साचा आप चुकाईआ। गुरमुखां बहाए साचे दर, घर साचा सोभा पाईआ। गुरमुख हरि हरि लए वर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सन्त सागर गए तर, भव सागर पार कराईआ। भगवन्त चोटी बैठे चढ़, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण आपणा पकड़ा लड़, सरगुण साचा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल दो जहान, सगला संग सूरा सरबंग, खेले खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड खोज खुजाईआ।

✪ ७ भाद्रों २०१६ बिक्रमी नरायण सिँघ दे घर पिण्ड गुमान पुर ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिखां नाम भण्डार, हरी हरि आप वरतांयदा। गुरमुखां सुहाए बंक दुआर, निज मन्दिर वेख वखांयदा। सन्त सुहेले पावे सार, निर्मल जोती जोत जगांयदा। भगत भगवन्त खेल अपार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। भगतन मीता बेअन्त, परम पुरख सुल्तानया। वेखणहारा साचे सन्त, गुण देवे नाम निधानया। गुरमुखां बणाए आपे बणत, शब्द जणाई धुर फ़रमानया। गुरमुखां काया चोली चाढ़े

रंग बसन्त, कर किरपा मेल मिलानया। जगत विचोला श्री भगवन्त, शब्द सुणाए रागी नाद तरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल दो जहानया। गुरमुख मेला गुण निधान, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। गुरमुख सज्जण चतुर सुजाण, दर साचे सोभा पांयदा। सन्त सुहेले कर पछाण, आप आपणी गोद बिठांयदा। भगतां देवे इक्क निशान, सच दुआरे आप झुलांयदा। सचखण्ड बैठ श्री भगवान, एकँकारा रंग रंगांयदा। अलक्ख निरँजण बोल जैकार, आपणी अलक्ख जगांयदा। सति पुरख निरँजण साची धार, सति सतिवादी आप निभांयदा। प्रगट हो विच संसार, लोकमाती वेस वटांयदा। गुरमुखां करे इक्क प्यार, एका बूझ बुझांयदा। गुरमुख नेत्र दए उग्घाड़, एका ब्रह्म जणांयदा। साचे सन्त सुत्त दुलार, आप आपणे रंग रंगांयदा। भगतन मीता भेव न्यार, आदि अन्त हरि भगवन्त साचा संग निभांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी खेले खेल अगम्म अपार, निज घर वासी आसण लांयदा। शाहो शाबासी मण्डल रासी जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि भगवन्ता एकँकार, जुगा जुगन्तर करे साची कार, जुग करता आप अख्वांयदा । करता पुरख हरि करतार, गुरमुखां वेख वखाईआ। गुरमुखां देवे चरन प्यार, आप आपणा दर वखाईआ। सन्त सुहेले कर त्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। भगतां देवे सच भण्डार, साचा नाम वरताईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, आपे हर घट डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर किरपा झोली पाईआ। गुर किरपा हरि जाणया, परम पुरख करतार। गुरसिख आपणा आप पछाणया, तज्या काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरमुख चढ़या शब्द बिबानया, जगत तृष्ना भुक्ख निवार। सन्तां पाया पद निरबानया, घर चौथे मेला कन्त भतार। भगतन वेखे गुण निधानया, निरगुण सरगुण कर प्यार। शाहो भूप सच्चा सुल्तानया, इक्क इकल्ला एकँकार। जुग जुग खेले खेल दो जहानया, गगन मण्डल बन्ने धार। पृथ्मी आकाश हो प्रधानया, रवि ससि पाए सार। लक्ख चुरासी वेख वखानया, कर्म धर्म करे विचार। आदि जुगादी खेल महानया, खेले खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे विगसे करे विचार। गुरसिख गुर सलाहीआ, रसना जिह्वा हरि हरि नाउँ। गुरमुखां वड वड्याईआ, घर पाया बेपरवाहो। घर सन्तन वज्जे वधाईआ, कन्त मिलावा शहिनशाहो। भगत भगवन्त ना होए जुदाईआ, निरगुण सरगुण वसे एका थाउँ। गुर शब्द सच्ची कुड़माईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे सच न्याउँ। सच न्याउँ सच घर, हरि सच्चा आप करांयदा। आपे गुरसिख देवे वर, आपे पूर करांयदा। आपे गुरमुखां अन्दर जाए वड़, आपे आपणा भेव खुलांयदा। आपे सन्तां चोटी जाए चढ़, आपणा गढ़ सुहांयदा। आपे हरिभगतां लए फड़, आप आपणा संग निभांयदा।

जुगा जुगन्तर घाड़ण घड़, घड़े भन्ने भन्न वखांयदा। आपणे नाल आपे लड़, आपे वेख वखांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे हुक्म चलांयदा। आपे तोड़णहारा गढ़, आपे खण्डा नाम चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि कर पसारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोकमात लए अवतारा, गुरमुख बाल अञ्याणे लए उठाईआ। देवे नाम शब्द सच भण्डारा, गुरमुखां झोली पाईआ। सन्त सुहेला बण वरतारा, आपणी भिच्छया रिहा वखाईआ। भगतन सोहे सति दुआरा, सति सतिवादी वेख वखाईआ। निरगुण जोती कर उज्यारा, आदि जुगादी डगमगाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड नाम रखाईआ। मनमुख मनमति करे खुआरा, कूड़ी क्रिया दए गवाहीआ। नाता तोड़ जगत हँकारा, हउमे हँगता रहिण ना पाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा हरि पावे सारा, नौ सत फेरा पाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, गुरमुख साची सेव कमाईआ। सन्त संग रंग रलीआं माणे कन्त भतारा, आत्म सेजा सच हंढ्ढाईआ। जन भगतां अन्दर सुत्ता पैर पसारा, आप आपणा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी कारा, आप आपणी रिहा कराईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दए हुलारा, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। गुरमुखां देवे इक्क सहारा, अमृत आत्म जाम प्याईआ। गुरमुखां तन वजाए नगारा, अनहद ढोल सुणाईआ। सन्तां मन्दिर हो उज्यारा, निरगुण जोती नूर करे रुशनाईआ। भगतन मंगे दर बण भिखारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अलक्ख अगोचर भेव न्यारा, बोध अगाध शब्द जणाईआ। रथ रथवाही विच संसारा, जुग जुग आपणा रथ चलाईआ। कलिजुग वेखे डूँघी गारा, चारों कुन्ट फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी मारे नाअरा, हाहाकार रही मचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत जोत उजाला, जोती जोत जोत जगांयदा। गुरमुखां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। गुरमुखां गल पाए माला, नाम आपणा आप सुहांयदा। सन्तन तोड़ जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क वखांयदा। भगतन मेला सच सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर इक्क वखांयदा। घर दर घर खेल निराला, हरि साचा आप खलांयदा। जोत सरूपी जोती दीपक बाला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर हरि सुहांयदा। घर मन्दिर हरि माणक मोती, रत्न जवाहर जोड़ जुड़ाया। भगत चढ़ाए आपणी चोटी, आपे राह वखाया। सन्तां वासना कढ्ढे खोटी, निर्मल निर्मल रूप समाया। गुरसिख उभारे विच्चों कोटी, कोटन कोटां फोल फुलाया। गुरमुखां हथ्थ फड़ाए नाम सोटी, सच मार्ग एका लाया। मनमुख करे बोटी बोटी, कलिजुग भुन्न कबाब वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अहिबाब रबाब इक्क वजाया। सच रबाब हरि सितार,

नामा नाम वजाईआ। गुरमुखां कर इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। दूजा दर वेख विचार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, हरि सन्तन वेख वखाईआ। भगत भगवन्त दर घर साचे देवे वाड़, पंचम वज्जदी रहे वधाईआ। आपे सोहे सच दुआर, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। रंग रंगीला सांझा यार, परवरदिगार आप अख्वाईआ। लोकमाती लै अवतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। निहकलंका नाउँ उचार, आपणा डंक आप वजाईआ। भगतां देवे इक्क अधार, एका घर वखाईआ। सन्त सुहाए बंक दुआर, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। गुरमुख मंगे बण भिखार, साची भिच्छया झोली पाईआ। गुरमुखां गेड़ा दए निवार, आवण जावण फंद कटाईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे थाउँ थाँईंआ। गुरसिख सज्जण हरि हरि पाया, आत्म भया अनन्द। गुरमुख संसा रोग मुकाया, निज अन्तर निझा नंद। हरि सन्तन संग निभाया, अबिनाशी करता वस्सया संग। भगतां भगती जोग कमाया, घर नाम वज्जे मृदंग। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, आपे होए बाल भुयंग। नौजवान वेस वटाया, जोद्धा सूरा सूरबीर सरबंग। कलिजुग बुड़ेपा वेखण आया, लक्ख चुरासी होई नंग। गुरमुखां जगत रंडेपा दए कटाया, सतिजुग मंगे साची मंग। सतिगुर पूरे सगन मनाया, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंग। सोहँ जोड़ा आप जुड़ाया, निरगुण सरगुण हथ्थी पाई वंग। लाल सालू इक्क रंगाया, पुरख अबिनाशी चाढ़या रंग। साचा गाना हथ्थ बंधाया, फड़या ताल ढोल मृदंग। सोलां शिंगर तन वखाया, बस्त्र भूषन लाए अंग। हरि का नाम ज़ेवर पाया, आपे परखे बण सर्राफ मन्दा चंग। नेत्र कजला धार बंधाया, त्रैगुण माया ना मारे डंग। मस्तक बिन्दी इक्क वखाया, जोत निरँजण लाए अंग। सोहणा सीस आप गुंदाया, खेले खेल हरि ब्रह्मण्ड। साचा वटणा तन छुहाया, गुरसिखां कोलों चरन धूढ़ प्रीती मंग। आपणी हथ्थी मल मल सेव कमाया, नाई नैण ना रक्खया कोई संग। अमृत भर कटोरा धुर दरगाहों लै के आया, गुरसिखां पूरी करे मंग। साचे खारे आप चढ़ाया, आप विछाया नाम पलँघ। पहली छाल इक्क लवाया, कलिजुग भाण्डा देवे भन्न। दूजे घोड़े नाम चढ़ाया, सखीआं वेखण चढ़या चन्न। जोत निरँजण बण के भाबी सुरमा पाया, खेले खेल हरि निरँकार आप आपणा बेड़ा बन्न्ह। साचे अस्व तंग कसाया, लोआं पुरीआं आपे लँघ। गुरमुख भैणां सर्ब बणाया, वाग गुंदण अग्गे लँघ। साची भिच्छया झोली पाया, दो जहानां रक्खे संग। कलिजुग वेला अन्तिम वेखण आया, लोकमात ना गया संग। सिँघ नरायण आपणे कंठ लगाया, जगत हँकारी भाण्डा भन्न। चार जुग हथ्थ किसे ना आया, नानक कबीरा कहि कहि गया धन्न धन्न। नर नरायण नरायण आपणे दर ख़ाकी ख़ाक विच रलाया, ना कोई दिसे महल्ल अटल। पुरख अबिनाशी फेरा पाया, लक्ख चुरासी करया वल छल।

जुग चौथे अन्त निबेड़ा आप कराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कन्त हरि भगवन्त, गुरमुख नारी कर प्यारी, लोकमात मार झात इक्क इकांत हरिसंगत नाल रक्ख बरात, घर सच विहावण आया।

तन कपड़ा रूप श्रृंगार, जगत जुग सुहावणा। बिन हरि दरस कोई ना उतरे पार, आर पार ना कोई करावणा। बिन हरि नाम ना कोई अधार, घर अवर ना कोई सुहावणा। बिन हरि होर ना कोई जैकार, हरि बिन नाम ना होर ध्यावणा। बिन हरि होर ना जोत आकार, निरगुण जोत ना कोई जगावणा। बिन हरि होर ना कोए दुआर, दर दरबार ना कोई वखावणा। बिन हरि होर ना कोई भतार, नार कन्त ना कोई हंढावणा। बिन हरि होर ना कोई दिदार, मुख घूँगट किसे ना लाहवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझावणा। हरि बिन अवर ना कोई घाट, साची घाटी ना कोई जणाईआ। हरि बिन अवर ना कोई हाट, नाम हट्ट ना कोई खुल्हाईआ। हरि बिन अवर ना कोई नाथ, दीनां अनाथां होए सहाईआ। हरि बिन अवर ना कोई साथ, सगला सगला संग दए निभाईआ। हरि सन्त ना गाए कोई गाथ, आपणे अक्खर करे पढ़ाईआ। हरि बिन ना कोई समराथ, सर्ब कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां आप समझाईआ। हरि बिन अवर ना कोई दात, साची वस्त ना कोई रखांयदा। हरि बिन अवर ना कोई पिता मात, गुरमुख कोए ना गोद उठांयदा। हरि बिन कोए ना उत्तम ज़ात, वरन बरन ना कोए जणांयदा। हरि बिन अवर ना खोल्हे कोई ताक, निज नेत्र दरस ना कोई वखांयदा। हरि बिन अवर ना करे कोई पूरा वाक्, गुर पूरा ना कोई अख्वांयदा। हरि बिन अवर ना कोई साक, साक सैण ना कोई अख्वांयदा। हरि बिन कोई ना सके राख, सिर हथ्थ ना कोई टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन सन्तां आप दरसांयदा। हरि बिन अवर ना कोई मीत, मीत मुरारा आप अख्वाईआ। हरि बिन अवर ना वसे चीत, बिन हरि नाम ना होर ध्याईआ। हरि बिन अवर ना कोई गीत, छत्ती राग गा गा रहे सलाहीआ। हरि बिन अवर ना कोई अतीत, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। हरि बिन अवर ना ठंडा सीत, सांतक सति सति वरताईआ। हरि बिन अवर ना पतित पुनीत, पतित पावन ना कोई अख्वाईआ। हरि बिन अवर ना रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना एका धाम बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दए वड वड्याईआ। हरि बिन अवर ना कोए रक्खे लज्जण, लाजावन्त कोई दिस ना आंयदा। हरि बिन कोई

ना दिसे सज्जण, साचा संग ना कोई निभांयदा। हरि बिन ना कोई मजन, दुरमति मैल ना कोई गवांयदा। हरि बिन
ना पाए कोई अंजन, नेत्र ज्ञान ना कोई खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप
समझांयदा। हरि बिन अवर ना कोई सचखण्ड, थिर घर ना डेरा लाईआ। हरि बिन ना कोई विच ब्रह्मण्ड, निरगुण जोत
करे रुशनाईआ। हरि बिन ना करे कोई आपणी वंड, रवि ससि ना कोई उपाईआ। हरि बिन ना उपजाए जेरज अंड, उत्भुज
सेत्ज वेख वखाईआ। हरि बिन ना खेले खेल विच वरभण्ड, वरभण्डी रचन रचाईआ। हरि बिन गुरमुखां कोई ना बन्न्हे
पल्ले नाम गंढु, आपणा नाता जोड़ जुड़ाईआ। हरि बिन अवर ना कोई पाए ठंड, अमृत धार ना मुख चुआईआ। हरि
बिन हरि का नाउँ ना सके कोई वंड, गुर सन्त सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले
मेल मिलाईआ। हरि बिन अवर ना कोई गुर, सतिगुर ना कोई अख्वाईआ। हरि बिन अवर ना कोई घोड़, हरि शब्दी
घोड़ चढ़ाईआ। हरि बिन अवर ना जाए कोई बौहड़, लहिणा देणा दए मुकाईआ। हरि बिन अवर ना लाए कोई पौड़, दो
जहानां वेख वखाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे कोई पैंडा लम्मा चौड़, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत
१०१६ ०८ सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि भगवन्त दए वड्याईआ। हरि बिन अवर ना कोई संग, साचा संग ना कोई निभांयदा। १०१६ ०८
हरि बिन अवर ना कोई मृदंग, नाम मृदंग ना कोई वजांयदा। हरि बिन अवर ना कोई रंग, रंग चलूल ना कोई चढ़ांयदा।
हरि बिन अवर ना कट्टे कोई भुक्ख नंग, सच भण्डार ना कोई वरतांयदा। हरि बिन अवर ना कोई धार वहाए साची गंग,
सर सरोवर अमृत ताल भरांयदा। हरि बिन अवर ना कोई भगत दुआरा मंगे मंग, बण भिखारी झोली अग्गे डांहयदा। हरि
बिन कोई ना आत्म सेजा बहे पलँघ, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख
मेले साचे घर, घर साचा सिफ्त सलाहीआ। हरि बिन अवर ना कोई दर, दरगाह दर साचा सच वखांयदा। हरि बिन
अवर ना कोई मलाह, गुर सतिगुर मेल मिलांयदा। हरि बिन अवर ना जपाए कोई ना, नाम वस्त ना झोली पांयदा। हरि
बिन अवर ना कोई पकड़े बांह, ग़रीब निमाणे ना गले लगांयदा। हरि बिन अवर ना कोई हँस बणाए काँ, माणक मोती
ना चोग चुगांयदा। हरि बिन अवर ना कोई निथाव्याँ देवे थाँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, हरि सन्तन वेख वखांयदा। हरि बिन अवर ना कोई ओट, ना कोई आस तकाईआ। हरि बिन अवर
ना लाए कोई चोट, तन नगारा शब्द वजाईआ। हरि बिन अवर ना भरे कोई पोट, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। हरि बिन अवर
ना कढ्ढे कोई खोट, झूठी वासना दए तजाईआ। हरि बिन अवर ना चढ़े कोई चोट, कोटी कोटि राह विच बैठे ढेरीआं

ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। हरि बिन अवर ना कोए सूरबीर, जोद्धा बलि बली बलकारया। हरि बिन अवर ना कोई तीर, नाम चिल्ला आप उठा ल्या। हरि बिन अवर ना कोई कट्टे भीड़, पीर फ़कीर ना कोई अख्वा ल्या। हरि बिन कट्टे ना कोई जंज़ीर, लक्ख चुरासी फंद कटा ल्या। हरि बिन अवर ना बख्शे कोई गंगा सीर, भगत कबीर दिवस रैण कुरला रिहा। हरि बिन अवर ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, साची मंज़ल ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिला ल्या। हरि बिन अवर ना कोई संजोग, ना कोई संग निभाईआ। हरि बिन अवर ना कोई विजोग, बिरहों रोग गंवाईआ। हरि बिन अवर ना कोई भोगे भोग, साची सेज ना कोई हंढाईआ। हरि बिन अवर ना कोई पार कराए तीनों लोक, चौथे पद ना कोई समाईआ। हरि बिन सच सुणाए ना कोई सलोक, आपणा ढोला आपे गाईआ। हरि बिन अवर ना देवे कोई मोख, मुक्ती चरनां हेठ दबाईआ। हरि बिन अवर ना दीसे कोई जोग, एका जगत नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मुख सलाहीआ। हरि बिन अवर ना कोई धार, धरनी धरत वहांयदा। हरि बिन अवर ना कोई प्यार, नार भतार ना कोई अख्वांयदा। हरि बिन अवर ना कोई श्रृंगार, बस्त्र भूशण ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, गुरमुख साचे लेख लखांयदा। हरि बिन अवर ना कोई लाड़ा, ना कोई कन्त सुहागीआ। हरि बिन अवर ना कोई सच अखाड़ा, ना कोई गाए राग बैरागीआ। हरि बिन कोई ना परखे चंगा माढ़ा, सच घसवटी ना कोई लाईआ। हरि बिन अवर ना देवे कोई माण सतारां हाढ़ा, निरगुण जोती जोत मात जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा वर, चरन धूढ़ी बख्शे मजन हरि हरि साचा माघीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, होका देवे घरो घर, फड़ फड़ हँस बणाए कागीआ।

✪ ७ भाद्रों २०१६ बिक्रमी पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

निहकलंक हरि बलवान, इक्क इकल्ला एक एकँकारया। आदि जुगादी खेल महान, जुगा जुगन्तर खेल खिला रिहा। जोती नूर श्री भगवान, नूरो नूर डगमगा रिहा। आदि निरँजण वड मेहरवान, भेव कोई ना पा रिहा। शाहो भूप राज सुल्तान, राज राजान आप अख्वा रिहा। खेले खेल दो जहान, निहकर्मी कर्म कमा रिहा। सचखण्ड वसे सच मकान, उच्च महल्ला

आप सुहा रिहा। दीपक बाती इक्क महान, निरगुण सरगुण आप जगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, अलक्ख निरँजण अलक्ख जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। निहकलंका हरि भगवाना, पारब्रह्म अख्वांयदा। खेले खेल दो जहानां, भेव कोई ना पांयदा। एकँकारा जोत निरँकारा एका रूप समाना, रूप रंग ना कोई जणांयदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद वजांयदा। एका गीत एका गाणा, एका हरि सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एकँकारा कर पसारा, निरगुण धार आप बंधांयदा। निरगुण दाता दाता सूर, पारब्रह्म अख्वांयदा। सर्ब कल आपे भरपूर, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। परवरदिगार नूरो नूर, अलाही नूर आप हो जांयदा। आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, थिर घर बैठा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल, दीनां नाथ आप अख्वांयदा। दीनां नाथ पुरख अकाल, एका रंग समाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, आप आपणी चाल रखाईआ। आपे खेले खेल सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपे जल्वा नूर जलाल, नूर नुराना आप अख्वाईआ। आपे करे आपणी प्रितपाल, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, एका एक एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। अगम्म अगोचर अलक्ख अपारा, एकँकारा आप अख्वांयदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, दूसर धाम ना कोई सुहांयदा। थिर घर बैठा मीत मुरारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। हरि रंग रतड़ा हरि हरि राम, ना दूसर कोई जणाईआ। आदि जुगादी जाणे आपणा काम, करनी करता नाउँ धराईआ। आपे अमृत आपे जाम, भर प्याला आप प्याईआ। आपे मेट अन्धेरी शाम, आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे सचखण्ड दुआरे वस्सया नगर ग्राम, उच्च महल्ल अटल आसण लाईआ। पंज तत्त ना दिसे चाम, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोई रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित वड वड्याईआ। अजूनी रहित हरि करतार, कादर करता आप अख्वांयदा। आप आपणा कर पसार, निरगुण जोती वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, जुग करता वेस वटांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, पुरख अगम्मड़ा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुणवन्त हरि भगवन्त, सोभावन्त आप हो जांयदा। सोभावन्त नर नरायण, एका रंग समाया। रवि ससि ना कोई रचायण, मण्डल मण्डप ना कोई सुहाईआ। ज़िमी अस्मान ना पायण वैण, लक्ख चुरासी ना रचन रचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना वेखे नेत्र नैण, अंग अंग ना आप कटाईआ। करोड़ तेतीस ना कोई पछाण, सुरपति राजा इन्द ना कोई उपाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला निराकार, निरगुण खेले खेल पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त आप हो जाईआ। बेअन्त हरि बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी नाउँ धरा, घर साचा आप सुहांयदा। उच्च महल्ले जोत जगा, सच घर डेरा लांयदा। शाहो भूप सुल्तान , हरि मेहरवान आप अख्वांयदा। तख्त ताज आप सुहा, आपणा काज आप रचा, आपे वेख वखांयदा। नारी कन्त आप अख्वा, आपणी सेज हंढांयदा। आप आपणा बण मलाह, आपे मार्ग लांयदा। आपणा भेव दए खुल्ा, भेव अभेद वेस वटांयदा। निहकलंक हरि भगवानन, निर्मल जोती जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महानन, दो जहानन आप कराईआ। आपे बख्शे आपणा चानन, आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे आपणा होए जाणी जानन, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे पकड़े आपणा दामन, आपणा पल्लू आप फड़ाईआ। आपे राम आपे रामन, आपे आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर साचा हरि हरि वासा, आपणा आप करांयदा। खेले खेल खेल तमाशा, घर साचे वेस वटांयदा। परम पुरख पुरख अबिनाशा, आपणी करनी किरत कमांयदा। साचे मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आप नचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा सच घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड वस्सया हरि निरँकार, घर सोहया बंक दुआरया। घर मीता अतीता कमलापाती जोत उज्यार, नूरो नूर नूर नुरानया। ठांडा सीता एका धार, पतित पुनीता श्री भगवानया। अचरज रीता आपणी जाणे आप करतार, ना दूसर कोई सरनाईआ। मन्दिर मसीता ना कोई गुरुदुआर, सतिगुर पूरा बैठा वड मेहरवानया। सचखण्ड दुआरा खोल् किवाड़, थिर घर जोत जगे महानया। ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई सुत्त दुलार रखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी खेल खिलानया। हरि खेल खिलंदड़ा सद मेहरवान, जुग करता वड वड्याईआ। डंक वजंदड़ा दो जहान, एका नाम हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचन्दड़ा मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड सोभा पाईआ। रवि ससि कर प्रधान, तेज तेज विच चमकाईआ। मण्डल मण्डप धुर निशान, आप आपणी अंस सुहाईआ। आपे होया निगहबान, वेखणहार दिस ना आईआ। चौदां लोकां खोल् दुकान, एका हट्ट वखाईआ। लोआं पुरीआं खेल महान, ख़ालक आपे रिहा खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक वज्जे वधाईआ। निहकलंक हरि हरि बेअन्त, बेअन्त आप अख्वाया। आपे जाणे आदि आपे अन्त, आपे मध समाया। आपे जोत श्री भगवन्त, आपे नूरो नूर डगमगाया। आप बणाए आपणी बणत, आपे प्रकाश आप कराया। आपणी महिमा जाणे अगणत, ना कोई लेखा सके लिखाया। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर

अवतार ना कोई रखाया। थिर घर साचे सोभावन्त, निरगुण बैठा आसण लाया। ना कोई जीव ना कोई जन्त, ना कोई मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साचा खेल खिलाया। साचा खेल हरि खलाए, अकल कला अख्वा रिहा। निरगुण निरगुण निरगुण वेस वटाए, आप आपणा वेस वटा रिहा। आपणा अंग आप कटाए, आपे सेव कमा रिहा। आपणा मृदंग आप वजाए, आप राग अल्ला रिहा। आपणा राग आप सुणाए, आपे गावणहारा गा रिहा। ना कोई दूसर संग रलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगा रिहा। आपणा रूप धर भगवान, आपे वेख वखाईआ। विष्नूं देवे जोत महान, विश्व आप आप समाईआ। आपे अमृत भरया सरोवर साचा ताल, कँवल कँवला आप खुल्लाईआ। आपे ब्रह्मा हो प्रधान, पारब्रह्म वेस वटाईआ। आपे देवे ब्रह्म ज्ञान, आपे शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्ध अँध्यार कर पसार, आपे शंकर नाम धराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर आकार, निरगुण वेस वटाया। त्रैगुण माया कर प्यार, झोली आप भराया। पंज तत्त दए सहार, साचा संग निभाया। सरगुण अन्दर निरगुण धार, आपणा रूप वटाया। आपे खोल्ले नौ दुआर, आपे घर विच घर सुहाया। आपे शब्द नाद धुन्कार, आपे अनहद राग सुणाया। आपे सर सरोवर ठंडा ठार, आपे अमृत जल भराया। आपे बज़र कपाटी लाया पाड़, आपे बन्द मुख वखाया। आपे आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार, निरगुण सरगुण डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करवट लए बदलाया। आपणी करनी आपे कर, आपे वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दित्ता वर, एका वस्त झोली पांयदा। त्रैगुण फड़ाया साचा लड़, साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। घट घट अन्दर आपे वड़, आपणा आसण लांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। सच महल्ले आपे चढ़, आप आपणा दर खुल्लांयदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोत निरँजण डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप सति सरूप, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। निहकलंक निरगुण जोत, जोती जोत डगमगाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बरन वखाईआ। ना कोई आसा तृष्ना ना कोई माया ममता भरे पोट, तत्व तत्त ना कोई हल्काईआ। ना कोई वासना रक्खे खोट, हउमे हँगता ना कोई हल्काईआ। खेले खेल चौदां लोक, पुरीआं लोआं वेस वटाईआ। आप सुणाए आपणा सच सलोक, साचा ढोला आपे गाईआ। आदि आदि जुगादि जुगादि हरि का भाणा ना सके कोई रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक आप अख्वाईआ। निहकलंक कलि कलवन्ता, अकल कला कल धारीआ। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त बेअन्ता, भेव कोई ना पा रिहा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, लोकमात

लै अवतारया। सतिजुग बणाए साची बणता, वेद विदाता आप बणा रिहा। जन भगतां तोड़े हउमे हँगता, एका दर वखा रिहा। भगत भिखारी होए मंगता, अग्गे आपणी झोली डाह रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नाउँ धरा रिहा। पंज तत्त होए प्रतक्ख, शब्दी डंक वजाईआ। खेले खेल अलक्खणा अलक्ख, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। सर्ब कला आपे समरथ, समरथ पुरख भेव ना राईआ। आप चलाए आपणी गाथ, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणा साथ, सगला संग आप निभाईआ। आपे पूजा आपे पाठ, आपे इष्ट देव मनाईआ। आपे तीर्थ आपे ताट, सर सरोवर आप अख्वाईआ। आपे आदि शक्ति जोत ललाट, अष्टभुज रूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग साचे हो त्यार, आपणी कल वरतांयदा। आपे ब्रह्मा सुत्त बण दुलार, घर साचा मंगण आंयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआर, परम पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होया जाणी जाण, जाणी जाण आप अख्वांयदा। घर सोहे बंक दुआरा, वज्जी नाम वधाईआ। लोआं पुरीआं जै जै कारा, गण गंधर्ब फूलण बरख़ा लाईआ। करोड़ तेतीसा मारे मारा, शिव शंकर वेख वखाईआ। ब्रह्मा नेत्र खोल्ले चारों कुन्ट वेखे नैण उग्घाड़ा, आप आपणी अक्ख खुल्लाईआ। विष्नूं
१०२४ नूर नूर उज्यारा, कँवल नैण आप हो जाईआ। आपे वसे सभ तों बाहरा, भेव अभेद भेव रखाईआ। सचखण्ड बैठा सिरजणहारा, १०२४
०८ श्री धर भगवान बीठलो आप अख्वाईआ। त्रेता तेरा त्रीआ वेस, हरि साचा वेख वखांयदा। शब्द अनादी इक्क संदेश, एका हुक्म जणांयदा। लक्ख चुरासी आपे वेख, आपे पर्दा लांहयदा। आपे लिखणहारा रेख, आपे मेट मिटांयदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। आदि जुगादी रहे हमेश, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। पारब्रह्म अवल्लड़ा भेस, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कल कल आपे धार, खेले खेल विच संसार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण मेला सरगुण धार, सरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, सरगुण पंज तत्त अख्वाईआ। खेले खेल पुरख करतार, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे राम रूप बण अवतार, आपे पंडत रावण रिहा पढ़ाईआ। आपे खड़ग खण्डा तेज कटार, तीर कमान आप उठाईआ। आपे सागर करया पार, समुंद धार आप रुढ़ाईआ। आपे अन्तिम लाए पार, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। द्वापर जाणे आपणी कार, एका बंसरी नाम वजाईआ। ग़रीब निमाणे पाए सार, आप आपणे गले लगाईआ। आपे तोड़णहार गढ़ हँकार, गढ़ हँकारी मेट मिटाईआ। आपे कलिजुग अन्तिम वेख पसार, कूड़ा डंक वजाईआ। जूठ झूठ धर संसार, धरनी धरत धवल

१०२५ ०८

सुहाईआ। ईसा मूसा कर शृंगार, संग मुहम्मद चार यार देण गवाहीआ। अल्ला राणी बोल जैकार, आपणा नाअरा रही सुणाईआ। अञ्जील कुराना करया ख़बरदार, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। कायनात वेख विचार, कादर कुदरत विच समाईआ। आपे निरगुण जोती नूर निरँकार, नानक पंज तत्त नाउँ रखाईआ। आपे नाम शब्द बोल जैकार, लोकमात फेरा पाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई रखाईआ। ग़रीब निमाणे लए उभार, आप आपणे गले लगाईआ। एका डंक करे ख़बरदार, चारों कुन्ट रिहा उठाईआ। अन्तिम गाए आपणी वार, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटार, धुर दीबाण आप अख्वाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द नाउँ उपजाईआ। पूत सपूता सुत्त दुलार, पुरख अकाल मनाईआ। शस्त्र बस्त्र तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। आपे अस्व हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। आपे अमृत कर त्यार, भर प्याला जाम प्याईआ। पंचम मीता ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सूरबीर, सतिगुर आप अख्वांयदा। शब्द निराला मारे तीर, राज राजाना मेट मिटांयदा। आपे कलिजुग लहिणा देणा जाणे अख़ीर, आपणा लेखा आप लिखांयदा। आपे जाणे ऊँच नीच राउ रंक शाह हकीर, दस्तगीर वेख वखांयदा। आपे कुतब गौंस होइ फ़कीर, शरअ शरीअत ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सदी चौधवीं पए वहीर, चौदां तबकां आप हिलांयदा। संग मुहम्मद चार यार, नेत्र वहायण नीर, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। कलिजुग कूड़ा होया फ़कीर, घर घर अलक्ख जगांयदा। ना कोई कढ्ढे हउमे पीड़, बिरहों रोग ना कोई सतांयदा। गोबिन्द लाया साचा तीर, तिक्खी धार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। गोबिन्द लाया तीर निराला, तिक्खा मुख रखाईआ। संग रखाए काल महाकाला, माहकाला वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा बण दलाला, साचा वणज इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चले चलाए अवल्लड़ी चाला, जुगत जगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत अवल्लड़ी चाल, हरि चलांयदा। गोबिन्द पुरख अकाल, इक्क मनांयदा। गुरसिख बणाए साचे लाल, गोद उठांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, दया कमांयदा। आदि जुगादि करे संभाल, जगत विछोड़ा फंद कटांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम होए कंगाल, साचा धन ना कोई जणांयदा। फल ना दिसे किसे डाल, लक्ख चुरासी आप हिलांयदा। गुरमुख विरले घालण रहे घाल, घाली घाल घोल घुंमाई आप घुमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। गोबिन्द भाणा

रिहा मन्न, पुरख अकाल मनाईआ। गुरसिखां कहे धन्न धन्न, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका राग सुणाए कन्न, वाहिगुरू फतिह गज़ाईआ। अन्तिम बेड़ा देवे बन्न्ह, कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। प्रगट होए हरि भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां देवे एका दान, आत्म अन्तर एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल एकँकारा, जूनी रहित खेल न्यारा, अनभव प्रकाश समाईआ। सतिगुर सज्जण मीतड़ा, पारब्रह्म करतार। गुरमुखां रंगे काया चीथड़ा, रंग चाढ़े अपर अपार। धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, सचखण्ड सोहे बंक दुआर। आदि जुगादी जुग जुग चले आपणी रीतड़ा, वेद पुराण ना पावण सार। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीतड़ा, घर घर बैठा कर जोत उज्यार। गोबिन्द ठंडा सीतड़ा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। तेरी लक्ख चुरासी परखे नीतड़ा, बण बण साचा लेख लिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार। वड संसारी आप हरि, वड वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए वर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुरू गुर चेले लए फड़, आप आपणे लड़ बंधाईआ। काया मन्दिर आपे चढ़, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। दरस दखाए अग्गे खड़्ह, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटाईआ। आदि निरँजण पुरख बिधाता, पारब्रह्म सुल्तानया। कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, निरगुण नूर करे प्रधानया। सतिजुग सुणाए साची गाथा, सो पुरख निरँजण वड मेहरवानया। हँ ब्रह्म देवे साथा, पारब्रह्म मेल मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल इक्क महानया। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आया। गुर गोबिन्द नानक बण भिखार, लक्ख चुरासी गए समझाया। वेद व्यासा बण बण धार, पुराण अठारां गए लिखाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, तीस बतीसा रिहा मुख सलाहया। भगत भगवन्त राह रहे विचार, नेत्र आपणा नैण खुल्हाया। सन्त सुहेले निउँ निउँ करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाया। गुरमुख मंगण बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहया। गुरसिख दर दर मंगण वारो वार, तेरा नाम किसे हट्ट हथ्थ ना आया। तीर्थ तट्टां आई हार, अठसठ बैठे मुख भुवाया। गंगा गोदावरी करे पुकार, सुरस्ती जमना नाल रलाया। कैलाशी पर्बत ना कोई धार, जटा जूट ना कोई वहाया। रूप रंग ना कोए प्यार, साचा रंग ना कोई चढ़ाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त नार विभचार, हरि कन्त ना कोई मनाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद हो खुआर, धीआं भैणां रहे तकाया। पंडत पांधे ना करन विचार, जूठा झूठा मस्तक तिलक लगाया। खाणी बाणी ना कोई प्यार, माया राणी होई हल्काया। धरती रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र हन्झूआं हार बणाया। मनमुखां भरया इक्क हँकार, चारों कुन्ट फिरन हल्काया। मन

मति नाल रली नार कमज़ात, साचा खेड़ा ना कोई वसाया। पंच विकारा देवे साथ, पंचम शब्द नाद धुन ना कोई वजाया। हरि हरि तेरा विसरया साचा पाठ, हिरदे हरि ना कोई वसाया। गुरसिख अन्दर जोत ना जगी ललाट, गुर गोबिन्द दिस ना आया। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाट, प्रभ साचा वेस वटाया। अर्श फर्श फर्श अर्श ज़िमी फर्श आपे जाणे वाट, हरस हवस ना कोई मिटाया। ना कोई उतारे पार घाट, हरि का नाउँ जिह्वा ना कोई लगाया। कलिजुग सागर मारे ठाठ, जूठी झूठी लहर वखाया। माया ममता मोह विकारा खेल बाज़ीगर नाट, नट नटूआ आपणा सांग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक करांयदा। पाए सार जलां थलां, जल थल महीअल फोल फुलांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ ज़मीन डूँघी डल्ला, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। समुंद सागर विरोले ना कोई मारे छल्लां, चौदां रत्नां वेख वखांयदा। आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, पुरख अबिनाशी सच सिँघासण आपे मल्ला, घर साचे आसण लांयदा। निरगुण खण्डा विच ब्रह्मण्डां, तेज़ प्रचण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। नाम खण्डा हरि तेज़ कटारी, हरि हरि हथ्थ उठाईआ। जोत निरँजण सेवादारी, लोकमात करे कुड़माईआ। गुरमुखां करे ख़बरदारी, सोए आप जगाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारी, काया मन्दिर अन्दर आप वजाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसारी, कलिजुग माया पर्दा बैठा पाईआ। भरमे भुल्ले नर नारी, नर हरि दिस ना आईआ। कुँवार कन्या कर शृंगारी, आपणा जोबन रही हंढाईआ। किसे ना लग्गे माँ प्यारी, मावां पुत्तरां नाता तोड़ तुड़ाईआ। ना कोई कन्त ना भतारी, साची सेज ना कोई हंढाईआ। धीआं भैणां करन खुआरी, साधां सन्तां आत्म होई हल्काईआ। सच पढ़ी ना हरि हरि की बाणी, मन्दिर मस्जिद गुर दर बैठे डेरा लाईआ। सुरत सुवाणी रही कुँवारी, गुर शब्द हाणी ना मेल मिलाईआ। ना कोई जाणे पद निरबाणी, चौथे पद ना कोई समाईआ। पढ़ पढ़ थक्के नानक बाणी, अर्जन मेला मिल्या ना साचे माहीआ। आवण जावण ना चुक्की काणी, लक्ख चुरासी ना फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द निशाना दो जहानां तीर अणियाला आप चलाईआ। शब्द सरूपी फड़ कमान, हरि साचा उठे बलकारया। लोआं पुरीआं मारे आप ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव आप जगा रिहा। करोड़ तेतीसा मेट निशान, साची रचना आप रचा ल्या। गुरमुखां अन्तिम इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म दृढ़ा ल्या। आपे बख्शे चरन ध्यान, चरन प्रीती इक्क सिखा ल्या। मनमुख भुल्ले जीव शैतान, थिर कोई रहिण ना पा रिहा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, एकँकारा आप अख्वा रिहा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। सम्बल नगरी इक्क निशान, लोकमात

झुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगा रिहा। निहकलंक आदि पुरख, एका एक एकँकारया। ना कई सोग ना कोई हरख, ना कोई नेत्र नीर वहा रिहा। कोई ना सके मात परख, सच घसवटी ना कोए लगा रिहा। गुरमुखां अमृत मेघ रिहा बरस, आप आपणी सेव कमा रिहा। जिन्हां भगतां उत्ते करे तरस, सगला संग आप निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखा ल्या। नाउँ रक्ख हरि निरँकार, निरगुण वेस वटाया। शब्द सरूपी बोल जैकार, लोकमात उठ धाया। राज राजाना शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाया। साधां सन्तां दए हुलार, अठसठ तीर्थ फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजाया। एका डंक शब्द ज्ञान, हरि सतिगुर आप वजाईआ। चार वरनां बख्शे इक्क ध्यान, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। एका धाम बहाए राउ रंक राज राजान, दूसर दर ना कोई वखाईआ। एका शब्द सारे गाण, नौ खण्ड पृथ्मी आप समझाईआ। सत्तां दीपां झुल्ले इक्क निशान, सत्त रंग निशाना आप चढ़ाईआ। आपे मज़्ब दीन होए इस्लाम, मक्का काअबा वेख वखाईआ। आपे पंडत पांधा बण बण राम, कान्हा बंसरी आप वजाईआ। आपे नानक गोबिन्द कर प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे

१०२८ देवणहारा सच पैग़ाम, ज़बराईल मेकाईल असराफील अज़राईल आपणा नाम वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १०२८

जोत धर, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। आपे दीवा आपे बाती, आपे जोत जगांयदा। आपे मेला कमलापाती, आपे संग निभांयदा। आपे देवे साची दाती, नाम निधाना झोली पांयदा। आपे मेटे अन्धेरी राती, साचा चन्द चढ़ांयदा। आपे रक्खे उत्तम जाति, ज़ात अजाति वेख वखांयदा। आपे दरस दिखाए इक्क इकांती, इक्क इकल्ला नाउँ वटांयदा। आपे कलिजुग लहिणा देण चुकाए बाकी, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। आपे सतिजुग साची खोल्हे ताकी, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक नर अवतार, निरगुण रूप समाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, बंधन बंध ना कोई बंधाया। घट घट रविआ मीत मुरार, घर घर आसण लाया। देवे नाम शब्द भण्डार, जगत वणजारा वणज कराया। सोहँ शब्द बोल जैकार, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। नाता तुट्टा सर्ब संसार, तीर्थ तट ना नहावण जाया। जिस जन दर्शन पाया गुर करतार, आपणा लोचण नैण खुल्हाया। चौथे पद कर प्यार, घर साचे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कल्गीधर एका नर, एका हरि एका दर सुहाया। कल्गीधर हरि गोबिन्द, गुर गोबिन्द नाउँ धराईआ। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द,

चिन्ता चिखा रहिण ना पाईआ। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, एका हरि नाम चलाईआ। आदि जुगादी दाता दानी वड बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। आप बणाए आपणी बिन्द, सुत्त अनादी आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि निरँजण दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार तराईआ। कलिजुग सागर डूँघी गार, भेव कोई ना पांयदा। साध सन्त गए हार, सच मलाह ना कोई अख्वांयदा। ना कोई कराए पार किनार, चप्पू नाम ना कोई वखांयदा। अद्धविचकारे रोंदे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। जन भगतां सुण हरि पुकार, लोकमात उठ धांयदा। निरगुण सरगुण मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। फड़ फड़ बाहों जाए तार, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। आप उठाए सिर आपणे भार, गुरमुख हौले भार रखांयदा। सुत्त दुलारे उत्तों वार, गुरसिखां नींह धरांयदा। जड़ ना उखड़े विच संसार, सतिजुग बूटा आपे लांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिरांयदा। फल फुलवाड़ी सतारां हाढ़, बीस बीसा आप महिकांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़, गुरमुख काया डगमगांयदा। नेड़ ना आए मौत लाड़, धर्म राए दर दुरकांयदा। दरगाह साची देवे वाड़, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा हरि हरि रामा, रूप वटाए कृष्ना कान्हा, नानक गोबिन्द वजाए इक्क दमामा, इक्क नगारा नाम रखांयदा। नाम नगारा जाए वज्ज, हरि साचे आप वजावणा। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोई रहिण ना पावणा। शाह सुल्ताना राज ताज देवण तज, सीस ताज ना किसे हंढावणा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण रूप प्रगट होया देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहावणा। साढे तिन्न हथ्थ रचया तेरा काज, रविदास चमारा नाल रलावणा। लहिणा देणा चुक्के कल कि आज, कलिजुग काला टिक्का मुख धुआवना। जन भगतां रक्खे जुग जुग लाज, नित नवित्त वेस वटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, साचा मन्दिर इक्क सुहावणा। सोहे मन्दिर बंक दुआर, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगुण दीपक कर उज्यार, घर दीआ बाती ना कोई वखांयदा। जोत निरँजण सेवादार, अनहद साचा ताल वजांयदा। पंचम सखीआं मंगलाचार, घर वाह वाह गीत सुणांयदा। नेत्र लोचण नैण उग्घाड़, निज नेत्र वेख वखांयदा। सर सरोवर देवे वाड़, कागों हँस बणांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़, पंचम विकारा मोह चुकांयदा। पार कराए सुखमन नाड़ी डूँघी गार, टेडी बंक आप लगांयदा। सतिगुर रूप शब्द करतार, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। बज़र कपाटी देवे पाड़, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। सुरत सुवाणी कर कर ख़बरदार, आपणे मार्ग आपे लांयदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह घर बार, आपणी दया कमांयदा। निरगुण जोत जगे अपार, गुरमुख आत्म सेजा सोभा पांयदा।

मेल मिलावा कन्त भतार, रस भोग बलास इक्क वखांयदा। दस्म दुआरी कर प्यार, घर साचे मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यार, भेव कोई ना पांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपे वस्सया धूंआँधार, सुन्न समाध आप समांयदा। आपे सचखण्ड खोल्ह दुआर, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। घर विच घर कर त्यार, थिर घर नाउँ धरांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, एका डगमगांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, इक्क अलक्ख सुणांयदा। ना कोई दिसे चोबदार, दर दरबान ना कोई बहांयदा। साचे तख्त सोहे हरि निरँकार, शाह सुल्तान नाम वखांयदा। जुग जुग लए मात अवतार, आपणी कल आप वरतांयदा। आपे कान्हा कृष्ना हो उज्यार, राम रामा डंक वजांयदा। आपे ईसा मूसा काला सूसा तन शृंगार, अल्फ़ अल्फ़ी आपणी आप रंगांयदा। आपे संग मुहम्मद वस्सया चार यार, ऐनलहक्क नाअरा आपे लांयदा। आपे मुकामे हक्क होए ख़बरदार, हक्क बहक्क वेख वखांयदा। आपे नानक निरगुण कर प्यार, नाम डंका इक्क वजांयदा। आपे अंगद किया अंगीकार, आपणी गोद बहांयदा। आपे अमरदास बन्न्हे धार, अमृत जल आप प्यांअदा। आपे रामदास दए सहार, सर सरोवर इक्क भरांयदा। आपे अर्जन गुर बण लिखार, अगाध बोध शब्द चलांयदा। आपे हरि गोबिन्द कर शृंगार, मीरी पीरी आप हंढांयदा। आपे हरिराए वेख विचार, हरी हरि रूप समांयदा। आपे बाल अवस्था लाए पार, हरि कृष्न रंग चढ़ांयदा। आपे तेग़ बहादर रक्खी तिक्खी धार, सीस जगदीश भेट चढ़ांयदा। आपे गोबिन्द बणया सुत्त दुलार, आपे पुरख अकाल मनांयदा। आपे आपा उत्तों देवे वार, आपे गुरसिखां निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे बणे लेख लिखार, आपणी मंग आप मंगांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गोबिन्द साचा संग निभांयदा। सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले वेख वखांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, नाम गात्रा तन पहनांयदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा शब्द मिलांयदा। नीला नीली धारों करे पार, साचा अस्व आप दौड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, वरन वरनां मेट मिटांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्क प्यार, एका मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कोटन कोटी कोटि वेख घर, गुरमुख साचे आप जगांयदा। गुरसिख उठ उठ जाग, हरि सतिगुर आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम लग्गा भाग, साचा वेस वटांयदा। त्रैगुण लग्गी बुझे आग, पंचम तत्त बुझांयदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, कागों हँस बणांयदा। शब्द चढ़ाए साचे राक, अस्व घोड़ा इक्क वखांयदा। नकेल पाए नाम नाक, ख़ाकी ख़ाक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जोत डगमगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, मेट मिटाए जूठ दुकान, सच सुच्च मार्ग एका लांयदा।

✪ पहली अस्सू २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच शब्द ✪

हरि प्रगटियो मेहरवान, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त बेअन्त वड्डी वड्याईआ। एकँकारा निरँकारा जोद्धा सूर बली बलवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण नूर जोत महान, सति सरूप अनूप करे रुशनाईआ। आदि निरँजण हो मेहरवान, गुण निधान दया कमाईआ। थिर घर साचे मन्दिर बैठ मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। आपणा घर कर परवान, आपे देवे साचा दान, दाता दानी आप अख्वाईआ। आपे पुरख आप सुल्तान, आपे राज आप राजान, शाहो भूप नाम धराईआ। आपे पुरख अकाल आप सुल्तान वाली दो जहान, अजूनी रहित आप हो जाईआ। आपे काल महांकाल ना कोई दिसे निशान, सच निशाना आप उठाईआ। आपे नूर आपे भान, प्रकाश प्रकाश आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर करे रुशनाईआ। हरि प्रगटियो गोबिन्द, निरगुण रूप अपारया। हरि पारब्रह्म बख्शिंद, जोती जोत उज्यारया। हरि दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आप समा रिहा। हरि सागर हरि सिन्ध, हरि डूँघी धार वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरता रिहा। प्रगट्या हरि सुल्तान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, दो जहानां वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, आप आपणा बल धराईआ। आपे आपणे घर हो प्रधान, आपणी अलक्ख आप जगाईआ। अलक्ख निरँजण खेल महान, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। आपे नारी कन्त भतार, साची सेज आप हंढाईआ। आपे आपणा कर शृंगार, शब्द भूषन आपे पाईआ। आपे कंगन कर त्यार, आपे वेख वखाईआ। आपे जोरु जोबन नार मुटयार, आपे निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आपे निरगुण कन्त भतार, कन्त कन्तूहला नाउँ धराईआ। आपे आपणा कर विहार, आप आपणा सगन मनाईआ। आपे विचोला फेरे मारे वारो वार, आवे जावे बेपरवाहीआ। आपे गोला बणे दर दरबार, दर दरवेश अलक्ख जगाईआ। आपे आदि निरँजण बण भिखार, दर आपणा रंग रंगाईआ। आपे देवणहार भण्डार, दाता दानी आप हो जाईआ। आपे सोभावन्ती होई नार, रूप अनूपा आप दरसाईआ। आपे साजण मीता ख़बरदार, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। आपे कंठ पाए आपणा हार, आपणी जड़त आप जड़ाईआ। आपे दूल्हा हो त्यार, निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे नारी नर विचार, आपे जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। आपे घाड़ण घड़े अपर अपार, सच सुन्यार भेव ना राईआ। आपे परख परखे परखणहार, वड शराफ इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घर करे रुशनाईआ। प्रगट्या हरि निरँकार, भेव अभेद खुल्हांयदा। रूप रंग रंग करतार, निरगुण निरगुण विच समांयदा। निरगुण निरगुण भर भण्डार, निरगुण निरगुण वेख

वखांयदा। निरगुण रईयत निरगुण सिक्दार, निरगुण हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। प्रगट्या हरि हरि दाता, आपणी दया कमाईआ। आपे मात पित धर निशान, सुत्त दुलारा आप हो जाईआ। आपे दाई दाया बण निधान, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। आपे खाट सच पलँघ वछाए दो जहान, पावा चूल ना कोई रखाईआ। आपे बस्त्र भूषन वेखे ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोई वखाईआ। आपे करया आपणा पीण खाण, आप आपणी तृप्त कराईआ। आपे होया गुण निधान, गुणवन्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। प्रगट्या हरि हरि अभुल्ल, भेव कोई ना पांयदा। आप आपणी उपाए कुल, आप आपणा वेस रखांयदा। साचे मन्दिर आपे पाया आपणा मुल, आप आपणा हट्ट खुल्हांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, तोलणहारा आप हो जांयदा। आपणा मन्दिर आपे खोल्ह, आपे आसण लांयदा। ना कोई दूसर दिसे कोल, ना कोई संग रखांयदा। ना कोई नार भतार करे चोल्ह, सेजा सेज ना कोई हंढांयदा। ना कोई उलटा करे नाभ कँवल, अमृत मेघ ना कोई झिरांयदा। एका नूर इलाही अव्वल, नूर इलाही आप अख्वांयदा। आपणे अन्दर आपे मवल, आपणी बहार आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप रखांयदा। प्रगट्या हरि नरायण, निरगुण नूर नूर उपाया। कोटन कोटि त्रिलोकी वखाए एका नैणा, हरि का नेत्र भेव ना राया। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड प्रभ अबिनाशी चरनां हेठ दबाउणा, आप आपणी कल वरताईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव रसना जिह्वा गाउणा, हरि का रूप ना कोई वखाईआ। कोटन कोटि रवि ससि दिवस रैण रैण दिवस आदि जुगादि चक्र वरती भवण, भौंदिआं भौंदिआं गणत ना आईआ। गगन मण्डल संख असंखा राह तकायण, हरि का नेत्र किसे ना पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप दए दरसाया, हरि का रूप अगम्म अपार, हरि आपणे विच समाईआ। सुते प्रकाश हो उज्यार, एका धारा धार बंधांयदा। आपणे रंग रवे करतार, आपणी करनी करता आप कमांयदा। भेव अभेदा भेव न्यार, अछल अछेदा दिस ना आंयदा। वेद कतेबा वस्सया बाहर, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। प्रगट्या हरि पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराईआ। ना कोई दिसे हड्ड मास नाड़ी चम्म, रत्ती रत्त ना कोई जणाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निउँ निउँ सीस झुकायण रवि ससि सूरज चन्न, नित नवित्त राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात आपणा रंग दए दरसाईआ। हरि का मन्दिर पंज तत्त मकान, सतिगुर नाउँ धराईआ।

प्रगट हो विच जहान, लोकमात फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी देवे इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म समझाईआ। मन मति बुध ना कोई प्रधान, त्रैगुण माया वेख वखाईआ। पंचम वेख जगत शैतान, पंचम दर दुरकाईआ। पंचम देवे शब्द निधान, पंचम तीर चलांयदा। पंचम बहि बहि सारे गाण, पंचम राग अलांयदा। पंचम खेल श्री भगवान, घर साचा आप खुलांयदा। पंचम तख्त पंचम सुल्तान, शाहो भूप आसण लांयदा। पंचम चिल्ला तीर कमान, शस्त्र बस्त्र आप सुहांयदा। पंचम खण्डा तेज़ किरपान, गुण निधान नाम रखांयदा। पंचम दीसे पीण खाण, प्रेम प्याला मुख लगांयदा। पंचम होए निगहबान, निर्धन सरधन सेव कमांयदा। पंचम राज जोग प्रधान, जोग जुगीशर हो हो आंयदा। पंचम सुरत शब्द ज्ञान, पंचम एका ब्रह्म जणांयदा। पंचम मेला गोपी काहन, कान्हा कृष्ना वेख वखांयदा। पंचम मेला सीता राम, सीता राम समांयदा। पंचम मीता दो जहान, आदि जुगादि आप अख्वांयदा। पंचम सतिगुर हो प्रधान, लोकमात नाउँ धरांयदा। नानक मेला हरि भगवान, दर मन्दिर इक्क सुहांयदा। शब्द भूषन सच निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त हंढांयदा। करे श्रृंगार श्री भगवान, गुरमुख आसा तृष्ना नाल रलांयदा। सखीआं मंगल एका गाण, भगत भगती आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर इक्क वखांयदा। लोकमात भूमका अस्थान, साचा मन्दिर आप जणाईआ। काया गढ़ अन्दर वड़ उप्पर चढ़ वेखे मार ध्यान, उच्च महल्ल अटल आप सुहाईआ। पाए पद पद निरबान, गीत गाए गुण निधान, आप आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। निरगुण लेखा लिख्या ना कोई मेटे रेख, आपणी रेख आप उपांयदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई वंड वंडांयदा। आदि जुगादी अवल्लड़ा वेस, आदि शक्ति रूप धरांयदा। अष्टभुज नर नरेश, सुंभ निसुंभ खपांयदा। ध्रू प्रहलाद ल्ए वेख, दुष्ट हँकारी मेट मिटांयदा। निरगुण सरगुण धर धर भेख, धरनी धरत धवल सुहांयदा। पंज तत्त करे आदेस, जिस घर आपणा आसण लांयदा। सुत्त दुलारा बणाया दस दस्मेश, दर आपणी अलक्ख जगाया। आपे रूप रिखी केस, गोवर्धन धारी आप हो जांयदा। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग हंढांयदा। आपे नेत्र रिहा वेख, निउँ निउँ आपे सीस झुकांयदा। आपे बाशक तशका गल रक्खे शेस, आपे शंकर जटा जूट गंगा धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आपणा भेव आप खुलांयदा। कलिजुग अन्तिम भेव खुलाया, भूल रहे ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेस वटाया, वेस अनेका रूप कराईआ। नित नवित्त फेरा पाया, साचा हित्त भगत वड्याईआ। अबिनाशी अचुत दिस ना आया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। कलिजुग वेस हरि अवल्ला,

एका एक एकँकारया। राह तक्के राणी अल्ला, संग मुहम्मद चार यारया। ईसा मूसा फड़या पल्ला, इक्क दूजे देण हुलारया। राम रामा राह मल्ला, एका एकँकारया। कान्हा कृष्ना अग्गे खल्ला, मोर मुकट सीस टिका रिहा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण भेव अवल्ला, अकल कला वरता रिहा। नानक निरगुण जोती रल्ला, नूरो नूर समा रिहा। गोबिन्द फड़ाया आपणा पल्ला, आपणे पौड़े आप चढ़ा रिहा। सच सिँघासण हरि जी मल्ला, घर साचे डेरा ला रिहा। आपणे दीपक आपणी जोती आपे बला, दीवा बाती ना कोई रखा रिहा। बैठा रहे इक्क इकल्ला, एका एकँकार नाम धरा ल्या। लक्ख चुरासी जो जन धाम सचखण्ड दुआरिउँ आपे घल्ला, दूसर कोई ना पन्ध मुका रिहा। सति पुरख निरँजण अबिनाशी करता आपे होए अछल अछल्ला, वल छल धारी रूप वटा ल्या। कलिजुग अन्तिम लोकमात सुत्त दुलारे नाल रला, पूत सपूता मेल मिला ल्या। सम्बल नगरी धाम अवल्ला, सच सिँघासण इक्क विछा ल्या। भाग लगाए पंज तत्त माटी काया खला, ख़लक ख़ुदाई आप अख्वा रिहा। आपे बिस्मिल नर नरायण आपे नूर इलाही अल्ला, आपे राम कृष्न नाउँ धरा ल्या। आपे संग मुहम्मद चार यार ईसा मूसा आपे गोबिन्द फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा मार्ग आपे ला ल्या। आपे करे आपणा हल्ला, आप आपणी खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आपणी सूझ, गुरमुखां आप बुझा रिहा।
१०३४ गुरमुखां हरि हरि भेव खुलाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। कलिजुग अन्तिम जोत जगाउणा, दीपक जोत करे रुशनाईआ। १०३४
०८ साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। शिवदुवाला मट्ठ गुर मन्दिर मस्जिद किसे दिस ना आवणा, पंडत पांधे मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर ग्रन्थी पन्थी रहे राह तकाईआ। नानक लेखा पूर करावणा, जो लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। वेद व्यासा संग रलावणा, हरि साचा करे कुड़माईआ। गोबिन्द तृष्ना पूर करावणा, आसा आसा विच समाईआ। आप आपणी कल वरतावणा, अकल कला वड वड्याईआ। छत्ती राग भेव ना पावणा, नारद मुन सुरस्ती दए सलाहीआ। चार वेद ना संग निभावणा, ब्रह्मा वेता दए गवाहीआ। पुराण अठारां वेख वखावणा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक वड वड्याईआ। गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ावणा, बिन अर्जन भेव ना राईआ। नानक दरस दरस गुरमुख विरले पावणा, अंगद अंगीकार कराईआ। गुर गोबिन्द साचा संग निभावणा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। पंचम प्यारा सुत्त दुलारा सच्चखण्ड दुआरा एका घर एका वेस वटावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा मन्दिर आपे दए वखाईआ। हरि का मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग अन्त सुहाया। एका बैठा पुरख समरथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याआ। ब्रह्मा विष्न शिव खण्ड ब्रह्मण्ड पृथ्मी आकाश लोक पताल उत्भुज सेत्ज जेरज अंड पाए नथ्थ, वाग आपणे हथ्थ रखाया। रवि ससि राह

तक्कण नस्स नस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा दए वखाया। साचा घर सच बिबाना, हरि साचा आप समझाईआ। ना कोई चतुर सुघड़ स्याणा, चौदां विद्या दिस ना आईआ। भेव ना पाए राजा राणा, शाह सुल्तान रहे कुरलाईआ। जिस जन किरपा करे श्री भगवाना, सो जन बूझ बुझाईआ। साधां सन्तां देवे एका दाना, एका नाम झोली पाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, एका ब्रह्म वखाईआ। अनहद राग सुणाए सच तराना, धुनी नाद वजाईआ। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। नेत्र तीजा इक्क खुल्हाणा, दोए लोचण बन्द कराईआ। सुखमन तेरा टेडा राह पार कराणा, त्रबैणी नैणी आपणे चरनां हेठ दबाईआ। सतिगुर पूरे दरस दखाणा, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। बज़र कपाटी कुण्डा लाहणा, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। दस्म दुआरी दर खुल्हाणा, आत्म सेजा इक्क हंढाईआ। रुत्त बसन्ती आप सुहाणा, फल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। साची नारी वेस कराणा, सुरत सुवाणी सोलां शृंगार कराईआ। शब्द हाणी इक्क उठाणा, गुर गुर नाम वड्याईआ। राधा कृष्न मेल मिलाणा, सीता राम जोड़ जुड़ाईआ। नानक शब्द कर प्रधाना, नाम सति वज्जे वधाईआ। गोबिन्द हथ्थीं बद्धा गाना, साचा सगन मनाईआ। ऐनलहक्क खेल महाना, अल्ला हू हू वेख वखाईआ। हक्क हकीकत वेखे मार ध्याना, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। महिबान बीदो भेव चुकाणा, बी खैर या अल्ला बेपरवाहीआ। बिस्मिल रूप आप वटाना, आप आपणी कल वरताईआ। आपणे अन्दर आपणा रंग रंगाणा, आपणी दया कमाईआ। आपणा दीपक आप जगाणा, निरगुण नूर नूर टिकाईआ। साचे मन्दिर गोपी कान्हा, बैठे रास रचाईआ। साची सखी मिले श्री भगवाना, गुरमुख सखी इक्क समझाईआ। अंगीकार करे गुण निधाना, आप आपणे अंग लगाईआ। जन भगतां देवे धुर फ़रमाना, शब्द अनादी इक्क समझाईआ। निरगुण सरगुण खेल दो जहानां, जुग करता आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, साचे मन्दिर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि का मन्दिर दए वखाईआ। तारा सिँघ कर ध्यान, हरि साचा बूझ बुझांयदा। सचखण्ड ना खोल्ह मकान, थिर घर ना कोई वखांयदा। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, रवि ससि ना कोई चमकांयदा। मण्डल मण्डप ना कोई निशान, पुरी लोअ ना कोई धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई प्रधान, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द ना संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना आपे रच, आपणा खेल खिलाया। आपे निरगुण बणया सच्च, सच घर साचा आप वसाया। आपे नौ दुआरे रिहा नच्च, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फेरा पाया। आपे लक्ख चुरासी भाण्डे कच्च, घड़ण भन्नणहार समरथ पुरख नाउँ धराया। आपे पाए विच आपणी वथ्थ, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी अंस उपाया। आपे शब्द जणाई

अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राया। आपे जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही वेस वटाया। जीव जन्त साध सन्त गुर पीर अवतार, काया मन्दिर सभ दा जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। अबिनाशी करता निरगुण रूप सति सरूप आदि जुगादि आपे गेड़े आपणी लट्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। आपे जाणे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी सुरस्ती वेख वखाया। आपे उच्चे मन्दिर वसे मट्ठ, आपे डूँघी कन्दर डेरा लाया। आपे जपी तपी अभ्यास हठ, निओली कर्म आप कराया। आपे सच सुच्च वेखे नठ्ठ नठ्ठ, हवन पवन आप समाया। आपे पल्ले बन्न्हे नाम गट्ठ, ख़ाली हथ्थ आप फिराया। आपे दुरमति मैल देव कट्ट, आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे हल्काया। आपे अमृत आत्म देवे झट्ट, आपे कँवल नाभी मुख भुवाया। आपे वसणहारा काया मन्दिर साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा गवाह रखाया। आपे कसीरा गंगा ल्या कढ्ढ, हथ्थ आपणे कंगन आपे बाहीं पहनाया। आपे वेख्या चोर यार ठग्ग, आपणा पर्दा आपे पाया। आपे वस्सया उप्पर शाह रग, आपे काग हँस उडाया। आपे दाता सूरा सरबग्ग, करनी करता आप अख्वाया। आपे हरिभगत हरि सन्त आपणे हीरे बणाए नग, आपणे ताज आप जुड़ाया। कलिजुग अन्तिम वा तत्ती रही वग, हरि का भेव किसे ना पाया। सच दस्तार ना किसे हथ्थ पग्ग, गुर गोबिन्द नज़र ना आया। पंज तत्त विकारा लग्गी अग्ग, नानक शब्द हिरदे ना किसे वसाया।
१०३६ ०८ कान्हा कृष्ना चरन कोई ना किसे निभाया नत्त, मथ्थो तिलक रहे वखाया। सुरत सुवाणी ना लथ्थी सत्थ, साची सीता ना राम प्रनाया। साधां सन्तां नूं पंचम विकारा पाई नथ्थ, नौ दुआर होए हल्काया। घर घर पढ़ पढ़ सुणौंदे गाथ, घर का भेव किसे ना पाया। हथ्थ फड़ माला अठोतरी अठ, मन का मणका ना कोई भुवाया। सिर ख़ाक पा पा बैठे भस, पंज तत्त भस्म ना किसे कराया। गऊ सूर खायण कसम कस, गुर का बचन ना कोए पूर कराया। गुर दर मन्दिर मस्जिद बैठे हस्स हस्स, धीआं भैणां रहे तकाया। काम क्रोध लोभ मोह मारया तीर कस, साची ढाल कोई ना अग्गे डाहया। माया राणी रही डस्स, ममता मोह ना कोई चुकाया। बिन सतिगुर पूरे साचा मार्ग कोई ना देवे दस्स, फड़ बाहों पार ना कोई कराया। पुरख अबिनाशी शाहो शबाशी वसणहारा घट घट, घट अन्दर डेरा लाया। कलिजुग अन्तिम चौदां लोक चौदां हट्ट, जगत पंसारी आप हो जाया। गुरमुखां वखाए साची खाट, हरि मन्दिर डेरा लाया। स्वांगी वरते स्वांग नटूआ नट, नर नरायण भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां एका धाम दए वखाया। एका धाम हरि का मन्दिर, लोकमात आप समझाईआ। आपे वस्सया साचे अन्दर, सच दुआरा आप वखाईआ। किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिल्ले बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप

आपणा मन्दिर दए वखाईआ। हरि का मन्दिर हरि हरि दुआर, लोकमात उपजाया। कलिजुग करया सच विहार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी ना कोई लेख लखाया। निहकलंक लए अवतारा, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। वेद व्यासा कर प्यार, आपणी गोद उठाया। नौ दुआरे खोल्ह् किवाड़, कलिजुग जीवां रिहा समझाया। गुरमुख अन्दर लए वाड़, मनमुखां दए सजाया। पहले मेटे पंचम धाड़, दूजे काया चोली रंग चढ़ाया। तीजे नेत्र दए उग्घाड़, चौथा चौथे पद समाया। हरि हरि सोहे साचा लाड़, छेवें छप्पर छन्न ना कोई उपाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, सति दुआरे करदा आया। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोई रखाया। नौ दुआरे कर ख्वार, दसवें डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, साचा मन्दिर आप सुहाया। साचा मन्दिर कर त्यार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। गुर गोबिन्द सेवादार, साची सेव कमाईआ। पुरख निरँजण खेल अपार, आप आपणी रिहा कराईआ। निरगुण बाती कर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द शब्द शब्द सच्ची धुन्कार, आपणा नाद वजाईआ। सोहँ शब्द बोल जैकार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म एका धार, एका रंग रंगाईआ। विछड़ ना जाए विच संसार, वड दाता बेपरवाहीआ। निहकलंका लए अवतार, पंज तत्त बैठा डेरा लाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, ज़ात

१०३७

पात ना कोई रखाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क दुआर, एका करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोई होए ख्वार, जो जन आए चल सरनाईआ। अन्तिम प्रगट्या गिरवर गिरधार, गरुड़ पंख ना सेव कमाईआ। जोती जामा जोत निरँकार, जोती जोत जोत डगमगाईआ। नाम खड़ग खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड आपणे हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, जेरज अंड वंड वंडाईआ। नार दुहागण मेटे विभचार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क दुआर, धाम अवल्ला इक्क इकल्ला एकँकार, निराकार निरगुण बैठा आसण लाईआ। आपे फलया आपे फुला, आपणी कीमत करता आपे पाए मुला, आपे आपणे हट्ट विकाईआ। आपे जलां आपे थलां आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर रला, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। गुरमुख तेरा सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपे मल्ला, तेरा मन्दिर तेरा अन्दर आपणा आसण दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी देवे एका दान, जम की फाँसी फंद कटाए राए धर्म ना दए सज़ाईआ।

हरि साचा गुर करतार, एका एक एकँकारया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, खेले खेल अगम्म अपारया। सदी बीसवीं

हो उज्यार, आप आपणा रूप वटा ल्या। पंज तत्त कर ख्वार, ख़ाकी ख़ाक मिला ल्या। निरगुण नूर नूर कर त्यार, नूरो नूर डगमगा ल्या। गोबिन्द पाए साची सार, पूर्ब लहिणा आप चुका ल्या। सच दुआरे कर प्यार, साचा मन्दिर वेख वखा ल्या। त्रैगुण माया वस्सया बाहर, तत्व तत्त ना कोई जणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप समा ल्या। हरि भाणा भगवान, आपणा आप वरताईआ। प्रगट हो विच जहान, निहकलंक नाउँ रखाईआ। शब्द वजाए डंक महान, एका डंका हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, आपणे मुख आपे रिहा गाईआ। वेद पुराण भेव ना पायण, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अञ्जील कुरान सर्ब कुरलाण, तीस बतीस हदीस भेव ना राईआ। बाणी बोध करे वख्यान, बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। आपणा लेखा आपे जाणे वाली दो जहान, जुग करता आप अख्वाईआ। आप उठाए आपणा सच निशान, दिस किसे ना आईआ। रंगे रंग इक्क महान, कंचन रंग रंगाईआ। उप्पर लाल हो प्रधान, सूहा धार बंधाईआ। चिट्टा रंग इक्क वखाण, पीला बंधन पाईआ। नीला नीलम करे परवान, आप आपणा पर्दा लाहीआ। लोकमात कर प्रधान, काला रंग इक्क रंगाईआ। सत्त रंग इक्क निशान, सति पुरख निरँजण साचे घर उपाईआ। साचा डण्डा श्री भगवान, ब्रह्मण्डां एका लाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, लोकमात फेरा पाईआ। चवी्आं रूप हरि

१०३८ भगवान, ना कोई रंग वखाईआ। ना कोई तीर ना कोई कमान, ना कोई खण्डा हथ्थ उठाईआ। चवी् हथ्थ कर प्रधान, १०३८

ज़िमी अस्मानां पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मा वेखे नेत्र खोल् मार ध्यान, लोकमात राह तकाईआ। प्रगट होया वाली दो जहान, लोकमात फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकाए आपे पाए आपणी आण, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शिव शंकर देवे इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। बाशक तशका गल लटकाण, सहँसर मुख मुख ना गाईआ। करोड़ तेतीसा सर्ब पछताण, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाईआ। पतिपरमेश्वर श्री भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, आपणे भाणे विच समाईआ। कलिजुग उठाए इक्क निशान, सत्त रंग निशाना आप झुलाईआ। सत्तां दीपां पाए आण, नौ खण्ड पृथ्मी इक्क वखाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे मिट जाण, हरि का रूप इक्क दरसाईआ। जञ्जू बोदी ना कोई निशान, शरअ शरीअत ना कोई वखाईआ। मथ्थो तिलक ना कोई लगाण, ना कोई मूंड मुंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका नूर रिहा दरसाईआ। निरगुण नूर हरि भगवन्त, चार वरन दृढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा। तोड़े गढ़् हउमे हँगत, हँगता रोग ना कोई मिटांयदा। गुरमुखां दुआरे होए मंगत, दर दरवेश अलक्ख जगांयदा। सतिजुग बणाए साची

बणत, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग आपे लांयदा। साचा मार्ग हरि हरि लाउणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बणाए भाई भैणां, हरि साचा शाह सुल्तान राज राजान ना कोई वखाईआ। सीस ताज ना कोई टिकाउणा, दर दरबान ना कोई बणाईआ। शब्दी गुर ना किसे बचाउणा, आप आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव महेष पार्बती ना किसे सीस झुकाउणा, उठ उठ ना राह तकाईआ। करोड़ तेतीसा मुख छुपाउणा, प्रभ आपणा पर्दा लाहीआ। गीता ज्ञान ना किसे दृढ़ाउणा, शास्त्र सिमरत ना कोई पढ़ाईआ। राम कृष्ना ना मेल मिलाउणा, आप आपणे विच समाईआ। ऐनलहक्क ना नाअरा किसे लाउणा, कलमा नबी ना कोई पढ़ाईआ। कायनात हरि वेख वखाउणा, सच अमाम वड्डी वड्याईआ। नानक गोबिन्द अंग लगाउणा, आप आपणे अंग लगाईआ। सर्ब कला समरथ आप अखवाउणा, हरि साचा वड वड्याईआ। इष्ट देव ना कोए मनाउणा, सिल पूजन कोई ना जाईआ। अठसठ तीर्थ किसे ना नहाउणा, गंगा गोदावरी हरि मन्दिर अन्दर एका डेरा लाईआ। साचा डंक ना किसे वजाउणा, ना कोई कूके दए दुहाईआ। मुलां मसीत ना बांग अल्लाउणा, ना कोई सजदा सीस झुकाईआ। ना मसल्ला हेठ विछाउणा, नाअरा हू हू ना कोई वखाईआ। कागद कलम ना लेख लिखाउणा, भगत कबीरा दए गवाहीआ। रविदास चमारा मेल मिलाउणा, भुल्लया पंडत गले लगाईआ। सच कसीरा तन आप पहनाउणा, गंगा राणी करे कुड़माईआ। हरि दुआर चरन छुहाउणा, चरन चरनोदक आप वखाईआ। सुरस्ती हरि वेख वखाउणा, इक्की सिक्खां सेव कमाईआ। गोदावरी तेरा कर्जा लौहणा, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होया बेपरवाहीआ । बेपरवाह अलाही नूर, बेऐब परवरदिगारया। दरस दखाए हाज़र हज़ूर, अन्दर गुप्त ज़ाहरया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, चार यारी वेख वखा रिहा । राणी अल्ला मंगे चरन धूढ़, मुख घूँगट आपणा लाह ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दीन इलाही बेपरवाही एका राग सुणा ल्या। एका शब्द सच तराना, हरि हरि आप सुणांयदा। आपणी हथ्थीं बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। मक्का काअबा वेख वखाणा, हाज़ी हज्ज करांयदा। आपे मर्द मर्द मरदाना, आपे आपणा रंग रंगांयदा। आपे पहरया आपणा बाणा, सच अमाम आप हो जांयदा। नीले बस्त्र खेल महाना, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम आपणा खेल खिलांयदा। मुलां शेख़ मुसायक सच हदीस, हरि साचा आप सुणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका नायक, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ख़लक ख़ुदाई वेखे ख़ालक, ख़ालक ख़लक आप हो जाईआ। अज़मतो

करमतो होए सहायक, आपे दए अज़ाब वड सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे शाह नवाब, चरन घोड़े दे रकाब, साचे अस्व आसण लांयदा। साचे अस्व शाह अस्वारा, आपणा आसण लाईआ। चौदां तबकां दए हुलारा, चौदां चौदां वेख वखांयदा। सदी चौधवीं कर ख्वारा, चौदां हट्ट विकांयदा। मुस्लिम सुन्नी पाए सारा, शरअ शरीअत भेव खुल्हांयदा। एका कलमा कर उज्यारा, एका राग अल्हांयदा। एका सुणे सुनणेहारा, एका मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पाकी पाक ख़ाकी ख़ाक शाह शहाना नाउँ धरांयदा। पाकी पाक सिफ्त सलाह, नूरी नूर नूर ख़ुदाया। बेऐब बेपरवाह, आपणा नाउँ रखाया। इक्क इकल्ला बण मलाह, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। लक्ख चुरासी गाहे आपणे गाह, आपणा गेड़ा रिहा दुआया। आपे मन्दिर लए वसा, आपे अन्तिम ढाहया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खिलाया। नर नरायण नर हरि बनवारी, नर नरायण अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारी, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। गुर गोबिन्द बण लिखारी, आपणा लेखा आप जणांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगटे होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। सम्मत वीह सौ सोलां आपणा पर्दा दए उतारी, साल पन्दरां आपणा मुख छुपांयदा। वजाए डंक सृष्ट सुबाई एका बोल शब्द जैकारी, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह सुल्ताना राज राजाना अन्तिम आप उठांयदा। राज राजाना दए हुलारा, हरि साचे जोत जगाईआ। प्रगट होया गुर अवतारा, अकल कला वरताईआ। साधां सन्तां पावे सारा, भुल्ल रहे ना राईआ। फड़या खण्डा तेज कटारा, एका नाम नामा हथ्थ उठाईआ। चारों कुन्ट होए उज्यारा, पन्दरां कत्तक राह तकाईआ। शाह भबीखण करे ख़बरदारा, राष्ट्रपति तेरी अक्ख खुल्हाईआ। आपे आए चल दुआरा, आप आपणी कर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया बेपरवाहीआ।

प्रगट होया हरि भगवन्त, भुल्ल रहे ना राए। सर्ब जीआं दा साचा कन्त, निरगुण नार कन्त इक्क प्रनाए। आपे आदि आपे अन्त, बेअन्त आप अख्वाए। आपे मणीआ आपे मंत, आपे रसना जिह्वा आपणा नाम जपाए। आपे साध आपे सन्त, आपे सादिक सिद्ध रखाए। आपे जीव आपे जन्त, आपे जागरत जोत जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाए। भेख अवल्लड़ा हरि भगवान, आपणा आप वटाया। इक्क

१०४० ०८

इकल्लड़ा नौजवान, ना मरे ना जाया। गुरूआं पीरां साधां सन्तां देवे आपणा दान, जुग जुग झोली रिहा भराया। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, लोकमात फेरा पाया। मेट मिटाए राज राजान, शाह सुल्तान रहिण ना पाया। ना कोई दीसे बेईमान, जूठ झूठ ना रसना गाया। ना कोई झूठी दिसे दुकान, झूठा हट्ट ना कोई रखाया। सोहँ शब्द जीव जन्त साध सन्त नौ खण्ड पृथ्मी सारे गाण, विष्नूं भगवान एका नाअरा लाया। सम्मत सोलां खेल करे वाली दो जहान, अस्सू आस रिहा तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका भेव दए खुल्हाया। छत्ती जुग रक्खी आस, अस्सू अस्व हथ्थ रखाईआ। सच्चा घोड़ा पुरख अगम्मड़े पास, दूजे हथ्थ किसे ना आईआ। नानक इक्क पकड़ी रास, दूजा कबीरा रिहा उठाईआ। मिल्या मेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गुण दए जणाईआ। अन्तिम मेला पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। भगतन मीता होए दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। हरिजनां हरि वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े कलिजुग अन्तिम मेल अस्व पूरी करे आस, सम्मत वीह सौ सोलां राह तकाईआ। गुरमुख कोई ना दर तों जाए निरास, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। सच वस्त सतिगुर पूरे पास, किसे घर ना मंगण जाईआ। गुरमुखां लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। हिरदे अन्दर रक्खे वास, घट मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा लहिणा दए चुकाईआ। गोबिन्द तेरा लहिणा इक्क चुकावणा, अस्सू आस इक्क रखांवदा। गुरमुखां गहिणा तन पहनावणा, शब्द श्रृंगार इक्क सुहांवदा। अबिनाशी करते सगन मनावणा, ना कोई दूसर संग रलांवदा। ब्रह्मा उठे नेत्र खोल्ह राह तकावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पहली अस्सू दिवस सुहांवदा। पहली अस्सू वीह सौ सोलां दर घर साचे चढ़या चा, ब्रह्मण्ड वज्जी वधाईआ। अबिनाशी करता प्रगट होया बेपरवाह, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। गुरमुखां देवे सच सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द नाल रला, आपणा पल्ला आप फड़ाईआ। जुग जुग बेड़े दए चढ़ा, एका चप्पू नाम लगाईआ। घर घर खेड़े दए वसा, गुरमुख खेड़ा इक्क वड्याईआ। नौ खण्ड पृथमी उखेड़ा दए लगा, हरि का भाणा ना कोई मेट मिटाईआ। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा दए करा, गल आपणे अल्फ़ी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग एका लाईआ। उः ओंकार तिन्नां अन्दर गया वस, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलांयदा। पैंडा मुकावण नस्स नस्स, आप आपणे पन्ध लगांयदा। निउँ निउँ सीस झुकाइन रवि ससि, निमस्कार निमस्कार निमस्कार करोड़ तेतीसा रसना गांयदा। गुरमुख राह रहे तक्क, कलिजुग अन्तिम वेला आंयदा। चौथा जुग गया थक्क, मनमुखां भार ना कोई उठांयदा। धरती माता टुट्टा

लक्ख, फड़ बाहों ना कोई बहांयदा। अठसठ तीर्थ लेखा गया मुक्क, अमृत जाम ना कोई प्यांअदा। साध सन्त ना सके कोई रक्ख, सिर हथ्थ ना कोई टिकांयदा। शाह सुल्तान विके हट्टो हट्ट, कौडी मुल ना कोई पांयदा। किसे घर काया मन्दिर जोत ना जगे लट लट, जोत ज्वाला सर्ब मनांयदा। नानक गुरु ना मेटयां दूई द्वैती फट्ट, एका रंग ना कोई रंगांयदा। गुर गोबिन्द अमृत आत्म ना दित्ता झट्ट, पंच विकार ना कोए खपांयदा। कलिजुग स्वांगी स्वांग वरतया खेले खेल बाज़ीगर नट, नटूआ नट घर घर नाच नचांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना दिसे पूजा पाठ, पढ़ पुस्तक जगत विवाद वधांयदा। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाट, कलिजुग क्रिया मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अस्सू एका रंग रंगांयदा। रंग चलूला राम रंग, रंगे रंग अनमोल्लया। सतिगुर पूरा सदा संग, गुरमुख साचे कंडे तोल्लया। आपे लाए आपणे अंग, अंगीकार आप अडोल्लया। ग़रीब निमाणयां कलिजुग अन्तिम कट्टे भुक्ख नंग, शाह सुल्तान कीते हौलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वजाए मृदंग, शब्द जैकारा एका बोल्लया। नाम जैकारा शब्द मृदंग, हरि साचा आप वजांयदा। आपे वेखे खेल पृथ्मी नौ खण्ड, नौ नौ वंड वंडांयदा। सति सति सति विच ब्रह्मण्ड, सति सति विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे जीआं दान, जीवण मुक्त करांयदा। गुरमुख उधरे पार, हरि सतिगुर पार कराईआ। साचा मेला हरि के दुआर, हरि दुआरा इक्क वखाईआ। पतित पापी दए तार, पतित पावण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे साचा दान, तीजी अस्सू रुत्त सुहाईआ।

अस्सू तिन्न तुट्टा नाता, शाह सुल्ताना संग तुड़ाईआ। गुरमुखां करे उत्तम ज़ाता, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पन्दरां कत्तक वंडे दातां, मस्तूआणे चरन छुहाईआ। चाली दिवस गाए गाथा, आप आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां दर दर घर घर चलाए राथा, रथ रथवाही फेरा पाईआ। दो जहानां सगला साथा, सगला संग निभाईआ। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठा, आप आपणा दरस दिखाईआ। जुगा जुगन्तर करे पूरा घाटा, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। कलिजुग बस्त्र अन्तिम पाटा, ना कोई पर्दा उप्पर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण धार बणाईआ। अस्सू तिन्न तिक्खी धार, त्रै त्रै लोक विखांयदा। साची सिखी कर त्यार, चार वरनां रंग चढ़ांयदा। वालों निक्की विच संसार, सतिगुर पूरा आप वखांयदा। मुनी रिखी ना पावण सार, ग्रन्थी पन्थी ना भेव खुल्हांयदा। लिखी

रेख आप करतार, गुर गोबिन्द सेवा लांयदा। दर दरवेश नर नरेश खेल अपार, ब्रह्मा विष्न महेष मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम पेशी एका वार, एका हुक्म सुणांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, ख़ालक ख़लक ख़लक ख़ालक आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौ नौ फेरा पांयदा। नौ हुलारा नौ प्यारा नौ अधारा नौ जैकारा, नौ अधार कराईआ। सति उज्यारा सति वरतारा सति करतारा, सति सति रूप वटाईआ। तत्त न्यारा तत्त अखाड़ा, तत्व तत्त रित नित वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वरन बरन इक्क सरन, हरन फरन खोल्ह तरनी तरन, मरन डरन आप चुकाईआ। माण मोह जगत अभिमान, कलिजुग छत्र सीस झुलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह प्रधान, चारों कुन्ट फेरीआं पाईआ। आसा तृष्ना नाल निधान, हउमे हँगता रही कुरलाईआ। बुध बिबेक ना कोई ज्ञान, गुरमति ना कोई समझाईआ। मति मतवाली बाल निधान, निर्धन बैठी मुख छुपाईआ। मन मनुआ उठे नौजवान, आप आपणा बल धराईआ। दहि दिशा मारे इक्क ध्यान, आपणा जोबन आप हंढाईआ। पंज तत्त ख़ाली वेखे जगत मकान, जूठी झूठी क्रिया डेरा लाईआ। सति सन्तोख जत सति ना कोई ध्यान, रती रत्त ना कोई रंगाईआ। हरि हरि मति ना सके कोई पछाण, मन मति जगत हल्काईआ। जोत जुगत भगत भगवान, हरी हरि बीठलो एका नाम करे कुड़माईआ। धर्म वखाए इक्क सच निशान, सतिगुर साचा हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादी निगहबान, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, गुर चेले आप जगाईआ। पवण पाणी सेव कमान, सेवक सेवा साची लाईआ। धुन अनादि ब्रह्मादि घट मन्दिर अन्दर बहि बहि गाण, सारंग ढोलक ना कोई वजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकान, हरि सन्त वड्डी वड्याईआ। घर घर बैठा साचा काहन, साची सखी साचा सीस ना कोई गुंदाईआ। कज्जल नैण ना कोई वखाण, नेत्र नैण ना कोई मिलाईआ। मीत मुरारा हरि निरँकारा श्री भगवान, आपे सुत्ता आपणी सेज सुहाईआ। कलिजुग जीव सर्ब पछताण, मिले मेल ना साचे माहीआ। यारी लग्गी जगत जहान, साचा महबूब नज़र ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, वेद पुराण सार ना पाईआ। आदि शक्ति अष्टभुज जोत ज्वाला सिँघ सवारी सारे गाण, नेत्र नैण दरस ना कोए पाईआ। परम पुरख पुरख सुल्तान, सचखण्ड महल्ला इक्क इकल्ला एक एकँकारा इक्क वसाईआ। पावे सार धरत धवल ज़िमी अस्मान, गगन मण्डल वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा काहन, एका एक एक अख्वाईआ। गुरमुख विरले मंगण भगती दान, भगवान एका झोली पाईआ। चरन धूढ़ कराए सच अशनान, अठसठ नहावण कोई ना जाईआ। काया मन्दिर अन्दर देवे इक्क ज्ञान, जगत भुल्ले सर्ब पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मति बुध आपणी सेवा आप लगाईआ। बुध बिबेक वेखे एक, जिस

१०४३ ०८

जन दया कमांयदा। मति मतवाली ना लाए सेक, जगत साची सिक मिटांयदा। मनुआ दहि दिशा ना धरे भेख, चार कुन्ट ना फेरी पांयदा। सन्त सुहेले जुग जुग आपे वेख, आप आपणे मुख सालांहयदा। लिखणहारा साचे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न गणपति गणेश, गायत्री मन्त्र आप जणांयदा। आपे आदि शक्ति करे प्रवेश, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे आपणी करे आदेस, घर आपणा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी एकँकारा कर पसारा, मन मति बुध तन मन्दिर आप टिकांयदा। मन मति तेरा सच दुआरा, नौ दर वेख वखाया। बुध रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धराया। मति मतवाली हाहाकारा, नेत्र रो रो नीर वहाया। मनुआ उठ उठ मारे धाड़ा, जूठा झूठा संदेवा हथ्थ उठाया। तत्व तत्त लग्गा अखाड़ा, गुर चेला आप नचाया। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, ना सके कोई बुझाया। सतिगुर पूरा गुरमुख वेखे साचा लाड़ा, सिर साचा हथ्थ टिकाया। आप कराए पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई डुबाया। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, मूर्ख मुग्धां लए उठाया। जो जन आए चरन दुआरा, आत्म भिच्छया मंग मंगाया। आत्म ब्रह्म भरे भण्डारा, वड भण्डारी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साची धार, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राया। बुध निमाणी होई दासी, निउँ निउँ सीस झुकाया। मन मति करे बन्द ख़लासी, एका मता पकाया। मनुआ देवे ना कोई झाकी, आपणा बल ना कोई धराया। हरि वेखणहार ख़ाक ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक फोल फुलाया। जिस जन खोल्ले आपणी ताकी, दूई द्वैती ताक मिटाया। जिस जन चढ़ाए साचे राकी, साचा घोड़ा इक्क वखाया। गुरमुख चढ़े मार पलाकी, सच सिँघासण आसण लाया। कलिजुग अन्तिम देण आया बाकी, निहकलंका जामा पाया। भर प्याला नाम प्याए साकी, एका अमृत मुख चुआया। आपे जाणे भविख्त वाकी, हरि भेव किसे ना आया। अग्गे कोए ना दिसे आकी, थिर कोए रहिण ना पाया। साचे दर ना चले कोई चलाकी, अछल अछल्ल नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला इक्क अकाला निर्भय रूप सति सरूप परम पुरख आप अख्वाया। परम पुरख प्रभ दीना बंधन, बन्दी बंधन तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुखां मस्तक तिलक लिलाट लगाए चन्दन, साची चण्डी चण्ड प्रचण्ड समाईआ। एका दात आया वंडण, वड दाता धुरदरगाहीआ। साची चाल रक्खे बेहंगम, दूजी चाल ना कोई रखाईआ। गुरमुखां बेड़ा आया बन्न्हण, कलिजुग सागर पार कराईआ। सोहँ शब्द तन पाए कंगन, रविदास चमारे वंड वंडाईआ। मानस जन्म ना होए भंगन, जो चल आए सरनाईआ। काया चोली सारे रंगण, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर वजाए इक्क मृदंगन, मन मति बुध दए सलाहीआ।

उठी बुध बुध सुवाणी आपणा मता पकाया। सतिगुर मेले साचा हाणी, साची सेव रखाया। मति मतवाली अन्धी काणी, रही राह तकाया। मनुआ बहि बहि भरे पाणी, गुर का शब्द सुणाया। गुरमुखां चुक्के आवण जाणी, जिस सतिगुर पूरे दर्शन पाया। लेखा चुक्के चारे खाणी, साची बाणी आप पढ़ाया। गुरमुख नारी साची राणी, सच दुआरे सोभा पाया। अमृत देवे ठंडा पाणी, निझर धारा आप रखाया। इक्क वखाए पद निरबाणी, चौथे पद आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मति वेखे थाउँ थाँईआ। मन मति कूके दए दुहाई, नेत्र रो रो नीर वहाया। गुरमुख विरले गुरमति पाई, जगत संसा रोग गंवाया। मनमुखां जूठ झूठ करे कुड़माई, हउमे हँगता सगन मनाया। गुरमुखां राह तक्कण भिन्नड़ी रैण चाँईं चाँईं, वीह सौ सोलां बिक्रमी पहली अस्सू राह तकाया। सतिगुर पूरा पकड़े आपे बाहीं, आप आपणा मेल मिलाया। समरथ पुरख देवे ठंडीआं छाईं, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण लए तराया। तारनहारा सतिगुर एक, सति पुरख निरँजण मेहरवानया। त्रैगुण माया ना लाए सेक, देवे धुर फ़रमानया। पंज तत्त विकारा ना लए वेख, जिस अन्दर वस्सया श्री भगवानया। बिधना लिखी मेटे रेख, जो जन रक्खे चरन ध्यानया। दर्शन देवे वार अनेक, अनभव प्रकाश करानया। मस्तक लाए साची मेख, जगत झोली गोद भरानया। माँ पुत्तर लए वेख, सुंञी कुक्ख ना कोए रखानया। मेट मिटाए दुःख कलेश, कालख टिक्का मस्तक लाहनिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि साचा मूल पछानया। हरि सज्जण हरि वेखणहारा, पारब्रह्म अबिनाशया। गुरमुखां करे सच प्यारा, साचे मण्डल पावे रास्सया। रोग सोग चिन्त निवारा, अमृत भरया काया कास्सया। जो जन आए चल दुआरा, देवे नाम शब्द भरवास्सया। सोहँ शब्द सच जैकारा, पार कराए पृथ्मी अकाशया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे खेल तमाशया। हरिसंगत हरि मंगणा, हरि हरि रूप अपार। घर साचे मूल ना संगणा, लोक लाज देणी उतार। काया चोली चाढ़े रंगणा, रंग चलूल चाढ़े करतार। नाम नगारा एका वज्जणा, सुणे सुणाए सर्ब संसार। लक्ख चुरासी भाण्डा भज्जणा, कलिजुग आई अन्तिम वार, मनमुखां दिसे कासा सक्खणा, चार कुन्ट होए ख्वार। गुरसिख बाल विरोले मक्खणा, आप आपणी किरपा धार। गुरमुख दुआरे लए आप प्रदक्खणा, जिउँ सुदामा कृष्न मुरार। ग़रीब निमाणया पर्दा ढकणा, जिउँ बिदर दए अधार। गढ़ हँकारी करे सक्खणा, राज राजाना करे ख्वार। बिन हरि अन्त किसे ना रक्खणा, ना कोई बेड़ा लाए पार। चार वरनां राह एका दस्सणा, बरन अठारां एका धार। एका छप्पर छाया हेठ वसणा, हरि मन्दिर गुरदुआर। निहकलंक नरायण नर एका नाम जपणा, पुरख अकाल वजाए आप सितार। आपे वसे कुली कक्खणा, आपे

सथ्थर सुत्ता पैर पसार। आपे देवे सुनेहड़ा साचे यार सज्जणा, मित्र प्यारे मीत मुरार। अन्तर पर्दा आपे कज्जणा, शब्द दोशाला उप्पर डार। हरिसंगत हरि बहि बहि सजणा, बीस इकीसा खेल अपार। मन मति तेरा भाण्डा भज्जणा, बुध बुध करे विचार। मनुआ उठ ना दहि दिश नठ्ठणा, सतिगुर पूरा मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीती साचा नाता, सतिगुर आप जुड़ांयदा। बैठा रहे इक्क इकांता, आपणा खेल खिलांयदा। वेस अनेका बहु बहु भांता, जुग जुग नाउँ धरांयदा। जन भगतां रक्खे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोई मिटांयदा। एका देवे नाम दाता, सच समग्री झोली पांयदा। आप सुणाए आपणी गाथा, आपे राग अलांयदा। आपे वेखे सिद्ध चुरासी नौ नौ नाथा, सति दो रूप वटांयदा। आपे जाणे पूजा पाठा, आपे हवण पवण सुगंध धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, मन मति बुध आपणा खेल खिलांयदा। बुध खेले आपणा खेल, गुर गुर आप खलाईआ। मति मतवाली पाए वेल, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। मनुआ चारों कुन्ट रिहा पेल, आपणा जोबन रिहा वखाईआ। सतिगुर पूरा शब्द सरूपी पाए नकेल, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्त सुहेले आपे मेल, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। धर्म राए दी कट्टे जेल, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, आप सुहाए बंक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा जाणा खुल्ह, हरि साचा आप खुल्हांयदा। सच दुआरे कोई ना लाए मुल्ल, आपणी कीमत करता आपे पांयदा। जो जन चरन प्रीती गया घुल, आप आपणा घोल घुंमांयदा। लोकमात ना जाणा रुल, गुरमुख अनमुल्ला लाल आपणी गोद उठांयदा। आपे फल फुलवाड़ी वेखे फुल्ल, आपे रुत्त बसन्त सुहांयदा। आप उपजाए आपणी कुल, कुलवन्ता नाउँ रखांयदा। आपे वेखे गुलशन गुल, आपे भँवर गूंज गुंजांयदा। आपे पंखड़ीआं अन्दर वड़या भुल्ल, सृष्ट सबाई आप भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मति साचे धाम धरांयदा। मति बुध मन साचा डेरा, निरगुण निरगुण आप लगाया। पंज तत्त पाया घेरा, चार दीवार रखाया। किसे ना सूझे सञ्झ सवेरा, अन्दर मन्दिर अन्ध अन्धेर धराया। गुरमुख विरले भेव खुल्हाए गूझा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। सतिगुर सरन सरनाई जो जन झूजा, झूजत झूजत हरि हरि पाया। भउ चुकाया एका दूजा, तीजा लोचण आप खुल्हाया। सच दुआरा हरिजन सूझा, घर चौथे मेल मिलाया। लहिणा चुक्कया पाठ पूजा, सतिगुर पूरा सति सरूपी आपणा देवे दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत चाढ़े नाम रंगत, रंग चलूल सदा अनमूल, अनभुल गुर आप चढ़ाया।

✪ २ अस्सू २०१६ बिक्रमी केसर सिंघ दे घर पिण्ड डल्ले वाला ज़िला जलन्धर ✪

सति पुरख निरँजण एक एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, जुग जुग वेस धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। दो जहानी खेल न्यार, हरि सतिगुर आप करांयदा। अलक्ख निंरजण बोल जैकार, अपणा आपे लांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, भेव कोई ना पांयदा। सति सरूपी निराकार, निरगुण आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी आदि निरँजण, अकल कला कल धारीआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, इक्क इकल्ला खेल अपारीआ। आप आपणा बण बण सज्जण, जुग जुग आपणा संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगा रिहा। जोती नूर खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप करांयदा। परम पुरख प्रभ इक्क इकल्ला, आपणी धार बंधांयदा। वसणहारा जलां थलां, थल सागर फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं करे हल्ला, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण सचखण्ड दुआरा एका मल्ला, थिर घर साचे आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस पुरख अबिनाशा, आपणा आप कराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेल तमाशा, आपणी मण्डल रास रचाईआ। रवि ससि कर प्रकाशा, जोती नूर नूर समाईआ। लक्ख चुरासी कर कर वासा, घर घट विच रिहा समाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, परम पुरख सुल्तानया। निरगुण खेल अगम्म अपारा, जोती नूर श्री भगवानया। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, पुरख अकाल इक्क तरानया। अजूनी रहित भेव न्यारा, जल थल महीअल आप समानया। लोकमात लै अवतारा, लक्ख चुरासी वेख वखानया। साधां सन्तां करे प्यारा, देवे नाम गुण निधानया, भगतां भगती मीत मुरारा, खेले खेल श्री भगवानया। शब्द अगम्मी इक्क हुलारा, सति पुरख निरँजण आप अख्वानया। पंज तत्त मेला विच संसारा, ब्रह्म पारब्रह्म वखानया। जोती नूर नूर उज्यारा, दीवा बाती इक्क टिकाणया। कमलापाती मीत मुरारा, सति सतिवादी सति पुरख घर साचे नौजवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जाणी जाणया। लक्ख चुरासी हरि हरि वासा, निरगुण नूर रुशनाईआ। आपे वसे पवण स्वासा, रसना जिह्वा आप चलाईआ। आदि अन्त ना कदे विनासा, जुग जुग करता खेल खिलाईआ। हरिभगतां देवे इक्क धरवासा, धरनी धरत धवल सुहाईआ।

साचे मण्डल बहि बहि पावे रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता परम पुरख सुल्ताना जोती नूर डगमगाईआ। जोती नूर श्री भगवन्त, सर्ब कल अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखांयदा। लेखे लाए हरि हरि सन्त, आप आपणा मेल मिलांयदा। साचा मेला नारी कन्त, निरगुण सरगुण संग निभांयदा। भेव ना पाए जीव जन्त, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे जाणे मित गति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जागरत जोत, जोती जोत डगमगांयदा। जोत उजाला हरि गोपाला, अकल कला कल धारीआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, एका एक गुर अवतारीआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लोकमात खेल न्यारीआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, दूजा दर ना कोई रखा ल्या। चरन रखाए काल महांकाला, आप आपणा हुक्म सुणा रिहा। शब्द सरूपी बण दलाला, धुर दरगाही वेस वटा ल्या। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, मनमुख ख़ाकी ख़ाक रला ल्या। लक्ख चुरासी वेखे फल काया डाला, पत डाली फोल फुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता आपणी किरत कमा रिहा। करता पुरख पुरख अबिनाश, एका एक एकँकारया। भगतन मीता भगती वास, प्रगट होए विच संसारया। गुरमुखां हिरदे रक्खे वास, निज आत्म डेरा ला ल्या। किसे हथ्थ ना आए पृथ्मी आकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचा ल्या। आपणी रचन आप रचाए, हरि वड वडा बलवानया। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाए, दिवस रैण सेव कमानया। जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाए, लक्ख चुरासी आप भुआनया। अन्तिम निबेड़ा हक्क कराए, हक्क हकीकत वेख वखानया। लाशरीक ख़ुदाए इक्क हो जाए, नूरो नूर डगमगानया। राम रूप रूप आप वटाए, आपे बंसरी नाम वजानया। आपे नाम सति मन्त्र दृढ़ाए, नानक निरगुण आप वखानया। आपे खण्डा हथ्थ उठाए, आपे चण्डी वेखे मार ध्यानया। ब्रह्मण्डां आपे खोज खुजाए, जेरज अंडां फोल फुलानया। जुग जुग वंडां आप कराए, ना कोई दूसर संग रखानया। भेख पखण्डा दए मिटाए, जूठा झूठा मेट निशानया। कलिजुग जीव आत्म रंडा कोई रहिण ना पाए, जिस भुल्लया हरि भगवानया। अन्तिम वेला कन्ढ़ा नज़री आए, बीस बीसा खेले खेल श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण अबिनाशी करता, पारब्रह्म ब्रह्म पुरख आपणा खेल आप खलानया। खेलणहारा हरि हरि खेल, हरि साचे वड वड्याईआ। सन्त सुहेले आपे मेल, गुरमुख सज्जण लए जगाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, घर साचे सगन मनाईआ। सतिगुर मिल्या सज्जण सुहेल, विछड़ कदे ना जाईआ। धर्म राए दी कट्टे जेल, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। वसणहारा रंग नवेल, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, हरि आपणा वेस वटांयदा। सतिगुर रूप हो प्रतक्ख, लोकमात फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी नकेल पाए नक्क, नाम डोरी हथ्थ उठांयदा। आपे लक्खों करनहारा कक्ख, आपे हट्टो हट्ट विकांयदा। आपे भाण्डे भरे करे सक्ख, सक्खणे भाण्डे आप भरांयदा। आपे सन्त सुहेले गुरू गुर चेले करे वक्ख, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। आपे फेरा पाए उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्ख, चारे कूटां वेख वखांयदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर ढक, समुंद सागर आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लहिणा झोली पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चुकया लहिणा, कलिजुग अन्तिम वारीआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे आपणे नैणां, निरगुण निर डगमगाईआ। नानक गोबिन्द साचा कहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लक्ख चुरासी हरि हरि भाणा सहिणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। राज राजान शाह सुल्तान कोई ना रहिणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। मट्ठ शिवदुआले किसे ना बहिणा, तिलक ललाट ना कोई लगाईआ। मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर शाह हकीर अल्ला हू अन्ना हू नाअरा किसे ना लाउणा, कलमा नबी ना कोई पढ़ाईआ। हेठ मसल्ला ना किसे विछाउणा, उच्ची कूक ना कोई बांग सुणाईआ। निउँ निउँ सजदा ना किसे कराउणा, धरत धवल ना मस्तक कोई छुहाईआ। संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी संग तुड़ाउणा, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। कायनात हरि फेरा पावणा, आपणा कलमा आपे रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावणा, हरि साचा सच वरतांयदा। लक्ख चुरासी मेट मिटावणा, आप आपणा मार्ग लांयदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगावणा, दूजा दर ना कोई वखांयदा। वरन बरन डेरा ढावणा, एका सिख्या सिख समझांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका घर बहावना, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। एका शब्द सुहागी ढोला गीत हरि हरि लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथमी गांवणा, इक्क जैकारा आपे लांयदा। खेले खेल धर धर रूप जिउँ बल बावना, अछल अछल्ल फेरा पांयदा। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावना, लंका गढ़ तुड़ांयदा। खेले खेल कृष्ना कान्हा, रथ रथवाही वेस वटांयदा। गोबिन्द खण्डा इक्क चमकावणा, दिस किसे ना आंयदा। चण्ड प्रचण्ड वेख वखावणा, ब्रह्मण्डां राह तकांयदा। कलिजुग जूठा झूठा भन्न वखावणा, वेले अन्त ना कोई बचांयदा। गुरसिख चार जुग दा रुठया आप मनावणा, कलिजुग साचा वक्त सुहांयदा। साची सिख्या इक्क समझावणा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। पुरख अकाल इक्क मनावणा, दूसर सीस ना कोई झुकांयदा। बिन हरि पार ना किसे करावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार

पुरख समरथ, आदि अन्त श्री भगवानया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही खेले खेल महानया। बोध अगाधी महिमा अकथ, शब्दी सुणाए शब्द तरानया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन पाए श्री भगवानया। हउमे हँगता मन्दिर जाए ढठ्ठ, नाता तुट्टे पंज शैतानया। घर विच दिसे साचा हट्ट, चौदां लोकां पन्ध मुकानया। अमृत आत्म आपणा झट्ट, सर सरोवर इक्क सुहानया। निरगुण जोती लट लट, अट्ठे पहर डगमगानया। अनहद मारे साची सट्ट, छत्ती राग ना भेव वखानया। जन भगतां दुरमति मैल देवे कट्ट, निर्मल नीर आत्म जाम प्यानया। वसणहारा घट घट, हर घट बैठा रूप छुपानया। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरतानया। निरगुण रूप हो प्रगट, निहकलंका नाम धरानया। कलिजुग तेरा मेटे फट्ट, दूई द्वैती वेख वखानया। नाम विकाए साचे हट्ट, गुर सतिगुर हट्ट कर प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकार, जोद्धा सूरबीर बली बलवानया। जोद्धा सूरबीर हरि गोबिन्द, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा विच समांयदा। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, आपणा लेखा आप गिणांयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर सागर सिन्ध, भेव कोई ना पांयदा। सर्ब जीआं दाता बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया झोली जगत भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, आपे दाता गुणी गहिंद, आपे मुख भुवांयदा। गुणी गहिंद सतिगुर मीत, हरि सज्जण मीत मुरारड़ा। आदि जुगादी जाणे आपणी रीत, सर्ब जीआं दा साझां यारड़ा। जुग जुग सुणाए आपणा गीत, करे खेल अगम्म अपारड़ा। पतित पापी करे पुनीत, लेखा जाणे धुर दरबारड़ा। हरिजन काया करे ठंडी सीत, अमृत देवे सच प्यालड़ा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँचां नीचां आप समालड़ा। आपे वसे धाम अनडीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चले आपणी चालड़ा। चाल निराली जोत अकाली, जुग जुग आप चलाईआ। आपे बणे जगत दलाली, आपे वणज वखाईआ। आपणे हथ्थां रक्खे खाली, नाम भण्डारा झोली पाईआ। लक्ख चुरासी साचा माली, नौ खण्डां बूटा आपे लाईआ। आपे देवणहारा पाणी, आपे रिज़क सबाईआ। आपे घर घर अन्दर वजाए ताली, शब्द अनादि धुन सुणाईआ। आपे होया दो जहानां वाली, लोकमात आपे फेरा पाईआ। आपे मेटे कलिजुग रैण अन्धेरी काली, चारों कुन्ट धूंआँधार छाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाली, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचे तारनहारा, एका एक एकँकारया। एका बख्शे चरन प्यारा, देवे नाम अधारया। आत्म सेजा खेल अपारा, सच सिँघासण आसण ला ल्या। नारी कन्ता मीत मुरारा, कन्त कन्तूहला

वेस वटा ल्या। शब्द स्वामी दए हुलारा, निहकामी वेख वखा रिहा। नगर ग्रामी वसे वसणहारा, आप आपणा धाम सुहा ल्या। हड्ड मास नाड़ी चामी कर प्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त डेरा आपे ला ल्या। मन मति बुध दए आधारा, निरगुण आपणा अंग कटा ल्या। आपे अन्दर लाए सच अखाड़ा, पंच विकारा आप जगा ल्या। आपे अग्नी तत्त बहत्तर नाड़ा, रत्त रत्ती आप सुका ल्या। आपे तोड़णहारा गढ़ हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह आप हल्का ल्या। आपे बख्शे चरन प्यारा, साचा मार्ग आपे ला ल्या। आपे करे अन्ध अँध्यारा, आपणा मुख छुपा ल्या। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, गुर गोबिन्द वेख वखा रिहा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, तन गात्रे आप लटका रिहा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, हरि जू हरि मन्दिर फेरा पा ल्या। भरमे भुल्ला भरम संसारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ा ल्या। प्रगट होया नर निरँकारा, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। सम्मत सोलां दए हुलारा, वीह सौ बिक्रमी नाल रला ल्या। राज राजानां करे ख़बरदारा, सोया कोई रहिण ना पा ल्या। साधां सन्तां मारे मारा, शब्द डंका हथ्थ उठा ल्या। जूठे झूठे करे ख्वारा, मन मती मोह चुका ल्या। गुरमती बोल जैकारा, सतिगुर नानक मेल मिला ल्या। गुर गोबिन्द वेखे जगत अखाड़ा, एका डण्डा आप वजा ल्या। वज्जे नाम रणजीत नगारा, लोआं पुरीआं आप जगा ल्या। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, कलिजुग वेला अन्तिम आ गया। शिव शंकर दिवस रैण करे पुकारा, हथ्थ त्रशूल ना कोई उठा ल्या। करोड़ तेतीसा हाहाकारा, सुरपति राजा इन्द सच सिँघासण ना कोई विछा ल्या। प्रगट होया अबिनाशी निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटा ल्या। दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं गगन पतालां ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज आप वखा ल्या। कलिजुग कूड़ी काया वढ्ढे कंडां, सीस धड़ ना कोई रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आ रिहा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेऐब परवरदिगारया। शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात वेख वखा रिहा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ा ल्या। मनमुख पाए अन्धे राह, माया ममता मोह वधा ल्या। काम क्रोध नाल रला, कामी कामी वेस वटा ल्या। जूठी झूठी सेजा डेरा ला, जूठ रंग रंगा ल्या। आसा तृष्ना पकड़े बांह, हउमे रोग वधा ल्या। बिन हरि नामे हँस बणे काँ, कागी विष्टा मुख धरा ल्या। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे सिर ठंडी छाँ, भव सागर ना कोई तरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग आपणा वेस वटा ल्या। वेस वटाया पुरख करतार, निरगुण जोत जोत जगाईआ। प्रगट होया विच संसार, मात पित ना कोई भैण भाईआ। पुत्तर धी ना कोई प्यार, जगत कुटम्ब ना कोई वखाईआ। पंज तत्त ना कोई आकार,

त्रैगुण बंधन ना कोई वखाईआ। पंझी प्रकृति ना कोई अधार, मन मति बुध्ध ना कोई पढ़ाईआ। जगत विद्या ना कोई उज्यार, ना कोई इष्ट मनाईआ। पुरख अकाल एकँकार, मूर्त अकाल आप उपाईआ। दीना नाथा दर्द दुःख भय भञ्जण हरि सन्तां करे प्यार, सांतक सति सति वरताईआ। नेत्र अंजन नाम अपार, लोचण नैण आप खुल्हाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख थक्की सर्ब लोकाईआ। वेद कतेबां वस्सया बाहर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी खेल अपार, जुग जुग आपणा आप कराईआ। कादर करता हो त्यार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार, एका सम्बल नाउँ धराईआ। गुर गोबिन्द होया ख़बरदार, शब्दी डंक वजाईआ। उठया जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप उपजाईआ। नौ नौ करे खुआर, सत सत दए हिलाईआ। दहि दिशा दर पावणहारा सार, कुन्ट चार वेख वखाईआ। अनभव प्रकाश कर उज्यार, तत्व तत्त तत्त समाईआ। ब्रह्म मति दए अधार, कमलापत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्तिम वेला वेखे आप ख़ुदाईआ। ख़लक ख़ुदाई ख़ालक हरि, हरी हरि वेस वटाया। नूरी अल्ला जोत धर, बिस्मिल रूप समाया। आपणा कलमा आपे पढ़, तीस बतीस हदीस सुणाया। आपे लावणहारा जड़्ह, आपे लए उखड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा नाम धराया। नाम धराया नर निरँकार, निरगुण रूप अपारया। पावे सार सर्ब संसार, आप आपणी किरपा धारया। शब्द ढोला सच जैकार, एका नाअरा ला ल्या। सतिजुग लावे सच दरबार, साचा समा आप सुहा ल्या। बीस बीसा ख़बरदार, जगत जगदीशा वेख वखा रिहा। इक्क इकीसा बन्न्हे धार, काला सूसा मेट मिटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा खण्डा आप चमका रिहा। साचा खण्डा शब्द कटार, गुर सतिगुर हथ्थ उठांयदा। रसना चिल्ला तीर कमान, नाम निशाना एका लांयदा। प्रगट होया वाली दो जहान, लोक परलोक वेख वखांयदा। सच सलोक सच निशान, साचा हुक्म जणांयदा। कलिजुग तोड़े माण अभिमान, नाम निधान झोली पांयदा। गुरमुखां अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। एका राग सुणाए कान, धुन आत्मक आप अल्हांयदा। लक्ख चुरासी जाणी जाण, जन जननी वेख वखांयदा। भगत भगवन्त कर पछाण, मन का मणका आप फिरांयदा। देवणहारा जीआ दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। साचा मेला गोपी काहन, सच दुआरे आप मिलांयदा। मेल मिलावा सीता राम, राम सीता संग जुड़ांयदा। साचा दर सोहे भगवान, नानक निरगुण रसना गांयदा। गोबिन्द निउँ निउँ करे प्रनाम, पुरख अकाल इक्क मनांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे अन्धेरी शाम, सतिगुर साचा चन्द चढ़ांयदा। साचा नगर खेड़ा वसे ग्राम, जिस दर दुआरे

चरन छुहांयदा। हरि हरि दरस गुरमुख विरले पाण, मनमुख जीआं दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आपणे घर, घर आपणा आप सुहांयदा।

✪ ३ अस्सू २०१६ बिक्रमी महाराजा रणबीर सिँघ दे सपुत्र सतिबीर सिँघ दे नाल बचन मनी सिँघ दी लिख्त वास्ते होए संगरूर मुबारक कोठी ✪

पुरख अकाल सर्ब जीआं दाता, एका एकँकारया। जुग जुग खेले खेल तमाशा, लोकमात लए अवतारया। सन्तां भगतां मेटे अन्धेरी राता, साचा नाम चन्द चढ़ा रिहा। आप चलाए आपणी गाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। हरिजन साचा शाह संगरूर, आपणी सरन लगाईआ। सन्त मनी सिँघ आसा मनसा पूर, आत्म लहिणा दए चुकाईआ। बाल बाले बख्शे चरन धूढ़, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। दरस वखाए हाज़र हज़ूर, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी आसा मनसा पूर, दर आवे जावे फेरा पाईआ। जोती जगे नूरो नूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग मेला सहिज सुभाईआ। हरि हरि लिख्या साचा लेख, सन्त मनी सिँघ दए गवाहीआ। अन्तिम लेखा जाणे दस दस्मेस, गुर गोबिन्द वड्डी वड्याईआ। नानक आपणे नेत्र लए पेख, नाम सति मन्त्र जपाईआ। जोती जामा धर धर भेस, घर साचा वेख वखाईआ। लेखा लिख्या बाल वरेस, बिरध बुढापा ना कोए जणाईआ। सदा सखाई दए अदेस, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चिन्ता सुख जगत सोग हरख दए मिटाईआ। शाह जींद राणा संगरूर, राज महल्ल सहिज सुखदाया। अग्गे वेला नेड़े पिछा रिहा दूर, पुरख अबिनाशी मेल मिलाया। पन्दरां कत्तक हाज़र हज़ूर, मस्तूआणा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस जन्म लेखे लाया। मानस जन्म वड अनमुल्ला, लक्ख चुरासी विच रखाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना भुल्ला, गुरमुख साचे लए तराईआ। एथे ओथे दो जहानी पावे मुला, सन्त मनी सिँघ लेख लिखाईआ। वड वड्याई साची कुला, कुलवन्त हरि वेख वखाईआ। जगत दुआरा रहे खुल्हा, पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझाईआ। बाल निधान शाह शाहाना, शहिनशाह समझांयदा। लेखा लिख्या सन्त मनी सिँघ इक्क महाना, घर तेरे बन्द करांयदा। खोल्ह किवाड़ वेख दुकाना, दर साचे आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी लिख्त वाक भविख्त राज राजाना हथ्थ रखांयदा। राज राजाना बंधी बंध, शाह सुल्तान वड्याईआ। सन्त मनी सिँघ गाया बत्ती दन्द, पारब्रह्म वज्जी वधाईआ। सम्मत सोलां वीह सौ बिक्रमी

दूई द्वैती ढाहे कंध, शाह पटियाल नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण फंदी फंद कटाईआ। लक्ख चुरासी तुटे फंद, आवण जावण गेड़ कटाया। पूत सपूते उपजे परमानंद, नेत्र नैणां दर्शन पाया। सन्त दुलारे लिख्या छन्द, सच सुहेला मंगल गाया। आपे तोड़े लग्गा जंद, कुंजी आपणे हथ्थ रखाया। खुशी कराए बन्द बन्द, भैण भाई साक सज्जण सैण सगला परिवार तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अस्सू तिन्न साची रुत्त सुहाया। साचा लिख्या लेख वखावणा, साल बताली बन्द रखाईआ। घर दर भेव घर खुल्हावणा, घर घर विच वज्जे वधाईआ। साचा सगन इक्क मनावणा, सतिगुर पूरा मिले नर नरायण, निहकलंक वज्जे सच वधाईआ। पन्दरां कत्तक शब्द लेख घलावणा, भरम भुलेखा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंस सरबंस बाल बिरध जवान धीरज मति सति सन्तोख देवे वर, साचे घर घर साचा इक्क सुहाईआ।

✪ ४ अस्सू २०१६ बिक्रमी उच्ची बस्ती निरँजण सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✪

आदि निरँजण हरि भगवान, इक्क इकल्ला एकँकारया। आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग लए मात अवतारया। शब्द सरूपी सच निशान, दो जहानां आप झुला ल्या। लक्ख चुरासी देवणहारा जीआं दान, एका मन्त्र नाम दृढ़ा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल खिला रिहा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर ख़ुदाईआ। राम राम जोत उज्यारा, वेस अवेसा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता बेपरवाहीआ। वड दाता हरि बेपरवाह, बेऐब परवरदिगारया। जोती नूर रिहा डगमगा, निरगुण नूरो नूर समा ल्या। सचखण्ड दुआरे डेरा ला, आप आपणा भेव खुल्हा रिहा। सच सिँघासण आसण ला, आप आपणा रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर आकार, निरगुण मेले आपणी धार, ना कोई दूसर संग रला ल्या। इक्क इकल्ला कर पसारा, आप आपणा खेल खिला रिहा। थिर घर वसे सच दुआरा, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। परम पुरख प्रभ दीन दयाला, दर घर साचे सोभा पाईआ। इक्क वखाए धर्म सच्ची धर्मसाला, दर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे साचे घर, घर साचा

आप उपजाईआ। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक उपजांयदा। जोत जगे आदि निरँजणा, आप आपणा रूप डगमगांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, एका एकँकारा नाउँ धरांयदा। आपे आपणा बणे साचा साक सैण सज्जणा, मात पित भाई भैण ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाधी शब्द अलांयदा। शब्द अनादी धुन्कारा, हरि हरि आप उपाईआ। आपे सुणे सुणणेहारा, आपे रिहा गाईआ। आपे खेले खेल अपर अपारा, भेव अभेदा भेव ना राईआ। आपे मण्डल मण्डप पावे रासा बण सतारा, रवि ससि आप चमकाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारा, करोड़ तेतीसा संग रलाईआ। आपे सुरपति राजा इन्द दए हुलारा, आपणी दया कमाईआ। आपे त्रैगुण माया कर त्यारा, त्रै त्रै वेख वखाईआ। आपे पंचम मीता हो उज्यारा, पंचम संग निभाईआ। लक्ख चुरासी खेल न्यारा, हरि करता आप कराईआ। नौ दर वेखे जगत दुआरा, दर घर साचे सोभा पाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, घर घर विच आप सुहाईआ। आपे करे बन्द किवाड़ा, बज़र कपाटी सिला टिकाईआ। जोत निरँजण कर उज्यारा, रूप अनूप आप वटाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, घर साचे राग अलाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, घर बैठा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी हरि हरि खेल, आपणा आप करांयदा। सुरती शब्दी हरिजन मेल, सन्त सहेले आप उठांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेल, गुर चेला नाउँ धरांयदा। आपे वसे रंग नवेल, आपे घट घट वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाए हरि निरँकारा, साची सेवक सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, निरगुण सरगुण विच टिकांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल अपारा, हरि हरि रूप वटांयदा। शब्द विचोला अपर अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा करे प्यारा, तत्व तत्त विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग खेले खेल दिस किसे ना आईआ। जुग जुग खेल खेलणहारा, पारब्रह्म बेअन्तया। लोकमात लए अवतारा, हरिजन तारे साचे सन्तया। एका बख्शे नाम भण्डारा, साचा धन वड धनवन्तया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेटे हँकारा, वड दाता गुण गुणवन्तया। चरन प्रीती बख्शे सच प्यारा, दरगाह साची धाम सुहन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले घर साचे सोभावन्तया। हरिजन उपाए दुष्ट खपाए, हरि सज्जण वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार लँघाए, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अन्धेरा छाए, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। सत्तां दीपां पए दुहाए, सांतक सति ना कोई वरताईआ। साध सन्त होए हल्काए, माया ममता

मोह वधाईआ। हरि का नाम ना कोई ध्याए, ना भिच्छया झोली पाईआ। साचा मंगल ना कोई गाए, अनहद राग ना कोई अलाईआ। साचा सईआ ना कोई मेल मिलाए, झूठी नईआ रहे चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, हरि हरि वेख वखांयदा। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, साचा दर ना कोई सुहांयदा। हउमे हँगता भर भण्डार, वरन बरन वेख वखांयदा। आसा तृष्ना नार मुटयार, मनमुख जीआं नाल रलांयदा। जूठा झूठा करन प्यार, सगला संग ना कोई निभांयदा। साचा मन्त्र ना कोई जैकार, अनभव प्रकाश ना कोई रखांयदा। कमलापाती मिले ना मीत मुरार, कँवल नैण ना कोई दरसांयदा। आत्म झाती मार के वेखे ना कोई बन्द किवाड़, घर साचा ना कोई खुल्ांयदा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, अठसठ तीर्थ ना कोई बुझांयदा। काया मन्दिर साचे अन्दर कोई ना देवे वाड़, दूई द्वैती पर्दा कोई ना लांहयदा। कलिजुग वेखे झूठी धाड़, पंच विकारा संग रलांयदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे इक्क अखाड़, सत्तां दीपां धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ा रंग, हरि हरि वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी होई नंग, नाम पर्दा ना कोई पांयदा। झूठी भिच्छया रहे मंग, साची मंग ना कोई मंगांयदा। मानस जन्म होया भंग, साचा लेखा ना कोई जणांयदा। ना कोई अंगीकार करे अंग, अंगी अंग ना कोई लगांयदा। जगत सतार वजाया मृदंग, नाम मृदंगा ना कोई उठांयदा। जगत दरवाज़ा रहे लँघ, आपणा मन्दिर ना वेख वखांयदा। झूठी सुत्ता सेज खाट पलँघ, काया अन्तर आत्म सेज ना कोई हंढांयदा। सतिगुर पूरा ना वसे किसे संग, नेत्र नैण ना दरस दिखांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गा जंग, दिवस रैण आप लड़ांयदा। कलिजुग नटूआ स्वांगी स्वांग करे मलँग, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा खेल खिलांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। राम नाम ना किसे प्यारा, रसना जिह्वा ना कोई गाईआ। मिल्या मेल ना कृष्न मुरारा, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण दिस ना आईआ। नानक गोबिन्द ना पाए दरस अगम्म अपारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। धरत मात रोवे मारे हाह दा नाअरा, नेत्र आपणे नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सारा, धरत धवल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी ल्ए अंगड़ाईआ। कलिजुग जोद्धा सूरबीर बलवान, अन्तिम आपणा रंग चढ़ांयदा। नाल रलाए पंज शैतान, सगला संग वखांयदा। कीमत पाए बेईमान, साबत ईमान ना कोई धरांयदा। जूठा झूठा नाअरा लाए कान, साची सिख्या ना कोई वखांयदा। आपणा आपणा गीत सारे गाण, हरि का रूप दिस किसे ना आंयदा। हरि जू बैठा काया अन्दर

सच मकान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। चौदां हट्टां वेख मकान, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव इक्क ध्यान, एक रूप दरसांयदा। करोड़ तेतीसा इक्क ज्ञान, एका नाम जणांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जोती जामा श्री भगवान, पंज तत्त ना कोई जणांयदा। प्रगट होवे वाली दो जहान, दो जहानां खेल खिलांयदा। नाम खण्डा शब्द तीर कमान, साचे चिल्ले आप चढ़ांयदा। अठ्ठ दस वेखे मार ध्यान, नौ नौ फोल फुलांयदा। भेव खुल्हाए राज राजान, शाह सुल्तान आप हिलांयदा। जोद्धा सूरबीर बलवान, बल धारी बल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक हरि निरँकारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका रूप समाईआ। जुग जुग खेले खेल अपारा, निरगुण दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका नूर निहकलंक, हरि शब्दी डंक वजांयदा। आप उठाए राउ रंक, राज राजाना आप जगांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, वार अनक खेल खिलांयदा। हरिजन उधारे जिउँ जनक, जन जननी लेखे लांयदा। आप भवाए मन का मणक, मन मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ धांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। कूड़ी क्रिया कूड़ पसारा, कूड़ कूड़ा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म प्रभ लए अवतारा, आप आपणी कल वरताईआ। सम्मत सम्मती मारे मारा, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी खेल न्यारा, नर निरँकारा आप कराईआ। सत सतारां हो उज्यारा, जीवां जन्तां साधां सन्तां देवे बूझ बुझाईआ। अठ्ठ अठारां आपणी धारा, आपे दए वहाईआ। इक्क उनीसा हरि जगदीशा, शाहो शबीसा एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्तिम गहिणा तेरे तन पहनाईआ। कलिजुग तेरा अन्त शृंगार, हरि साचे आप करावणा। जूठ झूठ कर त्यार, तेरे नाल रलावणा। माया ममता भर भण्डार, तेरा दर सुहावणा। हउमे हँगता कर त्यार, साचा जोड़ जुड़ावणा। नाल रलाए नार विभचार, झूठा नाता तोड़ तुड़ावणा। वीह सौ वीह बिक्रमी एका धक्का देवे मार, नाम खण्डा इक्क चमकावणा। गुरमुख सन्त सुहेले हरिजन साचे लए उभार, आप आपणी बूझ बुझावणा। घर घर मन्दिर दीपक जोती कर उज्यार, माणक मोती आप सुहावणा। सुरती सुरती लए उठाल, गुरमुख सोया कोई रहिण ना पावणा। एका गोती बणाए वाली दो जहान, वरन बरन सर्ब मिटावणा। नाम सोटी हथ्थ उठाए श्री भगवान, कोटी कोटि जीव तरावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकावणा। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ।

सतिजुग सोया आप उठाउणा, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। साधां सन्तां मेल मिलाउणा, घर साचे सोभा पाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, सो पुरख निरँजण आप जपाईआ। हँ ब्रह्म आप समझाउणा, ओअँ रूप आप हो जाईआ। सोहँ साचा शब्द चलाउणा, चार वरन करे कुड़माईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगाउणा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, माणक मोती चोग चुगाईआ। निरगुण जोती इक्क जगाउणा, दीवा बाती ना कोई टिकाईआ। वासना खोटी कढु वखाउणा, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी साचा मार्ग एका लाउणा, दूजा दर ना कोई जणाईआ। इष्ट गुरदेव इक्क मनाउणा, रूप अनूप सति सरूप आप दरसाईआ। शाह भूप सुल्तान इक्क बणाउणा, सच सिक्दार इक्क हो जाईआ। साचा ताज सीस टिकाउणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा रिहा चुकाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा मूल, हरि पूर्ब आप चुकांयदा। सतिजुग साचे बरख़े फूल, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। सच सिँघासण आप बराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। एकँकारा निरँकारा निरगुण रूप ना जाए भूल, आदि जुगादी वेख वखांयदा। वेखणहारा शंकर त्रशूल, त्रै त्रै मुख भवांयदा। विष्नूं वसणहारा कोल, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। ब्रह्मा तोले साचा तोल, त्रैगुण एका कंडे पांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लोआं पुरीआं पर्दे रिहा फोल, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। शब्द जैकारा एका एकँकारा साचा नाअरा एका बोल, एका हुक्म सुणांयदा। जीव जन्त रहे अनभोल, माया ममता पर्दा कोई ना लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी सदा अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलांयदा। सृष्ट सबाई जगत हुलारा, हरि साचा आप दवाईआ। किसे ना दिसे पार किनारा, मँझधार बैठी सर्ब लोकाईआ। भरमे भुल्ला भरम गंवारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। एका विसरया नाम हरि करतारा, बिन हरि नामे ना कोई सहाईआ। चारों कुन्ट धूंआँधारा, धूंआँधार सर्ब वखाईआ। नेत्र रोवन रवि ससि सूरज चन्न सतारा, नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग अन्तिम होए ख्वारा, संग मुहम्मद चार यार रहे कुरलाईआ। ईसा मूसा काला सूसा रिहा उतारा, गल अल्फ अल्फी एका पाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मुकामे हक्क सांझा यारा, नूर नुरानी डगमगाईआ। अल्ला राणी नैण उग्घाड़ा, नेत्र लोचण आप खुल्राईआ। चौधवीं सदी दए हुलारा, चौदां तबकां फेरा पाईआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर ना कोई दए सहारा, मुलां शेख़ मुसायक कुतब गौंस ना कोई सहाईआ । अञ्जील कुरान करे पुकारा, तीस बतीस एका गाईआ। कलिजुग कूके आपणी अन्तिम वारा, उठ उठ वेखे दहि दिशा फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप

वरताईआ। आपणी कल हरि वरतंत, भेद अभेद अभेदिआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, अछल अछल्ल अछेदिआ। पावे सार साचे सन्त, वेखणहारा चारे वेदिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा लेखया। लेखा लिखणहार गोपाल, जुग जुग वेख वखांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, आपे मंग मंगांयदा। आपे कलिजुग अन्तिम बणे दलाल, गुर गोबिन्द संग रखांयदा। वेद व्यासा वजाए ताल, ताल तलवाड़ा हथ्थ रखांयदा। सेवा लाए काल महांकाल, काल नगारा इक्क वजांयदा। धर्म राए ल्ए उठाल, साचा साचा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वक्त सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम वक्त सुहञ्जणा, हरि साचे जोत जगाईआ। जन भगतां नेत्र नाम पाए अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजणा, दुरमति मैल गंवाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, जूठे झूठे मुख छुपाईआ। गुरमुख साचे मीत मुरार सज्जणा, हरि साचा राह तकाईआ। शाह सुल्तान राज राजान आपणा तजना, महल्ल अटल ना कोई डेरा लाईआ। सृष्ट सबाई उठ उठ भज्जणा, भव सागर कोई ना पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम

१०५६ वर, वेखे सर्ब लोकाईआ। जगत लोकाई अन्तिम वेखे, निरगुण जोत नूर नुरानया। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेखे, एका १०५६

०८ एक श्री भगवानया। आपे दाता श्री दस दस्मेसे, आप आपणा रूप वटानया। आपे वेखे मुच्छ दाढ़ी केसे, मूंड मुंडाए आपणे ०८

गले लगानया। आपणे नेत्र आपे पेखे, दोए लोचण ना कोई जहानया। दो जहानी नर नरेशे, नर नरायण इक्क अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी बन्ने गानया। लक्ख चुरासी गाना बन्ने डोर, कलिजुग कूड़ा तन्दन पाईआ। सगन मनायण पंज चोर, जूठा झूठा मंगल गाईआ। हउमे हँगता चढ़या घोड़, माया ममता वाग गुंदाईआ। आसा तृष्ना लग्गी औड़, दिवस रैण प्यास लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा संग निभाईआ। कलिजुग तेरा संग निभाउणा, चार वरन सुणांयदा। जूठा झूठा मेट मिटाउणा, भेख पखण्डी दिस ना आंयदा। सच सुच्च मार्ग लाउणा, ऊँचां नीचां एह समझांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वेश एका धाम बहांयदा। चार वरन एका नाम जपाउणा, पुरख पुरखोतम इक्क मनांयदा। पुरख अकाल नज़री आउणा, अजूनी रहित रूप वटांयदा। सतिगुर साचा ताल वजाउणा, गुरमुख साचा राग अलांयदा। मंगला चार सर्ब जन गाउणा, अनहद साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, खेलणहारा दिस ना आंयदा। खेलणहार पुरख समरथ, हरि साचा

शाह सुल्तानया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, निरगुण जोत श्री भगवानया। कलिजुग अन्तिम देवे मथ्था, नाम मधाना एका पानया। सतिजुग महिमा चलाए अकथ, कथनी कथे ना कोई गाणया। जूठा बुरज जाए ढठ्ठ, सच सुच्च करे प्रधानया। गुरमुखां मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, ध्रू प्रहलाद जिउँ बाल अञ्याणया। सच दुआरे इक्क इक्ठ्ठ, रंग महल्ल इक्क वखानया। पावे सार मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर मठ्ठ, भेव अभेदा भेव खुलान्निआ। वेखणहारा तीर्थ अठसठ, सर सरोवर फोल फुलानया। लक्ख चुरासी घट घट अन्दर अमृत रिहा झट्ट, निझर झिरना आप झिरानया। दीपक जोती लट लट, घर घर विच आप सुहानया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका पट्टी नाम बंधानया। साचा वणजारा खोल्ले हट्ट, एका वणज नाम दो जहानया। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, कलिजुग भुल्ले जीव निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटे पंज शैतानया। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाउणा, तेरी अन्त करे कुड़माईआ। तेरा भार तेरे सिर लटकाउणा, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। चार यार ना संग निभाउणा, मुहम्मद कूके दए दुहाईआ। अल्ला राणी मुख शरमाउणा, नेत्र नीर रही वहाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलाउणा, खेले खेल थाउँ थाँईंआ। मक्का काअबा वेख वखाउणा, दीन असलामां फोल फुलाईआ। हक्क जनाबा नाउँ धराउणा, शाह नवाबा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अथाह, बेपरवाह भेव कोई ना पाईआ। हरि का भेव किसे ना पावणा, आदि जुगादि समाया। वेद कतेब सभ ने गांवणा, ब्रह्मा विष्न शिव रहे ध्याया। साधां सन्तां राह तकावणा, भगत भगवन्त रहे सलाहया। गुरमुख सज्जण राह तकावणा, नेत्र नैण रहे तकाया। पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणा फेरा पावणा, जुग जुग आपणा वेस वटाया। निहकलंका नाम रखावणा, दिस किसे ना आया। साढे तिन्न हथ्थ सम्बल नगरी आसण लावणा, शब्द जैकारा इक्क बुलाया। उच्च महल्ल अटल इक्क सुहावणा, सच सुहञ्जणा धाम वेख वखाया। निरगुण सरगुण मेल मिलावणा, शब्द विचोला इक्क बणाया। साचा ढोला साचे माही एका गावणा, धुर दरगाहों लै के आया। लोआं पुरीआं आप सुणावणा, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, एका एक करांयदा। थिर घर वसे सच महल्ला, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। गुरमुखां अन्दर सुरती शब्दी आपे रला, घर साचे मेल मिलांयदा। आपणे प्रकाश आपणे दीपक आपे बला, घृत बाती ना कोई टिकांयदा। आपे जाणे आपणा राह सुखल्ला, जुग जुग आपणा मार्ग लांयदा। जीव जन्त भुलाए कर कर वल छला, बल बावन भेख धरांयदा। आपे नूर इलाही अव्वल अल्ला, अल्ला हू हू आप अख्वांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी रास पुरख अबिनाश, तेरी झोली आपे पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, बिन हरिभगत दिस किसे ना आंयदा।

✪ ५ अस्सू २०१६ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे घर पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

एकँकारा हरि भगवान, अकल कला अख्वाईआ। जोती नूर नूर महान, निरगुण रूप डगमगाईआ। सति पुरख सति सुल्तान, शाहो भूप वड वड्याईआ। इक्क इकल्ला राज राजान, एकँकारा आप अख्वाईआ। एका वस्सया सच मकान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। शब्द सिँघासण इक्क महान, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमान, ना कोई दूसर संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण आप अख्वाईआ। आदि निरँजण हरि भगवाना, एका रंग समांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग वेस वटांयदा। शाहो भूप नर हरि सुल्ताना, निरवैर नाउँ धरांयदा। मूर्त अकाल भेव ना आना, भेव अभेद छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनभव प्रकाश करांयदा। अनभव प्रकाश हरि भगवन्त, भेव अभेद अभेदिआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, अछल अछल्ल अछेदिआ। पावे सार लक्ख चुरासी जीव जन्त, लेखा जाणे चारे वेदिआ। आपे जाणे आपणा मंत, आपे लिखे लेख कतेब्या। आपे दर घर साचे सोभावन्त, आपणे नेत्र आपे पेख्या। आपे दाता दानी हरि गुणवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल जुगा जुगन्तया। आपे दाता हरि निरँकार, एका रंग समांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, एका नाअरा लांयदा। आपे सच घर करे आकार, निरगुण आपणी जोत जगांयदा। आपे वस्सया अन्ध अँध्यार, धूंआँधार आप समांयदा। आपे लोआं पुरीआं महल्ल लए उसार, चौदां लोकां मड्ड तपांयदा। आपे विष्नूं भरे हरि भण्डार, आपे ब्रह्मा पारब्रह्म उपजांयदा। आपे शंकर लए सँघार, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आपे बाशक सेजा सुत्ता पैर पसार, सांगोपांग हंढांयदा। आपे मुख सहँसर गाए वारो वार, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। आपे करोड़ तेतीसा दए आधार, आपे सुरपति सेव करांयदा। आपे गण गंधर्ब बोल जैकार, गीत अनादी आप सुणांयदा। आपे त्रैगुण माया बन्ने धार, आपे पंज तत्त मेल मिलांयदा। आपे मन मति बुध कर शृंगार, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ांयदा। आपे घर विच घर आपणा रक्ख, घर साचा इक्क सुहांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, आपे मुख खुल्हांयदा। आपे वेखे काया मन्दिर अन्दर डूँघी गार, महल्ल अटल आप सुहांयदा। आपे

दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। आपे अमृत आत्म सर सरोवर भरया ताल, निझर झिरना आप झिरांयदा। आपे आत्म सेजा बैठ करे प्रितपाल, दिवस रैण वेख वखांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, आपे सरगुण निरगुण डेरा लांयदा। आपे वस्त नाम धन माल, सच ख़ज़ीना आप हो जांयदा। आपे लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल, जगत जंजाला वेख वखांयदा। आपे जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना पांयदा। आपे गगन मण्डल वेखे साचा थाल, अनहद सेवा साची लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। अबिनाशी पुरख पुरख सुल्ताना, वड वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला वाली दो जहाना, जुग करता नाउँ रखाईआ। जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। सचखण्ड मन्दिर इक्क सुहाना, चार दीवार ना कोई बणाईआ। छप्पर छन्न ना कोई पाना, ना बाढी संग रखाईआ। दीवा बाती कमलापाती इक्क जगाणा, आप आपणी कर रुशनाईआ। गाए धुन सच तराना, आप आपणा शब्द अलाईआ। सच सिंघासण बैठ मर्दाना, मेहरवान वड वड्याईआ। चलाए हुक्म धुर फ़रमाना, दरगाह साची सोभा पाईआ। ना कोई दर दिसे दरबाना, ना कोई सीस झुकाईआ। रवि ससि ना कोई निशाना, मण्डल मण्डप ना कोई वखाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, थिर घर वासी पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, एका एक अख्वांयदा। एका वसे सच मुनार, सच महल्ला आप वसांयदा। आपे नारी कन्त भतार, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे शब्द सुत्त बण दुलार, आप आपणी गोद सुहांयदा। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, निरगुण निरगुण सीस झुकांयदा। आपे होया ख़बरदार, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे लक्ख चुरासी कर त्यार, एका आपणी वंड वंडांयदा। आपे जेरज अंड भरे भण्डार, उत्भुज सेत्ज संग मिलांयदा। आपे जल बिम्ब दए अधार, धरत धवल सुहांयदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। आपे जल थल महीअल पसर पसार, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे साचा सईआ बण भतार, आप आपणा वेस वटांयदा। आपे पंज तत्त करे प्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपे शब्द अनादी अनहद धार, आप आपणा राग सुणांयदा। आपे पंचम सखीआं मीत मुरार, घर घर बहि बहि मंगल गांयदा। आपे रंग रलीआं माणे गुप्त ज़ाहर, दिस किसे ना आंयदा। आपे सुरत सवाणी करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। मरे ना जम्मे विच संसार, अजूनी रहित आप अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर बन्ने धार, जुग करता वेस वटांयदा। आपे गुर पीर अवतार, एका आपणा नाउँ रखांयदा। आपे जोती जोबन दए हुलार, आपे शब्दी रंग चढ़ांयदा। आपे वेखे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता करनेहारा, आदि जुगादी लै अवतारा, एका गुर अख्वांयदा।

एका गुर शाहो भूप, सतिगुर नाउँ धरांयदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डेरा लांयदा। आपणी महिमा जाणे अनूप, भेव कोई ना पांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, घट घट आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ बरसांयदा। अमृत मेघ ठंडी ठार, हरि सतिगुर नाउँ रखाईआ। अमृत मेघ ठंडी ठार, हरि सतिगुर हथ्थ उठाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, जन भगतां लए तराईआ। हरिजन बख्शे चरन प्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुखां तोड़े गढ़ हँकार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। चण्ड प्रचण्ड तिक्खी धार, हरि साचा इक्क रखाईआ। लक्ख चुरासी आपे करे ख्वार, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे दुष्टां दए सँघार, बलधारी वड वड्याईआ। पाए वंड हरि निरँकार, वंडणहारा बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। भगत भगवन्त पाए सार, भगतन भगती लेखे लाईआ। साधां सन्तां करे प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। गुरमुख साचे लाए पार, नाम बेड़े आप चढ़ाईआ। गुरमुखां देवे इक्क अधार, आत्म अन्तर ब्रह्म जणाईआ। साचा मन्त्र इक्क जैकार, गुर शब्दी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण रूप पुरख अगम्म, बेअन्त बेअन्त बेअन्तया। सरगुण अन्दर पए जम्म, शब्दी ढोल मृदंग वजन्तया। आपे जाणे आपणा कम्म,
१०६३
आप आपणा खेल खिलन्तया। सतिजुग बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठन्तया। जगत वड्याई धन्न धन्न, रसना जिह्वा आप सुहन्तया। हँकारी भाण्डा देवे भन्न, जूठ झूठ मेट मिटन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप वटन्तया। सतिजुग वेस हरि वटाया, हरि सज्जण वड्ड वड्याईआ। शब्द ब्रह्मादी इक्क चलाया, एका गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वार अठारां वेस वटाईआ। सतिजुग होया पार किनार, त्रेता लए अंगड़ाईआ। खेले खेल खेलणहार, राम राम रूप वटाईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकार, लंका गढ़ तुड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, आपणे गले लगाईआ। अन्तिम बेड़ा करया पार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। द्वापर बन्न्हे आपे धार, आपणी रीत आप चलाईआ। कान्हा कृष्ना हो त्यार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। एका मन्त्र इक्क ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ाईआ। एका लेखा लिखे लेख लिखार, वेद व्यासा बूझ बुझाईआ। कलिजुग खेले खेल विच संसार, ख़ालक ख़लक आप अख्वाईआ। प्रगट होवे बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पावे सार संग मुहम्मद चार यार, अद्धविचकारे मेल मिलाईआ। ईसा मूसा करया ख़बरदार, काला सूसा तन छुहाईआ। अञ्जीलां कुरानां भर भण्डार, तीस बतीसा गया सुणाईआ। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़, एका अक्ख खुल्हाईआ। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, आपणी बूझ बुझाईआ। अग्गे करया बन्द दुआर, मुहम्मद

भेव ना राईआ। अल्ला राणी कर श्रृंगार, नेत्र कजला अपणा पाईआ। पुरख अबिनाशी इच्छया पाए भिच्छया भरे भण्डार, लोकमात वड्डी वड्याईआ। साची सिख्या धुर करतार, कलमी कलमा आप सुणाईआ। कायनात करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे वर बेपरवाहीआ। मुहम्मद वर घर साचा पाया, घर साचा वेख वखांयदा। कलिजुग अग्गे उठ उठ आया, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। चारों कुन्ट डंक वजाया, हरि का नाम ना कोई भुलांयदा। पुरख अबिनाशी अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाया, रो आपणा हाल सुणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग उठ बाल निधान, हरि साचा आप समझाईआ। तेरा संग निभाए पंज शैतान, पंचम करे कुड़माईआ। आसा तृष्ना नाल रकान, झूठी नार नाल रलाईआ। माया ममता हउमे हँगता गीत सारे गाण, हरि का रूप दिस ना आईआ। मुहम्मद उठे नौजवान, तेरा संग निभाईआ। उम्मत उम्मती कर प्रधान, आप आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, दोहां विचोला आप अख्वाईआ। दोहां विचोला हरि हरि होया, भेव कोई ना पांयदा। जीव जन्त लोकमात सोया, हरि साचा खेल खिलांयदा। जूठा झूठा बीज बोया, कूड़ा फल लगांयदा। दरगाह साची मिले ना कोई ढोया, सचखण्ड ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल कर, लोकमात वेख वखांयदा। दोहां मेला जगत संसार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। साधां सन्तां ना सुणे कोई पुकार, दिवस रैण रहे कुरलाया। जीवां जन्तां ना दिसे कोई सहार, ना कोई संग निभाया। चारों कुन्ट होए खुआर, धीरज धीर ना कोई धराया। कलिजुग मारे इक्क ललकार, आपणा बल रखाया। मुहम्मद करे सच प्यार, एका कलमा रिहा पढ़ाया। धरनी मंगे बण भिखार, गल पल्लू आपणा पाया। चुक्कया ना जाए कलिजुग भार, आप आपणा हाल सुणाया। पुरख अबिनाशी तेरा ठांडा दरबार, बिन तेरे होए ना कोई सहाया। पारब्रह्म प्रभ दए प्यार, दे मति आप समझाया। तेरा करे हौला भार, मेरा तेरे नाल रखाया। नानक निरगुण हो त्यार, लोकमात वेख वखाया। नः निरगुण कर आकार, नरायण रूप वटाया। कः कर्म पाए नीसाण सर्ब संसार, आप आपणा भेव खुल्हाया। जीवां जन्तां करे कल्यान, नाम निधाना इक्क जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा वेस वटाया। नानक जोती हरि निरँकार, निरगुण रूप मात करे रुशनाईआ। सचखण्ड मेला धुर दरबार, विछड़ कदे ना जाईआ। कोटन कोटि रवि ससि करन निमस्कार, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। नानक पाया इक्क गुर करतार, हरि सतिगुर साचा माहीआ। दोहां विचोला खेल अपार, सति नाम आप धराईआ। सतिगुर पूरा लए अवतार, लोकमात वज्जी

वधाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यार, ऊँचां नीचां गले लगाईआ। मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर बन्ने एका धार, नूर इलाही इक्क वखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत तोड़े गढ़ हँकार, ठग चोर यार आप समझाईआ। हरिजन देवे सच प्यार, आत्म अन्तर एका नाम जणाईआ। काया मन्दिर दीपक देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्द वजाए साचा ताल, अनहद सेवा लाईआ। आपे बण बण फिरे कंगाल, आपणी सेवा आप कमाईआ। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल, आपणी झोली आप भराईआ। फल लगाए साचे डाल, अमृत मेवा इक्क खुवाईआ। लोकमात आया बण दलाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। नानक सतिगुर हरि बलिहार, बलिहारी हरि पाया। शब्दी शब्द बोल जैकार, एका एकँकारा आप ध्याया। आपे वरते वरतावे विच संसार, सरगुण निरगुण मेल मिलाया। जीवां जन्तां साधां सन्तां दए हुलार, शब्द हुलारा इक्क रखाया। नौ दुआरे पार किनार, बज़र कपाटी कुण्डा लाहया। डूँघी कन्दर पावे सार, सुखमन नाड़ी वेख वखाया। टेडी बंक हो उज्यार, आप आपणा दरस दिखाया। त्रबैणी नैणी खेल अपार, स्वच्छ सरूपी वेख वखाया। दस्म दुआरी कर प्यार, गुरमुख सुरती नारी लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखाया। साचा मार्ग एका ला, चार वरनां इक्क जणाईआ। राम रूप आप अख्वा,
१०६५ सीता सुरती आप प्रनाईआ। कान्हा कृष्ना वेस वटा, हरिभगत लए तराईआ। बिन हरि नामे कोई ना थाँ, दरगाह साची मिले सज़ाईआ। सर्ब जीआं दा पिता माँ, पुरख अकाल इक्क वखाईआ। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, हक्क निबेड़ा आप कराईआ। काया नगर खेड़ा वेखे जगत ग्रां, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश डेरा लाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, आप आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी गया समझा, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाईआ। कोई ना किसे पकड़े बांह, नाता तुट्टे भैण भाईआ। राज राजान ना करन न्याँ, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। खेले खेल प्रभ बेपरवाह, निहकलंक जोत कर रुशनाईआ। लक्ख चुरासी दए खपा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। साचा डंका दए वजा, जागरत जोत इक्क वखाईआ। कागों हँस दए बणा, माणक मोती नाम चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लेख समझाईआ। नानक लिख्या लेख अपार, अंगद अंग लगांयदा। अंगद भरया सच भण्डार, अमरदास वरतांयदा। अमरदास कर प्यार, रामदास नाल रलांयदा। राम दास हो उज्यार, अर्जन शब्द अलांयदा। शब्द गुर सर्ब सिक्दार, एका एक अख्वांयदा। सन्तां भगतां करे प्यार, जुग जुग मेल मिलांयदा। बोध अगाधी अगाध बोधी खेल अपार, भेव कोई ना पांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, निरगुण शब्द वंड वंडांयदा। देह जोत कर प्यार, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। हरि राए करे ख़बरदार, राम

राए मुख सुहांयदा। बाल बाला मीत मुरार, हरि कृष्ना आप तरांयदा। तेग बहादर ठांडा ठार, ठंडी ठार धार चलांयदा। सीस जगदीश आपणा वार, तीस बतीस वेख वखांयदा। बीस बीसा करया ख़बरदार, गुर गोबिन्द राह तकांयदा। सुत्त दुलारा कर प्यार, पूत सपूता नाउँ धरांयदा। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, एका रंग रंगांयदा। वस्सया चीत ना होए बाहर, एका दूजा भउ चुकांयदा। आपे खोल्ह सच दुआर, साचा मार्ग आपे लांयदा। आपे हवनी हवन खेल न्यार, पवनी पवण आप हो जांयदा। आपे सुगंधी भरे भण्डार, आपे आपणे लेखे लांयदा। आपे नाम खिच्च इक्क तलवार, चण्डी आप चमकांयदा। आपे करे तन श्रृंगार, गात्रे आप लटकांयदा। आपे होया ख़बरदार, आपणा भेव खुल्हांयदा। आपे पंचां बणया सिक्दार, साचा हुक्म सुणांयदा। खिच्ची आए वारो वार, सिर सिर भेटा इक्क वखांयदा। अमृत भरया सच भण्डार, नाम बाटे आपे पांयदा। खण्डा फिरे अद्धविचकार, साची सेव कमांयदा। मिट्ठा रस गुर संगत प्यार, घोली घोल घुमांयदा। हस्स हस्स गुरमुख करे त्यार, मथ्थो तिलक लगांयदा। नस्स नस्स वेख संसार, कलिजुग पन्ध मुकांयदा। पंचम पंचम कर त्यार, पंचम हुक्म सुणांयदा। पंचम मीता ख़बरदार, आलस निन्दरा मगरों लांहयदा। पंचम भरया नाम भण्डार, पंचम गुर समझांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर कर विचार, एका सिख्या सिख समझांयदा। आपे ढहि पए दुआर, अग्गे झोली आपणी डांहयदा। खेले खेल खेलणहार, भेव कोई ना पांयदा। आपे वस्सया अन्दर बाहर, पुरी अनन्द आप सुहांयदा। आपे सरसा करे पार, आपे गुरसिख विच टिकांयदा। आपे पूत सपूता देवे वार, आपे सूलां सथ्थर हेठ विछांयदा। आपे ढोला गाए हरि करतार, एका शुकर मनांयदा। पुरख अबिनाशी वेखणहार, भुल्ल कदे ना जांयदा। देवे वर सच्ची सरकार, साचा हुक्म सुणांयदा। तेरा कर्ज़ा वड्डा भार, पुरख अकाल आपणे सिर उठांयदा। कलिजुग अन्तिम तोड़े जगत जंजाल, तेरा बंधन बंध पांयदा। तेरा रूप वरते विच संसार, शब्दी नाउँ रखांयदा। पंज तत्त ना कोई आकार, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, तेरे हथ्थ फड़ांयदा। पुरख अबिनाशी होए नाल त्यार, दिस किसे ना आंयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, साची सेव कमांयदा। निरगुण सरगुण संगम कर विचार, आप आपणी कल वरतांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, सति सरूप अनूप दरस दखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। गोबिन्द सुणया हरि फ़रमान, घर साचे वज्जी वधाईआ। तेरा रूप श्री भगवान, मेरा रंग चढ़ाईआ। तेरा नाम गुण निधान, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। तेरा बिबाण इक्क निशान, लोआं पुरीआं आप फिराईआ। तेरा चिल्ला तीर कमान, तेरा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी पावे आण, तेरा हुक्म वड्डी वड्याईआ। पृथ्मी आकाश वेखे मार ध्यान, गगन मण्डल फेरा पाईआ। राज राजाना शाह सुल्तानां तोड़े माण अभिमाण,

हउमे गढ़ रहिण ना पाईआ। जूठा झूठा मिटे जगत निशान, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। तेरा संग श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। एकँकारा मेला विच जहान, एका ढईआ दए गवाहीआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, एका खेल खिलांयदा। गोबिन्द तेरा सच भरवासा, साचा संग निभांयदा। जोती जोत करे प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश करांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जन्म मरन ना कोई रखांयदा। कदे ना आवे हार पासा, हार जित ना कोई जणांयदा। वसणहारा काया कासा, पंज तत्त गढ़ सुहांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, चौदां लोकां वेख वखांयदा। जन भगतां होए दासी दासा, गुरमुखां राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप समझांयदा। आपणा रूप हरि समझाए, शब्दी शब्द जणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाए, कूड़ा पन्ध मुकाईआ। धर्म निशाना इक्क झुलाए, सत्त रंग आप रंगाईआ। शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाए, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। एका इष्ट देव पुरख अकाल रखाए, ना कोई दूसर सीस झुकाईआ। चार वरनां बणाए भैणां भाए, एका दूजा मेट मिटाईआ। राउ रंकां आप समझाए, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। एका तत्त सर्ब वखाए, तत्ती वा ना लग्गे राईआ।
१०६७ साचा रथ आप चलाए, रथ रथवाही सेव कमाईआ। आपणी गाथा आप सुणाए, गुणवन्ता वड वड्याईआ। गुरसिखां सगला १०६७
०८ साथ आप निभाए, सगला संग आप हो जाईआ। एका नाम मृदंग वजाए, ब्रह्मा वेता अट्ठे नैण जाग खुल्हाईआ। विष्नूं ०८
सेजा दए हिलाए, लछमी नाल रलाईआ। शंकर बाशक तशका गलों लाहे, हथ्थ त्रशूल उठाईआ। करोड़ तेतीसा रो रो दए दुहाए, कलिजुग ना कोई सहाईआ। इन्द इन्द्रासण तख़्त तजाए, ब्रह्मा मनवन्तर वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी काज रचाए, सत्तां दीपां फोल फुलाईआ। सो पुरख निरँजण एका नाम बाज उडाए, चारे कुन्ट फिराईआ। नीला नीली धारों धार पार कराए, सोलां कलीआं आसण पाईआ। शाह सवार डेरा लाए, पीरन पीरा वड वड्याईआ। दस्तगीरां मेट मिटाए, शाह हकीरां खेल खिलाईआ। जन भगतां जगत भीड़ां कट्ट वखाए, आप आपणी दया कमाईआ। चारों कुन्ट वहीरां दए पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग वेस हरि अवल्ला, आपणा आप करांयदा। वेखणहारा राणी अल्ला, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। जाणे रूप हरि बिस्मिला, बिस्मिल विच आप समांयदा। चौदां सदीआं कट्टीआं छिला, आप आपणा खेल खिलांयदा। जगत सिँघासण अन्तिम हिल्ला, धरत धवल ना कोई टिकांयदा। पावे सार ईसा मूसा बूरा कक्का बिल्ला, उच्चा टिल्ला पर्बत फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलंता हरि निरँकार, आदि जुगादि श्री भगवानया। निहकलंका लए अवतार, जोती नूर धरे महानया। शब्द रक्खे तिक्खी धार, दो जहानां वेख वखानया। वीह सौ बिक्रमी हो त्यार, लोकमात होया प्रधानया। वीह सौ इक्क अक्ख उग्घाड़, त्रिलोकी मारे तीर निशानया। वीह सौ दो साचा लाड़ सच तत्त करे शृंगार, खेले खेल गुण निधानया। वीह सौ तिन्न ना कोई रूप ना कोई चिन्न, आप आपणा होया जाणी जाणया। वीह सौ पंज गुरमुख आत्म सुत्ता सच पलँघ, घर मन्दिर इक्क सुहानया। वीह सौ छे आपणे शब्द लगा नेंह, साचा नाता जोड़ जुड़ानया। वीह सौ सत्त होया उत्पत, हड्ड मास नाड़ी ना दिसे रत्त, जोती शब्दी जोत भगवानया। वीह सौ अट्ठ खेले खेल कमलापत, बीज बीज्जया आपणे वत, आप आपणा हल चलानया। वीह सौ बिक्रमी नौं, नौ खण्ड पृथ्मी रिहा भौं, सचखण्ड दुआरे ना जाए सौं, आलस निन्दरा ना कोई रखानया। वीह सौ दस, खेले खेल हस्स हस्स, हरिजन मेले नस्स नस्स, गुरमुख बाल इञाणे गोद उठानया। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अन्दर वस, करोड़ तेतीसा करे भस, इन्द इन्दासण तज जाए नस्स, हरि साचा वेख वखानया। जगत जगदीशा खेले खेल शाहो शाबीसा निउँ निउँ सीस झुकाइन रवि ससि, लोकमात होए प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर कर त्यार, वीह सौ बारां मीत मुरार, हाढ़ सतारां थित वखानया। वीह सौ बारां खेल अपारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। हरिसंगत करे सच प्यारा, साचा धाम वखांयदा। साढे तिन्न हथ्थ नगरी उच्च मिनारा, सच महल्ल आप उपांयदा। निरगुण दीपक कर उज्यारा, आपे वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, साचा ढोला गांयदा। लोकमात वणज कराए सच वणजारा, एका वस्त वखांयदा। गुरमुखां भरे नाम भण्डारा, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। आपे बणया हरि वरतारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। सम्मत तेरां गुप्त ज़ाहरा, राज राजाना आप उठांयदा। साधां सन्तां दए हुलारा, कलिजुग अक्ख खुल्हांयदा। अन्तिम आया पार किनारा, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। उच्चा टिल्ला ढए मुनारा, इट्ट नाल इट्ट ना कोई रखांयदा। सम्मत चौदां मीत मुरारा, हरिसंगत वेख वखांयदा। एका इक्की एकँकारा, एका रंग रंगांयदा। धारों तिक्खी विच संसारा, वालों निक्की मेल मिलांयदा। भेव ना पायण मुनी रिखी, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी आपणा हुक्म चलांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, जुग जुग कार कमांयदा। सम्मत पन्दरां नौजवान, आपणा बल वखांयदा। अठसठ तीर्थ वेखे जगत ज्ञान, साधां सन्तां काया मट्ठ फोल फुलांयदा। गंगा जमना वेखे मार ध्यान, गोदावरी सुरस्ती फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अठसठ मूल चुकांयदा। अठसठ रिड़के हरि हरि

पाणी, नाम मधाणा पाया। वेखणहारा चारे खाणी, चारे वेदां फोल फुलाया। अठारां पुराण वेखे मार ध्यानी, पुराण पुराणी आपे गाया। गीता ज्ञान हो प्रधानी, एका सिख्या सिख समझाया। अञ्जील कुरानी जगत निशानी, आपे वेख वखाया। नानक निरगुण गाए बाणी, बाण निराला लाया। गोबिन्द मिल्या साचा हाणी, पुरख अकाल मनाया। कलिजुग अन्तिम खेल महानी, पुरख अबिनाशी जोड़ जुड़ाया। गुरमुखां देवे पद निरबाणी, चौथा पद वखाया। तीजा नैण इक्क खुल्हानी, आपणा पर्दा लाहया। अनहद सुणाए साची बाणी, आपणा राग अल्हाया। सम्मत सोलां वीह सौ बिक्रमी नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क निशानी, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अस्सू पंज दिवस सुहाया। अस्सू पंज पंच प्यारा, पंचम मुख सलांहयदा। कलिजुग करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट अन्दर वेख वखांयदा। चारों कुन्ट धूंआँधारा, धरत आकाश रंग रंगांयदा। सम्मत सतारां लाए नाअरा, हक्क बहक्क वेख वखांयदा। काग हँस उडाए डारा, कागी काग कुरलांयदा। रागी नादी ढाडी कोई ना गाए वारा, हरि आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, गुर सतिगुर दरस दखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जीव आप उठांयदा। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, हरि साचे जोत जगाईआ। शब्द सुणाए इक्क राग, एका नाद वजाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागों हँस वखाईआ। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, सम्मत अठारां वेख वखाईआ। त्रैगुण माया डस्सनी डस्से नाग, पंज तत्त करे हल्काईआ। बहत्तर नाड़ी लग्गे आग, ना कोई सके बुझाईआ। किसे घर ना दिसे बाती चिराग, साची सेज ना कोई विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत अठारां अमृत जल धार, चारों कुन्ट वहाईआ। एका नौ नौ इक, एका खेल खिलांयदा। एका लेखा दए लिख, एका मेट मिटांयदा। एका पावणहारा भिख, एका झोली डांहयदा। एका सिख्या ल्ए सिख, एका मुख भुवांयदा। एका मेटणहारा तृख, एका अग्नी तत्त जलांयदा। एका वेखे देस परदेस, एका नर नरेश सोभा पांयदा। एका सुत्ता बाशक सेज, एका ब्रह्मा वेद सुणांयदा। एका होया रिक्खी केश, एका गोवर्धन हथ्थ उठांयदा। एका नानक गोबिन्द दस दस्मेश, खड़ग खण्डा इक्क चमकांयदा। एका अल्ला राणी करे भेख, एका मस्तक मेख लगांयदा। एका अन्तिम मेटे रेख, सदी चौधवीं पन्ध मुकांयदा। किसे ना चले कोई पेश, हरि का भाणा ना कोई मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सम्मत उनी, ना कोई दीसे मुस्लिम सुन्नी, सभ दी चोटी जाए मुन्नी, जगत हदीस ना कोई पढ़ांयदा। उन्नी उनीसा खेल जगदीशा, जागरत जोत करे रुशनाईआ।

भेव खुल्लाणा बीस बीसा, कलिजुग पीसण पीस कमाईआ। जाणे भेव राग छतीसा, नारद मुन सृष्ट सबाईआ। लेखा चुक्के कुरान हदीसा, वेद पुराण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा तेरे अग्गे धर, एका धक्का देवे लाईआ। कलिजुग आपणा चुक्कणा भार, बीस बीसा दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी मारे मार, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर गोबिन्द खिच कटार, आपणे हथ्थ रिहा चमकाईआ। फौज अगम्मी आपे चाढ़, नौं खण्ड पृथमी मेट मिटाईआ। ना कोई दीसे झूठी धाड़, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। धरत मात लग्गे अखाड़, सत्त दीप नौ खण्ड लक्ख चुरासी आपणा डौरु वाहीआ। राए धर्म होए त्यार, अठसठ अठाई कुण्डां बूहा लाहीआ। चित्रगुप्त कढ्ढे लेख लिखार, आपणा खाता दए वखाईआ। लाड़ी मौत कर शृंगार, नेत्र कज्जल रही पाईआ। हथ्थीं लाल मैहन्दी रंग अपार, झूठा गाना रही बंधाईआ। होई नार जगत मुटयार, वर मंगे अग्गे बेपरवाहीआ। जोबन जवानी दिहाड़े चार, थिर रहिण ना पाईआ। कलिजुग वेला चार कुन्ट होए ख़बरदार, आप आपणा राह तकाईआ। साचा कन्त वेख भतार, कवण कूटे बैठा डेरा लाईआ। मनमुख जीव होया विभचार, एका नार धराईआ। सम्मत वीह सौ सोलां पन्दरां कत्तक सगन पए विच संसार, विच विचोला शब्द बणाईआ। सम्मत सतारां कलिजुग जांञी देवे चाढ़, सीस दस्तार इक्क वखाईआ। सम्मत अठारां जल जल धारा साचे डोले

१०७० देवे वाड़, चार यार कहार वखाईआ। सम्मत उन्नी आपणा मुख कलिजुग लाड़ी दए वखाई, मुख चुन्नी घूँगट लाहीआ। १०७०

०८ ना कोई दीसे मीत मुरार, साचा संग ना कोई वखाईआ। बिन हरि नामे भुल्ला सर्ब संसार, बिन हरि नाम ना कोई पार ०८

कराईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई कोई ना बणे यार, जो जन बैठे मुख छुपाईआ। जिस जन रसना जिह्वा गाया गुण करतार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए तराईआ। सम्मत बीस करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। साची सखी कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। ख़ालस ख़ालसा विच संसार, नौ खण्ड पृथमी वेख वखाईआ। बणे सालस आप निरँकार, साची सेवा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी मेटे जगत शाहीआ। कलिजुग मिटे झूठी शाही, सतिजुग साचा मात लगावणा। जगत विधान कोई रहे नाहीं, शाह सुल्तान ना किसे अख्वावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा डंक वजावणा, सम्मत वीह सौ इक्की हो प्रधान, हरि साचा खेल खिलाईआ। पंचम मुख सीस ताज महान, पंचां सिक्खां राज जोग सिखाईआ। सत्त रंग झुल्ले निशान, सत्तां दीपां आप वखाईआ। शब्द डंका हथ्थ भगवान, आपणे लए उठाईआ। नौ खण्ड देवे इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल चरन ध्यान, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। चार वरन इक्को गाण, एका इष्ट वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग सतिजुग साचा खेल, हरि साचा आप खुल्हांयदा। मनमुखां घल्ले धर्म राए दी जेल, गुरमुखां गोद उठांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण हुक्म सुणांयदा। खेले खेल सज्जण सुहेल, रंग नवेल डेरा लांयदा। आपे गुर गुरू गुर चेल, गुर चेला आप अखवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां नेत्र पाए नाम अंजन, पारब्रह्म दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर आप तरांयदा। भव सागर डूँघी गागर, काया गढ़ वेख वखांयदा। निर्मल कर्म करे उजागर, उप्पर चढ़ जोत जगांयदा। करे नाम वणज सौदागर, सीस धड़ ना कोई रखांयदा। एका नाम रत्ती रत्नागर, रत्न अमोलक हीरा लाल जवाहर माणक मोती, गुरसिख बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरि सज्जण गुर पाया, गहर गम्भीर गोबिन्द। हउमे रंग मटाया, मिटी सगली चिन्द। घर मन्दिर इक्क सुहाया, उपजी साची बिन्द। पुरख अबिनाशी दर्शन पाया, वड दाता गुणी गहिंद। मानस जन्म लेखे लाया, अमृत पीआ सागर सिन्ध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेटणहारा सगली चिन्द। गुरमुख साचा मीतड़ा, आदि जुगादि रखाए। गुर सुणाए साचा गीतड़ा, आप आपणा राग अल्हाए। वखाए धाम इक्क अनडीठड़ा, सचखण्ड वासी बेपरवाहे। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, जो जन रहे सरनाए। आपे पाकी पाक पतित पापी करे पुनीतड़ा, पतित पावण आप करतार। आदि जुगादी ठंडा सीतड़ा, जन भगतां करे प्यार। जुग जुग चलाए आपणी रीतड़ा, कोई ठगौरी ना करे संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत भरे भण्डार। गुर संगत गुर वस्सया, गुरदाता मेहरवान। हरिसंगत अन्दर बहि बहि हस्सया, शब्द वखाए सच निशान। तीर निराला नाम कस्सया, मारे इक्क निगहबान। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, करे प्रकाश कोटन भान। जन भगतां दुआरे फिरे नस्सया, आदि जुगादी हरि मेहरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवान। हरिसंगत काया संगत सच मुनारा, गुर सतिगुर आप सुहांयदा। गुरमुखां करे पार किनारा, जो जन चरन ध्यांअदा। दरगाह साची दए सहारा, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। लक्ख चुरासी पार किनारा, मात गर्भ बंधन कट्ट वखांयदा। उलटा रुक्ख ना लए हुलारा, दस दस मास मेट मिटांयदा। शब्दी शब्द वणज वणजारा, साचे हट्ट विकांयदा। अमृत देवे ठंडी ठारा, भर प्याला जाम साकी आप प्यांअदा। गुरमुखां करे सद प्यारा, आप आपा वार वखांयदा। कलिजुग भुल्लया जीव गंवारा, हरन फरन नेत्र ना कोई खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत अन्दर जाए वड़, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख अन्दर आपे वड़या, आपणी दया कमाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणा डण्डा हथ्थ

उठाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। गुरसिखां दर दुआरे खड़या, जो जन बैठे राह तकाईआ। पंच विकारे आपे सड़या, जिउँ जोगा जोग कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तोड़णहार हँकारी गढ़या, गढ़ हँकारा मेट मिटाईआ। गढ़ हँकारी जाए तुट्ट, किला कोट रहिण ना पाईआ। हरि का शब्द तीर निराला रिहा छुट्ट, दो जहानां डेरा रिहा ढाहीआ। नौ सत पंज तत्त बणे अतुट्ट, मन मति ना कोई चतुराईआ। वरनां बरनां पाए फुट्ट, ना कोई जोड़ जुड़ाईआ। कलिजुग मध प्याला पीता घुट्ट, चारों कुन्ट खेह उडाईआ। कलिजुग भाग गया निखुट्ट, मनमुखां जीवां नाल रलाईआ। कच्चे तन्दन डोर जाए तुट्ट, गुड्डी आकाश ना कोई चढ़ाईआ। गुरमुख विरला पीवे अमृत घुट्ट, जिस जन सतिगुर पूरा आप प्याईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, गेड़ा गेड़ ना कोई भुवाईआ। भौंदे फिरदे कोटी कोटि तीर्थ तट्टां जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाजा ग़रीब निवाजा एका एक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। शब्द अनादी आपे बोल, बोध अगाध जणांयदा। लक्ख चुरासी नाम कंडे रिहा तोल, सतिगुर नानक तेरां तेरां धार चलांयदा। पुरख अबिनाशी बैठा रहे अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलांयदा। त्रैगुण तेरा प्या घोल, पंज तत्त ढोल वजांयदा। सच वस्त ना किसे कोल, सच वणज ना कोई करांयदा। करनी करता कूड़ कुड़यारा चारों कुन्ट कढ्ढे पोल, भेव अभेद भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग मिटाए सतिजुग लगाए, गुरमुख तराए मनमुख डुबाए, घर साचे सच वस्त टिकाए, साचा घर हरी हरि, गुरमुख काया गढ़ वखाईआ। गुरमुख काया मन्दिर, घर घर विच आप सुहाया। आपे तोड़े लगा जन्दर, नाम हथौड़ा एका लाया। मन मनुआ दहि दिश ना भवे बन्दर, जिस जन शब्दी डोरी बंधन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दीवा निरगुण बाती, निरगुण दाता कमलापाती, निरगुण मेटे अन्धेरी राती, निरगुण देवे साची दाती, निरगुण रक्खी उत्तम जाति, निरगुण बख्शे अमृत बूंद स्वांती, गुरमुख साचे बाल, आपणी गोद लए उठाईआ।

१०७२

०८

✪ ६ अस्सू २०१६ बिक्रमी सुरजण सिंघ दे घर पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

हरि चाकर पा ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। पतित पापी करे पाकी पाक, पतित पुनीत वड्डी वड्याईआ। बिप्पर सुदामा बणया सज्जण साक, ग़रीब निमाणे संग रलाईआ। चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाए राख, पिछली रेखा दए मिटाईआ।

अन्दर मन्दिर आपे झाक, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। सज्जण सुहेला बणया साक, मीत मुरारा बेपरवाहीआ। जिस जन खुल्हाए आपणी जाग, सो जन दर्शन पाईआ। धन्न जणेंदी माई वड वड भाग, पिता पूत वधाईआ। जगत तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत्त मिटाईआ। चरन प्रीती सच वैराग, बिरहों विछोड़ा इक्क वखाईआ। माया ममता ना डस्से डस्सनी नाग, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाया काग, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। नाम सुहञ्जणा बन्न्हे ताग, तन्दव तन्द इक्क वखाईआ। रसना जिह्वा हरिजन रहे अराध, रस भिन्ना इक्क वखाईआ। लेखा चुक्के सन्त साध, मीत मुरारा एका मेल मिलाईआ। सुणे सुणाए सर्ब फरियाद, पंचां पंच वेख वखाईआ। देवणहारा साची दाद, अक्खर वक्खर झोली पाईआ। परम पुरख प्रभ माधव माध, मोहणी रूप वटाईआ। खेल खिलंता आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग सागर डूँघी भवर हरिजन साचे लए लाध, तरनी तरन इक्क अख्वाईआ। आपे लडाए आपणे लाड, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे किलविख पाप मिटाईआ। पाप रोग संताप, दु:ख दर्द निवारया। एका बख्शे साचा जाप, भरे नाम शब्द भण्डारया। हरिजन बुझे आपे आप, हउमे हँगता रोग निवारया। मेल मिलावा कमलापात, कमली रमली गले लगा ल्या। आदि जुगादी पुच्छे वात, वाह वाह सतिगुर नाउँ धरा ल्या। मिटे रैण अन्धेरी रात, जिस जन आपणा दरस दिखा रिहा। लहिणा देणा चुक्कया तीर्थ ताट, घट अन्तर सर सरोवर आप नुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आलणिउँ डिग्गे बोट, आप उठा ल्या। आप उठाए दया कमाए, दया निध दयावानया। कर किरपा जन मेल मिलाए, धुरदरगाही श्री भगवानया। दासी दास हो सेव कमाए, रंगे रंग दो जहानया। वास निवासी आप अख्वाए, गुणवन्ता गुण निधानया। घनक पुर वासी वेख वखाए, सच मन्दिर बैठ बिबानया। जोत प्रकाश भेव ना आए, ना दीसे जीव जहानया। शाहो शाबाशी वेख वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बख्शणहारा चरन ध्यानया। चरन ध्यान धूढ़ इशनान, चिन्ता रोग सोग मिट जाईआ। देवे माण तोड़े अभिमाण, किरपा निधान कर्म कमाईआ। सच बिठाए इक्क बिबान, हरि मेहरवान काल फाँस कट्ट वखाईआ। महांकाल दर रहे वास, हरि हुक्मी हुक्म फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख गुर गुर रूप समाईआ।

६ अस्सू २०१६ बिक्रमी बिशन दास दे घर ढक्की चक्कीआं जलन्धर शहर

इक्क एकँकार पुरख समरथ, आदि जुगादि समाईआ। जन भगतां राम नाम देवे साची वथ्थ, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ।

नाम चढ़ाए साचे रथ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी करता महिमा अकथ, भेव अभेदा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण पुरख सुल्तान, पारब्रह्म अख्वांयदा। जोती नूर दीप महान, निरगुण आपणा आप जगांयदा। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, सच दुआरे सोभा पांयदा। जन भगतां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान, नाम निधाना झोली पांयदा। सुरती सुरत कर परवान, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। दिवस रैण निगहबान, आप आपणा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मीता इक्क अतीता, निरगुण रूप सति सरूप, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगीला नर निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, कलिजुग खेल बेपरवाहीआ। राम नाम कर उज्यार, कान्हा बंसरी नाम वजाईआ। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण जोत निरँकार, अनभव प्रकाश समाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। दीवा बाती कमलापाती कर उज्यार, काया मन्दिर डूँघी कन्दर जोत निरँजण आप जगाईआ। धुन अनादि सच्ची धुन्कार, अनहद ताल तलवाड़ा आप सुणाईआ। पावे सार सुखमन नाड़, टेडी बंक वेख वखाईआ। बज़र कपाटी देवे पाड़, नाम निशाना तीर चलाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। आसा तृष्ना देवे मार, हउमे हँगता रोग रहिण ना पाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, सच दुआरा इक्क वखाईआ। निरगुण सरगुण मेला नारी कन्त भतार, आत्म साची सुहञ्जणी सेज आप हंढाईआ। आपणे रंग रवे करतार, रंग रंगीला मोहण माधव रस भिन्ना भेव ना आईआ। दस्म दुआरी खेल अपार, नूर नुराना डगमगाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, भर प्याला हरिजन साचे जाम प्याईआ। कागों हँस हँस उडार, बंस बंसा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे घर, दर साचा इक्क सुहाईआ। भगतन मीता हरि भगवन्त, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। पकड़ उठाए साचे सन्त, साचा मन्दिर वेख वखांयदा। आप बणाए जुग जुग बणत, जुग करता नाउँ धरांयदा। आपे नारी आपे कन्त, सुरती शब्दी वेख वखांयदा। आपे रसना जिह्वा मणीआ मंत, आपे हरि हरि गुण अलांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध डेरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। भगतन खोले बन्द किवाड़, हरि साचे वड वड्याईआ। एका देवे नाम अधार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, घर मन्दिर आप टिकाईआ। वेखे विगसे करे विचार, दिवस रैण सेव कमाईआ। दो जहानां पावे सार, नाथ त्रिलोकी वड वड्याईआ। चौदां हट्टां वेखे खोले किवाड़, चौदां लोक आप भुवाईआ। धर्म रखाए सच अखाड़, लोकमात वज्जे वधाईआ। जन भगतां करे प्रकाश

बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। हरिजन बणे जगत मलाह, साचे बेड़े आप चढ़ांयदा। साचा बेड़ा पुरख अबिनाश, आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिजन मन्दिर पावे रास, गोपी काहन आप नचांयदा। परम पुरख प्रभ शाहो शाबाश, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जन भगतां होए दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। करे कराए बन्द खलास, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, मात गर्भ फेर ना आंयदा। पावे सार पृथ्मी आकाश, खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड जेरज अंड वेख वखांयदा। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन हरि हरि रसना गांयदा। सतिगुर पूरा वसे पास, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वखाए आपणा घर, घर सुहञ्जणा आप सुहांयदा। घर सुहञ्जणा सोभावन्त, हरि हरि मेल मिलन्नया। हरिजन मेला नारी कन्त, आत्म सेजा इक्क सुहन्नया। खेल खिलाए श्री भगवन्त, जुग जुग आपणा वेस वटन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरस दखाए श्री भगवानया। श्री भगवान निरगुण रूप, सति सरूप समाया। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। जन भगतां नाता तोड़े जूठ झूठ, साचा मार्ग एका लाया। आपणी किरपा आपे जाणा तुठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना आप झिराया। आवण जावण जाए छुट्ट, जिस जन हरि हरि दर्शन पाया। भुल्ले फिरदे कोटी कोटि, कोट कोटी हथ्थ ना आया। गुरमुख विरले तन नगारे लाए चोट, आपणा डंका आप वजाया। हरिजन विरला हरि हरि रक्खे एका ओट, दूजा दर ना मंगण जाया। सतिगुर पूरा हउमे हँगता काया कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम भण्डारा इक्क वरताया। नाम भण्डारा सच वस्त, हरि सतिगुर हथ्थ रखाईआ। देवणहारा दस्त बदस्त, जन भगतां झोली पाईआ। नाम ख़ुमारी दिवस रैण रक्खे मस्त, मध प्याला ना कोई रखाईआ। एका रंग रंगाए कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची रंगन नाम रंगाईआ। राम नाम रंग अनडीठा, दिस किसे ना आया। गुरमुख विरला जाणे रस मिठ्ठा, जिस जन आप चखाया। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठा, फल मेवा अमृत आप बणाया। जिस जन वस्सया हरि हरि चीता, चितवित ठगौरी कोई ना पाया। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणी रीता, धार अवल्ली आप रखाया। आपे राम आपे सीता, कान्हा कृष्ना नाउँ धराया। आपे पतित आप पुनीता, पतित पावण वड वड्याआ। आपे नानक गोबिन्द रहे अतीता, निरगुण आपणा खेल खिलाया। गुरमुखां काया करे ठांडी सीता, अग्नी तत्त ना कोई जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, जिस जन आपणे गले लगाया। भगत वछल हरि गिरधार, भगत भगती लेखे लाईआ। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, डूंघी कन्दर फोल फुलाईआ। त्रैगुण तृष्ना देवे साड़, पंचम पंचम मोह चुकाईआ। धर्म वखाए इक्क अखाड़, साचा मंगल राग अल्हाईआ। साचे मन्दिर कर प्यार, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। उच्च महल्ल अटल चढ़ मिनार, घर घर विच वेख वखाईआ। घर मीता हरि मीत मुरार, घर सज्जण बेपरवाहीआ। दिस ना आए विच संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख हरिजन हरिभगत लोकमात विरला उतरे पार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। दरस दखाए गुप्त ज़ाहर, अन्दर बाहर वेस वटाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, निरगुण जोत हरि रघुराईआ। जन भगतां भरे सच भण्डार, सच वणजारा एका वणज कराईआ। तोला तोले तोलणहार, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी दए हुलार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लाए सेवादार, सेवक साची सेव कमाईआ। आपे सांगोपांग सुत्ता पैर पसार, आप आपणा आसण लाईआ। आपे लाल भूषन कर शृंगार, चरन कँवल वेख वखाईआ। आपे खड़ग खण्डा तेज कटार, अष्टभुज रूप वटाईआ। आपे सिँघ शेर होया ख़बरदार, सच भवानी रूप वटाईआ। आपे दूतां दुष्टां करे सँघार, लोकमात वेख वखाईआ। आपे रामा रावण तोड़े गढ़ हँकार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे बिप्पर सुदामा देवे तार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना पाईआ। जुग जुग विछड़े मेले यार, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। कलिजुग बख्शे चरन प्यार, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। ना कोई डोबे विच मँझधार, भव सागर पार कराईआ। त्रबैणी नैणी पावे सार, गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना फेरा पाईआ। चारे वेदां ख़बरदार, पुराण अठारां वेख वखाईआ। गीता ज्ञान इक्क अधार, एका सिख्या सिख समझाईआ। कलिजुग अन्तिम सच जैकार, एका नाअरा लाईआ। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, पारब्रह्म करे कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म साचा यार, पूत सपूता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भगत रंग रत्तड़ा, राम नाम अनमोल। ना ठंडा ना तत्तड़ा, आदि जुगादी वसे कोल। आपे दे समझावे मत्तड़ा, शब्द अगम्मी वजाए ढोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, बिशन दास निज घर वास, आत्म प्रकाश रवि ससि रसन स्वास, लेखा लेखे लए लगाईआ।

✪ २४ अस्सू २०१६ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ ✪

आदि पुरख निरँजण हरि मेहरबान, आदि जुगादी एकँकारया। खेले खेल श्री भगवान, पारब्रह्म रूप अपारया। इक्क इकल्ला वाली दो जहान, निरगुण जोत नूर उज्यारया। धर्म उठाए सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। खेलणहारा हरि भगवन्त, आदि जुगादी पुरख अबिनाशी जुगा जुगन्त आपणा वेख वखांयदा। आपे नारी आपे कन्त, वेस अनेका रूप वटांयदा। लक्ख चुरासी बणाए बणत, घट घट आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। समरथ पुरख हरि करतार, हरि वड्डी वड वड्याईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त बण वरतार, लोकमात वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बन्ने धार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। जोती नूर पुरख अबिनाश, एका रूप समांयदा। हरि दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्ता नाउँ धरांयदा। पाए सार पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल मण्डप फोल फोलांयदा। घट घट अन्दर रक्खे वास, आप आपणा वेस वटांयदा। आपे पाए साची रास, गोपी काहन आप नचांयदा। सदा सुहेला वसे पास, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर जुग करनेहारा, आप आपणा रूप वटाईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। हरिजन वेखे सुत्त दुलारा, आप आपणा वेस वटाईआ। दिवस रैण करे प्यारा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर झिरना दए झिराईआ। नेत्र नैण खोल्ह किवाड़ा, रूप अनूप दरसाईआ। धर्म राए दा सच अखाड़ा, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जुग जुग खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाए रथ, रथ रथवाही दिस ना आईआ। कलिजुग महिमा अकथना अकथ, रसना जिह्वा कथ ना सके राईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी बंधन पाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, चार कुन्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। जोती नूर इक्क ललाट जगे लट लट, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। वेखणहारा चौदां हट्ट, चौदां तबकां फेरा पाईआ। हरिजन मेला नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण मेल मिलाईआ। तन नगारे लाए सट्ट, शब्द अगम्मी जोत वखाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा

डंक वजाईआ। आपणे रंग हरि रंग राता, खेले खेल अपारया। जन भगतां देवे साची दाता, इक्क इकल्ला मीत मुरारया। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ा रिहा। सो पुरख निरँजण साची गाथा, हँ ब्रह्म आप सुणा रिहा। लेखा जाणे पूजा पाठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या आप समझा रिहा। साची सिख्या हरि सुल्तान, हरिजन आप सुणाईआ। मेल मिलावा दो जहान, लोकमात वज्जे वधाईआ। आसा तृष्ना हउमे हँगता मेटे पंज शैतान, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। काया मन्दिर मक्का काअबा गुर वेखे इक्क मकान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणत बणाईआ। मन मति बुध बाल नादान, दिवस रैण रिहा खलाईआ। शब्द गुर गुर मेहरवान, आप आपणा नाउँ धराईआ। सन्त सुहेले कर पछाण, गुर चेले मेल मिलाईआ। अबिनाशी करता खेले खेल चतुर सुघड़ स्याण, मूर्ख मूढ़े लए तराईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सति सन्तोखी पीण खाण, कलिजुग तृष्ना दए मिटाईआ। आवण जावण चुक्के काण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। सचखण्ड दुआरा साचा माण, चरन दुआरा सच सरनाईआ। अमरापद गुरमुख पाण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। धूढ़ी धूढ़ सच इशनान, साचा मजन इक्क वखाईआ। पतित पापी सर्ब तर जाण, नेत्र लोचण जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। एकँकारा इक्क इकल्ला, अछल अछेद खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआर वसे सच महल्ला, थिर घर वासी आसण लांयदा। आपणा दीपक आपे बला, जोती जोत डगमगांयदा। आपे वसे सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पांयदा। आपणी करे आप प्रितपाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा।

१०७८
०८

गुरसिख लाल लाल अनमुल्ला, गुर सतिगुर हट्ट विकाया। नाम कंडे साचे तुला, दूसर हथ्थ किसे ना आया। लोकमात लक्ख चुरासी विच ना रुला, दर घर साचे सोभा पाया। फुल फुलवाड़ी फलया फुल्ला, रुत्त बसन्ती रोम रोम महिकाया। अमृत आत्म निझर डुल्ला, नेत्र लोचण नैण नीर बरसाया। पंज तत्त काया बूटा अन्त ना हुल्ला, लाल साचा इक्क लटकाया। चरन प्रीती घोल घुल्ला, हरि घोली घोल घुंमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां विछोड़ा जगत वैराग, अन्तिम दए कटाया। उठ सुत्त लाल दुलारा, लालण लाल वड्याईआ। करता करनी करे सच प्यार, चातृक रूप सिख बिल्लाईआ। कोटि ब्रह्मण्ड चरनां हेठ लताड़, लोकमात वंड वंडाईआ। सतिक्खण्ड सति अखाड़, ख़ालक ख़लक

१०७६
०८

ख़लक ख़ालक वेख वखाईआ। जगत जुगत अग्नी हाढ़, भगत भगती भगवन्त रूप समाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर मन्दिर भँवरी भवर फोल फुलाईआ। तत्व तत्त दए अधार, ब्रह्म मति ब्रह्म समझाईआ। आत्म वत बीज अपार, सांतक सति आप उपजाईआ। रत्ती रत्त कर प्यार, रत्न अमोलक हीरा लाल अमोलक रूप वटाईआ। गति मित जाणे आप करतार, करनी करता वेख वखाईआ। वार थित ना सके कोई विचार, हरि का भेव कोई ना पाईआ। बोध अगाध खेल अपार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान रहे गाईआ। भगतन मीता इक्क अतीता अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह इक्क अख्वाईआ। ठांडा सीता धुर दरबार, आदि निरँजण जोती नूर डगमगाईआ। हस्त कीटां पावे सार, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां वरन बरन सरन इक्क सरनाईआ। लोआं पुरीआं पुरख अबिनाश, घट निवास ब्रह्म समाईआ। रवि ससि मण्डल मण्डप पृथ्मी रास, आप आपणी वेख वखाईआ। गुणवन्त भगवन्त सर्ब गुण तास, गहर गम्भीर सागर सिन्ध संग रखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर विच प्रभास, समुंद सागर काया गागर महल्ल अटल उच्च मुनारा, आर पार वेख वखाईआ। भगत वणजारा नाम सौदागर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाथां अनाथ सगला साथ, देव देवा आप अख्वाईआ। आत्म देव ब्रह्म निवासी, परम पुरख अबिनास्सया। घट घट अन्तर मेला शाहो शाबाशी, हरिजन बुझाए लग्गी प्यास्सया। रसना जिह्वा खेले पवण स्वासी, सति सरूप सर्ब गुण तास्सया। निरगुण जोत दासन दासी, घर भगतन रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जननी करे बन्द खुलास्सया। जन जननी नाता तुटे मोह, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दर दुआर हरि निरँकार दरस दखाए अग्गे हो, दर मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर आपणा पर्दा आपे लाहीआ। जाप जपाए सोहँ सो, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। हरि बिन अवर ना दीसे को, दूसर इष्ट ना कोई जणाया। चरन चरनोदक अमृत रस देवे चो, तृष्ना तृख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचे सोभा पाईआ।

गुरमुख तन श्रृंगार, हरि श्रृंगारया। नाम बरखा फूलणहार, खिड़ी गुलज़ारया। कलिजुग सरसे उतरे पार, ना डुब्बे मँझधारया। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता रोग सर्ब मिटा रिहा। आपणी घसवटी आपे परख, कंचन सोयना पारख वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुर भेव खुल्ह्आ रिहा। फूलण बरख़ा फुल्ल फुलवाड़ी, पत डाल्ही आप महिकाईआ। सदा सुहेला फिरे पिछे अगाड़ी, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी,

लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। दर घर साचे देवे वाड़ी, दर घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर होए सहाईआ। गृह मन्दिर हरि सगला साथ, अंग संग रखाया। आप जणाए आपणी गाथ, शब्द अनादी इक्क सुणाया। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, आदि निरँजण जोत निरँजण सेवा लाया। सर सरोवर वखाए साची ठाठ, जल धारा आप नुहाया। सति धीरज सन्तोख देवे हाठ, मन मति बुध ना होए हल्काया। कलिजुग तपे ना अग्नी काठ, तत्व तत्त कोई सुणाया। दुरमति मैल देवे काट, दूई द्वैती पर्दा लाहया। भाग लगाए काया माट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराया। तारनहार दीन दयालण, दयानिध अख्वांयदा। सर्ब जीआं करे प्रितपालण, प्रितपालक दिस ना आंयदा। गुरमुखां देवे साचा दानन, नाम निधाना झोली पांयदा। साची सखीआं मेला एका काहनन, एका बंसरी नाम वजांयदा। थिर घर साचे आत्म सुख साचा मानण, सुरत शब्दी मेल मिलांयदा। करे प्रकाश कोटन भानन, कोटि कोटी वेख वखांयदा। गुरमुख विरले बख्शे ब्रह्म ज्ञानन, ज्ञान ध्यान इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लेखे लांयदा। लेखा लिखणहार, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। ब्रह्मा वेता निउँ निउँ करे निमस्कार, अट्ठे नेत्र राह तकांयदा। शिव शंकर मंगे बण भिखार, अग्गे झोली आपणी डांहयदा। विष्नूं वंसी खेल अपार, आपणी इच्छया आप चलांयदा। करोड़ तेतीसा करे पुकार, गण गंधर्ब सर्ब कुरलांयदा। लक्ख चुरासी खेल न्यार, पारब्रह्म आप करांयदा। रवि ससि सेवादार, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जल बिम्ब कर आकार, धरत धवल टिकांयदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, लोकमात वेस वटांयदा। भगवन्त भगत खेल न्यार, नाम नामा आप उपजांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। सच सुल्तान सच सिक्दार, दर घर साचे आप सुहांयदा। ना कोई वसे चोबदार, दूसर संग ना कोई रखांयदा। लोआं पुरीआं बन्ने धार, गगन पाताला बंधन पांयदा। सन्त कन्त मीत मुरार, आदि अन्त मेल मिलांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, एका गुर अख्वांयदा। जननी जणे सुत्त दुलार, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। पिता पूत ना होए अधार, इष्ट देव ना कोई मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क अख्वांयदा। आदि अनादी पुरख अकाल, रूप अनूप समाया। लक्ख चुरासी पाए जंजाल, त्रैगुण माया नाल रलाया। आपे वसे धाम निराल, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहाया। भगत वछल आप कृपाल, गुर मूर्त वेख वखाया। अजूनी रहित करे प्रितपाल, अजून अजूनी आप फिराया। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब ना लेख जणाया। लक्ख चुरासी वेखे काया डाल्ह, पत डाल्ही फोल फुलाया। दो जहानां शाह कंगाल, पुरख निरँजण आप अख्वाया। एका नाम सच्चा

धन माल, सच ख़ज़ीना इक्क भराया। गुरमुख वेखे साचे लाल, जुग जुग लोकमात लए जगाया। धुन अनादी वज्जे ताल, बिरहों ताल तलवाड़ा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताया। कुलवन्ता अकल कल धार, परम पुरख सुल्तानया। वरते वरतावे विच संसार, जोती नूर नूर महानया। जन भगतां देवे नाम अधार, धुरदरगाही इक्क निशानया। अगम्म अगम्मड़ी अगम्म धुन्कार, राग नाद भेव ना पानया। खड़ग खण्डा तेज कटार, हरि निरँकार, गुरमुख सज्जण मीत मुरार, तन गात्रे आप पहनानया। दूई द्वैती हउमे हँगता देवे मार, आसा तृष्ना मेट मिटानया। साची संगतां बख्शे सच प्यार, सो दिन सोहे विटहों आप कुरबानया। घर मन्दिर सोहे सच दरबार, निरगुण जोत जगे भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन करे दर परवानया। दर परवान बद्धा गाना, गुरमुख सगन मनांयदा। चरन दुआर साचा माणा, माण अभिमाण मोह चुकांयदा। धुरदरगाही साचा राणा, घर साचे सिफ्त सलांहयदा। जुगा जुगन्तर वरते भाणा, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण वेख वखांयदा। गुरमुख सज्जण पाया, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। जगत तृष्ना रंग मिटाया, सांतक सति सरीर। आत्म भोगी भोग कराया, देवणहारा साची धीर। धुर संजोगी मेल मिलाया, आपे चोटी चढ़ अख़ीर। जगत विजोगी संग कटवाया, हउमे ममता कढ्ढी भीड़। त्रिलोकी चरनां हेठ दबाया, गुरसिखां तोड़े जगत जंज़ीर। शब्द सलोकी इक्क सुणाया, वड दाता पीरन पीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाया।

✪ २४ अस्सू २०१६ बिक्रमी मस्तूआणे दे सन्तां नूं शब्द भेज्जया १५ कत्तक वास्ते गुड़गाउँ तों ✪

त्रैगुण हरि हरि प्रवेशया, विष्न ब्रह्मा शंकर धार। सति पुरख निरँजण सदा अदेस्सया, निरगुण रूप अनूप करतार। जुगा जुगन्तर धारे भेखया, भेख अवल्ला विच संसार। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस्सया, मूंड मुंडाए ना सिरजणहार। आदि जुगादी लिखणहारा लेखया, लेखा जाणे अपर अपार। एकँकारा नर नरायण नर नरेशया, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण सोहे सच्ची सरकार। लोकमात दर दरवेशया, दर भगतां बणे भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग द्वापर त्रेता करया पार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, राम कृष्न रूप वटाईआ। कलिजुग रूप अगम्म अपारा, आप आपणा वेस वटाईआ। ईसा मूसा रंग करतारा, चार यारा संग मुहम्मद आप निभाईआ। हक्क हकीकत बोल जैकारा, ऐनलहक्क रूप अलाहीआ। मुकामे हक्क सच्ची सरकारा, बेऐब परवरदिगार इक्क अख्वाईआ। महिबान बीदो खेल न्यारा,

अज़मतो करमतो अजिबवा अतिलहे भेव ना राईआ। पीर दस्तगीर कुतब गौंस दए हुलारा, मुलां शेख़ मुसायक रूप वटाईआ। अञ्जील कुरान बोल जैकारा, बीस तीस हदीस पढ़ाईआ। चौदां तबक खोल्ह् किवाड़ा, ज़िमी अस्मान वेख वखाईआ। कायनात गुप्त ज़ाहरा, कलमा अमाम वेख वखाईआ। ऐहिबाब रबाब वजाए सितारा, दो दोआबा फोल फुलाईआ। हक्क जनाबा खेल न्यारा, काया काअबा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर पुरख अकाला, आपणा आप डगमगांयदा। खेले खेल खेल निराला, आप आपणा खेल खिलांयदा। लोकमात पंज तत्त वेख सच्ची धर्मसाला, नानक काया गढ़ सुहांयदा। नाम सति भर प्याला, अन्तर आत्म आप प्यांअदा। दीपक दीप एका बाला, जोती जोत डगमगांयदा। मार्ग दस्से इक्क निराला, चार वरनां रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त साजण मीत मुरार, गुर पीर हरि पाए सार, जीव जन्त लए अधार, पार उतारा आपणे हत्थ रखांयदा। नानक जोती गोबिन्द, दस दस आप चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी वस्सया संग, सगला संग निभाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, निज आत्म सेज वछाईआ। नाम निधाना वज्जे मृदंग, तुरीआ राग अल्हाईआ। सुपन सखोप्त जागरत आपे लँघ,

१०८२

आप आपणा दर सुहाईआ। गुर चेला आपे मंगे मंग, इच्छया भिच्छया झोली आप भराईआ। आपे अस्व घोड़े कसे तंग, लोआं पुरीआं आप फिराईआ। आपे पंज तत्त विकारा करे भंग, पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। नानक गोबिन्द बण भिखारा, लिख्या लेख वखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, लोकमात वेस वटांयदा। खड़ग खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड हत्थ उठांयदा। सम्मत सम्मती मारे मारा, भाणा आपणे हत्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या सिख समझांयदा। साची सिख्या हरिजन सिख, सिक्खी सिख्या विच समाईआ। जगत तृष्ना मिटे तृख, अमृत आत्म जाम प्याईआ। एका नाम मंगी भिख, सतिगुर झोली दए भराईआ। जगत विकारा मिटे तृख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा दए बुझाईआ। लेखा जाणे हरि निरँकार, गुर मन्दिर आप सुहांयदा। गुरुदुआर गुर दरबार, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। हरि शब्द शब्द जैकार, आप आपणा हुक्म अल्हांयदा। गुरमुख गुरसिख विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। वीह सौ सोलां बिक्रमी होया ख़बरदार, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाना साचा राणा आपणा आप अल्हांयदा। धुर फ़रमाना हरि भगवान, जग सन्त दए जणाईआ। पन्दरां कत्तक दिवस महान, मस्तूआणा चरन छुहाईआ । सुत्ते रहिणा ना बण नादान, कलिजुग

कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर आए बेपरवाहीआ। जगत सन्त उठ लै अंगड़ाई, हरि साचे जोत जगाईआ। मस्तूआणे गुरमुखां करे सच कुड़माई, शब्द शब्दी सगन मनाईआ। हरिजन घर घर वज्जे वधाई, बेमुखां अग्नी तत्त जलाईआ। जो जन बैठे मुख भुवाई, शौह दरया दए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहावणा, वीह सौ सोलां बिक्रमी मंग मंगाईआ। गोबिन्द गुर गुर वेस वटावणा, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साजण दर दर्शन पावना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लिख्या लेख पूर करावणा, सन्त मनी सिँघ गया लिखाईआ। हरिसंगत साची आस पुजावणा, हरि हिरदे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक आप अख्वाईआ। निहकलंक हरि आए दर, खोल्ह बन्द किवाड़या। जन भगतां दरस दिखाए अग्गे खड़, जोती नूर नूर उज्यारया। तोड़णहारा हँकारी गढ़, किला कोट वेख वखा रिहा। हरिजन लगाए आपणे लड़, चौथे जुग लहिणा मूल चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मस्तूआणा वेख वखा रिहा। जगत सन्त उठ बल धार, दर आए शब्द परवाना। शाह सुल्ताना कर ख़बरदार, प्रगट होया गुण निधाना। कलिजुग अन्तिम पैणी मार, एका धुर फ़रमाना। दर दर घर घर होए ख्वार, उच्चे मन्दिर ना दिसे कोई निशाना। कल्गीधर कल्की अवतार, अकल कला हरि अख्वाना। आए बंक बंक दुआर, बंक दुआरी खेल महाना। रूप अनूप भूप सच्ची सरकार, सति सरूप श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, साचे दर करे परवाना। पन्दरां कत्तक पवणी धार, पवण पाणी समाईआ। पुरी आकाश कर प्रकाश होए उज्यार, मण्डल रास आप वखाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, लहिणा देणा कर्ज़ उतार, चार जुग जो रिहा चढ़ाईआ। जगत पूजा ना कोई अधार, इष्ट दूजा ना विच संसार, गुर एका एक समझाईआ। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, जन भगतां आपणे अन्दर देवे वाड़, मस्तक माथा मूल चुकाईआ। गुर चरन दुआरा सच अखाड़, वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द सुनेहड़ा देवे घर, उठ जगत सन्त जीव नादान, कलिजुग गूढ़ी नींद रिहा सुआईआ।

✪ २६ अस्सू २०१६ बिकर्मी चन्नन सिँघ दे घर दिल्ली छाउँणी ✪

सीतल धार सर्ब सुख आत्म, जन सारंग सति समाईआ। अबिनाशी करता परम पुरख परमात्म, बारम्बार जोत जगाईआ।

दीना ठाकर अनाथिंग, नाथ अनाथां लए उठाईआ। नाम निधाना गहर गम्भीर गुण गाथिंग, हरि नाम वड वड्याईआ। सर्ब सूख सहिज सुख माथिंग, अलक्ख अलेख हरि आप बणाईआ। अवण गवण त्रै भवन चलाए राथिंग, ब्रह्मण्ड खण्ड आप फिराईआ। सोइम रूप पृथ्मी अकाशिंग, काल दयाल वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि पुरख अबिनाशिंग, जूनी रहित जोत जगाईआ। सुरत शब्द पवण स्वासिंग, निजा नंद रस दरसाईआ। चरन कँवल बंधाए नातिंग, नाद अनादी वड वड्याईआ। मिटे रैण अन्धेरी रातिंग, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। हउमे रोग हँगता विनाशिंग, जिस जन आपणी दया कमाईआ। सर्ब देवा आत्म देव वासिंग, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। सच मण्डल सच पाए रासिंग, हरि सज्जण वड्डी वड्याईआ। करे कराए बन्द खुलासिंग, बन्दी छोड़ बेपरवाहीआ। लहिण देणा चुकाए दस दस मासिंग, दहि दिशा होए सहाईआ। तन माटी लेखा लाए ख़ाकी खाकिंग, हरि ख़ालक नाउँ धराईआ। पतित पुनीत करे पाकी पाकिंग, पतित पावण भेव ना राईआ। जन भगतां लहिणा देणा चुकाए बाकी बाकिंग, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। निज घर मन्दिर खोल्हणहारा ताकिंग, त्रै वास भेव ना आईआ। डूँघी कन्दर मारे झाकिंग, आपणा पर्दा आपे लाईआ। भर प्याला जाम प्याए साचा साकिंग, हरि साकी इक्क अख्वाईआ। अस्व घोड़े चढ़े मार पलाकिंग, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। गुरसिखां अन्दर करे वासिंग, जगत वासना दए गंवाईआ। होए सहाई जंगल जूह विच प्रभासिंग, जल थल महीअल वेख वखाईआ। दाता दानी सर्ब गुणतासिंग, गुणवन्त निरगुण करे जणाईआ। गुरसिख ना होए कदे निरासिंग, आसा तृष्ना विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। खेल खिलंदड़ा हरि भगवन्त, परम पुरख अबिनाशया। जोत जुगन्दड़ा साध सन्त, खेले खेल तमाशया। वेस वटंदड़ा साचा कन्त, रूप अनूप शाहो शबास्सया। नाम जपंदड़ा बणाए बणत, पावे सार पृथ्मी अकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, धुर भरवास्सया। धुर भरवासा धुर दरगाह, धुर धुर दी बाण रखाईआ। अबिनाशी करता बण मलाह, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। नाम अनमोला सच सलाह, साची सिख्या साख्यात जणाईआ। आपे पकड़णहारा बांह, भव सागर वेख वखाईआ। एथे ओथे दो जहानी करे सच न्याँ, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, निमाणयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख सज्जण लए उठाईआ। गुरसिख सज्जणा गाए सोहला, सो पुरख निरँजण मेल मिलन्नया। आप जणाए आपणा ढोला, आप आपणा राग सुणन्नया। आपणा पर्दा आपे खोल्हा, आप आपणा वेख वखन्नया। आपे बदलया आपणा चोला, जोती जामा भेख वटन्नया। गुरमुख काया मन्दिर आपे मवला, आपे सुरती शब्दी मेल मिलन्नया। आपे अमृत

आत्म देवे साची पौहला, सांतक सति कराए ठांडा सीता तनिआ। आपे भरनहारा अमृत उलटी करे नाभ कँवला, सर सरोवर आप सुहन्नया। आपे देवे माण उप्पर धवला, दो जहानां फिरे भन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पावे सार छप्पर छन्नया। छप्पर छन्न जगत सहारा, हरि साचा वेख वखांयदा। जिस जन मिल्या मीत मुरारा, बंक दुआरा सो सुहांयदा। घर मन्दिर दीपक होए उज्यारा, कमलापाती आप जगांयदा। मेटणहारा धुँधूकारा, धुन सच्ची वेख वखांयदा। पुरख पुरखोतम कर प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छप्पर छन्न आप सुहांयदा। छप्परी छन्न रंग महल्ल, उच्च अटार सुहाईआ। वसणहारा जल थल, घट घट बैठा आसण लाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण गुरसिख मन्दिर आपे मल्ल, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। जोती शब्दी रिहा रल, दिस किसे ना आईआ। करे खेल काया माटी पंज तत्त विकारा खल्ल, तत्त विकारा दए गंवाईआ। सति सरूपी नाम निरँजण चलाए हल्ल, दूई द्वैती जड़ उखड़ाईआ। सति सन्तोखी बीजे बीज अमृत लाए एका फल, फल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख लए वर, दूसर हट्ट ना किसे विकाईआ।

२६ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर १२ ए, १६ करोल बाग नवीं दिल्ली

हरि सूरा बलवान, आदि जुगादि समाया। जुग जुग उठाए सच निशान, लोआं पुरीआं आप झुलाया। ब्रह्मा विष्न देवे आण, एका हुक्म सुणाया। खेले खेल वाली दो जहान, भेव अभेदा भेव ना राया। सचखण्ड निवासी सच सुल्तान, निरगुण निरगुण आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटाया। इक्क इकल्ला पुरख सुल्ताना, एका रंग रंगांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जुग करता वेस वटांयदा। शब्द अनादी इक्क तराना, एका राग सुणांयदा। वसणहारा सच मकाना, महल्ल अटल अगम्म अथाह इक्क रखांयदा। शाहो भूप वड सुल्ताना, सच सिक्दार आप अख्वांयदा। ब्रह्मण्डां खण्डां बन्ने गाना, आकाश प्रकाश सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना आप रचाए, हरि सच्चा वड वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाए, गगन मण्डल आप सुहाईआ। लोआं पुरीआं वेख वखाए, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपणा रूप आप वटाए, निराकार साकार हो जाईआ। आपणी अंस आप उपजाए, विष्नूं वंसी नाउँ धराईआ। आपणा अंग आप कटाए, आप आपणे विच समाईआ। आप आपणा रूप वटाए, आप आपणा खेल खिलाईआ। आप आपणी जोत जगाए, जोती जोत डगमगाईआ।

पारब्रह्म ब्रह्म नाम धराए, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत आप हो जाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर पसार, आदि जुगादी खेल अपार, निरगुण सरगुण बन्ने धार, दूसर कोई ना संग रखाईआ। ना कोई संग ना कोई साथा, ना कोई मीत मुरारया। इक्क इकल्ला पुरख समराथा, खेले खेल अगम्म अपारया। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही नाउँ धरा ल्या। आपे जाणे आपणी गाथा, आपणा मन्त्र आप दृढ़ा ल्या। आपे पूजा आपे पाठा, आपे आपणा नाउँ उपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। खेलणहारा दीन दयाला, एका एक अख्वाईआ। आदि शक्ति जोत अकाला, अकल कल वड्याईआ। अजूनी रहित सबर प्रितपाला, प्रितपालक आप हो जाईआ। चरन कँवल रखाए काल महांकाला, आप आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि, नाद अनादी तुरीआ आप वजाईआ। इक्क नाद शब्द ब्रह्माद, हरि साचा सच उपजांयदा। एका जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा भेव खुल्हांयदा। नर नरायण माधव माध, मोहण मोहणी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस अवल्ला इक्क इकल्ला एका एक धरांयदा। इक्क इकल्ला अकल कल धार, लोकमात करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, त्रैगुण माया बंधन पाईआ। पंज तत्त तन शृंगार, तत्व तत्त विच टिकाईआ। मन मति बुध दए अधार, नौ दर खोज खुजाईआ। घर विच घर कर त्यार, निज आत्म बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपार, प्रकाश प्रकाश समाईआ। नाद धुन शब्द जैकार, अनहद राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जुग जुग खेल हरि हरि खेला, अकल कला अख्वांयदा। आपे गुरू गुर चेला, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण वेख वखांयदा। आप सुहेला आपे सज्जण, हरिभगतन आप उपांयदा। आपे चरन धूढ़ कराए मजन, आपणा लेखा आप लिखांयदा। आपे होए पर्दे कज्जण, आपणा पर्दा एका पांयदा। आपे घड़े भन्ने, भन्नणहारा आप अख्वांयदा। आपे रवि ससि सूरज चन्न सतारा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर गण गंधर्ब हरि हरि भाणा मन्नण, हरि भाणे सर्ब समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपणा रंग हरि रंग राता, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। मानस मानुख देवे दाता, आप आपणी दया कमाईआ। आपे रैण अन्धेरी राता, आपे अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। आपे अमृत बूंद स्वांता, सांतक सति सति कराईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताका, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। इक्क चलाए साची गाथा, एका नाम वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई पिता माता, पूत सपूता गोद उठाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप

१०८६ ०८

हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ वटाईआ। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपणा लेख लिखांयदा। पुरख अबिनाशी हो प्रतक्ख, लोकमात वेस वटांयदा। आपे लक्खों करनहारा कक्ख, आपे कक्खों लक्ख करांयदा। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, साचे मार्ग आपे लांयदा। मनमुखां तीर निराला मारे कस, जगत रोग ना मात मिटांयदा। तत्त विकारा लग्गे अग्ग, पंज तत्त धीर ना कोई धरांयदा। हउमे हँगता रहे मघ, शांतक सति ना कोई वरतांयदा। मानस देही होए कग्ग, हँस चोग ना कोई चुगांयदा। जिस जन किरपा कर देवे दरस उप्पर शाह रग, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपे लक्ख चुरासी अन्दर निरगुण जोत बण बण रिहा जग, आपे दीपक गुल करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता खेल खिलांयदा। जुग करता करने जोग, भेव कोई ना पांयदा। लक्ख चुरासी धुर संजोग, संजोग विजोग आपणे हथ्थ रखांयदा। जुगा जुगन्तर कट्टणहारा रोग, नाम प्याला इक्क प्यांअदा। जिस जन देवे साचा जोग, साची भगती इक्क सिखांयदा। दरस दिखाए इक्क अमोघ, हउमे हँगता गढ़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणा वेस करांयदा। वेस वटंदड़ा हरि भगवन्त, भगवान भेव ना राया। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। लक्ख चुरासी बणया गढ़ हउमे हँगत, माया मोह वधाया। राज राजान होए नंगत, साचा बस्त्र ना तन कोई हंढाया। दर दर भिखारी बणे मंगत, साची भिच्छया कोए ना पाया। साचा चढ़या रंग गूढ़ा रंगत, थिर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस हरि निरँकार, आपणा रूप वटांयदा। सतिजुग त्रेता बन्नी धार, द्वापर खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख संसार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण विच समांयदा। दोहां विचोला सिरजणहार, शब्द अगम्मी डंक वजांयदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी ना पाए कोई सार, हरि का भेव किसे ना आंयदा। साध सन्त गुर पीर अवतार गा गा थक्के हार, गावणहारा एकँकारा एका हुक्म सुणांयदा। जीव जन्त जुगा जुगन्त ना होए खुआर, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेस, हरि साचा रूप वटाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। ना कोई पूजे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, सुरपति करोड़ तेतीस ना कोई मनाईआ। राम कृष्न ना कोई अदेश, ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार नानक गोबिन्द ना कोई मिलाईआ। पावे सार नौ खण्ड सत्तां दीपां ब्रह्म ब्रह्माद, चारे कूटां आपणा डंक वजाईआ। ना कोई सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

१०८७ ०८

आदि निरँजण कर आकार, लोकमात करे रुशनाईआ। जोत उजाला दीन दयाला, आप अख्वांयदा। कलिजुग तोड़े अन्त जंजाला, सेवा लाए काल महांकाला, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। जन भगतां बणे आप रखवाला, शब्द सरूपी बण दलाला, वरन बरन ना कोई जणांयदा। धर्म राए वजाए ताला, चारों कुन्ट खेल निराला, काली धार वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रूप अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा आप अख्वांयदा। हरि हरि भेव आपणा खोल्ह, हरिजन दए बुझाईआ। आपे तोले आपणे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। खण्डां ब्रह्मण्डां वजाए ढोल, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी दए उठाईआ। जीवां जन्तां साधां सन्तां आत्म अन्तर वेखे सच वस्त कवण रक्खे कोल, नाम भण्डारा कवण काया मन्दिर विच सुहाईआ। कवण निरगुण सरगुण करे चोल्ह, काया चोला रंग चढ़ाईआ। कवण गुरमुख बैठा रहे अडोल, कलिजुग माया पोह ना सके राईआ। कवण कान्हा कृष्ना साची सखीआं खेले खेल होल, लाल गुलाला रंग कवण तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी चाल आपणे हथ्थ रखाईआ। चाल निराली जोत अकाल, आपणी आप चलांयदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे भाल, सन्त साध वेख वखांयदा। मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर वेखे फल केहड़े डाल, अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। पंडत पांधे वेखे शाह कंगाल, सच नाम कवण हट्ट विकांयदा। ग्रन्थी पन्थी वेखे तोड़े कवण जंजाल, माया ममता कवण मिटांयदा। कवण बैठा गुर दर मन्दिर मस्जिद सच्ची धर्मसाल, मठ्ठ शिवदुआला कवण सुहांयदा। कवण वणज कराए अनमुल्लड़े लाल, नाम अमोलक हीरा नाम झोली पांयदा। कवण सर सरोवर साचे मार छाल, अठसठ बेड़ा पार करांयदा। कवण घालण रिहा घाल, इष्ट देव इक्क मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी फोलणहारा, घर घर आप समाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कल अख्वाया। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहरा, दिस किसे ना आया। लेखा लिखे विच संसारा, सारिंग धर भगवान बीठलो भेव कोई ना पाया। आपे होए आर पार किनारा, जुग जुग बेड़ा रिहा चलाया। आपे डोबणहारा विच मँझधारा, आपणा धक्का लाया। आपे लए सति हुलारा, सति सतिवादी नाउँ धराया। आपे बोध अगाधी बोल जैकारा, सो पुरख निरँजण एका नाउँ धराया। हँ ब्रह्म कर न्यारा, पारब्रह्म सेवा लाया। निरगुण रूप अनूप सच्ची सरकारा, साचे तख्त सुल्तान हरि साचा आप सुहाया। राज जोग जगत भगत जाणे श्री भगवान, जोग जुगीशर नाउँ धराया। तपी तपीशर खेल महान, रिखी रिखेशर केशव रूप वटाया। सति सन्तोखी ब्रह्म ज्ञान, सति मन्त्र नाम दृढ़ाया । जत सति धीरज विच जहान, आत्म तत्त इक्क बुझाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणा डंक वजाया। कलिजुग डंक हरि भगवान, आपणा आप वजाईआ। आप उठाए राउ रंक शाह सुल्तान, सोया कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मारे एका बाण, दीप महांदीप फोल फुलाईआ। ख़ालक ख़लक वेख रहीम रहिमान, आपणी रहिमत दए बुझाईआ। लेखा जाणे अञ्जील कुरान, बीस बीसा आपे गाईआ। शरअ शरीअत वेख दुकान, जुग जुग दए चुकाईआ। हक्क हकीकत होई कुरबान, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। ऐनलहक्क कूके इक्क ज़बान, एका कलमा कायनात पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हक्क बहक्क खेल बहक्क हरि साचा आप कराईआ। साचा खेल खिलावणहारा एकँकारा परवरदिगारा, नूर इलाही नूर उज्यारा, खेले खेल विच संसारया। ईसा मूसा दए हुलारा, संग मुहम्मद चार यार बन्ने धारा, अल्ला राणी पावे सारा, रूप अनूप आप वटा ल्या। राम रूप हो उज्यारा, खेले खेल अगम्म अपारया। कान्हा कृष्ना बोल जैकारा, जै जै वन्ती नाम धरा रिहा। नानक गोबिन्द दए हुलार, निरगुण सरगुण वेस वटा ल्या। खेले खेल विच संसारा, अलक्ख निरँजण आप आपणी अलक्ख जगा रिहा। एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका गीत सुणा रिहा। आदि जुगादी कर पसारा, जगत वेस वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम खण्डा तेज़ प्रचण्डा आपणा आप उठा ल्या। नाम खण्डा तीर कटार, हरि साचा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी आर पार, जीव जन्त ना कोई सहाईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ दए मिटाईआ। गढ़ तोड़े माया ममता लोभ मोह हँकार, काम क्रोध रहिण ना पाईआ। हरिजन नाम मंगत रहे भिखार, एका वंडी नाम वंडाईआ। साची संगता कर त्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सर्ब जीआं दा सांझा यार, इक्क अख्वाईआ। वरनां बरनां वस्सया बाहर, अठारां बरन ना कोई उपाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लेख बेपरवाहीआ। कोटन कोटि कोटी गए हार, वेद पुराण शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। जुगा जुगन्तर लोकमात लै अवतार, जन भगतां होए सहाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, डुब्बदा बेड़ा आप तराईआ। देवे दरस अगम्म अपार, सति सरूपी नाउँ धराईआ। मेटणहारा अन्ध अँध्यार, साचा चन्न आप चढ़ाईआ। रवि ससि करन निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दए लताड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड न्यार, सच महल्ला इक्क सुहाईआ। जोती नूर कर उज्यार, अन्धेरी रैण ना कोई वखाईआ। कमलापाती खेल अपार, घर बैठा डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता करनेहारा, जुगा जुगन्तर लए अवतारा, लहिणा देणा दए चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम चुक्कया लहिणा, हरि साचे आप चुकावणा। पंज तत्त विकारा पाया गहिणा, मन मति वेस

१०६० ०८

करावणा। जूठ झूठ लागे हो हो बहिणा, कूड़ी क्रिया गीत सुणावणा। कामी क्रोधी दर्शन नैणा, जोती धी धार ना कोई वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलावणा। कलिजुग लहिणा जाए चुक्क, हरि साचा आप चुकाईआ। धरत मात दी सुफल कराए कुक्ख, हरिजन साचे दए उपजाईआ। जन भगतां करे उज्जल मुख, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। सुक्के करे हरे रुक्ख, अमृत आत्म सिंच हरा कराईआ। चार वरनां मेटे भुक्ख, दीनां अनाथां होए सहाईआ। अमृत आत्म देवे सुख, बिरहों रोग कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग कूड़ा दए मिटाईआ। कलिजुग कूड़ा बुरज हँकार, हरि साचा आपे ढांयदा। राज राजानां करे ख्वार, शाह सुल्तान ना कोई वखांयदा। जीव जन्त ना दिसे कोई मीत मुरार, ना कोई संग निभांयदा। उम्मत उम्मती मारे मार, हरि भाणा भाणे विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, रवि ससि सूरज चन्न आपणी सेवा आपे लांयदा। रवि ससि तार सतार, कोटन कोटि रहे डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहार, आपे वेखे बेपरवाहीआ। सिफ्त सलाही सलाहकार, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह भेव ना पाए कोई जीव विच संसार, बुध रोवे दए दुहाईआ। बुध निमाणी बाली वेले अन्त जाए हार, तन श्रृंगार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। बुध बलि बलिवान, तत्व तत्त विच समांयदा। आपणा खेल जाणे भगवान, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। कोटन कोटी लभ्भदे फिरन निशान, हरि का निशाना कोई ना पांयदा। कोटन कोटी रसना गाण, बत्ती दन्द जिह्वा रसन हिलांयदा। कोटन कोटी अन्दर वड़ वड़ बैठे जगत मकान, आसण सिँघासण ना कोई विछांयदा। कोटन कोटी चढ़ चढ़ थक्के विच जहान, हरि भगवान दिस ना आंयदा। कोटन कोटी लोकमात झुलायण निशान, अन्त निशान कोई रहिण ना पांयदा। सर्ब जीआं दा दाता श्री भगवान, मन मति बुध जीआं दाता झोली पांयदा। आपे देवणहारा जगत ज्ञान, जगत जुगती आप जणांयदा। आपे शक्ती खिच्चे करे सुंञ मसाण, धूंआँधार आप वखांयदा। आपे मारनहारा बाण, आपे चिल्ला कमान उठांयदा। आपे ढहि ढहि मंगे चरन ध्यान, चरन चरनोदक आप वखांयदा। आपे देवे माण अभिमाण, माया ममता आपे मोह वधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणी होंद आपणे विच टिकांयदा। साचा भाणा हरि करतार, कादर करता कुदरत खेल खिलाईआ। बुध विबेकी कर त्यार, बावन भेखी भेख वटाईआ। अलख अलेखी खेल न्यार, अलक्ख अगोचर खेल खिलाईआ। वेखा वेखी जाणे संसार, पेखत दरस ना कोई पाईआ। देस परदेस होए ख्वार, नर नरेश दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द भाणा साचा राणा धुर फ़रमाना कोट ब्रह्मण्ड विच वरभण्ड, जेरज अंड जीव जन्त साध सन्त पशू पंखी पंछी आपणे हुक्मे रिहा फिराईआ।

★ २६ अस्सू २०१६ बिक्रमी दरबार विच दिल्ली ★

निरगुण नूर हरि निरँकार, एका एक एकँकारया। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह भेव ना आ रिहा। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ रखा रिहा। अबिनाशी हरि भगवन्त, हरि हरी वड्डी वड्याईआ। खेले खेल आदि अन्त, अकल कल आप अख्वाईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग करता नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी बणाए बणत, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। करोड़ तेतीसा मणीआ मंत, सुरपति राजा इन्द रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला अकल कल धार, आदि जुगादि समाया। जोती नूर इक्क उज्यार, धुन अनादी जैकारा लाया। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, आप आपणा खेल खिलाया। वसणहारा सचखण्ड दुआर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। सच सिँघासण जोत उज्यार, पुरख अबिनाशी डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाया। घर सुहञ्जणा पुरख अकाल, एका एक रखांयदा। निरगुण दीपक आपणा बाल, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, चार दिवार ना कोई बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप आप आपणी रचन रचांयदा। शाहो भूप हरि सच सुल्तान, पारब्रह्म अख्वाईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जोती नूर नूर महान, एका एक डगमगाईआ। ना कोई दूसर दिसे होर निशान, रवि ससि ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपणा रंग आपे रंग, हरि साचा वेख वखांयदा। आपणी सेजा बैठ पलँघ, आप आपणा आसण लांयदा। आप आपणा रक्खे संग, सगला संग आप निभांयदा। आप आपणी मंगे मंग, आपणी भिच्छया आपे झोली पांयदा। आप आपणा वजाए मृदंग, आप आपणा ताल रखांयदा। आप आपणा दर दुआर आपे लँघ, आप आपणा मेल मिलांयदा। आदि जुगादि ना होए भंग, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, सर्ब कल आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, गगन पताल वेख वखांयदा। निज घर सच सिँघासण, हरि हरि आप सुहांयदा। आपे बैठ सर्ब

गुण तासण, गुणवन्ता गुण गुण वेख वखांयदा। पावे सार पृथ्मी आकाशन, आकाश आकाशां फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला हरि गोपाला, रूप अनूप आप वटांयदा। आदि शक्ति रूप भवानी, निरगुण धार चलाईआ। आदि जुगादी जोत नुरानी, नूरो नूर डगमगाईआ। परम पुरख शाह सुल्तानी, शहिनशाह आप अख्वाईआ। पावे सार दो जहानी, चौदां लोक भेव खुल्हाईआ। चौदां तबकां जगत विकानी, आप आपणा वणज कराईआ। धुरदरगाही दाता दानी, एका वस्त रिहा वरताईआ। पारब्रह्म प्रभ सच निशानी, लोकमात दए उपजाईआ। निरगुण माया बंध बंधानी जोड़ जुड़ानी, आपे जाणे आपणी खाणी, आप आपणा ल्ए रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप निरगुण धार निरगुण रंग रेख ना कोई जणाईआ। निरगुण नर हरि नरायण, नर हरि आप अख्वांयदा। हरि का भेव कोई ना सके कहिण, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। आपे जाणे आपणा लहिण देण, देणा लहिणा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाउँ धरांयदा। अजूनी रहित सति पुरख निरँजण, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जन भगतां नेत्र नाम पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्द सुहेला सखा सखाई सज्जण, साख्यात रूप वटाईआ। त्रिलोकी नाथ सगला साथ चरन धूढ़ कराए साचा मजन, भव सागर पार कराईआ। ओम सोइम निरगुण निराकार रूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आप हंढाईआ। आपणी धार आपे बन्न्ह, आपे वेख वखांयदा। आपे लेखे लाए रवि ससि, चन्न मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। आपे लक्ख चुरासी मेला हस्स हस्स, तोड़ विछोड़ा आप करांयदा। आपे हरिजन अन्दर जाए वस, आप आपणी बूझ बुझांयदा। तीर निराला मारे कस, शब्दी बाण इक्क उठांयदा। आपे पंज विकारा देवे झस्स, पंचम तत्त ना कोई सुणांयदा। आपे मार्ग साचा देवे दस्स, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। आपे आत्म रसीआ देवे रस, आत्म अन्तर निझर झिरना आप झिरांयदा। आपे भगत भगवन्त होए वस, साची डोरी नाम बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर हाज़र हज़ूर हरि साचा वड वड्याईआ। जन भगतां आसा मनसा पूर, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। धुन अनादी अनहद तूर, आत्म अन्तर दए सुणाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, मस्तक टिक्का मेटे झूठी शाहीआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मीता इक्क अतीता, पतित पुनीता आपे वेख वखाईआ। पतित पुनीता पतित पावण, पारब्रह्म अख्वांयदा। धारे भेख जिउँ बल बावन, वल छल धारी आप हो जांयदा। आपे तोड़णहारा लंका गढ़ हँकारी मेट मिटाए रामा रावण, बाण निराला आप लगांयदा।

आपे ग़रीब निमाणयां बणे ज़ामन, कान्हा कंसा आप खपांयदा। आपे हरिजन पकड़े दामन, आपणा पल्ला आप फड़ांयदा। आपे मेटणहारा कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। आपे वेखणहार अन्धेरी शामन, जगत आपणी जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर पसार, जुगा जुगन्तर पावे सार, लोकमात लै अवतार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस सरगुण धार, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी मूर्त निरँकार, पंज तत्त डेरा आपणा आप लाईआ। सति सरूपी बोल जैकार, एका नाअरा दए सुणाईआ। सो पुरख निरँजण करनेहार, करता कादर आप अख्वाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका रूप सच्ची सरकार, दूजी कुदरत वेख वखाईआ। तीजा नेत्र दए उग्घाड़, जन भगतां दया कमाईआ। चौथे घर देवे वाड़, चौथे पद आप समाईआ। पंचम मेला कन्त भतार, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। छेवें छप्पर ना कोए देवे सहार, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण हो उज्यार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह एका एक अख्वाईआ। अट्ठां तत्तां पकड़े बांह, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए सलाहीआ। नौ दर वेखे थाउँ थाँ, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। घर विच घर दए मिला, घर बैठा सहिज सुखदाईआ। ठंडा सीता मेला लए मिला, डूँघी भँवरी काया कँवरी टेडी बंक पार कराईआ।
१०६३ त्रबैणी नैणी फेरा पा, आप आपणा दरस दिखा, अमृत आत्म सर सरोवर साचा जाम दए प्या, कागों हँस बणाईआ। बज़र १०६३
कपाटी दए तुड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। आत्म सेजा जोत जगा, निरगुण मेला मेल सहिज सुभाईआ। सुरत सवाणी पकड़े बांह, पंचम मीता वड्डी वड्याईआ। सखीआं सच्चा मंगल गा, एका राग अलाईआ। धन्नवन्ती धन्न सोभावन्ती दर घर साचे सोभा रही पा, आत्म वज्जी वधाईआ। पुरख पुरखोतम मिल्या बेपरवाह, विछड़ कदे ना जाईआ। सच घर करे कराए सच न्याँ, सच सच्चा वड वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरि पकड़ उठावे बांह, पार किनारे आप लगाईआ। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, ग़रीब निमाणयां आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग जुग रचना हरि निरँकार, आपणी आप करांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, घर घर डेरा लांयदा। पंज तत्त मीता मीत मुरार, निरगुण सरगुण आप अख्वांयदा। ठांडा सीता ठांडी धार, अमृत कँवला कँवल भरांयदा। शब्द अनादी एका इक्क जैकार, एका राग अलांयदा। आपे रामा आपे शब्द इष्ट देव रूप आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर चलाए रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी देवे मथ, नाम मधाना एका पांयदा। जन भगतां सन्तां जणाए

अकथना अकथ, रसना जिह्वा ना कोई सुणांयदा। पंच विकारा पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठांयदा। गढ़ हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, रसना जिह्वा ना कोई सुणांयदा। पावे सार काया मन्दिर मट्ठ, शिवदुआला वेख वखांयदा। वसणहारा तीर्थ अठसठ, जल धारा रूप वटांयदा। जोत जगाए लट लट, जोत ज्वाला वेख वखांयदा। खोलणहारा साचा हट्ट, चौदां लोक आप खुलांयदा। जन भगतां तन पहनाए साचा पट्ट, एका बस्त्र हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चढ़ाए औखे घाट, हरि का पौड़ा इक्क वखांयदा। हरि का पौड़ा इक्क अटल, हरि साचा आप लगाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटल, दिस किसे ना आईआ। जल थल महीअल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ हर घट अन्दर रिहा रल, नूरी नूर डगमगाईआ। आकाश प्रकाश पुरख अबिनाशी जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पल, आप आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग वरते आपणी कल, अछल अछल्ल भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी काया बूटा वेखे लग्गा फल, चारों कुन्ट फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, कादर करता आप अख्वांयदा। लोकमात वेख पसारा, वरभण्डी फोल फुलांयदा। जेरज अंडी दए सहारा, एका रंग रंगांयदा। करनी करता हरि करनेहारा, आपणी करनी किरत कमांयदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, आप आपणा रूप दरसांयदा। भगती भगत कर पसारा, भागवत इक्क दरसांयदा। नाम भगौती खिच कटारा, साचा खण्डा नाम चमकांयदा। ब्रह्मण्डी पावणहारा सारा, भेख पखण्डा मेट मिटांयदा। विभचार दुराचार जीव होया नार रंडा, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। करनहारा खण्ड खण्डा, खण्डण नीका दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, तत्व तत्त बुझांयदा। अग्नी अग्ग चारों कुन्ट रही मघ, अग्गे सके ना कोई बुझाईआ। कूड़ क्रिया जगत रही जग, जूठ झूठ आपणा हुलारा रही हिलाईआ। साधां सन्तां जीवां जन्तां धीरज जत ना दिसे कोई तग, सति सन्तोख ना कोई धराईआ। मानस मानुख अठसठ तीर्थ सरोवर होए कग, हँस रूप ना कोई जणाईआ। जोगी जती सती जंगम सन्यासी वैरागी त्यागी कोई ना दर्शन पाए उप्पर शाह रग, तन ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जटा जूट धार सिर पायण छार, चारों कुन्ट होइण खुआर, प्रभ अबिनाशी दिस ना आईआ। बिन हरिभगत ना चढ़े कोई सच दुआर, अद्धविचकारे खायण मार, कन्ढा पार ना कोई वखाईआ। कलिजुग तुट्टा फुल्ल संसार, काया नाता झूठा मोह प्यार, माया कुठा जीव हँकार, नाम रत्न अमोलक हीरा साची वस्त झोली कोई ना पाईआ। मात पित भाई भैण साक सैण धीआं पुत्तर वज्झा जंजीर, वेले अन्त ना कोई कटाईआ। सच सुच्च सीस ना बद्धा चीर, साचा तिलक ना मस्तक लाईआ। साचे पंडत हथ्थ ना आया

रविदास कसीरा, गंगोतरी गंगा बैठे तारीआं लाईआ। त्रबैणी नैणी वेख्या नीर, सुरस्ती संगम कोई ना नुहाईआ। जीवां जन्तां हउमे हँगता कढ्ढे ना कोई पीड़, दिवस रैण रही सताईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे अमृत सीर, ठांडा सीता सांतक सति सति वरताईआ। कलिजुग अन्तिम आई अख़ीर, धरत मात कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। धरत मात हाहाकार, दिवस रैण रही कुरलाईआ। चारों कुन्ट जीव विभचार, कुकर्मी कुकर्म रहे कमाईआ। धीआं भैणां करन वपार, माता पूत सेज हंढाईआ। साध सन्त ना कोई धार, घर घर बैठे धूंणीआँ ताईआ। वरनां बरनां भुल्लया इक्क निरँकार, निरगुण इष्ट ना कोई मनाईआ। देवे देव देव देवा आत्मा सर्ब संसार, वास्तक रूप इक्क समाईआ। विष्नूं खेल करे सिरजणहार, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। ब्रह्मा वेता नेत्र नैण रिहा उग्घाड़, चारों कुन्ट राह तकाईआ। शिव शंकर गल बाशक तशका पाए हार, हथ्थ त्रिशूल रिहा उठाईआ। करोड़ तेतीसा बोल जैकार, सुरपति राजा इन्द नाल रलाईआ। गण गंधर्ब रहे पुकार, किन्नर यच्छप नाच कराईआ। विष्नूं वंसी खेल अपार, वड दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निहकलंक लए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ।
१०६५ लक्ख चुरासी दए अधार, आप आपणे रंग रंगाईआ। कामी क्रोधी लोभी मोह मेट मिटाए जगत हँकार, हँकारी गढ़ रहिण ना पाईआ। जन भगतां इक्क शृंगार, नाम बस्त्र इक्क छुहाईआ। सोलां इच्छया पार किनार, सोलां कलीआं आप वखाईआ। १०६५
०८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दहि दिशा चार कुन्ट ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज लोआं पुरीआं गगन पतालां वेख वखाईआ। हरिजन पर्दा हरि हरि खोल्लया, आत्म ब्रह्म ज्ञान। काया मन्दिर बहि बहि बोल्लया, धुरदरगाही श्री भगवान। नाम कंडे साचे तोल्लया, आपणा बोला बोले सच फ़रमान। लेखा जाणे हौली हौलया, लेखा लिखे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म आपे मौलया, आपे जोती नूर महान। जोती नूर महान उजाला, नूरो नूर डगमगाईआ। परम पुरख प्रभ जोत उजाला, निरगुण निरगुण विच समाईआ। दीन दयाला, दर्द दुःख भय भञ्जण आप अख्वाईआ। चरन दुआर रखाए काल महांकाला, काल दयाल आपणा नाउँ धराईआ। जन भगतां तोड़े जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जुग जुग मात बणे दलाल, शब्द विचोला नाल रलाईआ। सन्त सुहेले आपे भाल, आप आपणे रंग रंगाईआ। काया मन्दिर सच सच्ची धर्मसाल, दर दुआर दए सहाईआ। जोत जगाए काया माटी खाल, दीपक दीप करे रुशनाईआ। वेखणहारा गगन थाल, मस्तक मस्तक डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँजण आप जगाईआ। जोत निरँजण दीप उज्यार, काया गढ़ सुहांयदा। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, धूंआँधार

ना कोई वखांयदा। कमलापाती मीत मुरार, आप आपणा संग निभांयदा। दिवस रैण करे प्यार, गुरमुखां रंग रंगांयदा। लुट्ट ना जाए कोई विच संसार, ठग चोर यार नेड़ ना आंयदा। स्वच्छ सरूपी देवे दरस अगम्म अपार, तीजा नेत्र लोचण नैण आप खुल्हांयदा। अनहद धुन सच्ची धुन्कार, रागी राग आप अल्हांयदा। पंचम सखीआं मिल मिल गायण मंगलाचार, वाह वाह साचा शब्द चलांयदा। नारी कन्ता मेल भतार, कन्त सुहागी रूप वटांयदा। दर सोहे बंक दुआर, घर साचा इक्क वखांयदा। सोभावन्ती होई नार, पुरख निरँजण आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे दर, जगत विछोड़ा आप कटांयदा। जगत विछोड़ा देवे कट्ट, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। आप चढ़ाए औखे घाट, नाम चप्पू लाईआ। नेड़े दस्से आपणी वाट, बेहंगम चाल इक्क रखाईआ। सच सरोवर वखाए तीर्थ ताट, निर्मल धारा आप वहाईआ। चौदां चौदां खुल्हाए हाट, चौदां चौदां वणज कराईआ पुरख अबिनाशी खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत नरायण नर, नर आपणा रूप वटाईआ। रूप वटंदड़ा पुरख सुल्तान, परम पुरख आप अख्वांयदा। धाम सुहंदड़ा हरि मेहरवान, जिस घट आसण लांयदा। जोत जुगन्दड़ा नूर महान, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। शब्द सुनंदड़ा धुर फ़रमान, आपणा हुक्म अल्हांयदा। रंग रगन्दड़ा दो जहान, नाम रंगण इक्क चढ़ांयदा। गुरमुख उठंदड़ा देवे दान, दाता दानी दान झोली पांयदा। सखीआं मलंदड़ा साचा काहन, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। साची सुरती सीता मेला राम, कलिजुग बनबास इक्क वखांयदा। नानक गोबिन्द आपे पकड़े दाम, गुर शब्दी बंधन पांयदा। ईसा मूसा देवे सच पैग़ाम, अजराईल ज़बराईल मेकाईल असराफील आपे हुक्म सुणांयदा। मुहम्मद मेटे अन्धेरी शाम, नूरी जल्वा नूरो नूर डगमगांयदा। चार यारी लेखा जाणे काया चाम, चन्द सतार डगमगांयदा। मुला शेख़ मुसायक पीर वसणहार नगर ग्राम, कलमा नबी अमाम आप रलांयदा। हक्क हकीकत फड़ लगाम, शरअ शरीअत आप दौड़ांयदा। आबेहयात प्याए जाम, ऐहबाब रबाब आप वजांयदा। बेऐब परवरदिगार करे कराए आपणा काम, ख़ालक ख़लक आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा वेस वटांयदा। शरअ शरीअत हक्क हलाल, हक्क हकीकत फोल फुलाईआ। नूर इलाही जल्वा जलाल, हरि रहिमत विच समाईआ। कायनात एका देवे साचा धन माल, कलमा कलमा करे पढ़ाईआ। काया काअबा वेखे मार झात, दो दोआबा खोज खुजाईआ। नूर इलाही सज्जण साक, मेहरबान वड वड्याईआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर आपे वेखे चढ़ चढ़ आपणे राक, आपणा घोड़ा आप दौड़ाईआ। चौदां तबकां खोल्हे ताक, सति सति वंड वंडाईआ। अन्तिम कलिजुग आप सुआए आपणी खाट, आपणा लहिणा देणा दए चुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। बेपरवाह अलाह, एका एक अख्वांयदा। आपे बणया सच मलाह, उम्मती बेड़ा आप चलांयदा। आपे रहिमत रहिमान रहीम रिहा अख्वा, महिबान नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रंग तेरे संग तेरी सेजा वेख पलँघ, तेरे नाल प्रनांयदा। कलिजुग तेरा तेरा रंग, तेरा रंग चढ़ाईआ। सदी सदीसा मंगी मंग, एका सिला लगाईआ। चौदां चौदां लाया अंग, अंगीकार दिस ना आईआ। किंगरे किंगरे वज्जे मृदंग, चारों कुन्ट कूके दए दुहाईआ। ऐली अल्ला कस्सया तंग, तुरंग आप दौड़ाईआ। कलिजुग कूड़ा मुक्कया पन्ध, अगला लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दाता सूरा सरबंग, सर्ब गुण आप अख्वाईआ। गुणवन्ता गुण करनेहार, हरि सज्जण मीत मुरारया। जुग जुग भगतां दए सहार, तोड़णहारा गढ़ हंकारया। सतिजुग त्रेता द्वापर पाए सार, अन्तिम आई कलिजुग अन्तिम वारया। खुल्ह्ड़े केस सीस जगदीश वेख वखा रिहा। चारों कुन्ट हाहाकार, हरि का रूप ना कोई दिसा रिहा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ होया विभचार, धीरज मति ना कोई धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अन्दर वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरा अन्दर फोल, हरि साचा वेख वखाईआ।

१०९७ १०९७

०८ ०८

तेरी माया तेरा घोल, तेरा डंक वजाईआ। तेरा जूठ तेरा झूठ तेरा कौल, तेरी धार सहाईआ। तेरा काम तेरा क्रोध तेरे कोल, तेरा रंग रंगाईआ। तेरी माया तेरी ममता कढ्ढे तेरा पोल, तेरा पल्लू फोल फुलाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां सच वस्त ना रक्खी किसे कोल, चारे कुन्टां ख़ाली रहे वखाईआ। कलिजुग अन्तिम मारया ढोल, राए धर्म लए अंगड़ाईआ। चित्रगुप्त आपणा लेखा रिहा फोल, सम्मत सतारां दए वखाईआ। लाड़ी मौत करे कौल, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंग रंगाईआ। पुरख अगम्मा धुर दरगाही सचखण्ड निवासी रिहा बोल, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। विष्नूं तोले साचा तोल, देवणहार रिज़क सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। लहिणा देणा हरि भगवान, कलिजुग मूल चुकावणा। जूठा झूठा मेट निशान, सच सुच्च रंग रंगावणा। कूड़ी दिसे ना कोई दुकान, हरि का नाम एका हट्ट वकावणा। ना कोई राज ना राजान, शाह सुल्तान ना कोई अख्वावणा। ना कोई दर ना दरबान, निउँ निउँ सीस ना कोई झुकावणा। ना कोई नगर ना गराम, साचा खेड़ा ना किसे वसावना। ना कोई माया ममता आसा तृष्ना वसे ताम, हउमे रोग ना किसे सतावना। पारब्रह्म अबिनाशी करता जुग जुग करे आपणा काम, दूसर कोए ना संग रलावणा। आपणा काम आपे कर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण जोत धर, हँ ब्रह्म करे

कुड़माईआ। सो शेर शेर पाए डर, जै हँ जम्बक रिहा डराईआ। सिँघ रूप नौ खण्ड पृथ्मी अन्दर जाए वड़, लक्ख चुरासी भय भयानक दरस दिखाईआ। विष्नूं वंसी खेल कर, आप आपणा खेल खिलाईआ। भगवन तोड़णहारा गढ़, कलिजुग गढ़ रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेले विच्चों फड़, लक्ख चुरासी विच्चों लए तराईआ। जोत जगाए बहत्तर नड़, दिवस रैण करे रुशनाईआ। जगत विद्या ना कोई जाए पढ़, आत्म विद्या करे पढ़ाईआ। दरस दखाए अग्गे खड़, राम कृष्न ईसा मूसा संग मुहम्मद नानक गोबिन्द आप हो जाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना जड़, पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण जोती जोत डगमगाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। शत्रु हो ना सके कोई फड़, खण्डा तीर कटार घाओ ना कोई लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अग्गे कोई ना सके अड़, हरि का शब्द तीर कटार मारे मार, मारनहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम तेज कटार, तिक्खी धार विच संसार, एकँकार निरगुण धार आपणी आप चलाईआ। निरगुण खण्डा तीर कमान, शब्द शब्दी हथ्थ उठांयदा। पावे सार दो जहान, आप आपणा खेल खिलांयदा। मेट मिटाए शाह सुल्तान, राज राजानां ख़ाक मिलांयदा। जन भगतां देवे साचा धन नाम, भण्डारा झोली पांयदा। रसना जिह्वा दन्द बतीस झूठा गाण, कर किरपा मेल मिलांयदा। अजपा जाप करे परवान, सुन्न समाध वेख वखांयदा। जोग अभ्यास करे पछाण, राग नाद फोल फुलांयदा। पतित पावण एका एक श्री भगवान, इक्क टेक रघुनाथ धरांयदा। चार वरन वखाए इक्क निशान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका गोद बिठांयदा। वरन बरन सर्ब मिट जाण, जिस जन आत्म ब्रह्म जणांयदा। निजानंद नंद कर परवान, परमानंद वखांयदा। दरस वखाए गोपी काहन, मण्डल रास आप नचांयदा। सीता राम वेखे बीआबान, रावन लंका गढ़ आप तुड़ांयदा। नानक गोबिन्द कर परवान, नाम सति सति नाम दृढ़ांयदा। भगत भगवन्त वसण इक्क मकान, एका घर वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगत जगत भगत आपणे हथ्थ रखांयदा।

✪ पहली कत्तक २०१६ बिक्रमी १५ कत्तक दे नवित्त दरबार विच जेठूवाल ✪

हरि बेअन्त बेपरवाह, आदि निरँजण जोत अकालया। अबिनाशी करता सच मलाह, पारब्रह्म पुरख सुल्तानया। देवणहारा सच सलाह, शब्द सुणाए राग तरानया। जपावणहारा एका नाँ, नाउँ निरँकार आप धरानया। देवणहारा साचा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहानया। पकड़नहारा साची बांह, निरगुण रूप श्री भगवानया। बणनहारा पिता माँ, एक एकँकारा वेस वटानया।

१०६८
०८

देवणहारा ठंडी छाँ, वड दाता हरि मेहरवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल महानया। आदि जुगादी हरि भगवाना, हरि हरि रूप समाईआ। दाता दानी वड बलवाना, एकँकारा नाउँ धराईआ। सच तख्त सच सुल्ताना, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। एका नूर नूर नुराना, मूर्त अकाल डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वड वड्याई हरि शहिनशाह, सति पुरख अख्वांयदा। आपणे भाणे रिहा समा, भेव कोई ना पांयदा। सच सिँघासण आसण ला, साचा हुक्म सुणांयदा। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणांयदा। रवि ससि सेवा ला, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जोती नूर डगमगा, आकाश प्रकाश वखांयदा। हरि सुल्ताना बेपरवाह, घर साचे सगन मनांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद सुहांयदा। सुत्त दुलारा आप उपजा, शब्दी हुक्म जणांयदा। आपणी सेवा आपे ला, आपे कार करांयदा। आपणा दर आप सुहा, आपे वेख वखांयदा। आपणा मन्दिर आप बणा, आपे सेज विछांयदा। आपणी नारी आप अख्वा, आपे कन्त हंढांयदा। आपणा रंग आप रंगा, रंग रंगीला आपे वेख वखांयदा। आपणा संग आप निभा, सगला संगी आप हो जांयदा। आपणा तुरंग आप दुड़ा, आपे फेरा पांयदा। आपणी मंगण आप मंगा, आपे भिच्छया पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एकँकार अकल कल आपे धार, कुलवन्ता आप अख्वांयदा। अकल कला कल हरि निरँकार, पारब्रह्म सुल्तानया। आदि जुगादी खेल अपार, पुरख अबिनाशी वाली दो जहानया। जोती नूर नूर उज्यार, घर दीपक इक्क प्रधानया। साचा सोहे इक्क दुआर, सचखण्ड वासी वसे एक सच टिकानया। थिर घर मेला इक्क निरँकार, मीत मुरारा दर परवानया। सर्ब घट वासी खेल अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटानया। वेस अव्वला इक्क अकल्ला, हरि हरि आप करांयदा। आपणा आसण आपे मल्ला, आपे वेख वखांयदा। आपणी जोती आपे रला, आपे शब्द उपजांयदा। आपणे दीपक आपे बला, आपे जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप सति सरूप आपे आप उपांयदा। सति सरूप हरि प्रकाश, अनुभव रूप वटाया। आदि जुगादि ना जाए विनास, नेत्र नैण ना कोई वखाया। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोई धराया। रवि ससि ना दासी दास, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा ल्ए उपाया। आपणी बणत आप बणाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा हुक्म आप सुणाए, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। आप आपणा अंग लगाए, अंगीकार आप हो जाईआ। आप आपणा मृदंग वजाए, सच मृदंग हथ्थ उठाईआ। आपणे दर

आपणी मंग आप मंगाए, आपे भिच्छया झोली पाईआ। आपणा संग आप निभाए, घर साचे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर आपणे अलख जगाईआ। अलख निरँजण अलख जगा, एका मंग मंगांयदा। धुरदरगाही झोली आपणी आपे अग्गे रिहा डाह, आपे वेख वखांयदा। आपे दस्सणहारा राह, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आपे हुक्म दए सुणा, आपे सेव कमांयदा। आपे आपणा नाउँ लए वटा, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। आपे सरगुण मेला सहिज सुभा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पांयदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक एकँकारया। जगे जोत आदि निरँजणा, नूर नूर उज्यारया। पारब्रह्म दर्द दुःख भय भञ्जणा, परम पुरख इक्क अख्वा रिहा। दो जहानी साचा सज्जणा, धुर दरगाही आसण ला रिहा। आप चलाए आपणा जहाजणा, आपणा बेड़ा आप भरा रिहा। आपे करे आपणा काजना, करता पुरख आप अख्वा रिहा। आपे मारे आपणी वाजणा, आपे आपणा मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटा रिहा। रूप वटाए हरि करतार, आपणी दया कमांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, निराकार आप हो जांयदा। आपणी कँवरी भँवरी होया पार, आपे खेल खिलांयदा। आपे जोत उजिगारी करे उज्यार, सच समग्री विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अंस एका बंस आपे आप उपांयदा। आपणी अंस आप उपा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। विष्नूं रूप आप वटा, विश्व नाउँ धराईआ। चतुर्भुज आप अख्वा, आप आपणा खेल खिलाईआ। आदि शक्ति जोत जगा, जोती जोत जोत टिकाईआ। आपणा मृदंग आप वजा, आपे मंगल गाईआ। आपणा दर आप सुहा, आपे वेखण आईआ। आपणा बूटा आपे दए लगा, आपे हरया सिंच कराईआ । आपणे चरन चरनोदक दए प्या, एका जाम वखाईआ। सच प्याला दए भरा, घर साचे दए टिकाईआ। आपणी दृष्ट आपे दए पा, पारब्रह्म हरि वड्डी वड्याईआ। नाभी वेखे सच्चा थाँ, साची धर्मसाल इक्क रखाईआ। आपणी इच्छया विच भरा, आपणे रंग रंगाईआ। भिच्छया पावे बेपरवाह, विष्न झोली डाहीआ। एका फुल दए खिला, कँवल कँवला नाउँ धराईआ। सताई युग सेवा ला, नौ नौ करे कुड़माईआ। नौ नौ वेख वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। विष्नूं वंसी हरि हरि मीता, पारब्रह्म अख्वांयदा। एकँकार इक्क अतीता, आदि जुगादि समांयदा। सचखण्ड बैठ बणाए आपणी रीता, दूसर धाम ना कोई जणांयदा। अबिनाशी करता पतित पुनीता, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। सति सन्तोखी ठंडा सीता, सति सतिवादि धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। दया निध गहर गुण सागर, हरि हरि आप अख्वांयदा। विष्नूं वेखे साची गागर, अमृत जल भरांयदा। निहकर्मी करे कर्म उजागर,

कँवल कँवला फुल्ल खिलांयदा। साचा वणज कराए सच सौदागर, साचा हट्ट वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ देवे आदर, विष्नूं माण धरांयदा। ब्रह्मा मेला करता कादर, रूप अनूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इच्छया वेख वखांयदा। आपणी इच्छया हरि हरि रंग, पारब्रह्म रंगाईआ। आपे बैठ सच पलँघ, आपे आसण लाईआ। आप वजाए सच मृदंग, आपे हुक्म सुणाईआ। आपे लाए आपणे अंग, आपे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। ब्रह्मा वेता पारब्रह्म कुल, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म अंस जणाईआ। विष्नूं खिड़या साचा फुल्ल, खिलावणहारा बेपरवाहीआ। एकँकारा पाए मुल, करता कीमत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे कंडे देवे तोल, तोलणहारा आप अख्वाईआ। आपे देवे नाम अनमुल्ल, आपणा नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे वज्जे वधाईआ। वज्जी वधाई सच घर, हरि साचे सगन मनाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आपणा दर सुहाया। विष्नूं अन्दर आपे वड़, आपणा बीज आप टिकाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, रक्त बूंद ना कोई रखाया। आपणे पौड़े आपे चढ़, एका मन्दिर आप सुहाया। आपणा फड़ आपे लड़, आपे बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराया। आपणा वेस आप कर, आपे खेल खिलांयदा। विष्नूं वंसी वसे दर, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। ब्रह्म सरन सरनाई गया पड़, सरनगत इक्क वखांयदा। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़, घड़नहार भेव कोई ना पांयदा। आपणी लाए आपे जड़, आपे बणत बणांयदा। धूंआँधार आपे खड़, प्रकाश प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटांयदा। आपणा अंग आप कट्ट, आपे वेख वखाईआ। एका रूप साचा कट्ट, विष्नूं वेल वधाईआ। आपे ब्रह्म कर प्रगट, आपे दए वड्याईआ। आपे शंकर खेल बाज़ीगार नट, भोले नाथ ल्ए उठाईआ। आपे वसे घट घट, लिव अन्तर आप टिकाईआ। आप जणाए आपणा हट्ट, साचा दुआरा इक्क खुल्हाईआ। दोहां मारे एका सट्ट, तीजे दर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्नां विचोला आपे बण, आप आपणा मेल मिलाईआ। हरि विचोला बेअन्त, भेद कोए ना पांयदा। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, कन्त कन्तूहल वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप सुहांयदा। विष्नूं ब्रह्मा शंकर मेला, सति पुरख निरँजण आप करांयदा। शब्द बणाए गुरू गुर चेला, दर साचे सोभा पांयदा। आपे बणे सज्जण सुहेला, साची सिख्या सिख समझांयदा। दर घर साचे चाढ़े तेला, आदि निरँजण सगन मनांयदा। आपणा खेल पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, दूसर ना कोई वेख वखांयदा। आपे वसे रंग नवेला, धाम

अवल्लड़ा अगम्म अगम्मड़ा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या हरि करतार, विष्नूं ब्रह्मा शिव सुणाईआ। आप उठाया करे ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। सचखण्ड वस्सया निरगुण धार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द सुरत कर प्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। लोआं पुरीआं कर आकार, बैठा आसण लाईआ। आपणी इच्छया भरे भण्डार, साची वस्त इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमान, हरि साचा आप जणांयदा। तिन्नां वखाए इक्क मकान, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचा आप सुणाईआ। मेरा हुक्म तेरा फ़रमान, तेरी धार बंधाईआ। मेरा अहार तेरा पीण खाण, मेरा दरस तेरी वड्याईआ। मेरा अस्थान तेरा मकान, तेरा ध्यान चरन टिकाईआ। मेरा निशान तेरा गाण, अन्तर तेरे बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। विष्नूं सुण शब्द जैकारा, आपणी लए अंगड़ाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, पारब्रह्म तेरी वड वड्याईआ। तेरे घर सच भण्डारा, हउँ सेवक रघुराईआ। तूं दाता बख्शणहारा, हउँ भिखक आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तूं वणज कराए सच वणजारा, तेरा वणज तेरे हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरनी तेरी गया पड़, एका अक्खर दए बुझाईआ। विष्नूं रोवे करे पुकार, अग्गे सीस झुकांयदा। तेरे अन्दरों मैं आया बाहर, तेरी जोत डगमगांयदा। तेरा शब्द मेरा प्यार, तेरा घर वसांयदा। तेरा चरन मेरा दुआर, साचा रूप वटांयदा। तेरा प्रेम मेरा अहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अग्गे सीस झुकांयदा। विष्नूं दोवें जोड़ करे अरदास, प्रभ साचे सुण बेनन्तीआ। सदा वसदा रहा तेरे पास, हउँ नारी तूं साचा कन्तीआ। तेरा दीपक होए मेरे घर प्रकाश, तेरा नाम साच सोगंतीआ। तेरा रूप मेरे अन्दर रक्खे वास, धीरज धीर इक्क बधंतीआ। आदि जुगादि रहवां मैं दास, दूसर दर ना कोए सुहंतीआ। हरि निरँकार ना करी निरास, सुण साहिब बेनन्तीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे दर सोहे तेरी धन्न धन्न होए सोभावन्तीआ। सोभावन्ती नार सुहागण, विष्नूं कन्त करे कुड़माईआ। पारब्रह्म तेरा वैरागण, मेरे घर वज्जे वधाईआ। ब्रह्मा बण जाए नाल लागी लागन, साचा सगन मनाईआ। भोले नाथ उठ उठ जागन, नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कौण दुआर होए कुड़माईआ। विष्नूं मंगे बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। निरगुण तेरा करया आकार, सरगुण वेस वटांयदा। कौण रूप होए उज्यार, कौण रूप वेख वखांयदा। आदि अन्त कोए ना जाणे तेरी धार, तेरा भेव कोए ना पांयदा।

तूं दाता दातार वड सुनणेहार, हउँ सेवक इक्क सुणांयदा। ना कोई दूसर दिसे पसार, तुध बिन अवर ना कोए वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगण आया तेरा दर तेरा विछोड़ा मोहे ना भांयदा। निरगुण विष्नूं दाता होड़, साची सिख्या इक्क समझांयदा। निरगुण सरगुण जोड़ा जोड़, साचा खेल आप खिलांयदा। सचखण्ड दुआरे तैनूं गया बौहड़, तेरा रूप आप वटांयदा। तेरे मन्दिर लाया पौड़, उप्पर चढ़ वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या लैणी सिख, हरि साचा सच समझाईआ। विष्नूं तेरी झोली पावे भिख, दाता दानी आप अख्वाईआ। तेरा लेखा आपणे दुआरे पहलों देवे लिख, दूजी रचन फेर रचाईआ। तेरा नेत्र नैण आपे लए पेख, घर आपणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। विष्नूं सुण उठ बल धार, हरि साचा करे जणाईआ। नाल उठा ब्रह्मा यार, घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म किरपा करे अपर अपार, देवे ब्रह्मे वड वड्याईआ। शब्द धुन अनादी सच धुन्कार, सुत्त दुलारे सेवा लाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, आपणा हुक्म सुणाईआ। उत्पत करे सर्ब संसार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। शंकर सोया लए उठाल, एका हुक्म जणाईआ। पुरख अबिनाशी बण दलाल, आपणी रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। खेलणहारा पुरख समरथ, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा चरन गया ढठ्ठ, नेत्र नीर नैण वहांयदा। पारब्रह्म दे समझावे मति, कवण रूप रंग रंगांयदा। पुरख अबिनाशी जाए तुठ, आप आपणा खेल खिलांयदा। त्रैगुण माया कर उत्पत, ब्रह्मे झोली पांयदा। बीज बीज्जया साचे वत, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। आपे बूंद आपे रत, आपे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी हरि हरि खेल, वड वड्डा वड्याईआ। आप आपणा करया मेल, आपे मुख छुपाईआ। आपे पंज तत्त चाढ़या तेल, आप आपणा दर सुहाईआ। आपे वसे रंग नवेल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवा रिहा समझाईआ। विष्नूं सेवा साची ला, हरि हरि हुक्म सुणांयदा। देवणहारा रिजक सबा, साची भिच्छया झोली पांयदा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप जाए समा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। शंकर बणया मन्दिर देवे ढाह, पंज तत्त रहिण ना पांयदा। खेले खेल बेपरवाह, आपणी कल वरतांयदा। शब्द सरूपी शब्द जणा, शब्दी शब्द पढ़ांयदा। ब्रह्मा लेखा रिहा मणा, आपणे मुख सलांहयदा। चारे वेदां आप जणा, चारे कूटां वेख वखांयदा। दहि दिशा फेरी पा, लोआं पुरीआं जोत जगांयदा। आपणी वंड आप वंडा, आपे हिस्सा पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रचन रचा, साचा गेड़ बणांयदा। लक्ख चुरासी आप भवा, आपे वेख

वखांयदा। आपणे भाणे रिहा समा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, खेले खेल जुगां जुगन्त आदि अनादि एका एक अख्वांयदा। एका एक एकँकारा, चारे युग गेड़ भुवाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म रूप अपार, दिस किसे ना आईआ। छत्ती युग एका धार, एका कूट सुहाईआ। ब्रह्मा मनवन्तर होए उज्यार, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप सुणाईआ। लेखा लिखणहार गोपाल, कागद कलम ना कोए रखांयदा। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। संग रखाए काल महांकाल, साची सेवा लांयदा। लक्ख चुरासी त्रैगुण जंजाल, जगत जंजाला वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रथ आप चलांयदा। रथ रथवाही वड बलवान, एका एकउँकारया। आपे वेखे मार ध्यान, आप आपणा रूप वटा रिहा। आपे देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा हुक्म आप सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणा रिहा। विष्नूं दाता जीआ दान, देवे रिज़क सबाईआ। दर घर साचे मंगे बण नादान, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। अट्ठे पहर हरि चरन ध्यान, नेत्र नैण राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेख वखाईआ। विष्नूं मंग सचखण्ड, आपणी मंग मंगांयदा। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड खण्ड, भेव अभेद खुल्ांयदा। तूं सुहागी कन्त तेरा विछोड़ा बणाए दुहागण नार रंड, साची सेजा ना कोए हंढांयदा। तेरी करवट ना वेखां तेरी कंड, तेरा वर ना कोए छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे साचा वर, कौण घर मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, विष्नूं वंसी दए समझाईआ। तेरा मेरा सच प्यार, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। भेव ना पाए लक्ख चुरासी जीव जन्त कोई सार, सन्मुख बैठ ना कोए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे एका साचा वर, तेरी करे सच कुड़माईआ। विष्नूं तेरा मेल मिलाउणा, लक्ख चुरासी हो प्रधानया। नौ नौ चार पार कराउणा, ब्रह्मा वेद ना भेव खुल्ानया। अकाल मूर्त रूप वखाउणा, निरगुण जोत जगे महानया। जूनी रहित नाउँ धराउणा, सति पुरख निरँजण वड सुल्तानया। आदि निरँजण सेवा लाउँणा, जोती नूर डगमगानया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वेख वखाउणा, दर साचा इक्क सुहानया। तेरा डंका तेरे नाम लोकमात वजाउणा, प्रगट हो श्री भगवानया। सो पुरख निरँजण आप अख्वाउणा, हँस तेरा रूप पछानया। सोहँ शब्द सच चलाउणा, निरगुण आपणी कल वरतानया। कलिजुग वेला अन्तिम आउँणा, निहकलंक निरगुण रूप प्रगट होए वाली दो जहानया। तेरा मेरा डंक वजाउँणा, तेरा मृदंग मंग तरानया। तेरा बंक आप सुहाउँणा, तेरा राग मेरा गाणया। तेरा बंक आप सुहाउणा, तेरे दर बणे दरबानया।

११०४
०८

तेरा धाम आप वसाउणा, महल्ल अटल वेख महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं दित्ता साचा वर, वेले अन्त करे परवानया। कलिजुग वेला अन्त सुहाए, हरि जोत करे रुशनाईआ। एका विष्नूं रूप वटाए, पंज तत्त श्री भगवानया । तेरा लहिणा दए चुकाए, नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी रक्खणा इक्क ध्यानया। तेरा गहिणा तेरे तन पहनाए, चरन धूढ़ कराए अशनानया। सतिजुग कोटन कोटि वार वेख वखाए, राम राम रूप वटानया। कोटन कोटि गोतम सेवा लाए, कोटन कोटि अहल्लया सिला चरन छुहानया। कोटन कोटि रावन दए खपाए, लंका गढ़ आप तुड़ानया। कोटन कोटि भीलणी बण बण तराए, मंगे आए दर दरबानया। कोटन कोटि सीता ल्ए प्रनाए, सांतक सति श्री भगवानया। हरि का भेव कोई ना पाए, बल बावन राह तकानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलानया। कोटन कोटि कृष्न आत्म देव, कान्हा आपणा रूप वटाईआ। कोटन कोटि राधा करे सेव, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। कोटन कोटि युधिष्टर मंगे मेव, कोटन कोटि अर्जन बाण उठाईआ। कोटन कोटि करे खेल अलख अभेव, कोटन कोटि द्रोपत सुत्त द्रोपती लाज रखाईआ। कोटन कोटि बिप्पर सुदामा गाए रसना जेहव, कोटन कोटि बिदर बैठे राह तकाईआ। कोटन कोटि हँकारी दुर्योधन ना पायण भेव, जूठा झूठा बैठे गढ़ बणाईआ। कोटन कोटि रथ रथवाही बण बण करन सेव,
१११०५ त्रिलोकी नाथ कोट अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल पुरख एकउँकार अजूनी रहित इक्क वड्याईआ। कोटन कोटि बुध ज्ञान, कोटन कोटि अन्तर लिव लाईआ। कोटन कोटि मंगण दान, अग्गे बैठीआं झोलीआं डाहीआ। कोटन कोटि करन अशनान, चरन धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कोटन कोटि वेखे रवि ससि सूरज चन्न भान, सतार मण्डल मण्डप रहे सुहाईआ। कोटन कोटि पवण पाणी कढ्ढुण वगार, कोटन कोटि धरत धवल उप्पर डेरा लाईआ। कोटन कोटि झुलाए निशान, कोटन कोटि ख़ाक समाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा करे प्रधान, कोटन कोटि कलमा रहे पढ़ाईआ। कोटन कोटि मुहम्मद राह तकाण, निगहबान मिहबान बीदो नज़र ना आईआ। कोटन कोटि नानक दर परवान, सचखण्ड बैठे आसण लाईआ। कोटन कोटि दर दरबान, ध्रू प्रहलाद आप सहाईआ। कोटन कोटि गोबिन्द झुलायण निशान, पूत सपूता दए वड्याईआ। कोटन कोटि वेद पुराण, ब्रह्मा वेद व्यासा गए लिखाईआ। कोटन कोटि शास्त्र सिमरत खोल्ह दुकान, लोकमात वेख वखाईआ। कोटन कोटि अञ्जील कुरान, तीस बतीसा गए गाईआ। कोटन कोटि खाणी बाणी हो प्रधान, एका नाअरा रहे लगाईआ। कोटन कोटि कबीरा दर घर मिले माण, जो आए चल सरनाईआ। कोटन कोटि जुगा जुगन्तर आदि अन्त पारब्रह्म अबिनाशी करते तेरा मंगण चरन ध्यान, एका आपणा राह तकाईआ। कोटन कोटि तेरा सुणन धुर फ़रमान,

गुर अर्जन दए गवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल महान, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। आपणे हथ्थ रक्खी त्रिलोकी कल्याण, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीस सुरपति राजा इन्द आपणे हुक्म फिराईआ। रवि ससि साचा शब्द सुणन ला ला कान, पुरख अगम्मड़ा आप सुणाईआ। चौदां तबकां पावणहारा आण, एका नर आप ख़ुदाईआ। कायनात हो प्रधान, सच अमाम रूप वटाईआ। ऐनलहक्क तेरा वेखे हक्क निशान, सच हकीकत नाल रलाईआ। मुकामे हक्क हो प्रधान, आशक माशूका लए जगाईआ। बणया मशूक गुण निधान, आशक वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। काया काअबा हरि मेहरवान, एका मक्का दए समझाईआ। दुलदुल ऐली साचा राका चढ़या नौजवान, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। करन आया सच पछान, उम्मत उम्मती वेख वखाईआ। नबी रसूलां पाए आण, मुल्लां शेख़ मुसायक पीर शब्द ज़ंजीर आप बंधाईआ। इक्क तौफीक निगहबान, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रंग आप रंगाईआ। आपणा रंग आपे रंग, हरि साचा वेख वखांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। कलिजुग चार कुन्ट भाजी फेरी झूठी गंढु, झूठा नाता जोड़ जुड़ांयदा। दर दर घर घर दिसे भेख पाखण्ड, हरि का इष्ट ना कोए मनांयदा। जीव जन्त साध सन्त नार दुहागण होई रंड, साचा कन्त ना कोए मनांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मढ्ढ, शिवदवाले निरगुण जोत ना चढ़या चन्द, प्रकाश प्रकाश ना कोए उपांयदा। कलिजुग जीव भागां मन्द, माया ममता संग प्रनांयदा। हउमे हँगता होई कंध, कूड़ा गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। साधां छड्डया परमानंद, निजा नंद ना कोई दरसांयदा। रसना अहार मदिरा मास गन्द, नानक गोबिन्द दर दुरकांयदा। राम कृष्न ना देवे किसे संग, दुर्गा इष्ट ना कोई वखांयदा। विष्नूं मंगी आपणी मंग, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। पारब्रह्म लै चढ़या नाम मृदंग, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। करनहारा खण्ड खण्ड, एका खण्डा आप चमकांयदा। साची वस्त आत्म हरिसंगत साची दए वंड, निहकलंक हरि सेव कमांयदा। अबिनाशी करता लाए रंग, कोटन कोटि जुग जुग विछड़े, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे चाढ़े चोटी सिखरे, सचखण्ड दुआरे आप बहांयदा। नौ खण्ड सत दीप लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचे थोड़े निखरे, जो सरसा भेंट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आप अख्वांयदा। निहकलंक हरि बलवान, कलिजुग अन्तिम आया। साध सन्त गुर पीर अवतार मंगदे रहे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहया। निउँ निउँ सजदा कर कर मन्नदे रहे आण, आपणा सीस ना किसे उठाया। भाणा मन्नण विच जहान, हरि भाणे आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपे खेल खिलाया।

सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग अवतार, हरि साचा आप घलांयदा। लोकमात कर उज्यार, साचा मार्ग लांयदा। शब्द तेरा खण्डा सच कटार, तीर कमान हथ्थ फड़ांयदा। रथ रथवाही बन्ने धार, गीता ज्ञान दृढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, कलमा आप पढ़ांयदा। नानक गोबिन्द रंग करतार, नाम सति रंग रंगांयदा। चार वरन कर प्यार, एका मति समझांयदा। बिन हरि दूसर ना कोई दुआर, पुरख अकाल इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक नरायण नर, आपणी कल आप वरतांयदा। निहकलंक सूर सुल्ताना, सति पुरख निरँजण आप अखवाया। वीह सौ बिक्रमी हो प्रधाना, लोकमात जोत जगाया। वीह सौ इक्क वाली दो जहाना, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। वीह सौ दो दर दरबाना, दर दरवेश वेस वटाया। वीह सौ तिन्न चतुर सुजाना, गुरमुख साचे लए उठाया। वीह सौ चार बद्धा गाना, आप आपणा हुक्म मनाया। वीह सौ पंज बिक्रमी हो प्रधाना, प्रभ लहिणा लहिणे पाया। वीह सौ छे तेरा निशाना, सोहँ शब्द उपाया। वीह सौ सत्त गोपी कान्हा, गुरमुख सुरती नाच नचाया। वीह सौ अठ्ठ खेल महाना, सन्त मनी सिँघ लेखे लाया। वीह सौ नौ नौजवाना, नौं दर वेखे खोज खुजाया। वीह दस दर परवाना, दर साचा दए सुहाया। सोलां मग्घर खेल महाना, बाल बाला लेखे लाया। सिँघ मनजीता इक्क तराना, सुरपति राजे इन्द रिहा सुणाया। सिँघ पाल

१९०७ देवे इक्क ज्ञाना, बाल्मीक आप उठाया। देवणहारा धुर फ़रमाना, साची सेवा लाया। वीह सौ ग्यारां खेल अपारा, साढे १९०७

८
तिन्न हथ्थ मन्दिर आप उपाया। गुरसिखां मेला डूँघी कुंदर गुर दर मन्दिर मस्जिद डेरा ढाया। वीह सद बारां सच अखाड़ा, सतारां हाढ़ा लोकमात आप लगाया। गुरमुखां अग्ग बुझाई लग्गी बहत्तर नाड़ा, अमृत साचा जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो दस होया वस, हरिजन मेले नस्स नस्स, सोया कोई रहिण ना पाया। वीह सद बारां रंग अनमोला, हरिसंगत आप चढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया तोला, एका कंडा हथ्थ उठाया। हरि मन्दिर अन्दर प्या रौला, उनीं हाढ़ वज्जी वधाईआ। सेवक सेव कमाए बदलया चोला, अल्ला राणी मुख सरमाईआ। प्रगट होया उप्पर धवला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां अमृत भरया कँवला, आपणी हथ्थीं बन्द कराईआ। इक्क प्याई साची बूंद नाम खण्डा विच फिराईआ। पंज तत्त ना पाए कोई रौला, जगत वासना ना वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया आला भोला, भरम भुलेखे सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक जोत करे रुशनाईआ। वीह सद तेरां हो उज्यार, हरि साचा जोत जगांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, साधां सन्तां आप उठांयदा। शब्द अगम्मी मारे मार, नाम डण्डा हथ्थ उठांयदा। सच वस्त ना करे कोई प्यार, झूठा वणज सर्ब वखांयदा। रसना गा गा गए हार,

हरि का दरस कोए ना पांयदा। पढ़ पढ़ राग रहे उचार, साचा रागी दिस ना आंयदा। वजाण नाद सुणायण संसार, आत्म नाद ना कोए वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। दस तिन्न तेरां सच विहारा, हरि साचे आप कराया। इक्क नरेल कर त्यारा, साचा सगन हथ्थ उठाया। कोई मिले जग गुरमुख प्यारा, जिस अग्गे भेंट चढ़ाया। साधां सन्तां अन्दर वेख्या काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, प्रभ आया मुख भुवाया। शाह सुल्ताना दित्ता इक्क हुलारा, सीस दस्तार इक्क बंधाया। गुरमुखां करया सच प्यारा, हरिसंगत नाम धराया। नौ दुआरे पार किनारा, दसवें आपणा दरस वखाया। नाता तुट्टा सर्ब संसारा, जो जन सरनाई आईआ। अन्दर वड़ के वेखे जीव विचारा, हाज़र हज़ूर बैठा आसण लाया। जोग अभ्यास ना कोई कराए जगत किनारा, नेत्र बन्द ना कोए वखाया। पुरख अबिनाशी तुठे, गुरमुखां देवे अमृत घुट्टे, आवण जावण लक्ख चुरासी छुट्टे, पाया पुरख नर निरँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मेला कन्त भतारा। नौ दुआरे तुट्टा नाता, हरि सतिगुर आप तुड़ांयदा। हरिसंगत तेरी मुक्की वाटा, सम्मत तेरां चेत्र दस रुत्त सुहांयदा। आपणी हथ्थीं पूरा कीता घाटा, आपणे कंडे तोल तुलांयदा। गुरसिख तेरी आत्म सुत्ता साची खाटा, तेरे अन्दर डेरा लांयदा। तेरा बजर कपाटी पर्दा पाटा, आपणा ज्ञान चरन ध्यान तेरे विच वखांयदा। गुरमुख ना विके किसे हाटा, दूजा इष्ट ना कोए मनांयदा। गुरसिख तेरे अन्दर आदि शक्ति जोत ललाटा, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी सेव कमांयदा। गुर गोबिन्द तेरे अन्दर धरया अमृत बाटा, नानक नाम सति खण्डा विच फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मुख सलांहयदा। संगत सद सद हरि सलाहण जोग, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। गुर संगत तेरा होया धुर संजोग, गुर गोबिन्द करी कुड़माईआ। प्रभ अबिनाशी तेरी सेजा भोगे भोग, रस बिलासा इक्क वखाईआ। तेरा चुकया दूजा रोग, तेरा नेत्र दूसर राह ना कोए तकाईआ। तेरा वासा लोक परलोक, प्रभ आपणे चरन रखाईआ। हरिसंगत तेरा पूरन होया जोग, पारब्रह्म सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी चरन धूढ़ी मंगे मंगत मोख, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। राह तक्कण गुरसिख तेरा चौदां लोक, बैठे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत तेरा दित्ता वर, हरिसंगत साची भेट चढ़ाईआ। सच नलेर संगत भेटा, हरि साचा आप चढ़ांयदा। आपे मात पिता बणया बेटा, आपे खेल खिलांयदा। आपे होए खेवट खेटा, सच मलाह आप हो जांयदा। आपे मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत रस आप भरांयदा। आपे सोहरा पेईआ बणे मेका, आपे सगन मनांयदा। आपे नारी कन्त जाणे लेखा, आपे लेख चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग्यारां बारां तेरां अग्गे आपणे धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सम्मत चौदां

११०८
०८

चौदां लोक, हरि हरि वेख वखांयदा। इक्की सिखां देवे मोख, मोख मुक्त दासी दास बणांयदा। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, साचा हुक्म सुणांयदा। एका हरि हरि नाम चुगण चोग, दूसर रस ना कोए उपांयदा। कट्टणहारा हउमे रोग, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका कर, ऊँच नीच राउ रंक एका धाम सुहांयदा। चौदां हट्टां वेख पसारा, हरि हरि खेल खिलाईआ। चौदां तबकां खेल न्यारा, आपणे रंग रंगे रघुराईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, दर घर साचे मेल मिलाईआ। एका ताल इक्क तलवाड़ा, एका राग राग अल्लाईआ। एका मजलस इक्क अखाड़ा, एका बंक वखाईआ। लेखा चुक्के पंचम धाड़ा, वाह वाह गुर पूरा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आपे कर सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। वीह सद पन्दरां हो त्यार, आप आपणी रचन रचांयदा। नौ तीस खेल अपार, छे छे वेख वखांयदा। दो सत हो उज्यार, एका छीका बंधन पांयदा। तीर्थ तट्टां पावे सार, अठसठ फोल फुलांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ वेखे तट किनार, आप आपणा चरन छुहांयदा। गंगा गोदावरी सुरस्ती रोवण ज़ारो ज़ार, त्रिबैणी नैणी धीर ना कोए धरांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। साधां सन्तां जीआं जन्तां जत हठ गया हार, सति सन्तोख ना कोए रखांयदा। धीआं भैणां करन ख्वार, विभचार होया नर नार, साचा संग ना कोए निभांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, इक्की सिक्खां कर त्यार, साचा दर सुहांयदा। तिन्न खिच्चे वारो वार, गुरमुख बणे सेवादार, लेखा लिखे आप निरँकार, लिख्या लेख पूर करांयदा। चरन कँवल जल पायण वारो वार, आपणी खिच्ची सतया आप निरँकार, गुरमुखां अन्दर भरे भण्डार, अमृत जल इक्क वखांयदा। ठांडी नगरी ठांडा दरबार, गुर चरन कँवल इक्क प्यार, साचा मार्ग आपे लांयदा। बवन्जा अक्खर कर विचार, बावन रूप विच संसार, बवन्जा दिवस खेल अपार, तीर्थ तट्टां फोल फोलांयदा। सोलां दिवस कर श्रृंगार, जन भगतां करे मात प्यार, घर घर वेखे दर दुआर, दर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा खेल आप खिलांयदा। वीह सद पन्दरां हो उज्यारा, आपणा पर्दा देवे लाहीआ। मुख नकाब ना कोए सहारा, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। साचा बोल इक्क जैकारा, सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारा, भुल्ल रहे ना राईआ। गुर गोबिन्द करया आप प्यारा, आप आपणे संग रखाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, बैठा आसण लाईआ। लक्ख चुरासी लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठी धाड़ नाल रखाईआ। गुरमुखां अन्दर कर उज्यारा, आपणा दीपक आप टिकाईआ। आपे खिच ल्याए चरन दुआरा, नाम डोरी एका पाईआ। दूसर वस्त

ना होर विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि लाया, चार वरनां मेल मिलांयदा। सम्मत सोलां राह तकाया, साचा राह इक्क वखांयदा। गुरमुखां बेड़ा बन्ह वखाया, भार आपणे कंध उठांयदा। आवण जावण गेड़ चुकाया, राए धर्म मुख भवांयदा। चित्रगुप्त ना लेख वखाया, लाड़ी मौत दर दुरकांयदा। आपणा मंगल आपे गाया, छोटा बाला अग्गे लांयदा। सिँघ मनजीता नाउँ धराया, इन्द्र इन्द्रासण आप तजांयदा। नौ दरवाज़े खोल्ह खुल्हाया, जगत जगदीसा सेव कमांयदा। सम्मत सोलां कर रुशनाया, गुरमुखां एह समझांयदा। गुरसिख हिरख़ सोग विच कदे ना आया, चिन्ता ग़म ना कोए जणांयदा। गुर पीर अवतार साध सन्त कोई थिर रहिण ना पाया, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। आवण जावण पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल रचाया, काया चोला आप बदलांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर डेरा लाया, विष्टा कीट आप हो जांयदा। नीचो नीच आप रघुराया, नानक गुर एह समझांयदा। कलिजुग अन्तिम पंज तत्त ना कोए रखाया, हिरख़ सोग ना कोए वखांयदा । गुरमुखां अन्दर डेरा लाया, साची सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। हरि सिख्या सच समझाई, हरिसंगत कर प्यार। बिरध बाल जवान प्रभ एका रंग रंगाई, जिस जन बख़्शे चरन प्यार। घर साचे वज्जी वधाई, सुणया नाद सच्ची धुन्कार। सुरत सवाणी कन्त रही प्रनाई, जो जन गाए सोहँ रसन जैकार। आत्म पारब्रह्म मिलाई, ब्रह्म मेला कन्त भतार। साध सन्त कलिजुग चारों कुन्ट वहिण वहाई, एका विछड़या मीत मुरार। अन्दर वड़ वड़ करन पढ़ाई, सरवन कूकन करन पुकार। नेत्र नैण बन्द रखाई, अग्गे दिसण पंज धाड़। वीह सौ दस बिक्रमी प्रभ साचे साची जोत करी रुशनाई, गुरमुख साचे साचे पौड़े देवे चाढ़। साधां सन्तां उलटा गेड़ भवाई, चढ़ी सुरती दित्ती उतार। साम्हणे हो कोई कहि ना सके मिल्या शहिनशाही, अन्दरे अन्दर रौंदे धाहां मार। घर पुछण जाए जगत सलाही, कौण दुआर डुब्बा बेड़ा कौण सागर दिसे मँझधार। अग्गे बैठे मुख छुपाई, घर मन्दिर होया बन्द किवाड़। ना घर धी ना जवाई, ना नारी कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां दित्ता वर, गुरमुख साचे लाए पार। हरिसंगत हरि वड्याई, दरगाह साची आप सुहांयदा। हाढ़ सतारां लेख लिखाई, पहली चेत्र सगन मनांयदा। भरम भुलेखे भुल्लणा नाही, घर घर बैठा आसण लांयदा। लोकमात फेरा चाँईं चाँईं, धर्म राए नेड़ ना आंयदा। उच्ची कूको कर कर बांही, हरि साचा दरस वखांयदा। निथाव्याँ देवे साची थाँईं, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका कत्तक कर्म जणांयदा। कत्तक कर्म कमाया पूरन योग, हरि साचा लेखे लाईआ। हरिसंगत होया धुर संजोग, गुर गोबिन्द

मेल मिलाईआ। पहला कट्टे चुरासी रोग, दूजा दर्शन आप वखाईआ। तीजे आत्म सेजा भोगे भोग, चौथे सन्मुख शब्द सुणाईआ। पंजवें मेटे जगत विजोग, कट्टण आया झूठी फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कत्तक कर्म आप जणाईआ। कक्का कर्म विचार, टिक्का लांहयदा। तिन्न तत्व सुधार, तालिब तल्ब इक्क करांयदा। कक्का कोट गढ़ तोड़ हँकार, आपणे रंग रंगांयदा। वीह सौ सोलां बिक्रमी कर प्यार, साचा मेला मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत आप जगांयदा। पहली कत्तक कर्म विचार, हरिसंगत चरन लगाईआ। जिस जन बख्शया चरन प्यार, आप आपणी गोद बठाईआ। लेखा लिखे सच दरबार, सच तख्त निवासी आसण लाईआ। दूर नेड़े पावे सार, वड दाता बेपरवाहीआ। जो गुरमुख घर घर सुत्ते पैर पसार, सिर रक्खे ठंडीआं छाईआ। जो जन आए चल दुआर, बांहों पकड़ गले लगाईआ। आपणा आप उत्तों वार, हरिसंगत सेव कमाईआ। हरिसंगत तेरा कर कर दरस दिदार, प्रभ आपणी ख़ुशी मनाईआ। विष्नूं खाली होया भण्डार, तेरी झोली रिहा भराईआ। करन आया सच विहार, लजपत ना कोए रखाईआ। ग़रीब निमाणे बणाए गल दा हार, गुरसिख आपणे सीस उठाईआ। जन भगतां आपणे हथ्थां उत्ते चुक्के भार, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। करया खेल विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुरमुख आया चल दुआर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत मिल्या मीत मुरार, जिउँ धन्ने जट गोसाईआ। अन्दर मन्दिर खूहे गेड़े आपणी वार, अमृत जल बाहर कढाईआ। साचा गउआं चारे बण ग्वाल, एका सुरती गऊ बणाईआ। क्यारे मोड़े बण रखवाल, जगत नालों तोड़े आपणे चरनां नाल बंधाईआ। वाहे हल सच्चा किरसाण, साचे बैल आपे जोड़ जुड़ाईआ। लग्गा फल विच जहान, अमृत मेवा मुख खवाईआ। सम्मत सोलां हरिसंगत उठाए तेरा आपणे हथ्थ निशान, लोआं पुरीआं दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पहली कत्तक रुत्त सुहाईआ। पहली कत्तक सुहाउणा दिवस, हरि साचा आप सुहांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी अमावस, हरिसंगत साचा चन्द चढ़ांयदा। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना गांयदा। सतिगुर पूरा सदा वसे पास, विछड़ कदे ना जांयदा। कलिजुग गुरसिख अन्त ना होए निरास, गुर गोबिन्द मेल करांयदा। पूरन करन आया आस, जोती जामा भेख वखांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, दर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धरांयदा। पहली कत्तक संगत हरि हरि, आपणे चरन बंधन पाईआ। आप उठ उठ जाए मंगत दर दर, घर घर फेरा पाईआ। आपे बन्न्हे फड़ फड़ लड़ लड़, आपणा पल्लू आप बंधांयदा। आपे मेले अन्दर चढ़ चढ़, आपणा पैंडा आप मुकांयदा। आपे दरस दिखाए खड़ खड़, स्वच्छ सरूपी रूप

१११९
०८

वटाईआ। आपे अक्खर सुणाए पढ़ पढ़, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरी सुरती बन्न्ह, शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। गुरमुख सुरती देवे बन्न्ह, गुर सतिगुर दया कमांयदा। पहली कत्तक हरिसंगत चढ़या चन्न, लोकमात आप चढ़ांयदा। जननी जनिआ साचा जन, जो जन सरनाई आंयदा। लेखे लग्गा पंज तत्त तन, तन मन धन आप आपणी भेट वखांयदा। दूसर कोई ना देवे डन्न, वेले अन्तिम आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पहली कत्तक रुत्त सुहांयदा। पहली कत्तक हो प्रधान, बिरध बाल जवान वेख वखाईआ। मात गर्भ वेखे मार ध्यान, दस दस मेल मिलाईआ। जो जन रसन सोहँ गान, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेव रिहा कमाईआ। आपणी सेव कमावण आया, पारब्रह्म करतारा। गुरमुख साचे मेल मिलावण आया, प्रगट निहकलंक नरायण नर अवतारा। सुरत सवाणी वेख वखालण आया, शब्द जणाई सच्ची धुन्कारा। आप आपणी गोद उठावण आया, इक्क वसाया सच दरबारा। जगत विछोड़ा पन्ध मुकावण आया, बख्शे चरन प्यारा। पहली कत्तक रुत्त सुहावण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा लाया नाअरा। हरिसंगत तेरी हरि हरि आस, सतिगुर पूरा पूरी दए कराईआ। घर घर बैठयां बुझाए लग्गी प्यास, कलिजुग अग्न ना कोई सताईआ। साचे मन्दिर वखाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। आपणयां चरनां रक्खे सदा निवास, वास निवास आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सहाई विच प्रभास, जंगल जूह वेख वखाईआ। होए सहाई हर घट अन्तर, पारब्रह्म पुरख सुल्ताना। पहली कत्तक बणाए बणतर, हरिसंगत शब्द सरूपी बन्न्हे गाना। सर्ब जीआं दा एका मन्त्र, सोहँ शब्द धुर फ़रमाना। सतिजुग बणावण आया साची बणतर, सूरबीर बली बलवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमाना। देवणहारा धुर फ़रमान, हरिसंगत करे जणाईआ। वीह सौ सोलां धर्म निशान, प्रभ साचा हथ्थ उठाईआ। मस्तूआणा खेल महान, खेले खेल बेपरवाहीआ। पन्दरां कत्तक सारे गाण, सतिजुग त्रेता द्वापर एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच्चे घर वज्जे वधाईआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहावणा, सतिजुग साचे आप वड्याआ। बल बावन भेख करावणा, बावन रूप अनूप वटाया। ध्रू बालक पार करावणा, नर नरायण नाउँ धराया। प्रहलाद लेखा आप चुकावणा, राम नाम गया दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पन्दरां कत्तक लेख लिखाया। पन्दरां कत्तक वड वड भागा, त्रेते वज्जी वधाईआ। पन्दरां कत्तक रावण जागा, पन्दरां कत्तक लए अंगड़ाईआ। लोकमात मिटया दाग़ा, आप आपणी पति रखाईआ।

पन्दरां कत्तक वज्जया वाजा, रघुपत रघुनाथ आपणा बंस दए सुहाईआ। दीपक जोत जगे चिरागा, घर घर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पन्दरां कत्तक हो उज्यार, हरि साचा खेल खिलांयदा। वेद व्यासा कुँवारी कन्या जम्मया बाल, आप आपणा मुख छुपांयदा। जल्वा नूरी देवे जलाल, जोती नूरी डगमगांयदा। नारद ब्रह्मा कर प्यार, साचा संग रखांयदा। चार वेदां भेव न्यार, पुराण अठारां आप जणांयदा। पन्दरां कत्तक कर त्यार, जगत लेखा लेख मुकांयदा। पन्दरां कत्तक छड्डुया संसार, साचे प्रविशटे मेल मिलांयदा। वदी सुदी ना कोई विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल खिलांयदा। पन्दरां कत्तक वड वड भाग, बिप्पर सुदामा चरन लगाईआ। दलिद्री किस्मत गई जाग, करता कीमत आपे पाईआ। पन्दरां कत्तक द्रोपती रक्खी लाज, उप्पर बस्त्र भूषन आपणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पन्दरां कत्तक खादा अलूणा साग, बिदर वज्जे वधाईआ। ना सुत्ता ना रिहा जाग, मरन जीवण ना कोई समझाईआ। चरन धूढ़ी मजन कर कर माघ, दुरमति मैल रिहा गंवाईआ। जगत तृष्ना बुझी आग, घर पाया सहिज सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त सच भण्डारा, बिदर झोली आपे पांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, आपणा आप करांयदा। आपे जाणे आपणा सति विहारा, वेद पुराण ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सिक्ख सिख समझांयदा। साची वस्त नाम अनमुल्ल, हरि सतिगुर झोली पाईआ। बिदर निमाणा चरन प्रीती घोली गया घोल, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभ कवण कंडे तोल्लया तोल, तेरी धार मेरे कन्न सुणन ना पाईआ। कवण वाक दित्ता बोल, कवण मुख वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। बिदर मीत मुरार, तेरी साची वंड वंडाईआ। तेरा भरया हरि भण्डार, तेरी सेवा आप कमाईआ। तेरा रूप प्रगट होए विच संसार, संगत तेरी डोर बंधाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, तेरा ख़जाना आपणी हथ्थीं आप लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेद खुल्हाईआ। बिदर सुदामे कीती वंड, हरि द्वापर वेख वखांयदा। ग़रीब निमाणे पन्दरां कत्तक बन्ही गंढ, बिन सतिगुर ना कोई खुल्हांयदा। द्वापर जवानी गई हंढ, वेला अन्त मुकांयदा। कलिजुग वेख्या भेख पाखण्ड, साचा दर ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। द्वापर सच भण्डार, हरि साचे आप वरताया। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, हरिसंगत झोली पाया। हरिसंगत अग्गे करे पुकार, प्रभ साचा सीस झुकाया। आपणी पंजी उत्तों वार, पंजी प्रकृती मेट मिटाया। पंज

१११३ ०८

रोक ना कोई उधार, आपणी झोली रिहा भराया। हरिसंगत तेरा लंगर वरते विच संसार, तोट रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दिवस इक्क सुहाया। कलिजुग अन्तिम सच तिउहार, हरि साचा आप कराईआ। पन्दरां कत्तक दिवस विचार, साचा रंग चढ़ाईआ। सन्त मनी सिँघ खेल अपार, रसना जेहवा गया गाईआ। पुरख अबिनाशी आवे एका वार, एका भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। साचा मस्तूआणा कर त्यार, गुरमुखां दए समझाईआ। पंज तत्त सच प्यार, गुर दर अन्दर इक्क वखाईआ। साह सुल्ताना मारे मार, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहावणा, वीह सद सोलां बिक्रमी जोत जगाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत दूर दुराडा लेखे लाउणा, जो जन बैठे चरन ध्यान लगाईआ। साचा मार्ग इक्क समझावणा, दे मति आप समझाईआ। पुत्तर धी मात पिता भैण भ्रा जो प्राणी प्राण हारे, नेत्र नीर ना किसे वगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मस्तूआणा इक्क वखावणा। मस्तूआणा जिस जन पेखणा, गुर चरन ध्यान लगाए। प्रभ मेटे बिधना लिखी रेखना, आपणी रेखा फेर लिखाए। धुर मस्तक लाए साची मेखना, ना सके कोई उखड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी पुरष आप समझाए। नारी पुरष सुणना हरिसंगत, हरि साचा आप सुणांयदा। मस्तूआणे चढ़े रंगत, काया मन्दिर आप डगमगांयदा। हरिजन लेखा जाणे नानक अंगद, अंगीकार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, पन्दरां कत्तक लेख लिखाईआ। सन्त मनी सिँघ आसा पूर कराउणा, लोकमात दए वड्याईआ। चार वरनां एका शब्द जनाउणा, एका बूझ बुझाईआ। बिरध बाल जवान गोर विच ना किसे दबाउणा, ख़ाकी ढेर ना कोए रखाईआ। एका अग्नी भेट चढ़ाउणा, मात गर्भ बाहर जो आईआ। नेत्र नीर ना किसे वहाउणा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सोहँ शब्द चाँई चाँई गाउणा, जुग विछड़े प्रभ अन्तिम रिहा मिलाईआ। जूठा झूठा नाता जगत रखाउणा, माया ममता बंधन कोए ना पाईआ। मावा पुत्तरां गल हार पाउणा, पिता फड़े सीड़ी दए टिकाईआ। भैण भ्रावां साचा मंगल गाउँणा, प्रभ देवे वड वड्याईआ। नारी कन्त विछोड़ा ना कोए जणाउणा, गल पल्लू कोए ना पाईआ। दो हथ्थ ना अंग लगाउणा, दोइ जोड़ सीस हरि चरन कँवल निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती रिहा समझाईआ। पंज तत्त अग्नी जाए सड़, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। हरिजन हरि हरि विद्या लए पढ़, प्रभ साचा शब्द जणाईआ। पंज तत्त ख़ाक करना ढेर, हड्डी हड्ड ना कोए उठाईआ। जो जन करे हेर फेर, प्रभ जूनी दए फिराईआ। जो जन मंगे दर घर सच्चे मेहर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ

१११४ ०८

टिकाईआ। लहिणा देणा चुकाए अंडज जेर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंग रंगाए हरि चलूल, जुग जुग बणत बणांयदा। हरिसंगत ना जाणा भूल, हरि साचा आप अलांयदा। दर घर साचे रसना बोल, मस्तूआणा इक्क वखांयदा। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, प्रभ साचा आप झुलांयदा। आप चुकाए तेरा पिछला मूल, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साची धार वखांयदा। साची धार धुर दरबार, दरगाह साची आप सुहाईआ। पन्दरां कत्तक करे विचार, साची संगत पार कराईआ। पंज गज नेड़ ना आए कोई चरन दुआर, दूर दुराडे आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। पन्दरां कत्तक खेल खिलाउँणा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। संगत रूप पारब्रह्म दरसाउणा, रूप अनूप आप उपजांयदा। जागरत जोत जोत डगमगाउणा, अन्ध अन्धेर मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत माण दिवांयदा। पहले दिवस हरिसंगत माण, साचे दर रखाईआ। दूजे दिवस हो प्रधान, गुरमुख साचे लए तराईआ। ग्यारां दिवस इक्क ज्ञान, इक्क इक्क नाल करे लड़ाईआ। सतिगुर पुरख नौजवान, आपे वेखे वेख वखाईआ। शब्द निराला मारे बाण, तिक्खी मुखी मुख रखाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, एका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ग्यारां दिवस करे रुशनाईआ। इक्क ग्यारां जोड़ बारां, पन्दरां कत्तक वड वड्यांअदा। छब्बी कत्तक कर विहारा, लोकमात तजांयदा। सताई कत्तक सचखण्ड दुआरा, आपणा आसण लांयदा। अठाई कत्तक ब्रह्म पसारा, हरि हरि वेख वखांयदा। उनत्ती कत्तक ख़बरदारा, शिव शंकर आप जगांयदा। तीस कत्तक मारे मारा, करोड़ तेतीसा राजा इन्द नाल रलांयदा। चार दिवस निरगुण धारा, आपणा वेस वटांयदा। पहली मग्घर हो उज्यारा, लोकमात उठ धांयदा। नवां खण्डां पावे सारा, भारत वंड वंडांयदा। जोत सरूपी जोत उज्यारा, शब्दी डंक वजांयदा। नौ बस्त्र जे रक्खे कर त्यारा, नौ जोड़े नाल रलांयदा। नौ सिख जो खड़े नौ दुआरा, नौवां हुक्म सुणांयदा। सवा पहर घर घर बैठ करन निमस्कारा, प्रभ साचा दरस दिखांयदा। नौ मग्घर खेल अपारा, नौ खण्ड रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ दिन लँघाए गिण गिण, मुख नकाब आपणे पर्दा पांयदा। पहली मग्घर लाल वेस, हरि आपणा आप कराईआ। दूसरी मग्घर कंचन भेस, कंचन रंग चढ़ाईआ। तीजे मग्घर सूहे रंग आपे वेख, आपणी चोली रंग रंगाईआ। चौथे मग्घर नर नरेश, चिट्टे बस्त्र भूसण आप सजाईआ। पंचम मग्घर इक्क अदेस, पीले बस्त्र सोभा पाईआ। छे मग्घर किसे ना चले कोई पेस, नीला बाणा आप हंढाईआ। सत्त मग्घर दर दरवेश, काला सूसा आप हंढाईआ। अट्ठ मग्घर धर धर भेख, गुरसिखां

दुआरे जाए फेरीआं पाईआ। नौ मग्घर नौ दुआरे लिखे लेख, नौ बस्त्र नौ जोड़े गुरमुख रहे हमेश, नौ नाथ रहिण ना पाईआ। आपणा खेल आपे रिहा वेख, पिछली कीती भुल्ल ना जाईआ। नावें गुर तेग बहादर तेरी टुट्टे ना अज्जे रेख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा दुलारा दस दस्मेस, कलिजुग दहिसर देवे घाईआ। तेरा शब्द रिखी केस, कूड़ा गवर्धन दए उठाईआ। पारब्रह्म अग्गे किसे दी ना चले पेश, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। नौ नौ करे आदेस, पुरख अकाल सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। नौ मग्घर नौ खण्ड, जोती जोत उजालया। दस मग्घर वंडे वंड, सत्तां दीपां खेल निरालया। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड, प्रभ साचे हथ्थ उठा ल्या। वेखण आया भेख पाखण्ड, आप आपणा रूप वटा ल्या। करे कराए खण्ड खण्ड, कलिजुग हिस्सा इक्क वंडा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दिवस सत्त सत्त धार सच्ची सरकार, सोहँ ढोला एका गा ल्या। सोहँ ढोला सत दीप, सति सतिवादी आपे गांयदा। आप चलाए आपणी रीत, आपणा मार्ग आपे लांयदा। आपे मन्दिर गुरदर मसीत, आपे मड्ड वखांयदा। आपे गाए साचा गीत, आपे राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोलां मग्घर आप वड्यांअदा। सोलां मग्घर चढ़या चा, साचे दिवस वज्जी वधाईआ। छोटा बाला बणया जगत मलाह, मावां पुत्तरां रिहा समझाईआ। अग्गे मिले सच्चा थाँ, दरगाह साची वड वड्याईआ। प्रभ करन आया सच न्याँ, पहलों छोटे अग्गे लाईआ। जवान बिरध कलिजुग डरन ना, मौत लाड़ी ना भय वखाईआ। प्रभ आया अग्गों पकड़े बांह, जो जांदे चाँईं चाँईंआ। हरिसंगत पुत्तर धीआं भैण भ्रा ख़ुशी नाल विदा दए करा, नीर नीर ना कोए वहाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज वेर जैकारा देणा ला, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। आपणी वस्त आपणे घर लए टिका, थाउँ वस्त लुट्ट कोए लै ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सोलां मग्घर वज्जे वधाईआ। सोलां मग्घर दिवस सुहाउँणा, हरि साचा आप समझांयदा। घर घर बैठ सवा पहर सभ ने गाउँणा, सोहँ सो जाप अलांयदा। आपणा चरन गुर ध्यान रखाउँणा, दूजा इष्ट ना कोए वखांयदा। जम का जेड़ा फंद कटाउँणा, धर्म धर्म राए संगल कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोलां मग्घर दिवस सुहांयदा। सोलां मग्घर हरि शब्द जवान, उठे उठ उठ करे धाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, जो बैठे हरि लिव लाईआ। काया मन्दिर वखाए सच मकान, सति रूप आप ख़ुदाईआ। हरिसंगत पाए साची आण, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। सोलां मग्घर हो प्रतक्ख, आपणा दरस वखांयदा। सतारां मग्घर चौथे

युग भाण्डे करे सक्ख, भरया कोए ना मात जणांयदा। कूड़ी क्रिया मेटे पक्ख, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी धार चलांयदा। कलिजुग तेरी धार, चारे बाणी वेख वखाईआ। सतारां मग्घर खेल अपार, बैखरी करे कुड़माईआ। अठारां खेल धाम न्यार, मधम फोल फुलाईआ। उन्नी पसन्ती पावे सार, आप आपणी दया कमाईआ। परा वेखे कौण प्यार, कौण तुरीआ नाद वजाईआ। चारे बाणी पावे सार, चारे खाणी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस मग्घर रूप वटाईआ। इक्की मग्घर एका इक, इक्की सिक्खां रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी जो लेखा दित्ता लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अठसठ तीर्थ गुरमुखां कोलों मंगे भिख, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। गुरमुख तेरी साची टेक, खाणी बाणी रिहा जणाईआ। गुरमुख तेरी बुध बिबेक, तेरे नाम वड वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की मग्घर वज्जे वधाईआ। इक्की मग्घर दिवस सुहाउँणा, इक्की सिक्खां आप उठांयदा। चिट्टे बस्त्र तन पहनाउँणा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सवा पहर नेत्र बन्द रखाउँणा, जगत अक्ख ना कोए खुल्हांयदा। रसना जिह्वा ना कोए हिलाउँणा, उच्ची बोल ना किसे सुणांयदा। अन्दरे अन्दर सोहँ शब्द नाम गाउँणा, प्रभ साचा मेल मिलांयदा। पवण स्वासी सेवा लाउँणा, साचा हुक्म जणांयदा। जोती

११२७ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की वेख वखांयदा। इक्की सिक्खां सच विहार, हरि साचा आप दृढ़ाईआ। ११२७

०८ मस्तूआणा धाम न्यार, आप वखाए बेपरवाहीआ। सच तख्त बैठ सच्ची सरकार, दर घर साचे सोभा पाईआ। एका भरे नाम भण्डार, तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका इक्की दए वड्याईआ। ०८

एका इक्की इक्की जेठ, हरि साचा सगन मनाया। त्रैगुण रक्खी गुरसिखां चरना हेठ, आपणी जोती लम्बू अग्नी लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड रिहा वंडाया। वंडे वंड हरि करतार, हरि साचे वड वड्याईआ। तेरा मिट्ठा रस सच्चा प्यार, अमृत रस वखाईआ। हस्स हस्स मेला विच संसार, रो रो बिरहों पीड़ कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लोकमात होए सहाईआ। लालो तेरा सच प्यार, हरि साचा भुल्ल ना जांयदा। नानक बख्शया एका हार, साचा सेहरा गले पांयदा। तेरा बन्न्हे तेरी धार, तेरा दर सुहांयदा। इक्की मग्घर हो त्यार, अल्लड़पिण्डी चरन टिकांयदा। आपणे सिर ते चुक्क के जाए सवा सेर भार, जो हरि मन्दिर सगन

मनांयदा। जगत दुआरे आए हार, गुरमुखां घर भरांयदा। गुरसिख जो करे प्यार, साची सिख्या सिख समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवा सेर सभ दी सेवा लांयदा। इक्की मग्घर सच विहारा, हरि साचे आप करावणा। बाईस मग्घर खेल अपारा, नाथे वाले चरन टिकावणा। तेईस मग्घर दए हुलारा, पूर्ब लहिणा झोली पावणा। डल्ले तेरी खिड़ी गुलज़ारा, हरि साचे वेख वखावणा। जो जन आए चल दुआरा, प्रभ साचे मेल मिलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवा सेर साचा भार सभ दे नाल रखावणा। सवा सेर सच भण्डार, हरिसंगत दए लगाईआ। सतिगुर पूरा बणे आप वरतार, नंगी पैरीं सेव कमाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग रखाईआ। सथ्थर सेज ना भुल्लया विच संसार, जो सूलां आप हंढाईआ। निहकलंक मिल्या मीत मुरार, जोड़ा जुड़या सहिज सुखदाईआ। घोड़े चढ़या शाह अस्वार, आपणा अस्व रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोआबा मालवा दए तराईआ। चौबीस मग्घर धाम अवल्ला, हरि साचे आप सुहावणा। वसणहारा जला थला, घर मन्दिर डेरा लावणा। आपणा कर कर आपे हल्ला, आपणा पन्ध मुकावणा। आपे बण बण अछल अछल्ला, वल छल धारी खेल खिलावणा। हरिसंगत तेरा मेटे सल्ला, रविदास चमारा वेख वखावणा। बाल्मीक कढुया डूँघी डल्ला, आप आपणे गले लगावणा। आपे अन्दर वड़ वड़ दीपक बल्ला, ज्ञान जोत आप जगावणा। सिँघ तारा नाल रल्ला, चम्बल जट्ट वक्त सुहावणा। सिँघ सवरन ना मारे तीर निराला, तिक्खी मुखी ना कोए रखावणा। बुढुयां करे आप प्रितपाला, नौजवाना गोद बहावणा। बाला दस्से राह सुखाला, पहलों सचखण्ड आप वसावणा। आपे बणया जगत कंगाला, गुरमुखां अग्गे झोली डावणा। दर दर घर घर करे सवाला, चरन प्रीती मंग भेख बावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, फड़ावण आया एका दामना। दामनगीर फड़ाए दामन, हरि वड्डा वड वड्याईआ। एथे ओथे होवे जामन, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। मेट मिटाए कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। हरिसंगत तेरी मेटण आया अन्धेरी शामन, अन्ध अन्धेर रिहा गंवाईआ। ना कोई तृष्न ना कोई तामन, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। ना कोई नगर ना ग्रामन, गुरसिखां अन्दर बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बुढे नढे एका रंग रंगाईआ। आपे बुढ्ढा बवन्जा साल नाता गया तोड़, झूठा संग ना कोए रखांयदा। छैल छबीला साल सोलवें नौजवान बणके चढ़या घोड़, सोलां कलीआं आसण लांयदा। सिँघ सवरन एकउँकारा रिहा दौड़, बुढ्ढा बाल दोवे रूप दिस ना आंयदा। सिँघ भगवान अन्दर मंगे लग्गा पौड़, पौड़े वाला अग्गे हो हो दरस दिखांयदा। हरिसंगत

साख्यात पारब्रह्म अबिनाशी करता एककांरा निराकार निराधार स्वच्छ सरूपी सच सिँघासण गया बौहड़, पर्दा उहला ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी फल वेख्या कौड़, आपणी सेवा आपणे हथ्थ उठांयदा। गुरमुख हरिसंगत जोड़या जोड़, आपणी प्रीत साची गंढु पुवांयदा। सतिगुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, गुरसिख बिन सतिगुर ना कोई अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां अग्गे पिच्छे घर अन्दर बाहर रिहा दौड़, दौड़णहारा दिस ना आंयदा। पंडत पांधे लभ्भदे फिरदे ब्रह्मण गौड़, उच्चा टिल्ला पर्बत हथ्थ किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चवी मग्घर वेख वखांयदा। चौवी मग्घर जोत निरँकार, आप आपणा बल धराईआ। पहलों हरिसंगत करे प्यार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। दूसर मंगे गुरमुखां धूढ़ आप करतार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तीजे दर दरवेश करे पुकार, ऊँची कूके दए सुणाईआ। चौथे कलिजुग काली धार, रैण अन्धेरी छाईआ। पंजवें प्रगट होया मीत मुरार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, चौवी मग्घर चार बीस वेख वखाईआ। चार बीस हरि हरि मेला, चौवी हथ्थ वेख वखांयदा। आपे गुर आपे चेला, आपे गोबिन्द नाउँ धरांयदा। आपे पुरख अकाल सज्जण सुहेला, आपे सगला संग रखांयदा। आपे वसे रंग नवेला, आपे लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप
१११६ हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्यास किनारा इक्क सुहांयदा। चौवी मग्घर ब्यास किनारा, पुर १११६
०८ भलाई वज्जे वधाईआ। हरिसंगत तेरा उतरे भारा, प्रभ आपणे सीस रखाईआ। लेखा जाणे रविदास चमारा, गंगा धार इक्क ०८
वहाईआ। पंडत पांधे रो रो करे पुकारा, उच्ची कूके दए दुहाईआ। इक्क कसीरा कीमत पाए करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला कालख टिक्का शाही देवे लाहीआ। रविदास तेरे चरन दुआर, हरि गंगा आप वहावणी। नाम कसीरा कढ्ढे कर प्यार, प्रभ साची खेल खिलावणी। पंडत देवे कर विचार, एका सिख्या सिख समझावणी। भेंटा देणी जल जल धार, गंगा माता मंग मंगावणी। उतर ल्याउँणा आउँदी वार, पूर कराए माता भावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलावणी। गंगा नीर चरन दुआर, हरि साचा दए वहाईआ। इक्क कसीरा सच विहार, दर साचे दए सटाईआ। अग्गों बांह दए हुलार, हथ्थ कंगण इक्क वखाईआ। रविदासे भेटा देणा चाढ़, एका शब्द करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। चौवी मग्घर चौथे जुग, जोग जुगत इक्क सखाईआ। गुरसिख ना बैठे कोई लुक्क, प्रभ साचा लए मिलाईआ। हरिसंगत सुफल कराए मात कुक्ख, जो जन बैठी गोद उठाईआ। उलटा गर्भ ना होए रुक्ख, दस दस मास ना कोए भवाईआ। उज्जल करे मात कुक्ख, पारब्रह्म

वड्डी वड्याईआ। सतिजुग सुखणा रिहा सुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा लेख समझाईआ। चौवी कत्तक चरन प्यार, चरनोदक मुख चुआंयदा। गुरमुखां बख्शे इक्की हार, साची सिक्खी सिक्ख समझांयदा। वालों निकी तिक्खी धार, नीकन नीकी आप जणांयदा। मुनी रिखी ना पावण सार, वेद पुराण ना लेख लिखांयदा। नेकी बदी जाणे करतार, पुन्न पाप फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चाली दिवस रैण एका जोत डगमगांयदा।

चाली दिवस साची सेज, गुरमुखां आप हंढाईआ। शब्द सुनेहड़ा घर घर भेज, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। जोती बख्शे नौ नौ तेज, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पन्दरां कत्तक एका रंग रंगाईआ। रंग रंगावणहार हरि गोबिन्दड़ा, गहर गम्भीर समाया। पतित पावण सद बख्शंदड़ा, आदि जुगादी नाउँ धराया। हरिजन मेटे सगली चिन्दड़ा, चिन्ता चिखा रहे ना राया। पहला दिवस हरिसंगत तेरी भेट चढ़ंदड़ा, ग्यारां गुरसिखां वंड वंडाया। चार दिवस निरगुण जोत जगन्दड़ा, निरगुण खेल करे रघुराया।
११२० नौ दिवस नौ खण्ड वेख वखंदड़ा, नौ सिख लए उठाया। सत दिवस साची धार चलंदड़ा, चार कुन्ट फेरी पाया। चार ११२०
दिवस चारे खाणी चारे बाणी चारे जुग वेख वखंदड़ा, आप आपणा जोग कमाया। इक्की जेठ वेस वटंदड़ा, इक्की सिक्खां नाल रलाया। चिट्टा बस्त्र इक्क सुहंदड़ा, सदा सुहेला ध्यान वखाया। एका गुरमुख लालन लाल रगन्दड़ा, लाल अनमुल्ला साचे हट्ट विकाया। दूजा पिछला लेख चुकंदड़ा, गुर गोबिन्द वेस वटाया। तीजे निउँ आप सखंदड़ा, हरिसंगत बेड़ा रिहा तराया। चौथा दिवस आप सुहंदड़ा, चौवी मग्घर वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला देवे दान, गुरसिखां घर घर भिच्छया झोली पाया।

चौवी मग्घर इक्की सिख, हरि साचा सेवा लाईआ। संगत पंगत लेखा लिख, इक्की इक्की दए बहाईआ। पंजी पंजी मंगण भिख, हाढ़ सतारां वड वड्याईआ। जगत तृष्ना मेटे तृख, आत्म अन्तर जाम प्याईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विख, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की हार सिख श्रृंगार साची संगत साची पंगत आपणे रंग रंगाईआ। इक्की हार गुरसिख सेवा, सिँघ प्रीतम आप लगाईआ। प्रगट होया वड देवी देवा, गुरसिख

बाल अञ्याणे देवत रूप आप बणाईआ। अमृत फल खुआए साचा मेवा, रविदास चमारा नाल रलाईआ। बटवारा गाए आपणी जेहवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पन्दरां कत्तक घर घर बैठी संगत आपणे लेखे लए लगाईआ।

✪ १५ कत्तक २०१६ बिक्रमी मस्तूआणा ✪

एकँकार अकल कलधारी, आदि जुगादि समाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी खेल न्यारी, जुग जुग आपणी खेल खिलाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगारी, रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप भेव कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नर निरँकारा वेस वटाया। नर निरँकार निरगुण धार, हरि हरि आप चलाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। वेद कतेब ना पायण सार, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। सन्तन मीता हरि गिरवर गिरधार, जोग जुगत जगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर जोत उजाला हरि गोपाला, पारब्रह्म पुरख अबिनाशया। दरसी दरस काल महांकाला, खेले खेल शाहो शबास्सया। जुगा जुगन्तर शब्द अनादी लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वजाए आपणा ताला, साचा ढोला आपे गा ल्या। जीव जन्त साध सन्त हरि भगवन्त सन्त तोड़नहारा जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार निरवैर आप अख्वा ल्या। निरगुण रूप आदि निरँजण, आदि पुरख अख्वांयदा। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जण, हरिजन साचे वेख वखांयदा। नेत्र नाम निधान पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। हरि सन्तन बख्शे चरन धूढ़ी मजन, माया ममता मोह चुकांयदा। दो जहानां साचा सज्जण, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर रक्खी लज्जण, रूप अनूप आप वटांयदा। कलिजुग अन्तिम नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं गगन पाताला आपे होए पड़दे कज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर पुरख करतार, करता आप कमांयदा। नानक गुर गोबिन्द बन्ने धार, सति सति सति रूप वटांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, सच गात्रे आप लटकांयदा। पंचम मीता पंज प्यार, पंचम मोह चुकांयदा। निरगुण सरगुण बन्ने धार, अजूनी रहित भेव ना आंयदा। अकाल मूर्त खेल अपार, आपणी कल आप वरतांयदा। कलिजुग लेखा चार लक्ख बत्ती हज़ार, जगत प्राणी आपे गांयदा। पुरख अबिनाशी पावणहारा सार, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलकाती वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वक्त सुहाउँणा, हरि साची वड वड्याईआ। सम्बल नगरी धाम सुहाउँणा, गुर गोबिन्द वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाउँणा, विछड़ कदे ना जाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना ख़ाक रुलाउँणा, ग़रीब निमाणे लए उठाईआ। सन्त सुहेले दरस वखाउँणा, गुरू गुर चेले वेख वखाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाउँणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चार वरनां एका मार्ग लाउँणा, ऊँच नीच राउ रंक कोए रहिण ना पाईआ। सन्तन मीता लहिणा देणा झोली पाउँणा, पिछला मूल चुकाईआ। सतिजुग साचा धाम सुहाउँणा, धरनी धरत धवल देवे वड्याईआ। मस्तूआणा रंग रंगाउँणा, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहाउँणा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। हरिसंगत साचा मेल मिलाउँणा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। बजर कपाटी पर्दा लौहणा, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। अमृत आत्म ठांडा सीर प्याउँणा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पंज विकारा ख़ाक मिलाउँणा, पाकी पाक इक्क अख्वाईआ। सज्जण सैण साक हरि सतिगुर साचे आप अख्वाउँणा, कलिजुग झूठा नाता तोड़ तुड़ाईआ। भविख्त वाक पूर कराउँणा, सन्त मनी सिँघ गया लिखाईआ। वाली हिन्द आप उठाउँणा, शब्द निशाना तीर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर वेखे सहिज सुभाईआ। साचा घर सच महल्ला, हरि सन्तन वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल इक्क अकल्ला, खेलणहार दिस ना आईआ। पावे सार जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, निरगुण बैठा कर रुशनाईआ। जीव जन्त भुलाए कर कर वल छल्ला, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। चारों कुन्ट पंज विकारा करे हल्ला, मन मति रही कुरलाईआ। गोबिन्द फड़या तिक्खा भल्ला, एका खण्डा नाम चमकाईआ। शब्द अगम्मी चढ़या दला, नौ खण्ड पृथ्मी ढेरी ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि हरि वेख वखांयदा। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती डगमगांयदा। औखी घाटी वेख संसार, शब्द अगम्मी आप दौड़ांयदा। साचा साकी कर प्यार, नाम प्याला हथ्थ उठांयदा। गुरमुखां देवे ठंडी ठार, सांतक सति सति वरतांयदा। मस्तूआणा धाम न्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। काया गढ़ तोड़े हँकार, माया ममता मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, हरि वड वड्डा वड्याईआ। जुगा जुगन्त चलाए रथ, रथ रथवाही भेव ना राईआ। शब्द जणाई महिमा अकथ, अकथ कथा आप सुणाईआ। जूठा झूठा बुरज जाणा ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अठसठ, कलिजुग अन्तिम

कूके दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी प्रगट होवे शाहो शबासी निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी ब्रह्मण्डां खण्डा मारे एका सट्ट, दिस किसे ना आईआ। चौदां लोक वेखे हट्ट, चौदां तबकां फोल फुलाईआ। हरिसंगत तेरा सच इक्ठ, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या सिख समझाईआ। साची सिख्या सिख विचार, गुरमन्त्र नाम दृढ़ांयदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, दूसर संग ना कोए निभांयदा। एथे ओथे पावे सार, दर घर साचे मेल मिलांयदा। सचखण्ड दुआरा करे शब्द श्रृंगार, आप आपणी दया कमांयदा। जुगा जुगन्त साचे सन्त फड़ फड़ बांहों जाए तार, सन्त सुहेले मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एकँकार निराकार निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। निहकलंक हरि भगवान, दूसर कोए दिस ना आईआ। पंज तत्त ना कोए निशान, मन मति बुध ना कोए रखाईआ। ना कोई रक्खे पीण खाण, आलस निन्दरा विच ना आईआ। ना कोई मन्दिर ना मकान, चार दीवार ना कोए बणाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची भूमका अस्थान, थिर घर बैठा आसण लाईआ। रवि ससि ना कोए प्रकाश तेज़ भान, मण्डल मण्डप ना कोए सुहाईआ। ना कोई ज़मीन ना अस्मान, सिन्ध सागर धरत धवल ना कोए उपजाईआ। ना कोई नगर खेड़ा वसे ग्राम, जीव जन्त ना रचन रचाईआ। ना कोई सुबह ना कोई शाम, घड़ी पल ना कोए वखाईआ। निहकलंका आपे जाणे आपणा काम, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां वेख वखाईआ। वीह सद सोलां हरि बलवान, शब्द नगारे चोट लगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा नौजवान, बाल बिरध अवस्था ना कोए रखांयदा। एका साचा काहन, साचे मण्डल गोपी आप नचांयदा। आदि जुगादी देवणहारा दान, दाता दानी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहारा हरिजन मीता, हरि हरि आपणे रंग रंगाईआ। बैठा आपे इक्क अतीता, त्रैगुण माया नेड़ ना आईआ। सखा सहेला ठांडा सीता, सतिगुर नाउँ धराईआ। गुरसिख गुरमुख करे कराए पतित पुनीता, पतित पावण हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेला बीता, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। जीवां जन्तां परखे नीता, घट घट बैठा आसण लाईआ। पावे सार हस्त कीटा, ऊँचां नीचां फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पन्दरां कत्तक देवे वर, वीह सद सोलां बिक्रमी वज्जे वधाईआ। वीह सद सोलां सोलां श्रृंगार, गुरमुखां तन कराईआ। हरि हरि नाम भर भण्डार, काया मन्दिर आप सुहाईआ। निरगुण बाती कर उज्यार, घर घर विच करे रुशनाईआ। निझर झिरना

झिरे अपार, अमृत मेघ आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच तख्त सच सुल्तान, आदि जुगादी सद निगहबान, सन्त साजण देवे माण, जगत निमाणयां गले लगाईआ।

आदि जुगादी एकँकार, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता खेल अपार, भेव कोए ना पांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। अजूनी रहित नूर उज्यार, अनुभव प्रकाश समांयदा। वसणहारा सचखण्ड दुआर, थिर घर साचे आसण लांयदा। आपे पुरख आपे नार, आप आपणी सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला एकँकार, अकल कला कल आपणी धार, निरगुण जोत डगमगांयदा। निरगुण जोत हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। घर मन्दिर दीपक कर उज्यार, आप आपणा थान सुहाया। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग रखाया। ना कोई मन्दिर दिसे चार दीवार, महल्ल अटल ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर नूर नूर उपजाया। नूर उजाला हरि गोपाला, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर चले आपणी चाला, चाल निराली भेव ना आईआ। आपे काल आप महांकाला, देव इष्ट आप अख्वाईआ। आपे तोड़नहार जंजाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। अबिनाशी करता पुरख सुल्तान, एका रंग समाया। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड बैठा आसण लाया। जोद्धा सूर बली बलवान, इक्क अकल्ला आप अख्वाया। साचा चिल्ला तीर कमान, आप आपणे हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। आपणी रचना आपे रच, हरि आपे वेख वखांयदा। आपे खेल खिलारी होए सच्च, सुच्च आप वरतांयदा। आपे होए भाण्डा कच्च, आपे भन्न वखांयदा। आपे त्रैगुण अग्न जाए मच्च, एका लम्बू आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल ब्रह्मादी पारब्रह्म खेल खिलांयदा। पारब्रह्म हरि मेहरवाना, एका रंग समाया। जुग जुग खेले खेल वाली दो जहाना, लोकमात वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवे नाद तराना, शब्द अनादी इक्क सुणाया। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, एका हुक्मी बंधन पाया। सन्तां साधां देवे धुर फ़रमाना, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखाया। जुग करता हरि करने जोग, आपणी करनी किरत कमांयदा। आपे रसीआ रस रस भोगे आपणा भोग, भोग बिलास आप वखांयदा। आप चुगाए साची चोग, एका चोग आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे पावे सार चौदां लोक, चौदां हट्टां फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल एकँकार बोल जैकार, आपणा पहरा आपे लांयदा। शब्द जैकार हरि भगवान, आपणा आप अल्लाईआ। दूसर सुणे ना किसे कान, रसना जेहवा ना कोई हिलाईआ। ब्रह्मा वेता पावे आण, एका हुक्म फिराईआ। विष्नूं देवे साचा दान, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। शंकर दाता गुण निधान, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। तिन्नां मेला विच जहान, लोकमात करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेख नर नरेश आपे आप वटाईआ। भेख अवल्ला इक्क अकल्ला, आपणा आप वटांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ वेख वखांयदा। जन भगतां अन्दर आपे रला, जुग जुग जोत जगांयदा। निज घर आसण साचा मल्ला, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर हो प्रतक्ख, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा वेखे रेठ, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डे सख, हरि का नाम साची वस्त कोई ना झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। सतिजुग तेरी साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। वार अठारां लए अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। बेपरवाह हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर पहरे बाणा, पंज तत्त मेल मिलांयदा। त्रैगुण माया बन्न्हे साचा गाना, साचा सगन मनांयदा। शब्द अनादी धुन तराना, रागी राग अल्लांयदा। आपे जाणे आपणा आणा जाणा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाना, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग साचा उतरया पार, घर साचे वज्जी वधाईआ। त्रेता ढहि ढहि पए दुआर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे वर सहिज सुखदाईआ। धरत मात दर कर प्यार, घर साचा इक्क वसाईआ। साची सिख्या गुण विचार, घर घर बूझ बुझाईआ। राम नाम मन्त्र विच संसार, दोए दोए जोड़ जुड़ाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हँ ब्रह्म मोख इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। त्रेते वेस हरि हरि कर, आपणा खेल खिलाया। राम रूप मात धर, धर धरनी लेखे लाया। आपणा भाणा आपणे सिर जर जर, लोकमात वेख वखाया। रावण हँकारी तोड़ गढ़, गढ़ हँकारी आप मिटाया। ग़रीब निमाणयां आपणी हथ्थीं फड़ फड़, आपणे गले लगाया। भगतां अन्दर आपे चढ़ चढ़, निरगुण निरगुण दरस दखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाया। साची सिख्या हरि सुल्तान, जुग जुग आप समझांयदा।

जन भगतां होए निगहबान, लोकमात आप उठांयदा। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। एका राग सुणाए कान, धुंन अनादी नाद वजांयदा। एका अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। गुर शब्द एका आप श्री भगवान, साचा इष्ट वखांयदा। दूसर ना दिसे कोई दुकान, गुरमुख हट्ट ना किसे विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम नाम अमृत जाम, सृष्ट सबाई आप प्यांअदा। आप उपजाए आपणी यद, आपणा वंस वखांयदा। आप वजाए आपणा नद, आपे राग अलांयदा। आपे खेले खेल विच ब्रह्मदि, ब्रह्मादी नाउँ धरांयदा। आपे लोआं पुरीआं लँघे पार हद्द, सचखण्ड दुआरे आसण लांयदा। सन्त सुहेले भगतन चेले आप आपणे दर सद, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। त्रेता त्रीया कर कर वेस, हरि आपणा लेख लिखाया। पुरख अबिनाशी सदा अदेस, भेव कोई ना राया। लेखा जाणे गणपति गणेश, शिव शंकर फोल फुलाया। पावे सार बाशक सेज, सांगोपांग कवण हंढाया। ब्रह्मा वेखे इक्क नरेश, नर नरायण नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणाया। बणत बणाए हरि बनवारी, हरि साचा खेल खिलांयदा। द्वापर तेरी आई वारी, तेरा रंग रंगांयदा। कान्हा कृष्ना मीत मुरारी, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। खेले खेल वड बलकारी, आप आपणा बल धरांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सारी, बिप्पर सुदामा गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि आपणा नाउँ धरांयदा। कान्हा कृष्ना हरि हरि खेल, अचरज खेल खिलाईआ। पंचम मीता पंचम मेल, पंचम रंग चढ़ाईआ। पंचम जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण वेख वखाईआ। पंचम कट्टणहारा धर्म राए दी जेल, पंचम लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग जुग खेल हरि अवल्ला, हरि आपणा आप करांयदा। द्वापर तेरा वेख महल्ला, हरि साचा वेस वटांयदा। कलिजुग रूप राणी अल्ला, ऐनलहक्क नाअरा लांयदा। बिस्मिल होए विच मिला, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, संसार सागर फोल फुलांयदा। संसार सागर डूँघी डल्ला, हरि साचा फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए आपणा पल्ला, ईसा मूसा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करे आप पढ़ाईआ। आपणी विद्या आप पढ़ाए, हरि साचे वड वड्याईआ। कलमा अमाम आप अख्वाए, आपणा नाम दए सुणाईआ। कायनात फेरा पाए, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। दहि दिशा मृदंग वजाए, सोया कोई रहिण ना पाईआ। आपणा अंक आप वखाए, एका लेखा दए लिखाईआ। साचा बंक आप सुहाए, मुहम्मद मेल मिलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रूप आप वटाईआ। एका रूप एकँकार, आपणा आप वटांयदा। ईसा मूसा कर प्यार, कलिजुग संग निभांयदा। तिक्खी रक्खे आपे धार, ना कोई मेट मिटांयदा। पावे सार चार यार, चार यारी तोड़ निभांयदा। हक्क हकीकत मारे नाअर, तौफीक इक्क ख़ुदाए आप अख्वांयदा। मिहबान बीदो कर प्यार, नूर अलाही डगमगांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, भेव कोई ना पांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आपणी करनी रिहा कराईआ। खोल्हणहारा बन्द किवाड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अन्दर वड़ दए सहार, एका रंग रंगाईआ। मेटणहार पंचम धाड़, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। अग्नी बुझाए लग्गी हाढ़, तत्व तत्त मिटाईआ। सच वखाए इक्क अखाड़, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, घर घर वसे बेपरवाहीआ। ख़ालक ख़लक करे प्यार, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग देवे साचा वर, साचा मेला लए मिलाईआ। कलिजुग जुड़या साचा जोड़ा, मुहम्मद संग निभांयदा। जूठा झूठा मिल्या घोड़ा, चारों कुन्ट आप दौड़ांयदा। माया ममता हउमे हँगता लाया पौड़ा, उच्चा गढ़ सुहांयदा। चारों कुन्ट प्या रौला, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। संग मुहम्मद चार यार, आपणा नाअरा आपे लगाईआ। दीन इलाही कर त्यार, एका इसम दए वखाईआ। दूसर ना कोई मीत मुरार, ना कोई संग निभाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, वेखणहार दिस ना आईआ। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। खुल्हड़े केस करे पुकार, दर दरवेश बैठी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता आपणा वर, साची सखीआं सिख समझाईआ। धरनी देवे हरि दिलासा, एका मति समझांयदा। पुरख अबिनाशी चरन कँवल भरवासा, सति सति आप वरतांयदा। पंज तत्त वेखे जगत तमाशा, नानक नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरे पावे रासा, मण्डल मण्डप चरनां हेठ दबांयदा। राम नाम सति किसे कंडे ना तुले तोला माशा, अतोल अतुल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग देवे साचा वर, गुर नानक मेल मिलांयदा। गुर नानक सतिगुर हरि मेहरवान, पंज तत्त जोड़ जुड़ाया। शब्द अगम्मी इक्क बिबान, हरि साचे हथ्थ रखाया। लोआं पुरीआं पावे आण, नौ खण्ड वेख वखाया। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, ऊँचां नीचां मेट मिटाया। पारब्रह्म इक्क वखाण, एका रूप दरसाया। नाम सति कर प्रधान, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, आदि जुगादि होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले

खेल विच संसार, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। निरगुण सरगुण हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। नाम सति सति जैकार, एका आपणा नाअरा लाईआ। एका बोले बोलणहार, एका हुक्म जणाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेल पुरख अबिनाशी घनक पुर वासी शाहो शाबासी बेऐब परवरदिगार, आप आपणा खेल खिलाईआ। प्रगट होए विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। नानक अंगद अंग लगा, आपणा बिरध रखाया। सूरा सरबंग सिर हथ्थ रखा, साचे मार्ग आपे लाया। अनहद ताल मृदंग वजा, अनभव प्रकाश कराया। सर सरोवर साची गंग सुहा, अमृत ताल आप भराया। जगत दुआरे बन्द करवा, गुरू दुआर इक्क सुहाया। एका दरस आप दिखा, जगत तृष्ना हरस मिटाया। साचे पौड़े आपे चढ़ा, उच्चा डण्डा हथ्थ उठाया। सचखण्ड निवासी निवास करा, निज आत्म मेल मिलाया। जोत प्रकाश दीपक दीआ जगा, ना सके कोई बुझाया। सृष्ट सबाई गया समझा, हरि का शब्द गुर अख्वाया। अंगद गुर वेस वटा, आपणी लए अंगड़ाईआ। अमरदास गले लगा, अमरापद वखाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। आपे पकड़नहारा बांह, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। आपे हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाईआ। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, सिर समरथ हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर अन्दर आपे वड़, घर घर विच दए सुहाईआ। घर विच घर दए सुहाया, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। अज्ञान अन्धेरा सर्ब मिटाया, जोती जोत होए रुशनाईआ। बिरध अवस्था लेखे लाया, बाल जवानी भेव ना राईआ। आपणे मार्ग आपे लाया, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। सच सरोवर सेव कमाया, अमृत बरखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंड आप वंडाईआ। पहली वंड हरि निरँकार, नानक आप वंडांयदा। दूजी मंग विच संसार, अंगद अंग लगांयदा। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, अमर अमर कहांयदा। चौथे पद सेवादार, रामदास गुर सेव कमांयदा। सर अमृत अमृत भर भण्डार, एका मंग मंगांयदा। शब्द नाद नाद जैकार, आपणा नाअरा लांयदा। अर्जन अर्जन कर प्यार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। चारे अक्खर दए अधार, जगत वक्खर चाल चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क समझांयदा। गुर अर्जन हरि हरि चीता, गुर हरि गोबिन्द रंग चढ़ाया। मिल्या मेल इक्क अतीता, विछड़ कदे ना जाया। पुरख अबिनाशी ठंडा सीता, हरि मन्दिर आसण लाया। लक्ख चुरासी परखे नीता, हरि का नाम नज़र ना आया। पावे सार वेद पुराण अठारां ध्याए गीता, अञ्जील कुरानां फोल फुलाया। वसणहारा शिवदुआले मन्दिर मट्ठ मसीता, आप आपणा रूप वटाया। पावे सार राम सीता, राधा कृष्न पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेव खुल्हाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। पंचम गुर हो त्यार, साची सेव कमांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आप आपणी दया कमांयदा। देवे नाम वड भण्डार, एका शब्द जणांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहांयदा। शिव शंकर गलों लाहे हार, बाशक तशका गलों हटांयदा। विष्नूं दर करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। करोड़ तेतीसा हाहाकार, सुरपति इन्द ना संग निभांयदा। गुर अर्जन गुर मारे बाण, अगाध बोध शब्द लिखांयदा। सन्त भगवन्त एका धार, एका दर वखांयदा। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, चार वरनां आप समझांयदा। शब्द गुर प्रगट होए विच संसार, पंज तत्त गुरू ना कोई अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि निरँकार आपे वेख वखांयदा। पंचम जोत हरि उजागर, आपणा बिरध रखाया। छेवें गुर बण सौदागर, साचा वणज कराया। निर्मल कर्म करे उजागर, दोए दोए धार बंधाया। साचा अमृत जल भरया गागर, इक्क उछाला आप वखाया। एका नाम रत्ती रत्नागर, एका रंगण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती धार पंज तत्त प्यार, शब्दी आपणी वंड वंडाया। शब्द गुर वंडी वंड, गुरू ग्रन्थ बणाईआ। पंज तत्त खेल वरभण्ड, जोती जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। पावे सार विच ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं डेरा ढाहीआ। लक्ख चुरासी वेखे नार दुहागण रंड, दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि राए हरि दया कमाए, आप आपणे रंग रंगाईआ। हरिराए हरि हरि पाया, हरि घर वज्जी वधाईआ। दर घर साचे मंगल गाया, एका शब्द अल्हाईआ। रूप रंग ना कोए जणाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका लेखा दए जणाया, आपणे लेखे लए लगाईआ। रूप अनूप आप वटाया, बाल बाला आप उपजाईआ। हरिकृष्न हरि आप अख्वाया, दूसर भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल विच संसार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। धरनी दुःख काया अंग, दिवस रैण कुरलाया। दर घर साचे मंगे मंग, हरिजन कोए ना होए सहाया। कलिजुग नईआ वगे झूठी गंग, साचा सर ना कोई उपाया। चारो कुन्ट वज्जे मृदंग, काम क्रोध रिहा वजाया। राज राजानां शाह सुल्ताना होए नंग, साचा पर्दा ना कोए वखाया। पारब्रह्म सूरा सरबंग, एका शब्द रिहा सुणाया। गुर तेग बहादर तेरा देवे संग, आप आपणा भेट चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप लिखाया। तेग बहादर साची धार, कलिजुग अन्तिम आप चलाईआ। अन्तिम मंगी मंग दिल्ली दरबार, प्रभ अबिनाशी अग्गे झोली डाहीआ। तेरा तेरे उत्तों दित्ता वार, तेरा तेरी झोली पाईआ। तेरा

रूप सर्ब संसार, तेरी सिख्या इक्क समझाईआ। तेरा शब्द तेरा जैकार, तेरा नाअरा एका लाईआ। तेरा नाम तेरा भण्डार, तेरा तेरा दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर तेग बहादर देवे वर, तेरा लेखा दए लगाईआ। गुर तेग बहादर हरि हरि लेख, शब्दी शब्द जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ धारे भेख, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। शाह सुल्ताना मिटे रेख, राज राजान रहिण ना पाईआ। तेरा रूप दस दस्मेस, ल्ए उपजाईआ। तेरा नाम रहे हमेश, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच्च आप वरताईआ। गोबिन्द सूरा वड बलवान, पुरख अकाल आप उपजांयदा। सुत्त दुलारा कर प्रधान, साची सिख्या इक्क समझांयदा। धर्म झुलाउणा इक्क निशान, सच निशाना हथ्थ फड़ांयदा। एका चिल्ला तीर कमान, साचे गात्रे आप लटकांयदा। एका अमृत पीण खाण, जगत तृष्ना ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतार, वरन गोत ते वसे बाहर, चार वरनां करे प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। ऊँचां नीचां मिल्या मेला, गुर गोबिन्द आप सलाहीआ। एका दुआर सोहे गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ पुरख अकाल बणया सज्जण सुहेला, दूजा इष्ट ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। गुर गोबिन्द मेला हरि निरँकार, एका घर सुहांयदा। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, साचा संग निभांयदा। खेले खेल विच संसार, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। सुत्त दुलारा कर त्यार, शब्दी हुक्म जणांयदा। एका अक्खर बोल जैकार, साचा डंका फतिह मात वजांयदा। राउ रंकां कर ख्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गोबिन्द गुर तिक्खी धार, लोकमात रखाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, चार वरनां इक्क समझाईआ। वालों निक्की अपर अपार, नेत्र नैण दिस ना आईआ। मुनी रिखी ना पायण सार, पंडत पांधे भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, दर घर साचा आप सुहाईआ। गुर गोबिन्द गुर मेहरवाना, हरि सज्जण मीत मुरारड़ा। शब्द अगम्मी बन्ने गाना, साचा देवे मात सहारड़ा। एकँकारा धुर फ़रमाना, आप सुणाए एकँकारा, लेखा जाणे सूलां सथ्थर यारड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक मेला एका दर, एका घर सुहांयदा। घर सुहञ्जणा पुरख अबिनाशा, एका रंग रंगाया। गुर गोबिन्द वेख्या जगत तमाशा, हरि साचा हुक्म सुणाया। साचे मण्डल पावे रासा, आप आपणा खेल खिलाया। गुरमुखां अन्दर करे वासा, अमृत आत्म जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। आपणा भेव आप खुल्हाए, एका एक पुरख अकाल। शब्द अगम्मी आप सुणाए, देवे धुर

११३०
०८

ਫ਼रमान। गुर गोबिन्द तेरी घाल पारब्रह्म प्रभ लेखे लाए, हरिजन तोड़े जगत जंजाल। तेरा डंका नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आप वजाए, आपे चले अवल्लड़ी चाल। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां पकड़ उठाए, खेले खेल शाह कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात बणे दलाल। हरि दलाल गोबिन्द प्यारा, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। तेरा सोहे बंक दुआरा, तेरी नगरी डेरा लांयदा। सम्बल नगर कर उज्यारा, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखांयदा। जोती नूर साचा दीप होए उज्यारा, लोकमात ना कोई बुझांयदा। खड़ग खण्डा पकड़े तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलांयदा। भेख पखण्डा करे पार किनारा, जूठ झूठ दिस ना आंयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्द हरिजन वधाई, घर साचे मंगल गाया। वार थित कोई जाणे नाहीं, तेरा भेव किसे ना आया। तूं दाता बेपरवाही, बेअन्त बेअन्त आप अख्वाया। गुरसिख गुरमुख सन्त सुहेले गुरू गुर चेले फड़ बांही, आपणा मेल आप मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेला वक्त दए सुहाया। चार युग मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सतिजुग हरि हरि निभिआ संग, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। त्रेते वेखे तेरा मृदंग, तुरीआ वेस वटाईआ। द्वापर दुआर आपे लँघ, दोए दोए जोड़ जुड़ाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट वजाए मृदंग, सच सुच्च बैठी मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी खेल खिलाईआ। हरि हरि साची खेल खिलावण आया, पारब्रह्म करतार। निरगुण जोती जोत डगमगावण आया, प्रगट हो विच संसार। निहकलंक आपणा नाउँ रखावण आया, पंज तत्त ना कोई पसार। जन भगतां साचा संग निभावण आया, नाता तोड़ सर्ब संसार। चारे वरनां एका रंग चढ़ावण आया, ऊँचां नीचां करे पार किनार। राज राजानां शाह सुल्ताना, तख्तों लाहवण आया, जोद्धा सूरबीर बली बलकार। गुर गुर नाउँ प्रगटावण आया, जोती नूर कर उज्यार। साचा खण्डा फड़ चमकावण आया, तिक्खी रक्खी आपे धार। चारों कुन्टां मेट मिटावण आया, दहि दिशा खेल अपार। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखावण आया, सत्तां दीपां दए हुलार। लक्ख चुरासी पार करावण आया, बेड़ा वेखे विच मँझधार। कूड़ी क्रिया दाग़ मिटावण आया, करे खेल अगम्म अपार। साची सिख्या इक्क समझावण आया, चार वरन सोहे इक्क दुआर। सन्त सुहेले आप उठावण आया, दूसर कोई ना मीत मुरार। आदि निरँजण जोत जगावण आया, पुरख अकाल खेल न्यार। सति सरूप रूप वटावण आया, सांतक सति सति वरते वरतार। कलिजुग काली रैण अन्धेरी मिटावण आया, साचा चन्न करे उज्यार। घर मन्दिर इक्क सुहावण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेस वटाया। सतिजुग मंगे मंग अपार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। त्रेता निउँ निउँ करे निमस्कार, चरन ध्यान लगाईआ। द्वापर दर बणे भिखार, भिखक भिच्छया झोली पाईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। नानक गोबिन्द लेखा अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वेद व्यासा रिहा ललकार, पुराण अठारां रसना गाईआ। राह तक्के संग मुहम्मद चार यार, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। चौदां तबक नेत्र रहे उग्घाड़, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मा होया अन्त बेज़ार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। विष्नूं तेरा कौल करार, ना कोई संग निभाईआ। शंकर वेखे जगत उजाड़, धूंआँधार सर्ब समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका सन्त दए वड्याईआ। साचा सन्त हरि दुलारा, हरि सतिगुर आप उठांयदा। लोकमात बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। मेटे अन्ध अन्धेर अन्ध अँध्यारा, सच ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। भाण्डा भरम भउ भन्न तोड़े गढ़ हँकारा, अन्दर वड़ वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी जोत प्रगटांयदा। जोत प्रगटाए हरि निरँकार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। पुरी घनक हो उज्यार, वासी पुरी घनक आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण खेल संसार, हरि साचा आप कराईआ। एका शब्द दए हुलार, सन्त मनी सिँघ आप उठाईआ। ग़रीब निमाणे पावे सार, बुध मति मन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द हुलारा निरगुण धारा आप धराईआ। शब्द हुलारा नाम अनमोल, हरि सतिगुर आप रखांयदा। पंज तत्त तोले आपणे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। अन्दरे अन्दर कूके आप सुणाए आपणा बोल, हकीकी राग भेव ना पांयदा। आपे बदलया आपणा चोल, काया चोला वेस वटांयदा। आपे खेले आपणा होल, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। सन्त मनी सिँघ कर वणजारा, हरि साचे वणज कराया। मूर्ख मूढ़ लगाया साची सेवा सेवादार, साची सेवा आप कमाया। हरि मन्दिर गया होया ख़बरदार, ऊँची कूके दए दुहाया। पुरी अनन्द करे पुकार, नीला बस्त्र तन छुहाया। रकाब गंज एका धार, एका हुक्म फिराया। वरते वरतावे विच संसार, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर करतार, जगत विचोला ना कोई बणाया। सन्त मनी सिँघ साची सेव, हरि साचा आप लगांयदा। पुरख अबिनाशी अलख अभेव, अगम्म अगोचर भेव ना आंयदा। ना कोई गाए रसना जेहव, बत्ती दन्द ना कोई हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ दए सहारा, अन्दरे अन्दर शब्द अपारा, निरगुण नाद इक्क वजांयदा।

शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, हरि साचा आप सुणांयदा। सन्त मनी सिँघ सेवादार, साची सेव कमांयदा। मस्तूआणा धाम न्यार, दर दर आए सीस झुकांयदा। साचे सन्त सन्त प्यार, साचा हुक्म सुणांयदा। प्रगट होया विच संसार, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। कलिजुग अन्तिम मारे मार, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। सतिजुग वरते विच संसार, सतिगुर साचा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। सन्त सन्त सन्त जणाई, हरि साचा आप जणांयदा। सन्त सन्त सन्त कुड़माई, हरि साचा सगन मनांयदा। सन्त सन्त सन्त घर वज्जी वधाई, हरि साचा वेख वखांयदा। सन्त सन्त सन्त सरनाई, घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। आपणा भेव हरि खुल्हाए, सन्त मनी सिँघ लेख लिखांयदा। मस्तूआणे फेरा पाए, मस्त रूप आप वखांयदा। आपे लिखे आपे दए मिटाए, आपे रंग रंगांयदा। आपे राज राजाना वेख वखाए, पर्दा उहला आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लिख्या साचा लेख, आप उठाए नर नरेश, प्रगट होए दर दरवेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। सन्त मनी सिँघ लेख लिखाया, शाह संगरूर जणाईआ। निहकलंक कल जामा पाया, पुरी घनक वज्जे वधाईआ। शाह सुल्तान कोई रहिण ना पाया, जो बैठे मुख भवाईआ। लहिणा देणा

११३३

दए चुकाया, फूल बंस वेख वखाईआ। शाह फरंगी मुख भुवाया, उलटा मुख रखाईआ। कलिजुग वैंहदी धार कन्ढी डेरा रहे रुढ़ाया, ना सके कोई बचाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलाया, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी देवे आप वड्याईआ। सन्त मनी सिँघ सच संदेश, राज राजाना आप सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम दर दर फिरना बण दरवेश, दर दरबार ना कोए सुहांयदा। आपणे नेत्र आपे वेख, बीस बीसा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। मस्तूआणा धाम न्यार, साचे सन्त मिले वड्याईआ। सेव कमाई अपर अपार, पुरख अबिनाशी बूझ बुझाईआ। अन्दर खुल्हया इक्क किवाड़, दूई कंध रहिण ना पाईआ। नाता तुटयां पंज धाड़, हउमे रोग रहे ना राईआ। जगी जोत बहत्तर नाड़, घर साचे वज्जी वधाईआ। धर्म वेख्या इक्क अखाड़, चार कुन्ट रुशनाईआ। डेरा लाया विच उजाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस देवे कर कर तरस अन्दर मन्दिर बूझ बुझाईआ। आपणा दरस हरि वखाए, दिस किसे ना आंयदा। दूजी धार आप वटाए, सन्त मनी सिँघ हुक्म सुणांयदा। सन्त मनी सिँघ रिहा कुरलाए, दिवस रैण ढोला गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दरे अन्दर आपे वड़, आपणी सिख्या आप समझांयदा। पारब्रह्म प्रभ अन्दर वड़या, दित्ती वड वड्याईआ। साचे

सन्त बांहों फड़या, विछड़ कदे ना जाईआ। अतर सिँघ बन्ाया आपे लड़या, लड़ पल्लू गंढु रखाईआ। सतिजुग लग्गे साची जड़या, हरि साचा दए लगाईआ। अग्गे हो हो दरस करया, नेत्र नैण दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता उत्तम वर, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। साची भिच्छया हरि निरँकार, सन्तन झोली पांयदा। अगला लेखा जाणे विच संसार, वेद कतेब ना कोए लिखांयदा। प्रगट होवे हरि निरँकार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। चारों कुन्ट धूंआँधार, सच प्रकाश ना कोए करांयदा। सृष्ट सबाई मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। सन्त सुहेले लाए पार, सच मलाह आप हो जांयदा। गुरमुख साजन लए उभार, आप आपणी दया कमांयदा। पुरख पुरखोतम हो त्यार, कलिजुग आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त दित्ता वर, तेरी आसा हरि भरवासा, पूरी दए कराईआ। शब्द जणाई शब्द घनघोर, अन्ध अन्धेर मिटाया। पुरख अबिनाश हथ्थ पकड़े डोर, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जन भगतां नाता तोड़े पंचम चोर, मन मति दए दुरकाया। दूई द्वैती देवे होड़, साचे दर रहिण ना पाया। चरन प्रीती लग्गी निभे तोड़, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाया। पुरख अगम्मा चड़या साचे घोड़, लोकमात वेस वटाया। सच दुआरे आया दौड़, मस्तूआणा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए लिखाया। सतिजुग तेरा साचा रूप, सच सच वरतांयदा। त्रेता लेखा जाणे चारे कुन्ट, आप आपणी कल वरतांयदा। द्वापर हरि हरि गया तुठ, बिदर निमाणा गले लगांयदा। अमृत पीता एका घुट्ट, साग अलूणा भोग लगांयदा। तेरा भण्डार वरते अतुट, कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा। तीर निराला रिहा छुट्ट, ना मुखी कोए भवांयदा। सदा भण्डारा वरते अतुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सुत्त अगम्मी शब्द सिक्दार, हरि साचा आप वरतांयदा । कलिजुग अन्तिम पावे सार, लोकमात वेस धरांयदा। मस्तूआणा वेखे सच दरबार, चार वरनां आप समझांयदा। सम्मत सोलां खेल अपार, पन्दरां कत्तक दरस वखांयदा। सन्त मनी सिँघ बन्ने धार, तिक्खी धार ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कीता भुल्ल ना जांयदा। मस्तूआणा धाम धामा, धरनी धरत सुहाईआ। लेखा जाणे कृष्ना रामा, राम रूप आप वटाईआ। देवणहारा सच पैगामा, अजराईल मेकाईल असराईल सेवा लाईआ। पूरन करे आपणा कामा, हरि का सन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन दित्ता साचा वर, अन्तिम लेखा लेखे लाईआ। सन्त मनी सिँघ सति सतिवाद, साची सेव कमांयदा। नगर बड्डुक्खे मिली दाद, दर साचा इक्क वखांयदा। इक्क लगाया साचा नाद, शाह सुल्ताना आप सुणांयदा। जीव जन्त करन फ़रयाद, जूठे झूठे मुख हलकांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्म आप फिरांयदा। सन्त मनी सिँघ दर दर फड़या, दोए हथ्थ जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी खेल करया, भेव कोए ना पाईआ। आपणा लेखा शाह सुल्ताना अग्गे धरया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस बेपरवाहीआ। सन्त मनी सिँघ करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। जूठा झूठा नाता विच संसार, सगला संग ना कोए निभांयदा। बिन हरि तेरे ना कोए सहार, ना कोई नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। सन्त मनी सिँघ सुण कर ध्यान, हरि साचा शब्द जणाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, वड दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम तेरी कीमत पाए आण, लक्ख करोड़ी ना कोए चुकाईआ। राज राजान सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आईआ। प्रगट होए वाली दो जहान, वीह सद बिक्रमी वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप झुलाईआ। सत्तां दीपां पावे आण, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मस्तूआणे कर पछान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगाईआ। मम्माः मस्त अपार, माया ममता मोह तजांयदा। मम्माः मोख दुआर, दर घर साचा इक्क वखांयदा। मम्माः मेल निरगुण धार, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। मम्माः मिल्या मीत मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा आप सुहांयदा। तत्ता तिक्खी धार, त्रैलोक आप जणाईआ। तिन्नां गुणां पावे सार, रजो तमो सतो वेख वखाईआ। त्रै त्रै देशा खेल न्यार, मन मति बुध करे लड़ाईआ। त्रै त्रै लोकां हो उज्यार, एका नाअरा दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तत्ता तालिब इक्क रखाईआ। सस्सा सतिगुर रूप, सति सतिवाद समांयदा। आदि जुगादि शाहो भूप, सतिगुर नाउँ धरांयदा। लेखा जाणे चारे कूट, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम गया तुठ, निहकलंक नाउँ रखांयदा। गुरमुखां देवे अमृत घुट्ट, साचा जाम प्यांअदा। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन नेत्र लोचण नैण दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त आप सुहांयदा। सन्त मनी सिँघ बण भिखार, एका मंग मंगांयदा। तेरा दर तेरा दुआर, हरि साचे तोहे भांयदा। तेरा रंग सर्ब संसार, तेरी रंगण नाम चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सन्त मनी सिँघ मंगी मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मेरा तेरा पंज तत्त नाता तुट्टे संग, शब्द शब्द होए कुड़माईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत, तिन्न सौ सट्ठ हाडी ना कोए वखाईआ। तूं पारब्रह्म पुरख समरथ, तेरी सरन इक्क सरनाईआ। जुगा जुगन्तर चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी देवण मथ, नाम निधाना

११३५ ०८

इक्क जणाईआ। शब्द जणाई इक्क अकथ, शब्दी शब्द कथ ना सके राईआ। कलिजुग बुरज जाणा ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। निहकलंका गेड़े आपणी लड्ड, आपणा गेड़ा आप दवाईआ। लहिणा देणा चुकाउँणा तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी सुरस्ती नहावण कोए ना जाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका पिता एका मात, एका गोद सुहाईआ। एका वरन एका ज़ात, एका गोत जणाईआ। एका देवे साची दात, एका झोली पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चरन कँवल बंधाए साचा नात, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। सन्त मनी सिँघ लिख्या लेख, मस्तूआणे बन्द कराया। पुरख अबिनाशी धारे भेस, निहकलंकी जामा पाया। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंडे मूंड मुंडाया। अलक्ख निरँजण हो प्रवेश, जोती नूर डगमगाया। सति पुरख सदा आदेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा लहिणे झोली पाया। सन्त मनी सिँघ करे पुकार, नीर रो रो दए दुहाईआ। नाता तुट्टा जीव गंवार, जीव जन्त ना संग रखाईआ। पाया हरि भगवन्त इक्क करतार, मीत मुरारा मेल मिलाईआ। सो मिल्या संग संग दुआर, दर दरवाज़ा खोलू खुलाईआ। वज्जया डंक सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा वेख वखाईआ। दर घर साचा हरि हरि पेख्या, परम पुरख करतार। पिछला लेखा आपे वेख्या, आपणा पर्दा आप उतार। ना कोई भुल्ले भरम भुलेखया, प्रगट निहकलंक नरायण नर अवतार। डंक वजाए देस पर्देस्सया, सम्मत वीह सौ सोलां होए उज्यार। नौ खण्ड पृथ्मी किसे दी ना चले पेशया, प्रभ मारनहारा शब्द मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार। वड संसारा हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द डंक वजाए विच संसार, लक्ख चुरासी जीव जन्त सोए आप उठांयदा। ब्रह्मा वेता दए हुलार, नेत्र अक्ख खुलांयदा। विष्नूं सेजा पावे सार, बाशक तशका फोल फुलांयदा। मस्तूआणा तेरा वेखे नाता जगत संसार, कवण सँघारी नाम धरांयदा। अन्धेरी राती हो उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। निहकलंक कल जामा धार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सम्मत सोलां हो उज्यार, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। सन्त अतर सिँघ कर प्यार, उत्तम वेखे सहिज सुभाईआ। वरते भण्डारा हरि निरँकार, साची देगा आप चढ़ाईआ। पहला करया इक्क विहार, पर्दा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। पन्दरां साल मुख छुपाया, दिस किसे ना आईआ। छैल छबीला रंग रंगीला मोहण माधव बण के आया, आप आपणी कल वरताईआ। गुरसिख हरि संगत हरि भगत कबीला

इक्क बणाया, दूजा दर ना कोए सुहाईआ। चारों कुन्ट अग्नी जोती तीला आपे लाया, ना सके कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका नूर करे रुशनाईआ। मस्तूआणे हरि हरि जागया, निरगुण नूर करे रुशनाया। सन्त सुहेला उठ उठ भागया, हरि शब्दी मेल मिलाया। नौ खण्ड पृथमी मारे वाज्जया, सत्तां दीपां बोल सुणाया। चौदां लोक प्रगट होया ग़रीब निवाज्जया, चौदां लोकां वेख वखाया। त्रिलोकी नंदन साजण साज्जया, साजणहारा आप हो आया। वड भूप शाह राजन राज्जया, एकँकार आप अख्वाया। अस्व घोड़े चढ़े ताज्जया, नीला नीली धारों पार कराया। प्रगट होए देस माज्झया, सम्बल नगरी धाम सुहाया। कलिजुग सतिजुग रचया काज्जया, दोहां विचोला आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे रिहा जणाया। आपणा भेव हरि खुल्हाए, हरिसंगत दए समझाईआ। मस्तूआणे लेख लिखाए, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सम्मत सतारां चारों कुन्ट हिलाए, स्यासत विरासत कोई रहिण ना पाईआ। अठ्ठ अठारां ढेर ढाहे, आप आपणा वणज कराईआ। उन्नी उनीसा तेल चढ़ाए, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। बीस बीसा हरि रघुराए, दिल्ली तख्त चरन छुहाईआ। साचा हुक्म आप जणाए, नौ खण्ड पृथमी बंधन पाईआ। सत रंग निशाना इक्क झुलाए, सत्तां दीपां दए वखाईआ। वाली हिन्द रिहा समझाए, हरि साचा दे मति आप समझाईआ। सीस ताज ना कोई टिकाए, प्रभ ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। गोबिन्द जोद्धा सूरबीर एका खण्डा नाम चमकाए, शब्द अगम्मी फौज चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा लेखा दए बुझाईआ। हरि लेखा आप बुझांयदा, दूसर नाही कोए। दूजा पर्दा आपे लांहयदा, प्रगट होए तिन्नां लोए। तीजा नेत्र आप खुल्हांयदा, हरिभगती भगत करे रसोए। चौथे पद आप समांयदा, घर साचे आपे सोहे। पंचवे पंचम मेल मिलांयदा, देवे नाम साचे ढोए। छेवे छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा, आपणी सेजा आपे सोए। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगांयदा, निहकलंक आपे होए। अठवें अठ्ठां तत्तां आप उठांयदा, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध लेखा रहे ना कोए। नावें नौ दरवाजे वेख वखांयदा, कलिजुग कवरी चारे कुन्ट साची सेज ना दिसे कोए। दसवें दर घर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बीज आपे बोए। दसवें दर दुआर, हरि साचा हरि सुहाईआ। मस्तूआणा धाम न्यार, हरि मन्दिर आप वखाईआ। निरगुण बाती जोत उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद साचा राग अल्हाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। शब्द सुहेला मीत मुरार, इक्क अकेला वेस वटाईआ। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

मस्तूआणा लेख लिखाईआ। मस्तूआणा हरि भगवन्त, आपणे लेखे लेख लिखांयदा। मेल मिलावा साचे सन्त, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। हरिजन मेला नारी कन्त, नर नरायण वेस वटांयदा। भरम भुलेखा जीव जन्त, हरि का भेव कोई ना पांयदा। खेले खेल आदि अन्त, जुगा जुगन्त नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, मस्तूआणा साचा धाम सुहांयदा। मस्तूआणा धाम सुहञ्जणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। खेले खेले दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर वेख वखाईआ। जन भगतां नेत्र नैण पाए अंजणा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सच दुआरे कराए साचा मजना, धूढ़ी टिक्का एका मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। मस्तूआणा धाम सुहावणा, वीह सौ इक्की लेख लिखांयदा। पुरख अबिनाशी फेरा पावणा, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहांयदा। चार वरनां साचा धाम उपजावणा, नौ खण्ड पृथ्मी वंड वंडांयदा। नौ सौ नड़िनवे राज राजन पहली वार चल के आवणा, साचा सगन मनांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका दर दरसावणा, राम रूप आप वटांयदा। कान्हा कृष्ना नज़री आवणा, गोपी काहन मण्डल रास आप नचांयदा। कलमा अमाम आप पढ़ावणा, मुकामे हक्क वेख वखांयदा। नूर अलाही नज़री आवणा, ईसा मूसा भेव चुकांयदा। संग मुहम्मद संग निभावणा, आपणा मृदंग आप वजांयदा। नानक डंका इक्क सुणावणा, नाम सति सति सर्ब पढ़ांयदा। वाहिगुरू फतिह इक्क गजावणा, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण खेल खिलावणा, दूसर दिस किसे ना आंयदा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म समावणा, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौ चार पाए सार, नौ चार वेख वखांयदा। नौ चार एका धार, हरि सतिगुर आप दए बंधाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी खेल अपार, मस्तूआणा वड वड्याईआ। दर दुआरे खुल्ले किवाड़, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। हरिसंगत जोड़ होए सतारां हाढ़, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। दरगाह साची देवे वाड़, धाम अवल्ला इक्क अख्वाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला आपे फिरे पिछे अगाड़, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरना एका घर वखाईआ। चार वरनां इक्क दरवाज़ा, हरि साचे आप खुलावणा। लेखा जाणे ग़रीब निवाजा, आपणा लिख्या लेखे पावणा। सतिजुग साचा साजण साजा, साचा मार्ग इक्क वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मस्तूआणा मस्त दुआर, सन्त भगवन्त एका धार, एका रंग रंगावणा। रंग रंगीला हरि हरि मीता, एका रंग रंगाईआ। प्रगट होए धाम अनडीठा, लोचण कोई ना वेखण पाईआ। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत एका जाम प्याईआ। चार वरनां ठंडा सीता, गुरमति इक्क समझाईआ। आपे राम आपे सीता, राधा

कृष्न आप अख्वाईआ। आपे वेद पुराण अठारां ध्याए गीता, अञ्जील कुरान तीस बतीसा आपे गाईआ। आपे गुरदर मन्दिर मसीता, मट्ठ शिवदुआला आपे आसण लाईआ। आपे हरिजन वसे चीता, चितवत ठगौरी कोई ना पाईआ। आपे रंग रंगाए हस्त कीटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला खेले खेल बेपरवाहीआ। आपे बेपरवाही नूर अलाही, नूरो नूर डगमगांयदा। देवणहारा सच सलाही, साचा मार्ग एका लांयदा। चार वरनां बणे मलाही, साची नईआ इक्क चलांयदा। जन भगतां मेले थाउँ थाँईं, निरगुण सरगुण आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची रंगण आप रंगांयदा। सन्त मनी सिँघ विछड़या जग, हरि साचे नाता तोड़ तुड़ाया। परम पुरख सरन सरनाई एका गया लग्ग, सरनगत इक्क जणाया। नाम निधाना बन्न्या तग, साचा सगन मनाया। नज़री आए उप्पर शाह रग, घर साचा वेख वखाया। दीपक दीवा गया जग, ना सके कोई बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लिख्या लेख लिखाया। सन्त मनी सिँघ बन्दीखाना, साढे तिन्न साल आप बंधाया। लेखा जाणे गुण निधाना, शाह सुल्ताना दिस ना आया। शब्द जैकारा हरि भगवाना, एका एक रिहा सुणाया। सन्त मनी सिँघ लाए ताअना, तूं वल छल धारी भेख पखण्डी तेरा भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव छुपाया। सन्त मनी सिँघ लाई चोट, शाह संगरूर दर दरबानया। हउँ तउँ सतिगुर हउँ रक्खी ओट, तेरा बिरध आप पछानया। तूं जीव जन्त उधारी कोटी कोटि, हउँ सेवक बाल अञ्याणया। तेरी महिमा सुण सुण आदि जुगादि भरे ना पोट, कोटन कोटी गायण राग तरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सच ज्ञानया। सन्त मनी सिँघ सुनणा कन्न, हरि साचा आप सुणाईआ। तेरा नाता पंज तत्त तन, मेरा नाता निरगुण रूप वटाईआ। तेरा नेत्र जगत चन्न, मेरा चन्न जगत ब्रह्मण्ड करे रुशनाईआ। पहलां भाण्डा तेरा देवे भन्न, फिर शाह सुल्तान ख़ाक मिलाईआ। दो जहानां बेड़ा आपे बन्न्, कलिजुग अन्तिम बणे मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, सत संसारा फोल फुलाईआ। सन्त मनी सिँघ मुख भवाया, तेरी ओट रही ना राईआ। दर दरबारे ना होएउँ सहाया, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। तेरा तन रहिण ना पाया, तेरा नित करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सन्त मनी सिँघ लग्गी बिरहों अग्ग, प्रभ साचे आप लगाईआ। अन्दरे अन्दर बद्धा तग्ग, दिसे किसे ना आईआ। फड़ फड़ हँस बणाया कग्ग, एका माणक मोती चोग चुगाईआ। सच सरनाई जाणा लग्ग, वेले अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची

११३८
०८

सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या निरगुण धार, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। साढे तिन्न साल गुप्त ज़ाहर, अन्दर बाहर खेल खिलांयदा। नेत्र दरस ना दरस दातार, सरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी करे प्यार, कमलापत सच सुगंध आपणी आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार हरि निरँकार, जोत उज्यारा आप करांयदा। जोत उज्यार, वीह सद बिक्रमी हरि साचा करे रुशनाईआ। वीह सौ इक्क खेल अपार, एकँकार अकल ख़ुदाईआ। दूजे तीजे हो उज्यार, चौथे करे शब्द कुड़माईआ। पंचम मीता ठंडा ठार, छेवें दर वज्जे वधाईआ। सत्तवें खेल विच संसार, अठवे ब्यास किनारा पार कराईआ। नौवें नौ दर पावे सार, साधां सन्तां खोज खुजाईआ। दसवें मेला हरि गिरधार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। इक्क ग्यारां हो त्यार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। दो दस बारां संगत विहार, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। त्रै दस तेरी कर कर मेहर, राज राजानां सीस दस्तार गया बंधाईआ। साधां सन्तां आई हार, साचा राह ना कोए वखाईआ। वीह सौ चौदां हो उज्यार, एका इक्की वंड वंडाईआ। सन्त मनी सिँघ करया बन्द किवाड़, साचा हुक्म सुणाईआ। साढे तिन्न साल तेरा नाम ना उपजे विच संसार, तेरा लेखा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे खेल, खेलणहार दिस ना आईआ। सन्त मनी सिँघ करया बन्द, साढे तिन्न साल वक्त विहाया। सन्त मनी सिँघ चढ़या चन्द, साढे तिन्न साल मुख छुपाया। सन्त मनी सिँघ मेल मिलाए दया कमाए ख़ुशी कराए बन्द बन्द, वीह सौ सोलां बिक्रमी पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शाहो शबासी आपे गाए साचा छन्द, सोहँ ढोला नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा लेखे लाया। सन्त मनी सिँघ सद दुआर, आपणे चरन आप टिकाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी पन्दरां कत्तक दिवस विचार, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। वेला वक्त वेख्या सवा चार, रंग रंगे बेपरवाहीआ। साची सखीआं करे प्यार, साचा मंगल एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक वज्जी वधाईआ। निहकलंक वज्जा डंक, चार कुन्ट जैकार। आप सुणाए राउ रंक, खेले खेल बेऐब परवरदिगार। प्रगट होया वासी पुरी घनक, अकल कला कल आपे धार। हरिजन लेखा जाणे जिउँ जन जनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक होए उज्यार। एका एक एकँकार, एका एक अख्वाईआ। एका जोत नूर उज्यार, एका नूर डगमगाईआ। एका शब्द शब्द जैकार, एका नाअरा हरि हरि लाईआ। एका नाम राम भण्डार, सच भण्डार दए वरताईआ। सच वणजारा इक्क अख्वाईआ। एका गुर गुर करतार, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। एका प्रभ पुरख अकाल, दीन दयाल

इक्क अख्वाईआ। एका तोड़नहारा जगत जंजाल, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एका देवणहारा नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना इक्क वखाईआ। एका सद करे परवान, दर दुआरे लेखे लाईआ। एका देवणहारा धुर फ़रमान, आपणा नाम करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मस्तूआणे दए वड्याईआ। एका पुरख अकाल, दया कमांयदा। एका करे सर्ब प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ रखांयदा। एका काल काल महांकाल, काल महांकाला आप हो जांयदा। एका शब्दी शब्द वजाए ताल, ताल तलवाड़ा इक्क वजांयदा। एका लक्ख चुरासी फल लगाए डाल्, एका एक एक वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा पुरख सुल्तान, परम पुरख अख्वाया। हरिजन मेल मिलंदड़ा विच जहान, सन्त सुहेले लए उपजाया। गुरमुख चोली रंग रंगन्दड़ा, आदि जुगादी निगहबान घर साचा होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा रिहा मुकाया। मस्तूआणा सच विहारा, हरि साचा आप करांयदा। हरिसंगत वरते तेरा भण्डारा, तेरी धारा मात चलांयदा। गुर पीर साध सन्त अवतार आवण वारो वारा, जुग जुग साची सेवा लांयदा। कलिजुग अन्तिम खेले खेल सिरजणहारा, सृष्ट सबाई फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच भण्डारी नाम भण्डार, कर प्यार आपणी झोली पांयदा। हरिसंगत तेरा सच भण्डार, प्रभ आपणी झोली पाईआ। गुरसिखां दर बणे भिखार, एका मंगे मंग निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचे मन्दिर हो उज्यार, निर्मल दीपक बाती दए जगाईआ। कमलापाती खेल अपार, कँवल नैण डगमगाईआ। साचा साकी हो त्यार, अमृत जाम प्याला आप प्याईआ। लहिणा देणा बाकी चुक्के विच संसार, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जाईआ। नर नरायण निराकार, निरगुण आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सतिजुग वरतावे विच संसार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। दूई द्वैती दए निवार, हउमे हँगता गढ़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, मस्तूआणा वेख वखांयदा। मस्तूआणा मस्त गढ़, मस्तक लेख लिखाया। सन्त सुहेला आपे फड़, हरि साचे सेव कमाया। आप लगाए लोकमात जड़्, ना सके कोए उखड़ाया। राज राजाना ल्याए फड़, वेला अन्तिम दए दुहाया। एका अक्खर जायण पढ़, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाया। हँ ब्रह्म वेखे खड़, पारब्रह्म इक्क सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत साचा लेख लिखाया। हरिसंगत वड वड्याई हरि पाया सज्जण शहिनशाह, निज

घर आत्म वज्जे वधाईआ। गुर मिल्या जगत मलाह, डूँघे सागर बेड़ा पार कराईआ। अन्तिम बन्ने देवे ला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। दस दस मास वक्त चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिसंगत तेरा सच दुआरा, हरि साचे आप सुहाया। तेरा रूप चढ़े सर्ब संसारा, पुरख अबिनाशी दए चढ़ाया। तेरा नाम होए जैकारा, एका नाअरा दए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, पिछला लेखा मूल चुकाया, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। दर दर घर घर दरस वखाया, दीनां नाथां दर्द वंडाईआ। स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी प्रगट हो आया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाम निधाना हरि मेहरवाना, अमृत आत्म सच चुआया, निझर धारा इक्क वहाईआ। गुरसिख सज्जण कदे ना सोया, सुरती शब्दी शब्द सुरत मेल मिलाईआ। पन्दरां कत्तक बीज साचा बोया, अमृत मेवा दए खवाईआ। हरि का संचा ना जाणे कोआ, ना कोई बूझे बूझ बुझाईआ। हरिसंगत तेरे अग्गे लै के आया, ढोआ इक्क नरेल हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे माण वड्डी वड्याईआ। इक्क नरेल हरिसंगत भेट, हरि सतिगुर आप चढ़ांयदा। पुरख अबिनशी बणया खेवट खेट, कलिजुग बेड़ा आप चलांयदा। आपे मात पित गुरसिख बणाए साचे बेट, पिता पूत मेल मिलांयदा। आपे नाम दुशाले लए लपेट, साचा बस्त्र हथ्थ उठांयदा। कलिजुग लग्गी अग्ग महीना जेठ, चारों कुन्ट ना कोए बुझांयदा। कोए ना रक्खे साया हेठ, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। हरि सरनाई रुत्त बसन्ती चेत, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। गुर गोबिन्द सलाहे गुरसिख तेरे खेत, साची सेवा आप कमांयदा। दरस वखाए नेतन नेत, नित नवित्त रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरी भेट, आपणा हीआ वखांयदा। सच नरेल गुर संगत अग्गे धर, हरि साचा सगन मनांयदा। सतिजुग मिल्या साचा वर, गुर पीर अवतार ना कोए अख्वांयदा। सर्ब जीआं दा चुक्के डर, वरन बरन ना कोए डरांयदा। लहिणा देणा चुकाए जीवण मरन, मरन जीवण एका रंग रंगांयदा। गुरसिख सज्जण साची तरनी तरन, तारनहारा आप तरांयदा। आपणी करनी आया करन, करता पुरख वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ रखांयदा। निहकलंक हरि जोत जगा, मस्तूआणा धाम सुहांयदा। हरिसंगत साची गोद उठा, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। साचा दीपक गुरसिखां अन्दर दए जगा, जगत दीपक आप बुझांयदा। आपणी सरन आप लगा, सगला संग आप रखांयदा। कोटन कोटि बैठे तक्कण राह, दिस किसे ना आंयदा। ब्रह्मा नेत्र नीर रिहा वहा, अट्ठे नैण चारे कुन्ट भवांयदा। विष्नूं पकड़े कौण बांह, आपणा वंस कौण सुहांयदा। शंकर त्रिसूल कौण देवे फड़ा, कौण सगन मनांयदा।

तिन्नां ना मिल्या बेपरवाह, आपणा रूप आप छुपांयदा। प्रगट होया वाली दो जहां, लोकमात जोत जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव हरिसंगत तेरे चरनां विच रिहा बहा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। प्रभ का लेखा ना कोई सके मिटा, मेटणहार आप हो जांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, ब्रह्म पारब्रह्म उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा साचा दर, हरि साचा आप सुहांयदा। संगत तेरा दर दरवाज़ा खोलॣ, हरि साची करे जणाईआ। तेरे मन्दिर तेरा रूप हो के पए बोल, आपणा रूप आप वटाईआ। तेरी रसना तेरा नाम तेरे कंडे तोले तेरा तोल, एका तोला आप अख्वाईआ। तेरी काया तेरा बदले चोल, आपणे काया विच मिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी जीव जन्त साध सन्त ना सुत्ते रहिणा अनभोल, हरि साचे जोत प्रगटाईआ। मस्तूआणा कूके वजाए ढोल, चार दीवारी रही कुरलाईआ। हरिसंगत देवे नाम अनमोल, आपणी भिच्छया आपे झोली रिहा भराईआ। सदा सुहेले वसे कोल, साख्यात रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक एक अख्वाईआ। निहकलंक हरि हरि आया, दूसर नाहीं कोए। हरिसंगत साची लए तराया, देवे शब्द साचा ढोए। अमृत आत्म साचा जल सिंच वखाया, एका बीज निरगुण बोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जगत आसा गुरसिख भरवासा, शब्द धरवासा एका एक वखाए। शब्द धरवासा धुर दरबार, हरिसंगत पूरी आस कराईआ। सन्त मनी सिँघ मंगी भिख बण भिखार, साल बवन्जा पहले आपणी झोली डाहीआ। बवन्जा साल सुत्ता रिहा पैर पसार, आपणी अक्ख ना कोए खुलॣाईआ। त्रैगुण नाता तोड़ संसार, पुरख बिधाता वेस वटाईआ। शब्द गाथा चलाए अपर अपार, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। मस्तक माथा लेखे लाए निरँकार, पिछला लेखा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहारा साचा वर, कोटन कोटि कोटि जन्म दे विछड़े कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया, हरिसंगत वज्जी वधाईआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुहाया, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। साची सखीआं मिल मिल साचा मंगल गाया, घर साचे सोभा पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरिसंगत तेरे दुआर चल के आया, बिन हरि दूसर दिस किसे ना आईआ। चरनां हेठ एका सीस रहे दबाया, हरिसंगत तेरी धूढ़ी खाक मंगण, एका एक मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, दे मति रिहा समझाईआ। शिव सुण कर ध्यान, हरि साचा आप सुणांयदा। तेरा वेखे आप मकान, गुरसिख तेरा दर सुहांयदा। ब्रह्मा तेरी चुक्के काण, मनवन्तर डेरा ढांयदा। विष्न दर होया परवान, प्रभ साचा मेल मिलांयदा। जोती नूर श्री भगवान, सगला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

हरिसंगत देवे साचा वर, सगला संग आप रखांयदा। सगला संग आप रखाउँणा, हरिसंगत बूझ बुझांयदा। प्रगट हो हो दरस दिखाउँणा, नैण निधाना आप खुल्हांयदा। घट घट अन्दर डेरा लाउँणा, जो जन चरन ध्यान रखांयदा। गुरमुख आपणे लेखे पाउँणा, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। चित्रगुप्त दा पन्ध मुकाउँणा, अन्त हिसाब ना कोई वखांयदा। परमानंद इक्क वखाउँणा, निजा नंद दर सुहांयदा। हरि का प्रसादि जिस जन रसना लाउँणा, आत्म रस इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत माण दवांयदा। चार वरन तेरा जस गाण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणी रसना आप चलाईआ। चार युग मंगण दाता दान, गुरमुख भिच्छया झोली पाईआ। चार वरन मंगण चरन धूढ़ अशनान, जो जन आए चल सरनाईआ। कलिजुग जीव सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, सच भण्डारा झोली पाईआ। हरिसंगत भण्डारे सदा भरपूर, हरि साचे आप रखावणा। अगला पन्ध ना दिसे दूर, कलिजुग पैंडा आप मुकावणा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साचा मार्ग इक्क वखावणा। चरन सरन बख्शे साची धूढ़, मस्तूआणा आप सुहावणा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आप आपणी गोद उठावणा। राज राजानां पावे जूड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डोरी आप बंधावणा। शब्द डोरी हथ्थ करतार, चार कुन्ट फिराईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, नौ नौ रूप वटाईआ। कलिजुग जीआं आई हार, बेड़ा पार ना कोई कराईआ। गुरमुख विरले उतरे पार, जिस समरथ हथ्थ टिकाईआ। जिस जन दर्शन करया आए चल दुआर, इक्की कुलां दए तराईआ। ना कोई ख़ालसा कढ्ढे बाहर, दो सौ सठ्ठ बरस विचला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत लहिणा रिहा चुकाईआ। इक्की कुलां हरि देवे तार, जो जन आया सरनाया। दूजी बख्शे अमृत धार, ठांडा जल प्याया। तीजा नैण दए उग्घाड़, आप आपणा दरस दिखाया। चौथे पद देवे वाड़, चौथा घर इक्क सुहाया। पंचम मेटे पंचम धाड़, पंचम मेला सहिज सुभाया। हरिसंगत फिरे पिच्छे अगाड़, दिवस रैण सेव कमाया। आपणे पौड़े फड़ फड़ देवे चाढ़, आप आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत तेरा सच भण्डार, वरते वरतावे विच संसार, गुर पीर अवतार तेरी सेवा लाया। हरिसंगत तेरा सच मुनारा, सच तख्त सुल्तानया। लोआं पुरीआं वसे बाहरा, तेरा महल्ल अटल उच्च मकानया। तेरा घर खुल्ल्हे किवाड़ा, सचखण्ड होए परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आए दर करे परवानया। आए दर दासी दास, दासी दासा सेव कमाईआ। निज घर अन्दर रक्खे वास, घर घर विच मेल मिलाईआ। निज आत्म जोत करे प्रकाश, अन्ध

१११५५ ०८

अन्धेर दए मिटाईआ। लेखा जाणे स्वास स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। सच सुल्तान हरि मेहरवाना, एका एकँकारया। जन भगतां बन्ने भगती गाना, देवे नाम शब्द अधारया। सति सन्तोखी धुर फ़रमाना, जप तप एका वेख वखा रिहा। ब्रह्म मति कर प्रधाना, गुरमति नाउँ धरा रिहा। मनमति तेरी चुक्की काना, हरिसंगत दुआरे हरि दुरका रिहा। गुरमुखां बन्ने आपणी हथ्थीं गाना, पन्दरां कत्तक दिवस विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिला ल्या। मिल्या मेल हरि भगवान, गुरमुख वड्डा वड वड्याईआ। वर घर पाया इक्क मकान, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। सदा सुहेला निगहबान, जुगां जुगन्तर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, हरिसंगत साचा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दान बेपरवाहीआ। जीआ दान हरि हरि दीआ, दीपक दीप जगाया। गुरसिख मेले कर कर हीआ, हरि आपणा रंग रंगाया। अमृत मेघ बरसे मीहां, साचा झिरना आप झिराया। नाता तोड़े साढे तिन्न हथ्थ सीआं, रविदास चमारा नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा नाउँ धराया। गुरमुख साचे उतरे पार, हरि सतिगुर पार करांयदा। शब्द विचोला बण करतार, लोकमात मेल मिलांयदा। बणया गोला हरिसंगत दुआर, निरगुण आपणी सेव कमांयदा। बदलया चोला अपर अपार, पारब्रह्म वेस वटांयदा। गोबिन्द चेला कर त्यार, साचा संग रखांयदा। सम्बल नगरी हो उज्यार, आपणा दीपक आप जगांयदा। उठो सन्तो होवो ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। चारे कुन्ट कूके करे प्यार, पुरख अबिनाशी जामा पांयदा। शाह सुल्तान करे ख़बरदार, वाली दो जहानां खेल खिलांयदा। मस्तूआणा वखाए इक्क दरबार, चरन कँवल नाता बंध बंधांयदा। उत्तम जाता विच संसार, गुरमुख तेरी आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सलोक आप सुणांयदा। सच सलोक सच जैकारा, पुरख निरँजण आप लगांयदा। प्रगट होए आया विच संसारा, आप आपणा मेल धरांयदा। ना कोई दूसर तक्के सहारा, इष्ट देव ना कोई रखांयदा। बिन हरिसंगत दूसर करे ना किसे निमस्कारा, हरिसंगत अन्दर गुरुदुआर आप बणांयदा। गुर अर्जन बणया सच लिखारा, रामदास अमृत ताल सुहांयदा। अमरदास नुहाए सर सरोवर ठंडी ठारा, काया अन्दर वड़ आपणा पर्दा आपे लांहयदा। गुरमुख एका अक्खर गया पढ़, सतिगुर साची विद्या आप पढ़ांयदा। नानक निरगुण फड़या लड़, दूसर ओट ना कोई जणांयदा। पुरख अबिनाशी करता ना कोई सीस ना कोई धड़, सचखण्ड दुआरे बैठ डगमगांयदा। गुर गोबिन्द पौड़े आपे चढ़, तख्त ताज आप सुहांयदा। कल्गी तोड़ा सीस धर, जोती जोड़ा मेल मिलांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आप अख्वांयदा। निहकलंक सूरबीर, हरि सच्चा शहिनशाह। पारब्रह्म वड पीरन पीर, दो जहानी बणया आप मलाह। शब्द निराला मारे तीर, कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ। चारों कुन्ट पए वहीर, किसे ना मिले कोई थाँ। नेत्र नीर वहायण पीर, फकीर दस्तगीर मुल्लां शेख़ मुसायक कर जायण नांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाह। बेपरवाह हरि बेअन्त बेऐब परवरदिगार, एका एक एकँकारया। पंडत पांधे पत्री रहे विचार, गौड़ ब्रह्मण पूत सपूता दिस ना आया। जोत लिलाटी तिलक रहे लगा, जोत नूर ना कोए चमकाया। आपणा ग्रह ना सके कोई कटा, जगत गरैह सर्ब वखा रिहा। हरि का भेव ना सके कोई पा, ब्रह्मा चारे मुख सलाह रिहा। चारे वेद गए गा, बेअन्त बेअन्त हरि आपणा नाम धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका शब्द वजा ल्या। शब्द डंका हरि हरि नादि, आदि जुगादि वजांयदा। आप सुणाए विच ब्रह्मादि, पारब्रह्म आप अल़ांयदा। शब्द जणाई बोध अगाध, बोध अगाध भेव खुल़ांयदा। गुरमुख बणाए साचे सन्त साध, जिस जन आपणा मेल मिलांयदा। धुरदरगाही देवे साची दाद, एका वस्त झोली पांयदा। मेल मिलावा मोहण माधव माध, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा आप सुहाया, घर साचे सोभा पाईआ। अट्ठ सट्ठ साल मुख छुपाया, आपणा घूँगट ना कोई उठाईआ। अठसठ तीर्थ डेरा ढाहया, आपणी वस्त आपणे विच टिकाईआ। आपणा ढोला आपे गाया, सोहँ बोला इक्क कुड़माईआ। बण के तोला हरि जी आया, वड दाता बेपरवाहीआ। कला सोलां ना कोई अख्वाया, अकल कल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, अठसठ साल हो दयाल, मस्तूआणे चरन छुहाईआ। अठसठ साल रक्खया उहला, आपणा पर्दा आपे पाया। सन्त मनी सिँघ पावे रौला, जीव जन्त सुणन कोए ना पाया। पारब्रह्म प्रभ प्रगट होया उप्पर धवला, धरनी धरत धवल रिहा सुहाया। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवला, अमृत धारा मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ वड्याआ। नाम वड्याई हरि करतार, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव आए वारो वार, प्रभ साचा सेवा लाईआ। कोटन कोटि सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार, बराह रूप कोट वटाईआ। कोट यज्ञे पुरख हावगरीव करे प्यार, कोटन कोटि नर नरायण खेल खिलाईआ। कोटन कोटि दत्ता त्रै कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपजाईआ। कोटन कोटि कोटी जुग, जुग जुग आप उपजांयदा। कोटन कोटि

रूप खेले खेल लुक लुक, आप आपणा मुख लोकांयदा। कोटन कोटि दत्ता त्रै जन भगत मेले झुक झुक, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कोटन कोटि कपल मुन नाउँ धरांयदा। कोटन कोटि रिखभ देव, कोटन कोटि पृथू रूप वटाईआ। कोटन कोटि मतसय करन सेव, कोटन कोटि कच्छप बैठे मिन्दिरा पिठ उठाईआ। कोटन कोटि बण धनवन्तर, आपणी किस्मत गए जणाईआ। कोटन कोटि बल बावन आपणा भेख धार, आपणा रूप वटाईआ। कोटन कोटि हँसा डार, रल सहँस सहँसा मुख सलाहीआ। कोटन कोटि प्रहिलादि पार कर, नर सिँघ वज्जे वधाईआ। कोटन कोटि ध्रू लाए लड़, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। कोटन कोटि गज लए फड़, कोटन कोटि तन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। कोटन कोटि परसराम, आपणी कुल उपजांयदा। कोटन कोटि क्षत्री वेखे नगर ग्राम, कोटन कोटि ब्रह्म मिलांयदा। कोटन कोटि वैश शूद्र लाए तन जाम, कोटन कोटि खेल खिलांयदा। कोटन कोटि राम नाम कर प्रनाम, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। कोटन कोटि सीता सुरती बणे ज्ञान, कोटन कोटि जनक सपुत्री आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। कोटन कोटि वेद व्यास, पुराण अठारां रहे गाईआ। कोटन कोटि नारद मुन कर प्रधान, सगला संग निभाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा देवे दान, आप आपणी दया कमाईआ। कोटन कोटि खेले खेल कृष्न काहन, नाम बंसरी आप वजाईआ। कोटन कोटि बुध बिबेकी हरि प्रधान, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा काला सूसा दए निशान, एका नाअरा दए सुणाईआ। कोटन कोटि मुहम्मद अद्धविचकारे बैठे मंगण दान, कोटन कोटि नैनण नैण रहे उठाईआ। कोटन कोटि निरगुण रूप श्री भगवान, नानक पंज तत्त चोला रहे हंढाईआ। कोटन कोटि नाम सति सुनण कान, कोटन कोटि रसना जेहवा रहे गाईआ। कोटन कोटि खाणी बाणी वखान पद निरबान, कोटन कोटि हुक्मी हुक्म शब्द जणाईआ। कोटन कोटि खड़ग खण्डा तेज़ किरपान, गोबिन्द नाम वज्जे वधाईआ। कोटन कोटि जीव जन्त देवे जीआ दान, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, दूसर होर ना कोई दिसाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड फोल फुलाईआ। चारों कुन्ट सुंञ मसाण, साचा छत्र ना कोई झुलाईआ। साध सन्त दर दर घर घर वड्डी खाण, हरि का नाम वेचण थाउँ थाँईंआ। बरन वरन बैठे खोल्ह दुकान, गुर दर मन्दिर मस्जिद ना कोई सहाईआ। एका भुल्लया हरि भगवान, दूई द्वैती वंड वंडाईआ। सतिगुर नानक इक्क मेहरवान, एका सिख्या गया समझाईआ। चार वरन एका रंग समान, दूजा रंग ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ।

हरिसंगत सच सरनाया, चार वरन वज्जे वधाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाया, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका धाम सुहाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, एका कलमा आप पढ़ाईआ। एका साचा मार्ग लाया, एका पन्थ वखाईआ। एका इष्ट हरि मनाया, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। साचा सालस आप अख्वाया, शब्द विचोला बेपरवाहीआ। चार वरन ख़ालस ख़ालसा दए जणाया, वीह सौ वीह बिक्रमी राह तकाईआ। जगत तृष्ना रोग दए गंवाया, हउमे रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर साचे सोभा पाईआ। घर सुभागा सोहया दर, हरिसंगत वड वड्यांअदा। लेखे लग्गा नारी नर जो जन सरनाई आंयदा। पूर्ब कर्म गए हर पिछला लेखा आप चुकांयदा। धर्म राए दा चुक्कया डर, लक्ख चुरासी पन्ध कटांयदा। आप बन्हाए आपणे लड़, आपणा सगन मनांयदा। एका अक्खर लैणा पढ़, सतिगुर साचा आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत साची दित्ता वर, इक्क नरेल कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत भेट चढ़ांयदा। इक्क नरेल नरेल नारीअल, नर हरि आप उपाया। हरिसंगत साची भालीअन, गुरमुख साचे मेल मिलाया। दर घर साचे चढ़े लालीअन, लाल लालन रंग रंगाया। धुर दरगाही साचा मालीअन, एका मालक बणके आया। जगी जोत इक्क अकालीअन, अकल कला आप अख्वाया। साचा मन्दिर धर्म सालीअन, धर्म दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत फड़ाए साचा लड़, नाम पल्लू इक्क फड़ाया। नाम पल्लू साची डोर, हरिसंगत हथ्थ फड़ाईआ। सम्मत सम्मती रिहा तोर, तोर मोर चुकाईआ। दरस दिखाए विच अन्ध घोर, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच भण्डारा गुर करतारा, हरि निरँकारा निरगुण आपणा आप वरताईआ। नाम भण्डार निरगुण धार, गुरसिखां आप वरताईआ। गुरमुख मेला मीत मुरार, घर साचे वज्जे वधाईआ। हरिसंगत सुहाया बंक दुआर, टेडी बंक पार कराईआ। घाड़न घड़या विच संसार, कंचन गढ़ आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां पन्दरां कत्तक सुहाए दर, मस्तूआणे चरन छुहाईआ। चरन छुहाया गुर गोपाल, गोबिन्द रंग रंगाया। शब्द सरूपी बण दलाल, हरि सतिगुर रूप वटाया। जुगां जुगां दे विछड़े लए उठाल, आप आपणा मेल मिलाया। सुहाया दर सच्ची धर्मसाल, दर मन्दिर लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीत प्रसादि दए वरताया। सीत प्रसादि पुरख अकाल, आपणा आप वखाईआ। गुरमुख बणाए साचे लाल, बाल निमाणे गोद उठाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। सन्त मनी सिँघ घाली घाल, हरिसंगत फल खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

११४८
०८

आप आपणी जोत धर, साढे तिन्न साल बन्दीखाने कीता बन्द, दर गुरसिखां साढे तिन्न हथ्थ मूल चुकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ चुकया मूल, हरि साचा आप चुकांयदा। पुरख अबिनाशी हरिसंगत उत्ते बरसाउँण आया फूल, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलांयदा। आपे तुठ्ठा कन्त कन्तूहल, गुरसिख कुँवारी कन्या आप प्रनांयदा। कलिजुग त्रेता द्वापर सतिजुग ना जाए भूल, भरम भुलेखा सृष्ट सबाई आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत तेरा गुर प्रसादि हरि साचा आप वरतांयदा। गुर प्रसादी गुर गुर भिच्छया, गुर किरपा करी अपार। गुर किरपा हरि दर लुज्झया, पाया पुरख अगम्म अपार। हरि किरपा भेव खुल्हाया गुज्झया, डूँघी कन्दर हो उज्यार। हरिसंगत कलिजुग अन्तिम सच दरबारा एका बुज्झया, नाता जुड़या निहकलंक चरन दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे सर्ब संसार। सीत प्रसादि लावणा मुक्ख, मुखी मुख सलांहयदा। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, उलटा गेड़ कटांयदा। हरया बूटा ना जाए सुक्क, आपे हरा वखांयदा। उज्जल करे मात मुख, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जगत तृष्ना मेटे दुःख, साचा सुख इक्क उपजांयदा। पुरख अबिनाशी ना मानुस ना मनुख, हर घट अन्दर डेरा लांयदा। पन्दरां साल करया खेल लुक लुक, साल सोलवें जोत जगांयदा। हरिसंगत अग्गे गया झुक, आप आपणा सीस झुकांयदा। कलिजुग विद्या लेखा रिहा मुक्क, साची सिख्या इक्क समझांयदा। हरि आपणी बुझाए तृष्ना भुक्ख, गुर संगत तेरा भण्डारा आपणी झोली आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त कन्त जुगां जुगन्त, आदि अन्त एका रंग रंगांयदा।

✪ १६ कत्तक २०१६ बिक्रमी त्रिलोक सिँघ दे घर सनाम शहर ✪

सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका एक एकँकारया। सतिगुर पूरा श्री भगवान, निरगुण जोत नूर उज्यारया। सतिगुर पूरा खेल महान, आप आपणा वेस वटा रिहा। सतिगुर पूरा हो प्रधान, आप आपणा नाउँ उपा रिहा। सतिगुर पूरा सच निशान, शब्द निशाना हथ्थ उठा रिहा। सतिगुर पूरा वाली दो जहान, लोआं पुरीआं वेख वखा रिहा। सतिगुर पूरा साचा राम, राम नाम आप जपा रिहा। सतिगुर पूरा साचा काहन, साची बंसरी नाम वजा रिहा। सतिगुर पूरा बोध ज्ञान, अन्तर ध्यान आप लगा रिहा। सतिगुर पूरा साची मान, कलमा नबी आप पढ़ा रिहा। सतिगुर पूरा गुण निधान, नूर अलाही संग निभा रिहा। सतिगुर पूरा वड बलवान, साचा डंका आप वजा रिहा। सतिगुर पूरा जाणी जाण, निरगुण धारा नानक गुर आप चला रिहा। सतिगुर पूरा शब्द बबान, आप आपणा आप उडा रिहा। सतिगुर पूरा खेल महान, जोती नूर नूर डगमगा

रिहा। सतिगुर पूरा पाए साची आण, गुर गोबिन्द सेवा ला रिहा। सतिगुर पूरा वसे सच मकान, थिर घर साचे आसण ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरता रिहा। सतिगुर पूरा एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सतिगुर पूरा निरगुण धार, जोती नूर नूर करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा शब्द भण्डार, शब्द भण्डारा इक्क रखाईआ। सतिगुर पूरा मीत मुरार, सगला संग निभाईआ। सतिगुर पूरा खेले खेल विच संसार, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा निराकार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा करे ब्रह्म विचार, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा वरन बरन ते वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। सतिगुर पूरा करनी करन आप करतार, करता पुरख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, पुरख अबिनाशी खेल अपारया। सतिगुर पूरा करे प्रितपाल, खेले खेल पृथ्मी अकास्सया। सतिगुर पूरा देवे नाम सच्चा धन माल, निरगुण दीपक जोत करे प्रकास्सया। सतिगुर पूरा हरि सन्त सुहेले आप उठाए साचे लाल, चरन कँवल बख्शे सच भरवास्सया। सतिगुर पूरा बणे दलाल, हरिजन करे बन्द खलास्सया। सतिगुर पूरा साची घालण रिहा घाल, मण्डल मण्डप पावे रास्सया।
११५० सतिगुर पूरा आदि जुगादी इक्क अवतार, रूप अनूप शाहो शबास्सया। सतिगुर पूरा जोत निरँकार, सचखण्ड साचा रक्खे ११५०
०८ वास्सया। सतिगुर पूरा खेल अपार, खेले खेल बहु बिध भातया। सतिगुर पूरा आवे जावे वारो वार, जुग जुग खेले खेल ०८
तमास्सया। सतिगुर पूरा हरि दातार, आदि जुगादि ना कदे विनाशया। सतिगुर पूरा वड बलकार, आप आपणा बल धरास्सया। सतिगुर पूरा नाम खण्डा फड़े तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकास्सया। सतिगुर पूरा ब्रह्मा विष्न शिव लए उभार, सेवा लाए सेवक दार, आप आपणी रचन रचास्सया। सतिगुर पूरा त्रैगुण माया दए अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हर घट वास्सया। सतिगुर पूरा शाह सुल्तान, हरि सज्जण वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा गुण निधान, गुरमुख देवे वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा चतुर सुजान, गुरसिख साचे लए तराईआ। सतिगुर पूरा निगहबान, सन्त साजण मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा चुकाए कान, भगतन भगती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। सतिगुर दाता गहर गम्भीर, एका रंग समाया। सतिगुर पूरा ठांडा सीर, तत्व तत्त ना कोए जणाया। सतिगुर पूरा निर्मल नीर, अमृत आत्म जाम प्याया। सतिगुर पूरा बख्शे धीर, सति सन्तोखी ज्ञान दृढ़ाया। सतिगुर पूरा मारे तीर, तीर अणयाला इक्क चलाया। सतिगुर पूरा बजर कपाटी देवे चीर, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाया। सतिगुर पूरा दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, माया ममता मेट मिटाया। सतिगुर पूरा लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर, राए धर्म फंद कटाया। सतिगुर

पूरा चोटी चाढ़े इक्क अख़ीर, दरगाह साची धाम सुहाया। सतिगुर पूरा लेखा जाणे साध सन्त फकीर, औलीआ मुल्लां शेख़ मुसायक आपे वेख वखाया। सतिगुर पूरा शाह फकीर, नीचो नीच नीचां अन्दर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाया। सतिगुर पूरा सति सरूप, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर साचा सच्चा सँवल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा वेखे साचे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। सतिगुर सच्चा आपे जाए तुठ, आप आपणी किरपा धारया। सतिगुर सच्चा जाम प्याए एका घुट्ट, अमृत भरे नाम भण्डारया। सतिगुर पूरा जगत कुकर्मां जड़ देवे पुट्ट, हरिजन साचे लाए पारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा खेल खिला रिहा। सतिगुर पूरा अगम्म अथाह, बेपरवाह अख्वांयदा। सतिगुर पूरा बण मलाह, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा जन भगतां देवे नाम सलाह, साचे मार्ग आपे लांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुखां पकड़े आपे बांह, आपणा पल्ला आप फड़ांयदा। सतिगुर पूरा गुरसिखां देवे सदा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सतिगुर पूरा दो जहानां करे सच न्याँ, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। सतिगुर पूरा फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ साची चोग चुगांयदा। सतिगुर पूरा आपे बणे पिता माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। सतिगुर पूरा आप वखाए साचा नगर ग्रां, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा चाढ़े रंग, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। सतिगुर दाता सूरा सरबंग, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरिजन साचे लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। सतिगुर पूरा साची सेज सच पलँघ, हरिजन आत्म डेरा लाईआ। सतिगुर पूरा साचा नाम तन पहनाए साची वंग, कंचण गढ़ आप सुहाईआ। सतिगुर पूरा शब्द डोरी बन्ने तन्द, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर पूरा आप सुणाए सुहागी छन्द, अनहद साचा राग उपजाईआ। सतिगुर पूरा इक्क वखाए साचा चन्द, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। सतिगुर पूरा आप समाए परमानंद, निजानंद आप वखाईआ। सतिगुर पूरा गुरसिखां करे ख़ुशी बन्द बन्द, चिन्ता रोग सोग रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा वेखणहारा भरमां कंध, हउमे गढ़ दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि नर दाता, दूसर कोए नज़र ना आंयदा। सतिगुर पूरा सर्ब कला समराथा, निरगुण नूर डगमगांयदा। सतिगुर पूरा जुगा जुगन्तर जाणे आपणी गाथा, आप आपणा नाउँ चलांयदा। सतिगुर पूरा लक्ख चुरासी आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। सतिगुर पूरा आप जाणे पूजा पाठा, एका मन्त्र नाम आप दृढ़ांयदा। सतिगुर पूरा लेखा जाणे तीर्थ सरोवर अठसाठा, आप आपणी रचन रचांयदा। सतिगुर पूरा जन भगत

दुआरे फिरे नाठा, नित नवित्त वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा इक्क खुल्हाए साचा हाटा, एका नाम विकांयदा। सतिगुर पूरा अमृत देवे साचा बाटा, निझर धारा मुख चुआंयदा। सतिगुर पूरा आप सुहाए साची खाटा, सच सिँघासण आप विछांयदा। सतिगुर पूरा निरगुण जोत जगाए ललाटा, प्रकाश प्रकाश धरांयदा। सतिगुर पूरा नेड़े करे वाटा, अगला पन्ध मुकांयदा। सतिगुर पूरा पिछला पूरा करे घाटा, लेखा लेखे विच पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा लेखा जाणे साध सन्त, आदि जुगादी वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा साचा कन्त, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा बणाए बणत, जो जन रसना रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर पूरा वेस वटाए, अकल कला कल धारया। जोती नूर डगमगाए, रूप अनूप सच्ची सरकारया। सच तख्त सुल्तान आसण लाए, घर सोहे बंक दुआरया। शब्द अगम्मी हुक्म जणाए, खेले खेल बेऐब परवरदिगारया। साचा नाअरा आप लगाए, आपे होए सुनणेहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारया। सतिगुर पूरा पुरख अगम्म, एका एक समांयदा।
११५२ सतिगुर पूरा ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण विच ना आंयदा। सतिगुर पूरा ना तृष्ना ना कोए तंम, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। सतिगुर पूरा हड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, पंज तत्त ना कोए उपांयदा। सतिगुर पूरा ना ख़ुशी ना कोई ग़म, हरख सोग ना कोए रखांयदा। सतिगुर पूरा आपणा बेड़ा आपे रिहा बन्न्ह, सच मलाह आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा इक्क अकल्ला, एका रंग समाईआ। सतिगुर पूरा वसे सच महल्ला, सचखण्ड सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा पुरीआं लोआं आपे रल्ला, आप आपणी जोत कर रुशनाईआ। सतिगुर पूरा खेले खेल कर कर वल छला, अछल छलधारी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। सतिगुर पूरा हरि साख्यात, भेव कोए ना पांयदा। सतिगुर पूरा जुग जुग मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ांयदा। सतिगुर पूरा लेखा जाणे सतिजुग वाट, त्रेता पार करांयदा। सतिगुर पूरा द्वापर सुहाए आपणी खाट, दूसर होर ना कोए जगांयदा। सतिगुर पूरा कलिजुग वेखे नेड़े वाट, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा एकँकार, सर्ब घटां घट वास्सया। सतिगुर पूरा शब्द भण्डार, भगत भगवन्त पावे साची रास्सया। सतिगुर पूरा खेल अपार, खेले खेल पुरख अबिनाशया। सतिगुर पूरा जोत आधार, प्रगट होए पृथ्मी आकास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे खेल तमास्सया।

सतिगुर पूरा आदि निरँजण, आदि जुगादी वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, भवसागर पार कराईआ। सतिगुर पूरा नेत्र ज्ञान पाए नाम अंजण, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सतिगुर पूरा सच्चा सज्जण, घर मेले सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा चरन धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल दए गंवाईआ। सतिगुर पूरा जुग जुग आए जन भगतां आपे पड़दे कज्जण, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता खेल खिलाईआ। सतिगुर पूरा विश्व देव, वास्तक रूप समांयदा। सतिगुर पूरा अलख अभेव, अगम्म अथाह आप हो जांयदा। सतिगुर पूरा सदा निहकेव, निहकर्मी कर्म कमांयदा। सतिगुर पूरा जुग जुग जन भगतां करे साची सेव, साचा नाम झोली पांयदा। सतिगुर पूरा लेखा जाणे रसना जेहव, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। सतिगुर पूरा बन बनवारी, बावन भेख वटाईआ। सतिगुर पूरा राम अवतारी, नाना रूप करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा कृष्न मुरारी, गोपी काहन आप नचाईआ। सतिगुर पूरा बोध जैकारी, ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। सतिगुर पूरा ईसा मूसा दए सहारी, एका कलमा अमाम बणाईआ। सतिगुर पूरा संग मुहम्मद मेल मिलाए जगत यारी, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर पूरा निरगुण जोत जगाए नानक निरँकारी, लोकमात वेस वटाईआ। सतिगुर पूरा बख्शे एका दात एका जोत दस अवतारी, गुर गोबिन्द नाउँ धराईआ। सतिगुर पूरा बणे शब्द लिखारी, सच भण्डारा आप वरताईआ। सतिगुर पूरा ब्रह्मा देवे इक्क सहारी, चारे वेदां दए जणाईआ। सतिगुर पूरा वेद व्यासे पावे सारी, अठारां पुराण रिहा गाईआ। सतिगुर पूरा मकंद मनोहर लक्खमी नरायण कान्हा कृष्ना कर उज्यारी, गीता ज्ञान अठारां ध्याए आपे रिहा सुणाईआ। सतिगुर पूरा अञ्जील कुरान कर उज्यारी, तीस बतीसा सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा नानक नाम देवे निरगुण शब्द भण्डारी, साची वस्त झोली पाईआ। सतिगुर पूरा गुर गोबिन्द बणाए सुत्त दुलारी, साची सेवा इक्क समझाईआ। सतिगुर पूरा जोद्धा सूरबीर बलकारी, शस्त्र बस्त्र आप वखाईआ। सतिगुर पूरा नंगी करे तेज़ कटारी, ब्रह्मण्डां खण्डां आप चमकाईआ। सतिगुर पूरा देवे शब्द हुलारी, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा इष्ट गुरदेव, अलक्ख निरँजण आप अख्वांयदा। जुगां जुगन्तर करे साची सेव, साख्यात रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा बख्शणहारा साचा मेव, अमृत फल इक्क खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। सतिगुर पूरा अकल कलधारी, एका एक अख्वाया। सतिगुर पूरा जोत निरँकारी, निरगुण आपणा वेस वटाया। सतिगुर पूरा कन्त मुरारी, सगला संग निभाया। सतिगुर पूरा ना पुरख ना दिसे नारी, ना कोई अंग उपाया। सतिगुर पूरा आपणी इच्छया

ब्रह्मा विष्न शिव कर पसारी, त्रै त्रै जोड़ जुड़ाया। सतिगुर पूरा आपणी भिच्छया लक्ख चुरासी भरे भण्डारी, सच भण्डारा आप वरताया। सतिगुर पूरा हरिभगतां देवे नाम ख़ुमारी, एका रंगण रंग रंगाया। सतिगुर पूरा साचे सन्तां लावे साची यारी, सगला संग आप हो जाया। सतिगुर पूरा गुरमुखां देवे इक्क अधारी, चरन नाता जोड़ जुड़ाया। सतिगुर पूरा गुरसिखां सुरती रहिण ना देवे मात कँवारी, आप आपणे लड़ लए लगाया। कलिजुग अन्तिम आई वारी, निहकलंकी जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धराया। सतिगुर पूरा निहकलंक, हरि हरि आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा वजाए डंक, राम नाम नगारे चोट आप लगांयदा। सतिगुर पूरा इक्क वखाए आपणा अंक, एका दूआ आप पढ़ांयदा। सतिगुर पूरा इक्क सुहाए बंक, बंक दुआरी दया कमांयदा। सतिगुर पूरा गुरसिख तराए जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लांयदा। जोती शब्दी लाए तनक, सोए पूत मात उठांयदा। सतिगुर पूरा प्रगट होए वासी पुरी घनक, अकल कल धारी वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा कलिजुग माया पाए बेअन्त, लक्ख चुरासी पर्दा कोई ना लांहयदा। सतिगुर पूरा वेखे परखे साध सन्त, अन्दर मन्दिर फोल फुलांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, आप आपणे रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा तोड़े गढ़ हउमे हँगत, हरि की पौड़ी इक्क चढ़ांयदा। सतिगुर पूरा दूजे दर ना जाए मंगत, आपणा इष्ट ना होर कोई वखांयदा। सतिगुर पूरा नाता जोड़े नाल संगत, आप आपणे अंग लगांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुखां दुआरे होए मंगत, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। सतिगुर पूरा लेखा जाणे नानक अंगद, अंगीकार आप करांयदा। सतिगुर पूरा लहिणा देणा चुकाए भुक्ख नंगत, भुक्खे नंगे आपणे गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा शब्द बलवाना, निहकलंक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। सतिगुर पूरा पुरख सुल्ताना, सचखण्ड बैठा जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा नाम वजाए नाद तराना, आपणा राग अल्हाईआ। सतिगुर पूरा रवि ससि उपजाए कोटन कोटि भाना, देवणहार वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा पावे सार ज़िमी अस्माना, गगन पाताला वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा वाली दो जहाना, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराईआ। सतिगुर पूरा आपणा नाउँ रक्ख, निहकलंक डंक वजांयदा। सतिगुर पूरा हो प्रतक्ख, निरगुण सरगुण जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा करनहारा कक्खों लक्ख, करता कीमत आपे पांयदा। सतिगुर पूरा गुरसिख लक्ख चुरासी नालों करे वक्ख, आप आपणे चरन बहांयदा। सतिगुर पूरा किशना सुखला जाणे पक्ख, वदी सुदी फोल फोलांयदा। सतिगुर पूरा हरि सन्त सुहेले लए रक्ख, भगतां भगती

लेखे लांयदा। सतिगुर पूरा जगत विकारा देवे मथ्था, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पांयदा। सतिगुर पूरा सत्तां दीपां वेखे तप्या मट्ठ, चारे कुन्टां आप तपांयदा। सतिगुर पूरा जुग जुग गेड़नहारा उलटी लट्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिगुर पूरा वसणहारा घट घट, निज घर आत्म जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा मेटणहारा द्वैती फट, नाम पट्टी एका लांयदा। सतिगुर पूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा नर नरायण, निरगुण जोत नूर नुरानया। सतिगुर पूरा साक सज्जण सैण, मीत मुरार आप अख्वा ल्या। सतिगुर पूरा चुकाए लहिण देण, पूर्ब लहिणा वेख वखा ल्या। सतिगुर पूरा मात पित बणे भाई भैण, पुत्तर धीआ रूप वटा ल्या। सतिगुर पूरा वेखे आपणे नैण, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभा ल्या। सतिगुर पूरा हरि सज्जण मीत, पारब्रह्म अख्वांयदा। सतिगुर पूरा पतित पापी करे पुनीत, पतित पावण नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादी ठंडा सीत, अग्नी अग्न ना कोई तपांयदा। सतिगुर पूरा जुगा जुगन्तर चलाए आपणी रीत, दूजा संग ना कोई रखांयदा। सतिगुर पूरा एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई रखांयदा। सतिगुर पूरा देवे नाम शब्द अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। सतिगुर पूरा बीठलो बीठ, घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम वड्यांअदा। सतिगुर पूरा सागर सिन्ध, भेव कोए ना पांयदा। सतिगुर पूरा गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरिभगत उपजाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा सद बख्शिंद, दर आए पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा जामा हरि हरि रामा आपणा रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा जोबन धार, बाल बिरध ना कोई रखाईआ। सतिगुर पूरा खेल अपार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा वसे उच्च मिनार, महल्ल अटल इक्क सुहाईआ। सतिगुर पूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा सृष्ट धार, धरनी धरत धवल आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा लक्ख चुरासी पावे सार, करनी करता किरत कमांयदा। सतिगुर पूरा सरगुण रूप हो उज्यार, निरगुण खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुखां करे प्यार, जागरत जोत इक्क जगांयदा। सतिगुर पूरा हरिसंगत वखाए सच दरबार, सच भूमका अस्थान आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप जगांयदा। सतिगुर पूरा सदा सद जागे, आलस निन्दरा विच ना आईआ। सतिगुर पूरा जन भगतां आपणी हथ्थीं पकड़े वागे, बणे रथ रथवाहीआ। सतिगुर

पूरा दुरमति मैल धोवे दागे, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सतिगुर पूरा मेल मिलावा कन्त सुहागे, घर साचे सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत करे प्रकाश देस माझे, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिगुर पूरा जुगा जुगन्तर साजण साजे, जुग जुग वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा लोकमात आए भाजे, आपणा कीता भुल्ल ना जाईआ। सतिगुर पूरा नाउँ धराए ग़रीब निवाजे, ग़रीब निमाणे लए उठाईआ। सतिगुर पूरा अस्व घोड़े चढ़े ताजे, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। सतिगुर पूरा घर घर गुरसिखां सुत्या मारे वाजे, शब्द सरूपी सेव कमाईआ। सतिगुर पूरा हरिजन साचे रक्खे लाजे, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भव सागर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे वड वड्याईआ। सतिगुर सद मेहरवाना, सति पुरख अख्वांयदा। सतिगुर पूरा साचा दस्से धाम निशाना, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। सतिगुर पूरा वखाए एका मस्तूआणा, चरन कँवल कँवल चरन इक्क सुहांयदा। सतिगुर पूरा डरन मरन दी चुकाए काना, आवण जावण फंद कटांयदा। सतिगुर पूरा गुरसिखां देवे इक्क बिबाना, आपणी हथ्थी आप चढ़ांयदा। सतिगुर पूरा किसे हथ्थ ना आए राजे राणा, कोटन कोटी राह तकांयदा। सतिगुर पूरा आपे वरते आपणा भाणा, दूसर भाणा ना कोई वखांयदा। सतिगुर पूरा शाह सुल्ताना, गुरसिखां मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा एका आपणी हथ्थीं बन्ने गाना, सम्मत सोलां सगन मनांयदा। सतिगुर पूरा पूर्ब कर्मा होया जाणी जाणा, जन्म जन्म दे विछड़े मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा आप वखाए आपणा पद निरबाना, जिस जन आपणा दरस वखांयदा। बिन हरि दुआर ना दूसर कोए मस्तूआणा, दर साचा एका सोभा पांयदा। साधां सन्तां दिसे सच टिकाना, साचे मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा उहला बण विचोला शब्द पर्दा लांयदा। सतिगुर पूरा बणे विचोला, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। सतिगुर पूरा गाए ढोला, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा बणया तोला, हँ ब्रह्म तोल तुलाईआ। सतिगुर पूरा आपे वेखे आपणा डोला, लक्ख चुरासी डोली अन्दर पाईआ। सतिगुर पूरा खेलणहारा आपणा होला, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। सतिगुर पूरा आपे बदले आपणा चोला, जोती जामा भेख वटाईआ। मस्तूआणा जगत दुआर, कलिजुग जीव पायण रौला, हरि का दर नज़र ना आईआ। पुरख अबिनाशी बणया आला भोला, आपणी माया नाल रलाईआ। गुरसिखां अन्दर आपे मौला, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। देवे वड्याई उप्पर धवला, जो जन लेखे लए लगाईआ। पावे सार साँवल सँवला, कान्हा कृष्ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सतिगुर पूरा गुर गोबिन्द, गुण गुणवन्त अख्वांयदा। सतिगुर पूरा मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा मेट मिटांयदा। सतिगुर पूरा लेखा जाणे सुरपति राजा

इन्द, करोड़ तेतीसा वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा आप उठाए शिव शंकर गुणी गहिंद, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। सतिगुर पूरा ब्रह्मा देवे एका दान बण बख्शिंद, आपणी बख़शिश आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिगुर पूरा विष्नूं उपजाए आपणी बिन्द, विष्नूं रूप वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा अन्तिम आपे सभ दी खिच्चे जिंद, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी शक्ती गुरसिखां बणाए भगती, तप हठ अभ्यास ना कोए करांयदा। सतिगुर पूरा बख्शे बख्शणहार, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तार, तारनहार वेस वटाईआ। गुरसिखां करे सच शृंगार, सोलां कलीआं तन्द बंधाईआ। बस्त्र पाए अपर अपार, आपणी हथ्थीं करे सफाईआ। नेत्र कजला तिक्खी धार, नाम निरंतर इक्क वखाईआ। मेढी गुंदी विच संसार, त्रिलोकी विच बन्द कराईआ। आपणे हथ्थीं दे प्यार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। साची डोली कर त्यार, बणे कहार बेपरवाहीआ। विआउवण आए पुरख निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा लाड़ा चढ़े घोड़ अस्वार, वेद पुराण भेव ना पाईआ। आदि जुगादी एकँकार, साची सखी लए प्रनाईआ। लोकमात हो उज्यार, आप आपणा लए वटाईआ। गुरसिख कुँवारी कन्या कर शृंगार, नेत्र नैण रही उठाईआ। मिले मीत हरि कन्त भतार, विछड़ कदे ना जाईआ। शब्द विचोला फिरे मारे मार, वारो वार दो जहानी फेरा पाईआ। नौजवान होए इक्क त्यार, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। साची जंञ कर त्यार, घर साचे वज्जे वधाईआ। साची सखीआं करन मंगलाचार, पंचम आपणा गीत अलाईआ। हरि मन्दिर मेला विच संसार, काया अन्दरे अन्दर कराईआ। आपे बेड़े फड़ फड़ देवे चाढ़, चार चार जुग रहिण ना पाईआ। गुरमुख तेरा नाम होए उज्यार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मस्तूआणा धाम न्यार, दिवस रैण अट्ठे पहर बैठा बेपरवाहीआ। गुरमुखां बणया मीत मुरार, हरिसंगत करी कुड़माईआ। आपणे घर आपे धी जवाई करे प्यार, सौहरे पेईए आप वड्याईआ। आपे भरे सच भण्डार, साचा राज इक्क वखाईआ। लुट्ट ना सके कोई यार, ठग्गी ठग्ग ना कोए लै जाईआ। सोहे घर घर बंक दुआर, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती माता पाणी उत्तों देवे वार, अमृत धार इक्क वखाईआ। शब्द रंगीला साचा पेढा गुरसिख सवाणी लए उभार, शब्द झूला दए झुलाईआ। एका सईआ सच प्यार, सच सुहञ्जणी रैण सुहाईआ। पहला दरस मिल्या मेल हरि कन्त भतार, सुहागण नार ख़ुशी मनाईआ। सोए जागन मन वैरागण कलिजुग माया त्यागन घर पाया बेपरवाहीआ। बुझाए अग्न चरन धूढ़ कराए मजण माघन, जन्म जन्म दा धोवे दागन, आप आपणे रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तिम आया सतिगुर पूरा साजण, दो जहानां शाहो भूप वड राज राजन, जन भगतां संवारे आपे काजन, हरिसंगत सेव कमाईआ। अन्त कन्त भगवन्त रक्खे लाजन, जीव जन्त ग़रीब निवाजे धरया

भेख अवल्लड़ा माझन, कलिजुग नेत्र दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, पहला दिवस दिवस विचार, हरिसंगत करे सच्च, प्यार, दूजे दिवस पावे सार, तीजे दिवस नैण उग्घाड़, चौथे दिवस चौथे पद मिलाईआ। पंचम दरस पंचम प्यार, छेवें लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर, सत्तवे सति सतिवाद आपणा नाद दए वजाईआ। अठवें मेला माधव माध, नौवें नौ दर ना कोए स्वाद दसवें आपणा मेल मिलाईआ। इक्क ग्यारां पति लए रक्ख लेखा चुकाए मस्तक माथ, संग निभाए हरि रघुनाथ, शब्द जणाई एका पाठ, सोहँ ढोला घर घर दए सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

११५८

०८

११५८

०८

✪ १७ कत्तक २०१६ बिक्रमी सन्त तेजा सिँघ दे नाल बचन पिण्डे चीमे ज़िला संगरूर ✪

अमृत जल ठंडा ठार, हरि सन्तन हथ्थ रखाया। सन्त देवण कर प्यार, जो जन सरनाई आया। जगत तृष्ना भुक्ख दए निवार, आसा तृष्ना रहे ना राया। पंज तत्त मेटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, मन मति दूर कराया। दीपक जोत करे उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाया। अनहद शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार, काया मन्दिर अन्दर ताल वजाया। अमृत बरसे मेघला धार, निज झिरना इक्क झिराया। बजर कपाटी पर्दा देवे पाड़, दूई द्वैती मेट मिटाया। त्रिबैणी नैणी पार किनार, टेडी बंक वेख वखाया। आत्म सेजा कर प्यार, देवे दरस दया कमाया। सुहाए दर सच्चा घर बार, बंक दुआरी बंक वेख वखाया। बख्शे नाम नाम भण्डार, चोर यार लुट्ट कोए ना लै जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन दित्ता एका वर, अमृत जल सच कटोरा एका हथ्थ फड़ाया। सन्तन दर उच्च महल्ला, पारब्रह्म आप वसांयदा। वेखणहारा इक्क अकल्ला, एकँकार नाउँ धरांयदा। पावे सार जलां थला, जूह जंगल उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। सच सिँघासण हरि सन्तन मल्ला, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। निरगुण जोती दीपक बाती एका बला, प्रकाश प्रकाश उपांयदा। अमृत भर कटोरा अग्गे खला, दिवस रैण सेव कमांयदा। जो जन दर दुआर, मूर्ख मुग्ध आए झल्ला, कर किरपा ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। फल लगाए काया डाल्ला, पत डाली वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन दित्ता एका वर, नाम भण्डार इक्क वखांयदा। नाम भण्डारा अमृत धार, हरि सन्तन हथ्थ रखाईआ। सन्तां जीवण इक्क संसार, जुग जुग सेव कमाईआ। ग़रीब निमाणे जाए तार, नानक गुर गुर समझाईआ। फड़ फड़ बांहों लए उभार, जो मंगण मंग ढहि ढहि सरनाईआ। नाम प्याला चढ़े ख़ुमार, उतर कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी आर पार, राए धर्म ना

दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन देवे एका वर, एका नाम नाम अनमुल्ला, चौदां लोक कंडे किसे ना तुला, बिन हरि सन्त पाए कोई ना मुल्ला, दूसर हट्ट ना किसे विकाईआ। सन्तन हट्ट अमृत नाम अपारा, हरि सतिगुर आप उठाया। जुगा जुगन्तर वरते वरतावे वरत्नहारा, सेवक सेवा रिहा कमाया। भगतां देवे भगती भण्डारा, आप आपणे मार्ग लाया। आपणी दृष्टी दए सहारा, इष्ट देव इक्क समझाया। एथे ओथे वखाए पार किनारा, मँझधार ना कोई रुढ़ाया। सन्तन घर डूँघा सागर कोए ना पावे सारा, सर सरोवर धार अमृत जल उछाल लगाया। मंगे मंग बण भिखारा, एका अमृत ठंडी ठार, जगत तृष्ना दए तजाया। अमृत जल अंमिउँ रस, सन्तन घर वसंदड़ा। सन्त साजण गुरमुखां देण हस्स हस्स, चार कुन्ट सेव कमन्दड़ा। एका मन्दिर एका दर एका घर एका रस, एका मदि प्याला जाम पिअंदड़ा। सन्त सुहेला साचा मेला, हिरदे अन्दर जाए वस, नेत्र ज्ञान इक्क खुलंदड़ा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, पूर्ब लेखा वेख वखंदड़ा। नाम वड्याई साचा जस, दर साचा इक्क सुहंदड़ा। सन्तन प्रेम प्याला अमृत प्यावण नस्स नस्स, जगत जंजाल तोड़ तुड़ांयदा।

✪ १७ कत्तक २०१६ बिक्रमी सरदूल सिँघ दे घर पिण्ड कहेरू ज़िला संगरूर ✪

एकँकार रूप निराकार, आदि जुगादि समाईआ। आदि पुरख निरँजण खेल अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। पारब्रह्म पुरख पुरख करतार, करनी करता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। एकँकार अकल कल धारा, एका एक एक अख्वांयदा। खेले खेल अपर अपारा, भेव अभेदा भेव रखांयदा। वरते वरतावे आपणी धारा, धार निराली आप चलांयदा। सुहाए बंक सच्चा दरबारा, सचखण्ड साचा आसण लांयदा। थिर घर वसे इक्क मुनारा, निरगुण आपणा आप उपांयदा। पुरख अबिनाशी बैठ सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। निरगुण दीपक कर उज्यारा, आदि जुगादी डगमगांयदा। ना कोई दूसर मीत मुरारा, ना कोई संग रखांयदा। ना कोई रवि ससि सूरज चन्द सितारा, मण्डल मण्डप ना कोए उपांयदा। ना कोई ब्रह्मा विष्न शिव लाए नाअरा, त्रैगुण रूप ना कोए प्रगटांयदा। ना कोई लक्ख चुरासी करे पसारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश तत्व तत्त ना कोए बणांयदा। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए रखांयदा। रवि ससि सूरज चन्न ना कोई सतारा, मण्डल मण्डप ना कोई वखांयदा। अप तेज़ वाए खण्ड ना कोए विचारा, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा एकँकार एक एक नाउँ धरांयदा। एकँकारा इक्क अकल्ला, एक रंग समांयदा। वसणहारा उच्च अटल महल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। पावे सार जलां थलां, आप आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार कर पसार, निरगुण खेल अपर अपार, आप आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण पुरख हरि अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी खेले खेल तमाशा, आप आपणी रचन रचांयदा। पावे सार पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल फोल फुलांयदा। मण्डल मण्डप पावे रासा, आप आपणा वेस वटांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, अबिनाशी पुरष नाउँ धरांयदा। ना कोई रसना जेहवा पवण स्वासा, बत्ती दन्द ना कोए हिलांयदा। पंज तत्त ना काया कासा, कंचण गढ़ ना कोए सुहांयदा। ना कोई इष्ट देव रक्खे भरवासा, गुर देव ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका एक शाहो शबाशा, शाह सुल्तानां इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार आपणी आप चलांयदा। एकँकार एका धार, एकँकार आपणी आप चलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी करे कार, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। इक्क सुहाए सचखण्ड सच दरबार, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। थिर घर मेला एक
११६० निरँकार, आप आपणा लए मिलाईआ। एका सच करे प्यार, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। आपे पुरख आपे बणे नार, आप ११६०
आपणा जोड़ जुड़ाईआ। आपणे मन्दिर आपणा करे शृंगार, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपणे घर हो त्यार, आप आपणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप सचखण्ड दुआरा एकँकारा इक्क अकल्ला बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहांयदा। एका एक रहे भगवन्त, दूसर कोए ना संग रखांयदा। ना कोई जीव ना कोई जन्त, ना कोई बणत बणांयदा। ना कोई शब्दी इष्ट ना कोई मंत, ना कोई सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी इच्छया पाए भिच्छया, आपणा भण्डारा आप वरतांयदा। सचखण्ड दुआर हरि भगवान, आपणी इच्छया पूर कराईआ। देवणहारा दाता दानी दान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। खेले खेल वाली दो जहान, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे मन्दिर हो प्रधान, आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वासा पुरख अबिनाशा इक्क अकल्ला आपणा आप रखाईआ। सचखण्ड दुआर आप सुहाए, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। आपणी भिच्छया भगती आप पाए, पारब्रह्म भेव ना राईआ। आपणी झोली अग्गे डाहे, आदि निरँजण दर दरवेश आप हो जाईआ। आपणा भण्डारा आप वरताए, वड भण्डारी बेपरवाहीआ। सच दुआरा सोभा पाए, घर साचा इक्क सुहाईआ। दरस आपणा एका रंग रंगाए,

रंग रंगीला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाईआ। सचखण्ड दुआर पुरख करतार, आपणी बणत आप बणांयदा। आपे बैठा बण पुरख नार, आप आपणा संग निभांयदा। आपे भोगी भोग करे निरगुण धार, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण रंग रंगांयदा। निरगुण अन्दर निरगुण धार, निरगुण आप रखांयदा। निरगुण निरगुण पावणहारा सार, निरगुण सेव कमांयदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण निम्मया निरगुण जम्मया निरगुण नाउँ रक्खया आप करतार, दूसर कोए ना वेख वखांयदा। शब्द सुत्त दुलारा कर त्यार, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। साचे बाल करे प्यार, एका सिख्या सच समझांयदा। लोआं पुरीआं कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन रचांयदा। मेरी इच्छया तेरी धार, तेरा रूप आप निरँकार, आप आपणी कल वरतांयदा। तेरा नाम बोल जैकार, सचखण्ड वखाए सच्ची धुन्कार, आपणा मंगल आपे गांयदा। तेरा राग सुनणेहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क सुणांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि शब्दी सुत्त सुणांयदा। तख्त ताज बैठ हरि साचा दाना, साचा अदल कमांयदा। आदि जुगादी एकँकारा आपे वरते आपणा भाणा, आपणा भाणा आप रखांयदा। तेरा प्यार मेरा माणा, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१९६१ जोत धर, शब्द सुत्त दित्ता वर, साची सेवा सेव लगांयदा। शब्द सुत्त उठ जवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी १९६१
०८ सदा होणा निगहबान, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। आपणा देणा आपणा धुर फ़रमान, भुल्ल कदे ना जाईआ। ब्रह्मण्ड ०८
खण्ड लोआं पुरीआं चौदां लोक बणावां इक्क दुकान, तेरी इच्छया भिच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अतोट अतुट इक्क रखाईआ। हरि भगवाना हो मेहरवाना, आपणी दया कमांयदा। शब्द अनादी देवे इक्क तराना, साचा हुक्म जणांयदा। तेरा रूप तेरा रंग तेरा सुत वाली दो जहानां, सगला संग रखांयदा। तेरा नाम पाए आणा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर घर साचे आप सुहांयदा। शब्द सुत्त वर घर पा, आपणी ख़ुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। तूं दाता कोई ना जाणे तेरा भेद अथाह, ना कोई वेख वखांयदा। ना कोई देवणहारा होर सलाह, ना कोई संग निभांयदा। ना कोई पकड़नहारा बांह, ना कोई मेल मिलांयदा। तूं करता पुरख करनेहारा सच न्याँ, घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत्त दुलारे देवे वर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सुत्त दुलारा हरि जणाई, एका बूझ बुझांयदा। आपणी करे आप कुड़माई, आपे सगन मनांयदा। आपणे दर वज्जे वधाई, आपे वेख

वखांयदा। आपे धी आप जवाई, सौहरा पेईआ आप बण जांयदा। आपणी सेज आप विछाई, आपे सोभा पांयदा। आपणे रंग रिहा रंगाई, रंगणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्द सुत्त हो त्यार, प्रभ साचा रचन रचांयदा। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा रूप वटांयदा। निरगुण अन्दरों निरगुण बाहर, विष्नूं नाउँ धरांयदा। निरगुण खेल अपर अपार, आप आपणा वेस वटांयदा। अन्दर भर अमृत धार, कँवल कँवला फुल्ल खिलांयदा। उपज्या फूल इक्क अपार, हरि साचा आप उपजांयदा। नाभी फटी आया बाहर, हरि साचा रंग वखांयदा। प्रभ अबिनाशी करे खेल अगम्म अपार, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सचखण्ड दुआर, एकँकारा हरि गिरधारा जोत उज्यारा, आदि जुगादी डगमगांयदा। शब्द सुत्त उठ उठ पेख, हरि साचे दया कमाईआ। कँवल फुल लैणा वेख, सतिगुर पूरा आप खिलाईआ। आपणे हथ्थीं लिखी रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे आपणा वर, आप आपणा अंग कटाईआ। आपणा अंग कट्ट कट्ट कीता वक्ख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म हो प्रतक्ख, एका रंग रंगाईआ। आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपणी वस्त आपे लए रक्ख, आपे पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवणहारा वर, आप आपणा शब्द जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप उपाया , अकल कला कल धारया। मात गर्भ ना जाया जम्म, खेले खेल वड संसारया। एकँकारा आपे जाणे आपणा कम्म, करनी करता आपणी आप कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटा ल्या। पारब्रह्म ब्रह्म आप उपाया, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिला रिहा, आपणी रचना आप रचाईआ। विष्नूं विश्व नाउँ धराया, आप आपणा बंस सुहाईआ। सुत दुलारा नाल रलाया, दे सिख्या इक्क समझाईआ। आपणा नाद आप अल्लाया, आपे रिहा सुणाईआ। आपणे मन्दिर आप वसाया, आपे रिहा विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप हो जाईआ। ब्रह्मा वेता रहे अतीता, हरि साचा रंग रंगांयदा। आप वखाए धाम अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। आप आपणा मन्ने भाणा मीठा, हरि भाणा वड वड्यांअदा। रूप वखाए ठांडा सीता, सति सतिवादी नाउँ धरांयदा। आप चलाए आपणी रीता, आपणा खेल आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा मेला साचे घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा एका खोल्ह, हरि साचा बूझ बुझांयदा। शब्द अनादी एका ढोल, दर मन्दिर आप वजांयदा। एकँकारा आपणे कंडे आप तोल, आपे वेख वखांयदा। आपणा पर्दा आपे फोल, आपे भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचे सोभा पांयदा। ब्रह्म रूप आप निरँकार, पारब्रह्म रूप वटांयदा। देवे नाद सच्ची धुन्कार, शब्द तराना एका गांयदा। साची सेवा करे सेवादार, सेवक सेवा इक्क वखांयदा। एका घर भर भण्डार, एका वस्त टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द रंगला किसे तोल ना तुला, घर साचे आप सुहांयदा। शब्द भण्डार नाम भरपूर, ब्रह्मे अन्दर आप टिकाईआ। खेले खेल हाज़र हज़ूर, ज़ाहर ज़रूर वड्डी वड्याईआ। अनादी वज्जे एका तूर, एका रंग सुणाईआ। एका बख्शे नुरानी नूर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, धूंआँधार वेख वखाईआ। धूंआँधार धुँदूकारा, हरि साचा वेख वखांयदा। ब्रह्मा इच्छया भरे भण्डारा, मस्तक लेख लिखांयदा। सप्तम रूप होए उज्यारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। शंकर मेला अगम्म अपारा, आपे बंधन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि निरँकार एकँकारा रचन रचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, हरि साचे शब्द जणाईआ। सुत्त दुलारा करे प्यार, तिन्ना एह समझाईआ। त्रैगुण खेल अगम्म अपार, आप आपणा दए वखाईआ। रजो तमो सतो कर त्यार, एका कन्नी रिहा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या विष्नूं वंसी प्रभ आपणी आप समझांयदा। होया खेल एका दस, एका मार्ग लांयदा। शंकर मेला शाहो शाबास, घर साचा आप सुहांयदा। तिन्ना देवे चरन दरस, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। खेले खेल पुरख अबिनाश, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंज तत्त आपणी रुत कर उत्पत, ब्रह्मा झोली पांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त जोड़ जुड़ांयदा। आप आपणी किरपा धार, रक्त बूंद मेल मिलांयदा। हड्ड मास नाड़ी रक्त पावे सार, आप आपणा संग निभांयदा। सरगुण रूप कर त्यार, साचा वेस धरांयदा। सरगुण अन्दर निरगुण वाड़, आप आपणी वंड वंडांयदा। मन मति बुध दए अधार, आपणी खेल खिलांयदा। मन्दिर अन्दर कर त्यार, आपणा मन्दिर आप उपजांयदा। ब्रह्मा रूप हरि करतार, घट घट आपणा आसण लांयदा। जीव आत्म ख़बरदार, परम आत्मा वेख वखांयदा। आपणी हथ्थीं कर कर बन्द किवाड़, घट घट आपे मुख छुपांयदा। लक्ख चुरासी मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत अकाला दीन दयाला अकल कल धारी एकँकारी आप आपणी कल वरतांयदा। एकँकार खेल अपार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। ब्रह्मा वेता पावे सार, उत्पत आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्नूं देवे सच भण्डार, साची सेवा रिहा कमाईआ। शंकर करे अन्त सँघार, भुल्ल रहे ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, लोकमात वेख वखाईआ। मन मति बुध पावे सार, निरगुण दाता

११६३ ०८

बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणी रचन रचाईआ। आदि जुगादि साचा हरि, साचा आपणा खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, धरत धवल जल बिम्ब आप टिकांयदा। करे प्रकाश रवि ससि सूरज चन्द सतार, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। आपे ज़मीन अस्मानां वेखे पाड़, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। आपे सृष्ट सबाई लाए अखाड़, आपणा नाच आप नचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल कर, आप आपणा कर्म कमांयदा। लक्ख चुरासी वंड वंडा, हरि साचा खेल खिलांयदा। नौ दस ग्यारां बीस तीस चार नाल रला, आपे वेख वखांयदा। त्रैगुण माया बंधन पा, एका डोरी नाल बंधांयदा। पंज तत्त जोत जगा, आप आपणा डगमगांयदा। पंच विकारा नाल रला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाउँ धरांयदा। पंचम सखीआं मंगल गा, पंच शब्द अनादी ढोल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी उत्तम ज़ात, मानस मानुख आप कराईआ। पुरख अबिनाशी देवे दात, आत्म ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वेखे मार झात कायनात, नर नरायण अक्ख खुल्हाईआ। आपे होए अन्धेरी रात, साचा चन्न आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, बेपरवाह आप अख्वाईआ। बेपरवाह हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। खेले खेल आदि
११६४ अन्त, जुग जुग आपणी वंड वंडांयदा। आपे जाणे आपणी बणत, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे रूप वटाए साध सन्त, ११६४
गुर पीर अवतार हरि आप अख्वांयदा। आपे लेखा जाणे जीव जन्त, लिखणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेस अवल्ला आपे कर, आपणा खेल खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वंडी वंड, वंडणहारा बेपरवाहीआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी फेरा पाईआ। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि एकँकार, एका एक अख्वांयदा। सतिजुग पावे सार, शब्द सुत्त वेख वखांयदा। त्रेता द्वापर लाए पार, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। कलिजुग अन्तिम आई वार, हरि साचा खेल खिलांयदा। बोध ज्ञान कर उज्यार, एका मति समझांयदा। एका कलमा भर भण्डार, नबी रसूलां आप सिखांयदा। ईसा मूसा सिरजणहार, सिर सिर रिज़क सबांयदा। राज़क रहीम बेऐब परवरदिगार, लाशरीक इक्क अख्वांयदा। संग मुहम्मद चार यार, सच शरीअत आप जणांयदा। हक्क हकीकत पावे सार, भेव अभेद भेव खुलांयदा। अञ्जील कुरान कर त्यार, तीस बतीसा आपे गांयदा। ख़लक ख़ुदाई वेख विचार, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। सालस बणे अन्तिम वार, चौदां लोकां फोल फुलांयदा। एका नाअरा बोल जैकार, ऐनलहक्क सुणांयदा। सर्ब

जीआं दा सांझा यार, घर साचे आसण लांयदा। हक्क हक्क हक्क मुकामे हो त्यार, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा । कलिजुग अन्तिम रंग अवल्ला, हरि साचा आप रंगांयदा। आपे रूप वटाया राणी अल्ला, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे नाउँ धराया हरि बिस्मिला, बिस्मिल रूप आप हो जांयदा। आप कट्टे आपणा छिला, आप आपणा मुख छुपांयदा। आपे रूप वटाए कक्का बूरा बिल्ला, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साचा वेख वखांयदा। कलिजुग सूरा सूरबीर बलवान, लोकमात लए अंगड़ाईआ। चारों कुन्ट वेखे मार ध्यान, आप आपणा बल धराईआ। नाल रलाए पंज शैतान, घर साचे वज्जी वधाईआ। जूठ झूठ रसना चिल्ले चढ़े कमान, माया ममता लोभ मोह हँकार इक्क निशान बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति धर्म सर्ब दा हुल्ले, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग साचा हो त्यार, लोकमात वेस वटांयदा। अल्ला राणी करे प्यार, साचा संग निभांयदा। मिल्या मीत मुहम्मद यार, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। ईसा मूसा दए सहार, आप आपणा रंग रंगांयदा। चारों कुन्ट गढ़ हँकार, झूठा बुरज बणांयदा। उच्चा कूके करे पुकार, आपणा नाअरा लांयदा। पारब्रह्म प्रभ सुनणेहार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। लोकमात पावे सार, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। धरनी धरत धवल करे पुकार, नेत्र नीर सर्ब वहांयदा। साध सन्त रो रो धाई रहे मार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। पंडत पांधे होए ख्वार, तिलक ललाट ना कोए जगांयदा। साचा ब्रह्म ना करे विचार, ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश आपणी वंड वंडांयदा । खाली होए भरे भण्डार, हरि का नाम ना कोए वरतांयदा। चारों कुन्ट दहि दिशा काम क्रोध लोभ मोह हँकार, काली चोली रंग रंगांयदा। काला सूसा तन शृंगार, ईसा मूसा जोबन हंढांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे जगत तमाशा, आप आपणा पर्दा लांहयदा। सचखण्ड दुआरे पाए साची रासा, सोभावन्त नाउँ धरांयदा। साधां सन्तां जीआं जन्तां देवे इक्क भरवासा, एका शब्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर आकार, सरगुण रूप कर पसार, लोकमात फेरा पांयदा। निरगुण सरगुण भेव अपारा, हरि साचा आप रखाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, पंज तत्त मेल मिलाईआ। निरगुण नूर सरगुण जोत उज्यारा, नानक नाम मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खिच बहाए चरन दुआरा, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। दो जहानां एका धारा, सचखण्ड दुआर धरनी धरत वखाईआ। आवे जावे वारो वार, दिस किसे ना आईआ। गुर नानक मिल्या मीत मुरार, घर साचे वज्जे वधाईआ। पाया पुरख अगम्म अपार, विछड़ कदे ना जाईआ। मंगे मंग बण भिखार, प्रभ भिच्छया झोली पाईआ। देवे नाम सति सति सति भण्डार, लोकमात

आवे चाँईं चाँईंआ। चार वरनां बण वणजार, एका वणज रिहा कराईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां करे प्यार, हस्त कीट एका रंग रंगाईआ। एका लाए सच जैकार, नाम सति करे पढ़ाईआ। क्षत्री शूद्र ब्रह्मण वैश सोहिण इक्क दुआर, हिन्दू मुस्लिम नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। सतिगुर नानक सच ज्ञान चार वरनां आप जणांयदा। एका बख्शे पुरख अबिनाशी चरन कँवल ध्यान, दूसर इष्ट ना कोए वखांयदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, लक्ख चुरासी गोपी आप नचांयदा। सर्ब जीआं दा साचा राम, सीता सुरती आप प्रनांयदा। सर्ब जीआं दा नाम सति सति नाम, नाम सति मन्त्र आप दृढ़ांयदा। सर्ब जीआं दा साचा जाम, अमृत प्याला जाम प्यांअदा। सर्ब जीआं दा साचा ग्राम, नगर खेड़ा सचखण्ड दुआर आप वखांयदा। सर्ब जीआं दा साचा नाम, नाम अधारी दया कमांयदा। सर्ब जीआं दा साचा काम, रसना जेहवा हरि गुण गांयदा। सर्ब जीआं दा साचा माण, नाम निशाना एका लांयदा। सर्ब जीआं दा माण ताण, हरि सतिगुर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेख आपे धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोती नूर जोत उजाला, हरि शब्द वज्जे वधाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, आपे भिक्खक भिच्छया मंगण आईआ। आपे शब्द सरूपी बण दलाला, गुरमुख साचे लए जगाईआ। आपे शब्द अनाद वजाए ताला, काया मन्दिर अन्दर आपणी तार हिलाईआ। आपे दरस आपे बणे रखवाला, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपे निवास लक्ख चुरासी जगत जंजाला, मात गर्भ फेर ना आईआ। गुरमुखां देवे नाम सच्चा धन माला, ठग चोर यार लुट्ट कोए लै ना जाईआ। आपणी चले अवल्लड़ी चाला, आपणा मार्ग आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर मेला साचे घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। नानक हरि हरि साचा पाया, विछड़ कदे ना जाईआ। पंज तत्त चोला जगत हंढाया, अन्तिम सृष्ट सबाई गया समझाईआ। कलिजुग लेखा रहे बकाया, साची वंड वंडाईआ। अन्तिम वेला राह तकाया, एका नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी आवे वाहो दाहया, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। निहकलंक हरि नाउँ रखाया, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। भैण भाई ना कोए बणाया, पिता पूत ना कोए अख्वाईआ। धी जवाई ना संग रलाया, घर बैठ ना करे संभाल, घर बैठ ना सेज ना सीस सेहरा कोए बंधाईआ। जगत खजूरे ना कोई चढ़ाया, वाग गुंदण भैण कोए ना आईआ। नाई नैण ना कोए रखाया, ना कोई मंगे अग्गे झोली डाहीआ। चार कहार लाड़ी डोली ना कोई उठाया, ना कोई पल्लू गंढु बंधाईआ। कलिजुग वेला पारब्रह्म एकँकारा आपणा आप दए सुहाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका एका दए वजाया, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा देवत सुर सुरपति राजा इन्द जाए बौहड़, गण

गंधर्ब किन्नर यच्छप आप उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे खेल तमाश, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित मूर्त अकाल निरगुण रूप दीन दयाल, निर्भय रूप आप वटाईआ। सतिगुर नानक साची धार, लोकमात एह समझांयदा। एका जोत दस अवतार, गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा। गोबिन्द सति पुरख अकाल, घर साचे सोभा पांयदा। फल लगाए चार वरन डाल्ह, पंचम मेल मिलांयदा। आप बणाए आपणे लाल, अमृत साचा जाम प्यांअदा। सति सतिवादी बन्न्हे सीस दस्तार, साचा रंग रंगांयदा। शब्द तन गात्रे इक्क कटार, धीरज जत आप बंधांयदा। कंगण पाए अपर अपार, नाम बंधन बंध बंधांयदा। आप आपणा उत्तों वार, आप आपणी मंग मंगांयदा। गुरमुखां अग्गे बणे भिखार, आप आपणी इच्छया पूर करांयदा। आपे नाता तोड़ संसार, पुरख अकाल एक मनांयदा। आपे सथ्थर सेज कन्त पसार, आप आपणा राह तकांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आप आपणा मेल मिलांयदा। दोहां विचोला निरगुण धार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा वड़, घर साचा आप सुहांयदा। पुरख अकाल गोबिन्द मेला, हरि सतिगुर आप कराईआ। आपे गुरू गुरू गुर चेला, गुर चेला नाउँ धराईआ। सति पुरख निरँजण सज्जण सुहेला, दर घर साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे आपणा घर, आपे बन्द कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप हरि सज्जण वड वड्याईआ। आदि जुगादी ठंडा सीत, सति रूप आप हो जाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण वड वड्याईआ। शब्द जणाए सुहागी गीत, वाहवा वाहिगुरू फतिह गजाईआ। साचा देहुरा मन्दिर मसीत, गुरसिख तेरा काया हट्ट वखाईआ। अट्ठे पहर परखणहारा नीत, घर बैठा आसण लाईआ। दिवस रैण वसे चीत, विछड़ कदे ना जाईआ। सुणाउँदा अन्दर रहे सुहागी गीत, अनहद ताल तलवाड़ा रिहा वजाईआ। जोती जगे पतित पुनीत, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। गुरसिख तेरी कोए ना करे रीस, तेरे अन्दर वड़या साचा माहीआ। तेरा रूप हरि हरि धरया हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। लक्ख चुरासी सुत्ता दे कर पीठ, पंज प्यारे अन्दर बैठा जोत जगाईआ। कलिजुग अन्त चलाई साची रीत, साचा पन्थ इक्क सजाईआ। एका ग्रन्थ गुरू इष्ट चरन प्रीत, दूजा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचन आप रचाईआ। सतिगुर गोबिन्द हो मेहरवान, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। सभना देवे सिक्खी दान, साची सिख्या इक्क समझांयदा। गुरसिख तेरे काया मन्दिर होवे प्रकाश, जोत निरँजण सहाए रवि ससि चन्द शरमांयदा। तेरा राह तक्कण गोपी काहन, दिवस रैण नैण उठांयदा। तेरे चरन ध्यान लगायण ब्रह्मा विष्न शिव कर ध्यान, दर तेरा उच्च सुहांयदा। मेरा मन्दिर तेरा मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा

११६७ ०८

पांयदा। भुल्ल ना जाए सच निशान, सीस दस्तार इक्क बन्न्हांयदा। एका ढईआ आपे वेखे विच जहान, कलिजुग रेखा अन्त मुकांयदा। प्रगट होवे वाली दो जहान, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गुर गोबिन्द सूरबीर सुल्तान, गुर सतिगुर साचा नाल रखांयदा। पंज तत्त ना वेखे कोए कर ध्यान, हड्ड मास नाड़ी रत ना रचन रचांयदा। एका चिल्ला तीर कमान, हरि शब्दी रंग रंगांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां मारे एका बाण, लक्ख चुरासी बचया कोए रहिण ना पांयदा। निमाणयां देवे एका माण, ग़रीब निमाणयां गले लगांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां मेटे जगत निशान, सीस ताज ना कोए रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां देवे इक्क ज्ञान, पुरख अकाल एका इष्ट वखांयदा। पारब्रह्म सरनाई चार वरन डिग्गण आण, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए ध्यांअदा। लेखा चुकाए वेद पुराण, अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ांयदा। शास्त्र सिमरत ना करे कोए ध्यान, तिलक ललाट ना कोए वखांयदा। शब्द अनादी कर परवान, घर घर मंगल साचा गांयदा। पंज तत्त ना पूजा करे कोए जहान, निरगुण सतिगुर इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, वड वड्डा वड्याईआ। खेले खेल सर्ब जहान, घट घट बैठा आसण लाईआ। चौथे जुग चार कुन्ट चार यारी होई प्रधान, जग पूजा रही कराईआ। पंचम भुल्लया हरि भगवान, पंच विकार करी कुड़माईआ। भैणां भईआ ना कोए प्यार, पिता पूत पुत्तर धी ना कोए अख्वाईआ। नारी कन्त ना करे ध्यान, विभचार करे सर्ब लोकाईआ। पाए दरस ना हरि भगवान, आत्म हिरस ना कोए मिटाईआ। अमृत आत्म मिले ना पीण खाण, मदिरा जाम प्याला मुख लगाईआ । मनुआ मन भुंन कबाब कोए ना खाण, जीवां हत्या सर्ब कमाईआ। ना होए सहाई कृष्ना राम, जो जन बैठे हरि भुलाईआ। ईसा मूसा ना करे कल्याण, जो जन बैठा मुख भवाईआ। नानक गोबिन्द ना मारे बाण, तीर जो गुरमति रहे गंवाईआ। बिन हिरदे ना कोई होर निशान, ना कोई बेड़ा बन्ने लाईआ। जुगा जुगन्तर जुग जुग आप चुकाए पिछली काण, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। आपे हरि दुआर हरि खेल खिलाउँणा, परब्रह्म प्रभ बेअन्तया। कलिजुग कूड़ा मेट मिटाउँणा, मिथ्या जाणे साध सन्तया। जूठ झूठ रहिण ना पाउँणा, माया ममता मोह चुकन्तया। गढ़ हँकारी आपे ढाउँणा, घर साचा इक्क सुहन्तया। चार वरनां रंग इक्क रंगाउँणा, भरम भुलेखा दूर कढन्तया। एका जोती लक्ख चुरासी दीपक आप जगाउँणा, आपे जोत प्रकाश करन्तया। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क ज्ञान दृढ़ाउँणा, एका ढोला इक्क सुणन्तया। सत्तां दीपां एका मार्ग लाउँणा, सत्त रंग निशाना आप चड़न्तया। सृष्ट सबाई एका शाह अख्वाउँणा, दूसर कोए ना बणत बणन्तया।

११६८ ०८

राज जोग एका रंग रंगाउँणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटन्तया। कलिजुग तेरा रंग चलूल, हरि साचा वेख वखाईआ। शंकर वेखे हथ्थ त्रिसूल, बाशक तशका गल लटकाईआ। ब्रह्मा वेता आपणा मनवन्तर रिहा भूल, आपणे दर करे पढ़ाईआ। विष्नूं चुक्के आपणा मूल, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। खेले खेल कन्त कन्तूहल, हरि साचा बेपरवाहीआ। आपणी रचना आदि जुगादी कदे ना जाए भूल, अभुल्ल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तोलणहारा साचा तोल, नाम कंडे लए तुलाईआ। कलिजुग अन्तिम तोलण आया, निरगुण नूर नूर उजालया। एका धार बोलण आया, सो पुरख निरँजण खेल निरालया। एका चोला बदलण आया, आपे चले अवल्लड़ी चालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आदि शक्ति जोत जवाल्या। आदि शक्ति जोत भवानी, अष्टभुज उठांयदा। सति सरूपी शाहो भूपी इक्क सुणाए आपणी बाणी, आपणा राग अनहद शब्द आपे जाणे अकथ कहाणी आपे आपणी गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे विश्व वासदेव, वास्तक रूप अनभव रूप वटांयदा। आपे अबिनाशी करता अलख निरँजण अलख अभेव, वेस अनेका रूप धरांयदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म होए निहकेव, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। आपे रंग रंगलीआं

११६८ माणे रसना जेहव, बत्ती दन्द आप हिलांयदा। आपे अमृत फल बणे साचा मेव, आपे कौड़ा रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप ११६८

०८ हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वखंदड़ा हरि मेहरवान, आपणी ०८

कल वरताईआ। जोत जुगन्दड़ा श्री भगवान, निरगुण नाउँ धराईआ। सृष्ट सबाई साचा मार्ग इक्क वखंदड़ा, एका पन्थ बणाईआ। राग अनादी इक्क सुनंदड़ा, एका ढोला गाईआ। दीपक जोती ज्ञान दृढ़ंदड़ा, दिव दृष्टी इक्क खुल्हाईआ। नेत्र नैण मेल मिलंदड़ा, लोचन करे सर्ब रुशनाईआ। काया कँवरी भँवरी फोल फोलंदड़ा, डूँघी कवरी वेख वखाईआ। टेडी बंक पार करिंदड़ा, सुखमन पन्ध मुकाईआ। पंचम धाड़ मेट मिटंदड़ा, आसा तृष्ना रिहा गंवाईआ। अमृत साचा जाम प्यंदड़ा, कागों हँस बणाईआ। शब्द गुर नाउँ रखंदड़ा, पंज तत्त ना मेल मिलाईआ। अन्दर मन्दिर राग सुनंदड़ा, अनहद सेवा लाईआ। ताल तलवाड़ा आप वजंदड़ा, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सुरत सवाणी मेल मिलंदड़ा, आप आपणा बंधन पाईआ। बजर कपाटी तोड़ तड़िंदड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। आत्म सेजा इक्क सुहिंदड़ा, फूलन बरखा लाईआ। दस्म दुआरी घर वसंदड़ा, घर साचे सोभा पाईआ। शब्द कन्त हरि मेल मिलंदड़ा, गुरमुख नारी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सिरजणहार हरि जहानया, पारब्रह्म ब्रह्म गुर करतार।

देवे दरस श्री भगवानया, आप आपणी किरपा धार। आवण जावण चुक्के कानया, नाता तुटे सर्ब संसार। पाया पुरख इक्क सुल्तानया, दर घर साचे मेला कन्त भतार। पाया पद इक्क निरबानया, घर चौथे मीत मुरार। पंचम राग बहि बहि गाया गानया, घर सखीआ मंगलचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेला लाए पार। सन्त सुहेले हरि हरि बूज्झया, आपणी बूझ बुझांयदा। सतिगुर पूरा भेव कोए ना गूज्झया, आप आपणा राग अलांयदा। लेख चुकाए एका दूज्जया, तीजा नेत्र इक्क दरसांयदा। चौथे पद जो जन झूज्जया, आवण जावण ना कोए गणांयदा। सरन सरनाई जो जन लूज्झया, दर पंचम सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, सच ज्ञान ब्रह्म ध्यान पारब्रह्म सलांहयदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञाना, हरिजन वड्डी वड्याईआ। आत्म अन्तर इक्क ध्याना, एका हरि हरि हरि लिव लाईआ। आत्म अन्तर शब्द बबाना, हरि साचा आप उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, शाहो भूप वड सुल्तानया। कलिजुग अन्तिम बणे जगत मलाह, जन भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां देवे धुर फ़रमानया। चार कुन्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी घर घर उडने काँ, दीवा बत्ती ना कोए जगानया।

११७०

मांवां पुत्तरां ना पकड़े कोई बांह, सगला संग ना कोए वखांयदा। कलिजुग जूठे झूठे जीव जन्त साध सन्त कर जाण नांह, वेले अन्त बिन सतिगुर पूरे कोए ना पार करानया। निथाव्याँ देवे ना कोई थाँ, चारों कुन्ट सर्ब कुरलानया। एकँकारा हरि निरँकारा निरगुण धारा जुग जुग आवे करन न्याँ, निरगुण सरगुण रूप वटानया। गुरमुखां लक्ख चुरासी निवाए ल्या, आपणे दर करे परवानया। जो जन रसना जेहवा हरि हरि रहे गा, अन्तिम सौणा दे बांह सरहानया। जगत शक्ती ना सके कोई मिटा, रक्खे लाज जीवां हरि बाल अंजानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्मड़ा सृष्ट सबाई भुज्जे वांगर दाणयां। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार आपणी खेल खिलांयदा। गोबिन्द गुर सूरबीर कर त्यार, शब्द अगम्मी धार नाल वखांयदा। लोआं पुरीआं करे पार किनार, नीली धारों नीला पार करांयदा। छैल छबीला हो त्यार, गुरसिख कबीला वेख वखांयदा। बस्त्र पीला तन श्रृंगार, आपणा हीला आप करांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, बहत्तर नाड़ी खोज खुजांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, नित नवित्त फेरा पांयदा। शाह सुल्ताना करे ख्वार, सीस ताज ना कोए बंधांयदा। बीस बीसा मंगे मंग बण भिखार, कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा। जगत जगदीसा होए सच्चा सिक्दार, सिर आपणे छत्र झुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बोले इक्क जैकार, ख़ालस ख़ालसा आप सुहांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता उत्तम ज़ाता एका एक वखांयदा। उत्तम ज़ात चार वरन, हरि साचा सच समझाईआ। उत्तम ज़ात सतिगुर सरन, जगत वरन ना कोए वड्याईआ। उत्तम ज़ात खुल्ले हरन फरन, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। उत्तम ज़ात चुक्के मरन डरन, आवण जावण रहिण ना पाईआ। उत्तम ज़ात मिले मेल हरि करनी करन, करता पुरख मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सरूपी आया करन लड़ाईआ। शब्द सरूपी सच मृदंग, नौ खण्ड आप वजांयदा। सम्मत वीह सद सोलां बिक्रमी वंडे वंड, वरभण्डी जोत डगमगांयदा। वरनां बरनां करे खण्ड खण्ड, साचा खण्डा नाम चमकांयदा। लक्ख चुरासी नार दोहागण रंड, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। दर दर वेखे भेख पाखण्ड, भेख पाखण्डी डौरु वांहयदा। पावे सार विच ब्रह्मण्ड, हरि साची जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एकँकारा इक्क अख्वांयदा। निहकलंक धाम अवल्ला, नगर ग्राम आपणा आप वसाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर करे बिसराम, सम्बल नगरी आप उपजाईआ। आपणा फड़या निरगुण बाण, निरगुण चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। निरगुण बणया लोहार तरखान, शस्त्र शस्त्र जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण चाढ़ी आपणी पाण, एका जोती भट्ठी रिहा तपाईआ। निरगुण पाणी ठंडा पाए आण, सर सरोवर इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर खेल अपार, नाम खण्डा करे त्यार, सम्मत सोलां वेख विचार, पन्दरां कत्तक हो ख़बरदार, एका दूजा वंड वंडाईआ। साचा खण्डा करे त्यार, हरि साची बणत बणांयदा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार, दोवें मुख सलांहयदा। चारों कुन्ट मारे मार, ब्रह्मा चारे मुख भवांयदा। दहि दिशा करे ख्वार, चार दीवारी वेख वखांयदा। पाए हिस्सा हरि गिरधार, गृह गृह वंड वंडांयदा। किसे ना दिसा विच संसार, कोटन कोटी राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे दिवस दित्ता वर, दूजे दिवस घाड़न दए घड़, गुरसिख साची बणत बणांयदा। गुरसिख काया घाड़न घड़या, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। गुरमुख गुर गुर आपे फड़या, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरसिख अन्दर गुर गुर आपे वड़या, आप आपणा रूप वटाईआ। गुरसिख मन्दिर गुर गुर आपे चढ़या, आपणा कुंडा लाहीआ। गुरसिख अन्दर गुर गुर आपणा अक्खर आपे पढ़या, छत्ती राग भेव ना राईआ। गुरसिख अन्दर गुर गुर आपे खड़या, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। गुरसिख साची तरनी जगत तरया, जो सतिगुर सरनाई आईआ। कलिजुग मरनी कदे ना मरया, राए धर्म ना दए सजाईआ। चित्रगुप्त किसे ना फड़या, लाड़ी मौत ना सगन मनाईआ। दर घर साचे दरगाह साची चढ़या, सचखण्ड

दुआरे सोभा पाईआ। सन्त भगवन्त कन्त गुरमुख नारी आपे खड़या, आपणी डोली आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख साचे रिहा तराईआ। तारनहारा पुरख समरथ, हरि सतिगुर गुर अख्वांयदा। सदा सुहेला रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी दया कमांयदा। पंच विकारा देवे मथ, पंच शब्द धुन उपजांयदा। पंच जणाए साची गाथ, बोध अगाध अलांयदा। पंच चुकाए लहिणा देणा मस्तक माथ, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा इक्क कराए पूजा पाठ, एका मन्त्र नाम सुणांयदा। एका तीर्थ एका ताट, अठसठ पन्ध मुकांयदा। चौदां लोक वखाए एका हाट, चरन दुआरा जन दरसांयदा। जुग जुग विछड़े जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, घाटा कोए रहिण ना पांयदा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, आप आपणे लेखे लांयदा। गुरसिख पंज तत्त सड़े अग्नी काठ, आत्म ब्रह्म ना कोए जलांयदा। जेहवा यस हिला रघुनाथ, रघुपति आपे वेख वखांयदा। थिर घर साचे सच निवास, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। जन भगतां पूरी करे आस, वेले अन्तिम दरस वखांयदा। हरि सन्तां सच घर करे वास, दरगाह साची सोभा पांयदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी प्यास, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। गुरसिखां दुआरे दासी दास, गुर सतिगुर सेव कमांयदा। अन्तिम करे बन्द खलास, बन्दी छोड़ नाम धरांयदा। सद बलिहारी बलि बलि जास, जो गुर का हुक्म कमांयदा। आदि जुगादि ना होए विनास, हरि साचा आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेला हरि दुआर, हरि सन्तन आप कराईआ। जो जन मंगण बण भिखार, प्रभ साची भिच्छया झोली दए भराईआ। दरस वखाए खोल्ह किवाड़, अन्दर मन्दिर निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कलिजुग अग्नी तपे ना तत्ती हाढ़, रुत्त बसन्त इक्क सुहाईआ। होए प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर वखाए इक्क अखाड़, प्रभ लाया बेपरवाहीआ। मूरछागत होई पंचम धाड़, मूधे भार सुटाईआ। गुर का शब्द दए लताड़, त्रिलोकी भार उप्पर रखाईआ। गुरमुखां फिरे अग्गे पिच्छे अगाड़, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। आपे पौड़े देवे चाढ़, अध विचकार ना कोए लटकाईआ। गुरसिख बणाए साचे लाड़, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां खेले खेल अगम्म अपार, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन सज्जण उठावण आया, वड दाता बेअन्त। कलिजुग जीव गूढ़ी नींद सवावण आया, माया पर्दा पाए साध सन्त। त्रैगुण वेस वटावण आया, आदि जुगादी महिमा अगणत। पंज विकारा वेख वखावण आया, वेखणहार हउमे हँगत। लक्ख चुरासी मनमुख जीव मिटावण आया, आप बणाई आपणी बणत। गुरसिख सच्चे आप तरावण आया, नाउँ रखाया हरिसंगत। कांगों हँस बणावण आया,

जिउँ नानक अंगीकार लाया अंगद। एका बस्त्र भूशण तन पहनावण आया, दूसर दर ना होए मंगत। काया चोली रंग चढ़ावण आया, लेख मुकाए भुक्ख नंगत। नाम कंगण इक्क वखावण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रंगत। आपणा अंक आपे जाण, आपणा मूल वेख वखाईआ। आपणा अंक आप पछान, आपे निव निव सीस झुकाईआ। आपणा जनक कर प्रधान, गुरमुख साचे दए वड्याईआ। आपणा डंक दो जहान, नौजवान दए वजाईआ। साल सोल्ह्वें हो प्रधान, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। साल सतारवें फड़े तीर कमान, एका चिल्ला दए चढ़ाईआ। साल अठारवें मारे बान, जल बिम्ब वेख वखाईआ। साल उनीवें कलिजुग तेरी लाहे मकाण, ईसा मूसा रहिण ना पाईआ। साल बीसवें झुलाए निशान, सत्त रंग निशाना दए चढ़ाईआ। तख्त ताज सोहे सुल्तान, पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। चारों कुन्ट पन्थ प्रधान, वड परवानगी आप सखाईआ। रसना गूंजे इक्क अकाल, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। हँ ब्रह्म बणे विधान, सतिगुर पूरा दए जणाईआ। सोहँ रूप चतुर सुजान, चार जुग ना मरे ना जाईआ। आदि अन्त रहे विच जहान, एका कुदरत दूजा रूप हरि नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस इकीसा हरि जगदीसा एका छत्र सीस झुलाईआ। छत्र झुलाना हरि मेहरवान, हरि आपणा आप झुलाईआ। सृष्ट सबाई पावे आण, चार वरन आए सरनाईआ। शाह सुल्तान राज राजान, निउँ निउँ सीस रहे झुकाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, दर घर साचे सोभा पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई चुक्के कान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका दए वजाईआ। डंका वज्जणा चार कुन्ट, हरि साचे आप वजावणा। लोकमात बनावणा धाम बैकुण्ठ, साचा मार्ग एका लावणा। ना कोई लिंग कटाए ना करे संन्नत, ना कोए मूंड मुंडावणा। प्रभ आप बणाए आपणी बणत, एका रूप सच दरसावणा। एका रंग साध सन्त, दूजा रंग ना कोए वटावणा। ना कोई गढ़ दिसे हउमे हँगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना दर नचावणा। ना कोई ब्रह्मा विष्न शिव गणपति गणेश होए मंगत, दूजे दर ना पल्लू डाहवणा। उच्चे दर ना बहे कोए पंगत, वंडी वंड ना कोए वंडावणा। नौ खण्ड बणाए साची संगत, हरिसंगत नाम धरावणा। प्रभ काया मजीठी चाढ़े रंगत, चोला चोली आप रंगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकीसा आप अख्वावणा। इक्क इकीसा खेल अपारा, हरि साचा आप कराईआ। सतिजुग साची बन्ने धारा, आपणा सम्मत दए चलाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, आपणी विद्या करे पढ़ाईआ। वेद कतेबां वसे बाहरा, खाणी बाणी भेव ना राईआ। गुर पीर अवतार साधां सन्तां चलौणहारा, सहार एकँकारा अख्वाईआ। पुरख अकाल बोल

जैकारा, निरगुण सरगुण नाम धराईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपे नज़री आए राम अवतारा, आपे कृष्ना रूप वटाईआ। आपे ईसा मूसा हो उज्यारा, आपणा कलमा आप सुणाईआ। आपे आबेहयात करे त्यारा, भर प्याला जाम प्याईआ। आपे मुख नकाब पर्दा लाए भारा, अगला लेखा वेख वखाईआ। आपे दो दो आबा देवे धारा, आपणा मेल मिलाईआ। आपे लेखा जाणे मुहम्मदी यारा, चार यारी रूप वटाईआ। आपे निरगुण नानक खेल अपारा, जोत निरँकारा डगमगाईआ। आपे सतिनाम भरे भण्डारा, वड भण्डारी बेपरवाहीआ। आपे वाहिगुरू बोल जैकारा, वाह वाह गुरू आप अख्वाईआ। आपे फतिह वज्जे नगार, आपे डंका रिहा लाईआ। आपे ख़ालस ख़ालसा कर त्यारा, चार वरनां रंग चढ़ाईआ। चौंह जुगां तों पन्थ चलाए आपणा न्यारा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। करोड़ छिआनवे अगम्मी धाड़ा, आपणी आप लए उपजाईआ। लोकमात बणाए सच अखाड़ा, मानस जन्म रूप वटाईआ। विच सोहे हरि हरि लाड़ा, आप आपणा जोबन रिहा वखाईआ। सम्मत लगाए सतारां हाढ़ा, अगला लेखा बन्द रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुग आपणे गाए आपे छन्द, दूसर हथ्थ ना रक्खी किसे वड्याईआ।

सोलां कल अकल कलधार, सोलां इच्छया बन्द कराईआ। सोलां कल आप निरँकार, आपणी वंड वंडाईआ। सोलां कलां भर भण्डार, लोकमात वेख वखाईआ। सोलां कलां दए अधार, आप आपणी जोत जगाईआ। सोलां कल कल उज्यार, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। सोलां कल बन्ने धार, ब्रह्मा विष्नूं शिव सेव कमाईआ। सोलां कल खेल अपार, त्रिलोकी आपणे वेस वखाईआ। सोलां कलां दए अधार, नौ खण्ड रचन रचाईआ। सोलां कलां कल कर पसार, सत्त दीप नाल रलाईआ। सत्तां दीपां नवां खण्डां तिन्नां लोकां करे आर पार, सोलां कल सो अख्वाईआ। कृष्न बणया मात अवतार, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। आपणी शक्ती भर भण्डार, आपे वेख वखाईआ। आप करे आपणा मंगलाचार, आपे दए सुणाईआ। आप आपणा ज्ञान दए भण्डार, आपे रिहा सुणाईआ। एका साजन मीत मुरार, सिख्या सिख समझाईआ। सोलां इच्छया रिहा विचार, सतारां दरसी सोलां मुख सतारवां दिवस द्वापर वेला अन्त अकल अठारां दिवस बोल जैकार, त्रिलोकी नाथ आपणी खेल खिलाईआ। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, त्रैगुण विच दिस ना आईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। लेखा लेख ना सके कोए विचार, वेद पुराण सिमरत शास्त्र भेव ना राईआ। जिस जन आत्म अन्तर बख्शे ब्रह्म ज्ञान, सो जन बूझ बूझ बुझाईआ। चौदां लोक वेखे मार ध्यान, चौदां लोक आपणा रंग वखाईआ। सत्त दीप हो प्रधान, आपणी जोत

करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकल कल धार हरि निरँकार, सोलां कल वेख संसार, नौ सत्त सत्त नौ सोलां चोला इक्क बदलाईआ।

✪ १८ कत्तक २०१६ बिक्रमी बग्गा सिँघ दे घर नत्त ज़िला लुध्याणा ✪

हरि पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार, आदि अनादि चलाईआ। हरि पुरख आप निरँकार, दूसर होर ना कोए अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण जोत उज्यार, एका एक डगमगाईआ। हरि पुरख आदि निरँजण खेल अपार, आप आपणे रंग समाईआ। हरि पुरख अबिनाशी करता सिरजणहार, सच सच आप अख्वाईआ। हरि पुरख पारब्रह्म हो उज्यार, रूप अनूप आप वटाईआ। हरि पुरख आप आपणा कर पसार, आप आपणा वेख वखाईआ। हरि पुरख निराकार, निरवैर नाउँ धराईआ। हरि पुरख पुरख अकाल, अकल कला धराईआ। हरि पुरख अजूनी रहित वड सिक्दार, सच सुल्तान बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। हरि हरि पुरख करता अबिनाश, एका रंग समांयदा। हरि पुरख सर्ब प्रकाश, नूरो नूर डगमगांयदा। हरि पुरख आपणे अन्दर करे आपणा वास, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरि पुरख एका बणे आप दास, आप आपणी सेव कमांयदा। हरि पुरख आपणी वेखे आपे रास, आपे नाच नचांयदा। हरि पुरख आपे वस्सया आपणे पास, आप आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि पुरख अलख अभेव एका एक एका नाउँ उपजांयदा। हरि पुरख सर्ब गुणवन्त, एका एकँकारया। हरि पुरख पूरन भगवन्त, पारब्रह्म जोत निराकारया। हरि पुरख आदि अन्त, आप आपणा वेस वटा ल्या। हरि पुरख बणाए आपणी बणत, आप आपणा रूप धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिला ल्या। हरि पुरख जोत उजाला, निरगुण नूर समांयदा। हरि पुरख दीन दयाला, दयानिध नाउँ वखांयदा। हरि पुरख करे आप आपणी प्रितपाला, प्रितपालक वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नूर डगमगांयदा। हरि पुरख जोत उज्यार, आपणी खेल खिलाईआ। हरि पुरख आपणी इच्छया आपे धार, आपणा हुक्म आप जणाईआ। हरि पुरख सच्ची सरकार, राज राजान वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। हरि पुरख हरि मलाह, हरि हरि वेख वखांयदा। हरि पुरख हरि सलाह, हरि हरि हुक्म जणांयदा। हरि पुरख हरि हरि नाँ, आपणा आप धरांयदा। हरि पुरख करे सच न्याँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार निरँकार एका वेस वेस वटांयदा। हरि पुरख हरि निशाना, अवर ना दूजा कोए। हरि पुरख श्री भगवान, आपणा नाम आप बलोए। हरि पुरख गुण निधान, गुण

कहि ना सके कोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणी लोए। हरि पुरख इच्छया धार, आपणी दया कमाईआ। आपणा मन्दिर करे त्यार, चार दीवार ना कोए बणाईआ। आपे होए सेवादार, सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। हरि पुरख किरपा धार, आपणी बणत बणांयदा। आपणा बणाए आप दुआर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लम्बा चौड़ा कदे ना करे विचार, लेखा गिणत ना कोए गिणांयदा। संसार विच ना पावे कोई सार, अगम्म अथाह आप धरांयदा। आपणा मन्दिर कर त्यार, आपे बाडी वेख वखांयदा। आपे अन्दर वड़ होए उज्यार, आपणा दीपक आप जगांयदा। आपे वेखे आपणे दुआर, दर दुआर खोल्ह खुल्हांयदा। आपे होए गुप्त ज़ाहर, भेव अभेद आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर उपजांयदा। आपणा मन्दिर कर त्यार, हरि साची ख़ुशी मनांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। हरि पुरख निरँजण किरपा धार, सो पुरख निरँजण सिफ्त सलांहयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि पुरख निरँजण डगमगांयदा। हरि पुरख निरँजण करे सच प्यार, सो पुरख निरँजण अंग लगांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण विच समांयदा। हरि पुरख निरँजण बणे कन्त भतार, सो पुरख निरँजण नादी नाउँ धरांयदा। अन्दर वड़ करे प्यार, आप आपणा बंक सुहांयदा। साचे मन्दिर खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग किसे ना पाई सार, हरि का भेव ना कोए खुल्हांयदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि कहि गए पुकार, लिख्या लेख ना कोए लिखांयदा। बिन हरि आपणी बन्न्हे ना कोई धार, आदि अन्त ना कोए जणांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, आपणी रचना आप रचांयदा। आपणे मन्दिर हो उज्यार, आप आपणा वेख वखांयदा। साचे मन्दिर धरे नाउँ अपर अपार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सचखण्ड दुआर हट्ट अबिनाश खुल्हा, पुरख निरँजण दया कमांयदा। हरि पुरख निरँजण डेरा ला, घर आपणे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण सेज वछा, सो पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। सो पुरख निरँजण अंग लगा, हरि पुरख निरँजण संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर वेख वखांयदा। सचखण्ड दुआर रक्खया नाउँ, हरि साचे दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण रचया गाउँ, आपणा खेड़ा दए वसाईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे आपणा नाउँ, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। सो पुरख निरजंण पकड़े बांह, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचे सोभा पाईआ। साचा घर सच महल्ला, सो पुरख निरँजण

आप उपाया। हरि पुरख निरँजण बैठा इक्क अकल्ला, सचखण्ड दुआरा इक्क वसाया। हरि पुरख निरँजण आपणा आसण आपे मल्ला, आप आपणा डेरा लाया। हरि पुरख निरजंण निहचल वेखे इक्क अटला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्दिर कर त्यार, पावे सार हरि निरँकार, निराधार वेख वखाया। सच महल्ला सचखण्ड, हरि पुरख निरँजण आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण करे वंड, लिख्या लेख ना कोए जणांयदा। हरि पुरख निरँजण मंगे आपणी मंग, आपे झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार, दीपक बाती कर उज्यार, सति सरूपी डगमगांयदा। सो पुरख निरँजण सति सरूप, हरि हरि नाउँ उपाईआ। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी कूट, दहि दिशा ना कोए वखाईआ। सो पुरख निरँजण जाए तुठ, आप आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा जाम आपे पीवे घुट्ट, आपणे अन्दर आप टिकाईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा रस आपे लए लुट्ट, आप आपणे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, घर साचे वड वड्याईआ। वड वड्याई सचखण्ड दुआर, हरि पुरख निरँजण आप जणांयदा। निरगुण नूर कर उज्यार, पुरख अकाला डगमगांयदा। सच सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशण आसण लांयदा। शाहो भूप वड सिक्दार, राजण राज अनादि धरांयदा। छत्र सीस बेऐब परवरदिगार, आपणा रूप दरसांयदा। कागज कलम ना पावे सार, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। सो पुरख निरँजण आपणी करनी करता करे करतार, करनहार इक्क अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। वसणहारा इक्क घर बार, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड वंडांयदा। सचखण्ड वस्सया सो पुरख निरँजण, एका एक जोत अकालया। थिर घर वासी हरि पुरख निरँजण, खेले खेल हरि गोपालया। दोहां मेला एका सज्जण, दूसर जति ना कोए रखा ल्या। इक्क दुआरे एका मजन, सरोवर सच्चा इक्क वखा ल्या। इक्क दूजे गल आपे लग्गण, प्रेम प्यार इक्क वखा ल्या। निरगुण धार साचे नेत्र नीर वगण, हरि अमृत नाम रखा ल्या। सचखण्ड दुआरे मनाया साचा सगन, सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण इक्क दूजे पावण मालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, नारी कन्त कन्त भतार, सचखण्ड दुआरे आप बहा ल्या। आपे नारी आपे कन्त, सचखण्ड सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण खेल बेअन्त, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। आप बणाई आपणी बणत, आपणी रचना रच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। हरि पुरख निरँजण वसे थिर घर, कन्ती नाउँ उपांयदा। सो पुरख निरँजण सचखण्ड वस्सया एका दर, आप आपणा खेल खिलांयदा।

हरि पुरख निरँजण आप आपणा रूप धर, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत जोत विच टिकांयदा। जोत अन्दर जोत धर, सचखण्ड खेल खिलाया। निरगुण अन्दर निरगुण वड़, निरगुण मेल मिलाया। सो पुरख निरँजण पौड़े चढ़, हरि पुरख निरँजण वेख वखाया। हरि पुरख निरँजण साचा घाड़न घड़, सो पुरख निरँजण दए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप उपाया। सो पुरख निरँजण घाड़न घड़या, सच टकसाल हथ्थ उठाईआ। हरि पुरख निरँजण नाल रलया, उप्पर आपणी मोहर लगाईआ। आपणा विचोला आपे बणया, ना दूसर कोए वखाईआ। आपणा तोला आपे बणया, आपणा कंडा लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। सो पुरख निरँजण थिर घर वास, हरि आपणा आप रखाया। सचखण्ड दुआर पुरख अबिनाश, हरि पुरख निरँजण डेरा लाया। हरि पुरख निरँजण सो पुरख निरँजण अन्दर करया वास, आप आपणा बीज बजाया। आपे उत्पत जोत करे प्रकाश, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाया। सुहाए घर सच दरबार, हरि सच्चा शाह सुल्तानया। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका वेखे श्री भगवानया। एका खेल निरगुण धार, एका जोत जोत जगे महानया। एका सज्जण मीत मुरार, एका रूप अनूप दरसानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधानया। सचखण्ड सोभावन्त सुभागण, हरि साचा वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण एका रंग रंग बैरागण, आप आपणा ताल वजांयदा। नारी कन्त होई सुहागण, सोभावन्ती वेस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे बूझ बुझांयदा। देवणहारा वर करतार, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, बैठा राह तकाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, आपे वेख वखाईआ। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, थिर घर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर अन्दर आपणे सोभा पाईआ। सोभा पाए हरि भगवान, सोहे दर दरबारा। मन्दिर वसे सच मकान, उच्च अटल मनारा। निरगुण दीप होए उज्यार, वेखणहारा कमलापाती एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर वेखे इक्क दुआरा। सचखण्ड वस्सया हरि निरँकारा, निरगुण रूप वटांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। आपे सुत्ता कर उज्यारा, शब्दी नाउँ धरांयदा। खेले खेल अपर अपारा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचांयदा। आप उपजाए रवि ससि सूरज चन्द सतारा, गगन मण्डल आप सुहांयदा। पृथ्मी आकाश दए सहारा, जल धारा रूप वटांयदा। आपणा रंग कर उज्यारा, विष्नूं नाउँ वटांयदा। नाभी कँवली भर भण्डारा,

११७८
०८

अमृत धार चलांयदा। उपज्या फुल्ल आया बाहरा, आपणी पंखड़ी आप खुल्हांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप न्यारा, ब्रह्म रूप वटांयदा। वसणहारा धूंआँधार, सतिगुर नाउँ उपजांयदा। तिन्नां मेला इक्क दुआरा, एका हुक्म सुणांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम तत्त मेल मिलांयदा। पंजी प्रकृति दए अधारा, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। मन मति बुध कर श्रृंगारा, साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच घर, सचखण्ड वासी पुरख अबिनाशी आप आपणी खेल खिलांयदा। सेवादार सेवक ला, साचा हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव लए उठा, आप आपणी बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी रचन रचा, रिज़क सबाई आप पुचाईआ। आपे देवे अन्तिम ढाह, सतिगुर रंग रंगाईआ। लोकमात हरि खेल खिला, वरभण्डी नाउँ धराईआ। ब्रह्मण्डी डेरा आपे ला, जेरज अंड दए वड्याईआ। उत्भुज सेत्ज खेल खिला, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। अजूनी रहित लक्ख चुरासी अन्दर डेरा ला, जूनी जून अनेका आप भवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लए उपजा, यश जेव आप अख्वाईआ। आत्म परमात्म वेख वखा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, एकँकारा आप आपणा नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण वस्सया सभनी थाँ, घट घट बैठा आसण लाईआ। आपणी वंड आप वंडा, आपे हुक्म सुणाईआ। चारे वेदां लए लिखा, चारे युग रचन रचाईआ। सतिजुग साचा मात धरा, सति सति
१९७६ करे पढ़ाईआ। त्रेता आए वेख्या , आप आपणी कल वरताईआ। दुआपर तेरा पन्ध मुका, प्रभ बणया पान्धी राहीआ। १९७६
कलिजुग तेरा करे न्याँ, भुल्ल रहे ना राईआ। गुर पीर साध बणन गवाह, जो हरि का लेखा गए लिखाईआ। बिन हरि गोबिन्द ना दिसे कोए मलाह, ना बेड़ा बन्ने लाईआ। चारों कुन्ट अन्धेरा रिहा छा, भुल रहे ना राईआ। मँझधार बेड़ा कलिजुग कूड़ा रिहा रुढ़ा, बन्ने ना कोई पार वखाईआ। सो पुरख निरँजण जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। हरि पुरख निरँजण गुरसिखां अन्दर डेरा ला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। बाल अञ्याणे लए उठा, बिरध जवान ना कोए वखाईआ। कालख टिक्का मस्तक देवे लाह, जो जन आए सरनाईआ। निथाव्याँ देवणहारा साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। सचखण्ड बैठा आसण ला, थिर घर दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण देवे वर, हरि पुरख निरँजण रिहा सलाहीआ। सो पुरख वर वर दाता, आपणी झोली आप भरांयदा। हरि पुरख निरँजण सर्ब ज्ञाता, अन्तरजामी नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणी गाथा, आप आपणा नाउँ सुणांयदा। आदि जुगादी चलाए राथा, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। सदा सुहेला वसे साथा, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरबान, आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण

फड़ निशान, थिर घर बैठा आप उठाईआ। कलिजुग वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सच ना दिसे कोए दुकान, चौदां लोक होए हल्काईआ। चौदां तबक होए वैरान, साचा कलमा ना कोए पढ़ाईआ। साधां सन्तां अन्दर बीआबान, सिम्बल रुख रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होया निगहबान आपे वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण मार झात, लोकमात वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण इक्क अकांत, एका रंग समांयदा। सो पुरख निरँजण मेटणहारा अन्धेरी रात, हरि पुरख निरँजण साचा चन्द चढ़ांयदा। जन भगतां देवे साची दात, एका वंडण नाम वंडांयदा। आपणी जणाए आपे गाथ, आपणा मन्त्र आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवाना, आपणी कल वरतांयदा। हरि पुरख निरँजण जोद्धा सूर बली बलवाना, आपणा बल धरांयदा। प्रगट होवे वाली दो जहानां, लोकमात वेस वटांयदा। हरि का रूप ना किसे पछाणा, नेत्र नैण दिस ना आंयदा। रख्या नाउँ श्री भगवाना, निहकलंक आप हो जांयदा। साचा चिल्ला तीर कमाना, गोबिन्द हथ्थ रखांयदा। त्रै लोकां मारे इक्क निशाना, चौदां लोकां जड़ उखड़ांयदा। रवि ससि होइण हैराना, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द धीर ना कोए धरांयदा। वेखणहारा जुग जुग निशाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। जन भगतां उप्पर होए मेहरवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। चरन दुआर बख्शे साचा माना, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। बिन गुरसिख ना जाणे कोए हरि का भाणा, भरम भुलेखे सगल सृष्ट भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण नर हरि, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, लोकमात ना दिसे कोई पंज तत्त निशान, निरगुण देवे निरगुण दान, सरगुण मेल जगत जहान, आउँदा जांदा पान्धी राही पन्थ मार्ग दिस किसे ना आंयदा।

११८०
०८

✪ १६ कत्तक २०१६ बिक्रमी गज्जण सिँघ दे घर पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

आदि पुरख निरँजण हरि भगवान, पारब्रह्म पुरख सुल्तानया। खेले खेल वाली दो जहान, निरगुण जोत नूर महानया। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, थिर घर साचा इक्क सुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घर होए प्रधानया। सति पुरख निरँजण एकँकार, आदि जुगादि समाईआ। पुरख निरँजण हो त्यार, भेव कोए ना पाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर दिस ना आईआ। निरगुण जोत कमलापाती कर उज्यार, आप आपणा डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल खिलंता, एका

रंग समांयदा। सो पुरख निरँजण दीप जगंता, सच घर प्रकाश करांयदा। हरि पुरख निरँजण वेख वखंता, आप आपणा नैण खुल्हांयदा। सो पुरख निरँजण सोभावन्ता, हरि भगवन्ता नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरि पुरख निरँजण एकँकार, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण जोत उज्यार, अजूनी रहित भेव ना राया। हरि पुरख निरँजण आप आपणा बणे मीत मुरार, दूसर संग ना कोए रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाया। हरि पुरख निरँजण हरि मन्दिर वस्सया, पारब्रह्म करतार। सो पुरख निरँजण मार्ग आपणा आप दस्सया, आप आपणी किरपा धार। हरि पुरख निरँजण दर घर साचे बहि बहि आपे हस्सया, खेले खेल खेलणहार। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादी निराकार आपे फिरे नस्सया, सेवक होए सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, खेले खेल गुर गोपाला, हरि पुरख निरँजण नाउँ रखांयदा। हरि पुरख निरँजण इक, एका एक अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण ना मरे ना पए जम्म, जूनी जून ना कोए भवाईआ। हरि पुरख निरँजण ना कोई पवण स्वासी ल्ए दम, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। हरि पुरख निरँजण ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, चिन्ता सोग ना कोए रखाईआ। सो पुरख निरँजण आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। हरि पुरख निरँजण आपे जनणी जणे जन, आपणी गोद सुहाईआ। सो पुरख निरँजण दर घर साचे जाए मन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर हरि सुहञ्जणा, एका रंग रंगाया। जगे जोत आदि निरँजणा, दीपक बाती डगमगाया। पुरख अबिनाशी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, पारब्रह्म अबिनाशी करता बैठा आसण लाया। आदि जुगादी साचा सज्जणा, विछड़ कदे ना जाया। ना घड़या ना भज्जणा, ना कोई रूप वटाया। आपे रक्खे आपणी लज्जणा, समरथ पुरख वड वड्याआ। हरि पुरख निरँजण आपणे मन्दिर साचे घर बहि बहि आपे गज्जणा, आप आपणा नाअरा लाया। सो पुरख निरँजण शाहो भूप वड राजन राजणा, शाह सुल्तान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सुहञ्जणा इक्क वखाया। सच घर सुहञ्जणा हरि निरँकार, आपणा आप उपाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यार, सचखण्ड बैठा जोत जगाईआ। निराकार निराधार निरवैर रूप अपर अपार, सति सरूप आप अख्वाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपे बैठा हो त्यार, चोबदार ना कोए जणाईआ। ना कोई मन्दिर चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोए खण्डा ना कोए कटार, शमशीर ना कोए खिचाईआ। राज मन्त्री ना पावे सार, बिरध बाल ना कोए रखाईआ। शाह कंगाल ना कोए सिक्दार, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, सो पुरख निरँजण देवे दान, घर साचे वज्जे वधाईआ। घर साचा हरि उपाया, पारब्रह्म करतार। आपणी रुतड़ी आप सुहाया, आपे वेखणहार। आपणा रंग आप रंगाया, रंग रंगीला अपर अपार। छैल छबीला आपे बण के आया, निरगुण जोत कर उज्यार। सच वसीला इक्क वखाया, हरि आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच करे पसार। घर विच घर घर त्यार, हरि पुरख निरँजण आप उपजांयदा। घर घर विच मन्दिर कर त्यार, सो पुरख निरँजण आप वसांयदा। घर विच घर खेल अपार, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। घर विच घर सोहे बंक दुआर, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। बण विचोला एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। घर विच घर सचखण्ड दरबारा, हरि साचा आप सुहाईआ। घर विच घर घर थिर घर कर उज्यारा, दीपक जोत करे रुशनाईआ। घर विच घर सोहे साचा लाड़ा, सो पुरख निरँजण हरि पुरख बेपरवाहीअ। घर विच घर सखीआं लाया अखाड़ा, हरि पुरख निरँजण सगन मनाईआ। एकँकारा खेल अपारा, निराकार आप कराईआ। आपणे मन्दिर पावे सारा, दूसर कोए दिस ना आईआ।
११८२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा हड मास नाड़ी ना दिसे चमड़ा, घर बैठा जोत जगाईआ। ११८२
जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला वड वड्याआ। खेल निराला अवल्लड़ी चाला, भेव किसे ना आया। बण दलाला होए रखवाला, आप आपणा वेस धराया। आपणा मन्दिर आपे भाला, आपे दसे राह सुखाला, आपणा डण्डा आपे लाया। आपे फल फुल होए फुल डाला, फुल फुलवाड़ी आप महिकाया। आपे होए सर सरोवर ताला, अमृत जाम आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा सगन मनाया। सचखण्ड निवासी हरि पुरख, हरि हरि आप करांयदा। थिर घर वासी सो पुरख, घर साचे सोभा पांयदा। आपणा आप आपे लए परख, आपणी घसवटी आपे लांयदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोई जणांयदा। आपणे उप्पर आपे खाधा तरस, आप आपणी दया कमांयदा। आपणी मेटे आपे हरस, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निरगुण नाउँ रखांयदा। निरगुण सो पुरख निरँजण दाता, हरि पुरख निरँजण निरगुण रूप वटाईआ। आपे जाणे आपणी गाथा, आपणी रचना आप रचाईआ। सर्ब कला हरिजन समराथा, समरथ पुरख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मेला सहिज सुभाईआ। दर घर मेला परम पुरख, आपणा आप कराया। आपणा मेघ आपे बरस, आपे तृखा बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप उपजाया। सो पुरख निरँजण करनेहारा, करनी

किरत कमांयदा। हरि पुरख निरँजण पावणहारा सारा, आप आपणा बिरध धरांयदा। एकँकारा निराधारा, जोती जोत डगमगांयदा। पारब्रह्म रूप अपर अपारा, आप आपणा वेस वटांयदा। आदि निरँजण खेल न्यारा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। सो पुरख निरजंण रचन रचाए, विष्न ब्रह्मा शिव उपजाईआ। हरि पुरख निरँजण सेव कमाए, वड दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा हुक्म चलाए, थिर घर बैठा आसण लाईआ। आदि निरँजण जोत जगाए, जोत निरँजण वंड वंडाईआ। श्री भगवान अमृत जाम प्याए, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म रूप वटाए, घट घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। सो पुरख निरँजण साचा मीता, ब्रह्मा विष्न शिव रहे ध्याईआ। हरि पुरख निरजंण बैठा रहे इक्क अतीता, दर घर साचे जोत जगाईआ। एकँकारा आप चलाए आपणी रीता, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि निरँजण ठांडा सीता, सांतक सति सति कराईआ। श्री भगवान वस्सया चीता, घर मन्दिर सोभा पाईआ। पारब्रह्म होए पुनीता, ना पतित कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सर्ब जीआं दाता, एका एक अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क अकांता, दर घर सोभा पांयदा। एकँकारा चलाए आप आपणी गाथा, आपणा शब्द उपांयदा। आदि निरजंण देवे साथा, सगला संग निभांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे खेल तमाशा, लक्ख चुरासी अन्दर डेरा लांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर निवासा, निज आत्म रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, एका रंग समाईआ। हरि पुरख निरँजण बैठा चोटी चढ़ अख़ीर, दिस किसे ना आईआ। एकँकारा वड पीरन पीर, सतिगुर साचा नाउँ धराईआ। आदि निरँजण कट्टणहारा भीड़, हरिजन साचे लए उठाईआ। अबिनाशी करता बस्त्र पहनाए साचे चीर, शब्द गहिणा तन पहनाईआ। पारब्रह्म प्रभ बख्शे साचा सीर, एका जाम मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या आप समझाईआ। सो पुरख निरजंण दानी दाना, देवणहार अख्वाया। हरि पुरख निरँजण हरि मेहरबाना, आप आपणे रंग रंगाया। एकँकारा वड बलवाना, बल धारी भेव ना राया। आदि निरँजण सच निशाना, दो जहानां आप चलाया। अबिनाशी करता रक्खे माणा, माण निमाणयां गले लगाया। पारब्रह्म हो प्रधाना, पंज तत्त डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। सो पुरख निरँजण साची धार, लक्ख चुरासी आप टिकाईआ। हरि पुरख निरँजण करे जोत उज्यार, दीवा बाती इक्क जगाईआ। एकँकारा दए अधार, शब्द अगम्मी आप सुणाईआ। आदि निरँजण कर उज्यार, जोत निरँजण करे

रुशनाईआ। श्री भगवान ख़बरदार, सगला संग निभाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार, आपणी सोभा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण त्रैगुण दाता, लोकमात वंड वंडाईआ। हरि पुरख निरँजण पंचम बन्ने साचा नाता, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाईआ। एकँकारा चलाए साचा राथा, रथ रथवाही दिस ना आईआ। आदि निरँजण पूजा पाठा, आपणी करे पढ़ाईआ। श्री भगवान तीर्थ ताटा, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क पछाता, ब्रह्म रूप आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। सो पुरख निरँजण सदा उरधारी, ऊर्ध कँवल प्रकाशया। हरि पुरख निरँजण किरपा धारी, देवे नाम शब्द धरवास्सया। एकँकारा पावे सारी, हरि सज्जण शाहो शबास्सया। आदि निरँजण चढ़े ख़ुमारी, सगला भउ निवास्सया। पुरख अबिनाशी दए अधारी, चरन कँवल इक्क भरवास्सया। पारब्रह्म प्रभ ब्रह्म वेख विचारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पावे आपणी रास्सया। सो पुरख निरँजण त्रैगुण तत्त पंच, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाया। एकँकारा जाणे गथ, आदि निरजंण राग अलाया। अबिनाशी करता हो प्रतक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म दए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। सो पुरख निरँजण विष्न आकार, निराकार रूप वटांयदा। हरि पुरख निरँजण ब्रह्मा धार, कँवला कँवला फुल खिलांयदा। एकँकारा वेखणहार धूंआँधार, शंकर शाह बणांयदा। आदि निरँजण दए सहार, घर घर जोत टिकांयदा। अबिनाशी करता कर पसार, आपणे अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म जणांयदा। सो पुरख निरँजण शब्द जणाई, विष्नूं विश्व उठाया। हरि पुरख निरँजण कर कुड़माई, ब्रह्मा मेल मिलाया। एकँकारा दए वधाई, सचखण्ड बैठा आसण लाया। आदि निरँजण मंगे चाँईं चाँईं, घर साचा इक्क सुहाया। श्री भगवान पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, शंकर नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वासी आपणा खेल खिलाया। थिर घर वसेरा सो पुरख अनादी, नादी ताल वजांयदा। सचखण्ड डेरा हरि पुरख निरँजण बणया बाढी, आपणी रचना आप रचांयदा। एकँकारा साचा गाडी, साचा हुक्म सुणांयदा। आदि निरँजण लडाए लाडी, दिस किसे ना आंयदा। श्री भगवान ना भुल्ले आपणी वादी, आपणी रचना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा सांग वरतांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवन्त, अन्त आदि ना कोए जणाईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। एकँकारा ना कोई बणाए बणत, ना कोए वेस वटाईआ। आदि निरँजण बण बण कन्त, आपणी सेज आप हंढाईआ। श्री भगवान आपे जाणे आपणा मंत, आपे दए उपजाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाईआ। सो पुरख निरँजण लए अंगड़ाई, आपणा बिरध धरांयदा। हरि पुरख निरजंण कर कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। एकँकार लेख लखाई, सच महल्ला सोभा पांयदा। आदि निरँजण गाए शनवाई, आपणा ढोला आप अलूांयदा। श्री भगवान वेखे चाँईं चाँईं, आप आपणा नैण खुलूांयदा। दूसर कोए दिसे नाही, ना कोई संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सो पुरख निरजंण किरपा धार, आपणा रंग रंगाया। हरि पुरख निरँजण कर पसार, थिर घर साचे मेल मिलाया। आदि निरँजण उठ उठ करे प्यार, आपणे गले लगाया। अबिनाशी करता अध विचकार, बैठा दीप जगाया। श्री भगवान पावे सार, आप आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंडण आप वंडाया। सो पुरख निरँजण वंडे वंड, हरि पुरख निरँजण दया कमाईआ। आदि निरँजण खोले गंढ, श्री भगवान आप खुलूाईआ। पारब्रह्म आपणी रचना रच ब्रह्मण्ड, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा सच दरवाज़ा खोल, हरि पुरख निरँजण वेस वटांयदा। सो पुरख निरँजण अन्दर पए बोल, आपणा जैकारा आपे लांयदा। आदि निरँजण बैठा कोल, आपणा ध्यान लगांयदा। अबिनाशी करता रिहा मौल, रूप रंग ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म बैठ अडोल, आपणा ध्यान आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसेरा बिन हरि अवर ना दिसे कोए, घर साचा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड प्रकाश पुरख अबिनाश, सो पुरख निरँजण जोत जगाईआ। हरि पुरख निरँजण ना जाए विनास, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। एकँकारा पावे रास, आपणी महिमा आप गणाईआ। आदि निरँजण कर निवास, बैठा डेरा लाईआ। श्री भगवान शाहो शाबास, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। पारब्रह्म आपणी पूरी करे आपे आस, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। पारब्रह्म प्रभ मंगे भिच्छया, आपणे अग्गे आपणी झोली डाहीआ। श्री भगवान करे रच्छया, आप आपणी दया कमाईआ। आदि निरँजण लेखा लिख्या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एकँकारा किसे ना दिस्सया, ना कोई लोचण दर्शन पाईआ। हरि पुरख निरँजण वंडाया हिस्सया, आप आपणी वंड कराईआ। सो पुरख निरँजण देवे साची सिख्या, भुल्ल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आपे वर, आपे हुक्म चलाईआ। सो पुरख निरँजण हुक्म चलाया, एका एक सुणांयदा। हरि पुरख निरँजण सीस निवाया, घर साचे ख़ुशी वखांयदा। एकँकारा वेखण आया, आप आपणा दर सुहांयदा। आदि निरँजण नैण शरमाया, अक्ख ना कोए उठांयदा। अबिनाशी करता इक्क ध्यान लगाया, श्री भगवान संग रलांयदा। पारब्रह्म तेरी मनसा पूरी दए कराया, सो पुरख

निरँजण आप समझांयदा। सच वस्त तेरी झोली पाया, सुत्त दुलारा इक्क उपजांयदा। हरि पुरख निरँजण गोद उठाया, एकँकारा सीर प्यांअदा। आदि निरँजण आपणी भुजां चुक उठाया, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। श्री भगवान बांहों पकड़ उंगली लाया, पारब्रह्म तेरे अग्गे आप फिरांयदा। तेरी इच्छया रहे ना राया, तेरी आसा सर्ब मिटांयदा। तेरा पूत सपूता आप उपजाया, शब्दी नाउँ धरांयदा। शब्द सुत्त उठ उठ दर्शन पाया, पारब्रह्म नज़री आंयदा। पारब्रह्म सच राह वखाया, श्री भगवान वेख वखांयदा। श्री भगवान दए जणाया, आदि निरँजण मेल मिलांयदा। आदि निरँजण एका धाम वखाया, एकँकारा सोभा पांयदा। एकँकारा दे मति रिहा समझाया साचे सुत्त दुलार, बिन हरि पुरख तेरा कोए ना होए सहाया। हरि पुरख बोल जैकार, सो पुरख निरँजण अग्गे सीस निवाया। सो पुरख निरँजण किरपा धार, बाल अञ्याणे आपणी गोद बिठाया। साचे सुत्त करे प्यार, शब्द शब्दी गले लगाया। बांहों फड़ दए हुलार, हरि पुरख निरँजण नाल मिलाया। हरि पुरख निरँजण एकँकार, सरन सरनाई देवे वाड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एकँकार एकँकारा आदि निरँजण मिलाए मीत मुरार, दिवस रैण करे रुशनाया। आदि निरँजण होया ख़बरदार, आप आपणा भेव खुल्ह्राया। अबिनाशी करता बन्ह्ने धार, दूसर कोए ना संग रलाया।
११८६ अबिनाशी करता होया ख़बरदार, सुत्त दुलारे करे प्यार, श्री भगवान झोली पाया। श्री भगवान देवे दान, पारब्रह्म बख्शी ११८६
०८ सच्ची सरनाया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, शब्दी रिहा हुक्म सुणाया। तेरा करे तेरी कार, तेरा तेरे रंग समाया। तेरा खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना पाया। तूं जोद्धा सूरबीर बलकार, सिर तेरे हथ्थ टिकाया। तेरी रचना वेखे आप करतार, रचनहार आप हो जाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाया। गगन मण्डल दए आधार, आप आपणी धार बंधाया। रवि ससि कर त्यार, पारब्रह्म हुक्म सुणाया। श्री भगवान होए उज्यार, आदि निरँजण देवे जोत जगाया। एकँकारा करे कार, आप आपणी कुदरत वेख वखाया। हरि पुरख निरँजण सेवादार, घर साचे साची सेव कमाया। सो पुरख निरँजण अगम्म अपार, ऊँचो ऊँच नाम धराया। तेरा नाता जोड़े आप निरँकार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। तेरा रूप धरे विच संसार, ब्रह्मा वेता ल्ए उठाया। पारब्रह्म बिन्द आपणे विच्चों उपजे बाहर, मात पित ना कोए बणाया। गुणी गहिंद खेल न्यार, सागर सिन्ध इक्क वखाया। विष्नूं वंसी कर प्यार, आपणा वंस सुहाया। नाभी कँवला खिल गुलज़ार, फुल फलवाड़ी आप महिकाया। आपणी वंड वंडे गिरधार, पारब्रह्म ब्रह्म अंग कटाया। ब्रह्मा उपज्या विच संसार, हरि पुरख निरँजण लेख लिखाया। शब्द सुत्त तेरी साची धार, ब्रह्मे अन्दर दए वखाया। तेरा रूप कर प्रधान, सच निशान दए गडाया। हँ ब्रह्म गुण निधान, गुणवन्ता इक्क वखाया। सो पुरख निरँजण दित्ता दान, जीआ दान झोली पाया। सोहँ शब्द ना सके

कोई पछान, इक्क अकाल दीन दयाल एकँकार निराधार, सति सरूप शाहो भूप अन रंग रूप हँ ब्रह्म पारब्रह्म घर गया जम्म, ना कोई तृष्ना ना कोई तम, ना कोई पवण स्वासी ना कोई दम, ना कोई नेत्र नीर ना रोवे छम्म छम्म, निरगुण धारा हो उज्यार, हरि निरँकार आपणा नाउँ रखाया। सो पुरख निरँजण वड बलकार, एका एक एक पुरख अबिनास्सया। पारब्रह्म प्रभ बोल जैकार, आपणे मण्डल पाए रास्सया। निरगुण अन्दर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, निरगुण खेले खेल तमास्सया। निरगुण कन्त निरगुण भतार, निरगुण नारी सता करे प्यार, निरगुण भोगी भोग भोगन्तया। निरगुण महल्ल निरगुण अटार, निरगुण दीवा निरगुण बाती, निरगुण कमला वसे पाती, निरगुण करे उज्यार, निरगुण सेव कमन्तया। निरगुण मन्दिर निरगुण अन्दर निरगुण कन्दर, निरगुण आपे खोज खुजन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकार आदि जुगादि खेल अपार, आप आपणा खेल खिलन्तया। सो पुरख निरँजण हरि भगवाना, एका रंग समांयदा। आपणा देवे आपणा दान, दाता दानी नाउँ धरांयदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। थिर घर झुलाए इक्क निशाना, सति सतिवादी आपणे हथ्थ उठांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, आप आपणा बल धरांयदा। शाहो भूप सच सुल्ताना, तख्त निवासी डेरा लांयदा। आपणा वेस आप वटाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। विष्न ब्रह्मा कर

प्रधाना, साचा हुक्म सुणांयदा। आपणा बद्धा आपे गाना, आपे सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवन्त, आपणी दया कमांयदा। आप बणाई आपणी बणत, पारब्रह्म वंड वंडांयदा। थिर घर होए सोभावन्त, घर साचे आप सुहांयदा। एका देवे साचा मंत, साचा शब्द सुणांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव कोए ना पांयदा। दर घर साचे बणी बणत, आप आपणा अंग कटांयदा। लक्ख चुरासी उपाए जीव जन्त, जीव आत्म आप अख्वांयदा। आपे हँ ब्रह्म होए साध सन्त, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ आपणा नाम धरांयदा। सो पुरख निरँजण एकँकार, आदि जुगादि समाया। सृष्ट सबाई कर त्यार, हँ ब्रह्म वंड वंडाया। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, घर घर दीपक रिहा जगाया। हँ ब्रह्म करे प्यार, शब्द अनादी राग सुणाया। मन्दिर अन्दर कर प्यार, घर घर विच दए टिकाया। भुल्ल ना जाए विच संसार, बंस बंसा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द दए वड्याआ। सोहँ शब्द हरि भण्डारा, सो पुरख निरँजण आप वरताया। हरि पुरख निरँजण बणया सेवादारा, साची सेव कमाया। एकँकारा भेव न्यारा, निरगुण आपे वेख वखाया। आदि निरँजण घड़न भन्नणहारा, आपे भन्न वखाया। पुरख अबिनाशी निराकारा, निर्धन आपणा नाउँ धराया। श्री भगवान सांझा यारा,

११८७ ०८

सच कुदरत विच टिकाया। पारब्रह्म खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा कुण्डा आपे लाहया। एका नाम सच भण्डारा, सृष्ट सबाई आप वरताया। सो पुरख निरँजण एका रूप मीत मुरारा, दूजी कुदरत हँ साचा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घाड़न आपे घड़, आपणे मन्दिर आपे चढ़, आपे वेख वखाया। सो पुरख निरँजण तेरी सार, तेरा भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण तेरे अग्गे बणे भिखार, विष्नूं निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एकँकारा तेरा वड भण्डार, आदि जुगादि वरतांयदा। आदि निरँजण खेल न्यार, ब्रह्मा वेता राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी निराकार, घर घर दीवा बाती आप जगांयदा। श्री भगवान ठंडा ठार, ठाकर अबिनाशी आप अख्वांयदा। पारब्रह्म कर विचार, ब्रह्म मेला मेल मिलांयदा। हँ रूप सर्ब संसार, गुर पीर अवतार पंज तत्त जो रखांयदा। सो पुरख निरँजण सभ तों वस्सया बाहर, आपणी कला आप जणांयदा। निरगुण जोत दए आधार, आदि निरँजण नाल रलांयदा। जोत निरँजण तेरी सुण पुकार, तेरा सगला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, आदि जुगादि ना सके कोई फड़, हत्थ किसे ना आंयदा। पारब्रह्म किसे ना फड़या, हत्थो हत्थ ना कोए वखाईआ। श्री भगवान आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणा मार्ग आपे लाईआ। अबिनाशी करता राह विच ना किते अड़या, ना कोई देवे बन्द कराईआ। आदि निरँजण अग्नी हवन कदे ना सड़या, निरगुण जोत डगमगाईआ। एकँकार ना भन्नया ना किसे घड़या, समरथ हत्थ वड वड्याईआ। पुरख निरँजण आपणे दर दुआरे अग्गे खड़या, थिर घर साचे सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आपणा अक्खर आपे पढ़या, ना दूसर करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म लक्ख चुरासी जीव आत्म बन्हाए आपणे लड़या, ईश रूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वजाए सच वधाईआ। निरगुण ढोल मृदंग, सो पुरख निरँजण आप वजांयदा। हरि पुरख निरँजण चढ़या रंग, इकउँकारा वेख वखांयदा। आदि निरँजण मंगे मंग, अबिनाशी करता झोली डांहयदा। श्री भगवान सूरा सरबंग, आपणा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रगट हो विच ब्रह्मण्ड, आपणी रचना आप रचांयदा। हँ ब्रह्म नव खण्ड, सत्त दीप गगन पाताल पृथ्मी आकाश मण्डल मण्डप ज़िमी अस्मान हो मेहरवान देवे वंड, आपणी दया आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मण्डल आपणी रास आपे हरि रचांयदा। रास मण्डल हरि भगवान, घर साचे आप रचाईआ। सो पुरख निरँजण बण बण काहन, हरि पुरख निरँजण साचा तिलक सीस लगाईआ। एकँकारा अगम्म अगम्मड़ा नौजवान, आपणीआं सखीआं वेख वखाईआ। आदि निरँजण गाए गाण, पुरख अबिनाशी ताल वजाईआ। श्री भगवान हत्थ

फड़ मसाल, पारब्रह्म रिहा नचाईआ। हँ ब्रह्म चरनी डिग्गण आण, दोए जोड़ पड़न सरनाईआ। सोहँ शब्द नौजवान, ना मरे ना जाईआ। भेव ना पाए कोए जीव जहान, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाण, नेत्र नैण रहे उठाईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, हरि भगवान सचखण्ड निवासीआ। पुरख अबिनाशी शाहो सबासा, बैठा आसण लाईआ। वेखणहारा खेल तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड रवि ससि पावे रासा, आप आपणी रचन रचाईआ। हँ ब्रह्म देवे इक्क भरवासा, सो पुरख निरँजण वड रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोए रूप आप हो जाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, हरि पुरख निरँजण आप रखाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण रूप, हरि पुरख निरँजण आप रखाईआ। एकँकारा वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। आदि निरँजण जाए तुठ, आप आपणे रंग रंगाईआ। अबिनाशी करता अमृत जाम देवे घुट्ट, भर प्याला आप प्याईआ। श्री भगवान बख्शे एका नाम मिठ, सच वस्त झोली पाईआ। पारब्रह्म घर पए लुट्ट, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आप लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण रंग, हरि साचा आप रंगांयदा। सरगुण मंगे आपणी मंग, हँ ब्रह्म नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी काची वंग, भाण्डे आप घड़ांयदा। शब्द घोड़ा लए तुरंग, हरि साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि,
११८६ आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त पंज तत्त आकार निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ांयदा। रक्त बूंद कर ११८६
०८ प्यार, हड्ड मास नाड़ी वेख वखांयदा। नक्क मूंह हथ्थ कर त्यार, नेत्र नैण डगमगांयदा। गुदा लिंग बन्ने धार, दोए ०८
दोए पाउँ आप चलांयदा। अंग अंग अंगी करे कार, रसना जेहवा आप चलांयदा। बत्ती दन्द कर शृंगार, साचा ग्राम वसांयदा। सरवण सुणे आपणी कार, आपे खेल खिलांयदा। आपणीआं भुजां वेख विचार, चतुर्भुज वेस वटांयदा। पंज दस बीस कर प्यार, पैर हथ्थ मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ बणाए तेरा दर, नौ दुआरे खोल्ह खुल्हांयदा। नौ दुआरे दरवाजा आपे खोल्ह, साची बणत बणांयदा। सो पुरख निरँजण खाली रक्खया काया ढोल, हरिजन अवर ना कोए वजांयदा। पंज तत्त ब्रह्मे तोल्लया आपणा तोल, आपणा कंडा आप उठांयदा। सच वस्त ना दिसी कोल, प्रभ अग्गे सीस निवांयदा। वुह वस्त हरि नाम अनमोल, तुध बिन कोए ना खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी अग्गों शब्द अगम्मी कहिंदा बोल, मेरा भाणा भेव कोए ना पांयदा। एका वस्त देवां अडोल, तेरे हथ्थ फड़ांयदा। मन मति बुध पहले वसाउँणी काया चोल, निरगुण आपणी वंड वंडांयदा। साढे तिन्न हथ्थ अन्तिम रहिणा पोल, पृथ्मी आकाश आप सुहांयदा। आपणी किरती प्रकृति आपे जाए मौल, आप आपणा वेख वखांयदा। पहले अन्दर उलटा करे नाभ कँवल, अमृत आपणा

आप भरांयदा। घर विच घर रचाए साचा धवल, धवल रूप दिस ना आंयदा। आत्म रूप हो जाए मवल, ब्रह्मा आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी अंस उपजांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म साची अंस, आपणी आप उपजाईआ। विष्नूं राखा बणया सर्ब सरबंस, देवे रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा वेता बणया मंगत, मंगे भिच्छया झोली डाहीआ। शिव शंकर अन्तिम चाढ़े रंगत, नित चोला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता साचा वर, मन मति बुध जीव आत्म नाल रलाईआ। निरगुण वस्त अन्दर धर, हरि साचा वेख वखांयदा। ब्रह्मा सरनी गया पड़, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। दोए जोड़ निमस्कार कर, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सृष्ट सबाई दित्ती कर, लक्ख चुरासी गेड़ा तोल तुलांयदा। तेरे अन्दरों निकले तेरे अन्दर जाण वड़, मेरा कारज सिद्ध ना आंयदा। कौण गुण ल्यावां फड़, साची हिकमत कौण सलांहयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। ब्रह्मे मूल ना डर, साची बिध आप अख्वांयदा। पंच वकारा बन्न्हावां तेरे लड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलांयदा। आसा तृष्ना फड़ाए लड़, पल्लू फेर ना कोए छुडांयदा। हउमे हँगत बणे गढ़, दिस किसे ना आंयदा। जूठ झूठ वेखे खड़, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। भाग लगाए काया धड़, पंज तत्त विच मिलांयदा। ना कोई पुरख ना नारी नर, नर रूप रंग ना कोए जणांयदा। रत्ती रत्त रत्त विच जायण रल, रक्त बूंद विच समांयदा। बिन हरि कोए ना सके फड़, आपणी रचना तोहे समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्मा वेता सुण शब्द जैकार, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी लक्ख चुरासी तेरा परिवार, हउँ सेवक सेव कमांयदा। तेरा घर तेरा दरबार, तूं मालक सर्ब अख्वांयदा। तूं ख़ालक तेरी ख़लक करां त्यार, मखलूक, तेरे रंग रंगांयदा। तूं आशिक तेरी माशूक करे तेरा प्यार, तेरा तेरा राह तकांयदा। तूं काहन बण वणजार, जगत हट्ट जीव खुल्हांयदा। तेरा भाण्डा मैं घुमिआर, काची माटी आप लगांयदा। सो पुरख निरँजण बणया तूं ठठयार, आपणी हथ्थीं वेख वखांयदा। तन बस्त्र करे सच शृंगार, माटी चाम गहिणा इक्क हंढांयदा। ना कोई घड़े होर संसार, किसे हट्ट ना कोए विकांयदा। आपणी विद्या कर उज्यार, तेरा नाउँ पढ़ांयदा। तेरा शब्द मेरा प्यार, तेरा हँ मेरा संग रखांयदा। तेरा मृदंग मेरी किंग सितार, जीव जन्त अन्दर मन्दिर आप सुणांयदा। तेरा छन्द मैं सारंगधार, आपणा गीत आप अल्हांयदा। तूं दाता दातार कोए करे विचार, तेरा रंग मोहे भांयदा। तूं साहिब सुल्तान सच्ची सरकार, दर दरबान मैं अख्वांयदा। तेरा हुक्म धुर फ़रमान, लक्ख चुरासी मैं सुणांयदा। पारब्रह्म तेरी एका आण, हउँ निउँ निउँ सीस झुकांयदा। लोआं पुरीआं बिन तेरे चुक्के ना किसे कान, ब्रह्मा विष्न शिव

तेरे चरन ध्यान रखांयदा। तेरी ओट रक्खण रवि ससि सूरज चन्न भान, मण्डल मण्डप वेख वखांयदा। तेरा मन्दिर जगत मकान, फनाह रूप मैं जणांयदा। तेरा हुक्म सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा वेता मुख सलांहयदा। पुरख अबिनाशी दए सहार, ब्रह्मे आख सुणाया। तेरा बंक तेरा दुआर, लक्ख चुरासी गढ़ बणाया। तेरी वंड ब्रह्मण्ड सर्ब संसार, नौ खण्ड तेरी झोली पाया। जेरज अंड तेरा भण्डार, उत्भुज सेत्ज नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वस्त अनमोल पुरख अबिनाशी आपणे कंडे तोल, सो पुरख निरँजण इक्क जैकारा बोल, हँ रूप एका दरसाया। सो पुरख निरँजण हरि भगवन्त, परम पुरख अख्वांयदा। हँ रूप जीव जन्त, लोकमात आप उपजांयदा। नौ दस ग्यारां बीस तीस, लक्ख चार जूनी नाल रलांयदा। सृष्ट सबाई इक्क हदीस, पुरीआं लोआं हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार अकल कला कल पसार, आपे वेख वखांयदा। वेखणहार पुरख समरथ, वड वड्डी वड्याईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही भेव ना राईआ। जुगा जुगन्तर पावे नथ्थ, जुग करता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार सृष्ट सबाईआ।

११६१ ११६१

०८ ०८

निरगुण सरगुण जोत जगाए, भगतां देवे ब्रह्म ज्ञाना। हँकारी दुष्टां मेट मिटाए, मारे तीर निशाना। ग़रीब निमाणे गले लगाए, देवे माण निमाणा। फड़ फड़ कागों हँस बणाए, जो जन रक्खे चरन ध्याना। अमृत साचा जाम प्याए, हउमे रोग मिटाना। घर विच दीपक इक्क जगाए, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाना। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाए, दूई द्वैती पर्दा लाहणा। आत्म सेजा आप वछाए, फूलन बरखा लाना। गुरमुख नारी हरि शब्द कन्त प्रनाए, अंगीकार करे परवाना। धुन अनादी राग सुणाए, अनहद ताल महाना। कूड़ा कपड़ तनो लाहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल वाली दो जहानां। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराना, रामा कृष्ना वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी बद्धा गाना, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। खेले खेल विच जहाना, वरभण्डी वेखे खेल जेरज अंडी मारे इक्क निशाना, नाम तीर इक्क चलाईआ। लेखा जाणे गोपी कान्हा, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, ईसा मूसा करी कुड़माईआ। चार यारी वेख वखाना, संग मुहम्मद वज्जे वधाईआ। अल्ला राणी गाए तराना, एका नाअरा लाईआ। एका कलमा नबी आप पढ़ाना, एका राग सुणाईआ। अञ्जील कुराना खेल महाना, तीस बतीसा इक्क सुणाईआ। मुकामे हक्क नौजवाना, जल्वा नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे खेल महाना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ।

निरगुण जोत नानक निरँकार, आपणी आप जणाईआ। सचखण्ड मेला सच दुआर, दूसर दर ना कोए वखाईआ। नाम सति भर भण्डार, लोकमात सेव लगाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए जणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंगे एका धार, रंगणहार इक्क अख्वाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा पावे सार, आप आपणा वेस वटाईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, गऊ ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। अंगद किया अंगीकार, अमरदास राम मिलाईआ। रामदास हो उज्यार, सर अमृत दए भराईआ। गुर अर्जन साचा मीत मुरार, एका शब्द करे कुड़माईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, चार वरनां गया समझाईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, हरि गोबिन्द करे रुशनाईआ। हरिराए मेला विच संसार, हरिकृष्न वज्जी वधाईआ। गुर तेग बहादर साझा यार, आपणा भेटा सीस चढ़ाईआ। दस दस्मेसा ख़बरदार, पुरख़ अकाल आप कराईआ। सुत्त दुलारा कर त्यार, दे मति रिहा समझाईआ। कूड़ कुड़यारा कर खुआर, एका साचा डंक वजाईआ । जोद्धा सूर बली बलकार, लोकमात ल्ए अंगड़ाईआ। पंच प्यार कर त्यार, अमृत एका जाम प्याईआ। साचा खण्डा खिच कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। आप आपणा उत्तों वार, गुरसिखां नींह धराईआ। साचा खेल कर विच संसार, साची गया सिख समझाईआ। अन्तिम आउँणा दूजी वार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। नाल रलाए हरि करतार, करता पुरख संग निभाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठे आसण लाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ प्रचण्डा नाम कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। भेख पाखण्डा दए निवार, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वक्त सुहाउँणा, भेव कोए ना पांयदा। अबिनाशी करते आपणा भेव खुल्हाउँणा, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। निरगुण रूप डगमगाउँणा, जोती जामा वेस वटांयदा। शब्द अनादी डंक वजाउँणा, शाह सुल्ताना राज राजाना आप उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलाउँणा, सत्तां दीपां आप भवांयदा। गुरमुख सोया आप जगाउणा, घर घर दर दर जा जा दरस दिखांयदा। कलिजुग जीव फड़ फड़ कागों हँस बणाउँणा, सोहँ हँसा चोग चुगाउँणा, मानक मोती हथ्थ उठांयदा। हीरा रत्न जवाहर अमोलक, लाल रत्ती जड़त जड़ांयदा। पारब्रह्म सचखण्ड दुआर तेरी साची गोलक विच आप पाउँणा, दूजी वार बाहर ना कोए कढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ धराए निहकलंक, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। शब्द अगम्मी वज्जे डंक, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ। गुरसिख उधारे जिउँ जन जनक, जन जनणी लेखे लाईआ। सुहाए दुआर साचा बंक, जिस दुआरे आए दरस दिखाईआ। खेले खेले जुगां जुगन्त, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। हरिजन

बणाए तेरी बणत, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। प्रभ दर्शन को लोचन सन्त, मनमुख सुत्ते गूढ़ी नींद आपणी अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। होया विछोड़ा नार दुहागण साचे कन्त, विभचार करी कुड़माईआ। माया भरमे भुला जीव जन्त, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। बणया गढ़ हउमे हँगत, साची संगत ना मिली सरनाईआ। नौ दुआरे फिरदा नंगत, दसवां राह ना कोए वखाईआ। तन माया कप्पड़ भुक्खा नंगत, नाम दोशाला उप्पर कोए ना पाईआ। जूठ झूठ चढ़ी रंगत, मजीठी रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणे अंग लगाईआ। अंगीकार करे गुरदेव, गुरमुख सदा सलाहया। बिरथा जाए ना हरिजन सेव, सतिगुर पूरा लहिणा दए चुकाया। लेखे लाए रसना गाया जेहव, लक्ख चुरासी फंद कटाया। मेल मिलाए अलक्ख अभेव, विछड़ कदे ना जाया। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा वड देवी देव, एकउँकारा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धारा आप चलाया। निरगुण धार गुरसिख अन्दर, हरि सतिगुर आप चलांयदा। भाग लगाए पंज तत्त मन्दिर, दीपक नूर डगमगांयदा। वेखणहारा डूँघी कन्दर, डूँघी भँवरी फोल फोलांयदा। ढाए डेरा भरमां कंधड़, हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। शब्द सुणाए सुहागी छन्दड़, साचा ढोला आप अल्हांयदा। मनमुख जीव भागां मन्दड़, घर अन्दर हरि का रूप ना कोए पांयदा। मदिरा मासी पापी गन्दड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणे दर सुहांयदा। गुरमुख तेरा सच महल्ला, हरि सतिगुर आप वसाया। शब्द फड़ाया एका पल्ला कलिजुग नेत्र दिस किसे ना आया। तेरा मन्दिर साचा अन्दर, हरि साचे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अज्ञान अन्धेरा आप मिटाया। मिटया अज्ञान चुक्के अन्धेर, गुर सतिगुर दया कमाईआ। मिले माण दिसे सञ्झ सवेर, बिन रवि ससि होए रुशनाईआ। चुक्के काण वसे काया खेड़, खेवट खेटा मिल्या बेपरवाहीआ। पाया गुण निधान श्री भगवान, आवण जावण लक्ख चुरासी तुट्टी फाहीआ। अन्तिम देवे नाम बिबान, आपणी हथ्थीं लए चढ़ाईआ। दरगाह साची करे परवान, जोती जोत मेल मिलाईआ। झुलदा जाए इक्क निशान, हरि सतिगुर आप झुलाईआ। पवण पाणी तेरी सेव कमाण, ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाईआ। गण गंधर्ब गीत सुहागी गाण, किन्नर यच्छप ताल वजाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा होया आप मेहरवान, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जगत नाता जाए तुट्ट, जिस पाया सतिगुर दीन दयाल। अमृत पीवे साचा घुट्ट, माता कुक्ख उपजे साचा लाल। आवण जावण जाए छुट्ट, फल लग्गे काया डाल्ह। सतिगुर पूरा देवे नाम ख़ज़ाना अतुट, लोकमात सच्चा धन माल। हरि दर्शन नैण लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, पातशाह बण कंगाल। बिन हरि किरपा कोई ना चढ़े साची चोट, बिन सतिगुर दिसे ना

कोए दलाल। कलिजुग जीवां माया ममता तृष्ना भरी ना पोट, मायाधारी होए कंगाल। पुरख अबिनाशी घट घट अन्तिम वेखण आया खोट, निरगुण चली अवल्लड़ी चाल। गुरसिखां बख्शे चरन प्रीती एका ओट, लक्ख चुरासी विच्चों आपे भाल। आपणी गोद उठाए आलणिउँ डिगे बोट, नेड़ ना आए काल महांकाल। निरगुण चेला निरगुण मेला निरगुण गुर निरगुण सुर निरगुण शब्द निरगुण ताल निरगुण हरि निरगुण नूर जल्वा जलाल, निरगुण जोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन करे सदा प्रितपाल। प्रितपालक हरि भगवाना, अंग संग समाया। गुरसिखां बद्धे साचा गाना, एका तन्दन बंध बंधाया। तोड़े माण जगत अभिमाना, माया ममता रहे ना राया। देवे दरस गुण निधाना, निरगुण आपणा वेस वटाया। दरगाह साची साचे दर करे परवाना, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। कलिजुग जीव मारन ताना, गुरसिख पत्थर हिरदा अग्गे डाहया। पुरख अबिनाशी वरते आपणा भाणा, हरि भाणे सर्ब रखाया। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाया। गुरमुख होए मात प्रधाना, सतिजुग साची वंड वंडाया। मनमुख जीवां नैण शरमाणा, राए धर्म दए सज़ाया। लाड़ी मौत करे पछाना, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राए धर्म रिहा जगाया।

११६४
०८

११६४
०८

राए धर्म उठ बल धार, हरि सतिगुर पुरख सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम आई तेरी वार, तेरा लहिणा मूल चुकांयदा। लक्ख चुरासी कर विचार, पसू पंखी पंछी तेरे दर सुहांयदा। चारे खाणी खेल अपार, चौथे जुग वेस वटांयदा। हाणीआं हाणी विछड़े यार, नार कन्त ना कोए हंढांयदा। भैण भईया ना कोए प्यार, साचा सईया ना कोए जणांयदा। पिता पूत होए ख्वार, शाह सुल्तान लज पति ना कोए रखांयदा। चारों कुन्ट धूंआँधार, साचा चन्न ना कोए चढ़ांयदा। परमानंद ना दिसे विच संसार, निजानंद ना कोए समांयदा। कूड़ कुड़यारा करे हाहाकार, सति नाम भोजन कोए ना खांयदा। हरि हरि नाता तोड़ जीव गंवार, हरि का पौड़ा ना हथ्थ रखांयदा। पंज तत्त विकारा वासना वड़ खेले खेल बण हँकार, नर नरायण सर्ब भुलांयदा। मिल्या मेल ना मीत मुरार, जो तन मन धन आपणी वस्त जणांयदा। अन्तिम बाज़ी जाणी हार, थिर कोए रहिण ना पांयदा। लशकर घोड़ा दिसे ना कोए सवार, सीस छत्र ना कोए झुलांयदा। कंठ माला ना दिसे हार, साची मेंढी ना कोए गुंदांयदा। नेत्र नैणां जगत कज्जल धार, राम नाम ना कोए पांयदा। कामनी काम रंग रंगलीआं माणे विच संसार, साची सेज ना कोए सुहांयदा। रोग सोग चिन्ता दुःख भरया भण्डार, कलिजुग जीव आपणी काया गठड़ी बंध रखांयदा। दूई द्वैती चुकया भार, दिवस रैण रैण दिवस सर्ब कुरलांयदा। पापां मती जगत गई हार, माया मोह ना कोए तुड़ांयदा।

वा तत्ती रही साड़, ठंडा ठार ना कोए बणांयदा। पंच विकारा लगा अखाड़, जूठ झूठ विच नचांयदा। साचा मन्दिर होया उजाड़, प्रभास डेरा सर्ब वखांयदा। जगत दुहागण नार विभचार, कुड़यार वेस सर्ब करांयदा। मिल्या मीत ना हरि निरँकार, पंज तत्त लेखे किसे ना आंयदा। ख़ाकी ख़ाक उडे जग छार, ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, सतिगुर नानक एह समझांयदा। गुर गोबिन्द बेड़ा करे पार, सच मलाह आप अख्वांयदा। गुरमुखां उप्पर लए चाढ़, जो जन हरि हरि नाम ध्यांअदा। वरन बरन ना करे विचार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हरि सतिगुर आप अख्वांयदा। खेवट खेटा हो त्यार, वञ्झ मुहाणां हथ्थ उठांयदा। सो पुरख निरँजण चप्पू कर त्यार, हँ बेड़ा आप तरांयदा। आपे ब्रह्म पारब्रह्म करतार, आप आपणे रंग रंगांयदा। गुरसिख तेरा हौला करया भार, सतिगुर पूरा आपणे कंध उठांयदा। छोटे बाले नीहां हेठां दए उसार, गुरसिख तेरा मन्दिर आप सुहांयदा। तेरे अन्दर जोत कर उज्यार, आपणे दीपक आप जगांयदा। नौ दुआरे मेटे पंचम धाड़, दसवें आपणा दरस दिखांयदा। वा ना लग्गे कलिजुग तत्ती हाढ़, हरि के पौड़े आप चढ़ांयदा। लेखा चुक्के बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी आपणे लेखे लांयदा। जन भगतां फिरे पिछे अगाड़, जुग जुग साची सेव कमांयदा। फड़ फड़ बांहों जाए तार, जो जन सरनाई आंयदा। लेखा जाणे नर नार, नर नरायण रूप वटांयदा। हरिजन ना डुब्बे विच मँझधार, शौह दरयाए ना कोए डुबांयदा। हरिसंगत बणाए सच प्यार, भैणां भईया नाता जोड़ जुड़ांयदा। कोई नेत्र नैण ना तक्के धी मुटयार, पुत्तर धीआं एका संग निभांयदा। बिन नार ना करे कोए प्यार, दूसर सेज ना कोए वखांयदा। जो जन भुल्ले हरि की धार, लक्ख चुरासी जूनी आप फिरांयदा। बण विचोला कोए ना करे पार, हरि भाणे सर्ब रहांयदा। गुर चरन प्रीती एका घर बार, हरि मन्दिर इक्क वखांयदा। नर्बदा कन्ढे जो करे पुकार, प्रभ साचा दरस दिखांयदा। उन्नी कत्तक बारां वेखे साची धार, आप आपणा रूप वटांयदा। बणया पत्थर देवे तार, सरबंग अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उन्नी बीस बीस उनीस अद्धी रात जाए इकांत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा संग आप निभांयदा।

✪ २० कत्तक २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर झण्डेर ज़िला जलन्धर ✪

सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, अकल कला अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, भेव कोए ना पाईआ। एकँकारा खेल महान, आपणी खेल खिलाईआ। आदि निरँजण जोत महान, आदि जुगादी डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी

इक्क वखाए सच निशान, साचा आप झुलाईआ। श्री भगवान, देवे दान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पारब्रह्म गुण निधान, गुणवन्ता इक्क अख्वाईआ। ब्रह्म रूप हो प्रधान, आप आपणी रचन रचाईआ। विष्नूं वंसा देवे माण, आपणा रूप वटाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क ध्यान, एका सच सरनाईआ। शंकर मेला दो जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। शंकर मेला सो पुरख निरँजण, हरि साचा आप करांयदा। ब्रह्मा भिखक हरि पुरख निरँजण, साची भिच्छया झोली पांयदा। विष्नूं चेला एकँकारा हारा रक्खण, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आदि निरँजण ब्रह्म पारब्रह्म धाम एका वसण, सच महल्ला इक्क सुहांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणे लच्छण, पुरख अबिनाशी भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, आपणा खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण एका माण, एका दर सुहांयदा। एकँकारा कर पछान, आप आपणा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण निगहबान, आपणा नैण उठांयदा। प्रभ अबिनाशी खेल महान, श्री भगवान आप करांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दान, जीआ दाता आप अख्वांयदा। विष्नूं बख्शे चरन ध्यान, ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकांयदा। शंकर पाए एका आण, एका कलमा सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा धाम सुहांयदा। सो पुरख निरँजण वसणहारा उच्च मनार, एका रंग समाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, दीपक जोत करे रुशनाईआ। एकँकारा आप आपणा वेख पसार, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। आदि निरँजण मेटणहारा धूंआँधार, घर साचे सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, आप आपणा संग निभाईआ। श्री भगवान ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। परब्रह्म खोल्ह किवाड़, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। ब्रह्म रूप कर पसार, आपणी वंड वंडाईआ। विष्नूं मंगे बण भिखार, अग्गे झोली डाहीआ। ब्रह्मा वेता निउँ निउँ करे निमस्कार, अट्ठे नेत्र रहे शरमाईआ। शंकर वेखे इक्क अखाड़, हरि साचा आप लगाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, सति पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा आसण लाईआ। सो पुरख निरँजण सच अटारी, घर साचे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरजंण जोत निरँकारी, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। एकँकारा मीत मुरारी, सगला संग वखांयदा। आदि निरँजण आपे जाणे आपणी कारी, करनी करता आप अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी भेव न्यारी, अजूनी रहित वेस वटांयदा। श्री भगवान साची यारी, घर साचे आप निभांयदा। पारब्रह्म मेला परवरदिगारी, आप आपणा खेल खिलांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर उज्यारी, साचा सगन मनांयदा। विष्नूं सेवा वड संसारी, हरि साचा आप लगांयदा। ब्रह्मा देवे ब्रह्म भण्डारी, लक्ख चुरासी झोली

पांयदा। शंकर सेवा रिहा सँघारी , साचा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण खेले खेल, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा चाढ़े तेल, आदि निरँजण वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता करे मेल, श्री भगवान करे कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेल, ब्रह्म वेखे थाउँ थाँईंआ। विष्नूं वसे धाम नवेल, ब्रह्मा पुरी ब्रह्म सुहाईआ। शंकर नक्क पाए नकेल, हरि साचा आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा धाम उपजाईआ। सो पुरख निरँजण धाम अवल्ला, एका एक उपजांयदा। हरि पुरख निरँजण सच महल्ला, हँ घर साचा आप वसांयदा। एकँकारा निराधार निरगुण रूप आपे रल्ला, दिस किसे ना आंयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बल्ला, प्रकाश प्रकाश वखांयदा। पुरख अबिनाशी अछल अछल्ला, वल छल धारी नाउँ रखांयदा। श्री भगवान आपणे अग्गे आपे खला, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। पारब्रह्म सच सिँघासण एका मल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ आपे रल्ला, आपे सेव कमांयदा। विष्नूं फड़ाया हरि हरि पल्ला, आपणे लड़ बंधांयदा। ब्रह्मे सुनेहड़ा एका घल्ला, साचा शब्द सुणांयदा। शंकर लाया काया फल डल्ला, बाशक तशका गल लटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार एकँकार, आपणे हथ्थ रखांयदा। सो पुरख

११६७

०८

निरँजण सोभावन्त, घर साचा आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण बणे बणत, निरगुण जोती डगमगांयदा। एकँकारा महिमा अगणत, लिख्या लेख ना कोए लिखांयदा। आदि निरँजण आदि अन्त, नूरो नूर डगमगांयदा। श्री भगवान वेखे रुत्त बसन्त, घर साचे सोभा पांयदा। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणी महिमा अगणत, लेखा लिखणहार आप अख्वांयदा। पारब्रह्म एका रंगत, निरगुण निरगुण आप चढ़ांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म होए मंगत, हरि साची झोली पांयदा। विष्नूं मेला हरी संगत, शंकर भंगत रूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। शंकर ब्रह्मा विष्न धार, त्रै त्रै मेल मिलाया। ब्रह्म पारब्रह्म कर आकार, श्री भगवान वेस वटाया। अबिनाशी करता मीत मुरार, आदि निरँजण सेव कमाया। हरि पुरख निरँजण सांझा यार, सो पुरख निरँजण दए सलाहया। एकँकारा कर पसार, दर घर साचे बैठा आसण लाया। सच सिँघासण अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलाया। सच सिँघासण हरि निरँकार, आपणा आप सुहाईआ। सति पुरख निरँजण साची धार, अगम्मड़े धाम वहाईआ। अलक्ख अगोचर बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। साचे मन्दिर पावे सार, आपणी रचना आप रचाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सो पुरख निरँजण वेख विचार, हरि पुरख निरँजण आपणे रंग रंगाईआ। आदि

निरँजण दीवा बत्ती कर त्यार, कमलापाती आप अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहार, श्री भगवान आप उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, आपणी वस्त झोली पाईआ। विष्नूं तेरा भरे भण्डार, तोट रहे ना राईआ। ब्रह्मा देवे नाम धुन्कार, एका शब्द सुणाईआ। शंकर मेला हरि करतार, हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। एकँकारा सति पुरख अबिनाशा, आपणा खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण वेख तमाशा, हरि पुरख निरँजण डंक वजांयदा। आदि निरँजण पावे रासा, जोती जोत डगमगांयदा। श्री भगवान इक्क भरवासा, अबिनाशी करता आप करांयदा। पारब्रह्म पूरी करे आसा, ब्रह्म इच्छया पूर करांयदा। शंकर देवे इक्क दिलासा, सृष्ट सबाई रिजक पुचांयदा। ब्रह्मा तेरी बुझे प्यासा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। शंकर वेखे काया कासा, कंचन गढ़ सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण वड गहर गम्भीर, एका एक अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण ठांडा सीर, सति सति समांयदा। एकँकारा देवे धीर, साचा हुक्म चलांयदा। अदि निरँजण शाह हकीर, एका रूप डगमगांयदा। अबिनाशी करता कट्ट ज़ंजीर, आपणा बंधन आप तुड़ांयदा। श्री भगवान चोटी चढ़े अख़ीर, घर साचा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म घत्ती आए वहीर, आपणा मार्ग आप वखांयदा। विष्नूं वज्जा एका तीर, तीर शब्द अणयाला आप लगांयदा। ब्रह्मा बख्शे एका धीर, एका मन्त्र ज्ञान दृढ़ांयदा। शंकर कढ्ढे हउमे पीड़, एका संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण कमलापाती, हरि पुरख निरँजण सोभावन्त नार सुहाईआ। एकउँकारा देवे दाती, आपणी इच्छया आपे झोली पाईआ। आदि निरँजण कर प्रकासी वखाए इक्क घर प्रभाती, एका रंग रंगाईआ। श्री भगवान उत्तम जाति, ज़ात अजाति ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता पिता माती, आप आपणा नाउँ उपजाईआ। पारब्रह्म प्रभ कुल पछाती, आपणी अंस दए उपजाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म प्रभ देवे दाती, आपणा अंग आप कटाईआ। विष्नूं सुणाए साची गाथी, आपणा भेव खुल्हाईआ। ब्रह्मा मिल्या साचा साथी, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। शंकर खोल्हे एका ताकी, एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराईआ। सो पुरख निरँजण कन्त सुभागा, हरि पुरख निरँजण नर नरायण विहाईआ। एकउँकारा पकड़े वागां, घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण गाए रागा, पुरख अबिनाशी नाल रलाईआ। श्री भगवान आपणा मंगे लागा, आपणा दोहरा आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ आया भाजा, मूंह वेखे धी जवाईआ। ब्रह्म ब्रह्म तेरी रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्नूं तेरा रचया काजा, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी प्रभ साजण साजा, त्रैगुण बणत बणाईआ।

शंकर बहि बहि मार वाजा, भोला नाथ आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण सो पुरख निरँजण वरया, घर साचे वज्जी वधाईआ। एकउँकारा अग्गे खड़या, आपणे फेरे आप दवाईआ। आदि निरँजण चारों कुन्ट फड़ फड़ लड़या, पल्लू नाल बंधाईआ। श्री भगवान एका अक्खर पढ़या, लिखण पढ़न विच ना आईआ। पुरख अबिनाशी लाई जड़या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पारब्रह्म आपणी नारी लै आपणे अन्दर वड़या, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म घाड़न घड़या, घड़नहारा दिस ना आईआ। विष्नूं हरि हरि अग्गे करया, दे मति रिहा समझाईआ। ब्रह्मा तेरा चुक्के डरया, भय भयानक रूप वटाईआ। शंकर ढहि ढहि सरनाई पड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंडण आप वंडाईआ। सो पुरख निरँजण साचा मीत, हरि पुरख निरँजण सोभावन्ती ख़ुशी मनाईआ। एकउँकारा वस्सया चीत, घर मेला सहिज सुभाईआ। आदि निरँजण गाया गीत, श्री भगवान वेख वखाईआ। अबिनाशी करता बैठा धाम अनडीठ, थिर घर बैठा सोभा पाईआ। पारब्रह्म सचखण्ड निवासी आपे होया ठंडा सीत, सांतक सति सति वरताईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे पुनीत, आप आपणी दया कमाईआ। विष्नूं वंसी साची रीत, त्रैगुण बंधन बंध बंधाईआ। ब्रह्मा एका रंग रंगावे हस्त कीट, जीव आत्म वंड वंडाईआ। शंकर अन्तिम देणी पीठ, चाकर चाकरी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप उपजाईआ। सो पुरख निरँजण साची सेज, हरि पुरख निरँजण संग हंढांयदा। एकँकारा रिहा वेख, आपणा नैण उठांयदा। आदि निरँजण धर धर भेख, अन्दर बाहर फेरा पांयदा। पुरख अबिनाशी दर दरवेश, आपणी अलख जगांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणा लेख, साचा लेखा आप गणांयदा। पारब्रह्म कर साच आदेश, साचा हुक्म सुणांयदा। ब्रह्म ब्रह्म बर्हम हो प्रवेश, आपणा रंग रंगांयदा। विष्नूं तेरा अवल्लड़ा लेख, हरि साचा आप लिखांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म ना चले पेस, हरि साची कल वरतांयदा। शंकर हुक्मी नर नरेश, हुक्मी हुक्म फिरांयदा। विष्नूं तेरी बाशक सेज, सांगोपांग हंढांयदा। ब्रह्मा तेरे नेत्र वेख, आपणा नैण चमकांयदा। शंकर तेरा साचा भेस, हरि साचा आप वटांयदा। तिन्नां देवे इक्क आदेश, साचा हुक्म सुणांयदा। हँ रूप सर्ब प्रवेश, निरगुण आपणा अंग कटांयदा। विष्न ब्रह्मा शंकर आप वसाए आपणा देस, सच महल्ला आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण आपे लए वेख, आपणी रचना आप रचांयदा। नौ नौ चार ना मेटे कोए रेख, साचा बीज ब्रह्म जणांयदा। नौ नौ चार बण दरवेश, छत्ती युग खेल खिलांयदा। त्रैगुण माया ना चले कोई पेश, रजो तमो सतो साचा वेस धरांयदा। सो पुरख निरजंण बणे नर नरेश, आपणा लहिणा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा

नाउँ आप उपजांयदा। सो पुरख निरँजण नाम रक्ख, हरि आपणा रंग रंगाईआ। हँ ब्रह्म हो प्रतक्ख, लक्ख चुरासी गया समाईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे पक्ख, घर साचा इक्क वसाईआ। एकँकारा लए रक्ख, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण मार्ग दस्स, साचा पन्थ चलाईआ। श्री भगवान अलक्खणा अलक्ख, अलख अगोचर भेव ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट घट रिहा वस, दिस किसे ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ नस्स नस्स, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। विष्नूं चरन दुआरे रिहा हस्स, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। ब्रह्मा आपणे हथ्थ रिहा मस्स, हथ्थीं साची सेव कमाईआ। शंकर तलीआं हेठ रिहा झस्स, आपणी जेहवा सेवा लाईआ। सो पुरख निरँजण आदि जुगादि आपे होए वक्ख, अन्तिम आपे मेल मिलाईआ। सोहँ रूप ना कोई जाणे किसना सुकला पक्ख, रवि ससि भेव ना पाईआ। चार वेद ना सके परख, ब्रह्मा रसना जेहवा एका गाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, हँ ब्रह्म आप रघुराईआ। सो पुरख निरँजण नौ नौ चार कर पार खाधा तरस, दोहां मेला दए मिलाईआ। अमृत धार अन्दरे अन्दर बरस, आप आपणा मेघ बरसाईआ। हँ तेरी मेटे हरस, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे अर्श आपे फर्श, उच्च अगम्म अथाह आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द तेरी रचन रचाईआ। सोहँ शब्द तेरा सच पसारा, हरि आपणा रूप वटाया। दूजी कुदरत करे प्यारा, हरि हरि मन्दिर इक्क सुहाया। ब्रह्मा विष्न सेवादारा, साची सेवा रहे कमाया। त्रैगुण तेरा भर भण्डारा, पंज तत्त झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि हरि ब्रह्मादि शब्द नाद इक्क वजाया। शब्द अनादि सच्चा हरि ढोला, आदि जुगादि सुणांयदा। सो पुरख निरँजण आपे बोला, हरि पुरख निरँजण गांयदा। एकँकारा बणया तोला, पुरख अबिनाशी धार सुणांयदा। श्री भगवान ना पावे कोए रौला, आप आपणा बोझ उठांयदा। पारब्रह्म चुक्कया डोला, आपणी डोली आप सुहांयदा। विष्नूं वंसी होया गोला, दर साचा वेख वखांयदा। शब्द धार ब्रह्म ब्रह्म बदलया चोला, लक्ख चुरासी चोली संग निभांयदा। शंकर अन्तिम खेले होला, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। सोहँ शब्द जैकारा हरि जी बोला, लक्ख चुरासी तेरी आत्म आपणे विच समांयदा। आप उपजाए आप मिटाए, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आप ब्रह्मा विष्न शिव अख्वाए, आपे त्रैगुण रूप वटाईआ। आपे पंज तत्त रचन रचाए, आपे पंजी मेल मिलाईआ। आपे आपणा रूप वटाए, आपे निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आपे लक्ख चुरासी फुल्ल खिलाए, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे धरत धवल वड्याए, जल बिम्ब आप उपजाईआ। आपे मण्डल मण्डप डेरा लाए, रवि ससि आप चमकाईआ। आकाश प्रकाश आप कराए, धूंआँधार आप समाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाए, आपे उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा आसण लाईआ।

१२०० ०८

आपे समुंद सागर फोल फुलाए, आप आपणी सेव कमाईआ। आपे निर्मल काया गागर जोत जगाए, घट घट आपणी कर रुशनाईआ। आपे मन मति बुध वंड वंडाए, आपणा हिस्सा आप रखाईआ। आपे पारब्रह्म ब्रह्म रूप धराए, ईश जीव आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आदि भगवन्त सो पुरख निरँजण कन्त, हरि पुरख निरँजण नार भतार, सच विचोला एकँकार, आदि निरँजण सेवादार, अबिनाशी करता पावे सार, श्री भगवान सोहे दुआर, पारब्रह्म खेल अपार, ब्रह्म रूप प्रगटे विच संसार, लक्ख चुरासी दए आधार, ऊँच नीच ना कोए विचार, वरन गोत ते वस्सया बाहर, निरगुण जोत आप निरँकार, हँ रूप निराकार, बिन हरि पावे ना कोई सार, सो पुरख निरँजण बन्ने धार, सोहँ आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, वसणहारा सच घर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण सर्ब गुणतासन, एकँकार निराकार दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा सचखण्ड दुआरा, हरि साचा आप सुहाईआ। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, बैठा आसण लाईआ। शाहो भूप राज राजान वड सिक्दारा, धुर फरमाण आप जणाईआ। हुक्मी हुक्म फिराए सर्ब संसारा, निर्भय आपणा भय वखाईआ। अकाल मूर्त खेल अपारा, अजूनी रहित भेव ना आईआ। करता पुरख धुर बलकारा, नाम सति करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण बोल जैकारा, हँ बेड़ा रिहा तराईआ। हरिजन वेखे विच संसारा, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी वहिण वहे पंज धारा, ना सके कोई बचाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गा अखाड़ा, कलिजुग कूक रिहा नचाईआ। घर घर फिरे पंचम धाड़ा, पंचम तत्त रही जलाईआ। गुरमुख विरले पाया हरि करतारा, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। काया मन्दिर मीत मुरारा, घर बैठा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि हरि मन्दिर, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। नाद वजाए डूँघी कन्दर, अन्ध अन्धेर गवांयदा। मन पंखी दहि दिशा ना भवे बन्दर, शब्दी डोरी आप बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। शब्द डोरी बन्ने मन, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा देवे भन्न, माया ममता मोह चुकाईआ। लेखे लाए जननी जणया जन, जो जन रसना हरि हरि गाईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनहद साचा ताल वजाईआ। दो जहानी बेड़ा देवे बन्न, भव सागर पार कराईआ। सचखण्ड दुआर वसाए ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दीवार ना रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे गोद उठाईआ।

१२०१
०८

✪ २१ कत्तक २०१६ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे घर पिण्ड दुसांझ ख़ुर्द ज़िला जलन्धर ✪

सो पुरख निरँजण गुण निधान, हरि पुरख निरँजण वड वड्याआ। एकँकारा खेल महान, श्री भगवान वेस वटाईआ। आदि निरँजण जोती नूर डगमगान, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, ब्रह्म आपणी अंस उपाईआ। विष्नूं देवे साचा दान, आपणे अंग लगाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क निशान, साची विद्या करे पढ़ाईआ। शंकर देवे धुर फरमाण, एका हुक्म सुणाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पल्ले गंढु बंधाईआ। पंज तत्त आप उपजाए आप निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाईआ। मन मति बुध देवे माण, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। काया मन्दिर सच मकान, नौ दर आप खुल्हाईआ। खेले खेल गुण निधान, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आपणी रचना वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण शाहो भूप, हरि पुरख निरँजण सति सरूप अख्वांयदा। एकँकारा जाए तुठ, आदि निरँजण वेख वखांयदा। श्री भगवान अबिनाशी अचुत्त, पुरख अबिनाशा मेल मिलांयदा। पारब्रह्म सुहाए आपणी रुत्त, ब्रह्म फुलवाड़ी आप लगांयदा। विष्नूं वंसी साचा सुत्त, ब्रह्मा संग निभांयदा। शंकर मेला वेखे लुक, भेव अभेद छुपांयदा। त्रैगुण माया लाया बूटा, पंज तत्त डाल वखांयदा। मन मति बुध देवे झूटा, सच हुलारा आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ दर वेखे खाली ठूठा, साची वस्त ना कोए भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आदि अनादी नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण आपणा गीता, हरि पुरख निरँजण संग निभाया। एकँकारा इक्क अतीता, आदि निरँजण निरगुण जोत करे रुशनाया। श्री भगवान ठंडा सीता, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। पारब्रह्म चलाए आपणी रीता, ब्रह्म आपणा वेस वटाया। विष्नूं वंसी पतित पुनीता, ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्म दरसाया। शंकर तन मन आपे जीता, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाया। पंज तत्त विकार ना डीठा, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। आपणा नाउँ निधाना आपे पीता, आपणा प्याला मुख लगाया। आपे ठंडा आप सीता, आपे अग्नी तत्त जलाया। आपे वस्सया आपणे चीता, घर मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूर रुशनाया। सो पुरख निरँजण जोत उजाला, हरि पुरख निरँजण एका रूप वटाईआ। एकँकारा खेल निराला, आदि निरँजण भेव ना राईआ। पुरख अबिनाशी चले आपणी चाला, श्री भगवान वेस धराईआ। पारब्रह्म वसे वसाए सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पाईआ। ब्रह्म ब्रह्म करे प्रितपाला, प्रितपालक वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण दलाला, त्रैगुण जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त गढ़ आप संभाला, साचा रंग रंगाईआ। अन्दर वस्सया दीन दयाला, आपणा मुख छुपाईआ। इक्क सुहाए सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर सोभा पाईआ। जोत निरँजण दीपक बाला, कमलापाती

वेख वखाईआ। आप जिवाए आप सुवाए आपणी माला, आपणे धागे आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार आपणी आप उपजाईआ। सो पुरख निरँजण आदि अन्त, हरि पुरख निरँजण वेस वटांयदा। एकँकार श्री भगवन्त, पुरख अबिनाशी नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म जाणे आपणी बणत, ब्रह्म ब्रह्म आप उपजांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव मनायण एका कन्त, कन्त सुहागी इक्क अख्वांयदा। त्रैगुण माया पंज तत्त लक्ख चुरासी जीव जन्त, लोकमात आप धरांयदा। नाल रलाया हउमे हँगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सगला संग रखांयदा। आशा तृष्ना भर भण्डार, जीउ प्राणी खेल खिलांयदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। रंग रंगीला रंग माणे विच संसार, आप आपणी कल वरतांयदा। सन्त साजण लए उभार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़, दर घर साचा आप वखांयदा। नाता तोड़े पंचम धाड़, पंचम नाद धुन सुणांयदा। साचे मन्दिर देवे वाड़, आप आपणा घर वखांयदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, धुन अनादी आप अल्हांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सच सरोवर आप नुहांयदा। आत्म सेजा हो त्यार, सति सरूपी आसण लांयदा। कमलापाती मीत मुरार, सन्त सुहेले मेल मिलांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राती विच संसार, जूठा झूठा मोह चुकांयदा। घर महल्ला सोहे इक्क दुआर, घर घर विच वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण निरँकार, हरि पुरख निरँजण वेख वखाया। एकँकार किरपा धार, आदि निरँजण डगमगाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, श्री भगवान भेव ना राया। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, ब्रह्मा वेता वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव दए आधार, त्रैगुण साचा संग निभाया। पंचम बन्न्हे आपणी धार, मन मति बुध पल्ला नाल बंधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर त्यार, आसा तृष्ना जोड़ जुड़ाया। लक्ख चुरासी खेल अपार, हरि साचा रिहा खिलाया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका कार, आपणी रिहा कराया। शब्द अगम्मी बोल जैकार, घर घर मृदंगा दए वजाया। सारिंग किंग ना कोए सितार, सिंगी नाद ना हथ्थ उठाया। आपणा राग गाए आपणी वार, रसना जेहवा ना कोए हिलाया। सन्त सुहेले कर प्यार, आप आपणा दर खुल्हाया। इक्क कराए वणज वापार, आपणा नाम हट्ट विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वाया। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेऐब परवरदिगारया। हरि पुरख निरँजण देवे सच सलाह, मेल मिलावा एकउँकारया। आदि निरँजण आप जगा, पुरख अबिनाशी डगमगा रिहा। श्री भगवान सगला संग रिहा निभा, पारब्रह्म पार करा रिहा। ब्रह्मा ब्रह्म करे सच न्याँ, सच विचोला आप अख्वा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, साचा हुक्म सुणा रिहा। त्रैगुण बंधन आपे पा, पंचम जोड़ जुड़ा ल्या। लक्ख चुरासी डेरा ला,

आपणा मुख छुपा ल्या। निरगुण बाती जोत टिका, कमलापाती वेख वखा रिहा। बूंद स्वांती आप चुआ, निझर झिरना इक्क झिरा रिहा। इक्क अकांती डेरा ला, घर घर विच सोभा पा रिहा। कन्त सुहागी इक्क मना, अनहद राग अला रिहा। उत्तम जाती आप अख्वा, ब्रह्म आपणा नाउँ धरा रिहा। सति प्रकाश रिहा करा, निरलेप रूप वटा रिहा। आलस निन्दरा विच ना जाए आ, आपणा नैण ना आप वखा ल्या। तृष्ना भुक्ख ना जाए सता हउमे रोग ना कोए वखा ल्या। हरि सन्तन वेख करे सहिज सभा, आप आपणा नाम वड्या ल्या। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन उप्पर दया कमा ल्या। आपे जाणे आपणा सच न्याँ, दूसर लेख ना किसे लिखा ल्या। कोटन कोटि कोटि कोटी वेस वटा, रवि ससि सेवा ला ल्या। मण्डल मण्डप डगमगा, आकाश प्रकाश टिका ल्या। गगन गगनंतर फेरा पा, आपणा डंक वजा ल्या। ज़िमीं अस्माना वेखे थाँ, आप आपणा रंग रंगा ल्या। जल जल धारा रिहा समा, आपणी बूंद आप टपका रिहा। निरगुण आपणा नाउँ धरा, सो पुरख निरँजण वेस वटा रिहा। हरि पुरख निरँजण गेड़ा दए दुआ, एकँकारा आप भवा रिहा। आदि निरँजण खेल खिला, पुरख अबिनाशी संग निभा ल्या। श्री भगवान धाम अवल्ला इक्क वखा, पारब्रह्म पल्ला आप फड़ा ल्या। ब्रह्मा जोती जोत उपा, दीपक जोती जोत डगमगा ल्या। विष्न शिव ब्रह्मा मंगण एका नाँ, एका मुख सलाह ल्या। त्रैगुण माया पंज तत्त तक्कण तेरा राह, कौण दुआरा रूप वटा ल्या। मन मति बुध रही शरमा, तेरा भेव किसे ना पा ल्या। सन्त सुहेले आप उठा, आपणा मार्ग आप सखा ल्या। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, एका राग सुणा ल्या। काम क्रोध मेट मिटा, सच सुच्च वरता ल्या। तृष्ना तृखा आप बुझा, अंमिउँ रस जाम प्या ल्या। सारिंग धर भगवान बीठलो नाम धरा, सारिंग आपणे लेखे ला ल्या। कागज कलम ना लेखा सके कोए लिखा, बणत ना कोए बणा ल्या। शंकर बाशक तशका गल लटका, कंठ विष कढा ल्या। विष्नूं वंसी राह तका, नेत्र नैण उग्घाड़या। पारब्रहम बेपरवाह, आप आपणे घर सुहा ल्या। श्री भगवान वसे हर घट थाँ, आप आपणा आसण ला रिहा। अबिनाशी करता आप अख्वा, आदि जुगादी डंक वजा ल्या। आदि निरँजण नूर नुराना नूर उपा, एका रंग रंगा ल्या। एकँकार नाउँ धरा, निरगुण आपणा भेव छुपा ल्या। हरि पुरख निरँजण सेवा ला, साचा हुक्म सुणा ल्या। सो पुरख निरँजण दया कमा, साचा मार्ग आप जणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला दीन दयाला, पुरख अबिनाशा खेल तमाशा मण्डल रासा, निरगुण धार खेल अपार आपणी आप करा रिहा। सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण सच मलाह, सच बेड़ा आप चलांयदा। एकँकारा वसे आपणे थाँ, थान थनंतर इक्क वखांयदा। आदि निरँजण आपणा पर्दा आप लाह,

आपणा रूप आप चमकांयदा। अबिनाशी करता अकल कल अख्वा, श्री भगवान सगला संग वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव
खुल्हा, आप आपणा भेव छुपांयदा। हँसा बंसा आप अख्वा, आपणा अंग कटांयदा। ब्रह्म जोत जोत धरा, जोती नूर वखांयदा।
विष्नूं वेखे एका थाँ, एका रंग रंगांयदा। ब्रह्मा वेता बण मलाह, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। शंकर अन्तिम दए मिटा,
हुक्मी हुक्म फिरांयदा। त्रैगुण मिले ना कोए थाँ, पंज तत्त डेरा ढांयदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म वेख वखा, हरिजन साचे आप
जगांयदा। शब्द अगम्मी पकड़े बांह, साचा पल्लू इक्क वखांयदा। सखा सुहेला इक्क अकेला गुरू गुर चेला सिर रक्खे
ठंडी छाँ, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार
एकउँकार, एकँकार आपणी खेल खिलाईआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर करनेहार, करता पुरख वड वड्याईआ। मूर्त
अकाल निराकार हो त्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। अजूनी रहित सोहे बंक दुआर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। निर्भय
एका धार, एकँकारा आप चलाईआ। प्रगट हो विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपे गुर पीर बण अवतार,
साध सन्त करे रुशनाईआ। कमलापाती देवे दाती अगम्म अपार, साची हाटी इक्क खुल्हाईआ। चौदां हट्टां ताकी खोल्ह किवाड़,
लहिणा देणा बाकी आप मुकाईआ। साचा साकी भर प्याला अमृत जाए प्याए पिलावणहार, शब्द घोड़े राकी आप चढ़ाईआ।

ख़ाकी ख़ाक दए आधार, पाकी पाक पाक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ
धराईआ। जुग करता हरि नाम रक्ख, आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा।
सन्त साजन करे वक्ख, आपणे मार्ग आपे लांयदा। जगत जीव जहान देवे मथ्था, समरथ वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर
महिमा कथनी अकथ, कथ कथा ना कोए सुणांयदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी
पाए नथ्थ, चारों कुन्ट फिरांयदा। आपे जाणे पूजा पाठ, आपणा नाम आप दृढ़ांयदा। आपे वेखे जगत घाट, तीर्थ तट
किनारा फोल फुलांयदा। लेखा जाणे आण बाट, मात गर्भ भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
जुग जुग आपणा मार्ग लांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मार्ग लाया, चार कुन्ट वज्जी वधाईआ। चार वरन चार कुन्ट चौथे
जुग खेल रचाया, काल कलन्दर रिहा नचाईआ। अन्दरे अन्दर गेड़ दवाया, दिस किसे ना आईआ। मन बन्दर दहि दिशा
फराया, बन पंछी खोजन जाईआ। सति सरूप नज़र ना आया, जंगल जूह उजाड़ भरवास ढूंडे सर्ब लोकाईआ। बन्द
खलास ना कोए कराया, सन्त महंत चार कुन्ट बैठे धूंणीआँ ताईआ। निरगुण जोत ना होए रुशनाया, घर घर दीपक रहे
जगाईआ। हरि कन्त सुहेला ना किसे मनाया, बण सखी ना मंगल गाईआ। काया चोली रंग बसन्त ना किसे चढ़ाया, कपड़े

१२०६
०८

रंग रंग रहे वखाईआ। साचा मन्त्र ना किसे दृढ़ाया, मन संसा ना कोए चुकाईआ। सुहागी छन्द किसे ना गाया, शास्त्र सिमरत जगत पढ़ाईआ। परमानंद ना कोए चखाया, रसना जेहवा होई हल्काईआ। ज्ञान नेत्र ना कोए खुल्हाया, जगत नेत्र रहे तकाईआ। साचा जाम ना किसे प्याया, अठसठ तीर्थ रहे नुहाईआ। आत्म देव इष्ट ना किसे मनाया, गुर पीरां रहे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना सेव लगाया, सेवा कर कर थक्के घाल पूरी ना कोए कराईआ। पारब्रह्म ना नज़री आया, निरगुण मिले ना साचा माहीआ। जगत ज्ञान रहे दृढ़ाया, सच ज्ञान ना कोए सुणाईआ। संस्कृत हिन्दी शास्त्री उर्दू फारसी रहे सुणाया, निष्अक्खर वक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। हरि का शब्द लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ, रसना जेहवा कोए ना गाईआ। दोए कन्न ना कोए सुणाया, बत्ती दन्द ना बोल बुलाईआ। ढोलक छैणा ना कोए वजाया, सीस धड़ ना कोए हिलाईआ। गुरमुख विरले अन्दर चढ़ साचे मन्दिर वड़ निज आत्म जिन दर्शन पाया, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आपा परका भेव चुकाया, हउमे रही ना राईआ। नौ दर दा पन्ध मुकाया, घर दसवें मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, हरि पुरख निरँजण करे सति सरीर, एकउँकार देवे धीर आदि निरँजण चोटी चढ़ अखीर, अबिनाशी करता कट्टे हउमे पीड़, श्री भगवान लक्ख चुरासी तोड़ ज़ंजीर, पारब्रह्म बख्शे साचा सीर, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। ब्रह्म मेला घर मन्दिर अन्दर, हरि साचा सगन मनांयदा। लेखा जाणे डूँघी कन्दर, टेडी बंक आप भवांयदा। तिन्न मेला तुट्टे जिन्दर, साचा राह आप सुहांयदा। दूई द्वैती ढठ्ठे कंध, माया ममता पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, हरि पुरख निरँजण देवे दान, एकँकार करे ध्यान, आदि निरँजण वाली दो जहान, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, श्री भगवान देवे माण, पारब्रह्म ब्रह्म कर पछाण, आप आपणे अंग लगाईआ। अंगीकार करे समरथ, सो पुरख निरजंण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण चलाए आपणा रथ, एकँकारा हुक्म सुणाईआ। आदि निरँजण जोत जगाए लट लट, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। श्री भगवान वसणहारा घट घट, पारब्रह्म दए वड्याईआ। ब्रह्म वखाए एका हट्ट, एका वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार निराकार निरगुण सरगुण खेल अपार, गुरमुख साजण जाए तार, जुगा जुगन्तर लए अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर दए अधार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, चार कुन्ट कुरलांयदा। वरनां बरनां रौला पाया, साची सरन ना कोए वखांयदा। ऊँचां नीचां डंक बजाया, एका रंग ना कोए रंगांयदा। राउ रंकां ना कोई अंग लगाया, सगला संग ना कोए रखांयदा। भुक्ख नंगा सर्ब कुरलाया, सांतक सति ना कोए वरतांयदा। काम क्रोध

लोभ मोह हँकार होया हल्काया, चारों कुन्ट नाच करांयदा। जूठ झूठ डौरु वाहया, कलिजुग कलन्दर दहि दिशा फेरी पांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां इष्ट देव ना कोए मनाया, घर घर आपणा राह वखांयदा। साधां सन्तां अन्दर काया हउमे गढ़ बणाया, जगत ज्ञान सर्ब वड्यांअदा। वेद चार पढ़ पढ़ विवाद वधाया, पुराण अठारां गा गा भरम भुलाया, शास्त्र सिमरत तोड़ ना कोए निभांयदा। गीता ज्ञान रहे सुणाया, कान्हा कृष्ना नज़र ना आंयदा। अञ्जील कुरान वाहण वाहया, मुल्लां शेख़ मुसायक दस्तगीर औलीआ पीर शेख़ मुसायक महिबान बीदो बी खैर या अल्ला नूर अलाही ना धीर धरांयदा। हक्क हकीकत ना फड़या पल्ला, लाशरीक ना वेख वखांयदा। चार वरन दूई द्वैती लग्गा सला, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश साचा कर्म ना कोए कमांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई होया झल्ला, धीरज जत सति सन्तोख ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा। राणी अल्ला ना फड़े पल्ला, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। नानक निरगुण सच संदेसा एका घल्ला, नाम सति दृढ़ांयदा। दीपक जोत ज्ञान एका बला, साची सिख्या सिख समझांयदा। घट घट अन्दर आपे रल्ला, आत्म ब्रह्म नाउँ धरांयदा। ईश जीव फड़ाया पल्ला, सगला संग निभांयदा। आपे चेतन रिहा अकल्ला, विस्मादी नाम धरांयदा। आपे पंच विकारा बोले हल्ला, आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आपणी धार बंधांयदा। आपे नानक गोबिन्द धार, साची शब्द पढ़ाईआ। आपे रूप नाद अनादी वेखे वेखणहार, आदि जुगादी वड वड्याईआ। शब्द धुन बोल जैकार, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करया ख़बरदार, करोड़ तेतीसे दए अंगड़ाईआ। सुरपति राजे इन्द दए हुलार, आप आपणा डंक वजाईआ। उच्चे टिल्ले पावे सार, नैणां देवी एका हवन वखाईआ। एका सिमरे पुरख अकाल, साची चण्डी आप मनाईआ। इष्ट देव गुर करतार, निर्भय रूप नाल मिलाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। एकँकार कर पसार, आदि निरँजण दए सलाहीआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, श्री भगवान करी कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणा खण्डा हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द मीता विच संसार, आपणे कंठ लगाईआ। आपणा बख्शे चरन प्यार, सिँघ रूप आप वटाईआ। लेखा लिख्या ना जाणे कोए संसार, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। निर्भय वरते एकउँकार, सिँघ पहला मोख धराईआ। वरन गोत तों वसे बाहर, आपणा गौड़ आप जणाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, सो सिँघ वड वड्याईआ। जिस सिँघ खाए जम काल, सो सिँघ ना मात अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकँकारा हरि निरँकारा, निरगुण रक्खे आपणी धारा, लक्ख चुरासी कर पसारा, साधां सन्तां देवे नाम अधारा, निरगुण जोती दीप उज्यारा, कमलापाती वेखणहारा, बूंद स्वांती ठंडी ठारा, घर मन्दिर अन्दर मिले मेल हरि मीत मुरारा,

ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। साचा मेला पुरख सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, एकँकारा रंग चढ़ांयदा। आदि निरँजण जाणी जाण, घर मन्दिर सोभा पांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणा माण, तख्त ताज आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी हो प्रधान, दर दरबान सेव कमांयदा। पारब्रह्म सुण फ़रमान, हुक्मी हुक्म वजांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड वेखे मार ध्यान, ब्रह्म आपणी धार बंधांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञान, एका सिख्या सिख समझांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त आदि अन्त श्री भगवन्त देवणहारा जीआ दान, आत्म ब्रह्म वस्त टिकांयदा। निरलेप सदा संखेप भेव अभेदा अभेव अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर नाद अनादी करे सच न्याँ, शब्द विचोला इक्क रखांयदा। साचा बोल सुणाए थाउँ थाँ, नाम जैकारा एका लांयदा। निरगुण तोला बण मलाह, लक्ख चुरासी आपणे कंडे पांयदा। जन भगतां हौला भार दए करा, मनमुखां पापां भार सिर रखांयदा। दोवें मार्ग लए चला, आपणी रचना आप रचांयदा। राए धर्म संग रला, दर साचे आप सुहांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले फड़ फड़ बांह, लक्ख चुरासी पार करांयदा। मनमुख जीव काग दुष्ट दुराचार एका धक्का देवे ला, शौह दरया आप रुढ़ांयदा।
१२०८ राए धर्म फड़ फड़ दए सज़ा, कुंभी नर्क पवांयदा। चित्रगुप्त हिसाब ना दए मुका, कर्मां लेख ना कोए मिटांयदा। लाड़ी मौत लए प्रना, काल आपणा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाध अगाध बोध लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा हथ्थ करतार, भेव कोए ना पांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, आपणी करनी किरत कमांयदा। सन्त सुहेले लए उभार, मनमुख वहिंदी धार बहांयदा। लहिणा देण चुकाए चार यार, पंचम जोती जोत डगमगांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द अगम्मी मारे मार, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। मन मति बुध की करे विचार, हरि का भेव कोए ना पांयदा। जिस सिर हथ्थ धरे आप निरँकार, सो जन साची बूझ बुझांयदा। कलिजुग डूँघा सागर वहिंदी गार, ना कोई बेड़ा पार करांयदा। माया ममता लद्दया भार, जूठ झूठ ना कोए उठांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा ललकार, आसा तृष्ना अंग लगांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, लक्ख चुरासी जम की फाँसी राए धर्म फंद ना कोए कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण नरायण हरि निरँकारा, निहकलंक वज्जे वधाईआ। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कारा, अलख अगोचर दए कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वस्सया बाहरा, पंच तत्त ना कोए रखाईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सगला साथी सांझा यारा, साचा संग निभाईआ।

गोबिन्द मेला सुत्त दुलारा, शब्द वज्जी वधाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, बैठा आसण लाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा, उच्चा टिल्ला पर्बत रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। आपे जाणे आपणी गाथा, जुग जुग करे नाम पढ़ाईआ। हरिजन निभाए तेरा साथा, तेरी सेवा आप कमाईआ। लेखे लग्गे पूजा पाठा, जो जन हरि हरि रसना गाईआ। पूर्ब जन्मा करे पूरा घाटा, अग्गे लेखा आप लिखाईआ। मस्तक दीपक जोत जगे ललाटा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। आत्म सेजा वेखे खाटा, नाम बबाणे आप चढ़ाईआ। लहिणा देण चुकाए आण बाटा, मात गर्भ फेर ना आईआ। अग्गे रक्खी नेड़े वाटा, पिछला पन्ध रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा मुकाए तीर्थ ताटा, अठसठ नहावण कोए ना जाईआ। बजर कपाटी जिस जन पर्दा पाटा, गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना वगण वाहो दाहीआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या मीता, गोबिन्द आपणी गोद उठाईआ। हरि चरन कँवल बंधाया साचा नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मेटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द इक्क चढ़ाईआ। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, काया माटी लेखे लाईआ। अन्तिम वेले पुच्छे वाता, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। दो जहानां होवे राखा, आपणी सेवा आप कमाईआ। सर्ब कला आपे समराथा, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी जोती जोत लए मलाईआ।

१२०६ ०८

✪ २२ कत्तक २०१६ बिक्रमी मल्ल सिँघ दे गृह पिण्ड लल्लीआं कला ज़िला जलन्धर ✪

सो पुरख निरँजण निरगुण धार, हरि पुरख निरँजण आप उपाईआ। एकँकारा रूप निराकार, रूप रंग ना कोए जणाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, जोती नूर डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ खोल्ह् किवाड़, दर दरवाजा आप खुल्ह्हाईआ। सुत्त दुलारा कर प्यार, साचे शब्द वज्जे वधाईआ। ब्रह्म रूप प्रगट विच संसार, आप आपणा वेस वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया रंग करतार, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण करनी करे कार, करता पुरख वड वड्याईआ। अजूनी रहित हो त्यार, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। कमलापाती मीत मुरार, दीपक बाती इक्क जगाईआ। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर धार आप वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि वेस

वटाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, एका रंग समांयदा। सो पुरख निरँजण वसे सच महल्ला, सचखण्ड दुआर सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण सच सिँघासण एका मल्ला, थिर घर आपणा आप उपांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, जोती नूर डगमगांयदा। वसे निहचल धाम अटला, उच्च अगम्म अथाह, बेपरवाह भेव ना आंयदा। पारब्रह्म आप उपाए आपणा नाँ, आप एका नाअरा लांयदा। साचा नाउँ निरँकार रखा, हर घट नाम नामा शब्द सुणांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, आकाश प्रकाश वेख वखांयदा। रवि ससि तारा मण्डल दए लटका, आप आपणा बंधन पांयदा। धरत धवल जल बिम्ब रखा, अग्नी जल मेल मिलांयदा। पवण पवणी रिहा समा, दिस किसे ना आंयदा। आपणी बख्शे आप सलाह, आपणा मता आप पकांयदा। निरगुण निरगुण बण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार भेव खुल्हांयदा। आपणा भेव आपे खोल्ह, हरि साचे शब्द जणाईआ। सच दुआरे वज्जे ढोल, आपणा नाअरा आप लगाईआ। आपणे कंडे आपे तोल, एका तोला बणे बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी जाए मौल, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। अमृत भरे साचे कँवल, नाभी मुखी आप भुआईआ। लेखा जाणे धरत धवल धौल, धरत धरनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण हरि निरँकार, हरि पुरख निरँजण सेवादार, एकँकार कर पसार, आदि निरँजण जोत उज्यार, अबिनाशी करता भर भण्डार, श्री भगवान दए आधार, पारब्रह्म वरते वरतावे विच संसार, ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्म दए हुलार, सच हुलारा आप वखाईआ। ब्रह्मा उपन्नया हरि निरँकार, ब्रह्म वेता वेस वटांयदा। चढ़या चन्नया विच संसार, साचा मार्ग आपे लांयदा। दो जहानी भरे भण्डार, एकँकारा निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। छप्पर छन्नयां वस्सया ना किसे महल्ल मनार, चार दीवार ना कोए बणांयदा। घर मन्दिर सोहे इक्क घर बार, सचखण्ड बैठा आसण लांयदा। थिर घर बैठा मीत मुरार, गुर चेला ना कोए सुहांयदा। आप आपणी जाण कार, आपणी कल आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल ब्रह्मादि पारब्रह्म आप खिलांयदा। खेले खेलणहार अगम्म अपार, पुरख अगम्मा वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आपणा कम्मा, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। आपे सेवा लावे सूरज चन्ना, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल एका एक एक अख्वाईआ। एका एक एक पसारा, आदि जुगादि करांयदा। एका रूप अनूप निराकारा, निरगुण नाउँ धरांयदा। एका जोत जोत उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। एका ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म आप हो जांयदा। एका वणज वणज वणजारा, चौदां लोकां एका हट्ट खुल्हांयदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हांयदा। लक्ख

१२१० ०८

चुरासी आप पसारा, एका वेख वखांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कारा, अनहद शब्द ताल वजांयदा। एका राग रागनी पावे सारा, घर मंगल एका गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। अबिनाशी करता एका मीता, एका रंग समाया। सचखण्ड वसे इक्क अतीता, दिस किसे ना आया। थिर घर निवासी पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। आदि जुगादी ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए दिसाया। जुगा जुगन्तर जाणे आपणी रीता, दूसर संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाया। जुगा जुगन्तर साची कार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण खेले खेल अपार, एकँकारा वेख वखाईआ। जोत निरँजण हो उज्यार, आदि निरँजण दए सलाहीआ। श्री भगवान पाए सार, पुरख अबिनाश वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म भर भण्डार, ब्रह्मा विष्न शिव लेख लिखाईआ। साचे मन्दिर खेल निराकार, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। गुणवन्ता गाए आपणी वार, आपणा ढोला आप अलाईआ। आपे होए सुणनेहार, रस रसीआ साचा माहीआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार, वेखणहारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनभव प्रकाश पृथ्मी आकाश आप कराईआ। पृथ्मी आकाश खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप करांयदा। आपणा दर आपे मल्ला, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, पवणी पवण समांयदा। नाम सुनेहड़ा एका घल्ला, जुग जुग हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी एका नाद वजांयदा। साचा नाद शब्द धुन्कार, सो पुरख निरँजण आप वजाईआ। हरि पुरख निरँजण सेवादार, एकँकारा वेख वखाईआ। आदि निरँजण होए ख़बरदार, श्री भगवान आप उठाईआ। पुरख अबिनाशी वखाए इक्क निशान, पारब्रह्म रिहा झुलाईआ। सचखण्ड दुआर बोल जैकार, एका नाअरा दए सुणाईआ। थिर घर वासी मीत मुरार, गीत सुहागी एका गाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म तेरी धार, हरि आपणी बिन्द उपजाईआ। विष्नूं करया सेवादार, देवे रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी करता धार, दे मति रिहा समझाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, आपणी वंड आप वंडाईआ। उत्भुज सेत्ज भरे भण्डार, जेरज अंड वेख वखाईआ। मन मति बुध कर प्यार, चतुर्भुज मेल मिलाईआ। भेव गुझ काया विच संसार, हरि साचा आप रखाईआ। नौ दुआरे जगत किवाड़, जगत काया गढ़ सुहाईआ। घर विच घर कर त्यार, आपणा ताक बन्द वखाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, वेद कतेब भेव ना पाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, हरिभगत दए वड्याईआ। एका राग सुणाए सुनावणहार, गीत सुहागी आपे गाईआ। अन्दर मन्दिर खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सांतक सति

१२११ ०८

सति वरताईआ। निर्भय रूप हरि वरते विच संसार, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। आत्म सेजा कर प्यार, गुरमुख साजण लए मिलाईआ। पंचम सखीआं मेला अगम्म अपार, घर साचे वज्जे वधाईआ। सुहञ्जणी सेजा वेखे आप निरँकार, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। अंगण लाए साची नार, कन्त कन्तूहल होए सहाईआ। नाम झूला अपर अपार, हरिजन साचे दए झुलाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, शंकर एह समझाईआ। बाल निदाने होणा ख़बरदार, तेरी सेवक सेवा वेख वखाईआ। जो उपजे सो दए सँघार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरा लेखा हथ्थ करतार, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा चलदा रहे भण्डार, तेरी कीती ना कोए उलटाईआ। अन्तिम वेखे वेखणहार, पुरख अबिनाशी निरगुण आपणा दीप जगाईआ। पहला विष्नूं करे प्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। दूजे ब्रह्मे दए हुलार, इकत्तर मनवन्तर मूल चुकाईआ। शंकर तेरा बेड़ा पार, हरि सतिगुर आप कराईआ। इन्द्र रोवे ज़ारो ज़ार, तख्त ताज सीस ना पाईआ। करोड़ तेतीसा हाहाकार, नेत्र नैण नीर रहे वहाईआ। पुरख अबिनाशी मारनहारा आपणी मार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। भोग बिलास ना करे कोई विहार, साची रास ना कोए रचाईआ। अबिनाशी करता करे खेल आपे आदि जुगादि, भेव कोए ना पाईआ। साध सन्त बेअन्त कहि कहि गए हार, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। चारे वेद करन पुकार, पुराण अठारां रहे गाईआ। शास्त्र सिमरत ना कर सके विचार, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बोध अगाधा हरि ब्रह्मादा शब्द अनादा, आदि अनादि जुग जुग आपणा ताल वजांयदा। शब्द नाद हरि सच्चा नाद, एका आप वजांयदा। जुगा जुगन्तर सन्त सुहेले आपे लाध, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे रामा मोहन रूप वटाए माधव माध, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वांयदा। आपे कान्हा कृष्ना आपणा साजण साज, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी कर पसारा, खेले खेल अगम्म अपारा, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। जुगा जुगन्तर भेव खुल्हाया, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिजुग साचा मात धराया, आदि पुरख सेव कमाईआ। सति पुरख निरँजण जोत जगाया, घर साचे सोभा पाईआ। सार शब्द करे कुड़माया, एका रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाए, सच सिँघासण आसण लाईआ। शाहो भूप वड राजन राज नाउँ धराए, आप आपणी दया कमाईआ। दर दरबान हरि भगवान चोबदार ना कोई रखाए, सीस जगदीस ना कोए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाए, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा खेल तमाशा मण्डल रासा, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। पृथ्मी आकाशा घट घट वासा, पवण स्वासा लक्ख चुरासी आप चलांयदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जन भगतां होए दासी

दासा, लेखा जाणे दस दस मासा, मात गर्भ वेख वखांयदा। रवि ससि जोत प्रकाशा, ब्रह्मा विष्न शिव रक्खण आसा, करोड़ तेतीसा खाली कासा, अमृत आपणा जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर साचा हरि किरपा कर, आपे आप सुहांयदा। किरपा निध गहर गुण सागर, सतिगुर पुरख आप अख्वांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर निर्मल कर्म करे उजागर, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। गुरमुखां देवे नाम रत्ती रत्नागर, साचे कंडे तोल तुलांयदा। लक्ख चुरासी जूठ झूठ करया वणज सौदागर, साचा वणज ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका नाम वजांयदा। साचा डंका हरि भगवान, एका एक वजाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। नव सत खेल श्री भगवान, जेरज अंड फोल फुलाईआ। हरिजन साचे देवे माण, घर मेला सहिज सुभाईआ। सखीआं मेला गोपी काहन, मण्डल रास इक्क रचाईआ। मनमुखां मारे एका बाण, तिक्खी धार आप रखाईआ। जो जन हिरदे हरि हरि गाण, अन्तर मेला मेल मिलाईआ। एका बख्शे पद निरबान, घर चौथा आप सुहाईआ। तीजे नेत्र इक्क ज्ञान, दिब नेत्र वेख वखाईआ। एका दूजा चुक्के काण, हउमे हँगता रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी देवे माण, दर साचा इक्क वखाईआ। होए प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचे शब्द विचोला, गुर सतिगुर नाउँ धराया। एकँकार एका अक्खर आपे बोला, सो पुरख निरँजण ताल वजाया। हँ ब्रह्म साचे कंडे तोला, तोलणहारा दिस ना आया। घट घट अन्दर आपे मौला, रूप अनूपा आप वटाया। लेखा जाणे धरनी धरत धवला, ज़िमी अस्मानां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पावे सार राणी अल्ला, चौदां तबकां वेख वखाईआ। संग मुहम्मद चार यार गया छला, अछल छल आपणा खेल खिलाईआ। ईसा मूसा होया झल्ला, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। बिस्मिल रूप बिसमिल्ला, हरि साचा वेख वखाईआ। तन छुहाए बस्त्र नीला, नीले वाला बेपरवाहीआ। रसना पकड़े साचा चिल्ला, सच कमान खिचाईआ। नव खण्ड सत्त दीप डेरा मल्ला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कोई ना दिसे किला कोट उच्चा मन्दिर टिल्ला, चार दीवारी दिस ना आईआ। पावे सार कक्का बिल्ला, पारब्रह्म वेस वटाईआ। जन भगतां अन्दरे अन्दर मिला, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कँवल नाभी फुल खिला, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। बजर कपाटी तोड़े सिला, शब्द अगम्मी चोट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, हरख सोग ना कोए जणाईआ। हरख सोग तुटे नाता,

जिस जन सतिगुर सच्चा पाया। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, विछड़ कदे ना जाया। आप सुणाए साची गाथा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताटा, सर सरोवर इक्क नहाया। पूर्ब जन्मां करे पूरा घाटा, अगला लेखा लेख बणाया। इक्क जणाई पूजा पाठा, इष्ट देव इक्क वखाया। एका जोत निरगुण जगे ललाटा, अज्ञान अन्धेर गंवाया। एका पीणा एका खाणा, एका रूप नज़री आया। एका अमृत एका बाटा, एका जाम प्याया। एका पुरख पुरख अबिनाशा, एका साचे मेल मिलाया। जन भगतां होए दासी दासा, जुग जुग आपणा बिरध धराया। निज आत्म रखे सदा वासा, निरगुण सरगुण वेख वखाया। जो जन गाए स्वास स्वासा, सोहँ रूप आप बण जाया। हँ ब्रह्म हरि खेल तमाशा, सो पुरख निरँजण वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अखवाया। नर नरायण पुरख अकाल, एका एक अख्वांयदा। प्रगट होया दीन दयाल, लोकमात वेस वटांयदा। चरन दुआर काल महांकाल, हुक्मी हुक्म फिरांयदा। शब्द सरूपी बण दलाल, हरिजन साचे आप उठांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जो जन घालन गए घाल, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। काया मन्दिर वेखे साची धर्मसाल, शब्द अनादी संग रलांयदा। आपणा दीपक आपे बाल, जोती नूर डगमगांयदा। सुरत सवाणी करे संभाल, शब्दी लड़ बंधांयदा। उच्चे मन्दिर मार छाल, आपणा पन्ध आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लेख लिखांयदा। हरिजन साचे पाया, हरि सज्जण मीत मुरार। एका दूजा भउ गंवाया, विसरया संसार। तीजा नेत्र इक्क खुल्हाया, खुल्हया बन्द किवाड़। चौथे पद डेरा लाया, वा ना लगे तत्ती हाढ़। पंचम मेला सहिज सुभाया, पाया पुरख पुरख करतार। छेवें मन्दिर इक्क सुहाया, छप्पर छन्न ना कोए दीवार। सत्तवें सति सतिवादी नज़री आया, निरगुण रूप आप निरँकार। अट्ठां तत्तां जोड़ जुड़ाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए आधार। नौ दर लक्ख चुरासी खोज खुजाया, बिन सतिगुर कोए ना उतरे पार। दस्म दुआरी डेरा लाया, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। सन्त सुहेले लए मिलाया, फड़ फड़ बांहों जाए तार। गुर चेले वेख वखाया, अन्दर मन्दिर पावे सार गुप्त ज़ाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत कर उज्यार। निरगुण जोत नूर उज्यार, हरि साचा आप करांयदा। प्रगट हो विच संसार, स्वयम आपणा रूप वटांयदा। हँ ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म वेख वखांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खण्डा विच ब्रह्मण्डां आपणा आप चमकांयदा। साचा खण्डा नाम कटार, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाईआ। हरि पुरख निरँजण रक्खे तिक्खी धार, दो जहानां वेख वखाईआ । एकँकारा रिहा ललकार,

आपणा हुक्म सुणाईआ। आदि निरँजण हो त्यार, दीवा बाती करे रुशनाईआ। श्री भगवान ख़बरदार, सालस सालसी रिहा कमाईआ। पुरख अबिनाशी तोड़े गढ़ हँकार, हँकारी गढ़ रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म करे विचार, घट घट बैठा आसण लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। चारों कुन्ट धूंआँधार, किन्नर यच्छप दए दुहाईआ। गण गंधर्ब ना गायण आपणी वार, राग नाद ना कोए सुणाईआ। त्रैगुण माया जगत अधार, पंचम मोह करे लड़ाईआ। घर घर अन्दर खेल अपार, कलिजुग कूड़ा रिहा कराईआ। सतिनाम ना कोए जैकार, साची सिख्या ना सिख समझाईआ। गा गा थक्का सर्ब संसार, गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। झूठी रैण सुत्ती पैर पसार, लोकमात ना लए अंगड़ाईआ। करवट बदले ना पुरख करतार, ना देवे सच सलाहीआ। झूठा हट्ट करे वणजार, माया ममता मोह तुलाईआ। काम क्रोध कर प्यार, शाह सुल्तान गूढ़ी नींद सवाईआ। साधां सन्तां आई हार, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। तीर्थ तट होइण ख्वार, गंगा गोदावरी सुरस्ती रही नैण शरमाईआ। अठसठ रोवे ज़ारो ज़ार, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाईआ। सति सन्तोख गया पुरष नार, जीव जन्त नंगे तारीआं रहे लाईआ। अंगी अंग कोए ना करे अंगीकार, अंग अंग रहे कटाईआ। मंगण मंग हरि दुआर, रिखी केश वेख वखाईआ। दर दरवेश आप नर निरँकार, आप आपणा वेस धराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव महेष गणेश गणपति तेरी सुण पुकार, अष्टभुज तेरा होए आप सहाईआ। रवि ससि दए अधार, जो बैठे राह तकाईआ। सन्त सुहेले लाए पार, जो दिवस रैण रहे ध्याईआ। आपे मेले आपणी वार, मेलणहारा आप अख्वाईआ। सज्जण सुहेले कर उज्यार, गुर चेले नाउँ धराईआ। भगतां भरे भगती नाम भण्डार, साची वस्त झोली पाईआ। आदि शक्ति रूप करतार, जोत ज्वाला वेख वखाईआ। पुरख अकाला सांझा यार, अजूनी रहित भेव ना आईआ। निर्भय वरते हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। वज्जे डंका दोहरी धार, नौ खण्ड आप सुणाईआ। भेख पाखण्डा दए नवार, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत जोत उजाला, हरि साचा आप करांयदा। जन भगतां बणे सद रखवाला, जुग जुग सेव कमांयदा। एका शब्द पहनाए तन साची माला, तन बस्त्र आप सुहांयदा। कोटन कोटि विच्चों गुरमुख इक्को भाला, सिँघ पाला नाम धरांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे बणया मात दलाला, आप आपणी सेव कमांयदा। पूरा करणहारा पिछला हाला, लहिणा देणा झोली पांयदा। जगत जीवां दिसे जगत कंगाला, नाम धन्न किसे दिस ना आंयदा। फुल लगाया साचा डाल्ह, त्रै त्रै वेख वखांयदा। त्रै सुत्त बणाई आपणी माला, मन का मणका नाल फिरांयदा। तोड़नहारा जगत जंजाला, लक्ख

चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे आप सुहांयदा। दर घर साचे सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण वज्जी वधाईआ। घर घर मेला साचे कन्त, गुरमुख नारी ख़ुशी मनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, ब्रह्मा वेद भेव ना राईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सति सतिवादी आप लिखाईआ। जिस जन तोड़े गढ़ हउमे हँगत, साची संगत मेल मिलाईआ। जिउँ नानक लेखा जाणे अंगद, अंगीकार करे रघुराईआ। गुरमुख गुरसिख दूजे दर ना होए मंगत, जिस सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। आपे कट्टे भुक्ख नंगत, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार सरगुण धार, निरगुण रूप आप वटाईआ। निरगुण सरगुण साचा खेल, हरि सतिगुर आप करांयदा। जुगां जुगां विछड़े मेल, हरि साचे आप मिलांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेल, साची सखीआं मंगल गांयदा । वसणहारा रंग नवेल, निज आत्म डेरा लांयदा। धर्म राए दी कट्टे जेल, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ रिहा खेल, कलिजुग जीवां नेत्र दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। साचा खेल एका गुर, एका शब्द जणाईआ। लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर संजोगी वड वड्याईआ। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, नाम घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। दो जहानां लाए एका पौड़, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। गुरमुखां आपे जाए बौहड़, हरिभगतां होए सहाईआ। जगत तृष्ना बुझाए अग्ग लगी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साजण पहलों पार उतार, लक्ख चुरासी करे फिर ख्वार, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। चारों कुन्ट हाहाकार, हरि हरि आप करांयदा। हरी हरि हरि भेव न्यार, हरि हरी भेव कोए ना पांयदा। हरी हरि लिखे लेख विच संसार, हरि हरी दिस ना आंयदा। हरी हरि जोत उज्यार, हरि हरी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मण्डल रास रचांयदा। मण्डल रास शाहो शबाश, साचे तख्त रचाईआ। सचखण्ड दुआरे पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा नाच नचाईआ। खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गुण कहिण ना जाईआ। जुग जुग जन भगतां करे पूरी आस, आस निरासा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आप अख्वाईआ। नर हरि नरायण एका एकउँकारया। हरिजन दर्शन कराए एका नैण, एका नूर कर उज्यारया। सन्त कन्त भगत भगवन्त एका धाम इक्क्ठे बहिण, एका मन्दिर राम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात धर, जोती जामा भेख अपारया। जोती जामा भेख करतार, कलिजुग अन्तिम आप वरताया। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, शब्द

चण्ड प्रचण्ड उठाया। पाए वंड सर्ब संसार, सम्मत सोलां वेस वटाया। भेख पाखण्डां करे ख्वार, जूठ झूठ रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरमुख गुरमुख लेखे लाया।

✪ २२ कत्तक २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे घर ललीआं कलां ज़िला जलन्धर ✪

जै जै जैकार सर्ब जीअ अन्तर, हरि जै जैकार कराईआ। जै जै जैकार सर्ब गुर मन्त्र, हरि मन्त्र वड वड्याईआ। जै जै जैकार सर्ब बसन्तर, जै जैकार अग्नी गुण गाईआ। जै जै जैकार गगन गगनंतर, मण्डल मण्डप जै जैकार अल्लाईआ। जै जै जैकार जुगा जुगन्तर, जुग जुग जै जैकार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा आपे वेख वखाईआ। जै जै जैकार सर्ब गुणवन्त, जै जैकार आप करांयदा। जै जै जैकार महिमा अगणत, जै जैकार भेव कोए ना पांयदा। जै जै जैकार आदि अन्त, जै जैकार जुगा जुगन्तर रखांयदा। जै जै जैकार साध सन्त, जै जैकार सांतक सति वरतांयदा। जै जै जैकार भगत भगवन्त, जै जै आपणा रंग रंगांयदा। जै जै जैकार मणीआं मंत, जै जै आपणा नाउँ धरांयदा। जै जै जैकार साचा सन्त, जै जैकार घर साचे आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्क अख्वांयदा। जै जै जैकार हरि भगवान, जै जै इष्ट गुरदेव सुणाईआ। जै जै जैकार धुर फ़रमान, जै जैकार सर्ब सुणाईआ। जै जै जैकार गुण निधान, गुणवन्ता गहर गम्भीर आपणा गुण आपे गाईआ। जै जै जैकार सुणना एका कान, एका राग हरि अल्लाईआ। जै जै जैकार विच समाए पवण मसान, जै जैकार जल बिम्ब आप टिकाईआ। जै जैकार लोआं पुरीआं कर प्रधान, जै जैकार ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जै जै जैकार करे सर्ब कल्याण, ब्रह्मा विष्न शिव जै जै एका नाअरा लाईआ। जै जैकार गुर पीर देवे माण, जै जैकार साध सन्त दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका वेस वटाईआ। जै जैकार पारब्रह्म, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जै जैकार श्री भगवन्त, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। जै जैकार रवि ससि कोटन भान, आपणा गुण एका आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्त, आपणी सिख्या आपणे हथ्थ रखाईआ। जै जैकार इष्ट गुरदेव, जै जैकार सर्ब प्रकास्सया। जै जै जैकार अलख अभेव, पारब्रह्म पुरख अबिनाशया। जै जैकार, लग्गा हरिजन सच्चा नेंहु, घर मेला शाहो शाबास्सया। जै जैकार अमृत बरसे मेह, मेघला धार आप वखास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जै राम नाम रसन स्वास्सया। जै जै राम नाम, राम राम रूप समाईआ। जै जैकार पूरन सर्ब काम, कादर

करता आप कराईआ। जै जैकार होए नगर खेड़ा सच ग्राम, घर मन्दिर एका राग सुणाईआ। जै जै जैकार मेटे तृष्ना ताम, हिरस हवस ना कोए वखाईआ। जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचे घर, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जै जैकार दर निरँकार, सचखण्ड सच समाया। जै जैकार भर भण्डार, हरि भण्डारा आपणा आप रखाया। जै जै जैकार कर त्यार, सेवक सेवा रिहा कमाया। जै जै जैकार कर वरतार, आप आपणी वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा लेखा आप जणाया। लेखा लिखणहार गोपाल, आदि अन्त अख्वाया। जन भगतां बणे सद रखवाल, हरिजन साचे लए तराया। लाल अनमुल्ले उठाए आपणे बाल, आपणी गोदी आप बहाया। अमृत नुहाए साचे ताल, दुरमति मैल रहिण ना पाया। दिवस रैण करे प्रितपाल, सञ्झ सवेर ना कोई जणाया। सति पुरख निरँजण आपणी घाले घाल, गुरमुख साचा मार्ग लाया। शब्द अगम्मी बण दलाल, लोकमात वेख वखाया। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा मुकाया। लेख मुकाए हरि निरँकार, पूर्ब लेखा रहिण ना पाईआ। साचा गहिणा कर त्यार, तन बस्त्र रिहा वखाईआ। नेत्र नैणां कज्जल धार, एका रंग रंगाईआ। साजण मीता मीत मुरार, घर मेला सहिज सभाईआ। साची सखीआं कर त्यार, दर वेखण आया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। पूर्ब लहिणा लेख मुकावणा, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। भेव अभेदा भेव खुल्हावणा, वेद कतेब ना कोए जणांयदा। शास्त्र सिमरत किसे ना गाउँणा, ना कोई अंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आप तरांयदा। हरिजन साचा सज्जण शाह, जुग जुग आप रखाया। पुरख अबिनाशी सेवा रिहा कमा, चाकर चाक आप बण जाया। खेले खेल बण मलाह, बेड़ा आपणा कंध उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। जै देव जगत उधार, सिँघ पाला पाल उठाया। अक्खर पढ़ ना करे विचार, जगत विद्या ना कोए सुणाया। पंडत पांधे करन ख्वार, ज्ञान ध्यान ना कोए दृढ़ाया। पुस्तक पढ़े ना करे विचार, इष्ट देव ना कोए जणाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, आत्म अन्तर बूझ बुझाया। बन खण्ड तेरा सच दुआर, सच सिँघासण हरि विछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाया। जै देव उठ कर त्यारी, शब्दी शब्द जणाईआ। पारब्रह्म तेरी रिहा पैज संवारी, तेरा लेखा आप लिखाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, सच सिँघासण सोभा पाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तारी, जिस जन आपणी दया कमाईआ। लोकमात आई तेरी वारी, तेरा तेरे संग निभाईआ। साचा आसण वेख विचारी,

एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। सुणया नाद धुन धुन्कार, जै देव भेव ना आया। कवण सज्जण मीत मुरार, फड़ फड़ रिहा हिलाया। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे जगत दुआर, हरि सज्जण दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाया। जै देव सुत्ता पैर पसार, अन्धेरी रात ना लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। भगतन मीता आया चल दुआर, देवे दरस बेपरवाहीआ। तेरी गीता लिखी अपर अपार, प्रभ साचा वेख वखाईआ। नाम शब्द भर भण्डार, बेड़ा पार कराईआ। ठांडा सीता हरि निरँकार, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यार, एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण निरगुण वेखी धार, जैदेव नेत्र खोल्हया। पाया पुरख अगम्म अपार, निउँ चरनी सीस झुकाए बोल्लया। कवण दर तेरा दरबार, कवण दुआरे बैठा साचा तोल्लया। कवण तेरा वणज वापार, हउँ घोली घोल घोल्लया। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, सेज सुहाए आपणा पर्दा खोल्हया। तेरा मन्दिर मेरा दुआर, दूजा दर ना कोए टोल्लया। तूं सज्जण हउँ मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा बोल्लया। शब्द बुलारा नाम जैकारा, हरि जै देव आप सुणाईआ। उठ प्यारा कर त्यारा, नर निरँकारा मेल मिलाईआ। नाता तुट्टा सर्ब संसारा, स्त्री पुरष ना वेख वखाईआ। पुत्तर धीआं ना कोए सहारा, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। लक्ख चुरासी डूँघी गारा, बिन सतिगुर ना कोए पार कराईआ। तेरे दुआरे आया निरगुण धारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। करे विहार विच संसारा, जगत विद्या माण गंवाईआ। भगतां भगती भरे भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। लेखा लिखणहार करतारा, कागज कलम ना रक्खे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा आप वड्याईआ। उठ भगत हरि आप उठाए, सेवक सेवा आप कमाईआ। आपे तेरा पन्ध मुकाए, खिच्ची आए वाहो दाहीआ। विच प्रभास डेरा लाए, एका बिरछ सुहाईआ। आपणा नैण हरि आप उठाए, आप आपणी दया कमाईआ। इक्क बिरछ तिन्न डाल्ह, उत्तर पूर्ब पच्छिम आप वखाईआ। दक्खण दिशा ना करे विचार, एका बैठा खेल खिलाईआ। इक्क इक्क डाल्ह साढे तिन्न करोड़ पत कर पसार, आप आपणा अंग वखाईआ। लिख्या लेख उप्पर करतार, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। एका नेत्र दस पचास करन पार, घड़ी पल विसर ना जाईआ। साढे दस करोड़ दए अधार, एका अक्खर एका विद्या एका राम एका वेर दए पढ़ाईआ। कोटन कोटि जन्म दा उतरया भार, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। निरगुण सतिगुर सरगुण जाए तार, गुर मिल्या सहिज सभाईआ। जैदेव वेखे आपणा दुआर, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरा कर्ज ना सकां मैं उतार,

कीमत कोए ना तेरी चुकाईआ। पुरख अबिनाशी फड़ फड़ बांहों दए प्यार, हरिभगत तेरी वड वड्याईआ। मैं भगत तूं शाह सिक्दार, तेरा भण्डारा मुक्क कदे ना जाईआ। जुग जुग आवां चल दुआर, भगतन मीता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जैदेव हरि दर्शन पाया, आत्म सांत कराईआ। एका अक्खर नज़री आया, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। त्रै त्रै डाल् पत डाली आप महिकाया, आपणे रंग रंगाईआ। जड़ चेतन ना कोए जणाया, साची जड़ आप लगाईआ। अग्गे खड़ प्रभ दरस दिखाया, देवणहार वड वड्याईआ। साचा नाता जोड़ जुड़ाया, आप आपणी गंढु पुवाईआ। ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाया, अध विचकार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। जै देव दर्शन हरि हरि, घर आपणे मंगल गांयदा। काया मन्दिर गया वड़, आपणा कुंडा आपे लांहयदा। आपणे पौड़े वेखे चढ़, निरगुण नज़री आंयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, हथ्थ मूंह नक्क पैर ना कोए वखांयदा। आपणी धार ल्ए फड़, आपणे अंग लगांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, हरिभगतां आप पढ़ांयदा। सरन सरनाई गया पड़, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत खेड़ा आपे वेख वखांयदा। जै देव हरि हरि मीता, हरि हरि संग निभाया। पाया पुरख प्रभ अनडीठा, घर साचे वेख वखाया। अबिनाशी करता वस्सया चीता, जगत विछोड़ा आप कटाया। आदि जुगादी ठंडा सीता, रंग रंगीला मोहन माधव एका रंग रंगाया। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावन वड वड्याआ। एका रुत्त सहाया साचा गीता, राम शाम नाम राम एका नज़री आया। नाम निधाना एका पीता, अंमिउँ रस अमृत जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सच वसाया दर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। जै देव दर्शन पा, हरि साचे आख सुणांयदा। तूं दाता हरि बेपरवाह, दर तेरा मोहे भांयदा। तूं निरगुण बैठा जोत जगा, हउँ सरगुण पंज तत्त काया चोला हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा विछोड़ा मोहे ना भांयदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान, जै देव आख सुणाईआ। मानस जन्म करे तेरी कल्याण, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम कर प्रधान, तेरा तत्त दए उपजाईआ। तेरी रत्त वखाए इक्क निशान, साचा बूटा मात लगाईआ। तिन्ने डाल् कर प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत डाली लेखे लाईआ। त्रै डाल् उपजाए साचे सुत्त, इष्ट दृष्ट एका पाईआ। आपे गुरदास दास करे ख्याल, आपणी भाल आप कराईआ। आपे सास ग्रास करे प्रितपाल, निज निवास आप धराईआ। आपे मण्डल पावे रास, गोपी काहन आप अख्वाईआ। आपे वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल आप सुहाईआ। आपे वसे

सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे कलिजुग वेखे प्रभास, साचा बूटा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रै डाहन मौलया फुल्ल, फुल फुलवाड़ी आप लगाईआ। पुरख अबिनाशी खिलाया गुल, आपणी पंखड़ी वेख वखाईआ। आपे मालण बण बण रिहा मौल, आपणी इच्छया विच भराईआ। आपे तोले आपणे तोल, आपणा कंडा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। त्रै डाल्ह करन पुकार, जै देव अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी किरपा होए पार, पुरख अबिनाशी अक्खर लिख्या बेपरवाहीआ। साढे तिन्न तिन्न करोड़ पत होया उज्यार, सो पुरख निरँजण वज्जी वधाईआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, हउँ आए चल सरनाईआ। जै देव करे विचार, नेत्र एका नैण उठाईआ। दोहां विचोला बणे आप करतार, करे बेनन्ती सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी सुनणेहार, घर बैठा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी खाणी आप चलाईआ। जेरज खाणी उत्भुज धार, दोहां मेल मिलांयदा। पुरख पुरखोतम कर त्यार, आप आपणे रंग रंगांयदा। कलिजुग आया विच संसार, हरि साचा वेस वटांयदा। सिँघ पाला कर विचार, शब्द दलाला नाल रलांयदा। फल डाल्हा अपर अपार, गुर करता आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। पूर्ब लहिणा झोली पाया, हरि साचा भुल्ल ना जाईआ। कलिजुग फुल अन्त आप खिलाया, चारों कुन्ट आप महिकाईआ। आपणी कीमत आपणा मुल आप पवाया, दूसर हट्ट ना किसे वकाईआ। साची कुल भाग लगाया, पूत सपूता लए उपजाईआ। सिँघ लछमण नाम धराया, दर्शन मेला हरि रघुराईआ। प्रगट हो प्रगट नाम धराया, भुल्ल रहे ना राईआ। चौथा अंक ना नाल रलाया, तिन्नां लेखा सहिज सभाईआ। दर बैठा पंछी जो सुण सुण रिहा ध्यान लगाया, मन इच्छया इक्क वखाईआ। चौथे सुत जन्म दवाया, प्रभ आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे तिन्न करोड़ डाल्ही पत, इक्क इक्क डाल्हे लए रक्ख, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। साढे तिन्न करोड़ पत डाल्ही, पंज तत्त मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी खेल निराली, भेव किसे ना पाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, जन भगतां संग निभाया। आपणे हथ्थ रक्खे खाली, हरिभगतां भगत भण्डार वखाया। निरगुण जोत अकाल अकाली, अकल कला वड्याआ। दो जहानां साचा माली, लक्ख चुरासी बूटा आप लगाया। जुगा जुगन्त करे प्रितपाली, प्रितपालक नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे तिन्न करोड़ वस्सया रोम रोम, आप आपणा रूप वटाया। साढे तिन्न करोड़ रहे पुकार, सो पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। हँ हँगता मिटी संसार, हँ ब्रह्म इक्क जणाईआ। सोहँ

शब्द जै जै जैकार, जन साचे रहे गाईआ। सिँघ पाला ना कोई विचार, भोले भाउ मेल मिलाईआ। सुरत शब्द ना कोई धार, सुरती सतिगुर हथ्थ उठाईआ। जोग अभ्यास ना कोए संसार, सर्ब गुण तास मेल मिलाईआ। आस निरास भरे भण्डार, स्वास स्वास लेखे लाईआ। तेरा नाम सच्ची दस्तार, हरि निरँकार सीस बंधाईआ। तेरा सति हरी प्यार, हरि हरि हरी गुण गाईआ। तेरा रंग चढ़े संसार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा दित्ता उतार, अगला कर्ज़ा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दे मति रिहा समझाईआ। वड्डा मीत वड बलवाना, वड्डा वड वड्यांअदा। भुल्लया नाम इक्क छिन्न गुण निधाना, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। शब्द अगम्मी मारे तीर निशाना, तीर निराला आपणे हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा वेख वखांयदा। साचे घर हरि विचोला, एका एक बणांयदा। सिँघ बिशन सुणाए साचा ढोला, आपणा भेव खुल्हांयदा। जै दयो तेरा सच्चा बोला, हरि साचा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भुलेखा आप कढांयदा। जगत भुलेखा हरि कढाउणा, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। तेरा लिख्या लेख मिटाउणा, तेरी तृष्ना जगत बुझाईआ। पिछला वेला याद कराउणा, ना लेखा कोए लिख सके जीव राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२२२ कर, तेरी काया गठड़ी फोल फुलाईआ। पूर्ब लहिणा हरि किरपा धारी, पिछले जन्म वज्जे वधाईआ। घर आया चल आप निरँकारी, फड़ बांहों लए उठाईआ। भरया नाम शब्द भण्डारी, तोट रहे ना राईआ। घर माया दब्बी कर विचारी, आपणा पल्ला इक्क वखाईआ। दो सद पचास डूँघी गारी, बरत्न एका एक पाईआ। जांदी वार आई हँकारी, मन फुरना वाशना विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा दए चुकाईआ। पिछली वाशना पूरा घाटा, कलिजुग अन्तिम आप करांयदा। सम्मत सोलां वीह सौ बिक्रमी तेरी माया हरिसंगत आटा, छब्बी पोह लेखे लांयदा। साध संगत लेखा चुक्के दूर वाटा, अगला पन्ध ना कोए वखांयदा। पत्त डाल्ही जगे जोत जोत ललाटा, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सिँघ बिशन फड़ाया आपणा लड़, पल्लू एका एक बंधांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यान, आप आपणा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटांयदा।

१२२३

✪ २३ कत्तक २०१६ बिक्रमी नसीब सिंघ दे घर बोपा राए ज़िला जलन्धर ✪

सो पुरख निरँजण आदि अन्त, हरि हरि आपणे रंग रंगांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। एकँकारा बणाए साची बणत, दर घर साचा आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी बण बण कन्त, साची सेज हंढांयदा। श्री भगवान आप उपाए आपणा मंत, आपे नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। विष्नूं चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम रंगीला इक्क अख्वांयदा। ब्रह्मा देवे एका वस्त, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म झोली पांयदा। शंकर लाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा इकउँकारा, आदि जुगादी कर पसारा, त्रैगुण साची रचन रचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव धार, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि जोत निरँजण दए सलाहीआ। इकउँकारा खेल न्यार, श्री भगवान आप खिलाईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, पारब्रह्म प्रभ संग निभाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर पसार, विष्नूं लेखा इक्क समझाईआ। ब्रह्मा बख्शे एका धार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शंकर बख्शे इक्क प्यार, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। त्रैगुण दिसे आर पार, त्रैगुण दाता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ। त्रैगुण रहित पुरख अकाल, एका रंग समांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सुरत रिहा संभाल, आप आपणा संग रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो दयाल, दीन दयाला नाउँ धरांयदा। श्री भगवान खेल महान, पुरख अबिनाशी वेस वटांयदा। इकउँकारा हो प्रधान, आप आपणी रचन रचांयदा। पुरख निरँजण जाणी जाण, जानणहारा भेव छुपांयदा। सो पुरख निरँजण सच निशान, सच साचा हथ्थ उठांयदा। सचखण्ड दुआरे हो प्रधान, सच तख्त सुल्तान आपणा आसण लांयदा। अगम्म अगम्मड़ा खेल महान, अलख अलखणा आप करांयदा। शाहो भूप वड राज राजान, दर घर साचे सोभा पांयदा। मन्दिर सुहाए इक्क मकान, थिर घर वासी थिर दरबारा वेख वखांयदा। जोत प्रकाश गुण निधान, दीवा बाती कमलापाती घर आपणे आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनभव प्रकाशा पुरख अबिनाशा खेल तमाशा मण्डल रासा दर आपणे आप सुहांयदा। दर सुहञ्जणा पुरख करतार, एका रंग रंगाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, जोत सरूपी डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण भर भण्डार, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। एकँकारा दए अधार, श्री भगवान करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, पारब्रह्म प्रभ सगला संग निभाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दए आधार, विष्नूं आपणा वंस सुहाईआ। शंकर मेला इक्क दुआर, घर साचा इक्क बुझाईआ। ब्रह्मा हरि हरि भरे भण्डार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण लेखा अपर अपार, रजो तमो सतो नाल रलाईआ। राजस

तामस सांतक एका धार, हरि साचा वेख वखाईआ। ब्रह्म कर त्यार, हरि लेखा दए जणाईआ। आप आपणी किरपा कर निराकार, साकार रूप वटाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, सरगुण मेला सहिज सभाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, निज घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोत उजाला हरि गोपाला निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि शक्ति खेल महाना, देव देवा रूप वटाईआ। पुरख अगम्मड़ा अवल्लड़ी चाला, पुरख अकाला आप रखाईआ। साचे मन्दिर दीपक बाला, घट घट करे रुशनाईआ। अमृत सर सरोवर भरया ताला, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि करतार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। सन्त सुहेले कर त्यार, साची सिख्या सिख समझांयदा। एका नाम शब्द जैकार, साचा नाअरा आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ वड्यांअदा। जुग जुग वड्डा नाउँ हरि करतार, सो पुरख निरँजण आप उपाया। हरि पुरख निरँजण बोल जैकार, एकँकारा डंक वजाया। आदि निरँजण बन्ने धार, श्री भगवान होए सहाया। पुरख अबिनाशी नौजवान, ना मरे ना जाया। पारब्रह्म वाली दो जहान, ब्रह्मा मेला सहिज सभाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवे इक्क ज्ञान, एका भिच्छया झोली पाया। आपणा मन्त्र नाम कर प्रधान, लक्ख चुरासी दए सुणाया। भगत भगवन्त इक्क निशान, लोकमात दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। भगत भगवन्त साची धार, आदि जुगादि रखाईआ। सन्तन मीता आप निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां देवे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। गुरसिखां वखाए सच दुआर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, हर घट आपे आसण लाईआ। कमलापाती मीत मुरार, आत्म ताकी खोल्ह खुल्हाईआ। साचा साकी हो त्यार, भर प्याला अमृत जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे नाम करे वड्याईआ। हरिभगत हरी गुण गांवदे, दिवस रैण प्रभात। हरि सन्तन नैण राह तकांवदे, मेट मिटायण अन्धेरी रात। गुरमुख एका रंग रंगांवदे, उत्तम होई एका ज़ात। गुरसिख निउँ निउँ सीस निवांवदे, लेखा जाणे पिता मात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सगला साथ। हरिभगत वड्याई धन्न, सतिगुर पुरख मनाया। हरि सन्त वड्याई धन्न, घर मन्दिर दीप जगाया। गुरमुख वड्याई धन्न, अज्ञान अन्धेर चुकाया। गुरसिख वड्याई धन्न, गुर सतिगुर दर्शन पाया। सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्न्ह, लक्ख चुरासी पार कराया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाया। हरिभगतन मीता इक्क

भगवान, दूसर संग ना कोए रखाईआ। सन्तन देवे धुर फ़रमान, धुन अनादी शब्द जणाईआ। गुरमुख मेला वाली दो जहान, घर वज्जदी रहे वधाईआ। गुरसिख मीता चतुर सुजान, देवे दरस बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त भगत भगवन्त, गुरमुख गुरसिख मेला नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। भगतन अन्दर वस्सया, पारब्रह्म गुर करतार। हरि सन्तन मार्ग एका दस्सया, बजर कपाटी खोल्ह किवाड़। गुरमुखां पिछे फिरे नस्सया, आदि जुगादी लै अवतार। गुरसिख करे प्रकाश कोटन रवि सस्सया, लहिणा देण चुकाए धूंआँधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि धुन अनादि वजाए सच्चा जैकार। जै जैकारा हरि भगवन्त, जै जै देव इष्ट देव मनाईआ। पूरन जोत श्री भगवन्त, हरिभगतन वेखे थाउँ थाँईंआ। लेखा जाणे साध सन्त, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। गुरमुखां बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार वड वड्याईआ। गुरसिख उपजाए विच्चों जन्त, जन जनणी लेखे लाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगत, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुर चेले पार कराईआ। हरि भगवन्त भगतन मीता, आदि पुरख एकउँकारया। सन्त सुहेला ठंडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए जला रिहा। गुरमुखां जणाए आपणी रीता, साची सिख्या सिख समझा रिहा। गुरसिखां देवे नाम अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आ रिहा। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठा, जिस जन आपणा दरस दिखा रिहा। सुरत सवाणी राम प्रनाए साची सीता, शब्द हाणी मेल मिला रिहा। एका माण रखाए अठारां ध्याए गीता, एका बंसरी आप सुणा रिहा। साचा मन्दिर गुरुदुआर वखाए मसीता, काया काअबा हट्ट खुल्हा रिहा। करे कराए पतित पुनीता, पतित पापी आप तरा रिहा। जन भगतां वस्सया सद सद चीता, घर मन्दिर सोभा पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिला रिहा। जुग जुग खेले खेल करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर वंड वंडाईआ। चौथे युग पावे सार, कलिजुग वेखे कूड़ी शाहीआ। चारों कुन्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। शाह सुल्तान गए हार, राज राजान ना वड वड्याईआ। वेद कतेब रहे पुकार, शास्त्र सिमरत देण दुहाईआ। अञ्जील कुराना कूकां रहे मार, अल्ला हू हू नाअरा लाईआ। कोए ना सुणे किसे पुकार, चौदां तबक राह तकाईआ। पंच विकारा मारे मार, नौ दर घर घर पई लड़ाईआ। ना कोई दिसे संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी नैण शरमाईआ। ना कोई सहाई बेऐब परवरदिगार, मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर देण गवाहीआ। उच्च महिराब ना हुजरा ना कोई कूके कूक सुणाए पुकार, बांग आजान ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सो पुरख निरजंण पावणहारा

सार, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करतारा, करनी करता आप करांयदा। जन भगतां भरे नाम भण्डारा, हरि सन्तन सेवा लांयदा। गुरमुखां देवे इक्क अधारा, एका बूझ बुझांयदा। गुरसिखां कराए साचा वणज वणजारा, साचे हट्ट विकांयदा। कलिजुग जीव कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट कूड़े धन्दे लांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तृष्ना मेल मिलांयदा। नाता तुट्टा मीत मुरारा, भैणा भईआ संग छुडांयदा। मात पित ना करे प्यारा, साचा हित ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। कलिजुग कूड़ी धार, चार कुन्ट रही कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका अखाड़, कूड़ी क्रिया आपणा नाच रही वखाईआ। जगत तृष्ना रही साड़, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मगर लग्गी पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, दिवस रैण रही तपाईआ। साचे पौड़े कोई ना देवे चाढ़, वरनां बरनां पई लड़ाईआ। अमृत मिले ना ठंडी ठार, अठसठ तीर्थ बैठे मुख भवाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद धीआं भैणां करन वापार, इष्ट देव ना कोए जणाईआ। पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा, जुग जुग पावणहारा सार, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपे वेख वखाईआ। प्रगट होवे वड बलकार, सूरबीरा नाउँ धराईआ। खड़ग
१२२६ खण्डा तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे विचार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। १२२६
०८ ०८
भेख पाखण्ड दए नवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। मनमुख जीव वहाए वहिंदी धार, शौह दरयाए आप रुढ़ाईआ। गुरसिख साचे लाए पार, एका नईआ नाम चढ़ाईआ। गुरमुखां देवे शब्द अधार, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हरि सन्तन पाए आदि जुगादी सार, सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वाईआ। भगत भगवन्त कर उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग कूड़ा कर ख्वार, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। ना कोई दीसे नार विभचार, साची सखीआं मेल मिलाईआ। मंगलाचार गायण आपणी वार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। पाया कन्त हरि हरि भतार, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख नारी कर श्रृंगार, नेत्र नैण रही मटकाईआ। आत्म सेजा ख़बरदार, आलस निन्दरा रही मिटाईआ। साचा मीता भुजां रिहा पसार, चतुर्भुज वड वड्याईआ। ठांडा सीता बख्शे अमृत धार, आत्म रस आप चखाईआ। एका सेज सुहाए हरि करतार, करनी करता आपणी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन मेला एका घर हरि सन्त वेखे आपे खड़, गुरमुख घोड़े जायण चढ़, गुरसिख बंधाए आपणे लड़, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरसिख साचे पौड़े चढ़या, हरि साचे आप चढ़ाया। गुरमुख आपणे अन्दर वड़या, दूसर संग ना नाल ल्याया। सन्तन साचा घाड़न घड़या, निरगुण सरगुण

मेल मिलाया। हरिभगत भगवन्त ना कोई सीस ना कोई धड़या, निरगुण जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा संग आप निभाया। साचा संग भगत भगवान, आदि जुगादि निभांयदा। सन्तन मेला वाली दो जहान, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। थिर घर वासी गुण निधान, गुरमुख आपणे अंग लगांयदा। गुरसिख बणाए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़े आपणे धन्दे लांयदा। आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञान, दृष्ट इष्ट इक्क वखांयदा। एका राग सुणाए कान, धुन अनादी अनहद ताल वजांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। पवण पाणी सभ सेव कमाण, जो जन हरि सरनाई आंयदा। जोत निरँजण करे प्रकाश कोटन भान, दीवा बाती ना कोए जगांयदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, बोध अगाध आप सुणांयदा। दरगाह साची देवे माण, माण निमाणयां गले लगांयदा। लक्ख चुरासी चुक्के काण, जो जन सतिगुर पूरे दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख आपणे अंग लगांयदा। अंगीकार कर समरथ, आपणे अंग रखांयदा। सदा सुहेला रक्खे दे कर हत्थ, सिर आपणा हत्थ टिकांयदा। देवे नाम वस्त अनमोल वथ्थ, सच समग्री झोली पांयदा। आप चलाए काया रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। लेखा जाणे सीआं साढे तिन्न तिन्न हत्थ, हत्थो हत्थ वंड वंडांयदा। हरि का मन्दिर ना जाए ढठ्ठ, दूसर कोए थिर रहिण ना पांयदा। लेखा जाणे अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणी सेवा आपे लांयदा। आपे खेले खेल मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ, गुरदुआरा गुर गुर नाउँ धरांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लठ्ठ, लक्ख चुरासी आप भवांयदा। आपे खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा सांग रचांयदा। आपे वसणहारा घट घट, घट मन्दिर सोभा पांयदा। गुरमुखां गुरसिखां दुरमति मैल देवे कट्ट, सच सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि हरी हरि आप हो आंयदा। नर हरि हरी नरायण, निरगुण रूप उपाया। गुरमुखां दरस वखाए आपणे नैण, जगत लोचन बन्द कराया। पूर्ब जन्म चुकाए लहिण देण, पिछला लहिणा रहे ना राया। गोबिन्द गीत दर दर घर घर जीव जन्त सारे गायण, नेत्र लोचन दरस किसे ना पाया। नाता बणया मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण नारी कन्त मेल मिलाया। गुरमुख विरले हरि सरनाई ढहि ढहि पैण, झूठा नाता तोड़ तुड़ाया। वेले अन्त नेड़ ना आए लाड़ी मौत डायण, राए धर्म ना दए सज़ाया। सतिगुर पूरा आपणे आए लैण, आपणी गोदी लए उठाया। मनमुख वहिण वहिंदे वहिण, बेड़ा बन्ने ना कोए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिभगत हरि सन्त, गुरमुख गुरसिख गोबिन्द धार शब्द प्यार, जोत निराकार निरगुण आपणे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, सो पुरख निरँजण बणाए बणत, हरि पुरख निरँजण मणीआ मंत, एकँकारा महिमा अगणत, आदि निरँजण श्री भगवन्त, पुरख अबिनाशी खेल खिलंत, पारब्रह्म वेस वटंत, ब्रह्म ब्रह्म लक्ख चुरासी जीव जन्त, विष्न शिव सेवक सेवा आप लगाईआ।

✪ २४ कत्तक २०१६ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर पिण्ड हेर दया होई ✪

हरि सतिगुर पुरख सुजान, पारब्रह्म गुर अवतारया। सो पुरख निरँजण गुण निधान, हरि पुरख निरँजण मीत मुरारया। एकँकारा निगहबान, खेले खेल अगम्म अपारया। आदि निरँजण जोत महान, नूरो नूर डगमगा रिहा। अबिनाशी करता श्री भगवान, घर साचे सोभा पा रिहा। पारब्रह्म प्रभ नौजवान, आप आपणा खेल खिला रिहा। विष्न शिव ब्रह्मा कर प्रधान, साची सेवा सेव लगा रिहा। देवणहारा साचा दान, एका ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म झोली पा रिहा। त्रैगुण माया कर निशान, आप आपणा रंग रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित खेल खिला ल्या। सतिगुर पूरा सति करतार, सति सतिवाद वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण एकँकार, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। आदि निरँजण करे विचार, श्री भगवान सिफ्त सलाहीआ। अबिनाशी करता नौजवान, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ जाणी जाण, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवे माण, चरन कँवल ध्यान रखाईआ। त्रैगुण माया गुण निधान, गुणवन्ता वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल वेस वटाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, एका एक एकँकारया। सो पुरख निरँजण जुगा जुगन्त, हरि पुरख निरँजण करे आप पसारया। आदि निरँजण महिमा अगणत, श्री भगवान भेव ना आ रिहा। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, पारब्रह्म नाउँ प्रगटा रिहा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, निरगुण आपणा अंग कटा रिहा। लक्ख चुरासी जीव जन्त, त्रैगुण साचा संग रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला ल्या। सतिगुर पूरा करता अबिनाश, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण खेले खेल तमाश, हरि पुरख निरँजण रास रचाया। आदि निरँजण निरगुण जोत कर प्रकाश, थिर घर साचा आप सुहाया। पुरख अबिनाशी सचखण्ड दुआरे कर निवास, निरगुण आपणा धाम सुहाया। श्री भगवान आप आपणा होया दास, आपणी सेवा आप कमाया। पुरख अबिनाशी कर अरदास, आपणी झोली आपणे अग्गे डाहया। पारब्रह्म प्रभ सगला साथ, थिर घर वासी आप निभाया। ब्रह्मा विष्न शिव गायण स्वास स्वास, सेवक साची सेव लगाया। लक्ख चुरासी दासी दास, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार एकँकार, अकल कल आपणा नाउँ उपाया। सतिगुर पूरा अकल कल धार, आदि जुगादि समांयदा। एकँकारा कर पसार, आप आपणा वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण बन्ह धार, जोती जोत जोत प्रगटांयदा। हरि पुरख निरँजण अन्दर बाहर, महल्ल अटल सोभा पांयदा। आदि निरँजण खेल अपार, दीवा बाती कमलापाती आपणा आप जगांयदा। श्री भगवान सांझा यार, सगला संग रखांयदा। अबिनाशी करता मीत मुरार, अमरापद इक्क वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणी वंड आप वंडांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए आधार, अन्तर आत्म बूझ बुझांयदा। त्रैगुण माया कर प्यार, राजस तामस सति सति सति वरतांयदा। लक्ख चुरासी भर भण्डार, आत्म ब्रह्म विच टिकांयदा। ईश जीव कर्म विचार, निहकर्मी कर्म वखांयदा। काया खेड़ा नगर ग्राम, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ांयदा। पवण स्वासी पल्ले बन्ह दाम, सच ख़जाना आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, वसणहारा सच महल्ला उच्च मनारा, दिस किसे ना आंयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, दर साचा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण जाणी जाण, घट घट आपणा वेस वटांयदा। हरि पुरख निरँजण निगहबान, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। आदि निरँजण सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलांयदा। पुरख अबिनाशी करे ध्यान, दर दुआरा वेख वखांयदा। श्री भगवान पाए आण, आपणा हुक्म आप चलांयदा। पारब्रह्म देवे माण, ब्रह्म आपणा संग रखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पाए माण, दूसर हुक्म ना कोए जणांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, लोकमाती वेस वटांयदा। पुरख अबिनाशी चतुर सुजान, घर मन्दिर सोभा पांयदा। मन्दिर अन्दर सच मकान, घर घर विच आप उपांयदा। जोत निरँजण जगत निशान, दीवा बाती इक्क टिकांयदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कान, राग अनादी आप अलांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव कोए ना पांयदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह पारब्रह्म अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, जुग जुग आपणा मार्ग लांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, घर घर विच डेरा वखांयदा। निरगुण आपणा नाउँ धरा, नाउँ निरँकारा आप उपजांयदा। लोआं पुरीआं वेख वखा, रवि ससि शब्द जणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी जोत जगा, नूरो नूर डगमगांयदा। वरभण्डी हरि रचन रचा, जीव जन्त वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी संग निभा, घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वसे एका घर, घर साचा आप सुहांयदा। निरगुण पुरख अकाल, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। सरगुण दाता दीन दयाल, पंज तत्त डेरा आपे लाईआ। निरगुण रूप शाह सुल्तान, सचखण्ड निवासी सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ।

१२२६
०८

सरगुण रूप श्री भगवान, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण नूर नूर महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सरगुण मेला विच जहान, कमलापाती वेख वखाईआ। निरगुण दाता दानी वड मेहरवान, साची वस्त इक्क रखाईआ। सरगुण मंगे धुर दरबार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। बण विचोला गुण निधान, आपणा मेला दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती मेला शब्दी चेला, गुर सतिगुर रूप वटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सज्जण सुहेला, सगला संग रखांयदा। वसणहारा धाम नवेला, पंज तत्त आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। निरगुण हरि निरँकार, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, आदि निरँजण जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान कर प्यार, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। ब्रह्म मीता दए अधार, लोकमात वेख वखाईआ। ठांडा सीता निझर धार, अमृत अंमिउँ रस झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त वेखे सहिज सभाईआ। पंज तत्त मेला गुण निधान, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ांयदा। काया मन्दिर सच मकान, थिर घर वासी आसण लांयदा। साचा राग शब्द धुनकान, अनहद एका राग अलांयदा। चौदां हट्ट वखाए इक्क दुकान, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। सच वखाए पद निरबान, परमानंद आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आप बुझांयदा। निरगुण सरगुण बूझ बुझाए, आप आपणा पर्दा लाहीआ। काया चोली रंग चढ़ाए, उतर कदे ना जाईआ। दर दरवाजा इक्क खुल्हाए, आप आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निवाजा भेव चुकाए, हउमे रोग रहे ना राईआ। अनहद वाजा इक्क वजाए, राग अनादी एका गाईआ। अस्व घोड़ा ताजा इक्क वखाए, शब्द अगम्मी आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त झोली पाईआ। सच वस्त हरि नाम अनमोल, निरगुण सरगुण झोली पांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपणे कंडे तोल, तोलणहारा एका तोल तुलांयदा। श्री भगवान पर्दा खोल्ह, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। पुरख अबिनाशी वजाए ढोल, काया मन्दिर अन्दर मृदंगा इक्क वजांयदा। सो पुरख निरँजण अमृत आत्म बख्शे पौल, भर प्याला जाम प्यांअदा। हरि पुरख निरँजण वसे सदा कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। एकँकारा आदि अन्त रहे अडोल, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण दए वर, वर दाता नाउँ धरांयदा। वर दाता हरि मेहरवाना, गहर गम्भीर समाया। जन भगतां देवे साचा दाना, नाम खज़ाना झोली पाया। दो जहानां बीना दाना, दर दरवेशा वेस वटाया। अमृत आत्म पीणा खाणा, सच भण्डारा आप भराया। एका रंग रंगाए मरना जीणा, जीवण मरन निर्भय वखाया। लेखा जाणे

लोकां तीनां, मात पताल आकास होए सहाया। जन भगतां करे ठांडा सीना, निरगुण आपणा दरस दिखाया। बुझाए प्यास जिउँ जल मीना, सांतक सति कराया। हरिभगत लक्ख चुरासी विच्चों वक्ख कीना, आपणी भगती आपे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण मेला साचे घर, सरगुण साचा वेख वखाया। निरगुण दाता हरि बेअन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, साची सिख्या सति समझाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, घर वज्जदी रहे वधाईआ। नाम चढ़ाए चोली रंग बसन्त, साची कलीआ आप रंगाईआ। जगत जहान बणाए बणत, बण बनवारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सन्तन डेरा लाईआ। सन्तन अन्दर निरगुण वस्सया, बेअन्त बेपरवाह। आदि जुगादी मार्ग साचा दस्सया, पकड़ उठाए हरि हरि बांह। दो जहानां फिरे नस्सया, सतिगुर पूरा बण मलाह। तीर निराला एका कस्सया, शब्द निशाना देवे ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्त जपाए एका नाँ। सन्तन बेड़ा पार कर, गुरमुख संग निभांयदा। गुरमुख मीत मुरार कर, घर सुहञ्जणा सोभा पांयदा। दासी दास करतार हरि, हरि सज्जण वेख वखांयदा। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणे अंग लगांयदा। आवण जावण चुक्के डर, जिस जन सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आपणे घाड़न लए घड़, भन्नणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा आप समझांयदा। गुरमुख लेखा लेख अपार, वेद कतेब भेव ना राईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र चारे मुख कूके करे पुकार, दिवस रैण रिहा गाईआ। शास्त्र सिमरत वाजां रहे मार, पुराण अठारां देण गवाहीआ। गुरमुख तेरा रूप अपार, लिख्त लेख विच ना कोए बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। गुरसिख हरि आप जगाए, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। आपणा वेस आप वटाए, दर दरवेश फेरी पाईआ। नर नरेश भेव ना राए, गणपति गणेश बैठे सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा रहे ध्याए, दिवस रैण एका गुण गाईआ। गुरमुखां दुआरे फेरी पाए, गुरसिख साचे वेख वखाईआ। गुरसिख तेरी वड वड्याए, तेरा लहिणा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उज्जयाला हरि गोपाला दीन दयाला दयानिध ठाकर अबिनाशी करता नाउँ रखाईआ। गुरमुख सूरा वड बलवान, हरि सतिगुर आप उपांयदा। गुरसिख साचा चतुर सुजान, दर घर साचा वेख वखांयदा। शब्द सरूपी सति ज्ञान, सति सतिवादी आप दृढ़ांयदा। काया तोड़ माण अभिमान, माया ममता मोह चुकांयदा। शब्द अनादी धुर फ़रमान, हरि साचा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख पेखत हरि निरँकार, दर साचा आप सुहाईआ। गुरसिख भरे नाम भण्डार, देवणहार

तोट ना राईआ। आदि जुगादी बण वरतार, लोकमात सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनार, भगत वछल वड्डी वड्याईआ। धू प्रहलाद करया पार, बल बावन रंग चढ़ाईआ। अमरीक दुरबाशा कर ख्वार, जनक वज्जी वधाईआ। हरी चन्द दए आधार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। बिदर सुदामा कर कर पार, घर साचे वेख वखाईआ। द्रोपद सुत्त कर प्यार, लज्जया रक्खे बेपरवाहीआ। नामा जै देव विच संसार, सारंगधर भगवान बीठला नेत्र नैण दर्शन गए पाईआ। कबीर सैण कर पुकार, दिवस रैण रहे ध्याईआ। बेणी नैणी खेल अपार, घर मेला सहिज सुभाईआ। रविदास चमारा तन शृंगार, काया अल्फ़ी एका पाईआ। पापन पूतना लाई पार, बधक आपणे अंग समाईआ। गनका पापण दए आधार, अजामल तारे वेखे थाउँ थाँईंआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, नर नरायण आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निहकलंका नाउँ धराईआ। गुरमुख साचे लए उभार, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग माया पर्दा रिहा पाईआ। बिन सतिगुर कोए ना उतरे पार, नानक गोबिन्द दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल हरि रघुराईआ। गुरसिख साचा मीतड़ा, हरि सज्जण वेख वखाया। पाए धाम इक्क अनडीठड़ा, सचखण्ड निवासी डेरा आपणा लाया। काया चोली रंगे चीथड़ा, पंज तत्त दुरमति मैल गंवाया। आप

१२३२ आपणे जेहा कीतड़ा, एका दूजा भउ मिटाया। मिट्ठा करया कौड़ा रीठड़ा, आत्म दरसी दरस दिखाया। गुरसिख सदा सद १२३२

०८ ठंडा सीतड़ा, अग्नी तत्त ना लग्गे राया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण दासी निरगुण आप मीतड़ा, चित वित ०८

ठगौरी कोए ना पाया। कोटन कोटि जन्म दे विछड़े कर कर मेले करे पतित पुनीतड़ा, पतित पावन आपणा नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे देवे वर, वर घर साचा इक्क वखाया। वर घर साचा कन्त भतार, गुरमुख सच करे कुड़माईआ। सति सन्तोखी सच प्यार, सति सतिवादी आप वखाईआ। बस्त्र भूषन कर त्यार, शब्द गहिणा तन पहनाईआ। नाम निधाना कज्जल धार, नेत्र नैण आप मटकाईआ। मेंढी गुंदे विच संसार, हरि साची सेव कमाईआ । लाल गुलाला रंग चाढ़े अपर अपार, लाल मैहन्दी रही शरमाईआ। साची धर्मसाला काया मन्दिर कर त्यार, सीस जगदीस दए निवाईआ। जोती माता हो त्यार, साचा सगन लए मनाईआ। अमृत वारे ठंडा ठार, मुख प्याला इक्क लगाईआ। सखीआं मंगल गायण वारो वार, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। वज्जे ताल हरि निरँकार, बहत्तर नाड़ा ताल तलवाड़ा अनहद आप वजाईआ। साचे घोड़े देवे चाढ़, मौली मैहन्दी आपणे हथ्थ वखाईआ। गुरमति भाबी कजला पाए आपणी वार, घर साचे सोभा पाईआ। साची संगत भैणां भईया करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, गुरमुख साचे लए वर, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरमुख साचा अंग लगाया, हरि सतिगुर दया कमांयदा। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, चार दीवार ना कोए रखांयदा। छप्पर छन्न ना कोए उपाया, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारों दिशा दरवाजा किसे दिस ना आया, बिन सतिगुर ना कोए खुल्हांयदा। साचा पौड़ा इक्क चढ़ाया, आपणी हथ्थीं डण्डा लांहयदा। दूई द्वैती पर्दा जगत घूँगट आप चुकाया, आपणा दरस आप दिखांयदा। उच्च महल्ल अटारी रिहा सुहाया, निज आत्म खेल खिलांयदा। साची सेजा सोभा पाया, फूलन बरखा आप लगांयदा। गुरमुख सुरत सवाणी शब्द मिल्या साचा हाणी, वाह वाह मंगल एका गांयदा। दर घर मिल्या ठंडा पाणी, जुगां जुगां दी लग्गी प्यास सतिगुर पूरा आप बुझांयदा। आवण जावण चुक्की काणी, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। गुरमुख पढ़े एका बाणी, प्रभ साचा आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी दिसे फानी, थिर कोए रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाजा आप सुहांयदा। दर दुआरा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। गुरमुख विरला वेखे सन्त, दूसर हथ्थ किसे ना आया। लक्ख चुरासी जीव जन्त, जूनी जून रिहा फिराया। गुरसिख तेरी महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोई राया। वर घर पाया हरि हरि कन्त, घर साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाया। साचा मन्दिर सचखण्ड दुआर, हरि साचा आप सुहाईआ। भगतां मेले कर प्यार, सुन्न अगम्मी पार कराईआ। सन्ता बख्शे इक्क अधार, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। गुरमुख फड़ फड़ बांहों जाए तार, नित नवित्त सेव कमाईआ। गुरसिखां करे सच श्रृंगार, साची सेवा आप कमाईआ। लेखा लिख लिख जाणे धुर दरबार, धुर मस्तक वेख वखाईआ। कोटन कोटी कोटि रहे पुकार, प्रभ का दरस कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी गोद उठाईआ। गुरसिख बाल अञाणा बाली बुध, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जन भगतां करे कारज सुध, अकल कल रूप वटाईआ। हरि सन्तां भेव खुल्हाए गुझ, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुखां सच दुआरा जाए सुझ, मनमुख बैठण मुख भवाईआ। गुरमुख चरन प्रीती जायण लुझ, लंका हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। वेखणहार पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। जन भगतां देवे साची वथ्थ, नाम रत्न अमोलक हीरा झोली पाया। सन्तन जणाई साची गथ, मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ाया। गुरसिखां सगल विसूरे जायण लथ्थ, स्वच्छ सरूपी दर्शन पाया। गुरमुख मेला दर घर साचे इक्क इक्ठ, चरन

१२३३
०८

दुआरा इक्क वखाया। मेल मिलावा नठ्ठ नठ्ठ, दो जहानी फेरा पाया। कलिजुग बुरज रिहा ढठ्ठ, नदी किनारे रुखड़ा आप वखाया। लहिणा चुक्के अठसठ, अमृत जल नीर ना कोए वहाया। गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां हरि सन्तां साचा मार्ग देवे दस्स, वरनां बरनां भेव चुकाया। ऊँचां नीचां रक्खे दे कर हथ्थ, सो पुरख निरँजण वेस वटाया। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राया। आदि निरँजण हो प्रगट, जोत निरँजण रिहा जगाया। पुरख अबिनाशी वसणहारा घट घट, घट मन्दिर वेख वखाया। श्री भगवान खुल्हाए साचा हट्ट, चौदां लोक चौदां तबक त्रैभवण धनी आपणा नाउँ उपाया। पारब्रह्म खेले खेल बाजीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। चतुर्भुज गेड़ उलटी लट्ट, चारे कुन्टां वेख वखाया। चौथां युग रिहा नठ्ठ, वेले अन्त ना कोए सहाया। विष्नूं पूरा करे ना कोई घाट, प्रभ वेखे रिज़क सबाया। ब्रह्मा लेखा जाणे आण बाट, लक्ख चुरासी मात गर्भ फेरा पाया। शंकर उतारे आपणे घाट, शिव साची सेव कमाया। त्रैगुण माया बस्त्र रिहा पाट, साची गंढु ना कोए बंधाया। पंज तत्त ना विकणा किसे हाट, करता कीमत कोए ना पाया। हरिभगतां मेला सगला साथ, साचे सन्तन ल्ए तराया। गुरमुख लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब वेखण आपे आया। गुरसिख चढ़ाए साचे राथ, सो पुरख निरँजण दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि हरी नरायण आप अख्वाया। हरि नरायण बेऐब परवरदिगार, नूर नूर नूर अलाहीआ। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक इक्क खुदाईआ। ख़ालक ख़लक कर पसार, ख़लक ख़ालक वेख वखाईआ। सालस बण विच संसार, सच सालसी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण हरी हरि वड्डी वड्याईआ। हरी हरि निरगुण सरगुण, विष्नूं भगवान नाउँ धराया। गुरसिख मेले चुण चुण, आप आपणी दया कमाया। गुरमुखां पुकार सुण सुण, सिर आपणा हथ्थ रखाया। सन्तां जाणे साचा गुण, गुण अवगुण गुणवन्ता वड वड्याआ। भगतां सुणे नाद धुन, धुन आत्मक आप वजाया। लक्ख चुरासी छाण पुण, चौथे युग चारे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सन्तोख इक्क ज्ञान, पुरख अबिनाशी चरन ध्यान, दो जहानी देवे माण, आवण जावण चुक्के काण, राए धर्म ना दए सज़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपणे दर करे परवान, दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड दुआरे सच निशान, हरिजन जन हरि साचे आप झुलाया।

✪ २५ कत्तक २०१६ बिक्रमी रत्न सिँघ दे घर पिण्ड नूर पुर ज़िला जलन्धर ✪

एकँकार पुरख अगम्मड़ा, आदि जुगादी गुर अवतार। सो पुरख निरँजण वेस वटंदड़ा, अजूनी रहित खेल अपार। हरि पुरख निरँजण आपणा नाउँ उपजंदड़ा, नाउँ निरँकारा धर निरँकार। आदि जुगादि जोत जुगन्दड़ा, नूरो नूर उज्यार। अबिनाशी करता धाम सुहंदड़ा, सचखण्ड वसे इक्क दुआर। श्री भगवान भेख वटंदड़ा, थिर घर वासी एका धार। पारब्रह्म भेव खुलंदड़ा, आप आपणी कर विचार। विष्नूं आपणा अंक सुहंदड़ा, अंगीकार कर करतार। ब्रह्मा ब्रह्म वेस वखंदड़ा, निरगुण निरगुण बन्ने धार। शंकर दीपक इक्क जगन्दड़ा, कर कर आपणा सच प्यार। त्रैगुण माया मेल मिलंदड़ा, पंज तत्त भरे भण्डार। लक्ख चुरासी बणत बणंदड़ा, वेखे विगसे कर विचार। घर घर विच मण्डल रास रचन्दड़ा, जोत निरँजण हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। एकँकार पुरख सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, दूसर संग ना कोए रखाईआ। हरि पुरख निरँजण देवे दान, सति भण्डारा आप वरताईआ। आदि निरँजण खेल महान, जुगा जुगन्तर डगमगाईआ। श्री भगवान सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। अबिनाशी करता खेल महान, खेलणहारा दिस ना आईआ। पारब्रह्म वाली दो जहान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर प्रधान, आपणी कल आप वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव पाए आपणी आण, एका हुक्म सुणाईआ। त्रै त्रै मीता खोल्ह दुकान, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। एकँकारा अलक्ख अलक्खणा, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। सो पुरख निरँजण हो प्रतक्खणा, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। हरि पुरख निरँजण महिमा कथ अकथणा, कथनी कथ ना कोए सुणांयदा। आदि निरँजण सर्ब कल समरथणा, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। श्री भगवान चलाए रथना, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। अबिनाशी करता सगला सथना, सगला संग आप निभांयदा। पारब्रह्म आपे भाण्डे भरे आपे करे सक्खणा, ब्रह्म जोत आप जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ झुकायण मथना, तिलक ललाटी चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे घर सुहांयदा। एकँकारा सोहे घर घर सुहञ्जणा, निरगुण आपणा आप उपाया। सो पुरख निरँजण मीत मुरारा सज्जणा, घर साचे मेल मिलाया। हरि पुरख निरँजण दर दुआरे आपणे बहि बहि आपे सजणा, इक्क महल्ल अटल आप रखाया। आदि निरँजण आपणे नेत्र पाए आपणा कजला, आपणा नैण आप खुल्हाया। पुरख अबिनाशी दर आपणे करे आपणा मजना, आपणा तीर्थ आपे नाहया। श्री भगवान रक्खे लज्जना, लाजावन्त बेपरवाहया। पारब्रह्म इक्क वजाए साचा साजणा,

ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाया। ब्रह्मा विष्न शिव रचाया काजना, आप आपणा बंधन पाया। त्रैगुण माया दित्ता दाजना, एका पल्ले गंढु बंधाया। पंज तत्त मारे वाजना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश सगला संग रखाया। लक्ख चुरासी भाण्डा साजना, आपणा आवा आप तपाया। खेले खेल विच ब्रह्मादना, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल एकंउँकार, आदि जुगादी खेल अपार, भेव किसे ना पाया। एकँकारा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क अकल्ला, आदि निरँजण डगमगांयदा। श्री भगवान फड़ाए पल्ला, अबिनाशी करता मेल मिलांयदा। पारब्रह्म वसणहारा निहचल धाम अटला, सच सिँघासण आसण लांयदा। सच सुनेहड़ा ब्रह्मा विष्न शिव आपणा घल्ला, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। त्रैगुण माया आपे रल्ला, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता किरत कमांयदा। एकउँकार अकल कल धारा, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाया। आदि निरँजण कन्त भतारा, घर साचे सोभा पाया। श्री भगवान करे प्यारा, पुरख अबिनाशी नाल रलाया। पारब्रह्म ब्रह्म हो उज्यारा, लोकमात वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारा, आदि जुगादि रहे सेव कमाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्भय आपणा नाम धराया। एकउँकार मूर्त अकाल, एका एक अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण दीन दयाल, दयानिध भेव ना आंयदा। हरि पुरख निरँजण आपणा बणे आप दलाल, आप आपणा वणज करांयदा। आदि निरँजण दीपक बाल, थिर घर साचा आप सुहांयदा। श्री भगवान चले नाल नाल, निरगुण रूप अनूप दरसांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, घर साचे आप खिलांयदा। पारब्रह्म दासी दास कराए काल महांकाल, आप आपणा हुक्म चलांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे प्रितपाल, प्रितपालक वेस वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव शब्द अगम्मी पाया जाल, सति डोरी नाम बंधांयदा। त्रैगुण माया जगत जंजाल, लक्ख चुरासी कोट वखांयदा। जुग जुग आपणी घाला रहे घाल, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा रंग रंगांयदा। बिन हरि जी हल ना होया किसे दा सवाल, अन्त लेखा ना कोए मुकांयदा। पारब्रह्म चले अवल्लड़ी आपणी चाल, चाल निराली आप जणांयदा। श्री भगवान हो निहाल, निरगुण निरगुण निरगुण आपणा आप उपजांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। पंज तत्त हरि कर प्यारा, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। सरगुण मेला विच संसारा, गुर पीर अवतार नाउँ धराईआ। साध सन्त बोल जैकारा, एका नाम रहे गाईआ।

भगतां देवे चरन प्यारा, साची भिच्छया झोली पाईआ। गुरमुखां सुहाए बंक दुआरा, दर घर साचा वेख वखाईआ। गुरसिखां करे पार किनारा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। दो जहान दए सहारा, वड दाता बेपरवाहीआ। राए धर्म ना करे ख्वारा, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। लाड़ी मौत ना करे सँघारा, दर घर उत्ते ना फेरी पाईआ। सतिगुर पूरा वड बलकारा, वेले अन्त होए सहाईआ। निरगुण सरगुण रक्खे धारा, आप आपणी कल वरताईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, एका नाम हथ्थ चमकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी सिर वज्जे काल नगारा, कलिजुग डौरु रिहा वजाईआ। चार वरन ना कोए प्यारा, साची सरन ना कोए वखाईआ। भरमे भुल्ला जीव गंवारा, जागरत जोत ना किसे जगाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा होए ख्वारा, घर मिल्या ना साचा माहीआ। नौ दर फिर फिर मानस जन्म हारा, घर दसवां ना बूझ बुझाईआ। बजर कपाटी ना पर्दा पाड़ा, उत्तम सेज ना कोए सुहाईआ। अग्नी बुझी ना तत्ती हाढ़ा, सीतल धारा अंमिउँ रस अमृत निझर झिरना ना कोए झिराईआ। पंज तत्त लग्गा घर अखाड़ा, साचा मंगल ना कोए गाईआ। हरि शब्द ना मिल्या धुर दरगाही साचा लाड़ा, नारी कन्त ना ख़ुशी मनाईआ। जीव जन्त लक्ख चुरासी धुँधूकारा, रैण अन्धेरी छाईआ। रवि ससि रो रो पुकारे चन्द तारा, चांद चांदनी रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। एकँकारा वड बलवान, सूरबीर आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण नौजवान, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण मारे इक्क निशान, तीर अणयाला इक्क चलांयदा। आदि निरँजण चुकाए काण, माण अभिमान सर्ब तुड़ांयदा। श्री भगवान हो प्रधान, आप आपणा डंक वजांयदा। पुरख अबिनाशी पाए आण, शब्दी शब्दी हुक्म सुणांयदा। पारब्रह्म कर पछान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सारे गाण, हरि का भेव कोए ना पांयदा। सतिगुर मीता वाली दो जहान, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। इक्क अतीता वसे काया विच मकान, पंज तत्त डेरा आपे लांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, बोध अगाधी शब्द सुणांयदा। राग अनादी इक्क धुन्कान, अनहद ताल वजांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, भर प्याला जाम प्यांअदा। भगत भगवन्त कर परवान, आपणे लेखे आपे लांयदा। सन्तां मेला गुण निधान, गुणवन्ता दरस दिखांयदा। गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, आप आपणी गोद उठांयदा। गुरसिख बणाए चतुर सुजान, साची सिख्या सिख समझांयदा। मूर्ख मूढ़ सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। निरगुण जोत श्री भगवान, जोती नूर डगमगांयदा। जगत नेत्र ना दिसे कोए निशान, रूप रंग ना कोए वखांयदा। नक्क मूंह हथ्थ ना दिसे कोई कान, सीस धड़ ना रचन रचांयदा। नौ दर ना खोलू दुकान, आपणा हट्ट वखांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, एका रंग समांयदा। एकँकारा पुरख बिधाता, सर्ब घटां घट वासीआ। सो पुरख निरँजण पिता माता, आप आपणा नाउँ उपजासीआ। हरि पुरख निरँजण देवे साची दाता, दाता दानी दर साचा इक्क सुहासीआ। श्री भगवान रखाए उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना दिसे जातया। पुरख अबिनाशी मेटे रैण अन्धेरी राता, एका नूर करे प्रकाशीआ। पारब्रह्म सुणाए आपणी गाथा, शब्द राग धुन इक्क अलासीआ। सर्ब कल आपे समराथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल तमासीआ। खेल तमाशा हरि भगवन्त, जुग जुग खेल खिलांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, ब्रह्मा वेद भेव ना पांयदा। जुगा जुगन्तर महिमा अगणत, कथनी कथ ना कोए सुणांयदा। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। गुरमुखां देवे नाम रसना जिह्वा मणीआ मंत, मन मनका आप फिरांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसांयदा। सो पुरख निरँजण दूसर दर ना होए मंगत, वड भण्डारी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे पार करांयदा। जुग जुग खेल अगम्म अथाह, हरिभगतन दए वड्याईआ। जन भगतां बणे जगत मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। सन्तन पकड़े आपे बांह, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख हँस बणाए काँ, दुरमति मैल धवाईआ। सखा सखाई बणे पिता माँ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, लेखा आपणा पूर कराईआ। कलिजुग अन्तिम निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल कर, सो पुरख निरँजण वसे घर, आदि निरँजण खोल्हे दर, हरि पुरख निरँजण अन्दर वड़, पुरख अबिनाशी लए फड़, श्री भगवान आपणे पौड़े आपे चढ़, पारब्रह्म ना कोई सीस ना कोई धड़, ब्रह्म ब्रह्म तेरी लाए जड़, भगत भगवन्त दर्शन देवे अग्गे खड़, हरि सन्त बन्न्हाए आपणे लड़, गुरमुख एका विद्या जायण पढ़, गुरसिखां साचा घाड़न घड़, साची भट्ठी नाम चढ़ांयदा। गुरसिख साचा सच सुल्तान, हरि सतिगुर मेल मिलाया। गुरमुख मेला साचे काहन, घर साचे सोभा पाया। सन्तन नैण नेत्र इक्क ज्ञान, एका रंग रंगाया। भगत भगवन्त वसण इक्क मकान, सच दुआरा आप उपाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जुग जुग लोकमात वेखे मार ध्यान, निरगुण सरगुण वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार, आपणा नाउँ आप उपजाईआ। ईसा मूसा पावे सार, शाह सुल्तान वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यार, नूर अलाही डगमगाईआ। अल्ला राणी कर विचार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार,

साख्यात रूप वटाईआ। नानक गोबिन्द बोल जैकार, एका डंका आप वजाईआ। चार वरनां करया ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग कूड़ा दिसे कूड़ पसार, नौ खण्ड होई हल्काईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण ना कोए अख्वाईआ। नाता तुट्टा कन्त भतार, मात पित भैण भाई सगला संग ना कोए निभाईआ। धरत धवल करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। खुल्ह्डे केस धाहां रही मार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। चुक्कया ना जाए झूठा भार, सीस पैर सीस धीर ना कोए धराईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंक निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका वज्जे विच संसार, सृष्ट सबाई दए उठाईआ। राज राजान गढ़ तोड़े लंका हँकार, राम रामा रूप वटाईआ। कलिजुग कंसा करे ख्वार, कान्हा कृष्ना जोत जगाईआ। माया ममता देवे मार, नाम सति करे पढ़ाईआ। पंज तत्त विकारा करे ख्वार, शब्द खण्डा तीर चलाईआ। प्रगट हो विच संसार, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। इक्क वखाए सच दुआर, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ एका रंग रंगाईआ। एका इष्ट देव हरि करतार, पुरख अकाल इक्क वखाईआ। एका शब्द सच जैकार, एका नाअरा दए लुआईआ।
१२३६ एका सर सरोवर भर भण्डार, अमृत जाम दए प्याईआ। जन भगतां हरि जू पैज संवार, आप आपणे रंग रंगाईआ। सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़, माया पर्दा परे हटाईआ। गुरमुखां मेटे पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। गुरसिखां आपणे मन्दिर देवे वाड़, फड़ बांहों पार कराईआ। होए सहाई जंगल जूह विच उजाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचा संग रखाईआ। सगला संगी हरि करतार, सतिपुरख अख्वांयदा। गुरसिख साचे करे त्यार, दर घर साचे मेल मिलांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, नेत्र लोचण नैण खुल्हांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणा खेल खिलांयदा। धन्न सुहञ्जणी रैण मिल्या हरि मीत मुरार, घर साचा वेख वखांयदा। भिन्नड़ी रैण गाए आपणी वार, साचा सोहला हरि सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ उठ जाग, हरि साचा आप जगांयदा। गुरसिख मन्दिर लग्गा भाग, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा पकड़नहारा वाग, आपणी हथ्थीं डोर बंधांयदा। करावण आया चरन धूढ़ी साचा मजन माघ, कोटि जन्म दे लग्गे दाग़ प्रभ साचा आप धुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण वेखे नैण, दोवां चुकावे लहिण देण, साची झोली आप भरांयदा। गुरसिख साचे चढ़या चा, हरि दर्शन नेत्र पाया। भिन्नड़ी रैण पकड़े बांह, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। हरिसंगत करे सच न्याँ, शब्द १२३६

विचोला विच रखाया। साचा ढोला आपे गा, आप आपणा डंक वजाया। पुरख अबिनाशी चोला ल्या बदला, गुरमुखां चोला आपणा तन बणाया। साचा सोहला दए सुणा, सचखण्ड निवासी गुरमुख ध्या, दुआरे बहि बहि गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण रिहा सुहाया। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्ह, चारों कुन्ट राह तकाईआ। कवण कूटे पारब्रह्म प्रभ रिहा बोल, दहि दिशा नज़र ना आईआ। गुरसिखां तोलण आया आपणे तोल, एका कंडा नाम हथ्थ उठाईआ। धार अगम्मड़ी रिहा बोल, त्रै त्रै देशा सार ना राईआ। आपणी वस्त रक्खे आपणे कोल, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जुग जुग जीव जन्त रहिण अनभोल, बिन हरिभगतां हथ्थ किसे ना आईआ। हरि सन्तां पर्दा आपे फोल, आपणी गंढु लए खुल्हाईआ। गुरमुखां आत्म अन्तर आपे मौल, कँवल कँवला फुल्ल खिलाईआ। गुरसिखां देवे वड्याई उप्पर धौल, धरनी धरत सीस रही झुकाईआ। गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा पूरा पूरन करन आया आपणा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। लेखा लेख ना मेटे रत्ती चौल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। हरिसंगत बख्शी अमृत आत्म एका पौल, नाम खण्डा विच फिराईआ। पंचम धुन नाद शब्द चौह अक्खर आपे बोल, दो अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, भिन्नड़ी रैण वज्जी वधाईआ। भिन्नड़ी रैण मंगलाचार, गुरमुख संग रलाईआ। गुरसिखां बख्शे इक्क प्यार, एका रूप दरसाईआ। सन्तन मेला विच संसार, भव सागर पार कराईआ। भगत वछल आप गिरधार, गिरवर आपणा रूप वटाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यार, निरगुण आपणा वेस धराईआ। साचे मन्दिर खेल अपार, पुरख अबिनाशी रिहा खिलाईआ। लोकमात होया ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन साचा उठया हरि सतिगुर आप उठांयदा। पुरख अबिनाशी एका तुठया, दे मति सच समझांयदा। अमृत बख्शे साचा घुट्टया, तन ख़ुमारी इक्क रखांयदा। पंच विकारा जड़ों पुट्टया, तीर निशाना इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा मेलया, घर मन्दिर कर प्यार। जोत निरँजण चाढ़े तेलया, दिवस रैण रही विचार। भिन्नड़ी रैण मेल मेल खेल खेलया, सखीआं गुंदिआ साचा हार। पुरख अबिनाशी वसे धाम नवेलया, निराकार रूप निंरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे गुरू गुर चेलया, गुर सज्जण मीत मुरार। गुर सज्जण सच्चा शाह, बेऐब परवरदिगार। वेले अन्तिम पकड़े बांह, कर किरपा जाए तार। जुग जुग करे सच न्याउँ, निवण सो अक्खर कर विचार। आपे पिता आपे माउँ, आपणे रंग रवे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख रत्न अमोलक हीरा लाल, लक्ख चुरासी विच्चों लए भाल, शब्द सरूपी बण दलाल, काया माटी वेख खाल, फल लगाए साचे डाल्ह, फुल फुलवाड़ी मात आप महिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, लक्ख चुरासी फंदन फंद मात गर्भ गेड़ कटाईआ।

✪ २६ कत्तक २०१६ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे घर करतार पुर ज़िला जलन्धर ✪

एकँकारा निराकार, अकल कला अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसार, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। श्री भगवान एका धार, थिर घर निवासी आपणी आप चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणी वंड आप वंडाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, आपणा मेल आप मिलाईआ। आपे कन्त आप भतार, नारी नर आप अख्वाईआ। आपे सुत्ता सेजा पैर पसार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। आपे मात पिता हो उज्यार, सुत्त दुलार आप उपजाईआ। शब्द अनडीठा कर त्यार, घर साचे आप सुहाईआ। आपणी रीता कर त्यार, पतित पुनीता वेख
१२४१ वखाईआ। सुहागी गीता एकँकार, आपणा आपे गाईआ। सो पुरख निरँजण सुनणेहार, हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हाईआ। १२४१
श्री भगवान पावे सार, पुरख अबिनाशी वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म बोल जैकार, शब्दी नाअरा एका लाईआ। आप सुहाए सच दुआर, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ। तख्त ताज राज राजान शाह सुल्तान कर आकार, रूप अनूप आप वटाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, हुक्मे आपणा हुक्म चलाईआ। पारब्रह्म कर परवान, आपणी झोली लए भराईआ। शब्द उठाया सुत्त जवान, दे मति आप समझाईआ। एका इच्छया हरि भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। लोआं पुरीआं गुण निधान, आपणा मकाना रिहा सुहाईआ। वंडी वंड हो मेहरवान, रवि ससि करे रुशनाईआ। मण्डल मण्डप खोल्ह दुकान, तार सितार आप लटकाईआ। आपणा देवे साचा दान, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल वेस वटाईआ। वेस वटाए हरि निरँकार, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, हरि करता आप करांयदा। जूनी रहित वड सिक्दार, साचे तख्त आप सुहांयदा। वसणहारा उच्च महल्ल अटल मुनार, सच सिँघासण आसण लांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, थिर घर आपणी बणत बणांयदा। राउ रंक बण सिक्दार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। निरगुण निरगुण खेल अपार, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोद्धा सूर बली बलकार, मर्द मरदाना भेव कोए ना आंयदा। ना कोई

खण्डा तेज़ कटार, तीर कमान ना हथ्थ उठांयदा। ना कोई दूसर दिसे सच्चा यार, लाशरीक नाउँ धरांयदा। नूरो नूर जल्वा अपार, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्भय आपणा नाउँ धरांयदा। निर्भय रूप पुरख अकाल, एकँकारा वड वड्याईआ। सो पुरख निरजंण दीन दयाल, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी वसणहारा सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। श्री भगवान बण दलाल, साचा वणज इक्क कराईआ। पारब्रह्म खेल निराल, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। सुत दुलारा साचा बाल, शब्दी नाउँ धराईआ। आपणे फल लाए डालू, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, दिस किसे ना आईआ। आपणी घाले आपे घाल, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता पुरख नाउँ धराईआ। करता पुरख पुरख समरथ, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण हो प्रतक्ख, हरि पुरख निरँजण रथ चलाया। आदि निरँजण देवे साची वथ्थ, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। श्री भगवान महिमा कथना अकथ, कथ ना सके कोई राया। पारब्रह्म देवे साची वथ्थ, सुत्त दुलारा सेवा लाया। शब्द दुलारा रिहा तुठ, आप आपणी सेव कमाया। अबिनाशी करता आप आपणा करे वक्ख, निराकार साकार रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१२४२
किरपा कर, आप आपणा बंस सुहाया। विष्नूं बंस हरि निरँकार, आपणा आप उपाईआ। अमृत भर सच भण्डार, कँवल नाभी फुल खिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर त्यार, आप आपणा रूप वटाईआ। शंकर मेला धूंआँधार, सुन्न अगम्म वेख वखाईआ। आपणी बिन्द आपे पए जम्म, मात पित ना कोए वखाईआ। आप जणाए आपणा कम्म, आपणी रचना आप रचाईआ। गगन पाताल रहाए बिन बिन थम्म, जल बिम्ब होए सहाईआ। पुरख अबिनाशी बेड़ा बन्नू, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डा रिहा चलाईआ। त्रैगुण माया साचा धन्न, त्रै त्रै झोली पाईआ। एका राग सुणाया कन्न, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म गया मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंज तत्त बणाए साचा तन, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाईआ। लक्ख चुरासी चढ़या चन्न, निरगुण दीवा बाती आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी खेल रिहा खिलाईआ। एकँकारा खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, आदि निरँजण संग निभांयदा। पुरख अबिनाशी सांझा यारा, श्री भगवान मेल मिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंज तत्त झोली पांयदा। मन मति बुध दए सहारा, निरगुण आपणा अंग कटांयदा। घर विच घर कर त्यारा, घर साचे सोभा पांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, कमलापाती

वेख वखांयदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल वजांयदा। सर सरोवर ठंडी ठारा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी पर्दा लांहयदा। देवे दरश अगम्म अपारा, नेत्र लोचण नैण इक्क वखांयदा। आत्म सेजा हो उज्यारा, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। शब्द अगम्मी कन्त भतारा, घर साचे सोभा पांयदा। दस्म दुआरी सच दुआरा, दर घर साचा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, सो पुरख निरँजण वजाए नाद, हँ ब्रह्म आप उठांयदा। एकँकारा खेल अवल्ला, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क अकल्ला, आदि जुगादि वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा नेहचल धाम अटला, घर साचे बैठा आसण लाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बल्ला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी होए अछल अछला, अछल छल धारी भेव ना राईआ। श्री भगवान आपणी जोत आपे रला, दूसर संग ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म सच सिँघासण आपणा मल्ला, दर आपणे सोभा पाईआ। सुत्त दुलारा शब्द शब्दी सच सुनेहड़ा एका घल्ला, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ।
१२४३ त्रैगुण फड़ाया आपणा पल्ला, पंज तत्त लड़ बंधाईआ। पंच विकारा मारे हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाईआ। दूई द्वैती देवे सल्ला, आसा तृष्ना संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा कर पसारा, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। हरि पुरख निरँजण निरगुण धारा, आदि निरँजण रंग रंगांयदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा, श्री भगवान राह तकांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, ब्रह्म एका वणज करांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, साचा मार्ग इक्क जणांयदा। राज़क रिज़क रहीम कर प्यारा, हुक्मी हुक्म फिरांयदा। उत्पत करे आप संसारा, ब्रह्मा वेता मुख सलांहयदा। शंकर अन्तिम कर सँघारा, सगला पन्ध मुकांयदा। निरगुण खेल अपर अपारा, भेव कोए ना पांयदा। वंडे वंड विच संसारा, आपणा लेखा लेख लिखांयदा। चारे वेदां एका धारा, एका बूझ बुझांयदा। चारे युग खेल अपारा, आपणा हिस्सा आप करांयदा। सतिजुग साचा कर प्यारा, लोकमात धरांयदा। लक्ख चुरासी दए हुलारा, एका रूप वखांयदा। वरन बरन ना कोई किनारा, ना कोई भेख वटांयदा। भगत भगवन्त खेल न्यारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण रूप पंज तत्त अवतारा, गुर गुर नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल वरतंता हरि भगवन्ता, एकँकारा रचन रचांयदा। सो पुरख निरँजण खेल खिलंता जुगां जुगन्ता, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। आदि निरँजण दीप जगंता थान सुहंता, पुरख अबिनाशी सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। श्री भगवान वेस वटंता भेव खुल्हंता, पारब्रह्म साचा डंक वजांयदा। ब्रह्मा विष्न

शिव सेव कमंता, एका इष्ट करे मंता, पारब्रह्म सर्ब समझांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म हरि रंग रगंता रूप चढ़ंता, साची भट्ठी इक्क तपांयदा। हरिजन मेले साचे सन्ता, आदिन अन्ता श्री भगवन्ता दया कमांयदा। सतिजुग बणाई आपणी बणता, गुरमुख साचे पार करांयदा। तोड़नहारा गढ़ हउमे हँगता, जुग त्रेता वेख वखांयदा। आपे होए भुक्खा नंगता दर दर मंगता, जन भगत भण्डार भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर पसारा, निरगुण धारा हो उज्यारा, आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलावणहार हरि हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर जोत धर, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले वेखे घर घर, दर दरवेशा फेरी पाईआ। भगत भगवन्त आपे फड़ फड़, आपे आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख लगाए आपणे लड़ लड़, एका पल्लू नाम गंढु बंधाईआ। गुरसिखां अन्दर आपे चढ़ चढ़, आपणा कुण्डा देवे लाहीआ। अमृत जाम प्याला प्याए भर भर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि किरपा आपणी आपे कर कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। आदि निरजंण जोत निरँजण अन्दर धर धर, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। पुरख अबिनाशी आपे दर दर, आप आपणा सगन मनाईआ। श्री भगवान बण नर नर, नर नरायण रूप वटाईआ। पारब्रह्म ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव एका अक्खर रहे पढ़, प्रभ साचा करे पढ़ाईआ। त्रैगुण माया रही सड़,
१२४४ पंज तत्त करे लड़ाईआ। द्वापर अन्तिम गया हर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग कूड़ा घाड़न घड़, हरि साचा खेल खिलाईआ। धरत मात दी गोदी बैठा वड़, आप आपणा रूप वटाईआ। चारों कुन्ट वेखे खड़, आप आपणा बल धराईआ। जीव जन्त अग्ग लगाई बहत्तर नड़, ना सके कोए बुझाईआ। राज राजान शाह सुल्तान रहे सड़, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप सति सरूप शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। शाहो भूप सच सुल्ताना, एकँकारा इक्क अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण मर्द मर्दाना, हरि पुरख निरँजण बल धरांयदा। आदि निरँजण खेल महाना, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। श्री भगवान बन्ने गाना, पारब्रह्म सगन मनांयदा। शब्द अनादी धुन तराना, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न सुणन ला ला काना, आलस निन्दरा विच ना कोए आंयदा। त्रैगुण माया पंज तत्त हो प्रधाना, काया मन्दिर अन्दर आप अलांयदा। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, जिस जन आपदी बूझ बुझांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, बोध अगाधी शब्द सुणांयदा। सन्त भगवन्त कर परवाना, आप आपणा मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी दिसे फनाह मकाना, वेले अन्त ना कोए बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा रूप अपारा, वरते वरतावे विच संसारा, चारों कुन्ट धूंआंधारा, साचा चन्न ना कोए चढ़ांयदा। चारों कुन्ट कलिजुग धार, आपणी आप

वहाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे मदद बेपरवाहीआ। ईसा मूसा कर त्यार, कलमा नबी गवाह बणाईआ। संग मुहम्मद करया ख़बरदार, चार यार करी कुड़माईआ। अल्ला राणी बोल जैकार, आपणा नाअरा रही सुणाईआ। सृष्ट सबाई वेख विचार, इक्क शरीअत बंधन पाईआ। कायनात कर विचार, आपणी ज़ात इक्क वखाईआ। देवे निज़ात परवरदिगार, सगला साथ निभाईआ। राम कृष्न ना लाए पार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। जीव जन्त नेत्र नीर वहायण वारो वार, साध सन्त रहे कुरलाईआ। धरनी दब्बी पापां भार, हौला भार ना कोए कराईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी दया कमाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, नानक पंज तत्त डेरा लाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, नाम सति आप चलाईआ। दूई द्वैती कर ख्वार, एका रंगन सच रंगाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। हिन्दू मुस्लिम दए आधार, साची सिख्या सिख समझाईआ। एका शब्द बोल जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका जोती दस अवतार, अद्वविचकार आपणी वंड वंडाईआ। शब्द गुर गुर कर त्यार, गुरू ग्रन्थ समझाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, पुरख अकाल भेव ना पाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ।
१२४५ कल्ग़ी तोड़ा सीस दस्तार, शब्दी जोड़ा जोती मेल मिलाईआ। साचा घोड़ा सिरजणहार, बांकी चाल रखाईआ। सोलां कलीआं १२४५
कर त्यार, आसण सिँघासण इक्क वछाईआ। भरम भुलाया सर्ब संसार, आपणी माया पर्दा पाईआ। एका जोती दस अवतार, घर दसवें वज्जी वधाईआ। साचा खेल कर संसार, दे मति गया समझाईआ। एका गुर इक्क अवतार, एका बूझ बुझाईआ। गुरसिख मेरा रूप अपार, बिन गुरसिख दूसर घर ना गोबिन्द दरस वखाईआ। मेरा नाउँ होवे जैकार, गुरमुख फतिह डंक वजाईआ। तेरा शब्द सच जैकार, गुरू गुर नाउँ धराईआ। निरगुण जोत होए उज्यार, घर घर दीवा बाती आप जगाईआ। सतिगुर पूरा बण सिक्दार, साचे तख्त आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। वंडणहारा पुरख समरथ, दूसर कोए ना संग रखांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही वेस वटांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां ज़िमी अस्मानां दो जहानां पाए नथ्थ, नाम डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचांयदा। गोबिन्द गुर सच लिखारा, हरि लेखा आप लिखाईआ। एका जोती जोत उज्यारा, दीपक दीपक वेख वखाईआ। एका मन्दिर एका घर बारा, सचखण्ड दुआरा नाउँ धराईआ। एका सोहे सिरजणहारा, सिर सिर रिज़क सबाईआ। गावत गाए सर्ब संसारा, आदि जुगादी सेवा लाईआ। पुरख अगम्मी धाम न्यारा, पुरख अगम्मड़ा आप उपाईआ। आपे जाणे आपणा वणज वापारा, लेखा

आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द मीता सुत दुलारा, निउँ निउँ रिहा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए सहारा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। चारे अक्खर एका धारा, नानक गोबिन्द करे रुशनाईआ। चौथे युग पार किनारा, लक्ख चुरासी आप कराईआ। तेरा रूप हरि करतारा, मेरा तेरा रंग रंगाईआ। तूं सुत हउँ पिता तुमारा, बालक आपणी गोद उठाईआ। तेरा नाम मेरा जैकारा, चार कुन्ट करे रुशनाईआ। तेरा खण्डा तेज़ कटारा, हरि शब्दी नाउँ उपजाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम दए सहारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस सद करे रुशनाईआ। बीस सद खेल अपारा, हरि साचे सच वरताया। बीस इक्क एकँकारा, एका रूप आप वटाया। दूजी कुदरत कर प्यारा, तीजा नैण इक्क दरसाया। चौथे पद हो उज्यारा, जन भगतां वेख वखाया। पंचम मीता पंच आधारा, पंचम राग धुन अल़ाया। छेवें छप्पर छन्न वस्सया बाहरा, चार दीवार ना कोए उपाया। सत्तवें सति पुरख निरजंण निराकारा, निरगुण जोत करे रुशनाया। अठवें अट्ठां तत्तां पार किनारा, रक्त बूंद ना मेल मिलाया। नावें नौ दर छुट्टा संसारा, नव खण्ड वेख वखाया। दसवें निरगुण जोत कर उज्यारा, गुरमुख साचे लए जगाया। छोटा बाला बन्ह़े धारा, सृष्ट सबाई रिहा समझाया। अग्गे लाया हरि हरि लाड़ा, आप आपणा सगन मनाया। दस इक्क ग्यारा, जगत अखाड़ा, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाया। जगत जगदीसा खेल अपारा, नव नव आपणा रूप वटाया। दस दो बारां हो उज्यारा, हरिसंगत मेल मिलाया। दस तिन्न तेरा नेरन नेरा, राज राजानां शाह सुल्तानां दए भुलाया। सम्मत चौदां चौदां लोक हट्ट पसारा, एकँकारा चौदां तबकां वेख वखाया। इक्की सिक्खां खोल्ह किवाड़ा, एका घर बहाया। दस पंज पन्दरां वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दरां मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदवाला तीर्थ अठसठ गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना आपणे चरनां विच बहाया। सम्मत सोलां हो प्रगट, वसणहारा घट घट, जोत जगाए लट लट, नाम डंका इक्क वजाया। गुरमुखां पूरा करे घाट, लहिणा देण चुकाए हथ्थों हाथ, सर्ब कला आपे समराथ, दूसर ओट ना कोए तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि भगवाना, आपणा रूप वटांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महाना, दिस किसे ना आंयदा। शब्द अनादी धुन तराना, गुरमुखां आप सुणांयदा। सति सन्तोखी बन्ह़े गाना, एका नाम तन्दन तन्द बंधांयदा। आत्म मारे तीर निशाना, तीर अणयाला इक्क चलांयदा। होए सहाई दो जहानां, एथे ओथे सगला संग निभांयदा। सम्मत सोलां गुण निधाना, गुणवन्ता आपणा नाउँ उपजांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हिस्सा आप रखांयदा। कलिजुग अन्तिम पाया हिस्सा, वीह सद सोलां वड वड्याईआ। बिन गुरमुख किसे ना दिसा, जगत ज्ञानी रहे राह तकाईआ। मन्दिर मस्जिद रसना जेहवा पढ़दे किस्सा, हरि का रूप दिस ना आईआ। गुरसिख चोबदार तेरा गुर गोबिन्द फड़ फड़ उठाए साचे सिक्खां, सोया कोए रहिण ना पाईआ। साचा लेखा जिस जन घर साचे लिखा, नेत्र लोचण दए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ धरया भेखा, बल बावन रूप वटाईआ। पावे सार धारी केसा, मूंड मूंडाए गले लगाईआ। निरगुण रूप दस दस्मेसा, दहि दिशा आपे वेख वखाईआ। राह तक्कण ब्रह्मा विष्न महेषा, नेत्र नैण रहे उठाईआ। सति पुरख निरँजण सद आदेशा, सार शब्द करे कुड़माईआ। गोवर्धन धारी रिखी केशा, कलिजुग खेले खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं उठाया बाशक सेजा, सांगोपांग आप हिलाईआ। ब्रह्मे देवे सच संदेसा, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाईआ। शंकर चले ना कोई पेशा, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणी रुत्त आप सुहाईआ। बरख मास दिवस रुत्त, हरि साचा आप सुहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना पांयदा। जुग जुग हरिजन उठाए आपणे सुत्त, आप आपणी बूझ बुझांयदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। अमृत सोमां जाए फुट्ट, निझर धारा आप वहांयदा। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटि, बिन हरि किरपा दरस कोए ना पांयदा। जन भगतां बख्शे एका ओट, दूजा इष्ट ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। सम्मत सोलां साचा बरख़, हरि साची रुत सुहाईआ। महीना चेत्र ना कोई सोग ना कोई हरख़, गुरमुखां दए वड्याईआ। जगत विसाख सृष्ट सबाई लए परख, नाम कसवटी हथ्थ उठाईआ। महीना जेठ गुरसिखां देवे दरस, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। हाढ़ महीना कर कर तरस, जुग जुग दी लग्गी प्यास बुझाईआ। सावन वेखे अर्श फर्श, अमृत रस मुख चुआईआ। भाद्रों मेटे जगत हिरस, आपणा भाउ इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। अस्सू आस पूरी कर, गुरसिख आप तरांयदा। पिछला लहिणा अग्गे धर, पूर्ब मूल चुकांयदा। धर्म राए दा चुक्के डर, दे मति आप समझांयदा। राज राजानां लए फड़ शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। किला कोट वेखे चढ़, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लांयदा। सागर वरोले अन्दर वड़, नाम मधाणा एका पांयदा। चौदां लोक उखेड़े जड़, चौदां तबक आप हिलांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द आपणा घाड़न आपे ल्या घड़, आपे भन्न वखांयदा। गुरसिख लगाए आपणे लड़, आप आपणी दया कमांयदा। दरस दिखाए घर घर, घर घर विच जोत जगांयदा। ना हरि पुरख नारी नर, नर नरायण वेस वटांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां देवे वर, पहली कत्तक रुत्त सुहांयदा। पहली कत्तक रुत्त सुहाणी, हरि सति पुरख निरँजण एकँकारया। हरि शब्द होई कुड़माई, नाता तुट्टा सर्ब संसारया। दिवस रैण वज्जदी रहे वधाई, मंगलाचार इक्क वखा रिहा। निरगुण जोत करे रुशनाई, पुरख अबिनाशी दीपक एका बालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखा ल्या। साचा मार्ग सति सतिवाद, हरि सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। एका वस्त हरि नाम लैणी लाध, दूजा वणज ना कोई कराईआ। गुरमुख सच्चा सन्त साध, जिस जन आपणे चरन लगाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, दुरमति मैल आप धुवाईआ। शब्द वजाए साचा नाद, अनहद आपणा राग सुणाईआ। भेव खुल्हाए हरि हरि ब्रह्मादि, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। एकँकारा आदि जुगादि, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। पन्दरां कत्तक दिवस सुभागा, हरिसंगत मेल मिलाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी बाअद निरगुण जागा, रूप रंग ना कोए वखाया। जुगां जुगां दा लाहया दाग़ा, निर्मल निर्मल आप कराया। दर पाया पुरख अबिनाशा कन्त सुहागा, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम इक्क वखाया। मस्तूआणा साचा मन्दिर, पंज तत्त आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी वसे अन्दर, दिवस रैण जोत जगांयदा। होए दयाल कृपाल डूँघी कन्दर, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। नेत्र तरसन सूर्य चन्द्र, कोटन कोटि भान राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। साचा धाम हरि निरँकारा, घर साचा आप सुहांयदा। निरगुण दीवा कर उज्यारा, निरगुण वेख वखांयदा। हरिसंगत वखाए चरन दुआरा, सच घर बारा इक्क सुहांयदा। आवण जावण पार किनारा, लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा। ना कोई मन्दिर बणाया इट्टां गारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। गुरमुखां दरस दिखाए अगम्म अपारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहला दिवस आप रंगांयदा। पहला दिवस हरिसंगत धार, सतिजुग साची नींह रखाईआ। वीह सौ बीस खेल अपार, इक्क इकीसा दए कराईआ। जगत जगदीसा सांझा यार, सालस आपणा नाउँ धराईआ। ख़ालस ख़ालसा कर त्यार, चार वरन करे कुड़माईआ। एका रंग रंगे सर्ब संसार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका बस्त्र कर त्यार, सृष्ट सबाई दए पहनाईआ। एका वरते सर्ब भण्डार, शाह सुल्तान ना कोए अख्वाईआ। चार वरन एका इक्क करे प्यार, दूसर राह ना कोए वखाईआ। देवणहारा सिरजणहार, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। सोलां कत्तक खेल अपारा,

१२४८
०८

गुरमुखां दया कमांयदा। दूजे दिवस कर विहारा, तीजे दर सुहांयदा। चौथा मेला धुर दरबारा, पंचम वेख वखांयदा । छेवें रंगे रंग अपारा, सत्तवें आपणी सेव कमांयदा। अठवें अट्ठां तत्तां पार किनारा, नौ दर लेखा आप चुकांयदा। दसवें दिन हो उज्यारा, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। एका जोत दस अवतारा, गोबिन्द शब्द नाउँ उपजांयदा। शब्द गुर दस इक्क ग्यारां गुरसिखां अन्दर कर पसारा, आप आपणा आसण लांयदा। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, भेव अभेद अभेव रखांयदा। छब्बी कत्तक दए सहारा, सम्मत सोलां रत्त सुहांयदा। नौ खण्ड सत्त दीप छड्ड दुआरा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबांयदा। सच सिँघासण आसण लाए आप करतारा, सचखण्ड वासी सोभा पांयदा। निरगुण जोत नूर कर उज्यारा, सो पुरख निरँजण वेस वटांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, मिल मिल गले लगांयदा। पारब्रह्म खेल निराधारा, निरवैर वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी बोल जैकारा, श्री भगवान आप सुणांयदा। पारब्रह्म तेरा वड दुआरा, हरि निरँकारा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग्यारां दिवस गुरमुख धार, अमृत नाम भर भण्डार, भवजल सागर कर कर पार, आप वसे सचखण्ड दुआर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आसण सिँघासण आपणा आप सुहांयदा।

८०

✪ पहली मग्घर २०१६ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✪

एकँकार निराकार, निरगुण नूर नूर उजालया। सो पुरख निरँजण खेल अपार, आदि अन्त वेस वटा ल्या। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, आप आपणा वेख वखा ल्या। आदि निरँजण पावे सार, दीपक दीप इक्क वखा ल्या। अबिनाशी करता जाणे आपणी कार, करनी किरत नाम धरा ल्या। श्री भगवान महिमा अपार, भेव अभेद आप छुपा ल्या। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आप आपणा खेल खिला ल्या। आदि शक्ति मीत मुरार, साचा संग निभा ल्या। सार शब्द कर त्यार, आपणा हुक्म सुणा ल्या। साचा मन्दिर दए उसार, सचखण्ड दुआरा नाउँ उपा ल्या। थिर घर वासी बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण ला ल्या। कमलापाती मीत मुरार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा धाम सुहा ल्या। एका राजन शाह सुल्तान सच सिक्दार आप अख्वा, आपणा हुक्म आप सुणा ल्या। धुर फ़रमाना दए जणा, आपणा पर्दा आपे लाह ल्या। सुत्त दुलारा शब्द उठा, सार शब्द विच लगा ल्या। एका मार्ग दए दिखा, लोआं पुरीआं बणत बणा ल्या। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा, रवि ससि रंग रंगा ल्या। मण्डल मण्डप वेख वखा, आप आपणी जोत टिका ल्या। आपणी रचना आप रचा,

विष्न ब्रह्मा शिव साचे दर बहा ल्या। बाशक सेजा आप सुहा, सांगोंपांग वेस वटा ल्या। एका ज्ञान दए दृढ़ा, एका ब्रह्म वखा ल्या। एका नेत्र दए खुल्हा, भोला नाथ मेल मिला ल्या। दाता दानी बेपरवाह, बैऐब परवरदिगार भेव ना आ ल्या। त्रैगुण माया वेख वखा, आप आपणी अंस उपा रिहा। पंज तत्त मेला सहिज सुभा, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग कटा ल्या। तत्व तत्त वक्ख करा, मन मति बुध संग निभा ल्या। बूंद रक्त मेल मिला, साची शक्त विच टिका ल्या। हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ा, एका बंधन हरि हरि पा ल्या। दर दुआरा आप खुल्हा, नौ दर वेस वटा ल्या। घर विच घर दए बणा, घर मन्दिर आप उपा ल्या। शब्द अनादी दए सुणा, अनहद साचा नाद वजा ल्या। आपणी सोभा आपे रिहा पा, आपे वेख वखा रिहा। आपणी धुन आप जणा, एका दूआ तीजा चौथा पंचम संग रखा ल्या। सर सरोवर इक्क बणा, घर साचे आप टिका ल्या। आपणा अन्दर बन्द करा, आपणा पर्दा आप सुटा ल्या। आपणी जोत आप जगा, निरगुण दीवा बाती आपणे हथ्थ रखा ल्या। दस्म दुआरी सोभा पा, दर घर साचा साचे रंग रंगा ल्या। लक्ख चुरासी भेव खुल्हा, आप आपणा डंक वजा ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, दे मति आप समझा ल्या। आपणी सिख्या आप पढ़ा, एका राग धुन गा ल्या। ब्रह्मादी ब्रह्म खोज खोजा, नादी सुत्त नाउँ धरा ल्या। आदि जुगादी वेस वटा, आप आपणा कर्म कमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल जूनी रहित दिस किसे ना आ रिहा। एकँकारा हरि निरँकारा, एका रंग समांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरारा, सगला संग निभांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। पुरख अबिनाशी वड सिक्दारा, साचा तख्त आप सुहांयदा। श्री भगवान बन्न्हे धारा, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। पारब्रह्म बण वणजारा, साचा वणज करांयदा। आदि शक्ति दए हुलारा, सच हुलारा आप लगांयदा। रूप अनूप सच्ची सरकारा, चक्र चिहन ना कोए जणांयदा। वसणहारा उच्च महल्ल अटल उच्च मुनारा, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, ठांडा दरबारा इक्क रखांयदा। शब्द अगम्मी इक्क अखाड़ा, घर साचे ताल वजांयदा। सार शब्द ना कोई पुरख ना कोई नारा, नर निरायण आपणा नाउँ धरांयदा। साचा मन्दिर कर त्यारा, इट्टां गारा ना कोए लगांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे शब्द अगम्मी कर त्यारा, धूंआँधार आप हो आंयदा। आपे ब्रह्मा विष्न कर उज्यारा, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। आपे भर त्रैगुण सच भण्डारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। आपे पंज तत्त करे वणजारा, एका हट्ट वखांयदा। आपे लोआं पुरीआं दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी डोरी आप बंधांयदा। आपे लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न सतारा,

१२५०
०८

मण्डल मण्डप आपणा रंग रंगांयदा। आपे जल बिम्ब हो उज्यारा, धरत धवल आप टिकांयदा। आपे लक्ख चुरासी कर पसारा, निज आत्म डेरा लांयदा। मानस मानुख करे विचारा, आत्म तत्त रखांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, आपणा राग सुणांयदा। मन मति बुध बन्ने धारा, साची सेवक सेवा आप करांयदा। मन पंखी उडाए दहि दिश दुआरा, मति मतवाली वेख वखांयदा। बुध बिबेक करे सिक्दारा, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। आपणा नाउँ रक्ख निरँकारा, आप आपणा डंक वजांयदा। पुरख अबिनाशी सच सतारा, निरगुण आपणी तार हिलांयदा। गावत गाए गावणहारा, गावणहारा दिस ना आंयदा। नाच नचाए सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी सखीआं एका मण्डल रास वखांयदा। आदि जुगादी खेल अपारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपणी वंड वंडे करतारा, करनी करता आपणी किरत कमांयदा। सतिजुग साचा कर त्यारा, लोकमात धरांयदा। शब्द अगम्मी इक्क भण्डारा, एकँकारा आप वरतांयदा। निरगुण सरगुण करे प्यारा, साख्यात जोत जगांयदा। जागरत जोत कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। राग सुणाए गावणहारा, सुरत सवाणी ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकारा, खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आंयदा। एकँकारा नाना रूप, निरगुण नूर नूर उपाया। हरि पुरख निरँजण वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। सो पुरख निरँजण जाए तूठ, दीन दयाल दया कमाया। आदि निरँजण निरगुण जोत, नूरो नूर डगमगाया। पुरख अबिनाशी ना कोई वरन ना कोई गोत, बंधन बंध ना कोए बंधाया। श्री भगवान इक्क अकल्ला धरे वेस कोटन कोटि, कोट कोटी आपणा नाउँ उपाया। पारब्रह्म वसणहारा सच महल्ला शब्द नगारे लाए चोट, एका धौंसा सच वजाया। सचखण्ड दुआरा ना कोई दीसे चार दीवारा ना कोई जाणे किला कोट, हरि मन्दिर हरि साचा आप बणाया। सार शब्द बणाया ओत पोत, ब्रह्मा विष्न शिव आपणा बंस वखाया। आदि शक्ति अमृत प्याला प्याए घोट, साचा जाम हथ्थ उठाया। त्रैगुण माया भरे ना पोट, प्रभ साचे हुक्म सुणाया। पंज तत्त विकारा भरया खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग निभाया। आसा तृष्ना चढ़ी चोट, उच्ची कूके दए दुहाया। जूठ झूठ फड़या ठूठ, खाली हथ्थ वखाया। सतिजुग त्रेता पाई लूट, आप आपणा नाम वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाला दीन दयाला दर्द दु:ख भय भंजन आप आपणा वेस वटाया। एकँकारा वेस अवल्ला, एका नूर इलाहीआ। सो पुरख निरँजण वसे सच महल्ला, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, श्री भगवान डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी दर दुआरे साचे खला, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म आपणी जोती आपे रला, आप आपणा वेख वखाईआ। शब्द सार सच सुनेहड़ा एका घल्ला, ब्रह्मा विष्न शिव समझाईआ।

विष्न फड़ाया आपणा पल्ला, देवे रिजक सबाईआ। ब्रह्मे जोती ब्रह्म ब्रह्म हो रला, ब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। शंकर अन्तिम होए झल्ला, लेखा दए चुकाईआ। त्रैगुण माया मारे हल्ला, पंज तत्त डेरा ढाहीआ। पुरख अबिनाशी अछल अछला, हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेले खेल आप आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण दाता हरि निरँकार, सति पुरख नाउँ धरांयदा। सरगुण प्रगट हो विच संसार, पंज तत्त साचा मेल मिलांयदा । निरगुण कमलापाती मीत मुरार, आप आपणा मेल मिलांयदा। सरगुण बख्शे साची दाती सिरजणहार, साची वस्त झोली पांयदा। तक्के रैण अन्धेरी राती विच संसार, दीवा बाती इक्क जगांयदा। बोध अगाधी साची गाथी, शब्द अनादी नाद वजांयदा। जोत जोती जोत प्रकाशी, परम पुरख आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धरे नाउँ अबिनाशी, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। अबिनाशी हरि हरि नाउँ रक्ख, आपणी कल वरतांयदा। सरगुण रूप हो प्रतक्ख, लोकमात वेस वटांयदा। भगत भगवन्त लए रक्ख, आप आपणी गोद उठांयदा। सन्त सुहेले करे वक्ख, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। गुरमुखां मार्ग साचा दस्स, आप आपणी बूझ बुझांयदा। गुरसिखां मेला नस्स नस्स, घर साचा वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी तीर मारे कस, पंच विकारा बुरज ढांयदा। कोटन कोटि करे प्रकाश, रवि ससि, अन्ध अन्धेर गवांयदा। दर घर मेला हस्स हस्स, हरि साचा आप करांयदा। जन भगतां होया रहे वस, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पूरी करे आस, निरासा गुरमुख ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता वसे पास, जगत विछोड़ा फंद कटांयदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन पातालां वेख वखांयदा। लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, हरिजन साचे आप तरांयदा। मात गर्भ ना होए वास, जिस जन आपणा मेल मिलांयदा। लेखे लाए सास ग्रास, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। साचे मण्डल पावे रास, गोपी काहन आप नचांयदा। आदि अन्त ना होए विनास, सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ धरांयदा। हरि पुरख निरँजण शाहो शाबाश, शाह सुल्ताना वेस वटांयदा। आदि निरँजण जोत प्रकाश, जोत निरँजण सर्ब टिकांयदा। श्री भगवान दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। पुरख अबिनाशी वसे नगर ग्राम, साचा खेड़ा आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ मेला हड्ड मास नाड़ी चाम, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वेख वखांयदा। सार शब्द होए जाणी जाण, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। अनहद शब्द चलाए बाण, तीर अणयाला हथ्थ उठांयदा। भगतां बख्शे साचा माण, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। सन्तां देवे आपणी आप पछाण, नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हांयदा। गुरमुखां देवे सच ध्यान, साची सिख्या सिख समझांयदा। दो जहानी साचा माण, माण निमाणयां आप रखांयदा। गुरमुखां झुलदा रहे सदा निशान, हरि साचा आप झुलांयदा। सो

पुरख निरँजण हो निगहबान, दिवस रैण वेख वखांयदा। हरि पुरख निरँजण देवे धुर फ़रमान, शब्द जणाई आप करांयदा। आदि निरँजण देवे दान, दीपक दीपक आप टिकांयदा। श्री भगवान राग सुणाए साचा कान, रसना जेहवा ना कोए हिलांयदा। पुरख अबिनाशी धुर फ़रमान, आप आपणा आप सुणांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे पछान, घट अन्दर ब्रह्म जणांयदा। विष्नूं खेले खेल महान, दिवस रैण राह तकांयदा। ब्रह्मा लेखा हो प्रधान, चार वेदां आप सुणांयदा। शंकर बाशक तशका गल लटकान, हथ्थ त्रिसूल रखांयदा। त्रैगुण माया होए प्रधान, पंज तत्त मेला मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी एका आण, चुरासी गेड़ा आप चलांयदा। धर्म राए गाए स्वास स्वास, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। चित्रगुप्त नेत्र नैण उठाए दिवस रैण रहे उदास, एका मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत जोत गोपाला, आपे चले अवल्लड़ी चाला, सचखण्ड वस्सया सच्ची धर्मसाला, दूसर घर ना कोए वखांयदा। एकँकारा सच टिकाणा, हरि साचा आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण निगहबाना, आपे वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण सच बबाणा, आपणा आप उडाईआ। पुरख अबिनाशी एका वसे सच मकाना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। श्री भगवान गुण निधाना, गुणवन्ता भेव ना राईआ। पारब्रह्म खेल महाना, आप आपणा खेल खिलाईआ। आदि शक्ति संग रलाना, नारी कन्ता वेस वटाईआ। सार शब्द बद्धा गाना, घर साचे वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव गायण इक्क तराना, त्रैगुण करे कुड़माईआ। पंज तत्त मेला इक्क वखाणा, घर सखीआं मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, आपणा रूप वटाया। ब्रह्मा विष्न शिव अधारा, साचे दर वखाया। त्रैगुण माया भर भण्डारा, एका हुक्म सुणाया। पंज तत्त तन कर पसारा, पंजी जोड़ जुड़ाया। पंज दस मेला अपर अपारा, दिस किसे ना आया। दस पंज बोले इक्क जैकारा, आपणा राग सुणाया। नौ दर खोल्हे आप किवाड़ा, दसवां गुप्त रखाया। सुखमन नाड़ी टेडी गारा, आपे वेख वखाया। मारूदण्ड बन्न्हे धारा, आप आपणा हुक्म जणाया। त्रिकुटी खोल्हे खोल्ह किवाड़ा, आपणा अंगन वेख वखाया। सर सरोवर ठंडी ठारा, आपणा जल भराया। घर विच घर कर त्यारा, हरि मन्दिर आप सुहाया। निरगुण दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाया। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, दिस किसे ना आया। सुरत सवाणी देवे हुलारा, शब्द हाणी मेल मिलाया। आत्म सेजा करे प्यारा, साचा बंक वखाया। एका सेजा सुत्ते पैर पसारा, नारी कन्ता वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाया। हरिभगतन पर्दा खोल्हया, प्रभ आपणी किरपा धार। घट अन्दर आपे बोल्लया, धुन नाम शब्द जैकार। साचे कंडे आपे तोल्लया, आपे जाणे आपणी धार। आदि अन्त कदे ना डोल्लया,

जुग जुग खेल अपर अपार। शब्दी सुरती आपे मौलया, नेत्र दिस ना आए विच संसार। आपे उलटा करे नाभ कौलया, खिड़ी रहे सदा गुलज़ार। देवे माण उप्पर धौलया, धरती धरत करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे उज्यार। जोती नूर उजाला हरि गोपाला, भेव किसे ना आया। चतुर्भुज खेल निराला, जोत ज्वाला आदि शक्ति नाउँ धराया। दासी दासा काल महांकाला, महांकाल आपणा रूप वटाया। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, चाल बेहंगम इक्क रखाया। जन भगतां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ वड्याआ। हरिजन बख्शे आपणी माला, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। आदि जुगादी शाह कंगाला, खाली हथ्थ रिहा वखाया। शब्द सरूपी बण दलाला, गुरमुख साचे लए उठाया। भाग लगाया पंज तत्त माटी काया खाला, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। वेखणहारा पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। अबिनाशी करता महिमा अकथ, भेव किसे ना आया। लक्ख चुरासी पाई नथ्थ, शब्द डोर आपणे हथ्थ रखाया। जुगा जुगन्त जाए मथ, नाम मधाना हथ्थ उठाया। आप उपजाए पूजा पाठ, आपणा मार्ग आप वखाया। आपे सर सरोवर तीर्थ मारे ठाठ, निर्मल नीर आप भराया। आपे इष्ट देव आपे मूर्ति बणे काठ, घड़न भन्नणहार आपणा नाउँ धराया। आपे जाणे जोग अभ्यास, हट्ठ नेम संजम आपे वेख वखाया। आपे
१२५४ १२५४
०८ ०८
होए किनारा तीर्थ ताट, आपे हट्टो हट्ट विकाया। आपे वसणहारा घट घट, घर मन्दिर डेरा लाया। आपे खेले खेल बाजीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। आपे सुत्ता साची खाट, जन भगतां अन्दर डेरा लाया। नेड़े वखाए आपणी वाट, आपणा पर्दा दए चुकाया। निरगुण जोत जगे ललाट, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। लेखा चुकाए तीर्थ ताट, जिस जन आपणा दरस दिखाया। हरिजन चढ़ाए औखे घाट, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाया। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठ, जिस दुआरे हरि हरि आया। नाता तुट्टे आण बाट, लक्ख चुरासी फंद कटाया। ना कोई वरन गोत ना ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए वखाया। मेटणहारा अन्धेरी रात, जुग जुग साचा आपणा नाम चन्द चढ़ाया। सर्ब कला आपे समराथ, समरथ पुरख वड वड्याआ। सतिजुग त्रेता तेरी मुक्की वाट, राम रामा रूप वटाया। रावन विकया आपणे हाट, करता कीमत आपे पाया। आपे हो त्रिलोकी नाथ, साची सखीआं मंगल गाया। ग़रीब निमाणयां देवे साथ, बिदर सुदामा गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ वटाया। नाउँ वटाए हरि निरँकारा, वेद कतेब भेव ना पाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, लोकमात करे रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत रहे पुकारा, वेद पुराण देण दुहाईआ। पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, पुराण अठारां गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम

पार किनारा, निहकलंक निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर सोहे इक्क चबारा, धाम अवल्ले डेरा लाईआ। उच्चा टिल्ला पर्बत ना कोई करे विचारा, हरि बैठा सेज विछाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा मीत मुरारा, माया ममता मोह चुकाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, एका चण्डी नाम चमकाईआ। अष्टभुज दए सहारा, एका आपणा रंग वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर आपे वेख वखाईआ। वेखणहारा हरि निरँकार, दिस किसे ना आया। निरगुण रूप निराकार, रूप रंग ना कोए वखाया। करता पुरख खेल अपार, आपणी करनी रिहा कराया। एका नाम कर जैकार, सति सति आपणा नाअरा लाया। निर्भय वरते वरतावे आप करतार, निरवैर आपणा नाउँ रखाया। जूनी रहित एका कार, आपणी रिहा कमाया। अकाल मूर्त हो त्यार, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग खेले खेल अपार, बुध मति ज्ञान इक्क दृढ़ाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद दीना चार यार, अल्ला राणी मेल मिलाया । अजमतो कस्मतो बेऐब परवरदिगार, महबूब मिहबान वेख वखाया। चौदां हट्ट खोल्ह दुकान, चौदां तबकां भेव खुल्हाया। एका जोत कर प्रधान, आप आपणा आसण लाया। निरगुण हरि शब्द निशान, नानक डंका इक्क वजाया। दर घर करे आप परवान, आपणा मेला मेल मिलाया । सतिनाम सति निशान, चार वरनां आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया।
१२५५
०८
नानक निरगुण करे मेहर, कलिजुग लेखा दए लिखाया। चार कुन्ट वरते कहर, जीव जन्त होए हल्काईआ। पुरख अबिनाशी गम्भीर गहर, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नानक मेला हरि निरँकार, घर साचे वज्जी वधाईआ। एका सोहे बंक दुआर, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। नानक निरगुण बणे भिखार, निरगुण निरँकार साची वस्त झोली पाईआ। साचा शब्द सच भण्डार, साचे हथ्थ फड़ाईआ। एका एक खेल करे करतार, एका शब्द करे जणाईआ। कलिजुग कूड़ी रैण अँध्यार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, मात पित कुक्ख ना कोए उठाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। पुरख अकाल बोले जैकार, सृष्ट सबाई एका इष्ट मनाईआ। प्रगट होवे आप निरँकार, गुर शब्द करे कुड़माईआ। गोबिन्द गुर करे प्यार, चार वरनां वेख वखाईआ। साची सरन सच्ची सरकार, दर घर साचे मिले वधाईआ। अञ्जील कुरानां पावे सार, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। वेद पुराणां दए अधार, शास्त्र सिमरत वेख वखाईआ। खाणी बाणी पावे सार, जगत राणी पर्दा देवे लाहीआ। अल्ला राणी मारे नाअर, एका नाअरा कूक सुणाईआ। ऐनलहक्क करे ख्वार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। संग मुहम्मद राह तक्कण यार प्यार, नेत्र नैण रहे उठाईआ। सदी चौधवीं बेड़ा कर त्यार, आपणा कन्ढा रिहा

वखाईआ। प्रगट होवे मौला बेऐब परवरदिगार, नूर नूर नूर अलाहीआ। साचा अमाम होवे त्यार, कायनात वेख वखाईआ। साचे अस्व चढ़ के आए शाह अस्वार, आप आपणा भेख वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां दए लताड़, लक्ख चुरासी भाण्डे आपे भन्न वखाईआ। साची सखीआं करे प्यार, घर साचे साचा माहीआ। एका कलमा पड़े सर्ब संसार, एका इष्ट आप वखाईआ। जल्वा नूरी नूर जलाल, नूरो नूर डगमगाईआ। लेखा जाणे हक्क हलाल, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। अजराईल जबराईल असराईल मेकाईल कड्ढे होए मारन छाल, वेला अन्त वड्डी वड्याईआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर कुतब गौंस मुसायक आपे लए भाल, तौफीक इक्क ख़ुदाईआ। अहिबाब रबाब वजाए सितार, आबेहयात प्याला मध प्याईआ। काया काअबा पावे सार, दो दोआबा वज्जे वधाईआ। शाह नवाबा बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक्क वेखे इक्क ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक करे प्यार, ख़लक ख़ालक मेल मिलाईआ। साचा सालस बण संसार, एका अदली अदल कमाईआ। मुख नकाबी तन शृंगार, शरअ शरीअत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा हरि निरँकारा एकँकारा ओंकारा आपणा रूप वटाईआ। निरँकारा ओंकार, ऊड़ा आपणा मुख खुल्हांयदा। ऐड़ा अक्खर कर त्यार, कुदरत साची विच टिकांयदा। ईड़ी इष्ट इक्क अपार, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। सतिगुर पूरा हो त्यार, सस्सा किला इक्क बणांयदा। हँ ब्रह्म अन्दर देवे वाड़, आपणी हथ्थीं कुंडा लांहयदा। एका अल्फ़ पावे सार, आप आपणा डण्डा शब्द वखांयदा। बे बसता बेऐब परवरदिगार, चौदां लोकां बन्नू वखांयदा। सीन सिदक ना कोई करे विचार, साची सिख्या ना कोए समझांयदा। ते तिक्खी रक्खे आपणी धार, कलमा नबी हथ्थ किसे ना आंयदा। एका टेक दो जहान दए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका चेला आपे गुरू आपे चेला, आप आपणा नाउँ वटांयदा। आपे गुर हरि निरँकार, सतिगुर वड्डी वड्याईआ। शब्द चेला कर त्यार, ब्रह्मण्डां विच टिकाईआ। सन्त भगत करे ख़बरदार, लोक मात रिहा उठाईआ। जागरत जोत जगे अगम्म अपार, निरगुण नूर होए रुशनाईआ। साकत निन्दक दुष्ट ना करे विचार, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। पंडत काशी गए हार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा चारे कूटां दिस ना आईआ। मुल्लां शेख़ गल पा पा थक्के तसबी हार, मन का मणका ना कोए भवाईआ। पन्थी ग्रन्थी करन विचार, तक्कण राह साचे माहीआ। जगत नेत्र दिस ना आए सिरजणहार, दोए लोचण वेख वखाईआ। अर्श फर्श एका धार, फर्श फर्श वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण साची धार, सुरत सुरत करे कुड़माईआ। शब्द अगम्मी अगम्मड़ी कार, पुरख अगम्मड़ा आप कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा वस्सया बाहर, दम कौड़ी हथ्थ ना कोए रखाईआ। मात पित अम्मी अंमड़ा ना कोए प्यार, बालक गोद ना कोए उठाईआ। जोती

१२५६
०८

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे बैठा बेपरवाहीआ। दर घर साचा सच महल्ला, सिरजणहार आप उपाया। एकँकारा बैठा इक्क अकल्ला, सो पुरख निरँजण सेव कमाया। हरि पुरख निरँजण दए सहारा, आदि निरँजण मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी बन्ने धारा, श्री भगवान साचा संग रखाया। पारब्रह्म प्रभ खेल अपारा, आप आपणा वेस धराया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दए अधारा, पारब्रह्म मेल मिलाया। एका जोती दस अवतारा, गुर गुर आपणा नाउँ वटाया। शब्द गुर हो उज्यारा, लोकमात डंक वजाया। पंज तत्त ना कोए प्यारा, थिर कोए रहिण ना पाया। पुरख अकाल एकँकारा, आदि जुगादी इक्क अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम खेले खेल सृष्ट सबाया। आपणा नाउँ धरे नर निरँकारा, निहकलंका वेस वटाया। गोबिन्द गुर बण लिखारा, दो जहानां दए गवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ आप जणाया। नाउँ धराया निहकलंक, निरगुण रूप पुरख अकालया। शब्द वजाया साचा डंक, प्रगट होया वाली दो जहानया। भरम कढाए राउ रंक, शब्द अगम्मी आपे जाणे आपणी बाणीआ। गुरमुख लाए आपणे अंक, मेल मिलाया साचे हाणीआ। लहिणा देण चुकाए जिउ जन जनक, गावणहारा गाए अकथ कहाणीआ। प्रगट होया वासी पूरी घनक, कल्की अवतार जोद्धा सूरबीर बली बलवानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा एकँकारा, आदि जुगादी एका गुर इक्क अवतारा, एका रूप वटानीआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका नाउँ धरांयदा। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा लांयदा। एका शब्द इक्क भण्डारा, एका इक्क वरतांयदा। एका मीत मीत मुरारा, एका सगला संग निभांयदा। एका वस्सया चीत सिरजणहारा, विछड़ कदे ना जांयदा। एका कन्त सुहागी दर मिल्या साची नारा, जगत रंडेपा आप कटांयदा। एका नाद सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप अलांयदा। एका शाहो भूप सिक्दारा, राज राजान इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। एका सतिगुर सच्चा सज्जण, एका घर सुहांयदा। एका सर सरोवर कराए मजण, एका दुरमति मैल गंवांयदा। एका आए पर्दा कज्जण, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। एका रक्खणहारा लज्जण, लोकमात आपणी लोक लाज गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। एका कल कल कुलवन्ता, अकल कला कल धारीआ। एका पूरन पुरख पुरख भगवन्ता, पारब्रह्म वड सिक्दारीआ। एका मेल साधन सन्ता, घर सोहे बंक अटारीआ। एका जोती जोत जगंता, निर्मल जोत करे उज्यारीआ। एका बणाए साची बणता, आप आपणी खेल खिलारीआ। एका तोड़े गढ़ हउमे हँगता, हउमे गढ़ मिटा रिहा। एका मेल मिलाए साची संगता, दर घर

१२५७ ०८

साचा इक्क वखा रिहा। एका गले लगाए भुक्खा नंगता, ग़रीब निमाणे आपणी गोद उठा रिहा। एका गुरमुखां दुआरे होए मंगता, जुग जुग आपणा वेस वटा ल्या। एका गुरसिख काया चोली रंगदा, रंग मजीठी आप चढ़ा ल्या। एका गुरमुखां अन्दर आपे लँघदा, आपणा राह आप बणा ल्या। एका माणे रस गुरसिख तेरी आत्म सच पलँघ दा, वाह वा घर साचे आसण ला ल्या। एका खेल सूरे सरबंग दा, अल्पग जीव आप तरा ल्या। लहिणा देणा चुकाए अगले पन्ध दा, आपणी गोदी आप बिठा ल्या। नाता तोड़े मदिरा मास गन्द दा, अमृत जाम प्याला आप प्या ल्या। छुपे प्रकाश सूरज चन्द दा, जिथ्थे गुरसिख आप टिका ल्या। रस वखाए निजानंद दा, परमानंद आप वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला आपणा वेस धरा ल्या। इक्क अकल्ला हरि बनवारी, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका जोत जोत निरँकारी, एका नूर करे रुशनाईआ। एका शब्द शब्द जैकारी, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। एका खड़ग खण्डा तेज़ कटारी, एका ब्रह्मण्डां रिहा चमकाईआ। एका जेरज अंडां पावे सारी, उत्भुज सेत्ज एका वेख वखाईआ। एका चार कुन्ट करे ख्वारी, दहि दिशां फोल फोलाईआ। एका तोड़े संग मुहम्मद चार यारी, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण
१२५८ नर अवतारी, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। गोबिन्द गुर बण लिखारी, अन्तिम लेखा गया समझाईआ। सम्बल नगरी १२५८
होए उज्यारी, पुरख अकाल करे रुशनाईआ। गोबिन्द बोले सच जैकारी, साचा नाअरा एका लाईआ। पुरख अकाल सच्ची सिक्दारी, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे पनहारी, दीप सत्त सेवक सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी पासा जाए हारी, सिध्धी नरद ना कोए कराईआ। कलिजुग कूके आपणी वारी, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ समेरू दए दुहाईआ। राए धर्म खोल्ह किवाड़ी, बैठा राह तकाईआ। चित्रगुप्त मंगे आपणी वाड़ी, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। करे शृंगार मौत लाड़ी, नैण कज्जल रही पाईआ। धर्म राए दी सच दुलारी, बस्त्र भूशण आपणे वेख वखाईआ। लाल मैहन्दी रंगे रंग धी कुँवारी, लक्ख चुरासी आपणा दूल्हा वेखे थाउँ थाँईंआ। धरत माता वाजां मारे माँ प्यारी, आप आपणा राह वखाईआ। कलिजुग जीव होए विभचारी, घर घर पंच विकार होई हल्काईआ। मावां पुत्तरां लग्गी यारी, धी भैण ना कोए वखाईआ। नार कन्त ना कोए हदारी, साचा संग ना कोए रखाईआ। जम्मे सुत कन्या कुँवारी, वेला अन्तिम देवे जगत गवाहीआ। पंडत पांधे झूठी पत्री रहे विचारी, बारां रास ना कोए वेख वखाईआ। मस्तक रेखा ना किसे उग्घाड़ी, कागद कलम शाही तिन्ने देण गवाहीआ। पुत्तर पुट्टे पिउ दी दाढ़ी, कलिजुग आपणा रंग वखाईआ। घर घर रलीआं माणे नार भतारी, आपणा कन्त ना कोए सुहाईआ। राज राजान शाह सुल्तान सच धर्म गए हारी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ग़रीब निमाणयां

करन ख्वारी, फड़ बांहों गले ना कोए लगाईआ। साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ारी, अन्दर मन्दिर रहे ध्याईआ। पुरख अबिनाशी पावे सारी, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम आई वारी, भुल्ल रहे ना राईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारी, जूठी झूठी क्रिया दए मिटाईआ। कलिजुग झूठा मेट मिटाउणा, हरि साचा दया कमांयदा। भेख पखण्डा रहिण ना पाउणा, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ फोल फोलांयदा। सर सरोवर फेरा पाउणा, तीर्थ तट किनारा आपे वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण एका मार्ग लाउणा, हँ ब्रह्म आप समझांयदा। चार वरनां एका रंग रंगाउणा, रंग चलूल आप चढ़ांयदा। साची भट्ठी नाम तपाउणा, जोती अग्नी लम्बू लांयदा। जगत विकारा भस्म कराउणा, कलिजुग छार आप उडांयदा। साख्यात हरि रूप वटाउणा, गुरसिख पारज़ात आप बणांयदा। कायनात हरि वेख वखाउणा, आत्म ताक खुल्हांयदा। सज्जण साक गुरसिख बणाउणा, दूसर नाता ना कोए उपांयदा। सोहँ साची गाथ चार वरन पढ़ाउणा, दर मन्दिर इक्क वखांयदा। पूजा पाठ इक्क कराउणा, इष्ट देव इक्क मनांयदा। हरि का नाम हट्टो हट्ट ना किसे विकाउणा, कलिजुग माया कीमत ना कोए रखांयदा। सगला साथ प्रभ आप निभाउणा, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। ज़ात पात दा भेव चुकाउणा, मात पित आप हो जांयदा। साचा नाता चरन आप रखाउणा, चरन कँवल उप्पर धवल आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतारी खेल खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा हरि भगवन्ता, भगवन भगतन मेल मिलाईआ। निरगुण जोती जोत जगन्दड़ा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, दीवा बाती इक्क जगाईआ। सो पुरख निरँजण खेल खिलंदड़ा, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नारी वेख वखाईआ। नर नारी हरि वेख विचार, घट घट फोल फोलांयदा। पसू पंखी पंछी पावे सार, तरवर सरवर फोल वखांयदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, अठारां भार बनास्पत आप तुलांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा विष्न शिव हिलांयदा। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपति राजा इन्द आप जगांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी खेल अपार, सत्तां दीपां आप उठांयदा। वीह सद सोलां बिक्रमी हो उज्यार, आप आपणा डंक वजांयदा। करे कराए करनेहार, शाह सुल्तान राज राजान ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। जोद्धा सूरबीर बलवान, एका चिल्ला तीर कमान नौजवान आप उठांयदा। मारे सच्चा सच निशान, लक्ख चुरासी लाहे घाण, सृष्ट सबाई सुंञ मसाण, महल्ल अटल ना कोए सुहांयदा। कलिजुग जीव सर्ब पछताण, वेले अन्त जन्त कुरलाण, ना कोई दिसे निगहबान, धूंआँधार सर्ब वखांयदा। गुरसिख गीत गोबिन्द दे गाण, मिल्या मेल श्री भगवान, दरगाह साची झुलदा जाए निशान, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सतिगुर पूरा करे

आप परवान, जो जन चरनी डिगे आण, देवे नाम गुण निधान, लेखा जाणे पवण पाणी मसाण, तत्त रत्त ब्रह्म मति आपणे लेखे आप लगाईआ। करन आया पुण छाण, सोहँ शब्द फड़ मधाण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप चुकाए अन्तिम काण, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। उठया जोद्धा सूरबीर, हरि सच्चा शाह सुल्तान। नाम चलाए इक्क तीर, चीरी जाए दो जहान। चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, वसणहारा सच मकान। प्रगट होया वड पीरन पीर, अबिनाशी करता आप मेहरवान। चार कुन्ट वहाए वहीर, आप आपणी पाए आण। जन भगतां अमृत बख्शे ठंडा सीर, देवणहारा चरन ध्यान। एका रंग रंगाए हस्त कीट, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। देवे नाम शब्द अनडीठ, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान हरि नाम की महिमा सारे गाण। जिस जन वस्सया आपे चीत, सो जन होए प्रधान। साचा गुरुदुआरा देहुरा रखाए मन्दिर मसीत, पंज तत्त काया गढ़ घर घर विच खेल महान। सतिजुग चलाई साची रीत, झूठी दिसे ना कोए दुकान। गुरमुख गौण सुहागी गीत, मिले मेल श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए निगहबान। कलिजुग जीव उठ सुत्तया, सुत्तयां रैण विहाईआ। प्रगट होया पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्तया, चार वरन करे कुड़माईआ। सतिजुग सुहाई साची रुतया, गुरसिख फुलवाड़ी लाईआ। कलिजुग कूड़ा फड़ फड़ कुठया, गुरसिखां नेड़ रहिण ना पाईआ। सति पुरख निरँजण आपे तुट्ठया, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाईआ। बिन गुरसिख लाहा किसे ना लुट्टया, लक्ख चुरासी कलिजुग माया गूढ़ी नींद सुवाईआ। अन्तिम दाणा पाणी सभ दा मुक्कया, दाना बीना आप मुकाईआ। किसे पाणी ना रहिणा हुक्कया, वुज़ू हथ्थ फड़ लोटा ना कोए कराईआ। जगत मसल्ले हेठ ना रहिणा विछिआ, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। प्रभ चार वरनां क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्क रखाए साची सरन, सिख इक्क मति समझाईआ। खोल्हणहारा हरना फरना, नेत्र नैण दए खुल्हाईआ। गुरसिखां भउ चुकाए मरना डरना, भय भयानक होए सहाईआ। हरि के भाणे अग्गे किसे ना अड़ना, जो अड़े सोई झड़ जाईआ। शाह सुल्ताना आपे फड़ना, प्रभ फड़ फड़ दए सज़ाईआ। गुरमुख दरगाह साची साचे घर वड़ना, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बैठा राह तकाईआ। लेखा जाणे रसन स्वासी गुणवन्ता, गुण गुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां वेखे खड़, वीह सौ बिक्रमी बन्हाया लड़, आपणे पौड़े आपे चढ़, आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। पहली मग्घर खेल हरि, भारत खण्ड खोल्हया दर, गुरसिख साजण लए फड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नर नरायण आप हो जाईआ। निहकलंक हरि

खेल खिलंदड़ा, निरगुण जोत उजालया। वीह सौ सोलां बिक्रमी भेव खुलंदड़ा, चले कल अवल्लड़ी चाला। नौ खण्ड पृथ्मी आप उठंदड़ा, मुख नक़ाब पर्दा रक्खे काला। गुरमुखां घर घर जोत जुगन्दड़ा, मनमुखां कढ्ढे दिवाला। हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा, एका दस्से राह सुखाला। प्रभ खोलॣण आया जिन्दरा, त्रैगुण माया तेरा तोड़े आपणी हथ्थीं ताला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा वेता लए फड़, देवे माण सिँघ पाला। ब्रह्मे तेरी ब्रह्म वड्याई, पारब्रह्म वेख वखांयदा। कलिजुग अन्त होए कुड़माई, हरि साचा सगन मनांयदा। एका घर उत्पत होए धी जवाई, सस्स सौहरा ना कोए अख्वांयदा। प्रभ करनहारा आप कुड़माई, आपणा सगन आप मनांयदा। अगला भेव दए खुलॣाई, इक्की मग्घर राह तकांयदा। ब्रह्म लोक दा पर्दा दए चुकाई, शिव लोक वेख वखांयदा। इन्द लोक वज्जण धाई, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा नाल रलांयदा। गुरमुख दर घर वेखण चाँईं चाँईं, प्रभ साचा आप वखांयदा। चार दिवस चार युग चार वरन चार खाणी चार बाणी चौथा पद साची हद्द विच ब्रह्मादि वज्जे नद, बोध अगाध हरि साचा आप वजांयदा। चौवी मग्घर सन्त भगत भगवन्त लए लाध, गिण गिण लेखा झोली पाईआ। गंगा सुरस्ती जमना रही अराध, दिवस रैण राह तकाईआ। रविदास चमारा हरि भेव जाणे बोध अगाध, पंडत पांधा नाल रलाईआ। जगत कसीरा झूठी दाद, बिन हरि नाम ना कोए वड्याईआ। वेले अन्त कीता याद, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। निरगुण सुणनहारा फरयाद, ब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। तेरी भुल्लां कदे ना याद, तेरा विछोड़ा दवां कटाईआ। कलिजुग अन्तिम रक्खी हद्द, पैंडा मुक्के वाहो दाहीआ। चरन दुआरे लवां सद, तेरी दुरमति मैल धवाईआ। तेरा बेड़ा पार कराए जिउँ बधक बध, तेरी रसना तीर आपणे विच लगाईआ। संग रलाए विष्नूं यद्द, यद्द बंस वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी विच्चों देवे कढ्ढ, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। घर रविदास गया दर्शन प्याला पीता मध, नाम ख़ुमारी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिछला लहिणा आप चुकाईआ। पिछला लहिणा हरि चुकाउणा, हरि जुग जुग वेख वखांयदा। सिँघ जरनैल विचोला विच बणाउणा, पिछला लेखा आप खुलॣांयदा। जगत शाह जन्म दवाउणा, पहला कंगण मोड़ मुड़ांयदा। चार बरस पहले शब्द जनाउणा, साचा मुन्दरा हथ्थ घड़ांयदा। रक्खणा सांभ एह हुक्म सुनाउणा, सिँघ दर्शन झोली पांयदा। सम्मत वीह सौ सोलां राह तकाउणा, पन्दरां कत्तक वेख वखांयदा। छत्ती युग लेखा आप लखाउणा, चार चार मेल मिलांयदा। चाली दिवस हरि दिस ना आउँणा, कलिजुग जीवां भरम भुलांयदा। ग्यारां दिवस गुरमुख युद्ध मचाउणा, गुरमति मनमति आप लड़ांयदा। पहली मग्घर दिवस सहाउणा, हरिसंगत रंग चढ़ांयदा। नौ दिवस मुख छुपाउणा, नौ खण्ड फेरा पांयदा। सत्त दिवस दर्द वंडाउणा, सत्तां दीपां

जो जन रसना गांयदा। चार दिवस चार चार खेल खिलाउणा, चार चार मेल मिलांयदा। चार दिन गुरसिख उपजाउणा, चार यारी भेट चढ़ांयदा। चौवी मग्घर साचा मंगल गाउणा, रविदास चमारा वेख वखांयदा। गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना चरनां हेठ वहाउणा, त्रिबैणी नैणी इक्क सुहांयदा। सच कसीरा ब्रह्मण हथ्थ फड़ाउणा, ब्रह्मण रविदासे भेट चढ़ांयदा। रविदासे सति सति शुकर मनाउणा, प्रभ अग्गे सीस निवांयदा। प्रभ तेरा रंगन तेरा रंगन तेरा कंगन तुझे होए सुहाउणा, तेरा तेरी झोली पांयदा। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी पुरख अबिनाशी साची सौगंध एका पाउणा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। हरिसंगत साची मात वड्याउँणा, सेवादार आप हो आंयदा। आपणा कसीरा आपणी झोली पाउणा, इक्की सिख गवाह बणांयदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब ने रसना गाउणा, उच्चा कूके आप रखाए आपणा हथ्थ, पुरख समरथ सृष्ट सबाई आप समझांयदा। सुते प्रकाश पुरख अबिनाश, परम पुरख आप कराया। सच घर वासी साची रास, सच सुल्तान वेख वखाया। खेल तमाश लक्ख चुरासी वास, पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाया। सखा सुहेला इक्क अकेला जन भगतां वसे सदा पास, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत तेरा सच प्यार, चोली चढ़या रंग अपार, लाल गुलाला हरि हरि आप रंगाया। महाराज शेर सिँघ आदि जुगादि होए रखवाला, जुग जुग जन भगतां पैज रखाया। रक्खण आया हरि जी पैज, लाल रंगीला मोहण माधो साचा माहीआ। करे खेल सहिज सहिज, सहिज सुखदाता वड वड्डा बेपरवाहीआ। एका एक शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, दूसर विचोला ना कोए बणाईआ। मेल मिलाए आत्म सेज, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जन भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत आत्म जाम प्याईआ।

✪ २१ मग्घर २०१६ बिक्रमी जमांदार किशन सिँघ दे घर अल्लड़पिण्डी ✪

सो पुरख निरँजण हरि समरथ, आदि जुगादि समाया। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, भेव कोए ना पाया। एकँकारा चलाए रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। आदि निरँजण जोत उजाला लट लट, नूरो नूर डगमगाया। पुरख अबिनाशी वसणहारा घट घट, रूप रंग ना कोई वखाया। श्री भगवान जाणे गथ, आपणी महिमा आप सुणाया। पारब्रह्म निरगुण नैण खोले अक्ख, आप आपणा पर्दा लाहया। सति सरूप हो प्रतक्ख, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाया। शब्द नाद उपजाए नद, आप आपणा नाउँ सुणाया। आपणा आप करया वक्ख, निरँकार निरगुण खेल खिलाया। विष्नूं विश्व हो प्रगट, रंग रंगीला रंग

रंगाया। आपणी नाभी कँवली हो प्रगट, आपणा फुल्ल खिलाया। आपणा रस आपणा अमृत आपणे निझर आपे झट्ट, आपे धार वहाया। आपणी सेज आपणी खाट, आपणा आसण आप सुहाया। आपणी जोती आप लिलाट, आपणा दीप आप टिकाया। आपणा मन्दिर आपणा हाट, आपणा वणज आप वखाया। आपणा खेले खेल बाजीगर नाट, नट नटूआ सांग वरताया। आपणा पाड़े आण बाट, आपणा मुख आप वखाया। ब्रह्म रूप हो साख्यात, ब्रह्म आपणा नाउँ धराया। उत्तम रक्खी आपणी ज़ात, लेखा लेख ना कोई वखाया। इक्क अकल्ला बैठ इकांत, आप आपणा मता पकाया। आपे वेखे मार झात, सच दुआरा आप सुहाया। आपणी पुच्छे आपे वात, आप आपणा सगन मनाया। आपे पिता आपे मात, बाल निधाना आप उपाया। आपे शंकर देवे दात, सुन्न समाध आप समाया। आपे पूरा करे घाट, आपणा लहिणा आपे मूल चुकाया। आपे त्रैगुण देवे साचा साथ, सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। त्रैगुण माया हरि उपाए, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सांतक सति विष्नूं झोली पाए, ना दूसर हथ्थ फड़ाईआ। राजस ब्रह्मा अंग लगाए, अंगीकार आप कराईआ। तामश शंकर जोड़ जुड़ाए, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। तिन्नां विचोला आप हो जाए, दिस किसे ना आईआ। निरगुण आपणा खेल खिलाए, खेलणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
१२६३ आदि आदि आदि आप अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण हरि अगम्म, आदि जुगादि समाईआ। एकँकारा इक्क अगम्म, ना १२६३
मरे ना जाईआ। वसणहारा साची छप्परी छन्न, महल्ल अटल ना कोई वखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आपे बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्क अकल्ला सच महल्ला आपे कहे धन्न धन्न, आपणी सोभा आप जणाईआ। अबिनाशी करता आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आपे रिहा चलाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, गुण निधान सुत्त दुलार निराकार एका एक ल्ए जम्म, आप आपणा अंग कटाईआ। पारब्रह्म जाए मन्न ना कोई वसे तन, एका राग कन्न सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म उत्पत, आपणी दया कमांयदा। शिव विष्न खेल खिलंत, आप आपणा खेल खिलांयदा। शंकर मेला जुगा जुगन्त, जुग जुग धार बंधांयदा। त्रैगुण माया रंग रंगत, उतर कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची रचन आप रचांयदा। त्रैगुण माया तत्त पसारा, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। विष्नूं देवे इक्क हुलारा, ब्रह्मा ब्रह्म समांयदा। शंकर बोल अन्त जैकारा, अन्तिम लेख लिखांयदा। आपे वसे सभ तों न्यारा, आप आपणा थान सुहांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, सच सुल्तान हरि मेहरवान, धुर फ़रमान आप जणांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, इक्क अकल्ला

देवणहारा, ब्रह्मे ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। चारे वेदां वेद लिखारा, चारे जुग वंडांयदा। लक्ख चुरासी भर भण्डारा, घट घट अन्दर आप उज्यारा, बाती बाती आप जगांयदा। घर अमृत बूंद ठंडी ठारा, घर अग्नी तत्त तत्ती हाढ़ा, घर पंचम सखीआं सच अखाड़ा, घर मन्दिर दिसे झूठी धाड़ा, घर बंक सुहांयदा। नौ दुआर घर गुप्त रखाए दस्म दुआरा, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर मीता हरि निरँकार, घर दीपक जोत उज्यार, घर वसे धूंआँधार, घर मन्दिर रहे खुआर, घर मेला कन्त भतार, घर होए दुहागण नार, घर विचोला फेरे रिहा मार, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। घर रुत्तड़ी घर बसन्त, घर शब्द अगम्मी मणत, घर जोत निरँजण आदि अन्त, घर मेल श्री भगवन्त, घर साचा आप सुहांयदा। घर पुरखा नारी नर नरायण, घर कन्त शृंगारी आपणी नैण, घर धी कुँआरी बैठी डैण, घर नाल रलाए साक सैण, घर कवण चुकाए लहिण देण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी तेरा घर, पुरख अबिनाशी अन्दर वड़, वेखणहारा दर दर, दर दरवाजा आप खुल्हांयदा। घर शाहो घर सुल्तान, घर मंगणहारा दान, घर गोपी वेखे काहन, घर निउँ निउँ वेखे मार ध्यान, घर राग सुणाए कान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी तेरा घर, निरगुण अन्दर आपे वड़, आपणा दर आप सुहांयदा। घर चोर यार ठग्ग, घर वसे उप्पर शाह रग, घर त्रैगुण माया लगी अग्ग, घर दीपक जोत अगम्मी रही जग, घर पवण ठंडी रही वग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर अन्दर आपे वड़, घर आपणा आप सुहाया। दर घर मन्दिर हरि दुआर, घर बैठा हरि निरँकार, घर खेले खेल अपार, घर वेस अनेक सच्ची सरकारा, घर मेला कन्त भतारा, घर चेला चेला गुरदुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी अन्दर वड़, आपे खोल्हे आपणा घर, घर मन्दिर आप सुहाईआ। घर त्रैगुण दात, घर शब्द करामात, घर कमलापात, घर अन्धेरी रात, घर औखा घाट, घर अमृत रस चाट, घर नेड़े वाट, घर चौदां हाट, घर तीर्थ ताट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी तेरा दर, आपे वेखे नर हरि, हरि नर आप अख्वांयदा। घर डूँघी कन्दर सुंञ मसाणा, घर अनहद राग सच्ची धुन्काना, घर सखीआं मिल मिल पंचम गाणा, घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाना, घर बैठे पंज शैताना, घर देवे ब्रह्म ज्ञाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर अन्दर आपे वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आप आपणा खेल खिलांयदा। घर मन्दिर हरि निरँकारा, घर करया बन्द किवाड़ा घर वेखे पंचम धाड़ा, घर मेला सज्जण यारा, घर बोले इक्क जैकारा, घर घर घर सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण लए अवतारा, घर मन्दिर एकँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, घर अबिनाशी करता आपणा रंग रंगे संसारा, घर श्री भगवान

हरख सोग रोग दोख सरना इक्क वखांयदा। चरन दुआरा घर पारब्रह्म ना जन्मे ना कदे मरदा, आदि जुगादि खेल अपारा। घर ब्रह्म ब्रह्म नूरी नूर धरदा, नूरो नूर होए उज्यारा। घर विष्नूं बहि बहि पाणी भरदा, दिवस रैण रहे पनहारा। घर शंकर बहि बहि हाढ़े कढ्ढदा, बैठा सेवादारा। सो पुरख निरँजण आपणा खेल आपे करदा, हरि पुरख निरँजण खेलणहारा। घर ब्रह्म चारे वेद पढ़दा, चारे जुगां दए हुलारा। घर त्रैगुण माया अन्दर धरदा, दिस ना आए विच संसारा। घर पंज तत्त बहि बहि तरदा, दिवस रैण रिहा उठाया। घर बणाया किला कोट हँकार गढ़ दा, विच वसाया ठग चोर यारा। घर उपाया सच्चे नर हरि दा, हरी हरि कर पसारा। आदि अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म सो पुरख हरि पुरख निरँजण आदि शक्ति परवरदिगार एका अक्खर सोहँ पढ़दा, दूसर होर ना कोई पढ़ाईआ। सोहँ अक्खर हरि हरि पढ़, आपणी बणत आप बणाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़, सचखण्ड दुआर सुहाईआ । आप लगाए आपणी जड़, आपणा बूटा आप उपाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता कादर आप अख्वाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव त्रैगुण माया वर, पंज तत्त करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, जूनी जून धराईआ। अंडज जेरज अन्दर वड़, उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। हस्त कीट आपे कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। नारी नर आपे बण, नर नरायण वेस वटाईआ। नार भतार वेस कर, साची सेज हंढाईआ। पूत सपूता

१२६५ अग्गे कर, आपणी गोद बहाईआ। आदि जुगादि ना कोई डर, निर्भय आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १२६५

आपणी जोत धर, आपणा भेव आपे रिहा खुलाईआ। सो पुरख निरँजण बोल जैकारा, सोहँ कुदरत आप बणांयदा। कुदरत कादर इक्क प्यारा, आपणा कलमा आप अलांयदा। आप विचोला बण निरँकारा, साचा मेल मिलांयदा। आपणा ढोला गाए अपर अपारा, आपणा बोला आप अलांयदा। आपणा तोला निरगुण धारा, सरगुण आप तुलांयदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वेस वटांयदा। सोहँ शब्द एकँकारा, आपणे विच रखांयदा। दूसर किसे हथ्थ ना देवे विच संसारा, गुर पीर ना कोई वरतांयदा। मात गर्भ विच्चों जो आए बाहरा, हँ हँ सर्ब अख्वांयदा। नाड़ी चम्म ते वस्सया बाहरा, सो पुरख हरि हो आंयदा। नौ नौ चार ना लए अवतारा, छत्ती जुग ना मुख वखांयदा। साध सन्त जुगां जुगन्त रहे पुकारा, दिवस रैण ध्यान वखांयदा। गावत गा गा थक्का सर्ब संसारा, रसना जेहवा सर्ब हिलांयदा। सतिजुग चलाई आपणी धारा, त्रेते भेव ना कोई खुलांयदा । रिख मुन जप तप हठ अभ्यास जोग कर कर थक्क गए हारा, हरि का हार ना कोई गले पहनांयदा। किरपा कर पुरख करतारा, कोटां विच्चों इक्क तरांयदा। धू प्रहलाद पार कराए आपणी वारा, आप आपणी गोद बहांयदा। द्वापर तेरा कर पसारा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। त्रिलोकी नाथ सखीआं गाए मंगलाचारा, मण्डल रास आप नचांयदा।

भगत भगवन्त मेल मिलाए विच संसारा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। कोई ना गाए सोहँ शब्द जैकारा, बत्ती दन्द ना मुख वखांयदा। कलिजुग करया खेल अपारा, आप आपणी कल वरतांयदा। रंगया रंग विच संसारा, जगत सूसा आप रंगांयदा। ईसा मूसा देवे हुलार, एका हुक्म जणांयदा। कलमा अमाम सच्ची सरकारा, शाह सुल्ताना आप सुणांयदा। मुहम्मद मुहम्मदी इक्क दुआरा, अद्धविचकारा मेल मिलांयदा। नाल रलाया चार यारा, चौथा जुग वेख वखांयदा। तूं ही तूं तूं कर पुकारा, तेरा तेरे विच समांयदा। ऐनलहक्क जिस बोल्लया नाअरा, गल फाँसी फास लटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण आपणा वेस वटांयदा । सो पुरख निरँजण इक्क अकल्ला, एका रंग समाया। हँ ब्रह्म जगत महल्ला, नौ खण्ड डेरा लाया। आदि निरँजण जोत निरँजण दीपक आपे बल्ला, तेल बाती ना कोए टिकाया। शब्द अगम्मी सच सुनेहड़ा एका घल्ला, तार सितार ना कोई हिलाया। वसणहारा नेहचल धाम अटला, घर घर बैठा अलख जगाया। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशन आसण लाया। जीव जन्त भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल्ल आप कराया। नानक मेटयां दूई द्वैती सल्ला, एका सोहँ शब्द पढ़ाया। पुरख अकाल फड़ाया आपणा पल्ला, अन्तिम आपणे विच मिलाया। ग़रीब निमाणयां अन्दर आपे रल्ला, खिमा ग़रीबी आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराया। नानक निरगुण धार, निराधार खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण बोल जैकार, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। दोए अक्खर विच संसार, आप आपणा खेल खिलांयदा। उ : ओंकार, ओंकार मेल मिलांयदा। अ : अक्ख लए उग्घाड़, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। इ : इष्ट सर्ब संसार, भेव कोई ना पांयदा। स : साचा किला सो पुरख निरँजण कर त्यार, उप्पर होड़ा इक्क लगांयदा। निरगुण सरगुण बणे धार, लोकमात राह तकांयदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म पसार, आप आपणा रूप वटांयदा। पंचम अक्खर लेख अपार, ह : हरी हरि नाउँ धरांयदा। हँ ब्रह्म एका धार, वरन गोत ना कोई रखांयदा। पंचम अन्दर वस्सया करतार, पंचम शब्द अन्दर अलांयदा। बिन हरि साचे ना पावे सार, अवर ना कोई कोटन कोटि ध्यान लगांयदा। नानक पाया इक्क दरबार, ठांडा घर हरि सुहांयदा। दिवस रैण मंगलाचार, साची आरती हवन वखांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यार, साचे तख्त सोभा पांयदा। शाह सुल्तान भूप सच्ची सरकार, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। लोकमात वेस कर आपे जाणी आपणी कार, आपणी सेवा आप कमांयदा। एका गुर इक्क अवतार, एका गोबिन्द नाउँ धरांयदा। एका सागर सिन्ध करे प्यार, सगला बेड़ा आप तरांयदा। एका गुणी गहिंद हो उज्यार, जगत अन्धेरा आप मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आपणा नाउँ वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ नाउँ वटाया, अकल कला अख्वाईआ। पंज तत्त ना

कोई रखाया, सीस धड़ ना कोई जणाईआ। निरगुण जोती जोत जगाया, जोती जोत करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर डेरा लाया, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। औदां जांदा दिस ना आया, दिवस रैण ना कोई बणाईआ। एका बंसरी नाम वजाया, साची सखीआं मेल मिलाईआ। कोटन कोटी कोटि रिहा तराया, तारनहारा वड वड्याईआ। घर मन्दिर साचा इक्क सुहाया, वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा रिहा चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लेख चुकावणा, हरि साचा सच वरतांयदा। नौ नौ चार तेरा कर्ज़ा लाहवणा, छत्ती जुग ना भार उठांयदा। धरत धवल हौले भार करावणा, आप आपणी वंड वंडांयदा। गुरमुखां नेत्र दरस दिखावणा, कलिजुग नेत्र बन्द करांयदा। साचा बंक इक्क सुहावणा, कौरुक्षेत्र नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, लोकमात वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भिखार, दर दरवेश वेस वटांयदा। हरि पुरख निरँजण मंगणहार, आपणी मंग मंगांयदा। एकँकारा फिरे दर दुआर, दर दर अलख जगांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यार, जोत निरँजण डगमगांयदा। श्री भगवान हो त्यार, निरगुण आपणा नाउँ वटांयदा। अबिनाशी करता खेल अपार, ख़ालक ख़लक रूप समांयदा। पारब्रह्म प्रभ भर भण्डार, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वरतांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वरते विच संसार, साची रीती आप चलांयदा। विष्नूं वंसी सेवादार, साचा रिज़क सुहांयदा। त्रैगुण माया दए अधार, साची झोली जगत भरांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ शृंगार, कूड़ी काया सर्ब हंढांयदा। साचे दर ना कोई प्यार, दर दुआर ना कोई सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। मंगण आए भगत दुआर, भगत भगती लेखे लांयदा। आपणे सीस चुकया भार, सवा सेर नाउँ धरांयदा। सवा सेर दस्से विसथार, लिख्या आपणा लेख जणांयदा। इक्क सेर एकँकार, एका एक एक आप हो जांयदा। एका चौका कर त्यार, एका उप्पर नाल रलांयदा। आदी वंड वंडे संसार, आपणा कंडा हथ्थ उठांयदा। चारे कूटा ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलार, जेरज अंड फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। इक्क सेर एकँकारा, आदि जुगादि समाया। जुग जुग लए मात अवतारा, हरिभगत हरिजन साचे नाल रलाया। करे कराए वरते वरताए विच संसारा, सरगुण निरगुण वेस वटाया। एका पाओ सर्ब भण्डारा, लक्ख चुरासी वंड वंडाया। इक्की मग्घर सुहाया सच दिहाड़ा, सम्मत सोलां नाल रलाया। आपे करया सच विहारा, हरि साची रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार अलख अगोचर भेव ना राया। सच दुआर सचखण्ड, हरिसंगत वड वड्याईआ। एका हरि होया हरी हरि, एका होड़ा संग रलाईआ। सवा सेर लक्ख चुरासी नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड रवि ससि मण्डल सितार,

ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीस नाल अधार, आपणे कंडे आप तुलाईआ। कुमेर भिखारी दर दुआर आया नेत्र रो रो पावे डण्ड, खाली हथ्थ रिहा वखाईआ। धरनी रोवे वाल सिर दे खोहवे प्रभ चरनी नीर चरन धोवे, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। विष्नूं करे पुकार, दोए जोड़ निमस्कार, पुरख अबिनाशी किरपा धार, तुध बिन ना कोए सहाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उग्घाड़, चरन दुआरे चार कुन्ट लग्गा सच अखाड़, नेड़े दिसे ना कोई चोर यार, जूठ झूठ नज़र ना आईआ। शंकर ढहि ढहि पए दुआर, खुलड़े केस करे पुकार, दर दरवेश बणे भिखार, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। सुरपति राजा इन्द आपणी बाजी रिहा हार। करोड़ तेतीसा ना मीत मुरार, करया खेल आप निरँकार, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। रवि ससि होए उदास, साची जोत ना रही किसे पास, कलिजुग अन्तिम होणा सर्ब विनास, मण्डल मण्डप ना कोई सहाईआ। प्रगट होया शाहो शाबाश, जन भगतां पूरी करे आस, हरिसंगत होए दासी दास, साची वस्त गुरमुखां झोली पाईआ। चार युग ना होए कोई निरास, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम हरि जी वस्सया पास, नर हरि आपणा रूप वटाईआ। चरन चुम्मे पृथ्मी आकाश, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। पारब्रह्म जन तेरा सेवक दास, तेरी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तेरे अन्दर करया वास, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। सवा सेर साची वस्त छत्ती युग किसे ना रक्खी पास, ना कोई लेखा गया लिखाईआ। प्रभ मिलण दी रक्खदे गए जो जन लोकमात आस, जुग जुग गुर पीर अवतार अख्वाईआ। कोटन कोटी बैठे जंगल जूह विच प्रभास, नेत्र मूंद ताड़ी लाईआ। इक्की मग्घर इक्की सिक्खां अन्दर करके वास, गुरमुख तेरा जोग अभ्यास हठ्ठ तप तेरा पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ।

इक्क सेर पुरख अकाल, सचखण्ड दुआरा इक्क वसाया। इक्क पाओ रूप हो दयाल, लोकमात वेख वखाया। वरभण्डी देवे नूर जलाल, घट घट अन्दर जोत जगाया। नाल तोले काल महांकाल, राए धर्म पिच्छे रहि ना जाया। चित्रगुप्त नाल देवे डाल्, लाड़ी मौत पासकू नाल बंधाया। साचे कण्डे पावे शाह कंगाल, साचा तोला इक्क अख्वाया। हरिसंगत तेरा बण के आया आप दलाल, साचा वणज रिहा वखाया। रत्ती रत्त विच्चों रत्न अमोलक लए भाल, हीरा हरि का नाम जड़ाया। कलिजुग अन्तिम करे संभाल, सतिगुर पूरा नाउँ धराया। वेले अन्त ना होणा विंगा वाल, पारब्रह्म प्रभ बख्शी सच सरनाया। फल लग्गे साचे डाल्, पत डाल्ही आप फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भण्डार आप भराया। इक्क सेर पारब्रह्मो, इक्क पाउ ब्रह्म रखाईआ। सवा सेर लक्ख चुरासी मरे मर मर जम्मे, जीवण मरन खेल खिलाईआ।

पंज तत्त माटी किसे ना आए कम्मे, अन्त खाकी ख़ाक रलाईआ। लेखा जाणे दम दमे, स्वास स्वासां विच टिकाईआ। इक्की सिख कलिजुग अन्तिम आपणी शब्द कुक्खों आपे जम्मे, आपे बणया पिता माईआ। सोहँ पाया साचे मुम्मे, एका अमृत सीर प्याईआ। अन्तिम बेड़ा लावे बन्ने, अद्धविचकार ना दए डुबाईआ। जो घड़या सो हरि जी भन्ने, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खिच्चे जोत रवि ससि सूरज चन्ने, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला पुरख सुल्तान, इक्क अकल्ला आप करांयदा। आदि जुगादी नौजवान, आपणा भार आप उठांयदा। लोकमात वेखे मार ध्यान, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। चारों कुन्ट झूठ दुकान, साची वस्त ना कोए विकांयदा। चारों दिशा होए बेईमान आत्म ब्रह्म ना कोई जणांयदा। दोए कन्न होए शैतान, निन्दक निन्दया विच समांयदा। दोए लोचण होए निधान, हरि का दरस ना कोई पांयदा। बत्ती दन्द झूठा पीण खाण, अमृत रस ना कोई चखांयदा। रसना गाए ना साचा गाण, अनहद ताल ना कोई वजांयदा। चरन ना चल के करे धूढ़ी अशनान, सतिगुर धूढ़ ना मस्तक लांयदा। हथ्थ ना करया साचा दान, हरिसंगत ना सेव कमांयदा। पुरख अबिनाशी निगहबान, जुग जुग वेख वखांयदा। सवा सेर पक्के पकवान, हरि साचा आप पकांयदा। निरगुण सरगुण इक्क समान, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सवा सेर सच भण्डारा, हरिसंगत आप भरांयदा। निरगुण बणया नाल वरतारा, सरगुण सेव कमांयदा। पाणी देवे ठंडा ठारा, अमृत जल प्यांअदा। काया कूड़ा रोग निवारा, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। एका शब्द सच जैकारा, साचा राग सुणांयदा। हरिसंगत मेला हरि दुआरा, हरि एका बन्द वखांयदा। ऊँचां नीचां पार किनारा, ज़ात पात ना कोई बणांयदा। पुरख अकाल इष्ट संसारा, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। राउ रंक सोहिण इक्क दुआरा, शाह सुल्तान एका दर सुहांयदा। एका वरते मात वरतारा, एका हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिक्खी सिख बणांयदा। साची सिख्या सिख समझा, हरि आपणी दया कमांयदा। कलिजुग अन्तिम मार्ग ला, साचा मार्ग आप लगांयदा। चार वरनां रंग रंगा, एका रंग चढ़ांयदा। शब्द गुर इक्क समझा, एका इष्ट वखांयदा। राम कृष्न नानक गोबिन्द ईसा मूसा संग मुहम्मद आप रखा, आपणे विच टिकांयदा। सभ दा बेड़ा दए तरा, जो जन ध्यान धरांयदा। आपणी नईआ दए चला, एका चप्पू आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख तेरी साची रीती आपे आप चलांयदा। तारनहारा साची कुल, इक्की कुलां आप तराईआ। हरिसंगत तेरा पाया मुल्ल, कीमत करता आप मुकाईआ। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, आपणी बूझ बुझाईआ।

१२६८
०८

आपणे कंडे आपे तोल, पूरा तोल आप कराईआ। आपणा अक्खर आपे बोल, आपणी कल आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। नौ दुआरे नौ कुलां, तन दुआरे आप वसांयदा। सृष्ट सबाई रही अनभोल, हरि का भेद कोई ना पांयदा। पंज विकारा वेखे फोल, पंचम नाल रलांयदा। चौदां कुलां होया अडोल, हरि साचा आप डुलांयदा। आसा तृष्ना करे चोल्ह, साचा रंग रंगांयदा। सोलां कुलां आपे मौल, कँवला कँवल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। सोलां कुलां करे खण्ड खण्ड, हरि साच सच्ची वड्याईआ। जूठ झूठ करे रंड, माया ममता मोह चुकाईआ। हउमे हँगता भेख पाखण्ड, दूई द्वैती दए मिटाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, एका नाम करे पढ़ाईआ। सोलां कुलां करे दुआर बन्द, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरी काया अन्दर तेरी कुल दए समझाईआ। सोलां कुलां काया अन्दर, पंज तत्त रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया बणया मन्दिर, राजस तामस सांतक खेल खिलाईआ। वेखणहारा अन्धेरी कुन्दर, डूँघी भँवरी फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाईआ। सोलां कुलां पार कर, तन मन्दिर आप सुहाया। नौ दुआरे छुट्टयां लड़, घर साचा इक्क वखाया। पंज विकारा उखड़ी जड़, चौदां जोड़

१२७० जुड़ाया। आसा तृष्ना गई मर, गुर पूरे दर्शन पाया। सोलां मग्घर विहार कर, सोहँ सो साचा जाप जपाया। हरिसंगत १२७०

०८ लाई जड़, ना सके कोई उखड़ाया। सतारां मग्घर विहार कर, चारे जुग वेख वखाया। अठारां मग्घर खोल्ह दर, चार ०८

वरनां रंग रंगाया। उन्नी मग्घर उप्पर चढ़, चारे बाणी फोल फुलाया। वीह मग्घर दो जहानां खड़, लक्ख चुरासी चार वरन वेख वखाया। इक्की मग्घर वेला अमृत वक्त तिन्न, इक्की सिक्खां फड़ हिलाया। लेखा चुकाया गिण गिण, पिछला मूल रहे ना राया। सतारां मग्घर एका शब्द पढ़, वीह मग्घर चौथे घर सोहँ शब्द चलाया। इक्की मग्घर किरपा कर, इक्की सिक्खां मेल मिलाया। सोहँ अक्खर एका रूप कर, आप आपणा विच टिकाया। हरिसंगत तेरा भाणा आपणे सिर ते जर, आपणा सीस भेंट पहलों चढ़ाया। लाड़ी मौत चुकाया तेरा डर, राए धर्म ना दए सज़ाया। सचखण्ड दुआर खोल्ह किवाड़, लोकमात विच फेर आया। लक्ख चुरासी टोहे नाड़ नाड़, लेखा कोई रहिण ना पाया। वसणहारा जल थल जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाया। इक्की कुलां काया अन्दर देवे तार, गोबिन्द वेख वखाया। तारनहारा हरि गोबिन्द, सतिगुर साचा वड वड्याईआ। इक्की मग्घर मेटे चिन्द, कलिजुग चिन्ता रहे ना राईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गुरसिख साचे लए तराईआ। शब्द बणाए नारी कन्त, मात पित पिछला लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, गुर संगत तेरा जन्म दए समझाईआ। गुर संगत तेरा जन्म दिहाड़ा, हरि साचा आप समझांयदा। एका दिवस सतारा हाढ़ा, शब्दी शब्द उपजांयदा। एका मंगल इक्क अखाड़ा, एका सखीआं मेल मिलांयदा। एका पुरख एका नारा, एका गोबिन्द नाउँ धरांयदा। एका मीत इक्क मुरारा, एका नाम जैकारा लांयदा। इक्क बसन्त इक्क बहारा, फुल फुलवाड़ी इक्क महिकांयदा। एका घर इक्क भण्डारा, एका इक्क वरतांयदा। एका दर खुल्हा संसारा, जगत दर बन्द करांयदा। ना कोई लाया इट्टां गारा, गुर संगत तेरा प्रेम प्यार चार दिवार बणांयदा। तेरे दर बण भिखारा, आपणी भिच्छया आपणी झोली आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे जन्म दवांयदा। गुरमुख उपज्या साचा पूत, हरि साचे जन्म दवाया। तन काया ना लग्गे सूत, कलिजुग सूतक रहिण ना पाया। वज्जे वधाई चारे कूट, चारों कुंट जैकारा लाया। नाता तोड़ जूठ झूठ, साचा मार्ग इक्क रखाया। अबिनाशी करता आपे तुठ, दे मति रिहा समझाया। सदा संग रहिणा एका मुठ, दूई द्वैती नेड़ ना आया। चरन चरनोदक पीणा घुट्ट, दूसर हथ्थ ना किसे आया। हरिसंगत विच ना दिसे फुट्ट, सतिगुर अन्दर डेरा लाया। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन साचा बचन कमाया। मनमुखां जीवां दर दवारिउँ कढ्ढे कुट्ट, वेले अन्त दए सज़ाया। सोहँ मुम्मा साचा सीर अमृत रसन प्याया घुट्ट, इक्की मग्घर दिवस सुहाया। हरिसंगत तेरा भाग ना जाए निखुट्ट, तेरी काया जोत इक्क टिकाया। तेरी ना कोई वरन ना कोई गोत, तेरा रूप ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता विष्नूं वंसी बणाए ओतपोत, दोहतरवान ना कोई जणाया। इक्क अकल्ला करे खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत वेख वखाया। हरिसंगत वेखणहारा हरि, हरि वड्डा सिफ्त सलाहीआ। सच भण्डारा रिहा भर, एका वस्त झोली पाईआ। सतिजुग चले साची धार, साची रीती आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत साची सेवा आप लगाईआ। हरिसंगत तेरा साचा आटा, हरि सज्जण लेखे लांयदा। चार जुग दा पिछला घाटा, पूरा पूर आप करांयदा। अग्गे नेड़े रक्खी वाटा, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। अमृत पीता एका बाटा, एका वरन जणांयदा। दूसर किसे ना विकया हाटा, गुर गोबिन्द एह समझांयदा। अबिनाशी करते विछाई खाटा, एका सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। हरिसंगत तेरा सच भण्डार, हरि साचा संग चलांयदा। त्रैगुण माया कर त्यार, आपणे संग रखांयदा। पंचम तत्त ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोई वखांयदा। कूड़ी क्रिया मीत मुरार, मेल मिलावा मेल मिलांयदा। इक्की मग्घर दिवस विचार, साचा दर सुहांयदा। धुर फ़रमाना धुर दरबार, साचा राणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपे लेखा लेखे लांयदा। त्रैगुण माया तेरा बालण, हरि साचे आप बणाया। हरिसंगत नाल आई उठालण, प्रभ साचे संग रखाया। खेले खेल जोत अकालण, अकल कला रघुराया। करया वेस शब्द दलालण, शब्द शब्दी रूप वटाया। सन्त सुहेला आया भालण, चार वरनां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे इक्को लालन, लाल लाल इक्क उपजाया। लाल लालण लालो लाल, हरि साचा रंग रंगाईआ। नाम ग़रीबी सच्चा धन माल, सच ख़जाना आप भराईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाल, जुग करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण खेल कराईआ। खेल कराया हरि करतार, अकल कला कल धारया। हरिसंगत तेरा सच विहार, वरते विच संसारया। सवा सेर खण्ड ब्रह्मण्ड सच्चा भार, हरि साचा आप उठाईआ। बंक सुहाए इक्क दुआर, एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपणी सेवा आप कमन्दड़ा, कर्म कांड ना कोए। हरि सज्जण मेल मिलंदड़ा, घर साचे करे रसोए। साचा भोजन आप खवंदड़ा, डिग्गण देवे ना कोई भोए। जुगां जुगां दे सुत्ते आप उठंदड़ा, आलस निन्दरा रक्खी ना कोए। दर

१२७२ साचा इक्क सुहंदड़ा, देवे सच्चा नाम ढोए। मानस जन्म लेख लिखंदड़ा, अग्गे लेखा लवे ना कोए। सतिजुग तेरी धार १२७२

चलंदड़ा, चार वरन एका रंग बलोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेलया साचे घर, ग़रीब निमाणा बांहों फड़, दिवस रैण कदे ना सोए। ना सुत्ता ना जागया, ना बस्त्र ना खाट। ना अग्गे खड़ा ना दिस्सया भागया, ना नेड़े ना दूर कोई वाट। ना हँस ना कागया, विष्टा ना माणक मोती रस रिहा चाट। गुरमुखां गुरमुखां हरिभगतां हरिसंगत कोलों आदि जुगादि मंगदा रिहा आज्ञा, एका विकया हरिसंगत तेरे हाट। ना नारी ना सुत्त सुभागया, ना बस्त्र ना भूषन तन काया पाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा जाणे आपे दिवस रात। इक्की मग्घर इक्की कुल एका इक, इक्क सिख तराईआ। लालो मंगी नाम भिख, सिँघ किशन झोली पाईआ। बिन हरिसंगत किसे ना रिहा दिस, भरम भुलाई सर्ब लोकाईआ। हरिसंगत हरि तेरा बन्नया सिर, तेरी सिख्या आपणी झोली पाईआ। तेरा लिख्या आपणी हथ्थीं लेख, आपणी सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई दिसे मिथ, गुर अवतार रहिण ना पाईआ। जिस जन हरि जू मन्दिर अन्दर बहि बहि लेखा देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त धारे भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। दर मंगदे रहिण ब्रह्मा विष्न महेष, बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशान इक्क झुलाईआ।

✪ २२ मग्घर २०१६ बिक्रमी नाजर सिंघ दे घर पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✪

सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, आदि जुगादि खेल अपारया। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, निरगुण रूप अनूप निराकारया। एकँकारा खेल महान, अकल कला धारी नाउँ धरा ल्या। आदि निरँजण जोत महान, दीपक दीआ आप जगा ल्या। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटा ल्या। श्री भगवान सच निशान, एका एक हथ्थ उठा ल्या। महल्ल अटल उच्च मकान, थिर घर साचा इक्क सुहा ल्या। सुहाए बंक गुण निधान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी डेरा ला ल्या। पारब्रह्म प्रभ देवे दान, आपणी भिच्छया आपे झोली पा ल्या। खेले खेल दो जहान, मूर्त अकाल रूप वटा ल्या। अजूनी रहित इक्क ध्यान, एका एक टिका ल्या। आपणी उत्पत करे आप सन्तान, शब्द अनादी आप उपा ल्या। अंस बंसा खेल महान, विष्न ब्रह्मा शिव संग रला ल्या। त्रैगुण माया कर प्रधान, त्रै त्रै लेखा आप लिखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकारा, आदि जुगादी कर पसारा, निरगुण खेले खेल अपारा, अलख अगोचर बेपरवाह, आपणा नाउँ धरा ल्या। बेपरवाह हरि भगवाना, भेव कोए ना पांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जुग जुग वेस वटांयदा। शब्द अनादी इक्क तराना, पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे गांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, सच सिँघासण आपणा हुक्म सुणांयदा। दो जहानां चौदां लोक त्रैभवण पाए आणा सच सुल्ताना, शाहो भूप आप अख्वाया। ब्रह्मा विष्न शिव होए निगहबाना, नेत्र लोचण नैण आपणा आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आप करांयदा। खेलणहारा इक्क अकल्ला एकँकारा, वड वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर कर पसारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। पंज तत्त दिसे अधारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश संग मिलाईआ। घट घट अन्दर दीप उज्यारा, लक्ख चुरासी बैठा आसण लाईआ। मन मति बुध दए सहारा, एका तत्व सति समझाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत खेल अपारा, रक्त बूंदी बूंद उपाईआ। जागरत जोत जगत उज्यारा, सरगुण अतीत आप अख्वाईआ। खेल खिलाए नौ दुआरा, नौ खण्ड खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे वेखणहारा, आप आपणा नैण उठाईआ। लेखा जाणे रवि ससि सतारा, सूरज चन्न आपणा लेख वखाईआ। गण गंधर्ब दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप हलाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, लोकमात वेस वटाईआ। त्रैगुण माया वस्सया बाहरा, रूप रंग ना कोई वखाईआ। निर्भय रूप आप करतारा, दूसर भय ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकारा, आप आपणा कर पसारा, वेखे विगसे करे विचारा, दिस किसे ना आईआ। वेखणहारा पुरख सुल्ताना, एका रंग समाया। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग रचन रचाया।

त्रै त्रै मेला इक्क इकेला, गुरू गुर चेला नाउँ धराया। हरिजन हरि हरि सज्जण सुहेला, साक सैण आप अख्वाया। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, वार थित ना कोए जणाया। आपणा खेल आपे खेला, दूसर ना कोई दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। हरि हरि वड्डा वड, वड्डी वड्याईआ। आप खुल्हाया आपणा दर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। आपे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई बंधन बंध बंधाईआ। आपणी चोटी आपे चढ़, आप आपणा बंक सुहाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपणा अक्खर आप उपाईआ। आपणे अग्गे आपे खड़्ह, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग सूरा सरबंग, एका एक चढ़ाईआ। सूरा सरबंग हरि मेहरवाना, दूसर दोए कोए नज़र ना आंयदा। आपे जाणे आपणा सच निशाना, सचखण्ड दुआरे आप झुलांयदा। सचखण्ड बैठ मेहरवाना, आप आपणा अदल कमांयदा। चोबदार ना कोई दर दरबाना, ना कोई सीस झुकांयदा। इक्क अकल्ला श्री भगवाना, आपणा सालस आप बण जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्लड़ा हरि करतार, आपणा आप कराईआ। राह सुखल्लड़ा विच संसार, जुग जुग मात चलाईआ। काया माटी पंच तत्त पावे सार, ख़लक ख़ालक विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका घर सुहाईआ। निरगुण सरगुण हरि गोबिन्द, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सरगुण मेटे सगली चिन्द, आप आपणा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुणी गहिंद, ब्रह्म वेखे सहिज सुभाईआ। एकँकारा इक्क बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना वेख वखाईआ। आपणी रचना आपे रच, आपे वेख वखांयदा। आपे नौ दुआरे रिहा नच, पंज विकारा नाल रलांयदा। आपे दस्म दुआरी बैठा सच्च, सच सिँघासण आसण लांयदा। आप उपाए काया माटी भाण्डा कच्च, आपे भन्न वखांयदा। आपे पूत सपूता सुत्त दुलार जम्मे माता बणे जच, जन जनणी आप अख्वांयदा। आपे घट घट अन्दर जाए रच, रूप आपणा आप छुपांयदा। आपे त्रैगुण माया रिहा मच, आपे पंज तत्त अग्नी लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीवा बाती कमलापाती आपणा आप जगांयदा। दीवा बाती जोत उजाला, निरगुण नूर नूर उपजांयदा। शब्द सरूपी बण दलाला, वरभण्डी वेख वखांयदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, राज राजाना भेव खुल्हांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगांयदा। मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण अबिनाशी करता एकँकारा एका गल पाए साची माला, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। सोहँ शब्द वज्जे ताला, बहत्तर नाड़ा ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर भेव खुल्हांयदा। एका अक्खर हरि करतार, आपणा आप उपाया। निरगुण नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। अजूनी रहित खेल अपार, मात पिता ना कोई वखाया। भैण भाई ना सुत्त दुलार, सज्जण मीत ना कोई जणाया। महल्ल अटल ना कोई मुनार, चार दीवार ना कोई रखाया। जल बिम्ब ना कोई धार, धरनी धवल ना चरन टिकाया। रत तत्त ना कोई पसार, ब्रह्म मति ना कोए धराया। जेरज अंड उत्भुज सेत्ज ना कोई उत्पत, पत डाल्ही ना कोई वखाया। सर्ब कला आपे समरथ, समरथ पुरख नाउँ धराया। आपणी झोली पाए आपणी वथ, साची वस्त आप उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाया। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पुरख निरँजण देवे दाना, दाता दानी आप हो जाईआ। एकँकारा बन्न्हे गाना, साचा सगन मनाईआ। जोत निरँजण खेल महाना, आदि निरँजण वड डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी गाए गाणा, शब्द अनादी ढोला इक्क सुणाईआ। श्री भगवान वेखे सच मकाना, सचखण्ड निवासी थिर घर बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म कर ध्याना, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। वंडे वंड हरि सुल्ताना, आप आपणा अंग कटाईआ। एका ब्रह्म कर प्रधाना, दोए रूप इक्क हो जाईआ। सो पुरख निरँजण सच निशाना, हँ ब्रह्म आप उपजाईआ। सोहँ शब्द कर परवाना, आप आपणा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराईआ। सो पुरख सुल्तान, हरि हरि हरि अख्वांयदा। हँ ब्रह्म इक्क निशान, एका घर वसांयदा। दोहां विचोला आप भगवान, दो जहानां वेख वखांयदा। नौ नौ चार ना चुक्के कान, छत्ती जुग ना कोए हिलांयदा। सतिजुग वेखे सति दुकान, त्रेता फोल फुलांयदा। राम नाम कर प्रधान, द्वापर रंग रंगांयदा। साचा मेला सखीआं काहन, एका बंसरी नाम वजांयदा। कलिजुग झूले झूठ निशान, दहि दिशा आप झुलांयदा। माया ममता पाई आण, पंच विकारा नाल रलांयदा। जोद्धा बणया पंज शैतान, जूठ झूठ त्रिसूल हथ्थ उठांयदा। हउमे हँगता तीर कमान, माया ममता चिल्ला इक्क चढ़ांयदा। हँ हँगता शाह सुल्तान, घर फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा पसर पसारा, आपणा आप करांयदा। ईसा मूसा खेल न्यारा, ख़ालक आपणी खेल खिलांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, एका नाअरा हक्क वखांयदा। संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी प्रनांयदा। मेल मिलाए अद्धविचकारा, अग्गे राह ना कोई वखांयदा। निरगुण दीप कर उज्यारा, चौदां तबकां आप जगांयदा। घर घर अन्दर कर पसारा, आप आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। चौदां लोक वेखे हट्ट, हरि वड्डा एका एक अख्वाईआ। खेले खेल बाजीगर नट,

स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। वेखणहारा काया मट, अन्दर मन्दिर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि एका संग रखाईआ। एका संग सगला साथा, हरि हरि आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण गाए गाथा, हँ ब्रह्म आप सुणांयदा। पावे आण त्रिलोकी नाथा, हुक्मी हुक्म सर्ब फिरांयदा। आप जणाए पूजा पाठा, आप आपणा भेद खुल्हांयदा। आपे सर सरोवर वेखे तीर्थ ताटा, जल धार आप नुहांयदा। आपे पावे सार हरि करतार आण बाटा, मात गर्भ वेख वखांयदा। आपे पूरन करनहारा घाटा, पूर्ब लेख चुकांयदा। आपे अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, पिछला पन्ध मुकांयदा। आपे जोत ज्वाला होए ललाटा, सिँघ अस्वार आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल ब्रह्मादी, ब्रह्म पारब्रह्म वखांयदा। ब्रह्म वेखे हरि पारब्रह्म, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। आपणे घर आपे जम्म, आप आपणा सगन मनाईआ। पवण स्वास ना कोई दम, रसना जेहवा ना कोई हिलाईआ। आप संवारे आपणा कम्म, करनी करता नाउँ धराईआ। ना ख़ुशी हरख़ सोग ना कोई ग़म, आलस निन्दरा विच ना आईआ। ना कोई भुक्ख तृष्ना दिसे तम, ना कोई सेज रिहा हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी किरन आपे धर, लक्ख चुरासी देवे वर, चौथे जुग भण्डार भर, नाम अग्गे सति धर, नाम सति करे कुड़माईआ। इक्क इक्क इक्क नाम सति, हरि साची वंड वंडांयदा। नानक बुझाया एका तत्त, एका रूप दरसांयदा। बीज बीजे साचे वत, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। ब्रह्म पाई साची रित, नाम बीज आप वखांयदा। जगत मैल आपे कट्ट, एका रंग रंगांयदा। इक्क वखाए साचा हट्ट, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव आप खुल्हांयदा। नानक निरगुण निरगुण मेलया, हरि साचा मेल मिलांयदा। निरगुण गुरू निरगुण चेलया, निरगुण वेख वेख वखांयदा। निरगुण साक सज्जण सुहेलया, निरगुण साचा संग निभांयदा। निरगुण जाणे वक्त वेलया, निरगुण आपणा आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। नानक मेला निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच उपाईआ। निरगुण वजाए सच सितार, साची सारंगी हथ्थ उठाईआ। चार वेद ना पावन सार, ब्रह्मा चारे मुख सलाहीआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां गया जणाईआ। अठारां ध्याए गीता करे ज्ञान, हरि का रूप दिस ना आईआ। अञ्जील कुरान बहि बहि गाण, कलमा कलमी आप उपजाईआ। कायनात होई प्रधान, एका नाअरा रही सुणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, एका शब्दी शब्द सुणाईआ। निरगुण निरगुण होया जाणी जाण, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे दाता दानी

देवे दान, आपे झोली अग्गे डाहीआ। आपे जोती जोत होए श्री भगवान, आपे भगवन रूप वटाईआ। आपे सखीआं मंगल गाए बण बण काहन, आपे सीता सुरती राम प्रनाईआ। आपे ईसा मूसा वेखे मार ध्यान, काया काअबा आप वड्याईआ। आपे संग मुहम्मद गाए आपणा गाण, सच हदीसा इक्क पढ़ाईआ। आपणी किरन इक्क निशान, इक्क इक्क इक्क वंड वंडाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधान, आप आपणा बंस सुहाईआ। नानक मेला गुण निधान, गुणवन्ता गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसाईआ। निरगुण रूप हरि दरसाया, सरगुण वेख वखांयदा। सरगुण निरगुण विच मिलाया, निरगुण सरगुण रंग रंगांयदा। निरगुण रंग नज़र ना आया, सरगुण नैण खुल्हांयदा। सरगुण दरस आप दिखाया, निरगुण आपणा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी किरन आपणे अग्गे धर, आपणी वंड वंडांयदा। एका किरन नाम वंड, वंडणहारा वंड वंडांयदा। एका किरन उपज्या कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, रवि ससि सूरज चन्न सतार, आप चमकांयदा। एका किरन लक्ख चुरासी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप रखांयदा। एका किरन ब्रह्मा विष्न शिव करे खण्ड खण्ड, करोड़ तेतीसा एका किरन मेट मिटांयदा। एका किरन वेखे नार दुहागण रंड, घट मन्दिर फोल फुलांयदा। एका किरन सुणाए सुहागी छन्द, साचा सोहला आपणा गांयदा। नाम सति गाया एका बन्द, बत्ती दन्द ना कोई सलांहयदा। निरगुण चढ़ाया सरगुण चन्द, निरगुण जोत जोती जोत जगांयदा। निरगुण समाया परमानंद, निजानंद आप हो जांयदा। निरगुण मिटाए दूई द्वैती कंध, माया ममता पर्दा आप हटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणी सिख्या आप समझांयदा। निरगुण वेस हरि करतार, जोती जोत डगमगांयदा। नानक सरगुण दर दरबार, सचखण्ड दुआरा आप वखांयदा। एका दूजा भेव निवार, तीजा दर खुल्हांयदा। चौथे पद पावे सार, ब्रह्म नद इक्क वजांयदा। पंचम मेला हरि गिरधार, साचा थान थनंतर इक्क वखांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई मुनार, सच सिँघासण सोभा पांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण मीत मुरार, सति सतिवादी नज़री आंयदा। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, निरँकारा खेल खिलांयदा। नौ दर ना कोई दुआर, रसना जेहवा मुख नक्क कन्न ना कोई वखांयदा। दस्म दुआरी ना कोई दुआर, निझर झिरना ना कोई झिरांयदा। सचखण्ड निवासी सच्ची सरकार, घर साचा इक्क सुहांयदा। सो पुरख निरँजण नज़री आए इक्क करतार, नानक निरगुण वेख वखांयदा। हँ ब्रह्म वेख सर्ब संसार, आप आपणा नाल रलांयदा। नाड़ी मास चमड़े वस्सया बाहर, नेत्र नैण दिस किसे ना आंयदा। त्रैगुण माया ना कोई अधार, ब्रह्मा विष्न शिव ना सेव कमांयदा। सो पुरख निरँजण पाया साचा हरि निरँकार, सो अक्खर आप पढ़ांयदा। हँ कर प्यार ब्रह्म वेख संसार,

नानक मेला मेल मिलांयदा। सोहँ शब्द कर त्यार, काया चोला बन्द रखांयदा। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सृष्ट सबाई लेखा लेख चुकांयदा। सतिजुग ढोला गाए पहली वार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना मुख वखांयदा। छत्ती जुग रहे पुकार, नौ चार सर्ब कुरलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर आई हार, कलिजुग अन्तिम कूक सुणांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नैणा नीर वहांयदा। विष्नूं कोल सुणे पुकार, उच्ची कूके कूक सुणांयदा। शंकर गलों लाहे हार, हत्थ त्रिसूल ना कोई उठांयदा। करोड़ तेतीसा छड्ड दुआर, सुरपति राजा मुख भवांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, चारे खाणी वेख वखांयदा। चारे बाणी पावे सार, परा पसन्ती मधम बैखरी आपे फोल फोलांयदा। साचे हाणी कर त्यार, साची सिख्या सिख समझांयदा। साची राणी तन श्रृंगार, कलिजुग माया आप प्रनांयदा। इक्की जेठ दिवस विचार, दाई दाया खेल खिलांयदा। प्रगट होया विच संसार, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, लिख्या लेख चुकांयदा। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश गणपति गणेश आदि शक्ती आदि भवानी देवणहारा सच निशानी, अष्टभुज भेव खुल्हाए गुझ, शाह अस्वार आप हो जांयदा। शाह अस्वार हरि करतार, जोद्धा सूरबीर बली बलवानया। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, खेल अपारा विच संसारा, करे कराए वाली दो जहानया। नाम खण्डा तेज़ कटारा ब्रह्मण्डां मारे आपणी वारा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पारब्रह्म अबिनाशी करता निहकलंक नरायण नर, लोकमात आए ना किसे प्रनांयदा। जुग जुग भगतां पावे सारा, ध्रू प्रहलाद आप तरांयदा। अठारां अठारां लेखा एका वार, इकवंजा बवन्जा रंग रंगांयदा। बावन अक्खरी कर पसारा, ईश्वर ईश जीव उपजांयदा। त्रैगुण तत्त तत्त अँगयार, आपणी अग्नी आप जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार हरि करतार, हरि साचा सच सुल्तानया। चौथे जुग खेल अपार, खेले खेल आप महानया। रथ रथवाही बण संसार, उठाए चिल्ला तीर कमानया। महिमा अकथ अकथनी कथे ना जीव गंवार, वेद कतेब भेव ना आनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरा गहिणा तेरे नैणां, तेरा बस्त्र भूषन त्रैगुण पहनानया। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि सज्जण वेख वखांयदा। नानक गोबिन्द हरि हरि चेला, साचे रंग रंगांयदा। आदि जुगादी चाढ़े तेला, घर सखीआं मंगल गांयदा। पंचम बहि बहि पायण वेला, वेला वक्त सुहांयदा। वसणहारा धाम नवेला, धाम अवल्ला इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धरांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, पारब्रह्म

अबिनाशया। जुग जुग लहिणा देवण आया, हरिजन शाहो शबासया। नेत्र नैणां दरस दिखाया, वासी वास घनक पुर वास्सया। पृथ्मी आकाशी फोल फोलाया, गगन मण्डल पावे रास्सया। शब्द स्वासी ल्ए तराया, एका मार्ग साचा लास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए वास निवास्सया। वास निवासा आदि अन्त, निरगुण सरगुण आप धरांयदा। लेखा जाणे साध सन्त, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। मेल मिलावा नारी कन्त, घर साचा इक्क सुहांयदा। लेखा जाणे जीव जन्त, लिखणहारा दिस ना आंयदा। वेखे रुत्त रुत्त बसन्त, फल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आपणी भिच्छया देवे दान, हरिभगतन वंड वंडाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चार कुन्ट फेरी पाईआ। दहि दिशा देवे आप ज्ञान, पूर्ब कर्मा वेख वखाईआ। सति सरूपी इक्क ज्ञान, सोहँ शब्द नाम पढ़ाईआ। सम्मत सोलां हो प्रधान, सोलां इच्छया वेख वखाईआ। सोलां बरस बणया रिहा नादान, मुख आपणा पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा खेल खिलाईआ। सम्मत सोलां पर्दा लाहया, हरि साचा खेल खिलांयदा। हरि कल्की कल आया, निहकलंका
१२७६ नाउँ धरांयदा। गुर गोबिन्द संग रखाया, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। माया ममता हउमे हँगता दूई द्वैती पर्दा ढाहया, एका साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरसिख त्रैगुण माया अग्नी सड़दा आण बचाया, एका मेघ बरसांयदा। लक्ख चुरासी लुक लुक आपे फड़दा, दिस किसे ना आंयदा। आपणे अस्व घोड़े आपे चढ़दा, नीला नीली धारों पार करांयदा। सोलां कलीआं आसण गुरमुखां साचा घाड़न घड़दा, सोलां इच्छया झोली पांयदा। जगत विकारा आपे लड़दा, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। सोहँ अक्खर जो जन पड़दा, ब्रह्मा विष्न शिव फड़ फड़ चरनां हेठ दबांयदा। पुरख अबिनाशी बांहों फड़ सचखण्ड दुआरे आपे वड़दा, आपणा कुण्डा आपे लांहयदा। गुरसिख तेरे घाड़न घड़दा, घड़ण भन्नणहार आप अख्वांयदा। लेखा जाणे चोटी जड़ दा, डूँघी गार ना कोई दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धरांयदा। पाया घर घर करतारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। आया दर दर दरबारा, दर दरवेश रूप वटाया। नाल रलाया गुरमुख साचा लाड़ा, सिर सेहरा सीस नाम बंधाईआ। गुरमुख सखीआं लाया अखाड़ा, एका मंगल सोहणा गाईआ। पुरख अबिनाशी मंगण आया वाड़ा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोत निरँजण मेल मिलाए साचा लाड़ा, सच सवाणी घर बैठी करे सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सम्मत सोलां दए वड्याईआ। वीह सौ सोलां सम्मत आया, सम्मत सम्मती लेखा लिखांयदा। निहकलंक हरि जामा पाया, चार वरनां कूक

सुणांयदा। पंडत पांधा भुल्ला रहे ना राया, शाह सुल्तानां आप उठांयदा। मुल्लां शेख़ मुसायक कुतब गौंस शाह हकीर रिहा जगाया, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हांयदा। ग्रन्थी पन्थी दए उठाया, नाम धक्का एका लांयदा। गुरमुखां राह आपणे पाया, आपणा मार्ग आपे लांयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया, राती सुत्तयां आप उठांयदा। अमृत फड़ फड़ मुख चुआया, काया कासा आप फड़ांयदा। सच दलासा दए दवाया, राए धर्म ना अन्त सतांयदा। चित्रगुप्त दर लेख मुकाया, लाड़ी मौत मूंह भवांयदा। आपणे अंग ल्ए लगाया, जो जन रसना गांयदा। नानक मेला दए मिलाया, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। हँ ब्रह्म रहे ना राया, पारब्रह्म विच समांयदा। सोलां मग्घर सच विचार कराया, पिछला लेखा आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सतिजुग साची नींह रक्ख, सम्मत सोलां रूप वटांयदा। तेई मग्घर खेल करे समरथ, चार वरनां वरन मिटांयदा। हरिसंगत करया इक्क अकट्ठ, एका रथ चढ़ांयदा। लेखा चुकाए तीर्थ अठसठ, गुरसिख गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना नहावण कोई ना जांयदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए साचा गुरुदुआर शिवदवाला मठ, आप आपणी जोत जगांयदा। अनहद मारे शब्द सट्ट, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। साचा अमृत देवे झट्ट, नाम खण्डा विच फिरांयदा। तन पहनाए बस्त्र पट, सच दोशाला हत्थ उठांयदा। गुरमुखां दुरमति मैल देवे कट्ट, आपणी हत्थीं सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दूसर हत्थ ना वाग रखांयदा। छत्ती जुग पैंडा दूर, अन्तिम पन्ध मुकाया। पारब्रह्म प्रभ हाज़र हज़ूर, हरि हरि जू रूप वटाया। चार जुग दे बख्शे कसूर, जो जन सरनाई आया। मस्तक देवे साची धूढ़, मूढ़ मूढ़ चतुर सुघड़ बणाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, एका अक्खर नाम पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बजर कपाटी पाड़े पत्थर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा दरस दिखाया। साचा मार्ग सच वरतावणा, हरि साचा खेल खिलांयदा। नानक अक्खर इक्क पढ़ावणा, सोहँ जाप जपांयदा। गोबिन्द मार्ग जगत वखावणा, आपणा मार्ग आपे लांयदा। हरख सोग विच्चों गुरमुख बाहर कढावणा, नेत्र नीर ना कोई वखांयदा। मावां पुत्तरां नाता तोड़ तुड़ावणा, बिन हरि जी दूसर कोई नज़र ना आंयदा। सतिजुग पूरा इक्क अख्वावणा, साचा सालस आप हो जांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगावणा, नाम लिलारी इक्क अख्वाईआ। सम्मत सम्मती लेख चुकावणा, एका सम्मत आप चलाईआ। ऊँच नीच दा भेव मिटावणा, चार वरन करे कुड़माईआ। राम नाम कृष्न काहन अञ्जील कुरान ईसा मूसा मुहम्मदी यार नूर अलाही बेऐब परवरदिगार कलमा अमाम आप पढ़ावणा, कायनात करे जणाईआ। अहिबाब रबाब आप वजावणा, पुन्न सवाब इक्क कराईआ। मक्का काअबा हज्ज

वखावणा, उम्मत उम्मती वेख वखाईआ। पंडत पांधा आप पढ़ावणा, सच जञू नाम पाईआ। जोत लिलाटी तिलक लगावणा, दूसर तिलक ना कोई वखाईआ। सीस दस्तार इक्क बंधावणा, मस्तक चीर वेख वखाईआ। काली खिच्चे चिट्टे उप्पर लकीर ना कोई मेटे मेट मिटावणा, मेटणहारा आप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप खुल्हाए साचा दर, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाजा आपे खोल्ह, आपणा बंक सुहावणा। चार वरनां आप आपे बोल, आपणा जाप जपावणा। आपणे कंडे आपे तोल, आपे वणज वखावणा। आप वजाए आपणा ढोल, आपणे कन्न सुनावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग तेरी रीत, ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, ना कोई ऊँच नीच, हस्त कीट राउ रंक ना कोई वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी रचन आप रचांयदा। रचना रच सच करतार, साचा खेल खिलाईआ। लेखा चुकाए नस्स नस्स, विच संसार, हरिजन सचे आप तराईआ। हिरदे अन्दर वस वस खिच्च ल्याए चरन दुआर, आपणी डोरी नाम बंधन पाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तार, डुब्बदे पत्थर लए तराईआ। काग रलाए हँसा डार, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। लेखा जाणे आर पार किनार, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, ऊँची कूके दए दुहाईआ। साध सन्त होए विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद धीआं भैणां करन वपार, एका भुल्लया हरि रघुराईआ। तीर्थ तट्टां नारी नर, होए खुआर, नर नरायण वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मारे मार, मारनहार बेपरवाहीआ। ज़र जोबन कलिजुग गया हार, ज़ोरू ज़र रहे ना राईआ। बेड़ा डुब्बणा अन्त विच मँझधार, साचा चप्पू ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अन्न दाता देवे मात जगाईआ। कलिजुग अन्न दाता आप जगावणा, हरि साचा खेल खिलांयदा। तेई मग्घर दिवस सुहावणा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। सवा सेर लेखे लावणा, इक्क सवाया नाल उपजांयदा। पारब्रह्म प्रभ सगन मनावणा, थित वार लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग चुक्कणा तेरा मूल, हरि साचा आप चुकाईआ। कीती बख्शे तेरी भुल्ल, भुल्ला मार्ग कोई ना पाईआ। तेरी वेखे हरि जी कुल, कुल घाती तेरी वड्याईआ। तेरा कोई ना पैणा अन्तिम मुल्ल, तेरी ख़ाक बेमुखां सिर पाईआ। तेरी पुट्टे आपणी हथ्थीं चुल, त्रैगुण माया अग्नी विच डाहीआ। तेरा रूप तेरा जोबन मातलोक जाणा रुल, ना दिसे कोई सहाईआ। सतिजुग दुआरा साचा गया खुल्ह, सच भण्डारी हरि रघुराईआ। हरिसंगत उत्तों आपणा आप गया घुल, आपणा सीस भेट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, तेरी रीती विच संसार जणाईआ। तेई मग्घर दिवस सुहावणा, हरि साचा आप सुहांयदा। हरिसंगत सगन मनावणा, नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी राह तकांयदा। चार जुगां दे विछड़े मेल मिलावणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखांयदा। साचा मार्ग इक्क चलावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि साचा आप अख्वांयदा। नर हरि नरायण बन बनवारी, पारब्रह्म अख्वाया। निहकलंक कलि लए अवतारी, कलिजुग आपणा वेस वटाया। हरिभगतां लाए साची यारी, साचा मेला मेल मिलाईआ। दिवस रैण फिरे पिछे अगाड़ी, आप आपणी सेव कमाया। लहिणा चुकाए चरन छुहाई दाढ़ी, केसां चवर आप कराया। हरिसंगत तेरा लेखा चुकया सतारां हाढ़ी, अन्तिम कीमत करता आपे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, पंज प्यारे रिहा उठाया। पंज प्यारे पंचम मीत, पंचम मेल मिलन्नया। पंचम गावणा सुहागी गीत, पंचम करे पतित पुनीत, पंचम चाढ़े साचे चन्नया। पंचम ठांडा पंचम सीत, पंचम बेड़ा आपे बन्न्या। पंचम कलिजुग लैणा जीत, पंचम देवे आपे डन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा आपे आपणा घल्लया। सच सुनेहड़ा शब्द संदेश, हरि सज्जण आप सुणाईआ । ला ला कन्न सुणन ब्रह्मा विष्न महेष, शिव शंकर नाल रलाईआ। बाशक मुख सहँसर खोल्हे शेष, दोए सहँसर जेहवा नाल रलाईआ। राह तक्के गोवर्धन धारी रिखी केश, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण रूप वटाईआ। दस दस्मेस, कलिजुग रावन दहिसर देवे घाईआ। गुरमुख वेखण आया नानक धर धर खूंडी मोढे भूरी खेस, पाली आपणा नाउँ धराईआ। प्रगट होया जोद्धा सूरबीर नर नरेश, निहकलंक वड वड्याईआ । पंचम देवे सदा अदेश, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जगत अवल्लड़ा करया वेस, चारे खाणी चारे बाणी वेद शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान बाईबल भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे धुर फ़रमाना, एका हुक्म सुणाईआ। पंच प्यारे सच दुलारे, साचे तख्त सुहांयदा। हरिसंगत तेरा मेल कन्त भतारे, नर अवतारे वेस वटांयदा। ग़रीबां निमाणयां खाली भरन आया भण्डारे, वड भण्डारी नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दर बहि बहि कढुण हाढ़े, नेत्र नीर रो रो सर्ब कुरलांयदा। पुरख अबिनाशी करया खेल अपर अपारे, निरगुण रूप निराकार आउँदा जांदा दिस ना आंयदा। सम्बल नगरी वस्सया धाम न्यारे, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। इक्को इक्की कुलां रिहा तारे, कुल कुलवन्ता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर अवतार, आप अख्वांयदा। पंज प्यारयां पुटणी लोह, हरि साचा हुक्म सुणाईआ। जगत नाता तोड़ना मोह, गुर चरन ध्यान लगाईआ। पहलां चरन कँवल सतिगुर लैणे सच्चे छोह, फेर

कार यार कमाईआ। सुच्चे जल मुखड़ा लैणा धोह, अमृत जल आप भराईआ। चढ़दी दिशा पंज टप्प ला लैणे भौं, भय भयानक वेख वखाईआ। हरि का भेव ना जाणे को, आपणी करनी आप कराईआ। चार दुलारे आटा आपणी हथ्थीं गोह, साची सेवा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धराईआ। सिँघ दर्शन पुटणी चुर, एका ढईआ नाउँ रखांयदा। कलिजुग ढए हँकारी गढ़, हरि साचा आप सुणांयदा। शाह सुल्ताना राज राजाना ल्ए फड़, कल आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी अलख जगांयदा। नौ नारी कन्त प्यारी, हरि साचा सच समझाईआ। सेवा करे अपर अपारी, सेवा साची इक्क जणाईआ। कोई हथ्थ ना लावे धी कुआरी, कुआरी कन्या छोहण ना पाईआ। फुलका पकाए अपर अपारी, पारब्रह्म वेख वखाईआ। हरिसंगत तेरी जाए पैज संवारी, पिछला लेखा दए समझाईआ। आपणे सीस चुक्क चुक्क खारी, गुरसिखां हथ्थों हथ्थ दए वरताईआ। पार कराए पुरष नारी, बिरध बाल नौजवान ल्ए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेखा चुक्के गुर गोबिन्द, सूरबीर सुल्तान। डल्ले तेरी मिटे चिन्द, घर मिल्या हरि भगवान। सृष्ट सबाई तेरी करे निन्द, तेरा झुल्लदा रहे निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा लेखे लाए पकवान। सवा सेर पक्के पकवान, सुणे पुकार दातारा। गुरमुखां लेखा धुर दरबार, घर साचे सच वरतारा। काल महांकाल मुख शरमाण, नेत्र नैण ना सके कोई उग्घाड़ा। मंगण दर्शन कोटन रवि ससि सूरज चन्न भान, दर दर बण भिखारा। देवणहारा दरगाह साची माण, दर दरवेश आप निरँकारा। हरिजन होए चतुर सुजान, पाया पुरख अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए आपणा सच भण्डारा।

१२८३
०८

✪ २३ मग्घर २०१६ बिक्रमी लंगर वस्ते लोह अत्ते चुर पुट्टण समें नाज़र सिँघ दे घर ✪

दयाल काल हरि निरँकार, मूर्त अकाल अनभव प्रकाशया। देवणहारा साचा धन माल, सृष्ट सबाई पृथ्मी अकाशया। गगन मण्डल वेख दीपक थाल, रवि ससि जोत पुरख अबिनास्सया। साध सन्त गुर पीर अवतार करे प्रितपाल, भगत भगवन्त सन्त दासन दास दास्सया। आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शाह कंगाल, सति सरूप अकाशया। जुगा जुगन्तर घालण घाल, खेले खेल जल थल महीअल हरि भरवास्सया। नौ नौ चार अवल्लड़ी चाल, छे तीस खेल तमास्सया। चार जुग तोड़ जंजाल,

सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आवे रास्सया। हरिसंगत करे सदा प्रितपाल, पत डाल शाहो शबास्सया। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, अमृत आत्म देवे जल पूरी करे आस निरास्सया। गोबिन्द मेला साचे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ास्सया। सतिजुग दस्से राह सुखाल, सति पुरख निरँजण सचखण्ड वासी वास निवास्सया। पंचम मीता पंचम लए उठाल, पंचम पवे साची रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नूर करे प्रकाशया। पंचम पंचम नौजवान, अन्दर मन्दिर हरि समाईआ। पंचम वेखे मार ध्यान, जगत कुन्दर फोल फुलाईआ। पंचम उपजे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। पंचम देवे साचा दान, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। पंचम बख्शे चरन धूढ़ अशनान, दुरमति मैल गंवाईआ। पंचम मेला साचे काहन, साचा मंगल इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रीत पतित पुनीत आपे रिहा चलाईआ। साची रीती सच महल्ला हरि सतिगुर पुरख सुहांयदा। करे खेल इक्क अकल्ला, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुखां हिरदे अन्दर रला, वल छल धारी भेख वटांयदा। अमृत भरया नीर साचा जला, घर घर जाम प्यांअदा। शब्द खण्डा तिक्खा भल्ला, आपणे हथ्थ उठांयदा। उजड़या बाग हरया कीता जट्ट डल्ला, लहिणा लहिणा झोली पांयदा। आप फड़ाया आपणा पल्ला, दो जहान ना कोई छुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम देवे साचा वर, साची धार बंधांयदा। पंच प्यारे टप्प लगायण पंच, पंचां पंच वड्याईआ। कलिजुग माया लेखा चुक्कया कारू गंज, माया ममता होए हल्काईआ। हरिसंगत कराए साचा वणज, वणज वापारी आप अख्वाईआ। धार चलाए बावन बवंज, बावन करे आप पढ़ाईआ। लेखा जाणे सवेर सञ्झ, अट्ठ पहर हरि रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे रिहा वखाईआ। करया खेल पुरख अगम्म, पारब्रह्म अबिनास्सया। हरिसंगत संवारे तेरा कम्म, दर तेरे पाए साची रास्सया। ना मरे ना पए जम्म, गोबिन्द खेले खेल तमास्सया। हरि मन्दिर बणाया हड्ड मास नाड़ी चम्म, लेखे चुक्के पृथ्मी अकास्सया। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, हरख सोग ना कोई रखास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता पुरख अबिनास्सया। कलिजुग तेरी उखड़े जड़, हरि हरि हरि हरी हरी हरी रिहा उखड़ाईआ। चार कुन्टां दहि दिशा तेरा आकार वेखे सीस धड़, पंज तत्त त्रैगुण वंड वंडाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा खड़, पूर्ब कर्मा फोल फोलाईआ। आपणी हथ्थीं ढाए हँकारी गढ़, ढावणहारा मुख छुपाईआ। तेरी तृष्ना जाए सड़, जोती लम्बू एका लाईआ। वेले अन्त हरिसंगत एका अक्खर जाए पढ़, सोहँ शब्द ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरा सति दुआरा,

१२८४ ०८

नाथे वाला भर भण्डारा, बणया रहे आप रखवाला, हरि गोबिन्द सेवादारा, गुर गोबिन्द मीत मुरारा, नानक चाकरी चाकर करे विच संसारा, पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत चार वरन चार जुग देवे वर, लोकमात थिर घर सचखण्ड वड्डी वड्याईआ।

बल बावन भेख अपार, हरि वल छल खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। एका जोती दस अवतार, पुरख अकाल मनांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। नाम सति जगत वणजार, सच भण्डारा इक्क वरतांयदा। साची फतिह बोल जैकार, वाहिगुरू इक्क समझांयदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिलांयदा। बस्त्र भूषन सच शृंगार, साचा बस्त्र तन सजांयदा। पंचम मीता ख़बरदार, पंचम मेल मिलांयदा। गुरमुख साजण लाए पार, सिंघ रूप वटांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठार, साचा जल प्यांअदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, काया तन लटकांयदा। साचा कंगण कर त्यार, हथ्थो हथ्थ फड़ांयदा। धीरज जति अपर अपार, सच सति सति वरतांयदा। सीस जगदीस कर त्यार, नर नरेश वेस वटांयदा। दए सुनेहड़ा सांझे यार, शब्दी अगम्मी पवण अलांयदा। अबिनाशी करता पावे सार, तार सतार आप वजांयदा। दोहां विचोला हरि निरँकार, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। आदि शक्ती अद्धविचकार, साचा राह आप सुहांयदा। निर्भय रूप वरते विच संसार, भय भयानक खेल खिलांयदा। आपणा दुआरा आपणा घर आपे जाणे सिरजणहार, आपणी नगरी आप सुहांयदा। कंचन काया गढ़ कर त्यार, उच्च महल्ल अटल मुनार थिर घर वासी आपे सोभा पांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख खेले खेल अपर अपार, नेत्र लोचण नैण इक्क खुलांयदा। आवण जावण जावण आवण एका रंग रंगे करतार, कुदरत कादर करता सृष्ट सबाई मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बल बावन आपणा नाउँ धरांयदा। बल बावन हरि निरँकारा, एका रंग समाया। आदि जुगादि गुर अवतारा, आपणा रूप वटाया। जन भगतां देवे भगत भण्डारा, सच वस्त झोली पाया। हरिजन सन्तन देवे सति सति सति निराकारा, निरगुण आपणा दरस दिखाया। गुरमुख देवे इक्क अधारा, जगत तृष्ना मेट मिटाया। गुरसिखां दर दर बणे आप वरतारा, अमृत आत्म जाम सुहाया। हरिसंगत मेला विच संसारा, पुरख निरँजण दए कराया। मूर्त अकाल खेल अपारा, अजूनी रहित वेस धराया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ धराया। नाल रलाया रविदास चम्यारा, बाल्मीक बजवाड़ा लेखा वेख वखाया। साचा मीता सुत्त दुलारा, इन्द्र इन्द्र इन्द्र आपणी बिन्द उपजाया। जगत सुदामा एका

धारा, ग़रीब निमाणे गले उठाया। सिँघ दया बोल जैकारा, वाहिगुरू अक्खर इक्क पढ़ाया। सो पुरख निरँजण सभ तों बाहरा, हँ ब्रह्म रूप वटाया। सोहँ शब्द साचा नाअरा, नानक निरगुण आपणी रसना लाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, लेखा लेख दए मुकाया। भाग लगाए सच दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हाया। गुरदास बणया नाल लिखारा, एका ढईआ मेल मिलाया। हरिसंगत तेरा पार किनारा, पुरख अबिनाशी आपणे बेड़े आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चुर पुट्टे भट्ठी, गुरमुख गुरसिख हरिजन बिरध बाल नौजवान, लेखा पूर कराए जप तप हठ सती, सतिवाद आपणे पेटे पाया। हरिसंगत हरि जू हरि हरि मन्दिर कर अकट्ठी, आपणा दर्शन आपे पाईआ। कलिजुग अन्तिम राए धर्म दी कोई ना भरे चट्टी, जिस जन मिल्या हरि दाता बेपरवाहीआ। आप चढ़ावण आया फड़ फड़ औखी घाटी, सेवक सेवा आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग हड्डीआं बणाए बालण, साची भट्ठी देवे डाहीआ।

हरी हरि हरि भेख पुरख अबिनाश, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। गगन मण्डल खेल पृथ्मी आकाश, जुगां जुगन्तर रचन रचाईआ। जन भगतां पूरी करदा आया आस, निज घर आपणा रूप वटाईआ। लेखा गिणदा आया स्वास स्वास, जो जन जेहवा रिहा ध्याईआ। घट घट अन्दर कर कर वास, आपणा बैठा मुख छुपाईआ। दाता दानी शाहो शाबास, गहर गम्भीर इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पाई रास, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण शब्द अगम्मी करया त्यार खरास, कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़ बणाईआ। माया राणी होई दास, त्रैगुण बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेव कमाईआ। कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़, साचा खेल खिलांयदा। इक्क दूजे नाल गए जुड़, जोड़नहारा दिस ना आंयदा। सच सवाणी दी पई लोड़, आदि शक्ति आदि भवानी जोत नूरानी आदि निरँजण सेवा लांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल शब्द अगम्मी चढ़ चढ़ घोड़, आप आपणा वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां रिहा दौड़, मात पाताल आकाश गगन मण्डल फोल फोलांयदा। लक्ख चुरासी वेखे बीज मिट्ठा कौड़, पत डाल्ही फुल वेख वखांयदा। जन भगतां अन्तिम जाए बौड़, आप आपणा रूप वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां मार्ग दिसे एका सौड़, वेले अन्त ना कोई पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरताए, हरि सज्जण

खेल अपारया। जूठ झूठ दो बैल बणाए, जोड़ी मेल मिला रिहा। पंच विकारा हिक्कण डाहे, एका डण्डा हथ्थ फड़ा ल्या। कलिजुग कन्ढ्डा नेड़े आए, लेखा लेख ना किसे जणा ल्या। चार कुन्ट भेख पखण्डा पुरख अबिनाशी करे रंडा, आपणी हथ्थीं बंधन पा ल्या। तीर्थ तट्टां फेरा पाए, समुंद सागर वरोल वखाए, नाम तन्दन इक्क रखा ल्या। बाशक तशका खेल खिलाए, दोए सहँसर गाए, रसना जेहवा आपे गा ल्या। विष्नूं उठ उठ फेरे पाए, ब्रह्मा नीर उठ उठाए, भोला नाथ रिहा कुरलाए, करोड़ तेतीसा आसण सिँघासण आपणा आप तजा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची वस्त देवणहारा दस्त बदस्त, दूसर हथ्थ ना किसे टिकांयदा। कलिजुग जोड़ हरि जुड़ाया, सतिजुग संग मिलांयदा। हेठा उप्पर रक्ख वखाया, नाम किल्ली विच टिकांयदा। सम्मत सोलां गेड़ा रिहा दवाया, उलटा गेड़ा आप दुआंयदा। नौ खण्ड पृथ्मी भेड़ भड़ाया, दोहां पुड़ां विच दबांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आपणा पीसण आपणी हथ्थीं पीस पिसाया, कलिजुग अन्तिम गुरसिखां आप खुआंयदा। सवा सेर आटा नाल धराया, इक्क सेर हरि निरँकार चौथा हिस्सा सर्ब संसार गुर पीर अवतार नाल रलांयदा। सेवा करे आप निरँकार, निरगुण अतीता खेल खिलांयदा। डल्ले मिल्या झल्ला यार, डल्ला भुल्ला यार भुल्ल विच ना आंयदा। हरिसंगत साची कर त्यार, सतिजुग साचा राह वखांयदा।
१२८७
उजड़या हरा करे बगीचा आप करतार, पत डाली फुल पंखड़ीआं आप महिकांयदा। होए भँवरा उप्पर गुंजे वारो वार, सच सुगंधी आपणी वंड वंडांयदा। रचया काज हरि करतार, वेला अन्तिम वेख वखांयदा। सेवा लाए सेवक चार, चार यारी मुख भवांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बन्ने धार, नौ दर खोज खुजांयदा। नौ दर वाशना करे ख्वार, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सतिजुग तेरा सतो गुण विचार, विष्नूं विष्नूं नाल मिलांयदा। ब्रह्मा रजो गुण भर भण्डार, राजस आपणा रंग रंगांयदा। शंकर तमो गुण वेख संसार, अन्तिम वसदा नगर आपे ढांहयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव अपार, भेव कोए ना पांयदा। सच सवाणी कर त्यार, नौ नौ सेव कमांयदा। खाणी बाणी रही पुकार, बोध अगाध आप हो जांयदा। धुर दरगाही ठंडा पाणी निज घर आत्म परम पुरख परमात्म हरिसंगत उत्तों देवे वार, गंगा गोदावरी अठसठ तीर्थ मुख शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दा चुक्कया भार, आपणे सिरों दए उतार, गुरमुखां लैणा देणा झोली पांयदा।

२३ मग्घर २०१६ बिक्रमी लंगर वरतौण समें शब्द जोत प्रवेशता नाल
निरगुण सरगुण धार चली पूरन सिँघ ने नंगी पैरीं लंगर वरताया
अते हरिसंगत दी सेवा कीती पिण्ड नाथेवाल

सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि करता आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, सेवक सेवा सच कमांयदा। एकँकारा जोत निरँकार, आप आपणा वेस वटांयदा। आदि निरँजण वेखे विगसे पावे सार, आपणी धारा आप बंधांयदा। अबिनाशी करता रूप अपार, दिस किसे ना आंयदा। श्री भगवान हो त्यार, आप आपणा रूप वटांयदा। पारब्रह्म बोल जैकार, साचा नाअरा एका लांयदा। शब्द अगम्मी कर त्यार, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। थिर घर वासी सांझा यार, आपणा संग आप निभांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची भिच्छया इक्क वखांयदा। एका रूप आपणे अंग करे अंगीकार, आपणा जोबन आप हंढांयदा। अपणी मंगे मंग आपे ढहि ढहि पए दुआर, आपणा सीस आप झुकांयदा। आपे वरते वरतावे वरतणहार, आपणी कल आप वरतांयदा। आपे विष्नूं कर त्यार, निराकार साकार आप हो आंयदा। आपे पारब्रह्म करे खेल विच संसार, ब्रह्म आपणी अंस उपांयदा। आपे शंकर कर प्यार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणांयदा। आपे त्रैगुण माया कर विचार, एका घर रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आदि अनादी पुरख आप अख्वांयदा। आदि आदी पुरख भगवाना, एका रंग समाया। शब्द सरूपी सति तराना, घर घर सच्चे मन्दिर बहि बहि गाया। सचखण्ड सुहाए इक्क मकाना, बंक दुआरी नाउँ रखाया। लोआं पुरीआं इक्क निशाना, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाया। रवि ससि कर प्रधाना, मण्डल मण्डप डेरा लाया। जल थल महीअल खेल महाना, आकाश प्रकाश आप समाया। पंज तत्त त्रैगुण माया बद्धा गाना, लक्ख चुरासी वेस वटाया। मानस मानुख कर प्रधाना, आप आपणी बूझ बुझाया। खेले खेल दो जहाना, लोकमात रचन रचाया। वरभण्डी वेखे इक्क मैदाना, एका गढ़ सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराया। वेस अवल्ला इक्क अकल्ला, हरि हरि आप करांयदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, उच्च महल्ला इक्क सुहांयदा। आपणी जोती आपे रला, आपे शब्दी शब्द अलांयदा। आपणा फड़या आपे पल्ला, आपे संग निभांयदा। आपे लक्ख चुरासी अन्दर घट घट आपणा आसण मल्ला, सच सिँघासण सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा साचा राणा, आपे आप वरतांयदा। हरि भाणा बलवान, हरि सच्चे आप रखाया। सचखण्ड झुलाए इक्क निशान, थिर घर वासी डेरा लाया। परम पुरख शाह सुल्तान, राज राजान आप हो जाया। ना कोई दिसे दर दरबान, चोबदार ना

कोई जणाया। पूत सपूता नौजवान, सुत्त दुलारा एका जाया। देवणहारा धुर फ़रमान, लोआं पुरीआं रचन रचाया। आपे जाणे आपणी आण, सिर आपणा हथ्थ रखाया। त्रै त्रै देवे साचा माण, साची सेव वखाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, लिव अन्तर बूझ बुझाया। एका अक्खर इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका सरूप श्री भगवान, जोत सरूपी नज़री आया। साची सखीआं एका काहन, एका मण्डल रास रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे तख्त सुहाया। सच तख्त सुल्तान, हरि भगवानया। विष्नूं वेखे मार ध्यान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकानया। ब्रह्मा ला ला सुणे कान, हरि देवे धुर फ़रमानया। शंकर पाई एका आण, एका बंधन बंध बंधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल दो जहानया। सच सुनेहड़ा हरि भगवान, विष्नूं वंसी आप जणाईआ। देवणहारा एका दान, लक्ख चुरासी रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा उत्पत करे सर्ब जहान, त्रैगुण पंज तत्त मेल मिलाईआ। मन मति बुध कर प्रधान, नौ दर खोज खुजाईआ। सच महल्ले खेल महान, आपणी आप कराईआ। शंकर देवे एका दान, इक्क त्रिसूल हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम मेटे सर्ब निशान, जो उपजे रहिण ना पाईआ। तिन्नां विचोला बण मेहरवान, आपणी कल रिहा वरताईआ। नौ
१२८६ नौ चार जुग ना दिस्सया कोई निशान, नेत्र नैण ना कोई वखाईआ। छत्ती जुग ना होया प्रधान, आप आपणा बल धराईआ। १२८६
०८ सतिजुग त्रेता द्वापर वेख मकान, गुरसिख सन्त भगवन्त आपणे हुक्म रिहा चलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, नानक ०८
गोबिन्द दए गवाहीआ। प्रगट होए जोद्धा सूरबीर बली बलवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड होए सर्ब हैरान, लोआं पुरीआं देण दुहाईआ। रवि ससि मुख शरमान, तेज़ तप ना कोई वखाईआ। तीर्थ तट्टां वेखे निशान, सच दुआर ना कोई वखाईआ। प्रगट हो हरि मेहरवान, निहकलंका नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पिरथू तेरा रक्खे माण, हरि पुरख वड्डी वड्याईआ। अन्न दाता श्री भगवान, विष्नूं सेवा आप कमाईआ। जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यान, वड सालस बेपरवाहीआ। इक्क अकल्ला खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराईआ। आदि जुगादी हरि भगवन्त, परम पुरख अख्वाया। जुगा जुगन्तर महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना राया। गा गा थक्के साध सन्त, कोटन कोटि हरि सेव कमाया। भाणा जाणे गुरमुख विरला सन्त, जिस जन आपणा मेल मिलाया। लेख जाणे नारी कन्त, निरगुण एका रंग समाया। नौ खण्ड पृथ्मी वेख रुत्त बसन्त, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम बणया गढ़ हउमे हँगत, साची संगत ना कोई जणाया। दर दर घर घर मंगदे फिरदे मंगत, हरि का नाम किसे हथ्थ ना आया। चार कुन्ट दहि दिशा

जीव जन्त होया नंगत, नाम दोशाला साचा पर्दा उप्पर किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराया। धरया वेस हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हरिजन भगतां आपणे सिर चुक्कया भार, जगत लहिणा देणा दए मुकाईआ। गोबिन्द मीता बण लिखार, एका लेखा गया समझाईआ। नानक मेला निरगुण यार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर अलाहीआ। प्रगट हो विच संसार, एका जोत करे रुशनाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, सति सतिवादी दए वजाईआ। दो जहानां सुनणेहार, घट घट बैठा डेरा लाईआ। वरनां बरनां पावे सार, हिन्दू ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश ईसाई आपे वेख वखाईआ। एका वस्त नाम भण्डार, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग बण वरतार, जन भगतां दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि लेख लिख्या दए मिटाईआ। कलिजुग आया चौथा जुग, नर हरि वंड वंडांयदा। काया औध गई पुग, ना कोई धीर धरांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता वेखणहारा लुक लुक, साख्यात रूप वटांयदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले हरिजन आपणी गोदी लए चुक्क, आप आपणा भार उठांयदा। हरिजन बूटा जाए ना सुक्क, अमृत सिंच हरा करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच विहार हरि निरँकार, एकँकारा निरँकारा निराधार आप करांयदा। सच विहारा साची कार, हरि साचे सच कमाईआ। तेई मग्घर दिवस विचार, वीह सौ सोलां बिक्रमी नाल रलाईआ। हरिसंगत साची कर त्यार, हरिजन विछड़े मेल मिलाईआ। अमृत भरे सच भण्डार, दर घर साचे आप भराईआ। दिवस रैण करे प्यार, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। देवे नाम शब्द धुन्कार, धुंन आत्मक आप जणाईआ। सार शब्द ख़बरदार, एका एक वज्जे वधाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लेखा जाणे पुरख नार, नर नरायण हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची बणत आप बणाईआ। साची बणत आप बणाए, भेव अभेद छपाया। खाणी बाणी भेव ना राए, नेत्र लोचण नैणां दिस ना आया। अञ्जील कुरान रहे गाए, वेद पुराण आपणा सोहला एका ढोला गाया। साध सन्त रहे कुरलाए, दिवस रैण राह तकाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त सर्ब बिल्लाए, अमृत मेघ ना कोई बरसाया। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द नेत्र नैणां नीर वहाए, सांतक सति ना कोई वरताया। शंकर बाशक तशका गलों लाहे, जटा जूट आपणा वेस वटाया। ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकाए, दोए जोड़ प्या सरनाया। विष्नूं एका मंग मंगाए, दर तेरा इक्क सुहाया। अबिनाशी करता दया कमाए, आप आपणे अंग लगाया। दोहां विचोला आप बण जाए, आप आपणा वेस वटाया। लोकमात हरि फेरा पाए, निहकलंका

नाउँ रखाया। कलिजुग तेरी जड़ उखड़ाए, पंज प्यारे हुक्म जणाया। साची संगत नाल रलाए, घर मन्दिर डेरा लाया। तेरी भट्ठी इक्क तपाए, त्रैगुण बालण आपे डाहया। पंज विकारा लम्बू लाए, धूंआँधार सर्ब वखाया। जुग जुग आपणा पीसण पीस कमाए, साची चक्की नाम चलाया। सच सवाणी सेव कमाए, सोहँ हत्था हथ्थ रखाया। आपणा गेड़ा आप दवाए, आपणी भुजां फलाया। लक्ख चुरासी पीस वखाए, कलिजुग सतिजुग धक्का लाया। गुरमुख साचे लए तराए, जिस जन बख्शे सच सरनाया। आपणी बूझ आप बुझाए, दूई द्वैती पर्दा लाहया। नूरी दरस दरस दिखाए, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। अमृत मेघ बरस वखाए, निझर झिरना आप झिराया। फड़ फड़ कागों हँस बणाए, हरिजन साचे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा वेला आप सुहाया। कलिजुग वेला साचा वक्त, हरि सज्जण आप सुहाईआ। सेवा लाई आदि शक्ति, साची सेव रही कमाईआ। लेखा देवे गिण गिण भगत, भगतन भगती मूल चुकाईआ। देणा देवे बूंद रक्त, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। भरम भुलेखा सर्ब जगत, संसार जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची रीत चलाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त किनारा, हरि सतिगुर पुरख सुणांयदा। भगतां भरे नाम भण्डारा, साची वस्त इक्क वखांयदा। मनमुखां करे अन्त ख्वारा, चारों कुन्ट फिरांयदा। शाह सुल्तानां किसे ना दिसे दर दरबारा, दर दरबान ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंडन आप वंडांयदा। कलिजुग अन्तिम वंडाई वंड, हरिजन साचे लए तराईआ। वेखणहारा भेख पाखण्ड, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जन भगतां टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार आप अख्वाईआ। गुरसिख नार दुहागण ना होए रंड, साचा कन्त आप हंढाईआ। पंज विकारा करे खण्ड खण्ड, साचा खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा दए समझाईआ। बल बावन मीता हरि निरँकारा, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। सतिजुग आया चल दुआरा, साची भूमिका बल राजा आप सुहाईआ। करे अरदास अरजोई निउँ निउँ निमस्कारा, इक्क ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथमी करना विहार सतिजुग बणना आप वरतारा, तेरी ओट इक्क रखाईआ। इक्क अकल्ला आया शाह अस्वारा, दूसर कोई ना संग रलाईआ। पुरख अबिनाशी बख्शे बख्शणहारा, देवे माण वड्डी वड्याईआ। आपे आए तेरे चल दुआरा, आप आपणा रूप वटाईआ। दिस ना आए विच संसारा, सृष्ट सगली लए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ बुझाईआ। बल राजन दोए जोड़ जोड़ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। तेरा रूप अगम्म अपार, तेरा भेव कोई ना पांयदा। ना मरे ना पए जम्म विच संसार, मात गर्भ ना कोई वखांयदा।

१२६१
०८

जुग जुग आपणा कम्म करे सच्ची सरकार, साचा हुक्मी हुक्म सुणांयदा। जो घड़े लए भन्न अन्तिम वार, थिर कोई रहिण ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा गण गंधर्ब जीव जन्त साध सन्त लक्ख चुरासी आदि जुगादी देंदा रहे दान, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुख विरला सुणे तेरा ला ला शब्द कान, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। कवण वक्त कवण वेला कवण रुत्ती जायण मन्न, सच दुआरे चरन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। करी पुकार बल बावन मीत, निरगुण दर दुआरया। पुरख अबिनाशी ठांडा सीत, देवे शब्द नाम जैकारया। सतिजुग त्रेता द्वापर जाए बीत, अन्तिम आए कलिजुग वारया। तेरी भूमिका करा ठंडी सीत, निहकलंक लए अवतारया। हरिसंगत गाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ा ल्या। ना कोई गुरदुआरा मस्जिद शिवदवाला मट्ठ दिसे मसीत, आप आपणा रूप प्रगटा ल्या। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कलिजुग सतिजुग विच टिका ल्या। बलि बलि रक्खणा हरि हरि चीत, अछल अछल्ल खेल खिला ल्या। फेर चलाए सतिजुग रीत, पतित पुनीत भेव खुल्ह्रा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थान भूमिका वेख वखा ल्या। सच भूमका सच अस्थान, हरि साचा वेख वखांयदा। चौथे जुग श्री भगवान, आपणा रूप वटांयदा। पंज प्यारे पंज लगायण निशान, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। धरनी धरत धवल होई प्रधान, जिस दर आपणा चरन टिकांयदा। दूजा दर वेख मकान, आपणे मुख सलांहयदा। चारों कुन्ट इक्क ज्ञान, एका राग अल्ह्रांयदा। भगत लिखारी भगत भगवान, भगतां भगती विच टिकांयदा। चिट्टे उप्पर काला लिखे निशान, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटांयदा। बल तेरा बल भण्डारा, बावन वेख वखावणा। खेले खेल पुरख करतारा, आपणा भेव आप छुपावणा। चौथे जुग पावे सारा, निरगुण आपणा नाउँ धरावणा। सरगुण जोत करे उज्यारा, सच महल्ले दीप टिकावणा। आपे आए चल दुआरा, बंक बंका हरि सुहावणा। हुण मंगण आए बण भिखारा, फेर आपणी हथ्थीं आप वरतावणा। कलिजुग करे पार किनारा, सतिजुग मार्ग फेर चलावणा। सवा सेर आटा कर त्यारा, पिछला घाटा पूर करावणा। गुरसिख कढ्ढे विच्चों आण बाटा, मात गर्भ फेर ना आवणा। हरिजन विके ना हाटो हाटा, चौदां हट्टां मुख भवावणा। लहिणा देण चुकाए तीर्थ ताटा, अठसठ पन्ध मुकावणा। ना कोई पूजे जोत ललाटा, निउँ निउँ सीस ना किसे झुकावणा। जन भगत तोड़े बजर कपाटा, दस्म दुआरी कुण्डा लाहवणा। दरस दिखाए आत्म सेजा साचा खाटा, स्वच्छ सरूपी रूप वटावणा। काया तेरा मेरा खेल बाज़ीगर नाटा, दूसर भेव किसे ना पावणा। इक्क सरोवर मारे ठाठा, आत्म ब्रह्म जाम प्यावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ह्रावणा। कलिजुग अन्तिम

लोकमात आवणा, बल बावन हरि समझाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटावणा, नेत्र नैण दिस किसे ना आईआ। तेरा धाम फेर प्रगटावणा, दर साचा दए खुल्हाईआ। चार वरनां एका रंग रंगावणा, ऊँच नीच कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण पंज तत्त विकारा हउमे हँगता कलिजुग तेरी भट्ठी डाहवणा, आपणी हथ्थीं दए जलाईआ। सति सन्तोखी सति सतिवादी हरि ब्रह्मादी आपणा पकवान आप पकावणा, पंज चार नौ नौ आपणी वंड वंडाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलावणा, कबीर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निरगुण सरगुण बण के आवणा, सरगुण निरगुण विच टिकाईआ। गोबिन्द लेखा पूर करावणा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। सच दुआरा आप सुहावणा, झल्ला डल्ला लए तराईआ। काग हँस डार मिलावणा, सोहँ मोती चोग चुगाईआ। साची चोटी इक्क चढ़ावणा, अमर अमरापद इक्क वखाईआ। कोटन कोटि कोटां विच्चों इक्क तरावणा, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। कलिजुग माया खोट कढावणा, एका अमृत जाम प्याईआ। सच भण्डारा आप वरतावणा, तोट रहे ना राईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना हरिसंगत तेरे दुआरे चल के आवणा, प्रभ देवे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करनी करता आप अख्वाईआ। करनी करता करनेहारा, एका रंग समाईआ। आदि जुगादी लए अवतारा, गुर अवतार आप अख्वाईआ। शब्दी नाम बोल जैकारा, अनहद साचा राग अलाहीआ। दर
१२६३ दर घर घर अन्दर मन्दिर डूँघी कन्दर पावे सारा, उच्चे टिल्ले पर्बत जल थल महीअल फोल फुलाईआ। हरिसंगत बणया १२६३
०८ मीत मुरारा, भव सागर वेख वखाईआ। चार कुन्ट धुँधूकारा, दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। नारी नर होया विभचारा, काम ०८
क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्काईआ। जत सति टुट्टा सर्ब संसारा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। ब्रह्म मति ना कोई पसारा, मन मति करे कुड़माईआ। रत्ती रत्त ना वेखे जगत भण्डारा, अग्नी तत्त सर्ब रखाईआ। पुरख समरथ खेल अपारा, आप आपणा खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी चलाए रथ अपर अपारा, चारे कूटां आप भवाईआ। हउमे हँगता मन्दिर जाए ढठ्ठ कूड़ पसारा, अन्तिम एका ढाह लगाईआ। हरिसंगत तेरा इक्त्त कर इक्क दुआरा, नां थेह वाला आपणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आप कमाईआ। सेवा करे करनहारा, जुग जुग करदा आया। सच पकवान भरे भण्डारा, वरभण्डी नाउँ धराया। निरगुण सरगुण बण वरतारा, सरगुण निरगुण दए मिलाईआ। अमृत देवे ठंडी ठारा, निझर धारा मुख चुआया। सच महल्ला आप उसारा, चार दीवार ना कोई बणाया। ना कोई लाया इट्टां गारा, घर घर विच दए टिकाया। एका रंग रंगाए पुरख नारा, नारी पुरख भेव ना राया। हरख सोग ते वसे बाहरा, चिन्ता दुःख ना कोए सताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत दए तराया। साची संगत हरि नाम

वड्याई, हरि सति पुरख निरँजण आप उपांयदा। हरि हरि मन्त्र नाम करी कुड़माई, साचा सगन मनांयदा। एका घर वसे धी जवाई, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे चाँई चाँई, दर मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बूड़ सिँघ आप समझांयदा। गुरसिख सुणना ला कर कान, कादर कुदरत विच सजाया। सच महल्ला इक्क मकान, बिस्मिल आपणा रूप वटाया। शरअ शरीअत सच कुरान, कलमा काअब करे पढ़ाईआ। नूर अलाही दीन अमान, सच अमाम वेख वखाईआ। चौदां लोक भड़ु वखान, चौदां तबक संग रलाईआ। चार यार अन्त मिट जाण, पंचम देवे मात वड्याईआ। नौ दर मेटे जूठ निशान, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुर संगत मेला विच जहान, हरिसंगत नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। पहला घर हरिसंगत दरवाज़ा, हरि साचे आप खुल्हाया। चाकर होया ग़रीब निवाजा, गल अल्फी एका पाया। साज वजाए अनहद वाजा, तुरीआ पद आप रखाया। जन भगतां रक्खण आया लज्ज, लोकमात फेरा पाया। पतित पापीआं ग़रीब निमाणयां पर्दा देवे कज्ज, जो जन सरनाई आया। अमृत जाम प्याए रज्ज रज्ज, सच प्याला हथ्थ उठाया। कलिजुग कूड़ नगारा रिहा वज्ज, सृष्ट सबाई दए दुहाया। हरिजन गुरमुख गुरसिख हरिसंगत बैठे सज, हरिसंगत नाम धराया। हरिसंगत बणी सचखण्ड, लोकमात वज्जी वधाया। प्रभ पहलों तुट्टी आपणे नाल गंढु, तन्दन तन्द बंधाया। घर घर अन्दर चढ़या चन्द, पूर्ब लहिणा झोली पाया। करन ख़ुशी बन्द बन्द, तार सतार इक्क हिलाया। हरिसंगत रसना तजाओण मदिरा मास गन्द, साची सिख्या सिख समझाया। अड्ढे पहर परमानंद, आप आपणा विच टिकाया। तोड़नहारा हँकारी जंद, दूई द्वैती पर्दा देवे लाहया। संग गावणा सुहागी छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म लए मिलाया। जगत औध गई हंढ, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखाया। हरिसंगत विच गुरमुख साचे बहिणा, दूसर कोई बहिण ना पाईआ। दरस करना नेत्र नैणां, निज आत्म तृखा बुझाईआ। हरि का शब्द गुर कहिणा, जग मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। नाता तुट्टा मात पित भाई भैणां, धी पुत्तर ना बंधन पाईआ। हरि का भाणा सिर पर सहिणा, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। गुरमुखां अन्तिम अन्त प्रभ सति सरूपी पाए गहिणा, आपणा बस्त्र हथ्थ उठाईआ। कूड़ी धार विच ना बहिणा, सतिजुग साचा राह वखाया। सचखण्ड दुआरे दर घर बहिणा, हरि सतिगुर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए सलाहीआ। संगत पंगत एका रंग, हरि साचा नाम दृढ़ांयदा। सतिगुर पूरा वसे संग, विछड़ कदे ना जांयदा। अड्ढे पहर अमृत धार रंग, आपणी धार आप चलांयदा। मेल मिलाए आत्म सेजा सच पलँघ, दर घर साचा आप सुहांयदा। नाम कंगणा पाए

वंग, लाल चूड़ा आप रंगांयदा। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन संगत मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लांयदा। संगत मेला हरि निरँकार, हरिसंगत वेख वखांयदा। पंगत दर होई परवान, हरिसंगत मुख सलांहयदा। हरिसंगत तेरा धर्म निशान, हरि पंगत हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत पंगत एका रूप वखांयदा। हरिसंगत वखाए नाम रस, हरि साचा आप खुवांयदा। हरि हिरदे अन्दर जाए वस, आप आपणी दया कमांयदा। तीर अणयाला मारे कस, तिक्खी मुखी हथ्थ उठांयदा। दरस दिखाए नस्स नस्स, आप आपणा रूप धरांयदा। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, नूरो नूर डगमगांयदा। जुगा जुगन्तर आपणा मार्ग दस्स, लोकमाती राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। पंगत खाए अन्न भण्डार, देवणहार आप अख्वांयदा। खाए भुंचे सर्ब संसार, सांतक सति ना कोई करांयदा। सुंञे मन्दिर उच्च महल्ल मिनार, हरि का नाम ना कोई वखांयदा। संगत पंगत मेला इक्क दरबार, धुर दरबार धुर दरगाही वेख वखांयदा। पुरख अकाला मीत मुरार, दीन दयाला संग निभांयदा। काल महांकाला बणे भिखार, दर मंगण भिख ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कार, दोए जोड़ सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग अन्तिम आई हार, पासा सच ना कोई वखांयदा। पारब्रह्म पाए सार, सारंगधर भगवान बीठला आपणा रूप वटांयदा। सन्त सुहेले कर त्यार, आप आपणे रंग रंगांयदा। पहलां आपणा आप देवे वार, सिक्खी सिख्या सिख फेर समझांयदा। वालों निक्की धारों तिक्खी कर त्यार, नाम मसाण उप्पर आप चढ़ांयदा। दस दस्मेसा मीत मुरार, दर दरवेश अलख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत विकया तेरे हट्ट, दूसर दर ना कोई वखांयदा। साची धार साची सिक्खी, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। आपणे नेत्र आपे पेखी, आपे वेख वखाईआ। भेव खुलाए दस दस्मेसी, दहि दिशा फेरा पाईआ। नर नरायण नर नरेशी, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। लेखा जाणे धारी केसी, मूंड मुंडाए ल्ए तराईआ। चरन बहए ब्रह्म ब्रह्मा विष्न महेषी, शब्द डोरी बंधन पाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरी भुगते इक्को पेशी, हरिसंगत दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संगत पंगत एका रंग रंगाईआ। पंगत सच भण्डार, अन्न दाता आप वरताईआ। सृष्ट सबाई आए हार, चारे कुन्ट कूके दए दुहाईआ। सिँघ आत्मा बिरध अवस्था बाल जवानी देवे तार, तारनहार आप अख्वाईआ। हरिसंगत सेवा करे सच दरबार, नंगीं पैरीं फेरा पाईआ। मंगे भिच्छया बण भिखार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तेई मग्घर हरिसंगत तेरा नाता छुटा सर्ब संसार, हरि चरनां नाल बंधाईआ। माँ पुत्तर ना कोई रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैण ना कोए वहाईआ। आपणी हथ्थीं

कराउणा साचे घोड़े अस्वार, शब्द घोड़ा प्रभ साचा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, साचा सिदक आप रखाईआ। सच भण्डारा हरि वरतावणा, गुरमुख सांतक सति करांयदा। हरख़ सोग ते बाहर करावणा, एका चोग नाम चुगांयदा। माया ममता मोह चुकावणा, सोहँ जाप सुणांयदा। फड़ फड़ कागों हँस बणावणा, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच भण्डारा हरि निरँकारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, लोकमात पहली वार, हरिसंगत रूप वटांयदा। सच भण्डार त्रैगुण भिन्न, छिन्न छन खेल खिलाया। आपे लेखा रिहा गिण, गिण गिण लेखा आप चुकाया। आपे सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी रिहा मिण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरना हेठ दबाया। आपे सतिजुग वखाए साचा चिन्न, हरिजन साचे चन्द चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भिच्छया हरिसंगत झोली पाया। सच भण्डार हरि वरताए, हरिजन संग रलाईआ। बिरध बाल नौजवान बहि बहि खाए, मात गर्भ होए सहाईआ। पिछला कीता लए बख़्शाए, अग्गे मार्ग आपणे लाईआ। धुर संजोगी मेल मिलाए, जगत विजोगी फंद कटाईआ। जन्म जन्म दे रोगी लए तराए, साचा दारू नाम प्याईआ। वेदी सोढी बंस आप अख़्वाए, कोटी कोटि सहँसर मुख आपणी जेहवा आप हिलाईआ। आपे कान्हा कंस मेट मिटाए, आपे राम रावण लंका गढ़ तुड़ाईआ। आपे बल बावन भेख धराए, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपे अन्त कन्त भगवन्त सन्त लए जगाए, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा पूर कराईआ। आर पार ना कोई किनारा, भेव कोई ना पांयदा। वरते वरतावे विच संसारा, अद्धविचकारे डेरा लांयदा। सृष्ट सबाई नौ खण्ड भेव न्यारा, ब्रह्मण्ड भेख वटांयदा। जेरज अंड उतरे पारा, उत्भुज सेत्ज नाल तरांयदा। राग रागनी गाए वजाए इक्क सितारा, छत्ती राग मुख शरमांयदा। काग रलाए हँसा डारा, आपणी चोग आप चुगांयदा। सति सन्तोखी सति भण्डारा, सति पुरख निरजंण आप वरतांयदा। वेखण ना जाए विच संसारा, चार जुग वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता उत्तम जाता इक्क बणांयदा। उत्तम ज़ात हरिजन तेरी, दूसर होर ना कोई जणाईआ। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरी, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। लक्ख चुरासी अन्न दाता किसे ना मिले धड़ी सेर पसेरी, वट्टा ना कोई पाईआ। ना कोई दिसे नगर खेड़ी, शहर ग्रां ना दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा वेखे दर, पंगत मेल मिलाईआ। नौ खण्ड तेरा पार किनारा, हरिसंगत वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण वरतारा, निरगुण झोली पांयदा। जुगां जुगां दा भार सिरों उतारा, आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली पंगत आप लगाए आपणे अंगत, अंगीकार नानक अंग समांयदा।

एथे ओथे दो जहान, गुर सतिगुर आप सहाईआ। दर आयां बख्शे साचा माण, दरगाह देवे वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी छुट्टे काण, आवण जावण फंद कटाईआ। सचखण्ड वखाए इक्क मकान, हरि बैठा आसण लाईआ। हरिसंगत तेरा सच पकवान, आपणे हथ्थीं रिहा वरताईआ। फड़ फड़ वरताए निगहबान, जगत तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, तेरा दित्ता आदि जुगादि आपे रिहा खाईआ। गुरसिख तेरा नाम भण्डारा, हरि सच्चा वड वड्यांअदा। हरिसंगत वसदा रहे दुआरा, चार वरनां मेल मिलांयदा। आपे शाह आपे सिक्दारा, सच सुल्तान नाउँ धरांयदा। आपे दरवेश बणे भिखारा, दर दर आपणी अलख जगांयदा। संगत पंगत इक्क प्यारा, घर एका वेख वखांयदा। वीह सौ वीह बिक्रमी वज्जणा सच नगारा, प्रभ साचा आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, सरगुण निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। हरिसंगत पहली तोड़ गिराही, सज्जा हथ्थ तेरे नाल रलाईआ। त्रैगुण तेरी मिटे ढाई, चौथे जुग आप मिटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवण आए चल गवाही, प्रभ चरनां हेठ रखाईआ। गुर गोबिन्द बूटा पुटयां एका काई, कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ाईआ। अन्त वेला गया आई, निहकलंक करे सफाईआ। नाता तोड़े भैणां भाई, मिलणे आए ना धी जवाई, चार जुग दे भुल्ले राही, गुरसिख आपणे नाल रलाईआ। इक्ट्ठे कीते फड़ फड़ बांही, अन्दर वड़ वड़ सेव कमाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला निरगुण दाता पुरख बिधाता सिर रक्खे ठंडीआं छाँई, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। हरिसंगत बणया पिता माई, मात पित आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त नाल रलाईआ। अन्न अन्न अन्न पकावणा, हरि साचे आप पकवाया। खेले खेल श्री भगवाना, भगतन भगती वेख वखाया। जोत सरूपी धरया बाणा, निर्भय आपणा नाम धराया। राग अनादी सच तराना, धुनी नाद आप वजाया। ब्रह्म ब्रह्मादी इक्क पछाना, पारब्रह्म वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराया। रोटी नाल रक्खे दाल, दयावान दया कमांयदा। चार जुग दे शाह करे कंगाल, कंगालों शाह आप बणांयदा। हरिसंगत तेरा बण दलाल, लोकमात फेरा पांयदा। चरनां हेठ दबाए काल महांकाल, दूसर दिस किसे ना आंयदा। हरिसंगत तेरा विंगा होए ना वाल, राए धर्म दोए जोड़ जोड़ सीस झुकांयदा। लक्ख

चुरासी विच्चों भाल, आप आपणा मेल मिलांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, अट्ठे पहर वेख वखांयदा। तोड़न आया जगत जंजाल, नाम जंजीरी इक्क उठांयदा। सचखण्ड दुआरे मारे इक्को छाल, लोआं पुरीआं गुरसिखां चरनां हेठ रखांयदा। गुर गोबिन्द उठाए साचे लाल, हीरे माणक मोती आपणे नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप सुहांयदा। दाल रोटी नाल भाजी, हरि साचे रचन रचाईआ। लहिणा देण चुकाए मुल्लां शेख़ काज़ी, पीर दस्तगीर रहिण ना पाईआ। ना कोई हाज हाजी, निउँ निउँ सजदा कोई ना कराईआ। फड़ फड़ मारे वड गाजी, शब्द त्रिसूल हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए सांझी, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। पहलों शब्द सरूप चलाए एका आंधी, उच्चे टाहणे भन्न वखाईआ। धरत मात दिवस रैण सुखां ए सुखादी, दे दरस हरि रघुराईआ। कलिजुग रैण थक्की मांदी, नेत्र नीर रहे वहाईआ। अल्ला राणी दर खलोती थक्की मांदी, मंगे वर सीस झुकाईआ। आपणा दरस देहु वार जांदी, सच अमाम तेरी सरनाईआ। हरिसंगत रहे पीदी खांदी, सृष्ट सबाई मरे भुक्खी ध्याईआ। किसे कम्म ना आउणा सोना रुपा चांदी, हीरे जड़त ना कोए जड़ाईआ। प्रभ पिछला मूल चुकाया कर्म कांडी, कर्म कुकर्म मेट मिटाईआ। डल्ले तेरे तार
१२६८ जाए आंढी गुआंढी, जो नैण दर्शन हरि हरि पाईआ। हरिसंगत तेरी काया माटी सोलां साल आप मांजी, निरगुण आपणा १२६८
मुख छुपाईआ। कलिजुग जाग ना लाए कांजी, दुध्ध साचा सीर प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच भण्डारा इक्क वखाईआ। सच भण्डारा हरि बणाया आपणी दृष्टी विच टिकांयदा। सिँघ पाल वेखण आया, ब्रह्मा वेता नाल रलांयदा। दूजा लेखा लए लिखाया, सिँघ आत्मा एह समझांयदा। परम आत्म संग निभाया, साचा घर सुहांयदा। पंचम मंगी मंग मंगण आया, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। हरिसंगत साची दए वरताया, जन्म जन्म दी लग्गी भुक्ख प्यास आप बुझांयदा। ठंडा जल नाल भराया, भर भर प्याले हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तृप्त करांयदा। हरिसंगत होए तृष्ना दूर, आसा आसा विच समाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूर, जल्वा नूरो नूर उपजाईआ। लेखा जाणे नेड़ा दूर, दूर नेड़े पन्ध मुकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। हरिसंगत तेरी साची धूढ़, आपणे मस्तक टिक्का लाईआ। आप बणया मूर्ख मूढ़, गुरसिखां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत सीर भण्डार जल रिहा भराईआ। गुर संगत तेरा सच भण्डारा, हरि पंगत आप वरतांयदा। मेरा मंगे फिर दुआरा, आपणी इच्छया आप समझांयदा। दर दुआरा बणे भिखारा, भेख भेखी भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी तृष्ना आपणी भुक्ख

हरिसंगत तेरे दर बुझांयदा। हरिसंगत तेरा डिगा ढठ्ठा भोरा, हरि आपणे मुख लगाईआ। नेत्र खोल्ले तोर मोरा, मोरा मोरा तेरा दए चुकाईआ। दरस दिखाए विच अन्ध घोरा, अन्धेर दए मिटाईआ। अनहद शब्द मचावे सोरा, दिवस रैण आप सुणाईआ। सस्से उप्पर लाया होड़ा, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, पंचम अक्खर वेख वखाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, शब्द शब्दी रंग चढ़ाईआ। सम्बल नगरी साचा धाम ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, गुर गोबिन्द गया लिखाईआ। हरिसंगत जुग जुग दी लग्गी औड़ा, कलिजुग अन्तिम तेई मग्घर वीह सौ सोलां बिक्रमी आप दए बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भोजन लहिज फेहज भख भोज चार सार हरि निरँकार दर दुआरा एका रूप वखाईआ।

ऊँच अगम्म बेअन्त अथाह, निरगुण रूप हरि निरंकारया। एकँकारा निरँकारा बेपरवाह, आदि जुगादि समा रिहा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणहारा साचे थाँ, थिर घर साचे डेरा ला रिहा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, रूप अनूप आप वखा रिहा। शब्द अनादी आप उपजा, आप आपणा राग अल्ला ल्या। सृष्ट सबाई रचन रचा, लक्ख चुरासी बंक सुहा ल्या। घट घट अन्दर डेरा ला, आपणा पर्दा आपे पा ल्या। निरगुण सरगुण वेस धरा, आप आपणा जगत उपा ल्या। सन्त गुर

१२६६ अवतार अख्वा, भगत नाम दृढ़ा ल्या। जगत जोग इक्क उपा, सच सलोक हरि सुणा ल्या। मोख मुक्त वेख वखा, लेखा १२६६

०८ लेख सर्ब चुका ल्या। चिन्ता हरख़ सोग मिटा, हरिजन साचे आप उठा ल्या। दो जहानां बण मलाह, साचा बेड़ा आप ०८

चला ल्या। एका चप्पू देवे ला, नाम वंञ मुहाणा हथ्थ उठा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगा ल्या। नूर उजाला हरि गोपाला, परम पुरख वड्याईआ। पारब्रह्म खेल निराला, अनुभव प्रकाश कराईआ। आपे चले चलाए अवलड़ी चाला, आदि जुगादि वेस वटाईआ। पुरीआं लोआं वजाए आपणा ताला, आप आपणा राग अल्लाईआ। सचखण्ड सुहाए सच्ची धर्मसाला, एका बैठा आसण लाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, धन्न खज़ाना माल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित वड वड्याईआ। जूनी रहित निरगुण रूपा, हरि आप अख्वांयदा। वसणहार चारे कूटां, दहि दिशा वेख वखांयदा। आपे लाए आपणा बूटा, फुल फुलवाड़ी आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेद खुल्लांयदा। जुग जुग भेद हरि निरँकारा, वेद कतेब ना कोई सुणाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, अगम्म अगम्मड़ी खेल कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़ी ना करे प्यारा, जगत हट्ट ना कोई विकाईआ। थिर घर साचे वसणहारा, हरिजन मन्दिर आप सुहाईआ। घर विच दीपक घर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। एका रूप

साची सरकारा, स्वच्छ सरूपी आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा राग अल्हाईआ। जुग जुग राग हरि करतार, आपणा आप अल्हांयदा। ब्रह्मा सुरस्ती ना पावे सार, नानक मन ना मुख सलांयदा। तार सितार ना गाए कोई वार, आपणा भेद ना कोई जणांयदा। एका मन्दिर खेल अपार, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। दीपक जोती जगे अपार, तेल बाती ना कोई टिकांयदा। सच सिँघासण हरि निरँकार, पुरख अबिनाशन वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। आप उपाए आपणा आप, हरि वड्डा सति पुरख सुल्ताना। आप उपाए आपणा जाप, पारब्रह्म श्री भगवाना। आप उपाए आपणा वड प्रताप, आपे वेखे खेल महाना। आप आपणा बणे माई बाप, पूत सपूता नाउँ धराना। आप आपणी जाणे जात, आप आपणी कुल वखाना। आप आपणी सोए खाट, आपणा पलँघ आप वखाणा। आप नुहाए आपणे घाट, आपणा तीर्थ करी प्रधाना। आप आपणा अमृत रस लए चाट, जोती नूर श्री भगवाना। आप आपणा खोल्ह हाट, साची वस्त विच टिकाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जाणी जाणा। जानणहार पुरख समरथ, एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्त चलाए रथ, रथ रथवाही भेद ना आंयदा। आप उपजाए आपणी वथ, त्रैगुण मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी करे अकट्ठ, एका भट्ठ तपांयदा। भाण्डे घड़े वक्ख वक्ख, आप आपणा बिरध रखांयदा। लेखा जाणे नठ्ठ नठ्ठ, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। आसण लाए घट घट, मुखड़ा आपणा आप छुपांयदा। आप आपणा कर प्रगट, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। तन नगारे लाए सट्ट, अनहद ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि पुरख निरजंण साचा सगन मनांयदा। हरि पुरख निरँजण साचा सज्जण, साचे वज्जी वधाईआ। सो पुरख निरँजण कराया साचा मजण, सर सरोवर इक्क कहाईआ। एका आया पड़दे कज्जण, अकल कल धारी वेस वटाईआ। अबिनाशी करता साचा सज्जण, एका रंगन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम साचा वेला, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। गोबिन्द मिल्या साचा चेला, चेला गोबिन्द नाउँ धरांयदा। पाया भेव इक्क अकेला, एका इष्ट जणांयदा। अचरज खेल प्रभ आपणा खेला, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर नूर उपजांयदा। नूर उज्यारा हरि करतारा, सहिज सहिज सुखदाया। जुग जुगन्तर होए सिक्दारा, शाह सुल्तान आप अख्वाया। देवणहारा सर्ब भण्डारा, वड भण्डारी वेस वटाया। लक्ख चुरासी पावे सारा, लुकया कोई रहिण ना पाया। भगतां मेला अपर अपारा, आपणा मेल मिलाया। एका खोल्हे सच दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हाया। एका पुरख एका नारा, नारी

१३००
०८

नर आप हो जाया। एका अन्दर एका गुप्त एका बाहर एका ज़ाहरा, एक एका वेख वखाया। एका शब्द एका नाद एका
धुन इक्क जैकारा, एका ताल तलवाड़ा आप वजाया। एका गोपी एका सखी एका काहन लाया अखाड़ा, एका साचा नाच
नचाया। एका मेटणहारा पंचम धाड़ा, एका जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, एका नूरो नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर वेस कर, हरि साचा वेखण आया। हरि साचा वेखे नेत्र खोल्ह,
आत्म अन्तर आप खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी रिहा बोल, आपणा हुक्म सुणाईआ। नाम जैकारा वज्जे ढोल, अनहद रिहा
वजाईआ। जन भगतां पड़दे देवे खोल्ह, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। हौली हौली अन्दर बोल, अनभव रूप आप दरसाईआ।
चरन प्रीती मार्ग दस्से घोली घोल, घोली घोल आप अख्वाईआ। नाम कंडे तोले तोल, सच तराजू हथ्थ उठाईआ। नौ
नौ लए आपे फोल, सति सति वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी रही अनभोल, हरि का भेव कोई ना पाईआ। गुरसिखां वसे
सद कोल, दिवस रैण सेव कमाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना डोले ना कोई डुलाईआ। घट घट अन्दर गया मौल,
मौला आपणा नाउँ रखाईआ। जन भगतां उलटा कर नाभ कँवल, अमृत झिरना साचा आप झिराईआ। लेखा जाणे धरत
धवल धौल, धर धरनी वेख वखाईआ। भेस वटंदड़ा पुरख सुल्तान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोत जगन्दड़ा हरि
१३०१ ०८ १३०१ ०८
मेहरवान, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। भगतन मेल मिलंदड़ा दो जहान, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सज्जण लए मिलाईआ। हरिजन उठ उठ सुत्या, हरि साचा
आप जगांयदा। आप सुहाई साची रुतया, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखांयदा। वेस वटाया अबिनाशी अचुतया, चेतन रूप आप
अख्वांयदा। किसे वसे ना पंच तत्त बुतया, मन्दिर अन्दर ना कोए बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन उठ उठ बल धार, हरि साचा आप जगांयदा। जगी जोत विच संसार,
निरगुण रूप अनूप वटांयदा। प्रगट होया कलि कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ धरांयदा। शाह सुल्तानां करे ख्वार, राज
राजानां मेट मिटांयदा। सन्त सुहेले लाए पार, फड़ फड़ बांहों आप तरांयदा। मेला मेले विच संसार, गुर चेला एका रंग
रंगांयदा। चार वरनां खोल्ह किवाड़, साची सरना इक्क तकांयदा। हरन फरना नेत्र कर त्यार, आप आपणा पर्दा लांहयदा।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, साची बूझ आप बुझांयदा। उठ सिख सच दुलारे,
हरि साचा आप जगाईआ। दर दर घर घर शब्द सरूप वाजा मारे, उच्ची कूके दए दुहाईआ। गुरसिख गूढ़ी नींद सुत्ते
पैर पसारे, जन्म कर्म ना वेख वखाईआ। जुग जुग विछड़े आपे मेले कन्त भतारे, कन्त कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। हरिजन

सुलक्खणी बणे नारे, घर साचे सोभा पाईआ। अस्थिल वखाए इक्क चुबारे, सचखण्ड महल्ला उच्च अटला आप जणाईआ। चौथा पद सच्ची सरकारे, ब्रह्म नद इक्क वजाईआ। गुरमुख तेरी साची हद्द, हरि साचा आप वंडाईआ। राए धर्म ना लए सद्द, वेले अन्त ना दए सजाईआ। विष्नूं उपजाई आपणी यद्द, विश्व रूप आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्दर मन्दिर साचा वेख वखाईआ। साचा मन्दिर काया गढ़, हरिजन हरि हरि आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा अन्दर वड़, आप आपणा आसण लांयदा। पंच विकारा लए फड़, जगत तृष्ना मेट मिटांयदा। तोड़नहारा हँकारी गढ़, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, नेत्र नैण नज़र ना आंयदा। हरिजन लगाए आपणे लड़, एका पल्लू हथ्थ रखांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा सालस नाउँ धरांयदा। कलिजुग सालस आप प्रभ, आपणी दया कमांयदा। सन्त सुहेले साचे लभ्भ, दर घर साचे मेल मिलांयदा। अमृत धारा कँवल नभ्भ, बूंद स्वांती आप चुआंयदा। जगत विकारा देवे दब्ब, त्रैगुण माया भार उठांयदा। दरस दिखाए प्रगट हो हो झब्ब, जिस जन आपणी दया कमांयदा। नाम प्याला प्याए मदि, दिवस रैण ख़ुमार रखांयदा। इक्क वखाए साचा पद, अमरापद मेल मिलांयदा। गुरसिखां भार आपणे उप्पर लद्द, सीस जगदीस आप उठांयदा। सन्त सुहेले दर घर साचे साजण सद्द, साची सिख्या सिख समझांयदा। काया माटी लहिणा देणा चुक्के कल के अज्ज, थिर कोई रहिण ना पांयदा। जो घड़या सो रिहा भज्ज, घड़न भन्नणहार आपे वेस वटांयदा। सगला संग सृष्ट सबाई जाणा तज, जगत कुटम्ब ना कोई रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन देवे साचा वर, वर दाता आप हो जांयदा। वर दाता भगवन्त, हरि सज्जण मीत मुरारा। हरि सज्जण वेखे साचे सन्त, देवे नाम अधारा। लोकमात बणाए साची बणत, आपे वरते वरतावे सच वरतारा। लेखा जाणे जीव जन्त, जुग जुग खेल अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जाणे आपणी धारा। आपणी धार साची रीती, हरि साचा आप चलांयदा। हरिसंगत साची इकट्ठी कीती, इक्क अकट्ठ वखांयदा। जुग जुग रहे ठंडी सीती, सांतक सति वरतांयदा। पतित पावन करे पतित पुनीती, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीटी, एका रूप जणांयदा। देवे वस्त नाम अनडीठी, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। त्रैगुण माया पीसण पीसी, पीसण पीस सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हरिसंगत एका रंग रंगांयदा। हरिसंगत रंग चाढ़े अनमोल, लाल रंगीला रंग रंगाईआ। अमृत जाम प्याला

प्याए घोल, गुरमुख मुख आप प्याईआ। सो पुरख निरँजण एका अक्खर बोल, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए वखाईआ। हरिसंगत हरि हरि लेख वखाया, कलिजुग माया पर्दा लांहयदा। दर घर साचे साचा रंग चढ़ाया, उतर कदे ना जांयदा। इक्क तृष्ना मेट मिटाया, सच भण्डारा आप वरतांयदा। भगत वछल हरि नाउँ धराया, निहकर्मी कर्म कमांयदा। भोजन इच्छया साची पाया, लोक परलोक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चवी मग्घर राह तकांयदा। चवी मग्घर सच सुहावणा, हरि साचा खेल खिलाईआ। इक्की सिक्खां सिख समझावणा, गुरमति इक्क दृढ़ाईआ। आपणी हथ्थीं हार गुंदावणा, कली कली आप महिकाईआ। गल साचे आप लटकावणा, गुरमुखां मेल मिलाईआ। एका इक्की इक्क पावणा, साची सिक्खी वेस वटाईआ। धुर दी लिखी रेख मिटावणा, आपणी रेखा आप लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रविदास चमार मिटे लेखा, गंग चरन धूढ़ सरनाईआ। शिव जी वेखे जटा जूट, दर दरवेशा फेरा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ करया वेस, वेस अनेका हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अट्ठ दस दस अट्ठ अट्ठ दस करे खेल बेपरवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका इक्की एका सिक्खी एका सेव कमाईआ।

१३०३
०८